ANNALS & ANTIQUITIES OF RAJASTHAN

का हिन्दी अनुवाद

भूमिका लेखक

डा० ईश्वरी प्रसाद

एम० ए०; एल-एल० बी०; डी-लिट्०; एम० एल० सी०;
इतिहास शिरोमणि (नेपाल) तथा भारत धर्म महामण्डल काश
भूतपूर्व प्रोफेसर, इतिहास एवम् राजनीति तथा अध्यक्ष
राजनीति विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

अनुवादक

श्री केशव कुमार ठाकुर

प्रकाशक

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय

इलाहाबाद

[संशोधित संस्करण]   अक्टूबर १९६५   [मूल्य ३०) रुपये

वक्तव्य

भारतवर्ष के समस्त इतिहासो में कर्नल जेम्स टॉड का लिखा हुआ 'एनल्ज ऐण्ड ऐण्टि
श्रौफ राजस्थान' बहुत प्रसिद्ध श्रौर प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। राजस्थान का इतिहास
अनुवाद है। इस ऐतिहासिक ग्रन्थ को तैयार करने में टॉड साहब ने जिस प्रकार अथक परि
प्रयत्न किया था, उसको लिखकर अथवा कहकर व्यक्त नही किया जा सकता। भारतवर्ष में
श्रौर यहाँ के अनेक प्रकार के वैभव देखकर वह अत्यन्त प्रभावित हुआ था। उसने इस देश
सी अच्छाइयाँ देखी, जिनका उसे पहले से कुछ ज्ञान न था। इस इतिहास को लिखने के पहले
इस बात को मन्जूर किया है कि भारतवर्ष के सम्बन्ध में योरप के लोगो को कुछ जानकारी
इस प्रसिद्ध देश से योरप के लोग अपरचित रहे, जेम्स टाड की समझ मे यह अच्छा न था।
उसने योरप के इस अभाव को दूर करने का अपने मन मे निश्चय कर लिया श्रौर उस महान
पूरा करने के लिए उसने सभी प्रकार के साधन जुटाने का कार्य आरम्भ कर दिया।

सन् १८०६ के जून महीने की बात है, उस समय जेम्स टॉड एक अँग्रेजी राजदूत
उदयपुर में था। राजपूताना के राज्यो में उसको भ्रमण करने का अवसर मिला। वह राज
बहादुरी को सुनकर श्रौर देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उनकी भीतरी श्रौर बाहरी सभी
तियो की जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ उनके प्राचीन इतिहास की खोज का कार्य आर
दिया। इस इतिहास को लिखने के लिये जिस सामग्री की आवश्यकता थी, आसानी के साथ
मिल सकना उन दिनो मे किसी प्रकार सम्भव न था। इसलिए राजस्थान मे जहाँ कही व
अपने इस इतिहास की सामग्री को प्राप्त करने की वह कोशिश करता। उसने अपना अधिक से
समय इस कार्य मे खर्च करना आरम्भ किया। उसने जनश्रुतियो, शिला लेखो श्रौर ऐतिहासि
की बहुत-सी सामग्री अपने पास एकत्रित कर ली। लेकिन केवल इतनी ही सामग्री से राजस
पूर्ण इतिहास तैयार नही हो सकता था। इसलिए विस्तार के साथ उसने इस कार्य को आरम्भ
श्रौर अपने स्वास्थ्य का मोह छोड़कर इस कार्य की सफलता के लिए उसने अपनी सम्पूर्ण
का उपयोग किया। राजस्थान के राज्यो मे लगातार घूमने श्रौर राजपूतो से मिलने के कार
साथ उनका स्नेह बढने लगा। उन दिनो में राजपूतो के आपसी द्वेष श्रौर वैमनस्य के कारण
शक्तियाँ बहुत निर्बल पड़ गयी थी। उनके फलस्वरूप बाहरी लुटेरो के राजस्थान मे अत्याचा
बढ़ रहे थे। जेम्स टॉड राजपूतो पर होने वाले उन अत्याचारों को सहन न कर सका श्रौ
राजपूतो की सहायता करने का निश्चय कर लिया। इसके लिए उसने जो प्रयत्न किये, उनके
वहाँ के राजपूतो पर टॉड साहब का बहुत बड़ा प्रभाव पडा। उसने राजस्थान के सभी प्रमुख
का भ्रमण किया श्रौर स्थान-स्थान पर जाकर उसने शिला लेखो, ताम्रपत्रो, हस्तलिखित पुस्त
बहुत से सिक्को को प्राप्त किया। इस अनवरत परिश्रम के कारण उसकी तिल्ली बढ़ गयी श्रौ
एक भयानक बीमारी का रोगी बन गया। लेकिन उसने अपने कार्य में किसी प्रकार की शि
श्रौर कमजोरी नही आने दी। सरकारी काम करते हुए उसने अपना अधिक से अधिक समय
की सामग्री जुटाने में खर्च किया।

जेम्स टॉड एक चरित्रवान, साहसी और वीर पुरुष था। इसीलिये वह राजपूतो की वीरता को सुनकर और अपने नेत्रो से देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। इस कार्य के लिये उसने बहुत से योग्य कार्यकर्ता नियुक्त किये थे, जो स्थान-स्थान पर घूमकर उसके बताये हुये तरीको पर सामग्री एकत्रित करने का काम करते थे। टॉड साहब ने इस इतिहास की सामग्री जुटाने के लिये किस प्रकार के काम किये थे, कितना अधिक परिश्रम किया था और कितने साधनो से उसने काम लिया था, इन सब बातो का वर्णन इस ग्रन्थ के आरम्भ मे किया गया है। इसलिए उसको यहाँ पर लिखने की आवश्यकता नही है। पच्चीस वर्ष तक लगातार परिश्रम करने के बाद सन् १८२६ ईसवी मे इस इतिहास का प्रथम भाग और सन् १८३२ ईसवी मे इसका दूसरा भाग वह प्रकाशित कर सका। इस इतिहास के प्रकाशित होते ही योरप के देशो मे टॉड साहब की बडी प्रशसा हुई और उसके लिखे हुए इस इतिहास से ससार मे राजस्थान की बडी ख्याति प्राप्त हुई।

इस इतिहास मे केवल राजस्थान की ही नही, बल्कि भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की बहुत-सी ऐसी ऐतिहासिक सामग्री पढने को मिलती है, जो यहाँ किसी दूसरे इतिहास मे नही है। देश के सभी प्रतिष्ठित इतिहासकार इस बात को स्वीकार करते हैं कि जेम्स टॉड का लिखा हुआ राजस्थान का इतिहास एक प्रामाणिक इतिहास है।

टॉड साहब के इस ऐतिहासिक ग्रन्थ का अनुवाद बडी सावधानी के साथ मैंने करने की कोशिश की है। फिर भी अपनी भूलो के लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं इस बात का विश्वास करता हूँ कि भारत के प्राचीन काल की सामग्री का सकलन करके टॉड साहब ने उसकी ऐतिहासिक सामग्री निकालने और इस इतिहास के तैयार करने मे जो सफलता पायी है वह किसी दूसरे के द्वारा सम्भव नही थी। यदि टॉड साहब के द्वारा यह इतिहास न लिखा गया होता और किसी दूसरे विद्वान ने इसको लिखा होता तो कदाचित यह इतिहास कुछ और ही होता और राजस्थान के इस प्राचीन और प्रसिद्ध इतिहास से न केवल भारतवर्ष बल्कि सम्पूर्ण ससार वन्चित रहता। इस महत्वपूर्ण अभाव की पूर्ति करके टॉड साहब ने जो महान कार्य किया है, उसकी प्रशसा नही की जा सकती।

अनुवाद मे मूल लेखक के विचारो को सुरक्षित रखना एक कठिन कार्य है। ऐतिहासिक ग्रन्थ के अनुवाद मे यह जिम्मेदारी और भी अधिक बढ जाती है। अनुवादक को मूल ग्रन्थ मे कुछ भी परिवर्तन करने अथवा उसकी आलोचना करने का अधिकार नही होता, इसको सभी स्वीकार करेंगे। कही कुछ मतभेद होने पर अनुवादक अपने वक्तव्य मे प्रकाश डाल सकता है और अपने विचारो का उल्लेख कर सकता है। एक विदेशी विद्वान से इस प्रकार के ग्रन्थ मे जो भूले हुई हैं और जिनका होना अत्यन्त स्वाभाविक है, उनके सम्बन्ध मे अपने ऐतिहासिक विद्वानो के उल्लेखो से सहायता लेकर मैंने उनको उचित स्थानो पर फुट नोट देकर स्पष्टीकरण करने की चेष्टा की है। जिन विद्वानो के उल्लेखो से मैंने यह सहायता प्राप्त की है। उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

अनुवादक के बाद और प्रेस मे देने के पहले मुझे पान्डुलिपि के देखने का मोका नही मिला। उस समय उसका देख लेना बहुत जरूरी था। लेकिन कुछ असुविधाओ के कारण ऐसा हो नही सका। श्रद्धेय गिरिधर जी शुक्ल ने सदा की भाँति मेरी इस पान्डुलिपि को देखकर और आवश्यकतानुसार भूलो का सशोधन करके मेरी बडी सहायता की है। इसके लिये मैं शुक्ल जी के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

केशव कुमार ठाकुर

भूमिका

पं० गिरिधर शुक्ल ने टॉड के प्रसिद्ध ग्रन्थ राजस्थान का हिन्दी संस्करण निकालकर जगत का ही नही वल्कि ऐतिहासिक जगत का भी बडा उपकार किया है। कौन ऐसा इतिहास का विद्वान है जो टॉड के अनुपम ग्रन्थ के महत्व को नही स्वीकार करता। आधुनिक से यह वैज्ञानिक रूपेण लिखित इतिहास का ग्रन्थ न हो, परन्तु इसमें जरा भी सन्देह नही ऐतिहासिक सामग्री का अपूर्व भण्डार है। आधुनिक काल में प्रशस्तियो, साहित्यिक ग्रन्थो प्राचीन लेखो तथा भग्नावशेषो के आधार पर जो अन्वेषण हुए है उन्होने ऐतिहासिक घटना नूतन प्रकाश डाला है और अशुद्धियो को दूर करने मे हमारी सहायता की है। जिस समय कर्न ने अपना ग्रन्थ लिखा था इतनी सामग्री उपलब्ध नही थी। वे राजस्थान में एक उच्च पद उनकी लेखनी मे ओज था, शक्ति थी, अपनी भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था, राज्यो सहायता मिलती थी। इसलिए इस ग्रन्थ को तैयार करने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई। चार उन्हे बहुत-सी सामग्री उपलब्ध हुई। जनश्रुति का भी, जो इतिहास का एक अमूल्य साधन है उपयोग किया।

टॉड के ग्रन्थ में राजपूतो के इतिहास के राजवंशों का इतिहास है। मुख्य घटनाओ का जिस भाषा में किया गया है वह आज भी हमे प्रभावित करती है और हमारे हृदय में एक नई का सञ्चार करती है। राजस्थान की भूमि वीरों की जननी है! उसने अनेक महापुरुषों तथा नाओ को जन्म दिया है। जिन्होने भीषण सङ्कटापन्न अवस्थाओं में निर्दय शत्रुओं से युद्ध कर मान-मर्यादा की रक्षा की। उन्होने अनेक बार अपने प्राणों की आहुति देकर भयंकर, आतता नृशंस आक्रमणकारियो को मार भगाया और अपनी वीरता का परिचय दिया। मेवाड़ के राजप्रासाद, मन्दिर, शिलाये, पहाडो की चोटियाँ इसके साक्षी है। इस प्रकार के पराक्रम योद्धाओ तक ही सीमित न थे, राजपूतनियो ने भी वीरता, त्याग, आत्मसम्मान तथा देश उज्ज्वल उदाहरण समय-समय पर उपस्थित किये। जौहर व्रत राजपूत समाज की वीराङ्गना सामूहिक बलिदान की एक विशेषता थी। उसे देखकर उनके शत्रु भी चकित रह जाते थे। नही अनेक बार भयङ्कर परिस्थितियो में क्षत्रिय वीराङ्गनाओं ने इसी प्रकार प्रचण्ड अग्नि ज्व भस्म होकर अपने सतीत्व की रक्षा की। इस तरह के ज्वलन्त उदाहरण किसी देश के इति नही मिलते।

शुक्ल जी ने इस महान ग्रन्थ को सुसंस्कृत तथा परिमार्जित आधुनिक हिन्दी में प्रकाशित का श्लाघ्य प्रयास किया है। यो तो संक्षिप्त हिन्दी संस्करण टॉड के निकल चुके है, राजपूता इतिहास पर भी बहुत कुछ लिखा गया है। परन्तु टॉड का ग्रन्थ अब भी अद्वितीय है। एक होते हुये उन्होंने राजपूत-समाज, नीति-नियम, शासन-व्यवस्था, रस्म-रिवाज आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। इससे उनके परिश्रम, सहिष्णुता प्रखर बुद्धि एवम् अदम्य साहस का लगता है। उनकी अलौकिक प्रतिभा का स्मरण कर प्रत्येक इतिहासकार को नतमस्तक होना है। शुक्ल जी ने भी ऐसा ही साहस दिखाया है। हमारे सन्मुख टॉड के पूर्ण ग्रन्थ को हिन्दी

जेम्स टॉड एक चरित्रवान, साहसी और वीर पुरुष था। इसीलिये वह राजपूतों की वीरता को सुनकर और अपने नेत्रो से देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। इस कार्य के लिये उसने बहुत से योग्य कार्यकर्ता नियुक्त किये थे, जो स्थान-स्थान पर घूमकर उसके बताये हुये तरीको पर सामग्री एकत्रित करने का काम करते थे। टॉड साहब ने इस इतिहास की सामग्री जुटाने के लिये किस प्रकार के काम किये थे, कितना अधिक परिश्रम किया था और कितने साधनो से उसने काम लिया था, इन सब बातों का वर्णन इस ग्रन्थ के आरम्भ मे किया गया है। इसलिए उसको यहाँ पर लिखने की आवश्यकता नही है। पच्चीस वर्ष तक लगातार परिश्रम करने के बाद सन् १८२९ ईसवी मे इस इतिहास का प्रथम भाग और सन् १८३२ ईसवी मे इसका दूसरा भाग वह प्रकाशित कर सका। इस इतिहास के प्रकाशित होते ही योरप के देशो मे टॉड साहब की बडी प्रशसा हुई और उसके लिखे हुए इस इतिहास से ससार मे राजस्थान की बडी ख्याति प्राप्त हुई।

इस इतिहास मे केवल राजस्थान की ही नही, बल्कि भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की बहुत-सी ऐसी ऐतिहासिक सामग्री पढने को मिलती है, जो यहाँ किसी दूसरे इतिहास मे नही है। देश के सभी प्रतिष्ठित इतिहासकार इस बात को स्वीकार करते है कि जेम्स टॉड का लिखा हुआ राजस्थान का इतिहास एक प्रामाणिक इतिहास है।

टॉड साहब के इस ऐतिहासिक ग्रन्थ का अनुवाद बडी सावधानी के साथ मैने करने की कोशिश की है। फिर भी अपनी भूलो के लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं इस बात का विश्वास करता हूँ कि भारत के प्राचीन काल की सामग्री का सकलन करके टॉड साहब ने उसकी ऐतिहासिक सामग्री निकालने और इस इतिहास के तैयार करने मे जो सफलता पायी है वह किसी दूसरे के द्वारा सम्भव नही थी। यदि टॉड साहब के द्वारा यह इतिहास न लिखा गया होता और किसी दूसरे विद्वान ने इसको लिखा होता तो कदाचित यह इतिहास कुछ और ही होता और राजस्थान के इस प्राचीन और प्रसिद्ध इतिहास से न केवल भारतवर्ष बल्कि सम्पूर्ण ससार वञ्चित रहता। इस महत्वपूर्ण अभाव की पूर्ति करके टॉड साहब ने जो महान कार्य किया है, उसकी प्रशसा नही की जा सकती।

अनुवाद मे मूल लेखक के विचारो को सुरक्षित रखना एक कठिन कार्य है। ऐतिहासिक ग्रन्थ के अनुवाद मे यह जिम्मेदारी और भी अधिक बढ जाती है। अनुवादक को मूल ग्रन्थ मे कुछ भी परिवर्तन करने अथवा उसकी आलोचना करने का अधिकार नही होता, इसको सभी स्वीकार करेगे। कही कुछ मतभेद होने पर अनुवादक अपने वक्तव्य मे प्रकाश डाल सकता है और अपने विचारो का उल्लेख कर सकता है। एक विदेशी विद्वान से इस प्रकार के ग्रन्थ मे जो भूले हुई हैं और जिनका होना अत्यन्त स्वाभाविक है, उनके सम्बन्ध मे अपने ऐतिहासिक विद्वानो के उल्लेखो से सहायता लेकर मैंने उनको उचित स्थानो पर फुट नोट देकर स्पष्टीकरण करने की चेष्टा की है। जिन विद्वानो के उल्लेखो से मैंने यह सहायता प्राप्त की है। उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

अनुवादक के बाद और प्रेस मे देने के पहले मुझे पान्डुलिपि के देखने का मौका नही मिला। उस समय उसका देख लेना बहुत जरूरी था। लेकिन कुछ असुविधाओ के कारण ऐसा हो नही सका। श्रद्धेय गिरिधर जी शुक्ल ने सदा की भाँति मेरी इस पान्डुलिपि को देखकर और आवश्यकतानुसार भूलो का सशोधन करके मेरी बडी सहायता की है। इसके लिये मैं शुक्ल जी के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

केशव कुमार ठाकुर

भूमिका

पं० गिरिधर शुक्ल ने टॉड के प्रसिद्ध ग्रन्थ राजस्थान का हिन्दी संस्करण नि
जगत का ही नही बल्कि ऐतिहासिक जगत का भी बड़ा उपकार किया है। कौन
इतिहास का विद्वान है जो टॉड के अनुपम ग्रन्थ के महत्व को नही स्वीकार करता।
से यह वैज्ञानिक रूपेण लिखित इतिहास का ग्रन्थ न हो, परन्तु इसमें जरा भी सन्देह
ऐतिहासिक सामग्री का अपूर्व भण्डार है। आधुनिक काल मे प्रशस्तियो, साहित्यिक
प्राचीन लेखो तथा भग्नावशेषो के आधार पर जो अन्वेषण हुए है उन्होने ऐतिहासिक
नूतन प्रकाश डाला है और अशुद्धियो को दूर करने मे हमारी सहायता की है। जिस स
ने अपना ग्रन्थ लिखा था इतनी सामग्री उपलब्ध नही थी। वे राजस्थान मे एक उ
उनकी लेखनी मे ओज था, शक्ति थी, अपनी भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था, र।
सहायता मिलती थी। इसलिए इस ग्रन्थ को तैयार करने मे उन्हे सफलता प्राप्त हुई
उन्हे बहुत-सी सामग्री उपलब्ध हुई। जनश्रुति का भी, जो इतिहास का एक अमूल्य स
उपयोग किया।

टॉड के ग्रन्थ में राजपूतो के इतिहास के राजवंशों का इतिहास है। मुख्य घटना
जिस भाषा मे किया गया है वह आज भी हमे प्रभावित करती है और हमारे हृदय में
का सञ्चार करती है। राजस्थान की भूमि वीरो की जननी है! उसने अनेक महापुरुषों
नाओ को जन्म दिया है। जिन्होने भीषण सङ्कटापन्न अवस्थाओ में निर्दय शत्रुओं से
मान-मर्यादा की रक्षा की। उन्होने अनेक बार अपने प्राणो की आहुति देकर भयंकर,
नृशंस आक्रमणकारियो को मार भगाया और अपनी वीरता का परिचय दिया।
राजप्रासाद, मन्दिर, शिलाये, पहाड़ो की चोटियाँ इसके साक्षी है। इस प्रकार के प
योद्धाओ तक ही सीमित न थे, राजपूतनियों ने भी वीरता, त्याग, आत्मसम्मान तथा
उज्जवल उदाहरण समय-समय पर उपस्थित किये। जौहर व्रत राजपूत समाज की वी
सामूहिक बलिदान की एक विशेषता थी। उसे देखकर उनके शत्रु भी चकित रह जाते थे
नही अनेक बार भयङ्कर परिस्थितियो मे क्षत्रिय वीराङ्गनाओ ने इसी प्रकार प्रचण्ड अगि
भस्म होकर अपने सतीत्व की रक्षा की। इस तरह के ज्वलन्त उदाहरण किसी देश के
नही मिलते।

शुक्ल जी ने इस महान ग्रन्थ को सुसंस्कृत तथा परिमार्जित आधुनिक हिन्दी में प्र
का श्लाघ्य प्रयास किया है। यो तो संक्षिप्त हिन्दी संस्करण टॉड के निकल चुके है,
इतिहास पर भी बहुत कुछ लिखा गया है। परन्तु टॉड का ग्रन्थ अब भी अद्वितीय है।
होते हुये उन्होंने राजपूत-समाज, नीति-नियम, शासन-व्यवस्था, रस्म-रिवाज आदि के
जानकारी प्राप्त की थी। इससे उनके परिश्रम, सहिष्णुता प्रखर बुद्धि एवम् अदम्य साह
लगता है। उनकी अलौकिक प्रतिभा का स्मरण कर प्रत्येक इतिहासकार को नतमस्तक
है। शुक्ल जी ने भी ऐसा ही साहस दिखाया है। हमारे सन्मुख टॉड के पूर्ण ग्रन्थ को

प्रस्तुत कर उन्होने अपने उत्साह एवम् साहित्य-प्रेम का परिचय दिया है। आर्थिक स्थिति सतोषजनक न होते हुए भी, किसी धनाढ्य व्यक्ति का आश्रय बिना प्राप्त किये, उन्होंने इस महान् कार्य में अपना हाथ लगाया और उसे पूरा किया है। यह सब देखकर मेरा हृदय गद्गद् हो जाता है। अनुवादक का परिश्रम प्रशंसनीय है। भाषा सुन्दर है, जोशीली है और मूल लेखक की तरह लेख शैली भी लालित्य पूर्ण एवम् हृदयग्राही है।

टॉड के ग्रन्थ का केवल ऐतिहासिक महत्व ही नही है, उसमे अनेक समाज-सम्बन्धी विषय भी है जिनसे हमे राजपूत समाज के बारे मे बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त होता है। राजपूत जातियों का टॉड का परिचय अब अपूर्ण समझा जाता है। उसकी बहुत सी भूलें आधुनिक अन्वेषण द्वारा सुधार की गयी है। राज्यो के इतिहासो मे भी बहुत-सी त्रुटियाँ थी, जिनका अब सशोधन किया गया है। इसके अतिरिक्त इन अन्वेषणो ने हमारे ज्ञान मे पर्याप्त अभिवृद्धि की है। परन्तु राजपूत-समाज के बारे मे जितनी सामग्री टॉड के ग्रन्थ मे है, वह अन्यत्र नही उपलब्ध होती। न कही राजपूत सामन्तशाही का ऐसा विस्तृत वर्णन मिलता है जैसा कि टॉड लिखित राजस्थान के इतिहास मे है। ग्यारहवे परिच्छेद मे मेवाड का इतिहास आरम्भ होता है। घटनाओ का वर्णन मार्मिक तथा ओजस्वी भाषा मे किया गया है। कोई मेवाड निवासी ऐसा न होगा, जो इसे पढकर प्रभावित न हो। उसके पश्चात मारवाड, जैसलमेर, जयपुर, शेखावटी आदि राज्यो का इतिहास है। यह सब अशो मे पूर्ण नही है, पर फिर भी वैज्ञानिक अन्वेशको के लिए एक अद्भुत मौलिक सामग्री है।

मुझे आशा है शुक्ल जी के उत्साह तथा प्रयास का विद्वानो मे सम्मान होगा। विशेषत: इतिहास के विद्यार्थी हिन्दी भाषा मे टॉड के पूर्ण ग्रन्थ को पायेगे और उसमे मूल ग्रन्थ की झलक एवम् प्रतिभा को देखेगे। आधुनिक अन्वेषको द्वारा बहुत-सी सामग्री उपलब्ध हुई है उसका भी उपयोग होना आवश्यक प्रतीत होता है। आशा करता हूँ, हमारे विश्व विद्यालयो के इतिहास विभाग शुक्ल जी को इस कार्य मे सहयोग प्रदान करेगे।

प्रयाग
२३-१२-१९६१

ईश्वरी प्रसाद

टॉड साहब का जीवन-चरित्र

भारतवर्ष में प्राचीनकाल से ही इतिहास लिखने की प्रथा न होने के कारण उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ काल तक प्रसिद्ध राजपूत जाति एवम् राजपूताने का इति लिये कुछ भी योग्य साधन न थे। राजपूत जाति के परम हितैषी कर्नेल जेम्स टॉड ने जब में अपना कदम रखा, तब से ही उनके चित्त मे राजपूत जाति के इतिहास के अभाव को विचार उत्पन्न हुआ, जिससे पच्चीस वर्षों के सतत परिश्रम से उन्होने पूर्ण कर राजपूतो जय-स्तम्भ रूप राजस्थान के इतिहास को प्रकट किया। उन्होने अपना यह अपूर्व ग्रन्थ लिखा था, जब कि कुछ भी सामग्री कही से तैयार मिलने की सम्भावना ही नही थी। साहब की इस पुस्तक मे कई स्थानो पर परिवर्तन करने की आवश्यकता अवश्य रही। f यह ग्रन्थ अब तक राजपूत जाति तथा राजपूताना के लिये प्रमाण स्वरूप माना जाता है

कर्नेल जेम्स टॉड, स्काटलैण्ड के निवासी मिस्टर जेम्स टॉड के दूसरे पुत्र और हे पौत्र थे। उनका जन्म २० मार्च १७८२ ईसवी को इङ्गलैण्ड के ईस्लिगटन नामक स्थान टॉड साहब के मामा मिस्टर पेट्रिक हेटली ने, जो बङ्गाल के सिविलियन थे, उनको कम्पनी के सैनिक उम्मेदवारो में भरती करा दिया था और वे सत्रह वर्ष की अवस्था मे दिये गये थे। उसके बाद उनकी बदली मुहिम में जाने वाली जल-सेना में हो गयी थी। कुछ समय तक उनको एक जहाज की जल सेना में काम करना पड़ा था। उसके हरिद्वार होते हुए उनका तबादला देहली के लिये हो गया था।

इञ्जीनियरिंग के काम में कुशल होने के कारण सन् १८०१ ईसवी में देहली के नहर की पैमाइश करने का काम उनको सौप दिया गया। इसके बाद वे मिस्टर मर्सर वाली अँगरेजी सेना के एक अधिकारी बना दिये गये। उस समय तक यूरोपियन विद्वान पूताना और उसके आस-पास के प्रदेशो का भूगोल सम्बन्धी ज्ञान बहुत ही कम था और हुए नक्शो मे प्रमुख स्थानो के स्थान भी सही न थे। मिस्टर रेनल ने उन भूलो के संशो काम किया था, परन्तु वे नक्शे सही न बन पाये थे। × × × टॉड साहब पैमाइश का हुए १८०६ ईसवी के जून महीने मे एक अँगरेजी राजदूत के साथ उदयपुर पहुँच गये। उनके मन मे यह भाव पैदा हुआ कि राजपूताना और उसके आस-पास के प्रदेशों का एक तैयार किया जाय। इसी विचार से उनको जहाँ कही राजपूताना में जाने का अवसर f बहुत-सा समय इसी काम में खर्च करने लगे और उन प्रदेशो के इतिहास, जनश्रुति और का भी वे यथासाध्य संग्रह करते जाते थे। इस इतिहास की सामग्री के संग्रह का कार्य यही हुआ।

थोडे ही अरसे में टॉड साहब ने इन विस्तृत प्रदेशों के इतने नक्शे तैयार किये कि जिल्दे बन गयी। उस समय राजपूताना में मराठों का जोर बढ़ा हुआ था और यहाँ के सरदारों मे भी परस्पर फूट फैली हुई थी। मराठों के आतङ्क और सरदारों की फूट के

की दुर्दशा हो रही थी। होलकर और सीधिया की लूट से मुल्क वीरान हो रहा था। टॉड साहब ने यह देखकर मुल्क की रक्षा करने का संकल्प किया। सन् १८०१ से १८१३ ईसवी तक लार्ड मिन्टो हिन्दुस्तान के गवर्नर-जनरल रहे। उन्होंने देशी रियाशतो के मामले मे किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया। फल स्वरूप, राजपूताना लुटेरो का घर बन गया। टॉड के दिल मे राजपूताना की अशान्ति मिटाने की प्रबल इच्छा थी। इसलिए अपनी सरकार की आज्ञा लेकर वे एक अंगरेजी सेना के अधिकारी बन गये और अनेक लडाइयो मे उन्होने अत्याचार करने वाली देशी रियासतों की फौजों को पराजित किया। पिन्डारियो और मराठो के उपद्रव मिटाने पर सरकार ने राजपूताना के राज्यों के साथ सन्धि करना आरम्भ किया और टॉड साहब को कई देशो की रियासतों का पोलिटिकल एजेण्ट बना दिया।

सन् १८१९ ईसवी के अक्टूबर महीने मे टॉड साहब जोधपुर को रवाना हुए और नाथद्वारा कुम्भलगढ, घाणेराव, नाडोल मे होते हुए वहाँ पहुँच गये। वहाँ पर उन्होने दो शिला लेखों की खोज की और ताम्र पत्रो, हस्तलिखित पुस्तको तथा सिक्को को प्राप्त किया। इसी प्रकार का कार्य पुष्कर और अजमेर मे भी उनका हुआ। इन्ही दिनो मे टॉड साहब तिल्ली के बढ जाने से बीमार पड़े। लेकिन इस इतिहास की सामग्री जुटाने का काम बराबर करते रहे। एक दिन जब उनकी तिल्ली मे साठ जोंके लगी हुई खून पी रही थी, उस समय भी वे चारपाई पर लेटे हुए ब्राह्मणों और पटेलो से बाते करते हुए प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओ को सुनकर लिखने का काम करते रहे। सरकारी काम करते हुए टॉड साहब उस खोज मे बराबर लगे रहे, जो इस इतिहास के लिए जरूरी थी। स्थान-स्थान पर उनको शिला लेख, सिक्के और इस प्रकार की दूसरी चीजे मिली, जो राजस्थान का इतिहास लिखने के लिये बहुत काम की साबित हुई। उन्होंने गुफाओ और खण्डहरो के भीतर जाकर बहुत कुछ खोज की और चट्टानो पर खुदे हुए लेखो को प्राप्त किया।

टॉड साहब को स्वदेश छोडे हुए बाईस वर्ष बीत चुके थे। अपने सौजन्य के कारण वे सबके इस देश मे प्रिय बन गये थे। राजपूताना मे पहुँच कर उन्होंने सबसे पहले वहाँ के भूगोल और नक्शो के काम को पूरा किया और उसके बाद वे राजस्थान के इतिहास की सामग्री जुटाने मे लग गये थे। उनको क्षत्रीत्व से प्रेम था और इस देश के राजपूतो की वीरता को सुनकर वे बहुत प्रभावित हुए थे। राजपूताना के बहुत-से भागो मे पहुँचकर उन्होंने इस प्रदेश के पुराने इतिहास की सामग्री एकत्रित की। वे जहाँ कही पहुँचते, बडे बूढो और जानकारो के साथ बैठकर बाते करते और जो काम की बाते मालूम होती, उन्हे वे उसी समय लिख लेते। प्राचीन सिक्को, शिला लेखो और इस प्रकार की दूसरी सामग्री को खोजने तथा एकत्रित करने के लिए उन्होने बहुत-से बडे-बडे नगरो में अपने एजेन्ट नियत किये थे, जो ग्रीक, शक और दूसरे प्राचीन राजवंशियो के सिक्के एकत्र कर उनके पास पहुँचाया करते थे। जैन मन्दिरो, राजाओ और प्रतिष्ठित पण्डितो की प्राचीन हस्तलिखित पुस्तको के संग्रह वे बडी रुचि से देखते और उनकी उपयोगी सामग्री लेने का काम करते थे। महाराणा भीमसिंह ने इतिहास सम्बन्धी सामग्री एकत्र करने मे टॉड साहब को बडी सहायता दी। उन्ही के द्वारा पुराणो, महाभारत, रामायण, पृथ्वीराज रासो आदि अनेक पुस्तको की सामग्री टॉड साहब को प्राप्त हुई थी। राजपूताना के राजवंशियो की ख्याति, पृथ्वीराज रासो, खुम्भाण रासो, हम्मीर रासो, रतन रासो, विजय विलास, सूर्य प्रकाश, जगत विलास, जय विलास, राज प्रकाश, राज प्रशस्ति, नवसाह, सांक चरित्र कुमार पाल चरित्र, मान चरित्र, हमीर काव्य, राजावल, राजतरङ्गिणी, जयसिंह कल्पद्रुम, राजवंशो

की वंशावली आदि अनेक प्रकार की बहुत सी सामग्री बडे परिश्रम के साथ, ट
की थी। अनेक प्रकार के काव्यग्रन्थ, नाटक, व्याकरण, कोष, ज्योतिष, शिल्प,
जैन धर्म सम्बन्धी अनेक पुस्तकें तथा अर्बी, फारसी भाषा की कई हस्तलिखित ऐतिहासि
भी उत्तम संग्रह उन्होने किया था। बहुत से स्थलो के शिला-लेखो, ताम्रपत्रों की प्र
प्राचीन मूर्तियाँ और बीस हजार के करीब प्राचीन सिक्के अपने इस इतिहास की स
उन्होने प्राप्त किये थे।

सन् १८२२ ईसवी की १ जून को अपने देश के लिये टाड साहब ने उदयपु
किया था। उसके पहले ही उन्होने इस ग्रन्थ 'राजस्थान' का ढाँचा तैयार कर लिय
टाड साहब ने राजपूताना का खूब भ्रमण किया और कोई भी प्रसिद्ध नगर और
बाकी नही रखा। इस यात्राओ मे आश्चर्यजनक सामग्री उनको प्राप्त हुई। वेरावल
छोटे-से मन्दिर मे गुजरात के राजा अर्जुन देव के समय का एक बडा ही उपयोगी लेख
सोमनाथ घूमते हुए वे जूनागढ पहुँच कर प्रसिद्ध प्राचीन बौद्ध गुफाओ के गिरनार के
चट्टान पर अशोक की धर्म आज्ञाओ के पास अनेक प्राचीन राजाओ के प्राचीन लेख
इन मिले हुए लेखो का पढ़ने वाला उन्हे कोई न मिला। १४ जनवरी १८२३ ई०
पहुँच गये। अपनी इस सम्पूर्ण यात्रा का सग्रह उन्होने "ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इडिया"
पुस्तक मे प्रकाशित किया है।

बम्बई से रवाना होकर वे इंगलैण्ड चले गये। वहाँ पर सन् १८२३ ईसवी
में 'एशियाटिक सोसाइटी' नामक सभा की स्थापना हुई थी। वहाँ जाकर आप उस
गये और कुछ दिनो के बाद वे उसके पुस्तकाध्यक्ष बना दिये गये। उस सभा में उन्ह
संग्रह का एक निबन्ध पढ़ा। उन लोगो ने बहुत पन्सद किया। इसलिये कि उस सयय
विद्वान राजपूत जाति के इतिहास से अपरिचित थे।

१६ नवम्बर १८२६ ईसवी को टाड साहब ने अपनी चवालीस वर्ष की अव
नगर के डाक्टर क्लटर वक की पुत्री से विवाह किया और उसके कुछ दिनो के बा
के देशो के भ्रमण को चले गये। सन् १८२७ के मई मास मे जनरल एसियाटि
उनका एक लेख प्रकाशित हुआ और सन् १८२८ मे उन्होंने अपने दो निबंध रा
सोसाइटी नामक सभा मे पढ़े।

सन् १८२६ ईसवी मे टाड साहब ने 'राजस्थान' के इतिहास की पहली जिल
से छपवा कर प्रकाशित की और सन् १८३२ में उन्होने उसकी दूसरी जिल्द प्रका
इतिहास से योरप, अमेरिका और हिन्दुस्तान के पढे-लिखे लोगो में उनकी बहुत
और राजपूत जाति की कीर्ति सर्व भूमण्डल में फैल गयी। इगलैण्ड मे रहने के सम
का स्वास्थ्य ठीक न रहने पर भी वे अपना समय विद्यानुराग मे ही व्यतीत करते रहे
का इतिहास छप जाने के बाद उन्होने चन्दबरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' का अँगरेजी
के लिये नमूने के तौर पर संयोगिता के कथानक को अँगरेजी कविताओ मे लिखा और
प्रकाशित किया, जिसे वहाँ के लोगो ने बहुत पसन्द किया।

टाड साहब का स्वास्थ्य बिगडने के बाद फिर सम्हल न सका। १६ नवम्ब
को लण्डन की लम्बर्ट स्ट्रीट के साहूकार के यहाँ उनको एकाएक मिर्गी का आक्रमण
२७ घन्टे तक मूर्छित रहने के बाद १७ नवम्बर सन् १८३५ को ५३ वर्ष की अवस्था मे
दो पुत्रो और एक पुत्री को छोड़कर टाड साहब ने इस संसार से प्रयाण किया। उन

दर्जे का और शरीर पुष्ट था। वे सदा प्रसन्न चित्त रहा करते थे। उनके जीवन मे सादगी थी। राजपूताना के लोगो के वीच वैठ कर जाडे मे वे घन्टो आग तापते और उन लोगो की बातें सुनते थे। रास्ते में किसी दुखिया को देखकर उसकी सहायता करते। वे अपनी ख्याति के लिये कोई काम न करते थे। पिंडारो के साथ लडाई मे विजय के बाद लूट के माल से कोटा से [illegible] मील पूर्व एक पुल वनवाया गया था। उस पुल का नाम लोग 'टाड साहब का पुल' रखना चाहते थे। लेकिन टाड ने इसको पसन्द न किया और उनकी सलाह से उस पुल का नाम 'हेस्टिंग्स ब्रिज' रखा गया। इसी प्रकार उजडे हुये भीलवाडे के फिर वसाये जाने पर लोगो ने उसका नाम टाड गंज रखना चाहा तो टाड साहव ने इनकार कर दिया और कहा कि उसका उद्धार महाराणा भीमसिंह की उदारता से हुआ है। इसलिये उसका श्रेय राणा को ही मिलना चाहिये। टाड साहव राजपूतो की वीरता की प्रशसा करते थे। लेकिन उनके अधिक विवाहो उनकी अफीम खाने की आदतो और आलस्य में पडे रहने के उनके स्वभावो के सम्वन्ध मे वे उनको उपदेश दिया करते थे। टाड साहव वीर चरित्रवान थे और इसीलिये वे पराक्रम तथा चरित्र वल के समर्थक थे।

टाड साहव का जीवन चरित्र वहुत वडा है और वह पढने ही नहीं वलिक समझने के योग्य है। उन्होंने इस इतिहास के लिखने के साथ-साथ अपनी जिस मनुष्यता का परिचय दिया है, वह ससार मे वहुत कम मिलता है। टाड साहव भारतवर्ष मे राजस्थान का इतिहास लिखने के लिये नही आये थे। लेकिन उन्होंने यहाँ आकर जो कुछ देखा, उससे उन्हे मालूम हुआ कि योरप के लोगो को भारतवर्ष के सम्वन्ध मे और विशेषकर इस देश के राजपूतो के सम्वन्ध मे वहुत वडी गलतफहमी है। उस गलतफहमी के कारण योरप के लोगो ने इस देश की उपेक्षा कर रखी है। उसको दूर करने के लिये टाड साहव ने इतिहास का यह महान ग्रन्थ लिखा और लिखा इतिहास की वहुत वडी योग्यता के साथ नही, वल्कि उस मनुष्यता के साथ जो आराधना के योग्य है। उनकी यह योग्यता इस ऐतिहासिक ग्रन्थ के प्रत्येक पन्ने मे है।

टाड साहव का जीवन चरित्र तो पाठक इतिहास के इस ग्रन्थ मे पढेंगे ही। यहाँ पर थोडी-सी पक्तियो के साथ हम टाड साहव का परिचय देने के लिये इतना ही लिखना चाहते हैं कि वे गरीबो से प्रेम करते थे। पीडितो के साथ वैठकर अपनी सहानुभूति प्रकट करते थे। राजपूतो की कमजोरियो पर अफसोस करते थे और उनको समझा-वुझाकर अच्छी जिन्दगी वनाने के लिए आदेश दिया करते थे। राजपूत अफीम का सेवन करते थे उससे उनकी शक्तियाँ नष्ट हो रही थी। इसलिए अफीम का सेवन छोड देने के लिए वे राजपूतो से प्रतिज्ञाये करवाते थे। टाड साहव की मनुष्यता और कर्त्तव्य परायणता की प्रशसा नही की जा सकती। वे कहा करते थे, मैं इस देश के महलो से नही—मिट्टी से प्रेम करता हूँ, वृक्षो और उनकी शाखाओं से स्नेह रखता हूँ। एवम् इस देश के स्त्री-पुरुषो के साथ मैं अपना आत्मिक सम्वन्ध रखता हूँ। टाड साहव की इन वातो ने उनको इस देश के रहने वालो के साथ सदा के लिये स्नेह की मजवूत जजीर मे वाध दिया था, ससार मे इतिहासकार वहुत मिलेगे लेकिन किसी विद्वान इतिहासकार मे यह मनुष्यता न मिलेगी।

—गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

प्रस्तावना

इस बात पर सभी लोग आमतौर पर विश्वास करते हैं कि भारतवर्ष का
नही है। लेकिन यह बात सही नही है। क्योंकि अबुल फजल ने अपनी ऐतिहासि
हिन्दुओ के प्राचीन इतिहास का वर्णन किया है। यदि हिन्दुओ का कोई इतिहास नही
वह सामग्री कहाँ से मिली। मिस्टर विलसन ने राजतरगिणी नामक काश्मीर के
अनुवाद करके लोगो के भ्रम को बहुत कुछ मिटाने का काम किया है। हिन्दुओ के इ
ग्रन्थ इस बात का प्रमाण देते है कि इतिहास लिखने की परिपाटी से प्राचीन काल मे
चित न थे। खोजने के बाद इस बात का भी पता चलता है कि प्राचीनकाल में हिन्तुओ के
की अपेक्षा ऐसी अधिक पुस्तके थी, जो प्राचीन काल के हिन्दुओ के इतिहास को सग्रह क
कर सकती थी। कोलब्रुक, विलकिन्सन, बिलसन और दूसरे विद्वानो ने भारतवर्ष के
साहित्य को ससार के सामने लाने का बहुत कुछ काम किया है। फिर भी संसार
विद्वान इस बात का दावा नही कर सकता कि वह भारत के ऐतिहासिक विज्ञान के
पहुँचने के सिवा कुछ अधिक काम कर सका है। भारत के अनेक भागो मे विशाल पु
मुसलमान आक्रमणकारियो के विध्वस से बच गये है, अब तक मौजूद है और उनके
आज भी देखने को मिलते है।

इतना सब होने पर भी, इस देश में ऐतिहासिक ग्रन्थो का यदि अभाव है तो उ
है। यह मानना पड़ेगा कि प्राचीन काल में हिन्दू एक सभ्य और शिक्षित जाति थी। उ
संगीत, शिल्प और अनेक दूसरी कलाओ में बडी योग्यता प्राप्त की थी। फिर यह कै
सकता है कि उसको अपनी ऐतिहासिक घटनाओ, राजाओ के व्यवहारो और राज्य
कार्यों के लिखने का ज्ञान न रहा हो। महमूद गजनवी के आक्रमण से लेकर आठ स
भारत की अवस्था जिस प्रकार सकट मे रही, जिस प्रकार इस देश के प्रमुख नगर f
मणकारियो के द्वारा लूटे गये और जिस प्रकार उनके साहित्य की होलियाँ जलायी गय
एक बार नजर डालने के बाद, हमारे सामने वे सब दृश्य अपने आप आकर उपस्थित हो
इस देश के राजा-महाराजा अपनी राजधानियो से भगाये जाते थे और वे अरक्षित अवस्था
से दूसरे दुर्ग में जाकर साँस लेते थे। वे निर्जन बनो मे जाकर अपने परिवारो और प्रा
करते थे, क्या यह समय ऐसा था, जब इस देश के लोग उस समय की ऐतिहासिक घटना
का काम कर सकते थे ?

रोम और यूनान के ऐतिहासिक ग्रन्थो की तरह हिन्दुओ के ग्रन्थो की आशा कर
भूल है। हिन्दुओं के समस्त ग्रन्थ जीवन का ऐसा स्रोत प्रवाहित करते है, जो वाकी
साहित्य से बिल्कुल भिन्न है। इस अवस्था में हिन्दुओ का इतिहास भी कुछ इसी
होना चाहिये। हिन्दुओ का साहित्य और उनकी संस्कृति संसार के दूसरे देशो से भिन्न
के दर्शन-शास्त्र, उनकी कविता तथा उनके अन्यान्य ग्रन्थ उनकी स्वतन्त्रता का परि
यही मौलिकता और स्वतन्त्रता उनके इतिहास मे भी अधिक सम्भव है। क्योकि उनके
रचना की सम्भावना किसी अन्य प्रेरणा के आधार पर नही की जा सकती। हिन्दुओ

धर्म की घनिष्ठता अधिक है। इसके साथ ही हमे यह स्वीकार करना चाहिये कि इगलैण्ड और फ्रांस के साहित्य की गतिविधि जब तक योरप के प्राचीन साहित्य की पुस्तकों के अध्ययन से ठीक नही की गयी थी, उस समय तक इन दोनो देशो की इतिहास ही नही, बल्कि समस्त योरप की सभ्य जातियो के इतिहास भी वैसे ही अव्यवस्थित और नीरस थे, जैसे कि प्राचीन राजपूत जाति के।

भारत मे ऐतिहासिक सामग्री का अभाव होने पर भी यहाँ बहुत से ऐसे ग्रन्थ पाये जाते हैं जिनके मथन और सशोधन करने से इतिहास की सामग्री बहुत-कुछ एकत्रित की जा सकती है। इन ग्रन्थो मे पुराण हैं जिनमे राजवंशो के वर्णन हैं, लेकिन कथाओ, स्थानों और बहुत-सी मनगढ़न्त बातों के साथ मिल जाने से वे वर्णन अस्पष्ट हो गये है। उनके मथन का कार्य आसान नही है। भारत की ऐतिहासिक सामग्री के लिये उनके युद्ध सम्बन्धी काव्य भी, सहायता करते है। लेकिन कविता और इतिहास दो चीजे हैं। साहित्य मे दोनो की शैली अलग-अलग है। राजा और कवि के बीच स्वार्थ का एक समझौता रहता है। उसके फलस्वरूप, कवि प्रशसा के पुरस्कार मे धन प्राप्त करता है और उसी ऐसा करने से ऐतिहासिक तत्वो की ईमानदारी मे अन्तर आ जाता है।

कवि का पक्षपात और विद्रोह दोनो ही इतिहास के लिये घातक है। वह अपनी दोनों अवस्थाओ में सत्य से दूर निकल जाता है। युद्ध सम्बन्धी काव्यो मे इस प्रकार के दोष स्वाभाविक रूप से आते है। काव्य-ग्रन्थो में राजपूतो के इतिहास को इन दोषो से मुक्त नही समझा जा सकता। इसलिये ऐसे ग्रन्थो मे मथन और संशोधन की आवश्यकता अधिक है। इस प्रकार के दोषो के होने पर भी भारतीय भाटो की पुस्तको से इतिहास की बहुत-सी सामग्री प्राप्त की जा सकती है। मन्दिरो के दान, भेट और उनके निर्माण सुधार के सम्बन्ध मे जो लेख मिलते हैं उसमे भी इतिहास की बहुत-सी चीजे मिलती है। इसी प्रकार की खोज करने से धार्मिक स्थानो और कथाओं मे भी बहुत सी चीजे ऐसी पायी जाती है, जो इतिहास लिखने मे सहायता करती हैं। जैनियो की धार्मिक पुस्तको मे कुछ ऐतिहासिक चीजे पायी जाती है। इस देश की धार्मिक पुस्तको में आडम्बर अधिक है। लेकिन एक चतुर अन्वेषक अपने गम्भीर मंथन से काम की सामग्री प्राप्त कर सकता है। इन ग्रन्थो मे ब्राह्मणो ने अपनी प्रधानता जिस प्रकार समाज पर कायम कर रखी हैं, उसमे देशवासियो के अज्ञान के सिवा और कुछ नही है। प्राचीन काल मे मिश्र की भी यही अवस्था थी। इन दोनो मे राजाओ और धार्मिक नेताओ के बीच एक ऐसा समझौता काम करता था, जिससे अप्रकट रूप में देश मे सर्व-साधारण को अज्ञान के अधकार में रखकर सदा अधीनता मे रखा जा सके।

भारतवर्ष मे युद्ध सम्बन्धी जो काव्य ग्रन्थ हैं, वे इस देश के इतिहास की सामग्री देने में सहायता करते हैं। कवि मनुष्य जाति के प्राचीन इतिहासकार माने जाते हैं। साहित्य मे इतिहास का एक अलग स्थान बनने के समय तक कवि सही घटनाओ के लिखने का काम करते रहे। भारत वर्ष में व्यास के समय से लेकर मेवाड के प्रसिद्ध इतिहास लेखक वेनीदास के समय तक सरस्वती देवी की पूजा होती रही। पश्चिमी भारत मे अन्य लेखको के साथ-साथ कवि इतिहास के प्रधान लेखक रहे हैं। लेकिन उनकी कविता की भाषा एक अजीब होती है और जब तक उनकी कविताओ का अर्थ न किया जाय अथवा कोई उनका अर्थ करने वाला न हो तो वे कविताये समझ में नही आती। उन कवियों मे एक बात और भी है। उनमे अतिशयोक्ति अधिक रहती है और उनकी इस अतिशयोक्ति से इतिहास का सही अश नष्ट हो जाता है। इस दशा मे प्राचीन काल मे जिन कवियो ने ऐतिहासिक घटनाओ का उल्लेख अपने काव्यो मे किया है, उनके ग्रन्थो से ऐतिहासिक सामग्री

लेने का कार्य बड़ी सावधानी का होता है। अगर ऐसा न किया गया तो इतिहास, इति
कविताओ और कहानियो के रूप मे रह जाता है।

प्राचीन काल मे कवियो ने इतिहासकारो के स्थान की पूर्ति की थी। परन्तु उनमें
थी। वे त्रुटियाँ अतिशयोक्ति तक ही सीमित न थी। उनमे खुशामद की मनोवृति भी थ
की प्रसन्नता एवम् अप्रसन्नता—दोनो ही इतिहास के लिए जरूरी नही है। इतिहासका
शत्रु—दोनो के लिये एक-सा रहता है और अपने इस कार्य में वह जितना ही ईमानद
उतना ही वह श्रेष्ठ इतिहासकार होता है। खुशामद से इतिहास की मर्यादा नष्ट हो
वही परिस्थिति उसकी अप्रसन्नता मे पैदा होती है।

प्राचीन काल में राजा और नरेश अपनी प्रशंसा चाहते थे और इसके लिये
अपनी सम्पत्ति से खुश करते थे। कवि को भी अधिकांश अवसरो पर सम्पत्ति के सामने
करना पडता था। यह मनोवृत्ति कवि और इतिहासकार के लिये अत्यन्त भयानक है
प्रकार का अपराध प्राचीन काल के सभी कवियो को नहीं लगाया जा सकता। उस स
कवियो ने अपनी कविताओ मे इतिहास की सही घटनाओ का उल्लेख किया है। लेकिन प
देखने को मिलता है। इसके अपराधी इस देश के कवि ही नही माने जा सकते। दूसरे
इतिहास के सम्बन्ध मे कुछ इसी प्रकार के पक्षपात देखने को मिलते हैं। यहाँ पर इस वि
लिखने की आवश्यकता नही है।

ऐतिहासिक सामग्री के लिये इस देश मे दूसरे साधन भी है। भौगोलिक वृत्ता
राजाओ के चरित्र, घटनाओ को लेकर लिखे गये लेख, विभिन्न प्रकार की धार्मिक पुस्तके
में सहायता करती है। ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ, स्मृति पुराण, टिप्पणियाँ जन श्रुतियाँ शि
और ताम्रपत्र जिनमे बहुत सी ऐतिहासिक बातो के उल्लेख मिलते हैं—इस कार्य मे स
होते हैं। परन्तु इस प्रकार के सभी साधन इतिहास के अन्वेषक से बहुत सावधानी चा
बात को कभी न भूलना चाहिये कि आज का इतिहास, साहित्य मे अपना अलग से स्थान

भारतवर्ष मे पैर रखते ही मैंने इस बात का निर्णय कर लिया था कि एक ऐ
सम्बन्ध मे, जिसका ज्ञान योरप के लोगो को बिल्कुल नही के बराबर है, मैं ऐतिहासिक
अवश्य करूँगा। अपने इस निर्णय के अनुसार, यहाँ आते ही मैंने अपना कार्य आरम्भ क
पूरे दस वर्षों तक एक जैन विद्वान की सहायता लेकर उन पुस्तको की सामग्री लेने का
रहा, जिनमे राजपूतो के इतिहास की कोई भी घटना मिल सकती थी। यह कार्य साधार
उसके लिये अधिक से अधिक परिश्रम की आवश्यकता थी। इस कार्य और परिश्रम मे मुझे
था। लेकिन मेरे स्वास्थ्य ने अधिक साथ न दिया और रुग्नावस्था ने इस देश से लौट
मुझे मजबूर किया।

यदि यह स्वीकार करना पड़े कि कवियो ने अपने वर्णन मे अतिशयोक्ति से काम
उसके साथ यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि उस समय राजपूत जाति का वैभव नि
तरक्की पर रहा होगा। अनेक शताब्दियो तक एक वीर जाति का अपनी स्वतन्त्रता के लि
युद्ध करते रहना, अपने पूर्वजो के सिद्धान्तो की रक्षा के लिये प्राणोत्सर्ग करना और
मर्यादा के लिये बलिदान हो जाने की भावना रखना, मनुष्य के जीवन की ऐसी अवस्था
देखकर और सुनकर शरीर रोमांच हो जाता है। इस देश के ऐतिहासिक स्थानो मे पहुँच
मैंने सुना और समझा है, यदि उसका सही-सही चित्र खीच कर मैं अपने पाठको के

तो मुझे विश्वास है कि मै अपने देश वालो की उदासीनता को दूर कर सकूंगा, जिसके कारण वे इस देश के इतिहास को जानने और खोजने की चेष्टा नही करते।

इस देश के प्राचीन नगरो के खँडहरो के बीच मे बैठकर मैंने उनके विध्वंस होने की कहानियाँ ध्यान देकर सुनी है और उनकी रक्षा करने के लिये इस देश के जिन राजपूत वीरो ने अपने जीवन की आहुतियाँ दी है, उनको सुनकर मैं अवाक होकर रह गया हूँ। इस देश के इतिहास को समझने के लिये मैंने यहाँ के उन स्थानो को स्वय जाकर देखा है, जहाँ पर युद्ध हुए है अथवा किसी विदेशी शत्रु ने यहाँ पर आक्रमण किया है। घटनास्थलो को देखकर और उस समय की बहुत-सी बातो को सुनकर भी मैंने इतिहास की सामग्री जुटाने का काम किया है।

राजस्थान का इतिहास लिखते हुए मैंने इस बात को स्वीकार किया है कि राजस्थान और योरप के वीर जातियो का जन्म-स्थान एक ही था। मैंने भारत मे जागीरदारी की प्रथा ठीक वैसी ही पायी है, जैसी कि प्राचीन योरप मे प्रचलित थी और उसके टूटे-फूटे अग आज भी हमारे देश के राज्य शासन मे पाये जाते हैं। अपने जीवन मे मैंने जो ऐतिहासिक खोज की है, वह मुझे इस सत्य को स्वीकार करने के लिये बाध्य करती है। लेकिन सभी लोग मेरी इस विचारधारा के साथ सहमत न होगे, यह भी मैं जानता हूँ। यद्यपि इसको स्वीकार करने मे मैंने पक्षपात अथवा हठधर्मी से काम नही लिया। अब पुराना ससार बदल चुका है और नया ससार ऐतिहासिक खोजो पर अधिक विश्वास करने लगा है। अब अधिक समय तक उसे अन्धकार मे नही रखा जा सकता। जो लोग इतिहास की उस सच्चाई पर विश्वास नही करना चाहते, उनके समझने के लिए मैंने बहुत सी बाते प्रमाण-स्वरूप इस पुस्तक मे लिखी है। सन्देह और विवाद की बहुत-सी बाते पैदा की जा सकती है। लेकिन नवीन खोजो पर विश्वास करने वाले निश्चित रूप से इन बातो को महत्व देगे, ऐसा मै विश्वास करता हूँ। ऐसा करने पर ही पाठक-ग्रन्थकार के अनुसन्धान और परिश्रम की प्रशसा करेगे।

इस इतिहास मे अनेक कमजोरियाँ और त्रुटियाँ है, उन्हे मैं जानता हूँ। उनके लिए मैं सर्व साधारण से क्षमा माँगता हूँ। इन त्रुटियो के लिये मैं और कोई बात नही कहना चाहता, सिवा इसके कि मेरा स्वास्थ्य अधिक समय तक काम न कर सका, जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि वर्तमान अवस्था मे भी इस पुस्तक का सर्वसाधारण के सामने लाने का कार्य मेरे लिये बहुत कुछ कठिन और असाध्य हो गया था। मैं यह साफ बताना चाहता हूँ कि मैं इस इतिहास को ऐसे साँचे मे नही ढालना चाहता था कि जिससे उसकी बहुत सी काम की बाते पाठको के निकट अप्रकट रूप मे रह जायँ। मैं इस ऐतिहासिक ग्रन्थ को परिपूर्ण नही समझता। इसलिए भविष्य मे जो विद्वान इस इतिहास के लिखने का काम करेगे, मैं उनको अपने इस इतिहास की सामग्री को भेट करता हूँ। मुझे इस बात की चिन्ता नही है कि पुस्तक बहुत बढ गयी है बल्कि चिन्ता है कि उसकी कोई उपयोगी सामग्री एकत्रित करने मे रह तो नही गयी।

—जेम्स टॉड

विषय-सूची

भूगोल सम्बन्धी परिचय

राजपूत जातियों का ऐतिहासिक परिचय

पहला परिच्छेद

दूसरा परिच्छेद

तीसरा परिच्छेद

चौथा परिच्छेद

पाँचवाँ परिच्छेद

छठवाँ परिच्छेद

सातवाँ परिच्छेद

राजस्थान में जागीरदारी प्रथा

आठवाँ परिच्छेद

नवाँ परिच्छेद

दसवाँ परिच्छेद

मेवाड़ का इतिहास

ग्यारहवाँ परिच्छेद

बारहवाँ परिच्छेद

तेरहवाँ परिच्छेद

चौदहवाँ परिच्छेद

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

सोलहवाँ परिच्छेद

सत्रहवाँ परिच्छेद

अट्ठारहवाँ परिच्छेद

उन्नीसवाँ परिच्छेद

बीसवाँ परिच्छेद

इक्कीसवाँ परिच्छेद

बाईसवा परिच्छेद

तेईसवाँ परिच्छेद

चौबीसवाँ परिच्छेद

पचीसवाँ परिच्छेद

छब्बीसवाँ परिच्छेद

चौतीसवाँ परिच्छेद

पैंतीसवाँ परिच्छेद

छत्तीसवाँ परिच्छेद

सैंतीसवाँ परिच्छेद

अड़तीसवाँ परिच्छेद

उन्तालीसवाँ परिच्छेद

चालीसवाँ परिच्छेद

इकतालीसवाँ परिच्छेद

बयालीसवाँ परिच्छेद

तैतालीसवाँ परिच्छेद

चवालीसवाँ परिच्छेद

पैंतालीसवाँ परिच्छेद

छियालीसवाँ परिच्छेद

वीकानेर का इतिहास

सैतालीसवाँ परिच्छेद

अड़तालीसवाँ परिच्छेद

उनचासवाँ परिच्छेद

जैसलमेर का इतिहास

पचासवाँ परिच्छेद

इक्यावनवाँ परिच्छेद

बावनवाँ परिच्छेद

तिरपनवाँ परिच्छेद

चौवनवाँ परिच्छेद

पचपनवाँ परिच्छेद

छप्पनवाँ परिच्छेद

मरुभूमि का इतिहास

सत्तावनवाँ परिच्छेद

अट्ठावनवाँ परिच्छेद

जयपुर का इतिहास

उनसठवाँ परिच्छेद

साठवाँ परिच्छेद

इकसठवाँ परिच्छेद

बासठवाँ परिच्छेद

शेखावाटी का इतिहास

तिरसठवाँ परिच्छेद

चौसठवाँ परिच्छेद

पैंसठवाँ परिच्छेद

छाछठवाँ परिच्छेद

बूँदी का इतिहास

सरसठवाँ परिच्छेद

अरसठवाँ परिच्छेद

उनहत्तरवाँ परिच्छेद

सत्तरवां परिच्छेद

कोटा-राज्य का इतिहास

छियत्तरवाँ परिच्छेद

सतहत्तरवां परिच्छेद

ऐतिहासिक यात्रा

अठत्तरवां परिच्छेद

मारवाड़ की तरफ

उन्नासीवां परिच्छेद

अस्सीवा परिच्छेद

इक्यासीवां परिच्छेद

बयासीवां परिच्छेद

तिरासीवां परिच्छेद

राजस्थान का इतिहास

भूगोल सम्बन्धी परिचय

भारतवर्ष मे राजपूत राजाओ के रहने वाले प्रदेश का नाम राजस्थान है । इसको रायथाना और राजपूताना भी कहा जाता है । शहाबुद्दीन गोरी के आक्रमण के पहले रा विस्तार कितना था, यह नही कहा जा सकता । हो सकता है कि उस समय उसका गंगा, यमुना को पार कर हिमालय के करीब तक पहुँच गया हो । इस समय हमारे सा ही राजस्थान है, जिसके अन्तर्गत अनेक जातियो के लोग रहते है और जिसे राजस्था राजपूताना कहा जाता है । इसके पश्चिम में सिन्धु नदी का कछार, पूर्व मे बुन्देलखण्ड, सतलज नदी के दक्षिण का मरुस्थल भाग, जो जंगल देश कहलाता है और दक्षिण मे f पर्वत है । इसका क्षेत्रफल तीन लाख पचास हजार वर्गमील है । इस इतिहास मे उसके वर्णन का जो क्रम रखा गया है, वह इस प्रकार है । (१) मेवाड़ अथवा उदयपुर, (२) अथवा जोधपुर, (३) बीकानेर और कृष्णगढ, (४) कोटा, (५) बूंदी, (६) आम्बेर अथव उसके स्वतन्त्र और परतन्त्र भाग, (७)जैसलमेर, (८) हिन्दुस्तान का मरुस्थल भाग, जो के कछार तक चला गया है ।

सन् १८०६ ईसवी मे, ईस्ट इण्डिया कम्पनी की तरफ से जो राजदूत सिंधिया-द भेजा गया था, उसके साथ मेरी नियुक्ति हो गयी थी । उसी समय से इस इतिहास जुटाने का काम मैने आरम्भ कर दिया था । उस समय के पहले बने हुए राजस्थान के न थे मैने उसे सही तौर पर तैयार करने का काम किया और सन् १८१५-ईसवी मे भूगोल नक्शो के रूप मे तैयार करके मारक्विस आफ हेस्टिंग्स को मैने भेट किया, वह का साबित हुआ ।

सिंधिया की सेना उन दिनो मे मेवाड़ मे थी । इस स्थान से ही नही, बल्कि की वास्तविक स्थिति से योरुप के लोग पूर्ण रूप से अपरिचित थे । उस समय तक यहाँ के वने थे । उनमे यहाँ का कोई भी प्रसिद्ध स्थान तक नक्शो मे सही स्थानो पर न था, यहाँ मेवाड़ के उदयपुर और चितौर की दोनो राजधानियाँ भी नक्शो मे गलत स्थानो पर दि थी और वह गलती इस प्रकार थी कि चितौर उदयपुर के पूर्व और ईशान के मध्य मे वजाय, अग्निकोण मे दिखाया गया था । इसका साफ अर्थ यह है कि राजस्थान के विल्कुल ज्ञान नकशा वनाने वालों को न था । जो नक्शे उस समय तक वने थे, उनमे अन्य कोई वर्णन नही था । जो नक्शे सन् १८०६ ईसवी तक के वने हुए थे, उनमे राजस्थान पश्चिमी और मध्य के राज्यो का पता न था । उस समय तक लोग यह समझते थे कि की समस्त नदियाँ दक्षिण की ओर वढ़ती हुई नर्बदा मे जाकर मिलती है । इस प्रकार क संशोधन करने का कार्य भारतवर्ष के भूगोल तैयार करने वाले मिस्टर रेमल ने किया था

बाद उसमे जो त्रुटियाँ रह गई थी, उनको दूर करने का काम मेरे द्वारा हुआ । यहां पर यह लिखना अनुचित न होगा कि मेरे बाद जो नकशे बने है, उनका आधार मेरा तैयार किया हुआ नक्शा रहा ।

उदयपुर जाने के लिये अंगरेजी दूत का रास्ता आगरे से जयपुर की दक्षिणी सीमा से होकर था । इस रास्ते के कुछ अंश की पैमाइश डाक्टर डवल्यु हण्टर ने की थी । मैंने अपनी पैमाइश मे उसको आधार मान लिया । डाक्टर हण्टर का तैयार किया हुआ नक्शा उस रेजीडेण्ट के पास मौजूद था, जो सिंधिया दरबार को भेजा गया था और जिसने होकर सन १७९१ ईसवी मे राजदूत कर्नल पामर गया था । उतने भाग का नक्शा वह सही था । इसलिये अपनी पिछली पैमाइश मे मैंने उसी का आधार लिया । उस नवशे मे मध्य भारत के समस्त सीमा के स्थान दिखाये गये थे । उस नक्शे मे आगरा, नर्वर, दतिया, झाँसी भोपाल, सारंगपुर, उज्जैन और वहां से लौटने पर कोटा बूंदी, रामपुरा और बयाना से लेकर आगरा तक सभी स्थानो को प्रगट किया गया था । इस प्रकार डाक्टर हण्टर का जो नक्शा था, वह रामपुरा तक ही मेरे लिये सहायक रहा । उसके पश्चात् रामपुरा से उदयपुर तक मुझे नयी पैमाइश करनी पडी ।

जिस सेना के साथ मै था, उदयपुर से चित्तौर के करीब से गुजरती हुई वह सेना मालवा के मध्य मे पहुँचकर विन्ध्याचल से निकलने वाली अनेक नदियो को पार करती हुई बुन्देलखण्ड की सीमा पर खिमलासा मे जाकर रुकी और कुछ दिनो तक वहां पर उसने मुकाम किया । सिंधिया के दरबार मे रहकर मै इस प्रदेश के विभिन स्थानो मे घूमता रहा और पैमाइश का काम करता रहा । सन् १८१० और ११ मे पैमाइश करने वालो की मैने टोलियां नियुक्त की और आवश्यकता के अनुसार मै उनसे काम लेने लगा । अपने इस काम के लिये मैने और भी साधन जुटाये थे । पारि-तोषिक देकर मैने इस देश के अनेक जानकारो से काम लिया । प्राचीन हिन्दू राज्यो मे एक नगर से दूसरे नगर की दूरी का हिसाब रहता था ।*

जिन लोगो को मैने इस काम मे लगा रखा था, उनके कामो को मै देख सुनकर सही समझने का काम करता था । इन तरीको से कई वर्षो मे मैने यहां के रास्ते का नक्शा तैयार कर लिया और फिर उनकी सहायता से एक साधारण नक्शा तैयार किया । उसके बाद बने हुए नक्शो की त्रुटियो को समझने का काम किया । पैमाइश के काम मे मैने बडी सावधानी से काम लिया । सन् १८१५ ईसवी मे जो मैने नक्शा तैयार करके गवर्नर जनरल को दिया था, उससे भारत मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी को काम करने मे बडी सहयता मिली । पिन्डारियो के युद्ध मे उस नक्शे ने बहुत काम किया और बाद मे पेशवा के राज्य को अङ्ग-भङ्ग करने मे उसने विशेष सहायाता पहुँचायी ।

सन् १८१७ से १८२२ ईसवी तक पैमाइश करके मैने रेखाये तैयार की, इस स्थान पर मै कप्तान पी० टी० वाघ के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनकी सहायता से मेरे कार्य मे बहुत कुछ सुधार का काम हुआ । उनकी पैमाइश से चितोर, माण्डलगढ, जहाजपुर, राजमहल, भिणाय, बदनौर और देवगढ की तरह के अनेक स्थानो का कार्य सरल हो गया । सन् १८२० ईसवी मे मैने अर्वली को पारकर एक यात्रा की और उसमे मै कुम्भलमेर और पाली होता हुआ

* पाटलिपुत्र (पटना) के मौर्यवंशी राजा चन्द्रगुप्त के दरबार मे सीरिया के राजा सेल्युकस का के एलची मेगस्थनीज ईसा से ३०६ वर्ष पूर्व आया था, उसने लिखा है कि भारतवर्ष मे प्रत्येक दस स्टेडियम के फासिले पर कोसो के पत्थर लगे हुए है । एक स्टेडियम ६०६ फीट ६ इंच का होता है ।

भूगोल सम्बन्धी परिचय

मारवाड़ की राजधानी जोधपुर और मेडता होकर लूनी नदी की खोज करता हुआ अजमेर त
गया। उसके बाद घूमता हुआ उदयपुर लौटकर आ गया।

राजस्थान के राज्यों की भौगोलिक स्थिति वहुत-सी बातो मे एक दूसरे से भिन्न है। इ
उसका संक्षेप मे यहाँ पर कुछ वर्णन आवश्यक है। आबू पहाड़ के सबसे ऊँचे शिखर प
होकर देखने से अर्वली पहाड़ की १५०० फीट नीची श्रेणी को पार करती हुई दृष्टि मे
मैदानो तक पहुँचेगी। चित्तौड़ के करीब ऊँची भूमि पर खडे होकर देखने से यदि रतनग
सीगोली होकर कोटा की ओर जाने वाले रास्ते पर दृष्टिपात किया जाय तो रूसी तातार
छोटे मैदानो की तरह के तीन मैदान दिखायी देगे।

अर्वली पर्वत विन्ध्याचल से मिला हुआ है। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि
विन्ध्याचल से निकला है। यद्यि ऊँचाइयो को ले क प्रकार की इस
मे शंकाये भी की जा सकती है। आबू र खडे ोकर मालवा की भूमि पर दृष्टिपात करने से
के काले मैदान दिखाई देते है। विन्ध्याचल के शिखरो से निकलकर उत्तर की अ र बहने वाली
जल की धाराये देखने मे आती है। उनमे कुछ धाराये ऊँचे टीलो से घाटियो पर गिरती है औ
पहाडी रास्तो को पार करती हुई चम्बल नदी मे जाकर मिल जाती है।

कुम्भलमेर से अजमेर तक का सम्पूर्ण भाग मेरवाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। ाँ पर
की एक पहाडी जाति के लोग रहा करते है। इस प्रकार के स्थानो की तिहासिक बाते
पृष्ठो मे इतिहास के साथ लिखी गयी है। इस पहाडी स्थान की चौडाई लगभग ६ से १५
तक है। उस स्थान मे करीब डेढ सौ गाँवो की आबादी है। यहाँ पर खेती का काम धिक
है। इस पर्वत माला पर खडे होकर देखने से इसकी चोटियो पर क किले दिखाई देते
अर्वली और उसके साथ सम्बन्ध रखने वाली पहाड़ियो पर खनिज और धातु सम्बन्धी अनेक
पाये जाते है। वहाँ पर जो खाने है, उनमे राजाओ का अधिकार रहता है। कुछ पहले मे
राँगे की खाने थी। य ाँ के ग का कहना है कि यहाँ पर खानो से चाँद निकाली जाती
लेकिन मुगल शासन काल मे उन खानो की बरबादी हो गई। य ाँ पर ताँबे क
भी थी, जिनसे पैसे बनाये जाते थे। इसके पश्चिमी भाग मे सुरमा भी मिलता था। तामडा,
मणि, बिल्लौर और साधारण श्रेणी के भी मेवाड़ मे पाये जाते थे।

अर्वली के ऊँचे स्थानो के बाद र र मध्य हिन्द की ऊँची और ब
जमीन कुछ षता रखती है। इसीलिये उसके सम्बन्ध मे थोडा सा यहाँ प्रकाश
आवश्यक है। इस जमीन की ऊँचाई और विषमता पश्चिम से पूर्व की तरफ मैदानो को पार
पर साफ-साफ दिखायी देती है। रणथम्भोर के करीब यह ऊँची जमीन अनेक पक्तियो मे ब
हुई दिखायी देती है। सूर्य की धूप मे उसके शिखर श्वेत रंग के मालूम होते है। ये स्थान
से पृथक होने के बाद अपनी बनावट पहाडी बनाये रखते है। यहाँ की नदियो का प्रवाह बडी
के साथ बहता हुआ दिखायी देता है। उनमे चार नदियाँ अपनी तेज धारा के लिये अधिक
है। इन ऊँची और बराबर जमीन का धरातल दूसरे ही प्रकार का है। कोटा के आगे की ि
चट्टान पर वनस्पति का पूर्ण अभाव है। परन्तु उसका भाग उपजाऊ होने के ये अ
है और भारत मे कृषि के लिये अधिक उपयोगी माना जाता है। यहाँ की जमीन खे
के लिये अच्छी नही समझी जाती। यहाँ पर शीशा और लोहा पाया जाता है। जिन स्थ
खनिज पदार्थो की खाने है, उनका लाभ यहाँ के लोग बहुत कम उठाते है। यहाँ पर

रॉंगा और तॉंबा अधिक तादाद मे प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन इस प्रकार की चीजों के लिये भी यहाँ के लोग दूसरे देशों पर आश्रित रहते हैं।

मध्य हिन्द की नदियो मे चम्बल नदी सबसे बड़ी है। उसका बहाव मालवे विन्ध्याचल पर्वत के बीच मे है। इस नदी की लम्बाई पांच सौ मील से अधिक है। उसके किनारे बहुत-सी जातियों के लोग रहा करते है। सिंधिया, चन्द्रावत, सिसोदिया, हाडा, गौड, जादों, [illegible], गूजर, जाट, तोवर, चौहान, भदौरिया, कछवाहा, सेंगर और बुन्देला आदि अनेक जातियों के निवास स्थान चम्बल और कुँवारी नदियो के बीच मे है। लूनी नदी के मार्ग की लम्बाई उसके आरम्भ से लेकर आखीर तक ३०० मील से अधिक है। दक्षिण की तरफ लूनी नदी के उत्तर तरफ से और पूर्व की ओर शेखावाटी की सीमा से रेतीले भाग की शुरुआत होती है। बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर आदि सभी रेतीली जमीन पर है। जैसलमेर मरुस्थल से घिरा हुआ है। वहाँ का दुर्ग एक पहाड़ी पर कई सौ फीट की ऊँचाई पर बना है। कहा जाता है कि यहाँ पर किसी समय [illegible] नाम के किसी राजा का अधिकार था। लेकिन उसका अब कोई अस्तित्व यहाँ पर नहीं है। राजस्थान के जो प्रदेश इस मरुस्थली भूमि पर है, उनको मरुभूमि के नाम से ही लोग [illegible] मानते है। वास्तव मे यह नाम उसी भाग के लिये अधिक उपयोगी मालूम होता है जो राठौर राजाओं के अधिकार मे है।

लूनी नदी के बालोतरा स्थान से लेकर उसके समस्त थाट और उमरसुमरा तथा जैसलमेर के पश्चिमी हिस्से बिल्कुल सुनसान तथा उजाड़ है। लेकिन सतलज नदी से लेकर पाँच सौ मील की लम्बाई और लगभग पचास मील की चौड़ाई तक की सभी भूमि अनेक प्रकार की चीजों के लिये उपयोगी है। वहाँ पर सिन्धु नदी के कछार और उसकी गीली जमीन पर रहने वाले सिन्धिये अपनी भेडे चराया करते है। इन स्थानों पर जल के बहुत से झरने है। उसके आसपास राजड़ सोढा, मॉंगलिया और सहराई लोग प्राय दिखायी देते है।

यहाँ पर विस्तार के भय से झीलों, सब्जी क्षेत्रों एवं मरुस्थल की [illegible] पैदावारों का वर्णन नही किया जाता और न वनस्पति तथा खनिज पदार्थों का ही वर्णन करने की आवश्यकता है। यद्यपि जैसलमेर के निकट एक पहाड़ी है जिसमे पीले पत्थर अधिक पाये जाते है और जिनके खूबसूरत पत्थर इस देश से अरब देश तक की अच्छी इमारतों मे लगाये गये है।

राजपूत जातियों का ऐतिहासिक परिचय

पहला परिच्छेद

पुराणो की सामग्री—ऐतिहासिक सामग्री देने वाले ग्रन्थ—पौराणिक ग्रन्थो की सहा राजाओ के नामो मे मतभेद —सृष्टि की उत्पत्ति—सभी जातियो का वर्णन—विभिन्न विश्वास—मनुष्य जाति का इतिहास—भविष्य पुराण का वर्णन—मनुष्य जाति के हिन्दुओं और यूनानियो का विश्वास—राजपूत और सीथियन लोग—उनका एक-सा जीवन।

मध्य और पश्चिमी भारत की वीर राजपूत जातियों का इतिहास लिखने के समय पहले यह जरूरी मालूम होता है कि उनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई, इस पर सावधानी के साथ कर लिखा जाय। इस छानवीन के लिये मैने हिन्दुओ के पौराणिक ग्रन्थो को प्राप्त किया और पण्डित मण्डली के द्वारा उनको समझने का काम किया। उस मण्डली का प्रधान यती ज्ञान नामक एक व्यक्ति था, इन पुराणो मे इस देश के ऐ ासिक और भौगोलिक व पाये जाते लेकिन इस प्रकार की सामग्री के जुटाने मे भागवत, कन्द अग्नि औ विष्य पुराण सहायता करते है। इन पौराणिक ग्रन्थो मे इतिहास और भूगोल की जो ी मिलती है, एक-सी नही है। कुछ वातो मे इन ग्रन्थो के वर्णन, एक दुसरे के विरोधी हो जाते है। पर प्रकार के विरोध राजाओ के नामो और उनकी संख्या के सम्बन्ध मे ही अधिक पाये जाते ऐतिहसिक वर्णन मे कोई मतभेद नही है।

सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे हिन्दुओ के ग्रन्थो का वर्णन बहुत कुछ उसी प्रकार क जिस प्रकार ससार की अन्य जातियो ने इसके सम्बन्ध मे वर्णन किया है। सभी जातियो के के अनुसार, सृष्टि की उत्पत्ति महाप्रलय के वाद से आरम्भ होती है। इस उत्पत्ति के सम्ब हिन्दुओ के ग्रन्थ अग्नि पुराण मे लिखा है।

ब्रह्मा की आज्ञा से समुद्र ने समस्त ससार को नष्टकर दिया। उस समय वैवस्वत मनु (जो कि हिमालय पर्वत के पास रहा करता था, कृतमाला नदी मे देवताओ को जलाञ्जलि दे था, अकस्मात उस समय उसके हाथ मे एक छोटी-सी मछली आ गयी। उस समय वैवस्वत सुनाई पडा—'इसकी रक्षा करो।' मछली ने वढना आरम्भ किया और उसने विशाल काया ध कर ली। वैवस्वतमनु अपने पुत्रो, स्त्रियो और तपस्वियो के साथ समस्त जीवधारियो का अपने साथ लेकर उस नाव पर वैठ गया, जो उस मछली के सीग मे बँधी थी। इस प्रकार वे वच गये। यहाँ पर उत्तर की एक विशाल पर्वत श्रेणी का वर्णन मिलता है, जिसके करीव वै मनु रहा करता था, जिससे संसार के समस्त मनुष्यो की उत्पत्ति हुई है। उस मनुष्य को के ग्रन्थो मे वैवस्वतमनु जिसे हिन्दू सूर्य का पुत्र मानते है और ईसाई लोग उनको नूह के मानते है, लिखा गया है। उन लोगो का विश्वास है कि महाप्रलय मे नूह वच गया था और के वाद से ससार मे मनुष्यो की उत्पत्ति हुई है। भविष्य पुराण मे लिखा है.

"वैवस्वतमनु" जो सूर्य का पुत्र था, सुमेरु पहाड़ पर राज्य करता था। उसके वंश में ककुत्स्थ नामक राजा की उत्पत्ति हुई। उसने अयोध्या के राज्य पर अधिकार किया और उसके वंशज धीरे-धीरे संसार में फैल गये।"

इस सुमेरु पर्वत को ब्राह्मण महादेव, आदीश्वर और बागेश का निवास स्थान मानते हैं और जैनियों का कहना है कि आदिनाथ अर्थात् प्रथम जिनेश्वर के रहने का स्थान सुमेरु पर्वत पर था। उनके अनुसार यह भी मालूम होता है कि वहीं पर मनुष्यों को खेती और सभ्यता की शिक्षा दी गयी थी। यूनानी लोग सुमेरु पर्वत को बैकस का निवास स्थान मानते हैं। उन लोगों में एक प्रचलित कथा का सार इस प्रकार है "बैकस जुपीटर की रान से उत्पन्न हुआ था।"

मनुष्य जाति के इतिहास के सम्बन्ध में हिन्दुओं और यूनानी लोगों का एक ही विश्वास है। दोनों जातियों के प्राचीन ग्रन्थ एक ही प्रकार का निर्णय करते हैं। उनके ग्रन्थों से मालूम होता है कि संसार के समस्त मनुष्यों की उत्पत्ति एक ही आदमी से हुई और उस आदमी के नाम भिन्न-भिन्न जातियों ने अलग लिखे हैं। वास्तव में आदीश्वर, बागेश, बैकस, वैवस्वतमनु और सीनस आदि सभी नाम उस आदि पुरुष नूह के ही नाम हैं, जिससे मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई। हिन्दुओं के ग्रन्थ मनुष्य की उत्पत्ति का स्थान पश्चिम में काकेशस पर्वत के मध्य में स्वीकार करते हैं। वैवस्वतमनु, जो उनके अनुसार इस सृष्टि का आदि पुरुष था, वहीं पर राज्य करता था। उसके वंशज वहाँ से चल कर पूर्व की ओर सिन्धु नदी और गंगा के किनारे आये और कोशल में अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया, जो अब अवध के नाम से प्रसिद्ध है। उस समय हिन्दू और शक जाति में कोई भेद न था। सब मिल कर एक ही स्थान में रहते थे और एक साथ जीवन व्यतीत करते थे।

मध्य एशिया के जिस भाग से आमू आक्सस, जेहून और दूसरी नदियाँ प्रवाहित हुई हैं, उसी पर्वतीय स्थान को सूर्य और चन्द्रवंशी लोगों ने अपना आदि स्थान स्वीकार किया है।* इन सब बातों से साबित होता है कि संसार के सभी मनुष्यों का मूल स्थान एक ही था और बाद में वहीं से लोग पूर्व की तरफ आये। संसार की सभी जातियाँ उसे अपना जन्म स्थान स्वीकार करती हैं।

राजपूतों के स्वभावों और उनकी आदतों से भी इस बात का साफ-साफ पता चलता है कि वे और शक लोग किसी समय एक थे और ठण्डे प्रदेश में एक साथ रहा करते थे। उसका प्रमाण यह है कि शक लोगों की सभी आदतें राजपूत जातियों में पायी जाती हैं। शीत प्रधान देश के रहने वाले शकों के स्वभाव और उनकी आदतों को अपना लेना गर्म देश के निवासियों के लिये सम्भव न था। शक लोगों की वीरता, उनकी आदतें और उनके विश्वास राजपूतों में पूर्ण रूप से देखने को मिलते हैं। अनेक प्रकार की सामाजिक प्रथाओं के साथ-साथ अश्वमेध यज्ञ की प्रथा भी राजपूतों में वही है, जो शक लोगों में पाई गई है। इन सब बातों का साफ अर्थ यह है कि आरम्भ में बहुत थोड़े से मनुष्य संसार में थे और वे बिना किसी भेद और विचार के एक ही स्थान पर रहकर अपना जीवन व्यतीत करते थे।

---

* प्रसिद्ध इतिहासकार सर वाल्टर रेले ने अपने ग्रन्थ 'हिस्ट्री ऑफ दि वर्ल्ड' में लिखा है- जल प्रलय के बाद सबसे पहले भारत में ही वृक्षों और लताओं की उत्पत्ति हुई और मनुष्य की आबादी शुरू हुई। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि मूसा ने जिस अरारट पर्वत का जिक्र किया है उसका अर्थ जर्मनी भाषा में पर्वत माला है। वह स्थान काकेशस (कोहकाफ) की पर्वतमाला के हिस्से में रहा होगा। वह स्थान उस पर्वत माला की पूर्व दिशा में होना चाहिए। सर वाल्टर रेले के अनुसार, मनु का निवास स्थान भारत और शाकद्वीप के बीच में होना चहिए।

दूसरा परिच्छेद

राजपूतो की वशावली—उसकी खोज का काम—हिन्दू ग्रन्थो की सहायता—पु
मिश्रित सामग्री—भाष्यकारो की मनमानी—उसका प्रधान कारण—बैबिलोनिया की
भाष्यकारो के पहले भारतीय पुराण—अनुसधान करने वालो पर आपत्ति—भारत
धार्मिक नेतृत्व—ब्राह्मण और राजपूत—दोनो अधिकारी थे—हिन्दू ग्रन्थो के प्रमाण-
विधान—भारतीय शासन मे ब्राह्मणो का स्थान—उसके उदाहरण—-वर्ण व्यवस्था।

सूर्य और चन्द्रवशी राजपूतो की वशावली का वर्णन करने के लिये यहाँ पर ह
और अग्निपुराण से सामग्री लेने की चेष्टा की है। इन वशावलियो का कुछ हिस्सा सर
जोन्स, मिस्टर बेटले और कर्नल विल्फर्ड के द्वारा एशियाटिक रिसर्चेज की पुस्तको मे प्र
चुका है। फिर भी हिन्दुओ के ग्रन्थो का अवलोकन करना हमारे लिये जरूरी है। हमे यह
कोई अधिकार नही है कि भारत मे इन वशो की वशावलियाँ गलत है। इसलिये कि उ
तियो मे भी उनके इतिहासो का सत्य है और हिन्दुओ के प्रसिद्ध ग्रन्थ ही अपने इतिहास
के अधिकारी है।

यह बात सही है कि पुराणो मे ऐतिहासिक वर्णन है। लेकिन उनके भाष्यकारो
ऐतिहासिक सामग्री मे जिस प्रकार की निकृष्ट मिलावट की है, उससे उनके ऐतिहासिक
अनुसधान करना बहुत कठिन हो गया है। हिन्दुओ ने बौद्धिक उन्नति की थी, इसका
भी उनकी टूटी इमारतो और पौराणिक चित्रो से मिलता है। उन्नति के बाद पतन का स
और उस समय नयी रचनाओ के अभाव मे पुरानी रचनाओ के केवल भाष्य किये गये।
भाष्यकारो को नियत्रण मे रखने के लिये, ऐसा मालूम होता है कि सच्चे समालोचको की
बहुत कमी थी। इस अभाव मे भाष्यकारो ने मनमानी की और किसी प्रकार का भय
कारण प्रत्येक ब्राह्मण भाष्यकार ने यह समझ लिया कि हम इन प्राचीन ग्रन्थो मे जितनी
जनक बातो की मिलावट करेगे, उतनी ही हमारी प्रशसा होगी। परिणाम यह हुआ कि
वक मिश्रण मे पुराणो की ऐतिहासिक सच्ची सामग्री विलीन हो गयी और जो पुराण
सामग्री के लिये आधार थे, असत्य और आश्चर्य मे डाल देने वाली कहानियो के रूप मे
यही अवस्था बैबिलोनिया देश की हुई थी। ईसा से तीन शताब्दी पहले उसके इतिहास
सन ने अपनी-अपनी कल्पनाओ के द्वारा उस देश के पुराने इतिहास को आश्चर्यमय बना
लेकिन उस देश की कोई बडी क्षति इसलिये नही हुई कि उस देश के पुराने इतिहास
लेखो द्वारा इतिहास के सही तत्वो का छिप जाना सम्भव न हो सका। परन्तु भारतवर्ष
स्थिति इससे बिलकुल भिन्न है।

भाष्यकारो के पहले इस देश के पुराण कुछ और थे। यदि आरम्भ से ही वे
अस्पष्ट होते, जैसे कि वे आज है तब तो इस बात पर विश्वास करना ही कठिन हो
भारतवर्ष ने विद्या और बुद्धि मे बहुत बडी उन्नति की थी। परन्तु ऐसा न था। पतन
होते ही इस देश मे नयी रचनाये नही लिखी गयी। बल्कि पुराने ग्रन्थो को रहस्यपूर्ण

लिये भाष्य लिखे गये और उन भाष्यो के अगणित भाष्य तैयार कर डाले गये। इसका नतीजा यह हुआ कि उन ग्रन्थो की मूल सामग्री विलीन हो गयी और उनके महत्त्वमय भाष्य लोगो के सामने आ गये। आज की परिस्थिति यह है कि उनमे सुधार और परिवर्तन के नाम पर कोई खोज का काम नही कर सकता। अगर कोई ऐसा करने का साहस करे भी तो वह अधर्मी और विरोधी समझा जाय।

ससार की अन्य जातियो की तरह हिन्दुओ ने भी धीरे-धीरे अपनी उन्नति की होगी। उस समय ससार की जो जातियाँ उत्थान के मार्ग मे आगे बढ रही थी, उनके साथ हिन्दुओ ने निरन्तर कुछ न कुछ अवश्य ही एक दूसरे से लिया होगा, यह स्वाभाविक है, लेकिन यदि किसी देश ने ऐसा नही किया तो यह मानी हुई वात है कि उसकी उन्नति स्थायी रूप से अधिक समय तक नही चल सकती।

इस देश के आरम्भ काल मे धार्मिक नेतृत्व आजकल की तरह कुछ लोगो के लिये पैतृक नही था। वल्कि उस पर सब का समान रूप से अधिकार था। यह बात मै हिन्दुओ के ग्रन्थो के आधार पर ही लिखने का साहस कर रहा हूँ। इक्ष्वाकु के दस लडके थे। उनमे तीन धार्मिक हो गये थे और उन तीन मे एक ने अग्निहोत्र लेकर अग्नि की पूजा की थी। उनका एक पुत्र व्यवसायी हो गया था। चन्द्रवशी राजपूत पूर्तवा के छै पुत्रो मे चौथे का नाम रेभा था। उसकी पन्द्रहवी पीढी मे हारीत हुआ और वह अपने आठ भाइयो के साथ धार्मिक हो गया था। उसी ने कौशिक गोत्र की प्रतिष्ठा की थी, जो ब्राह्मणो की एक शाखा है।

राजा ययाति की चौवीसवी पीढी मे भारद्वाज नाम एक राजा हुआ। उनके नाम पर एक गोत्र की प्रतिष्ठा हुई और उस गोत्र वाले आज तक पुरोहित का काम करते है। राजा मनु के दो पुत्रो ने धार्मिक वृत्ति के कारण ब्राह्मण हो गये और एक ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज बहुत से काम ब्राह्मणो तक ही सीमित है। लेकिन पहले ऐसा ना था। हिन्दुओ के ग्रन्थो मे इस वात के प्रमाण मिलते है कि अनेक सूर्यवशी राजा शासन करते हुए भी ब्राह्मणो के काम करते थे। रामचन्द्र के पहले और वाद तक राज्य वश मे उत्पन्न होने वाले धर्मावलम्बी होकर धार्मिक वृत्ति के कार्य करते रहे। उनके सिर के वाल जोगियो की तरह के होते थे। उन्ही ग्रन्थो मे इस वात के प्रमाण भी मिलते है कि राजपूत राजाओ की लडकियो के विवाह राजर्षियो के साथ होते थे। शूरवीर पांचालिक की लडकी अहिल्या का विवाह गौतमऋषि के साथ हुआ था जो यदुकुल की एक शाखा है हैहयवंश मे उत्पन्न होने वाले राजा सहस्त्रार्जुन की लडकी जमदग्नि को व्याही गयी थी। परशुराम के पिता का नाम जमदग्नि था। शासन और धर्म का अधिकार क्षत्रियो और ब्राह्मणो को था। दोनो को शासन और धर्म मे वरावर अधिकार थे। यही अवस्था प्रचीन काल मे मिश्र और रोम की थी। रोम और मिश्र के लोग अपनी रुचि के अनुसार शासन और धर्माधिकार स्वीकार कर सकते थे। यही अवस्थ उस समय भारत के राजाओ और ब्राह्मणो की थी। समाज का विधान इसका विरोधी न था। हेरोडाटस ने लिखा है कि मिश्र के शासन का अधिकार धर्म के आचार्यो और वीर पुरुषो को ही दिया जाता था। शासन का अधिकारी कोई तीसरा नही हो सकता था।

भारत के शासन मे ब्राह्मणो का स्थान कम नही रहा। जमदग्नि से लेकर महाराष्ट्र के पेशवा तक मे इस वात के प्रमाण वरावर मिलते है कि ब्रह्मण इस देश मे शासन करते रहे। शासको पर ब्राह्मणो का आधिपत्य था। मिथिला का राजा जनक राजर्षि विश्वामित्र और वशिष्ठ से हाथ जोड़कर

प्रार्थना किया करता था। बहुत से ब्राह्मणो ने भारत मे राज्य किया। रावण ब्राह्मण थ
लका मे राज्य करता था। उसने अयोध्या के राजा राम से युद्ध किया था।

विश्वामित्र गाधिपुरा के कौशिक वशी राजा गाधी का लडका था। वह इक्ष्व
वशज अयोध्या के राजा अम्बरीप का समकालीन था और रामचन्द्र से दो सौ वर्ष पहले हुअ
उस समय जाति व्यवस्था समाज मे मजबूरी के साथ कायम हो रही थी। इसलिए यह
किया जा सकता है कि भारत मे जिस समय जाति व्यवस्था कायम हुई वह समय ईसा से
चौदह वर्ष पहले का था। महाभारत महाकाव्य का लिखने वाला व्यास दिल्ली के राजा
बेटा था और योजनगन्धा नाम की मल्लाह जाति की लडकी से उसकी अविवाहित अवस्था
हुआ था। व्यास के उत्पन्न होने के बाद योजनगन्धा का विवाह शान्तनु के साथ हुआ और
विचित्रवीर्य नामक पुत्र पैदा हुआ। विचित्रवीर्य के तीन लडकियाँ पैदा हुई उसमे एक क
पाण्डया था। * शान्तनु के वश मे कोई अन्य पुरुप पैदा न होने के कारण व्यास अपनी
का धर्म पिता हुआ और बाद मे अपनी धर्मपुत्री पाण्डया के साथ उसने विवाह कर लिया।
इतिहासकार ऐरियन ने इस कथा का कुछ परिवर्तन के साथ उल्लेख किया है, जिसके लि
यहाँ पर आवश्यकता नही है।

उस लडकी के वशजो ने इकतीस पीढी तक ईसा से पूर्व ११२० वे वर्ष से लेकर
वर्ष तक राज्य किया और पाण्डु वश के अतिम राजा का शासन अयोग्य होने के कारण,
सरदारो ने विद्रोह किया और उसी वश के सैनिक मन्त्री को राजा बनाया गया। उसके बाद
दित्य तक दूसरे दो वशो ने राज्य किया। भारत की राजधानी उत्तर से उठकर दक्षिण
जाने के कारण विक्रम सम्वत् की चौथी सताब्दी और कुछ अधिकारी लेखको के अनुसार
शताब्दी तक इन्द्रप्रस्थ मे कोई शासक न रहा। उसके पश्चात् तोवर जाति के राजपूतो ने,
आपको पाण्डु के वशज कहते थे, इन्द्रप्रस्थ पर शासन किया और उस राजधानी का नाम
रखा गया। तोवर जाति के जिस राजा ने दिल्ली मे राज्य किया उसका नाम अनगपाल प्र
बारहवी शताब्दी तक उसका वश चलता रहा। उसने दिल्ली की राजगद्दी अपनी लडकी
पृथ्वीराज को दे दी, जो भारत का अन्तिम राजपूत सम्राट हुआ और मुसलमानो के द्वारा,
पराजित होने पर भारत मे मुस्लिम शासन का प्रारम्भ हुआ।

---

* इन तीन लडकियो मे एक लडकी विचित्रवीर्य के द्वारा एक दासी से वैदा हुई
दासी भी विचित्रवीर्य के राजमहल मे रहा करती थी और रानियो की तरह उसके साथ
किया जाता था इसलिए यह निर्णय करना बहुत कठिन था कि इन तीन कन्याओ मे दा
उत्पन्न होने वाली पुत्री कौन है। इसके लिये व्यास पर निर्णय करना रखा गया। व्यास
दी कि तीनो राज कन्याये मेरे सामने नग्न होकर निकले। उस अवस्था मे बडी लडकी
के कारण नेत्र बन्द करके व्यास के सामने निकल गई। उस लडकी से हस्तिनापुर के राजा
राष्ट्र का जन्म हुआ। दूसरी लडकी लज्जा से अपने शरीर मे पीली मिट्टी लपेट कर [illegible]
[illegible] उसका नाम पाण्डु मिट्टी के कारण पाण्डया पड़ा और उसका पुत्र पाण्डु कहलाया।
तीसरी बिना सकोच के सामने से निकल गयी। इसी लिए वह दासी मानी गयी और उससे
नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ।

तीसरा परिच्छेद

सूर्यवश और चन्द्रवश के राजाओ का वर्णन—मिश्र देश के ग्रन्थो के साथ मतभेद—प्रयाग की प्रतिष्ठा-अयोध्या के सत्तावन राजा—चन्द्रवश का आदि पुरुष ययाति—सूर्यवशी और चन्द्र-वशी शाखाओ का अन्तर—विदेशी लेखको के वर्णन मे राजपूतो की वशावलियां—रामचन्द्र और और कृष्णचन्द्र के बीच का समय—वशावली के लिये खोज का कार्य—देशी और विदेशी ग्रन्थो का अध्ययन—राजवशो के प्राचीन समय का निर्णय—राजा हरिश्चन्द्र और परशुराम—परशुराम के द्वारा क्षत्रियो का विनाश—सूर्यवशी और चन्द्रवशी राजाओ के लगातार युद्ध—सूर्यवश और चन्द्रवश की प्रतिष्ठा का समय ।

व्यास ने सूर्यपुत्र वैवस्वतमनु से लेकर रामचन्द्र तक सूर्य वश के सत्तावन राजाओ के नामो का उल्लेख किया है और अट्ठावन नामो से अधिक राजाओ की वशावली चन्द्र वश के सम्बन्ध मे मुझे देखने को नही मिली । इस सख्या मे और मिश्र वालो की दी हुई सख्या मे अन्तर है । मिश्र के ग्रन्थो मे हेरोडाटस के अनुसार, अपने आदि पुरुष सूर्य पुत्र मीनस से लेकर ऊपर दिये गये समय तक के तीन सौ तीस राजाओ के नाम लिखे है । इक्ष्वाकु मनु का बेटा पहला राजा था, जिसने पूर्व की तरफ जाकर अयोध्या का निर्माण किया था । बुद्ध चन्द्रवशियो का आदि पुरुष माना जाता है । "जैसलमेर की कथा" नामक ग्रन्थ मे लिखा है कि महाभारत के पहले प्रयाग, मथुरा, कुशस्थली और द्वारिका मे क्रमश चन्द्रवशी राजाओ की राजधानियां रही । लेकिन इस बात के निर्णय करने की हमे कोई सामग्री नही मिली कि उनकी प्रथम राजधानी प्रयाग की प्रतिष्ठा किसने की । फिर भी जो कुछ पढने को मिला है, उसके आधार पर यह लिखा जा सकता है कि बुद्ध से छठी पीढी मे पुरु ने उसकी स्थापना की थी ।

इक्ष्वाकु से लेकर राम तक सत्तावन राजा अयोध्या के राज सिंहासन पर बैठे । ययाति से चन्द्रवश आरम्भ होता है । उसकी शाखा यदुवश मे ययाति से लेकर कही पर सत्तावन और कही उनसठ पीढियो का उल्लेख किया गया है । युधिष्ठिर, शल्य, जरासध और बृहद्रथ तक, जो कृष्ण और कस के समकालीन थे, उनके पूर्वज ययाति से क्रमश ५१,४६ और ४७ पीढियो का उल्लेख मिलता है । सूर्य वशी शाखाओ और चन्द्रवश की यदुवशी शाखाओ मे बहुत अन्तर पाया जाता है । उनके सम्बन्ध मे विभिन्न लेखको ने भिन्न-भिन्न सख्याओ का उल्लेख किया है । हमने यहां पर वही सख्याये दी है, जो अधिक सही मालूम हुई है ।

इन वशवालियो का उल्लेख मिस्टर बेटले सर विलियम जोन्स और कर्नल विल्फर्ड ने अपने लेखो मे किया है । मिस्टर बेटले और सर विलियम जोन्स की दी हुई सख्याओ मे कोई अन्तर नही है । उन दोनो ने सूर्य और चन्द्रवशो की क्रमश ५६ पीढियो का जिक्र किया है । कर्नल विल्फर्ड की सख्या सूर्यवशियो के सम्बन्ध मे सही नही मालूम होती । लेकिन चन्द्रवंश के सम्बन्ध मे पुरु और यदु दोनो वशो की नामावली सही मालूम होती है । रामचन्द्र का समय कृष्ण से बहुत पूर्व महाभारत युद्ध से चार पीढी पहले का था । चन्द्रवशी प्रमुख शाखाओ मे पुरु, हस्ती, अजामीढ, कुरु, शान्तनु और युधिष्ठिर बडे प्रतापशाली हुये । इनकी वशावली जो मिलती है वह बहुत कुछ सही

मालूम होती है। कर्नल विल्फर्ड ने इस प्रकार की खोज के लिए अधिक सामग्री एक
और इसीलिए वह हस्ती और कुरु दोनो ही वशो की अधिक शाखाओ का उल्लेख कर
दोनो वंशावलियो मे भीमसेन के वाद दिलीप का नाम है। इस प्रकार के नामो के सम्बन्ध
के सभी ग्रन्थो का मत एक नही है।

इन वशावलियो के सम्बन्ध मे सही वातो की खोज करने के लिए मैने कुछ
रखा। हिन्दुओ के ग्रथो के साथ-साथ, विदेशी लेखको के ग्रथो को भी मैने भली प्रकार
छान-वीन के वाद जो सही मालूम हुई है, उसी को मैने लिखने का प्रयास किया है।
पर सव से वडी कठिनाई यह पैदा हो जाती है कि हिन्दुओ के ग्रन्थ स्वय कही कही
के प्रतिकूल हो जाते है। इस विषय मे कोई भी ग्रथ ऐसा नही है, जिसे प्रामाणिक म
और सही वशावली प्राप्त की जा सके। इक्ष्वाकु की चौथी पीढी के सम्वन्ध मे वडा
मैने विश्वस्त ग्रथो के आधार पर उसकी चौथी पीढी मे अनपृथु का नाम लिखा है।
स्थान पर दो नाम अनयास और पृथु के भी उल्लेख मिलते है। मैने अपनी वशावली मे
तेईसवी पीढी मे रखा है। परन्तु विलियम जोन्स ने छव्वीसवी मे उसको लिखा है। कु
भी है, जिनको विभिन्न रूप मे लिखा गया है। उनमे अक्षरो और मात्राओ की भूले हो

राजवशो के प्रचीन समय का निर्णय रामायण पुराणो और अन्य पुराने ग्रथो
किया गया है, जिससे किसी प्रकार की भूल न हो सके। सूर्यवश का प्रसिद्ध राजा हरिश
का वेटा था, जो अपने सत्य वचन के लिये इस देश मे वह आज तक विख्यात है। अ
वह चौवीसवा राजा था और वह उस परशुराम का समकालीन था, जिसने नर्वदा नदी
माहिष्मती के हेहय अर्थात् चद्रवशी राजा सहस्त्रार्जुन का वध किया था। पर
रामायण मे लिखते हुए वताया गया है कि उसने क्षत्रियो का नाश किया था। सूर्यवश
राजा सगर चंद्रवशी सहस्त्रार्जुन की छठी पीढी के तालजघ का समकालीन था। परशु
क्षत्रियो का विध्वंस किया था, उस समय सहस्त्रार्जुन के पाँच वेटे वच गये थे। भवि
उन पाँचो वेटो के नाम लिखे गये हे। सूर्यवशी और चद्रवशी राजाओ के वीच लगात
थे, जिनके विवरण रामायण और पुराणो मे मिलते है। सगर तालजघ मे होने वाल
वर्णन भविष्य पुराण मे किया गया है। हस्तिनापुर के राजा हस्ती और अगदिश,
प्रतिष्ठा करने वाले वुध के वशज अग का समाकालीन माना गया है। रामायण से प्र
कि सूर्यवश का चालीसवाँ वशज अयोध्या का राजा अम्वरीप कन्नौज की प्रतिष्ठा करने
गाँधी और अगदेश * के राजा लोमपाद का समकालीन था। कृष्ण और युधिष्ठिर की
महाभारत से सिद्ध है। उनके वाद द्वापर युग का अन्त होता है और कलियुग का
है। सूर्यवश राम और चद्रवशी कृष्ण के वीच के समय का निर्णय करने के लिए
मे कोई सामग्री नही मिली।

क्रोष्टावशी मथुरा का राजा कश वुध से उनसठवाँ और उसका भान्जा
वंशज था। पुरु के वश मे अजमीढ़ और देवीमीढ के वश से शल्य, जरासघ और युधि
इक्यावनवे तेपनवे और चौवनवे वशज थे। महाभारत के युद्ध मे लडने वाला अ
वुध से तिरपनवा था। इस प्रकार वुध से लेकर कृष्ण और युधिष्ठिर तक पचपन पीढि

---

* अगदेश तिव्वत के करीब है। उनके निवासी अपने को हुँगी कहते है।
[illegible] चीनी ग्रथो मे वर्णन किये गये होगनू हूण लोग थे और ये लोग चन्द्रवंश से सम्वन्ध

साबित होता है। उनमे प्रत्येक राजा के शासन का औसत बीस वर्ष रखने से यह समझ मे आता है कि पचपन पीढियो मे उसके सभी राजाओ ने ११०० वर्ष शासन किया। यह समय यदि विक्रमादित्य तक सभी राजाओ के शासन काल मे जोड दिया जाय, जो ईसा से ५६ वर्ष पूर्व तक रहा तो भारत मे सूर्यवशी और चन्द्रवशी प्रतिष्ठा का समय ईसा से २२५६ वर्ष पहले का माना जा सकता है। क्योकि उससे कुछ ही दिनो के बाद मिश्र, चीन और असीरिया के राज्यो की प्रतिष्ठा का समय माना जाता है और वह समय महाप्रलय के लगभग डेढ सौ वर्ष बाद माना जाता है।

अग्निपुराण मे यह भी लिखा है कि मध्य एशिया से जो लोग भारत मे आकर बसे, उनमे इक्ष्वाकु के वशज सूर्यवशी सबसे पहले आये थे। इस लेख के आधार पर यह स्वीकार करना पडेगा क चद्रवश के आदि पुरुष बुध उनका समकालीन था। इस प्रकार की धारणा का एक अभिप्राय यह भी है कि बुध ने इस भारत देश मे आकर इक्ष्वाकु की बहन इला से विवाह किया था।

चद्रवशी कृष्ण और अर्जुन के तथा सूर्यवशी रामचन्द्र और उनके पुत्र कुश और लव के वशजो के सम्बन्ध मे अधिक लिखने के पहले, उनके पूर्वजो पर आगामी प्रकरण मे आवश्यकता के अनुसार प्रकाश डालना जरूरी है।
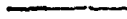
चौथा परिच्छेद

अयोध्या और मिथिलापुर की स्थापना—चन्द्रवशियो के द्वारा राज्यों की प्रतिष्ठा पहली राजधानी—कृष्ण की राजधानी कुशस्थली—कृष्ण का शत्रु शिशुपाल—सूर्यसेन राजा चन्द्रवश का प्रसिद्ध राजा हस्ती—भारत मे सिकन्दर के आक्रमण का समय—सिकन् पोरस—पाचालिक प्रदेश—कम्पिल नगर नामक राजधानी का प्रतिष्ठता कम्पिल—क प्राचीन नाम—शहाबुद्दीन गोरी के आक्रमण के समय का कन्नौज—कन्नौज का सर्वनाश— की प्रतिष्ठा—राजा दुष्यन्त और शकुन्तला ।

सूर्यवशियो ने सब से पहले अयोध्या की स्थापना की थी और लगभग उसी समय के प्रपौत्र मिथिल ने मिथला देश की राजधानी मिथलापुरी बसायी । जनक मिथिल था । उसी के नाम से सूर्यवश की इस शाखा का नाम प्रसिद्ध हुआ । अयोध्या और मि दोनो को प्राचीन काल मे अधिक प्रसिद्धि मिली । यद्यपि रामचन्द्र के पहले रोहतास और की तरह के कई एक नगरो की स्थापना हो चुकी थी ।

बुध से चलने वाले चन्द्रवंशियो के द्वारा अनेक राज्यो की स्थापना हुई थी । उनमे की प्राचीनता अब तक प्रसिद्ध है । अनुभव से जाहिर होता है कि चन्द्रवंशियो की पहली र हैहय—वश के सहस्त्रार्जुन के द्वारा हुई । उसका नाम माहिषामती था और वह नर्मदा किनरे पर बसी थी । सूर्यवशियो और चद्रवशियो का परस्पर विरोध बहुत दिनो तक चल उस विरोध मे ब्राह्मणो ने सूर्यवशियो की सहायता की थी और सहस्त्रार्जुन को माहि निकाल दिया था ।

कृष्ण की राजधानी कुशस्थली द्वारका मे थी, जो प्रयाग, सुरपुर और मथुरा के थी । भागवत के अनुसार, सूर्यवशी इक्ष्वाकु के बधु आनर्त के द्वारा बसी थी । परन्तु वह य अधिकार मे कैसे पहुँच गई, इसका कोई उल्लेख नही मिला । जैसलमेर के पुराने इतिहास से होता है कि सबसे पहले प्रयाग, उसके बाद मथुरा और फिर द्वारका की स्थापना हुई । ये नगर आरम्भ से ही प्रसिद्ध रहे है । शकुन्तला का बेटा भरत प्रयाग मे ही रहा करता था । के अनुसार, सूर्यवशी लोगो के साथ हैहय वशियो की लडाई मे शशविधी लोग * जो यदुव एक शाखा थी, हैहयवश वालो के साथ शामिल हो जाते थे । चेदी राज्य को कायम कर शिशुपाल इसी शशवि धी व श का, जो कृष्ण का शत्रु था । यूनानी इतिहासकारो के सिकन्दर के आक्रमण के समय मथुरा आसपास के निवासी सूरसेनी कहे जाते थे । सूरसेन दो राजाओ के नामो का उल्लेख मिलता है । उनमे एक तो कृष्ण का पितामह और दूसर शताब्दी पहले हुता था । उन्ही मे से किसी के द्वारा सुरपुर नामक राजधानी की प्रतष्ठा हुई

हस्तिनपुर राजा हस्ती का बसाया हुआ था, जो एक प्रसिद्ध चद्रवशी राजा था । मह बाद हस्तिनापुर मे अस्तितव बहुत समय तक कायम रहा । फिर सिकन्दर के आक्रमण का

* शशवि धी शब्द शशक से सम्बन्ध रखता है । सीसोदिया वंश की उत्पत्ति इसी मानी जाती है । सीसोदाग्राम मे रहने के कारण वहाँ के लोग सीसोदिया अथवा शीग लाये ऐसा भी कहा जाता है ।

लिखने वाले यूनान के लेखकों ने इस प्राचीन नगरी का उल्लेख क्यों नहीं किया, यह समझ में नहीं आता। भारत में सिकन्दर के आक्रमण का समय महाभारत के बाद अनुमानतः आठ सौ वर्षों के बाद का था। सिकन्दर के साथ युद्ध करने वाला पोरस राजा था। पोरस नाम के दो राजा हुए हैं। एक तो पुरुवंशी था और दूसरा पंजाब की सीमा पर रहता था, इस दशा में यह बात समझ में आती है कि सिकन्दर के आक्रमण के समय पोरी लोग चन्द्रवंशी थे। अजमीढ, देवमीढ और पुरमीढ नाम की शाखायें राजा हस्ती से सम्बन्ध रखती हैं। अजमीढ से उत्पन्न होने वाले भारत के उत्तरी भागों में पहुँच गये थे। वह समय ईसा से १६०० वर्ष पहले का मालूम होता है। अजमीढ के पश्चात् चौथी पीढी में वाजस्व नामक राजा हुआ उसने सिंध नदी के समीपवर्ती सम्पूर्ण प्रदेश में अधिकार कर लिया था। उसके पाँच बेटे हुए और उन पाँचों के नाम से उस प्रदेश का नाम पाञ्जालिक * पडा। उसके छोटे भाई कम्पिल ने कम्पिल नगर नाम की राजधानी कायम की थी। अजमीढ की दूसरी स्त्री केशनी थी। उसके बेटों ने एक नया राज्य कायम किया और एक वंश चलाया। उसका नाम कुशिक वंश है। कुश के चार बेटे पैदा हुये उनमें एक पुत्र कुशनाभ ने गंगा किनारे महोदय नाम का एक नगर बसाया था। उसका नाम बाद में कान्यकुब्ज और फिर कन्नौज हो गया। सन् ११६३ ईसवी में शहाबुद्दीन गोरी के आक्रमण के समय यह एक प्रतिष्ठित नगर था और उस समय गाधीपुर अथवा गाधी नगर कहलाता था। इतिहासकार फरिश्ता ने लिखा है कि प्राचीन काल में यह नगर पच्चास कोस अर्थात् पैंतीस मील के घेरे में बना था और उस नगर में तीस हजार केवल तम्बोलियों की दूकानें मौजूद थीं। उसकी यह अवस्था छठी शताब्दी तक बराबर कायम रही। बारहवीं शताब्दी में जयचन्द के बाद उस नगर का भी सर्वनाश हुआ। कुश के दूसरे पुत्र कुशाम्ब ने भी कौशाम्बी नामक नगर की प्रतिष्ठा की थी। ग्यारहवीं शताब्दी तक यह नगर बराबर कायम रहा। गंगा के किनारे कन्नौज से दक्षिण की तरफ उस नगर के खण्डहर अब भी पाये जाते हैं। कुश के बाकी दो बेटों ने भी नगरों की स्थापना की थी। परन्तु उनके कोई विवरण नहीं मिलते।

कुश से सुधन्वा और परीक्षित नामक दो पुत्र पैदा हुए। प्रथम पुत्र का वंश जरासंध के समय तक चला। उसकी राजधानी बिहार प्रान्त में गंगा के किनारे राजगृह में थी। परीक्षित के वंश में शान्तनु और बलिक अथवा बाल्हीक राजा हुआ। युधिष्ठिर और दुर्योधन शान्तनु के वंशज थे और बाल्हीक राजा से जो पैदा हुए, वे बाल्हीक पुत्र कहलाये। कुरु की राजगद्दी का उत्तराधिकारी दुर्योधन प्राचीन राजधानी हस्तिनापुर में रहा करता था। लेकिन युधिष्ठिर ने जमुना के किनारे इन्द्रप्रस्थ नामक एक नगर बसाया था। उसका नाम बाद में बदल कर आठवीं शताब्दी में दिल्ली हो गया।

बाल्हीक के पुत्रों ने पालिपोत्र और आरोड नामक दो राज्य स्थापित किये थे। पहला गंगा के किनारे और दूसरा सिन्धु नदी के किनारे था।

चन्द्रवंश के सभी राजा ययाति के प्रथम और छोटे बेटे यदु और पुरु के वंशज थे। ययाति के बाकी लडकों के सम्बन्ध में कोई विवरण नहीं पाया जाता उरु अथवा उरसु, जिसे कुछ विद्वानों ने तुरवसु लिखा है, ययाति के वंश की एक प्रसिद्ध शाखा है। उरु अपने राजवंश का मूल पुरुष था। उसके वंशजों ने अनेक राज्यों की स्थापना की थी। उससे आठवाँ राजा विमुत हुआ। उसके आठ पुत्र

---

* विष्णुपुराण के अध्याय १८ के अनुसार पाञ्चाल अथवा पाञ्चालिक एक भिन्न देश था और उसका पंजाब के साथ कोई सम्बन्ध न था। अधिकारी लेखकों का कुछ इस प्रकार कहना है।

पैदा हुए, लेकिन द्रुह्य और बभ्रु नामक दो पुत्रो के सिवा बाकी का कोई विवरण नही मिलता, दो पुत्रो से दो वशो की शाखाये निकली। द्रुह्य के वश मे गान्धार और प्रचेता नाम के दो हुये। उनके द्वारा भी एक-एक राज्य की स्थापना हुई।

दुष्यन्त ने शकुन्तला के साथ व्याह किया था और भरत शकुन्तला का वेटा था। कालिं केरल, पाण्ड्य और चोल नामक प्रपौत्र राजा दुष्यन्त के पैदा हुये थे और उन्होने अपने- नाम से राज्यो की स्थापना की थी। बुन्देलखण्ड मे कालिजर का प्रसिद्ध किला है और आज अपनी अनेक बातो के लिये प्रसिद्ध है। केरल द्वारा स्थापित केरल देश मलावार से मिला हुआ इसी को कोचीन कहते है। पाण्ड्य का स्थापित किया हुआ राज्य मलावार के दूसरे किनारे पर है पाण्ड्य मण्डल अथवा पाण्ड्य राज्य के नाम से प्रसिद्ध है। चोल सौराष्ट्र प्रवेश मे प्रसिद्ध द्वा के पास बसा हुआ है।

बभ्रु से एक दूसरे वश की शाखा निकली और उसके चौतीसवे राजा अग ने अगदेश स्थापना की। उसकी राजधानी चम्पामालिनी थी। इसकी स्थापना कन्नौज के साथ-साथ ईसा १५०० वर्ष पहले हुई थी। राजा अग के नाम से उसका वश चला और प्राचीन हिन्दुओ के इ मे अगवश को बडी ख्याति मिली। इस वश का अत पृथुसेन के साथ हुआ।

मनु तथा बुध से लेकर राम, कृष्ण, युधिष्ठिर एवम् जरासघ तक सूर्य और चन्द्रवश सम्बन्ध मे ऊपर सक्षेप मे लिखा गया है। इन प्रसिद्ध दोनो वशो के सम्बन्ध मे बहुत-सी काम बातो का स्पष्टीकरण हो गया है, इस बात की आशा करना चाहिये।

पाँचवाँ परिच्छेद

राजवंश का वर्णन—रामचन्द्र के वंशज—वाल्मीकि और व्यास समकालीन थे—सूर्य और चंद्रवंश के तीन राजा—लव और कुश के वंशज सूर्यवंशी राजपूत—भागवत और पुराणों के अनुसार राजवंश—रामचंद्र और युधिष्ठिर के बीच का समय—राजवंश की प्रसिद्ध पुस्तकें राजतरङ्गणी और राजावली—राजवंशो की उत्पत्ति लिखने मे कल्पनाओ का आधार—षडयन्त्रकारी दुर्योधन की कूटनीति—राजा द्रुपद के आश्रम मे पाचो भाई पाण्डव—द्रौपदी का स्वयम्वर—प्राचीन काल मे एक स्त्री के कई पतियो के होने की प्रथा—इन्द्रप्रस्थ की राजधानी युधिष्ठिर के द्वारा राजसूय यज्ञ का निर्णय—दुर्योधन के साथ युधिष्ठिर का जुआ और उसका परिणाम—महाभारत का समय—भील के द्वारा कृष्ण के प्राणो की हत्या—युधिष्ठिर के संवत का समय।

इक्ष्वाकु से लेकर रामचंद्र तक, बुध से लेकर कृष्ण तथा युधिष्ठिर तक सूर्य और चंद्रवंश * की विवेचना करके और बारह सौ वर्षो के इतिहास पर संक्षेप मे प्रकाश डालकर आगामी पृष्ठो मे वंशावलियो के दूसरे भाग पर हमने लिखने की कोशिश की है। मेवाड, जयपुर, मारवाड और बीकानेर के वर्तमान राजपूत और उनकी अनेक शाखाओ के लोग अपने को रामचंद्र का वंशज बताते है। इसी प्रकार जैसलमेर और कच्छ के राजवंश जो सतलज नदी से समुद्र के किनारे तक भारत के समस्त मरुस्थल मे फैले हुए हैं, बुध एवम् कृष्ण के वंश मे अपनी उत्पत्ति को स्वीकार करते है।

राम का जन्म कृष्ण से पहले हुआ था। लेकिन दोनो के बीच मे थोडे ही समय का अन्तर है। इसका प्रमाण यह है कि वाल्मीकि और व्यास जिन्होंने अपनी आँखो देखी घटनाओ का वर्णन रामायण और महाभारत मे किया है समकालीन थे।

रामचंद्र और कृष्ण के पश्चात् सूर्य और चंद्र वंश मे जो राजा लोग पैदा हुए उनके सम्बन्ध मे यहाँ पर तीन राजवंशो का वर्णन किया जाता है—

(१) सूर्य वंश अर्थात् रामचंद्र के वंशज।

(२) इन्दुवंश अर्थात् पाण्डुवंशी युधिष्ठिर के वंशज।

(३) इन्दुवंश अर्थात् राजगृह के राजा जरासंघ के वंशज।

आजकल सूर्यवंशी सभी राजपूत, रामचंद्र के बेटे लव और कुश का वंशज होना स्वीकार करते है। मेवाड के राणा और बडगूजर लोग अपनी उत्पत्ति रामचंद्र से बतलाते है। नर्वर और आँबेर के कुशवाहा कुश के वंशज माने जाते है। मारवाड का राजवंश भी इसी वंश मे अपनी उत्पत्ति मानता है। आँबेर राज्य के राजा ने जो वंशावलियाँ तैयार करायी है उनमे मेवाड के राजवंश की उत्पत्ति राम के बडे पुत्र लव से मानी गयी है और उसमे लव से सुमित्र तक एक नामावली दी गयी है।

---

* संस्कृत मे इन्दु और सोम को चन्द्र कहते है। इसलिये इन्दुवंश और सोमवंश का अभिप्राय चन्द्रवंश से है। यह भी सम्भव हो सकता है कि हिन्दू शब्द इन्दु से ही बना हो।

वाहुमान रामचन्द्र से चौतीसवी पीढी मे हुआ था। उसके शासन का समय
छै सौ वर्ष वाद मे होने का अनुमान किया जाता है। भागवत के अनुसार, सूर्य अर्थात् राम
का अन्त सुमित्र के साथ दिया गया है। पुराणो के अनुसार, सुमित्र राम के वश का अन्तिम
था। इस हिसाब से सूर्यवश के ५६ राजा होते है। लेकिन सर विलियम जोन्स ने उनकी संख्या
लिखी है। यदि उनकी सख्या ५६ ही मान ली जावे तो रामचन्द्र से सुमित्र तक का सम
विक्रमादित्य से कुछ ही पहले बीता है, ११२० वर्ष का होता है और रामचन्द्र से युधिष्ठिर
११०० वर्ष का समय ऊपर लिखा जा चुका है। इसका अर्थ यह निकलता है कि सूर्यव
प्रतिष्ठाता इक्ष्वाकु से सुमित्र तक का समय २२०० वर्षो का होता है।

पाण्डुवशी युधिष्ठिर की सन्तानो के इंदुवश की वशावली राजतरगिणी और रा
ली गयी है। ये दोनो पुस्तके प्रामाणिक है। जो राजवशों के इतिहास और उनकी वशाव
लिए बहुत प्रसिद्ध है। इन पुस्तको मे युधिष्ठिर से विक्रमादित्य तक इन्द्रप्रस्थ और दिल्ली मे २
करने वाले सभी वशो की वशावलियाँ दी गयी है। 'तरगिणी' जैन देवताओ की वशावली की
मानी जाती है। इसलिए उसका आरम्भ आदिनाथ अथवा ऋषभ देव से किया गया है। ऊपर
राजवशो के विवरण दिये जा चुके है, इस पुस्तक मे उन, वशो के प्रसिद्ध राजाओ के नाम
धृतराष्ट्र और पाण्डु एवम् उनकी सतान की उत्पत्ति के विवरण दिये गये है।

यहाँ पर यह लिखना अप्रासगिक न होगा कि पूर्व और पश्चिम के सभी देशों मे
की उत्पत्ति लिखने के समय बहुत कुछ आधार कल्पनाओ का लिया गया है। हिन्दू ग्रथो मे पा
उत्पत्ति ठीक उसी प्रकार की कल्पित कथाओ के साथ पढने को मिलती है। जिस प्रकार पि
देशो मे रोमूलस * की उत्पत्ति। पाण्डु की मृत्यु के वाद धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने हस्ति
अपने उपस्थित समस्त वन्धुओ के सामने पाण्डवो के जन्म को कलक पूर्ण वतलाया था। ?
इसका कोई प्रभाव न पडा था और पाण्डव वन्धुओं मे ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर को हस्तिनापुर के
सिंहासन पर वैठने का अधिकार मिला था। इस प्रकार युधिष्ठिर को राज्याधिकार मिलने मे
ब्राह्मणो और पण्डितो ने सहायता की थी।

पाण्डवो के विरुद्ध दुर्योधन तरह-तरह के षड्यन्त्र करने मे लगा रहा और उसकी कूट
से व्यथित होकर पाँचो भाई पाण्डवो ने राजधानी छोडकर कुछ समय के लिये गगा के किनारे
जाकर समय विताने का निश्चय किया। इस निश्चय के अनुसार सिन्धु नदी के समीपवर्ती
की तरफ वे चले गये। उस अवस्था मे पाँचाल के राजा द्रुपद ने अपने यहाँ उनको स्थान

* रोमूलस ने रोम नगर की स्थापना की थी। उसकी उत्पत्ति के विषय मे कहा जाता
[illegible] नाम की एक प्रसिद्ध देवी थी। उसकी पूजा करने वाली लडकियाँ आजन्म अविवाहित
थी। यदि उस देवी की कोई पुजारिन अपना सतीत्व भ्रष्ट करने के अपराध मे पाई जाती थी तो
[illegible] मे उसको जीवित जमीन मे खोदकर गाड दिया जाता था और उसके गर्भ से
[illegible] वाली संतान को [illegible] नदी मे फेक दिया जाता था। [illegible] नामक एक महिला उस
[illegible] पुजारिन थी। उससे भी इसी प्रकार का अपराध हुआ और मार्स अर्थात मगल देवता ने उस
[illegible]। मा और बेटो के साथ वही किया गया, लेकिन बेटे किसी प्रकार बच गये।
[illegible] वाली एक [illegible] ने अपना दूध पिला कर दिया,
[illegible] था।

पाँचवाँ परिच्छेद

राजवंश का वर्णन—रामचन्द्र के वंशज—वाल्मीकि और व्यास समकालीन थे—सूर्य और चँद्रवंश के तीन राजा—लव और कुश के वंशज सूर्यवंशी राजपूत—भागवत और पुराणों के अनुसार राजवंश—रामचद्र और युधिष्ठिर के बीच का समय—राजवंश की पवित्र पुस्तकें राजतरङ्गिणी और राजावली—राजवंशो की उत्पत्ति लिखने मे कल्पनाओं का आधार—पाण्डवों से दुर्योधन की कूटनीति—राजा द्रुपद के आश्रम मे पाचो भाई पाण्डव—द्रौपदी का स्वयम्बर—प्राचीन काल मे एक स्त्री के कई पतियो के होने की प्रथा—इन्द्रप्रस्थ की राजधानी युधिष्ठिर के द्वारा राजसूय यज्ञ का निर्णय—दुर्योधन के साथ युधिष्ठिर का जुआ और उसका परिणाम—महाभारत का समय—भील के द्वारा कृष्ण के प्राणो की हत्या—युधिष्ठिर के मरने का समय।

इक्ष्वाकु से लेकर रामचद्र तक, बुध से लेकर कृष्ण तथा युधिष्ठिर तक सूर्य और चन्द्रवंश * की विवेचना करके और बारह सौ वर्षो के इतिहास पर संक्षेप मे प्रकाश डालकर आगामी पृष्ठो मे वशावलियो के दूसरे भाग पर हमने लिखने की कोशिश की है। मेवाड़, जयपुर, मारवाड़ और वीकानेर के वर्तमान राजपूत और उनकी अनेक शाखाओं के लोग अपने को रामचन्द्र का वंशज वताते है। इसी प्रकार जैसलमेर और कच्छ के राजवंश जो सतलज नदी से समुद्र के किनारे तक भारत के समस्त मरुस्थल मे फैले हुए है, बुध एवम् कृष्ण के वंश से अपनी उत्पत्ति को स्वीकार करते है।

राम का जन्म कृष्ण से पहले हुआ था। लेकिन दोनो के बीच मे थोड़े ही समय का अन्तर है। इसका प्रमाण यह है कि वाल्मीकि और व्यास जिन्होंने अपनी आँखों देखी घटनाओं का वर्णन रामायण और महाभारत मे किया है समकालीन थे।

रामचद्र और कृष्ण के पश्चात् सूर्य और चद्र वंश मे जो राजा लोग पैदा हुए उनके सम्बन्ध मे यहाँ पर तीन राजवंशो का वर्णन किया जाता है—

(१) सूर्य वंश अर्थात् रामचद्र के वंशज।

(२) इन्दुवंश अर्थात् पाण्डुवंशी युधिष्ठिर के वंशज।

(३) इन्दुवंश अर्थात् राजगृह के राजा जरासंध के वंशज।

आजकल सूर्यवंशी सभी राजपूत, रामचद्र के बेटे लव और कुश का वंशज होना स्वीकार करते है। मेवाड के राणा और वडगूजर लोग अपनी उत्पत्ति रामचन्द्र से बतलाते है। नरवर और आँबेर के कुशवाहा कुश के वंशज माने जाते है। मारवाड का राजवंश भी इसी वंश से अपनी उत्पत्ति मानता है। आँबेर राज्य के राजा ने जो वंशावलियाँ तैयार करायी है उनमे मेवाड के राजवंश की उत्पत्ति राम के वडे पुत्र लव से मानी गयी है और उसमे लव से सुमित्र तक एक नामावली दी गयी है।

---

* संस्कृत मे इन्दु और सोम को चन्द्र कहते है। इसलिये इन्दुवंश और सोमवंश का अभिप्राय चन्द्रवंश से है। यह भी सम्भव हो सकता है कि हिन्द शब्द इन्दु से ही बना हो।

बाहुमान रामचन्द्र से चौतीसवी पीढी मे हुआ था। उसके शासन का समय रा
छै सौ वर्ष बाद मे होने का अनुमान किया जाता है। भागवत के अनुसार, सूर्य अर्थात् र
का अन्त सुमित्र के साथ दिया गया है। पुराणो के अनुसार, सुमित्र राम के वश का अ
था। इस हिसाब से सूर्यवश के ५६ राजा होते है। लेकिन सर विलियम जोन्स ने उनकी स
लिखी है। यदि उनकी सख्या ५६ ही मान ली जावे तो रामचन्द्र से सुमित्र तक का
विक्रमादित्य से कुछ ही पहले बीता है, ११२० वर्ष का होता है और रामचन्द्र से युधि
११०० वर्ष का समय ऊपर लिखा जा चुका है। इसका अर्थ यह निकलता है कि सू
प्रतिष्ठाता इक्ष्वाकु से सुमित्र तक का समय २२०० वर्षो का होता है।

पाण्डुवशी युधिष्ठिर की सन्तानो के इदुवश की वशावली राजतरगिणी और राज
ली गयी है। ये दोनो पुस्तके प्रामाणिक है। जो राजवशो के इतिहास और उनकी व
लिए बहुत प्रसिद्ध है। इन पुस्तको मे युधिष्ठिर से विक्रमादित्य तक इन्द्रप्रस्थ और दिल्ली
करने वाले सभी वशो की वशावलियाँ दी गयी है। 'तरगिणी' जैन देवताओ की वशावली क
मानी जाती है। इसलिए उसका आरम्भ आदिनाथ अथवा ऋषभ देव से किया गया है। ऊ
राजवशो के विवरण दिये जा चुके है, इस पुस्तक मे उन, वशो के प्रसिद्ध राजाओ के न
धृतराष्ट्र और पाण्डु एवम् उनकी सतान की उत्पत्ति के विवरण दिये गये है।

यहाँ पर यह लिखना अप्रासगिक न होगा कि पूर्व और पश्चिम के सभी देशो मे
की उत्पत्ति लिखने के समय बहुत कुछ आधार कल्पनाओ का लिया गया है। हिन्दू ग्रथो मे
उत्पत्ति ठीक उसी प्रकार की कल्पित कथाओ के साथ पढने को मिलती है। जिस प्रकार
देशो मे रोमूलस * की उत्पत्ति। पाण्डु की मृत्यु के बाद धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने हस्ति
अपने उपस्थित समस्य बन्धुओ के सामने पाण्डवो के जन्म को कलक पूर्ण बतलाया था
इसका कोई प्रभाव न पडा था और पाण्डव बन्धुओ मे ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर को हस्तिनापुर
सिंहासन पर बैठने का अधिकार मिला था। इस प्रकार युधिष्ठिर को राज्याधिकार मिलने
ब्राह्मणो और पण्डितो ने सहायता की थी।

पाण्डवो के विरुद्ध दुर्योधन तरह-तरह के षडयत्र करने मे लगा रहा और उसकी
से व्यथित होकर पाँचो भाई पाण्डवो ने राजधानी छोडकर कुछ समय के लिये गगा के ि
जाकर समय बिताने का निश्चय किया। इस निश्चय के अनुसार सिन्धु नदी के समी
की तरफ वे चले गये। उस अवस्था मे पाँचाल के राजा द्रुपद ने अपने यहाँ उनको स्थान

* रोमूलस ने रोम नगर की स्थापना की थी। उसकी उत्पत्ति के विषय मे कहा
विष्ठा नाम की एक प्रसिद्ध देवी थी। उसकी पूजा करने वाली लडकियाँ आजन्म अविवाहि
थी। यदि उस देवी की कोई पुजारिन अपना सतीत्व भ्रष्ट करने के अपराध मे पाई जाती थी
अपराध के दण्ड मे उसको जीवित जमीन मे खोदकर गाड दिया जाता था और उसके गर्भ
होने वाली सतान को टाइबर नदी मे फेक दिया जाता था। सिल्विया नामक एक महिला
की पुजारिन थी। उससे भी इसी प्रकार का अपराध हुआ और मार्स अर्थात मंगल देवता से
बेटे पैदा हुए। माँ और बेटो के साथ वही किया गया, लेकिन बेटे किसी प्रकार बच ग
दोनो पुत्रो का पालन पोषण जगल मे रहने वाली एक कुतिया ने अपना दूध पिला कर किया
उन दो पुत्रो मे से एक था।

उनकी सहायता की। राजा द्रुपद की राजधानी कम्पिलनगर मे थी। उसी अवसर पर राजा द्रुपद की राजधानी मे आस-पास के अनेक राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी के स्वयम्बर मे आये हुए थे। उस स्वयम्बर मे द्रौपदी ने अर्जुन के गले मे वरमाला पहनायी। उस पर उपस्थित राजाओ ने अर्जुन के साथ युद्ध किया। लेकिन अर्जुन के साथ युद्ध मे सभी पराजित हुए और द्रौपदी अर्जुन के साथ जाकर पाँचो भाइयो की स्त्री * हुई। विवाह की इस प्रकार की प्रथा शक लोगो मे पाई जाती है।

हस्तिनापुर से पाण्डवो का निकल जाना धृतराष्ट्र को असह्य हो रहा था। उसकी कोशिश से पाण्डव बुलाये गये और राज्य का बँटवारा किया गया। हस्तिनापुर का अधिकार दुर्योधन को मिला। इसलिए युधिष्ठिर को इन्द्रप्रस्थ नामक एक नई राजधानी कायम करनी पड़ी। महाभारत के बाद युधिष्ठिर ने अपने नाम का एक सम्वत् निकाला और अपने भतीजे के पुत्र परीक्षित को राज्य का अधिकारी बना दिया। युधिष्ठिर का चलाया हुआ सम्वत ११०० वर्ष तक प्रचलित रहा। हुआ यह कि उसी वंश के उज्जैन के तोमर राजा विक्रमादित्य ने इन्द्रप्रस्थ को पराजित कर अपने अधिकार मे ले लिया और अपने नाम का एक नया सम्वत् चलाया, जिसके कारण युधिष्ठिर का चलाया हुआ सम्वत् समाप्त हो गया।

इन्द्रप्रस्थ की राजधानी कायम हो जाने के बाद हस्तिनापुर का वैभव क्षीण हो गया और आस-पास के समस्त राज्यो मे पाँचो पाण्डवो का वैभव बहुत बढ़ गया था। उन सभी राजाओ ने पाण्डवो की अधीनता को स्वीकार कर लिया था। ऐसे समय पर युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने का निर्णय किया। इस यज्ञ मे अर्जुन के संरक्षण मे यज्ञ का घोड़ा छोड़ा गया। वह बारह महीने तक बराबर घूमता रहा और किसी ने उसको पकड़ा नही। इसके बाद इन्द्रप्रस्थ मे राजसूय यज्ञ हुआ। इस प्रकार के यज्ञ मे सभी कार्य राजाओ को ही अपने हाथ से स्वयं करने पड़ते थे। इसमे भी ऐसा ही हुआ और हस्तिनापुर के राजा को प्रसाद बाटने का काम दिया गया। दुर्योधन और उसके बन्धुओ ने उसे अपना अपमान समझा। इसमे कौरवो † और पाण्डवो के बीच ईर्षा बढ़ी। दुर्योधन ने युधिष्ठिर के विरुद्ध जितने षडयन्त्र किये थे, उनमे उसे कोई सफलता न मिली थी। युधिष्ठिर की धर्मनीति से सभी लोग प्रसन्न थे। इसलिए दुर्योधन ने जुआ खेलने का एक नया षडयंत्र युधिष्ठिर के साथ रचा। यह जुआ खेलने की प्रथा भी सीथियन ‡ (शक लोगो) की है, जो राजपूतो मे अब तक चली जा रही है।

---

* एक स्त्री के एक से अधिक पतियो का होना प्राचीन काल मे एक साधारण रस्म था। जैसा कि हेरोडोटस ने शक जाति के सम्बन्ध मे लिखा है और सीथियन लोगो की बहुत सी इस प्रकार की बात का उल्लेख किया है। विवाह की एक रस्म यह भी उस समय पाई जाती थी, परन्तु हिन्दू टीकाकारो ने इस ऐतिहासिक सत्य पर धूल डाल कर द्रौपदी के पांच पतियो के सम्बन्ध मे अर्थहीन बातो की जनश्रुति पैदा करने मे सहायता की है।

† दुर्योधन और युधिष्ठिर के राज्य अलग हो जाने पर उनके वंश अलग-अलग चले। दुर्योधन ने अपने आदि पुरुषो कुरु के नाम से कौरव वंश और युधिष्ठिर ने अपने पिता पाण्डु के नाम से पाण्डव वंश चलाया। जिस स्थान पर महाभारत हुआ उसका नाम भी कुरु के नाम पर कुरुक्षेत्र रखा गया।

‡ शक लोगो मे जुआ खेलने की पुरानी प्रथा थी। उन्ही से राजपूतो मे यह प्रथा आयी। इसका वर्णन हेरोडॉटस ने किया है। टैटीस ने लिखा है कि जर्मनी के लोग जुआ मे अपने शरीर को भी दाँव मे लगाते थे। हार जाने पर दाँव पर रखा हुआ आदमी गुलाम की तरह, गुलामो की बिक्री होने वाले बाजारो मे बेचा जाता था।

दुर्योधन के साथ जुआ के जाल मे युधिष्ठिर फँस गया। फलस्वरूप, वह अपना र
और अपने शरीर के साथ-साथ अपने भाइयों तथा स्त्री द्रौपदी को भी हार गया। इससे
परिवार के साथ बारह वर्ष के लिए अपने राज्य से चला गया। उसके बाद कौरवो और
जो युद्ध हुआ, वह महाभारत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस युद्ध मे काकेशस से लेकर
की संख्या मे लोग रोजाना मारे गये।

अंत मे युधिष्ठिर की विजय हुई। लेकिन उसके हृदय पर इसका घातक प्रभाव
सांसारिक जीवन से उदासीन हो गया। युद्ध मे युधिष्ठिर के भाई भीम के द्वारा दुर्योधन
था। इसलिये हस्तिनापुर मे युधिष्ठिर ने दुर्योधन का अतिम सस्कार किया। इसके
प्रपौत्र परीक्षित को राजसिंहासन पर बिठाकर वह कृष्ण और बलदेव के साथ द्वारका च
सन् १७४० ईसवी तक महाभारत के ४६३६ वर्ष बीत चुके थे। महाभारत
बच गये थे, वे सब युधिष्ठिर के साथ द्वारका चले गये थे। वहाँ पर एक भील के द्वारा
प्राणो का अत हुआ। महाभारत मे युद्ध करके वे लोग शरीर और मन से इतने थक
युधिष्ठिर के साथ के लोग अब युद्ध करने योग्य नही रह गये थे। कृष्ण के मर
बलदेव और साथ के कुछ आदमियो को लेकर युधिष्ठिर भारत के बाहर, सिन्ध के रास्ते
मे हिमालय पर्वत पर चला गया। इसके बाद उनमे से किसी का भी कोई समाचार नह
इसलिए यह अनुमान किया गया कि वे सब हिमालय की बर्फ मे गल गये। *

युधिष्ठिर के वश मे परीक्षित से लेकर विक्रमादित्य तक चार वशो के विवरण
है। उनमे राजपाल तक ६६ राजाओ के नाम आते है। कुमाऊँ के आक्रमण मे वह ०
द्वारा मारा गया था और आक्रमणकारी विजयी राजा ने दिल्ली पर अधिकार कर
लेकिन उसके बाद विक्रमादित्य ने उसको पराजित किया और गये हुए राज्य को वाप
इन्द्रप्रस्थ से राजधानी हटाकर अवन्ती (उज्जैन) मे कायम की। आठ सौ वर्षो तक
मे राजधानी नही रही। उसके पश्चात् तोवर वश के प्रतिष्ठाता अनगपाल ने उसे फिर
बनायी। वह अपने आपको पाण्डवो का वंशज कहता था। उस समय से इन्द्रप्रस्थ का
कर दिल्ली हो गया।

---

* हिमालय पर्वत पर चले जाने के बाद युधिष्ठिर और बलदेव के सबध मे हिन्दु
मे कोई विवरण नही मिलते। यहाँ पर यूनान के पुराने ग्रंथो से बहुत कुछ समझने मे ८
है। पांचालिक मे जब सिकन्दर ने पूजा के स्थानो की प्रतिष्ठा की थी, उस समय वहाँ पर
हरिकुलियो के वंशज रहते थे। वहाँ पर यह अनुमान किया जा सकता है कि उन वशो
लोग युधिष्ठिर और बलदेव के साथ चल कर यूनान मे जाकर बस गये थे और उन्होने
यूनानियो पर विजय पायी थी। जब सिकन्दर ने वहाँ पर आक्रमण किया तो पुरुवंशियो
कुलियो ने हरक्यूलीज के चित्र का प्रदर्शन किया। हिन्दुओ और यूनानियो के पुराने ग्रन्थो
लोकन करने के साफ-साफ समझ मे आता है कि वे दोनो एक ही स्थान पर उत्पन्न हुए
(अफलातून) भी इस बात को स्वीकार करते हुए कहता है कि यूनान और पूर्वी देशों क
बातों मे कोई अन्तर नही है। वे एक ही है। यह भी समझ मे आता है कि हरिकुलियों क
हेराक्लाइडी लोगों का समूह था जो वॉल्नेे के लिखने के अनुसार, ईसा से १०७८ वर्ष ९
नेस मे जाकर बसा था। वह समय महाभारत के समय के बहुत करीब साबित होता है

शुकवन्त राजा ने कुमाऊँ के उत्तरी पर्वतो के जाकर चौदह वर्ष तक राज्य किया था। उसके बाद विक्रमादित्य ने उसे मार डाला। युधिष्ठिर से लेकर पृथ्वीराज तक जो क्षत्रिय राजा दिल्ली के राजसिहासन पर बैठे उनकी सँख्या मे अनेक मतभेद है। उनके विवाद मे यहाँ पर अधिक लिखना आवश्यक नही मालूम होता। जरासध राजगृह अर्थात् बिहार का राजा था। उसका पुत्र सहदेव और पौत्र मार्जारी महाभारत के समकालीन माने गये है। उस वश मे से दिल्ली के सम्राट परीक्षित के समकालीन थे।

जरासध के वश मे तेईस राजा हुए। उनमे अंतिम रिपुञ्जय था। उसके मंत्री सुनक ने उसे मार कर राज्य का अधिकार छीन लिया था। सुनक का वंश पाँच पीढ़ी तक चला। उसके वश के अतिम राजा का नाम नन्दीवर्धन था। सुनक वश के राजाओ का समय १३० वर्ष माना जाता है। शेषनाग नामक एक विजेता की अधीनता मे शेषनाग देश के लोग भारत मे आये और वे मगध की गद्दी पर बैठे। उनका वश दस पीढ़ी तक चल कर अतिम राजा महानन्द के साथ—जो अनौरस था समाप्त हो गया। इन दस राजाओ का राज्य काल ३६० वर्ष का लिखा गया है। चौथी वशावली इसी तक्षक * वश के चन्द्रगुप्त मौर्य से आरम्भ हुई। उस वश मे दस राजा हुए और उसका अन्त १३७ वर्ष मे ही हो गया। शृंगी नामक देश से आकर अपने वश के आठ राजाओ ने ११२ वर्ष तक यहाँ पर राज्य किया। उसके अतिम राजा को काण्व देश के एक राजा ने आकर पराजित किया और उसे मारकर उसका राज्य छीन लिया। उन आठ राजाओ मे चार शूद्र वश के थे। उसके बाद शूद्राणी से उत्पन्न होने वाला कृष्ण राजा हुआ। काण्व देश से आया हुआ यह वश २३ पीढ़ी तक चला। उसके अतिम राजा का नाम सुलोमधी था। इन वशो मे महाभारत के पश्चात् की वशावलियाँ दी गयी है। उनमे जरासध के वशज सहदेव से सुलोमधी तक सभी राजाओ का लगातार क्रम चला है। कुछ छोटी-छोटी वशावलियाँ भी दी गयी है। उनका विवरण यहाँ पर देने की जरूरत नही है। ससार के बाकी हिस्से मे भी राजाओ का शासन चला है। उनके विस्तार मे हम यहाँ नही जाना चाहते। ससार के बाकी शासको का शासन यहूदियो, स्पार्टावालो और एथीनियन लोगो से सम्बन्ध रखता है। उनका प्रारम्भ ईसा से करीब ग्यारह सौ वर्ष पहले हुआ था। यह समय महाभारत से आधी शताब्दी भी दूर नही मालूम होता। उनके साथ-साथ बैबिलन, असीरिया और मीडिया के शासन भी है। उनका प्रारम्भ ईसा से आठ सौ वर्ष पहिले और यहूदी राजाओ के शासन का अत छै सौ वर्ष पहले हुआ। सम्पूर्ण ससार के प्राचीन इतिहास की खोज गम्भीरता के साथ करके एक सही निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है।

अपने इस प्रकार के निर्णय मे हमने हिन्दू ग्रन्थो के साथ-साथ संसार की अन्य प्राचीन जातियो के ग्रन्थो और इतिहासो को भी पूर्ण रूप से समझने की कोशिश की है। इसके साथ ही बेन्टले साहब की तरह के प्रसिद्ध विद्वान लेखको के निर्णय देकर अपना निर्णय करने की भी हमने चेष्टा की है। इस प्रकार की छानबीन के साथ युधिष्ठिर के सम्वत का समय ससार की उत्पत्ति से २८२५ वर्ष बाद निकलता है। इस हिसाब से अगर ४००४ मे से अर्थात् ससार की उत्पत्ति से लेकर ईसा के जन्म के समय तक का समय निकाला जावे तो युधिष्ठिर के सम्वत् का प्रारम्भ ईसा के ११७९ वर्ष और विक्रमादित्य से ११२३ वर्ष पहिले साबित होता है।

---

* मोरी वश का अभिप्राय मौर्य वश से है। बौद्ध और जैन लेखको ने इस वश को सूर्यवशी माना है। तक्षक वशी नही। ऐसा कुछ अन्य विद्वानो का कहना है। —अनुवादक

छठा परिच्छेद

राजस्थान के छत्तीस राजवंश—संसार की समस्त प्राचीन जातियों के जीवन की
भारत में बाहर से आने वाली जातियाँ—उनका मूल स्थान—उनकी उत्पत्ति—पुराणों क
तातारी और जर्मन लोगों का देवता—प्रसिद्ध प्राचीन राजवंशों के पूर्वज—संसार क
जातियों के देवता एक हैं—चीनी लोगों का सबसे पहला राजा—उसका जन्म और वर्णन
रियो, चीनियों और हिन्दुओं का आदि पुरुष एक था—उस आदि पुरुष की उत्पत्ति--शक
उत्पत्ति--कास्पियन सागर के पूर्व में रहने वाली जातियाँ—उनके रहने के स्थान--सगठि
आक्रमण करने का अभ्यास—एशिया में भी उन जातियों के आक्रमण--प्राचीन काल में रा
यूरोप की जातियों के पूर्वज किसी एक ही स्थान के निवासी थे--उसके सही होने के प्रमाण
माउनर और रोमन लोगों पर आक्रमण--संसार की सभी जातियाँ प्राचीन काल में एक
लोगों की आबादी--प्राचीन जातियों के नामों में परिवर्तन--राजपूतों और संसार की प्राचीन
की एक सी प्रथायें--बुद्ध के जन्म का समय--सभी जातियों की मूल उत्पत्ति एक थी।

पिछले पृष्ठों में राजपूत जाति की वंशावली और उसका इतिहास जो लिखा गया
बाद यहाँ पर उन जातियों के सम्बन्ध में हम प्रकाश डालने की चेष्टा करेंगे, जिन्होंने स
पर भारत में आकर आक्रमण किया और बाद में वे राजस्थान के छत्तीस राजवंशों में मानी

जिन जातियों का यहाँ पर हम उल्लेख करने जा रहे हैं, वे हय अथवा अश्व, तक्ष
अथवा जिटी के नाम से प्रसिद्ध थी। उनके देवताओं, विचारों, आचारों और नामों का स
अन्य जातियों के साथ इतना अधिक था जिससे बिना किसी विवाद के इस बात को स्वीक
पड़ता है कि वे और चीनी तातारी, मुगल, हिन्दू और शक जातियाँ अपने प्रारम्भिक जीव
ही थीं उनका मूल एक था। भारत में जिन बाहरी जातियों ने आकर आक्रमण कि
आने और आक्रमण करने का समय निश्चित रूप से नहीं लिखा जा सकता। लेकिन जिन प्र

आयु, जिसको पुराणो ने चन्द्रवश के एक पूर्वज का नाम माना है। सभी तातारी लोग अपने-आप को आयु अथवा पुराणो मे वर्णित चद्र का वशज मानते है और इसी आधार पर, जर्मन लोगो की तरह वे चद्रमा को अपना देव मानते है।

अय नाम का जो तातारी था, जुल्डन नाम का उसके एक बेटा था और उसके बेटे का नाम ह्यू था। उसके वशजो से चीन का सबसे पहला राजवश चला।

पुराणो मे लिखे हुए आयु के यदु नाम का एक बेटा था। उसका नाम कही-कही जदु भी कहा गया है। यदु और जदु मे उच्चारण के सिवा और कोई अन्तर नही है उसके तीसरे पुत्र ह्यू, से किसी सतान का होना हिन्दू लेखक नही मानते। परन्तु चीन के लोग उसी वश मे अपने आप को इन्दु की संतान मानते है। *

अय की नवी पीढी मे एलखा के दो बेटे थे। पहले का नाम तातान और दूसरे का मगल था। सम्पूर्ण तातार मे फैले हुए लोग दूसरे बेटे के वशज है। प्रसिद्ध मगल खाँ अपने को तातान का वशज मानता था। यह भी माना जा सकता है कि पुराणो और तातारी ग्रन्थो मे तक्षक और नागवश X का जिक्र किया गया है, उनका सस्थापक मगल रहा हो। डी गिग्नीस ने उसका नाम तकिपुक मुगल लिखा है।

इन तीनो जातियो की उत्पत्ति जिस प्रकार एक दूसरे से मिलती है, उसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। अब इन जातियो के देवताओ की उत्पत्तियो पर थोडा-सा प्रकाश डालने की आवश्यकता है। पुराणो के मत से इला (पृथ्वी) जो सूर्य पुत्र इक्ष्वाकु की पुत्री थी, किसी समय जगल मे घूम रही थी। बुध ने उसे पकडकर उसके साथ बलात्कार किया। उससे जो सतान पैदा हुई, उससे इन्दुवश की उत्पत्ति हुई।

चीनी लोगो का सबसे पहला राजा य (अयू) था। उसकी उत्पत्ति चीनी ग्रन्थो के अनुसार इस प्रकार है। यात्रा मे एक तारे का उसकी माता के साथ समागम हो गया। उसके गर्भ रह गया और उससे यू की उत्पत्ति हुई। चीनियो का प्रथम राजवंश इसी यू से आरम्भ हुआ। यू ने चीन को नौ भागो मे बाँटा। उसने ईसा से २२०७ वर्ष - पहले राज्य करना प्रारम्भ किया था।

इस प्रकार तातारियो का अय, चीनियो का यू और पुराणो का आयु—ये तीनो नाम इस बात को साफ-साफ सिद्ध करते है कि इन तीनो जातियो का आदि पुरुष—जिसके वशजो से इन तीनो का विस्तार हुआ—कोई एक था और उसकी उत्पत्ति चंद्रमा से हुई थी।

इन्दु अथवा चंद्र का बेटा बुध पहला पुरुष था, जिसे हिन्दुओ मे वही स्थान मिला, जो चीन मे फो को मिला। अब हमे सीथियन अर्थात् शक जाति की उत्पत्ति पर विचार करना है और देखना है कि उस जाति का इन जातियो के साथ क्या सम्बन्ध था।

---

* चीनी ग्रन्थो के आधार पर सर विलियम जोन्स ने लिखा है कि चीनी लोग अपने आप को हिन्दुओ की एक शाखा मानते है। लेकिन प्राचीन तथ्यो पर यह स्वीकार करना पडता है कि हिन्दू और चीनी-दोनो चंद्रवशी जातियाँ है और दोनो जातियो के पूर्वज सीथियन (शक) थे।

X सस्कृत मे नाग और तक्षक को साँप कहते हैं। इसको बुध का चिन्ह माना जाता है। भारत मे प्रसिद्ध नाग जाति के लोग सीथिया के निवासी तक्षक और तकयुक है। इन लोगो ने ईसा से छै शताब्दी पहले भारत मे आक्रमण किया था।

.- यह समय और पुराणौ मे स्वीकार किया गया समय लगभग एक ही है।

सीथियन लोग सब से पहले अरेक्सीज नदी पर रहते थे। उनकी मूल उत्पत्ति ६
पृथ्वी से हुई, जिसके कमर के उपर का भाग एक स्त्री के रूप था और नीचे का भाग एक
तरह था। जूपीटर (वृहस्पति) से उसके एक बेटा पैदा हुआ उसका नाम था सीथीस। *

उसके वशजो ने उसी के नाम से अपनी जाति का नाम रखा। सीथीस के दो
हुए। एक का नाम था पालास और दूसरे का नाम था नापास। यहाँ पर यह शंका ह
यह वंश तातारियो का नागवश तो नही है, जिसने अपने अनेक कामो के लिये वडी ७
थी। उन लोगो ने अपनी सेना के बल पर बहुत सी जातियो पर अधिकार कर लिया
सीथियन साम्राज्य को पूर्वी महासागर, कास्पियन समुद्र और मोइटिस झील तक पहुँचा दि
उस जाति के बहुत राजा थे, जिनके वश मे सैकेन्स अथवा सैकी, मैसेजेटी अथवा जट
एरीअस्पियन और दूसरी बहुत सी जातियाँ है। उन्होने असीरिया और मीडिया † को
वहाँ के राज्य का सर्वनाश किया था। सैकी, जट और तक्षक आदि नाम की अनेक
जाति की थी। वे सभी जातियाँ और उपजातियाँ राजस्थान के छत्तीस राजवशो मे आ गय
नाम योरप की अन्यान्य जातियों के प्राचीन इतिहास मे भी मिलते है। अब देखना यह
जातियों का मूल निवास कहाँ पर था।

स्ट्रेबो ने लिखा है कि कास्पियन सागर के पूर्व मे रहने वाली सभी जातिया
जाती है। उन सबके रहने के स्थान अलग-अलग है। यह भी पता चलता है कि ये जाति
कतर भ्रमण किया करती थी और आवश्यकता के अनुसार अपने रहने का स्थान बना
बहुत बडी सख्या मे अपने स्थान से चलकर इन जातियों के लोग किसी देश के लोगो पर
करते थे। शक जाति के इन लोगो ने एशिया मे भी आक्रमण किया था। हमे इस बात
प्रमाण मिलता है कि इन लोगो के आक्रमण भारत मे उस समय हुए, जब उस जाति
योरप मे प्रवेश किया। इसी आधार पर यह मानने के लिये बाध्य होना पडता है कि र
योरप की प्राचीन जातिया प्राचीन काल मे किसी एक ही स्थान पर रहा करती थी
मूल उत्पत्ति एक थी। इस बात का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि इन सभी जातियो
देवता एक थे। उनमे प्रचलित कहानिया भी एक थी। उनमे प्रचलित रीति और रस्मे
थी। उनमे एक-सी आदते पायी जाती थी। आक्रमण करने की आदते भी उन सब
थी। उनकी भाषा मे कोई अतर न था। वे एक-से गाने गाते थे। जिस प्रकार की
पसंद करते थे, वे सब एक ही प्रकार की थी। पुराणो के अनुसार, इन्दु, सीथिक, जेटी,
असी जातियो का आरम्भ मे भारत मे आने तथा शेशनागु (तक्षक) का शेशनाग देश से आने
ईसा से छै शताब्दी पहले साबित होता है। इस बात का भी पता चलता है कि लगभग
इन जातियो ने एशिया माइनर पर आक्रमण करके उसको पराजित किया था। उसके ८

* सीथीस सीथि से बना है, सीथ+ईश, सीथ=शाक द्वीप और ईस अर्थात् ९
प्रकार सीथीस=सीथियन का स्वामी।

† चन्द्रवश की अश्व जाति अथवा बाजस्व जाति मीड के नाम से प्रसिद्ध है, जैसे
अजमीड और देवमीड। इन जाति के लोग बाजस्व के पुत्र थे। उनका मूल निवास ॰च
था। वहा से वे लोग असीरिया और मीडिया पर आक्रमण करने के लिये आये थे।

नेविया तथा बाक्ट्रिया के यूनानी राज्य पर हमला करके उसको विध्वंस किया था। इसके कुछ दिनो के बाद असी, काठी और किम्बरी जातियो ने रोमन लोगो पर बाल्टिक सागर के किनारे से आक्रमण किया था।

यहा पर यदि यह साबित किया जा सके कि आदि काल मे जर्मनी के लोग सीथियन थे अथवा गाथ या जेटी जाति से सम्बन्ध रखते थे तो जिस निष्कर्ष पर हम पहुँचना चाहते है, उसके लिए बहुत कुछ रास्ता साफ हो जायेगा। हेरोडोटस के अनुसार, शक लोगो ने ईसा से पाँच सौ वर्ष पहले स्कैण्डीनेविया पर अधिकार कर लिया था। ये शक लोग मरकरी अर्थात बुध, ओडन अर्थात ओडिन की आराधना करते थे और अपने आप को उन्ही की सन्तान कहते थे। यूनानियो और रोम लोगो के देवता एक ही थे और उनके विश्वास भी एक ही प्रकार के थे। उनके देवता निग और टेरा बुध और पृथ्वी के पुत्र थे। देवी-देवताओ और इस प्रकार की सभी बाते स्कैण्डीनेविया वालो की ठीक वह है, जो यूनान और रोम की है। इस प्रकार की अनेक प्राचीन जातियो की सभी बाते एक दूसरे से बिल्कुल मिलती-जुलती है। उनके परस्पर विचारो और विश्वासो मे कोई अन्तर नही था। प्राचीन योरप की जातियो, राजपूतो और सीथियन अर्थात शको की उत्पत्ति एक ही थी। इस पर यहाँ थोडा-सा विचार कर लेना चाहिए।

एक विद्वान लेखक ने लिखा है—"तातारियो के साथ हम लोग घृणा करते है। लेकिन यदि हम इन तातारियो और अपने पूर्वजो के सम्बन्ध मे थोडा-सा विचार करे तो हमे मालूम होगा कि हम मे और उनमे कोई अन्तर नही है। हम दोनो के पूर्वज एक ही थे और वे एशिया के उत्तर से आये थे। हमारे और उनके जीवन की सभी बाते एक-सी है। इस प्रकार की बातो को समझ लेने पर उनके प्रति हमारी घृणा की भावना समाप्त हो जायगी।'

वे सब तातार से आने वाले ही थे, जिन्होने सिम्ब्रियन, केल्ट और गाथ के नाम से योरप का समस्त उत्तरी भाग अपने अधिकार मे कर लिया था। गाथ, हूण एलन, स्वीड, वांडल, फ्रैंक आदि जातियो के लोग वास्तव मे एक ही थे। स्वीडन इतिहास के अनुसार स्वीड लोग तातार से आये थे, और सैक्सन तथा किपचक भाषाओ मे कोई विशेष अन्तर नही। ब्रिटनी और वेल्स मे अब तक बोली जाने वाली केल्टिक भाषा इस बात का प्रमाण है कि वहाँ के निवासी तातारियो के वंशज है।

प्राचीन काल मे अनेक प्रदेशो ने सभ्यता मे उन्नति की थी। एशिया की ऊँची जमीन पर बसने वाली जातियो का जीवन केवल देहाती नही था बल्कि सू लोगो ने जब वहाँ यूनी और जिट लोगो पर आक्रमण किया तो आक्रमणकारियो को वहाँ पर एक दो से अधिक ऐसे नगर मिले, जिनमे भारत की तैयार की हुई बहुत-सी व्यावसायिक चीजो की बिक्री होती थी और उनमे यहाँ के राजाओ के चित्रो के साथ सिक्को का प्रचार था। मध्य एशिया की यह अवस्था ईसा से बहुत पहले थी। उसके बाद इन देशो मे ऐसी लडाइयाँ हुई, जिन्होने उन देशो का सर्वनाश किया। इस प्रकार की लडाइयाँ योरप मे कभी नही हुई। उस समय से यह देश बरबाद हो गया।

जेटी, जोट अथवा जिट और तक्षक जातिया जो आज भारत के छत्तीस राजवशो मे शामिल है, सब की सब सीथिया प्रदेश से आई है। पूर्वकाल मे उनके स्थान छोडने का कारण हमे पुराणो मे खोजना चाहिए। परन्तु उनके हमलो के सम्बन्ध मे बहुत-सी बातो की जानकारी महमूद गजनवी और तैमूर के इतिहास से होती है।

राजपूत जातियों का ऐतिहासिक परिचय

जौऊद-के पर्वतो से लेकर मकरान के किनारे और गगा के समीपवर्ती स्थानो मे ि बहुत बड़ी तादाद मे रहते है। प्राचीन ग्रन्थो और शिला लेखो मे तक्षक जाति क मिलता है।

इन प्राचीन जातियो के नामो मे भी अब परिवर्तन हो गये है। जेटी लोग बहुत स्वतत्र बने रहे। लेकिन उनको पराजित करने के लिये जब साइरस ने उन पर आक्रमण टोमिरिस ने उनका सामना किया। कई लडाइयो के बाद वे सतलज नदी के पार भागकर और लाहौर के जिट सरदार की मातहती मे रगरूटो की तरह भर्ती होकर एवम् बीकानेर मरुभूमि मे चरवाहो की तरह रहने लगे। बाद मे चरवाहो का काम छोडकर वे लोग का काम करने लगे।

इन इन्दु सीथिक जातियो अर्थात् जेटी, तक्षक, अस्सी, कट्टी, राजपाली, हूण, के आक्रमणो के बाद इस देश मे इन्दुवश (चन्द्रवश) के सस्थापक बुध की पूजा का श्री ग अश्व अथवा वाजस्व का ईन्दुवश सिन्धु नदी के दोनो किनारो के प्रदेशो मे आबाद हो ग लोग इन्दुवशी थे। लेकिन यही नाम सूर्यवशी की एक शाखा का भी पाया जाता है। मे लिखा गया है कि वे लोग घोडो की सवारी करते थे और घोडो की पूजा भी करते थे देवता को घोडे की बलि भी देते थे। जेटिक जाति मे प्रचलित अश्वमेध यज्ञ इस बात का प्रमाण है कि इस जाति के लोगो की उत्पति सीथियन लोगो से हुई, क्योकि यह प्रथा सीि की बहुत पुरानी है।

ईसा से १२०० वर्ष पहले, सूर्यवशी राजाओ मे गंगा और सरयू के तट पर अश किया जाता था। इसी प्रकार की प्रथा जेटी लोगो मे शाईरस के समय थी। घोडे की उसका वलिदान देना राजपूतो मे आज तक पाया जाता है। स्कैण्डीनेविया मे घोड़े की का प्रचार जेटी जाति मे अस्सी लोगो द्वारा हुआ और सू, सुएबी, कट्टी, सुकिम्ब्री और समस्त प्राचीन जर्मन जातियो ने इस प्रथा का प्रचार जर्मनी के जगलो और एल्ब तथा के आस-पास किया। दूध के समान सफेद घोडे को लोग ईश्वर का अंश मानते थे और हिनाहट से भविष्य मे होने वाली घटनाओ का अनुमान लगाते थे। इस प्रकार का विश और जमुना के समीप रहने वालो मे उस समय से फैला हुआ था, जब स्कैण्डीनेविया के बाल्टिक समुद्र के किनारे तक कोई मनुष्य कभी पहुँच भी नही पाता था।

चीन और तातार के इतिहास लेखको के अनुसार, बुद्ध और फो ईसा से १०२७ हुए थे। वाक्ट्रिया और जेहुन नदी के किनारे वसने वाले यूची लोग बाद मे जेटा नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका साम्राज्य एशियाई भाग मे वहुत समय चला और वह फैला हुआ था। यूनानी लोग इनसे इन्डोसीथी के नाम से परिचित थे। उनके जीवन क बाते तुर्को की तरह की थी। शेषनाग देश से तक्षक जाति के आने का समय छठी शताब्दी म

मूल उत्पत्ति एक होने का सब से बड़ा प्रमाण भाषा की अपेक्षा धर्म भी है। भाषा मे हमेशा परिवर्तन होता रहा है। लेकिन रीति-रिवाज और धार्मिक विश एक रहते है। टैसिटस अपने लेखो मे स्वीकार करता है कि जर्मन का प्रत्येक मनुष्य

* बलूचिस्तान की नूमरी अथवा लोमड़ी जाति के लोग जिट है। इन्ही लोगो क नोमाड़ी नाम देकर अपने लेखो मे उल्लेख किया है।

उठने पर सब से पहले स्नान करता था। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि जर्मनी के प्राचीन निवासियो की उत्पत्ति जर्मनी की तरह के किसी शीत प्रधान देश की नहीं हो सकती। निश्चित रूप से उनकी उत्पत्ति का स्थान पूर्वी देशो मे कही पर था। सीथियन, किम्ब्री, जट, कट्टी और सुएवी लोगो की बहुत-सी बाते दूसरी जातियो के साथ मिलती है और वे राजपूतो मे अब तक पाई जाती है।

धार्मिक विश्वासो की समानता पूर्ण रूप से इस बात को साबित करती है कि सभी जातियो की मूल उत्पत्ति एक थी। जर्मनी के प्राचीन लोग ट्रुस्टो (मर्क्यूरी अर्थात बुध) और अर्था (पृथ्वी) को अपना मुख्य देवता मानते थे। स्केण्डीनेविया की जेटी जातियो मे सुयोनीज अथवा सुएवी एक प्रसिद्ध जाति थी। वह बाद मे अनेक जातियो मे विभाजित हो गयी थी। उन जातियो के लोग पृथ्वी की पूजा करते थे और उसे प्रसन्न करने के लिये मनुष्य की बलि देते थे।

सुएवी लोग ईसिस (ईस, गौरी) की पूजा करते थे। उदयपुर में अब तक गौरी का त्यौहार मनाया जाता है और उनके मानने का तरीका ठीक वैसा ही है जैसा कि ऊपर लिखी हुई जातियाँ प्राचीन काल मे मनाया करती थी। इस प्रकार के वर्णन हेरोडोटस ने अपने ग्रन्थो मे किये हैं।

संसार की सभी प्राचीन जातियो के युद्ध के तरीके एक से थे। उन सब के देवता एक थे। भाषा की विभिन्नता के कारण आज उनके नामो मे अन्तर आ गये है। सभी जातियां युद्ध मे जाने के पहले देवताओ का स्मरण करती है और अपने आदि पुरुषो से प्रेरणा प्राप्त करती है। यह पहले लिखा जा चुका है कि संसार की सभी जातियो का आदि पुरुष एक ही था। प्राचीन काल मे युद्ध मे जाने वाले लोग अपने-अपने देवता की मूर्तियाँ ले जाते थे। युद्ध मे लड़ने की कलाएँ उन सभी की एक-सी थी। सभी जातियो मे लोग हथियारो मे बर्छा और भालो का प्रयोग करते थे। सुएवी अथवा सुयेनीज लोगो ने उपसाला का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया और उसमे थोर, वोडिन और फ्रेमा नामक अपने देवताओ की मूर्तियाँ रखी। सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजपूतो मे भी ये तीन देवता माने जाते हैं। थोर अर्थात् युद्ध का देवता महादेव अर्थात् शत्रु का नाश करने वाला देवता, दूसरा वोडिन अर्थात् बुध जो रक्षा करता है और तीसरा फ्रेमा अर्थात् उमा जो शक्ति उत्पन्न करने वाली देवी है वसन्त ऋतु मे फ्रेमा का उत्सव मनाने की प्रसिद्ध प्रथा थी। उस उत्सव मे स्कैण्डीनेवियन लोग सुअर का वलिदान करते थे।

इसी वसंत मे राजपूत लोग सबसे बडा उत्सव मनाते है और वसन्त के प्रारम्भ मे राजपूत राजा सुअर का शिकार करने के लिये अपने सरदारो के साथ जाता है। यदि राजा को सुअर के शिकार में सफलता न हो तो उसके लिये वह वर्ष अपशकुन का माना जाता है।

पिंकर्टन टॉलेमी के अनुसंधान के आधार पर जटलैंड की जिन छै जातियो का जिक्र किया गया है, उनके देवता और उनके धार्मिक विश्वास उसी प्रकार के थे जैसे कि ऊपर अनेक प्राचीन जातियो के सम्बन्ध मे लिखा गया है। सैमीज ने भी इन बातो का समर्थन किया है।

जटलैण्ड की छै जातियो मे किम्ब्री का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उस जाति के लोग अपने जीवन मे वीरता को सबसे प्रधान मानते थे। भारत के राजपूतो मे जितने भी अच्छे गुण थे और आज भी है, उनमे उनकी वीरता प्रमुख है। कोई भी ऐसा राजपूत न मिलेगा, जिसमे इस गुण का अभाव हो।

इस प्रकार की और भी बहुत-सी बाते मिलती है जो संसार की विभिन्न प्राचीन
का आदिकाल मे एक होना साबित करती है। कुमार को राजपूत युद्ध का देवता मानते है।
के ग्रंथो मे और उनकी देव-कथाओ मे उस देवता के सात सिर बताये गये है। सैक्सन ल
युद्ध के देवता के छै सिर मानते थे।

किम्ब्री चेर्सोनीज का मार्स छै सिर वाला माना गया था और वेजर नदी के तट पर उ
का इर्मन स्योल बनाया गया था। सैकेसनी, कट्टी, सीबी अथवा सुएबी, जोटी अथवा जे
किम्ब्री जाति के लोग उसकी पूजा किया करते थे।

राजपूतो के धर्म और सिद्धान्त बाकी उन हिन्दुओ के धर्म और सिद्धान्तो से नही
जो लोग फलो, पत्तियो और पौदो को खाकर जीवन निर्वाह करते है और गाय की पूजा क
राजपूत लोग युद्ध करना और शत्रु का नाश करना पसद करते है, अपने युद्ध के देवता पर
और मदिरा चढाते है और जिस पात्र मे वे अपने देवता का अर्ध्य देते है, वह मनुष्य की
का होता है। उनका देवता इन चीजो को पसन्द करता है और इसीलिये उनको भी
राजपूतो की ये सभी बाते, उनके कार्य विश्वास और सिद्धान्त ठीक उसी प्रकार के है, जि
स्कैण्डीनेवियन वीरों के।

राजपूत भैसो की हिसा करते है, सुअर और हरिन का शिकार करके उनके मांस क
के रूप मे खाते है। वे अपने घोडे, तलवार और सूर्य की पूजा करते है और ब्राह्मणो
के मुकाबिले मे वे वीर रस से भरे हुए भाटो की कविताओ को अधिक पसन्द करते है। ठ
प्रकार का स्वभाव स्कैण्डीनेविया के लोगो का पाया जाता है। उनकी देव—कथाओ मे ब
कथानक पाये जाते है और उनकी किताबो मे वीररस पूर्ण कविताये मिलती है। पूर्व और
की इन जातियो की आलोचना करने से पता चलता है कि इन जातियो के आदि पुरुष ए
और उनकी उत्पत्ति एक दूसरे से भिन्न नही है।

भाट कवि राजपूतो को अपनी कविताये सुनाकर जिस प्रकार युद्ध मे जाने के लि
करते थे, उसी प्रकार प्राचीन काल मे सैक्सन लोगो मे भी इस प्रकार की प्रथा थी और
भी कुछ लोग भाट कवियो की तरह का ही काम करते थे। टैसीटस ने उनके सम्बन्ध मे लि
युद्ध मे जाने के समय वे लोग जोशीली कविताये सुनाकर सैक्सन लोगो को युद्ध के लिये तैय
थे। राजपूत आज भी रामायण, गीता और अन्य हिन्दू ग्रथों की अपेक्षा महाभारत
अधिक पढते और गाते है।

राजपूत और संसार की अनेक प्राचीन जातियाँ आदि काल मे एक थी। उनकी ९
थी। वे सब एक ही वृक्ष के फल है जो संसार मे आज चारो तरफ फैले हुए है। इस
साबित करने के लिये प्राचीन काल की सामग्री इतनी अधिक है कि उन सब को एकत्रित क
बहुत बड़ा ग्रथ लिखा जा सकता है। इसलिये यहाँ पर उन सब का लिख सकना सम्भव

महाभारत के समय से लेकर भारत मे आक्रमण करने वाले मुसलमानो की
इण्डो-सीथीक जातियो मे रथ की सवारी खूब मिलती है। उसके बाद रथ की सवारी
धीरे-धीरे कम होती गई। इसके पहले संसार की प्राचीन जातिया लडाई मे रथो का
करती थी। रथ की सवारी का प्रचार दक्षिण-पश्चिम भारत मे अभी कुछ दिन पहले भी व
जाता था और सौराष्ट्र की काठी, कोमानी और कोमारी जातियो की रहन-सहन, उनके
विश्वास और जिन्दगी की बहुत-सी बाते अब तक बिल्कुल सीथियन लोगो की तरह की पायी

प्राचीन जर्मनी और स्कैण्डीनेविया की जातियो, जेटी लोगो और राजपूतो के आचारो, सिद्धान्तो और विश्वासो मे सब मे अधिक समानता स्त्रियो के प्रति व्यवहारो मे मिलती है। वे सभी लोग स्त्रियो के प्रति शिष्टता कुछ इस प्रकार प्रकट करते है, मानो उन सभी ने इस विषय मे किसी एक ही स्कूल से और एक ही गुरु से शिक्षा प्राप्त की है।

टैसीटस ने लिखा है कि जर्मनी के लोग अपनी स्त्रियो पर बहुत विश्वास करते है और उनके परामर्श को भविष्यवाणी के रूप मे मानते है। राजपूतो की भी यही अवस्था है। अपनी स्त्रियो का सम्मान करते है और उनके मान-सम्मान मे वे अपने प्राणो को उत्सर्ग कर देते हैं।

प्राचीन काल मे जुआ खेलने की आदते सीथियन लोगो मे पायी जाती थी और उन्ही के द्वारा जर्मनी के लोगो मे इस आदत का प्रचार हुआ। राजपूतो मे भी जुआ खेलने की आदत खूब पायी जाती है। जुआ मे अपना शरीर, अपनी रियासत और अपने अधिकृत लोगो को दाव मे लगा देने और हारने-जीतने की प्रथा सीथियन और जर्मनी के लोगो मे थी। भारत मे इसी दुर्व्यसन के कारण पाण्डवो ने अपना राज्य और शारीरिक स्वतन्त्रता जुए मे हारकर खो दी थी। समस्त हिन्दू जातियो मे अब तक इस प्रकार के जुए का प्रचार है, उनके धर्म मे भी इस कुप्रथा को स्थान दिया गया और वर्ष मे एक दिवाली के अवसर पर जुआ खेलने की आज्ञा दी गई है। वे लोग ऐसा लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिये करते है।

शकुन और अपशकुन पर इन जातियो का विश्वास बहुत पुराना चला आता है। जेटी जातियो और जर्मन जातियो के लोग प्राचीन काल मे शकुन और अपशकुन को बहुत मानते थे। इनको समझने के लिए उनके पास बहुत-सी बाते थी। चिट्ठियाँ डालने और पक्षियो को उड़ते देख कर इस प्रकार की बहुत-सी बातो का वे लोग अनुमान लगाकर विश्वास करते थे।

स्कैण्डीनेविया की असी जाति और जर्मन जातियों मे मदिरा पीने का प्रचार प्राचीन काल मे अधिक था। मदिरा सेवन मे भी राजपूत जातियो के लोग सीथिया और योरप के लोगो से किसी प्रकार कम नही है। मदिरा और मादक द्रव्यो के सेवन की आदत भारत मे इन्ही देशो से आयी है।

राजपूत लोग अपने अतिथि का सत्कार करना खूब जानते है। यहाँ तक कि शत्रुओ के साथ भी जब वे एक बार खा-पी लेते है तो उनकी शत्रुता के भाव मिट जाते है। इस प्रकार की आदते भी सीथियन तथा जर्मनो के पुराने लोगो मे पायी जाती थी।

युद्ध के देवता थोर की पूजा करने वाले स्कैण्डीनेविया के लोग मनुष्य की, विशेषकर शत्रु की खोपडी का प्याला बनाकर रक्त का पान करते थे। उनकी इस प्रथा की समता बहुत-कुछ राजपूतो के देवता महादेव के साथ होती है। महादेव के सम्बन्ध मे इस प्रकार की बाते पढने और सुनने को मिली है। महादेव उन सब का रक्षक है, जो सुरा और संग्राम से प्रेम करते है। राजपूतो की विशेष श्रद्धा महादेव पर रहती है और इसी आधार पर अपने प्रधान देवता को अर्घ्य देने के लिये रक्त और मदिरा को वे मुख्य पदार्थ मानते है।

मनुष्य के लडने के बाद मृतक की जो अन्तिम क्रिया होती है, उसके सम्बन्ध मे भी प्राचीन जातियो की एकता और समानता मिलती है। इसके सम्बन्ध मे स्कैण्डीनेविया मे दो प्रकार की प्रथाये पायी जाती थी। एक तो मृत शरीर को आग मे जलाकर भस्म कर देने की और दूसरी उसको पृथ्वी मे गाड देने की।

ओडिन बुध ने मृत शरीर को पृथ्वी मे गाड देने की प्रथा का प्रचार किया और वहा पर समाधि बनाने की रस्म भी उसके द्वारा चालू हो गयी। उसी समय मृत पति के साथ उसकी पत्नी के

जल जाने की प्रथा का भी प्रचार हुआ। इस प्रकार की बातो का प्रचार भारत मे शक अथवा शक-सीथिया से आकर हुआ। हेरोडोटस ने लिखा है—सीथिया मे लोग मरने पर जालाये जाते थे और उनके साथ उनकी पत्नी जीवित जला दी जाती थी।

स्कैण्डीनेविया के जेटी, सीबी अथवा सुएबी लोगो मे मृत-व्यक्ति के यदि एक से स्त्रियाँ होती थी, तो उसकी बडी स्त्री को ही अपने पति के साथ जलने का अधिकार था। साथ चिता बनाकर पत्नी के जलने की प्रथा राजपूतो मे ठीक उसी प्रकार की है जिस प्रका प्रथाये अन्य जातियो के सम्बन्ध मे ऊपर लिखी गई है। इसका साफ-साफ अर्थ यह है कि मे सीथिक, स्कैण्डनेविया और राजपूत जातियाँ एक थी।

हेरोडोटस लिखता है—'सीथियन जेटी लोगों की चिता पर उनके घोडे जीवित उनका बलिदान किया जाता था और स्कैण्डीनेविया के जेटी लोगो के मृत शरीर के सा घोडे और उनके अस्त्र-शस्त्र जमीन मे गडवा दिये जाते थे। उन लोगों का विश्वास था पर मृतक अपने घोडे पर बैठकर और अपने शस्त्रो से सुसज्जित होकर अपने प्रभु के पास अन्यथा उसे स्वर्ग मे पहुँचने के लिये पैदल ही चलना पडेगा। राजपूतो मे भी उनके घोडो के की प्रथा भी इससे मिलती-जुलती है। राजपूत का मृत शरीर शस्त्रो से सुसज्जित चिता जाता है और उसका घोडा उसके साथ जलाया नही जाता, बल्कि उसके देवता के नाम पर किसी पुजारी को अर्पण कर दिया जाता है।

जो राजपूत युद्ध मे मारे जाते है, उनके चबूतरे, स्तम्भ और किसी अन्य प्रकार के बनवाये जाते है और इस प्रकार के स्मारक अथवा उनके चिन्ह सम्पूर्ण राजस्थान मे अब त जाते है जिन पर मृतक को घोडे पर सवार और सभी प्रकार के शास्त्रो से सुसज्जित दिखाय है। उसके स्मारक मे उसकी सती स्त्री और सूर्य-चन्द्र की आकृति भी पत्थर पर खुदी हुई को मिलती है।

सौराष्ट्र प्रदेश मे काठी, कोमानी, बल्ला और दूसरे सीथिक वश के लोगो मे भी इस की प्रथाये प्रचलित थी। तातार के कोमानी लोगो मे उसी प्रकार के पत्थरो को प्रयोग मे जाता था, जिस प्रकार के पत्थरो के प्रयोग केल्ट लोगो मे होते थे। मृत्यु के बाद इस प्र स्मारक बनाने की प्रणाली प्राचीन जातियो मे लगभग एक-सी थी और वह प्रणाली उन स होने की साक्षी देती है।

राजपूत अपने घोडे के भक्त होते है और शस्त्रो की पूजा करते है। तलवार, ढाल और कटार उनके विशेष हथियारो मे रहे है और आज भी वे लोग अपने शस्त्रो को प्रण है एवं आवश्यकता पडने पर वे उनकी शपथ लेते है। प्रसिद्ध इतिहास लेखक हेरोडोटस ने जेटी लोगो के सम्बन्ध मे इसी प्रकार की अनेक बाते लिखी है।

सैनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जर्मनी के युवको मे जो प्रणाली काम मे लायी जा ठीक वही राजपूतो मे भी चलती है। अपने देवता को प्रसन्न करने के लिये प्राचीन 'ज वलि देने की जो प्रथाये थी वे एक दूसरे से बहुत भिन्न न थी। वलिदान की प्रथा एक ही थ दिये जाने वाले पशुओ मे भिन्नता थोडी बहुत मिलती है। हेरोडोटस ने लिखा है कि स्कैण् के लोगो मे सक्रान्ति का त्योहार वडी धूमधाम के साथ मनाया जाता था। राजपूतो और हि भी यह त्योहार मनाया जाता है।

मनुष्य जाति की उत्पत्ति होने के वाद भी, जव उनकी संख्या वढी, उस द्वारा अलग-अलग नामो से जातियो की उत्पत्ति हुई। आरम्भ मे उनकी भाषा एक थी,

वे लोग एक दूसरे से जितने ही दूर होते गये, उनकी भाषाओ मे अन्तर शुरू हुआ और धीरे-धीरे उनकी भाषाये भी अलग-अलग बन गयी। उन प्राचीन भाषाओ का मिलान करने से साफ-साफ जाहिर होता है कि उन सब की उत्पत्ति किसी एक ही भाषा से हुई है, क्योंकि उन सब की भाषाओ मे अनेक बातो की समता और एकता मिलती है। पशुओ, विभिन्न प्रकार के जीवो और अगणित चीजो के नाम उन भाषाओ मे बहुत मामूली अन्तर के साथ पाये जाते है। प्राचीन जातियो मे जो त्योहार मनाये जाते थे, उनके सस्कार अब तक अनेक बातो मे समता रखते है। इसी प्रकार अश्व-मेध यज्ञ की प्रथा भी बहुत पुरानी है। इस यज्ञ मे भयानक रूप से व्यय किया जाता था और उसका परिणाम विनाश की ओर ले जाता था। भारतीय इतिहास मे उसके अनेक उदाहरण मिलते है। विस्तार भय से उन पर यहाँ अधिक नही लिखा जा सकता। इस यज्ञ मे बहुत-से पक्षियो और जीवो के साथ-साथ, घोडे का वध किया जाता था। इस प्रकार के वध के समय ब्राह्मण वेद-मंत्रो का उच्चारण करते थे। एक अपार भीड के बीच मे यज्ञ करने वाला राजा यज्ञ के समीप बैठकर बलि दिये जाने वाले जीवो के बलिदानो को देखता था। उन जीवो के हृदयो को जब अग्नि के सुपुर्द किया जाता था तो राजा उसकी सुगध लेता था, इस यज्ञ मे ब्राह्मणो को बहुमूल्य सुवर्ण दान मे दिया जाता था। इस प्रकार की प्रथाये ससार की प्राचीन जातियो मे बहुत कुछ मिलती-जुलती पायी जाती थी और उनके सम्बन्ध मे प्राचीन धर्मो का विश्वास एक-सा था।

धर्म के नाम पर इस प्रकार न केवल पशुओ के बलिदान की प्रथाये थी, बल्कि पशुओ की तरह देवता को प्रसन्न करने के लिये मनुष्यो की बलि भी दी जाती थी, जैसा कि सेल्टिक ड्रूइन्ट लोगो के सम्बन्ध मे प्राचीन इतिहासकारो ने लिखा है।

विश्व की प्राचीन जातियो के सम्बन्ध मे इस प्रकार जितने भी अनुसधान किये जा सकते है, वे सभी इस बात का सबूत देते हैं कि आरम्भ मे वे सभी एक थी और उनकी उन्नति मे भी एक दूसरे से किसी प्रकार की भिन्नता नही रहती। धार्मिक विश्वास देवताओ की पूजा, युद्ध की प्रणाली शिकार करने की आदत, लडने के तरीके, युद्ध के गीत, युद्ध के हथियार, उनमे काम आने वाली सवारियाँ, स्त्रियो का सम्मान, जुआ खेलना, मादक चीजो का सेवन, आतिथ्य-सत्कार, पति के साथ पत्नी के जलने की प्रथा, मृत्यु के बाद के सस्कार और शस्त्र पूजा आदि जीवन की सैकडो बाते आदि काल मे उनके एक होने का प्रमाण देती है। जीवन की मोटी-मोटी बातो पर यहाँ प्रकाश डाला गया है। खोज करने के बाद और भी बहुत-सी ऐसी बाते उनके जीवन की मिल सकती हैं, जो हमारे इस अनुसधान का समर्थन करती है कि ससार की सभी जातियो की उत्पत्ति का मूल आधार एक ही है। इसलिये इसके सम्बन्ध मे हमे अब अधिक लिखने और खोज करने की आव-श्यकता नही है। ससार की प्राचीन जातियो का प्रत्येक इतिहास लेखक इसी सिद्धान्त का समर्थन करता है। इसके विरोध मे हमे कोई सामग्री नही मिली।

सातवाँ परिच्छेद

राजस्थान के राजवंशो का विभाजन—उनकी नामावली—राजवंशों की शाखाये—व्यावसायिक जातियो की मौलिक उत्पत्ति—आदि काल मे दो ही वंश थे, सूर्यवंश और चन गहिलोत वंशियों का सूर्यवंशी होने का दावा—सिसोदिया नाम की उत्पत्ति—गहिलोत शाखाये—कृष्ण की मृत्यु के बाद उसके बेटे और यदुवश के लोग—यदुवंश की शाखा—वशज-युधिष्ठिर के द्वारा इन्द्रप्रस्थ की प्रतिष्ठा—बाद मे दिल्ली के नाम से उसकी ख्याति राठौर वश—राठौरो का प्राचीन स्थान—राठौर वश की शाखायें—रामचन्द्र के पुत्र कुश कुशवाहा लोग—राजपूतो के वंश और उनकी शाखाये।

राजस्थान के सभी राजवंश छत्तीस भागो मे विभाजित माने जाते है। इन वशो की और उनके विवरण उन साधनो के द्वारा प्राप्त किये गये है, जिनके सम्बन्ध मे अधिक विश्वा जा सकता है और उनसे अधिक विश्वस्त साधन कोई दूसरा सम्भव नही हो सका।

राजस्थान के जिन छत्तीस राजवंशों का हम इतिहास लिखने जा रहे है, वे बहुत-सी अर्थात् उपवशो मे विभाजित है और ये शाखाये अगणित प्रशाखाओ अर्थात् गोत्रो मे बदल ग उनकी संख्या बहुत अधिक है, इसलिये जो अधिक प्रसिद्ध है, उन्ही के विवरण यहां पर दिये

इन राजवशो मे कुछ वंश ऐसे भी है, जिनकी शाखाये नही है और उनकी सख्या एक तिहाई के है। उन के साथ-साथ चौरासी व्यावसायिक जातियो की नामावली भी यहा गयी है, जो विशेषकर राजपूतो की ही शाखाये है और इस सूची मे उन जातियो के भी विव जो आदि काल मे खेती का काम करती थी अथवा पशुओ के द्वारा अपना जीवन-निर्वाह करत

आरम्भ मे सूर्य और चन्द्र-दो ही वश थे। बाद मे चार अग्निवंश वालो के मिल उनकी सख्या छै हो गयी। इनके सिवा अन्य जितने भी वश है, वे सब सूर्यवंश और चन शाखायें है। अथवा उनकी उत्पत्ति इण्डो-सीथियन जाति से हुई है, जिनकी गणना भारत मे शासन के पहले, राजस्थान के छत्तीस राजवशो मे की जाती थी।

गहिलोत अथवा गहलोत-छत्तीस वंशो के आभूषण और चित्तौर के स्वामी सूर्यवशी की वशावली—सभी की सम्मति के अनुसार जैसा कि इस जाति के गोत्र से भी साबित ह उपरोक्त वंश के सभी राजा सूर्यवंशी रामचन्द्र के वंशज माने जाते हैं। यह वश निकला है और पुराणो मे लिखी हुई वंशावली के अतिम राजा सुमित्र के साथ इस सम्बन्ध है। इस वंश की अधिक बातें मेवाड के इतिहास मे लिखी गई है। यहां पर उनकी उन्ही बातो का उल्लेख किया गया है, जो उनके गोत्र और प्रदेशो से सम्बन्ध अर्थात् जिस गोत्र के लोग कनक सेन के समय से उनके आधीन रहे है और जिन्होंने दूसरी २ मे अपना राज्य कोशल को छोडकर सौराष्ट्र मे सूर्यवंश की स्थापना की। विराट के स्थान

पाण्डवो के वनवास के समय उनके रहने का मशहूर स्थान था, इक्ष्वाकु के उस वशज ने अपने वश की प्रतिष्ठा की और उसके वशज विजय ने कई पीढियो के पश्चात् विजयपुर * बसाया।

इस वश के लोगो के द्वारा वल्लभी राज्य की प्रतिष्ठा नही हुई। लेकिन वे वल्लभी के राजा कहलाये। वहाँ का एक सम्वत भी चला और उसका आरम्भ विक्रम सम्वत ३७५ मे हुआ।

गजनी अथवा गयनी, वल्लभी राज की दूसरी राजधानी थी। उसका अन्तिम राजा शिलादित्य मारा गया था और छठी शताब्दी मे उसका परिवार वहाँ से निकाल दिया गया था। गुहादित्य, शिलादित्य का लडका था, जो उसके मरने के बाद पैदा हुआ था। उसने ईडर नामक छोटे से राज्य पर अधिकार कर लिया और उसी के नाम पर उसका वश चला। उस समय से यह सूर्यवशी कुल गहिलोत कहलाने लगा। उसके कुछ समय बाद गहिलोत वश अहाडिया वश कहलाया और बारहवी शताब्दी तक उसी नाम से वह प्रसिद्ध रहा। उस वश के राहुप नामक व्यक्ति ने चित्तौर की गद्दी का अपना अधिकार छोडकर डूंगरपुर मे एक अलग राज्य बनाया। उस राज्य के लोग अब तक अपने आप को अहाडिया के वशवाले बतलाते है।

राहप के छोटे भाई माहप ने अपने राज्य की राजधानी सीसोदा मे कायम की और उस समय से उसके वशज सीसोदा नामक स्थान के नाम पर सीसोदिया कहलाये। उस समय से यह वश अब तक इसी नाम से विख्यात है। लेकिन यह सीसोदिया उपवश गहिलोत की शाखा माना जाता है।

गहिलौत वश चौबीस शाखाओ मे विभक्त हो गया था और उनमे थोडी शाखाये अब अपना अस्तित्व रखती है। चौबीस शाखाये इस प्रकार है।

(१) अहाडिया डूंगरपुर मे (२) माङ्गलिया मरुभूमि मे (३) सीसोदिया मेवाड मे (४) पीपाडा मारवाड मे (५) कैलावा (६) गहोर (७) धोरणिया (८) गोधा (९) मगरोपा (१०) भीमला (११) ककोटक (१२) कोटेचा (१३) सोरा (१४) ऊहड (१५) ऊसेवा (१६) निरूप (ये ५ से १७ तक बहुत कम सख्या मे थे और अब उनके अस्तित्व नही मिलते) (१७) नादोडया (१८) नाधोता (१९) भोजकरा (२०) कुचेरा (२१) दसोद (२२) भटेवरा (२३) पाहा और (२४) पूरोत। इनमे १७ से ३४ तक वश बहुत पहले से समाप्त हो गये है।

यदु जिससे यादव वश चला, सभी वशो मे अधिक प्रसिद्ध था और चन्द्रवश के आदि पुरुष बुध के वशजो का यही वश बाद मे प्रसिद्ध हुआ।

कृष्ण का देहान्त हो जाने पर युधिष्ठिर और बलदेव के दिल्ली और द्वारका से चले जाने पर यदुवंशी लोग मुल्तान के रास्ते सिन्धु के उस पार चले गये। उनके साथ कृष्ण के पुत्र भी गये, उन्होने जाबुलिस्तान पहुँच कर गजनी नगर की प्रतिष्ठा की और समरकन्द तक अपना विस्तार किया।

यादवो ने सिन्धु के पार जाकर पजाब मे अधिकार कर लिया और सलभनपुर को आबाद किया। लेकिन उसके कुछ बाद वे वहाँ से चलकर भारत की मरुभूमि मे पहुँच गये और वहाँ से लङ्गधा जोहिया और मोहिल आदि लोगो को भगाकर तन्नौट देरावल तथा सम्वत् १२१२ मे जैसलमेर की प्रतिष्ठा की। यही जैसलमेर कृष्ण के वशजो भट्टी अथवा भाटी लोगो की अब तक राजधानी है। यहाँ पर भट्टी नाम का एक वश चला, जिसे भट्टी ने चलाया। इन लोगो ने गारह नदी के दक्खिन

---

* यह स्थान विराट के साथ मिलाकर व्यवहार मे आता है, अर्थात् विजयपुर विराट गढ।

ओर के सभी देशो पर अधिकार कर लिया। लेकिन उनके प्रभाव को राठौर लोगो ने पहुँचक
कर दिया।

यदुवंश से जाडेजा * नाम की एक शाखा चली और उसे भी बहुत ख्याति मिली।
भी कृष्ण के ही वंशधर माने गये। श्याम अथवा साँवले होने के कारण कृष्ण का नाम श्याम
और उन्ही के वंशधर होने के कारण जाडेजा वंश के लोग अपने आपको श्याम पुत्र अथवा
कहते थे। इस जाति के लोगो मे जो राजा हुए, उनकी उपाधि सम्भा थी। इन श्याम पुत्रो के
में अनेक प्रकार की बाते लिखी हुई मिलती है। उनमे यह भी उल्लेख पाया जाता है कि
समय के बाद श्याम वंशियो ने अपने सम्बन्ध मे स्वीकार किया कि हम लोग शाम अथवा
से आये है और ईरान के जमशेद वंशी है। इसी आधार पर शाम के स्थान पर जाम हो गया
जाम के नाम पर ही जाम राज्य की भी प्रतिष्ठा हुई।

यदुवंश की आठ शाखाये है—[१] यदु करौली के राजा, [२] भाटी जैसलमेर के
[३] जाडेजा कच्छ भुज के राजा, [४] समैचा सिंध के मुसलमान, [५] मुडेचा, [६] बि
[७] बद्दा और [८] मोहा। अंत की इन तीनो शाखाओ का कोई विवरण नही मिलता।

तोअरवंश वास्तव मे यदुवंश की एक शाखा है, परन्तु उसे छत्तीस वंशों मे स्थान
गया है। युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ की स्थापना की थी, जिसका नाम बाद मे दिल्ली पडा।
शताब्दी तक वह सूनसान रहा। सन् ७४२ ईसवी मे अनंगपाल तोअर ने फिर से उसके निम
काम किया। उसके बाद उसके बीस वंशज वहाँ के राजसिंहासन पर बैठे। इन बीस मे
राजा का नाम भी अनंगपाल ही था, जिसने पुत्रहीन होने के कारण सन् ११६४ ई० मे
लड़की के पुत्र पृथ्वीराज को अपने राज्य का अधिकारी बनाया।

राजपूतो मे राठौर वंश बहुत प्रसिद्ध हुआ। लेकिन उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध मे कई
के उल्लेख मिलते है। राठोर वंश के लोग अपनी उत्पत्ति रामचन्द्र के पुत्र कुश से
इस आधार पर वे लोग सूर्यवंशी होने चाहिए। लेकिन उस वंश के भाट लोग इस बात को
नही करते। उनका कहना कुछ और है, जिसके लिखने की यहाँ पर आवश्यकता नही मालूम

राठौरों का प्राचीन स्थान गाधीपुर अर्थात् कन्नौज है। वहाँ पर इस वंश के लोग
शताब्दी मे राज्य करते थे और तातारियो ने जब भारत को विजय किया है, उसके कुछ
लोगो ने दिल्ली के अन्तिम तोअर राजा और फिर चौहान राजाओ के साथ युद्ध किया था।
ईर्षा के कारण दिल्ली का चौहान राजा मारा गया और उसकी पराजय से उत्तर-
सीमा की रक्षा का फाटक खुल जाने से कन्नौज का नाश हुआ। कन्नौज के उस सर्वनाश मे
का अन्तिम राजा जयचन्द जब गंगा मे डूब कर मर गया तो उसके पुत्र ने मारवाड की
मे जाकर अपनी जान बचायी। जयचन्द के इस लडके का नाम सियाजी था। उसने
राठोर वंश की प्रतिष्ठा की।

राठौर राजपूतो की चौबीस शाखाये है—धाधला, भडेल चम्पावत, धूहाडिया, खोखरा,
[illegible], रामदेवा, कनरिया, हटदिया, मालावत, सुगर [illegible], मुहोली, गोगादेवा महेचा, जय
सुरनिया, [illegible], जोरा, आदि।

कुशवाहा—रामचन्द्र के पुत्र कुश के वशज कुशवाहा कहलाते है । इस वश का नाम कुशवशी भी है जैसे मेवाड के राजपूत लववशी माने जाते है ।

दो शाखाये कोशल देश से निकली है । उनमे से एक ने सोन नदी के किनारे रोहतास की स्थापना की और दूसरी लाहर के पास जाकर कोहारी के दर्रो मे रहने लगी । दसवी शताब्दी मे एक शाखा ने अपने स्थान से चलकर वडगूजर जाति के राजपूतो मे राजोर और उसके आस-पास के इलाको को लेकर आँवेर को स्थापना की । वारहवी शताब्दी के अन्त मे भी कुशवाहा वश के लोग दिल्ली राज्य के सामन्तो मे थे । राजस्थान के दूसरे वशो का जब पतन आरम्भ हुआ, उस समय से कुशवाहा वश की उन्नति आरम्भ हुई ।

कुशवाहा वश भी वारह भागो मे विभाजित हुआ और ये भाग कोठारियो के नाम से प्रसिद्ध हुए, उनका वर्णन आगे किया जायगा ।

अग्निकुल अथवा वश राजपूतो मे चार वश ऐसे है, जिनकी उत्पत्ति अग्नि से बतायी जाती है । परमार, परिहार, चालुक्‍—अथवा सोलकी और चौहान—इस प्रकार चार वश अग्निवशी कहे जाते है । अग्निवशी राजपूतो की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की कथाओ के उल्लेख मिलते हैं । उनका ऐतिहासिक सत्य इतना ही है कि जिस समय ब्राह्मणो के द्वारा अगणित देवी-देवताओ की पूजा का प्रचार वढ रहा था, बौद्धधर्म ने उनका विरोध किया और एक ईश्वर की आराधना का प्रचार किया । उस समय ब्राह्मणो ने बौद्धधर्मी लोगो के विरोध का निर्णय किया और इसके लिये आवू की चोटी पर अग्निकुण्ड वनाकर जिनको सस्कार करके बौद्ध धर्म के विरुद्ध युद्ध करने के लिये तैयार किया, उन राजपूतो की उत्पत्ति अग्नि से मानी गयी और उसी समय से वे और उनके वशज अग्निवशी कहलाये ।

परमार वश से पैतीस शाखाओ की उत्पत्ति हुई और बहुत बडे विस्तार मे उन लोगो ने राज्य किया । उनके विस्तार के कारण ही अब तक लोग कहा करते है कि पृथ्वी परमारो की है । परमारो के द्वारा जो राज्य जीते गये अथवा बसाये गये, उनमे माहेश्वर, धार, माण्डू, उज्जैन चन्द्रभागा, चित्तौर, आवू, चन्द्रावती, मऊमैदाना, परभावती, उमरकोट, वेरार, लोद्रवा और पट्टन अधिक प्रसिद्ध है । परमार वश के लोग सम्पत्ति मे अनहिलवाडा के समान और प्रताप मे राजपूतो की तरह के न थे, परन्तु राज्य के विस्तार मे उनकी ख्याति अधिक थी ।

ऐसा मालूम होता है कि हय अथवा हैहयवश के राजाओ की प्राचीन राजधानी माहेश्वर, परमार राजपूतो की पहली राजधानी थी । परमार राजपूतो के राज्य की सीमा नर्मदा ही तक न थी, वल्कि राम नामक परमार राजा का राज्य तिलङ्गाना मे भी था और चौहान राजाओ का भाट चन्द उसे भारत के सम्राट होने की पदवी देता था । लेकिन राम के उत्तराधिकारी अपने अधिकारो की रक्षा के लिये काफी न थे । इसीलिये उनसे चित्तौर का राज्य गहलौत राजपूतो के द्वारा छीन लिया गया था ।

परमार राजपूतो मे राजा भोज का नाम बहुत प्रसिद्ध है । भारत मे भोज नाम के कई राजा हुए है । लेकिन, परमारो मे इस नाम का एक ही राजा हुआ हे, जिसने बहुत ख्याति प्राप्त की थी ।

सिकन्दर का प्रतिद्वन्दी चन्द्रगुप्त मौर्य वश का था । पुराणो मे उसको तक्षक वशी लिखा गया है । परमारो की अनेक शाखाये है, मोरीवश उसकी एक मुख्य शाखा है । इस वश को तुण्टा अथवा तक्षक भी लिखा गया है ।

विक्रमादित्य को पराजित करने वाला शालिवाहन तक्षकवशी था। परमार महत्व को प्रकट करने वाले अब उनके खँडहर ही बाकी रह गये है। इस देश की मरुभूमि मे का राजा इस वंश का अन्तिम राजा था। वह सोडा कुल मे पैदा हुआ था, यह कुल परमार पूतो की एक प्रसिद्ध शाखा थी। इसी धाट के राजा के एक वशज ने हुमायूं को अपनी राज अमरकोट मे उस समय शरण दी थी, जब वह तैमूर के राजसिहासन से निकाला गया था भारत मे उसे कोई राजा शरण देने को तैयार न था। इसी अमरकोट मे हुमायूँ का पुत्र पैदा हुआ था।

परमार वश मे कुल पैंतीस शाखाये थी और उनमे विहल नाम की शाखा अधिक हुई। इस शाखा के राजाओ का राज्य चन्द्रावती मे था, जो अर्वली पहाड के बिल्कुल नीचे बीजोल्याँ का सरदार राणा के दरबार मे सम्मानित स्थान पर था, वह प्राचीन धाट परमार राजपूत था।

परमारो की पैंतीस शाखाये इस प्रकार है·

मोरी-इस शाखा मे चन्दगुप्त और गहिलोतो से पहले के चित्तौर के राजा हुए।

सोड—सिकन्दर के समय के सोगडी जो भारत की मरुभूमि मे धाट के राजा थे।

साँखला—पूँगल के जागीरदार और मारवाड मे।

खैर—इनकी राजधानी खेरालू थी।

ऊमरा और सूमरा—पहले ये लोग मरुभूमि मे रहते थे और अब इस शाखा के मुसलमान है।

वेहिल अथवा विहिल—चन्द्रावती के राजा।

मैयावत—मेवाड मे बीजोल्याँ के आधुनिक जागीरदार।

बुल्हर—मरुभूमि के उत्तरी भाग मे।

काबा—पहले सौराष्ट्र देश मे रहते थे और आजकल उनमे से कुछ लोग पाये जाते है।

ऊमट—मालवा मे ऊमटवाडा के राजा। वहाँ पर इस शाखा के लोग बारह पीढ़ी से है। परमार राजपूतो के अधिकार मे जितने भी प्रदेश है, ऊमटवाडा सबसे बडा है।

रेहवर, ढुण्डा, सोरटिया, हरैर—मालवा मे इन शाखाओ के लोग छोटे-छोटे जागीरद

इनके सिवा अन्य शाखाये बहुत साधारण है जैसे चौदा, खेचड़, सुगडा, बरकोटा सम्पल, भीबा, कालपुरस, कालमोह, कोहिला, पूया, कहोरिया, धुन्ध, देबा, बरहर, जीप्रा, धूँता, रिकमवा, ढीका आदि। इनमे से कई शाखाओ के लोगो ने इस्लाम धर्म कर लिया है।

चौहान—चौहान वश को चाहुमान* भी लिखा गया है। चौहान समस्त राजपूतो वीर रहे है। इनके सम्बन्ध मे किसी को विरोध नही हो सकता। इस वश की शाखाओ मे भी बहादुरी के कार्य सदा रहे है। चौहानो की चौबीस शाखाये है, उनमे हाडा, खीची, सोनगरा शाखाये अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध रही है।

---

* कुछ विद्वानो की धारणा है कि चाहुमान चौहान वंश का आदि पुरुष था और नाम से चौहान वंश चला।

चौहान का अर्थ है, चार बाँहवाला अर्थात् चतुर्भुज । पुराणों की कथाओं के अनुसार, दैत्यों से लडने के लिये जिनको ब्राह्मणों ने भेजा था, उनमे चौहान के सिवा दैत्यों से सभी पराजित हुए थे । चौहानो की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे हिन्दुओं की जो पौराणिक कथा है, उसको यहाँ पर संक्षेप मे लिखना आवश्यक मालूम होता है । वह इस प्रकार है

आबू पर्वत को—जिसे संस्कृत मे अर्बुदगिरि कहा जाता है, हिन्दू ग्रन्थों मे बहुत पवित्र माना गया है । उसके सम्बन्ध मे लिखा गया है कि उसकी चोटी पर केवल एक दिन का व्रत करने से मनुष्य के सारे पाप मुक्त हो जाते है ।

किसी समय इस आबू गिरि पर कुछ मुनि तपस्या कर रहे थे । दैत्यों ने उनको नष्ट करना शुरू कर दिया । वे मुनियो के तप और यज्ञ को भंग करने लगे । यह देखकर ब्राह्मणों ने दैत्यों को रोकने के लिये एक अग्निकुण्ड खोदा । लेकिन दैत्यों ने ऐसी आँधियाँ उठायी कि जिनसे चारों दिशाये अन्धकार पूर्ण हो गयीं और वहाँ पर मुनियों तथा ब्राह्मणों के द्वारा जो यज्ञ हो रहे थे उनमे विष्ठा, रक्त, अस्थि और माँस की वर्षा होने लगी । इससे मुनि और ब्राह्मण बहुत घबराये । अन्त मे मुनियो और ब्राह्मणों ने अग्नि कुण्ड को प्रज्वलित किया और दैत्यों के विनाश के लिए महादेव से प्रार्थना की । उस प्रार्थना के बाद अग्नि कुण्ड से एक पुरुष निकला । परन्तु वह देखने मे योद्धा नहीं मालूम होता था । इसलिये ब्राह्मणों ने उसे द्वारपाल बनाकर वहीं पर बिठा दिया । उसका जो नाम रखा गया; उसका अर्थ पृथिहार अथवा परिहार होता है । उसके बाद दूसरा पुरुष निकला, उसका नाम चालुक्य हुआ । तीसरा पुरुष जो निकला, उसका नाम परमार रखा गया । वह दैत्यों से युद्ध करने गया, लेकिन वह पराजित हुआ । इसके बाद देवताओं से फिर प्रार्थना की गयी तो अग्नि कुण्ड से एक दीर्घकाय और उन्नत ललाट का पुरुष निकला । उसके सम्पूर्ण शरीर मे युद्ध के वस्त्र थे । वह एक हाथ मे धनुष और दूसरे मे तलवार लिये था । उसका नाम चौहान रखा गया । चौहान को दैत्यो से लडने को भेजा गया तो उसने दैत्यो को पराजित किया । कुछ मारे गये और कुछ भाग गये । दैत्यो के सर्वनाश से मुनि और ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुए । उस चौहान के नाम से उसके वंश का नाम चौहान वंश चला और उसी वंश मे पृथ्वीराज चौहान पैदा हुआ ।

चौहानो के वंश-वृक्ष से पता चलता है कि चौहानो का आदि पुरुष अनहिल नाम का था । उससे लेकर पृथ्वीराज तक-जो भारत का अन्तिम सम्राट था—सब मिलाकर उनतालीस राजा चौहानो मे हुए । चौहानो के इतिहास के अनुसार, अजयपाल चौहान ने अजमेर के दुर्ग का निर्माण किया था । चौहानो की राजधानियो मे उनकी वहाँ पर भी एक राजधानी थी ।

चौहानो की चौबीस शाखाये है । उनमे बूंदी और कोटा के वर्तमान राजवंश अधिक प्रसिद्ध है । वे राजवंश हाडौती की शाखा मे है और युद्ध मे बहादुर रहे है । गागरोन और राघोगढ के खीची, सिरोही के देवडे, जालौर के सोनगरे, मूयेवाह और साँचोर के चौहान, पावागढ के पोविचे लोग अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध रहे । चौहान वंश के सरदारों ने अपनी जन्म-भूमि के सम्मान के लिए अपना सर्वस्व त्याग किया । इनमे कायमखानी, सुरवानी, लोवानी, कुररवानी और वैदवान लोग जो शेखावाटी मे रहते है, बहुत प्रसिद्ध है ।

चौहानो की चौबीस शाखाये इस प्रकार हैं—चौहान, हाडा, खीची, सोनगरा, देवडा, पाविया, सचोरा, गोएल वाल, भदौरिया, निर्वाण मालानी, पूर्बिया, सूरा, मादडेचा, सक्रेचा, भूरेचा, बालेचा, तस्सेरा, चाचेरा, टोसिया, चांदू, नुकुम्प, भावर और बकट ।

चालुक्य अथवा सोलंकी—इस वंश की ख्याति के सम्बन्ध मे हमे ऐतिहासिक सामग्री नही मिली। भाटो की कथाओ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सोलंकियो का राज्य समय गगा के किनारे सोरू मे था, जब राठौर राजपूतो ने कन्नौज मे अधिकार प्राप्त नही था। वशावली के आधार पर उनके रहने का स्थान लोहकोट मे था, जो लाहौर का पुराना है। चौहानो और सोलंकियो की मूल शाखा एक ही है। सोलंकीवंश का एक राजकुमार से लाकर, अनहिलवाडा पट्टन के चावडा राजपरिवार का उत्तराधिकारी बनाया गया।

उस समय अनहिलवाडा का स्थान भारत मे ठीक उसी प्रकार का था, जिस प्रकार मे वेनिस का। अनहिलवाडा भारत मे अपनी उपज के लिये केन्द्र हो रहा था। चामुण्डरा शासन काल मे महमूद गजनवी अपनी सेना अनहिलवाडा मे ले गया और उसने वहाँ पर अपि सम्पत्ति की लूट की। चौहानो का एक वशज कुमारपाल सोलंकियो के वश का उत्तराधिकारी और फिर वह उसी वश का हो गया।

सोलंकीवश सोलह शाखाओ मे इस प्रकार विभाजित है :

(१) बघेल—बघेलखण्ड के राजा, जिसकी राजधानी बाँधगढ थी, पीथापुर, थराद अदलज आदि के सरदार।

(२) बीरपुरा—लूणावाडा के सरदार।

(३) वेहिल—मेवाड के अन्तर्गत कल्याणपुर के जागीरदार।

(४) भूरता, (५) कालेचा—जैसलमेर के अन्तर्गत बारू टेकरा और चाहिर मे।

(६) लघा—मुल्तान के निकट रहने वाले मुसलमान।

(७) तोगरू—पञ्चनद प्रदेश के निवासी मुसलमान।

(८) ब्रिकू—पञ्चनद प्रदेश के निवासी मुसलमान।

(९) सोलके—दक्षिण मे पाये जाते है।

(१०) खिरिया—सौराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत गिरनार मे रहते है।

(११) राओका—जयपुर के अन्तर्गत टोडा के हलके मे रहते है।

(१२) राणकरा—मेवाड के अन्तर्गत देसूरी मे रहते है।

(१३) खरूरा—मालवा देश मे आलोट और जावरा के रहने वाले है।

(१४) तौतिया—चन्दभूड सकुनबरी।

(१५) अलमेचा—इनका कोई स्थान नही।

(१६) कुलमोर—गुजरात के रहने वाले है।

प्रथिहार अथवा परिहार—अग्निवश का यह वश है, जिसके सम्बन्ध की ऐतिहासिक वहुत कम प्राप्त हो सकी है। राजस्थान के इतिहास मे परिहारो का कोई भी ख्यातिपूर्ण कार्य है और दिल्ली तोमर राजपूतो तथा अजमेर के चौहानो के यहाँ इस वश के लोग सदा जाग होकर रहे है।

मडोवर—जिसे सस्कृत मे मन्दोद्री कहते है—परिहार राजपूतो की राजधानी थी। वाड का यह एक प्रसिद्ध नगर था। इस नगर मे, राठौर राजपूतो के आक्रमण के पहले, के लोगो का अधिकार था। यह नगर आधुनिक जोधपुर की ओर पाँच मील की वसा हुआ है।

कन्नौज के राठौर राजा, कन्नौज से भागकर परिहारो के यहाँ आये और शरण पायी। लेकिन इस उपकार का बदला उन लोगो ने विश्वासघात के द्वारा दिया और नूरा नाम के एक राठौर राजा ने परिहारो के अतिम राजा का राज्य छीन कर अपना अधिकार कर लिया। उसके बाद उसने मडोवर के किले पर राठौर वश का झण्डा लगा दिया।

परिहार वश के लोग सम्पूर्ण राजस्थान मे फैले हुए है। परन्तु उनके अधिकार मे किसी स्वतत्र जागीर का कही उल्लेख नही मिला। कोहारी, सिन्धु और चम्बल नदियो का जहाँ पर संगम होता है, वहाँ पर इस वश वालो की आबादी है और करीब के छोटे-बडे अनेक गाँव उनमे बसे हुये है। परिहारो की बारह साखाये थी, उनमे ईदा और सिन्धल नाम की दो प्रमुख शाखाये थी। इन दोनो शाखाओ के कुछ लोग लूनी नदी के दोनो किनारो पर पाये जाते है।

चावडा अथवा चावरा वश के लोग किसी समय इस देश मे प्रसिद्ध थे। लेकिन अब उनका अस्तित्व मिटता जा रहा है। उनकी उत्पत्ति का कोई उल्लेख हमे नही मिला। सूर्यवश और चन्द्र-वश के साथ उनका कोई सम्बन्ध नही है। ऐसी दशा मे सीथियन लोगो से उनकी उत्पत्ति का अनुमान किया जा सकता है।

इस वश के लोगो का उत्तरी भारत मे कोई स्थान नही है। यह भी हो सकता है कि ये लोग बाहर से इस देश मे आये हो। यदि ऐसा है तो भी उनके आने का समय बहुत पहले प्राचीन काल मे नही होना चाहिये। इसलिये कि मेवाड के सूर्यवशी वर्तमान राज-परिवारो के साथ इस वश के लोगो के सामाजिक और वैवाहिक सम्बन्ध बहुत समय से देखने मे आते है।

चावडो की राजधानी सौराष्ट्र के समुद्री किनारे के पास दीव बन्दर के टापू मे थी। इस बात के उल्लेख पाये जाते है कि दीव के राजा ने सन् ७४६ ईसवी मे अनहिलवाडा पट्टन की नीव डाली, जो उस समय भारत के इस हिस्से का एक प्रमुख नगर बना। चावडा वश के कुछ उल्लेख पुराने ग्रन्थो मे मिलते है। मेवाड के इतिहास मे बताया है कि मुसलमानो के पहले आक्रमण से चित्तौर को बचाने के लिये चतनसी नाम का एक चावडा सरदार एक सेना के साथ युद्ध के लिये गया था।

महमूद गजनवी ने जब सौराष्ट्र पर आक्रमण करके उसकी राजधानी अनहिलवाडा को अपने अधिकार मे कर लिया तो उसने वहाँ के राजा को गद्दी से उतार दिया और उसके स्थान पर वहाँ के एक प्राचीन परिवार के राजा को सिंहासन पर बिठाया, जिसका नाम दावशिलिम था। मिले हुये लेखो से यह भी मालूम होता है कि डाबी एक वश की शाखा थी, जिसको बहुत से लोग चावडा के अन्तर्गत मानते हैं।

सूर्यवशी राजाओ और सौराष्ट्र के चावडो तथा सौरो का सम्बन्ध एक हजार वर्ष बीत जाने के बाद भी कायम है। राणा-परिवार राजस्थान मे बहुत सम्मानपूर्ण माना जाता है और चावडा वश गिरी हुई अवस्था मे है। फिर भी इस वश की कन्याये राणा परिवारो मे जाती है। और भी उदाहरण है।

टॉक अथवा तक्षक—बहुत खोजने के बाद जाहिर होता है कि तक्षकवश उस जाति का नाम है, जिससे प्राचीन काल मे भारत के आक्रमणकारी विभिन्न सीथियन वशो की उत्पत्ति हुई। [illegible] जाति को अपेक्षा-जिससे अगणित शाखाओ की उत्पत्ति हुई अधिक

प्राचीन है। इन दोनो जातियो के सम्बन्ध एक-दूसरे के इतने नजदीक है कि दोनो को एक दू
अलग करना बहुत कठिन था।

अबुलगाजी ने तानक को तुर्क और तगेताई का बेटा माना है जो पुराणो मे तु
नाम से लिखा गया है और चीनी ग्रथो मे उसी को तक्युक्स नाम दिया गया है, जो टोचरी ज
उत्पन्न हुआ मालूम होता है, जिसने यूनान के अन्तर्गत वाकट्रिया के राज्य का सर्वनाश
मदद पहुँचायी थी। इस चोटरी जाति के नाम से ही एशिया के एक विशाल भाग का नाम
रिस्तान पडा। यही आगे चलकर तुर्किस्तान बना। ताजक जाति जिसका वर्णन एलफिन्स्टन
ने अपनी पुस्तक काबुल-राज के वृतान्त मे खूब किया है—वास्तव मे तक्षक वशी थी ऐसा
होता है कि ये दो नाम एक ही जाति के है।

इस वात का वर्णन पहले किया जा चुका है कि राजस्थान के अनेक भागो मे
तक्षक और टॉक जाति के पाली अथवा बौद्ध अक्षरो मे प्राचीन शिला लेख मिले है, जो
परमार और उनके वशजो से सम्बन्ध रखते है। नाग और तक्षक को सस्कृत मे सर्प कहते है
तक्षक वह वश है जिसका वर्णन नागवश के नाम से भारत के ऐतिहासिक वीरकाव्य-ग्रथो मे
गया है। महाभारत मे इन्द्रप्रस्थ के पाण्डु-वशियो और उत्तर के तक्षक लोगो के युद्ध का
किया गया है। तक्षक के हाथ से परीक्षित का मारा जाना और उनके पुत्र एव उत्तर
जनमेजय का तक्षको के विनाश के लिये युद्ध करना सभी कुछ उस वर्णन मे आता है। जै
के भाटी राजाओ के प्राचीन इतिहास मे लिखा गया है कि जब वे लोग जाबुलिस्तान से
दिये गये तो उन लोगो ने टॉक जाति के लोगो से सिन्धु नदी के किनारे के देशों का राज्य
लिया और फिर वे वही पर रहने लगे। वहाँ की राजधानी शालमनपुर थी। इतिहास
घटना का समय युधिष्ठिरके सम्वत् का ३००८ वाँ वर्ष माना गया है। इस दशा मे यह
है कि तोमर वशी विक्रम को विजय करने वाला शालिवाडन अथवा सालवाहन—जो तक्षक
का था। उसी वश का था, जिसको भाटी लोगो ने पराजित करके दक्षिण की ओर चले
लिये विवश किया था।

शेषनाग की अधीनता मे तक्षक अथवा नागवश के आक्रमण का समय ईसवी सन्
अथवा सात शताब्दी पहले माना गया है। आबू महात्म्य मे तक्षको को हिमाचल का पुत्र मान
है। इस प्रकार की सभी वातो से साबित होता है कि वे लोग सीथियन जाति से सम्बन्ध
और उन्ही के वशजो मे थे। यह पहले लिखा जा चुका है कि तक्षक मोरी वंश के लोग
प्राचीन काल से ही चित्तौर के अधिकारी रहे थे। लेकिन कुछ पीढियों के वाद जब ग
मोरी लोगो को चित्तौर से निकाल दिया तो हिन्दुओ के इस स्वतन्त्र और सुरक्षित स्थान पर
मानो का आक्रमण हुआ। उस समय जिन राजपूत राजाओ ने चित्तौर की रक्षा के करने लिये
मनो के साथ युद्ध किया, उनमे आसेरगढ के टॉक लोग भी थे, जिन्होंने इस घटना के प
भग दो शताब्दी तक आसेरगढ पर अपना अधिकार रखा। इसका प्रमाण यह है कि वहाँ क
दार पृथ्वीराज की सेना मे एक शक्तिशाली सेनापति था और उसका उल्लेख चन्द कवि
प्रसिद्ध ग्रन्थ मे किया है और उसे झण्डा वरदार आसेर का टॉक करके लिखा है।

यह पुराना वश जनमेजय का शत्रु और सिकन्दर का मित्र था। इस वश का सेहारन
एक पुरुष था, जिसने अपना धर्म-परिवर्तन किया और अपनी उत्पत्ति टाँक जाति को

उसने अपनी जाति का नाम वजेहुउलतुरक जाहिर किया। उसका बेटा जाफर खाँ गुजरात के सिंहासन पर उस समय बैठा, जब तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया था। जाफर के पहले गुजरात का अधिकारी फीरोज था। परन्तु उसकी निर्बलता का लाभ उठा कर जाफर ने उसका अधिकार छीन लिया और मुजफ्फर के नाम से वह गुजरात का शासक बन गया। उसके पोते ने उसे मार डाला और अनहिलवाडा की प्राचीन राजधानी हटाकर उसने अपने बनाये हुए नगर अहमदाबाद मे कायम की।

टाँक—इस जाति के लोगो का धर्म परिवर्तन के बाद टाँक जाति का अस्तित्व राजस्थान मे खत्म हो गया।

जिट अथवा जाट—राजस्थान के छत्तीस राज वंशो मे जिट अथवा जाट का भी स्थान है। परन्तु इस जाति को लोग राजपूत नही मानते और न राजपूतो के साथ उनके कही वैवाहिक सम्बन्ध ही पाये जाते है। लेकिन इस जाति के लोग भारत मे सभी जगह पाये जाते है। ये लोग आमतौर पर खेती का काम करते है। पजाब मे इन लोगो को प्राय जिट कहा जाता है लेकिन गगा और जमुना के किनारे वे जाट के नाम से सबोधित किये जाते है। इन लोगो मे भरतपुर का राजा बडा सम्मान रखता है। सिधु नदी के किनारे और सौराष्ट्र मे इन लोगो को जट कहा जाता है। राजस्थान मे जिन लोगो के द्वारा खेती होती है, उनमे अधिक इसी जाति के लोग है। सिन्धु नदी के उस पार जो जातियाँ आबाद है और जो मुसलमान हो गई है, वे सभी पहले जाट वश की थी।

एक समय था, जब जेटी का राज्य बहुत प्रसिद्ध था और सातवी से लेकर चौदह शताब्दी तक उसकी बहुत ख्याति रही। उसकी राजधानी जग जार्टीज नदी के किनारे थी। उस जाति ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। चीनी ग्रथकारो के अनुसार, इस जाति के लोग बहुत पहले बौद्धधर्म के अनुयायी थे।

जिट जाति के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की बाते है। उनके रहने के स्थान सिन्धु नदी के पश्चिम ओर के देश माने जाते है और यदुवश से उनकी उत्पत्ति मानी जाती है। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि जिट और तक्षक वे जातिया है, जिनसे होने वाली विभिन्न उपजातियो ने भारत मे आक्रमण किया था। इसके साथ-साथ पाँचवी शताब्दी का एक शिलालेख मिला है। उससे मालूम होता है कि एक ही जाति के ये नाम है। उस शिलालेख से यह भी मालूम होता है कि इस जाति का राजा सूर्य की उपासना करता था, जैसे कि सीथियन लोग करते थे। उसमे यह भी लिखा है कि जिट वशी राजा की माता यदुवश मे पैदा हुई थी। उससे जाहिर होता है कि इस जाति के यदुवशी होने का दावा सही है।

डिगिग्निीज ग्रन्थकार का कहना है कि यूची अथवा जिट लोग पाँचवी और छठवी शताब्दी मे पजाब मे रहते थे और इस वंश के जिस राजा का ऊपर उल्लेख किया गया है, उसकी राजधानी सालिन्द्रपुर के नाम से मशहूर थी। इससे जाहिर होता है कि सालिवाहनपुर का ही नाम किसी समय सालिन्द्रपुर था, जहाँ यदुवँशी भाटियो ने टाक लोगो को पराजित करके अपना अधिकार कर लिया था।

इसके कितने पहले जिट लोगो ने राजस्थान मे प्रवेश किया था, इसका निर्णय शिलालेखो के आधार पर ही किया जा सकता है। यह तो मानी हुई बात है कि सन् ४०० ईसवी मे उनका शासन चल रहा था

जब यादव जाति के लोग सालिवाहन से भागे तो उन लोगो ने सतलज नदी प
भारत की मरुभूमि मे दहिया और जोहिया राजपूतो के वहा शरण ली और यहाँ पर उन्हो
पहली राजधानी देरावल मे स्थापित की । उनमे से बहुत मे लोगो ने इस्लाम धर्म स्वी
लिया । इस समय से वे लोग जाट कहे गये, जिसकी बीस से अधिक शाखाओ का उल्ले
के इतिहास मे किया गया है ।

जिट लोगो के सम्बन्ध मे बहुत-सी काम की बाते भारत विजेता महमूद के इतिहास
को मिलती है । महमूद की सेना सन् १०२६ ईसवी मे आक्रमण करने के लिए भारत की तर
उस समय जिट लोगों ने उसे रोक कर उसके साथ युद्ध किया । वह वर्णन इस प्रकार है .

जिट लोग मुल्तान की सीमा के नजदीक उस नदी के किनारे रहते थे, जो जौद के
निकट से होकर प्रवाहित होती है । जब महमूद मुल्तान मे पहुँचा तो उसने कई विशा
से सुरिक्षेत जिट लोगो के प्रदेश का अध्ययन किया । उसने पन्द्रह सौ नावे तैयार की । उन
प्रत्येक के आगे नोकदार लोहे के मजबूत और मोटे ऐसे डन्डे लगे हुए थे, जिनसे शत्रु
निकट आकर आक्रमण न कर सके । क्योकि इस प्रकार की लडाई मे जिट लोग बहुत
थे । प्रत्येक नाव पर बीस धनुष बाण लिए हुए सैनिको को खडा कर दिया और महमूद
परिणाम देखने के लिए इतजार करने लगी । जिट लोगो ने अपनी स्त्रियो, बाल-बच्च
सामान को सिंध सागर * भेज दिया और चार हजार तथा कुछ लेखो के आधार पर, आ
नावे गजनी की सेना से लडने के लिए तैयार थी । इन नावो ने जल मे प्रवेश किया । द
से युद्ध आरम्भ हुआ । जिट लोगो की अनेक नावे डुबो दी गयी कुछ मे आग लगा
जिसके लिए गजनी की नावो पर पहले से व्यवस्था थी । फल यह हुआ कि जिट लोग युद्ध
उनमें बहुत-से कैद कर लिये गये । जो लोग बचे, उनके द्वारा बीकानेर की स्थापना हुई ।

इस घटना के थोडे ही दिनो के पश्चात् जिट लोगो का जो असली राज्य था,
नष्ट हो गया और बहुत-से जिट लोगो ने भागकर भारत मे शरण ली । सन् १३६०
तोगलताश तैमूर जेटी जाति का प्रधान था । १३६६ ईसवी मे उसकी मृत्यु हो गयी तो
की प्रधानता की पदवी बडे खान के नाम से चागताई तैमूर को मिली । सन् १३७०
उसने एक जेटी जाति की राजकन्या के साथ अपना विवाह किया । उसके बाद जेटी
भयानक लडाई हुई और जेटी लोगों की पराजय हुई । इसके बाद जेटी लोग पजाब मे
और आज तक लाहौर का प्रतापी राजा जिट वशी है । उसका अधिकार उन सभी
जहाँ पर पाँचवी शताब्दी मे यूर्चा लोग रहते थे और जहाँ पर गजनी से भागने पर यदुवश
ने टाँक लोगों के मिट जाने पर अपना अधिकार कर लिया था । जिट लोगो के घुडसव
सीथियन लोगो के तरीके बहुत-कुछ मिलते जुलते हे

हूण जाति—राजस्थान के छत्तीस राजवशो मे जिन सीथियन जातियो को स्थान
उनमे हूण लोग भी है । इस जाति के लोग योरप मे उत्पात और उपद्रव के लिए बहुत
है । किसी भी उल्लेख से इस बात का निर्णय नही होता कि हूणो ने भारत मे कब आक्र
लेकिन यह तो निश्चित ही है कि जिन जातियो ने भारत मे आक्रमण किया था, उनमे

---

* सिंध सागर पजाब के दोआबो मे से एक है ।

जाति भी है और इस जाति के लोग आज भी सौराष्ट्र के प्रायद्वीप मे पाये जाते है। इस देश के पुराने इतिहासो मे और यहाँ के शिलालेखो मे हूणो के सम्बन्ध मे लगातार उल्लेख मिलते है।

एक शिलालेख से पता चला है कि विहार के एक राजा ने अनेक युद्धो मे विजय प्राप्त करने के साथ-साथ इन हूणो को भी पराजित करके उनके अभिमान को नष्ट किया था। भारत मे जब पहले-पहल मुसलमानो का आक्रमण हुआ था और मुसलमानो ने चित्तौर पर चढाई की थी, उसमे उनकी सेना के साथ अगत्सी नाम का एक हूण सरदार भी था। डिगिग्नीज ने लिखा है कि अगत हूणो और मुगलो के एक विशाल दल का नाम था और अबुलगाजी का कहना है कि चीन की विशाल दीवार जिसे तातार जाति के लोगो के सरक्षण मे थी, उसी का नाम अगती था। उसका अपना एक राजा था और उस राजा की बहुत प्रतिष्ठा थी। जिन देशो मे हियागनो और ओह ओनअर्थात तुर्क और मुगल जाति के लोग रहते थे उन्ही का नाम तातार था। तातार नाम तातान देश से सम्बन्ध रखता है। इस देश का विस्तार ईर्टिश नदी के पास से लेकर अल्ताई पहाडो से बराबर चीन सागर के किनारे तक चला गया था। इन देशो के सम्बन्ध मे हूण जाति से इतिहास-लेखक ने बहुत-सी बातो का वर्णन किया है। रोम के पतन का इतिहास लिखने वाले गिबन ने हूणो के उस समय का इतिहास लिखा है, जब उन लोगो ने यूरोप पर चढाई की थी।

कास्मस नामक यात्री के ग्रन्थ के आधार पर डिएन्विल ने लिखा है कि भारत के उत्तरी भाग मे श्वेत हूणो का अधिकार था। इसी आधार पर यह अनुमान किया जाना अनुचित न होगा कि उस जाति के कुछ लोग सौराष्ट्र और मेवाड मे भी रहते हो।

जनश्रुति के आधार पर कुछ लोगो का विश्वास है कि हूणो का निवास स्थान चम्बल नदी के पूर्वी किनारे वाडोली नामक स्थान मे था। वहाँ पर अन्यान्य प्रसिद्ध मन्दिरो मे एक मन्दिर इस जाति के राजा का वैवाहिक स्थान है जिसका नाम है, सेनगर चाओरी। उस राजा का अधिकार चम्बल नदी के दूसरे किनारे तक फैला हुआ था। यह जाति अभी नष्ट नही हुई और अभी तक वे इस देश मे मौजूद है। यद्यपि उनमे अब बहुत परिवर्तन हो गया है और वे इस देश की अन्य जातियो के साथ बहुत कुछ मिल गये है।

कट्टी अथवा काठी—इस जाति के सम्बन्ध मे पहले ही लिखा जा चुका है और राजस्थान तथा सौराष्ट्र के वशावली लिखने वाले उनको राजवशो मे स्वीकार करते है। पश्चिमी प्रायदीप मे जो जातियाँ प्रसिद्ध मानी जाती है, उनमे यह एक जाति है। इस जाति के लोगो ने सौराष्ट्र का नाम बदल कर काठियावाड कर दिया है।

काठियावाड मे जो जातियाँ रहती है, उनमे इसी कट्टी अथवा काठी ने अपना अस्तित्व कायम रखा है। इस जाति की धार्मिक और सामाजिक रस्मे तथा उनके शरीर की बनावट और मुखाकृति उनके सीथियन होने का प्रमाण देती है। सिकन्दर के समय इस जाति के लोग पंजाब के उस कोने मे अपना अधिकार जमाये थे, जो स्थान पाँचो नदियो के सगम के पास है। उसी जाति के लोगो से सिकन्दर ने युद्ध किया, जिसमे वह किसी प्रकार बच गया था। कट्टी लोगो का निर्णय इनके इन स्थानो से लेकर उनके उन स्थानो तक किया जा सकता है, जहाँ पर वे आज कल रहते है। जैसलमेर के इतिहास मे वहाँ के लोगो ने कट्टी लोगो के साथ युद्ध किया था, उसका वर्णन किया गया है।

बारहवी शताब्दी मे उनके अस्तित्व के और भी प्रमाण हैं। उस समय इस जाति के अनेक सरदार पृथ्वीराज और कन्नौज की सेना मे मौजूद थे। कट्टी लोग अब तक सूर्य की पूजा करते है

और युद्ध तथा आक्रमण उनको सहज ही प्रिय है। वे इसी प्रकार के काम कर सकते है
मैक्समर्डी ने इस जाति के सम्बन्ध मे लिखा है —

"कट्टी जाति के लोग अनेक बातो में राजपूतो से भिन्न है। वे स्वाभाविक रूप से
और बहादुरी मे वे राजपूतों से भी अधिक है। शारीरिक शक्ति मे उनका स्थान ऊँचा है।
साधारण आदमी की अपेक्षा लम्बे होते है। उनका कद प्राय छै फीट से अधिक होता
शरीर मजबूत और मेहनत से भरे होते है। उनके मुख पर सुन्दरता नही होती। लेवि
मुखाकृति मे कट्टरता पायी जाती है। उनके जीवन मे कोमलता किसी प्रकार की भी नही

बल्ला और बाला—राजपूत वशावली लेखको ने बल्ला जाति को राजवशो मे
भाटो के आधार पर इस जाति के लोगो का निवास-स्थान सिधु नदी के किनारे पाया
ये लोग अपने आप को सूर्य वशी राजपूत कहते है, उनका कहना है कि हमारे पूर्वज रामच
पुत्र लव के वंशज थे। उनकी प्राचीन बस्ती सौराष्ट्र के टॉक मे थी। यह स्थान बहुत प्र
मे गोगी-पट्टन कहा जाता था। इन लोगो ने वहाँ के आस-पास के प्रदेशो को जीत कर अप
नाम बल्ल क्षेत्र रखा और राजधानी का नाम बल्लभीपुर हुआ। इन लोगो ने बल्लाराय की
प्रयोग किया। वे गोहलोत राजपूतो की बराबरी का अपने आपको समझते है। यह भी
सकता है कि बल्ला गोहलोतो की शाखा हो। इनका मुख्य देवता सूर्य था। इस प्रकार
बातें इनकी सीथियन लोगो से मिलती है।

कट्टी—इस वंश के लोग अपनी शाखा बल्ल भी मानते है। तेरहवी शताब्दी मे ब
मेवाड पर हमला करने के लिये शक्तिशाली थे। राणा हमीर ने चोटीला के बल्ला सरदार
था। टाँक का मौजूदा राजा बल्ला है।

झालामकवाण जाति के लोग भी सौराष्ट्र के प्रायद्वीप मे रहते है। इस जाति के ल
कहे जाते है। लेकिन उनके सूर्यवंशी, चन्द्रवशी अथवा अग्निवशी होने का कोई प्रमाण ह
नही है। इस जाति के लोग भारत मे और विशेषकर राजस्थान मे भी बहुत ही कम प्र

सौराष्ट्र के बडे भागो मे झालावाड एक बडा हिस्सा है। उसमे झालामकवाण के
की विशेषता है। झालावाड मे बीकानेर, तलवद और ध्रांगदरा नाम के बडे-बडे नगर है
झाला कब आये और उनका पुराना इतिहास क्या है इसके निर्णय के लिये हमारे पास क
सामग्री नही है। परन्तु इतिहास की कुछ घटनाये इसके निर्णय मे सहायता करती है।
मुसलमानो के पहले आक्रमण के समय राणा को झाला जाति की ओर से युद्ध के लिये सै
यता प्राप्त हुई थी और पृथ्वीराज के इतिहास मे झाला सरदारो के वर्णन आये है। झाला
कई शाखाये है, उनमे मकवाणा प्रधान है।

जेठवा, जेटवा अथवा कमरी—यह एक प्राचीन जाति है और इतिहास लेखको ने इ
माना है, यद्यपि झाला लोगों की तरह सौराष्ट्र के बाहर ये लोग भी बहुत कम प्रसिद्ध है।
के राजा का स्थान पोरबन्दर है और वह राणा कहलाता है। प्राचीन काल मे उसकी
गूमली थी। उसकी टूटी इमारते मे उस राज्य के वैभव का परिचय मिलता है। वहाँ की
योरप के शिल्प की बराबरी करती थी। जेठवो से भाटो से वहाँ के एक सौ तीस राजाओ
कारी होती है, जो वहाँ के सिंहासन पर बैठे। मिले हुये लेखो से जाहिर होता है कि आठव
मे यहाँ के एक राजा का विवाह दिल्ली की फिर प्रतिष्ठा करने वाले और उसको नया

वाले तोवर राजा के यहाँ हुआ था । इन दिनो मे जेठवा वश का नाम कमर चल रहा था । कहा जाता है कि बारहवी शताब्दी मे उत्तर की दिशा से आक्रमण करने वालो ने जिस राजा को गूमली से निकला था, उसका नाम सेहल कमर था । इसके बाद कमर वश फिर जेठवा के नाम से प्रचलित हुआ । इस वश के लोग सीथियन वश के जाहिर होते है । उसका सम्बन्ध भारत की प्राचीन जातियो के साथ कुछ जाहिर नही होता, ऐसा मालूम होता है कि यह वश एशिया की प्रसिद्ध जाति किसी अथवा योरप की किम्ब्री जाति की शाखा है ।

इस जाति की बहुत-सी बाते कुछ अनोखी-सी मालूम होती है । वे लोग अपने आपको प्रसिद्ध वानर हनुमान का वशज कहते है और इसके समर्थन मे वे लोग अपने राजाओ की लम्बी पीठ की हड्डी का उदाहरण देते है ।

गोहिल—यह एक प्रसिद्ध वश है, जो सूर्यवशी होने की बात कहता है। ये लोग पहले मारवाड मे लूनी नदी के मोड के पास जूना खेडगढ मे रहते थे । खेरवा नाम के एक भील सरदार से उन लोगों ने यह स्थान अपने अधिकार मे पाया था और अत मे राठौर राजपूतो ने उनको वहाँ से भगा दिया । वहाँ से वे लोग सौराष्ट्र की तरफ जाकर पीरमगढ मे रहने लगे । इसके बाद उनकी एक शाखा वगवा मे जाकर रहने लगी और उसके राजा नन्दन नगर अथवा नान्दोद के राजा की लडकी से विवाह करने के बाद अपने ससुर के राज्य पर अधिकार कर लिया । सोमपाल से नरसिंह तक—जो नान्दोदी मे आजकल राजा है—सत्ताईस पीढी मानी जाती है । दूसरी शाखा सिहोर मे जाकर रहने लगी और उसने भावगनर एवम् गोगो नगर आबाद किया । भावनगर खाड़ी की खाड़ी पर गोहिल के रहने का स्थान है और उन्ही लोगो के नाम पर सौराष्ट्र के प्रायद्वीप का पूर्वी भाग गोहिलवाडा कहलाता है । यहाँ के राजा का प्रमुख कार्य व्यवसाय है ।

सर्व्य अथवा सरिअस्प—बहुत पहले इस वश के प्रसिद्ध होने का पता चलता है । भाटो के द्वारा वह क्षत्रिय माना जाता है ।

सिलार अथवा सुलार—इसके सम्बन्ध मे भी अधिक बाते नही मिलती । लार जाति किसी समय सौराष्ट्र मे थी । अनहिलवाडा के इतिहास से मालूम होता है कि सिद्ध राज जयसिंह ने उन लोगो को जो इस जाति से सम्बन्ध रखते थे, अपने राज्य से निकाल दिया था । इसलिए सिलार अथवा सुलार जाति लार जाति मालूम होती है । कुमारपाल चरित्र मे उनको राजकुमार लिखा गया है लेकिन अब यह जाति वैश्यो मे मानी जाती है और यह बौद्ध धर्म को मानती है । उसकी चौरासी शाखाओ मे यह एक लार भी है । इन चोरासी शाखाओ मे कुछ के राजपूतो से निकलने के उल्लेख भी कही-कही पाये जाते है ।

डाबी—इस जाति के सम्बन्ध मे कुछ भी नही मिलता । यद्यपि किसी समय सौराष्ट्र मे इस जाति के लोग रहते थे । कुछ लोगो के अनुसार यह यदुवश की एक शाखा है ।

गौड—एक समय था जब इस जाति की प्रतिष्ठा राजस्थान मे थी । लेकिन इसने कभी उन्नति नही की । बगाल के प्राचीन राजा इसी जाति के माने जाते थे और उन्ही के नाम से उनकी राजधानी का नाम लखनौती पडा था। सिन्धिया ने १८०६ ईसवी मे गौडवश के अधिकारो को छीन लिया था । इस प्रकार की बहुत थोडी बाते इसके सम्बन्ध मे पढने को मिलती है । इस जाति की पाँच शाखाये है । उनके नाम इस प्रकार है अतहिर, सिलाहाल, तूर, दुसना, बोडाना ।

डोड अथवा डोडा—इस वंश के सम्बन्ध मे केवल इतना कहा जा सकता है कि राजपूतो की वंशावलियो मे उसका नाम है.।

गेहरवाल—इस जाति के राजपूतो को राजस्थान के लोग राजपूत मानने के लि
नही होते । इस जाति का मौलिक स्थान काशी का प्राचीन राज्य है । इसके पूर्वजो मे खो
कोई हुआ है । उसकी सातवी पीढ़ी मे जेसन्द ने विन्ध्यवासिनी देवी के स्थान पर एक
था और बुन्देला की उपाधि धारण की थी । उसी के आधार पर बुन्देलखण्ड प्रदेश का
तक प्रसिद्ध है । इस प्रदेश मे कालीजर, मोहिनी और महोबा प्रसिद्ध नगर है ।

चन्देला लोग—जो पहले बुन्देलखण्ड के प्राचीन निवासी थे, राजस्थान के छत्तीस
मे माने जाते है । ये लोग बारहवी शताब्दी मे अपनी शक्ति के लिए बहुत प्रसिद्ध थे । उ
उनके अधिकार मे वह सारा देश था जो जमुना और नर्वदा के बीच मे है और जिस
बुन्देलो और बघेलो का अधिकार है । पृथ्वीराज के साथ चन्देलो की पराजय हुई थी औ
से उन पर गहरवाल लोगो की बिजय का द्वार खुल गया था ।

अकबर के समय से लेकर मुगलो के अंत तक बुन्देलो ने सभी प्रसिद्ध लड़ाइयो मे
के साथ युद्ध किया था । बुन्देला राज्यो मे ओर्छा का राज्य अधिक प्रसिद्ध रहा । आजकल
वश के लोगो की सख्या बहुत अधिक है और गेहरवाल नाम उनके निवास स्थानो मे ही रह

बडगूजर—यह वश सूर्यवंशी है और इस वश के लोग रामचन्द्र के बडे पुत्र लव
आपको वशज कहते है । इन लोगो के इलाके ढूँढाड मे थे और माचेड़ी राज्य मे राजौर
किला उनकी राजधानी था । राजगढ और अलवा भी उनके इलाको मे थे । कछवाहो
उनके स्थानो से भगा दिया था, जिससे उस वश के कुछ लोगो ने गगा के किनारे रहना
किया था और वहाँ पर उन्होने अनूपशहर बसाया था ।

सेगर—इस वश के सम्बन्ध मे बहुत कम वर्णन मिलता है । इसे कभी प्रसिद्धि नही
जमुना के किनारे जगमोहनपुर मे सेगरो का एक ही राज्य है ।

सीकरवाल—इस वॅश को भी कभी कोई ख्याति नही मिली । इस वश का एक
इलाका चम्बल के किनारे पर यदुवाटी से मिला हुआ वश के नाम से सीकडवाड़ कहलाता
अब ग्वालियर के राज्य मे मिला लिया गया है ।

बैस—यह वश छत्तीस राजवशो मे है । इस वश मे आज अगणित लोगो की सख
उन्ही के नाम से एक विस्तृत प्रदेश बैसवाडा कहलाता है, जो गगा और जमुना के बीच मे

दाहिया—इस प्राचीन जाति के लोग सिन्धु नदी के किनारे, सतलज के संगम के
करते थे । उनको छत्तीस राजवशो मे स्थान मिला है, परन्तु वे लोग अब कही पाये नह
जैसलमेर के इतिहास मे उनका उल्लेख पाया जाता है ।

जोहिया—इस वश के लोग भी दाहिया लोगो के करीब रहते थे । इस जाति के
अस्तित्व भी अब करीब-करीब मिट गया है ।

मोहिल—इस वश के पुराने इतिहास के सम्बन्ध मे इतना ही कहा जा सकता है
मान बीकानेर राज्य की प्रतिष्ठा के पहले वे लोग एक विस्तृत प्रदेश मे रहते थे और
राज्य की प्रतिष्ठा करने वाले राठौर राजपूतो ने इस वश के लोगो को उनके स्थानो से भगा

मालण, मालाणी और मल्लिया नाम की जातियाँ अब नष्ट हो गयी है ।

निकुम्प—सभी वशावलियो मे इस वश की ख्याति लिखी गयी है । लेकिन उस
इतना ही किया गया है कि गहलोतो से पहले इस वंश के लोग माण्डलगढ के अधिकरी थे

राजपाली—वशावलियो मे इस वश का उल्लेख राजपालिका अथवा पाल के नाम
गया है । वे लोग सौराष्ट्र देश मे रहते थे और सभी प्रकार वे सीथियन मालूम होते थे ।

से उनकी उत्पत्ति के और भी प्रमाण मिलते है । राजपाली नाम से जाहिर होता है कि यह वंश प्राचीन पालजाति की एक शाखा के सिवा और कुछ न था ।

दाहिरया—कुमारपाल चरित्र के आधार पर इस वश की गणना छत्तीस राजवशो मे की जा सकती है । इसके सम्बन्ध मे अधिक कोई उल्लेख नही मिलता, सिवा इसके कि पहले पहल मुस्लिम सेना से चित्तौर मे आक्रमण करने पर जो लोग उसकी रक्षा के लिए युद्ध मे गये थे, उनमे देबिल का राजा दाहिर सरदार भी था । यह दाहिर दाहिरिया वश का ही जाहिर होता है ।

दाहिमा—यह जाति कभी अपनी बहादुरी के लिये विख्यात हुई थी । लेकिन उस ख्याति का अब कही पता नही है । दाहिमा बयाने का अधिकारी था और चौहान सम्राट पृथ्वीराज के शक्तिशाली सामन्तो मे से था । इस वश के तीन भाई सम्राट पृथ्वीराज के यहां उच्च अधिकारी थे और उनमे बडा भाई पृथ्वीराज का मत्री था । लेकिन किसी ईर्षा के कारण मारा गया था । दूसरा भाई पुण्डीर लाहौर मे एक सैनिक अधिकारी था । तीसरा भाई चामुण्डराय उस अतिम युद्ध मे प्रधान सेनापति था, जब पृथ्वीराज कग्गर के किनारे मारा गया था । शहाबुद्दीन के इतिहास लेखको ने बीर दाहिमा चामुण्डराय की बहादुरी की प्रशसा की है और इस बात को स्वीकार किया है कि उसी की बहादुरी के कारण शहाबुद्दीन युद्ध मे मारे जाने की स्थिति मे पहुँच गया था । इस बात के उल्लेख भी पाये जाते है कि पृथ्वीराज का एकलौता बेटा रैणसी चामुण्डराय की बहन से पैदा हुआ था । परन्तु वह दिल्ली मे मुसलमानो का अधिकारी होने के पहले ही मर गया था ।

जगलो मे रहने वाली जातियाँ—बागरी, मेर काबा मीना, भील, सेरिया, थोरी, खांगर, गौड, भाडा जँवर और सरुद ।

कृषक चरवाहा जातियाँ—अभीर अथवा अहीर, ग्वाला, कुर्मी, कुलम्बी, गूजर और जाट ।

व्यवसायिक चोरासी जातियाँ—श्री श्रीमाल, श्रीमाल, ओसवाल, बगेरवाल, डीडू पुष्करवाल मेरतावाल, हर्सोरुह, सुरुरवाल पल्ली वाव भम्बू, खडेलवाल केदरवाल, डीसावल, गूजरवाल सोहरवाल, अगरवाल, जाइलवाल, मानतवाल, कजोटीवाल, कोर्टवाल, चेत्रवाल, सोनी, सोजत-वाल, नागर मोड, जल्हेरा लाड कापोल, खेरता, दसोरा, बरुडी, बम्बरवाल, नागद्रा करबेरा, भटेवरा, मेवाडा, नरसिहपुरा, खनरेवाल, पचमवाल, हुनरवाल, सरकेरा, वैश्य, स्तुखी, कम्बोवाल, जीरागवाल, भगेलवाल, ओरचितवाल, बामणवाल, प्रगोड, ठाकुरवाल, वालमीवाल, टिपोरा, टीलोना, अतवर्गी, लादिसका, बदनोरा, खीचा, गुसोरा, बाग्रोसर, जाडमा, पदमोरा, मेहेरिया, ढाकरवाल, मङ्गोरा, गोयलवाल, चीतोडा, मौहरवाल, काकलिया, भारेजा, अन्दोरा, साचोरा, भूँगरवाल, मन्दडलू, बामडिया, बागडिया, डीजोरिया, चोरवाल, सोरठिया, ओसवाल, नपाग और नागोरा, दो नाम अज्ञात ।

राजस्थान में जागीरदारी प्रथा

आठवाँ परिच्छेद

कानूनो का अभाव—सामन्त प्रथा मे योरप और राजस्थान—असभ्य जातियाँ—जा प्रथा का जन्म—शासन मे राजपूतो की योग्यता—राजपूतो का आराध्य देव—सामन्त अधिकार—वेतन के स्थान पर भूमि—राज्यो के झगडे—कर और उनका प्रभाव—राज्यो मे सामन्तो के कार्य—आपसी शत्रुता—अन्तला दुर्ग की विजय—राजा और सामन्त ।

राजस्थान के किसी भी हिस्से मे दीवानी और फौजदारी के मामलो का कोई विधा निश्चित रूप से यह नही कहा जा सकता । परन्तु इस समय यहाँ पर इस प्रकार का कोई नही है, यह बात निश्चित है । यह बात जरूर है कि इन राजपूत राज्यो मे फौजी कानून इ काम करता है कि उसके द्वारा यहाँ पर शासन की पूरी व्यवस्था होती जाती है । राजस जागीरदारी प्रथा, प्राचीन योरप के इस प्रथा के बिल्कुल समान थी । परन्तु उसके बाद वहाँ प्रथा ऐसी बिगड गयी कि उसके साथ राजस्थान की जागीरदारी प्रथा की तुलना करने का नही कर सकता । राजस्थान की इस प्रथा के सम्बन्ध मे मैं जो कुछ इन पृष्ठो मे लिखने जा उसको समझाने, जानने, अध्ययन और अनुशीलन करने मे मैने अपना बहुत समय व्यतीत और बहुत परिश्रम के बाद मैने जो कुछ पाया है, उसको यहाँ पर लिखने का मै प्रयास इस प्रथा के सम्बन्ध मे सही बातो को जानने की मैने कोशिश की है, परन्तु लिखी हुई सा बहुत कम मिली है । फिर भी जो लोग इस विषय के जानकार थे, मैने पूरी तौर पर उ उठाने की कोशिश की है और उन लोगो ने भी मेरी सहायता की है । इस प्रकार मुझे ज मिल सकी है, उससे मेरा अनुमान है कि राजस्थान की यह प्रथा प्राचीन काल मे नि अत्यन्त परिपूर्ण और उपयोगी रही होगी ।

अगरेजो के साथ राजस्थान के राजाओ का सम्पर्क स्थापित होने के पहले, इस ऐतिहासिक और भौगोलिक जानकारी बहुत कम हम लोगो को थी । उन दिनो मे केवल के लिये मै यहाँ के राज्यो मे घूमा करता था और उस समय मुझे यहाँ के इतिहास और सम्बन्ध मे जो जानकारी होती थी, उसे मै लिख कर अपनी सरकार के पास भेज योरप और राजस्थान की इन प्रथाओ को तुलनात्मक दृष्टि से देखने और समझने मेरे पास काफी अच्छे साधन थे । जागीरदारी प्रथा के सम्बन्ध मे माङ्गटेस्की, ह्यूम और गिवन आदि प्रसिद्ध इतिहासकारो के लिखे हुये ग्रन्थो का मैने अध्ययन किया देशो की प्रथाओ की तुलना करते हुये अपना निष्कर्ष निकालने की कोशिश की दिनो मे प्रसिद्ध इतिहासकार हालम का इस विषय पर लिखा हुआ ग्रथ मुझे पढ़ने को इसमे जागीरदारी प्रथा के अनेक छिपे हुए उन पहलुओ पर विद्वान लेखक ने प्रकाश डाला उस समय तक स्पष्ट न हुए थे । मैने इतिहासकार हालम के निर्णय के साथ राजपूतो की

का मिलान किया। मेरा विश्वास है कि जो लोग यहाँ की इस प्रथा को योरप से अलग समझते थे, उनको सतोष मिलेगा। मै अनुमान के खतरो मे अपरचित नही हूँ। इसलिए मै उस पर विश्वास नही करता और जो प्रमाण निर्विवाद है, उन्ही का आधार लेकर लिखना चाहता हूँ।

जो असभ्य जातियाँ किसी एक स्थान पर न रहकर सदा जगलो मे इधर-उधर घूमा करती है, उनमे भी कुछ शासन सम्बन्धी बाते होती है और उनके शासन की अनेक बाते सभ्य जातियो के शासन के साथ मिलती जुलती है। ससार के सभी देशो के मनुष्यो का जीवन किसी समय एक सा रहा है और समस्त प्राचीन जातियो मे प्रचलित शासन की मूल बातो मे अभिन्नता रही है। योरप के सभी देशो मे जागीरदारी प्रथा का प्रचार किसी समय था और काकेशस पर्वत से लेकर हिन्द महासागर तक वह प्रथा फैली हुई थी। वर्बर, तातारो, जर्मन और कलीडोनियन जातियो, भारिजा लोगो और राजपूतो मे जागीरदारी प्रथा का प्रचार था। उसकी प्रमुख बाते एक दूसरे के साथ बिल्कुल मिलती थी। युगो के बाद उन प्रथाओ मे कहाँ क्या अन्तर पड़ा उसके अनुसधान के लिए बहुत परिश्रम की आवश्यकता है। लगातार आक्रमणो और अत्याचारो ने राजस्थान की परिस्थितियो को बहुत बिगाड दिया है, फिर भी उसकी प्राचीनता और मौलिकता की खोज की जा सकती है, जो इस प्रथा के इतिहास मे बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी।

मराठो की लूटमार और मुस्लिम अत्याचारो ने राजपूत राज्यो का बहुत विनाश किया है। उनकी राष्ट्रीय भावनाये मिट गयी है और उनके पुराने सग्रह इन दिनो मे अप्राप्य अवस्था मे हैं। राजपूत राज्यो का फिर से सगठन होने की आवश्यकता है और उनकी सभी बातो का नया निर्माण होना चाहिये। राजपूत फिर शक्तिशाली बनाये जा सकते है। उनका सामाजिक जीवन परिवर्तन चाहता है। राजस्थान की इस समय अवस्था अच्छी नही है, उसकी शृङ्खला टूट गयी है। शासन की उपयोगिता खतम हो गई है। उनके वर्तमान शृङ्खलाहीन सामाजिक और राजनीतिक जीवन को देखकर कोई आज प्रभावित नही हो सकता। विदेशी लोग उसकी आलोचना कर सकते है, क्योकि उनको यहाँ की प्राचीन शासन-व्यवस्था के समझने और जानने का अवसर नही मिला। बाहरी लोगो की इन आलोचनाओ से इस देश के प्राचीन इतिहास का अनुमान नही लगाया जा सकता। एक इतिहासकार को किसी देश का इतिहास जानने के लिए बडी ईमानदारी से काम लेना चाहिए और गम्भीर नेत्रो से उसकी प्राचीनता की खोज करना चाहिए। बाहरी जातियो के भीषण आक्रमणो और अत्याचारो मे जिस देश ने एक हजार वर्ष व्यतीत किये है, वह देश किस प्रकार जर्जरित और नष्ट प्राय हो सकता है, इसका अनुमान एक विद्वान इतिहासकार आसानी के साथ लगा सकता है। राजस्थान की शासन-व्यवस्था का आधार, उसकी जागीरदारी प्रथा थी और यह प्रथा प्राचीन काल मे योरप की जागीरदारी प्रथा के समान थी। उसकी श्रेष्ठता बहुत समय तक कायम रही और बाहरी सगठित जातियो के लगातार अत्याचारो तक छिन्न-भिन्न नही हो सकी। भारत का प्राचीन गौरव इस शासन-व्यवस्था की श्रेष्ठता का ऐसा प्रमाण है, जिससे कोई निष्पक्ष और बुद्धिमान इनकार नही कर सकता।

मध्यकालीन युग के योरप के साथ राजस्थान की तुलना करके यह लिखना आवश्यक नही है कि आचारो, विचारो और जीवन के सिद्धान्तो मे किस देश ने किस देश से क्या सीखा। आवश्यकता के अनुसार सभी देशो को एक दूसरे से अच्छी बाते लेनी पडी और ऐसा होना ही स्वाभाविक है। जो

व्यवस्था किसी एक देश मे आरम्भ होती है, वह निश्चित रूप से दूसरे देशो मे फैलती है औ
कुल वातावरण पाकर विकसित होती है।

जागीरदारी की प्रथा इगलैड मे नार्मन लोगों से पहुँची थी और नार्मन लोगो ने इस प्र
स्कैण्डीनेविया से पाया था। स्कैण्डीनेविया ने दूसरी जातियो से इसको प्राप्त किया था।

एशिया की जातियो से यह प्रथा अन्य देशो की जातियों मे फैली और कुछ जातियो ने
लोगो से इसको प्राप्त किया। यह तो निश्चित है कि प्राचीनकाल मे इस प्रकार की शासन
ससार के अनेक देशो मे फैली हुई थी। प्रत्येक अवस्था मे यह स्वीकार करना पडता है कि
के पूर्वी देशो मे इस प्रथा की उत्पत्ति हुई और एशिया प्रधान के असी, कैटी, किम्ब्रिक और
से स्कैण्डीनेविया, फ्रीजलैण्ड और इटली मे यह प्रथा फैली।

'मध्यकालीन युग मे जागीरदारी प्रथा' के प्रसिद्ध लेखक हालम के शब्दों मे, साम-
उत्पत्ति का अनुसंधान करना अथवा संसार के विभिन्न देशो मे प्रचलित जागीरदारी प्रथा की
त्मक आलोचना करना बहुत कठिन नही है। मौलिक बातो मे वे एक दूसरे की छाया है।
शासन-व्यवस्था एक ही प्रणाली का अनुकरण करती है। इस प्रथा को एक देश ने दूसरे
और एक जाति ने दूसरी जाति से पाया है। समय और परिस्थितियो ने उनके व्यावहारिक
अन्तर पैदा कर दिया है। फिर भी उनमे बहुत सी बातो की समानता मिलती है और उनसे
रदारी प्रथा के मौलिक सिद्धान्तो का समर्थन होता है।

रोम की रिपब्लिक गवर्नमेट की शासन प्रणाली और जागीरदारी प्रथा मे कोई
है। उन दिनो मे जगली जातियो और सभ्य जातियों के सगठन अलग-अलग चलते थे।
जातियाँ अपने-अपने क्षेत्रो मे जिस प्रकार की शासन-प्रणाली की व्यवस्था रखती थी,
रूप जागीरदारी प्रथा से भिन्न न था। उनकी प्रणाली एक थी और उन जातियो के लोग
होकर अपने राज्यो के प्रति राजभक्त होकर रहते थे। यही अवस्था हिन्दुस्तान के जमीदार
टर्की के तीमारियो लोगो की थी। सक्षेप मे इन अलोचनाओ के आधार पर यह कहना आ
नही मालूम होता है कि प्राचीन काल मे जो शासन प्रणाली चलती थी, वह जगीरदारी प्र
अनुप्रापित होती थी।

यहाँ पर राजस्थान के राज्यो मे प्रचलित जगीरदारी प्रथा को आवश्यकतानुसार
से लिखना मेरा उद्देश्य है। परन्तु इसके लिखने के समय उस समय की शासन-प्रणालि
दूसरे देशो मे चल रही थी, मेरे सामने आ जाती है। मुझे यहाँ की जागीरदारी प्रथा मे
शासन-प्रथाओ मे कोई मौलिक अन्तर दिखाई नही देता। यहाँ के राज्यों के सम्बन्ध मे
मैने लिखा है, उसका समर्थन यहाँ की बहुत-सी बातो के द्वारा होता है। ग्रन्थो मे वही
मिलती है, जो जनश्रुति द्वारा मालूम होता है। जो सनदे मुझे मिली है, अथवा उनकी जो
प्राप्त हुई है, उनके द्वारा भी वही सामग्री मुझे प्राप्त होती है।

उत्तरी भारत मे रहने वाली जातियो मे जागीरदारी की प्रथा प्रचलित थी, उसके
मे मेरे पास बहुत सामग्री है और उस सामग्री के आधार पर मैं यह भी कह सकता हूँ कि
उत्तरी भारत से राजस्थान मे आकर प्रचलित हुई।

ईसा की सातवीं शताब्दी तक मुगलो और पठानो के द्वारा राजपूतों का भयानक
विध्वंस हुआ। फिर भी उनमे जो प्रथा प्रचलित हुई थी, वह निर्जीव नहीं हुई। राजस्थान के
जिन राज्यों मे उन शासन-प्रणाली ने स्थान पाया था, उन राज्यो मे वह प्रथा अब तक प्रच

इस प्रथा के सम्बन्ध मे मैने मेवाड मे प्रचलित शासन नीति का प्रमुख रूप से आश्रय लिया है। इसका कारण है। जहाँ तक मैने समझा है, राजस्थान मे मेवाड राज्य की जागीरदारी प्रथा शक्तिशाली थी, इस राज्य का मस्तक अन्य राज्यो की अपेक्षा ऊँचा था और मेवाड राज्य पर आक्रमणकारियो के जितने अत्याचार हुए थे, उतने राजस्थान के किसी दूसरे राज्य पर नही हुए थे। इतना सब होने पर भी मेवाड राज्य की सामन्त शासन-प्रणाली सदा सजीव और शक्तिशाली होकर रही। जिन दिनो मे दिल्ली राजधानी के मुगल-सम्राट का शासन शिथिल और निर्बल पड गया था, मेवाड राज्य की सामन्त शासन-प्रणाली उस समय भी दृढता के साथ चल रही थी।

योरप के राज्यों मे जिस प्रकार भूमि के अधिकार का निर्णय होता था, उसी प्रकार का निर्णय राजस्थान के राज्यो मे मिलता है। उसके आधार पर यह मान लेना पडता है कि उन दिनो मे भूमि का विधान पूर्व से लेकर पश्चिम तक—ससार के राज्यो मे एक ही था। शासन-प्रणाली का आधार यही भूमि थी। प्राचीन प्रथाओ मे समय के अनुसार थोडा बहुत परिवर्तन हो जाना अत्यन्त स्वाभाविक होता है। मेवाड-राज्य मे राणा लोगो के द्वारा जागीरदारी प्रथा के पुरानी प्रथा मे कुछ परिवर्तन किये गये थे। परिवर्तन यहाँ के बहुत-से शिला लेखो के द्वारा मालूम होते है। दीवारो मे लगे हुए बहुत से पाषाणो मे राणा की खुदी हुई आज्ञायें पढने को मिलती है।

जागीरदारी प्रथा के पुराने विधान मे मेवाड राज्य ने जो परिवर्तन किये थे, वे अनावश्यक न थे। इस प्रथा का पुराना विधान जब तैयार किया गया था, उस समय को बीते हुए बहुत दिन हो गये थे। मनुष्य जीवन की परिस्थितियो मे भूमि आकाश का अन्तर पड गया था। शासन-प्रणाली मे आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करना अस्वाभाविक नही है। जिस प्रणाली मे कभी परिवर्तन नही होता, वह निर्जीव पड जाती है।

राजपूतो ने अनेक शताब्दियाँ आक्रमणकारियो के अत्याचारो मे व्यतीत की थी। इन दिनो मे भयानक रूप से उनका विनाश हुआ था। विनाश और सहार के दिनो मे किसी भी राज्य का विकास नही हो सकता। फिर भी राजपूतो ने अपने प्राचीन गौरव की रक्षा की थी। मुगलो मे जब बादशाह अकबर का व्यापक साम्राज्य चल रहा था, उन दिनो मे भी मेवाड राज्य मे राणा प्रताप के गौरव को पताका फहरा रही थी।

शासन व्यवस्था मे राजपूतो को मैने बहुत योग्य पाया है। अपने जीवन मे वे जिस प्रकार शूरवीर होते थे, उसी प्रकार नीति कुशल भी होते थे। समाज की जो मर्यादा उनके द्वारा कायम हुई थी निश्चित रूप से वह प्रशसनीय थी। व्यवसायियो और कृषको को राज्य मे सम्मानपूर्ण स्थान मिला था और उनको ऐसी सुविधाएँ प्राप्त थी, जिनसे वे अपनी उन्नति कर सकते। प्राचीन शिलालेखो के पढने से पता चलता है कि जागीरदारी प्रथा मे यहाँ पर शासन की एक अच्छी प्रणाली काम करती थी।

राजपूत जाति की उत्पत्ति—राजस्थान के राज्यो मे जिन राजाओ ने राज्य किया है और जो अब तक कर रहे है, यदि उनकी तुलना हम योरप के राजवश के लोगो के साथ करे तो राजपूतो की श्रेष्ठता हमे स्वीकार करनी पडेगी। राजपूतो का प्राचीन इतिहास पढने के बाद यह स्वीकार करना पडता है कि इनकी उत्पत्ति साधारण वशो मे नही हुई है। यह बात सही है कि उनका प्राचीन काल का गौरव आज मिट चुका है। उनके राज्य इन दिनो मे बहुत गिरी हुई अवस्था हैं और उनके स्वाभिमान की मर्यादा का पतन हो चुका है। परन्तु उनके जीवन की वर्तमान परिस्थितियाँ आज भी उनके प्राचीन गौरव का परिचय दे रही है।

लगातार अनेक शताब्दियो तक अत्याचारो से पीडित रहकर भी राजपूतों ने स्वाभिमान को बहुत अंशो मे अब तक सुरक्षित रखा है। मेरी आँखो के सामने राणा का वंश इस वंश ने अपनी स्वाधीनता और मर्यादा की रक्षा के लिए कितने भीषण अत्याचारो को लगा सैकडो वर्षो तक सहन किया है, इसको सोचकर शरीर रोमाञ्च हो उठता है। मुगल सम्राट गीर ने सीसोदिया वंश का इतिहास लिखा है। * मेवाड के राणा को राजनीतिक परिस्थि के वंश मे होकर मुगलो की आधीनता स्वीकार करनी पडी। मुगल सम्राट बाबर राजपूत विरुद्ध जो न कर सका था, हुमायूँ और अकबर को जिसमे सफलता न मिली थी, सम्राट जह ने उसमे सफलता प्राप्त की थी। उस जहाँगीर ने मेवाड के सीसोदिया वंश की प्रशंसा लिखी इंगलैण्ड की महारानी एलिजाबेथ के शासन काल मे सर टामसरो भारत मे दूत बनकर आया उसने यहाँ के राजपूतो की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

मारवाड के राठौर राजपूत जातियो मे राठौर का सम्मानपूर्ण स्थान है। लेकिन सीसो वंश के लोगो के सम्बन्ध मे जितनी आजादी के साथ मै लिख सकता हूँ, उतनी आजादी के राठौर राजपूतो के सम्बन्ध मे लिखने का मै अधिकारी नही हूँ फिर भी मै इतना तो जानता हूँ जिन दिनो मे फ्रांस के लोग भारत मे अपना स्थान बना रहे थे, यहाँ के राठौर राजपूत उन मे अत्यन्त शक्तिशाली थे और उनका शासन बहुत दूर तक फैला हुआ था। बारहवी शताब्दी उनके विस्तृत राज्य का पतन हुआ और उसके बाद इस वंश का शासन मारवाड़ मे के होकर रहा।

अम्बेर के कछवाहे—प्राचीन काल मे निषेध नामक राजपूतो का जो एक प्रसिद्ध था और जो आजकल नरवर के नाम से मशहूर है, राजा नल और रानी दमयन्ती ने जि कथाये सर्वसाधारण मे बहुत प्रचलित है—इसी वंश मे जन्म लिया था। बाहरी आक्रमण कारण इस वंश के लोगो को अपना पैतृक राज्य छोडना पडा था। उस समय भारतवर्ष मे प्रधान राज्य थे। अरब के प्रसिद्ध यात्री ने उन चारो राज्यो के सम्बन्ध मे जो कुछ लिखा है, द्वारा उन राज्यो का हमको परिचय मिलता है।

मेवाड का सीसोदिया वंश—राजस्थान के राज्यो मे मेवाड का स्थान अधिक सम्मा और सम्पूर्ण राजपूत जातियो मे सीसोदिया वंश का स्थान ऊँचा है। मेवाड की राजनीति, नीति और शासन व्यवस्था यहाँ के अन्यान्य राज्यों से बिल्कुल भिन्न है। राजस्थान के दूसरे जब कोई विशेष स्थान न रखते थे, मेवाड का राज्य उस समय इस देश मे विख्यात हो रहा सीसोदिया वंश के स्वाभिमानी राणा लोगो ने आक्रमणकारियो के साथ बहुत समय तक किया। उन्होने जीवन की भयानक कठिनाइयो का सामना किया परन्तु वे अपनी स्वाधीनत नष्ट करने के लिए तैयार न हुए। सीसोदिया वंश की सबसे बडी प्रशंसा यह थी कि इस का कोई भी राणा अवसरवादी न था।

मुगल साम्राज्य के पतन के दिनो मे उसके बहुत से अधीन राज्यो ने लाभ उठाया साम्राज्य के छोटे-छोटे राजा और सामन्त विद्रोह करके स्वतन्त्र हो गये थे। मारवाड, अम्बेर

---

* मेवाड की राजपूत जाति मे सीसोदिया वंश का बहुत ऊँचा स्थान है। इस व घटनाओं और परिस्थितियो के अनुसार अपने नामो मे परिवर्तन किया है। पहले ये लोग सूर्य नाम से विख्यात थे। उसके बाद इस वंश के लोग गहिलोत कहलाये। बाद मे आहेरिया उसके उपरान्त सीसोदिया के नाम से प्रसिद्ध हुए।

राजस्थान के दूसरे राज्यो ने भी उस मौके का लाभ उठाया था। उन्होने अपने राज्यो की सीमा बढा ली थी और मुगलो के साथ विद्रोह करके अपनी स्वाधीनता की घोषणा की थी। परन्तु मेवाड के सीसोदिया वश ने इस अवसर पर कोई लाभ नही उठाया था।

परिवर्तन और पतन के दिनो मे भी राजपूतो ने अपने पूर्वजो के गौरव को नही भुलाया। उन्होने जिस प्रकार श्रेष्ठ वशो मे जन्म लिया है, अनेक विपदाओ मे आकर भी उन्होने उनकी श्रेष्ठता की रक्षा की है। उनके मनोभावो मे कोई परिवर्तन नही हुआ, यद्यपि उनके जीवन की परिस्थियो मे भयानक अन्तर आ चुका है। मेवाड राज्य के प्राचीन पुरुष, जिस प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे और भयानक विपदाओ के समय भी वे अपना मस्तक नीचा न करते थे, उनके वशजो मे पूर्वजो के वे गुण और स्वभाव आज भी देखने को मिलते हैं।

मेवाड की राजपताका लाल रग की है और उस पताका पर सूर्य की आकृति अकित रहती है। मेवाड के सामन्तो की पताकाये, मेवाड की पताका से भिन्न रहती है। अम्बेर की राज पताका पाँच रङ्ग की होती है। चन्देरी नाम के एक छोटे राज्य की पताका पर प्रमत्त सिंह की आकृति अंकित रहती है। *

ईसा के जन्म से बहुत पहले भारत मे महाभारत का युद्ध हुआ था। उस समय अर्जुन की पताका मे हनुमान की मूर्ति अकित रहती थी। इसका समर्थन हिन्दुओ के प्रसिद्ध ग्रथ महाभारत के द्वारा होता है।

राजपूतो के महलो मे उनके वश के देवता की मूर्ति रहा करती है। राजपूत लोग अपने वश के उस देवता की मूर्ति को साथ मे लेकर युद्ध मे जाते थे। राजा उस मूर्ति को अपने साथ लेकर घोडे पर सवार होता था। कोटा के राजा भीमहर ने युद्ध के समय अपने देवता के साथ-साथ अपने प्राणो को बलिदान किया था। खीची जाति के सरदार स्वर्गीय जयसिंह की भी यही दशा थी। अपने देवता को साथ लेकर ही वह युद्ध मे जाता था। †

युद्ध मे अपने वश के देवता के ले जाने का आम रिवाज हिन्दू राजाओ मे था। यूनान के बादशाह सिकन्दर ने जब भारत मे आक्रमण किया था, उन दिनो मे जितने भी इस देश के राजा उसके साथ युद्ध करने गये थे, सभी अपने-अपने साथ अपने वश के देवता को ले गये थे। कुछ राजाओ ने अपनी सेना के आगे कुल देवता को रखकर युद्ध आरम्भ किया था।

यूनान का प्रसिद्ध इतिहासकार एरियन ने लिखा है कि सामन्तो के सम्बन्ध मे बहुत-सी बाते यूनान के लोगो ने सिंध नदी के निकटवर्ती राज्यो से सीखी।

यूनान का बादशाह सिकन्दर आक्रमण करके और विजय करके पराजित राजाओ को अपना अधीन बना लेता था और उन राजाओ की पताकाये सिकन्दर की पसद के अनुसार होती थी।

सिंध नदी के पश्चिमी पहाडी प्रदेश मे जिस समय युद्ध हुआ था, उसके बहुत पहले युधिष्ठिर की राजपताका के नीचे बहुत से मुसलमान एकत्रित हुये थे। पराक्रमी विशाल देव का नाम दिल्ली

---

* इस राज्य का सम्पूर्ण भाग जगलो से घिरा हुआ है। योरप के लोगो मे से सबसे पहले मै ही सन् १८०७ ईसवी मे वहाँ गया था। उस यात्रा मे मुझे भयानक सकट भोगने पडे थे। उन दिनो मे यह राज्य स्वतन्त्र था उसके तीन वर्ष बाद इस राज्य पर सिन्धिया ने अपना अधिकार कर लिया था।

† खीची चौहान राजपूत वश की एक शाखा है। हाडावती के पूर्व की तरफ इस वंश के लोगो का राज्य था।

के विजय स्तम्भो पर खुदा हुआ है। यह यवन सेना के साथ युद्ध करने के लिये जो अपनी सेन
गया था, उसमे चौरासी हिन्दू राजाओ की पताकाये थी। इस युद्ध मे शामिल होने के लिये व
देव ने वहुत से राजाओ को निमन्त्रण पत्र भेजा था। प्रसिद्ध चन्द कवि ने अपने ग्रन्थ मे
युद्ध की वहुत-सी वाते लिखी है। कवि चन्द ने अपने ग्रन्थ मे पृथ्वीराज से शासन की
प्रणाली का खूब वर्णन किया है।

राजस्थान मे प्रचलित सामाजिक नियमो के अनुसार जिनका जन्म विशुद्ध राजपूत व
हुआ है, उन्ही को मेवाड राज्य के सामन्त होने का अधिकार है इस राज्य के जितने भी
अव तक वने थे, सभी के साथ इस नियम की पावदी की गयी थी। मेवाड राज्य मे ्र
श्रेष्ठता को वहुत महत्व दिया जाता था। राज्य के कार्यो मे राजपूतो के सिवा दूसरे लो
नियुक्त किये जाते थे और उसमे जिनको गुजारे के लिये भूमि दी जाती थी, उस पर उनका
अधिकार नही होता था। पाने वाला जव तक राज्य का काम करता था, उस समय तक
भूमि का अधिकारी माना जाता था।

योरप के देशों मे राज्य के प्रमुख कर्मचारियो को भूमि अथवा कुछ गाँवो का इलाका
जाता था। उसी प्रकार राजस्थान के राज्यो मे भी राज्य के प्रधान कर्मचारियो को भूमि
इलाका देने की परिपाटी थी। इस परिपाटी का एक कारण था। उन दिनो मे सिक्के का
न हुआ था। उस दशा मे वेतन देने मे वडी असुविधा होती थी। इस उलझन से वचने क
प्राचीनकाल मे राजकर्मचारियो को उनके पदो के अनुसार भूमि अथवा इलाका दिया जाता था

मेवाड के मन्त्री लोग वेतन के स्थान पर भूमि अथवा इलाका अधिक सम्मानपूर्ण समझ
योरप के अनेक देशो मे भी उस युग मे इसी प्रकार के प्रचार पाये जाते थे। फ्रास के राजा स
के यहाँ राज कर्मचारियो की अलग-अलग श्रेणियाँ वनी थी। उनमे छोटे और वडे सभी
कर्मचारी थे। मन्त्रियो और अध्यक्ष लोगो की भी श्रेणियाँ थी। राजपूत राज्यो मे भी हम
कुछ उसी प्रकार की वाते देखने को मिलती है।

मेवाट के राज्य मे वेतन के स्थान पर भूमि पाने वाले सभी प्रकार के लोग देखे
प्रासाद निर्माता, चित्रकार, चिकित्सक, दूत और मन्त्री लोग भूमि पाने के अधिकारी माने
राज्य के कर्मचारियो मे उनके वंश की श्रेष्ठता को अधिक महत्व दिया जाता है। राज्य के क
आमतौर पर पैतृक अधिकार चलता है। इसका अर्थ यह है कि जिस पद पर जो आदमी काम
है, उस पद पर उसी का पुत्र, प्रपौत्र और उत्तराधिकारी का काम कर सकता है। ऐसे लो
राज्य की तरफ से उपाधि भी दी जाती है।

यदि किसी कारण से किसी को दी गई भूमि वापस ले ली जाती है तो जिसकी
ली जाती है, उसे अपने अधिकार के लिये लडने का मौका मिलता है। भूमि अथवा
हुए राज कर्मचारियो को राज्य के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करना पडता है। किसी भी
मे वे अपने राजा के भक्त होते है और राज्य के प्रति उनको शुभचिंतक होकर रहना
कर्त्तव्यपरायणता के विरुद्ध कोई काम करने पर अथवा अपने आचरणो से राज्य के प्रति वि
घात का परिचय देने पर उसे जो भूमि अथवा इलाका दिया गया था, वह वापस ले लिया ज
यदि उसके सम्बन्ध मे कोई प्रार्थना करता है तो उस पर फिर से निर्णय किया ज

मेवाड-राज्य की व्यवस्था सभी प्रकार सुरक्षित रखने की चेष्टा की गई है। र
दक्षिणी, पूर्वीय और पश्चिमी सीमाओ पर लडाकू और लुटेरे भील, मेरा और मीना जाति
रहते है। राज्य के चारो तरफ सामन्तो का शासन है। राज्य की मध्यवर्ती भूमि खालसा है

भूमि अधिक उपजाऊ है। इस प्रकार की व्यवस्था के द्वारा मेवाड राज्य साधारण परिस्थितियो मे सुरक्षित समझा जाता है।

मेवाड मे सामन्तो को जितनी भूमि दी गई है, खालसा भूमि उसकी चौथाई भी नही है। इस खालसा भूमि की आमदनी से ही राज्य का कार्य चलता है। किसी उत्तम कार्य के लिये इसी आय से राणा, लोगो को पारितोषिक देता है। राजधानी के निकट किसी भी सामन्त को भूमि नही दी जाती। इस नियम को राणा भीमसिंह ने पहले से भी अधिक कठोर बना दिया है।

सामन्तो को राज्य की भूमि का जो इलाका दिया जाता है, उसके बदले मे उनको राज्य की रक्षा के लिए शत्रुओ से युद्ध करना पडता है। मेवाड के सामन्तो के सामने, उसके सीमा पर होने के कारण, एक न एक लडाई बनी ही रहती है। कभी पहाडो पर रहने वाली जगली जातियो के उपद्रव होते है, तो उस दशा मे सामन्तो को उनका सामना करना पडता है और कभी आक्रमणकारियो के आने पर, उनके साथ उनको सग्राम करना पडता है। इस प्रकार के जितने भी सघर्ष पैदा होते है, उनका सामना करने के लिये अपनी सेनाओ के साथ राणा की सहायता के लिए युद्ध-स्थल मे जाना पडता है।

शासन के सुभीते के लिए राज्य का विभाजन होता है। राज्य मे बडे-बडे जिले होते हैं और प्रत्येक जिले मे पचास से लेकर सौ तक ग्राम रखे जाते है। कही-कही इन ग्रामो की सख्या और भी अधिक हो जाती है। सम्पूर्ण राज्य चौरासी भागो मे विभाजित किया जाता है। जिन दिनो मे जागीरदारी की प्रथा इगलैण्ड मे थी, उन दिनो मे वहां पर भी इसी प्रकार का विभाजन होता था।

मेवाड-राज्य की रक्षा के लिए बहुत से स्थानो पर सीमा रक्षक सरदार रहा करते है। उनके अधिकार मे सैनिको की एक सख्या रहती है। यह सख्या सभी सीमा-रक्षको की एक-सी नही होती। जहाँ जैसी आवश्यकता होती है, वहाँ उतने ही कम और अधिक सैनिक रखे जाते है। आवश्यकता पडने पर कोई भी सीमा-रक्षक सरदार अपने निकटवर्ती सामन्त की सेना को सहायता के लिए बुला सकता है। इन सीमा रक्षको की नियुक्ति बडे उत्तरदायित्व के साथ की जाती है। जो लोग इस कार्य के लिये राज्य के अधिकारियो के पास प्रार्थना पत्र भेजते हैं उनका अन्तिम निर्णय राणा के द्वारा होता है। इन रक्षको के अधिकार मे राज्य की पताका की अनेक चीजे होती है।

राज्य के जो सामन्त (जागीरदार) ऊँची श्रेणी के होते है, वे साधारण अवस्था मे सीमा के सघर्ष मे जाकर भाग नही लेते। बल्कि अपनी सेना के किसी अधिकारी के नेतृत्व मे लोग अपनी सेना भेज देते है।

राज्य के विभाजन मे प्रत्येक जिले मे मामले-मुकदमा का निर्णय करने के लिए एक दीवानी का अधिकारी और दूसरा एक सैनिक रहा करता है। इन लोगो का कार्यालय किसी दुर्ग मे रहता है और वही पर रहकर वे लोग अपना कार्य करते है।

विभाजित राज्य की सुव्यवस्था उसके सामन्तो (जागीरदारो) के द्वारा होती है। जो सामन्त (जागीरदार) इस प्रकार का कार्य करते है, राज्य की तरफ से वे चार श्रेणियो मे विभाजित है और वे इस प्रकार है —

पहली श्रेणी—इस श्रेणी मे सोलह सामन्त है। राज्य की तरफ से मिले हुये इलाको के द्वारा इन सामन्तो की सालाना आमदनी पचास हजार रुपये से लेकर एक लाख रुपये तक है। इस श्रेणी के सामन्त राणा के द्वारा आमन्त्रित होने पर किसी भी कार्य के समय राजभवन मे जाते है। वंशो की

मर्यादा के अनुसार इस श्रेणी के सामन्तो को राणा के मंत्री होने का पद मिलता है, य
मे बहुत दिनो से चला आ रहा है।

दूसरी श्रेणी—इस श्रेणी के सामन्तो की वार्षिक आय पॉच हजार रुपये से लेकर
हजार रुपये तक है। इन सामन्तो को नियमित रूप से राज-भवन मे रहना पडता है। इन्ही
मे से प्राय सीमा-रक्षक चुने जाते है। उनको फौजदार कहते है। उनके अधिकार मे सैनिको
छोटी सेना रहती है।

तीसरी श्रेणी—सामन्तो की यह तीसरी श्रेणी गोल नाम से प्रसिद्ध है। इनकी
आय पॉच हजार रुपये होती है। राणा उनमे से किसी को भी उसके कार्यो से प्रसन्न होकर
भूमि देने का अधिकार रखता है। इन सामन्तो को राज्य के जो कार्य करने पडते है, वे रा
निर्भर होते है। इन्ही के द्वारा राणा राज्य की व्यवस्था करता है। प्रत्येक अवस्थ
सामन्तो को राणा के अधिकार मे रहना पडता है। यदि ऊँची श्रेणी के सामन्त राणा
विद्रोह करे तो इस श्रेणी के सामन्त उस समय राणा की सहायता करते है और विरोधी
को विद्रोही समझकर राणा के आदेश के अनुसार उनके साथ युद्ध करते है।

चौथी श्रेणी—राणा के परिवार मे उत्पन्न होने वाले राजकुमार एक निश्चित अव
बाबा कहे जाते है। उनके पालन-पोषण के लिए राज्य की तरफ से एक निश्चित भूमि हो
ये लोग चौथी श्रेणी के सामन्त माने जाते है। इस श्रेणी मे शाहपुरा और बनेडा के
अधिक शक्तिशाली है। इन सामन्तो को राणा के आधीन होकर चलना पडता है।

राज्य के दीवानी के मामलो का निर्णय करने के लिये जैसा कि ऊपर लिखा
दीवानी का एक अधिकारी रहता है। यह अधिकारी सामन्तो मे ही नियुक्त होता है। फ
अपराधो के निर्णय करने के लिये राणा के परामर्श की आवश्यकता होती है। इस
निर्णय जिनके द्वारा होते है, वे पञ्चायते कहलाती है।

मालगुजारी और राणा के अधिकार—इस विषय मे यहाँ हम अधिक विस्तार मे
चाहते। आवश्यकतानुसार, उन्हे आगामी पृष्ठों मे विस्तार के साथ लिखा जायगा। मे
मे जो खालसा भूमि है, राणा की आय का साधन वही है। उसके द्वारा राज्य के कर की अ
है। इसी खालसा भूमि पर राज्य का व्यवसाय और दूसरे कार्य निर्भर है। इन करो
पहले राज्य की अच्छी आमदनी हो जाती थी और राणा लोग इन करों पर अधिक ध्यान
यह कर अधिक संख्या में राज्य के व्यवसायियो से वसूल होता था। इन व्यापारियो के साथ
की तरफ से उदारतापूर्ण व्यवहार रहता था और राज्य के व्यवसायी भी निर्धारित कर
देकर अपना कर्त्तव्य पालन करते थे।

मेवाड़-राज्य की राजनीतिक परिस्थितियाँ जितनी ही बिगड़ती गयी और बाहरी
कारियो के अत्याचार जितने ही राज्य मे अधिक होते गये, राज्य के व्यवसायियो की
तियाँ भी उतनी ही खराब होती गयी। आक्रमणकारियो की लूट मार के कारण राज्य
बहुत गरीब हो गयी। साथ ही राज्य की तरफ से प्रजा की रक्षा की कोई व्यवस्था न
के कारण प्रजा की राज-भक्ति मे भी बहुत अन्तर पड गया। इसका परिणाम यह हुआ कि
रियों को जो कर देना पड़ता था, उसकी वसूलयाबी मे बहुत कठिनाइयाँ होने लगी।

अनेक अवसरों पर मेवाड के राणा ने आक्रमणकारियो को अपरिमित सम्पत्ति दे
खजाना खाली कर दिया था। और इस दशा मे राज्य की तरफ से जो कर व्यवसायियों

गये थे, वे पहले की अपेक्षा अधिक थे। इन करो के बढने से प्रजा पीडित हो रही थी और व्यवसायियो के मनोभावो मे बहुत अन्तर पड गया था। यही कारण था कि एक व्यापरी ने राज्य के उन अधिक करो के सम्बन्ध मे मुझसे कहा था . "राज्य की प्रजा जितनी ही निर्धन होती जाती है, राज्य की तरफ से कर उतने ही बढते जाते है।" ×

इनमे सन्देह नही की राज्य की तरफ से जो कर बढे थे, उनका प्रभाव राज्य की प्रजा पर अच्छा नही पडा था। मेवाड के पतन के पहले राणा के साथ प्रजा का जितना शुद्ध और सम्मानपूर्ण व्यवहार था उसको फिर से कायम करने के लिए बहुत समय लगेगा।

प्राचीन काल मे मेवाड राज्य मे बहुत सी खाने थी। उन खानो से राज्य को लाखो रुपये की आय होती थी। इस राज्य मे केवल जावरा की खान से जो चाँदी पायी जाती थी, वह कई लाख रुपये की होती थी। चम्बल नाम के स्थान मे जो खाने थी, उनसे लोहा, ताँबा और सीसा की उत्पत्ति होती थी। इस राज्य मे कुछ खानो से कीमती पत्थर पाया जाता था। परन्तु राज्य की परिस्थितियाँ बिगड जाने से ये खाने नष्ट हो गयी है और अब उनसे लाभ उठाने के लिए असाधारण परिश्रम और सम्पत्ति के खर्च करने की जरूरत है। *

बरार—बरार का अर्थ कर है। इस राज्य मे साधारण तौर पर प्रजा से जो कर वसूल किये जाते हैं, वे इस प्रकार है . 'गनीमबरार' अर्थात् युद्ध सम्बन्धी कर, 'घरगुनी बरार' अर्थात् घर का कर। 'हल बरार' अर्थात् खेती का कर। 'न्योता बरार' अर्थात् विवाह कर। इस प्रकार के कई एक कर इस राज्य मे लगाये जाते हैं। इन दिनो मे युद्ध का कर प्रजा से वसूल नही किया जाता। इसके पहले इस राज्य मे एक न एक युद्ध का कर लगता ही रहता था। इसका कारण यह था कि उन दिनो मे इस राज्य को लगातार बहुत दिनो तक युद्ध करने पडे थे।

कृपको पर जो खेती का कर लगता था, उसका निश्चय खेती मे पैदा होने वाले अनाजो के अनुमान पर होता था। खेती मे जिसकी जैसी पैदावार होती थी, उसको उसी हिसाब से कर देना पडता था। पिछले दिनो मे युद्ध कर की भी यही हालत हो गयी थी। खेती की पैदावार के हिसाब से ही युद्ध कर भी लिया जाता था। राज्य के पहाडी स्थानो पर कर वसूल करने की दूसरी व्यवस्था है। क्योकि यहाँ की भूमि मे जो खेती होती है, उसका कोई अनुमान नही लगाया जा सकता। इसीलिए भूमि के हिसाब से पहाडी कृपको पर कर लगा दिया जाता है।

राज्य मे कुछ और भी ऐसे अवसर आते है, जिनसे राणा को आर्थिक लाभ होता है। ऐसे अवसरो मे, किसी सामन्त अथवा सरदार का नया अभिषेक अथवा इस तरफ के कोई भी दूसरे कार्य जब कभी राज्य मे होते है तो उन अवसरो पर राणा को नजर दी जाती है। इस भेट मे मिलने वाली सम्पत्ति का कोई मूल्याकन नही हो सकता। समय और परिस्थितियो के अनुसार मिलने वाली सम्पत्ति कम और अधिक हो सकती है। भूमिया सरदारो से वार्पिक अथवा त्रैवार्पिक राणा को

× व्यापार के माल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए बैलगाडियो को काम मे लाया जाता है। दूसरे देशो मे इस काम के लिए ऊँटो का प्रयोग होता है।

* मेवाड-राज्य मे सिक्का निर्माण कराने का अधिकार राणा के सिवा किसी दूसरे को नही है। शालुम्ब्रा का सामन्त ताबे का पैसा बनवा सकता है। परन्तु सोने अथवा चांदी का मुद्रा निर्माण कराने का अधिकार उसको भी नही है। प्राचीन काल मे इस राज्य के टकसाल घर से राणा को बहुत अधिक आय होती थी। इस प्रकार की व्यवस्था मेवाड-राज्य मे अब उसी समय हो सकती है, जब राज्य मे पूरी तौर पर शाति कायम हो।

एक निश्चित आय होती है। नियमो को भङ्ग करने वालो और दूसरे अपराधियो को ज
दिया जाता है, उससे भी आर्थिक आय होती है।

मेवाड़ राज्य मे अपराधियो को अधिक कठोर दण्ड नही दिया जाता। प्राण-दण्ड
पर उनको आर्थिक दण्ड देकर छोड दिया जाता है। इसका कारण यह भी है कि पहाडो प
वाले जंगली लोग प्राय. अधिक अपराधी होते है और वे शारीरिक दण्ड की अपेक्षा आर्थि
से अधिक घबराते है।

खड लकड—यह भी एक प्रकार का कर है। इसके द्वार राज्य को अच्छी आय ह
यह कर वहुत पहले से चला आ रहा है। जिस समय राणा अपनी सेना के साथ युद्ध
रवाना होता था, उस समय राज्य का प्रत्येक मनुष्य अथबा उसका परिवार राज्य की सेना
काष्ठ और खड दिया करता था। कुछ दिनो के बाद यह कर बिना किसी युद्ध के ही लि
लगा। खड् लकड का अभिप्राय रसद से है। युद्ध के दिनो मे सेनाओ के लिये रसद राज्य
ग्राम और नगर मे वसूल किया जाता था। इस रसद मे खाने के पदार्थो के सिवा और भी
चीजे वसूल की जाती थी।

यह प्रथा अब भी प्रचलित है। फ्रास मे जब सामन्त शासन-प्रणाली (जागीरदार
चल रही थी तो प्रजा से इसी प्रकार रसद ली जाती थी। वह प्रणाली बिगड़ कर कुछ
गयी और रसद के नाम पर खाने-पीने के पदार्थो के अतिरिक्त राज्य के अधिकारी धन वसू
लगे थे। फ्रास की इन बातो का उल्लेख इतिहासकार हालम ने अपने ग्रंथ मे किया है
लिया है कि फ्रांस का राजा जब राज्य मे घूमने के लिए निकलता था तो उसके सामन्त
जाकर भेट करते थे और सम्मानपूर्वक वे लोग सम्पत्ति के साथ घोडा और वहुमूल्य पदार्थ
उपहार मे देते थे। इस सम्मान मे सामन्त जो कुछ खर्च करता था, उसे वह अपने कृष
व्यवसायियो से वसूल कर लेता था। मेवाड में मदिरा, अफीम और दूसरे मादक पदार्थो
लिया जाता है इन करो के द्वारा राज्य को आर्थिक लाभ होता है।

मेवाड राज्य के अच्छे दिनो मे राणा दीवानी के अधिकारियो, चार मन्त्रियो अ
सहायक मत्रियो के साथ राज भवन मे बैठकर परामर्श करता था और राज्य की वर्तमान
को सुलझाने के लिए चेष्टा करता था। राज्य के सामन्त और सरदार इन वैधानिक काय
सम्बन्ध न रखते थे।

जिन दिनो मे राज्य की दशा बिगड़ रही थी, शासन की व्यवस्था खराब हो
सर्वत्र अशान्ति फैल रही थी, राज्य की शक्तियाँ दुर्बल हो गई थी, उन दिनो मे राज्य का
कार्य वहुत निर्बल हो गया था। यद्यपि उन दिनो मे राणा की अवस्था अच्छी न रही
आक्रमणकारियो के अत्याचारो से राज्य बहुत पीडित हो रहा था, फिर भी राज्य की
अपना कार्य नियमित रूप से कर रही थी। अशान्ति के इन दिनो मे भी राज्य का प्रत्ये
अपना कार्य कर रहा था। सीमा पर जो छावनी वनी हुई थी, उनमे अधिकारी वैठकर अ
करते थे और सीमा की रक्षा के लिए वे सदा सावधान रहते थे।

राज्य मे कर वसूल करने का कार्य सावधानी के साथ चल रहा था। कही पर
तरफ से कोई उत्पात न हो, सवल निर्वलो को सता न सके, नीच और उद्दण्ड अनुि
कर सके, इन सभी वातो के प्रति राज्य के अधिकारी सदा सतर्क रहते थे। राज्य
कार्य प्रजा के प्रतिनिधियो के द्वारा हुआ करते थे। प्रत्येक नगर और ग्राम से प्रजा

निधि चुनकर भेजा करती थी और वे लोग एकत्रित होकर राज्य की समस्याओ का बहुमत मे निर्णय किया करते थे।

राजस्थान के सभी बडे-बडे नगरो मे निर्णायक समितियां बनी हुई थी। उन समितियो का जो प्रधान चुना जाता था, वह नगर सेठ कहलाता था। इस पद के लिए नगर और ग्राम के श्रेष्ठ पुरुषो का चुनाव होता था। प्रजा के प्रतिनिधियो के साथ नगर सेठ बैठ कर राज्य की समस्याओ का निर्णय किया करता था। सामन्त शासन-प्रणाली (जागीरदारी प्रथा) के दिनो मे फ्रास मे भी यही होता था। वहाँ पर भी प्रजा के प्रतिनिधि एकत्रित होकर अपना प्रधान चुनते थे और वह प्रधान प्रतिनिधियो की सहायता से राजा के कार्यों की व्यवस्था करता था। इस प्रकार की सस्थाओ के द्वारा राज्य के कार्यो का सचालन होता था। उनके बनाये हुए नियमो के आधार पर राज्य के बडे-बडे ग्रामो मे पचायते काम करती थी और उनके कार्यकर्ताओ का भी चुनाव हुआ करता था।

प्राचीनकाल मे राज्य की सस्थाये अपना कार्य करने के लिए चबूतरो पर बैठके करती थी। इस प्रकार के कार्यो के लिये जो चबूतरे चुने जाते थे, वे खालसा भूमि की सीमा के भीतर होते थे, जिन पर राणा का अधिकार होता था। किसी सामन्त के अधिकृत क्षेत्र मे इस प्रकार के स्थान नही चुने जाते थे। सामन्त (जागीरदार) लोग अपने अधिकार की भूमि का स्वतंत्र रूप से उपभोग करते थे। उसमे राजा का हस्तक्षेप वे नही पसन्द करते थे। वे स्वय राजा की अधीनता मे रहते थे। फिर भी अपने अधिकार के क्षेत्र को वे स्वतत्र मानते थे।

सामन्तो की यह स्वतत्रता की बातो मे थी। शत्रु के आक्रमण को व्यर्थ करने के लिये राजा किसी सामन्त के क्षेत्र और उनके दुर्ग राणा के हस्तक्षेप मे बिलकुल अलग रहते थे।

रोजाना—सामन्तो मे किसी के अपराधी होने पर, राणा की आज्ञा का अनादर करने पर राणा के द्वारा बुलाये जाने पर देर मे उपस्थित होने पर अथवा इस प्रकार के किसी कार्य के करने पर राणा का दूत अपने साथ कुछ अश्वारोही अथवा पैदल सेना लेकर उस सामन्त के पास जाता है और राणा का आदेश पत्र उसकी मोहर के साथ सामन्त को दिखाकर दूत उससे रसद मांगता है। इसी रसद को रोजना कहते हे।

अपराधी सामन्त जब तक राणा की आज्ञा का पालन न करे, उस समय तक राणा का दूत अपनी सेना के साथ सामन्त के यहाँ रहने का अधिकारी है और उसके लिये उस सामन्त को रसद देनी पडती है। राजभवन सहुँचने मे सामन्त प्राय देर कर देते हैं। उस दशा मे उनके विरुद्ध राणा को यही करना पडता है। परन्तु इसके परिणाम कभी-कभी बहुत भयानक हो जाते हैं।

सामन्तो के क्षेत्रो मे राणा को अथवा राज्य के किसी विभाग के अधिकारियो को हस्तक्षेप करने का अधिकार नही है। सामन्त अपने-अपने क्षेत्रो की व्यवस्था स्वयं करते हैं। सामन्तो के क्षेत्रो मे भी पचायतो की प्रथा काम करती है। देवगढ के सामन्त ने अपने आधीन सरदारो के सामने एक बार प्रतिज्ञा की थी "आप सब के परामर्श के बिना हम पर किसी प्रकार के कार्य का अनुष्ठान न करेगे।"

राज्य मे किसी प्रकार की अशान्ति पैदा होने पर अथवा किसी बाहरी शक्ति के आक्रमण करने पर अथवा आक्रमण की सम्भावना होने पर मेवाड के सभी सामन्त राणा की सभा मे आकर एकत्रित होते है। राणा यनके साथ परामर्श करता है। उस समय इस बात का निर्णय किया

जाता है कि ऐसे समय पर क्या होना चाहिये। सामन्तो के परामर्श के बिना उनके विरुद्ध राणा को ऐसे अवसरो पर कुछ भी करने का अधिकार नही है।

मेवाड़ राज्य पर जब कोई राजनीतिक विपद आती है, तो राणा के पास पहुँच ही सामन्त लोग आपस में परामर्श कर लेते है कि उनको राणा की सभा मे जाकर व करना चाहिए। अधिकाश अवसरो पर सामन्त यही करते है और उसके बाद राणा क जाते है।

ऐसे अवसरो पर यदि राणा की तरफ से किसी (जागीरदार) सामन्त को नि मिलता अथवा वह बुलाया नही जाता, तो वह सामन्त अपना अपमान अनुभव करता है अपने राज्य मे शासन की जिस व्यवस्था को काम मे लाता है, सामन्त लोग भी उस अनुकरण करके अपने क्षेत्रों मे राज्य का प्रवन्ध करते है।

प्रत्येक सामन्त की अधीनता मे कुछ सरदार रहते है, उसके कुछ प्रमुख कर्मचारी ये सरदार और प्रमुख कर्मचारी अपने सामन्त के दरबारी होते है। उसके दरबार मे परि और प्रजा की तरफ से कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति रहा करते है। ये सभी लोग अनेक अ सामन्त को अपना परामर्श देते है। जिस प्रकार राणा अपने मन्त्रियो और सदस्यो के स किसी समस्या का निर्णय करता है, ठीक उसी प्रकार सामन्तो को भी अपने-अपने क्षेत्र पडता है। इस प्रकार के परामर्शो मे राणा के विचारो को प्राय महत्व दिया जाता है की समस्याओ को राणा के दरबार मे एकत्रित होकर सभी सामन्त सुलझाते थे।

सैनिक कार्य—सुख और सन्तोष के दिनो मे मेवाड मे पन्द्रह हाजर अश्वारोही के प्रत्येक भाग से आकर एकत्रित होती और युद्ध भूमि मे राणा के साथ जाती थी। इन राज्य की तरफ से केवल भूमि दी जाती थी। जिसके बदले उनको राज्य की यह से पडती थी। सैनिको की इस सख्या मे प्रत्येक सामन्त अपने सरदारो के साथ उस सेना जो उसके अधिकार से रहती थी, राणा के पास उपस्थित होता था।

सामन्तो को भूमि अथवा इलाका जो दिया जाता था, वह सब के लिए एक-स और वे लोग अपने अधिकार मे जो सेनाये रखते थे, वे भी एक-सी न थी। उनके सख्या अलग-अलग थी जिस सामन्त की आय जैसी होती थी, उसी हिसाब से वह अपने मे सेना रख सकता था। एक हजार रुपये की वार्षिक आय पर कम-से-कम दो और अ तीन सैनिक सवारो के रखने का नियम था। कभी-कभी भूमि दी जाने के समय आय एक हजार रुपये पर किसी-किसी को तीन अश्वारोही और तीन पैदल सैनिक रख सकने कार दे दिया जाता है। इगलैण्ड के राजा विलियम ने जिस समय अपना राज्य साठ ह मे विभाजित किया था उस समय उसके प्रत्येक भाग को दो सौ रुपये सेना के लिये थे। जो भाग सेना नही दे सकता था, वह रुपये देता था।

इधर बहुत दिनो से इंगलैण्ड मे जागीरदारी प्रथा का अंत हो गया है। इसके यह प्रथा वहाँ पर जारी थी, उस समय सामन्तो की सेना पर राजा के अधिकार निध प्रत्येक सैनिक वर्ष मे केवल चालीस दिन राज्य का काम करता था। इन दिनो मे रा से कोई भी कार्य ले सकता था। इन सैनिको को राज्य के भीतर अथवा बाहर राजा पर युद्ध करना पडता था।

राजा के प्रति राजस्थान मे सामन्तो को कुछ नियम पालन करने पडते है। सामन्तो को वर्ष मे कुछ दिन राणा की राजधानी उदयपुर मे रहना पड़ता है।

को एक साथ ऐसा नही करना पडता। सामन्तो का विभाजन हो जाता है। एक बार आये हुये सामन्तो का जब समय समाप्त हो जाता है तो वे चले जाते है और उनके स्थान पर दूसरे सामन्त आ जाते है। कुछ युद्ध सम्बन्धी उत्सव हुआ करते है। ऐसे अवसरो पर सभी सामन्तो को सेना और रसद के साथ राजधानी मे आकर उपस्थित होना पडता है। लेकिन राज से बाहर जब कभी सैनिक युद्ध के लिये जाते है तो सामन्तो की सेनाओ के लिये कुछ रसद राणा की तरफ से भी दी जाती है।

सामन्तो को दण्ड—जिन दिनो योरप मे जागीरदारी प्रथा के अनुसार राज्य का शासन होता था, उन दिनो मे राजा की आज्ञा पालन न करने पर सामन्तो को दण्ड दिया जाता था। इसी प्रकार की प्रणाली मेवाड मे भी चलती है। यहाँ पर सामन्तो को भूमि देकर जो इकरारनामा लिखा जाता है, उसमे साफ-साफ इस बात का उल्लेख कर दिया जाता है। उसके अनुसार किसी सामन्त के अनुशासन भङ्ग करने पर अथवा अशिष्ट व्यवहार करने पर सामन्त को राजा के दण्ड देने पर रुपये देने पडते है। राजा को यह भी अधिकार होता है कि सामन्त के कर्त्तव्य-पालन न करने पर वह उसके अधिकार की भूमि को जब्त करले।

राजस्थान के राजा ऐसे अवसरो पर सामन्तो के अधिकार की भूमि को वापस ले लेने की अधिक चेष्टा करते है और उनको पदच्युत कर देते हैं। सामन्त लोग इस प्रकार का दण्ड पाने पर भूमि छोडने की अपेक्षा रुपये देना अधिक पसन्द करते हैं। जब कोई सामन्त पैतृक अधिकारो पर अपनी नियुक्ति पाता है और उस दशा मे जब उसकी भूमि उससे वापस ली जाती है तो वह किसी प्रकार छोडने के लिये तैयार नही होता और कभी-कभी राणा के साथ विद्रोह करके वह लडने के लिये तैयार हो जाता है।

जागीरदारी प्रथा की अयोग्यता—सम्पूर्ण राजस्थान मे का भाग्य और दुर्भाग्य एक राजा के ऊपर निर्भर है। यदि वह अच्छा है तो राज्य की उन्नति हो सकती है और यदि वह अच्छा नही है तो राज्य के लाखो मनुष्यो का भाग्य पतित हो जाता है। इस प्रथा के अनुसार केवल एक ही मनुष्य लाखो मनुष्यो के भाग्य का सञ्चालन करता है। यदि वह अपने कर्त्तव्य का पालन न कर सके अथवा उसके चरित्र मे निर्बलता हो तो उसके राज्य का पतन निश्चित हो जाता है। फल-स्वरूप अशान्ति, उपद्रव और अत्याचार पैदा होते हैं। इस प्रथा की यह सबसे बडी निर्बलता है। इस प्रथा मे इस प्रकार की अनेक त्रुटियाँ है। इसके द्वारा कभी कोई राज्य अपनी उन्नति नही कर सका। जो कमजोरियाँ राजस्थान के राज्यो मे इन प्रथाओ के सम्बन्ध की पायी जाती है, वही योरप के राज्यो मे भी रही है।

मेवाड मे चन्दावत बहुत समय तक एक दूसरे के शत्रु बने रहे। उनके वैर विरोध के कारण राणा की शक्तियाँ दुर्बल होती गयी। उन पर राणा का आतक काम न कर सका। दोनो ही वशो के सरदार समय-समय पर राणा की आज्ञाओ का उलङ्घन कर देते थे। इन दोनो वशो की आपसी शत्रुता के कारण राणा निर्बल होता गया और वह बाहरी शत्रुओ का सामना कर सकने मे असफल रहा।

जिस समय मुगल सम्राट जहाँगीर ने मेवाड की प्राचीन राजधानी चित्तौर पर अधिकार कर लिया था और राणा को वहाँ से भाग जना पडा था, उस समय राणा ने सब सामन्तो को एकत्रित करके परामर्श किया। युद्ध मे चन्दावत वश के सरदार अपनी सेना लेकर आगे-आगे चला करते थे। वहाँ पर इस अधिकार को बहुत महानता दी जाती थी। इस अधिकार को मेवाड मे हिरोल कहा जाता था। इसका अर्थ होता है, सेना के आगे चलने का अधिकार। यह बहुत

सम्मानपूर्ण समझा जाता है। शक्तावत सरदार युद्ध मे किसी प्रकार चन्दावतो से निर्ब
इसीलिये शक्तावत सरदारो ने इस सम्मान को प्राप्त करने के लिये कोशिश की।

चन्दावत सरदारो ने शक्तावतो का विरोध किया। उनका कहना था कि ये अधि
सम्मान सदा से हमको मिला है। इसलिए इस अधिकार को प्राप्त करने वाला कोई
हो सकता। यह विवाद दोनो वशो के सरदारो मे बढ़ने लगा और अन्त मे वे दोनो अ
तलवारे लेकर एक दूसरे पर आक्रमण कर बैठे। जब इस अधिकार का निर्णय वे स्वय
लगे और एक दूसरे के सर्वनाश के लिए तैयार गये तो राणा के सामने बडा असमञ्जस

उस भयानक परिस्थिति को नियन्त्रण मे लाने के लिए राणा ने दोनो वंशो के
कहा : "इस अधिकार के लिए आप लोग आपस मे युद्ध न करे। हमारे सामने अन्त
स्थान को अधिकार मे लाने का प्रश्न है जो वश अन्तला के दुर्ग मे पहले प्रवेश कर
सम्प्रदाय हीरोल प्राप्त करने का अधिकारी माना जायगा।"

राणा के इस निर्णय को दोनो वंशो के लोगो ने स्वीकार कर लिया और उसी
के सरदार अपने-अपने सैनिको के साथ अन्तला दुर्ग की तरफ रवाना हो गये। राजधा
से पूर्व की तरफ अन्तला दुर्ग नौ कोस की दूरी पर है। वहाँ से चित्तौर की तरफ एक पु
गया है। यह दुर्ग जमीन की सतह से कुछ ऊँचाई पर बना हुआ है। उसकी रक्षा के
का बना हुआ उसका घेरा बहुत मजबूत है। उसके भीतर अनेक महल बने हुए है। दु
एक नदी प्रवाहित होती है। * दुर्ग के भीतर उसके शासन के रहने का जो महल ब
दीवारे भी बहुत मजबूत बनी हुई है। इस दुर्ग मे प्रवेश करने के लिए केवल एक ही द्व

शक्तावत सरदारो ने बहुत तेजी के साथ दुर्ग के पास पहुँचने की चेष्टा क
सूर्य निकलने के पहले ही वहाँ पहुँच गये। उनके पहुँचने का समाचार किसी प्रकार दु
मान सैनिको को मिल गया। वे युद्ध के लिए तैयार होकर दुर्ग के ऊपर एक सुर
एकत्रित हो गये।

दुर्ग मे पहुँचने के लिए यद्यपि चन्दावत सरदारो ने कम सावधानी से काम न
परन्तु वे एक दूसरे रास्ते से रवाना हुए थे। उस रास्ते का बहुत बड़ा भाग पानी से भ
इसलिए वे लोग उस रास्ते से लौटने लगे। संयोग से उसी समय अन्तला का
गडरिया उनको मिला। उससे उनको अन्तला पहुँचने का सही रास्ता मालूम हुआ
चन्दावत लोग बडी तेजी के साथ अन्तला दुर्ग की तरफ बढे। शक्तावतो की अपे
लोग युद्ध मे अधिक कुशल थे। दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए उनके पास अच्छे
अपने साथ ऊँची और मजबूत सीढ़ियाँ भी ले गये थे।

जिस समय शक्तावत लोग दुर्ग में प्रवेश करने की चेष्टा कर रहे थे, चन
पहुँच गये और उन लोगो ने दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए अपने साथ के लोगो को
चदावत लोगो के अधिकारी ने सीढ़ी लगाकर उस पर चढ़ना आरम्भ किया और अपने
मियो को उसने सीढी पर आने के लिए आदेश दिया। उसी समय शत्रु का एक

* यह दुर्ग इन दिनो मे बिलकुल नष्ट हो गया है। लेकिन उस दुर्ग के ऊँची
और दुर्ग के कुछ हिस्से अब भी टूटी-फूटी दशा मे पाये जाते है। उनको देखकर इ
अनुमान किया जा सकता है कि वह दुर्ग किसी समय बहुत मजबूत बना हुआ था।

उस पर गिरा। उसके लगते ही चन्दावतो का अधिकारी सीढी से गिरते ही मर गया।

दुर्ग के नीचे चन्दावत और शक्तावत उसमे प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे और दुर्ग के ऊपर जो मुस्लिम सेना मौजूद थी वह उन दोनो को असफल करने की चेष्टा कर रही थी। जिस समय चन्दावतो का नेता शत्रु के गोले से नीचे गिरा, उस समय शक्तावत अपनी पूरी शक्ति लगाकर दुर्ग के ऊपर पहुँचने के लिये प्रयास कर रहे थे, शक्तावतो का नेता अपने ऊँचे हाथी के ऊपर चढ गया और उसने दुर्ग के मजबूत फाटक को तोडने की कोशिश की। उसने अपने हाथी को आगे वढाया। फाटक के मजबूत किवाडो मे लोहे की मोटी-मोटी कीले लगी हुई थी। इस-लिये हाथी उसके किवाडो को तोडने मे सफल न हो सका। उस समय मुस्लिम सैनिको की गोलियो से शक्तावत सैनिक वडी तेजी के साथ घायल हो रहे थे। उसी समय चन्दावत सैनिक भीषण रूप से गरजते हुये आगे वढे। उस गर्जना को सुनकर शक्तावत नेता को अपनी जीत मे सदेह मालूम होने लगा। वह किसी प्रकार हिरोल प्राप्त करना चाहता था। उसने अपने प्राणो का भय छोडकर फाटक की कीलो पर अपना शरीर लगा दिया और महावत को ललकार कर हाथी को उसके शरीर पर जोर से टक्कर मारने का आदेश दिया। महावत ने यही किया। हाथी के जोरदार टक्कर से दुर्ग का फाटक टूट गया। शक्तावत नेता हाथी की ठोकर मे और लोहे की मजबूत नोकीली कीलो के लगने से क्षत विक्षत हो कर मर गया। उसके मृत शरीर पर पैर रखते हुये शक्तावत सैनिक ने दुर्ग मे प्रवेश करके मुस्लिम सैनिको का सहार करना आरम्भ किया। इस अपूर्व वलिदान के वाद भी शक्तावतो को हिरोल प्राप्त नही हुआ। इसलिये कि उसके पहले जिस समय चन्दावत सैनिको की भीषण गर्जना सुनायी पडी थी, उसी समय चन्दावत सैनिको ने अपने नेता का मृत शरीर दुर्ग के ऊपर फेक दिया था और उसके वाद वचे हुये सभी चन्दावत सैनिक दुर्ग के ऊपर पहुँच गये थे।

जिस समय गोला लगने से चन्दावतो का नेता सीढी से गिर कर मर गया था, उसी समय उस वश के एक दूसरे शूरवीर सैनिक ने—जो मरे हुये नेता का निकटवर्ती आत्मीय था उसका स्थान ग्रहण किया। चन्दावतो का यह नया नेता देवगढ का सामन्त था। वह जितना साहसी था, भीषण अवसरो पर वह उतना ही निर्भीक भी था। चन्दावत नेता के सीढी से गिरते ही देवगढ के सामन्त ने उसके मृत शरीर को चादर मे वाँध कर अपनी पीठ पर रखा और हाथ मे भाला लेकर वह सीढी पर चढ गया। दुर्ग के ऊपर जाकर उसने वडे पराक्रम के साथ युद्ध किया और मुस्लिम सैनिको का सहार करके उसने अपने स्वामी का शव दुर्ग के ऊपर रखा। उसी समय समस्त चदा-वत सैनिकों की एक साथ आवाज हुई थी। "अन्तला दुर्ग के विजयी चन्दावत—हिरोल के अधि-कारी चन्दावत।"*

वशगत सगठन किसी भी देश और राज्य के लिए कल्याणकारी नही होते। इस प्रकार की

* चदावत वश की महावली शाखा सगावत का एक कवि अमर मेरा मित्र था। सगावत लोग देवगढ के सामन्त के अधिकार मे रहा करते थे। देवगढ का सामन्त दो हजार सैनिको का मालिक था। सगावत अमर मे अन्तला दुर्ग की विजय के सम्बन्ध मे एक वडी अच्छी घटना मुझे सुनायी थी। उसने बताया था कि जिस सयय राजपूत सेना ने अन्तला के दुर्ग पर आक्रमण किया है मुस्लिम सेना के दो अधिकारी दुर्ग के भीतर जुआ खेल रहे थे। उन्होने सुना कि दुर्ग पर राजपूतो ने आक्रमण किया है लेकिन उन पर कोई प्रभाव नही पडा। यह समझ कर कि विजय तो हम लोगो की होगी ही, वे दोनो जुआ खेलने मे दत्तचित वने रहे। उनका ध्यान युद्ध की तरफ नही गया। जिस समय राजपूत दुर्ग के ऊपर पहुँच गये, उनका जुआ वन्द हुआ। उसी

प्रतिद्वन्दिता से सदा राज्यो का पतन हुआ है। शक्तावतो और चंदावतो के आपसी द्वेश क
का जो उदाहरण ऊपर दिया गया है, राजस्थान के इतिहास मे यह घटना अकेली नही है
सम्पूर्ण राजस्थान का इतिहास इस प्रकार की घटनाओ से भरा हुआ है। मेवाड का इतिहास
कोई भी व्यक्ति यह कह सकता है कि अगर वहाँ पर शक्तावतो और चंदावत लोगो मे आ
यह प्रतिद्वन्दिता न होती तो मेवाड राज्य का इतने बुरे तरीके से पतन न होता, जिस
हुआ। चदावत लोगो की अपेक्षा शक्तावत लोग सख्या मे बहुत कम है। परन्तु वे अधिक
और पराक्रमी है। दोनो वश के लोग मेवाड-राज्य के प्रमुख योद्धा थे। उनकी पारस्परिक
राज्य को निर्वल बना दिया था।

यह बात सही है कि भारत के विभिन्न राज्यो मे बहुत समय पहले से सामन्त शासन-प्र
रही है। इस प्रणाली की अच्छाइयाँ सहज ही बिगड जाती है। इस देश मे जब तक यह प्र
सही रूप मे चली और राज्य मे एक केन्द्रीय शक्ति काम करती रही, उस समय तक उस
का शासन कार्य उत्तम तरीके से चलता रहा। लेकिन केन्द्रीय शक्ति के शिथिल पड़ने पर
सामन्तो के अनुशासन भग करने पर सामन्त शासन-प्रणाली का मूल सिद्धान्त निर्वल पड
उस दशा मे यह प्रणाली किसी भी राज्य के लिये कल्याणकारी साबित नही होती।

सामन्त शासन-प्रणाली (जागीरदारी प्रथा) मे एक त्रुटि और भी भयानक है। जहाँ
व्यक्ति का स्वेच्छाचार लाखो और करोड़ो स्त्री-पुरुषो की पराधीनता का कारण बन जाता
पर शासन की वह प्रणाली निश्चित रूप से किसी समय भयानक साबित होती है। इस प्र
एक-दो नही बहुत त्रुटियाँ है, जो सामन्त शासन-प्रणाली अथवा जागीरदारी प्रथा को अयोग्य
का कार्य करती रहती है।

राजस्थान के राजाओ को मुगल शासन की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी, जो
साधारण थी। मुगल सम्राट की दी हुई सनद के बाद अधीन राजा अपने राज्य का कार्य स
करते थे। जितने राजाओ ने मुगलो की अधीनता स्वीकार की थी, सभी को यही करना पडा
दिल्ली के सम्राट ने सभी को सनद दिये थे। सनद प्राप्त करने वाले राजाओ ने मुगल
अपना स्वामी स्वीकार कर लिया था। सनद देने के समय सम्राट राजाओ को हाथी,
मूल्यवान वस्त्र और बहूमूल्य आभूषण भेट मे देकर उनका सम्मान करता था। अधीन रा
सम्राट को अपने राज्य की तरफ से एक निश्चित सम्पति नजराने के तौर पर दिया करते

इस अधीनता के लिये सम्राट और राजाओ के बीच एक संधि-पत्र लिखा जाता
उसके अनुसार सम्राट के बुलाने पर अधीन राजाओ को एक निर्धारित सख्या मे सेना को
सम्राट के यहाँ उपस्थित होना पड़ता था। मुगल सम्राट अपने प्रत्येक अधीन राजा को राज
राजचिन्ह और कुछ दूसरी चीजे दिया करता था। राजा लोग उन चीजो को अपनी सेना मे
करते थे।* अधीन राजाओ के साथ सम्राट का यह व्यवहार साबित करता है कि मुगल
काल मे सामन्त शासन-प्रणाली इस देश मे प्रचलित थी।

समय कुछ राजपूतो ने कमरे में घुसकर खेलने वाले दोनो मुस्लिमो सरदारो को घेर लिया
दशा मे भी एक मुस्लिम सरदार ने प्रार्थना की कि हमारा खेल खतम होने वाला है। परन्तु
प्रार्थना पर राजपूतों ने ध्यान नही दिया। दोनो वंशो के नेता मारे जा चुके थे। २
राजपूतो ने उन दोनो को वही पर मार डाला।

* सन् १८७७ ईस्वी मे दिल्ली के दरबार मे ब्रिटिश महारानी के भारतेन्दरी

सम्राट हुमायूँ ने कई एक राजपूत राजाओ को अपना अधीन वना लिया था। परन्तु वादशाह अकवर की तरह उसको सफलता न मिली थी। शासन और राजनीति मे अकवर वहुत बुद्धिमान और दूरदर्शी था। अपनी सूझ-वूझ के वल पर ही उसने लगभग समस्त राजस्थान के राजाओ को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया था। उसने हिन्दू और मुसलमानो का भेद मिटा दिया था। इस कार्य मे उसे सफलता भी मिली थी और उसके व्यवहारिक कुशलता का ही यह परिणाम था कि वहुत से हिन्दू राजाओ ने उसको अपना सम्राट मान लिया था। अम्वेर राज्य दिल्ली के समीप है। उन दिनो मे अम्वेर का शासन वहुत निर्वल था। अपनी निर्वलता के कारण ही और दिल्ली के निकट होने से अम्वेर के राजा को मुगल सम्राट के सामने आत्म-समर्पण करना पडा था। सवसे पहले अम्वर के राजा विहारी मलने अकवर के साथ अपनी लडकी का विवाह किया था। उसके वाद मुगल सम्राट को व्याह मे अपनी लडकी के देने की वात राजपूत राजाओ के लिए एक वहुत साधारण हो गयी और उन राजपूत वालाओ से कई एक मुगल सम्राटो का जन्म हुआ।

सम्राट जहाँगीर का जन्म भी एक राजपूत वाला से हुआ था। उसका वेटा खुसरु, शाहजहाँ,* कामवख्श और औरङ्गजेव का वेटा अकवर राजपूत राजकुमारी से पैदा हुआ था। औरङ्गजेव के व्यवहारो से सभी हिन्दू राजा अप्रसन्न थे। इसलिये औरङ्गजेव को सिंहासन से उतार कर राजपूत राजाओ ने उसके लडके अकवर को सिंहासन पर विठाने की चेष्टा की थी। मुगल सम्राटो का राजपूतो के साथ जो वैवाहिक सम्वन्ध शुरु हुआ था, वह अन्त तक चलता रहा। जिस समय मुगलो की शक्तियाँ शिथिल हो गई थी, उन दिनो मे भी सम्राट फर्रुखसियर ने मारवाड के राजा अजितसिंह की लडकी के साथ विवाह किया था।×

जिन राजपूत राजाओ ने अपनी लडकियाँ मुगल सम्राटो को व्याही थी, उन राजपूत वालाओ से जो लडके पैदा हुए, उनकी नावालिग अवस्था मे वही राजा उनके सरक्षक वने और उन दिनो मे उन राजाओ ने अपने राज्यो की वृद्धि की।

वादशाह अकवर के समय मुगल साम्राज्य मे अवुल-फजल के अनुसार, चार सौ सोलह सेनापति थे, जो दो सौ से दस हजार तक अश्वारोही सैनिको पर अधिकार रखते थे और इन सेनापतियो मे सैतालीस राजपूत सेनापति थे, जिनके अधिकार मे तिरपन हजार अश्वारोही सेना थी। मुगल साम्राज्य के समस्त सेनपतियो के आधिकार मे पाँच लाख तीस हजार अश्वारोही सैनिक थे। सम्राट के अधिकार मे चालीस लाख पैदल सेना थी।

धारण करने की घोषणा लार्ड लिटन ने की थी। उस समय सभी हिन्दू-मुस्लिम राजाओ को एक एक पताका दी गयी थी। जय घोषणा के वाजे के साथ-साथ एक-एक सोने का पदक भी दिया गया था। यह प्रणाली ठीक उसी प्रकार को थी, जैसी की प्राचीन काल मे सम्राट अपने अधीन राजाओ को सनद देने के समय काम मे लाया करता था। ऐसा मालूम होता है कि इस दिल्ली दरवार मे हिन्दूस्तान की पुरातन प्रणाली अनुकरण करके अगरेजी सरकार ने यहाँ के राजाओ के साथ व्यवहार किया था।

* सम्राट शाहजहाँ जोधा वाई के पेट से पैदा हुआ था। आगरे के पास सिकन्दरा मे जोधा वाई का प्रसिद्ध समाधि मन्दिर अव तक वना है।

× इस विवाह से अगरेजो की शक्तियाँ हिन्दुस्तान मे मजवूत हुई थी। विवाह के दिनो मे सम्राट फर्रुखसियर वीमार हो गया था। उस समय अङ्गरेज कम्पनी सूरत मे व्यवसाय करती थी, और सूरत से जो दूत सम्राट के पास दिल्ली भेजे गये थे, उनके साथ हेलिटन नाम का एक

यहाँ पर आम, महुआ और नीम आदि के बहुत से वृक्ष दिखाई देते है। पठार की ऊँची-भूमि
झरने भी पाये जाते हैं। वहाँ पर महादेव का एक मन्दिर भी है। ऊँचे पहाड़ी स्थान पर
जहाँ पहुँचा था, उससे दो मील की दूरी पर एक अन्धकार पूर्ण पहाडी रास्ते मे शुक्रदेव क
है। मै इस मार्ग से अपरिचित था। इस समय मेरे साथ रामगोविन्द नामक ब्राह्मण भी
इसलिये मै शुक्रदेव के आश्रम को देख न सका। उस आश्रम को देखने की मेरी अभिलाषा
पर न जा सकने पर मैंने अपनी उत्सुकता को लोगो से बाते करने के बाद पूरा किया।
द्वारा उस आश्रम की बहुत-सी बाते मुझे मालूम हुई। यह आश्रम जन शून्य रहता है।
अनेक प्रकार के फूलो के वृक्ष देखने को मिलते हैं। पहाडी से निकली हुई नदियाँ आश्रम
प्रवाहित हुई हैं। उस आश्रम मे शुक्रदेव की मूर्ति है। वहाँ पर पहाड का एक ऊँचा स्थान
दैत्य का हाड कहलाता है। इस ऊँचे स्थान का पारलौकिक महत्व माना जाता है। उसके
से नीचे बहती हुई नदी मे कूदने से परलोक बनता है, इस प्रकार लोगो का विश्वास है। क
मे अधिकांश लोगो की मृत्यु हो जाती है। उनमे से कोई मरने से बच भी जाता है। न जा
स्त्रियो ने पुत्र की इच्छा से उस स्थान से नदी मे कूदकर अपने जीवन का अन्त कर दिया
स्त्री अपने छोटे बालक को लेकर उस पहाडी स्थान के ऊपर से नदी मे कूदी थी। कहा ज
वह बच गयी और उसका बालक भी जीवित रहा। इस प्रकार कूदने वालो मे कुछ लो
जाते हैं। वहाँ पर ओंकार नाथ का एक मन्दिर भी है।

साठ वर्ष पहले चम्बल नदी के किनारे तक सम्पूर्ण पठार मेवाड राज्य मे था। ले
दिनो मे कुनेड़ा को छोडकर सम्पूर्ण पठार सीधिया के अधिकार मे है। बाईस नगरो और
कनेरी नाम का एक प्रसिद्ध नगर है। वह किसी प्रकार फिर राणा के अधिकार में आ
यहाँ के जो नगर और ग्राम सीन्धिया ने प्राप्त किये है, वे सब राणा की तरफ से सीन्धिया
के व्यय मे दिये गये है।

यहाँ पर अफीम की बढती हुई खेती को देखकर मुझे बहुत पीडा होती है। कानून
इस प्रवृत्ति को रोकने की बहुत बडी आवश्यकता है। मुझे इस बात को स्वीकार करने मे क
नही है कि अङ्गरेज सरकार के द्वारा चेटिया कर वसूल किये जाने के कारण अफीम की
अधिक होने लगी है। जिन स्थानो के किसान पहले कभी अफीम की खेती नहीं करते थे,
करने लगे हैं। इसका कारण यह है कि अफीम की खेती के द्वारा अनाजो की अपेक्षा अ
होती है। इस स्वार्थ के कारण लोग स्वय अपना सर्वनाश करते है।

लगातार अकालो और युद्धो के कारण राजस्थान के निवासियो को जितनी क्षति
उसकी अपेक्षा अफीम के द्वारा यहाँ के लोगो का शारीरिक विनाश बहुत अधिक हुआ है।
मे यह स्वीकार करना पडता है कि यहाँ के सर्वनाश का मूल कारण अफीम है। इस अफी
पर प्रचार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी खेती आरम्भ हुई, उसका सक्षेप मे यहाँ
करना आवश्यक मालूम होता है। यद्यपि इसके लिये हमारे पास कोई आधार नही है। इ
कुछ समझने को मिला है, उतना ही लिखकर मैं सन्तोष करता हूँ।

बाबर, अकबर और जहाँगीर के जीवन चरित्रो को पढने से मालूम होता है कि
बहुत से वृक्ष छोटे और बडे—इस देश मे लाये गये हैं। इस देश मे अनेक जातियो के ल
समय पर आये। लेकिन वे लोग लूटमार कर यहाँ से चले गये। तैमूर के वंश के लोगो
कर स्थायी रूप से अपना अधिकार कायम किया। इस देश के राजा और महाराजा उन

मे हौदे के टूट जाने की पूरी सम्भावना है। उस समय अपनी रक्षा का कोई उपाय
जोर के साथ उछला और अपने दोनो हाथो से मैने फाटक को पकड लिया। फाटक के
को मैने अपने हाथो से पकडा था, वह एकाएक टूट गया और मै हौदा के बाहर
गिरा। हाथी तेजी पर था वह फाटक को पार करके निकल गया।

चित्तौर की राजधानी के कितने ही स्थान आक्रमणकारी बादशाहो के अत्याचा
भी इजहार कर रहे है। इसको मैने अच्छी तरह अनुभव किया। बादशाह अकबर
करके चित्तौर राजधानी मे जिस स्थान पर अपनी विजय का झण्डा गाडा था और
अधिकार करने के लिये उसने सेनापतियो को आदेश देकर इस गौरवशाली राजधानी
करवाया था, उन सभी बातो का स्मरण करते हुए मैने इस प्रसिद्ध राजधानी के स
देखा। बादशाह अकबर के उस चिरागदान को भी देखा, जो इतिहास मे आज तक
अकबर का वह चिरागदान बडे-बडे पत्थरो के टुकडो से पैतीस फुट ऊँचा बनाया है।
का भाग मोटा और ऊपर का पतला है। उसके मस्तक पर एक बडा दीपक रखा
दीपक को देखकर अनुभव किया जा सकता है कि बादशाह अकबर ने इस स्थान
किया था।

इसके भीतरी भाग मे सीढियाँ बनी हुई है। वे सीढियाँ ऊपर तक चली गयी
अकबर उन सीढियो पर चढकर ऊपर गया होगा, यह अनुमान लगाकर मैने भी उ
रास्ते से ऊपर जाने का इरादा किया। लेकिन स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण मै
सका। इसके बाद किले से निकलकर अपने घोडे पर सवार होकर चित्तौर चला ग
के पास मेरा कैम्प लगा था। वहाँ जाकर मैने विश्राम किया।

इन दिनो मे यात्रा करते हुए मेरा स्वास्थ्य बहुत बिगड गया था। शरीर क
हो गयी थी और हड्डियाँ बाकी रह गयी थी। मुझे देखकर उदार चिकित्सक ने मु
लौट जाने की सलाह दी। उसकी इस बात को सुनकर राणा के हृदय को बहुत आ
लेकिन मेरे शरीर की अवस्था देखकर राणा ने तीन वर्ष की मुझे अपने देश जाने के लि
उस समय मैने अनुभव किया कि मेरे साथ राणा का कितना अधिक स्नेह है।

उदयपुर से चुपचाप अपने देश चले जाने का मैने विचार किया था। लेकिन
के कारण मै ऐसा कर न सका। इसलिए रवाना होने के पहले मै राणा भीम से मि
गया। राणा के साथ-साथ, राजकुमार जवानसिह और समस्त सीसोदिया सामन्तो
राणा ने मुझे उपहार मे अपना प्रसिद्ध घोडा बाजराज दिया था। मेरे साथ उसे न
ने पूछा और जब उन लोगो ने सुना कि उस घोडे की मृत्यु हो गयी है तो सभी ल
हुए। बाजराज के सम्बन्ध मे हम लोग बडी देर तक बाते करते रहे। उस घोडे के
मेरे सिपाहियो और कर्मचारियो ने बहुत शोक किया था। उस घोडे का शव जब स
गया, उस समय उपस्थित लोगो के नेत्रो से आँसू गिरने लगे थे। एक नवीन और मूल
मे घोडे के शव को लपेटकर समाधि मे रखा गया था। उस घोडे के सईस ने उसको
बैठ कर बडी देर तक अश्रुपात किया था। मेरे नेत्रो से भी उस समय आँसू गिर रहे
अच्छा घोडा मैने कभी नही देखा था, बाजराज की समाधि पर जालिम सिंह ने उसकी
मूर्ति बनवाकर लगवाई थी और उसके नाम का एक मदिर बनवाने के लिए
किया था। उस समय मुझे एक हाडा राजपूत की बात याद आयी, जो उसने लोदी

टूट न सके। तैमूर वंशज बाबर ने भारत में आकर विजय प्राप्त की थी। वह रोजाना अपनी डायरी लिखा करता था। उसने इस देश की सभी घटनाओ को अपनी डायरी मे लिखा है। उसका यह नित्य का कार्य था। यो तो ससार के बहुत से बादशाहो ने डायरी लिखने का कार्य किया है। परन्तु बाबर का स्थान उन सबकी अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ समझा जाता है। बाबर की तरह ससार के किसी भी बादशाह ने डायरी लिखने का कार्य नही किया। उसने जितने युद्ध किये थे, सबका वर्णन उसने अपनी डायरी मे किया था। दिल्ली मे युद्ध करके वहाँ के सिंहासन पर बैठने का उल्लेख भी उसने बड़े अच्छे तरीके पर अपनी डायरी मे किया है।

बादशाह अकबर के जीवन की बहुत-सी बाते बाबर के जीवन से मिलती हैं। वह फारस और तातार देश के किसानो और बागवानो को इस देश मे लाया था और उनके द्वारा पिस्ता एवम् बादाम आदि की तरह के अनेक फलो के वृक्षो को यहाँ पर लगवाया था। इसके पहले इस प्रकार के वृक्ष इस देश मे नही होते थे। बादशाह जहाँगीर के जीवन-चरित्र से मालूम हुआ है कि उसके शासन-काल में तम्बाकू का प्रचार भारतवर्ष मे हुआ और यहाँ पर उसकी खेती होने लगी।

भारतवर्ष में अफीम की खेती कब से शुरू हुई और किसके द्वारा इस देश मे इसका प्रचार हुआ, इसका वर्णन हमे कही पढने को नही मिला। यहाँ के लोगों मे मालूम होता है कि इस देश मे अफीम का प्रयोग बहुत पहले से औषधि के रूप मे होता था और यहाँ के चिकित्सा ग्रन्थो मे इसी प्रकार का उल्लेख भी पाया जाता है। ठीक यही अवस्था अफीम के सम्बन्ध मे संसार मे सर्वत्र थी। तीन सौ वर्ष के पहले नशा लाने के लिये अफीम का प्रयोग ससार मे कही नही होता था लेकिन अब तो अफीम का प्रयोग आमतौर पर होने लगा है। राजस्थान मे इसका प्रयोग बहुत अधिक पाया जाता है।

चम्बल और छिप्रा के बीच का प्रदेश दुआबा के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ पर अफीम की खेती होती थी। इस आधार पर इस देश के मध्य प्रदेश में अफीम की खेती का आरम्भ माना जा सकता है। लेकिन अब तो उसकी खेती राजस्थान के बहुत-से स्थानो में होने लगी है। इस खेती के लिये मेवाड और हाडौती राज्य विशेष प्रसिद्ध है। कुम्भी, जाट, वैश्य और ब्राह्मण आदि सभी अफीम की खेती करते हैं। इसकी खेती के लिये कुम्भी लोग अधिक प्रसिद्ध है और बहुत पहले से वे अफीम की खेती करते आ रहे हैं। अफीम के वृक्ष का पाँचवाँ भाग अफीम के रूप मे तैयार होता है। उसकी खेती करने वाले इस बात को भली प्रकार जानते हैं।

राजस्थान मे सुख और शान्ति की जितनी ही कमी होती जाती है, अफीम की खेती वहाँ पर उतनी ही बढती जाती है। इस अफीम के द्वारा राजस्थान को जितनी क्षति पहुँची है, उतनी क्षति किसी भी दुर्भिक्ष और युद्ध के द्वारा नही पहुँची। अफीम की खेती के कारण राजस्थान का सर्वनाश हुआ है। भारत मे मुगलो के पतन के साथ साथ मराठो पठानो और पिण्डारियो के अत्याचारो के समय यहाँ के किसानो ने विभिन्न प्रकार के अनाजो की खेती का कार्य छोडकर अफीम की खेती आरम्भ की है। मराठो और पठानो की लूट के समय इस देश मे अफीम की खेती की वृद्धि हुई है। इसका कारण है। अफीम की खेती के लिये अधिक भूमि की आवश्यकता नही होती और लुटेरो से वह सुरक्षित रहती है। इसके द्वारा धन अधिक पैदा किया जा सकता है और उस धन से लुटेरे मराठो और पठानो को उनकी माँगी हुई रकम आसानी से अदा की जा सकती है।

अपनी खेती मे अफीम पैदा करके किसान लोग व्यापारियो को बेच देते है और वे व्यापारी अपने यहाँ अफीम सग्रह करके दूकानदारो को बेचा करते हैं। इस देश की तैयार की हुई अफीम चीन

थी—किसी राजपूत से उसकी तीन चीजे कभी कोई मांगने का साहस न करे—उसकी स्त्री, उसकी तलवार और उसका घोडा ।

राजस्थान से इगलैण्ड के लिये रवाना होने के समय मुझे उस हाडा वशीय राजमाता की याद आयी, जिसने मुझे अपना भाई बनाया था । राजस्थान के समस्त आचार-व्यवहार, उसकी सहानुभूति और ममता ने मुझे अपना बना लिया था । यहाँ की भूमि मुझे जन्मभूमि की तरह प्यारी हो गयी थी । मै जहाँ कही भी जाऊँगा, कही भी रहूँगा, इसको अपने जीवन काल मे कभी भूल न सकूँगा, मैं एक दिन मर जाऊँगा, लेकिन मेरी यह पुस्तक राजस्थान की स्मृतियो को अनन्तकाल तक जीवित रखेगी ।

:: समाप्त ::

तक जाती है और वहाँ पर मालवा की अफीम के नाम से बिकती है। इसका अर्थ यह कि मालवा की अफीम श्रेष्ठ समझी जाती है।

बहुत से लोगो का ख्याल है कि अफीम की खेती बन्द कर देने से किसानो को आर्थि होगी। परन्तु ऐसा समझने वाले इस बात पर कभी ध्यान नही देते कि अफीम की खेती कारण उसका प्रयोग करने वालो की संख्या कितनी अधिक बढ गयी है। शरीर को आधा कर मनुष्य कितने दिन जीवित रह सकता है, हम सबको अफीम के इस खतरे की तरफ चाहिये। इस खेती के द्वारा भारतवर्ष की और विशेषकर राजस्थान की कितनी अधिक अ है, इसका अनुमान लगाकर शरीर रोमाञ्च होता है। जिनको इस अवनति से कोई भय न होता, उनको अफीम की खेती के पक्ष का समर्थन करना चाहिये। हमारी समझ मे कोई भी मनुष्य अफीम के व्यवहार का समर्थन न करेगा।

अफीम की खेती के स्थान पर रुई, नील, ईख और दूसरे अनाजो की खेती करके किया जा सकता है। उसके द्वारा मनुष्य की शारीरिक उन्नति होती है और उसकी आयु मैं राजस्थान का शुभचिन्तक हूँ। जिस पतन के मार्ग पर आज राजस्थान जा रहा है, मैं नही कर सकता। इसलिये मैं चाहता हूँ कि उसके पतन के जितने भी कारण हैं, वे एक दिये जाँय। मेरी समझ मे राजस्थान के पतन का कारण अफीम का व्यवसाय और प्रयोग और इसको रोक देना उन्ही के अधिकार मे है। जो मनुष्य अपने अधिकार का काम नही क वह दूसरो के द्वारा होने वाले कार्यों का क्या लाभ उठा सकता है। अफीम के व्यवसाय से उ की वृद्धि होती है और अफीम के प्रयोग से मनुष्य का शारीरिक एव नैतिक पतन होता है। हमारे जीवन मे सबसे प्रधान है। इसीलिये मैं अफीम के व्यवसाय और प्रयोग—दोनो करता हूँ।

अफीम के प्रयोग से मनुष्य का सर्वनाश होता है। बुद्धि नष्ट हो जाती है। शरी और अकर्मण्य हो जाता है। इसके भयानक परिणाम को अनुभव करके मैंने राजस्थान राजा से लेकर उसकी प्रजा के एक-एक मनुष्य से अफीम का सेवन करने के लिये प्रतिज्ञा परन्तु मैं इस शपथ और प्रतिज्ञा के महत्व को समझता हूँ। अफीम की दूकानों के बीच मे मनुष्य का उपकार शपथ और प्रतिज्ञा से कुछ नही हो सकता।

कारण ये ग्राम मेवाड के अधिकार से निकल गये थे। उसके विरुद्ध युद्ध करने के लिये राणा ने माधव जी सीन्धिया से सहायता ली थी और माधव जी सीन्धिया ने उस अवसर का लाभ उठाकर चौरासी ग्रामो के साथ-साथ वेगू जागीर पर भी अधिकार कर लिया था। इसके बाद वेगू के सामन्त ने उसके साथ सन्धि करके अपने चालीस ग्रामो को सीन्धिया के अधिकार मे दे दिया।

उस स्थान से चलकर हम लोग छोटा अतवा नामक स्थान पर पहुँचे। यहाँ का दुर्ग पर्वत के नीचे बना हुआ है और देखने मे बहुत सुदृढ मालूम होता है। वहाँ पर हमने एक आदमी से प्रश्न किया : "इस दुर्ग पर कभी किसी शत्रु ने आक्रमण किया था ?"

उस आदमी ने उत्तर देते हुये मुझसे कहा : "कभी नही। जब तक किसी दुर्ग पर शत्रु का आक्रमण न हो, उस समय तक वह दुर्ग अविवाहित रहता है। इसलिये यह दुर्ग अभी तक अविवाहित ही है।" यह कहकर वह चुप हो गया।

छोटा अतवा वेगू के मेघावत राजपूतो के अधिकार मे था। डूंगर सिंह वहाँ का शासक है। वह मुझसे मिलने के लिये मेरे पास आया था। मेघावत राजपूत लूटमार के लिये प्रसिद्ध थे और वे लोग मराठो पर इस प्रकार का अत्याचार किया करते थे। उसके पूर्वज काला मेघ के नाम से प्रसिद्ध थे।

१७ फरवरी को हम लोग सिगोली नामक स्थान पर पहुँचे। जन्तरी नामक जिले का यह एक नगर है। यह स्थान पहाडो से घिरा हुआ है। यहाँ पर भाभूनी नामक नदी प्रवाहित होती है। यहाँ की भूमि उपजाऊ है और कई प्रकार के अनाज यहाँ पर पैदा होते हैं। इस नगर की दीवारे मिट्टी की बनी हुई है, वे ऊँची हैं और उनके ऊपर फूस के छप्पर रखे हुये हैं। यहाँ पर उम्मेदपुरा नामक एक ग्राम हैं। उस ग्राम मे यहाँ के सामन्त का चाचा रहता है। उसके रहने के स्थान में और प्रजा के रहने के स्थानो मे कोई अन्तर नही है। इस प्रकार के घरो मे इङ्गलैण्ड का एक दरिद्र कृषक भी नही रह सकता।

वेगू का सामन्त अपने लडके, भतीजे और परिवार के पन्द्रह आदमियो को लेकर मुझसे मिलने के लिये आया। उसके साथ उम्मेदपुरा मे रहने वाला उसका चाचा भी था। वह एक घोडे पर सवार था और अपने दाहिने हाथ मे वह एक भाला लिये था। सामन्त के साथ जो नौकर और सैनिक आये थे वे पैदल थे।

वे सभी लोग साथ-साथ चलकर हमारे मुकाम तक आये। मैंने सामन्त, उसके लडके और भतीजे को लाल रङ्ग की पगडी के साथ-साथ इङ्गलैण्ड की बारूद उपहार मे देकर विदा किया।

पठार मे दिलवर गढ नाम का एक प्रसिद्ध दुर्ग था। उसका टूटा-फूटा भाग अब भी वहाँ देखने को मिलता है। इस दुर्ग पर वेगू के मेघावतो और ग्वालियर के शक्तावतो का भयङ्कर युद्ध हुआ था। वहाँ पर और भी कितने ही दुर्ग हैं। लेकिन उनमे बमोदा का दुर्ग सबसे अधिक प्रसिद्ध है। वह पश्चिमी सीमा पर है। वहाँ के आलूहाडा का नाम आज तक सम्मान के साथ लिया जाता है। यहाँ पर आलूहाडा के जीवन की एक घटना का उल्लेख करना आवश्यक मालूम होता है।

एक दिन आलूहाडा शिकार से लौटकर वापस आ रहा था। रास्ते मे एक चारण से उसकी भेट हुई। उसने आलूहाडा को आशीर्वाद दिया और उसके सिर की पगडी उसके पुरस्कार मे माँगी। इसके साथ ही उसने यह भी कह दिया कि मै आपसे और कुछ नही चाहता।

आलूहाडा बडे असमञ्जस मे पड गया। वह कवि को अप्रसन्न नही करना चाहता था। इसलिये उसने मस्तक से पगडी उतार कर चारण को दे दी। पगडी लेकर वह मरुभूमि की राजधानी मन्दोर चला गया। वहाँ पहुँचकर उसने मन्दोर के राजा को आशीर्वाद दिया। उस समय

सम्राट हुमायूँ ने कई एक राजपूत राजाओं को अपना अधीन बना लिया था। परन्तु बादशाह अकबर की तरह उसको सफलता न मिली थी। शासन और राजनीति में अकबर बहुत बुद्धिमान और दूरदर्शी था। अपनी सूझ-बूझ के बल पर ही उसने लगभग समस्त राजस्थान के राजाओं को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया था। उसने हिन्दू और मुसलमानों का भेद मिटा दिया था। इस कार्य में उसे सफलता भी मिली थी और उसकी व्यवहारिक कुशलता का ही यह परिणाम था कि बहुत से हिन्दू राजाओं ने उसको अपना सम्राट मान लिया था। अम्बेर राज्य दिल्ली के समीप है। उन दिनों में अम्बेर का शासन बहुत निर्बल था। अपनी निर्बलता के कारण ही और दिल्ली के निकट होने से अम्बेर के राजा को मुगल सम्राट के सामने आत्म-समर्पण करना पड़ा था। सबसे पहले अम्बर के राजा बिहारी मल ने अकबर के साथ अपनी लड़की का विवाह किया था। उसके बाद मुगल सम्राट को ब्याह में अपनी लड़की के देने की बात राजपूत राजाओं के लिए एक बहुत साधारण हो गयी और उन राजपूत बालाओं से कई एक मुगल सम्राटों का जन्म हुआ।

सम्राट जहाँगीर का जन्म भी एक राजपूत बाला से हुआ था। उसका बेटा खुर्रम, शाहजहाँ,× कामबख्श और औरङ्गजेब का बेटा अकबर राजपूत राजकुमारी से पैदा हुआ था। औरङ्गजेब के व्यवहारों से सभी हिन्दू राजा अप्रसन्न थे। इसलिये औरङ्गजेब को सिंहासन से उतार कर राजपूत राजाओं ने उसके लड़के अकबर को सिंहासन पर बिठाने की चेष्टा की थी। मुगल सम्राटों का राजपूतों के साथ जो वैवाहिक सम्बन्ध शुरू हुआ था, वह बहुत दिन तक चलता रहा। जिस समय मुगलों की शक्तियाँ शिथिल हो गई थीं, उन दिनों में भी सम्राट फर्रुखसियर ने मारवाड़ के राजा अजितसिंह की लड़की के साथ विवाह किया था।×

जिन राजपूत राजाओं ने अपनी लड़कियाँ मुगल सम्राटों को ब्याही थीं, उन राजपूत बालाओं से जो लड़के पैदा हुए, उनकी नाबालिग अवस्था में वही राजा उनके सरदार बने और उन दिनों में उन राजाओं ने अपने राज्यों की वृद्धि की।

बादशाह अकबर के समय मुगल साम्राज्य में अबुल-फजल के अनुसार, चार सौ सोलह सेनापति थे, जो दो सौ से दस हजार तक अश्वारोही सैनिकों पर अधिकार रखते थे और उन सेनापतियों में सैंतालीस राजपूत सेनापति थे, जिनके अधिकार में तिरपन हजार अश्वारोही सेना थी। मुगल साम्राज्य के समस्त सेनपतियों के अधिकार में पाँच लाख तीस हजार अश्वारोही सैनिक थे। सम्राट के अधिकार में चालीस लाख पैदल सेना थी।

धारण करने की घोषणा लार्ड लिटन ने की थी। उस समय सभी हिन्दू-मुस्लिम राजाओं को एक एक पताका दी गयी थी। जय घोषणा के बाजे के साथ-साथ एक-एक सोने का पदक भी दिया गया था। यह प्रणाली ठीक उसी प्रकार की थी, जैसी की प्राचीन काल में सम्राट अपने अधीन राजाओं को सनद देने के समय काम में लाया करता था। ऐसा मालूम होता है कि इस दिल्ली दरबार में हिन्दूस्तान की पुरातन प्रणाली अनुकरण करके अगरेजी सरकार ने यहाँ के राजाओं के साथ व्यवहार किया था।

× सम्राट शाहजहाँ जोधा बाई के पेट से पैदा हुआ था। आगरे के पास सिकन्दरा में जोधा बाई का प्रसिद्ध समाधि मन्दिर अब तक बना है।

× इस विवाह से अगरेजों की शक्तियाँ हिन्दुस्तान में मजबूत हुई थीं। विवाह के दिनों में सम्राट फर्रुखसियर बीमार हो गया था। उस समय अङ्गरेज कम्पनी सूरत में व्यवसाय करती थी, और सूरत से जो दूत सम्राट के पास दिल्ली भेजे गये थे, उनके साथ हेमिल्टन नाम का एक

चारण के एक हाथ में आलूहाड़ा की पगडी थी। उसे देखकर मन्दोर के राजा ने प्रश्न
चारण ने उसको उत्तर देते हुए कहा : "यह आलूहाडा की पगडी है, जो संसार मे किसी
झुक नही सकती।"

मेवाड के एक साधारण और अपरिचित सामन्त के प्रति चारण का यह
मन्दोर के राजा को अच्छा न लगा। उसने उसके हाथ से उस पगडी को लेकर कमरे
फेक दिया। चारण ने बाहर निकलकर उस पगडी को उठा लिया और वहाँ से लौटकर
हाडा के पास पहुँचा। वहाँ जाकर उसने इस अपमान की कथा सुनायी और उसने राठौर
इस अपमान का बदला लेने के लिए आलूहाडा को उसकाया।

चारण के मुख से उस अपमानजनक बात को सुनकर कुछ देर के लिये आलूह
गया। इसके बाद उसने कहा : "मैने आपसे उसी समय कहा था कि आप और कोई चीज
लेकिन आपने किसी भी दूसरी चीज को माँगने और लेने से इनकार किया। पगडी देने के
मस्तक देने की नौबत आ गयी।"

आलूहाडा ने अपने बंश के सभी वीरों को आने के लिये सन्देश भेजा। उस सन्देश
पाँच सौ शूरवीर बमोदा के दुर्ग मे आकर एकत्रित हुए। आलूहाडा ने उन सब को
बतायी और युद्ध के लिये आदेश दिया। मन्दोर के राजा से युद्ध करना खेल न था।
सम्मान की रक्षा के लिये राजपूतो को सब कुछ करना पड़ता है। इसलिये युद्ध
होने लगी।

आलूहाडा के कोई लड़का न था। इसलिये उसने अपने भतीजे को गोद लिया
समय उसको अपने प्राणो की चिंता न थी। चिंता थी अपने उस भतीजे की, जिसको
उसने अपना उत्तराधिकारी बनाया था। बमोदा के दुर्ग के भीतर एक सुदृढ़ प्रासाद था
सात मजबूत फाटकों को पार करने के बाद वह प्रासाद मिलता था! इसलिये वह पूर्ण रू
क्षित समझा जाता था। आलूहाडा ने अपने उत्तराधिकारी युवक भतीजे को उस प्रास
कर दिया। कुछ दिनो के लिये खाने-पीने की पूरी व्यवस्था कर दी और आवश्यकता के
विश्वासी आदमियो को वहाँ पर रख कर दुर्ग के मजबूत फाटको मे ताले लगवा दिये।
उसको सुरक्षित प्रासाद मे छोडकर आलूहाडा उसकी तरफ से निश्चिन्त हो गया।

पगडी के अपमान करने वाले मन्दोर के राठौर राजा को यह मालूम हो ग
चारण लौटकर आलूहाडा के पास गया है, इसलिए अव कुछ होकर रहेगा। यह सोच
उसने भी अपने यहाँ युद्ध की तैयारी आरम्भ करवा दी। राठौर राजा अलूहाडा से प
और न उसे इस समय आलूहाडा की कोई बात मालूम हो सकी। आलूहाडा समझदार औ
था। मन्दोर की अपेक्षा उसकी शक्तियाँ बहुत निर्बल थी। इसलिए उसने बुद्धिमानी से
उसने अपनी सेना को तैयार कर लिया था, जिसे लेकर उसने मन्दोर राजधानी के बाह
दिया और वह स्वय घोडो के बेचने के बहाने से मन्दोर राजधानी मे पहुँचा। जिस समय
धानी मे गया, रात का अंधकार था और किसी को वहाँ पर इस प्रकार आलूहाडा
अदेशा भी न था। आलूहाडा ने रात मे कुछ समय तक वहाँ पर विश्राम किया और
होने के पहले ही उसने राजधानी मे नगाडा बजवा दिया। उसे सुनकर राठौर राजा की
गयी। उसी समय मालूम हुआ कि आलूहाड़ा पाँच सौ राजपूतो के साथ आक्रमण क
आया है।

आसानी के साथ इस बात का निर्णय नही किया जा सकता कि इन राज्यो के लिए शासन की कौन-सी प्रणाली सर्वोत्तम हो सकती है। लगभग आठ सौ वर्षों तक इस देश मे मुगलो, पठानो और बीच-बीच मे थोडा-बहुत अन्य लोगो का शासन रहा है। उनके समय मे भी जो प्रणाली काम करती रही, उसमे भी बहुत कुछ आधार सामन्त शासन-प्रणाली (जागीरदारी प्रथा) का था।

इस देश मे राजपूतो का जो शासन चल रहा था, वह आपसी प्रतिद्वन्द्विता के कारण यदि निर्बल न पड गया होता और बाहर से आयी हुई लुटेरी जातियो के आक्रमण का उन लोगो ने यदि मुँह-तोड जवाब दिया होता, यदि यहाँ के राज्यो ने सामन्त शासन-प्रणाली की श्रेष्ठता को कायम रखा होता और यदि यहाँ के राज्यो के सामन्तो ने शासन-प्रणाली के अनुसार अपने कर्त्तव्यो का पालन किया होता तो यहाँ के राज्यो मे प्रचलित सामन्त शासन-प्रणाली का पतन न हुआ होता।

योरप मे जिस समय फ्रांस के राजा सप्तम चार्ल्स ने अपनी स्थायी सेना रखकर टैक्स नामक कर लगाया, उस समय उसके सामन्त विद्रोही हो उठे। उसके पहले योरप के किसी राज्य मे राजा की अलग से कोई स्थायी सेना न थी। सामन्तो की सेनाओ के द्वारा राज्य के सभी काम होते थे। इसी प्रकार की परिस्थितियाँ राजस्थान के राज्यो मे समय-समय पर पैदा हुई। कोटा के राजा के द्वारा शासन की पुरानी प्रथा मे परिवर्तन करने पर भयानक सगट पैदा हुआ था। साठ वर्ष पहले मेवाड के कुछ सामन्तो के विद्रोही हो जाने पर मराठो की जातियो ने मेवाड पर आक्रमण किये। उस समय मेवाड के राणा को अर्थ लोभी किसी सेना की सहायता लेनी पडी। उसका परिणाम राज्य के लिये और भयानक साबित हुआ। राज्य के सामन्त शासन से लड रहे थे। उन लोगो का विश्वास अब राणा पर न रह गया था। राज्य मे कोई ऐसी शक्ति न थी जो सब को एक कर सकती। इसलिए मेवाड राज्य का पतन भयानक रूप से आरम्भ हुआ।

उन दिनो मे मारवाड राज्य की दशा अच्छी नही थी। वहाँ के सामन्तो मे ईर्षा का कोई भाव न था इसलिये वहाँ के राजा को आक्रमणकारी जातियो की सहायता लेने की आवश्यकता न पडी। उन्ही दिनो मे पठानो की सेना ने मारवाड मे प्रवेश करके बुरे तरीके से राज्य का विध्वस किया। इस प्रकार की परिस्थितियाँ समय-समय पर यहाँ के राज्यो के सामने आयी और उनके परिणाम स्वरूप न केवल राजस्थान के राज्य निर्बल और असमर्थ हो गये, बल्कि उनमे प्रचलित शासन-प्रणाली क्षत-विक्षत होकर मृतप्राय हो गयी।

राजा स्वेच्छाचार से काम न ले और राज्य के सामन्त राजभक्त बने रहने के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यो का पालन करे तो इतिहासकार हालम के अनुसार सामन्त शासन-प्रणाली, शासन की एक अच्छी प्रणाली साबित हो सकती है। उस प्रणाली का मूल उद्देश्य देश-भक्ति अथवा राजभक्ति होना चाहिये। अधिकार पाने के बाद स्वेच्छाचार मे मनुष्य का पतन होता है। यदि राजा और सामन्तो मे देशभक्त अथवा राजभक्ति की अटूट भावना न हो तो सामन्त प्रणाली कभी अच्छी साबित न होगी।

जागीरदारी प्रथा के अनुसार राजा और सामन्तो के कर्त्तव्यो का निश्चय होता है और वे लिखे हुये राजाओ और सामन्तो के पास रहा करते है। राजस्थान के राज्यो मे ऐसा ही रहा है। मारवाड के राज और सामन्तो के कर्त्तव्यो के निर्णय मे दोनो को महत्व दिया गया है। उसके अनुसार यदि वहाँ का राजा स्वेच्छाचार से काम लेता है अथवा सामन्तो के परामर्श की उपेक्षा करता है तो वहाँ के सामन्तो को अधिकार होता है कि वे मिलकर अपने स्वेच्छाचारी राजा के विरुद्ध विद्रोह करे और उसको सिंहासन से उतारकर किसी दूसरे को सिंहासन पर बिठावे।

यह जानकर मन्दोर के राजा ने निश्चय किया कि मैं भी अधिक सेना लेकर उससे युद्ध करने न जाऊँगा। इसलिये पाँच सौ राठौरो की सेना लेकर वह आलूहाडा के साथ युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। दोनो तरफ सैनिको की सख्या वरावर थी। सेनाओ का सामना होते ही युद्ध आरम्भ हुआ। उसी समय एक युवक ने घोडे पर आकर उस युद्ध मे प्रवेश किया। उसको देखकर आलूहाडा ने तुरन्त उससे कहा "क्या तुम यहाँ पर हमारे वश का अन्त करने के लिये आये हो ?"

उस युवक ने घोडे पर वैठे हुए उत्तर दिया "काका इस युद्ध के समय मैं महल के भीतर वैठकर कैसे रह सकता था, क्या मैं राजपूत नही हूँ।"

यह युवक आलूहाडा का भतीजा था, जिसके प्राणो को सुरक्षित रखने के लिये आलूहाडा ने अपने दुर्ग के महल मे वन्द कर दिया था और दुर्ग के सात सुदृढ द्वारो मे ताला लगाकर वह युद्ध करने के लिये आया था। आलूहाड़ा उसकी वात सुनकर चुप हो रहा, युद्ध आरम्भ हो चुका था। दोनो ओर के सैनिक अपने-अपने शत्रुओ का सहार कर रहे थे। थोडी ही देर मे युवक की तलवार से राठौर सेनापति जख्मी होकर गिर गया। उसके गिरते ही मन्दोर के एक दूसरे राठौर सेनापति ने आकर युद्ध करना आरम्भ कर दिया।

वह सेनापति भी युवक के हाथ से मारा गया। इसी समय तीसरा राठौर सेनापति युद्ध करने के लिए आगे वढ़ा। युवक हाडा ने उसको भी मारकर गिरा दिया। इस प्रकार उस युवक के द्वारा पच्चीस राठौर सेनापति युद्ध मे मारे गये। इसके वाद भी राठौर सेना मे किसी प्रकार की निर्वलता न आयी और एक नवीन राठौर सेनापति ने युद्ध करने के लिये वहाँ पर प्रवेश किया। उसके आगे वढते ही हाढा युवक पर तलवार का ऐसा आघात हुआ कि उसके मस्तक के दो टुकडे हो गये।

युवक के मारे जाने पर हाडा राजपूत एक साथ उत्तेजित हो उठे। यह दृश्य मन्दोर की राजमाता अपने नेत्रो से देख रही थी। उसने समझ लिया कि युवक के मारे जाने के वाद युद्ध की परिस्थिति एक साथ भयानक हो जायेगी। इसलिये उसने अपने पुत्र मन्दोर के राठौर राजा को युद्ध वन्द करने का आदेश दिया और उसने अपने वेटे को परामर्श दिया कि वह आलूहाडा के साथ मन्दोर की राजकुमारी का विवाह करके दोनो तरफ शाति कायम करे।

राठौर राजा ने यही किया। युद्ध वन्द हो गया। दोनो तरफ से शान्त वातावरण मे वातचीत होने लगी। अत मे आलूहाडा का विवाह मन्दोर की राजकुमारी के साथ हो गया। इसके वाद आलूहाडा अपनी नवीन पत्नी के साथ वमोद लौटकर चला आया।

१० सितम्वर—इन दिनो मे छै महीने तक मै कोटा राज्य मे रहा। अन्त मे मई महीने तक यहाँ पर हैजा की वीमारी का भयानक प्रकोप रहा। स्वय इन दिनो मे वहाँ पर रह कर मैं हैजा मे वीमार पडा। वीमारी से उठने के वाद मैं जालिम सिंह से विदा होकर कोटा से रवाना हुआ और कुनारी नामक स्थान पर पहुँचा। वह स्थान देखने मे वहुत रमणीक मालूम होता है।

१३ सितम्वर को मैं हाडा वश की राजधानी के पास पहुँचा। दूर से ही उडती हुई धूल दिखायी पडी, जिसके कारण मार्ग अधकारमय हो गया। मुझे मालूम हुआ कि शायद राजा इधर से निकल रहा है। इसी समय वाजो की आवाज सुनायी पडने लगी। इसके वाद थोडी ही देर मे एक साँडनी पर वैठे हुए सवार के द्वारा राजा के आने का समाचार सुना। राजा घोडे पर बैठा हुआ आ रहा था और मैं हाथी पर था। उस समय मेरा हाथी पर वैठना मुझे अच्छा न मालूम हुआ। इसलिये हाथी को छोड़कर मैं एक घोडे पर वैठा और आगे वढ़ा। राजा मेरे सामने आ गया

नवाँ परिच्छेद

जागीरदारी प्रथा की घटनायें—सामन्त की नियुक्ति—मेवाड़ मे भूमि के अधिकारी—सामन्तो के पट्टो का समय—किसी सामन्त के विद्रोह करने पर—भूमिया राजपूत—योरप के साथ तुलना—भूमिया सामन्तो की सुविधायें—जागीरो से पृथक अधिकार—सामन्तो की नियुक्ति मे राजा की निर्बलता—जागीरो का विभाजन और परिणाम—राजपूतो के स्वभाव मे राजभक्ति ।

इस परिच्छेद मे जागीरदारी प्रथा के सम्बन्ध मे उन घटनाओ और परिस्थितियो का विस्तार से उल्लेख किया जायगा, जिन पर अभी तक कुछ नही लिखा गया । साथ ही हम इस बात पर भी प्रकाश डालेगे कि उनके सम्बन्ध मे योरप के राज्यो मे किस प्रकार की प्रथा थी और राजस्थान के राज्यो के साथ उनकी कहाँ तक समानता है ।

जिन घटनाओ के सम्बन्ध मे हम यहाँ पर लिखने जा रहे है, उनमे से प्रमुख छै और वे इस प्रकार है , (१) नजराना (२) जागीर का हस्तान्तरित होना (३) पुत्रहीन सामन्त के मरने पर उसकी जागीर का अधिकार (४) रण की सहायता (५) नाबालिग सामन्त की रक्षा (६) विवाह ।

नजराना—जागीरदारी प्रथा की उपयोगिता और श्रेष्ठता नजराना पर निर्भर होती है । नजराना ही राजा की शक्ति है । सामन्त की राजभक्ति है । जिस राज्य मे इसका भली प्रकार पालन होता है, उस राज्य की शासन-व्यवस्था सुचारु रूप से चलना चाहिए । इसी के अनुसार राज्य की तरफ से सामन्त को भूमि दी जाती है और उसके बदले मे अपने अन्यान्य कर्त्तव्यो के पालन के साथ साथ, सामन्त अपने राजा को एक निर्धारित नजराना देता रहता है ।

यदि सयोग से किसी सामन्त की मृत्यु हो जाती है तो उसका उत्तराधिकारी राजा के सामने प्रार्थना पत्र उपस्थित करके और उतना ही नजराना देने की प्रतिज्ञा करके सामन्त का पद प्राप्त करता है ।

मेवाड राज्य मे नियम यह है कि जब एक स्वत्वाधिकारी का अधिकार समाप्त हो जाता है तो उस जागीर पर दूसरा अधिकारी स्वीकार करना राजा के अधिकार मे होता है । योरप की प्रथा के अनुसार सामन्त का पुत्र, पिता का नजराना राजा को देकर जागीर का अधिकारी हो जाता है । उसका पूर्ण वयस्क होना आवश्यक होता है । नजराना पाकर राजा उसे सामन्त का पद दे देता है । वास्तव मे नजराना निर्धारित करना राजा के अधिकार मे नही था । वह सामन्त की इच्छा पर निर्भर होता था । जिसके लिए राजा, योरप के राज्यो मे सामन्त को विवश नही कर सकता था और वहाँ की जागीरदारी प्रथा का यही विधान भी था । लेकिन जब राजा नजराना निर्धारित करके उसकी अदायगी के लिए सामन्त को बाध्य करने लगा तो वहाँ पर भीषण असन्तोष पैदा हुआ ।

सामन्त शासन-प्रणाली मे नजराना का बन्धन योरप के राज्यो मे नही था । उसे सामन्तो की इच्छा पर छोड दिया गया था । नजराना निर्धारित करने का अर्थ उसे एक प्रकार का कर बना देना होता है और यह नजराना किसी कर के रूप मे नही माना गया था । इसलिए उसके विरोध मे जब असन्तोष पैदा हुआ तो प्राचीन विधान का सशोधन किया गया और नजराना को निर्धारित करके उसके

था । हम दोनो घोड़ों मे उतर पडे और एक दूसरे के साथ गले मिले । इसी प्रकार मैने
साथ भी भेट की । राजा ने मुझसे कहा · "यह आप ही का राज्य है । अपने इस
बहुत दिनो के बाद आये है ।"

थोडी देर के बाद राजा से विदा होकर मै अपने स्थान पर चला गया ।

१ अक्टूबर को मैं जिहार पुर मे पहुँचा । उस दिन भी मेरी दशा अच्छी न
होने के कारण मुझे भूख बिलकुल न थी । फिर भी साथ के लोगो के कहने पर मैने
मकाई की रोटी के खाये । इसके बाद मेरी हालत और भी खराब हो गयी । मेरा
था । फिर भी मै घबराया नही । मेरे साथ के लोग चिन्तित हो रहे थे । कई वर्ष पहले
प्रकार भयानक रूप से बीमार पडा था । मेरी दशा लगातार खराब होती गयी और
हुआ कि मै अब बच नही सकता ।

इसके बाद मैंने देखा कि एक चिकित्सक मेरे पास आया है और वह मुझे
देखने के बाद उसने अपनी कोई औषधि मुझे खिलाई । उसको खाते ही मुझे उल्टी
लेटने के साथ ही मुर्छा आ गयी । उसके बाद मैं सो गया । रात को मुझे बहुत
उस समय मेरे शरीर मे पीडा न रह गयी थी ।

मेरी बीमारी के सम्बन्ध मे लोग तरह-तरह की बाते कर रहे थे । चिकित्सक
था कि मुझे किसी ने विष खिला दिया है । मैने इस बात पर विश्वास नही किया ।
के बाद से लेकर अब तक चार बार मेरी यह दशा हो चुकी थी । २ अक्टूबर को मुझे
अधिक था । शरीर मे भी पीडा थी । इसलिये मैं पालकी मे लेटकर चला । खजूरी
पर कुछ मीना लोग भेट करने के लिए मेरे पास आये । मैने उनके सरदार को लाल
रुमाल उपहार मे दी । यहां के बहुत से ग्राम ब्राह्मणो को दान दे दिये गये थे ।

मैं कई दिनो तक बुखार मे रहा और घोडे पर न बैठ सकने के कारण
करता रहा । १७ अक्टूबर को मण्डल गढ से चलकर एक मील की दूरी पर मैंने
वहां पर मण्डल गढ के कुछ लोग मुझसे भेट करने को आये । उस दिन विजयादशमी
लिये आने वालो ने विजयादशमी का मुझे निमन्त्रण दिया । लेकिन अपनी बीमारी
निमन्त्रण के अनुसार मैं उनके यहा जा न सका ।

मैने नौ दिनो से कुछ खाना नही खाया था । मेरे साथ के सभी लोग बहुत चि
थे । आज मेरी पसली मे जोक लगवाई गयी । इसके बाद भी मेरी बीमारी मे कोई
पडा । फिर भी मेरे मन मे किसी प्रकार की घबराहट न थी ।

सम्वत् १७५५ मे बादशाह औरंगजेब ने पिसानगढ के दूदा जी राठौर को मण्
था । यह इलाका इसके कई भाइयो मे विभाजित किया गया । लेकिन उसके बाद
पर अपना अधिकार कर लिया ।

अपनी संतान मे शौर्य का सञ्चार करते है । प्राचीन जर्मन लोगो मे इसी भी प्रकार की प्रथा थी । वयस्क अवस्था मे प्रवेश करते ही उनके बालक भाला धारण करते थे । रोम के नवयुवको मे इसी प्रकार की प्रथा बहुत पहले पायी जाती थी । उनके बालको को अस्त्रो से विभूषित किया जाता था ।

मेवाड-राज्य मे नजराना देने की प्रथा बहुत पहले से चली आ रही है । लेकिन राज्य के पतन के दिनो मे उसके बहुत से सामन्तो ने नजराना देना बन्द कर दिया था । उन दिनो मे राणा की शक्तियाँ क्षीण हो गयी थी । राज्य पर बाहरी आक्रमण लगातार हो रहे थे और आक्रमण-कारियो के साथ सन्धि करके राणा ने अपना खजाना खाली कर दिया था । उन्ही दिनो मे कुछ सामन्तो ने नजराना देना बन्द किया । उसके फलस्वरूप वहाँ की मूल प्रणाली मे परिवर्तन हो गया और नजराना की प्रथा अनुचित समझी जाने लगी ।

जागीर का हस्तान्तरित होना—जागीरदारी प्रथा मे जब किसी सामन्त को राज्य की ओर से एक जागीर मिल जाती है तो उसके हस्तान्तरित होने का कोई नियम उसके विधान मे नही है । अपनी जागीर को सामन्त न तो बेच सकता है और न किसी दूसरे को दे सकता है । सामन्त को इस प्रकार का साधारण परिस्थितियो मे कोई अधिकार नही है । विशेष हालतो मे सामन्त को इसके लिए कुछ अधिकार दिये गये है । परन्तु उस अधिकार मे भी वह स्वतन्त्र नही है । उसको राजा की आज्ञा लेनी पडती है । यदि राजा आदेश नही देता तो किसी सामन्त मे भी अपने अधि-कार को हस्तान्तरित करने का उसे कोई हक नही होता ।

देवगढ के सामन्त ने राणा की आज्ञा के बिना और अपने सरदारो से बिना परामर्श किये किसी समय अपनी जागीर के अधिकार को दूसरे के नाम कर दिया था । उसके ऐसा करने पर राणा ने उसके अधिकार का सम्पूर्ण इलाका उससे छीन लिया और जब देवगढ के सामन्त ने अपने यहाँ पहले की व्यवस्था फिर से कायम कर ली तो राणा की तरफ से उसकी भूमि उसको फिर वापस दे दी गयी ।

जो लोग खेती का काम करते है, वे रुपये देकर राज्य से अपने खेतो का पट्टा लिखा लेते है और वे उसके अधिकारी बन जाते है । पट्टा हो जाने के बाद राजा केवल उनसे निर्धारित कर वसूल कर सकता है ।

पुत्रहीन सामन्त के मरने पर उसकी जागीर का अधिकार—जिन सामन्तो को राज्य की तरफ के इलाका मिलता है, जागीरदारी प्रथा के विधान के अनुसार उनका उस पर अधिकार होता है और उनकी मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी उसके अधिकारी माने जाते है । लेकिन दत्तक पुत्रो का उस पर कोई अधिकार नही होता । इस लिए जब कोई सामन्त पुत्रहीन रह कर मरता है तो उसकी भूमि को राणा अपने अधिकार मे ले लेता है । मेवाड राज्य की यह पुरानी प्रथा है और राणा को अनेक अवसरो पर ऐसा करना पडा है ।

सामन्त के किसी प्रकार अपराध करने पर राणा को उसकी भूमि वापस लेने का अधिकार है । अपराध के अनुसार सामन्त को दण्ड दिया जाता है और उसके लिए उसके अधिकार की पूरी भूमि अथवा सम्पूर्ण भूमि उससे ले ली जाती है । प्राचीन काल मे इसी प्रकार का नियम योरप के राज्यो मे भी था ।

मारवाड मे आजकल लगभग सभी प्रथम श्रेणी के सामन्त अपना राज्य छोडकर दूसरे राज्यो मे निर्वासित देखे जाते है । अपने राजा के तरफ से निकाले गये है । ईदर के राजा ने भी अपने सामन्तो के साथ ऐसा ही किया होता, यदि बम्बई के गवर्नर एलफिन्स्टन ने उसका विरोध न किया होता ।

जन्मभूमि लौट जाने का बार-बार ख्याल मेरे मन मे पैदा होने लगा था, लेकिन इतने दिनो तक राजस्थान मे रहकर उसके साथ जो मेरा माया-मोह पैदा हो गया था, उनको एक साथ छोड देना भी मेरे लिये आसान न था। वहाँ रहकर राजस्थान मे जो सुधार करने का मैंने निश्चय किया था, उनमे अभी तक मै कुछ न कर सका था। यहाँ की परिस्थितियो के साथ मेरे जीवन का ऐसा सम्बन्ध हो गया था कि उनसे छुटकारा पाना इतना जल्दी मुझे सम्भव नही मालूम होता था। यही कारण था कि अपनी बीमारी के दिनो मे भी मै यहाँ के ग्रामो और नगरो मे लगातार घूमता रहा, उससे मेरी बीमारी निरन्तर बढती रही और बहुत दिनो के बाद उसने मुझको निर्बल बना दिया।

राजस्थान के राज-परिवारो के साथ मेरे घनिष्ट सम्बन्ध हो गये थे, जिनसे भाई, मामा, चाचा आदि के द्वारा मै स्थान-स्थान पर पुकारा जाता था। अपने शरीर की दशा को देखकर सन् १८२१ ईसवी के जुलाई महीने मे अपने देश चले जाने का मैंने निश्चय किया। उस समय मैं उदयपुर मे था। उसके बाद ही बूंदी के राजा की मृत्यु का समाचार मुझे मिला और यह भी मैंने सुना कि मृत्यु के समय वहाँ के राजा ने अपने राज्य के भविष्य का उत्तरदायित्व मेरे ऊपर छोड दिया है। मृत्यु का समाचार पाकर मै बूंदी के लिए रवाना हुआ।

उन दिनो मे हैजा की बीमारी बूंदी-राज्य मे बडे जोर के साथ चल रही थी। वहाँ जाकर मैंने देखा कि उस बीमारी को शान्त करने के लिए स्थान-स्थान पर हवन किये जाते है और मन्त्र पढे जाते है। राजधानी के बाहर दक्षिण की तरफ गगाजल छिडका जाता है।

२५ जुलाई—बरसात के दिन थे। आसमान पर रोज ही बादल रहते थे और किसी भी समय पानी बरसने लग जाता था। इसी दशा मे आज मैं उदयपुर से बूंदी के लिए रवाना हुआ। मेरी अभिलाषा भीलपाडा देखने की थी। इसलिए २६ जुलाई को मैं वहाँ पहुँच गया। बहुत से स्त्री-पुरुषो ने आकर मेरा स्वागत किया। स्त्रियो के सिर पर पानी से भरे हुये कलशे थे। जो लोग मार्ग मे आकर मुझसे मिले वे मुझे अपने नगर मे ले गये। मेरे आगमन की खुशी मे वहाँ का बाजार सजाया गया था। वहाँ घूमकर हम लोग लौट आये। हमारे भोजन के लिए बडी अच्छी व्यवस्था की गयी थी। भोजन करने के बाद हमारे पास फिर कुछ लोग आये और वे मेरे साथ बाते करते रहे। लोगो के आग्रह पर २८ जुलाई को भी मुझे वहाँ पर रहना पडा। २६ जुलाई को हम सब लोग वहाँ से विदा हुए। रवाना होने के समय पानी बरस रहा था और चलने का रास्ता बहुत खराब हो गया था। इसलिये बार-बार पैर फिसलते थे। किसी प्रकार गिरते-पडते हम लोग जिहाजपुर पहुँच गये। पानी लगातार बरस रहा था। ३० जुलाई को हम लोग पहुँच गये और सबसे पहले अपनी यात्रा की पोशाक मे मैं सीधे राजमहल पहुँचा। राजा की मृत्यु पर दुख प्रकट करते हुए मैने सबको धैर्य से काम लेने की बात कही। महल मे राज्य का उत्तराधिकारी मौजूद था। मैने उसके छोटे भाई गोपाल सिह से बात चीत की। वहाँ सभी लोग राजा की मृत्यु से दुखी थे। फिर भी मेरे साथ उन्होने सम्मान प्रकट किया।

राजमहल मे सब से मिलकर मैने उनको शान्त होने के लिये कहा और अपनी बातचीत के सिलसिले मे मैने उनको बताया कि राजा की मृत्यु का समाचार सुनकर अगरेज-सरकार को बहुत आघात पहुँचा है। मेरी बातो को सुनने के बाद राज्य के उत्तराधिकारी ने मेरी तरफ देख कर कहा "मरने के समय मेरे पिता ने मेरी रक्षा का भार आपको सौपा है।"

इस बात को सुनकर मै बहुत प्रभावित हुआ। उसको धैर्य देते हुये मैने उत्तर दिया: "भगवान आपकी रक्षा करेगा, आप जरा भी घबराये नही।"

घोपित कर दिया जाता है। परन्तु उसकी नाबालिगी मे राणा को रक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता है और उसके बालिग हो जाने पर राणा अपना प्रबन्ध वापस ले लेता है।

नाबालिग सामन्त की रक्षा के लिये जो प्रबन्ध राणा को करना पड़ता है, वह कभी-कभी बुरे परिणाम लेकर सामने आता है। ऐसे अवसरों पर राणा उन लोगों को नाबालिग का संरक्षक बना देता है, जो लोग उसके निकटवर्ती सम्बन्धी होते हैं। ऐसे लोगों के संरक्षण में मेवाड़ मे कभी कल्याण होता हुआ नही देखा गया। प्राय जाति और वंश के लोग या तो किसी ईर्षा के कारण अथवा अपने छिपे हुये किसी स्वार्थ के कारण नाबालिग सामन्त का हित साधन करने मे सफल नही होते।

ऐसे अवसरो पर योरप के राज्यो मे भी यही होता था। यद्यपि ऐसे मौकों पर किसी निकट-वर्ती व्यक्ति का खोजना ही आवश्यक मालूम होता है। परन्तु उसका परिणाम कभी भी अच्छा साबित नही हुआ। मेवाड़ राज्य मे राणा ने ऐसे अवसरों पर जब कभी उस प्रकार की व्यवस्था की है तो उसके लिए बाद मे उसे पश्चाताप करना पड़ा।

इस दशा मे जब कोई सामन्त नाबालिग होता है तो उसका प्रबन्ध राणा को अपने हाथो मे लेना पड़ता है। यद्यपि अपने नाबालिग बच्चे के लिये माता सामन्तों पर [illegible] रूप से संरक्षक मानी जाती है। कोई भी [illegible]। परन्तु [illegible] मे भिन्न माता का कोई स्वार्थ नही हो सकता। क्योंकि माता को नाबालिग बच्चे का संरक्षक मानना ही सर्वथा उचित होता है। इसलिये ऐसे अवसरो पर नाबालिग की रक्षा का भार माता को सौंप देने से कभी किसी प्रकार की अवाञ्छनीय परिस्थिति नही उत्पन्न हो सकती।

विवाह—प्रत्येक सामन्त वैवाहिक कार्यों के सम्बन्ध मे राणा के साथ परामर्श करता है। ऐसा करना राजा के प्रति उसकी शिष्टता और सद्भावना का परिचय देता है। उसके लिए यह कोई बन्धन नही है लेकिन कर्तव्य पालन के नाम पर आवश्यक है। राजा का इससे प्रभुत्व बढ़ता है और इस प्रकार की शिष्टता के प्रदर्शन से सामन्त की मर्यादा का विस्तार होता है। इस प्रकार के अवसरो के परामर्श पर राजा सामन्त के सम्मान मे कुछ वस्तुयें भेंट मे देता है।

कोई राजपूत अपने वंश की लड़की के साथ विवाह नही कर सकता। इसी प्रकार का नियम नार्मन लोगो मे भी था। नार्मन लोग भी अपने वंश की लड़की के साथ विवाह नही करते थे इसके साथ-साथ उन लोगो मे शत्रु के साथ वैवाहिक सम्बन्ध जोड़ने का नियम न था। विवाह के इन नियमो का प्रचार सबसे पहले नार्मन लोगो मे हुआ।

सामन्त का समय—राज्य की तरफ से जो लोग भूमि पाते हैं, जागीरदारी प्रथा मे उनके लिए क्या नियम है और उनकी भूमि की व्यवस्था, उस प्रथा मे किस प्रकार होती है, उनको यहाँ पर स्पष्ट करना हमारा उद्देश्य है। प्राचीन काल की शासन-प्रणाली जागीरदारी प्रथा की थी और सर्वत्र एक से मौलिक सिद्धान्तो को लेकर बहुत समय तक चलती रही। समय और परिस्थि-तियो के अनुसार उसमे परिवर्तन हुये और शासन के विभिन्न नामो से समय-समय पर उसे सम्बोधित किया गया। जिसे आज डेमोक्रेसी अथवा प्रजातन्त्र शासन कहा जाता है, यह इसी सामन्त शासन-प्रणाली का संशोधित और परिवर्तित रूप है।

मेवाड राज्य मे दो प्रकार के भूमि के अधिकारी राजपूत थे। इन दोनो मे पहला, दूसरे की अपेक्षा संख्या मे अधिक था। पहला है ग्राम्य ठाकुर अर्थात् स्वामी और दूसरा भूमिया। ग्राम्य सामन्त वह कहलाता है जो राजा को पट्टा लिखकर भूमि का अधिकारी होता है और उसके लिए अपने घर पर रह कर वह राज्य के काम आता है। उसकी सेवायें राज्य के भीतर और बाहर सर्वत्र मानी जाती

ऐतिहासिक यात्रा

इसके बाद कुछ आवश्यक बातो पर मै सामन्तो के साथ परामर्श करता हु
के स्थान पर जो राज महल से थोड़ी ही दूरी पर था, चला गया। वहाँ पर मेरी
चीजे पहुँच गयी थी और जैसे ही मै वहाँ पर गया राजमाता का भेजा हुआ भ
आता हुआ दिखायी पडा। राजमाता ने ताजा बना भोजन एक ब्राह्मण के हाथ से र
और जो ब्राह्मण भोजन ला रहा था, उसके आगे-आगे एक दूसरा ब्राह्मण गगाजल
आया था। मैने सबके साथ अपने ठहरने के मुकाम पर शान्ति पूर्वक भोजन किया।

बूंदी मे मेरे पहुँचने के बाद राजमाता ने राज्य के उत्तराधिकारी के अभिषे
किया। राजमाता ने अभिषेक सम्बन्धी तैयारी आरम्भ कर दी। तीज के दिन
पर्व हुआ करता है। उस दिन मुझे उत्तराधिकारी के साथ यात्रा करने के लिये
पास संदेश भेजा। इस संदेश को पाने के बाद नवीन राजा के लिए मैने कीमती वस
का प्रबन्ध किया।

निश्चित दिन अभिषेक का कार्य आरम्भ हुआ। इसके लिए मै राजमहल
मे मुझको एकत्रित राज्य की प्रजा मिली। वे सभी लोग नमस्कार करके मेरा स
महल के सामने बहुत बडी सख्या मे राजपूत एकत्रित थे। वे एक साथ जय जयकार
के भीतर अभिषेक के स्थान पर राज्य के सामन्त उपस्थित थे। वहाँ पहुँचकर मै
साथ बात चीत करने लगा। पास ही एक कमरे मे हवन हो रहा था। पूजा का क
पर नवीन राजा को बुलाया गया। मैने उसे बुलाकर एक कमरे मे पहुँचाया।
सम्बन्धी कुछ कार्य हुआ। नवीन राजा ने पुरोहित के मस्तक पर टीका लगाया। इ
मिलने पर प्रसन्नता के साथ मै उसे राजसिहासन की तरफ ले गया। सिहासन इ
हुआ था कि राजकुमार उस पर चढ न सका। इसलिये मैने उसको उठाकर सि
दिया। पुरोहित ने उसके माथे पर चन्दन लगाया। मैने अपनी उँगली से नवीन मह
पर तिलक किया। इसके पश्चात् उसकी कमर मे तलवार बाँधकर मैने अभिनन्दन
स्वर मे कहा हमारी सरकार बूंदी राज्य के लिये शुभ कामना प्रगट करती है।'
को सुनकर वहाँ का एकत्रित समुदाय बहुत प्रसन्न हुआ और मेरी बात के समाप्त ह
के दुर्ग से तोपो के छूटने की आवाजे सुनायी पडी। इसके पश्चात मैने महाराज के
मे हीरो का सिरपेच, गले मे मोतियो की माला हीरा और जवाहिरात जडे हुये
दूसरे बहुमूल्य पदार्थ देकर इक्कीस कीमती दुशाले एव मूल्यवान वस्त्र उपहार मे
सजा हुआ एक हाथी और काले रंग के दो घोडे भी मैने नवीन महाराज को भेट
पश्चात उसके लिए मगल कामना करता हुआ कुछ दूरी पर जाकर मै खडा हो गया

मेरे बाद एक-एक सामन्त उपहार लेकर उस स्थान पर पहुँचे और सभी
उपहार देकर नवीन राजा का अभिनन्दन किया। इसी अवसर पर नवीन राजा
सिंह मेरे पास आया और बहुत गम्भीर हो कर उसने मुझसे कहा : "आप के
हम लोगो का संरक्षक नही है।"

इस बात को सुनकर और सचेत होकर मैने गोपाल सिंह की तरफ देखा
उत्तर न दे सका था। उसी समय राज्य के सामन्त कई एक मेरे पास आये और
सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे मुझे बहुमूल्य उपहार दिये। इसके पश्चात् मैं
करके वहाँ से चला आया।

गई है। इसके पहले सामन्तो का अधिकृत राज्य, निर्धारित समय के पश्चात् मेवाड़ के राणा किसी दूसरे सामन्त को दे देता था और वह सामन्त जिसकी सनद का निर्धारित समय खतम हो जाता था, अपना परिवार लेकर पशुओ और नौकरो के साथ छप्पन* की जगली भूमि मे रहने के लिए चला जाता है।

इन्ही परिस्थितियो मे कितने ही शक्तावत सामन्त अरावली के पहाडी स्थानो मे जाकर रहने लगे थे और चन्दावत सामन्त चम्बल नदी के निकटवर्ती स्थानो को छोड़ कर मेवाड के पूर्व सीमा के निकट पहाडी स्थानो मे रहने के लिए चले गये थे। उन दिनो मे सामन्त का पट्टा एक निश्चित समय के लिए होता था। उस समय के बीत जाने पर न केवल सामन्त का पट्टा रद्द हो जाता था, बल्कि सामन्त राज्य के उस क्षेत्र को छोड़कर किसी दूरवर्ती स्थान पर अथवा दूसरे राज्य मे रहने के लिए चला जाता था और वहाँ पर भूमि देकर उसे सामन्त स्वीकार कर लिया जाता था।

उन दिनो मे सामन्तो के पट्टे आम तौर पर तीन वर्ष के लिए स्वीकार किये जाते थे। उसके बाद उनको किसी नये स्थान मे भेज दिया जाता था और वहाँ पर पहुँचकर वे सामन्त बना लिये जाते थे। सभी सामन्त इन नियमो के साथ बँधे हुए थे। किसी को राज्य की इस व्यवस्था पर असतोष करने का मौका न था।

सामन्त के पट्टे को एक निश्चित समय के लिए निर्धारित कर देना और उसके बाद उस सामन्त को किसी नये स्थान मे भेजकर सामन्त बनाने की नीति मेवाड राज्य मे कुछ विशेष अर्थ रखती थी। इसका सम्बन्ध राजनीति के साथ है। किसी एक ही स्थान पर अधिक समय तक सामन्त वहाँ के स्त्री-पुरुषो पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लेता है। उसका वह किसी समय दुरुपयोग कर सकता है और राणा के विरुद्ध उसके विद्रोह करने पर वहाँ की प्रजा राणा के विरुद्ध तलवार उठा सकती है। अपनी प्रजा के साथ इस उत्पन्न होने वाली अवाछनीय परिस्थिति को बचाने के लिए मेवाड-राज्य के राणाओ ने इस प्रकार की नीति का आश्रय लिया था। राणा की इस राजनीतिक सूझ को हमे स्वीकार करना चाहिए।

एक निर्धारित समय के पश्चात् सामन्त के परिवर्तन की प्रथा जब तक मेवाड राज्य मे प्रचलित रही, उस समय तक राज्य का कोई भी सामन्त राणा के साथ विद्रोह करने का साहस न कर सका। परिवर्तन की उस प्रथा ने राणा और सामन्त के सम्बन्ध को अटूट बना दिया था। राज्य पर आयी हुई विपदाओ के समय सभी सामन्त शत्रुओ के आक्रमणो का जवाब देने मे अपनी कोई शक्ति उठा न रखते थे और राज्य की रक्षा मे शत्रुओ से लडते हुए बलिदान हो जाने मे अपना गौरव समझते थे।

मेवाड की इस परिवर्तनशील प्रथा का—जिसमे सामन्त अपनी भूमि का स्थायी रूप से पट्टा पाते थे—समर्थन करते हुये विद्वान इतिहासकार गिबन लिखता है· "प्राचीन काल मे इसी प्रकार की प्रथा का प्रचार फ्राँस मे भी था। सामन्तो को जो भूमि दी जाती थी, उसका एक निश्चित समय रहता था"। जागीरदारी प्रथा का अनुसधान करते हुये प्राचीन इतिहासकार काग-टेस्की ने भी इसी प्रथा का उल्लेख किया है, जिसका समर्थन गिबन ने अपने ग्रन्थ मे किया है।

सामन्तो को भूमि देने के सम्बन्ध मे तीन प्रकार के नियम प्रचलित है। (१) मियादी सामन्त, (२) चिरस्थायी सामन्त और (३) वशगत सामन्त।

---

* मेवाड और गुजरात के बीच का एक पहाडी और जगली देश है। वह मेवाड़ के दक्षिण-पश्चिम मे है। उसी देश को छप्पन कहा जाता है।

दूसरे दिन राजमाता का एक नया सदेश मुझे मिला। वह वलवन्त सिंह की तरफ से कुछ भयभीत थी। वारह वर्ष पहले उसने वूंदी पर आक्रमण किया था। राजमाता ने उसके सम्बन्ध में मेरे पास एक सदेश भेजा। उसका उत्तर देकर मैंने राजमाता को उसके सम्बन्ध मे आश्वासन दिया।

राज्य मे कई एक ऐसे अधिकारी थे, जिनके प्रति राजमाता की आशकाये वनी रहती थीं। उनके सम्बन्ध मे भी राजमाता ने मुझसे कहा और मैंने उनकी इच्छा के अनुसार प्रवन्ध करा दिया।

इस प्रकार की अनेक वातो के साथ-साथ मैंने आदेश दिया कि राज्य मे आमदनी का जितना धन एकत्रित हो, वह सव राज्य के खजाने मे रखा जाय। उस आमदनी का जो रुपया खर्च किए जायँ नियमित रूप से उसका हिसाव रखा जाय। विना रसीद के एक भी रुपये का खर्च मजूर न किया जायगा। इस प्रकार मैंने राज्य की व्यवस्था करा दी।

इन्ही दिनो मे राखी का त्योहार आया। रक्षा वन्धन के नाम से यह त्योहार प्रसिद्ध है। राजमाता ने मुझे अपना भाई मानकर अपने एक पुरोहित के द्वारा मेरे पास राखी भेजी। मैंने उसे स्वीकार किया। उसका ग्यारह वर्षीय वालक सिंहासन पर वैठा था। राखी को स्वीकार करने के वाद मैंने उसको अपना भान्जा समझा। राजमाता मेरा वडा विश्वास करती थी। राज्य के वाद आवश्यक प्रश्नो पर वातचीत करने के लिए मैं कुछ विश्वासी राज्य के आदमियो के साथ महल मे गया और राजमाता के साथ वाते करता रहा। राजमाता एक परदे की आड मे बैठकर मुझसे वात कर रही थी। उनकी वातो को सुनकर मैंने उनकी योग्यता को अनुभव किया।

जैसलमेर के इतिहास मे तक्षक और क्याक के युद्ध का वर्णन पढने को मिलता है। तक्षक और क्याक तातारी भाषा के शब्द हैं। तक्षक लोगो के पूर्वज साँपो की पूजा करते थे। इसीलिये इस जाति का नाम तक्षक पडा था। वे लोग पश्चिमी भारत मे पाये जाते है।

२६ फरवरी—वेगू के सामन्त के प्रवेश को तीन वर्ष पहले वापस लेकर उसके अधिकारो से उसको वचित कर दिया गया था। लेकिन इधर कुछ दिनो से उसका प्रवेश देकर उसे फिर से सामन्त के रूप मे स्वीकार करने का विवाद चल रहा है। इसके सम्बन्ध मे मुझे वेगू के किले की तरफ जाना पडा। मेरे आने का समाचार सुनकर कालामेघ के वश के लोग अपने स्थानो से आकर वहाँ पर एकत्रित होने लगे।

वेगू के किले के चारो तरफ गहरी खाइयाँ है और उन खाइयो के ऊपर काठ का एक पुल महल के आने जाने के लिये वना हुआ है। उस पुल के सामने एक फाटक है। मेरे साथ के सैनिक उस फाटक से निकल कर पुल की दूसरी तरफ चले गये। मुझे भी उसी रास्ते से जाना था, लेकिन मेरे महावत ने कहा कि हौदे के साथ आप का हाथी उस फाटक से निकल नही सकता। इसलिये कि वह फाटक इतना ऊँचा नही है। महावत के इस प्रकार कहने पर मैंने कुछ ख्याल नही किया और उसको आगे चलने के लिये आज्ञा देते हुये मैंने उससे यह भी कहा कि अगर तुम किसी प्रकार के भय से हाथी पर वैठकर न चलना चाहो तो उतर जाओ। महावत ने मेरी वात का कुछ उत्तर न दिया और उसने हाथी को आगे की तरफ वढाया काठ के पुल पर हाथी के चलते ही कुछ जोर की आवाज होने लगी। उसको सुनकर और गहरी खाइयो को देखकर हाथी भयभीत हो उठा। तेजी के साथ चलने के कारण वह फाटक से निकल न सका। महावत ने हाथी को सम्हालने की चेष्टा की लेकिन वह हाथी को अपने नियत्रण मे न ला सका। फाटक मे प्रवेश करने के पहले ही मुझे आभास हुआ कि फाटक की ऊँचाई काफी नही है और हाथी नियत्रण मे नही है। ऐसी दशा

स्थायी रूप मे चला करता है। प्रमार, चौहान और राठौर सामन्तो के साथ ऐसा नही है। उनको यह कहने का अधिकार नहीं है कि जागीरो पर हमारा स्वत्व स्थायी हो गया है। सीसोदिया सामन्तो के अतिरिक्त प्रमार, राठौर और चौहान आदि वश के सामन्तो को जो पट्टा दिया जाता है, वह काला पट्टा के नाम से प्रसिद्ध है। जिनको इस प्रकार का पट्टा प्राप्त होता है, वे स्वयं कहा करते है, हम काला पट्टा धारी है।

काला पट्टा का अर्थ यह है कि उसके अनुसार जो भूमि अथवा जागीर किसी सामन्त को दी गयी है, वह राणा के द्वारा कभी किसी समय पर वापस ली जा सकती है। लेकिन यह परिस्थिति सीसोदिया सामन्तो की नही है। अन्य वश वालो की अपेक्षा सीसोदिया वंशी सामन्तो को सुविधाये भी अधिक प्राप्त है।

राणा भीमसिंह के समय मेवाड की अवस्था बहुत शोचनीय हो गयी थी। कितने ही सामन्तो ने पट्टे मे मिली हुई जागीर के अतिरिक्त राज्य के स्थानो पर अधिकार कर लिया था। उस अराजकता को मिटाने के लिये आवश्यक समझा गया कि सभी सामन्तो को दुबारा नये पट्टे दिये जाये और इन नवीन पट्टो पर राणा भीमसिंह के हस्ताक्षर हो। इससे पहले के सभी पट्टे रद्द कर दिये जाय।

इसके लिये राणा का प्रधान मन्त्री सतावतो के सरदार आगुन्धा के सामन्त के पास गया और उससे पट्टा दिखाने के लिये उसने प्रार्थना की। उसने राणा को निर्बल समझकर राज्य के अनेक अच्छे ग्रामो पर अधिकार कर रखा था। इसलिए प्रधान मन्त्री की प्रार्थना को सुनकर उसने उत्तर दिया "मेरा पट्टा राणा के महल की नीव मे है।"

राणा के प्रति उसके एक सामन्त का यह उत्तर कितने बडे विद्रोह से भरा हुआ है, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। इसी प्रकार का उत्तर अर्लवारेन ने इसी प्रकार की परिस्थिति मे इगलैण्ड के एडवर्ड के प्रतिनिधि को देते हुये कहा था: "मेरे पूर्वजो ने तलवार के बल से इस भूमि पर अधिकार किया था और मै भी अपनी तलवार के बल से इस भूमि की रक्षा करूँगा।"

ऊपर हमने जिन पट्टो का उल्लेख किया है, जागीरदारी प्रथा के पुराने विधान के साथ उनका सम्बन्ध है। अब नये नियमो के अनुसार अपने जीवन-भर के लिए सामन्त लोग जागीर का पट्टा पाते है। किसी भी विधान मे दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी होना स्वीकार नही किया गया। लेकिन नये नियमो मे सामन्त राणा का परामर्श लेकर यदि किसी बालक को गोद लेता है तो वह बालक भूमि अथवा जागीर का उत्तराधिकारी मान लिया जाता है।

सामन्त के जीवन की कुछ ऐसी परिस्थितियाँ भी है, जिनके कारण उसकी जागीर पर राणा अधिकार कर सकता है। उसके लिए सामन्त का कोई अपराध होना चाहिए। अनुशासन भंग करना, इस प्रकार के किसी भी अपराध मे सामन्त की जागीर राणा के द्वारा वापस ली जा सकती है।

राणा के परामर्श के अधुनुसार गोद लिए बालको को उत्तराधिकारी मान लेने पर जब उनकी प्रार्थनाये राणा के सामने आती है तो उनके अभिषेक के समय सामन्त प्रणाली के साधारण नियम प्रयोग मे लाये जाते है। उत्तराधिकारी को नजराना देना पडता है। उसके पश्चात् राणा उसका पट्टा स्वीकार करता है।

कुछ परिस्थितियो मे, जिनका ऊपर वर्णन किया गया है, राणा को अधिकार है कि वह किसी सामन्त को पदच्युत कर दे और उसके अधिकार की जागीर को उससे वापस ले ले। परन्तु इस अधिकार को प्रयोग मे लाना राणा के लिए साधारण कार्य नही होता। उसके सामने भीषण विपदाये

सैंतालीस राजपूत सेनापतियो मे सत्रह के अधिकार मे एक हजार से पाँच हज
अश्वारोही और शेष तीस के अधिकार मे पाँच सौ से एक हजार तक अश्वारोही थे । अम्बेर,
वाड, बीकानेर, बूँदी, जैसलमेर, बुन्देल खण्ड और सिखावत के राजा एक हजार से अधिक
रोही सैनिको के सेनापति थे । मुगलो के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होने के कारण अम्बेर के रा
पाँच हजार अश्वारोही सैनिको के सेनापति होने का अधिकार मिला था ।

मारवाड का राठौर राजा उदयसिह एक हजार अश्वारोहियो का सेनापति था ।
मारवाड के राजवश की शाखा मे उत्पन्न होने वाले बीकानेर के रायसिह को केवल चालीस
अश्वारोहियो का सेनापतित्व मिला था । चन्देरी, करौली, दतिया के स्वतत्र राजा और कु
राजा लोग तथा सिखावत के राजा नीची श्रेणी के सेनापति थे और वे चार सौ से सात
अश्वारोहियो के सेनापति थे । इन्ही लोगो मे शक्तावत वश के लोग भी थे । जिनके अ
राणा प्रताप के साथ झगडा करने के वाद सम्राट अकबर ने लगभग सभी राजपूत राज
अपनी अधीनता मे ला कर उन्हे अपने यहाँ सेनापति बना लिया था ।

बादशाह अकबर ने अपनी दूरदर्शिता और राजनीति से दो लाभ उठाये । राजपूतो
वैवाहिक सम्बन्ध कायम करके उसने उनको अपनी तरफ आकर्षित किया । उसके परिणा
राजपूतो के मनोभावो से उसके विदेशी होने का भाव दूर हो गया । दूसरा लाभ उसने यह
कि जिन राजाओ की स्वाधीनता का उसने अपहरण किया, वे उसके विद्रोही होने के बजाय
के सेनापति बनकर सदा उसके शासन को सुदृढ बनाते रहे ।

अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने मुगल सिंहासन पर बैठकर जिस उदार नीति का
लिया था, औरङ्गजेब उस नीति का अनुयायी न बन सका । बादशाह शाहजहाँ के समय तक
की जो नीति रही थी, औरङ्गजेब ने अपने शासन काल मे उसे बिलकुल मिटा दिया और
उसने पक्षपातपूर्ण शासन आरम्भ किया, इसके फलस्वरूप हिन्दू लोग उसके विरोधी होने
राजपूत राजाओ के साथ शत्रुता का भाव पैदा हुआ । इसके पहले तक देशी राजाओ की जो
मुगल साम्राज्य के प्रति थी, वह एक साथ तिरोहित हो गयी । समय-समय पर राजपूतो ने
जेब का विरोध किया और उसके लडके अकबर का समर्थन करके औरगजेब को सिहासन से
की चेष्टा की । औरगजेब की मृत्यु हो जाने के बाद फर्रुखसियर सिहासन पर बैठा । वह
और निर्बल था । उसके शासन काल मे तैमूर के वशजो का सुदृढ और अचल साम्राज्य
हो गया ।

इस समय किस प्रकार की शासन-प्रणाली राजस्थान मे श्रेष्ठ मानी जा सकती है,
सही कल्पना करना इस समय सम्भव नही है । बहुत समय से इन राज्यो मे सामन्त
प्रणाली रही है, उसने न जाने कितनी शताब्दियो तक सफलतापूर्वक शासन किया है । इस

डाक्टर भी था । हेमिल्टन ने सम्राट का इलाज किया और उसकी औषधियो से वह
गया । इसके बाद विवाह हुआ अत मे सम्राट ने डाक्टर से उसके पुरुस्कार का प्रश्न किया ।
को उत्तर देते हुए डाक्टर ने कहा . "मेरे साथ मे व्यवसाय के लिए जो अगरेज आये है,
अपनी कोठी बनाने के लिए हुगली मे थोडी-सी भूमि की जरूरत है ।" सम्राट ने डाक्टर
को स्वीकार कर लिया । अगरेजो को हुगली मे कोठी बनाने के लिए आवश्यकतानुसार भू
गयी । कोठी बन जाने से अगरेजों को रहने, व्यवसाय के माल को रखने तथा
करने के सुभीते पैदा हो गये ।

वडी सख्या मे युद्ध के लिए तैयार होकर राजधानी मे आते है। मेवाड मे मांडलगढ एक विशाल प्रान्त है। उसमे तीन सौ साठ नगरो और गामो की सख्या है। प्राचीन काल मे मांडलगढ सोलंकी राजपूतो के अधिकार मे था। वही लोग अधिक सख्या मे उस राज्य मे रहते भी थे।

जब मेवाड राज्य पर कोई बाहरी शक्ति आकर आक्रमण करती है तो उसके साथ युद्ध करने के लिए राणा युद्ध की घोषणा करता है। उस घोषणा को सुनते ही प्रत्येक भूमिया राजपूत को अपना घर छोडकर युद्ध के लिए चला जाना पडता है। उस सैनिक कार्य के लिए राज्य की तरफ से उनको किसी प्रकार का वेतन नही दिया जाता। उस दशा मे भूमिया राजपूतो का कहना है कि राणा को हम लोगो से भूमि का कोई भी कर न लेना चाहिए। उनका यह भी कहना है कि कर के नाम पर जो कुछ हम राणा को देते है, राणा उसके लेने का अधिकारी नही है।

भूमिया राजपूत राज्य की जितनी भूमि पर अधिकार कर लेते है उसके लिए वे लोग राणा से कोई पट्टा मजूर नही करवाते। बिना पट्टा के भूमि के अधिकारी बनने मे वे लोग अपना गौरव समझते है। अपने अधिकार की भूमि के सम्बन्ध मे भूमिया राजपूत बडे स्वाभिमान के साथ कहा करते है "यह मेरी भूमि है और हम उसके स्वामी है।"

प्राचीन काल मे भूमिया राजपूत बनने के लिए बडे-बडे प्रयत्न करने पडते थे और उसके बाद भी अवसर सफलता नही मिलती थी। देवला के राठौर सरदार ने बनेडा के राजा से पट्टा मंजूर करा के कुछ गामो पर अधिकार कर लिया था। उस अधिकार के बदले राठौर सरदार राजा को निर्धारित कर दिया करता था। जागीरदारी प्रथा के अनुसार राठौर सरदार को राजा के दरबार मे उपस्थित रहना चाहिए। लेकिन उस नियम के पालन मे उसने अत्यन्त शिथिलता से काम लिया। पट्टा के अनुसार किसी भी युद्ध के समय सरदार को पैतीस सवार देने चाहिए थे। जब उस प्रकार का समय उपस्थित हुआ तो वह सरदार इस नियम का भी पालन न कर सका। उन दिनो मे बनेडा का राजा युद्ध मे फँसा हुआ था। जब युद्ध समाप्त हुआ तो उसने राठौर सरदार को अपने यहाँ बुलाकर कहा : "तुम्हारा जो पट्टा स्वीकार किया गया था, उसे तुम लौटा दो।"

सरदार ने उस समय कुछ न कहा और वहाँ से लौट कर उसने राजा के पास सदेश भेजा : "सेना मस्तक और देवला की जागीर एक साथ है। जागीर को मेरे मस्तक से और मस्तक को इस जागीर से अगल नही किया जा सकता।"

इस अभिमान के कारण राठौर सरदार के अधिकार की भूमि छीन ली गयी। सरदार के नियम विरुद्ध कार्यो के कारण उसका पट्टा रद्द कर दिया गया।

भूमिया राजपूतो का पद सामन्त शासन-प्रणाली मे इतना सम्मानपूर्ण माना जाता है कि उस पद के लिए प्रधान श्रेणी के सामन्त भी चेष्टा किया करते है। उसकी सब से बडी विशेषता यह है कि इसके लिए कोई पट्टा नही होता और सभी सामन्तो मे इस प्रकार के अधिकारी को अनेक बाधाओ से मुक्त समझा जाता।

बनेडा और शाहपुर के राजा—मेवाड राज्य मे बनेडा और शाहपुर के सामन्त स्वतत्र रूप के राजा माने जाते है। उन दोनो सामन्तो को राजा की उपाधियाँ मिली है। ये दोनो राजा,

पडता है। इससे वे इनकार नही कर सकते, परन्तु वे लोग अपने अधिकार की भूमि के बदले मे राजा को किसी प्रकार का कर नही देते। भूमिया लोगो के साथ राज्य के जो नियम चलते है, वे सभी राज्यो मे समान रूप से नही माने जाते। मेवाड मे उसके उत्तरधिकारियो को स्वीकार किया जाता है, परन्तु कच्छ मे ऐसा नही है। उनके स्वत्वो की मर्यादा अलग-अलग मानी जाती है।

सैंतालीस राजपूत सेनापतियो मे सत्रह के अधिकार मे एक हजार से पाँ
अश्वारोही और शेष तीस के अधिकार मे पाँच सौ से एक हजार तक अश्वारोही थे ।
वाड, वीकानेर, बूँदी, जैसलमेर, बुन्देल खण्ड और सिखावत के राजा एक हजार से
रोही सैनिकों के सेनापति थे । मुगलो के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होने के कारण अम्बे
पाँच हजार अश्वारोही सैनिको के सेनापति होने का अधिकार मिला था ।

मारवाड का राठौर राजा उदयसिह एक हजार अश्वारोहियो का सेनापि
मारवाड के राजवश की शाखा मे उत्पन्न होने वाले वीकानेर के रायसिह को केवल
अश्वारोहियो का सेनापतित्व मिला था । चन्देरी, करौली, दतिया के स्वतत्र राजा
राजा लोग तथा सिखावत के राजा नीची श्रेणी के सेनापति थे और वे चार सौ से
अश्वारोहियो के सेनापति थे । इन्ही लोगो मे शक्तावत वश के लोग भी थे । जिन
राणा प्रताप के साथ झगडा करने के बाद सम्राट अकबर ने लगभग सभी राजपू
अपनी अधीनता मे ला कर उन्हे अपने यहाँ सेनापति वना लिया था ।

वादशाह अकवर ने अपनी दूरदर्शिता और राजनीति से दो लाभ उठाये ।
वैवाहिक सम्बन्ध कायम करके उसने उनको अपनी तरफ आकर्पित किया । उसके
राजपूतो के मनोभावो से उसके विदेशी होने का भाव दूर हो गया । दूसरा लाभ उ
कि जिन राजाओ की स्वाधीनता का उसने अपहरण किया, वे उसके विद्रोही होने के
के सेनापति वनकर सदा उसके शासन को सुदृढ वनाते रहे ।

अकवर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने मुगल सिहासन पर वैठकर जिस उदार न
लिया था, औरङ्गजेव उस नीति का अनुयायी न वन सका । वादशाह शाहजहाँ के
की जो नीति रही थी, औरङ्गजेव ने अपने शासन काल मे उसे विलकुल मिटा दिया
उसने पक्षपातपूर्ण शासन आरम्भ किया, इसके फलस्वरूप हिन्दू लोग उसके विरो
राजपूत राजाओ के साथ शत्रुता का भाव पैदा हुआ । इसके पहले तक देशी राजाओ
मुगल साम्राज्य के प्रति थी, वह एक साथ तिरोहित हो गयी । समय-समय पर र
जेव का विरोध किया और उसके लडके अकवर का समर्थन करके औरगजेव को सिह
की चेष्टा की । औरगजेव की मृत्यु हो जाने के वाद फर्रुखसियर सिहासन पर वैठ
और निर्वल था । उसके शासन काल मे तैमूर के वंशजो का सुदृढ और अचल साम्र
हो गया ।

इस समय किस प्रकार की शासन-प्रणाली राजस्थान मे श्रेष्ठ मानी जा स
सही कल्पना करना इस समय सम्भव नही है । वहुत समय से इन राज्यो मे
प्रणाली रही है, उसने न जाने कितनी शताब्दियो तक सफलतापूर्वक शासन किया है

डाक्टर भी था । हेमिल्टन ने सम्राट का इलाज किया और उनकी औषधियो
गया । इसके बाद विवाह हुआ अत मे सम्राट ने डाक्टर से उसके पुरस्कार का प्रश्न
को उत्तर देते हुए डाक्टर ने कहा . "मेरे साथ मे व्यवसाय के लिए जो अंगरेज अ
अपनी कोठी बनाने के लिए हुगली मे थोडी-सी भूमि की जरूरत है ।" सम्राट ने
को स्वीकार कर लिया । अगरेजो को हुगली मे कोठी बनाने के लिए आवश्यकतानु
गयी । कोठी बन जाने से अंगरेजो को रहने, व्यवसाय के माल को रखने
करने के सुविधाएँ पैदा हो गये ।

उस विधान का पालन करना पडता है। फिर भी, प्रत्येक पट्टा मे राणा और सामन्त के बीच निर्धारित होने वाली बाते लिखी जाती है। इस शासन-व्यवस्था मे सर्वत्र लगभग यही होता है और मेवाड-राज्य मे भी बहुत प्राचीन काल से यही होता चला आया है।

राजस्थान के अन्य राज्यों के मुकाबले मे मेवाड राज्य शासन की नीति मे सदा आगे रहा है, और इसीलिए राजस्थान मे यह राज्य सदा श्रेष्ठ माना गया है। परन्तु बाहरी आक्रमणो के दिनो से मेवाड का राजनीतिक पतन आरम्भ हुआ और फिर इस राज्य की परिस्थितियाँ लगातार शिथिल होती गयी। इसी शिथिलता के फलस्वरूप मेवाड के राणा की राजनीतिक नीति निर्बल पड गयी। इस निर्बलता मे राणा ने अपने आपको शक्तिहीन बनाने का कार्य किया।

पतन के इन दिनो मे राणा की शक्तियाँ इस सीमा तक भी न रह गयी कि वे सामन्तो को नियमानुसार चलाने के लिए काफी होती। अभिषेक मे नये आने वाले सामन्तो ने उनकी इस निर्बलता का लाभ उठाया। अपनी दुरवस्था मे राणा ने मिलने वाले नजरानो पर ही सन्तोष करना आरम्भ किया। उनके इस सन्तोष का प्रभाव और भी बुरा पडा। हुआ यह कि इन दिनो मे सामन्तो के जो पट्टे लिखे गये और स्वीकार किये, उनमे विधान के अनुसार सभी नियमो की पाबन्दी नही करायी गयी और राणा उतने ही नियमो पर सन्तुष्ट हो गया।

इस प्रकार की परिस्थितियो मे नये सामन्तो के अभिषेक निर्बल पडने लगे। कुछ पट्टे तो ऐसे भी लिखे गये, जिनमे नजराने का भी कोई उल्लेख न था। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि राणा ने कुछ सामन्तो को नजराने से भी मुक्त कर दिया था। इसी प्रकार विधान के और भी नियम है, जिनका पालन नये पट्टो मे ठीक-ठीक न होने लगा। इस प्रकार नियम और विधान के विरुद्ध चलने से राणा की शक्तियाँ क्षीण पड गयी और सामन्त लोग मनमानी करने लगे। विवाह चलाने का जो अधिकार सामन्तो को न था उसका भी दुरुपयोग हुआ। कुछ इस प्रकार की बातो के कारण राणा की जो आर्थिक आय होती थी, वह भी नष्ट हो गयी।

राज्य के प्रधान सामन्त अपनी व्यवस्था मे राजा का अनुकरण करते है। जिस प्रकार मंत्री से लेकर पनवाडी तक राजा के यहा कर्मचारी रहते है, उसी प्रकार प्रधान सामन्तो के यहा भी मन्त्री से लेकर छोटे-छोटे कर्मचारी पाये जाते है। राजा की तरह उनके भी महल होते है और पूजा करने के लिए राजा की भाँति उन सामन्तो के अपने-अपने मन्दिर होते है। राजा का अनुकरण करके उसी प्रकार श्रेष्ठ सामन्त नौबतखाना मे प्रवेश करते है, गाने-बजाने वाले तुरन्त खडे होकर सामन्तो का अभिवादन करते है और उनकी जै-जैकार करते है।

सामन्त के सिंहासन पर बैठ जाने के बाद सभी लोग अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार वहाँ पर बैठते है। सब से पहले सामन्त के स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की जाती है। बैठे हुए लोगो की ढाले जब परस्पर टकराती है तो उनके आघात से उठने वाली आवाज सामन्त के राज-दरबार मे गूँज उठती है।

राजपूत—योरप के राज्यो की तरह मेवाड मे सामन्तो के द्वारा राजा का हाथ चुम्बन करने अथवा राज्य-भक्ति प्रदर्शित करने के लिए शपथ ग्रहण करने की प्रथा नही है। बल्कि जब कोई सामन्त नियुक्त किया जाता है तो राजा के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए उसका यह कहना अथवा लिखना ही काफी होता है : "मै आपका बालक हूँ। मेरा सिर और मेरी तलवार आपकी है और मेरी सेवाये आपके आदेश पर निर्भर है।" राजपूतो के प्रति विश्वासघात की कल्पना नही की जा सकती। उनके त्याग और बलिदान की घटनाये अगणित है उनमे से कुछ इन पृष्ठो मे लिखी

राजा और सामन्तो का सबसे बडा कर्त्तव्य यह है कि वे एक दूसरे का सम्मान क
का कर्त्तव्य है कि वह सामन्तो को सम्मान दे और सामन्तो का कर्त्तव्य है कि वे अपने
प्रति सदा राज-भक्त बने रहे। इस प्रकार राजा और सामन्त मिलकर अपने राज्य के कल
बात सदा सोचे। सामन्त शासन-प्रणाली का सबसे श्रेष्ठ उद्देश्य यही है।

सरदारो का सगठन—सामन्त शासन-प्रणाली मे राजा और सामन्तो
जितना महत्व रखते है, उनसे कम महत्व राज्य के सरदारो का नही होता। वे सामन्तो के
के प्रमुख व्यक्ति होते है। उनके जीवन के कार्य सामन्तो के कार्यों के साथ बधे रहते है
के लिये जाना, राज दरबार मे उपस्थित होना युद्ध स्थल मे पहुँच कर युद्ध करना और
सहार करना राज्य के सरदारो का मुख्य कार्य होता है। सरदार प्रमुख रूप से सामन्तो
से सम्बन्ध रखते है। वहाँ पर उनकी उपस्थिति अनिवार्य रूप से आवश्यक होती है। उ
हो सकने वाले दिनो के लिये सरदारो को नियमानुसार छुट्टी लेनी पडती है। राज्य का
उत्तरदायित्व सरदारो पर होता है।

जहाँ राजा, सामन्त लोग और सरदार अपने-अपने कर्त्तव्यो का भली प्रकार
है, वहाँ पर सामन्त शासन-प्रणाली कभी असफल नही हो सकती।

प्रपौत्रों मे बराबर चला जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि विभाजन होते-होते एक दिन किसी अच्छी जागीर के भी सैकड़ो और हजारों टुकड़े हो जाते है और उस जागीर का महत्व नष्ट हो जाता है।

चरसा—चरसा शब्द का अर्थ चर्म होता है। भूमि की नाप के लिए इस चरसा शब्द का प्रयोग किया जाता है। अग्रेजी मे इसको हाइड कहते है। एक अश्वारोही सैनिक के भरण-पोषण और सैनिक जीवन व्यतीत करने के लिये जितनी भूमि उसे दी जाती है, मेवाड़ मे उसकी नाप चरसा के नाम पर की जाती है। जागीरदारी प्रथा के अनुसार, तीसरी श्रेणी के सैनिक मेवाड़ मे जितनी भूमि पाते हैं, इगलैंड मे भी उस श्रेणी के सैनिक को उतनी ही भूमि उस प्रथा के अनुसार मिलती है। राजस्थान मे भूमि की नाप मे चरसा शब्द प्रयोग किया जाता है और इगलैंड मे हाइड के द्वारा भूमि की नाप होती है। दोनो का अर्थ एक ही है। दोनो का उपयोग भी एक ही अर्थ मे होता है।

इगलैंड मे ऐंग्लो नार्मन शासन का आरम्भ भूमि की इसी नाप के द्वारा हुआ था। मेवाड़ मे एक चरसा भूमि एक अश्वारोही सैनिक को दिये जाने का नियम है। इंगलैंड मे नाइट उपाधि के फौजी आदमी को चार हाइड भूमि देने का नियम था। इस भूमि का परिमाण [illegible] एकड़ के बराबर है। मेवाड़ मे एक चरसा भूमि का नाप पच्चीस से तीस बीघा तक का होता है।

एक सामन्त के नाम जितनी भूमि का पट्टा होता है, वह भूमि उसके परिवार मे पैतृक अधिकारो के नाम पर विभाजित होती-होती किसी समय इतनी छोटी रह जाती है कि उसमे एक छोटे से परिवार का भी जीवन-निर्वाह कठिन हो जाता है। पैतृक अधिकार का यह नियम जागीरदारी प्रथा मे महत्व रखता है परन्तु जागीर की रक्षा के लिए वह किसी प्रकार महत्वपूर्ण नही माना जा सकता है।

राजपूतो के सगे भाइयो और परिवार के लोगो मे जो प्रायः झगड़े पैदा होते है उनका कारण यही पैतृक अधिकार है। यह अधिकार सुनने मे बड़ा अच्छा मालूम होता है। लेकिन इसका परिणाम भयानक होता है। पैतृक अधिकारो ने अधिक सख्या मे राजपूतो को न केवल अकर्मण्य बना दिया है, बल्कि बाप-दादो और सगे भाइयो का सर्वनाश करने के लिए अनेक प्रयत्नो पर प्रोत्साहन दिया है।

इस पैतृक अधिकार के दुष्परिणामो को प्राचीनकाल के जर्मनी के लोग जानते थे। इसीलिये अपने यहाँ की सामन्त शासन-प्रणाली के विधान मे उन लोगो ने इस अधिकार को स्थान नही दिया था। वहाँ पर ऐसा कोई नियम नही है जिसके अनुसार किसी सामन्त की जागीर अथवा भूमि उसके क्रमश उत्तराधिकारियो मे बाँटी जा सके। सामन्त का बड़ा लड़का ही केवल उसका उत्तराधिकारी होता है। X उत्तराधिकारियो मे जागीर के बाटने का प्रश्न बहुत भयानक है और न बाँटने की व्यवस्था मे सामन्त के भाइयो और बेटो के लिए क्या होना चाहिए, इसका निर्णय भी आसानी के साथ नही किया जा सकता। जागीर मे पैतृक अधिकार होने के कारण सामन्त के परिवार का कोई भी एक चाहे वह भाई हो अथवा बेटा सहज ही अपना अधिकार चाहता है। इसी अधिकार के नाम पर प्रास

X अन्य देशो की तरह इगलैंड मे भी सामन्त शासन-प्रणाली के द्वारा शासन चलता था। सामन्तो को उन्ही तरीको से वहाँ भी भूमि दी जाती थी, जिन तरीको से दूसरे देश के राज्यो मे। परन्तु इंगलैड के प्रथम एडवर्ड ने यह नियम बना दिया था कि किसी सामन्त की जागीर उत्तराधिकारियो मे बाँटी नही जा सकती।

देने का एक नियम बना दिया गया। उसका निर्णय सामन्त का पद प्राप्त करने वाले क
अनुसार किया गया।×

फ्रास मे अभिषेक हो जाने के बाद सामन्त को प्राचीन विधान के अनुसार अ
एक वर्ष की पूरी मालगुजारी राजा को देनी पडती थी। यही अवस्था मेवाड राज्य
सामन्त अपनी भूमि की एक वर्ष की मालगुजारी राणा को देता था। यह नियम
बहुत दिनो तक चलता रहा।

मेवाड राज्य मे जब किसी सामन्त की मृत्यु हो जाती है तो राणा उस सामन्त
काम करने के लिए जुबती लोगों को भेजा करता है।*

जुबती लोगो का अध्यक्ष उस सामन्त के क्षेत्र मे पहुँचकर राणा की तरफ से
लेते है। उस अध्यक्ष के साथ दीवानी का एक अधिकारी और कुछ सैनिक रहा करते
आदमियो के द्वारा वहाँ पर अधिकार हो जाने पर जिस सामन्त की मृत्यु हो जाती है, उ
धिकारी उस पद को प्राप्त करने के लिए राणा के पास प्रार्थना-पत्र भेजता है। उस
नजराना देने की प्रतिज्ञा को साफ-साफ लिखना पडता है।

प्रार्थना-पत्र के बाद नजराना राणा के पास पहुँच जाता है। उसके पश्चात् प्र
दरबार मे बुलाया जाता है। वह राणा के पास पहुँचकर अपने प्रार्थना-पत्र के अनुसा
का, जिसके लिए उसने प्रार्थना पत्र भेजा है, सामन्त बनाये जाने के लिए निवेदन कर
उसे सनद देता है और पुरानी प्रथा के अनुसार उसका अभिषेक कार्य आरम्भ होत
सामन्त की कमर मे एक तलवार बाँधी जाती है। मेवाड मे यह अभिषेक बडे उत
मनाया जाता है। उस उत्सव मे राज्य के सभी सामन्त एकत्रित होते है। इस अभिषेक मे
के बाद राणा उस नवीन सामन्त को घोडा, दुशाला और अन्य बहुमूल्य चीजे देकर सम्मा

जब इस अभिषेक का कार्य समाप्त हो जाता है तो जुबती लोग उस इलाके
राजधानी मे आ जाते है और नवीन सामन्त वहाँ का अधिकारी बन जाता है। उस द
से पहले अपने यहाँ के गुरुजनो का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके पास जात
पश्चात् अभिषेक का कार्य समाप्त होता है।

अभिषेक के समय नवीन सामन्त की कमर मे तलवार बाँधने का उल्लेख ऊ
अभिषेक की प्रथा का यह एक नियम है। इस नियम का पालन राजपूतो मे
पर भी होता है। जब कोई राजपूत बालक अस्त्र धारण करने योग्य हो
समय इसी प्रकार उसकी कमर मे तलवार बाँध कर इस नियम का पालन किया
उत्सव मनाया जाता है। उस उत्सव का उद्देश्य यह होता है कि आज से यह राजपूत
धारण करने का अधिकारी समझा जाता है। राजपूतो मे इस नियम को खड्गबन्धी
से पुकारा जाता है।

यह प्रथा राजपूतो का एक वीरोचित कार्य है। इस प्रकार के उत्सव के द्वारा

×अर्ल लोगो का उत्तराधिकारी, पिता का पद और उसकी जागीर को प्राप्त
एक सौ पौण्ड देता था। बैरन लोगो का उत्तराधिकारी एक सौ मार्क और नाइट लोग
धिकारी एक सौ शिलिंग नजराने मे देता था।

* किसी सामन्त के मर जाने पर उसके अधिकृत क्षेत्र पर राणा का अधिका
के लिए जो लोग जाते है, उनको जुबती कहा जाता है।

दसवाँ परिच्छेद

राजस्थान मे कर—भूमिया सामन्तो की स्वतंत्रता—गुलामी की प्रथा मे योरप और राजस्थान—भूमि के निर्बल अधिकारी—गुलामो की जातियाँ—जर्मनी और राजस्थान मे गुलामी का प्रचार—दासी लोगो की गणना—राजपूतो का चरित्र—उनमे कृतज्ञता की भावना—बदला लेने की प्रवृत्ति ।

रखवाली—सामन्त शासन-प्रणाली मे पूर्वी और पश्चिमी राज्यो के जो नियम एक दूसरे के साथ बहुत कुछ समानता रखते है, उन पर हम इस परिच्छेद मे प्रकाश डालने की कोशिश करेगे । बढती हुई अशान्ति, अरक्षा और अराजकता मे प्रजा के धन और प्राणो की रक्षा करने के लिए जिस प्रकार के कर को जन्म दिया गया, वह रखवाली के नाम से प्रसिद्ध हुआ । इसी प्रकार की अशान्ति और अरक्षा के दिनो मे योरप के राज्यो मे सेलवामेन्टा नाम का कर लगाया गया था । रखवाली का अर्थ रक्षा करना है । यह कर राजस्थान के राज्यो मे थोडा-बहुत हमेशा रहा है । परन्तु पिछले पचास वर्षो से यह कर भयानक हो उठा है ।

रक्षा की आवश्यकता होने पर इस कर की सृष्टि हुई । आवश्यकता पडने पर सरक्षक खोजे गये अथवा वे अवसर देखकर स्वय पैदा हो गये । जिन लोगो ने रक्षा करने का कार्य किया, उनको उसका मूल्य अदा किया गया । यह अदायगी कई तरीको से की गयी । उस रक्षा का मूल्य अधिकतर सम्पत्ति के द्वारा किया गया और कभी-कभी खेतो की पैदावार मे उस रक्षा की कीमत चुकाई गयी । अनेक अवसरो पर रक्षा करने वालो ने बिना किसी नियम और व्यवस्था के भूमि पर अधिकार कर लिया और मनमाना उसका लाभ उठाया ।

जिन लोगो ने रक्षा करने का व्यवसाय आरम्भ किया, उनका मुख्य उद्देश्य भूमि पर अधिकार करना रहा । भूमिया सामन्तो की तुलना हम योरप के उन सामन्तो के साथ कर चुके है, जो किसी प्रकार का कर अपने राजा को न देते थे । वे सामन्त जिस भूमि पर अधिकार पा जाते थे, उसके वे सदा के लिए स्वामी बन जाते थे और उसमे फिर किसी प्रकार का कोई सशोधन और परिवर्तन नही होता था ।

अरक्षित अवस्था मे प्रजा ने जिन लोगो का आश्रय ग्रहण किया, उन्होने प्रजा की रक्षा कर के अपनी रक्षा के मूल्य मे प्रजा के भूमिया स्वत्व पर अधिकार करना आरम्भ किया । यह पहले लिखा जा चुका है कि राज्य की कुछ भूमि, जो सामन्तो को नही दी जाती थी, वह मेवाड मे राणा के अधिकार मे रहती थी । बाहरी अत्याचारो के दिनो मे जब राणा की शक्तियाँ बहुत निर्बल पड गयी थी, उन दिनो मे राणा की आश्रित प्रजा के सामने अधिक सकट उपस्थित हो गये थे । प्रजा को अपने समीपवर्ती सामन्त का आश्रय लेना पडा । उस रक्षा के बदले प्रजा को अपने सरक्षक की दासता स्वीकार करनी पडी । जिन लोगो ने अपनी अरक्षित अवस्था मे सहायता प्राप्त की, उनको वर्ष मे कई-कई महीने सामन्तो के यहाँ जाकर खेती का कार्य करना पड़ा । यह अवस्था मेवाड-राज्य मे अपने आप फैली और उसके कारण प्रजा के सामने भीषण सकट पैदा हो गये । सन् १८१८ ईसवी मे राणा के साथ राज्य के सामन्तो ने जो नयी सधि की, उससे राज्य की यह दुरवस्था दूर हुई ।

जो राजपूत अपने परिश्रम, त्याग और पुरुषार्थ से राज्य का उपकार करते
तरफ से उनको जीवन भर अधिकार मे रखने के लिए राज्य की भूमि दी जाती है।
द्वारा मेवाड राज्य मे ऐसा होता है उसका नाम चारुत्तर है। अर्थात् यह नियम
नाम से प्रसिद्ध है। जिसको इस प्रकार की भूमि दी जाती है, उसके मर जाने के
भूमि पर अधिकार कर लेता है। जिन लोगो को इस प्रकार की भूमि इस अधिका
जाती है कि उनकी मृत्यु के बाद, उनकी सतान अधिकारिणी होगी, ऐसे लोगो की
किसी विशेष कारण के वापस नही लिया जाता। भूमि अधिकारी की मृत्यु हो
उत्तराधिकारी का हक होता है।

आर्थिक सहायता—राज्य मे कितने ही ऐसे अवसर भी आते है, जब रा
आवश्यकता होती है। इस प्रकार के अवसरो पर राजा साधारण प्रजा से उ
दसवाँ भाग लेने का अधिकारी होता है। अपने-अपने क्षेत्रो मे सामन्त लोग भी ऐसा

इस प्रकार के अवसरो मे राजा की लडकी का विवाह भी एक है। उसके
साधारण प्रजा से सहायता ली जाती है। कई वर्ष पहले राणा की दो लडकियो
का विवाह हुआ था। उन विवाहो के खर्च के लिये राणा ने सर्व साधारण से उनकी
भाग वसूल किया था। लेकिन प्राय देखा जाता है कि ऐसे अवसरो पर सभी लोगो
नही हो पाता और अन्त मे राज्य के बहुत से लोग उससे छूट जाते है।

ऐसे अवसरो पर निर्धन और धनी-सभी प्रकार के लोगो से धन सग्रह कि
वैवाहिक कार्यो से सम्बन्ध रखने वाले अवसर प्रजा के सामने बार-बार नही आते,
में आते है। इसीलिये प्रजा इच्छापूर्वक उसके लिये तैयार रहती है।

प्राचीन काल मे सामन्त शासन-प्रणाली का जो विधान था, वह आज से
भिन्न था। प्रसिद्ध इतिहासकार हालम ने लिखा है कि प्राचीन काल मे किसी प्रका
लिया जाता था। आवश्यकता के समय राजा लोग धन एकत्रित कर लिया करते थे।
काल का वह विधान अब मिट गया है और राजा सामन्तो से कर लेने लगा है।

राजाओ की तरह सामन्त लोग भी अपनी लडकियो के विवाह मे प्रजा से
करते है। प्रजा को ऐसे अवसरो पर आर्थिक सहायता देनी पडती है। लडकियो
आर्थिक सहायता करना प्राय लोग परमार्थ समझते है। फ्रास की प्राचीन सामन्त
मे भी इसी प्रकार के नियम धन संग्रह करने के लिये काम मे लाये जाते थे।

धन सग्रह करने के अवसर और भी कितने ही राज्य के सामने आते थे।
भी धन सग्रह किया जाता है। शत्रुओ के आक्रमण करने पर अथवा सधि करके
से धन एकत्रित किया जाता है, शत्रुओ के द्वारा बन्दी हो जाने पर, दण्ड स्वरूप धन
पाने के लिये राज्य मे धन संग्रह किया जाता है। राजस्थान के राज्यो मे ऐसे अव
आते थे, जब राज्य के सामन्त शत्रुओ के द्वारा बन्दी हो जाते थे और उनके छुटक
एकत्रित किया जाता था।

जागीरदारी प्रथा का यह नियम प्राचीन काल मे कदाचित योरप के राज्यों
तो इङ्गलैड के राजा रिचर्ड को बहुत दिनो तक बन्दी अवस्था मे आस्ट्रिया मे न

नाबालिग सामन्त का संरक्षण—किसी सामन्त की मृत्यु के बाद जब उसका
नाबालिग होना है तो सामन्त शासन-प्रणाली के विधान के अनुसार उस नाब

गोला—गोला का अर्थ दास अथवा गुलाम होता है। भीषण दुर्भिक्षो के कारण राजस्थान मे गुलामो की उत्पत्ति हुई थी। उन अकालो के दिनो मे हजारो की सख्या में मनुष्य बाजारो मे दास बना कर बेचे जाते थे। पहाडो पर रहने वाली [illegible] और दूसरी लुटेरी जातियो के अत्याचार बहुत दिनो तक चलते रहे और उन्ही जातियो के लोगो के द्वारा बाजारो मे दासो की बिक्री होती थी, वे लोग असहाय राजपूतो को पकडकर अपने यहाँ ले जाते थे और उसके बाद बाजारो मे उनको बेच आते थे।

इस प्रकार जो निर्धन और असहाय राजपूत खरीदे और बेचे जाते थे, उनकी सख्या राज-स्थान मे बहुत अधिक हो गयी थी और उन लोगो की जो सन्तान पैदा होती थी, वह गोला के नाम से प्रसिद्ध हुई। उन गुलाम राजपूतो को गोला और उनकी स्त्रियो तथा लडकियो को गोली कहा जाता था। योरप मे इसी प्रकार के [illegible] होते थे। गोला लोग अपने बाये हाथ मे चाँदी का खडुवा पहना करते है। [illegible]।

ये गोला लोग अपनी माता के वंश के अनुसार पुकारे जाते है। इन गोला लोगो मे राज-पूतानी मुसलमानी और अनेक दूसरी जातियो के लोग पाये जाते है। बाजारो मे उन सबका क्रय और विक्रय होता है। बहुत से राजपूत सामन्त इन गोला लोगो की लडकियो को अपनी उप-पत्नी बना लेते है और उनसे जो लडके पैदा होते है, वे सामन्तो के राज्य मे ऊँचे पदो पर काम करने नियुक्त कर दिये जाते है। देवगढ का स्वर्गीय सामन्त जब उदयपुर राजधानी मे आया करता था तो उसके साथ तीन सौ सवार और गोला सैनिक आया करते थे। उन सैनिको के बाये हाथो मे एक-एक सोने का खडुवा होता था।

प्राचीन जर्मन जातियो मे जुआ खेलने का बहुत प्रचार था। टेसीटस नामक रोमन इतिहास-कार ने उन जातियो के जुए का वर्णन करते हुए लिखा है कि "वहाँ पर जुआ खेलते हुए अन्त मे जिनकी हार होती थी, उनको गुलामो के बाजार मे ले जाकर बेचा जाता था।" जर्मन जातियो की तरह जुआ खेलने का प्रचार राजपूतो मे बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है। भारतवर्ष के प्राचीन ग्रन्थो से साफ जाहिर होता है कि जुआ के कारण इस देश के प्राचीन वंशो का किस प्रकार सर्वनाश हुआ है। इस देश मे कुरुक्षेत्र का महाभारत न होता, यदि पाण्डवो और कौरवो मे जुआ खेलने की आदतें न होती और उस महाभारत के युद्ध मे अगणित वीरो ने अपनी आहुतियाँ न दी होती। सक्षेप मे यहाँ पर यह कहना अनुचित नही है कि जुआ खेलने की आदतो के ही कारण उन्नति के शिखर पर पहुँचा हुआ भारतवर्ष मटियामेट हो गया। जुआ खेलने की आदत के ही कारण युधिष्ठिर को अपना राज सिंहासन खोना पडा था और जुआ खेलने की आदतो के ही कारण प्रतापी पाण्डवो को द्रौपदी का असह्य अपमान अपने नेत्रो से देखकर भी चुपचाप रहना पडा था। जुआ खेलने के दुष्परिणामो का बहुत बडा इतिहास हिन्दुओ के ग्रन्थो मे है। आश्चर्य यह है कि जिस गन्दी और अनैतिक आदत के कारण इस देश का सर्वनाश हुआ है, उस आदत का उसकी अनैतिकता का आज तक अन्त नही हुआ। सब-कुछ खोने के बाद भी राजपूतो ने अपने जीवन मे जुआ खेलने की आदतो को आज तक कायम रखा है। राजस्थान के राज्यो मे आज भी जुआ खेलने का प्रचार बहुत अधिक है।

ऊपर गोल लोगो का वर्णन किया गया है। जो राजपूतानी गोली लडकियाँ मेवाड के सामन्तो से पुत्र उत्पन्न करती है और जो राणा के सम्पर्क मे लडके पैदा करती है, वे सभी दासो के नाम से पुकारे जाते है। इन दासो को सामन्तो से अथवा राणा के राज्य से जीवन निर्वाह के लिए भूमि मिलती है। परन्तु समाज मे उनकी कोई प्रतिष्ठा नही दी जाती।

हैं। उसका पट्टा स्थायी नही होता। एक निश्चित समय के बाद वह फिर ۹
पुराना रद्द कर दिया जाता है। इसके लिए ग्राम्य ठाकुर अथबा सामन्त को निर्धा
पालन करना पडता है और राजा को नजरना देना पडता है।

भूमिया सामन्त को इसी प्रकार पट्टा पर भूमि मिलती है। लेकिन उसके
दूसरे होते है, उसका पट्टा बिना किसी कारण के रद्द नही होता और उसे नया नही
भूमिया अपने पट्टे का दीर्घकाल तक प्रयोग करता है। उसके लिए उसे कोई
पडता है। लेकिन उसका साधारण किराया वार्षिक उसे अदा करना पडता है
उसके आवश्यकता पडने पर राज्य मे या बाहर निश्चित समय के लिए काम करना
राज्य मे ये भूमिया राजपूत ठीक उसी प्रकार के सामन्त पाये जाते है, जिस प्र
राज्यो मे बिना किसी शर्त के भूमि के अधिकारी सामन्त होते थे। परसिया
सामन्तो को जमीदार कहा जाता था। उन जमीदारो और मेवाड के भूमिया
अन्तर नही है।

ग्राम्य— यह शब्द ग्रास से बना है। इस शब्द की उत्पत्ति केल्टिक भाषा
मालूम होती है। केल्टिक भाषा मे ग्वास का अर्थ नौकर अथवा दास होता है। ह
कहाँ तक सही है, हम ठीक नही कह सकते किसी शब्द की उत्पत्ति का उत्तरद
के अधिकारियो पर हो सकता है और उन्ही पर मै इसका निर्णय छोडकर आगे
हूँ। जो अधिकारी है, इस शब्द के सम्बन्ध मे अपना निर्णय करते रहेगे और ज
विवाद मे पडना चाहते है, वे उनके नियम का लाभ उठावेगे।

परिवर्तनशील—जो सामन्त मेवाड राज्य मे बहुत दिनो से भूमि अधिका
भूमि पर अपनी इच्छा से अथवा किसी कारण के पैदा होने पर राणा अपना अ
है अथवा नही, यह प्रश्न सदा से विवादपूर्ण रहा है।

प्राचीनकाल मे योरप के राज्यो मे शासन की जो प्रणाली प्रचलित थी,
अनुसार वहाँ पर सामन्त लोग अपने जीवन-भर मिली हुई भूमि के अधिकारी र
का नियम आज भी वैसा ही है। किसी सामन्त की मृत्यु के बाद उसका अ
अधिकार मे आ जाता है। योरप की यह प्रणाली अनेक अगो मे मेवाड की
यहाँ पर जिस सामन्त को सनद देकर भूमि दी जाती है, उसका निर्णय उ
उसके पट्टे मे ही कर दिया जाता है। इस प्रकार का निर्णय मेवाड मे प्रचलित
होता है।

मेवाड-राज्य मे किसी सामन्त के मरने पर उसका उत्तराधिकारी रा
नजराना देकर और राणा के द्वारा अभिषिक्त होकर सामन्त होने का पद प्राप्त
साफ अर्थ यह है कि मृत सामन्त के उत्तराधिकारी को उसके स्थान पर स्वीक
करना राणा के अधिकार मे है। परन्तु मेवाड के राणा उत्तराधिकारियो को
करते चले आ रहे है इसलिए उनका यह अधिकार प्रयोग मे न लाये जाने के
बन गया है।

इसके सम्बन्ध मे अनुसंधान करने के बाद स्वीकार करना पडता है
उत्तराधिकार की प्रार्थना को स्वीकार करना और न करना राणा के अधिकार
सग्रामसिह के शासनकाल मे इस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई थी और उन
धिकारियो को स्वीकार किया गया था। लेकिन लगभग दो शताब्दी से यह प्रथा

राजपूतों के स्वभाव मे बदला लेने की भावना—राजपूतों का जिस प्रकार सर्वनाश और पतन हुआ है, उसका कारण बाहरी आक्रमणकारियो के अत्याचार की अपेक्षा, उनका आपस का वैमनस्य अधिक है। इस जाति मे वदला लेने की भावना बहुत प्रबल है और इस भावना ने ही मेवाड को स्मशान वना दिया है।

जीवन की साधारण बातो मे राजपूतो का उन्मत्त हो जाना और भयानक संघर्ष पैदा कर देना उनके स्वभाव की मामूली बात है। राजस्थान के राज्यो का सम्पूर्ण इतिहास इन घटनाओ से भरा हुआ है, जिनसे हमारे इस विश्वास का समर्थन होता है। यद्यपि इस समय मेवाड की परिस्थितियाँ वदल गयी है। राजस्थान का परम रमणीक राज्य मेवाड अब फिर से सुख और शांति का जीवन व्यतीत करने लगा है। मेवाड राज्य के विस्तृत क्षेत्र मे कुछ बाकी न रह गया था। भयानक वाघ और जगली सूअर राजधानी उदयपुर के भीतर रात-दिन घूमा करते थे। राजप्रासाद के भीतर उनके रमणीक कमरो मे गीदड प्रवेश करते थे। प्रासाद के जिस विशाल प्रांगण मे सामन्त लोग अपनी सेनाओ के साथ आते थे, उसमे घासो की वृद्धि हो गयी थी, वह रमणीय स्थान बडी-बडी घासो से भरा था और राणा स्वयं उस घास को पार करता हुआ अपनी राजधानी मे प्रवेश करता था। वह समय मेवाड के जीवन से अब तिरोहित हो चुका है और सम्पूर्ण राज्य अब फिर से शांतिपूर्ण जीवन का अनुभव करने लगा है, यह प्रसन्नता की बात है।

वदला लेने की भावना राजपूतों मे इतनी अधिक है कि उनमे एक भी राजपूत को सरल समझना कठिन मालूम होता है। एक निर्बल राजपूत भी अपना वदला लिया चाहता है। वह सब कुछ कर सकता है। लेकिन वदला लिए बिना नहीं रह सकता है। राजपूत मान सम्मान को वहुत अधिक महत्व देते है। किसी भी दशा मे यदि वे अपने अपमान का वदला न ले सके तो वे अपने आपको वहुत घृणित और पतित समझते है।

स्वाभिमान की यही भावना प्राचीन सेक्सन लोगो मे मौजूद थी। परन्तु राजपूत उनसे सदा से वहुत आगे रहे है। सेक्सन लोगो मे यह पुरानी प्रथा थी कि जब कोई किसी को क्षति पहुँचाता था, अथवा अपमानित करता था तो उस अपराध के दण्ड मे कुछ निर्धारित नियम के अनुसार उसे धन देना पडता था। उगली, अगूठा और इस प्रकार के शारीरिक छोटे-छोटे अगो को क्षति पहुँचने से अपराधी को अर्थ—दण्ड देने की व्यवस्था थी। किस अग के कट जाने से अथवा आघात पहुँचाने से अपराधी को क्या देना पडेगा इसका सेक्सन लोगो मे एक विधान था। परन्तु राजपूतो की अवस्था ऐसी नही है। वे रक्त के बदले रक्त चाहते है। इस प्रकार के अपराधी को अर्थ दण्ड दिये जाने पर राजपूत को संतोष नही हो सकता।

जीवन की छोटी-मोटी वातो मे स्वाभिमान के नाम पर उन्मत्त हो जाना अच्छा नही होता। राजपूतो मे यह एक स्वाभाविक कमजोरी है, जो वहुत प्राचीन काल से उनमे चली आ रही है।

माता वीमार हो गयी और उसकी मृत्यु का समय वहुत समीप आ गया। किसी प्रकार उसके वचने की आशा न रही। उस समय मृत्यु शैया पर पडी हुई माता ने अपने छोटे पुत्र को देखने की लालसा प्रकट की। ऐसे अवसर पर मराठा लोगो से मिलकर मैंने उन राजपूत युवको को कैद से छुडवा दिया। वंदी अवस्था से छूटकर पूरावत सरदार के छोटे भाई को अपनी माता के पास पहुँचकर उसके अतिम दर्शन करना चाहिए था। परन्तु उसे जब मालूम हुआ कि मेरे द्वारा उसको मुक्ति मिली है तो वह अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मेरे पास पहुँचा। मै उससे वहुत प्रभावित हुआ और उसको तुरन्त उसकी माता के पास भेज दिया।

किसी सामन्त की मृत्यु हो जाने के पश्चात्, उसके पुत्र प्रपौत्र उत्तराधिक
उस जागीर का अधिकार प्राप्त करते है। लेकिन उनके इस अधिकार की र
निर्भर है। वह उनको अनधिकारी घोषित कर सकता है। जागीरदारी प्रथा का
पुराना है।

राणा के सामन्तों मे राठौर, चौहान, प्रमार, सोलकी और भट्ट आदि स
लोग थे। सभी के साथ राणा के वैवाहिक कार्य होते थे। इन सम्बन्धो ने उन
भाव मिटा दिये थे। राठौर और चौहान सामन्तो के वश दिल्ली अनहिलवाडा
रखते है। उन वशो की लडकिया विवाहित होकर राणा के वश मे आती है। रा
भी, राणा का अनुकरण करके अपने लडको के विवाह उन्ही राजपूत वशो मे क
राणा के विवाह सम्बन्ध होते है।

वैवाहिक सम्बन्धो के कारण राजपूतो के कई एक वशो मे पारस्परिक स
है। इन सम्बन्धो के फलस्वरूप मेवाड पर आने वाली विपदाओ मे दूसरे वश के
सहानुभूति प्रकट की है, बल्कि आवश्यकता पडने पर उन लोगो ने सभी प्रकार के

मेवाड की एकता और मित्रता बहुत दिनो तक शक्ति-सम्पन्न होकर रही।
प्रहार होने पर छिन्न-भिन्न हो गयी और उस एकता के टुकडे-टुकडे होते ही आक्रम
अत्याचार करने और लूटने का अवसर मिला। सगठित मराठा दलो ने मेवाड मे
दिल्ली के मुगल सम्राट की शक्तियाँ जब तक मजबूत बनी रही, मराठो के अत्या
न उनको मेवाड के विध्वस करने का अवसर मिला।

मेवाड-राज्य का पतन और मुगलो की शक्तियो का विनाश लगभग एक
दिनो मे मेवाड पर सगठित जातियो के आक्रमण आरम्भ हुये और उनके प्राची
निर्दयता के साथ छिन्न-भिन्न करके राज्य की मर्यादा को मिट्टी मे मिला दिया।

राजपूतो के विभिन्न वशो ने मेवाड-राज्य की जागीरदारी प्रथा का आश्रय
होने के पश्चात् उन लोगो ने अपने वैवाहिक सम्बन्ध राणा वश के साथ कायम
राणा ने जिन विभिन्न जागीरो की स्वीकृतियाँ दी, उन पर हम नीचे प्रकाश डालने

काला पट्टा—यह पहले लिखा जा चुका है कि राणा रायमल और उद
जो प्रधान राजपूत शाखाये कायम की थी, उनके वशजो ने अन्यान्य राजपूतो
की और उन शाखाओ तथा उपशाखाओ मे जो पैदा हुये, वे मेवाड के श्रेष्ठ सा
मे माने गये।

चदावत और शक्तावत राजपूतो की दो प्रधान शाखाये है। चंदावत दस
शाखाओ मे विभाजित है। राजपूतो मे प्रचलित प्रणाली के अनुसार वे अपने वंश
के साथ विवाह करने के अधिकारी नही है। इन शाखाओ और उप-शाखाओ मे
विभाजित है, वे सभी सीसोदिया कुल के नाम से विख्यात है इस कुल का
लडकी के साथ विवाह नही कर सकता, यह निश्चित है।

मेवाड की जागीरो पर जो प्रभाव सीसोदिया वंश के राजपूतो का है,
और चौहानो का नही है, यद्यपि ये सभी मेवाड के सामन्त है और बहुत दिनो
जागीरो के अधिकारी होते चले आये है। इनका प्रभाव निर्बल है, इसका कारण है
के सभी सामन्त राणा वश के साथ सम्पर्क रखते है। इसीलिये उनके अधिकार श्र
सीसोदिया सामन्तो की जागीरे यद्यपि स्थायी पट्टों के अनुसार नही है, फिर

थे । वे तलवार चलाना खूब जानते थे । परिवार के लोग सामन्त से प्रसन्न थे । दिलील का दुर्ग और महल एक शिखर पर बना हुआ था । उसके पश्चिमी भाग में ऊँची चोटी के महल के ऊपर कई तोपे लगी रहती थी । उसके दुर्ग और महल के आस-पास घना जङ्गल है । इसी जङ्गल मे होकर प्रासाद मे जाने के लिए रास्ता गया है । दुर्ग और महल की परिस्थितियाँ कुछ ऐसी है कि उन पर शत्रु का आक्रमण आसानी के साथ नही हो सकता । यदि ऐसा न होता तो प्रबल पराक्रमी शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह ने कभी भी सामन्त दिलील पर आक्रमण किया होता और अपनी शक्तियो के द्वारा उसने उसको मिटा होता ।

सामन्त दिलील अपनी शक्तियो मे बहुत निर्बल था । परन्तु वह स्वाभिमानी था और राजा उम्मेदसिंह से वह किसी प्रकार डरता न था । दोनो सीमाओ के बीच की भूमि के कारण अनेक बार राणा और सामन्त के बीच झगड़ा पैदा हो चुके थे । उनमे सामन्त ने सदा बड़ी निर्भीकता से काम लिया था । राजा उम्मेदसिंह कठोर और अहंकारी होने के बाद भी वह सामन्त को कोई क्षति नही पहुँचा सका था । लेकिन सामन्त दिलील ने [illegible] राजा की जागीर मे प्रवेश करके और आक्रमण करके लूट मार की थी । अनेक अवसरो पर राजा के आदमियो को कैद करके वह अमरगढ़ ले गया था और उन कैदियो को उसने कारागार मे बन्द कर दिया था ।

सामन्त के इन व्यवहारो से राजा उम्मेदसिंह बहुत चिढ़ा हुआ था । उसके जिन आदमियो को कैद करके सामन्त कारागार मे रखता था, कई बार उन लोगो को कारागार से मुक्ति दिलाने के लिए राजा उम्मेदसिंह को रुपये देने पड़े थे । ये सब बाते ऐसी थी जो बहुत दिनो से राजा और सामन्त के बीच मे चल रही थी । राजा उसका बदला लेना चाहता था । लेकिन उसके लिए उसको कोई रास्ता न मिलता था ।

राजा और सामन्त के बीच बढ़ते हुए द्वेष के कारण जागीर के किसानो को बहुत हानि पहुँची थी । झगड़ो के कारण जो भूमि दोनो सीमाओ के बीच मे पड़ती थी, उसमे खेती न हो पाती थी । विरोधियो के द्वारा वह उजाड़ कर नष्ट कर दी जाती थी । इस प्रकार की लगातार हानि के के कारण जागीर के बहुत से किसान अपने घरो और गांवो को छोड़ कर चले गये थे । राजा उम्मेदसिंह से आस-पास, के दूसरे भूमिया सामन्त भी प्रसन्न न थे । उसका कारण राजा का अहङ्कार था

शाहपुरा का राजा उम्मेदसिंह न केवल बाहरी आदमियो के लिए अप्रिय था, बल्कि वह अपने राज्य और परिवार के लिए भी बहुत कठोर था । एक बार उसने अपने लड़के की कमर मे रस्सी बाँधकर उसको शाहपुरा के मन्दिर की ऊपरी छत से लटका दिया था और उसकी माता को बुलाकर उस भयानक दृश्य को देखने के लिए विवश किया था ।

राजा उम्मेदसिंह घोड़े पर बैठकर प्रायः इधर-उधर घूमा करता था और कभी-कभी कई-कई दिनो तक लौटकर वह अपने महल मे नही आता था । एक दिन घूमता हुआ वह सामन्त दिलील के यहाँ अमरगढ़ मे पहुँच गया । वहाँ पर सामन्त के साथ उसकी भेंट हो गयी । एक राजा को अपने यहाँ आया हुआ देखकर साधारण भूमिया सामन्त दिलील ने नम्रता के साथ उसको प्रणाम किया और अत्यन्त सम्मान के साथ वह राजा को अपने महल मे लिवा ले गया ।

सामन्त ने राजा के सत्कार मे कोई कमी न रखी । दोनो ने एक स्थान मे बैठकर अफीम का सेवन किया । × उसके बाद दोनो ने मिलकर एक साथ भोजन किया और अन्त मे आपस की

× अतिथि सत्कार के समय राजपूत लोग एक साथ बैठकर बड़े स्नेह के साथ अफीम का सेवन किया कर थे ।

पैदा होती है और उसे भायनक सकटों का सामना करना पडता है। इसीलिए भी राणा ऐसा करने का सहज ही साहस नही करता है।

सामन्त लोग दो प्रकार के मिलते है। कुछ तो राणा के वशगत है औ अन्य वशो और उनकी शाखाओ से सम्बन्ध रखते है। किसी सामन्त को पदच का सार्वजनिक विरोध होता है और सभी सामन्त राणा के साथ विद्रोह करने के लि

इस प्रकार के विघ्नो को बचाने के लिए, जब कोई सामन्त अक्षम्य अप राणा उसको पदच्युत करके उसी वंश के किसी राजपूत को उसकी जागीर पर स्व

भूमिया—मेवाड के इतिहास मे लिखा गया है कि प्राचीन काल मे रा नाम से प्रसिद्ध थे और राज्य मे वे विशेष रूप से सम्मान पाते थे। उनकी मर्या और राणा सग्रामसिंह के समय तक बराबर कायम रही। उनकी मर्यादा मे उ अन्तर नही पड़ा। सीसोदिया राजपूतो के वशज होने के कारण उनको यह म उनकी इसी मर्यादा के कारण उनको भूमिया पद प्राप्त करने का अवसर मिला

इस राज्य मे जिनके ऊपर युद्ध का उत्तरदायित्व था उनमे यही भूमि जाते थे। उनका भूमिया नाम स्वय उनकी श्रेष्ठता का परिचय देता था। मु के ये लोग जमीदार नाम से पुकारे गये। यद्यपि जमीदार और भूमिया के शा अन्तर नही है। फिर भी उन दिनो मे लोग भूमिया पद को अधिक महत्व देते मे भूमिया लोगो का ही राज्य मे प्रभुत्व था और वे राज्य के अधिकाश भाग मे भूमियालोग कमलमीर और मण्डलगढ के मैदानो मे विशेष रूप से रहा करते मे कृषि कार्य होता था।

कृषिकार्य भूमिया लोगों के पूर्वजो का कार्य था। इस व्यवसाय मे रहक अपनी युद्ध कला को नही छोडा। वे सदा तलवार, भाला और और धनुष वा कृषिकार्य मे रहकर भी वे स्वाभिमानी लडाकू लोगों मे माने जाते थे।

भूमिया लोगो के पूर्वजो और उनकी आज की संतानो के जीवन मे बहुत पूर्वजो की अपेक्षा वे आज अधिक शिक्षित और सभ्य हो गए है। राजपूतो मे मर्यादा रखते थे, उनकी लडकियो के साथ इनके विवाह कार्य होते थे और आज

इन भूमिया लोगो मे सभी प्रकार के लोग है। उनकी जागीरे बराबर तो इतनी छोटी जागीर रखते है कि उनके अधिकार मे एक ग्राम से अधिक जागीर के लिए वे लोग राणा को बहुत कम कर देते है। आवश्यकता पडने प सैनिक होकर उनको युद्ध के लिये जाना पडता है। युद्ध के दिनो मे उनके राणा की तरफ से किया जाता है। भूमिया होने के साथ-साथ ये लोग राज जाते है और युद्ध के दिनो मे वे राज्य के सैनिक समझे जाते है। युद्ध के सभी वे अधिकारी है। अपने साधारण जीवन मे, वे युद्ध के सभी अस्त्रो को प्रयोग

मेवाड के इन भूमिया लोगो की बहुत सी बाते योरप के भूमि के अधिका है।× भूमिया राजपूत मेवाड़ के अश्वारोही सैनिक है। वे किसी शत्रु के

× मेवाड के भूमिया लोगो के साथ योरप के भूमि अधिकारियो की तुलन कार हालम ने लिखा है जागीरदारी प्रथा मे भूमि के ये अधिकारी लोग शांति पर रहकर जीवन व्यतीत करते है और आवश्यकता पडने पर उनको राज्य की

राजपूतो मे आपसी कलह के अनेक कारण है। सीमा-विवाद भी उनमे से एक है। सीमा पर के अनेक झगडो ने सामन्तो और राजाओ को प्राय युद्ध के लिए तैयार कर दिया है। जैसलमेर और बीकानेर राज्यो के सीमान्तवर्ती झगडे अपना प्रमुख स्थान रखते है। लेकिन सीमा पर के झगडो का अब अन्त हो चुका है और भविष्य मे राज्यो और सामन्तो के बीच उनके कारण कोई उत्पात पैदा न होगे, इसकी पूरी आशा की जाती है। इसी आधार पर इन दिनो राज्यो मे शान्ति दिखायी देती है।

राजा और मन्त्री—राजाओ और सामन्तो के कार्यों के सम्बन्ध मे अनेक बाते लिखी जा चुकी है। राज्य मे ऐसे कितने ही अवसर आते है, जिनमे सामन्तो को अपने परिवार के साथ राजधानी मे आकर रहना पडता है। वहां पर उनके रहने का समय निर्धारित रहता है। राजधानी के कार्य से जब सामन्त वहां आते है तो परिवार के साथ-साथ उनकी सेना और नौकर-चाकर भी साथ मे आते हैं और निश्चित दिनो तक वही रहते है।

मेवाड मे जागीरदारी का यह नियम सभी सामन्तो के लिए ऐसा नही है। यहां के श्रेष्ठ सामन्त अधिक स्वतन्त्रता का लाभ उठाते है। राजस्थान के अन्य राज्यो के सामन्त जिस प्रकार शृङ्खलाबद्ध और राजा की आज्ञा मे तत्पर पाये जाते है, मेवाड के ऊँची श्रेणी के सामन्त उतने नही। अन्य राज्यो की भांति धार्मिक उत्सवो मे मेवाड के प्रधान सामन्त अपनी सेनाये लेकर राजधानी मे नही आते।

राज्य के सामने युद्ध की तरह का जब कोई गम्भीर प्रश्न उपस्थित होता है तो मेवाड के समस्त सामन्त राजधानी मे आकर अपना-अपना परामर्श देते है। राणा उनके परामर्शों की अवहेलना नही कर सकता। कुछ ऐसे अवसर भी राणा के सामने आते है, जिनका निर्णय करने के लिये राणा अपने प्रधान सामन्तो से परामर्श करता है और उनके समर्थन के आधार पर वह किसी निर्णय पर पहुँचता है।

सामन्त शासन प्रणाली मे राजा और सामन्तो का सम्बन्ध बहुत सम्मानपूर्ण और निकटवर्ती माना जाता है। सामन्त के प्रासाद के सामने आने का समाचार पाकर राणा सम्मानपूर्वक उसका अभिवादन स्वीकार करता है। इसके बाद सामन्त अपने अनुचरो के साथ राणा के दरबार मे जाता है। वहाँ पर सामन्तो के बैठने के लिए बहुमूल्य गलीचो के साथ स्थान सजाये जाते है। भोजन के समय राणा भोजनशाला मे सामन्त के साथ बैठकर भोजन करता है। राणा के दरबार मे मर्यादा के अनुसार सामन्तो को स्थान मिलता है।

राजस्थान के सभी राज्यो मे मन्त्री पद उन्ही सामन्तो को मिलता है, जो बुद्धिमान, वीर और साहसी होने के साथ-साथ राजा को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। राजा की प्रसन्नता ही मन्त्री होने वाले सामन्त की योग्यता समझी जाती है। इन मन्त्रियो को दीवानी के मामलो मे हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नही होता। एक स्वतन्त्र मन्त्री दीवानी के कार्यो का निर्णय किया करता है। राजपूत मन्त्री साधारण तौर पर युद्ध मन्त्री माने जाते हैं। दीवानी विभाग के मन्त्री- पद पर राजपूत जाति का कोई भी मनुष्य नियुक्त नही किया जाता। कार्यो के अनुसार मन्त्रियो को उपाधियाँ दी जाती है।

यहाँ के राज्यों मे मन्त्री पद पर पैतृक अधिकार चला करता है। यह प्रथा बहुत पुरानी है। कुछ अर्थों मे यह प्रथा अच्छी कही जा सकती है। लेकिन आमतौर से इस प्रकार की प्रथाओ का परिणाम अच्छा नही हुआ करता। सबसे बडी हानि यह होती है कि इन पुरानी प्रथाओ के मन्त्री पद के लिए श्रेष्ठ व्यक्ति नही मिला करते।

राणा के वश के है। बनेडा का राजा जयसिंह के वंश मे और शाहपुर का राजा रा
के वश मे उत्पन्न हुआ है। इन दोनो राज्यों की एक-सी व्यवस्था है। यदि इन राज्य
जाता है तो उसका उत्तराधिकारी राणा सनद अथवा पट्टा प्राप्त कर लेता है। नि
अभिषेक कार्य होता है और राणा धन और बहुमूल्य वस्त्र उसे भेंट मे देता है।

मामन्त शासन मे प्रणाली को यहाँ भली भाँति समझ लेने की आवश्यकता है
एक राज्य छोटे और वडे बहुत-से राजाओ मे विभाजित होता है और वे सभी रा
राजा की अधीनता मे कार्य करते है। वह प्रधान छोटे-बडे समस्त राजाओ की केन्द्र
उसके और अधीन राजाओ के बीच का एक विधान होता है। उसी विधान के अनु
शासन चलता है। ठीक यही अवस्था राजा और समन्तो के वीच की है।

छोटे वडे—सभी सामन्त एक राजा की अधीनता मे कार्य करते है। इन सा
जागीर होती है। वह छोटी-से-छोटी हो सकती है और बडी-से-बडी हो सकती है।
राज्याधिकारी होते है। परन्तु वे सभी एक बडे राजा के नियत्रण मे काम करते है
सामन्तों के वीच एक निर्धारित विधान कार्य करता है। जागीरदारी प्रथा का यही शा
के इस प्रणाली की उत्पत्ति बहुत प्राचीन काल मे हुई थी और वह फैलकर ससार
पहुँच गयी थी। यहाँ पर यह लिखना अतिशयोक्ति नही है कि प्राचीन काल मे शा
प्रणाली काम करती थी। यह प्रणाली किसी एक देश से दूसरे मे पहुँची थी, जैसा
जा चुका है और फिर उसके बाद समय और सुविधाओ के अनुसार अलग-अलग देशो
हुई थी। सामन्त शामन-प्रणाली अथावा जागीरदारी प्रथा इसके सिवा और कुछ न
का इस प्रथा के सम्बन्ध मे सभी बाते यथा सम्भव विस्तार के साथ इन पृष्ठो मे ह
चेष्टा कर रहे है और आवश्यकतानुसार, अन्य देशों की शासन-प्रणाली के साथ उसक
आलोचना करने का भी हम यथासाध्य प्रयास कर रहे है।

बनेडा और शाहपर के राजा यद्यपि मेवाड के श्रेष्ठ सामन्तो मे से थे,
सामन्तो की अपेक्षा कितने ही नियमो मे स्वतन्त्र माने जाते थे। दूसरे सामन्तो की तर
के बकसी अभिषेक मे राणा के दरबार मे नियमानुसार आना पड़ता है। ये दोन
निकटवर्ती जिले मे होने वाले राणा के किसी कार्य मे भाग लेने के लिए नियमबद्ध है

सामन्त शासन-प्रणाली के अनुसार जो नियम सामन्तों को पालन करने पडते
कुछ का पालन वनेडा और शाहपुर के दोनो राजाओ के लिए आवश्यक है। लेकिन इध
दोनो राजा अपने कर्त्तव्य पालन मे बहुत शिथिल पाये जाते है। मेवाड राज्य की श
आक्रमणो के कारण जिस प्रकार शिथिल होती जाती है, उनका प्रभाव राज्य से
साथ-साथ इन दोनों राज्यो पर भी पड रहा है, ऐसा होना स्वाभाविक है।

दिल्ली मुगल शासको की राजधानी है। अजमेर मुगलो की अधीनता मे है।
शाहपुर अजमेर के निकटवर्ती है। इस दशा मे मुगलो का प्रभाव इन दोनो राज
स्वाभाविक है। इतने निकट रह कर शक्तिशाली मुगलो के विरुद्ध वना रहना इन
सम्भव नही था। इस दशा मे इन दोनो का खिचाव दिल्ली की तरफ हुआ। वहाँ से
की उपाधियाँ मिली। शाहपुर के राजा ने मुगलो की मेहरवानी का कुछ और भी ल

पट्टा—राणा की ओर से मामन्तो को जो भूमि अथवा जागीर दी जाती है,
पढी पट्टा के नाम पर होती है। इसी पट्टा को राणा की सनद के नाम से भी
यो तो सामन्त शामन-प्रणाली का एक विधान होता है और प्रत्येक सामन्त को राजा

को गोद लेने का निर्णय कर लिया । इसी लिए राणा के दरबार में जो होने जा रहा था, उसकी उपेक्षा करके, सामन्त की स्त्री ने नाहरसिंह के सिर पर सामन्त की पगड़ी बांध दी और उसको गोद लेने की उसने घोषणा कर दी ।

राणा ने जब इस घोषणा को सुना तो वह बहुत अप्रसन्न हुआ । सम्वत् १८४० सन १७८१ ईसवी मे जो विद्रोह मेवाड़ मे पैदा हुआ था देवगढ़ का स्वर्गीय सामन्त भी उस समय विद्रोहियो मे एक था । परन्तु अन्त मे राणा ने उसको क्षमा कर दिया था । इस समय उस सामन्त की स्त्री और उसके सरदारो का विद्रोहात्मक व्यवहार देखकर राणा ने निर्वाचित नाहरसिंह के विरोध का निर्णय किया । उसने देवगढ़ की जागीर पर अपना अधिकार कर लिया और आदेश दिया कि देवगढ़ मे जो खेती की गयी, वह सब काट ली जावे ।

राणा का यह आदेश देवगढ़ के सरदारो ने सुना । वे समझदार और दूरदर्शी थे । गोद लेने की समस्या पर वे राणा के पास पहुंचे और बड़ी बुद्धिमानी के साथ उन सरदारो ने प्रार्थना करते हुए राणा से कहा । "हम लोगो ने स्वयं गोद लेने के सम्बन्ध मे कोई निर्णय नहीं किया मृत्यु के पहले आपके योग्य सामन्त ने नाहरसिंह के सम्बन्ध मे अपनी इच्छा जाहिर की थी और यह भी कहा था कि इसका अंतिम निर्णय हमारे राणा के द्वारा होगा । इसका निर्णय किसी दूसरे के अधिकार मे नही है ।

सरदारो के मुख से इन सम्मानपूर्ण बातों को सुनकर राणा का क्रोध शिथिल हो गया । सरदारो ने उसके मनोभावो को अनुकूल समझकर कहा, "स्वर्गीय सामन्त ने हम लोगों को आपके पास आने और नाहरसिंह की योग्यता से अवगत बनाने की आज्ञा दी थी । परन्तु हम लोग आपके पास पहुंच नही पाये थे । देवगढ़ के सम्बन्ध मे किसी ने असत्य समाचार सुनाकर आपको भ्रम मे डाल दिया है ।"

सरदारो की इन बातो से राणा बहुत प्रभावित हुआ । उसी समय उन सरदारो ने नाहरसिंह की प्रशंसा मे कुछ बाते राणा से कही "अपने स्वर्गीय सामन्त की आज्ञानुसार हम आपसे इतनी ही प्रार्थना करना चाहते है कि मेवाड़ मे राजपूतो की मर्यादा को सदा सम्मान दिया गया है । नाहरसिंह अभी से इतना योग्य मालूम होता है कि वह न केवल देवगढ़ जागीर के लोगों का नेतृत्व कर सकेगा, बल्कि वह आपका अत्यन्त आज्ञाकारी सामन्त साबित होगा ।"

राणा ने सरदारो की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया । देवगढ़ के लिए उसने जो आदेश दिया था, उसे वापस ले लिया और नाहरसिंह को उसने गोद लिये जाने के सम्बन्ध मे स्वीकार कर लिया ।

यदि राजपूतो ने प्राचीन काल की तरह अपनी उन्नति की होती तो उनके राज्यो के सम्बन्ध मे हमे कुछ भी कहने की आवश्यकता न थी । प्राचीन काल से लेकर अब तक उनके इतिहास का गम्भीर अध्ययन करने के पश्चात् स्वीकार करना पड़ता है कि राजपूत कभी भी सगठित होकर नही रह सके । वे आपस मे ऐसे अवसरो पर भी सगठित न हो सके, जब उनके सामने जीवन और मरण का प्रश्न उपस्थित हुआ है । राजपूत राज्यो ने कभी भी राष्ट्रीय शक्ति का निर्माण नही किया और उनमे मराठो की तरह कभी केन्द्रीय शक्ति नही रही । प्रत्येक राजा अपने राज्य का स्वय अधिकारी था और उसकी रक्षा के लिये वह अपनी सेना रखता था । उसकी कमजोरियो मे कोई शक्ति सहायक हो सके, इस प्रकार का निर्माण राजपूतो ने कभी नही किया ।

सामन्त शासन प्रणाली मे प्रत्येक राज्य अपने पड़ोसी के लिए जितना घातक सिद्ध होता है, उतना वह किसी दूरवर्ती राज्य के लिए नही । इस प्रकार के शासन मे कोई भी राज्य अपनी रक्षा

गयी है। राजपूतो के जीवन मे अराजकता की भावना नही है। उनका सम्पूर्ण इ
और देशभक्ति से भरा हुआ है । राजपूत जिन ग्रथो का अध्ययन करते है, उनमे रा
अधिक प्रोत्साहन दिया गया है। कवि चन्द ने स्वय अपने प्रसिद्ध काव्य ग्रथ मे रा
का अद्भुत वर्णन किया है। स्वाधीनता, राजभक्ति और वीरता राजपूतो का गौरव
राजपूतो को राजभक्ति की शिक्षा शैशवकाल से ही मिलती है। प्रत्येक राजपूत के
पहले राजभक्ति की भावना है, उसके बाद उसके जीवन का दूसरा सुख है। साम
अपनी राजभक्ति का परिचय अपने राजा को देते है, उसके सरदार उसी भावना से
अपना व्यवहार सामन्तो के प्रति प्रकट करते है।

राजपूतो के साथ किसी दूसरी जाति की तुलना नही की जा सकती।
भीषण दुर्भाग्य और अत्याचारो मे अनेक शताब्दियाँ अपने जीवन की व्यतीत की है
स्वाधीनता और स्वाभिमान की भावना मे आज तक कोई अन्तर नही पड़ा। राजपूत
कुछ खोया है परन्तु अपने स्वाभिमान को नष्ट नही होने दिया। उनको अपना
है। अपमान को अनुभव करने की उनमे अद्भुत शक्ति पायी जाती है। जहाँ तक स
है, उसकी रक्षा के लिए आज भी एक राजपूत जीवन की छोटी-मोटी भूलो मे युद्ध
कायम कर देता है और प्राण लेने और देने के लिए तैयार हो जाता है। एक र
चरित्र है, जो अनादि काल से उसके साथ चला आ रहा है।

ससार मे बडे-से-बडे परिवर्तन हुए। न जाने कितनी जातियाँ मिट गयी
कितनी जातियाँ नयी उत्पन्न हो गयी। स्वभाव और चरित्र के भयानक परिवर्तन
देखने को मिले। परन्तु राजपूतो के जीवन का कोई भी परिवर्तन आज तक आँखो
आया। इस जाति के लोग हजारो वर्ष पहले जैसे थे, आज भी उनकी संताने हजा
वैसी ही है। राजपूत राजवशो की एक जाति है, जिसकी शाखाओ और उपशाख
राजपूतो को लाखो और करोडो की सख्या मे पहुँचा दिया है। राजवश के ना
शब्द उनके साथ रह गया है। राज्यो के स्थान पर उनके जीवन की विवशता और
साथ रह गयी है। लेकिन उनके चरित्र की स्वतन्त्र प्रियता मे कोई अन्तर नही आ
पूत अपने सम्मान की रक्षा मे आज भी जिस प्रकार अपने प्राणो को बलिदान
तैयार हो जाता हे, उसको देखकर इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि प्र
स्वाभिमान की भावना ने इनके अन्तरात्माओ मे कितनी गहराई तक प्रवेश किया था

मेवाड मे जितनी भी बडी-बडी जागीरे है, उनका अधिकारी प्रत्येक श्रेष्ठ
बेटो और भाइयो की व्यवस्था अपनी मर्यादा के अनुसार करता हे। जिस जागी
मालगुजारी साठ हजार से अस्सी हजार रुपये तक होती है, उस जागीर के अधिका
भाई तीन हजार से पाँच हजार रुपये वार्षिक मालगुजारी का इलाका पाने का अधि
यह उसका बपौता है अर्थात् उसका पैतृक अधिकार हे। इसके सिवा वह अपने
अथवा बाहर कोई भी कार्य कर सकता है। उससे जो छोटे भाई होते है, उनको
निर्धारित भाग मिलता है। इसी प्रकार का निर्णय सामन्तो के पुत्रो के लिए होता है।
बडा बेटा अधिकारी होता है। लेकिन उनमे जो छोटे होते हे, उनके भी निर्धारित
उनके इन अधिकारो को न कोई बदल सकता है और न कम कर सकता है।

जागीर मे भाइयो और बेटो के जो पैतृक अधिकार होते है, उनका क्रम

मेवाड़ का इतिहास

ग्यारहवाँ परिच्छेद

मेवाड़ की श्रेष्ठता—राजस्थान के राज्य—मेवाड़ के इतिहास का आधार—मेवाड़-राज्य का प्रतिष्ठाता—वहाँ के राजाओं की उपाधि-राणा—राणा का वंश—मेवाड़ का सुरक्षित गौरव—लगातार आक्रमण—बल्लभीपुर का विनाश—आक्रमणकारी जातियाँ—राम के बेटे—लव का वंशज राणा का वंश—अयोध्या राम की राजधानी थी—मेवाड़ के राजवंश का प्रारम्भ—म्लेच्छों के आक्रमण के समय वहाँ पर जैन-धर्म का प्रचार—सीथिक लोगों का निवास-स्थान—भारत मे अनेक जातियों का प्रवेश—हूणों का सरदार—सीथिक लोगों की राजधानी—बल्लभीपुर मे म्लेच्छों के साथ राजा शिलादित्य का युद्ध—उसकी पराजय।

यहाँ से राजस्थान के राज्यों का इतिहास प्रारम्भ होता है और उसका श्री गणेश मेवाड़ से किया जायगा। राणा यहाँ के राजाओं की पदवी है और उनका वंश सूर्य वंश की शाखा है। छत्तीस राजवंशों मे इस वंश का सब से श्रेष्ठ स्थान है और उसकी पवित्रता एवम् निर्मलता में कभी किसी को कुछ कहने का साहस नहीं हो सकता।

सम्पूर्ण राजस्थान आठ भागों मे विभाजित है। और वे आठों भाग इस प्रकार हैं: पहला मेवाड अथवा उदयपुर, दूसरा मारवाड़ अथवा जोधपुर, तीसरा बीकानेर अथवा किशनगढ़, चौथा कोटा, पांचवा बूँदी, (ये दोनों हाड़ावती के नाम से भी प्रसिद्ध हैं) छठा आमेर अथवा जयपुर, सातवां जैसलमेर और आठवां भारतवर्ष की मरुभूमि।

इन आठों मे मेवाड और जैसलमेर अपनी प्राचीनता के लिये अधिक प्रसिद्ध हैं। भारतवर्ष की स्वाधीनता पर आक्रमण होते हुए लगभग आठ सौ वर्ष बीत चुके हैं परन्तु मेवाड़ का गौरव अब तक सुरक्षित है। समय के प्रभाव से उसके बहुत से स्थानों का विनाश हुआ है, परन्तु उसका विस्तार और आकार-प्रकार आज भी ज्यों का त्यों है। जिन प्राचीन पुस्तकों मे मेवाड़-राज्य के ऐतिहासिक विवरण मिलते हैं, उनमे जयविलास, राजरत्नाकर और राज विलास अधिक महत्वपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त खुमान रायसा, मामदेव परिशिष्ट और कितने ही जैन तथा भट्ट ग्रंथों मे मेवाड के विवरण पाये जाते हैं। इन ग्रंथों मे बहुत से मतभेद भी है। फिर भी सावधानी के साथ अध्ययन करने से उनके ऐतिहासिक सत्य को खोज कर निकाला जा सकता है और हमने यही किया भी है।

भट्ट ग्रंथों मे कनकसेन को मेवाड का प्रतिष्ठाता माना गया है। उन ग्रन्थों के अनुसार, कनकसेन का मूल स्थान भारत के उत्तर मे था और वहाँ से वह सम्वत् २०१ और सन् १४५ ईसवी मे सौराष्ट्र मे आ गया था। अयोध्या—जिसे आज अवध कहा जाता है—प्रसिद्ध राम की राजधानी थी। राम के दो बेटे थे लव और कुश। राणा का वंश अपने आपको लव का वंशज मानता है। कहा जाता है कि लव ने लोटकोट नामक नगर बसाया था, जिसे अब लाहौर कहा जाता है। इस लोटकोट मे मेवाड-राज्य के पूर्वज उस समय रहते रहे, जब तक कनकसेन उसे छोड़कर द्वारका

मे फिरोज का प्रश्न पदा हुआ था और उस समय वहाँ के अधिकारियों ने सामन्ते
सम्मान और जागीर के अविभाजन पर एक निर्णय कर लिया था। इसी प्रकार की
मे प्रथम एडवर्ड के शासन काल मे हुई थी। उस समय फ्रास और इंगलैण्ड मे विभाज
वनाकर यह निश्चय कर लिया गया था कि इस निर्णय के विरुद्ध यदि किसी जागीर
किया गया तो वह जागीर जब्त कर ली जायगी।

जागीर के विभाजन के सम्बन्ध मे इस प्रकार का नियम होना अत्यन्त आव
व्यवस्था हो उसका उद्देश्य होना चाहिए कि न तो उत्तराधिकारियो के अधिकारो को
जाय और न जागीर को छिन्न-भिन्न होने दिया जाय। इसके लिए क्या होना चाहिए,
अधिकारियो के निर्णय से सम्बन्ध रखता है। यदि जागीर का विभाजन सीमित कर
उसके द्वारा राष्ट्र के हितो की बहुत कुछ रक्षा हो सकती है।

जागीर के विभाजन की प्रथा ने इस देश के राजपूतो को मटियामेट कर दि
रावर्गो की उत्पत्ति हुई है और आपस के द्वेप भावो ने भयानक रूप से उनका सर्वन
जागीरो के विभाजन के कारण कच्छ और काठियावाड मे राजपूतो का भयानक
उनमे मुकद्दमे वाजी की वृद्धि हुई है और उसके फलस्वरूप, अपराधो और अत्याचारो
सृष्टि करके वे अपने सर्वनाश के स्वय कारण वन गये हे। जहाँ पर जागीरो का वि
कर दिया गया है, वहाँ पर बहुत लाभ हुआ है और उत्तराधिकारियो के साथ-साथ जा
हो गयी है। मेवाड मे जागीरो का विभाजन उत्तराधिकार की प्रथा के कारण कितना
है और अब भी हो रहा है उसे लिख सकने मे हम असमर्थ है। अपनी खोज मे हम इस
पहुचे हे कि जागीरो के विभाजन और लड़कियो के विवाहो मे दहेज की प्रथा के कारण
शिशु हत्या की सृष्टि हुई है।

सकना कठिन है। फिर भी जो ऐतिहासिक आधार मिलता है, उससे यह मानना पड़ता है कि जिनको यहाँ पर म्लेच्छ लिखा गया है, वे सीथिक लोग थे और वे पार्शियन राज्य से आये थे। उन्होंने दूसरी शताब्दी मे सिंधु के किनारे अपना राज्य कायम किया और स्याम नगर को अपनी राजधानी बनाई, जहा पर प्राचीन यदु लोगो ने बहुत समय तक राज्य किया था। विद्वान एरियन ने उस स्याम नगर को मीनगढ † और अरब के भूगोल-विशारदो ने मनकर नाम देकर लिखा है।

सिन्धु नदी के किनारे एक विशाल और विस्तृत देश मे सीथिक लोग रहते थे। उनके कारण उस तरफ से भारत मे आने वालो का रास्ता बहुत आसान हो गया था। इसलिए अनेक आक्रमणकारी जातियो ने उस तरफ से आकर इस देश मे हमला किया और उसका विनाश किया। जिट, हूण, कामारी, काठी, मकवाहन, बल्ल और असभ्य नाम की अनेक जातियो ने उस तरफ से भारत मे प्रवेश किया और सूरत मे पहुँचकर अपनी सत्ता का प्रदर्शन किया था। ये सभी जातियाँ इस देश मे उसी तरफ से आयी थी और उनका सुभीता यह था कि भारत की वह दिशा उस समय बहुत अरक्षित अवस्था मे थी। यही कारण था कि मध्य एशिया की सभी संगठित आक्रमणकारी जातियो ने इस देश की निर्बलता का लाभ उठाया। प्रसिद्ध यात्री परिव्राजक कासमास चीन के राजा जस्टीनियस के शासन काल मे भारत मे आया था और बल्लभी राज्य का प्रधान नगर देखने गया था। उसने अपनी यात्रा सम्बन्धी पुस्तक मे लिखा है जब बल्लभीपुर नष्ट हुआ है उस समय बहुत-से हूण सिन्धु नदी के किनारे आबाद हो गये थे। उस समय उनके सरदार का नाम गोलास था। लेकिन इतिहासकार एरियन ने इसके सम्बन्ध मे एक दूसरी बात का उल्लेख किया है। उसने लिखा है कि सिन्धु और नर्मदा के बीच के विस्तृत देश मे अगणित संख्या मे सीथिक लोग रहते थे। मीनगढ उनकी राजधानी थी। यहाँ पर यह नही कहा जा सकता कि इन दोनो मे क्या सही है। सम्भव है कि चीनी परिव्राजक कासमस ने सीथिको को ही हूण लिखा हो और यह भी हो सकता है कि पहले वहा पर सीथिक लोग रहते रहे हो। उसके बाद हूणो ने आक्रमण करके उनको वहाँ से भगा दिया हो और अपना आधिपत्य कायम कर लिया हो। कुछ भी हो, यह तो निश्चिय ही है कि इन्ही दोनो जातियो मे किसी एक ने बल्लभीपुर राज्य का विनाश किया था।

सूर्यवंशी राजा कनकसेन से आठवी पीढ़ी मे शिलादित्य नाम का एक राजा हुआ और उसी के शासन काल मे म्लेच्छो ने बल्लभीपुर मे आक्रमण करके उसको नष्ट किया। आक्रमणकारियो की संख्या बहुत अधिक थी। राजा शिलादित्य अपनी सेना के साथ उनसे लड़ा और शक्ति भर उनके साथ युद्ध किया। परन्तु अन्त मे उसकी पराजय हुई और अपनी सेना के साथ वह मारा गया। उसकी मृत्यु के साथ ही उसका सभी प्रकार सर्वनाश हुआ। उसके बाद उसके वंश मे कोई न रह गया।

होते हे। इसलिये यह मान लेना ही सही मालूम होता है कि आक्रमणकारी म्लेच्छ पारसी लोग थे। परसियन ऐतिहासिक ग्रथो मे लिखा है कि सन् ६०० ईसवी के प्रारम्भ मे बादशाह नौशेरवाँ ने सिंध देश पर आक्रमण किया था, परन्तु उसका परिणाम क्या हुआ, यह कुछ नही लिखा।

† मीनगढ के सम्बन्ध मे विदेशी लेखको ने अनेक बाते लिखी है। डेनविल से लेकर सर हेनरी पोटिंजर तक कई विद्वानो ने इसके सम्बन्ध मे अनुसधान किया था। उसमे कुछ को सफलता भी मिली थी। लेकिन उसके सम्बन्ध मे कोई एक निर्णय नही हो सका। टाड साहब ने इसके सम्बन्ध मे बडे परिश्रम के साथ खोज की और कई विद्वानो के आधार पर इस बात को स्वीकार किया कि मीनगढ सिन्धु नदी के किनारे सिवाने पर है। अनुवादक।

राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा

योरप के देशो मे बहुत समय तक गुलामी की प्रथा चली है। उन दिनो में
प्रकार के गुलाम पाये जाते थे, उनकी बहुत कुछ अवस्था यहाँ के राज्यो के उन लो
जुलती है, जो अपनी अरक्षित अवस्था मे सामन्तो की सहायता खरीदा करते थे औ
चुकाने के स्थान पर वर्ष मे कुछ दिनो तक उनके यहाँ रहकर उनकी खेती का काम
इन लोगो की परिस्थितियाँ बहुत-कुछ योरप के गुलामो की तरह की थी। यद्यपि दो
गुलाम नही कहा जा सकता, परन्तु दोनो की दासता और विवशता अनेक अर्थो मे ए
दासो के सम्बन्ध मे इतिहासकार हालम ने बहुत-कुछ खोज करने के बाद जो कुछ अपने
है, उसके पढने मे मालूम होता है कि इन दासो की विवशता बिलकुल दासता का रूप

मेवाड राज्य की बढती हुई दुरवस्था मे अवसरवादी सामन्तो ने प्रजा के साथ
नाम पर जो व्यवसाय शुरू किया था, उसके फलस्वरूप अगणित संख्या मे राज्य
दूसरे लोग सामन्तो की ऐसी दासता मे आ गये थे कि जिनसे उनका उद्धार हो सक
गया था। इन दिनो मे अवसरवादी सामन्तो ने संरक्षक बनकर उन लोगो की भूमि
कर लिया था, जो राज्य के भूमिया राजपूत कहलाते थे और वे बहुत समय तक
रहकर निर्बल हो गये थे। अरावली के बहुत से किसान इसी प्रकार के दास हो ग
अधिकार मे जितनी भी भूमि थी, उस पर सामन्तो ने कब्जा कर लिया था और उन
के असली मालिको को दास बनाकर यहाँ रखा था। वे कृषक अपने स्वामी सामन्तो
उनकी खेती का काम किया करते थे।

भूमि के छोटे-छोटे मालिको की दुरवस्था को अनुभव करते हुए विद्वान हा
है : "लूट-मार और अत्याचार के दिनो मे भूमि के निर्बल अधिकारियो की स्वतन
गयी है। उनकी भूमि पर दूसरे लोग स्वामी बन बैठे है और जो असली मालिक थे,
जीवन बिता रहे है।"

हारावली प्रान्त के हाली लोगो की दशा पर दृष्टिपात करने की आवश्यकता
का आश्रय लेने पर भूमि के छोटे-छोटे अधिकारी दासता मे आ गये हो, यह पूरे तौर
है। बल्कि राज्य के भीतर बहुत दिनो से जिस प्रकार भीषण अत्याचार हो रहे है, उ
विशेष रूप से जिस श्रेणी की दासता उत्पन्न हुई है, वह बसी के नाम से प्रसिद्ध है।
के हाली लोग भी यद्यपि दासता का भोग कर रहे हैं, परन्तु उनमे और बसी दासो मे ब
लोगो की दशा, उनकी अपेक्षा अधिक शोचनीय है। इसका कारण यह है कि अपनी
उनका कोई अधिकार नही रह गया और जो भूमि उनके अधिकार मे पहले थी, उ
मालिक सामन्त बन गये है। उन सामन्तो के ऋण के जाल मे ये लोग इस प्रकार फँ
उनका उससे कभी छुटकारा नही हो सकता। वे जीवन-भर उनकी दासता स्वीकार
प्रत्येक अवस्था मे बाध्य है। यद्यपि उनकी उस अवस्था मे अब बडा परिवर्तन हो गया

× राजस्थान मे प्रचलित रखवाली कर के समान इंगलैण्ड मे भी किसी
का एक कर प्रचलित हुआ था सन् १७२४ ईसवी मे लार्ड लोवेट ने इगलैण्ड के ज
प्रार्थना की थी कि "इंगलैण्ड की दशा इन दिनो मे बहुत शोचनीय हो गई है। चोरो
के अत्याचारो मे प्रजा का सर्वस्व नष्ट हो गया है। इन संगठित लुटेरो ने प्रजा के सामने
रखा था कि यदि आप लोग वर्ष मे एक निश्चित रकम कर के रूप मे देना पसंद करे त
को सशस्त्र सैनिक बनाकर आपकी यह रक्षा की जा सकती है।" प्रजा के द्वारा इस क
करते ही लूट-मार बंद हो गयी। लेकिन जो लोग इस कर को अदा न करते, वे लूट

स्वतन्त्रता से काम लेता । ऐसे मौको पर कमला की एक न चलती । इसीसे आदतें स्वतन्त्र रूप से उसमे बढ़ने लगी ।

मेवाड के दक्षिण तरफ शैलमाला के भीतर ईडर नाम का एक भीलों का राज्य है । मण्डलीक नामक एक भील उस समय वहाँ का राजा था । गोह उस राज्य के भीलों के साथ वहाँ के जङ्गलो मे घूमा करता और वहाँ के जानवरो का पीछा किया करता । वहाँ पर जो ब्राह्मण रहते थे उनके साथ न तो वह रहता और न उनकी बातो को पसन्द करता । वहाँ के भील गोह का बहुत आदर करते और उसे बहुत सम्मान देते । अबुलफजल और भट्ट ने वहाँ के एक वर्णन को इस प्रकार लिखा है .

एक दिन भीलो के लड़के गोह के साथ खेल रहे थे । सभी लड़कों ने मिल कर गोह को अपना राजा बनाया और एक भील बालक ने अपनी उँगली काट कर उसके खून से गोह के माथे पर राजतिलक किया । जिस घटना का भविष्य मे क्या परिणाम होता है उसको पहले से कोई नहीं जानता ईडर राज्य के माण्डलीक राजा ने यह घटना सुनी कि वहाँ के भील लड़कों ने गोह को अपना राजा बनाया है तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और एक दिन उसने अपना राज्य गोह को सौंप कर राज्य से छुट्टी ले ली । राजा माण्डलीक के पुत्र थे । परन्तु उसने अपना राज्य अपने पुत्रों को न दिया था और गोह को सौंप दिया था । परन्तु गोह ने उसी बदले मे राजा माण्डलीक को एक दिन मार डाला । उसने ऐसा क्यो किया, इसके सम्बन्ध मे कहीं पर कोई उल्लेख नहीं मिलता । आगे चलकर गोह का वश उसी के नाम से चला और उसके वंशज गहिलोत अथवा गहलोत के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

इस समय के बाद फिर कोई विशेष उल्लेख ग्रन्थों मे नहीं मिलता । जो कुछ मिलता है, उसके आधार पर इतना ही जाहिर होता है कि गोह के बाद आठवीं पीढ़ी तक ईडर राज्य मे गोहलोतो का राज्य रहा और वहाँ के भील राजपूतो से सभी प्रकार काम लेते रहे । गोह की आठवी पीढी मे नागादित्य नाम का एक राजा हुआ । उसके व्यवहारो से बहुत से भील अप्रसन्न थे । इसलिए एक दिन जब नागादित्य जगल मे शिकार खेलने गया था भीलो ने उसे घेर लिया और उसे मारकर ईडर राज्य मे भीलो का राज्य कायम किया ।

वहाँ पर जो लोग रहते थे, सभी भील थे और उनका आतक वहा पर पहले से फैला हुआ था । नागादित्य के मारे जाने के बाद वह आतक और भी बढ़ गया । भीलो का मुकाबला करने मे राजपूत घबरा उठे थे । उनके सामने भविष्य के लिए कोई रास्ता न रह गयी थी । नागादित्य के बप्पा नाम का एक तीन वर्ष का बालक था । उस बालक की रक्षा का कोई उपाय दिखाई न देता था । इसलिए कि भीलो का आतक लगातार बढता जाता था । लेकिन उसकी रक्षा का उपाय निकला । वीरनगर की जिस कमलावती ब्राह्मणी ने शिशु गोह के जीवन की रक्षा की थी, उसी के वशजो ने शिलादित्य के राजवश की रक्षा करने का काम किया । उन लोगो ने राजकुमार बप्पा की रक्षा करने का निश्चय किया । उन दिनो मे भीलो के आतक भयानक हो रहे थे और बप्पा के प्राणो की आशकाये लोगो की समझ मे आती थी । इसलिए वहाँ के ब्राह्मण बप्पा को लेकर भाँडेर नाम के किले मे चले गये । उस किले मे एक भील ने उन ब्राह्मणो की सहायता की, परन्तु वह स्थान भी अधिक सुरक्षित न था । इसलिए बप्पा को लेकर जो ब्राह्मण गये थे, वे उस किले से पराशर नाम के एक स्थान मे चले गये । यह स्थान सभी प्रकार के वृक्षो से भरा हुआ था । वही पर त्रिकुट पर्वत है और उसके नीचे नागेन्द्र नाम का—जिसे साधारण तौर पर नागदा कहते हे और जो उदयपुर से दस मील उत्तर की तरफ है—एक स्थान है । वहा पर शिवजी की उपासना करने वाले बहुत से

बसी और गोला गुलामो के नाम है। ये लोग स्वयं अपने आपको दा
कहते है। गोला, गोली लडकियो के साथ, बसी, बसी लडकियो के साथ और इसी प्र
अपने वंश क्रम के अनुसार वैवाहिक सम्बन्ध करते है। दासता अथवा गु
मनोभावो मे अधिकार रखती है। जो दास जिस श्रेणी का हो चुका है वह अब
चाहता है इसे वह जन्म गत मानता है। उसको बदलने और दासता के जीवन से
कभी अभिलाषा नही करता। किसी के समझाने से उसकी समझ मे नही आता।
की दासता मे रहना चाहता है और उससे निकल कर वह दासता से अपनी मुक्ति
वह जिस अवस्था मे है, उसी मे वह सतोष करता है। उनमे से बहुतो की यह
इस दासता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए समाज और राज्य से जो सुविधाये प्राप्त
होना पडेगा। इसलिए उन सकटो का सामना करने के लिए ये दास न तो इच्छुक है अ

राजस्थान मे बसी दूसरी श्रेणी का राजवश पाया जाता है। शत्रुओ के द्वा
मे कैदी हो जाते थे, वे जब किसी सामन्त अथवा अन्य किसी के द्वारा बदी जीवन से
वे कैदी लोग मुक्ति दिलाने वालों के दास हो जाते थे। बसी लोगो का इस प्रकार
स्थान मे पाया जाता है। राजपूतो मे सदा से कृतज्ञता की भावना अधिक रही है
कृतज्ञता को सार्थक बनाने के लिए वे अपने उपकारी की दासता स्वीकार लेते थे।
कुछ इसी प्रकार का इतिहास है। उनके इस इतिहास के सही होने के बहुत से प्रमा
मिलते है। बिजौली के रहने वाले बहुत लोग प्रमार सामन्तो के बसी कहे जा
पहले प्रमार सामन्त के साथ बहुत से बसी लोग मेवाड मे आये थे और राणा ने उ
पूर्ण व्यवहार करके अपने राज्य का एक बडा हिस्सा उन बसी लोगो के रहने के

गोला लोग जिस प्रकार अपने बाये हाथ मे दासता का चिन्ह स्वरूप खडवा
तरह बसी लोग भी अपनी दासता का परिचायक बालो का एक गुच्छा रखते है।
लोग गुलामो की एक जाति मे माने जाते है। परन्तु उनमे और गोला लोगो मे अन
है। बसी लोग गोला लोगो की तरह नीच नही माने जाते। बसना अर्थात् कही
बस्ती शब्द से बसी शब्द की उत्पत्ति हुई है। बसी शब्द का अर्थ वास्तव मे
अर्थात् कुछ दिनो से निवास करने वाला। प्राचीन काल मे बहुत-से सामन्त किसी
पूर्वजो का स्थान छोडकर दूसरे राज्य मे चले जाते थे और वही पर रहने लगते
रहने लगते थे उन स्थानो को लोग बसी नाम से मशहूर कर देते थे और फिर वह
लिए उनके विख्यात हो जाते थे।

रामपुरा राज्य मे टोक के समीप बसी नाम का एक प्रसिद्ध नगर है। इस
इसी प्रकार हुई थी। शोलकी राजा ने किसी आक्रमणकारी के अत्याचार से
राज्य गुजरात छोड दिया था और उसने टोक के पास पहुँच कर जिस नगर की स
उसे लोगो ने बसी नाम दिया था। सोलकी राजा के चले आने पर गुजरात की
उसके पास पहुँच गयी थी और उसके बसाये हुए बसी नगर मे रहने लगी थी।
नगर के निवासियो को अब तक लोग भ्रमवश बसी गुलाम मानते है। आश्चर्य की
बहुत समय के बाद लोगो के कहने के अनुसार उस नगर के निवासी अपने आप को
मानने लगे और अब तक मानते है। *

---

* युद्ध का कर न दे सकने के अपराध मे मराठा सैनिको ने कुछ राजपूत युव
लिया था। जो लोग पकड़े गये थे, उनमे पूरावत सरदार का छोटा भाई भी था। उन्ही

वाद वप्पा के सभी साथियो ने उनके कहने के अनुसार शपथ ली और कभी अपनी शपथ के विरुद्ध कोई काम नही किया। लेकिन वप्पा के साथ सोनकी राजकुमारी के विवाह की बात उसके पिता से छिपी न रही और यह जाहिर हो गया कि राजकुमारी के विवाह की घटना जिसके साथ हुई है, वह वप्पा ही है।

इस बात को वप्पा ने भी अपने साथियो के द्वारा सुना। उसको आने वाली विपत्ति की आशका होने लगी। इसलिए वह पर्वत के एक गुप्त स्थान मे जा कर रहने लगा। यह स्थान बिल्कुल निर्जन था। उस स्थान पर पहले वप्पा के वशधर कई बार आकर शरण ले चुके थे। वप्पा के साथ बलीय और देव नाम के दो भीलो के लडके भी थे। बलीय उन्द्रीका और देव अगुन पानोर नाम के स्थानो का रहने वाला था। इन दोनो लडको ने वप्पा का साथ नही छोडा और दोनों ने वप्पा के किसी भी सकट मे साथ देने का निश्चय कर लिया था। इसलिये वे दोनो उसके साथ बराबर बने रहे।

वप्पा ने अपनी माँ से सुना था कि मै चित्तौर के मोरी राजा का भान्जा हूँ। इस आधार पर उसने चित्तौर जाने का विचार किया। इस समय उसके बहुत से साथी हो गये थे। उनको लेकर वह चित्तौर पहुँचा। उन दिनो मे वहाँ पर मौर्य वश का मानसिंह नामक एक राजा राज्य करता था। उसने वप्पा को भान्जे के रूप मे पाकर बहुत आदर किया। उसने उसको अपने राज्य का एक सामन्त बनाया और उसके लिये एक अच्छी जागीर का प्रबन्ध कर दिया। मौर्यवश प्रमार वश की शाखा है। मौर्य वशी पहले मालवा के राजा थे और इन दिनो मे यह वश चित्तौर के सिहासन पर था।

उन दिनो मे राजस्थान मे सामन्त प्रथा चल रही थी। इस प्रथा के अनुसार युद्ध प्रिय लडाकू सरदारो को राज्य की ओर से एक जागीर दी जाती थी। और उसके बदले मे वे सरदार आवश्यकता पडने पर अपने राजा की ओर से शत्रु से युद्ध करते थे। राजा मानसिंह के बहुत-से सरदार थे और वे राजा के साथ बडी श्रद्धा के साथ व्यवहार रखते थे। लेकिन वप्पा के पहुँचने पर सामन्तो के उस व्यवहार मे अन्तर पडना आरम्भ हुआ उसका कारण यह था कि राजा मानसिंह वप्पा का बहुत आदर करने लगा था और उसके सामन्त इसे पसन्द न करते थे।

इन्ही दिनो की बात है। किसी विदेशी ने अपनी सेना के साथ चित्तौर पर आक्रमण किया राजा मानसिंह ने उस शत्रु से लडने के लिये अपने सामन्तो को आदेश भेजा। सामन्त इसके लिये तैयार न हुए। उनके हृदयो मे पहले से ही अन्तर पड गया था। वे लोग वप्पा से ईर्षा रखते थे।

आने वाले शत्रु से सामन्तो के युद्ध न करने पर वप्पा स्वय युद्ध के लिये तैयार हुआ और चित्तौर की सेना लेकर वह शत्रु से लडने के लिये चला गया। उस समय ईर्षा रखने वाले सामन्त भी शत्रु से लडने के लिये गये। दोनो ओर से खूब युद्ध हुआ और शत्रु की पराजय हुई। इस युद्ध मे वप्पा ने अपने जिस पराक्रम का प्रदर्शन किया उसको देखकर राजा मानसिंह के सामन्त आश्चर्य मे आ गये।

शत्रु को पराजित कर के वप्पा लौटकर चित्तौर नही गया। बल्कि चित्तौर की सेना और सामन्तो के साथ वह अपने पूर्वजो की राजधानी गजनी नगर मे पहुँचा। उस समय गजनी मे सलीम नाम का एक राजा राज्य करता था। वप्पा ने उस पर आक्रमण किया और गजनी का राज्य अपने अधिकार मे लेकर म्लेच्छ राजा सलीम की लडकी के साथ विवाह किया इसके बाद गजनी के राज्य को अपने एक सरदार को सौपकर वह अपनी सेना के साथ चित्तौर आया।

राजा मानसिंह के सामन्त वप्पा के कारण असन्तुष्ट थे और उनकी समझ मे वप्पा अत्यन्त

इस कमजोरी के कारण राजपूतों ने दूसरो की अपेक्षा अपना विनाश अधिक किया स्वभाव के कारण जीवन मे जिस प्रकार की घटनाये पैदा होती है, यद्यपि उनसे प्र जिन्दगी भरी हुई है, फिर भी संक्षेप मे कुछ उदाहरण देकर हम यहाँ पर उनकी क जोरी को समझने की चेष्टा करेंगे। उसके पहले हमारे सामने एक प्रश्न पैदा होता मे फैली हुई इस भीषण कलह को क्या रोका नही जा सकता ?

यदि ऐसा किया जा सके तो न केवल इस विशाल और प्राचीन जाति को ि जा सकता है बल्कि इस प्राचीन भारतवर्ष को फिर एक बार कल्याण के मार्ग पर है। इससे इनकार नही किया जा सकता कि राजपूतो का पतन इस देश का पतन का उत्थान इस देश का उत्थान है। यदि राजपूतो के इस पतन के मार्ग को सदा के किया जा सकता तो यह निश्चित है इस देश के उत्थान का कोई रास्ता नही बन

अब प्रश्न यह है कि राजपूतो के इस पतन के मार्ग को कैसे बन्द किया आसान नही है। अत्यन्त प्राचीन काल से लेकर जिस मार्ग पर चलने के लिए रा० हो चुके है, उनके उस अभ्यास को कैसे तोडा जाय ? यह कार्य निश्चित रूप से असम्भव नही है। यद्यपि राजपूतो के इतिहास मे इसका निर्णय नही कर सकते एक सुझाव है। जो लोग इस देश के और राजपूतो के शुभचिंतक है, वे राजपूतो की वदलने का कार्य कर सकते है। एक अपराधी राजपूत, जिसके प्रति अपराध क अपने अपराव के लिए क्षमा माँग लेना सीख ले और जिसका अपमान किया है, उसके अपराव को क्षमा करना अपना धर्म और कर्त्तव्य समझ ले तो इस विशाल मे फैली हुई भयानक कलह का—जिसके द्वारा प्राचीन काल से लेकर अब तक, इस होता हुआ चला आ रहा है—अन्त हो सकता है। यह कार्य जितना ही महत्वपू गम्भीर और कठोर भी है।

शाहपुरा का राजा मेवाड के सामन्तो में अत्यन्त शक्तिशाली था। वह राणा हुआ था। अमरगढ का भूमिया राणावत सामन्त राजा शाहपुरा का एक सरदार राजा उम्मेदसिह की दो जागीरे थी। एक जागीर उसको मेवाड के राणा से मिल उसने दिल्ली के वादशाह से पायी थी। उन दोनो जागीरो से उसको बीस हजार आय थी। चुङ्गी आदि की जो आमदनी होती थी, वह इससे अलग थी। मेवाड गढ जिले मे थी और उसी जिले मे भूमिया सामन्त दिलील भी रहता था। उ साधारण थी, उसके अधिकार मे केवल दस ग्राम थे। उसकी आय वार्षिक वारह स न थी। राजा उम्मेदसिह के जागीर की सीमा सामन्त दिलील के ग्रामो के पास थी। दोनो के वीच की भूमि प्राय झगड़े का कारण वन जाती थी। राजा शाह किसान अक्सर सामन्त के किसानो के साथ झगडा कर देते थे और उस झगडे उम्मेदसिह और सामन्त दिलील पर पडता था।

राजा उम्मेदसिह की शक्तियाँ विशाल थी। परन्तु उसमे लोकप्रियता न कठोरता के कारण वह सर्वसाधारण मे अप्रिय हो रहा था। सामन्त दिलील तरह का था। वह प्रजा के साथ अच्छा व्यवहार करता था। उसके न्याय से रहते थे। आवश्यकता पडने पर वह अपने कृषको का सहायक था। इसीलिए आदर करती थी और आवश्यकता पडने पर सभी प्रकार से तैयार रहती थी।

सामन्त दिलील का एक अच्छा परिवार था। उसके भाई-भतीजे और पुत्र

के बाद आरम्भ होता है, सम्वत् ३७५ मे सम्वत् २०५ जोड देने से ५८० विक्रम सम्वत् आता है। इसी सम्वत् और सन् ५२४ ईसवी मे म्लेच्छो ने वल्लभीपुर का विध्वंस किया था।

मौर्य-राजाओ के समय के शिला-लेख से जाहिर होता है कि वप्पा का जन्म सम्वत् ७७० मे हुआ। अगर इस ७७० मे ५८० घटा दिये जायें तो १९० बाकी रहते है। इस १९० मे १ वर्ष जोड देने से भट्ट कवियो का उल्लेख सही हो जाता है, जिसमे बताया गया है कि सम्वत् १९१ मे वप्पा का जन्म हुआ था। यहां पर समस्त मतभेद नष्ट हो जाता है और एक वर्ष के अन्तर को भुलाकर, इस बात को सही मान लेना पडता है। इस हिसाब से चित्तौर का राज्याधिकार प्राप्त करने के समय वप्पा की अवस्था पन्द्रह वर्ष की थी। इससे यह भी जाहिर है कि वप्पा ने सन् ७२८ ईसवी मे चित्तौर का राज्य प्राप्त किया था। इसी समय से गहिलोतो का इतिहास आरम्भ होता है। इस समय से ११०० वर्ष के भीतर ५६ राजा मेवाड राज्य के सिंहासन पर बैठे।

विद्वान ह्यूम ने लिखा है, "कवि जब किसी ऐतिहासिक घटना को छन्द मे वर्णन करते हैं तो इतिहास के सही अंशो को तोड-मरोड कर कुछ का कुछ कर देते है और ऐतिहासिक सत्य के प्रतिपादन मे कल्पनाओ से भरी हुई अपनी कुशल रचनाओ से काम लेते है।" ह्यूम का कवियो के सम्बन्ध मे इस प्रकार कहना यहां पर पूरी तौर पर प्रमाण रखता है। राजस्थान का प्राचीन इतिहास बहुत-कुछ वहाँ के भट्ट कवियो के काव्य ग्रन्थो पर निर्भर है।

वप्पा के जीवन काल मे ही आक्रमणकारी मुसलमानो ने भारत मे प्रवेश किया था और वे लोग सिन्धु नदी को पार करके इस देश मे आये थे। हिजरी सम्वत् ९५ मे खलीफा वलीद का सेनापति मोहम्मद बिन कासिम सिन्ध देश को पराजित करने गया और वह वहां मारा गया था, जैसा कि अरब वालो की तवारीखो मे लिखा हुआ है। एलमेकिन के ग्रंथ मे भी इस बात का वर्णन है कि मुसलमानो ने सिन्ध देश पर आक्रमण किया था और इस आक्रमण से उस देश के राजा भयभीत हो गये थे। अजमेर के राजा माणिकराय का राज्य आठवीं शताब्दी के मध्य मे आक्रमणकारियो के द्वारा विध्वंस किया गया था। वे लोग नावो पर सवार होकर आये थे और वे लोग [illegible] नामक स्थान मे उतरे थे। सिन्ध के राजा दाहिर का इतिहास पढने से इस बात का सन्देह नहीं रह जाता कि अजमेर पर आक्रमण करने वाला कासिम था*। अबुल फजल ने लिखा है कि हिजरी सम्वत् ९५ मे और सन् ७१३ ईसवी मे कासिम ने राजा दाहिर को मारा और उसके राज्य को नष्ट किया। राजा दाहिर का बेटा अपने राज्य से भागकर चित्तौर के मौर्य राजा के पास चला गया था। वप्पा से लेकर शक्तिकुमार तक, दो शताब्दियो के भीतर चित्तौर के सिंहासन पर नौ राजा बैठे। इनमे चार महान् प्रतापी हुए, जो इस प्रकार है पहला कनकसेन सन् १४४ ईसवी मे, दूसरा शिलादित्य सन् ५२४ ईसवी मे, तीसरा वप्पा सन् ७२८ ईसवी मे और चौथा शक्तिकुमार सन् १०६८ ईसवी मे।

---

* मोहम्मद बिन कासिम भारत मे आकर चित्तौर की तरफ बढा था उसके वहाँ पहुँचने पर वप्पा ने उसके साथ युद्ध करके उसको पराजित किया था।

शत्रुता को सदा के लिए मिटा देने की दोनों ने प्रतिज्ञायें कीं। इसके पश्चात् सामन्त के साथ अपने यहाँ से राजा को विदा किया।

राजा और सामन्त में इस प्रकार जो मित्रता कायम हुई, वह सभी लोगों को मेवाड़ के राणा ने उसे सुनकर सुख का अनुभव किया। उन्हीं दिनों में मेवाड़ के स अवसर पर उदयपुर में एकत्रित हुए। राजा उम्मेदसिंह और सामन्त दिलील भी से लौटने के समय उम्मेदसिंह ने दिलील को शाहपुरा में आने के लिए निमन्त्रण। हर्ष के साथ उसको स्वीकार किया और निश्चित् दिन में वह शाहपुरा पहुंचने के सवारों सैनिकों के साथ रवाना हुआ।

सामन्त के शाहपुरा पहुँचने पर राजा उम्मेद ने उसका बड़ा आदर-सत्कार राजधानी में ले जाकर उसने उसको रखा। दोनों ने एक साथ बैठकर भोजन कि को प्रसन्न करने के लिए राजा के दरबार में बहुत-सी बातें की गयीं। नाच और पिछली शत्रुता को भुला देने के लिये दोनों मन्दिर में गये और प्रतिज्ञायें कीं। मन्दि जब सामन्त सीढ़ियों से उतर रहा था, राजा उम्मेदसिंह की तलवार से सामन गिरा और सामन्त के गिरते ही मन्दिर की सीढ़ियाँ रक्त से सराबोर हो उठीं।

राजा उम्मेदसिंह ने अपने हृदय में छिपी हुई बहुत दिनों की शत्रुता का प सामन्त के जीवन को खत्म करके सन्तोष पाया। सामन्त के कटे हुए सिर को प्र मारकर उसने अनेक प्रकार की कड़वी और गन्दी बातें कहीं। यह समाचार सा सुना तो वह अपने पिता का बदला लेने के लिये तैयार हो गया। यह समाचार र सपुर फैला। सामन्त दिलील के इस प्रकार मारे जाने की घटना को सुनकर वह राजा उम्मेदसिंह के साथ सामन्त के पुत्र का जो झगड़ा होने जा रहा था, उस राणा ने भरसक कोशिश की। वह मध्यस्थ बना। उम्मेदसिंह ने सामन्त के आभूषणों के साथ जो कुछ था लेकर अपने अधिकार में कर लिया था, राणा ने व पुत्र को दिलवा दिया। दिलील का घोड़ा भी उसके पुत्र को दिलाया गया। स रोकने के लिए राणा ने उम्मेदसिंह के पांच प्रसिद्ध ग्राम सामन्त के बेटे को उसके बाप के विश्वासघात के बदले में दिये। राणा ने इतना ही नहीं किया बल्कि जो तरफ से उम्मेदसिंह को दी गयी थी, उसके पास ग्राम—जो सामन्त के पुत्र को दि बाकी सम्पूर्ण जागीर पर राणा ने अपना अधिकार करवा लिया।

अधिकारियो ने वप्पा राजा का पिता होना स्वीकार किया है। राजा इस्कगुल के एक बेटी थी। वप्पा ने उसके साथ विवाह किया और उसे लेकर वे चित्तौर चले आये। इस स्त्री के गर्भ से वप्पा के अपराजित नाम का एक लड़का उत्पन्न हुआ। इसके पहले वप्पा ने द्वारिका के समीप गान्धीबाव नगर के परमार राजा की बेटी से भी विवाह किया था। उसके गर्भ से जो लड़का उत्पन्न हुआ था उसका असिल नाम था। यह सब से बड़ा था। परन्तु अपने मामा के यहाँ रहने के कारण वह अपने पिता के राज्य का अधिकारी न हो सका और उसका छोटा भाई अपराजित सिंहासन पर बैठा।*

असिल ने सौराष्ट्र मे अपना एक राज्य स्थापित किया और अपने वंश की एक शाखा की प्रतिष्ठा की। इसलिए उसके वंश के लोग असिल गहिलोत के नाम से प्रसिद्ध हुए। अपराजित के दो बेटे हुए। एक का नाम कालभोज और दूसरे का नन्दकुमार। उसका बड़ा बेटा कालभोज सिंहासन पर बैठा। छोटे बेटे नन्दकुमार ने दोदा वंश के राजा भीमसेन को मार कर दक्षिण के देवगढ़ नाम के राज्य को अपने अधिकार मे कर लिया।

कालभोज के मरने के बाद (जिसका दूसरा नाम कर्ण था) खुमान चित्तौर के राजसिंहासन पर बैठा। मेवाड़ के इतिहास मे राजा खुमान का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उसी के शासनकाल मे मुसलमानो ने चित्तौर पर आक्रमण किया और आक्रमणकारियो ने चित्तौर को घेर लिया। चित्तौर की रक्षा करने के लिये अनेक राजपूत राजा युद्ध करने के लिये गये। राजा खुमान ने आक्रमणकारी सेना का मुकाबला बड़ी बुद्धिमानी के साथ किया। मुस्लिम सेना की पराजय हुई। उसके बहुत से सिपाही मारे गये और जो बाकी रहे, वे युद्ध से भागे। राजा खुमान ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया और शत्रु-सेना के सेनापति महमूद को गिरफ्तार कर लिया। उसके बाद उसे राजपूत सैनिक चित्तौर ले गये।

यहा पर महमूद के नाम पर सन्देह पैदा होता है। इसलिए कि इस युद्ध के दो शताब्दी बाद गजनी की सेना लेकर जिस मुसलमान ने भारत मे आक्रमण किया था, उसका नाम भी महमूद था। यह सन्देह उन विवरणो से जो नीचे लिखा जायगा दूर हो जायगा। जिस समय खलीफा उमर बगदाद के सिंहासन पर था, उस समय आक्रमणकारी मुसलमान पहले पहल भारतवर्ष मे आये। उन दिनो मे गुजरात और सिन्धु नाम के दो नगर इस देश मे वाणिज्य के लिए प्रसिद्ध हो रहे थे। इन नगरो को अपने अधिकार मे लेने के उद्देश्य से खलीफा उमर ने टाइग्रेस नदी के किनारे बसोरा नाम का एक शहर बसाया और उसके बाद अब्बुलआयास नाम के सेनापति के अधिकार मे एक बड़ी सेना देकर उसे भारतवर्ष की ओर भेजा गया। अब्बुलआयास अपनी सेना के साथ सिंध देश तक आया और अरोर नामक स्थान पर भारत के लोगो ने उसके साथ युद्ध किया। उस युद्ध मे अबुल-आयास मारा गया।

उमर के मरने के बाद खलीफा ओस्मान उस सिंहसन का अधिकारी हुआ। उसने भारत पर आक्रमण करने के लिए बहुत सी तैयारियाँ की, परन्तु वह कुछ कर न सका। उसके बाद खलीफा अलीबुगदाद वहाँ के सिंहासन पर बैठा। उसके सेनापति ने सिंध देश पर आक्रमण किया और वह विजयी हुआ। परन्तु उसका अधिकार सिंध देश मे अधिक समय तक न रह

---

* जिस लेख मे इस घटना का यहाँ पर उल्लेख किया है, उसके एक स्थान पर लिखा है कि असिल ने अपने नाम पर एक किले का नाम असिलगढ रखा था। असिल के बेटे का नाम पाल था। वह युद्ध मे मारा गया था।

कोटा और जैसलमेर के राज्यो मे मन्त्रियो के अधिकार अधिक है। फ्रास
कार माङ्गटेस्की ने अपने यहाँ मन्त्रियो के सम्बन्ध मे लिखा है : "यहाँ के मन्त्री
महलो मे बन्दी बना कर रखा करते थे और वे राजाओ को वर्ष मे एक बार प्र
का मौका देते थे। प्रजा को दर्शन देने के समय मन्त्री लोग राजाओ को जितना ि
के सामने उतना ही बोलते थे।" माङ्गटेस्की के ये शब्द कोटा और जैसलमेर के
का चित्र हमारे सामने उपस्थित करते है।

गोद लेने की प्रथा—पुत्र के अभाव मे गोद लेने की प्रथा, राजपूतों मे ब
आ रही है। यह प्रथा पैतृक अधिकारो को सुरक्षित रखने के लिए राजाओ मे उ
द्वारा उत्तराधिकारियो का कभी अभाव नही हो सकता। पुत्र के अभाव को पूरा
एक सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था है। राजपूतो की तरह यह प्रथा पारसी
के लोगो मे भी पायी जाती है। इस प्रथा के प्रभाव से, मेवाड के राजा और
उत्तराधिकारी का अभाव नही रहता। यह प्रथा उसके सम्मान और अधिकार को
है। यद्यपि इसके प्रायः भयानक दुष्परिणाम देखे जाते है। पुत्र न होने पर गोद
जीवन काल मे ही होता है। सामन्त अपनी स्त्री के साथ पहले स्वयं गोद लिये
का निर्णय करता है। उसके बाद वह अपना इरादा राजा के सामने रखता है, रा
स्वीकार कर लेता है। जिस बालक को गोद लिया जाता है, वह वश का सबसे
होना चाहिये। यदि ऐसा न हुआ और निकटवर्ती अधिकारी विद्रोह करता है, उस
निर्णय करता है, विधान के अनुसार, निकटवर्ती वंशज को गोद लेने के लिए रा
देता है और उसके कारण जो झगडा पैदा होने वाला होता है, उसको वह रोकने क

यदि अकस्मात पुत्रहीन अवस्था मे किसी सामन्त की मृत्यु हो जाती है त
उसकी स्त्री को गोद लेने का अधिकार होता है। वह वंश के किसी निकटवर्ती बा
का निर्णय कर लेती है और जब तक बालक नाबालिग रहता है, उसकी माता
जागीर का प्रबन्ध करती है।

मेवाड़ के सोलह प्रधान सामन्तो मे देवगढ का सामन्त भी एक था।
उसकी मृत्यु हो गयी। मरने के पहले उसने अपनी स्त्री और अपने सरदार को
कहा था कि यदि मै मर जाऊँ तो नाहरसिह को गोद लिया जाय।

नाहरसिह सग्रामगढ के स्वतंत्र सामन्त का लडका था। उसके साथ
का सम्बन्ध ग्यारह पीढी पहले का था। कुछ दूसरे लोग ऐसे भी थे, जिन
सामन्त के सम्बन्ध सात और आठ पीढी से अधिक दूरी के न थे।
अधिक निकटवर्ती थे। परन्तु इनकी मर्यादा देवगढ के सामन्त की अपेक्षा बहुत
वे लोग या तो राणा की अश्वरोही सेना मे थे अथवा राज्य के साधारण
निकटवर्ती लोगो मे दो परिवार ऐसे थे, जिनका कोई बालक देवगढ के सामन्त
गोद लिया जा सकता था। परन्तु मर्यादा मे कम होने के कारण उनके लिये दे
अपनी स्त्री और अपने अपने सरदारो को परमार्श नही दिया था।

मेवाड के राजा के सामने जब देवगढ के लिये गोद लेने का प्रश्न उपस्ि
अपने मत्रियो के परमार्श से इन्ही दो परिवारो के किसी एक लडके को गोद लि
दिया, जो अधिक समीपवर्ती होते थे। देवगढ़ के सामन्त ने मरने के पहले अपने
गोद लेने के सम्बन्ध मे अपना परामर्श दिया था, उनसे सलाह लेकर सामन्त की

मोताविकेल के बाद उनका पैतृक राज्य निर्बल पड़ने लगा और समय के पश्चात् बगदाद सौदागरों के एक बाजार के सिवा और कुछ न रह गया ।

बगदाद के अधःपतन के उन दिनों मे उसके खलीफो का भारत के साथ जो सम्बन्ध था, वह भी टूट गया और मुस्लिम आतंक कुछ समय के लिए इस देश से समाप्त हो गया । परन्तु सुबुक्तगीन के सिंहासन पर बैठते ही खुरासान मे हिज्री सम्वत् ३६५, सन् ६७५ ईसवी मे भारत पर आक्रमण करने के लिए तैयारियाँ होने लगी और उसी वर्ष सुबुक्तगीन ने अपनी विशाल सेना लेकर सिन्ध नदी को पार किया और उसके पश्चात् भारत मे पहुँच कर उसने आक्रमण किया । उसकी विशाल सेना के सामने भारत के कितने ही राजाओं का पतन हुआ और असंख्य संख्या मे हिन्दू अपना धर्म छोड़कर मुसलमान हो गये ।

उसी शताब्दी के अन्त मे सुबुक्तगीन ने भारत पर दूसरा आक्रमण किया और हिन्दुओं के साथ उसने बड़ी निर्दयता का व्यवहार किया । इसी इस दूसरे आक्रमण मे उसका बेटा महमूद भी उसके साथ आया था और उसने अपने पिता से भी अधिक निर्दय व्यवहार इस देश के लोगों के साथ किये थे । सुबुक्तगीन के बाद उसका बेटा महमूद सिंहासन पर बैठा और उसने बारह बार भारत मे भयानक आक्रमण किये । अपनी इन लड़ाइयों मे उसने उल्लिखित सम्पत्ति की लूट की, नगरो का विनाश किया और मन्दिरों को तोड़ कर उनका सर्वनाश किया । अपने अमानुषिक अत्याचारों के द्वारा उसने हिन्दुओं को अपने पूर्वजों का धर्म छोड़ने और इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर किया।

हिज्री सम्वत् की पहली शताब्दी से लेकर चौथी शताब्दी के अन्त तक खलीफा लोगो का जो व्यवहार भारत के साथ रहा, उसका संक्षेप मे यहाँ पर वर्णन किया गया है । इससे पहले जो विवरण चल रहा था, वहाँ का इतिहास मिली हुई सामग्री के अनुसार हम आगे लिखने की चेष्टा करते है । चित्तौर के राजा मानसिंह के शासन काल मे म्लेच्छों ने चित्तौर पर आक्रमण किया था और बप्पारावल ने उनको पराजित किया था । कासिम उजीर उन म्लेच्छों का नेता था और मोहम्मद बिन कासिम की सेना से सिन्ध देश से आकर, उसने चित्तौर पर आक्रमण किया था । परन्तु ऐतिहासिक ग्रंथों से इस बात का स्पष्टीकरण नही होता कि राजा मानसिंह के समय जो सेना आक्रमण करने के लिये चित्तौर मे आयी थी, उसका प्रधान कौन था । हिन्दू ग्रंथों मे इस स्थल के वर्णन भिन्न-भिन्न तरीको से किये गये हैं । उन ग्रंथों मे इन आक्रमणकारी म्लेच्छों को कही पर यवन, कही पर राक्षस, कही पर दैत्य और कही पर दूसरे नामो से लिखा गया है ।

गहिलोतो, चौहानो और यदु लोगो के ऐतिहासिक ग्रथो मे लिखा है कि सम्वत् ७५० से ७८० तक, सन् ६६४ से ७२४ ईसवी तक आक्रमणकारियो के द्वारा एक भयानक आतंक की वृद्धि हुई थी । ग्रन्थो मे साफ-साफ यह बात नही लिखी गयी कि वे आक्रमणकारी कौन थे । इस बात का भी उल्लेख पाया जाता है कि हिज्री सम्वत् ६५० मे एक यदुवशी राजा ने अपनी राजधानी शालपुर से निकल कर शतद्रु नदी के पूर्व की मरुभूमि मे जाकर आश्रय लिया था । जिस शत्रु के कारण इस राजा को अपनी राजधानी से भागना पडा था, भट्ट ग्रन्थो मे उसका नाम फरीद लिखा है । इसी समय अजमेर के चोहान राजा माणिकराय पर भी शत्रुओ का आक्रमण हुआ था और युद्ध मे मणिकराय मारा गया था ।

इन दिनो मे पजाब का सिन्ध सागर दुआवा खीची वश के पूर्ववर्ती राजाओ के अधिकार मे था और हारस वंश के पूर्वज गोलकुण्डा मे रहते थे । इन दोनो वशो के राजा एक ही समय मे अपने राज्यो से निकाले गये थे । जिन शत्रुओ ने उन पर आक्रमण किये थे भट्ट लोगो ने अपने ग्रथो मे उन्हे दानव लिखा है । मुस्लिम तवारीखो मे लिखा है कि ठीक इसी समय मे इजीद खलीफा

नहीं कर पाता और किसी के आक्रमण पर उसकी शक्तियाँ निर्बल साबित होती है। अनेक घातक त्रुटियाँ शासन की इस प्रणाली मे पायी जाती है।

उन साधनो की कमी नही है, जिनके द्वारा राजपूतो के चरित्र और स्वभा किया जा सकता है। बहुत कुछ उकसाये जाने के बाद भी इन राजपूतो मे कोई पर्ि नही देता। उनके गुणो मे कृतज्ञता, राजभक्ति और सम्मानप्रियता प्रमुख थी और इन्ही गुणो पर एक राजपूत के जीवन का निर्माण हुआ है। वह आज भी इन्ही गुण रखता है। लेकिन समय के परिवर्तन से उसके गुणो का महत्व अब बहुत घट गया के द्वारा प्राचीन काल मे राजपूतो ने ख्याति पायी थी, उन्ही के कारण राजपूतो का घटता जा रहा है।

यदि किसी राजपूत से पूछा जाय कि मनुष्य के जीवन का सबसे बडा अपराध प्रश्न को सुनकर उत्तर देते हुए वह तुरन्त कहेगा : "उपकारी के प्रति कृतघ्न होना उत्तर से साफ जाहिर है कि जो कृतघ्नता मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी बुरी च राजपूतो को कितनी बडी घृणा है। वास्तव मे राजपूत कृतज्ञता को जितना अधिक कृतघ्नता से उतना ही वे घृणा करते है।

राजभक्ति, राजपूतो का प्रधान गुण है। वे अपने राजा के लिए जीते है और वे मरते है। इन राजपूतो के जीवन मे राष्ट्र प्रेम अथवा देश प्रेम के स्थान पर हम मिलती है। वे अपने राजा के साथ कभी विश्वासघात नही कर सकते। एक राजपू कभी कोई उपकार करता है तो वह राजपूत अपने जीवन भर उनके प्रति कृतज्ञ हो उसका विश्वास है कि उपकारी के प्रति कृतघ्नता करने से अथवा उसके उपकारो क दूसरे जन्म मे साठ हजार वर्ष तक नर्क मे रहना पडता है। राजपूत लोग जिन को पढते है, उनमे इस प्रकार के वर्णन बहुत स्पष्ट और विस्तार मे किए गये है।

राजपूतो के चरित्र की श्रेष्ठता का बहुत कुछ ज्ञान हम को उन प्रसिद्ध इ ग्रथो से होता है, जिन्होने सम्राट अकबर, जहाँगीर और औरङ्गजेव के राज्यो का है। उन इतिहासकारो ने साफ-साफ इस बात को स्वीकार किया है कि साम्राज्य मुगलो की असीम सफलता का कारण राजपूतो के साथ उनकी मित्रता थी। र मुगल बादशाहो को बहुत से युद्धो मे विजय मिली थी। जिस आसाम को पराजित आजकल अगरेजी सेना युद्ध कर रही है, उसे किसी समय जैपुर के राजा मानसि किया था और अराकान तथा उडीसा को जीतकर वहाँ पर उसने अपनी विजय की प थी। कोटा का राजा रामसिंह मुगल बादशाह के लिए कई युद्धो मे लडा था और की थी। उन युद्धो मे उनके पाँच भाइयो के साथ, उसका प्यारा पौत्र ईश्वरीसिह गया था।

की यहाँ कोशिश करेंगे। चित्तौर पर आक्रमण होने पर राजा खुमान की तरफ से जो नरेश युद्ध मे लडे थे, उनके नाम इस प्रकार पाये जाते है।

गजनी के गहिलोत, असीर के टांक, नादोल के चौहान, रहिरगढ़ के चालुक्य, (१) सेतबंदर के जीरकेडा, (२) मन्दोर के गेरावी, मगरोल के मकवाना, जेतगढ़ के जोडिया।

तारागढ़ के रीवर, नीरवड़ के कछवाहे, सन्जोर के दाहुम, (३) जूनागढ़ के यादव, अजमेर के गौड, लोहादुरगढ़ के चन्दाना, करौदी के डोर, (४) दिल्ली के तोवर, (५) पाटन के चावडा, झालौर के सोनगढे, (६) सिरोही के देवडा, गागरोने के खीची, पाटरी के झाला, जोयनगढ के दुसाना। (७) लाहौर के बूना, कन्नौज के राठौर छोटियाला के बल्ला, पीरनगढ़ के गोहिल, जैसलगढ़ के भाटी, (८) रोनिजा के सकल, (९) खैरलीगढ़ के सीहुर, मदनगढ़ के निकुम्भ, राजोर के बड़गूजर (१०) कुरनगढ के चन्देल।

सिकर के सिकरवार, ओमरगढ के जैतवा, पल्ली के बीरगोटा, खुनरगढ़ के जारीजा, जरिगाँह के खेरवर, और काश्मीर के परिहार।*

चित्तौर पर खुरासान के बादशाह के आक्रमण करने पर इन सभी राजाओ ने अपनी सेनाओ के साथ आकर शत्रु सेना से युद्ध किया था और चित्तौर की रक्षा की थी। राजा खुमान को चौबीस बार शत्रुओ से युद्ध करना पडा था। उन युद्ध मे राजा खुमान ने अपनी जिस बहादुरी का परिचय दिया था वह रोम सम्राट सीजर की तरह राजपूतों के लिए अत्यन्त गौरवपूर्ण है। उसके शौर्य और प्रताप ने भारत के इतिहास मे राजपूतों का नाम अमर कर दिया है।

राजा खुमान का प्रताप उनके जीवन काल मे ही बहुत बढ गया था और उसका प्रभाव अब तक यह है कि उदयपुर मे जब कभी कोई किसी विपत्ति मे आ जाता है अथवा ठोकर खाकर गिर जाता है तो लोगो के मुँह से निकलता है—खुमान तुम्हारी रक्षा करे। लोगो की इन भावनाओ का अर्थ यह है कि सर्वसाधारण का राजा खुमान पर बहुत विश्वास बढ गया था।

राजा खुमान ने अपने राज्य का अधिकार छोटे पुत्र जगराज को दे दिया। लेकिन कुछ ही दिनो के बाद उसका विचार बदल गया और राज्याधिकार फिर वापस लेकर सिंहासन पर बैठ

---

(१) सेतबदर मालवार के पास है। (२) मन्दोर मे आने वाले गेरावी प्रमार वश की शाखा के वशज थे। (३) जूनागढ (गिरनार) से जो यादव आये थे, उनके वशजो ने उस देश मे बहुत समय तक राज्य किया था। (४) यह नगर गंगा के किनारे दक्षिण मे बसा है। (५) उसके सबध मे भट्ट ग्रन्थो मे कोई विशेष बात नही मिलती। (६) सोनगढे चौहानो की एक शाखा के वंशज थे। (७) फरिस्ता इतिहास मे लिखा है कि जिस समय पहले मुसलमानो ने भारत पर चढाई की, उस समय लाहौर मे हिन्दू राजा का राज्य था सन् ७६१ ईसवी मे अफगानो ने लाहौर के हिन्दू राजा के अनेक नगरो पर अधिकार कर लिया था। उस समय तक अफगानो ने इसलाम धर्म स्वीकार नही किया था। लाहौर के हिन्दू राजा को पाँच महीने के भीतर सत्ताईस बार युद्ध करना पडा। अत मे अफगानो ने सधि कर ली। (८) यह प्रमार कुल की शाखा है और यह राज्य मारवाड मे है।

(९) खैरलोगढ के सीहुर सिंध नदी के किनारे राज्य करते थे। भट्ट ग्रन्थो मे इनके सम्बन्ध मे बहुत विस्तार के साथ लिखा गया है।

(१०) कुरनगढ से जो चदेल अपनी सेना के साथ युद्ध मे गये थे, उनके देश का वर्तमान नाम बुँन्देलखण्ड है।

* जिन राजाओ ने अपनी सेनाओ के साथ आकर चित्तौर को सुरक्षित रखने के लिए शत्रुओ के साथ सग्राम किया था, उनके नाम यहाँ पर लिख दिए गये है।

नही चला आया। लोटकोट से चलकर वे किस रास्ते से सौराष्ट्र पहुँचे, इसका को
मिलता। कनकसेन ने प्रमार राजा को पराजित करके उसके राज्य को अपने अधिक
था और उसके बाद दूसरी शताब्दी सन् १४४ ईसवी मे उसने वीर नगर की प्रतिष्ठा
पीढी के बाद कनकसेन के वश मे राजा विजयसेन ने—जिसको आमेर के राजा गर्या
लिखा है—विजयपुर बसाया था। समय के प्रभाव से विजयपुर उजड गया और
वर्तमान धोलका नगरी बसी हुई है। भट्ट ग्रथो मे लिखा है कि विजयसेन ने बल्लभीपु
नामक दो अन्य नगर भी बसाये थे। इन दोनो मे बल्लभीपुर ही अधिक प्रसिद्ध है
बल्लभीपुर कहाँ है, निश्चित रूप से यह नही बताया जा सकता। परन्तु अनुसध
स्वीकार किया गया है कि वर्तमान भावनगर के पॉच कोस उत्तर पश्चिम की ओर
जो नगर बसा हुआ है यही प्राचीन बल्लभीपुर है।

अनेक लोगो के मत से ऊपर लिखे हुए बल्लभीपुर से मेवाड का राजवश आर
लेकिन इसके सम्बन्ध मे लोगो का परस्पर मतभेद है। अभी कुछ दिन पहले की ब
के राज्य के पूर्व की ओर एक गिरे हुए शिवालय मे एक शिला लेख पाया गया है, उसमे
वंश का प्राचीन वर्णन सक्षेप मे लिखा है। इसके सिवा, राणा राजसिह के समय
आधार लेकर जो पुस्तक लिखी गयी है, उसमे इस बात का उल्लेख मिलता है कि पश्चि
नाम का एक देश है। म्लेच्छो ने इस देश पर चढाई की थी और वहाँ के बालकनाथो
किया था, इस पराजय के समय बालक नाथराज की पुत्री के सिवा और कोई बाकी
एक दूसरे ग्रंथ मे लिखा है कि बल्लभीपुर के विध्वस हो जाने के बाद वहाँ के नि
अर्थात् मारवाड मे भाग कर चले गये और वहाँ उन लोगो ने बल्ली, सन्देरी और
तीन नगर बसाये। वे तीनो नगर अब तक मौजूद है। छठी शताब्दी के आरम्भ मे
बल्लभीपुर का विनाश किया था, उस समय वहाँ जैन धर्म का प्रचार था और अ
शताब्दी के अन्तिम दिनो मे भी वहाँ पर जैन धर्म का प्रचार बराबर पाया है। इन
सिवा, गायनी * नामक नगर का भी उल्लेख पाया जाता है। यह भी पता चलता है
पुर का राजा शिलादित्य अपने परिवार के साथ सौराष्ट्र से भाग कर गायनी नगर मे
भट्ट ग्रंथो मे यह भी लिखा हुआ है कि म्लेच्छो ने राजा शिलादित्य के गायनी राज्य
किया और उसे पराजित किया। उस लडाई मे राजा शिलादित्य के बहुत से योद्ध
उसका वंश समाप्त हो गया। केवल उसका नाम बाकी रह गया।

जिन म्लेच्छो † ने गायनी मे आक्रमण किया था, वे कौन थे इसको निश्चित

---

* गायनी अथवा गजनी वर्तमान काम्बे का प्राचीन नाम है। इस नगर के
मे तीन मील की दूरी पर इसके खंडहर अब तक मौजूद है। भट्ट ग्रंथो मे इस प्रक
नगरो के खडहर पाये जाते है। उनके सम्बन्ध मे अध्ययन करने से जाहिर होता है कि
गण भारतवर्ष के दक्षिण मे शासन करते थे। इन ग्रथो मे लिखा है कि देवगढ प्रा
विलविलपुर पट्टन के नाम से प्रसिद्ध था। इस विलविलपुर पट्टन मे मेवाड राज्य के अ
पूर्वज राज्य करते थे। इससे पता चलता है कि विलविलपुर पट्टन सौराष्ट्र देश मे ही है

† इन म्लेच्छों के सम्बन्ध मे कई प्रकार के मतभेद पाये जाते हैं, कई
सम्बन्ध मे अपनी-अपनी खोज के अनुसार उल्लेख किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार एल
म्लेच्छो को पारसीक वतलाया है। इसके लिये उसने जो प्रमाण दिये है, वे अधिक f

गहिलोत राजा और उनके समकालीन मुस्लिम बादशाह

गहिलोत राजा	राज्य का समय		बगदाद के खलीफा और गजनी के बादशाह	राज्य का समय		विवरण
	सम्वत्	ईसवी		हिज्री	ईसवी	
			बगदाद के खलीफ			
बप्पा का जन्म	७६६	७१३	वलीद ११ वाँ	८६ से ६६	७०५ से ७१५,	भारत मे गंगा के किनारे तक विजय पाई।
चित्तौर पर बप्पा का अधिकार	७८४	७२८	दूसरा उमर १३ वाँ	६६ से १०२	७१८ से ७२१	सिन्ध देश को पराजित किया। चित्तौर के मोरी राजा पर मोहम्मद कासिम के पुत्र महमूद के सेनापतित्व मे आक्रमण।
मेवाड पर बप्पा का शासन	—	—	हसन १५ वाँ	१०४ से १२५	७२३ से ७४२	७३२ ईसवी मे युद्ध—चार्ल्स मारटेल के द्वारा खलीफा की सेना की पराजय।
बप्पा का चित्तौर छोडना	८२०	७६४	अलमनूर २१ वाँ	१३६ से १५८	७५४ से ७७५	सिन्ध राज्य की अन्तिम विजय उनकी राजधानी अरोर का नाम मन्सूर पड़ा। चित्तौर से बप्पा का ईरान जाना।
अपराजित, खलभोज	—	—	हारूं रशीद २४ वाँ	१७० से १९३	७८६ से ८०६	खलीफा हारूँ के बेटो मे उनके राज्य का बटवारा द्वितीय अलमामून को जाबुलिस्तान, सिन्ध और भारत मिला। उसने सन् १८१३ ईसवी तक वहाँ राज्य किया। खलीफा होने पर।
खुमान						
मातृभाट सिंह जी	८६८ से ८९२	८१२ से ८३६	अलमामून २६ वाँ	१९८ से २१८	८१३ से ८३३	जाबुलिस्तान से आकर चित्तौर पर आक्रमण किया।
उत्लूट						
नरवाहन						
शालिवाहन			गजनी के बादशाह			
शक्तिकुमार	१०२४	९६८	अप्तगीन	३५०	९५७	आयतपुर के खण्डहरों मे शक्ति कुमार के सम्बन्ध मे लेख।
अम्बाप्रसाद						
नरवर्मा	—	—	सुबुक्तगीन	३६७	९७७	भारत मे आक्रमण।
यशोवर्मा	—	—	महमूद	३८७ से ४१८	९९७से१०२७	भारत मे आक्रमण—आयतपुर का विध्वंस।

बारहवाँ परिच्छेद

राजा शिलादित्य के मारे जाने पर उसकी गर्भवती रानी पुष्पावती—पुष्पाव
सकी—उससे बालक का जन्म—कमलावती ब्राह्मणी को बालक सौंप कर रानी पुष्पा
होना—ब्राह्मणी के द्वारा बालक का पालन पोषण—बालक गोह का प्रारम्भिक जी
गोह को माण्डलीक का राज्य—गोह के नाम पर गहिलोत वंश की उत्पत्ति—नागादि
भीलों के द्वारा मृत्यु—राजा नागादित्य के बप्पा नाम का एक तीन वर्षीय बालक
का उत्तरदायित्व—बप्पा का बचपन—उसका स्वाभिमानी जीवन—राजकुमारी के सा
रहस्य—उसका परिणाम—चित्तौर पर आक्रमण—बप्पा के द्वारा आक्रमणकारी
बप्पा की ख्याति—उसका अन्तिम जीवन।

म्लेच्छों के आक्रमण से बल्लभीपुर का विनाश हुआ और उसका राजा सेना
गया। उसकी बहुत-सी रानियाँ थी। रानी पुष्पावती के सिवा सभी रानियाँ राजा
साथ सती हुई। विन्ध्य पर्वत के नीचे की भूमि मे चन्द्रावती नाम का एक राज्य है,
वंश मे वह उत्पन्न हुई थी और राजा शिलादित्य के साथ उसका विवाह हुआ था।
जाने के कुछ पहले ही से रानी गर्भवती थी और म्लेच्छो के आक्रमण के पहले वह
यहाँ चली गई थी।

जिस दिन राजा शिलादित्य का अन्त हुआ, रानी पुष्पावती अपने पिता के य
के मन्दिर मे पूजा करने गयी थी। जब वह पूजा करके लौटी तो रास्ते मे उसने
विनाश और राजा के मारे जाने का समाचार सुना, रानी को असह्य आघात पहुँचा।
अनेक सहेलियाँ थी। उस समय उन्होने उसकी सहायता की। रानी गर्भवती होने
समय सती होने का निर्णय न कर सकी और तपस्वी जीवन व्यतीत करने के लिये मर्ा
एक गुफा मे वह चली गयी। उसी गुफा मे उसके पुत्र उत्पन्न हुआ।

मलिया शैलमाला के पास वीर नगर नाम की एक बस्ती थी। उसमे
एक ब्राह्मणी रहती थी। रानी ने उस ब्राह्मणी को बुलाकर अपना पुत्र सौपा और
उसमे वह जलकर खाक हो गयी। चिता पर बैठने के पहले उसने जब कमलावत
अपना पुत्र सौपा तो उससे उसने कहा। कमला, यह पुत्र तुम्हारा है, और तुम इसक
अपना पुत्र समझकर तुम उसका पालन-पोषण करना और ब्राह्मणोचित शिक्षा देकर इ
पर किसी राजपूत कन्या के साथ इसका विवाह कर देना।

कमलावती स्त्री थी। पुत्र का प्यार करना वह जानती थी। रानी के सती हो
कमला ने बालक का पालन अपना पुत्र समझकर किया। बालक गुफा मे पैदा हुआ
को वहाँ के लोग गुहा कहते थे। इसलिये कमला ने उस पुत्र का नाम गोह रक्खा
जीवन के आरम्भ से ही चचल और ढीठ स्वभाव का था। बडे होने पर उसकी ये
लगी। उसका मन खेल-कूद मे अधिक लगता और कमला के रोकने की वह कुछ पर
उसे जो बाते सिखायी जाती थी, उनको भी वह सुनता न था। उसे जो शिक्षा दी
तरफ उसका ध्यान न जाता। आरम्भ से ही चिडियो का पकड़ना और उनको मार
लिए साधारण बात थी। कुछ दिनो के बाद घने जंगलो मे जाकर वह शिकार

कायम की थी, उस समय दिल्ली का महत्व बिल्कुल क्षीण हो गया था। उसके बाद राजा विहल्लन देव ने दिल्ली की फिर उन्नति की थी और अनगपाल के नाम से वह दिल्ली के सिहासन पर बैठा था। उसके उत्तराधिकारियो के शासन काल मे अजमेर के चौहान दिल्ली की अधीनता मे रहते थे और उनका स्थान दिल्ली राज्य के सामन्तो मे था। विहल्लन देव के शासन काल मे अजमेर के चौहानो को अधिक श्रेष्ठता मिल गयी थी और उस समय से उनकी उन्नति आरम्भ हुई थी।

जिन दिनो मे दिल्ली के राजा अनगपाल के साथ कन्नौज के राठोर राजा का युद्ध हुआ, उन दिनो मे सोमेश्वर नाम का एक चौहान राजा अजमेर के सिहासन पर था। सोमेश्वर ने उस युद्ध मे राजा अनगपाल की सहायता की। उससे प्रसन्न होकर अनगपाल ने सोमेश्वर के साथ अपनी लडकी का विवाह कर दिया। उसी लडकी से पृथ्वीराज का जन्म हुआ। उसके कुछ दिन पूर्व राजा अनगपाल ने अपनी एक लडकी का विवाह कन्नौज के राजा विजय पाल के साथ किया था। उस लडकी से जयचन्द का जन्म हुआ था। जयचन्द पृथ्वीराज से बडा था। अनगपाल के कोई बेटा न था, इसलिए उसने पृथ्वीराज को अपने राज्य का अधिकारी बना दिया। उस समय पृथ्वीराज की अवस्था आठ वर्ष की थी। उसके परिणाम स्वरूप राठोरो और चौहानो मे भयानक ईर्षा हो गई और वह ईर्षा दोनो वशो के सर्वनाश का कारण बन गई। पृथ्वीराज जब दिल्ली के सिहासन पर बैठा, जयचद ने न केवल उसकी प्रधानता को मानने से इनकार कर दिया, बल्कि उसने अपनी श्रेष्ठता की घोषणा की। इस अवसर पर अनहिलवाडा पट्टन के राजा ने — जो चौहानो का पुराना शत्रु था—जयचद का समर्थन किया और मदोर के परिहार राजा ने उसका साथ दिया।

पृथ्वीराज के साथ मदोर के परिहार राजा की शत्रुता का कारण लगभग इन्ही दिनो का था। मंदोर के राजा ने पृथ्वीराज के साथ अपनी लडकी के विवाह का निश्चय किया था। परन्तु सब कुछ तय हो जाने के बाद राजा मदोर ने विवाह करने से इनकार कर दिया। पृथ्वीराज और उसके बीच की यह घटना एक वैमनस्य के रूप मे बदल गयी और उसके कुछ ही दिनो के बाद दोनो राजाओ के बीच जो युद्ध हुआ, उससे शत्रुओ को पृथ्वीराज के पराक्रम का पूरा परिचय मिला।

इस प्रकार की घटनाओ ने जयचद के हृदय मे पृथ्वीराज के प्रति ईर्षा की वृद्धि होती गई। पट्टन और मदोर के राजा इसके सम्बन्ध मे जयचद के पूरे साथी बन गये। इस आपसी अशान्ति और ईर्षा का लाभ मोहम्मद गोरी ने उठाया।

पृथ्वीराज की बहन पृथा का विवाह चित्तौर के राजा समरसिंह के साथ हुआ था। इस सम्बन्ध ने पृथ्वीराज और समरसिंह को मित्रता की एक जन्जीर मे बाँध दिया कि वे दोनो अपने जीवन काल मे एक दूसरे से फिर अलग न हो सके।

समरसिंह—जैसा कि ऊपर लिखा गया है—पृथ्वीराज का बहनोई था और अनहिलवाडा पट्टन के राजा के साथ भी समरसिंह का वैवाहिक सम्बन्ध था। फिर भी पृथ्वीराज के साथ समरसिंह की जो घनिष्टता और मित्रता थी, वह पट्टन के राजा के साथ उसकी न थी। यही कारण था कि अनहिलवाडा पट्टन का राजा समरसिंह से प्रसन्न न था। समरसिंह ने कई बार पृथ्वीराज की सहायता की थी और सबसे पहला अवसर वह था, जब उसकी सहायता से नागोर मे सात करोड रुपये का सोना पृथ्वीराज को मिला था यह खजाना प्राचीनकाल से नागोर के उस स्थान मे रखा हुआ था। इससे कन्नौज और अनहिलवाडा पट्टन के राजाओ के हृदयो मे पृथ्वीराज के प्रति और भी अधिक ईर्षा की वृद्धि हुई। वे किसी प्रकार पृथ्वीराज के सर्वनाश के लिए

ब्राह्मण रहा करते थे। उन्ही ब्राह्मणो को बप्पा सौपा गया और उस समय से ब
स्वतन्त्र वातावरण मे रहने लगा।

बप्पा के बचपन के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की किम्बदन्तियाँ सुनने और जान
है, जैसी कि आमतौर पर अन्यान्य प्रसिद्ध पुरुषो के सम्वन्ध मे कही जाती है। जिन
सरक्षण मे बप्पा दिया गया था। वह उन ब्राह्मणो के पशुओ को चराया करता और
भट्ट ग्रथो मे लिखा है कि राजपूतो मे शरद ऋतु के दिनो मे झूलो का उत्सव वडे
आनन्द के साथ मनाया जाता है। इस उत्सव मे सभी लडके और लडकियाँ शामिल ह
दिनो मे नागेन्द्र नगर मे सोलकी राजपूतो का राज्य था। उस वर्ष के झूला उत्सव मे
लिए राजा की लडकी अपने अनेक सखियो और सहेलियो के साथ गयी। वहाँ पहुँचने
हुआ कि झूला डालने की रस्सी नही है। इसलिए अपनी सखियो के साथ राजकुमारी
देखने लगी। उसी समय बप्पा वहाँ पर घूमता हुआ पहुँच गया। राजकुमारी ने बप्प
लिए रस्सी ला देने की बात कही। बप्पा ने उत्तर देते हुए कहा: 'यदि तुम मुझसे वि
तो मै रस्सी ला दूँगा।' उपस्थित लडकियाँ झूलने के लिए उत्सुक हो रही थी। राजकुम
सखियो की तरफ देखा और सभी ने हँसकर बप्पा की वात को स्वीकार कर लिया। उ
पर विवाह की रचना होने लगी। राजकुमारी के दुपट्टे से बप्पा के पहने हुए कपडो की
गयी और सभी सखियाँ एक दूसरे के हाथ पकड कर घेरा बना कर खडी हो गयी।
खडी थी, बीच मे एक आम का वृक्ष था। घेरा बनाये हुए लडकियाँ उस वृक्ष के आस पा
और राजकुमारी के साथ बप्पा का विवाह हो गया। उसके बाद झूला उत्सव आ
उत्सव के वाद सखियो के साथ राजकुमारी अपने महल चली गयी। सभी लडकियाँ व
की इस घटना को भूल गयी।

राजकुमारी विवाह के योग्य हो चुकी थी। इसलिए उसके पिता ने उसके वि
शुरू कर दी। इसी अवसर पर एक दिन राजा के एक ज्योतिषी ने राजकुमारी का
वताया कि राजकुमारी का विवाह तो हो चुका है। इस वात को सुनते ही सबको
हुआ। लेकिन कुछ देर के लिए सभी लोग चुप हो गये। विवाह के इस रहस्य को
राजा ने अपने मन्त्रियो से कहा और इस रहस्य को पता लगाने के लिये राज्य के गुप्तच
किया गया।

यह सम्वाद बप्पा ने भी सुना। भविष्य मे आने वाले संकट का अनुमान लग
अपने साथियो से वाते की। उसके सभी साथी उससे वहुत प्रेम करते थे। इसलिए उन
आशका की सम्भावना न थी। फिर भी बप्पा ने उनसे एक प्रतिज्ञा कराने के लिए ए
गढा खोदा और पत्थर का एक टुकडा लेकर उसने अपने साथियो से कहा: तुम
शपथ लो कि सुख-दुख मे तुम लोग हमारे साथ रहोगे और प्राण जाने की घडी आ
तुम लोग, मेरी किसी बात को किसी से भी प्रकट न करोगे। लेकिन अन्य लोगो
मालूम होगी वे तुम सभी मुझसे कहोगे। शपथ लेने के बाद भी यदि तुम लो
विश्वासघात करोगे तो तुम सभी के पूर्वजों के पुण्य प्रताप इस पत्थर की तरह धोब
मिल कर नष्ट हो जयँगे। *

इतना कह कर बप्पा ने हाथ मे लिये पत्थर के टुकडे को उस गढे मे डाल ि

---

* राजपूत लोग धोबी के गढ़े को वहुत अपवित्र मानते है और इस प्रकार के
किनारे खोदे जाते है।

तीन दिन तक भीषण मारकाट हुई। तीसरे दिन समरसिंह अपने पुत्र कल्याण और तेरह हजार राजपूत सैनिको तथा सरदारो के साथ युद्ध मे मारा गया। उसकी रानी पृथा ने अपने पुत्र और पति के मारे जाने का समाचार सुना। उसने यह भी सुना कि उसका भाई पृथ्वीराज शत्रुओ के द्वारा कैद कर लिया गया है और दिल्ली तथा चित्तौर के राजपूत सैनिको और सरदारो का संहार हुआ है। उसने बिना किसी बात की प्रतीक्षा के चिता तैयार कराई और उसमे अपने पति के साथ जलकर भस्म हो गयी।

इसके बाद गजनी की विजयी सेना ने दिल्ली मे प्रवेश किया और उसको अपने अधिकार मे लेने के बाद शहाबुद्दीन की सेना ने देशद्रोही जयचन्द के राज्य कन्नौज पर आक्रमण किया। जयचन्द घबराकर कन्नौज से भागा और नाव पर बैठकर वह गंगा नदी को पार कर रहा था। दुर्भाग्य के प्रकोप से नाव गंगा मे डूब गयी और जयचन्द का वहीं पर अन्त हो गया।

पृथ्वी पर ऐसी कौन-सी जाति है जो शौर्य, धर्म परायण और जीवन के ऊँचे सिद्धान्तो मे राजपूत जाति की बराबरी कर सके? सैकड़ो वर्ष तक विदेशी आक्रमणकारियो के अत्याचारो को सहकर और भीषण सर्वनाश को पाकर राजपूत जाति ने जिस प्रकार अपने पूर्वजो की सभ्यता को अपने जीवन मे सुरक्षित रखा है, उसकी समता विश्व की कोई भी जाति नही कर सकती, इस बात को तो मानना ही पड़ेगा। यह बात जरूर है कि राजपूतो का स्वभावतः निडर और स्वाभिमानी होते हुए अपने सम्मान और गौरव की रक्षा करने मे प्राणो का उत्सर्ग करना उनके साधारण स्वभाव की बात होती है। वास्तव मे एक वीर जाति के लिए इस प्रकार की बाते उसके गौरव की वृद्धि करने वाली होती है। राजपूत शत्रु के साथ युद्ध करने मे पराजित होकर भागने की अपेक्षा मृत्यु का सामना करने मे अपने जीवन का महत्व समझते है, उनकी समता संसार की वे जातियाँ नही कर सकती, जो अवसरवादी होने का लाभ उठाती है। राजपूत किसी प्रकार अवसरवादी नही कहे जा सकते। इसका प्रमाण उनके हजारो वर्षो का इतिहास है। प्रत्येक राजपूत शरण मे आये हुए शत्रु की रक्षा करना कर्त्तव्य समझता है, जीवन के इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त की श्रेष्ठता कौन स्वीकार न करेगा?

राजस्थान के इतिहास की सभी घटनाये अपने जीवन की अलग-अलग मर्यादा रखती है। कन्नौज के राठौर राजपूतो ने कुछ दूसरे राजाओ के साथ मिलकर जाति द्रोह और देशद्रोह किया। उसका परिणाम उनके सिर पर आया। कन्नौज का पतन हुआ। अनहिलवाड़ा पट्टन का केवल नाम बाकी रह गया और जिन दूसरे राज्यो ने जातिद्रोह करके विदेशी शत्रु का साथ दिया, उनके नाम पर अनन्तकाल के लिए देशद्रोह का कलंक लगा। पृथ्वीराज की युद्ध मे पराजय हुई। परन्तु उसका नाम सदा-सर्वदा के लिए उस देश के इतिहास मे अमर हो गया। समरसिंह के जीवन का अंत हुआ परन्तु उसका यश और प्रताप इतिहास के पन्नो मे अमिट अक्षरो से लिखा गया। राजस्थान के इस प्रकार के अगणित उदाहरण इस बात की शिक्षा देते है कि देश और धर्म पर बलिदान होने वालो की सदा पूजा होती है।

समरसिह के युद्ध मे मारे जाने पर उसकी रानी पृथा उसके साथ सती हो गयी थी और उसका बेटा कर्णसिंह उस समय नाबालिग था।। समरसिह के कई छोटे बेटे थे। लेकिन कर्णसिह ही उसका उत्तराधिकारी था। उसके नाबालिग होने के कारण समरसिह की दूसरी रानी कर्मदेवी ने---जो

हुआ और वह अपने पिता के राज्य से निकल कर दक्षिण की ओर चला गया। वहा पर बिदौर नामक एक हब्शी बादशाह के साथ रहकर उसने एक नये राज्य की प्रतिष्ठा की।

पराक्रमी था। इसलिये उन लोगो ने बप्पा के साथ अपना मेल-जोल बढ़ाया और बप्प स्थितियो का लाभ उठाकर राजा मानसिंह को सिहासन से उतार दिया और चित्तौर अधिकारी बन गया। चित्तौर के सिहासन पर बैठने के बाद बप्पा ने 'हिन्दू-सूर्य', ' 'चक्कवै' नाम की तीन उपाधियाँ धारण की।

महाराज बप्पा ने बहुत-से विवाह किये थे। उनसे जो लडके पैदा हुए थे, सौराष्ट्र चले गये थे और उसके पॉच बेटे मारवाड चले गये थे। अपनी पचास महाराज बप्पा खुरासान राज्य मे चले गये और वहाँ के राज्यो को जीत कर उन म्लेच्छ स्त्रियों के साथ विवाह किया, उन स्त्रियो से भी बप्पा के अनेक पुत्र और कन्य

एक सौ वर्ष तक जीवित रहने के बाद बप्पा की मृत्यु हुई। देलवाडा नरेश ग्रन्थ से पता चलता है कि महाराज बप्पा ने इस्फनहान, कन्धार, काश्मीर, ईराक, ईरा काफरिस्तान आदि अनेक पश्चिम के देशो को जीत कर उन राजाओ की बेटियो से वि और अन्त मे साधु जीवन व्यतीत किया। सब मिला कर बप्पा के एक सौ तीस थी और उससे पैदा हुए बेटे नौगैरा पठानो के नाम से इतिहास मे प्रसिद्ध हुए। अलग-अलग वशो की प्रतिष्ठा की। हिन्दू स्त्रियो से अट्ठानबे पुत्र पैदा हुए थे, जो अग्नि और सूर्यवशी नाम से विख्यात हुए। भट्ट ग्रन्थो मे लिखा है कि बप्पा के मरने उसके मृतक शरीर को जमीन मे गाड़ना चाहते थे और हिन्दू दाह क्रिया करना बात को लेकर हिन्दू और मुसलमानो मे बहुत विवाद बढा। अन्त मे बप्पा के मृत हुआ कपडा हटा कर देखा गया तो शव पर श्वेत रंग के फूले हुए कमल थे। उन मान सरोवर पर लगाया गया। फारस के नौशेरवॉ बादशाह के सम्बन्ध मे भी इसी कही जाती है।

मेवाड के राजवश के मूल प्रतिष्ठाता रावल का यहाँ पर संक्षेप मे जीवन गथा है। अब उसके जन्म के सम्बन्ध मे कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है। पहले लि कि राजा शिलादित्य के शासनकाल मे सम्बत् २०५ मे बल्लभीपुर का विनाश हुआ नवी पीढी मे बप्पारावल का जन्म हुआ। लेकिन राणा के महलो मे जो ग्रन्थ पाये जाहिर होता कि सम्बत् १९१ मे और सन् १३५ ईसवी मे बप्पा रावल ने जन्म शिला लेख से मालूम होता है कि सम्वत् ७७० और ७१४ ईसवी मे चित्तौर मौर्य वंशी था और बप्पारावल उस वश का भान्जा था। राजा मानसिह ने बप्पा वर्ष की अवस्था मे अपने राज्य का [illegible] बनाया था। उसके बाद चित्तौर राज्य सहायता से बप्पा ने वहाँ का राज्य अपने अधिकार मे कर लिया। इस मतभेद मे निर्णय करना बहुत कठिन मालूम होता है लेकिन इसका निर्णय करने मे रौरा मन्दिर मे मिले हुए एक शिला लेख से सहायता मिलती है। उसमे बल्लभीपुर नाम का उल्लेख है जो विक्रम सम्वत् के ३७५ वर्ष बाद आरम्भ होता है। ऊपर सम्वत् पुर के विनाश का सम्वत् लिखा गया है। यह सम्वत् २०५ बल्लभीपुर सम्वत् ज

---

* इस सत्य को सभी लोग स्वीकार नही करते। कुछ ऐसे भी उल्लेख पता चलता है कि सम्वत् ८१० मे बप्पा ने सन्यास ले लिया था, यह बात मेवाड़ भी लिखी जाती है।

सम्मान के साथ उसे चित्तौर के सिंहासन पर बिठाया। इस प्रकार सम्वत् १२६७ सन् १२४१ ईसवी मे राहुप चित्तौर के राज्य का अधिकारी हुआ।

इसके कुछ ही दिनो के बाद चित्तौर के राजा राहुप ने मुस्लिम सेनापति शमसुद्दीन के साथ युद्ध किया। यह युद्ध नगरकोट के मैदान मे हुआ। उस युद्ध मे शमसुद्दीन को पराजित करके राहुप विजयी हुआ।

राहुप के शासन काल मे मेवाड़ मे दो परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनो का सम्बन्ध गहिलोत वंश के साथ था। पहला परिवर्तन यह हुआ कि मेवाड़ का राजवंश अब तक गहिलोत वंश के नाम से प्रसिद्ध था। राजा राहुप के समय से यह वंश सीसोदिया वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दूसरा परिवर्तन यह हुआ कि गहिलोत वंश के राजाओ की उपाधि अब तक रावल थी। राजा राहुप के समय से वहाँ के राजा राणा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

राणा उपाधि का रहस्य यह है कि राजा राहुप के शत्रुओं मे मंडोर का परिहार राजा मुकुल भी एक था। राणा उसकी उपाधि थी और वह राणा मुकुल के नाम से पुकारा जाता था। राजा राहुप ने अपनी सेना लेकर मन्दोर पर आक्रमण किया और मुकुल को पराजित करके एवम् उसकी राजधानी मे उसे कैद करके उसे सीसोदिया मे ले आया। उसके बाद उसका गोरवाड़ नामक नगर तथा उसकी राणा की उपाधि लेकर उसको छोड़ दिया और राहुप ने स्वयं उस समय से राणा की उपाधि धारण की।

अड़तीस वर्ष तक बड़ी योग्यता के साथ राहुप ने राज्य किया। उसके बाद उसकी मृत्यु हो गयी। राहुप के सिंहासन पर बैठने के समय मेवाड़ की परिस्थिति अच्छी नही थी। राज्य की राजनीतिक शक्तियाँ बहुत कुछ छिन्न-भिन्न हो गयी थी। राहुप ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ बिखरी हुई निर्बल शक्तियो को शक्तिशाली बनाया और मेवाड़ के प्राचीन गौरव की रक्षा की। उसके उत्तराधिकारियो की अपेक्षा उसका शासन अनेक अच्छाइयो के लिये प्रसिद्ध हुआ।

राजा राहुप से लेकर लक्ष्मणसिंह तक अर्द्ध शताब्दी मे नौ राजा चित्तौर के सिंहासन पर बैठे उनका शासन काल लगभग एक दूसरे के बराबर रहा। उनमे छै राजा युद्ध मे मारे गये। म्लेच्छो ने गया मे आक्रमण किया था और अपने तीर्थ स्थान गया की रक्षा करते हुए उन छै राजाओ ने अपने प्राणो की आहुतियाँ दी। उन छै राजाओ मे पृथ्वीमल का नाम अधिक विख्यात है। उसके बाद अलाउद्दीन के समय तक फिर वहाँ कोई अशान्ति नही पैदा हुई। परन्तु इस बीच मे एक बार चित्तौर कुछ दिनो के लिये राजपूतो के हाथ से निकल कर शत्रुओ के अधिकार मे चला गया था और फिर सीसोदिया वंश के भानुसिंह ने अपने शासन काल मे चित्तौर का उद्धार कर राणा की उपाधि धारण की थी। भानुसिंह के दूसरे बेटे का नाम चन्द्र था। उसके वंश के लोग चन्द्रावत नाम से प्रसिद्ध हैं। यह वंश मेवाड के सामन्तो मे बहुत पराक्रमी समझा जाता है।

राजा राहुप और लक्ष्मणसिंह के मध्यवर्ती समय मे जो राजा हुए थे, उनके शासन काल मे आक्रमणकारियो के उपद्रव अधिक बढ गये थे और बाहरी शक्तियो ने समय-समय पर आक्रमण करके अच्छे-अच्छे नगरो और तीर्थ स्थानो का सर्वनाश किया था।

लेकिन उस समय के विवरण भट्ट ग्रन्थो मे जो पढने को मिलते हैं, उनमे कोई ऐतिहासिक सामग्री नही पायी जाती। उस समय के विवरण कुछ ऐसे ढंग से लिखे गये है, जिनको पढ कर कई प्रकार के संशय उत्पन्न होते हैं और एक ही प्रकार के उल्लेख उस समय के उन ग्रंथो मे बार-बार लिखे गये है। इसलिये उनके सम्बन्ध मे यहाँ पर कुछ अधिक नही लिखा गया।

तेरहवाँ परिच्छेद

चित्तौर से बप्पा के चले जाने के बाद वहाँ पर एक नये युग का प्रारम्भ—खुमान का शासन—भारतवर्ष की निर्बल परिस्थितियाँ—सूरत देश मे जाकर वह लडकी के साथ विवाह किया—उस लडकी से बालक का जन्म—चित्तौर पर मुसल मरण—वहाँ के राजा खुमान ने युद्ध करके मुस्लिम सेनापति महमूद को गिरफ्तार किय कौन था—गहिलोत राजा और उनके समकालीन मुस्लिम बादशाह—सेनापति मह वर्ष तक मुसलमानो के आक्रमण से भारतवर्ष सुरक्षित रहा—उसके बाद भारत मे आक्रमण।

यह लिखा जा चुका है कि बप्पा सम्वत् ७८४ और सन् ७२८ मे चित्तौर पर बैठे थे। उनके चित्तौर से ईरान चले जाने के बाद से लेकर राजा समर सिह के वर्णन इस परिच्छेद मे लिखने की हम चेष्टा करेगे। चित्तौर से बप्पा के चले जाने के एक नये युग का आरम्भ होता है। बप्पा रावल से लेकर समरसिंह तक चार श होती है। इन चार सौ वर्षों के भीतर मेवाड के सिहासन पर सब मिलाकर अठा उनके सम्बन्ध मे भट्ट ग्रन्थो मे कुछ ऐतिहासिक सामग्री नही मिलती। कही-कही बहुत उल्लेख मिलता है, उससे यह जाहिर होता है कि वे राजा बप्पा रावल के और उनकी कीर्ति आज भी राजस्थान मे मौजूद है।

आयतपुर की एक शिला के लेख से जाहिर होता है कि बप्पा रावल और मे शक्तिकुमार नाम का एक राजा हुआ और वह सम्वत् १०२४, सन् ९६८ ईस अधिकारी था। जैनियो के लेखो से पता चलता है कि राजा शक्तिकुमार से चार पी ९२२, सन् ८९६ ईसवी मे अल्लट नाम का एक राजा चित्तौर के राज सिहासन खुमान रासा नाम के एक प्राचीन काव्य ग्रथ से जाहिर होता है कि बप्पा और मध्यवर्ती समय मे मेवाड राज्य पर एक बार मुसलमानो का आक्रमण हुआ था राणा खुमान के समय मे हुआ था। राणा खुमान ने सन् ८१२ ईसवी से लेकर तक राज्य किया था।

भारतवर्ष मे इस समय भयानक अन्धकार फैला हुआ था और उस अन्धक ऐतिहासिक वर्णन खोजना बहुत कठिन मालूम होता है, जब कि उनके सम्बन्ध मे का स्पष्ट प्रतिपादन किया गया हो। फिर भी, भट्ट कवियो, आईन अकबरी अ ग्रन्थों की सहायता से जो सामग्री हमे मिल सकी है, उसकी सहायता से हम यहाँ का प्रयास करेगे।

गहिलोत वश की चौबीस शाखाओ का वर्णन पहले किया जा चुका है। कुछ शाखाये बप्पा के द्वारा उत्पन्न हुई। चित्तौर पर अधिकार कर लेने के बाद व गये। उसके पास के बन्दर द्वीप पर इस्फगुल नाम का राजा राज्य करता था।

छोडा जा सकता है,। बादशाह का यह सन्देश वायु के समान सम्पूर्ण चित्तौर नगरी मे फैल गया।

रानी पद्मिनी को भी यह सदेश सुनने को मिला। उसने बड़े धैर्य और साहस से काम लिया। चित्तौर मे उसके साथ उसका चाचा गोरा और [illegible] नाम का [illegible] रहता था। दोनो ही राजपूत शूरवीर और साहसी थे। [illegible] परामर्श किया और जो निर्णय हुआ, उसके अनुसार चित्तौर के प्रमुख [illegible]। [illegible] बादशाह के पास सन्देश भेजा गया कि [illegible] तातारी सेना [illegible] चित्तौर से जाने को तैयार होगी, पद्मिनी बादशाह के पास [illegible]। [illegible] स्वीकार कर लिया। उसके स्वीकार कर लेने पर [illegible] पद्मिनी के साथ जो राजपूत महिलायें रहा करती है, [illegible]। वे सभी पालकियो पर पर्दे के भीतर जायेगी। [illegible] साथ-साथ दिल्ली जायेगी [illegible]। बादशाह ने [illegible] स्वीकार कर लिया।

[illegible] पालकियाँ चित्तौर [illegible] बादशाह के शिविर [illegible] कहार थे और वे [illegible]। [illegible] सशस्त्र राजपूत बैठे थे। चित्तौर से [illegible] गयी। बादशाह ने शिविर मे आने के लिये एक बड़ा शामियाना [illegible] और उस शामियाने के चारो तरफ एक दरवाजा बनाकर कनाते [illegible]। [illegible] उस सामियाने के भीतर पहुँच गयी।

तातार सेना चित्तौर से दिल्ली जाने के लिये तैयार हो चुकी थी और [illegible] पद्मिनी के दिल्ली ले जाने मे कोई सन्देह नही रह गया था। उसने राणा भीमसिंह को [illegible] अन्तिम भेट करने के लिए आधा घन्टे का समय दिया था। भीमसिंह शामियाने [illegible]। उसी समय एक पालकी मे बैठे हुये राजपूत ने उसकी तरफ देखा और [illegible] राणा को अपने पालकी मे बिठा लिया। इस कार्य का सम्पादन बड़ी सावधानी और [illegible] के साथ हुआ। उसके बाद ही वह पालकी शामियाने से निकलकर चित्तौर की तरफ [illegible]। उसके पीछे चित्तौर की कुछ अन्य पालकियाँ भी वहां से लौटी। बाकी पालकियाँ शामियाने के भीतर मौजूद रही। राणा को जो आधे घन्टे का समय दिया गया था, उसके बीत जाने पर और राणा के शामियाने से न लौटने पर बादशाह को बहुत क्रोध आया। आवेश मे आकर वह अपने स्थान से रवाना हुआ और सहज ही शामियाने के भीतर पहुँच गया। उसके साथ बहुत से सैनिक भी शामियाने के भीतर गये। बादशाह को देखते ही कहारो ने—जो पालकियो के साथ, आपस मे कुछ सकेत किये और उसके बाद ही पालकियो के भीतर से सशस्त्र राजपूतो ने निकलकर बादशाह पर आक्रमण किया।

दोनो ओर से मारकाट आरम्भ हो गयी। बादशाह के सैनिको ने अलाउद्दीन की रक्षा बडी तेजी के साथ की। उसकी सेना को राजपूतो का कपट मालूम हो गया। उसी समय तातारी सेना का एक सैनिक दल भीमसिह को पकडने के लिये चित्तोर की तरफ रवाना हुआ। शिविर से लौटी हुई पालकियाँ अभी तक चित्तौर से दूर थी। बादशाह के सैनिको के आ जाने पर पालकियो मे बैठे हुए राजपूतो ने कूद कर उनका सामना किया। कुछ देर तक भयानक मारकाट हुई और उन राजपूतो ने

सका। अली बुगदाद के मर जाने पर खलीफा अब्दुल मलिक और खुरासान के ब
समय मे भी भारत मे आक्रमण करने के लिए तैयरियाँ होती रही। परन्तु कोई

इस बीच मे कुछ समय वीत गया। खलीफा वलीद अपने पिता के स्था
पर बैठा और राज्य का अधिकारी होने के बाद उसने एक विशाल सेना को साथ
पर आक्रमण किया। उसने सिंध राज्य और करीब के नगरो पर अधिकार कर f
से पता चलता है कि गगा के पश्चिमी किनारो पर जो छोटे-छोटे राजा रहते थे
मन्जूर कर लिया था। उस समय इस्लाम की तलवार तेजी पकड रही थी और
करने के लिए सहज ही सहन न करता था। जो युद्ध में गया, उसी का सर्वनाश
इस्लामी सेना के आक्रमण से यह दशा हो गई थी। इसी मौके पर दाहिर के सिन्
हुआ और राजा दाहिर मारा गया। राजा रोडरिक के अण्डलूस राज्य पर इस्लाम
लगा। इस प्रकार के सैकडो संघर्ष हुए और इस्लामी सेना का आतक भयानक हो
के आक्रमण सबत् ४७४ सन् ७१८ इसवी मे सेनापति मोहम्मद बिन कासिम के
हुए। सिध के राजा दाहिर को मार कर कासिम दाहिर की दो युवती लडकियो
ले गया और खलीफा की भेट मे भेजी। इन्ही दोनो लडकियो के द्वारा सेनापति
कासिम का सर्वनाश हुआ। आईन अकबरी और फरिश्ता इतिहास मे इस घट
लिखा है कि राजा दाहिर की दोनो युवती लडकियाँ जब खलीफा के पास भेजी
ने कासिम के अश्लील व्यवहार को खलीफा से जाहिर किया। उसे सुनते ही
क्रोध आया और उसने आदेश दिया कि सेनापति कासिम को कच्ची खाल मे
पेश किया जाय। यही हुआ। उस समय कासिम कन्नौज के राजा हरचन्द के
लिए जा रहा था। आदेश के अनुसार वह खलीफा की अदालत मे लाया गया
किया गया।

अलमंजूर जब खलीफा अब्बास का सेनापति था, उस समय सिध और
अधिकार मे थे। सिंध की पुरानी राजधानी अरौर का नाम जो वक्सर के उत्तर
दूरी पर है—बदल कर मंसूर रखा और उसके अपने रहने का स्थान बनाया।
जब बप्पा-रावल चित्तौर छोडकर ईरान चले गये थे।

हारूँ अलरशीद ने खलीफा होने पर अपने विशाल राज्य को अपने बेटो
दूसरे पुत्र अलमानून को खुरासान जबूलिस्तान, सिध और हिन्दुस्तानी राज्य दि
के बाद अलमानून अपने भाई को पदच्युत करके हिजरी ७८ सन् ८१३ ईसवी मे
यह वही समय था, जब खुमान चित्तौर का राजा था। उसी के शासन क
जबूलिस्तान से आकर चित्तौर पर आक्रमण किया था। ऊपर चित्तौर के आक्रम
का नाम लिखा गया है और जिसे चित्तौर के राजा खुमान ने पराजित करके
वह यही मामून था, जिसका नाम लिखने वालो की भूल से महमूद लिखा गया है

इसके बाद बीस वर्ष तक मुसलमानो ने भारत मे कही पर आक्रमण
प्रभाव इन दिनों मे कमजोर पड रहा था और भारत वर्ष के जिन देशो मे
कर लिया था, सिध को छोडकर बाकी सभी देश उनके अधिकार से निकल गये
हारूँ रशीद का पोता मोतावकेल बगदाद के सिंहासन पर बैठा यह समय सन् ८५

करने लगे और अपने-अपने राज्यो मे आकर वे सभी चित्तौर मे पहुँच गये। बडी तेजी के साथ युद्ध की तैयारियाँ हुई और राणा के बडे पुत्र अरिसिंह ने चित्तौर की सेना लेकर बादशाह की फौज का सामना किया।

तीन दिनो तक यवनो और राजपूतो का भयानक सग्राम हुआ। तीसरे दिन अरिसिंह मारा गया। उसके बाद अरिसिह का छोटा भाई अजयसिंह युद्ध के लिए तैयार हुआ। परन्तु राणा भीम-सिह का प्रेम उसके साथ अधिक था, इसलिये अजयसिंह को युद्ध मे जाने से रोका गया। उस अवस्था मे अजयसिंह के जो छोटे भाई थे, एक-एक करके वे युद्ध मे गये और सब मिलाकर राणा भीमसिंह के ग्यारह लडके युद्ध मे मारे गये। केवल अजयसिंह बाकी रहा। राणा का इरादा उसको युद्ध मे भेजने का किसी प्रकार न था इस लिए उस रोक कर भीमसिंह ने निश्चय किया कि अब मै स्वय युद्ध मे लडने के लिये जाऊँगा।

राणा भीमसिंह चित्तौर मे एक ओर युद्ध मे जाने की तैयारी कर रहे थे और दूसरी ओर महलो की ओर मे जौहर व्रत पालन की व्यवस्था हो रही थी। रानियो और राजपूत बालाओं ने इस बात को समझ लिया था कि चित्तौर पर भयकर समय आ गया है और चित्तौर की स्वतन्त्रता के नष्ट होने के समय राजपूत रमणियो को अपने सतीत्व एवम् स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए जौहर व्रत का पालन करना है। चित्तौर की पुरानी प्रणाली के अनुसार शत्रु के आक्रमण करने पर जब राज्य की रक्षा का कोई उपाय न रह जाता था तो राजपूत बालायें सहस्रो की सख्या मे जौहर व्रत का पालन करती हुई एक साथ आग की होली मे बैठ कर अपने प्राणो का उत्सर्ग करती थी। उसी जौहरव्रत की तैयारी इस समय आरम्भ हुई। राजप्रासाद के बीच मे पृथ्वी के नीचे भीषण अंधकार मे एक लम्बी सुरग थी। दिन मे भी उस सुरग मे भयानक अधकार रहता था। इस सुरंग मे बहुत सी लकडी पहुँचा कर चिता जलायी गयी। उसी समय चित्तौर की रानियाँ, राजपूत बालायें और सुन्दरी युवतियाँ अगणित सख्या मे प्राणोत्सर्ग करने के लिये तैयार हुई। सुरग के भीतर आग की लपटे तेज होने पर वे सभी बालायें अपने बीच मे पद्मिनी को लेकर सत्य सतीत्व और स्वाधीनता के महत्व के गीत गाती हुए सुरग की तरफ चली। सुरग मे प्रवेश करने के लिये सीढियाँ बनी हुई थी, उन सीढियो से होकर वे सुरंग के भीतर प्रवेश करने के लिये नीचे उतरने लगी। सीढियो के भीतर जाने पर भयानक आवाज के साथ लोहे का बना हुआ सुरग का मजबूत दरवाजा बन्द हुआ और कुछ क्षणो के भीतर सहस्रो राजपूत बालाओ के शरीर सुरंग की प्रज्वलित आग मे जलकर ढेर हो गये।

चित्तौर की स्वाधीनता की कोई आशा न रही थी। सुरंग का लोह द्वार बन्द होने ही राणा भीमसिह की सेना युद्ध के लिये चित्तौर से निकली। बचे हुए सभी सामन्त और सरदार अपनी सेनाओ के साथ युद्ध मे पहुँचे। बादशाह अलाउद्दीन की विशाल सेना के साथ चित्तौर का यह अतिम युद्ध था।

युद्ध-स्थल पर चित्तौर की सेना के पहुँचते ही दोनो ओर से सग्राम आरम्भ हो गया। बादशाह के साथ दिल्ली से जो विशाल सेना आयी थी, वह एक साथ युद्ध मे कूद पडी। चित्तौर से राजपूत इस सग्राम को अपने जीवन का अन्तिम युद्ध समझते थे। इसलिए उन्होंने शत्रुओ के साथ युद्ध करने मे कुछ उठा न रखा। भयानक रूप से दोनो सेनाओ मे मारकाट हुई। राजपूत सेना के मुकाबले मे बादशाह की सेना बहुत बडी थी। इसलिए भीषण युद्ध के बाद चित्तौर की सेना की पराजय हुई, अगणित सख्या मे उसके सैनिक और सरदार मारे गये और चित्तौर की शक्ति का पूर्ण

की ओर से खुरासान मे राज्य करता था और खलीफा वलीद की सेना भारत मे लिए गगा के किनारे तक आ गयी थी । इसके आगे इन तवारीखो मे भी कुछ नही प्रकार के उल्लेखो से जाहिर होता है कि इन दिनो मे जिन आक्रमणकारियो ने भार मचाया था, उनमे इजीद कासिम अथवा वलीद के किसी अन्य अधिकारी का हो होता है । यह भी सम्भव है कि इन्ही दो मे से किसी की ओर से किसी ने अधि दिनो भारत मे आक्रमण किया हो । क्योकि मुसलिम तवारीखो से भारत पर ह के जो वर्णन लिखे गये है, उनमे इन्ही दोनो का नाम पाया जाता है । उनके आक्रम समय हुए थे, जब राजा मानसिह चित्तौर मे राज्य करता था । उस समय म्लेच चित्तौर की रक्षा करने के लिए जो राजा युद्ध मे गये थे, उनके नाम इस प्रकार

अजमेर, कोटा, सौराष्ट्र और गुजरात के राजाओ के अतिरिक्त हूणो का ऊत्तर देश का राजा बूसा, जारीजा का जारा शिव, जगल देश का राजा जोहिया, मालून, ओहिर और हूल । इनके सिवा और बहुत से राजाओ तथा सरदारो ने अ चित्तौर आकर म्लेच्छो के साथ युद्ध किया था । उस युद्ध मे मानसिह की तरफ राजाओ ने आकर भाग लिया था जिनके नामो के उल्लेख भट्ट ग्रथो मे नही पाये ज राजा दहिर जब कासिम के द्वारा मारा गया था उस समस उसका लडका अपने र चित्तौर चला गया था और इस समय मानसिह की तरफ से उसने भी शत्रुओ के सा

राजा मानसिह—जैसा कि पहले लिखा जा चुका है—मौर्यवश का था अ प्रमुख शाखा प्रमार वश के राजा उस समय भारतवर्ष के चक्रवर्ती राजा थे * रा ओर से जिन राजाओ और सरदारो ने उस लडाई मे युद्ध किया था उनमे बप्पा अधिक बहादुरी दिखायी थी और उसी के कारण शत्रु लोग पराजित होकर सि चले गये थे । उनका पीछा करता हुआ बप्पा रावल अपने पूर्वजो के राज्य गजन उस समय वहाँ का राजा सलीम था । उसको पराजित करके उसने अपने सिहासन पर विठाया था और राजा सलीम की बेटी से ब्याह कर के वह अपने चित्तौर चला आया था ।

सन् ८१२ से ८३६ ईसवी तक राजा खुमान ने चित्तौर मे राज्य किया । मे जिस महमूद ने आकर चित्तौर पर आक्रमण किया था, उसके सम्बन्ध मे ऐ आधर पर यह लिखा जा चुका है कि उस आमक्रणकारी का नाम महमूद भूल वास्तव मे वह मामून था, जो अपने पिता के राज्य का अधिकारी हुआ था और लगातार भारत पर आक्रमण किये थे । राजा खुमान के समय मे चित्तौर पर जो उसकी दो शताब्दी के बाद सुबुक्तगीन के बेटे महमूद के आक्रमण आरम्भ होते साफ जाहिर है कि राजा खुमान के समय खुरासान के बादशाह मामून ने अपनी पर आक्रमण किया था । राजा खुमान के समय के ऐतिहासिक विवरण भट्ट पाये जाते है । इसलिए जो सामग्री मिलती है, उसके आधार पर उस समय के

---

* चित्तौर के राज्य दरबार मे बहुत से सामन्त रहा करते थे । उनका वर्णन ग्रन्थ मे किया है । यूनान के इतिहासकारो ने लिखा है कि मौर्य वशी चन्द्रगुप्त के सा होने पर सिल्यूकस ने अपनी लडकी चन्द्रगुप्त के साथ ब्याह दी थी और उसके साथ उ थी । उन्होने यह भी लिखा है कि उन दिनो चन्द्रगुप्त की सेना मे बहुत-से ग्रीक सैनि

मर गया । युवती ने उसे घसीट कर अरिसिंह के पास पहुँचा दिया और फिर वह अपने खेत में लौट आयी ।

युवती के उस पराक्रम को देखकर अरिसिंह और उसके सरदार आश्चर्य में आ गये । सभी उस युवती की प्रशंसा करने लगे और फिर धीरे-धीरे वहाँ से चल कर वे पास की नदी के किनारे पहुँच गये । वहाँ पर खाने की सामग्री तैयार की गयी । जहाँ पर वे लोग बैठे थे, कुछ फासिले पर अरिसिंह का घोडा बँधा था । अकस्मात मिट्टी का एक ढेला आ कर खेत की तरफ से आकर अरिसिंह के घोडे को लगा । वह तुरन्त गिर गया । यह देख कर अरिसिंह और उसके साथियों ने युवती के खेत की तरफ देखा । वह मिट्टी के ढेले फेंक-फेंक कर मचान से पक्षियों को उड़ा रही थी । सभी ने समझ लिया कि उसी युवती के ढेले से घोड़ा गिर गया है । उसी समय उस युवती को भी यह मालूम हो गया कि मेरे एक ढेले से इन शिकारियों के घोड़े को चोट लगी है । इस लिए अपने मचान से उतर कर वह युवती उन लोगों के पास आयी और उसने उन लोगों से बातें की, उनसे उसकी निर्भीकता और नम्रता को देखकर अरिसिंह और उसके सरदार आश्चर्य करने लगे । बातें करके युवती फिर अपने खेत में चली गयी । अरिसिंह और उसके साथी सरदार भी शिकार से लौट कर चले आये ।

लौट आने के बाद भी अरिसिंह को उस युवती का स्मरण न भूला । उसने उसका पता लगवाया तो मालूम हुआ कि वह युवती चौहान वंश के एक साधारण राजपूत की लड़की है । सहज ही अरिसिंह के हृदय में उसके साथ विवाह करने की आकांक्षा पैदा हुई । उसने पिता से अपने विचार को जाहिर किया और राणा ने कई आदमियों को भेज कर युवती के पिता को बुलाया । युवती का बाप बुड्ढा आदमी था उससे अरिसिंह का प्रस्ताव कहा गया । लेकिन उस बूढ़े पुरुष ने ऐसा करने से इनकार कर दिया । परन्तु युवती की माता ने अपने पति को इस प्रस्ताव को स्वीकार के लिए बाध्य किया । इस प्रकार उस युवती का विवाह अरिसिंह के साथ हो गया और उस युवती से जो लड़का पैदा हुआ, उसका नाम हमीर था । चित्तौर पर अलाउद्दीन के अधिकार करने के समय हमीर की अवस्था केवल बारह वर्ष की थी और उस समय तक वह अपने ननिहाल में ही रहता रहा । इसलिए चित्तौर में उसे कोई नहीं जानता था ।

चित्तौर पर अलाउद्दीन का अधिकार होने के पहले ही अजयसिंह कैलवाड़ा के पहाड़ी स्थान पर चला गया था । उसके सामने चित्तौर के उद्धार की समस्या थी । इस समस्या को सुलझाने के लिए उसके पास कोई साधन न था । अजयसिंह जहाँ पर जा कर रहा था, वहाँ के पहाड़ी सरदारों में मुंजावलैचा नाम का एक सरदार अत्यन्त शूरवीर था । उसके साथ अजयसिंह की शत्रुता हो चुकी थी । कैलवाडा शेरो मल्ल प्रान्त का एक हिस्सा था । यहाँ पर मुंजावलैचा ने आक्रमण किया था और अजयसिंह ने उसके साथ युद्ध करके भाले से उसको घायल किया था । उस समय से मुंजा अजयसिंह के लिए बड़ा घातक सिद्ध हो रहा था और उसे पराजित करना अजयसिंह के लिए बहुत आवश्यक हो गया था । ऐसे समय पर अजयसिंह की सहायता उसके पुत्रों के द्वारा होनी चाहिए थी । सुजानसिंह और अजीमसिंह नाम के दो बेटे अजयसिंह के थे । अजीमसिंह बड़ा था, उसकी अवस्था उस समय १६ वर्ष की और सुजानसिंह की १५ वर्ष की थी । इस अवस्था में राजपूत बालक युद्ध में बहुत-कुछ काम करते हैं । लेकिन अपने दो बेटों से अजयसिंह को मुंजा की शत्रुता में कोई सहायता न मिली । इस अवस्था में अजयसिंह ने हमीर की खोज की और उसे उसको मुंजा पर आक्रमण करने को भेजा । अजयसिंह के इस आदेश को लेकर हमीर मुंजा पर आक्रमण करने को गया और कुछ ही दिनों में वह उसको मार कर लौटा । उस समय

गया । इस प्रकार की घटना के फलस्वरूप पुत्रों के साथ उसका संघर्ष बढ़ गया और मगल नामक बेटे ने उसको जान से मार डाला और वह स्वयं राजा बन बैठा ।

राज्य के सामन्तो और सरदारो ने इसको सहन न किया । सब ने मिल कर से निकाल दिया । वह अपने पिता के राज्य से उत्तर मरुस्थली के मैदान मे चला ग पर जा कर उसने लोदडवा नामक नगर बसाया और मंगली गोत्र की प्रतिष्ठा की ।

मगल के निकाले जाने पर मातृभाट चित्तौर के सिंहासन पर बैठा उसके उत्तराधिकारियो के शासन काल मे चित्तौर के राज्य की सीमा की बहुत वृद्धि हुई किनारे और आबू पर्वत के नीचे के विस्तृत मैदानों मे जो असभ्य और जगली जातियो थे, वे सभी चित्तौर की अधीनता मे आ गये थे । यहाँ के दो प्रसिद्ध किले धरनगढ अब तक मौजूद है ।

मातृ भाट ने मालवा और गुजरात मे तेरह स्वतत्र राज्यो की स्थापना * समय से उसके पुत्र गाटेरा गहिलौत के नाम से प्रसिद्ध हुये । राजा खुमान के बाद चित्तौर के सिंहासन पर जो राजा बैठे उनके शासन काल मे ऐसी घटनाये नही हुई, ि सिक महत्व मिलता । इसीलिये प्राचीन ग्रथो मे उनके सम्बन्ध मे कुछ अधिक नही लि

उन दिनो मे चित्तौर के गहिलोत राजाओ और अजमेर के चौहानो मे कभी ए नही रहा । वे कभी घनिष्ट मित्रो के रूप मे हो जाते थे और कभी एक दूसरे के भ जाते थे । वे कभी एक दूसरे का सर्वनाश करने के लिए तैयार हो जाते और कभी करने के लिये मिलकर शत्रुओ के साथ सग्राम करते ।

चित्तौर के वीरसिह ने चौहान राजा दुर्लभ को मार डाला था । लेकिन दुर्लभ देव ने वीरसिंह के उत्तराधिकारी रावल तेजसिंह के साथ अटूट मित्रता की थी और द मुस्लिम सेनाओ के साथ युद्ध किया था । राजपूतो के इस प्रकार के गुण भट्ट ग्रन्थो काल के शिला-लेखो मे पढने को मिलते है । उन सब मे यह भी पढने को मिलता के जीवन मे आरम्भ से ही हथियार, घोड़ा और शिकार का प्रेम मिलता है । उन तीन बातो के सिवा और कुछ न रहता था और इन्ही तीनों बातो के द्वारा उनके शौर्य का संचार होता था, उसका परिचय वे अपने जीवन की अतिम घड़ी तक

---

* जिन तेरह राज्यों की स्थापना हुई थी, उनमे ग्यारह के नाम इस प्रकार चम्पानेर, चौरेता, भोजपुर, लुनार, नीमखोर, सोदारू, जोधगढ, मन्दपुर, आइतपुर

हमीर की उस नीति से शत्रुओं का संहार आरम्भ हुआ। चित्तौर मे दिल्ली की जो सेना रहती थी। उसने इन आक्रमणकारियो से बदला देने के लिए बहुत-कुछ प्रयत्न किया, परन्तु उसे कुछ सफलता न मिली। हमीर की ओर से उस प्रकार के जो व्यवहार किये गये, उनसे न केवल शत्रुओं को आघात पहुँचा, बल्कि मेवाड के बहुत से स्थान निर्जन हो गये। जो भूमि हरे-भरे खेतो से शोभायमान रहा करती थी, वह जगलो के रूप मे बदल गयी। समस्त रास्ते अरक्षित हो गये और वाणिज्य व्यवसाय के स्थान सूने मैदानो के रूप मे दिखायी देने लगे।

राणा हमीर ने चित्तौर के लिए जो योजना बनायी थी, उसके कारण इस प्रकार मेवाड का विनाश हुआ। परन्तु इसके सिवा शत्रु को निर्बल करने के लिए उसके पास और कोई साधन न था। वह साहस से काम ले रहा था और अपनी शक्तियो को मजबूत बनाने के लिए बहुत समय तक वह इसी प्रकार के कार्य करता रहा।

राणा हमीर ने कैलवाडा मे ही अपने रहने का स्थान बनाया। वहाँ पर उसने एक विशाल तालाब तैयार करवाया। उसका नाम हमीर का तालाब रखा गया। राणा हमीर के उस स्थान पर रहने के कारण कैलवाडा का पहाडी स्थान मनुष्यो से भर गया। वहाँ के जो स्थान जगली, पहाडी और सुनसान थे वे अब मनुष्यो के कोलाहल से प्रत्येक समय भरे रहने लगे। कैलवाडा के इस नये निर्माण मे राणा हमीर ने बडी बुद्धिमानी से काम लिया। वहाँ पर उसने अनेक ऐसे गुप्त मार्ग भी बनवाये, जहाँ पर शत्रु की सेना आकर कभी कोई हानि न पहुँचा सकती थी। लेकिन उसका स्वय सुरक्षित अवस्था मे वहाँ से लौटना बहुत-कुछ कठिन था। कैलवाडा अरावली पर्वत के शिखर पर बसा हुआ है उस शिखर पर ही बहुत दिनो के बाद कमलमेर का प्रसिद्ध दुर्ग बना।

इन दिनो मे कैलवाड़ा की शोभा बहुत बढ गयी। वहाँ के जगली वृक्षो ने इस शोभा को बढाने मे बहुत-कुछ सहायता की। उसके स्थान-स्थान पर पहाडी नदियाँ प्रवाहित हो रही थी और उनके द्वारा प्रकृति का सौन्दर्य कई गुना बढ गया था। वहाँ पर खाने के लिए अनेक प्रकार के फलो की अधिकता थी। इस बीच मे बसे हुए लोगो ने वहाँ पर खेती का कार्य भी आरम्भ कर दिया था। यहाँ का विस्तार भट्ट ग्रन्थो मे पचीस कोस लिखा गया है। यह स्थान पृथ्वी से आठ सौ और समुद्र की सतह से दो हजार हाथ ऊँचाई पर है। इस विशाल पर्वत मे अगणित ऐसे गुप्त मार्ग है, जिनमे शत्रुओं का प्रवेश बहुत-कुछ असम्भावी है। परन्तु इस समय वहाँ पर जो लोग रहते थे, वे सब वहाँ के गुप्त मार्गो से निकल कर भीलो के राज्य मे आते जाते और उनके साथ सहयोग रख कर आवश्यकता के अनुसार उससे लाभ उठाते। अगुनापनीर के भील लोग गहलोत राजपूतो के भक्त रहे। उनकी सेवाये सदा मेवाड के राजपूतो को प्राप्त हुई और आवश्यकता पडने पर उन भील लोगो ने अपने प्राणो को उत्सर्ग किया। उनकी इन बातो ने मेवाड के राजपूतो को उनके समर्थक बनने का अवसर दिया था। परन्तु बादशाह अलाउद्दीन ने चित्तौर का सर्वनाश करने के साथ-साथ इन भीलो के विनाश का भी काम किया था।

राणा हमीर जिन दिनो मे चित्तौर के उद्धार के लिए चिंतित हो रहा था, चित्तौर के राजा मालदेव के यहाँ से उन्ही दिनो मे एक समाचार आया और उसके द्वारा मालदेव ने हमीर के साथ अपनी लडकी का विवाह करने के सम्बन्ध मे विचार प्रकट किया। राणा हमीर और उसके शुभचिंतक राजा मालदेव के इस प्रस्ताव का रहस्य समझ न सके। राणा हमीर के मन्त्रियो ने उस प्रस्ताव पर अनेक प्रकार के सदेह किये और उन लोगो ने चाहा कि राणा हमीर राजा मालदेव की प्रार्थना को अस्वीकार कर दे।

मन्त्रियो ने राणा हमीर से सभी प्रकार की बाते की। परन्तु मन्त्रियो के अनुसार हमीर

चौदहवाँ परिच्छेद

तेरहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे इस देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ—ि
शासन का अंत—मेवाड मे समरसिह के वंशजो का शासन—मरुभूमि मे नाहुर का
अनगपाल का राज्य—जावालिस्तान से भाटी लोगो का भारत मे चला आना—उन
विस्तार—दिल्ली के सिहासन पर पृथ्वीराज—भारत का चक्रवर्ती राजा अनंगपा
राठौरो के साथ युद्ध मे सोमेश्वर के द्वारा अनगपाल की सहायता—उसका परि
को दिल्ली के राज्य का अधिकार—राठौरो और चौहानो मे भयानक ईर्ष्या—पृ
मन्दोर के राजा की शत्रुता—चित्तौर का राजा समरसिह पृथ्वीराज का वहनोई—
तुद्दीन गोरी का आक्रमण—गोरी की पराजय—उसका दूसरा आक्रमण—पृथ्वीर
—देशद्रोही जयचद पर गोरी का आक्रमण—जयचद की मृत्यु—कन्नौज का पतन ।

दूसरी शताब्दी मे कनकसेन और चौथी शताब्दी मे बल्लभी के प्रतिष्ठाता वि
तेरहवी शताब्दी मे समरसिह तक वश का शृङ्खलावद्ध वर्णन ऐतिहासिक तथ्य के साथ
नही है । इसलिए यहाँ पर हम जो वर्णन करने जा रहे है, उसका प्रारम्भ तेरह
समरसिह से होता है ।

समरसिह का जन्म संवत् १२०६ मे हुआ था । उस समय देश की राजनीि
क्या थी, इस पर सक्षेप मे कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है । दिल्ली मे तोवँर राजव
गया था । पाटन नगर मे भोला भीम चालुक्य वंश का राजा था । आबू पर्वत पर
लोग अधिकारी थे । मेवाड मे समरसिह के वशज शासन कर रहे थे । मरुभूमि मे ना
चल रहा था और दिल्ली मे राजा अनगपाल का राज्य था । मदोर, नागोर, सिध,
इनके निकटवर्ती देश पेशावर, लाहौर, कॉगडा, पहाडी राजा लोग तथा प्रयाग, काशी
के राजा दिल्ली की अधीनता मे चल रहे थे ।

जावालिस्तान से भागकर भाटी लोग भारतवर्ष मे आ गये थे और उन्ह
शालिवाहन तनोट और मारवाड के लोदडवा को अपने अधिकार मे कर लिया था
वरावल नगरी को वसाकर उन लोगो ने जैसलमेर की प्रतिष्ठा का कार्य आरम्भ
यह वही समय था, जव पृथ्वीराज दिल्ली के सिहासन पर बैठे थे । जैसलमेर के नि
पहले अरोर मे रहने वाले खलीफा के सेनापतियो के साथ भाटी लोगो के युद्ध हुए
वार उनकी विजय हुई थी ।

भाटी लोग पहले वहुत साधारण अवस्था मे रहे । पृथ्वीराज के समय उनक
अचलेश नाम का एक भाटी सरदार पृथ्वीराज की सेना मे सेनापति था और वह
का भाई था ।

राजा अनगपाल अपने शासनकाल मे भारत के चक्रवती राजा थे । वे तोवँर
देव से उन्नीसवी पीढी मे हुए थे । राजा विक्रमादित्य ने जव भारतवर्ष की राजध

राजा मालदेव की एक न चली। यह देखकर उसके बड़े लड़के बनवीर ने राणा हमीर की अधीनता को स्वीकार कर लिया। राणा हमीर ने नीमच, जीरण, रतनपुर और केरारा के इलाके बनवीर को दे दिये और उससे कहा—जो इलाके तुमको दिये गये है, उनसे तुम अपना और अपने परिवार का जीवन निर्वाह करो। अभी तक तुम यवनो की दासता मे थे, अब अपने ही देश और वश वालो की दासता मे तुमको रहना पड़ेगा।

राणा हमीर की इन बातो को सुनकर बनबीर प्रभावित हुआ। मेवाड़ राज्य का भक्त बनकर रहने के लिए उसने निश्चय किया। इसके कुछ ही दिनो बाद भिनसोर पर आक्रमण किया और उसे जीतकर मेवाड़ राज्य मे उसने उसको मिला दिया। यही से बनवीर पर राणा हमीर का विश्वास कायम हुआ। यवनों की अधीनता से चित्तौर का उद्धार हुआ और राजस्थान के सभी राजा राणा हमीर का सम्मान करने लगे।

उपाय ढूंढने लगे और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन दोनो ने गजनी के शहाबुद्दी
आने के लिए आमन्त्रित किया ।

जयचंद ने कई एक छोटे राजाओ को मिलाकर, अनहिलवाडा पट्टन, मन्दोर
राजाओ के परामर्श से एक योजना तैयार की और उस योजना के अनुसार शहाबुद्दीन
पृथ्वीराज का सर्वनाश करना चाहता था । पृथ्वीराज को इन सब बातो का पता हो
यह भी मालूम हो गया कि दिल्ली पर आक्रमण करने के लिये गजनी की एक विशा
शहाबुद्दीन आ रहा है। उसने इस अवसर पर समरसिह को बुलाने के लिए अपने
एडीर को चित्तौर भेजा । चण्ढपुण्डीर युद्ध मे कुशल, पराक्रमी और पृथ्वीराज का
सामन्त था । उसने चित्तौर पहुँचकर समरसिंह से सारा वृत्तान्त कहा । इसके बाद
पूतो की शक्तिशाली सेना को लेकर दिल्ली के लिए रवाना हुआ ।

पृथ्वीराज अनहिलवाड़ा पट्टन के राजा पर आक्रमण करके उसको शिकस्त दे
पट्टन के राजा के साथ सम्बन्ध होने के कारण समरसिंह ने वहाँ जाना अपने लिए उ
इसलिए पृथ्वीराज अपनी सेना के साथ पट्टन राज्य की तरफ रवाना हुआ और समर
सेना के साथ शहाबुद्दीन से युद्ध करने के लिए चित्तौर मे छोड़ दिया ।

जिस समय शहाबुद्दीन अपनी विशाल सेना के साथ भारतवर्ष मे पहुँचा,
राजपूत सेना के साथ रावी नदी के तट पर उसका मुकाबला किया । दोनो और से
आरम्भ हुआ । कई दिनो के भीषण सग्राम के बाद भी कोई निर्णय न हुआ ।
सेना ने गजनी की सेना को आगे बढने न दिया । इसी बीच मे अनहिलवाड़ा पट्ट
पराजित करके पृथ्वीराज अपनी विजयी सेना के साथ चित्तौर लौट आया और शह
युद्ध करने के लिए वह युद्ध क्षेत्र मे पहुँच गया । समरसिंह और पृथ्वीराज के राज
गजनी की सेना के साथ भयंकर युद्ध किया । अंत मे गजनी की सेना की पराजय
अपने प्राण लेकर युद्ध से भागा । राजपूतों ने उसके सेनापति को गिरफ्तार कर लिया
शहाबुद्दीन के अनेक आक्रमणो को विफल किया गया ।

नागरो मे जो सम्पत्ति पृथ्वीराज को मिली थी, उसे उसने समरसिंह को
परन्तु समरसिह ने उसमे से कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया और पृथ्वीराज के
करने पर समरसिह ने अपने सरादारो को आदेश दिया कि वे पृथ्वीराज से मिलने
को स्वकार कर ले ।

इसके बाद कई वर्ष बीत गये । गजनी की सेना के राज्य से जयचंद और
राजाओ ने अपमान अनुभव किया । वे लोग पृथ्वीराज को पराजित करने के लिये
के मार्ग ढूंढने लगे । परिणाम यह हुआ कि इस बार शहाबुद्दीन पहले से अधिक विश
भारतवर्ष की ओर फिर रवाना हुआ । उसके इस आक्रमण का समाचर पाकर पृथ्वर
सम्वाद भेजा । राजा समरसिंह ने अपनी पूरी शक्तियो के साथ युद्ध की तैयारी की ।
अपने छोटे पुत्र कर्णसिंह को सौपकर वह दिल्ली की तरफ रवाना हुआ । * ग
भारतवर्ष मे पहुँच चुकी थी। उसके साथ युद्ध करने के लिए दिल्ली से पृथ्वीराज
की रापूजत सेनाये रवाना हुई । कग्गर के किनारे पर दोनो ओर की सेनाओ का

* कर्णसिह समरसिह का छोटा लडका था । राज्य का अधिकार पाने का अधि
कुम्भकर्ण था । लेकिन समरसिंह के द्वारा राज्याधिकार छोटे भाई को मिलने से वडा भाई

सोलहवाँ परिच्छेद

राजपूतो मे स्त्री का सम्मान—राणा लाक्ष का बुढापा—बेटे के विवाह के समय के परिहास का परिणाम—चित्तौर के शासन मे मेल—राजवंश की धात्री का कर्तव्य—चित्तौर के राज्याधि-कार पर राठौरो के दांत—धात्री की स्पष्ट बातें—रानी को अपनी मूर्खता का ज्ञान—राजमाता की बढती हुई शकाये—रणमल्ल की विलासिता—राजकुमार चन्द्र की योजना—रणमल्ल का पतन—अपने निर्भीक सवारो के साथ राजकुमार चन्द्र—राठौरो से चित्तौर की रक्षा—राणा मुकुल ही हत्या।

यदि स्त्री के प्रति पुरुष की भक्ति और उसके सम्मान की कसौटी मानी जाय तो एक राजपूत का स्थान सबसे श्रेष्ठ माना जायगा। वह स्त्री के प्रति किये गये अपमान को कभी सहन नही कर सकता और इस प्रकार का संयोग उपस्थित होने पर वह अपने प्राणो को बलिदान कर देना अपना कर्त्तव्य समझता है। जिन उदाहरणो से इस प्रकार का निर्णय करना पड़ता है, उनसे राजपूतो का सम्पूर्ण इतिहास ओत-प्रोत है।

जीवन की परिस्थितियो को पार करते हुए राणा लाक्ष का बुढापा आ गया था। उन्ही दिनो मे मारवाड के राजा रणमल्ल ने चित्तौर राज्य के उत्तराधिकारी राजकुमार चन्द्र के साथ अपनी लड़की का विवाह करने के लिए राणा लाक्ष के पास सगाई का दूत भेजा। दूत की बात को सुनकर राणा लाक्ष ने कहा—"राजकुमार चन्द्र कुछ समय मे यहाँ पर आने वाला है। इसके सम्बन्ध मे वह स्वय आकर अपनी स्वीकृति देगा।" इसके बाद अपनी दाढी पर हाथ रखते हुए राणा ने दूत से फिर कहा—"मै इस प्रकार की कल्पना नही करता कि तुम मेरे जैसे सफेद दाढी मूछ वाले आदमी के लिए इस प्रकार खेल की सामग्री लाये हो।"

इसी समय राजकुमार चन्द्र दरबार मे आया और दूत के प्रस्ताव को सुनकर उसने कहा—यद्यपि पिता ने परिहास मे इस सम्बन्ध को अपने लिए माना है, फिर भी मेरे लिए यह कैसे सम्भव है कि मैं उस सम्बन्ध को स्वीकार कर लूं। चन्द्र के इस जवाब को राणा ने सुना और उसने उसको समझाना आरम्भ किया। परन्तु राजकुमार की समझ मे एक भी बात न आयी। इस दशा मे राणा के सामने भयानक सकट पैदा हो गया। राजकुमार विवाह को स्वीकार करने के लिए किसी प्रकार तैयार न था और सगाई के लिए आया हुआ नारियल लौटा देने से मारवाड के राजा रणमल्ल का अपमान होता था। राणा ने राजकुमार को फिर समझाने की चेष्टा की। लेकिन राजकुमार तैयार न हुआ। इस परिस्थिति मे राजा रणमल्ल को अपमान से बचाने के लिए राणा ने स्वय अपने साथ विवाह करना मजूर किया और राजकुमार चन्द्र से कहा—"तुम्हारे मजूर न करने पर मैं स्वय यह विवाह करूँगा। लेकिन इस बात को याद रखो कि उससे यदि लडका पैदा हुआ तो वह इस राज्य का उत्तराधिकारी होगा और उस दशा मे तुम्हारा कोई अधिकार न रहेगा।" राजकुमार चन्द्र ने पिता की इस बात को स्वीकार किया।

राजा रणमल्ल की बारह वर्षीय लडकी के साथ पचास वर्ष की अवस्था मे राणा ने विवाह किया और उससे जो लडका पैदा हुआ, उसका नाम मुकुल रखा गया। मुकुल की पाँच वर्ष की अवस्था मे राणा लाक्ष गया मे उस समय अपनी सेना लेकर युद्ध करने गया था, जब वहाँ पर

विधवा हो चुकी थी—राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ मे लिया और बडी योग्यता के
राज्य मे शासन किया । उसके शासन काल मे कुतुबुद्दीन ने मेवाड पर आक्रमण f
देवी ने शत्रु का मुकाबला करने के लिए युद्ध की तैयारी की और स्वय घोडे
अपनी सेना के साथ युद्ध करने के लिए गयी । उसके साथ नौ राजा और ग्यारह
अपनी सेनाओ के साथ कर्मदेवी की सहायता के लिए युद्ध करने के लिए गये । अम्बे
ओर की सेनाओ का आमना-सामना हुआ और युद्ध आरम्भ हो गया । उस संग्राम
पराजय हुई । वह घायल होकर भागा । रानी कर्मदेवी की विजयी सेना श
लौट आयी ।

राजकुमार कर्णसिंह सम्वत् १२४६ सन् ११६३ ईसवी मे अपने पिता के सिं
भट्ट ग्रन्थो मे लिखा है कि कर्णसिह के माहुप और राहप नाम के दो बेटे उत्पन्न
दूसरे उल्लेखो और आगे की घटनाओ से पता चलता है कि भट्ट ग्रथो मे यह ब
गयी है । राजा समरसिंह के सूर्यमल नाम का एक भाई था । उससे जो लडका पैदा
उसका नाम था । समरसिह के पुत्र कर्णसिह का विवाह चौहान वंश के एक रा
हुआ था । उस राजकुमारी से माहुप का जन्म हुआ था । कर्णसिह के मेवाड़ के सि
के बाद राज्य के सरदारो से भरत के विरुद्ध एक षडयन्त्र रचा और उसे मेवाड
दिया ।

भरत मेवाड से निकल कर सिध देश की तरफ चला गया । वहाँ के अरोर
एक मुसलमान का शासन था । भरत ने अरोर नगर पर अधिकार कर लिया । कु
उसने पूगल के भाटी सरदार की लडकी के साथ विवाह कर लिया । उससे राहुप
पैदा हुआ । कर्णसिह अपने भतीजे भरत को बहुत प्यार करता था । राज्य से
बाद वह बहुत दुखी रहने लगा । उसके हृदय मे एक सताप इस बात का और था
माहुप अयोग्य और निकम्मा था । वह मेवाड को छोडकर अपने ननिहाल मे रहा क
दोनो बातो के कारण कुछ समय तक दुखी रहने से कर्णसिह की मृत्यु हो गयी ।

राणा कर्णसिह के एक लडकी थी । उसका विवाह जालौर के सोनगढे वंशी
हुआ था । उस लडकी से रणधोल नाम का एक लडका उत्पन्न हुआ । कर्णसिह क
थी । उसका बेटा माहुप बिलकुल अयोग्य था और भरत मेवाड राज्य से चला ग
चित्तौर के सिहासन पर रणधोल को बिठाने के लिये सोनगढे का सरदार कोशि
समय पाकर उसने चित्तौर राज्य के सरदारो पर आक्रमण किया और भयानक
साथ उसने चितौर के सिहासत पर अपने बेटे रणधोल को बिठाने मे सफलता पायी

रणधोल के सिहासन पर बैटने से चित्तौर के राज-परिवार मे बडा असन्
उस असतोष के फलस्वरूप राज्य-परिवार का एक पुराना भट्ट भरत के पास भेजा ग
पहुँच कर भरत को सब वृत्तान्त सुनाया । भरत ने अपनी सेना के साथ अपने पुत्र
की तरफ रवाना किया । यह समाचार जब सोनगढे के सरदार को मिला तो वह
राहुप के साथ युद्ध करने को रवाना हुआ । पल्ली नामक स्थान पर दोनो सेनाओ
उस लडाई मे राहुप की विजय हुई और सोनगढी सरदार पराजित होकर भाग गया

राहुप की इस विजय को सुनकर चित्तौर के सरदार और सामन्त बहुत प्रस
चाहते थे कि बप्पा रायल के वशजो के राज्य-सिहासन पर सोनगढे का सरदार बैठे
के वश का अंत हो जाय । चित्तौर के सरदारो और सामन्तो ने राहुप का स्वाग

अब उसकी समझ मे आया की चित्तौर से राजकुमार चन्द्र को हटाकर मैंने बहुत बड़ी भूल की है। इन बातो पर जितना ही उसका ध्यान गया, उतना ही उसको धाय़ी की बातो पर विश्वास होने लगा।

उसने गम्भीरता के साथ चित्तौर की परिस्थिति को समझने की कोशिश की। उसको इन्ही दिनो मे मालूम हुआ कि रणमल्ल की आखे चित्तौर के शासन पर लगी है। मुकुल के प्रति भी रण-मल्ल के विचार अच्छे नही हैं। उसे यह भी मालूम हुआ कि चन्द्र के दूसरे भाई रघुदेव को रण-मल्ल ने ही चोरी से मरवा डाला था।

राज माता की शंकाये अब बढ़ने लगी। चिन्ताओ के मारे वह घबराने लगी। वह सोचने लगी कि जिसने रघुदेव की हत्या करायी है, वह राज्य के लोभ मे मुकुल का भी वध करा सकता है। राज कुमार चन्द्र के प्रति उसके हृदय मे ईर्षा पैदा कराने का कार्य भी रणमल्ल ने ही किया था, इसका स्मरण अब उसे बार-बार होने लगा। वह जितना ही सोचती थी, उतना ही उसे संकटो से घिरा हुआ चित्तौर दिखायी देता था। उसकी समझ मे आ गया कि सम्पूर्ण मेवाड के शासन को मेरे पिता ने अपने अधिकार मे कर रखा है। राज्य मे छोटे और बड़े जितने भी कर्मचारी हैं, वे मेरे पिता के द्वारा मारवाड से आये है और राज्य के ऊँचे पदो पर सभी राठौर राजपूत है। उन स्थानो पर मेवाड के लोग जो काम करते थे, उनको नौकरियो से अलग कर दिया गया है और चित्तौर के सब से बड़े पद पर जैसलमेर का एक भट्टी राजपूत है।

राजमाता को अब धाय़ी की बातो पर पूर्ण विश्वास हो गया। वह सोचने लगी कि इस संकट से चित्तौर को बचाने का अब उपाय क्या है। यदि सावधानी के साथ कोई उपाय न किया गया तो चित्तौर का राज्य सिंहासन राठौरों के हाथ मे चला जायगा। बड़ी चिन्ता और घबराहट के साथ इस संकट के समय उसने राजकुमार चन्द्र को याद किया और उसे बुलाने के लिए उसने अपना दूत भेजा। जिस समय चन्द्र चित्तौर छोडकर मान्डू राज्य मे गया था, उसके साथ चित्तौर के दो सौ भील अपने परिवारो को चित्तौर मे छोडकर उसके साथ गये थे।

राजकुमार चन्द्र ने अपनी विमाता का पत्र पाकर चित्तौर के भीलों से परामर्श किया और अपने आने के पहले उसने उन भीलों को चित्तौर भेज दिया। उनके द्वारा उसने विमाता के पास अपना एक सन्देश भी भेजा। उसे सुनकर मुकुल की माता को बहुत सन्तोष मिला। भीलों ने आकर उसको जो बाते समझायी, उसने उन्ही के अनुसार सब कुछ करने का निश्चय किया। उन्ही दिनो मे दिवाली का त्योहार था। उसके उत्सव को मनाने के लिए मुकुल अपने आदमियों और माता के साथ गोमुण्डा नामक नगर मे गया। राजामाता ने वहां पर दिन भर गरीबो को भोजन कराया।

शाम हो जाने पर अँधेरा होने के साथ-साथ राजकुमार चन्द्र भेष बदले हुए घोडे पर अपने निर्भीक चालीस सवारो के साथ वहां पर आ गया। उन सब के आगे राजकुमार चन्द्र था। राज-माता ने उसे पहचान लिया। चन्द्र ने आते ही राणा मुकुल को अभिवादन किया। सब के सब चित्तौर की तरफ चले और सिंह द्वार पर पहुँच गये। उनके साथ पूर्व निश्चय के अनुसार और साथ के सभी लोग थे। रामपोल नामक द्वार पर चित्तौर के द्वारपालो ने रोका। उनको उत्तर देते हुए चन्द्र ने कहा हम लोग चित्तौर-राज्य के है और धीरे गाँव मे रहते हैं, राणा के साथ गोमुण्डा गये थे और राणा को दुर्ग मे पहुँचाने के लिए हम लोग यहाँ आये हैं।

इसके बाद द्वारपालो के विरोध न करने पर सभी के साथ चन्द्र दुर्ग की तरफ बढा। उस समय द्वारपालो को फिर सन्देह पैदा हुआ और वे सब अपने हाथो मे तलवारे लेकर राजकुमार और उसके साथ के सवारो पर टूट पडे। कुछ देर तक खूब मार-काट हुई। राजकुमार चन्द्र ने दुर्ग के

पन्द्रहवां परिच्छेद

चित्तौर मे राणा लक्ष्मणसिंह— उसकी छोटी अवस्था मे चाचा भीमसिंह
सिंह की स्त्री पद्मिनी के सौन्दर्य की ख्याति—अलाउद्दीन का चित्तौर पर अ
अलाउद्दीन ने पद्मिनी की माँग की—उसकी राजनीतिक चाले—दर्पण मे पद्मिनी
जाने की घोषणा—बादशाह का षडयत्र—राणा भीमसिंह की गिरफ्तारी—वह २
—पद्मिनी की योजना—बादशाह को खुशी—उसके शामियाने मे चित्तौर की पा
भीम की छूट—शिविर मे भयानक युद्ध—गोरा की बहादुरी—बादशाह का दू
भयानक सग्राम—चित्तौर मे युद्ध की अतिम तैयारी—महलो मे जौहरव्रत की
चित्तौर की पराजय—राजपूत बालाओ के जीवन की होली—अरिसिंह और एक
पर अलाउद्दीन का अधिकार।

सम्वत् १३३२, सन् १२७५ ईसवी मे लक्ष्मणसिंह चित्तौर के सिंहासन
उसकी अवस्था छोटी थी। इसलिए उसके चाचा भीमसिंह ने उसके संरक्षण का
शासन का उत्तरदायित्व अपने हाथो मे रखा। राणा भीमसिंह ने सिंहल द्वीप के निवा
हमीरशंख की लडकी पद्मिनी के साथ विवाह किया था। पद्मिनी अपने रूप-यौव
प्रसिद्ध थी और उसके सौन्दर्य की प्रशसा बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी।

राणा भीमसिंह के शासन काल मे अलाउद्दीन ने अपनी तातारसेना को लेकर
मण किया। भट्ट ग्रथो ने इस बात को स्वीकार किया है कि अलाउद्दीन ने पद्मिनी के
पर आक्रमण किया था। अपनी शक्तिशाली सेना के द्वारा चित्तौर को घेर कर
बात को जाहिर किया कि पद्मिनी को पा जाने के बाद मे चित्तौर से वापस लौट जाऊँ
हासिक ग्रथो से मालूम होता है कि अपने इस उद्देश्य के लिए वह बहुत दिनो तक चित्त

बहुत समय बीत जाने के बाद जब अलाउद्दीन को अपने उद्देश्य की सफ
उसने जाहिर किया कि दर्पण मे पद्मिनी के दर्शन करके मैं चित्तौर से लौट जाऊँग

बादशाह अलाउद्दीन की इस प्रकार की बातो को सुनकर राजपूतो का खून
किसी प्रकार इस तरह की बातो को सुनने और सहन करने के लिये वे तैयार न
के सब खामोश थे। बादशाह अलाउद्दीन के उद्देश्यो को सुनकर राणा भीमसिंह
कब क्या निर्णय हुआ, इस का कोई उल्लेख किसी ग्रन्थ मे नही मिलता और जो कु
यह है कि बादशाह अलाउद्दीन ने दर्पण मे रानी पद्मिनी को देखने के लिये अपने कु
के साथ चित्तौर मे प्रवेश किया। वहाँ पर इसकी व्यवस्था थी। अलाउद्दीन ने प
देखा और उसके बाद वहाँ से वह लौट पडा।

इस अवसर पर चित्तौर मे बादशाह अलाउद्दीन का स्वागत सत्कार हुआ
पर राणा भीमसिंह स्वय कुछ दूर तक उसे भेजने गया। दोनो ही बाते करते
निकल गये। अचानक समय और संयोग पाकर बादशाह के कुछ सशस्त्र
आक्रमण किया और भीमसिंह को कैद करके अपने शिविर मे ले गये। उसके बाद
से चित्तौर के राजपूत सरदारो को सदेश मिला कि पद्मिनी को पाने पर ही

गर्भ से पैदा हुए थे। इसीलिये वे राज्य के अधिकारी न थे। चित्तौर के सरदार और सामन्त घृणा की दृष्टि से उनको देखते थे। चित्तौर के लोगो का यह व्यवहार देखकर वे दोनों भाई असन्तुष्ट रहते थे और मुकुल से ईर्षा रखते थे।

राणा मुकुल सब कुछ जानते और समझते हुए भी उन दोनो भाइयों के साथ कोई अनुचित व्यवहार नही करना चाहता था। इसीलिये दरबार की तरफ से उन दोनो भाइयो को सेना मे अच्छे स्थान दिये गये थे। जिस समय मादेरिया के लोगो ने चित्तौर राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया था तो उनको दमन करने के लिये राणा मुकुल अपनी सेना लेकर वहाँ पर गया था। उस सेना में चच्चा और मेरा भी गये थे।

इन दोनो भाइयो की भावनाये राणा मुकुल के प्रति पहले ही कलुषित हो रही थीं। वे अपने आपको चित्तौर का राज्य पाने का अधिकारी समझते थे और उसकी बाधा मे वे राणा मुकुल को प्रमुख समझते थे। मादेरिया मे पहुँचकर दोनो भाई आपस में कुछ परामर्श करने लगे और एक दिन अवसर पाकर उन दोनो ने पीछे से मौका पाकर मुकुल को जान से मार डाला।

राणा मुकुल का बड़ा बेटा कुम्भ चित्तौर मे था। उसने जब यह समाचार सुना तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसने समझ लिया कि चच्चा और मेरा मादेरिया से लौटकर चित्तौर पर आक्रमण करेगे। इसलिये उसने मारवाड के राजा से सहायता मांगी और वहाँ से राजा ने अपने लड़के के सेनापतित्व मे चित्तौर की सहायता के लिये मारवाड की एक सेना भेजी। चच्चा और मेरा उस समय चित्तौर के पास एक दुर्ग मे आ गये थे। मारवाड की सेना के पहुँचते ही वे दोनों उस दुर्ग से भाग कर आरावली पर्वत के पाई नामक स्थान पर चले गये और कुछ दिनो के बाद वहाँ पर वे दोनो राठौरो और सीसोदिया राजपूत के द्वारा मार डाले गये।

सत्रहवाँ परिच्छेद

चित्तौर के सिंहासन पर राणा कुम्भ—राणा मुकुल के मरने के बाद मेवाड-राज्य की दुरवस्था—असहाय अवस्था मे मारवाड के राजा से कुम्भ ने सहायता की मांग की—मारवाड के राजा की सैनिक सहायता—चित्तौर के सिंहासन पर कुम्भ का बैठना—उसके महत्वपूर्ण कार्य—मेवाड-राज्य मे सार्वजनिक उन्नति—मालवा और गुजरात के नवाबो का मेवाड पर आक्रमण—शत्रुओ के साथ राणा कुम्भ का संग्राम—राणा कुम्भ की विजय—मालवा का नवाब मोहम्मद खिलजी चित्तौर के कारागार मे—मोहम्मद खिलजी की मुक्ति मे राणा कुम्भ की उदारता—खिलजी और राणा कुम्भ मे मित्रता—मेवाड-राज्य के चौरासी दुर्ग—राणा कुम्भ के बनवाये हुए किले—राणा कुम्भ का अयोग्य लडका—राणा ऊदा के पतन की पराकाष्ठा—सांगा के बचपन का संघर्ष।

सम्वत् १४७५ सन् १४१६ ईसवी मे राणा मुकुल का बडा लडका कुम्भ चित्तौर के सिंहासन पर बैठा। उसे लोग कुम्भा जी के नाम से भी सम्बोधित करते थे, राणा मुकुल के मरने के बाद एक साथ मेवाड राज्य की परिस्थितियाँ बिगड गयी थी। इसीलिये पिता के मारे जाने पर अपनी असहाय अवस्था मे कुम्भ को मारवाड़ के राजा से सहायता माँगनी पड़ी थी। वह मारवाड

भीमसिह की सभी प्रकार से रक्षा की। इसी अवसर पर चित्तौर से आया हुआ एक
मिला और उस पर बैठकर भीमसिंह सुरक्षित अवस्था मे चित्तौर चला गया। बादशा
उसका पीछा करते हुए दुर्ग के समीप सिंह द्वार पर आक्रमण किया।

दुर्ग के करीब चित्तौर के राजपूतो ने बादशाह के सैनिको के साथ बडी
सग्राम किया। वहाँ पर गोरा और बादल ने अपनी अद्भुत वीरता का प्रदर्शन किय
अवस्था केवल बारह वर्ष की थी। उसकी तलवार की मार से बादशाह के सैनिको
गये। बालक बादल ने बहुत यवन सैनिको का सहार किया। युद्ध करते हुये सिह
मारा गया। बादशाह के सैनिको की सख्या अधिक थी। बहुत से राजपूत मारे ग
हुआ कुछ थोडे से बचे हुये राजपूतो के साथ बादल चित्तौर लौटकर वापस आया।

शिविर और सिह द्वार पर युद्ध का जो दृश्य उपस्थित हुआ, उसे देख कर
उद्दीन का साहस टूट गया। इस दृश्य के पहले उसने कुछ और ही समझ रखा था
और। पद्मिनी को पाने के स्थान पर उसने जो पाया, उसमे वह युद्ध को रोक कर
साथ दिल्ली की तरफ रवाना हो गया। सिह द्वार के युद्ध से रुधिर से नहाये हुए औ
से क्षत विक्षत बालक बादल चित्तौर पहुँचा। उसके साथ गोरा न था। यह दे
पत्नी युद्ध के परिणाम को समझ गयी। उसने अपने गम्भीर नेत्रो से बादल की ओ
सासो की गति तीव्र हो उठी थी। वह बादल के मुह से तुरन्त सुनना चाहती थी
सैनिको के साथ उसके पति गोरा ने किस प्रकार बहादुरी से युद्ध किया और श
किया। वह बादल के कुछ कहने की प्रतीक्षा न कर सकी और उतावली के साथ उ
"बादल युद्ध का समाचार सुनाओ। प्राणनाथ ने आज शत्रुओ के साथ किस प्रकार
बादल मे साहस था, उसमे बहादुरी थी। अपनी चाची को उत्तर देते हुए उसने
तलवार से आज शत्रुओ का खूब सहार हुआ। सिह द्वार पर डटकर सग्राम हुआ।
शत्रुओ का साहस टूट गया। बादशाह के सैनिक खूब मारे गये। सीसोदिया वश
अमर बनाने के लिए शत्रुओ का सहार करते हुये चाचा ने अपने प्राणो की आहुति

बादल के मुँह से इन शब्दो को सुन कर गोरा की स्त्री को सतोष मिला।
कर और बादल के आगे कुछ न कहने पर उसने तेजी के साथ कहा—"अब मेरे लि
समय नही है। प्राणनाथ को अधिक समय तक मेरी प्रतिक्षा करनी पडेगी।" यह दे
गोरा की पत्नी ने जलती हुई चिता की होली मे कूद कर अपने प्राणो का अन्त कर

बादशाह अलाउद्दीन चित्तौर से लौटकर दिल्ली चला गया। उसके दिल मे
थी, वह किसी प्रकार बुझ न सकी। दिल्ली लौटने के कुछ दिनो के बाद,, उसने
आक्रमण करने का निर्णय किया और अपनी सफलता के लिए उसने इस व
शाली सेना का सगठन किया। अपनी पूरी शक्तियो का सञ्चय करके वह फिर
हुआ और सम्वत् १३४६ सन् १२९० ईसवी मे उसने चित्तौर पर अपना दूसरा आ
आक्रमण का समय फरिश्ता ग्रथ मे तेरह वर्ष बाद का लिखा गया है। दक्षिण ओर
र बादशाही सेना ने मुकाम किया और उसके नीचे उसने खाई खुदवा दी। इस
सेना के चित्तौर मे पहुँचते ही एक भयानक आतक वहाँ पर फैल गया। पहले
बार चित्तौर के राजपूतो का सहार हुआ था, उनकी पूर्ति न हो सकी थी।
राजपूत पहले ही चित्तौर की रक्षा मे बलिदान हो चुके थे। इस समय चित्तौर की
थी। लेकिन बादशाह की फौज के आते ही चित्तौर के सामन्त और सरदार युद्ध

उसके बाद वह राणा कुम्भ का मित्र बन गया। उसके बाद दिल्ली के बादशाह की सेना के साथ झूँझूनू नामक स्थान पर राणा ने चित्तौर की सेना लेकर भयानक युद्ध किया। उसमे राणा कुम्भ की विजय हुई थी। उस युद्ध मे मोहम्मद खिलजी अपनी फौज लेकर राणा की सहायता करने के लिये आया था और उसने दिल्ली के बादशाह की फौज के साथ युद्ध किया था।

मेवाड राज्य मे चौरासी दुर्ग है। उनमे बत्तीस राणा कुम्भ ने बनवाये थे और इन बत्तीस किलों मे कमलमीर का दुर्ग सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इसका निर्माण बड़ी मजबूती से किया गया है। यह दुर्ग राणा कुम्भ के बाद कुम्भमीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस कुम्भमीर दुर्ग के प्रधान द्वार का नाम हनुमान द्वार है। उसके द्वार पर महावीर की एक बहुत बड़ी मूर्ति है। यह मूर्ति राणा कुम्भ नरकोट से उनको जीतकर अपने साथ लाया था। आबू पहाड़ की एक चोटी पर परमार राजपूतो का एक विशाल दुर्ग बना हुआ था। उसमे वह और उसका परिवार प्राय रहा करता था। राणा कुम्भ मे लोकप्रियता का गुण था। मेवाड की प्रजा उस पर बहुत श्रद्धा रखती थी। राणा ने प्रजा की सुविधाओ और राज्य के हितो के लिये बहुत से अच्छे कार्य किये थे और उन्ही के कारण सम्पूर्ण राजस्थान मे उसे बहुत ख्याति मिली।

मारवाड के मेडता निवासी एक राठौर सरदार की बेटी मीराबाई के साथ राणा कुम्भ का विवाह हुआ था। * मीराबाई बहुत सुन्दरी थी और धर्म मे बहुत श्रद्धा रखती थी। * कृष्ण की स्तुति के सम्बन्ध मे उसने कविता के बहुत से छन्द बनाये थे। राणा कुम्भ को कविता करने का शौक था। मीराबाई ने कविता करने का ज्ञान किससे प्राप्त किया, इसका उल्लेख किसी ग्रथ मे नही मिलता। मीराबाई ने भगवान के बहुत से मंदिरो के दर्शन किये थे।

झालावाड नरेश की लडकी का विवाह एक राठौर राजकुमार के साथ होना निश्चय हुआ था। परन्तु राणा कुम्भ ने उस राजकुमारी का अपहरण किया और चित्तौर मे लाकर उसने उसको अपनी रानी बनाकर रखा। इसका परिणाम यह हुआ कि राठौर राजपूतो के साथ सीसोदिया वश की जो मैत्री कायम हुई थी, वह राणा कुम्भ के इस व्यवहार से समाप्त हो गयी और दोनो वशो के बीच फिर शत्रुता चलने लगी।

राणा कुम्भ ने बडी योग्यता के साथ पचास वर्ष तक मेवाड-राज्य पर शासन किया। अब उसका बुढापा चल रहा था। इस बुढापे मे उसके लड़के ने उसका वध किया। जिस लडके ने अपने पिता के प्रति यह अधर्म किया, उसका ऊदा नाम था। कुछ लोग उसे उदयसिंह भी कहते थे। भट्ट ग्रथो मे उस ऊदा की बडी निन्दा लिखी गयी है। इस प्रकार सम्वत् १५२५ सन् १४६६ ईसवी मे राणा कुम्भ की मृत्यु हुई। ऊदा के इस व्यवहार से सम्पूर्ण मेवाड के लोग उससे घृणा करने लगे।

ऊदा प्रसिद्ध राणा कुम्भ का बेटा था। परन्तु उसका कोई अच्छा साथी न था। पिता की हत्या करने के कारण उससे अब और भी अधिक लोग घृणा करने लगे। वह पहले से ही अयोग्य और अकर्मण्य था। राणा कुम्भ के बाद उसने खुलकर अपनी अयोग्यता का परिचय दिया। आबू पर्वत पर देवडा नामक एक सरदार रहता था। वह मेवाड़ राज्य का सामन्त था। ऊदा ने उसके

---

* जोधपुर के मुन्सिफ बाबू देवी प्रसाद ने मीराबाई का जीवन चरित्र लिखा है। उसमे उन्होने टॉड साहब की इस बात का विरोध किया है। उनका कहना है कि जिस मीराबाई को वहाँ पर राणा कुम्भ की रानी लिखा गया है, वह जोधपुर के राठौर वश मे पैदा हुई थी और उदयपुर के सीसोदिया वश मे राणा साँगा के पुत्र भोज के साथ ब्याही गयी थी। उसका विवाह सम्वड १५७३ मे हुआ था।

रूप से क्षय हुआ। युद्ध के कारण युद्ध का स्थल स्मशान बन गया। चारों ओर दूर
सैनिको के शरीरो से जमीन पटी पडी थी और रक्त वह रहा था।

चित्तौर की सेना का संहार करके बादशाह अलाउद्दीन ने अपनी बची हुई
चित्तौर मे प्रवेश किया। नगर की अवस्था युद्ध स्थल से भी भयानक हो रही थी
रानियो, राजपूत बालाओ और सुन्दरी युवतियो के साथ रानी पद्मिनी ने सुरग की
प्रकार अपने प्राणोत्सर्ग किये, चित्तौर के भीतर पहुँच कर बादशाह को यह सब सुनने

सन् १३०३ ईसवी मे अलाउद्दीन ने चित्तौर पर अधिकार किया और वहाँ प
तक रह कर वहाँ का शासन झालौर के शोनगढे वश के मालदेव नामक एक सरद
वह दिल्ली चला गया। अलाउद्दीन ने सिंहासन पर बैठते ही 'सिकन्दर सानी'
सिकन्दर की उपाधि धारण की थी। उसके अत्याचारो से राजस्थान के सैकड़ो नगर
थे। अनहिलाडा, प्राचीन धार, अवन्ती और देवगढ आदि राज्यो मे जहाँ सोलकी, प
और तक्षक राजाओ के शासन थे, अलाउद्दीन ने आक्रमण करके भयानक अत्याचार कि
साथ-साथ, जैसलमेर, गागरौन तथा बूँदी राज्यो को उजाडकर नष्ट कर दिया
अलाउद्दीन के भयानक अत्याचारो से राजस्थान के राज्यो का इस प्रकार सर्वनाश
मारवाड के राठौर और अम्बेर के कुशवाहा लोग किसी प्रकार अपना अस्तित्व का
ये राठौर उस समय परिहार राजाओ के सामन्त थे और स्वतत्र हो जाने की चेष्टा मे
कुशवाहा लोगो की शक्तिया बहुत क्षीण अवस्था मे थी। चित्तौर पर अधिकार
अलाउद्दीन ने रानी पद्मिनी के महल को छोडकर बाकी सभी महलो, शिवालो
विध्वस करा दिया था।

चित्तौर के पतन के बाद राणा भीमसिंह का लडका अजयसिह चित्तौर छोड
चला गया था। यह कैलवाला मेवाड के पश्चिम की तरफ अरावली पर्वत के ऊपर
नगर है। वहाँ पर रहकर अजयसिह चित्तौर के भविष्य की चिंता करने लगे। चित्त
पहले अजयसिंह ने अपने पिता के मुँह से सुना था कि तुम्हारे बाद अरिसिंह का
सिंहासन पर बैठेगा। पिता की इस बात को वह भूल न सका। लेकिन उस समय अ
का कही पता न था। अरिसिंह का बडा बेटा था और उसके लडके का नाम हमी
हमीर को चित्तौर के सिंहासन पर बिठाने के लिए राणा भीमसिंह ने अजयसिंह को
था। इस हमीर के जन्म का वतान्त भट्ट ग्रन्थो मे इस प्रकार लिखा गया है.

राणा भीमसिह का सबसे बडा लडका अरिसिंह अपने कुछ सरदारो के साथ
एक जंगल मे शिकार खेलने गया था। वहाँ पर उसने एक शूकर को मारने के लिए व
पर शूकर भाग कर एक जुआर के खेत मे चला गया। अपने साथियो के साथ अ
पीछा किया। खेत के मचान पर बैठी हुई एक युवती यह सब देख रही थी। अरि
साथियो को अपने खेत के करीब देख कर उस युवती ने कहा—आप थोडा-सा रुके,
मै आपके पास लाये देती हूँ।

अरिसिह और उसके साथी अपने स्थान पर रुक कर खडे हो गये। युवती म
और अपने खेत से उसने जुआर का एक पेड उखाड लिया। जो पेड जुआर के खडे थे,
फीट लम्बे थे। युवती ने उखाडे हुए पेड के एक सिरे को नोकीला बनाया और अ
चढ़कर उसने उसको अपने धनुष मे चढाकर छिपे हुए शूकर को मारा, जिससे घा

गिरनार के यदुवशी राजा शूरजी को व्याही गयी और दूसरी का विवाह सिरोही के देवरा राज्य के जयमल के साथ हुआ था। दूसरी लडकी के दहेज मे राणा ने अपना आबू पर्वत का इलाका दे दिया। अपने जीवन के अन्त तक राणा ने मेवाड की स्वाति को बढ़ाने की चेष्टा की और अपने पूर्वजो के गौरव को कायम रखा। मालवा के बादशाह गयासुद्दीन के साथ राणा की शत्रुता चल रही थी। इसी कारण उसके साथ राणा को कई बार युद्ध करना पडा और प्रत्येक युद्ध मे राणा रायमल की विजय हुई। अन्त मे गयासुद्दीन ने सन्धि के लिये राणा से प्रार्थना की। राणा ने उसे स्वीकार कर लिया। उसके बाद राणा ने सुख और शान्ति का जीवन बिताना आरम्भ किया।

सांगा, पृथ्वीराज और जयमल नाम के तीन लडके रायमल के थे। ये तीनो अपने जीवन के आरम्भ से तेजस्वी और अत्यन्त शूरवीर मालूम होते थे। इन तीनो मे सांगा और पृथ्वीराज के नाम अधिक प्रसिद्ध हुए। बल और पराक्रम मे तीनो एक दूसरे से बढ़कर थे। परन्तु छोटी अवस्था से ही तीनो आपस मे लडने-झगडने लगे थे। वे जितने ही बडे होते गये, उतने ही आपस के झगडे उतने ही बढते गये। सांगा और पृथ्वीराज—दोनो एक ही माता से पैदा हुए थे और उनकी माता झाला वश की लडकी थी। जयमल सौतेला भाई था।

तीनो भाइयो मे कोई अन्तर न था। राणा तीनो को एक प्यार करता था। उनके प्रति पिता का यह प्यार स्वाभाविक था। तीनो ही बालक जन्म के बाद बहुत होनहार मालूम होने लगे थे। उनको देखकर और उनके भविष्य का अनुमान लगाकर राणा को बडी प्रसन्नता होती थी। लेकिन लडको के किशोर अवस्था मे पहुँचने-पहुँचते राणा का वह सुख और सन्तोष धीरे-धीरे कम होने लगा। राणा ने लगातार देखा कि इन तीनो भाइयो के झगडे आपस मे बढते जाते है। उन झगडो का कारण क्या है, राणा की समझ मे न आया। बहुत समझाये-बुझाये जाने के बाद भी तीनो लडको के आपसी झगडे मे कोई अन्तर न आया। लगातार उनके बढते हुए झगडो को देखकर राणा को बहुत असतोष होने लगा और जब उसको कोई दूसरा उपाय न दिखायी पडा तो उसने अपने लडको को राज्य से निकाल देने का विचार किया। क्योकि वह मन बहुत दुखी रहने लगा था।

उन तीनो लडको मे सांगा बडा था और राणा का वह पहला पुत्र था और वही राणा का उत्तराधिकारी था। उस छोटी अवस्था मे लडको का झगडा इस बात पर था कि चित्तौर का अधिकारी कौन है। प्रत्येक अपने आप को उस राज्य का अधिकारी समझता था। इस झगडे के फलस्वरूप, सांगा को राज्य छोडकर भागना पडा। पृथ्वीराज को राणा ने अपने यहाँ से निकाल दिया और जयमल जान से मारा गया। भाइयो के आपस के झगडे का यह परिणाम निकला। इस दुष्परिणाम को रोकने के लिये राणा रायमल के पास कोई उपाय बाकी न रह गया था। राजपूतो के इस प्रकार चरित्र को देखकर सहज ही यह स्वीकार करना पडता है कि शत्रुओ से युद्ध न करने के दिनो मे वे स्वय एक दूसरे के शत्रु बन जाते है।

दोनो भाई एक दिन चाचा सूरजमल के पास एकान्त मे बैठकर मेवाड के उत्तराधिकार के सम्बन्ध मे बाते करने लगे। सूरजमल ने दोनो की बातो को सुना और समझा कि इनमे दोनो ही अपने आप को अधिकारी समझते है। बातचीत के सिलसिले मे सांगा ने कहा—"अपने पिता का मै बडा लडका हूँ और न्याय से मै ही अपने पिता का उत्तराधिकारी हूँ।"

पृथ्वीराज ने सांगा की इस बात को मजूर नही किया। दोनो मे विवाद बढने लगा। सूरजमल किसी प्रकार का निर्णय करने मे अपने आपको असमर्थ पाता था। वह दोनो की बात सुन रहा था। परन्तु साफ-साफ कुछ कह न सकता था। पृथ्वीराज और सांगा का विवाद बढ गया और उसका परिणाम यह हुआ कि पृथ्वीराज ने अपनी तलवार निकालकर तेजी के साथ सांगा

कैलवाडा के लोगों ने देखा कि अपने घोडे पर बैठा हुआ और भाले की नोक पर मुँजा
हुए हमीर आ रहा ।

हमीर ने मुँजा का सिर लाकर अजयसिह के सामने रख दिया । अजयसिह ने ह
कर अत्यन्त प्रसन्नता और सतोष का अनुभव किया । उसकी समझ मे आ गया कि अग
आया तो चित्तौर के वास्तव मे अधिकारी हमीर ही हो सकता है । अजयसिह ने
प्रसन्नता को अनुभव करते हुए हमीर के मुख का चुम्बन किया और मुजा के क
रुधिर से हमीर के ललाट पर राजतिलक किया ।

अजयसिह के दोनो लडको ने यह सब अपनी आँखो से देखा । उनके ऊपर इ
प्रभाव अच्छा न पडा । कुछ दिनो के बाद कैलवाडा मे अजीमसिह की मृत्यु हो गय
सिह अपने पिता से असतुष्ट होकर दक्षिण की तरफ चला गया और वहाँ पर उसने
की प्रतिष्ठा की । उसी वश मे शिवा जी नाम का एक बालक उत्पन्न हुआ, जिसने-अ
भारत वर्ष मे अमिट कीर्ति प्राप्त की और इस देश मे मुगलो के शासन को मिटाक
विशाल राज्य कायम किया । *

सम्बत् १३५७ सन् १३०१ ईसवी मे हमीर को मेवाड राज्य का अधिकारी
परन्तु उस समय हमीर के हाथ मे कुछ न था और चारो ओर शत्रुओ का अधिपत्य
साहसी और शूरवीर था । अजयसिह के राजतिलक करने के बाद उसने अपनी शक्ति
करना आरम्भ किया । सब से पहले उसने मुजाबलैचा के राज्य पर आक्रमण किया
नाम के उसके पहाडी किले पर अधिकार कर लिया ।

बादशाह अलाउद्दीन ने चित्तौर पर अधिकार करके वहाँ का राज्य प्रबध स
को सौप दिया था और मालदेव दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर मे रहा करता था ।
हमीर जानता था । वह किसी प्रकार चित्तौर का उद्धार करना चाहता था । पर
उसके पास न तो सैनिक शक्ति थी और न धन-शक्ति । परन्तु हमीर के हृदय में साहस
था । उसने चित्तौर के उद्धार के लिए योजना बना डाली और उसमे सफलता प्राप्त
उसने छोटे-छोटे स्थानो पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया । इस प्रकार उसने
मे कुछ धन शक्ति और जन शक्ति प्राप्त कर लिया । इसके बाद उसने मेवाडराज्य मे
जो लोग राणा हमीर को अपना शासक मानने के लिए तैयार हो, वे अपने स्थान
पश्चिमी भाग के पहाड पर आ जायें । जो ऐसा न करेगे, उनको शत्रुओ मे मान लि

इस घोषणा के होते ही लोगो ने अपने घर द्वार छोडे और आरावली पर्वत के
पर पहुँच कर रहना आरम्भ किया । इसके पश्चात् राणा हमीर ने मेवाड के नगरो
आक्रमण करके उनको उजाडना शुरू किया । मेवाड की प्रजा पहले से ही घोषणा को
पर चली गयी थी । इसलिए मेवाड के नगर और ग्राम अपने आप उजडे हुए दिखायी
रास्ते बिगड कर भयानक हो गये । उन नगरो और ग्रामो मे जब शत्रु की ओर से
राणा हमीर के सैनिक उन पर हमला करते और उनको लूट कर उन्हे जान से मार

---

*भट्ट ग्रन्थो मे विस्तार के साथ इस बात का उल्लेख किया गया है कि सुजान
मे जा कर जो अपना वश चलाया था, शिवाजी उसी का वशज था । उस वश को भ
अजयसिह से आरम्भ किया है और शिवाजी तक जो नाम आये है, वे इस प्रकार है
सुजानसिह, दिलीप जी, शिवाजी भैरव जी, देवराज, उग्रसेन माहुल जी, खेल जी, ज
जी, शम्भु जी और शिवा जी ।

राज्य मे लौट आने पर जयमल के मारे जाने की घटना को उसने सुना, जो इस प्रकार थी— अरावली पर्वत के नीचे वेदनौर नामक नगर मे सूरथान राव रहा करता था। ताराबाई नाम की उसकी एक सुन्दरी लडकी थी। वह अपनी लडकी को बहुत प्यार करता था। किसी समय वह अपने राज्य का अधिकारी था, परन्तु उसके वे दिन अब न रहे थे। उसके राज्य पर मुसलमानों का शासन हो गया था। सूरथान ने इस बात की घोषणा की कि जो हमारे राज्य का उद्धार करेगा, उसी के साथ मै अपनी लडकी का विवाह करूँगा।

राजकुमार जयमल ने भी सूरथान की घोषणा को सुना और वह ताराबाई के साथ विवाह की अभिलाषा मे वेदनौर आया। उसने ताराबाई के साथ अशिष्ट और अनुचित व्यवहार किया, जिससे क्रोध मे आकर सूरथान ने जयमल को मार डाला।

चित्तौर मे आकर और कुछ दिनो तक रह कर पृथ्वीराज ने ताराबाई के सौंदर्य की प्रशंसा सुनी। उसके मन मे सहज ही उसको देखने की अभिलाषा पैदा हुई। वह वेदनौर के लिये रवाना हुआ और वहां जाकर उसने ताराबाई के पिता सूरथान से भेट की। मीनों के राज्य को जीत कर अधिकार मे कर लेने के बाद पृथ्वीराज का नाम आस-पास दूर तक प्रसिद्ध हो गया था। सूरथान ने उसका बडा सम्मान किया। पृथ्वीराज ने तोडानगर के पठानों को पराजित करके सूरथान के राज्य का उद्धार करने की प्रतिज्ञा की और इसी आधार पर सूरथान ने पृथ्वीराज के साथ तारा-बाई के विवाह का निश्चय किया।

पृथ्वीराज ने अपने निश्चय के अनुसार चुने हुए पाँच सौ सवार सैनिकों को तैयार किया और उनको साथ मे लेकर वह तोडानगर की तरफ चला। साथ मे ताराबाई को लेकर सूरथान भी रवाना हुआ। तोडानगर मे पहुँचकर पृथ्वीराज ने देखा, मोहर्रम के दिन है। बादशाह के महल के पास ताजिया पहुँचा था और बादशाह उसमे शामिल होने के लिए तैयार हो रहा था। इसी समय पृथ्वीराज ने अपने बाण से उसको मारा। वह गिर गया।

बादशाह के गिरते ही वहां के मुसलमानो मे हाहाकार मच गया। पृथ्वीराज के सैनिको ने मार काट आरम्भ कर दी। लडाकू मुसलमानो ने एक साथ पृथ्वीराज पर आक्रमण किया। कुछ समय तक दोनो तरफ से भीषण संग्राम हुआ। अंत मे मुसलमानो का साहस टूट गया। राजपूतो के द्वारा बडी संख्या मे मुसलमान मारे गये और अत मे तोडानगर मे अफगान बादशाह का शासन हट गया। राज्य का उद्धार होने से सूरथान को बडी प्रसन्नता हुई। उसने अपनी लडकी ताराबाई का विवाह पृथ्वीराज के साथ कर दिया।

पृथ्वीराज शांतिपूर्वक चित्तौर मे रहने लगा। जयमल मर चुका था और सांगा का कुछ पता न था। पृथ्वीराज जब अपने पिता के राज्य से चला गया था तो सूरजमल आराम के साथ चित्तौर मे रहा करता था। पृथ्वीराज के लौट आने पर उसके मन के भाव बिगडने लगे। चित्तौर लौटकर आ जाने पर इस बात का रहस्य खुला कि राणा रायमल के तीनो लडको को आपस मे लडाने वाला यही सूरजमल था। वह स्वयं मेवाड राज्य का उत्तराधिकारी बनना चाहता था और सांगा के रहते हुए इस बात की किसी प्रकार सम्भावना न थी। इसके लिये उसने एक भयानक षडयन्त्र की रचना की थी और उस षडयन्त्र के द्वारा उसने राणा के तीनो पुत्रो को अलग-अलग ऐसा समझा दिया, जिससे वे तीनो ही एक दूसरे के प्राण घातक हो गये थे।

पृथ्वीराज के लौटकर चित्तौर मे आ जाने पर सूरजमल की आशाये फिर नष्ट हो गयी। वह समझता था कि सांगा और पृथ्वीराज के लौट कर आने की उम्मीद नही है और जयमल की

विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार न कर सका। उसने अपने शुभचिन्तक मन्त्रियो
भाते हुये कहा—"मै भी इस बात को समझता हुँ कि राजा मालदेव के साथ
अच्छे नही है। वह हमारे शत्रु बादशाह अलाउद्दीन की तरफ हमारे पूर्वजो
चित्तौर पर शासन कर रहा है। इस दशा मे हमारा और मालदेव का एक ह
सम्बन्धी होना कैसे सम्भव हो सकता है। इसलिये सहज ही इस बात को समझा
कि राजा मालदेव ने मेरे मिटने के लिए किसी प्रकार का षडयत्र रचा होगा।
सब को घबराने और चिन्ता करने की आवश्यकता नही है। कभी-कभी भयानक
उज्जवल भविष्य का सदेश छिपा रहता है। मालदेव का कुछ भी अभिप्राय हो, हमे उ
की आवश्यकता नही है। घबराना निर्बलो का कार्य है। कठिनाइयो का स्वागत
हंस-हँसकर विपदाओ का सामना करना शूरवीरो का कार्य होता है। महान सफलता
भीषण कठिनाइयो को पार करने के बाद होती है। इस सत्य के आधार पर राजा
प्रस्ताव को स्वीकार करना ही उचित है।"

राणा हमीर के मुख से इन साहसपूर्ण बातो को सुनकर उसके मन्त्री कुछ ि
सके। विवाह का निश्चय हो गया। उसकी तैयारियाँ भी हो चुकी। राणा हमीर पाँच
सैनिक सवारो को साथ मे लेकर विवाह के लिए चित्तौर की तरफ रवाना हुआ। चित्त
आने पर नगर का विशाल फाटक दिखाई पडा। पास पहुँचने पर मालदेव की तरफ से पाँ
ने स्वागत किया। ये पाँचो मालदेव के बेटे थे। परन्तु वहाँ पर राणा हमीर को वि
तैयारी दिखाई न पड़ी।

राणा हमीर अपने सैनिको के साथ चित्तौर के भीतर पहुँच गया। उसने व
अपने गम्भीर नेत्रो से इधर-उधर देखा, अपने जीवन मे चित्तौर के उसने पहले पहल द
उसने वहाँ के विशाल भवनो और राजमहलो को देखा। उसी समय अपने पुत्र ब
मालदेव ने आकर राणा हमीर का सत्कार किया। उसके बाद हमीर राज प्रासाद
स्थान पर पहुँचकर गया जो विवाह का मण्डप बनाया गया था। परन्तु वहाँ पर भी
तैयारी उसे दिखाई न पड़ी। इस समय उसके हृदय मे आशंकाये उत्पन्न हुई। परन्तु
सावधान होकर उसने साहस से काम लिया।

इसी समय राजा मालदेव ने अपनी लड़की को लाकर हमीर के सामने ख
इस समय भी किसी वैवाहिक प्रणाली का सम्पादन न हुआ। हमीर ने लडकी का
दोनो की गाँठे बाँधी गयी और विवाह का कार्य सम्पन्न हो गया। पुरानी प्रथा के
और कन्या—दोनो को प्रासाद के एकान्त मे पहुँचाया गया। मालदेव की लडकी
उसने राणा हमीर की तरफ देखकर उसकी चिन्ताओ को अनुभव किया। इसके बाद
के साथ कहा—

"आप किसी प्रकार की चिन्ता न करे। वास्ताव मे मै विधवा हूँ। छोटी अ
विवाह हुआ था। अपने उस विवाह की कोई बात मै नही जानती। अपने पति को
नही था। जिसके साथ मेरा विवाह हुआ था, कुछ ही दिनो के बाद वह लडाई मे
और उसके बाद मै विधवा मानी गयी।"

मालतेव की लडकी के मुख से इन बातो को सुनकर राणा हमीर ने उसकी
इस बात को अनुभव किया कि राजा मालदेव ने अपनी विधवा लडकी के साथ विवा
अपमान किया है। इसी समय उसने लड़की के नेत्रो मे आँसू देखे। वह सब कुछ भूल गया

बहुत वेदना पहुँची । अपने बहनोई सिरोही के राजा के साथ उसने बड़ी कठोरता के साथ बातें कीं और अन्त मे उसके क्षमा मांगने पर पृथ्वीराज ने अपना व्यवहार उसके साथ बदल दिया । उसके बाद पृथ्वीराज वहां पर पांच दिन तक बना रहा । छठे दिन चलने के समय पृथ्वीराज का बहनोई बड़े प्रेम से पृथ्वीराज से मिला और रास्ते मे खाने के लिए उसने कुछ लड्डू दिये । बहनोई से विदा होकर पृथ्वीराज लौट आया । कमलमीर के निकट पहुँचकर भूख के कारण बहनोई के दिये हुए उसने लड्डू खाये । खाते ही उसका सिर घूमने लगा । एकाएक उसका हृदय छटपटाने लगा । ताराबाई उस समय कमलमीर के दुर्ग मे थी । पृथ्वीराज को वह उस समय देख भी न सकी और उसके पहुँचने के पहले ही पृथ्वीराज की मृत्यु हो गयी । ताराबाई उसके मृत शरीर को लेकर चिता पर बैठी ।

पृथ्वीराज की मृत्यु से रायमल पर वज्रपात हुआ । सांगा के अभाव मे पृथ्वीराज को पाकर उसको सन्तोष मिला था । पृथ्वीराज की मृत्यु को वह सह न सका । पृथ्वीराज के मरने के बाद राणा रायमल की मृत्यु हो गयी ।

अठारहवाँ परिच्छेद

चित्तौर के सिंहासन पर राणा संग्रामसिंह—राज्य की कमजोरियो मे सुधार—आपसी झगडो का अंत—संग्रामसिंह मे दूरदर्शिता, वीरता और योग्यता—मेवाड-राज्य का विस्तार—दिल्ली का राज्य छोटे-छोटे टुकडो मे—चित्तौर मे सैनिक संगठन का कार्य—सैनिकों की शिक्षा—दिल्ली के बादशाह इब्राहीम लोदी के साथ राणा संग्रामसिंह के दो बार युद्ध—दोनों बार लोदी की पराजय—मेवाड-राज्य की बढी हुई सीमा—मध्य एशिया की जातियो के भारत मे लगातार आक्रमण—अगणित राज्यो मे उस देश के शासन का विभाजन—आपसी द्वेष—राजाओ का आज भी प्राचीन जीवन—भारत मे बाबर का आक्रमण—दिल्ली का पतन—बाबर और संग्रामसिंह का युद्ध—सग्रामसिह की पराजय—चित्तौर पर बादशाह बहादुर का आक्रमण ।

सम्वत् १५६५ सन् १५०९ ईसवी मे सांगा, संग्रामसिंह के नाम से चित्तौर के सिंहासन पर बैठा । इसके पहले मेवाड राज्य की कमजोरियाँ पैदा हो गयी थी और राणा के अंतिम दिनो मे जो आपसी झगडे पैदा हो गये थे, वे सब के सब राणा संग्रामसिंह के सिंहासन पर बैठते ही दूर हो गये । सग्रामसिह् न केवल शूरवीर और दूरदर्शी था, बल्कि वह एक सुयोग्य शासक भी था । राणा कुम्भ के बाद मेवाड-राज्य ने जो कुछ खोया था, राणा संग्रामसिंह के अधिकार पाते ही राज्य ने उसे फिर प्राप्त किया ।

दिल्ली का जो राज-सिहासन किसी समय पाण्डवो के द्वारा विभूषित हुआ था और उनके बाद जिसपर तोवर तथा चौहान राजपूतो ने बैठकर भारतवर्ष मे चक्रवर्ती राजा की ख्याति पायी थी, समय के परिवर्तन से दिल्ली के उसी सिंहासन पर गोरी, खिलजी और लोदी वंश के बादशाहो ने बैठकर इस देश मे शासन किया । समय के प्रभाव से आज उसी दिल्ली का राज्य सैकडो टुकडो मे विभाजित हो गया है और उन छोटे-छोटे टुकडो मे सैकडो राजा और नवाब आज शासन करते है । इन दिनो मे दिल्ली और बनारस के मध्य दिल्ली, बीना, कालपी और जौनपुर के नाम से चार स्वतंत्र राज्य

राणा हमीर ने इसके बाद लगातार उन्नति की और थोडे ही दिनो मे वह एक पराक्रमी राजा बन गया। मुसलिम सेनाओं के आक्रमण से जो नगर और ग्राम व थे, राणा हमीर ने उनका फिर से निर्माण किया। उसका प्रभाव सम्पूर्ण राजस्थान लगा और मारवाड, जयपुर, बूँदी, ग्वालियर, चन्देरी, रायसीन, सीकरी, कालपी त राज्यो के राजाओं ने राणा हमीर की अधीनता स्वीकार की। राणा हमीर ने बडी साथ मेवाड राज्य का फिर से निर्माण किया।

राणा हमीर की मृत्यु के बाद उसका बडा लडका क्षेत्रसिंह सम्वत् १४२१ ईसवी मे चितौर के सिंहासन पर बैठा। वह अपने पिता के समान सुयोग्य और अपने शासन काल मे उसने अजमेर और जहाजपुर मे आक्रमण करके विजय प्र मण्डलगढ दूसरी एवम् चम्पन को अपने राज्य मे शामिल कर लिया। दिल्ली हुमायूँ के साथ बकरौल नामक स्थान पर उसने एक युद्ध किया और दिल्ली की उसने पराजित किया।*

मेवाड़ के अन्तर्गत बनोदा नामक नामक एक स्थान है। उसके हाडा वशीय ए लड़की से क्षेत्रसिह की सगाई हुई थी। परन्तु विवाह के पहले ही उस सरदार ने चोर को मार डाला। क्यो मार डाला, इसका कोई उल्लेख नही मिलता। क्षेत्रसिह की मृत्यु लाक्ष सम्वत् १३३६ सन् १२८३ ईसवी मे चित्तौर के सिहासन पर बैठा। इसके कुछ बाद मेवाड पर आक्रमण कर उसने उसको पराजित किया और उसके प्रसिद्ध दुर्ग बरबाद करके उसके स्थान पर विदनौर के मशहूर दुर्ग की स्थापना की। उसके शासन की बहुत उन्नति हुई। राणा लाक्ष ने शंकला वश के बहुत-से राजपूतो को—जो अम्बे नगराचल नाकम स्थान मे रहते थे, पराजित किया था। दिल्ली के बादशाह मोहम्मद साथ भी उसने युद्ध किया और विदनौर नामक स्थान पर उसने बादशाह की सेना किया। उसके शासन काल मे म्लेच्छो ने गया पर चढाई की थी। उनसे युद्ध करने सेना लेकर राणा लाक्ष वहाँ पहुँचा था और युद्ध करते हुए वह मारा गया। उसके श मेवाड मे शिल्प की बहुत उन्नति हुई। कितने ही सुन्दर तालाबो को बनवा कर उसने शोभा बढाई थी। इनके सिवा उसने कितने ही मन्दिरो का निर्माण करावाया, जिनमे मंदिर आज तक प्रसिद्ध है। राणा लाक्ष के बहुत-से लडके पैदा हुए, जिन्होने राजस्थ भिन्न स्थानो पर जाकर अपने नये नये वश चलाये। उनमे लूमावत और दूलावत नाम प्रसिद्ध है। राणा लाक्ष के बडे लडके का नाम चन्द्र था। अपने पिता के राज्य का वही अ लेकिन वह सिहासन पर नही बैठा। इसका कारण और वर्णन आगामी परिच्छेद मे ि

———

* इस हुमायूँ के सम्बन्ध मे पाठक संदेह कर सकते है। इसलिए कि भारतव मे सन् १३६५ ईसवी से लेकर सन् १३८३ ईसवी तक किसी हुमायूँ का नाम नही बाबर का वशज हुमायूँ सोलहवीं शताब्दी मे हुआ है। एलफिन्स्टन ने अपने लिखे इतिहास मे दिल्ली के बादशाह नसीरुद्दीन तुगलक के बेटे हुमायूँ का उल्लेख किया पिता के बाद सन् १३६४ ईसवी मे सिहासन पर बैठा था। जहाँ तक सम्भव है, टॉड पर उसी हुँमायूँ का उल्लेख किया है। यद्यपि उसके शासन काल का समय भी क्षेत्रसिह से दूर पड जाता है। परन्तु सिहासन पर बैठने के पहले उसका युद्ध मे आना सम्भव ह

पाँचो मे अंतिम था । उसने यहाँ पर अपना जो राज्य कायम किया, उसमे उसके वंशजो ने अंग्रेजी शासन के आरम्भ तक बादशाहत की ।

इस विशाल देश मे कही से भी थोड़े से आदमियो का आना आक्रमण करना और फिर राज्य कायम कर लेना कम आश्चर्य की बात नही है । यह और भी आश्चर्य की बात है जब वह देश उस समय जितना सम्पत्तिशाली रहा हो, उतना ही शक्तिशाली भी रहा हो. संसार को देखते हुए इस देश की परिस्थितियाँ सदा भिन्न रही है । और आज भी भिन्न है । विश्व के सभी देशो मे प्राचीन काल के बाद लगातार परिवर्तन हुए, उनके जीवन मे उन्नतियो और विनाशो मे महान क्रान्तियाँ हुई, विभिन्न जातियो के बीच की दीवारें टूट गयी और उनमे एक दूसरे के साथ निकट-वर्ती सम्बन्ध कायम हो गये । संसार मे और भी परिवर्तन हुए । उन परिवर्तनो के उल्लेख यहाँ नही किये जा सकते । परिवर्तनो के नाम पर ही देशो के नाम बदल गये, नदियो, पहाड़ो और बहुत से स्थानो के नाम कुछ दूसरे ही हो गये । मनुष्य स्वयं बदल कर पहले की अपेक्षा कुछ और हो गया । जातियाँ नयी पैदा हो गयी और सैकड़ो के नाम इतिहास के पन्नो से मिट गये । परन्तु सभ्यता के इस कोने मे हम को इस प्रकार का कोई परिवर्तन प्राचीन काल से लेकर अब तक दिखायी नही पड़ा ।

यहाँ के राजपूत आज भी वैसे ही है जैसे कि हजार वर्ष पहले उनके पूर्वज थे । उनके जीवन की नैतिकता और सामाजिकता आज भी वही दीन-दुर्बल—पुरानी दिखायी देती है, जो बहुत प्राचीन काल मे इस वंश के लोगो मे पायी जाती थी । आत्म की पूजा और वैसी हजारों वर्ष पहले उनके पूर्वजो के जीवन मे जो काम कर रही थी, वह आज भी उनमे मौजूद है । संसार एक तरफ है और यहाँ के लोग दूसरी तरफ है । विश्व मे किसी के साथ इस देश का सम्बन्ध और सम्पर्क नही है । सिकन्दर से लेकर बाबर तक जितने ही भयानक तूफान इस देश मे आये । उनमे देश बार-बार उजड़ा और सभी बातो मे उसका सर्वनाश हुआ । परन्तु यहाँ के लोगो ने किसी प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता नही समझी । जीवन के इस सिद्धान्त की यहाँ पर आलोचना करने की जरूरत नही है । इस प्रकार की बातें सही है अथवा गलत, इसका निर्णय तत्ववेत्ताओं के दृष्टिकोण से सम्बन्ध रखता है । लेकिन यहाँ पर हम इतना ही कह सकते है कि जीवन के जिस पहलू का अभाव ऐसे अवसरो पर बार-बार खटकता है, उसके भीतर शक्तियो का सामञ्जस्य छिपा रहता है और उसके ऊपर ही पूर्ण रूप से सार्वजनिक जीवन का विकास और विनाश निर्भर होता है ।

बाबर इन दिनो मे मध्य एशिया के फरगना† का राजा था । फरगना का राज्य जक्सतरत्तीस नदी के दोनो किनारो पर फैला हुआ था । वहाँ पर जिन लोगो की आबादी थी, उस समय वे लोग बड़े शक्तिशाली थे और उन लोगो की तलवारो से किसी समय योरप तथा एशिया के अनेक राज्य बरबाद हो गये थे । उन दिनो मे इन लोगो ने अपने रहने के पुराने स्थानो को छोड़ दिया था और ससार मे सब जगह इस जाति के लोग फैल गये थे । जिन लोगो के एटिला और एलारिक जैसे पराक्रमी वीरो ने ससार के बहुत देशो को भयभीत कर दिया था । उस जाति के लोगो मे परस्पर सगठन था और उनमे बहादुरी भी थी । उनके इन गुणो से इनकार नही किया जा सकता । यही लोग दो हजार की सख्या मे भारतवर्ष मे आये थे और दिल्ली मे अधिकार कर लिया था ।

फरगना के बादशाह बाबर की और सग्रामसिंह के जीवन की अनेक बाते मिलती-जुलती है । सग्रामसिंह के बचपन का उल्लेख पिछले पृष्ठो मे किया जा चुका है । उन बातो को यहाँ पर फिर से

† फरगना को आजकल कोकन कहा जाता है । यह जक्सतरत्तीस नदी के किनारे पर बसा है ।

म्लेच्छों ने आक्रमण किया था, उस युद्ध मे वह मारा गया। गया के सग्राम मे जाने को अपने को लौटकर आने मे सदेह उत्पन्न हुआ, इसलिए पाँच वर्ष के बालक मुकुल करने का उसने विचार किया। सारी व्यवस्था की गयी और अभिषेक के समय राज स्वय मुकुल के माथे पर राजतिलक किया। उस दिन से राणा मुकुल चित्तौर के सिंह कारी बना।

राजकुमार चन्द्र के मनोभावो मे मुकुल के प्रति सत्यता और उदारता थी अवस्था बहुत छोटी थी। इसलिए चन्द्र स्वय राज्य का प्रबन्ध देखने लगा। उसके इस सहानुभूति के सिवा और कुछ न था। परन्तु मुकुल की माँ इस बात से ईर्षा करने ल प्रबंध वह स्वय अपने हाथो मे रखना चाहती थी। इसलिए उसने समय-समय पर f से कहना आरम्भ किया कि राजकुमार चन्द्र स्वय राणा बनना चाहता है। उसकी चन्द्र ने भी सुना। उसके हृदय को आघात पहुँचा। उसने मुकुल की माँ को इस बात दिलाने की चेष्टा की कि मै राज्य पाने को अभिलाषा नही रखता। मुकुल के प्रति मै और राज्य का भविष्य उज्वल देखना चाहता हूँ। इस समय मुकुल की अवस्था ब इसलिए मै राज्य की देख-भाल करता हूँ। लेकिन यदि आपको मेरा यह कार्य पसन्द चितौर छौडकर चलेजाने के लिए तैयार हूँ।

राजकुमार चन्द्र की बातो से मुकुल की माता को सन्तोष न मिला। इसलि चन्द्र चितौर छोडकर माँडू राज्य चला गया। वहाँ के राजा ने उसका बहुत सम्मा अपने राज्य का हल्लर नामक इलाका उसको दे दिया। राजकुमार चन्द्र वही पर

चितौर के राज सिहासन पर पाँच वर्ष का बालक मुकुल था और राज्य के माता के अधिकार मे थे। चन्द्र के चले जाने के बाद मुकुल के ननिहाल के लोगो का f आरम्भ हुआ और एक-एक करके वहाँ के आदमियो से चितौर के समस्त स्थान लगे। उन सब के साथ मुकुल का मामा जोधा और उसका नाना राठौर राजपूत रणम वाड छोड कर चितौर मे आ गया था। इस प्रकार मन्दोर राज्य के लोगो का चि हुआ आधिपत्य और अधिकार देखकर सीसोदिया वश की एक बूढी धात्री को बहुत था। राजकुमार चन्द्र का पालन-पोषण उसी ने किया था। इस समय के दृश्य देख सोचा करती थी कि मेवाड राज्य के भविष्य मे क्या परिवर्तन होने वाला है। क्या ब सिंहासन पर राठौर लोगो का अधिकार होगा? क्या सीसोदिया वश अब मिटने व प्रकार की बहुत सी बातो को सोचकर वह धात्री मन-ही-मन बहुत चिन्तित रहने ल

एक दिन बहुत-कुछ सोच-समझकर यह धात्री मुकुल की माता के पास गया नम्र शब्दो मे उसने कहना आरम्भ किया—"तुम राजमाता हो। तुम्हारा छोटा बाल राज्य का स्वामी है। मै तुम्हारी एक दासी हूँ और जीवन भर मैंने इस सीसोदिया वश के लिए भगवान से प्रार्थना की है। इस समय चितौर मे जो कुछ हो रहा है, उसको प्राण काँप रहे है। मैं नही जानती कि तुम कुछ समझती हो या नही। परन्तु मुझे दिखाई देता है कि अब चितौर मे सीसोदिया वश के स्थान पर राठौर वश की ज रही है।"

धात्री के मुँह से इन बातो को सुनकर मुकुल की माता सन्नाटे मे आ गयी। अब इन बातो पर सन्देह होने लगा और वह गम्भीरता के साथ धात्री की कही बात करने लगी। धात्री की बाते उसे सही मालूम हुई। उसने बडी देर तक धात्री के

संग्रामसिह की सेना ने वादशाह वावर की फौज का सामना किया † दोनो ओर से संग्राम आरम्भ हो गया । राजपूतो की विशाल सेना के द्वारा वावर की फौज करीब-करीब सब काट डाली गयी । यह अवस्था वावर के लिए वडी भयकर हो उठी लेकिन वावर जरा भी हतोत्साह न हुआ । उसकी सहायता के लिए एक दूसरी नयी फौज युद्ध के मैदान मे पहुँच गयी । राजपूतो ने साथ उसने भी युद्ध किया । वावर की इस नयी फौज के भी वहुत से सैनिक मारे गये । यह देखकर अपने बचे हुए सिपाहियो के साथ वावर उस स्थान को लौट गया, जहाँ पर उसने अपनी फौज का शिविर कायम किया था ।

राजपूतो की शक्तिशाली सेना के सामने वावर की फौज बुरी तरह से पराजित हुई । परन्तु इससे वह जरा भी भयभीत न हुआ । उसने अपने शिविर के आस-पास गहरी खाइयाँ खुदवा दी और उनके किनारो पर शत्रु की रोक के लिए तोपे लगा कर उनको जंजीरो से बँधवा दिया । इसके वाद अपने शिविर मे पन्द्रह रोज तक चुपचाप बैठा रहा । राजपूतो की विशाल सेना के द्वारा जिस प्रकार वावर के सैनिक मारे गये और दो वार वावर संग्रामसिंह के मुकावले मे पराजित हो चुका था, उसके कारण वावर की सेना का साहस विलकुल शिथिल पड़ गया । इस शिथिलता को दूर करने के लिए वावर ने तरह-तरह के प्रयत्न किये, लेकिन उसके सैनिको मे युद्ध का उत्साह न पैदा हुआ । यह देखकर वावर ने अपने सैनिको के सामने एक जोशीली भाषण दिया । उसके वाद उसने अत्यन्त जोशीले शब्दो मे अपने सैनिको को उत्साहित करते हुए कहा-- "तुम सब लोग कुरान को अपने हाथ मे लेकर इस वात की शपथ करो कि इस लड़ाई को हम या तो फतह करेंगे अथवा अपने आपको कुर्वान कर देगे ।"

वादशाह वावर के मुँह से इन शब्दो को सुनकर उसके सभी सैनिक जोश मे आ गये और युद्ध करने के लिए तैयार हो गये । वावर इस प्रकार के अवसर की प्रतीक्षा मे था । जिस समय वह अपनी सेना को लेकर दो मील आगे वढा उसी समय राजपूतो की सेना ने सामने आकर युद्ध आरम्भ कर दिया । राजपूतो की शक्तियो का अनुमान लगा कर वावर ने फिर युद्ध रोक दिया । चित्तौर की सेना फिर वापस चली गयी ।

वावर की सैनिक निर्वलता का राणा संग्रामसिंह ने कोई लाभ नही उठाया । नही तो उसने तातारी सेना का सर्वनाश करके वादशाह वावर को आसानी के साथ भारत से वाहर निकाल दिया होता । लेकिन उसने ऐसा नही किया । वावर ने युद्ध वन्द करके राजपूतो को जीतने के लिए बहुत सी वाते सोच डाली । अन्त मे उसने सन्धि करने के लिये अपना दूत राणा संग्रामसिंह के पास भेजा । शिलादित्य नामक एक तोवर राजपूत उन दिनो मे रायसिन का एक सरदार था और मेवाड राज्य का सामन्त था । वावर के साथ होने वाली सन्धि मे वह मध्यस्थ बना । अनेक दिनो तक वावर और संग्रामसिंह के वीच सन्धि की वातचीत चलती रही । अन्त मे वह असफल हो गयी । उसके वाद फिर दोनो ओर से युद्ध की तैयारियाँ होने लगी । वावर ने जिस सन्धि का प्रस्ताव किया था, उसकी शर्तों मे वह भी तय हो गया था कि दिल्ली और उसकी अधीनता के समस्त इलाके वावर के अधिकार मे रहेगे और वियाना के पास बहने वाली पीलखाल नदी मुगल और मेवाड-राज्य की सीमा समझी जायगी । इस सन्धि के अनुसार मुगल वादशाह निश्चित कर की रकम राणा को दिया करेगा । वावर उस समय ऐसी परिस्थिति मे था कि उसने सन्धि की इन शर्तों को स्वीकार कर लिया और उसे

---

† वावर नामा नामक ग्रन्थ मे इस युद्ध का समय ११ फरवरी सन् १५२७ ईसवी लिखा गया है ।

सरदार भट्टी को कैद कर लिया। बहुत से द्वारपाल मारे गये। इसके बाद राजकुमार साथ आगे बढ़ा।

राठौर राजपूत रणमल्ल को इस घटना का कुछ पता न था। मारवाड से वह अनेक प्रकार की विलासिता मे पडा रहता था। चितौर के राज्य पर अब वह अ कार समझता था। महलो मे एक राजपूत बाला दासी के रूप मे रहा करती थी। वह सुन्दरी थी। रणमल्ल ने इन्ही दिनो मे उसका सतीत्व नष्ट किया था। इससे अ राजपूत बाला रणमल्ल से बदला लेने के लिये मौका ढूँढ़ रही थी। जिस दिन रात राजमाता के साथ चितौर मे राजकुमार चन्द्र ने प्रवेश किया और द्वारपालो के साथ उस समय रणमल्ल महल के एक स्थान पर लेटा हुआ सो रहा था। राजपूत बाला रणमल्ल की लम्बी पगडी से उसको चारपाई मे कसकर बाँध दिया। वह अब भी उसे बाँध कर राजपूत बाला चुपके से वहाँ से चली गयी। चन्द्र के साथी सैनिक भीतर आ गये थे। उनमे से एक ने रणमल्ल का वध किया। उसका लडका जोधा चितौर के बाहर दक्षिण की तरफ था। वहाँ पर चितौर का हाल सुनकर वह घ अपने घोडे पर बैठकर वहाँ से भागा। राजकुमार चन्द्र को उसके भागने का समाचा उसको कैद करने के लिये चितौर से रवाना हुआ।

जोधाराव अपने राज्य के मन्दोर नगर मे पहुँच गया था। चन्द्र से घबरा शकल नामक एक राजपूत के यहाँ जाकर छिप गया। राजकुमार चन्द्र ने मन्दोर नग कर लिया। यह नगर बारह वर्ष तक चितौर राज्य मे शामिल रहा। रणमल्ल को घात का पूरी तौर पर बदला मिला। मन्दोर नगर अधिकार मे आ गया और उस से आदमी मारे गये। जोधाराव छिप गया था। उसके दोनो लड़को ने चितौर की अ कर ली जिससे उनके साथ शत्रुता का अन्त हो गया। मन्दोर राज्य का प्रबन्ध चन्द्र चित्तौर लौट गया।

जोधाराव के मन मे मन्दोर के उद्धार की बात बराबर उठती रही। अ सैनिक को अपने साथ मे ले कर फिर उसने मन्दोर पर आक्रमण किया। कुछ सम की सेना ने युद्ध किया। अन्त मे उसकी पराजय हुई और जोधाराव ने मन्दोर नगर कर लिया।

इसके बाद भी जोधाराव को शान्ति न मिली। उसको भय था कि चितौर भी समय आक्रमण कर सकती है और वह समय भयानक हो सकता है। इसलिये को सधि के लिये चन्द्र के पास भेजा और अन्त मे दोनो के बीच सधि हो गयी।

राज्य के अधिकारियो को चन्द्र के समर्पण करने के बाद मुकुल चितौर के अधिकारी बना था। परन्तु अधिक समय तक वह इस अधिकार का भोग न कर सका अवस्था प्राप्त करने पर उसने अपनी योग्यता और क्षमता का परिचय दिया था। सन् १३८८ ईसवी मे वह चितौर के सिहासन पर बैठा था। यह समय भारतवर्ष बहुत महत्व रखता है। इन्ही दिनो मे तैमूर ने अपनी विशाल सेना लेकर भारत मे था। परन्तु उसके आक्रमण से मेवाड को कोई क्षति न पहुँची थी।

राणा मुकुल मे क्षत्रियोचित का कोई अभाव न था। उसके जीवन का असमय सिंह का पहले उल्लेख किया जा चुका है। उससे एक दासी के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न एक का नाम था चच्चा और दूसरे का मेरा। दोनो ही राजमहलो मे रहने वाली

को राज्य सिहासन पर बिठाने की कोशिश करने लगी । एक रानी ने भी अपने लड़के को राज्याधिकारी बनाने के लिए यहाँ तक किया कि उसने बादशाह बाबर के साथ मेल कर लिया । उसका विश्वास था कि इस मेल के फलस्वरूप मेरे लड़के को चित्तौर के राज्य सिंहासन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त होगा । अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने बाबर को प्रसन्न करने की चेष्टा की और इसके लिए उसने रणथम्भोर का प्रसिद्ध दुर्ग और विजय में पाये हुए मालवा राज्य के बादशाह का ताज भी बाबर को भेंट में दे दिया ।

राणा संग्रामसिंह का शरीर लम्बा था, वह स्वस्थ और शक्तिशाली था । उसका रङ्ग गोरा था और नेत्र बड़े-बड़े थे । उसको देखने से उसके शक्तिशाली होने का अनुमान होता था । युद्ध करते-करते उसके शरीर में कई अस्त्र मारे गये थे । वह अत्यन्त साहसी और धैर्यवान था । पराजित शत्रु पर वह सदा दया करता था और उसके साथ अपनी उदारता का परिचय देता था । रणथम्भोर के दुर्ग पर होने वाले युद्ध में उसने अपनी अद्भुत वीरता का परिचय दिया था । उसके इन अच्छे गुणों की प्रशंसा बाबर ने अपने लिखे संस्मरण में की है । राणा संग्रामसिंह की बहादुरी और उदारता की प्रशंसा किया करता था ।

संग्रामसिंह के मरने पर सम्पूर्ण राजस्थान में शोक मनाया गया । मेवाड़ पर्वत पर जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी एक प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया गया । राणा के सात लड़के थे, । उनमें सबसे बड़ा और उससे छोटा-दोनों की छोटी आयु में ही मृत्यु हो गयी थी । इस दशा में उसका तीसरा लड़का उसकी मृत्यु के बाद राज्य का अधिकारी हुआ ।

सम्वत् १५८६ सन् १५३० ईसवी में राणा रत्नसिंह चित्तौर के सिंहासन पर बैठा । धीरता और वीरता के अनेक गुणों में वह अपने पिता राणा संग्रामसिंह की तरह का था । सिंहासन पर बैठते ही उसने प्रतिज्ञा की थी कि मैं मेवाड़ राज्य के सम्मान और उत्थान के लिए जब तक जीवित रहूँगा, कोशिश करूँगा । उसके इन शब्दों को सुनकर मेवाड़ राज्य के मंत्रियों और सरदारों को बड़ी प्रसन्नता हुई ।

सिहासन पर बैठने के पहले रत्नसिंह के जो मनोभाव थे । वे बाद में कायम न रहे और वह धीरे-धीरे बदलने लगा । सिंहासन पर बैठने के पहले और जब उसके दोनों बड़े भाइयों की मृत्यु नही हुई थी, उसने चुपके से—सब की आँखे बचा कर अम्बेर के राजा पृथ्वीराज की लड़की से विवाह कर लिया । उसके और उस लड़के के सिवा तीसरा कोई भी इस विवाह के रहस्य को नही नही जानता था । पृथ्वीराज के परिवार मे किसी को इस विवाह का पता न था ।

लडकी के बडे होने पर पृथ्वीराज ने उसके विवाह की तैयारियाँ की और बूँदी के हाड़ा वंशीय राजा सूरजमल के साथ उसका विवाह कर दिया । इस विवाह से रत्नसिंह को बहुत आघात पहुँचा । उसने सूरजमल को—जो उसका एक नजदीकी रिश्तेदार था और उसकी एक बहन राणा को व्याही थी—अपना शत्रु मान लिया और उसको दण्ड देने के लिए वह अवसर की खोज मे रहने लगा । कुछ दिनो मे अहेरिया का उत्सव आया । राणा रत्नसिह अपने सरदारो और सामन्तो को लेकर उस उत्सव को मनाने के लिए शिकार खेलने के उद्देश्य से जङ्गल की तरफ रवाना हुआ । बूंदी का राजा सूरजमल भी उसके साथ चला ।

सब के साथ राणा एक भयानक जङ्गल मे पहुँच गया और उसके बाद आगे बढकर वह एक ऐसे स्थान पहुँच गया, जहाँ पर सूरजमल को छोडकर उसके साथ का कोई दूसरा आदमी न पहुँचा। राणा रत्नसिह के मन मे सूरजमल के प्रति ईर्षा का भाव तो था ही, अवसर पाकर और तलवार निकाल कर उसने सूरजमल पर आक्रमण किया । तलवार के लगते ही सूरजमल अपने घोडे से गिर

के राजा का भाँजा होजा था। मुकुल की छोटी अवस्था में मेवाड और मारवाड़ के
विगड़ गये थे और राजकुमार चन्द्र ने मारवाड पर आक्रमण करके मन्दोर नगर पर
था। लेकिन उसके कुछ समय के बाद दोनो राज्यो के बीच मे संधि हो गयी थी।

कुम्भ के सहायता माँगने पर मारवाड के राजा ने अपनी एक सेना भेजी थी
आकर चित्तौर की पूरी सहायता की थी। उसके बाद कुम्भ चित्तौर के सिंहासन
अपनी छोटी अवस्था से ही शूरवीर और प्रतापी था। राज्य मे अनेक कमजोरियों के
उसने बडे सहास से काम लिया, विरोधी परिस्थितियों की उसने कुछ परवा न
योग्यता के साथ उसने चित्तौर की शक्तियो का सगठन किया। उसकी शक्तियो का ही
निकला कि उसके शासन काल मे मेवाड राज्य ने बडी तेजी के साथ उन्नति की।
के भीतर मेवाड की निर्बल शक्तियाँ शक्तिशाली बन गयी। जो विरोधी राज्य चित्तौर
के लिये तैयार थे, वे सब राणा कुम्भ को सम्मान की दृष्टि से देखने लये।

राणा कुम्भ से सौ वर्ष पहले आक्रमणकारी मुस्लिम सेना ने चित्तौर मे आकर
सर्वनाश किया था और मेवाड के राजपूतो को निर्बल बना दिया था, इस समय वहाँ
सर्वनाश की बातो को भूल गये थे। इसी चित्तौर राज्य के राजा समरसिंह ने शहाबुद्
सेना का सामना किया था और भारत की स्वाधीनता के लिए उसने अपने प्राणो
किया था। वह समय अब बदल गया था और मेवाड राज्य मे एक नया युग आ
शहाबुद्दीन के आक्रमण से लेकर राणा कुम्भ के समय तक दो सौ छब्बीस वर्षों का
और इस लम्बे समय मे राजस्थान की भूमि पर अनेक प्रकार के परिवर्तन हुये है।

खिलजी वश के पिछले बादशाह के समय विजयपुर, गोलकुण्डा, मालवा, गुज
पुर और कालपी जैसे कितने ही राज्यो के राजा लोग दिल्ली के सिहासन को निर्ब
अपनी-अपनी स्वतत्रता का निर्माण करने लगे थे। राणा कुम्भ जिस समय चित्तौर के
बैठा, उसी वर्ष मालवा और गुजरात के नवाबो ने मेवाड़ पर आक्रमण करने का f
और दोनो ही अपनी-अपनी विशाल सेनाये लेकर सम्वत् १४९६ सन् १४४० ईसवी मे
तरफ रवाना हुए।

नवाबो के इस होने वाले आक्रमण का समाचार पाते ही राणा कुम्भ ने बड़ी
साथ चित्तौर मे युद्ध की तैयारियाँ की और अपने साथ एक लाख सिपाहियो की से
जिसमे चौदह सौ केवल हाथी थे—राणा कुम्भ नवाबो की विशाल सेनाओं का सा
लिए चित्तौर से रवाना हुआ और अपने राज्य की सीमा के आगे मालवा के मैदानो
उसने यवन सेनाओ के साथ सग्राम आरम्भ कर दिया। दोनो ओर से भीषण युद्ध हु
राणा कुम्भ की विजय हुई और मालवा के नवाब मोहम्मद खिलजी को कैद
चित्तौर ले आये।

मोहम्मद खिलजी पूरे छै महीने तक चित्तौर की जेल मे रहा। भट्ट ग्रथो के
कुम्भ ने मोहम्मद खिलजी के ताज को अपनी विजय के प्रमाण मे अपने पास रखकर
दिया था। इसी प्रकार की बात का उल्लेख मुगल बादशाह बाबर ने अपनी आत्म कथा
जिसमे राणा साँगा के लडके ने अपना मुकुट बादशाह बाबर को भेट मे दिया था।
भी अपने लिखे हुए इतिहास मे राणा कुम्भ की उदारता की प्रशंसा की है। उसने
'राणा कुम्भ ने बिना किसी जुर्माने के अपने शत्रु मोहम्मद खिलजी को कैद से छो
चरित्र का परिचय दिया था।' मोहम्मद खिलजी ने राणा कुम्भ की कृतज्ञता को स्वीका

शाह वहादुर ने अपनी फौज के साथ चित्तौर पर आक्रमण किया। उस समय मेवाड़ राज्य के सरदारो और सामन्तो ने युद्ध की तैयारी की और अपनी सेनाओ को लेकर उन लोगो ने चित्तौर के वाहर गुजरात की फौज का सामना किया। दोनो ओर से घमासान संग्राम प्रारम्भ हुआ।

पिछले पृष्ठो मे राणा रायमल के शासन काल मे सूरजमल की लड़ाई लिखी जा चुकी है। सूरजमल ने चित्तौर को प्राप्त करने के उद्देश्य से मुसलमान वादशाह की फौज लेकर यह युद्ध किया था। राणा रायमल के लड़के पृथ्वीराज ने उसको कई वार पराजित किया था, उस समय सूरजमल ने चित्तौर से निराश होकर मेवाड़-राज्य के वाहर देवल नगर वसाया था। [illegible] सूरजमल का वंशधर देवल नगर का राजा था। चित्तौर पर वादशाह वहादुर के आक्रमण करने पर उसका खून खौला। चित्तौर का यह अपमान उसके पूर्वजो का अपमान था। अपनी सेना लेकर चित्तौर की रक्षा करने के लिए वह वादशाह वहादुर की फौज के सामने आया। उसके साथ-साथ वूँदी का राजकुमार अपने साथ पाँच सौ सैनिको को लेकर चित्तौर पहुँच गया। सोनगरे, देवल और दूसरे स्थानो के राजपूत भी मेवाड़ राज्य की रक्षा करने के लिए युद्ध मे आये। मुसलमान वादशाहो ने जितने आक्रमण अव तक चित्तौर पर किये थे, वादशाह वहादुर का आक्रमण उन सव मे भयानक था। उसकी फौज मे एक योरोपियन गोलन्दाज भी था। उसका नाम लाव्री खाँ था। उसी की सहायता से वादशाह वहादुर ने चित्तौर विजय किया।

चित्तौर के वाहर भयानक संग्राम हुआ। राजपूतो ने चित्तौर को वचाने के लिए अपनी कोई शक्ति उठा न रखी। लाव्री खाँ होशियार गोलन्दाज था। युद्धस्थल के करीब वीका पहाड़ी के नीचे उसने एक विशाल सुरंग खोदी और उसमे वारूद भरकर उसमे आग लगा दी। आग लगते ही उस वारूद से भयानक आवाज हुई। जहाँ पर राजपूत खड़े हुए वादशाह की फौज के साथ युद्ध कर रहे थे, वहाँ पर वारूद से वहुत दूर तक की जमीन उड़ गयी। जिसके कारण राजपूत सेना के वहुत से सैनिक जलकर खाक हो गये। चित्तौर के दुर्ग के हिस्से टूट गये। राजपूत सेना मे जो लोग वचे वे इधर-उधर भागने लगे। वादशाह की फौज आगे वढ़ने लगी। उस समय दुर्गाराव ने अपने शक्तिशाली, सैनिको के साथ आगे वढ़कर भयानक मारकाट की। वादशाह की फौज एक साथ दुर्गाराव पर टूट पड़ी। जिस समय यह भीषण मारकाट हो रही थी, सीसोदिया वंश की रानी जवा-हर वाई ने युद्ध मे प्रवेश किया और उसने अपने भाले से वादशाह के वहुत से सैनिको का संहार किया। अंत मे वह मारी गयी। उसके मरने के वाद सूरजमल के वंशज वाघ जी ने अपने सैनिको के साथ गुजरात की फौज के साथ भीषण युद्ध किया। लेकिन युद्ध की गति भयानक होती गयी। चित्तौर की तरफ से लड़ने वाले शूरवीर वहुत-से मारे गये। उसके वाद राजपूत सेना निर्वल पड़ने लगी।

चित्तौर के सामने इस समय भयानक संकट था। वहादुर की फौज को रोक सकने का अव कोई उपाय मेवाड़ के राजपूतो मे न रह गया था। चित्तौर का पतन होने मे देर न थी। इस दशा मे चित्तौर के दरवार मे जो लोग वाकी रह गये थे, उनके परामर्श से चित्तौर मे वड़ी तेजी के साथ जौहरव्रत की व्यवस्था की गयी। रानी कर्णवती तेरह हजार राजपूत वालाओ के साथ जौहरव्रत के लिए सुरंग मे पहुँच गयी। उसके वाद तुरंत सुरंग मे आग लगाई गयी और चित्तौर की तेरह हजार राजपूत ललनाये उस आग मे जलकर क्षार हो गयी।

इसी समय युद्ध मे राजपूतो को पराजय हुई। वत्तीस हजार की संख्या मे शूरवीर राजपूतो के मारे जाने पर चित्तौर का पतन हुआ और वादशाह वहादुर ने अपनी विजयी सेना के साथ चित्तौर मे प्रवेश किया। पन्द्रह दिनो तक वहाँ रहकर उसने और उसकी फौज के सिपाहियो ने खुशियाँ मनायी।

जिस समय वादशाह वहादुर की फौज से युद्ध करते हुए चित्तौर की रानी जवाहर वाई मारी

साथ मित्रता की और उसको प्रसन्न करने के लिये ऊदा ने उस सामन्त को अपनी स्वतंत्र कर दिया।

ऊदा ने इस प्रकार के और भी कार्य किये। उसने जोधपुर के राजा को स और कुछ अन्य इलाके उसको मित्रता की कीमत मे दे दिये। अपने पिता की हत्या क अक्षम्य अपराध किया था, उससे वह सदा भयभीत बना रहता और किसी प्रकार की पर सहायता प्राप्त करने के लिये ही उसने देवडा तथा जोधपुर के राजा के साथ मै त्री कोशिश की थी। * ऊदा के इन कार्यो से मेवाड राज्य का पतन आरम्भ हुआ। ने अपने जीवन भर के प्रयत्नो से मेबाड राज्य की जो उन्नति की थी, ऊदा ने पाँच ही उसका सत्यानाश कर दिया।

मित्रता धन से खरीदी नही जाती। परन्तु ऊदा को इस बात का ज्ञान न था। राज्य का सत्यानाश कर के जिसको मित्र बनाने की कोशिश की थी, वे कभी उनके और न कभी उसका सम्मान किया। इस दशा मे निराश होकर वह दिल्ली के मुस के पास गया और उसके साथ अपनी लडकी का विवाह कर देने का वादा करके उसने यता माँगी।

दिल्ली के बादशाह से मिलकर जब ऊदा दीवान खाने से बाहर जा रहा था, पर अचानक बिजली गिरी, जिससे वह जमीन पर गिर गया और उसका प्राणान्त हो रावल के वश के सम्मान की रक्षा भगवान ने की और हत्यारे ऊदा को जो फल ि था, वही उसे मिला।

राणा कुम्भ के सिहासन का राजकुमार रायमल उत्तराधिकारी था, परन्तु अपने जीवन काल मे उसे राज्य से निकाल दिया था, जिससे रायमल ईदर चला गया कुम्भ की मृत्यु के पाँच वर्ष बाद सम्बत् १५३० सन् १४७४ ईसवी मे रायमल [illegible] पर बैठा और उसके बाद उसने ऊदा के अपराध का दड देना अत्यन्त आवश्यक [illegible] के इस निर्णय को जान कर ऊदा भयभीत हुआ और अपनी सहायता के लिये [illegible] शाह के पास गया था, जहाँ पर बिजली के गिरने से उसकी मृत्यु हो गई।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

चित्तौर के सिंहासन पर अनधिकारी बनवीर—राणा के उत्तराधिकारी के प्रति उसके हृदय मे ईर्षा का भाव—उसकी बढ़ती हुई चिन्तायें—वह सदा के लिए अधिकारी बनना चाहता था—राज्य का उत्तराधिकारी—उसने कांटो को निर्मूल करने का निर्णय किया—विक्रमाजीत की हत्या का समाचार—पन्ना दाई की दूरदर्शिता—उसकी अद्भुत राजभक्ति—दाई ने उदयसिंह की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की—बारी की सहायता—पन्ना दाई के पुत्र का सहार—बालक उदयसिंह के प्राणो की रक्षा का प्रयत्न—निराशा का जीवन—विपद मे कोई किसी का सहायक नही होता—भीलों की सहायता—पर्वत के भयानक पहाड़ी रास्तो मे राजकुमार उदयसिंह को लिए हुए पन्ना दाई—सुरक्षित स्थान मे पन्ना दाई—कमलमीर मे आश्रय मिला—मेवाड़ राज्य मे राजकुमार के जीवन की चिन्ता—कमलमीर मे दरबार—राजकुमार उदयसिंह का विवाह—चित्तौर के सिंहासन पर उदयसिंह—उसकी कायरता—पराजित बादशाह हुमायूं—राजपूतो के साथ बादशाह अकबर के सघर्ष—अकबर और उदयसिंह।

चित्तौर के सिंहासन पर बैठने के कुछ ही समय बाद बनवीर के मनोभावो मे परिवर्तन होने लगा। उसे मालूम था कि राणा विक्रमाजीत अभी जीवित है। इस राज्य का वास्तव मे वही अधिकारी है और उसके बाद राणा सग्रामसिंह का छै वर्ष का बालक उदयसिंह इस राज्य का उत्तराधिकारी है। राज्य के सरदारो के असन्तोष मे विक्रमाजीत इस सिंहासन से उतारा गया है। वह कभी भी इस सिंहासन पर फिर बैठ सकता है। यदि ऐसा कोई समय मेरे सामने पैदा हुआ और मुझे सिंहासन से हटना पड़ा तो वह मेरा एक असह्य अपमान होगा। इस प्रकार के विचार बनवीर के अत.करण मे सिंहासन पर बैठने के बाद बराबर उठने लगे।

असलियत यह थी कि बनवीर चित्तौर के राज्य पर सदा के लिये अपना अधिकार चाहता था। वह समझता था कि यदि विक्रमाजीत के लिए मै सिंहासन से न भी उतारा गया तो सग्रामसिंह का छै वर्ष का बेटा कुछ वर्षों के बाद समर्थ हो जायगा और उस दशा मे वह स्वय अपने पिता के इस सिंहासन पर बैठेगा। उस समय इस पर मेरा कोई अधिकार न रहेगा। इस प्रकार की भावनाओ से बनवीर निरतर चिन्तित रहने लगा। उसके जीवन मे विक्रमाजीत और उदयसिंह—दोनो ही कांटे थे। उसने इन कांटो को निर्मूल करने का निश्चय किया और समय की प्रतीक्षा करने लगा।

एक दिन सायकाल उदयसिंह भोजन करके सो गया था। उसका पालन करने वाली पन्ना दाई उसके पास बैठी थी। कुछ समय के बाद महलो मे काम करने वाला घबराया हुआ बारी वहाँ आया। उसने पन्ना दाई से कहा—"बनवीर ने विक्रमाजीत को मार डाला।" बारी के मुँह से इस बात को सुनकर वह कांप उठी। उसने समझ लिया कि बनवीर का यह आक्रमण सीसोदिया वंश के लिए अच्छा नही है। बनवीर का यह आक्रमण यही से खतम न होगा। वह सग्रामसिंह के इस छोटे बालक उदयसिंह को भी निश्चित रूप से अपना शत्रु समझता है। विक्रमाजीत पर होने वाला आक्रमण उदयसिंह के सर्वनाश का सदेश है।

पन्ना दाई खीची वश के राजपूत परिवार मे पैदा हुई थी और जीवन भर उसने चित्तौर के महलो मे रहकर सीसोदिया वश की सेवा की थी। वह सदा से इस राजवश की शुभचिंतक रही

पर आक्रमण किया। यह देखते ही सूरजमल दौड पडा और उसने किसी प्रकार
परन्तु उससे झगडा रुका नही। साँगा पृथ्वीराज की तलवार से जब बच गया तो
सूरजमल को ललकारा। उस समय भी सूरजमल ने दोनो को रोकने की कोशिश क
बेकार हुआ। दोनो एक दूसरे का सर्वनाश करने के लिये चेष्टा करने लगे। दोनो
तलवारो के बहुत-से जख्म हो गये। साँगा के शरीर मे तलवार के पाँच आघात जोर
तुरन्त भागा। उसकी एक आख भीषण आघात से सदा के लिये नष्ट हो गयी।

साँगा भागकर सिवान्ती नामक स्थान पर पहुँचा। वहाँ पर उसे वीदा नाम का
मिला। वह राजपूत उदावत वश मे पैदा हुआ था और इस समय अपने घर से नि
बाहर जाने को तैयार था। अकस्मात अपने सामने रक्त से डूबे हुए साँगा को देखक
उठा। उसी समय जयमल ने वहाँ पहुँच कर साँगा पर अपनी तलवार का वार किया
रक्षा करने के लिये वीदा राजपूत ने जयमल का सामना किया। वह जयमल की तल
गया। इसके बाद साँगा वहाँ से चला गया।

पृथ्वीराज के शरीर मे बहुत से जख्म हो गये थे। उनके सेहत हो जाने पर
खोज करने लगा। यह समाचार साँगा को मिला। वह पृथ्वीराज से बचकर राज्य
गया। इस दुर्घटना का समाचार राणा रायमल ने भी सुना। उसे बहुत क्रोध आया।
राज को बुला कर राज्य से निकल जाने का आदेश दिया। अपने पाँच सवारो के
गोदवार राज्य के वालियो नामक स्थान पर चला गया।

राणा रायमल की अब वृद्धावस्था थी। गोदवार अरावली पर्वत पर बसा
मौके पर जंगली मीन लोग वहाँ पर आकर तरह-तरह के उपद्रव करने लगे और
सियो को लूटने लगे। गोदवार की राजधानी नादौल मे थी। मीन लोगो ने वहाँ के
कोई परवा नही की। उपद्रव करने वाले मीनो की सख्या इतनी बढ गयी थी,
सैनिको के रोके न रूकी। उस समय पृथ्वीराज बालियो मे उपस्थित था। उसने मी
को सुना। बालियो मे रहकर उसने अपने कुछ साथी वना लिये थे। उसने मन ह
करने वाले मीनो के दमन करने का निश्चय किया। उन मोनो का एक राजा था अ
के यहाँ बहुत से राजपूत नौकरी करते थे। किसी प्रकार पृथ्वीराज उन राजपूतो
उनको भडकाकर मीनो पर उसने राजपूतो का आक्रमण करवा दिया।

राजपूतो और मीनो की लडाई ने भयानक रूप धारण किया। मीनो का रा
अपने राज से भागा। पृथ्वीराज ने उसको पकड लिया और अपने भाले से उसको
इसके बाद पृथ्वीराज ने अपने साथ के सैनिको और मीनो के राजा के यहाँ रहने वाले
सहायता से पहाडी मीनो पर भयानक अत्याचार किए और वडी निर्दयता के साथ
करने लगा। बहुत से मीन लोग मारे गये और जो वाकी रहे, उनमे भी कुछ भाग
बाद पृथ्वीराज ने मीनो के सभी पहाडी इलाको पर, तेसौडी नामक दुर्ग को छोडकर
लिया। उन दिनो मे उस दुर्ग पर चौहान माद्रेचा लोगो का शासन था।

मीनो के राज्य पर अधिकार करके पृथ्वीराज ने वहाँ का अधिकार सद्दा नामक
राजपूत को सौप दिया। उस सोलकी राजपूत ने उसके बाद सोदगढ पर भी अपना
लिया। सद्दा का विवाह माद्रेचा चौहान की लडकी के साथ हुआ था। वह अंत मे
मिल गवा। मीनो के राज्य पर जो कुछ पृथ्वीराज ने किया, उसका समाचार र
सुना। उसने प्रसन्न होकर पृथ्वीराज को चित्तौर मे वुला लिया।

मृत्यु हो चुकी है। ऐसी दशा मे राणा रायमल के मर जाने पर चित्तौर राज्य का
सिवा कोई नही हो सकता। पृथ्वीराज के आ जाने पर उसका यह विश्वास समाप्त ह

सूरजमल अब फिर किसी नये षडयन्त्र की खोज मे रहने लगा और जब उसे
तं। वह सारङ्ग देव नाम के एक राजपूत के पास गया। दोनो मे खूब बाते हुई। इ
मिल कर मालवा के बादशाह मुजफ्फर के पास पहुँचे और दोनो ने मिलकर चित्तौर
करने के लिए उससे फौजी सहायता माँगी। मालवा के बादशाह ने इस प्रार्थना को
लिया और चित्तौर पर आक्रमण करने के लिए अपनी फौज भेजी। उस फौज को ले
और सारङ्ग देव ने मेवाड के दक्षिण इलाको पर आक्रमण किया और वहाँ के साद्री
नाई से लेकर नीमच तक सभी स्थानो पर अधिकार करके चित्तौर की तरफ बढने

इस आक्रमण का समाचार राणा रायमल को मिला। वह चित्तौर की एक
निकला और राज्य के समीप बहती हुई गम्भीरी नदी के तट पर राणा ने बाद
का सामना किया। युद्ध आरम्भ हो गया। कुछ समय तक लगातार युद्ध होने के क
शरीर मे बाईस घाव लगे। उनसे अविरल रक्त प्रवाहित होने लगा।

राणा की बुढापे की अवस्था थी। लगातार युद्ध करने और जख्मी हो जाने
उसका शरीर शिथिल पडने लगा। वह युद्ध मे निराश हो रहा था। इसी समय अ
सवार सैनिको के साथ पृथ्वीराज युद्ध क्षेत्र मे आ गया और राणा को युद्ध से बाहर
स्वय युद्ध करने लगा। पृथ्वीराज की मार से बादशाह की फौज के बहुत-से आदमी मारे
मल स्वयं जख्मी हुआ। इसके बाद युद्ध बन्द हुआ और दोनो सेनाये अपने-अपने शिविरो

दूसरे दिन सवेरे फिर युद्ध आरम्भ हुआ और दोनो तरफ से भीषण मार-क
देव की मार से चित्तौर के बहुत-से राजपूत मारे गये। परन्तु वह स्वय जख्मी हुआ।
तलवार से सारङ्ग देव के शरीर में पैंतीस जख्म हो गये। पृथ्वीराज के शरीर मे भी
लगी। अन्त मे मालवा की फौज युद्ध से हट कर भागी और पृथ्वीराज विजयी
वापस लौटा।

पराजित होने के बाद भी सूरजमल निराश नही हुआ। मेवाड का राज्य प्रा
वह फिर भी युद्ध की तैयारी करता रहा। परन्तु उसकी आशा पूर्ण नही हुई।
चित्तौर की सेना के साथ युद्ध किया और अत तक पराजित होता रहा।

मालवा की फौज के साथ सारङ्ग देव और सूरजमल को पराजित करके
दिनो तक चित्तौर मे रहा उसके बाद वह अपनी पत्नी ताराबाई [illegible]
के दुर्ग मे चला गया। सूरजमल के षडयन्त्र को अब वह [illegible]
उसकी इच्छा हो रही थी। इसलिए कमलमीर के दुर्ग में [illegible]
आरम्भ किया।

मे पहुँचा । इन दिनो मे उसके और उसके साथ के लोगो के खाने-पीने की कोई व्यवस्था न थी । उसके साथ उसकी बेगमे भी थी । वे कई-कई दिन तक भूखी रह कर बादशाह के साथ सफर करती थी । कोई राजा हुमायूं को शरण देने के लिए तैयार न था । हुमायूं जहा पहुँचता था, वहा का राजा एक दो दिन के बाद शेरशाह के डर से हुमायूं को अपने यहा से निकाल देता था । इन दिनो मे अपनी इस दुर्दशा के कारण हुमायूं बहुत तग आ गया था । उन सकटो के दिनो मे अपने प्राणो की रक्षा के लिए उसके पास कोई उपाय न था । उसके साथ इन दिनो मे जो सैनिक थे इन विपदाओ के कारण उन सैनिको ने भी उसका साथ छोड दिया था और भाग कर के इधर-उधर चले गये थे । उसके साथ के जितने लोग थे भूख से परेशान हो गये थे और कुछ लोगो ने हिन्दू राजाओ के यहा जाकर नौकरी कर ली थी ।

इन दिनो मे हुमायूं के जीवन का एक भयानक समय था । जो किसी समय भारतवर्ष का बादशाह था और कुछ वर्षों के बाद उसी भारत मे उसके जीवन का ऐसा समय आया कि उसका जिन्दा रहना असम्भव मालूम होने लगा । बहुत निराश होकर हुमायूं ने आश्रय पाने के लिये जैसलमेर और जोधपुर के राजा से प्रार्थना की । परन्तु दोनो ने इनकार कर दिया । मुस्लिम इतिहासो मे लिखा गया है कि आश्रय देने के बजाय जोधपुर के राजा मालदेव ने हुमायूं को कैद करने की कोशिश की थी । तवारीख फरिश्ता का यह उल्लेख सही नहीं मालूम होता । इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता । क्योकि हिन्दू ग्रथो मे इस बात का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता ।

इन दिनो मे हुमायूं की विपदाये सीमा के बाहर पहुँच गयी थी । उसकी बेगमो को इन दिनो मे जो मुसीबते झेलनी पडी थी, उनको देखकर हुमायूं कभी-कभी तड़प उठता था । बेगमो के सकटो को देखकर कभी-कभी उसका धैर्य छूट जाता था । जब वह दिल्ली के राजमहलो मे रहने वाली बेगमो को जलती हुई रेतीली भूमि मे भटकते सकटो के साथ सामना करता हुआ देखता था, तो उसका धैर्य साथ न देता था । फिर भी उसने बुद्धिमानी और धीरता से उसने काम लिया । उन भयकर सकटो के समय वह अपनी बेगमो को प्राय समझाने की चेष्टा करता था । तवारीख फरिश्ता मे हुमायूं के सकटो का रोमाचकारी वर्णन किया गया है और उसमे लिखा गया है कि हुमायूं की उन विपदाओ को देख कर अमरकोट के राजा सोढा ने उसके साथ सहानुभूति प्रकट की और उसने हुमायूं को अपने यहा आश्रय दिया ।

भारतवर्ष की विशाल मरुभूमि के बीच मे अमरकोट बसा हुआ है । कुछ इतिहासकारो ने लिखा है कि इसी अमरकोट मे शक लोगो ने भारत मे आकर अपने रहने का स्थान बनाया था । इसी अमरकोट मे सन् १५४२ ईसवी मे अकबर का जन्म हुआ । उसके पैदा होने के कुछ ही दिनो बाद अमरकोट के राजा सोढा का आश्रय छोडकर हुमायूं ईरान चला गया और भारत से निकल कर बारह वर्ष तक वह विभिन्न देशो मे मारा-मारा फिरता रहा । कभी वह ईरान मे होता कभी अपने पूर्वजो के राज्य मे पहुँच जाता । कभी कन्धार के पहाडी इलाको मे मुसीबत के दिनो को काटता हुआ वह घूमा करता और कभी कश्मीर मे पहुँच जाता ।

इन दिनो मे भारत मे पठानो का राज्य चल रहा था । उनके उत्तराधिकारियो मे भी बहुत से आपसी झगडे पैदा हो गये । यही कारण था कि थोडे दिनो के भीतर दिल्ली के सिहासन पर छै पठान बादशाह बैठे और वे अधिक समय तक राज्य सत्ता का भोग न कर सके । जिस समय दिल्ली के सिहासन पर सिकन्दर का अधिकार था और वह अपने भाइयो के साथ भीषण झगडो मे पडा हुआ था, हुमायूं काश्मीर मे आ गया था । उस समय उसने दिल्ली के आपसी झगडो को देखकर अपनी सेनाओ का संगठन किया और एक सेना लेकर उसने सिध नदी को पार किया और सिकन्दर से युद्ध

अपना शासन चला रहे थे। परन्तु संग्रामसिह के निकट उन राज्यो का कोई महत्व
समय था, जब मेवाड-राज्य मे आपसी झगडे पैदा हो गये थे, उस समय गुजरात औ
दोनो शासक मेवाड-राज्य के विरोधियो से मिल गये थे। परन्तु वे मेवाड-राज्य को को
पहुँचा सके। सग्रामसिह के सिहासन पर पैर रखते ही मेवाड-राज्य ने अपनी उन्नति
और कुछ समय के बाद वह भारतवर्ष का चक्रवर्ती राजा माना गया। मारवाड औ
राजाओ ने मेवाड की ख्याति बढाई। ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, राईसीन, कालपी,
गीगरौन, रामपुर और आबू आदि कितने हो राज्यो के राजा और नरेश मेवाड-राज
होकर चल रहे थे और आवश्यकता पडने पर सभी अधीन राजा और सामन्त अपनी-
लेकर मेवाड-राज्य की तरफ से शत्रुओ के साथ युद्ध करते थे। राज्य का अधिकार
राणा सग्रामसिह ने अपनी सेना का सगठन बडी बुद्धिमानी के साथ किया था और
को युद्ध की शिक्षा देकर उनको शक्तिशाली बनाया था। यहो कारण था कि दिल्ली
के बादशाहो के साथ युद्ध मे विजय प्राप्त करके शत्रुओ की सेना को पराजित किया।
शाह इब्राहीम लोदी ने दो बार सग्रामसिह के साथ युद्ध किया और दोनो बार वह प

राणा सग्रामसिह के शासन काल मे मेवाड राज्य की सीमा बहुत दूर तक
उत्तर बाना प्रान्त मे रहने वाली पीलखाल, पूर्व मे सिंध नदी, दक्षिण मे मालवा
मे मेवाड की दुर्गम शैलमाला उसकी सीमा बन गयी थी। मेवाड राज्य की यह
सग्राम सिह की योग्यता, गम्भीरता और दूरदर्शिता का परिचय देती है। उसके सिहा
के पहले जिन शत्रुओ ने चित्तौर को अधिकार मे प्राप्त करने के सपने देखे थे, राणा
आते ही उनका और उनके सहायको का फिर कभी नाम सुनने को नही मिला। इन
कारण यह था कि राणा सग्रामसिह प्रतापी और बहादुर राजा था।

मध्य एशिया की रहने वाली जातियो ने बारम्बार आक्रमण करके भारतवर्ष
की थी, इस देश का प्राचीन इतिहास स्वय इस बात का प्रमाण है। इन हमलो और
का कारण यह था कि इस विशाल देश का शासन प्राचीन काल से अगणित छोटे-
और नरेशो के अधिकारो मे चला आ रहा था। उन पर किसी का कोई नियंत्रण न
कि इस देश मे आज भी है। ये छोटे-छोटे सभी राजा और नरेश एक दूसरे से ई
उनमे परस्पर मित्रता और सहानुभूति का सम्बन्ध न था।

यूनान के इतिहासकारो ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि जिस स
भारत पर आक्रमण किया था, केवल पजाब मे छोटे-छोटे बहुत से राजा थे। सिक
ईरान के लोगो ने भारत पर आक्रमण किया। सम्राट डैरियस ने अपने अधिकृत
को सब से अधिक सम्पन्न और समृद्धशाली पाया था। तक्षक, जित। पारद, हूण,
और चगताई आदि अनेक जातियों ने समय-समय पर इस देश मे आक्रमण किये थे
अपरिमित सम्पत्ति लूटकर अपने देश को ले गये थे। प्राचीन काल से लेकर बहुत समय
इस देश के लूटे जाने के दो ही कारण थे। एक तो यह कि यह देश अत्यधिक स
दूसरा कारण यह था कि इस देश मे अगणित राजा और नरेश थे और उनमे परस्पर
रही थी। उस फूट और ईर्षा के कारण ही बाहरी आक्रमणकारी और लुटेरी जा
देश मे आने और आक्रमण करने का मौका मिला। गोरी से लेकर बाबर तक पाँच
देश मे ऐसे हुए जिनमे प्रत्येक ने यहाँ आकर और इस देश के राज्यो को पराजित
शासन कायम किये। सग्रामसिह के समय मे जिसने इस देश मे आकर आक्रमण किया

वर्ष की अवस्था मे सिंहासन पर बैठे थे। अकबर के जीवन की विशेषताएँ उसके जन्म लेने के पहले से आरम्भ हुई थी और उदयसिंह के जीवन मे उसकी दुर्बलताएँ उसकी छोटी सी अवस्था मे हुई थी। विद्वानो और इतिहासकारो के अनुसार अकबर और उदयसिंह—दोनो के जीवन निर्माण एक से होने चाहिए थे। परन्तु ऐसा नही हुआ। उदयसिंह जब चित्तौर के सिंहासन पर बैठा, उस समय वह अकबर के जीवन के बिलकुल विपरीत साबित हुआ। अकबर ने सिंहासन पर बैठने के बाद अपनी योग्यता और महानता का परिचय दिया। परन्तु उदयसिंह ने उसके बिलकुल विपरीत अपनी अयोग्यता और कायरता का परिचय दिया। इन दोनो के जीवन चरित्रो का अध्ययन करने से ऊपर प्रकृति के जिस सत्य का उल्लेख किया गया है, उसमे सन्देह पैदा होता है। परन्तु वास्तव मे ऐसी बात नही है। सही बात यह है कि उदयसिंह के जीवन-चरित्र के अध्ययन करने और उसको समझने मे भूल की जाती है। सच बात यह है कि उदयसिंह ने अपने जीवन मे न तो कठिनाइयो को देखा था और न कभी जीवन के संघर्षों का सामना करने की नौबत उसके जीवन मे आयी थी। छै वर्ष तक वह चित्तौर के सुरक्षित दुर्ग मे रहा था और उसके बाद बनवीर के आक्रमण से बचाने के लिए वह कुम्भलमेर के दुर्ग मे पहुँचा दिया गया था। वहाँ पर भी उसने एक राजभवन मे ही अपना जीवन व्यतीत किया और उसके बाद सरल भाव से वह चित्तौर के सिंहासन पर पहुँच गया। जीवन की सरलता और कोमलता ने उसको निर्बल और भीरु बना दिया था।

जाक्जरतीस नदी के तट पर बसे हुए समरकन्द [illegible] और वहाँ से भाग कर काबुल होता हुआ बाबर भारत मे पहुँचा था और दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर उसने जिस राज्य की नीव डाली थी, उसको साम्राज्य बना देने का कार्य अकबर ने किया। अकबर न केवल एक चतुर शासक था बल्कि दूसरो के हृदयो पर अधिकार करने का मन्त्र भी वह जानता था। शासन की योग्यता के द्वारा उसने अपने छोटे-से राज्य को विशाल बनाया और जिनके राज्यो को लेकर उसने अपने राज्य मे मिला लिया था, उनके हृदयो पर शासन उसने प्रेम के द्वारा अधिकार किया था। इसी का यह परिणाम था कि जो हिन्दू राजा और नरेश उसके द्वारा पराजित हुए उन्होने भी उसको जगद्गुरु, दिल्लीश्वरो कह कर सम्बोधन किया था।

भट्ट ग्रथो के अनुसार अकबर ने दो बार चित्तौर पर आक्रमण किया था। लेकिन तवारीख फरिश्ता मे अकबर के एक ही आक्रमण का वर्णन पाया जाता है। भट्ट ग्रथो के अनुसार चित्तौर के पहले आक्रमण मे अकबर को सफलता नही मिली थी। चित्तौर के सरदारो और मेवाड राज्य के सामन्तो ने अपनी-अपनी सेनाये लेकर चित्तौर की रक्षा करने के लिए अकबर की फौज के साथ युद्ध किया था और मुगल बादशाह को पराजित किया। उस युद्ध मे राणा उदयसिंह की अविवाहिता एक उपपत्नी ने भी चित्तौर की सेना के साथ युद्ध-स्थान मे जाकर दिल्ली की फौज पर आक्रमण किया था। उस मौके पर अकबर की फौज पीछे हट गयी थी और युद्ध बन्द हो गया था।

उसके बाद भट्ट ग्रन्थो के अनुसार अकबर ने अपनी पूरी तैयारी के साथ दूसरी बार चित्तौर पर आक्रमण किया। उस समय उसकी अवस्था पच्चीस वर्ष की थी। फरिश्ता इतिहास मे केवल इसी युद्ध का वर्णन किया गया है। दिल्ली से मुगल सेना सन् १५६७ ईसवी मे चित्तौर की तरफ रवाना हुई और पण्डोली नामक स्थान से बस्शी जाने का जो मार्ग है, यहाँ पहुँचकर मुगल फौज ने अपनी छावनी डाली। जिस स्थान पर बादशाह की फौज आकर रुकी थी वहाँ पर सगमरमर का एक स्तम्भ बना हुआ है। यह 'अकबर का दीपक' के नाम से प्रसिद्ध है।

भट्ट ग्रन्थो के अनुसार, आक्रमण के लिए आयी हुई मुगल बादशाह की फौज का समाचार सुनकर राणा उदयसिंह चित्तौर से भाग गया। लेकिन चित्तौर के सरदार इससे भयभीत न हुए और

लिखने की आवश्यकता नही है। केवल इतना ही लिखना काफी है कि उसने लड़कपन से के सिंहासन पर बैठने के समय तक जीवन की भयानक कठिनाइयों का सामना किया था, भाइयों के साथ उसका झगडा आरम्भ हुआ था और उस झगडे मे अपने प्राण ले से भाग गया था। कहाँ गया और किस प्रकार उसने अपना जीवन निर्वाह किया, इ यहाँ पर विस्तार देने की आवश्यकता नही है। राणा रायमल के मर जाने पर जब सिंहासन पर बैठा, उस समय से उसकी जिन्दगी के अच्छे दिन आरम्भ होते है।

बादशाह बाबर की जिन्दगी की शुरुआत भी बड़ी भयानक रही थी। सन् १४ वह फरगना के सिंहासन पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था बारह वर्ष की थी। इ बाद, सोलह वर्ष की अवस्था मे उसने अपने आस-पास के कई राजाओ के साथ युद्ध वर्षों के बाद उसने समरकन्द पर अधिकार कर लिया। परन्तु उसके बाद वह फिर निकल गया। इन दिनो मे उसका जीवन बडी विचित्र गति से चल रहा था। पड़ोसी उसके रोज के सघर्ष थे। उनमे कभी उसकी हार होती थी और कभी वह विजयी हो पराजित होने पर अपना राज्य छोड़कर उसे दूर भाग जाना पड़ता था और उसके बाद का संगठन करके वह फिर शत्रु के साथ युद्ध करता था। यह अपने जीवन के आरम्भ था और अपनी सफलता तक विश्वास करता था। वह कभी घबराता न था।

इन दिनो मे उसके शत्रुओ की सख्या बढ गयी थी, इसलिए अपना राज्य छोड़ कुश की तरफ रवाना हुआ और सन् १५१६ ईसवी मे सिंध नदी के पास पहुँच वह बहुत निर्बल अवस्था मे था। काबुल और पजाब के बीच मे रहकर उसने किसी वर्ष व्यतीत किये। इन दिनो मे अपनी सफलता के नये-नये रास्ते वह खोजता रहा।

इसके बाद बाबर ने दिल्ली के बादशाह इब्राहीम लोदी पर चढ़ाई की। उसका साथ दिया। इब्राहीम मारा गया। उसकी सेना युद्ध से भागकर तितर-बि दिल्ली और आगरा के लोगो ने बाबर का स्वागत किया। अपनी सफलता को भगवान को धन्यवाद दिया।

दिल्ली विजय करने के बाद एक वर्ष तक बाबर ने दिल्ली मे विश्राम किया उसने भारतवर्ष के राजाओ का अध्ययन किया। चित्तौर के सिंहासन पर उस समय सिह था। स्वय शूरवीर था और मेवाड राज्य की शक्तियाँ इन दिनो मे विशाल लेकिन इस देश के राजाओ की फूट और ईर्षा उन दिनो मे भी अपना काम कर रह ने भारत की इस राजनीतिक अवस्था का भली प्रकार अध्ययन किया और उसके बाद सग्रामसिंह के साथ युद्ध करने का निश्चय किया।

बाबर दिल्ली का राज्य प्राप्त करके वडी बुद्धिमानी के साथ सैनिक शक्तिय करता रहा और उसके वाद पन्द्रह सौ सैनिको की एक सेना लेकर सग्रामसिंह से युद्ध वह आगरा और सीकरी से रवाना हुआ। यह समाचार पाते ही राणा सग्रामसिह तैयारी आरम्भ कर दी। राजस्थान के लगभग सभी राजा और मेवाड राज्य के सेनायें लेकर चित्तौर मे पहुँच गये। सब के साथ राणा सग्रामसिंह बाबर से युद्ध चित्तौर से आगे वढा। कार्तिक महीने की पचमी सम्वत् १५८४ सन् १५२८ सेना ने बियाना पहुँच कर बाबर की सेना का रास्ता रोका और कनवा नामक स्थान

और अपने प्राणों का भय छोड़कर उसी तरह [illegible] मार की। उस समय पत्ता की अवस्था सोलह वर्ष की थी। चित्तौर के पहले युद्ध में उसका पिता मारा गया था। पत्ता की अवस्था छोटी होने के कारण ही उसकी माँ अपने पति के साथ [illegible] और अपने इकलौते पुत्र का पालन करने के लिए वह जीवित रही थी। अब चित्तौर पर [illegible] आक्रमण करने पर विधवा माता ने अपने इकलौते बेटे पत्ता को युद्ध में भेज दिया।

सहीदास के मारे जाने के बाद और युद्ध में पत्ता के [illegible] की अवस्था भयंकर हो उठी। इसी अवसर पर चित्तौर के [illegible] और [illegible] युद्ध में गयी थी और शत्रुओं के साथ मार-काट की थी। उस समय [illegible] राजपूतों की अवस्था देखने के योग्य थी। [illegible] चित्तौर का पतन [illegible]। उस भयानक युद्ध में राजपूत स्त्रियाँ मारी गयीं। [illegible]। मुगलों की तोपों और बन्दूकों से [illegible]। [illegible] मुकाबिला करने के लिए राजपूतों [illegible]। [illegible] शत्रु की एक गोली लगी। [illegible] राजपूतों की सेना [illegible] और युद्ध में बचे हुए राजपूतों ने चित्तौर [illegible]। मुगल सेना का आक्रमण तेज होता जा रहा था। उसको रोकने के लिए आठ हजार राजपूत [illegible], जो चित्तौर के सैनिक और सरदार [illegible] उस समय मारे गये। [illegible] चित्तौर पर रही। उनके बचे हुए थोड़े से राजपूत सब मुगल सेना [illegible]। उस समय अपनी विजयी सेना के साथ अकबर ने चित्तौर में प्रवेश किया। इस युद्ध में तीस हजार आदमी मारे गये उनमें [illegible] मेवाड़ राज्य के सरदार सामन्त और राणा वंश के [illegible]। [illegible] ग्वालियर का तोवर राजा बन गया था। [illegible], पाँच राजकुमारियों, दो [illegible] और सामन्त सरदारों तथा सामन्तों की स्त्रियों ने युद्ध में [illegible] अपने प्राणों का बलिदान किया। वीर बालक पत्ता के मारे जाने पर युद्ध में उसकी विधवा माता और उसकी नव विवाहिता पत्नी ने अपने प्राणों को उत्सर्ग किया।

जयमल की मृत्यु अकबर के हाथ से हुई। जिस बन्दूक की गोली से उसने जयमल को मारा उस बन्दूक का नाम अकबर ने संग्राम रखा। इसका वर्णन अबुलफजल ने अपनी लिखी हुई पुस्तक में किया है। इस युद्ध में जयमल और पत्ता की बहादुरी देख कर अकबर बहुत प्रसन्न हुआ था। उसने उन दोनों राजपूत वीरों की कीर्ति को [illegible] के लिए दिल्ली में किले के सिंह द्वार पर एक ऊँचे चबूतरे के ऊपर दोनों की पाषाण मूर्तियाँ बनवा कर लगवाई।

अकबर के साथ युद्ध आरम्भ होने के पहले ही उदयसिंह चित्तौर छोड़कर गोहिल लोगों के पास चला गया था। ये गोहिल लोग अरावली पर्वत के राजपिप्पली नामक जंगल में रहते थे। कठिनाइयों के साथ कुछ दिन बिताकर वह गिरवोन नामक स्थान पर चला गया। वह स्थान अरावली पर्वत की शैलमाला के भीतर है। चित्तौर पर अधिकार पाने के पहले उदयसिंह के पूर्वज बप्पा रावल ने इसी स्थान के पास कुछ दिनों तक अज्ञात वास किया था। अकबर के द्वारा चित्तौर के विध्वंस होने से कई वर्ष पूर्व उसी पहाड़ के बीच में उदयसिंह ने एक विशाल झील बनवाई और अपने नाम पर उदय सागर उसका नाम रखा। इस पर्वत की तलैटी में कितनी ही नदियाँ टेढ़े-मेढ़े आकार में प्रवाहित होती है। इनमें से एक नदी की धारा को रोक कर उदयसिंह ने एक विशाल बाँध बनवाया और उसके ऊपर पहाड़ के शिखर पर उसने एक छोटा-सा महल बनवाया। उसने उस महल का नाम नौचौकी रखा। इसके बाद उस महल के आस-पास और भी कितने ही महल बन गये और फिर थोड़े

इनकार करने का कोई मौका न था। लेकिन शिलादित्य के परामर्श के अनुसार संग्रा
सन्धि को अस्वीकार कर दिया। उसके फलस्वरूप, दोनो तरफ से फिर युद्ध की तैयारि
एक महीने तक अपने शिविर मे रहकर और सन्धि के अस्वीकृत होने पर अपने शिविर
सेना के साथ युद्ध के लिए बाबर फिर रवाना हुआ। १६ मार्च को दोनो ओर की
सामना हुआ और भयंकर सग्राम आरम्भ हो गया।

इस बार के युद्ध मे राजपूत अधिक सख्या मे मारे गये। जिन शूरवीर सरदा
का अधिक विश्वास था, उन सब का युद्ध मे सर्वनाश हुआ। इसके बाद भी युद्ध की ग
रूप मे चल रही थी। युद्ध की हार और जीत के सम्बन्ध मे अभी तक कुछ कहा नह
था। राणा सग्रामसिह के साहस और विश्वास मे किसी प्रकार की कमी नही आयी थी
दोनो ओर से भीषण होती जा रही थी। इस भयानक समय मे मेवाड-राज्य का स
दित्य जिसके परामर्श से राणा ने सन्धि को अस्वीकार कर दिया था—अपनी सेना के
के साथ मिल गया। उसके इस देश-द्रोह और विश्वासघात के कारण युद्ध की पि
गयी और थोडे ही समय मे राजपूतो का भयानक रूप से सहार हुआ। राजस्थान के बहुत
और सैनिक उस समय मारे गये और राणा सग्रामसिंह के शरीर मे बहुत-से भयानक
अपनी उस जख्मी अवस्था मे बची हुई सेना के साथ सग्रामसिह पीछे हट गया और मेव
की ओर जाते हुए उसने कहा—मै चित्तौर मे लौटकर उस समय तक न जाऊँगा, जब
बादशाह को पराजित न कर लूँगा।

बाबर के साथ युद्ध मे अन्तिम समय राणा संग्रामसिंह की पराजय हुई।।उसके सा
पुर के रावल उदयसिह और उसके दो सौ वीर सैनिक, सालुम्ब्रा के राजा रत्नसिंह और
सौ चन्द्रावत सिपाही, मारवाड के राठौर राजकुमार रायमल और उसके मेडता निवासी
योद्धा क्षेभसिह और रत्नसिह, शोनगढा सरदार रामदासराव, झालापति के ओझा, पर
गोकुलदास, मेवाड के चौहान मानकचन्द और चन्द्रभान आदि सभी शूरमाओ का सहार
मुसलमान वीर जो राणा सग्रामसिह की सहायता के लिए बाबर की सेना के साथ युद्ध
थे, लडते हुए मारे गये। इनमे एक इब्राहीम लोदी था—जिसको बाबर ने दिल्ली मे आ
किया था—इकलौता बेटा था और दूसरा बहादुर हुसेन खाँ था। राजपूत सेना के जित
गये उनमे ये लोग प्रमुख थे।

युद्ध का अन्त हो गया। सग्रामसिह युद्ध से हट कर मेवाड के पर्वत पर चला ग
वह अभी जीवित रहता हो निश्चित रूप के वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर लेता। शे
भगवान को यह स्वीकार न था। जिस समय वह पराजित हुआ, उसी वर्ष वसवा नामक
उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी इस अचानक मृत्यु के सम्बन्ध मे सन्देह किया जाता है
मंत्रियो ने विष देकर उसकी हत्या की। परन्तु ऐसा सोचना और सन्देह करना स्वाभ
संगत नही मालूम होता।

वहु विवाह की प्रथा कई बातो मे भयानक होती है। प्राचीन काल मे राजस्थान
मे बहु विवाह की प्रथा थी। यह प्रथा ससार के दूसरे देशो मे भी रही है और उसके क
भीषण दुर्घटनायें हुई है। पुत्रवती होने के कारण सभी रानियो की यह अभिलाषा होती है
लडके को राज्य का अधिकार मिलना चाहिए। प्राय. राजाओ के परिवारो मे इससे भया
पैदा होती है और उसके दुष्परिणाम से उन परिवारो का सर्वनाश होता है।

राणा सग्रामसिह के भी अनेक रानियाँ थी। राणा के मरने के वाद सभी रानियाँ

बीसवाँ परिच्छेद

राणा प्रताप को मेवाड़ राज्य का अधिकार—राज्य की निर्बल अवस्था—उन अभावों में राणा प्रताप का साहस—बादशाह अकबर की दूरदर्शिता—उसकी चालें और कठिनाइयाँ—विरोधी परिस्थितियों का राणा प्रताप पर कोई प्रभाव न पड़ा—उसने चित्तौर की स्वाधीनता प्राप्त करने का निर्णय किया—राज्य की अधोगति से राणा प्रताप के हृदय में वेदना—बादशाह अकबर की महान शक्तियाँ—सरदारों के साथ राणा प्रताप का परामर्श—युद्ध का निर्णय—सेना और सम्पत्ति का अभाव—राणा प्रताप की योजना—राज्य में राणा की घोषणा—उसकी कठोर नीति—सम्पूर्ण मेवाड़-राज्य सुनसान हो गया—मुगल बादशाह की शक्ति—राजपूत राजाओं की निर्बलता—राणा के विरुद्ध बादशाह अकबर के युद्ध की तैयारी—उदय सागर में राजा मानसिंह—मानसिंह और राणा प्रताप—प्रताप के साथ युद्ध करने के लिए मुगल बादशाह की तैयारी—राणा प्रताप की युद्ध की तैयारी—हल्दीघाटी में राजपूत सेना—युद्ध का आरम्भ—राणा प्रताप की वीरता—युद्ध का भयानक दृश्य—मुगल सरदारों का प्रताप पर आक्रमण—राणा शत्रुओं के घेरे में—राजपूत सरदार मन्ना जी का साहस—युद्ध क्षेत्र से राणा प्रताप बाहर—शक्तसिंह और राणा प्रताप—हल्दीघाटी के युद्ध में चौदह हजार राजपूतों का संहार—भीषण कठिनाइयों में राणा प्रताप का परिवार—हल्दीघाटी के युद्ध का परिणाम।

राणा प्रताप को मेवाड़-राज्य का अधिकार प्राप्त हुआ। परन्तु उस अधिकार में नाम के सम्मान के सिवा और कुछ न था। न तो राजधानी थी, न राज्य के वैभव के साधन और न सेना एवम् सरदार उसके साथ थे। तीन बार के आक्रमणों से चित्तौर का सर्वनाश हो चुका था। जो कुछ बाकी था, दिल्ली के मुगल बादशाह अकबर ने आक्रमण करके चित्तौर की शक्तियों का विध्वंस कर डाला था। इस प्रकार के विनाश के पश्चात् राणा प्रताप को मेवाड़-राज्य का अधिकार प्राप्त हुआ था।

राज्य की इन दुर्बल परिस्थितियों में भी राणा प्रताप का हृदय निर्बल न पड़ा। उसमें स्वाभिमान था, राजपूती गौरव था और साहस तथा पुरुषार्थ था। राज्य का अधिकार प्राप्त करने के बाद वह चित्तौर के उद्धार का उपाय सोचने लगा। किसी प्रकार वह अपने पूर्वजों के गौरव की प्रतिष्ठा करना चाहता था। लेकिन इसके लिए उसके अधिकार में कोई साधन न थे।

बादशाह अकबर अत्यन्त दूरदर्शी और राजनीतिज्ञ था। चित्तौर को पराजित करने के बाद और राज्य से उदयसिंह के चले जाने के पश्चात् भी वह चुपचाप न बैठा। उसने राजस्थान के एक-एक राज और नरेश को अपनी अधीनता में लाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया था और उसके इस प्रयत्न के फलस्वरूप मारवाड़, अम्बेर, बीकानेर और बूंदी के राजा उसके प्रलोभन में आ गये। इन राज्यों ने न केवल मुगल सम्राट के सामने अपना मस्तक नीचा किया था, बल्कि जो राजपूत नरेस अकबर की अधीनता को मानने के लिए तैयार न थे, उनके साथ ये लोग लड़ने के लिए तैयार थे। इन सब बातों का कारण अकबर की राजनीतिक चाल थी।

अपने अभावों के साथ-साथ राणा प्रताप के सामने इतनी ही कठिनाई न थी, बल्कि इससे भी अधिक दुर्भाग्य की बात यह थी कि राणा प्रताप का सगा भाई सागर जो शत्रुओं के साथ मिल

गया और सम्हल कर उसने अपनी तलवार का बार राणा पर किया। दोनो मे कुछ दे
हुई। जो लोग चित्तौर से साथ गये थे, वे सब के सब उस समय उन दोनो के पास
रत्नसिह लडता हुआ सूरजमल के द्वारा मारा गया।

रत्नसिह ने चित्तौर के सिहासन पर बैठकर पाँच वर्ष तक मेवाड का राज्य कि
बातो मे उसने अपने राज्य की उन्नति की। वह होनहार था और उसके द्वारा मे
उन्नति के सम्बन्ध मे राज्य के मन्त्रियो ने बडी-बडी आशाये की थी। परन्तु अपने ही
कारण उसकी अकाल मृत्यु हुई। उसके शासन काल मे मेवाड राज्य पर किसी शत्रु
नही किया।

सम्बत् १५६१ सन् १५३५ ईसवी मे विक्रमाजीत चित्तौर के सिहसान पर
सग्रामसिह और राणा रत्नसिह मे जितने गुण थे, विक्रमाजीत मे उतने ही अवगुण
अयोग्यता थी, अदूरदर्शिता थी। उसके इस प्रकार के अवगुण सिहासन पर बैठ ने के ब
कि राज्य के सभी मन्त्री और सरदार उससे असतुष्ट रहने लगे। राणा विक्रमाजीत ने
और सरदारो की कुछ परवा न की और शासन के सम्बन्ध मे अपनी मनमानी करता
जिन आमियो के साथ उसकी मैत्री का अधिक सम्बन्ध रहता, वे राज्य के छोटे आ
उनके अधिक सम्पर्क से राणा के सम्मान को आघता पहुँच रहा था। मन्त्रियो और
अप्रसन्नता का यह भी एक बडा कारण था। उसके इस प्रकार के व्यवहारो से मत्री
अपना अपमान अनुभव करते थे। इस प्रकार की बातो का परिणाम यह हुआ कि रा
सरदारो की कोई सहानुभूति न रह गयी।

दूसरे अनेक अवगुणो के साथ-साथ राणा विक्रमाजीत आलसी और अ
राज्य का शासन ठीक न होने के कारण सम्पूर्ण राज्य मे अराजकता फैल रही थी
रहने वाले जङ्गली लोग राज्य के सिपाहियो की परवा न करते थे और राज्य को वे
तरह की हानि पहुँचाने लगे। सरदार और मत्री इस प्रकार के मामलो मे खामोश हो र

राणा विक्रमाजीत की इस अयोग्यता के कारण मेवाड-राज्य निर्बल पडने लगा।
की निर्बलता और राज्य मे फैली हुई अराजकता अच्छी नही होती। शत्रु लोग मेवा
इन परिस्थितियो का जिन दिनो मे दूर से अध्ययन कर रहे थे, गजरात का बादशाह
राज्य मे बैठा हुआ चित्तौर से अपना पुराना बदला लेने की तैयारी कर रहा था।
के राजा पृथ्वीराज ने गुजरात के वादशाह मुजफ्फर को पराजित किया था और उसे कैद
पूत चित्तौर ले गये। गुजरात के लोग अपने इस अपमान को भूले न थे। इन दिन
वादशाह गुजरात के सिहासन पर था। विक्रमाजीत की अयोग्यता के कारण चित्तौर से
का उसे मौका मिला। इसलिए गुजरात और मालवा मे जितानी सेना थी, सव को ले
वहादुर ने राणा पर आक्रमण किया।

वादशाह वहादुर के द्वारा होने वाले आक्रमण का समाचार पाकर राणा वि
चित्तौर मे युद्ध की तैयारी की और अपनी सेना लेकर उसने वादशाह का फौज की
दोनो ओर से युद्ध आरम्भ हो गया। अपनी अयोग्यता के कारण राणा विक्रमाज
सैनिको की सहानुभूति को खो दिया था। उसका फल यह हुआ कि गुजरात के वाद॰
युद्ध करता हुआ विक्रमाजीत सकट मे पड गया। जिस स्थान पर यह युद्ध हो रहा
राज्य के अन्तर्गत लैचा नामक मुकाम का विस्तृत मैदान था।

राणा विक्रमाजीत वादशाह की फौज के समाने ठहर न सका। उसको पराजित

राजपूतों की उसने भरती आरम्भ की और बड़ी तेजी के साथ उसने अपनी शक्तियों का संगठन आरम्भ किया।

इन सब कार्यों के लिए धन और जन—दोनों का उसके सामने अभाव था। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह थी कि बादशाह अकबर के साथ युद्ध करके मेवाड़-राज्य के सभी शक्तिशाली सामन्त और सरदार मारे जा चुके थे और उसके बाद राज्य की परिस्थितियाँ बड़ी दुर्बल अवस्था में चल रही थी परन्तु साहसी प्रताप ने उन परिस्थितियों की परवाह न की और इने गिने सरदारों के साथ बैठकर चित्तौर को स्वाधीन करने की प्रतिज्ञा की। अपने इस निर्णय के साथ उसने मेवाड़ राज्य में घोषणा की—"जितने आदमी [illegible] हैं, वे सभी अपने परिवारों के साथ अपने घर द्वार छोड़कर अरावली पर्वत पर चले जायें। [illegible] शत्रु समझे जायेंगे।"

इस घोषणा के होते ही मेवाड़-राज्य की प्रजा अपने-अपने स्थानों को छोड़कर परिवारों के साथ मेवाड़ के पहाड़ों की तरफ जाना शुरू हुई और थोड़े ही दिनों में सम्पूर्ण मेवाड़ का राज्य सुनसान दिखायी देने लगा। बूनस और बेरिस [illegible] की उपजाऊ भूमि बरबाद हो गयी और वहाँ की सम्पूर्ण भूमि सूनी पड़ी।

राणा प्रताप ने अपनी घोषणा के सम्बन्ध में कठोरता का प्रयोग किया। उसके आदेश के अनुसार वह मेवाड़-राज्य में किसी को रहना नहीं चाहता था। उसने अपने सैनिकों को राज्य में इधर-उधर भेजना शुरू किया, यह देखने के लिए कि प्रजा ने उसके आदेश का पालन कहाँ तक किया है। उसके भेजे हुए सवारों ने राज्य में पहुँच कर देखा कि राज्य के जो स्थान आदमियों के कोलाहल से प्रत्येक समय शब्दायमान रहते थे, वे अब सुनसान पड़े हैं। जो नगर और कस्बे सदा प्रकाशमान रहते थे, उनमें अब सायंकाल के आरम्भ में ही अन्धकार रहता है। जो खेत सदा हरे-भरे और फूले रहते थे, वे सब सूख गये हैं और खेतों में जंगली घास के सिवा और कुछ दिखायी नहीं देता। राज्य के जो मार्ग साफ सुथरे रहते थे, उनमें कांटेदार घास खड़ी हो गयी है। बबूल की तरह के वृक्षों से वे सब मार्ग अब चलने के योग्य नहीं रह गये। राज्य के बाजारों में अब कोई कहीं दिखायी नहीं पड़ता। इस प्रकार राणा के आदेश के बाद मेवाड़-राज्य के जीवन में भयानक परिवर्तन हो गये। राणा के भेजे हुए सैनिक अपने-अपने घोड़ों पर बैठकर और पर्वत से निकल कर राज्य में जाते और लौटकर इस प्रकार के दृश्य राणा को सुनाते।

अपने इसी उद्देश्य से बूनस नदी के किनारे अन्तला नामक स्थान पर राणा के सैनिक घोड़ों पर बैठे हुए घूम रहे थे। उन्होंने देखा एक आदमी बिना किसी भय के जंगल में अपनी बकरियाँ चरा रहा है। सैनिकों ने समझा कि राणा के आदेश का इसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। क्षण भर यह सोचकर सैनिकों ने उस चरवाहे को मार डाला और उसके मृत शरीर को एक वृक्ष पर टाँग दिया। उसके बाद वे सैनिक घूमते हुए दूसरी तरफ चले गये।

राणा प्रताप की उस घोषणा के कारण सम्पूर्ण मेवाड़-राज्य उजड़ गया और उसकी इस अवस्था के कारण मुगल साम्राज्य को इस राज्य से होने वाली सम्पूर्ण आमदनी मारी गयी। बादशाह अकबर को जब मेवाड़ की ये बातें मालूम हुई तो उसे बहुत क्रोध आया और वह प्रताप को इसका दंड देने की व्यवस्था करने लगा। उन दिनों में योरप का व्यवसाय मुगल-राज्य के साथ चल रहा था। और व्यवसायी सम्पत्ति और सामग्री लेकर मेवाड़ राज्य के भीतर से होकर सूरत अथवा दूसरे बन्दरों पर जाया करते थे। राणा प्रताप के सरदारों ने आक्रमण करके उन व्यवसयियों को लूटना आरम्भ कर दिया। इस लूट की सम्पत्ति और सामग्री से राणा के धन के अभाव की पूर्ति होने लगी।

इस प्रकार के समाचार भी मुगल सम्राट अकबर को मिलने लगे। राणा प्रताप का दमन

गयी थी, रानी कर्णवती को चित्तौर के बचने की कोई आशा न रही थी। वह छोटे बालक की रक्षा करनी चाहती थी। इसलिये बहुत सोच समझकर उसने बाबर के लडके हुमायूँ से सहायता लेने का विचार किया।

इन्ही दिनो मे रक्षा-बन्धन का त्योहार या। राजस्थान मे यह त्योहार बड़ साथ मनाया जाता है। हिन्दू स्त्रियाँ अपने भाइयो के हाथो मे राखियाँ बाँधकर खुशियाँ मनाती है। रानी कर्णवती ने दिल्ली मे हुमायूँ के पास रक्षा-बन्धन के त्य राखी भेजी। हुमायूँ ने उस राखी के बदले मे बादशाह बहादुर से चित्तौर की र कर्णवती की सहायता करने का निश्चय किया और इसी आधार पर अपनी एक दिल्ली से चित्तौर की तरफ रवाना हुआ और जैसे ही वह चित्तौर के करीब पहुँचा, दुर भयभीत होकर चित्तौर छोडकर चला गया।

राणा विक्रमाजीत हुमायूँ की सहायता से फिर चित्तौर के सिहासन पर दिनो मे अनेक प्रकार के विपदाओ का सामना किया परन्तु उसके जीवन मे कोई सिहासन पर बैठते ही उसने फिर उसी प्रकार के अपने काम और व्यवहार आरम्भ पिछले दिनो मे मेवाड राज्य के मन्त्री और सरदार रूठ कर उसके विरोधी बन गये थे विक्रमाजीत के सुधार की कोई आशा वहाँ के सरदारो के मन मे न रह गयी थी।

इसी बीच मे राणा विक्रमाजीत ने उस वृद्ध कर्मसिह के साथ अपमानजनक व के दरबार मे किया, जिसने सग्रामसिह को उस समय सहायता की थी, जब वह राज से लडकर और भयभीत होकर अपने पिता के राज्य से भाग गया था। बूढे राणा विक्रमाजीत का अनुचित व्यवहार देखकर दरबार के सरदारो ने बहुत बुरा राणा विक्रमाजीत को इसका बदला देने के लिए आपस मे परामर्श करने लगे।

राजपूत देवता की भाँति अपने राजा का सम्मान करना अपना धर्म स्वाभाविक गुण के कारण चित्तौर के सरदार लोग राणा विक्रमाजीत के अनुचित मानजनक व्यवहारो को सहन करते रहे। परन्तु कर्मसिह के साथ राणा का गंदा न कर सके और आपस मे सलाह करके राणा को सिंहासन से उतार देने का उन किया। इस निर्णय के अनुसार चित्तौर के सरदारो ने पृथ्वीराज से उत्पन्न होने खोज की और उसके पास पहुँचकर सरदारो ने चित्तौर का सब समाचार सुनाया। अच्छा न मालूम हुआ कि राणा विक्रमाजीत को सिंहासन से उतारा जाय और उसके पर विठाया जाय। परन्तु सरदारो के आग्रह को उसे स्वीकार करना पड़ा।

सरदार लोग बनवीर को चित्तौर ले आये और राणा विक्रमाजीत को सिंहा कर बनवीर को उस सिंहासन पर विठाया। उस समय मेवाड राज्य के उन सभी लोग हुई, जो राणा से असंतुष्ट थे।

जिस समय इस प्रकार की बातें राणा के साथ मानसिंह की हो रही थीं, उस समय उस स्थान पर खड़े किसी राजपूत सरदार ने कुछ अपमानपूर्ण शब्दों में मानसिंह से कहा—"इस समय अपने फूफा अकबर को भी साथ में लेते आना। उसे लाना भूल न जाना।" अत्यन्त अपमान के साथ मानसिंह ने उन अंतिम शब्दों को सुना और अपने घोड़े पर बैठकर वह तेजी के साथ चला गया।

जो स्थान मानसिंह के भोजन के लिए तैयार किया गया था, उसके चले जाने के बाद उसे खोद डाला गया और उस पर गङ्गाजल छिड़क दिया गया। जो पात्र मानसिंह को खाने और पीने के लिए दिये गये थे, उनको अपवित्र समझ कर नष्ट कर दिया गया। जिन लोगों ने मानसिंह को अपनी आंखों से देखा था, उन्होंने उसके जाने के बाद स्नान किया और अपने वस्त्रों को धोकर दूसरे कपडे पहने।

मानसिंह ने राजधानी मे पहुँच कर अकबर बादशाह से प्रतापसिंह के सम्बन्ध की सभी बातें कही। अकबर ने मानसिंह के अपमान का बदला लेने के लिए राणा प्रताप के साथ युद्ध करने का निश्चय किया।

सलीम (जहाँगीर) अकबर का उत्तराधिकारी था। अकबर के निर्णय के अनुसार प्रताप से युद्ध करने के लिए सलीम ने अपनी विशाल सेना तैयार की और राजा मानसिंह तथा मोहब्बत खाँ को साथ मे लेकर युद्ध के लिए रवाना हुआ। राणा प्रताप को मानसिंह के जाते ही यह मालूम हो गया कि अब मुगल फौज के आक्रमण मे देर नही हो सकती। इसलिए अपने सरदारो को बुलाकर कमलमीर मे उसने परामर्श किया और सम्राट अकबर की सेना के साथ युद्ध करने के लिए उसने बाईस हजार राजपूतो को तैयार किया। इन दिनो मे पहाड पर रहने वाले बहुत-से लड़ाकू भील

थी। उसने किसी भी दशा मे छै वर्ष के बालक उदयसिंह के प्राणो को बचाने को
और तरकारियो के रखने का एक बडा झाबा उसे मिल गया। तेजी के साथ उसने
बिछाकर सोते हुए राजकुमार उदयसिंह को उसमे उसने लेटा दिया और अनेक
उसने उस झाबे को ढँक दिया। इसके बाद उस झाबे को दुर्ग से बाहर ले जाने के f
बारी से कहा।

बारी ने तुरत आज्ञा का पालन किया। वह झाबे को सिर पर रख कर
हुआ। उसके हटते ही पन्ना दाई ने उदयसिंह के स्थान पर अपने छोटे बालक
बारी झाबे को लेकर वहाँ से चला गया। उसके थोडी ही देर बाद बनवीर व
हाथ मे तलवार थी। उसको देखते ही पन्ना दाई का कलेजा धक-धक करने लगा।

इसी समय बनवीर ने पन्ना दाई की तरफ देखा और पूँछा—"उदयसिह
के मुख से कुछ न निकला। घबराहट के साथ उसने अपने सोते हुए बालक क
किया। बनवीर ने उस बालक की तरफ देखा और बात की बात मे उसने अपनी
टुकडे कर डाले। पन्ना दाई ने अपने बालक का यह दृश्य अपने नेत्रो से देखा।
अस्थिर हो रहा था, उसके प्राण काँप रहे थे। उसके नेत्रो से आँसुओ की धारा
परन्तु उसके मुँह से किसी प्रकार आवाज न निकली। महल मे रानियो और दूस
इस दुर्घटना का कोई समाचार उस समय न मिला।

बनवीर वहाँ से चला गया। पन्ना दाई ने उसके जाने के बाद अपने बालक
की तरफ एक बार देखा और अपने आञ्चल से बहते हुँए आँसुओ को पोछती हुई वह
बाहर निकली। चित्तौर के पश्चिम तरफ बैरिस नदी बहती थी। उसके किनारे प
स्थान पर रात के समय वह बारी अपने निकट राजकुमार के झाबा को रखे हु
था। उदयसिंह अब भी सो रहा था। अन्ना दाई वहाँ पर आ गयी और राजकु
रखने के लिए वह बाघ जी के लडके सिंहाराव के पास पहुँच कर प्रार्थना करते हुँए
चार कहा। सिंहाराव ने दाई की बातो को सुनकर और घबराकर अपनी असमर्थ
पन्ना दाई· वहाँ से निराश हो कर दुर्गपुर की तरफ चली और वहाँ के रा
पास जाकर उसने अपनी विपद सुनायी। परन्तु बनवीर के भय से वह भी राजकु
रखने का साहस न कर सका। इस समय पन्ना दाई के सामने बडा सकट था।
और भय के कारण कोई भी राजकुमार को अपने यहाँ रखने के लिए राजी नही
समय कुछ भीलो ने उसका साथ दिया। इस अवस्था मे अरावली के भीषण पहाडी
करती हुई और ईदर के कठिन रास्तो से होकर वह राजकुमार को लिए हुए
पहुँची। दीप्रा के वणिक वश मे पैदा होने वाला आशाशाह नामक एक आदमी उस
मे राज्य करता था। पन्ना ने उससे मिलकर और उसकी गोद मे राजकुमार को
साथ उसे उसकी रक्षा करने के लिए उससे प्रार्थना की। पन्ना दाई की बातो को सु
ने राजकुमार की रक्षा करने मे भय का अनुभव किया। परन्तु अपनी माता के मुख
मे कुछ उपदेश भरी बातो को सुन कर वह राजकुमार को अपने यहाँ रखने के
गया। राजकुमार को इस प्रकार सरक्षण मे देकर पन्ना दाई वहाँ से चली आयी।
मार को अपना भतीजा कहकर लोगो से जाहिर किया। बालक उदयसिंह उसके बाद प
कुछ दिनो के बाद आशाशाह के यहाँ कई एक राजपूत गये। उन सरदारो ने राज
को देखा। उसे देखकर सरदारो को इस बात का विश्वास नही हुआ कि

पर मार कर रहे थे । राणा के आस-पास राजपूतों की संख्या कम हो गयी थी । इस बात को समझते हुए भी राणा ने निर्भीकता से काम लिया और अपनी तलवार से उसने लगातार शत्रुओं का संहार किया । परन्तु युद्ध की परिस्थिति बिगड़ती जा रही थी और कुछ देर के बाद शत्रु की विशाल सेना राणा प्रताप को चारो ओर से घेर लिया । उस समय राजपूत सरदार और सैनिक दूर पड़ गये थे । उन सब ने प्रताप को शत्रुओं से घिरा हुआ देखा । मुगलों की सेना भयंकर मार करती हुई आगे बढ़ रही थी । राजपूतों ने प्राणों का मोह छोड़कर शत्रुओं पर मार की । उस समय बहुत से मुगल मारे गये । लेकिन राणा प्रताप शत्रुओं के बीच घिरता जा रहा था और मुगलो के जोर के कारण राजपूत प्रताप की तरफ बढ़ न पाते थे ।

इस समय प्रताप बिलकुल शत्रुओं के बीच मे था । उसके शरीर मे सात-से जख्म हो गये थे और उनसे लगातार खून बह रहा था । रक्त से उसके वस्त्र बिल्कुल भीग गये थे । प्रताप ने अपनी इस परिस्थिति को अनुभव किया । उसको कुछ सोचने का मौका न था । उसी समय एक स्वर उसे सुनायी पड़ा—"राणा प्रताप की जय !" इसके बाद झाला का सरदार मानसिंह मन्नाजी तेजी के साथ बढ़ता हुआ प्रताप के समीप पहुँच गया और बड़ी सावधानी के साथ राणा प्रताप के सिर पर रखे हुए राजमुकुट को उतार कर उसने अपने सिर पर रख लिया और तेजी के साथ वह प्रताप के आगे पहुँच गया । शत्रु इस रहस्य को समझ न सके । राजमुकुट पहने हुए मन्ना जी को प्रताप समझ कर वे लोग उसको मारने की चेष्टा मे लगे रहे । मन्ना जी अपनी सेना के साथ शत्रुओं के सामने पहुँचकर भीषण मार करने लगा ।

इस समय मन्ना जी के आगे आते ही प्रताप पीछे हट गया और बाहर निकल कर [illegible] उसने होते हुए युद्ध की तरफ देखा । उसके देखते-देखते शत्रुओं के बीच मे मन्ना जी घिर गया और वह मारा गया । अपने नेत्रो से राणा प्रताप ने यह देखा और उसके बाद वह अपने घोड़े पर बैठा हुआ पर्वत की तरफ आगे बढ़ा । कुछ दूर निकल जाने के बाद प्रताप ने देखा कि उसका पीछा करते हुए दो मुगल सैनिक तेजी के साथ आ रहे है । इनमे एक खुरासानी और दूसरा मुलतानी था । प्रतापसिंह के आगे एक नदी पड़ गयी । प्रताप अपने घोड़े पर बैठा हुआ उसे पार करके निकल गया । अभी तक दोनो मुगल सैनिक नदी के किनारे पर थे और वे उसको पार करने की कोशिश कर रहे थे ।

राणा प्रताप के साथ उसका शक्तिशाली चेतक घोड़ा भी जख्मी हुआ । इसलिए उसकी गति धीरे-धीरे कम हो रही थी । मुगल सैनिक नदी पार करके प्रताप का पीछा कर रहे थे, उसी समय पीछे की तरफ राजस्थानी बोली मे उसे सुनायी पड़ा—"हो नीलघोड़ा रा असवार!"

प्रताप ने चौक कर पीछे की तरफ देखा । उसी समय उसे मालूम हुआ कि पीछा करते हुए मेरा भाई शक्तसिंह आ रहा है । शक्तसिंह प्रताप से लड़कर मेवाड़ राज्य से चला गया था और बादशाह अकबर से मिल गया था । हलदीघाटी के युद्ध मे बादशाह की तरफ से वह भी सलीम के साथ युद्ध मे आया था । जिस समय मुगल सेना ने राणा प्रताप को घेर लिया और उसके बाद झाला के सामन्त मन्ना जी के आ जाने पर प्रताप युद्ध क्षेत्र से निकल कर चला आया था, शक्तसिंह ने मुगल सेना के बीच मे यह सब अपने नेत्रो से देखा । शत्रुओ के द्वारा राजपूतो की पराजय वह देख न सका । वह एक राजपूत था और उसके प्राणो मे राजपूती स्वाभिमान था । उसने राणा प्रताप को युद्ध क्षेत्र से निकलते हुए देखा और यह भी देखा कि दो मुगल सैनिक राणा का पीछा कर रहे है । अब वह अपने आपको रोक न सका और युद्धक्षेत्र से निकल कर अपने घोड़े पर वह तेजी के साथ पीछा करने वाले दोनो मुगल सैनिको की तरफ बढ़ा ।

अनेक राज्य और सामन्त शामिल हुए। लेकिन दो सरदार उसमें नही आये। उनमें था मालवजी और दूसरा सोलंकी राजपूत था।

इन दोनो सरदारो के सम्मिलित न होने से चित्तौर के सरदार उन पर बहु और उनको इसका बदला देने के लिए चित्तौर के सरदारों ने उन पर आक्रमण कि दार विवाह में शामिल नही हुए थे, घबरा कर बनवीर की शरण में पहुँचे। बनब यता करने के लिये अपनी सेना लेकर रवाना हुआ। परन्तु वह चित्तौर के सरदार की रक्षा न कर सका। मालवजी मारा गया और सोलंकी राजपूत सरदार ने भा की अधीनता स्वीकार कर ली।

बनवीर अपनी सेना के साथ लौटकर चित्तौर पहुँच गया और उदयसिंह की तैयारी करने लगा। उदयसिह का विवाह करके चित्तौर के सरदार अपनी पूरी चित्तौर लौटे। वहाँ पर बनवीर अपनी सेना लेकर उनके मुकाबिले मे पहुँचा। एक के बाद बनवीर की पराजय हुई। वह अपने परिवार के लोगों को लेकर दक्षिण गया। वहाँ पर उसकी सन्तानों से नागपुर के भोसले वंश की सृष्टि हुई।

संवत् १५९७ सन् १५४१-४२ ईसवी मे सरदारो ने उदयसिह को चित्तौर बिठाया और बडे समारोह के साथ उसका अभिषेक किया गया। सम्पूर्ण राज्य मे गयी। चित्तौर के सिहासन पर राणा उनयसिंह के बैठने के कुछ दिनो के बाद उदयसिंह बहुत अकर्मण्य और अयोग्य है। उसमे एक राजपूत के गुणो का पूर्णरूप उसमे विलासिता अधिक थी और रात दिन वह अपने महलो मे पडा रहता था। उ चर्या ने उसको आलसी और निकम्मा बना दिया।

उदयसिंह के इस प्रकार जीवन को देखकर चित्तौर के सरदारो और म निराशा हुई। सब के सब चित्तौर के भविष्य की चिन्ता करने लगे। एक तरफ ि दरबार की यह निराशा बढ रही थी और दूसरी तरफ उदयसिह की विलासिता बढ

चित्तौर के सिहासन पर उदयसिह के बैठने के पहले दिल्ली के बादशाह ० हुमायूँ दिल्ली के सिहासन पर था। वह अपने पिता बाबर के विशाल राज्य का था। परन्तु दिल्ली के सिहासन पर बैठने के बाद उसके जीवन मे भयकर सघर्ष पे इस सघर्ष के कारण उसके भाई थे। वे सब अलग-अलग राज्यो के अधिकारी थे अपने राज्यो पर सतोष न था और वे दिल्ली के सिहासन पर अधिकार करने ० बादशाह हुमायूँ के साथ अनेक प्रकार के उपद्रव कर रहे थे। भाइयो के इन भ सिहासन पर बैठने के बाद दस वर्ष तक बादशाह हुमायूँ ने भयानक सकटो का भु इन्ही दिनो मे पठान बादशाह शेरशाह ने अपनी प्रचड सेना लेकर कन्नोज के वि हुमायूँ की फौज के साथ युद्ध किया और उसको पराजित करके शेरशाह ने दिल अपना अधिकार कर लिया।

बादशाह हुमायूँ ने पराजित होने के बाद अपने परिवार के साथ दिल्ली छो साथ कुछ दास दासियो के अतिरिक्त दिल्ली के सैनिक भी थे। दिल्ली से भागने के सुरक्षित न हो सका। उसके शत्रु बराबर उसका पीछा कर रहे थे और हुमायूँ गब लिए हुए एक स्थान से दूसरे स्थान मे भाग रहा था। दिल्ली छोड कर वह आ और वहाँ से वह लाहौर की तरफ रवाना हुआ। लाहौर पहुँच कर भी वह शान्ति से शत्रु उसका बराबर पीछा कर रहे थे। इसलिये अपने साथ के सब लोगो को ले

इन दिनो मे राणा प्रताप के सामने भयानक कठिनाइया पैदा हो रही थी। शत्रु की अनेक छोटी-छोटी सेनाये पहाड पर इस तरफ की ओर से प्रताप को घेर करने की पूरी कोशिश मे थी। इस बीच मे कई पहाडी स्थानो पर अचानक प्रताप ने बादशाह के सैनिको पर आक्रमण किया और उनका सहार किया। अब बरसात के दिन आ गये थे। नदी और नाले पानी से खूब भर गये थे। सभी रास्ते बरसात के कारण चलने के योग्य न रहे। इस दशा मे शत्रु सेना के आक्रमण बन्द हो गये। इसलिए राणा को कुछ विश्राम मिला।

जीवन की इन परिस्थितियो मे राणा ने कई वर्ष व्यतीत किये। पर्वत के जितने भी पहाडी स्थान राणा और उसके परिवार को आश्रय दे सकते थे, वे सभी बादशाह के अधिकार मे चले गये। इस अवस्था मे प्रताप की कठिनाइयाँ अत्यन्त भयानक हो गयी। उसकी इन विपदाओ का सब से बडा कारण उसका परिवार था। राणा को अपने जीवन की चिन्ता न थी। परन्तु परिवार के साथ मे होने के कारण राणा का चित्त प्रत्येक समय चिन्तित और दुखी रहा करता। उसके परिवार मे छोटे-छोटे बच्चे थे। इस समय उसके सामने भयानक कष्ट था।

अपने परिवार के कारण ही राणा कई बार शत्रुओ के हाथो मे पडते-पडते बचा था। एक बार तो अपने परिवार के साथ शत्रुओ के पजे मे फँस गया था, परन्तु गहिलोत वश के विश्वासी सामन्तो ने उस समय उसकी बडी सहायता की थी। शत्रुओ ने राजपूतो को घेर लिया था और राणा के परिवार के बचने की कोई आशा न रही। उस समय उन भीलो ने राणा के परिवार के बच्चो को टोकरो मे छिपा कर जावरा की खान मे जाकर छिपा दिया था।

ये भील उन दिनो मे राणा प्रताप के बडे सहायक सिद्ध हुये। वे साहसी थे, लडने मे शूर-वीर थे और अत्यन्त विश्वासी थे। वे स्वय भूखे रहते थे, लेकिन खाने की जो सामग्री वे इधर-उधर से एकत्रित करते थे, उसे वे राणा और उसके परिवार को खिला देते थे। जावरा और चोड के निर्जन जगलो के वृक्षो पर लोहे के बडे-बडे कीले अब तक गडे हुए मिलते है। उन वृक्षो की इन्ही कीलो मे बेतो के बडे-बडे टोकरे टाँग कर और उनमे राणा के बच्चो को छिपाकर वे भील राणा की

करने लिए पहुँच गया। उस समय अकबर की अवस्था बारह वर्ष थी। पठान बाद से युद्ध करने के लिए हुमायूँ ने अपनी सेना देकर अकबर को रवाना किया। सरहिन्द पर दोनो तरफ की फौजो का सामना हुआ और भयानक सग्राम आरम्भ हो गया। दोनो तरफ के बहुत-से आदमी मारे गये। अत मे अकबर की विजय हुई। हुमायूँ के बाद अपनी फौज लेकर दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार कर लिया। इसके कुछ हुमायूँ के जीवन मे एक दुर्घटना घटी। किसी समय वह अपने पुस्तकालय की गुजर रहा था, अचानक वह गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी।

हुमायूँ के मर जाने के बाद सन् १५५५ ईसवी मे अकबर दिल्ली के सिंहास इसके थोडे ही दिनो बाद उसके शत्रुओ ने आक्रमण किया और दिल्ली तथा आग शत्रुओ ने अपने अधिकार मे कर लिया। इस दशा मे अकबर पंजाब के किसी स गया। इस अवसर पर बैरामखाँ ने उसकी बडी सहायता की उसकी बुद्धिमता औ अकबर ने अपने खोये हुये अधिकार को प्राप्त किया और इस बार सिंहासन पर बै थोडे ही दिनो मे, कालपी, चन्देरी, कालिञ्जर, समस्त बुन्देलखण्ड और मालवा अधिकार कर लिया। इस समय उसकी अवस्था अठारह वर्ष की थी।

अकबर ने थोडे ही दिनों के बाद राजपूतो के साथ युद्ध करने का निर्णय f से पहले वह अपनी सेना लेकर मारवाड की तरफ रवाना हुआ। बादशाह हुमायूँ के दिनो मे अन्यान्य के साथ-साथ जोधपुर के राजा मालदेव से भी उसने आश्रय की थी। कुछ उन्ही दिनो की शत्रुता का बदला लेने के लिए हुमायूँ का लडका अक रवाना हुआ।

मारवाड मे मेड़ता नामक नगर उन दिनो मे अधिक सम्पत्तिशाली था और नाम पर मारवाड राज्य मे उसकी दूसरी सख्या थी। अकबर ने वहाँ पहुँचकर उ विध्वस किया। वहाँ के होने वाले विनाश को देखकर अम्बेर का राजा भारमल (घबरा उठा और अपने लडके भगवानदास को लेकर उसने अकबर की अधीनता स और मुगल सम्राट को प्रसन्न करने के लिये उसने अपनी लडकी का व्याह अकबर के

इसके बाद अकबर राजस्थान के दूसरे राज्यो पर आक्रमण करने वाला अवसर पर उसके उजबक सरदारो ने विद्रोह किया। इसीलिए उसने विद्रोही सर करने की चेष्टा की और जब उसे उसमे सफलता मिल गयी तो अपनी विशाल से चित्तौर पर आक्रमण किया।

जिस अवस्था मे अकबर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा था, ठीक उस अवस पितामह बाबर अपने पूर्वजो के फरगना राज्य का अधिकारी हुआ था। उसके पहले कर सघर्षो का सामना किया था और यही अवस्था अकबर के सिंहासन पर बैठने के दोनो ने अपने जीवन की शिक्षा कठोर विपदाओ के द्वारा पायी थी। जीवन के उन को शक्तिशाली और महान बना दिया। प्रकृति का यह सत्य विश्व के समस्त देखने को मिलता है। प्रकृति के इस सत्य के द्वारा जिसके जीवन का निर्माण निर्बल, अयोग्य और कायर रहा करता है। इस सत्य का प्रमाण सम्पूर्ण विश्व और ससार का प्रत्येक महान पुरुष अपने जीवन के तपस्वी दिनो का चित्र उपस्थित को स्वीकार करता है।

सिंहासन पर बैठने के समय अकबर और उदयसिंह की अवस्था भी एक ही थी

पृथ्वीराज [illegible] बादशाह [illegible] ने इस पत्र को पा कर पृथ्वीराज ने पढा। [illegible] पीडा की अनुभूति हुई। अपनी [illegible] स्वाभिमान के साथ निर्भीकता-पूर्वक उसने बादशाह से कहा [illegible] मैं उसे अच्छी प्रकार जानता हूँ। किसी शत्रु ने राणा प्रतापसिंह [illegible] आपको धोखा दिया है। आपके सम्पूर्ण साम्राज्य [illegible] में भी वह ऐसा नहीं कर सकता।'

पत्र पढ कर पृथ्वीराज ने ऊपर लिखे हुए शब्दों मे बादशाह को उत्तर दिया और अकबर का आदेश लेकर दरबार के एक दूत के हाथ पृथ्वीराज ने अपना पत्र प्रताप के पास भेजा। उस पत्र का अभिप्राय—जैसा कि अकबर ने समझा—प्रताप की मनःस्थिति जानने की थी। परन्तु पृथ्वीराज ने अपने पत्र के द्वारा प्रताप को उसके उस स्वाभिमान का स्मरण कराया था, जिसके लिए उसने अपने परिवार और साथ के राजपूतों के साथ भयानक विपदाओं का सामना किया था। पृथ्वीराज ने यह पत्र राजस्थानी भाषा की कविता मे लिखा था। वह पूरा पत्र कहीं पर भी प्राप्त होने की अवस्था मे नही रहा। इसलिए उसका जो अंश पाया जाता है उसका अर्थ संक्षेप में इस प्रकार है

"हिन्दुओं का सम्पूर्ण भरोसा एक हिन्दू पर ही निर्भर करता है। राणा ने सब कुछ छोड दिया है और इसी से आज भी राजपूतों का गौरव बहुत-कुछ सुरक्षित रह सका है। यदि प्रताप ने ऐसा न किया होता तो आज राजपूतों की बची हुई मर्यादा भी सुरक्षित न रह सकती थी। राजपूतों पर आज भयानक संकट है। हमारे घरों की स्त्रियों की मर्यादा छिन्न-भिन्न हो गयी है और बाजार

अकबर का मुकाविला करने के लिए उन लोगो ने चित्तौर मे युद्ध की तैयारी आरम्भ कर
राज्य के सभी सामन्त और राजा अपनी सेनाये लेकर चित्तौर की तरफ रवाना हो
सहीदास चन्दावत वंश की सेना को लेकर पहुँच गया और वहाँ के सर्पद्वार पर उसने
लगा दी। मरेरिया के राजा दूदा की सेना भी चित्तौर की रक्षा के लिए आ गयी।
कटोरिया नामक नगरो के सामन्त भी अपने सैनिको के साथ वहाँ पहुँचे। विजोली के
मादी के झाला नरेश की सेनाये भी युद्ध के लिए आ गयी। इनके साथ-साथ मेवाड-
सरदार और सामन्त भी युद्ध करने के लिए चित्तौर मे आ गये। इनके अतिरिक्त
सामन्त अपनी सेनाओ के साथ आये, उनमे देवल के राजा वाघ जी के वशज जालौर
गढ का राव, ईश्वरदास राठौर, करमचन्द कछवाहा और ग्वालियर के तोवर राजा के
है। इन सब राजाओ और सामन्तो ने अपनी सेनाओ के साथ चित्तौर आकर अ
के साथ युद्ध करने की तैयारी की।

अकबर वादशाह की फौज ने जहाँ पर छावनी बनायी की वहाँ से उसकी सेना
तरफ आगे बढी और वह सिंह द्वार पर पहुँच गयी। राजपूतो की सेना ने उसी समय
उसका मुकाविला किया। दोनो ओर से तेजी के साथ मारकाट आरम्भ हो गयी।
सरदार सहीदास ने मुगल सेना पर वाणो की वर्षा आरम्भ की।

थोडी देर के युद्ध के वाद मुगल सेना चित्तौर मे प्रवेश करने के लिए आगे बढने
समय मुगलो की वन्दूको की गोलियो से वहुत से राजपूत मारे गये। इसी समय सहीदा
का भयानक रूप से सहार हुआ। परन्तु सहीदास अपनी पूरी शक्ति के साथ मुगलो
रहा। उसकी इस वहादुरी से राजपूतो मे उत्साह की वृद्धि हुई और चित्तौर की र
सभी राजपूत सरदारो ने मुगल सेना के साथ भयानक मारकाट की। इन वीर सरदार
जयमल और पत्ता के पराक्रम को देखकर एक वार मुगल सेना भयभीत हो उठी।

जयमल विदनौर का राजा था। मारवाड के शूरवीर सामन्तो मे उसका नाम
था। उसका जन्म राठौर वश की मेडतिया शाखा मे हुआ था। पत्ता कैलवाडे का रा
चन्दावत वश की शाखा मे पैदा हुआ था। उसका गोत्र जगवत था। उस युद्ध मे
ने अपनी भयानक मारकाट के द्वारा जिस प्रकार शत्रुओ का सहार किया, उसकी प्रशसा
शाह ने स्वय की और इन दोनो वीरो की प्रशसा मे आज तक राजस्थान मे गाने

जयमल और पत्ता—दोनो शूरवीर राजपूत थे। दोनो ही राजपूतो की शान को
के लिए लडना और मरना जानते थे। अकवर के आक्रमण करने पर दोनो ही सामन्त
रक्षा करने के लिए युद्ध मे आये थे और उन दोनो ने मुगल सेना को पराजित करने के
अद्भुत वीरता का परिचय दिया। यह युद्ध चित्तौर के सामने और मेवाड राज्य के
के निकट मरने-जीने की समस्या को लेकर आया था। किसी प्रकार अकवर की विशाल
सेना चित्तौर का सर्वनाश करना चाहती थी और चित्तौर की रक्षा करते हुए मेवाड
श्रित राजपूत सरदार और सामन्त अपने प्राणो को उत्सर्ग करना चाहते थे। मेवाड के
यह भयकर सग्राम था। इस युद्ध मे राजपूतो के साथ-साथ, चित्तौर के अन्त:पुर से
पूत वीरांगनाओ ने भी आक्रमणकारी मुगलो के साथ युद्ध किया था और अपने प्राणो
दी थी।

चित्तौर का यह संग्राम क्रमश: भयानक होता गया। शालुम्ब्रा का राजा
सहीदास युद्ध करता हुआ मारा गया। उसके गिरते ही पत्ता ने आगे बढकर मुगलो की

आज से कभी किसी स्त्री के साथ मै ऐसा व्यवहार न करूँगा।" ऐसा कहकर पृथ्वीराज की स्त्री उस मेले से चली गयी।

भामाशाह ने उस सम्पत्ति को पाकर प्रताप की [illegible] आशा [illegible]। [illegible] देश छोडकर चले जाने का विचार छोड दिया और [illegible]। [illegible] चित्तौर के उद्धार का फिर से नया कार्यक्रम बनाने के लिए विचार करने लगा। थोडे ही दिनो मे उसने राजपूतो की एक अच्छी सेना बना ली। उन दिनो मे मुगल सेना को राणा प्रताप के किसी आक्रमण का भय न रह गया था। ऐसे मौके पर प्रतापसिंह ने मुगल सेना की छावनियों पर एकाएक आक्रमण कर दिया। उसके सैनिक [illegible] भाग गये। उस समय देवीर नामक स्थान पर सेनापति शहबाज खाँ अपनी फौज के साथ मौजूद था। राणा प्रताप ने वहा पहुँच कर मुगल सेनाओ को घेर लिया।

देवीर के मैदानो मे दोनो ओर की सेनाओ का भीषण संग्राम हुआ। अन्त मे शहबाज खाँ प्रतापसिंह के हाथ से मारा गया। उसके बहुत से सैनिको का राजपूतो ने संहार किया। शहबाज खाँ के मारे जाने पर मुगल सैनिक इधर-उधर भाग गये। वहा से थोडी ही दूर पर मुगलो की दूसरी सेना पडी हुई थी। अपने विजयी राजपूतो के साथ प्रताप वहाँ पहुँचा और वहाँ पर मुगलो की जो सेना थी, भयानक रूप से उसका संहार किया।

मुगलो की उन दोनो सेनाओ के मारे जाने पर मुगलो मे बहुत घबराहट पैदा हो गयी। राणा प्रताप पर आक्रमण करने के लिए एक तीसरी मुगल सेना वहाँ पर आ गयी। उसका सेनापति अब्दुल्ला खाँ था। यह पहले से कमलमीर मे मौजूद था। राजपूतो ने अब्दुल्ला खाँ की फौज पर आक्रमण किया। सेनापति अब्दुल्ला मारा गया।

राणा प्रताप ने थोडे दिनो के भीतर ही तीन मुगल सेनाओ का संहार किया और बत्तीस दुर्गों को मुगलो से छीन कर अपने अधिकार मे कर लिया। उन दुर्गों मे जो मुसलमान सैनिक और उनके सेनापति थे, सभी मारे गये और सन् १५८० ईसवी मे चित्तौर, अजमेर और मण्डलगढ को छोड कर सम्पूर्ण मेवाड को राणा प्रताप ने जीत कर राजा मानसिंह का स्मरण किया, जिसके कारण, उनको इन विपदाओ का सामना करना पडा। राजा मानसिंह को उसके देश द्रोह का बदला देने के लिए राणा प्रताप ने अम्बेर राज्य पर आक्रमण किया और वहाँ के प्रसिद्ध

ड़ी दिनो मे उस स्थान पर एक नगर तैयार हो गया। उदयसिह ने अपने नाम पर नगर का नाम रक्खा, जो नगर मेवाड की राजधानी माना गया।

चित्तौर के पतन के चार वर्ष वाद गोगुण्डा नामक स्थान पर बयालीस वर्ष उदयसिह की मृत्यु हो गयी। राणा उदयसिह के पच्चीस लडके थे और सभी जीवित राणावत के नाम से प्रसिद्ध हुए और उन लोगो ने अपने वंश की अनेक शाखाओ, प्रतिष्ठा की।

मरने के पहले राणा उदयसिह ने अपने छोटे पुत्र जोगमल को अपने राज्य धिकारी वना दिया था। उसका ऐसा करना राजस्थान की पुरानी नीति के अनुसार उसके बेटो मे इसी अन्याय के कारण झगडे की शुरूआत हुई। राणा उदयसिंह ने शो की लडकी के साथ विवाह किया था। उस राजकुमारी से प्रतापसिह का जन्म मामा झालौरराव मेवाड के सिहासन पर प्रताप को विठाना चाहते थे। राणा उदयसि के अनुसार चित्तौर के सिहासन पर जव जोगमल बैठा तो झालौरराव ने मेवाड-राज्य सामन्त चन्दावत कृष्ण जी से वातचीत की। कृष्ण जी ने झालौरराव के विचार का और आवश्यकता पडने पर प्रताप के अधिकारो का समर्थन करने के लिए वचन दिया।

एक दिन जोगमल अपने प्रासाद के भोजनालय मे उस आसन पर बैठा था, सिह को बैठना चाहिये था। उसी समय ग्वालियर राज्य के भूतपूर्व नरेश को अच्छा न इसलिए जोगमल को बैठे हुए आसन से खीचकर रावत कृष्ण ने कहा : "महाराज, रहे है। इस आसन पर वैठने का अधिकार केवल प्रतापसिंह को है।"

जोगमल ने कुछ उत्तर न दिया। इसी समय गायुम्भा नरेश ने प्रतापसिह चित्तौर के सिहासन पर विठाया और तीन वार पृथ्वी को स्पर्श करके उसने मेवाड प्रताप के नाम का सम्वोधन किया। उपस्थित सरदारो और सामन्तो ने उसी समय समर्थन किया।

सक्षेप मे अभिषेक के इस कार्य के समाप्त होने पर राणा प्रताप ने उपस्थित सामन्तो से कहा "अहेरिया का उत्सव आ गया है। इसलिए हम सव लोग तैयार के लिए चले और इस उत्सव के कार्य को सम्पन्न करे।"

सभी लोगो ने राणा प्रताप की वात को स्वीकार किया।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

राणा प्रताप के लड़के—राणा अमरसिंह—राजा मानसिंह और बादशाह अकबर—बादशाह अकबर के साथ मानसिंह के [illegible]—मानसिंह को [illegible] मार डालने की अकबर की चेष्टा—दिल्ली के सिंहासन पर जहाँगीर—मुगलों का मेवाड़ पर आक्रमण—अमरसिंह की निर्बलता—मेवाड़ के सरदारों का [illegible]—अमरसिंह का निर्णय—देवीर में मुगल-सेना के साथ राजपूतों का युद्ध—दोनों ओर के सैनिकों का भयानक संहार—देवीर और रणपुर के युद्धों में मुगलों की पराजय—बादशाह जहाँगीर की [illegible]—चित्तौर के सिंहासन पर सागर जी को बिठाकर बादशाह जहाँगीर ने क्या समझा था?—सागर जी से मेवाड़ के लोगों की घृणा—चित्तौर के सिंहासन पर सागर जी के सात वर्ष—उसके जीवन का [illegible]—अपमान के अनुभव से सागर जी को राज्य से विरक्ति—अमरसिंह को चित्तौर के अधिकार की प्राप्ति—राणा अमरसिंह के सामन्तों में हीरोल का संघर्ष—अन्तला के दुर्ग पर मेवाड़ के सामन्तों की परीक्षा—चन्दावत और शक्तावत सामन्त—राणा प्रतापसिंह के साथ शक्तसिंह के विरोध की घटना—राजपूतों से मुगलों की लगातार पराजय—युद्ध में शाहजादा खुर्रम—अमरसिंह और मुगल बादशाह।

राणा प्रतापसिंह के सत्रह लड़के थे। अमरसिंह सबसे बड़ा था। इसलिए प्रतापसिंह के मरने के बाद सम्वत् १६५२ सन् १५९६ ईसवी मे वह सिंहासन पर बैठा। आठ वर्ष की आयु से लेकर प्रताप के मरने के समय तक अमरसिंह अपने पिता के पास रहा और जीवन के भयानक संकटों मे उसने अपने दिन बिताये थे। इस समय उसके कई लड़के थे। प्रतापसिंह के मरने के बाद आठ वर्ष तक बादशाह अकबर जिन्दा रहा। उसके बाद उसकी भी मृत्यु हो गयी। अर्द्ध शताब्दी से अधिक समय तक उसने सफलता पूर्वक शासन किया। अपनी बुद्धिमानी और राजनीति के द्वारा उसने अपने राज्य को बहुत विस्तृत बना लिया था। यूरोप के बादशाहों मे फ्रांस का चौथा हेनरी, स्पेन का पाँचवा चार्ल्स और इंगलैण्ड की रानी एलिजाबेथ को अकबर की समानता दी जाती है। रानी एलिजाबेथ

गया और अकबर बादशाह ने उसको अपनी तरफ चित्तौर का अधिकारी बना दिया। के जीवन मे इस समय ये सभी परिस्थितियां भयानक हो गयी थी।

राणा प्रताप ने इन विरोधी परिस्थितियो की परवाह न की और वह चित्तौर उपाय लगातार सोचता रहा। उसने धीरे-धीरे अपनी शक्तियो का संगठन आरम्भ पहले उसने अपने जीवन की विलासिता का अंत कर दिया। सोने-चाँदी के बरतनो मे का तरीका उसने मिटा दिया और उन बरतनो के स्थान पर भोजन करने मे वृक्षो के पत्त आरम्भ कर दिया। सोने के समय कोमल शैया के स्थान पर उसने कठोर भूमि का प्रय विलासिता का यह परित्याग राणा प्रताप ने न केवल अपने जीवन मे किया, बल्कि और वश वालो के लिए भी इस प्रकार के कुछ कठोर नियम बना दिये और आदेश दि तक हम लोग चित्तौर को स्वाधीन न कर लेगे, सीसदिया वंश का कोई भी व्यक्ति—स पुरुष सुख और विलासिता के जीवन से कोई सम्बन्ध न रखेगा।

चित्तौर की स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए राणा प्रताप ने अपने और अपने व लिए जो कठोर आदेश निकाले, उनका पालन पूर्ण रूप से होने लगा। इस समय के पहले बाजे सेना के आगे बजा करते थे, वे आदेश के अनुसार सेना के पीछे बजने लगे। राजपूत दाढी-मूछो के बालो का बनवाना बद कर दिया। भोजन के बरतनो के स्थान पर बडे-पत्तो का प्रयोग होने लगा। भूमि पर सोना आरम्भ किया गया। उस समय के उन कितनी ही बाते आज तक राजस्थान के राजपूतो मे पायी जाती है। वे लोग दाढी मू नही बनवाते और भोजन के समय अपने बरतनो के नीचे किसी न किसी वृक्ष की पत्ती

इन दिनो मे मेवाड-राज्य की जो अधोगति हो गयी थी उसे देखकर प्रताप के असह्य वेदना उठा करती थी और उसके कारण वह प्राय. कह उठता . "अच्छा सीसोदिया वश मे उदयसिह का जन्म न हुआ होता अथवा राणा संग्रामसिह के बाद वश का कोई व्यक्ति चितौर के सिहासन पर न बैठता।"

राणा सग्रामसिंह के शासन काल मे मेवाड-राज्य ने बडी उन्नति की थी। अम्बेर वाड के राज्य मेवाड-राज्य मे शामिल हो गये थे और इन दोनो राज्यो के राजा उस शक्तिशाली थे कि मारवाड के राजा ने दिल्ली के बादशाह के विरुद्ध युद्ध की तैयारी चम्बल नदी के किनारे पर बसे हुए बहुत-से छोटे-छोटे राज्यों ने अपनी शक्तियाँ बना ली सब उन्नतियो का कारण मेवाड-राज्य पर राणा संग्रामसिह का शासन था। साथ-साथ सभी राजपूत राजाओ और सामन्तो को उन्नति करने का अवसर दिया भारतवर्ष मे राणा संग्रामसिह ने सम्मान प्राप्त किया था। यदि बादशाह बाबर के करने के पश्चात् उसकी आकस्मिक मृत्यु न हुई होती तो उसके बाद इस देश की परिस्थितियां कदाचित इतनी पतित न होती, जितनी कि हुई। राणा सग्रामसिह के योग्य शासक चितौर के सिंहासन पर न बैठा। राणा उदयसिंह ने अपने शासन-काल की बची हुई राजपूत मर्यादा का अत कर दिया।

बादशाह अकबर की महान् शक्तियो का अध्ययन करने के बाद राणा प्रताप ने उद्धार करने के सम्बन्ध मे अपने सरदारो को बुलाकर परामर्श किया और किसी भी दश की पराधीनता से चितौर को निकालने का उसने निर्णय किया। मेवाड़-राज्य के सामन्तो सिंह ने नयी-नयी जागीरे दी और बादशाह अकबर के साथ युद्ध करने के लिए उसने को केन्द्र बनाया। इन्ही दिनो मे उसने कमलमीर, गोगुण्डा और पहाड़ी दुर्गो की मरम्मत

के दिनो मे अकर्मण्यता का पैदा होना स्वाभाविक होता है । अमरसिंह आलसी हो गया था। अनेक खुशामदी लोगो के पास रहने और उनकी झूठी प्रशंसाओ को सुनते-सुनते वह उस प्रकार की बातो के सुनने का अभ्यासी हो गया था ।

मुगल सेना के आक्रमण का समाचार सुनकर अमरसिंह संकट मे पड़ गया। इस समय क्या करना चाहिए, इसका वह कुछ निर्णय न कर सका । जो खुशामदी लोग उसके पास रहा करते थे, वे अमरसिंह को उसकी निर्बल शक्तियो का आभास करा कर हतोत्साहित करने लगे। अमरसिंह को स्वयं अपने चारो ओर निर्बलता दिखायी देने लगी ।

आक्रमण के लिए आने वाली मुगल सेना का समाचार पाकर मेवाड़ के सरदार अमरसिंह के पास पहुँचे । वह जिस महल मे रहा करता था और जिसको उसने स्वयं बनवाया था, उसका नाम उसने 'अमर-महल' रखा था । उसी अमर-महल मे सिसोदिया सरदार एकत्रित हुए । उन्होंने देखा कि अमरसिंह के पास मुगलो से होने वाले आक्रमण का मुकाबला करने की कोई तैयारी नहीं है। अमरसिंह को शांत देखकर सरदारो ने मुगल सेना के आक्रमण की बात कही । परन्तु अमरसिंह उसके सम्बन्ध मे कुछ नहीं उत्तर न दिया ।

अमरसिंह की यह अवस्था देखकर सरदारो को बड़ा असतोष हुआ । उसी समय शालुम्ब्रा सरदार उत्तेजना पैदा करने वाली बाते अमरसिंह से कही और क्रोध-असतोष मे उसने यह भी कहा कि आप राणा प्रतापसिंह के बड़े लड़के है । आप सीसोदिया वंश के वंशज है । इस वंश ने अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए किस प्रकार से बलिदान किये है, यह सब कुछ आपने अपनी आँखो से देखा है । आक्रमण करने के लिए मुगल सेना सिर पर आ गयी है । ऐसे संकट के समय आपका चुपचाप बैठे रहना हम सबके निकट भय और असंतोष पैदा कर रहा है । आपको तुरन्त युद्ध की तैयारी करना चाहिए ।

अमरसिंह इन बातो को चुपचाप सुनता रहा । यह देखकर शालुम्ब्रा सरदार को बहुत क्रोध आया । उसने दाहिना हाथ पकड़कर अमरसिंह को सिंहासन से नीचे की तरफ खींचा और कहा "सरदारो, राणा प्रतापसिंह के पुत्र को घोड़े पर बिठाकर मेवाड़ के गौरव की रक्षा करो ।"

शालुम्ब्रा सरदार के इस व्यवहार से अमरसिंह ने अपना अपमान अनुभव किया । परन्तु शालुम्ब्रा सरदार ने उसकी कुछ भी परवा न की । पास खड़े हुये अन्य सरदार लोग यह सब देखते थे । सबके आग्रह करने पर अमरसिंह सिंहासन से उतरा और घोड़े पर सवार हुआ । सभी सरदार अमरसिंह के साथ उस स्थान से रवाना हुए और पर्वत के नीचे की तरफ चलने लगे । रास्ते मे सरदारो के साथ बहुत-सी बाते हुई । उनको सुनकर अमरसिंह मे उत्साह पैदा हुआ । सरदारो के मुँह से उसने सुना कि जिस गौरव की रक्षा करने के लिए राणा प्रताप ने अपने जीवन के अंतिम दिनो तक भीषण संकटो का सामना किया था, आज उस गौरव को नष्ट करने के लिए फिर मुगल सेना ने आक्रमण किया है । सरदारो ने कहा, हम लोग जब तक जीवित है, उस गौरव को कभी भी नष्ट न होने देगे ।

अमरसिंह की समझ मे सब बाते आ गयी । उसने प्रसन्न होकर और उत्साह मे आकर सरदारो के साथ परामर्श किया उसने समझा कि हम लोगो के पास विशाल सेना नही है, परन्तु जितने भी राजपूत और शूरवीर है अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए प्राणो का बलिदान देने को तैयार है । अमरसिंह के हृदय मे उत्साह की वृद्धि हुई । अपनी राजपूत सेना को लेकर वह तेजी के साथ शत्रुओ से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ ।

मुगल सेना देवीर नामक स्थान पर मौजूद थी । राजपूत सेना ने वहाँ पहुँचकर एक साथ

करना अब उसके लिए अनिवार्य आवश्यक हो गया। लूट की सम्पत्ति और
अपनी आर्थिक अवस्था को कुछ सम्हाल लिया और उस धन से अपनी सेना मे सै
बढा ली। जो राजपूत उसके साथ आये, उनको उसने उत्तेजित करना आरम्भ किया
के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गये।

इन्ही दिनों मे अकबर अपनी एक मुगल सेना लेकर अजमेर पहुँच गया।
को देखकर इन्ही दिनो मे मारवाड का राजा मालदेव और अम्बेर का राजा भगवानद
शरण में आ गये। राजा भगवान दास ने भेट मे बहुमूल्य सम्पत्ति और सामग्री देले
बेटे उदयसिंह को अकबर के पास भेजा। वह अजमेर के रास्ते मे नागौर नामक स्थ
से मिला और पिता के द्वारा भेजी हुई सम्पूर्ण सम्पत्ति उसने अकबर को भेट मे दी
होकर अकबर ने मारवाड़ के राजा को राजा की उपाधि दी। इसके पहले वहाँ के
उपाधि रखते थे। राजा भगवान दास ने जोधाबाई नामक अपनी बहिन का विवाह
कर दिया। * जिन हिन्दू राजाओ ने अपनी लडकियाँ और बहने मुसलमान बा २
उनमे भगवान दास सब से पहला था।

बादशाह अकबर ने उदयसिंह को जोधाबाई के विवाह के बदले मे चार
दिये। उन चारो इलाको की वार्षिक आय लगभग सोलह लाख रुपये की थी। इन
गोढ़ार अथवा गदवाड की आय नौ लाख, उज्जयिनी की ढाई लाख, देवलपुर की ए
हजार पाँच सौ और बुदनावर की ढाई लाख रुपये थी। इन इलाको के मिल
राज्य की आमदनी पहले से दूनी हो गयी। अम्बेर और मारवाड़ के राज्यो की देखा-
के दूसरे राजा लोग भी अकबर की शरण मे आये और अपनी स्वतंत्रता को दे क
अकबर का आश्रय प्राप्त किया।

अकबर बादशाह ने जब राणा प्रताप के विरुद्ध युद्ध की तैयारियाँ की तो जो
उसकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे सभी ने अकबर का साथ देने के लिये वच
राजाओ के साथ देने का कुछ और भी कारण था। जो राजा मुगल साम्राज्य की अध
कर चुके थे और अकबर से मिल गये थे, राणा प्रताप ने उनको पतित समझ कर न
सम्बन्ध उसने स्वयं छोड दिया था, वल्कि उनसे कोई सम्बन्ध न रखने के लिये उ.
पूतो को उत्तेजित किया। अवस्था उस समय यह थी कि राजस्थान के लगभग सभी
मुगल साम्राज्य से भयभीत हो चुके थे और इसी लिए उन्होने अकबर की अध
थी। बूंदी का हाडा राजा किसी प्रकार अपनी मर्यादा को सुरक्षित रख सका था।

जातीयता और वश का सम्बन्ध तोड देने के कारण जितने भी राजा अकव
गये थे, सब के सब राणा प्रताप से रुष्ट हो गये। इन राजाओ मे अम्बेर का कछवाह
सिह भी था। उसके पिता ने अपनी बहन का विवाह अकबर के साथ कर दिया
मानसिंह का अकबर फूफा हुआ। इसके बदले मे अकबर ने मानसिंह को अपनी
का ऊँचा आसन दिया। राजपूत राजाओ को अकबर की अधीनता मे लाने के लिए
बडा काम किया था। उसकी सहायता से अकबर के साम्राज्य की बहुत वृद्धि हुई।

---

* इसी जोधाबाई से सलीम (जहाँगीर) का जन्म हुआ। जोधाबाई का मक
समीप सिकन्दरा मे बना हुआ है। कुछ लोग इस बात मे सदेह करते है और ७
कि राजपूत राजाओ ने मुसलमानो को अपनी लड़कियो के स्थान पर दासियाँ दी थी।

नागर जी अपना अपमानित जीवन मे बहुत दुखी हो गया था। इसलिए वह चित्तौर से निकल कर कमार के पहाड़ पर चला गया और वहाँ का एकान्त जीवन बिताने लगा। परन्तु वहाँ पर भी उसको शान्ति न मिली। उसकी इस दशा मे दिल्ली के बादशाह ने उसको अपने दरबार मे बुलाया और बादशाह जहाँगीर ने स्वयं उसका बहुत तिरस्कार किया। उस अपमान से नागर जी बहुत दुखी हुआ। अब उसको अपना जीवन भार मालूम होने लगा। इसलिए बादशाह जहाँगीर के सामने नागर जी ने तलवार से अपने प्राणो का अन्त कर दिया।

नागर जी के द्वारा अमरसिंह को चित्तौर का सिंहासन मिल गया। परन्तु उससे उसको प्रसन्नता न हुई। वह जानता था कि शक्तिशाली मुगल सम्राट की शत्रुता के कारण मै इस सिंहासन पर सकुशल अधिक समय तक न रहने पाऊँगा। उसे दिल्ली की सेना से प्रत्येक समय भय बना रहता। यद्यपि चित्तौर का त्याग करने के बाद राणा अमरसिंह ने मेवाड़ राज्य के सभी दुर्गों और नगरो को अपने अधिकार मे कर लिया था। इन दुर्गों मे अन्ताला नाम का दुर्ग प्राप्त करने मे राणा अमरसिंह के दो श्रेष्ठ सामन्तो मे भयानक संघर्ष हुआ था। राणा की सेना मे जो राजपूत सरदार थे, वे राजपूतो की बहुत-सी शाखाओ और उपशाखाओ मे विभाजित थे। उनमे चंदावत और शक्तावत नाम की दो राजपूत शाखाये इन दिनो मे शक्तिशाली हो रही थी। दोनो राणा के दरबार मे श्रेष्ठता चाहती थी। इसी प्रधानता को प्राप्त करने के सम्बन्ध मे चन्दावत और शक्तावत सरदारो मे उस समय संघर्ष पैदा हुआ, जब दिल्ली के मुगल सिंहासन पर जहाँगीर बादशाह था और वह दो बार अमरसिंह की राजपूत सेना से पराजित हो जाने के कारण तीसरे आक्रमण की तैयारी कर रहा था।

राणा अमरसिंह की सेना मे इस बात का झगड़ा उठा कि 'हीरोल' का अधिकारी कौन है। इस हीरोल को चंदावत सरदार अपने लिए चाहता था और शक्तावत सरदार अपने लिए चाहता था। इस बात को लेकर दोनो राजपूत सरदारो मे झगड़ा होने लगा। हीरोल का अभिप्राय सेना के आगे का भाग है। सरदारो मे जो सब से श्रेष्ठ होता था उसी को हीरोल का अधिकारी माना जाता था। यह अधिकार सेना मे श्रेष्ठता का परिचय देता था।

प्रताप के साथी वन गये थे । इसलिए वे सव के सव इस समय युद्ध के लिए तैयार
इस सेना को लेकर राणा प्रताप अरावली पर्वत के सव से बडे मार्ग पर पहुँच गया
जिस स्थान पर जाकर अपनी सेना के साथ प्रताप मुगल फौज के आने का
लगा, वह नवानगर और उदयपुर के पश्चिम दिशा मे था । यह पहाड़ी स्थान
घिरा हुआ था । उस विस्तृत स्थान पर कुछ छोटे-छोटे नाले व नदियाँ वह रही थी
उस स्थान के लिए जाने वाला मार्ग वहुत तङ्ग, कठोर और भयानक था । मार्ग की
कम थी और उस स्थान से वहुत-से आदमियो का एक साथ निकलना वहुत मुश्किल
खडे होकर देखने से पहाडी वृक्षो और जङ्गलो के सिवा कुछ दिखायी न देता था ।
नाम हलदीघाटी है । उस हलदीघाटी के ऊँचे शिखरो पर खडे होकर राणा प्रताप के
पूत और भील युद्ध के लिए तैयार हो गये । ऊँचे शिखरो पर एक ओर भील थे
राजपूत । उन सव के हाथो मे धनुपवाण थे ।

हलदीघाटी के उस भयकर पहाडी स्थान पर खडे होकर अपने शूरवीर
प्रताप शत्रुओ के आने का रास्ता देखने लगा । सम्वत् १६३२ सन् १५७६ ईसवी के
मे दोनो ओर की सेनाओ का सामना हुआ और भीषण रूप से युद्ध आरम्भ हो गया
के सैनिको और सरदारो ने जिस प्रकार की मार शुरू की, उससे दोनों ही तरफ के
घायल होकर जमीन पर गिरने लगे । वहुत समय तक भीषण मारकाट के वाद भी
की निर्वलता किसी तरफ न आयी । अपने राजपूतो और भीलो के साथ मार
आगे वढने लगा । लेकिन मुगलो की विशाल सेना को पीछे हटाना और आगे वढ़ना
हो रहा था । वाणो की वर्षा समाप्त हो चुकी थी और दोनो ओर के सैनिक एक
पहुँचकर तलवारो और भालो की भयानक मार कर रहे थे ।

हलदीघाटी के पहाड़ी मैदान मे मारकाट करते हुए सैनिक कट-कट कर
थे । मुगलो का वढता हुआ जोर देखकर प्रतापसिह अपने घोड़े पर प्रचंड गति के
भीतर पहुँच गया और वह मानसिंह को खोजने लगा । इसी समय हाथी पर वैठा
लडका सलीम सामने दिखाई पडा । उसने अपने चेतक घोडे को आगे वढ़ाया और
उसने जोरदार वार किया । उसकी तलवार से सलीम के कई एक अंग रक्षक मारे
वार का जवाव देते हुए सलीम ने भी राणा पर वार किया । प्रताप ने उससे
घोडे को वढाया और सलीम पर जोरदार भाले का आघात किया । उस भाले से
की मोटी चद्दर से मढा हुआ हौदा टकराया । शाहजादा सलीम वच गया और पूरा
हौदे को पहुँचा । उसी समय सलीम का महावत प्रताप की तलवार से मारा गया ।
ही सलीम का हाथी पीछे की तरफ हटने लगा । यह देखकर प्रताप सलीम की
ओर उसके हाथी को घेर कर प्रताप ने सलीम को मारने की चेष्टा की ।

इस समय युद्ध अत्यन्त भयानक हो उठा था । सलीम पर प्रताप का आक्रमण
सेना आगे वढी और उसके वहुत से सैनिक और सरदारो ने प्रताप पर आक्रमण
प्रताप ने भी अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग किया । उसकी शक्तिशाली तलवार से
से शत्रु सैनिक मारे गये । लेकिन मुगल सेना ने राणा प्रताप को घेर लिया ।
अधिक मारे गये । प्रताप की सेना कमजोर पडने लगी । राणा शत्रुओ के वीच मे
और मुगलो ने जोरदार हमला उस पर किया था ।

प्रताप के मस्तक पर मेवाड़ का मुकुट लगा था । उसी मुकुट को निशाना व

शत्रु से मिले हुए, विरोधी भाई शक्तसिंह को अपने पीछे आता हुआ देखकर र
उत्पन्न हुई। वह समझ गया कि शक्तसिह अपने वैर का बदला लेने के लिए मेरे पीछे
राणा प्रताप के हृदय का स्वाभिमान जाग्रत उठा। खडे होकर साहस और क्रोध
शक्तसिह के आने की प्रतिक्षा करने लगा। शक्तसिह के कुछ निकट पहुँचने पर राणा
मण्डल पर उदासी और निराशा के भाव देखे। उसके मन का भाव बदलने लगा।
शक्तसिंह निकट पहुँच कर प्रताप के चरणो पर गिर पडा और फूट-फूट कर रोने लग
ने शक्तसिंह को उठाकर छाती से लगाया। कुछ देर तक दोनो के नेत्रो से आँसू बह

इसी समय प्रताप ने अपने घोडे की तरफ देखा। वह गिर गया था और उ
ससार से विदा हो चुके थे। प्रताप के हृदय मे अपने घोडे के लिए बहुत स्नेह था।
ही राणा ने मुगलो के साथ भयकर युद्ध किया था और सग्राम के कई अवसरो पर
के प्राण बचाये थे। घोडे के मर जाने पर राणा को अत्यन्त दुख हुआ।

शक्तसिह ने राणा को चढने के लिए अपना घोडा दे दिया। प्रतापसिह के
पहले शक्तसिह ने राणा से कहा—"अवसर मिलने पर मैं चला आऊँगा और आ
शक्तसिह के मुँह से प्रताप ने इन शब्दो को सुना। इसके बाद वह चला गया। प्रत
करते हुए जो मुगल सैनिक आ रहे थे, शक्तसिह ने उन दोनो को मार डाला था औ
मिलकर वह खुरासानी सैनिक के घोडे पर बैठकर वहाँ से लौटा। युद्ध बन्द हो जाने
प्रसन्नता के साथ अपनी विजयी सेना को लेकर राजधानी लौट गया।

शक्तसिह के पहुँचने पर सलीम को उस पर उस समय सदेह पैदा हुआ जब
कि प्रतापसिह ने न केवल पीछा करने वाले दोनो मुगल सैनिको मार डाला, बल्कि
को भी खत्म कर दिया। इस दसा मे मुझे खुरासानी सैनिक के घोडे पर बैठकर य
सलीम ने प्रतिज्ञा करते हुए कहा कि अगर तुम सही-सही बात कह दोगे तो मैं तुम्हे
सलीम की इस बात पर शक्तसिह ने उत्तर दिया—"मेवाड-राज्य का उत्तरदायित
कधो पर है। इस संकट के समय उसकी बिना सहायता किये हुए मै कैसे रह सक
अपनी प्रतीज्ञा का पालन किया और शक्तसिंह को चले जाने की उसने आज्ञा दी।

उदयपुर पहुँचकर शक्तसिंह ने अपने भाई प्रतापसिह से भेट की। उदयपुर
रास्ते मे शक्तसिंह ने भिनसोर नामक दुर्ग पर आक्रमण किया और उसको अपने
लिया था। उदयपुर पहुँचकर उस दुर्ग को भेट मे देते हुए शक्तसिह ने राणा का अ
प्रतापसिह ने प्रसन्न होकर दुर्ग शक्तसिह को पुरस्कार मे दे दिया। यह दुर्ग बहुत
सिंह के वंश वालो के अधिकार मे रहा।

हलदीघाटी के इस युद्ध मे राणा प्रताप के बाइस हजार राजपूतो मे च
पूत मारे गये और आठ हजार राजपूत बचकर उदयपुर वापस आये। इस युद्ध मे
अत्यन्त निकटवर्ती पाँच सौ कुटुम्बी और सम्बन्धी, ग्वालियर का भूत पूर्व राजा र
तीन सौ तोवर वीरो के साथ रामशाह का बेटा खाण्डेराव मारा गया। राणा प्रत
की रक्षा करके झाला के वीर सामन्त मन्ना जी ने अपने प्राणो की आहुति दी। इन
के बाद भी मुगल सेना के बहुत बडी होने के कारण राणा प्रतापसिह की [illegible]

इन दिनो मे उदयपुर को राणा प्रताप ने रहने का स्थान बनाया। [illegible]
शत्रुओ के आक्रमण करने पर राणा प्रताप ने कमलमीर मे [illegible]
के सेनापति कोकाशाह बाज खाँ ने उसके बाद कमलमीर [illegible] स्थान को घेर [illegible]

तक युद्ध मे मारे जा चुके थे और जो बाकी रह गये थे, वे बहुत थक गये थे। लगातार युद्धो के कारण मेवाड के राजपूतो के साधन निर्बल पड गये थे। परन्तु जो सरदार और सामन्त अभी जीवित थे, युद्ध करने के लिए तैयार हो गये। धन की कमी को किसी प्रकार पूरा किया और मेवाड के राजपूतो को एकत्रित करके युद्ध की तैयारी की गयी।

राजपूत सेना युद्ध करने के लिए मैदान मे आ गयी। दोनो तरफ से सैनिक आगे बढे और भयानक संग्राम आरम्भ हो गया। शाहजादा खुर्रम के साथ जो मुगल सेना आयी थी, वह बहुत बडी थी। उसके सामने राजपूतो की सेना कुछ भी न थी। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ समय तक युद्ध करने के बाद राजपूत मारे गये और राणा अमरसिंह की पराजय हुई। इसके बाद मेवाड और दिल्ली—दोनो राज्यो के बीच मे जीवन मे किस प्रकार के परिवर्तन हुये और वे परिवर्तन कैसे हुये, इस बात को बहुत सही-सही जानने के लिए बादशाह जहाँगीर की लिखी हुई पंक्तियो का यहां पर उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक मालूम होता है, जिनको उसने अपनी लेखनी से अपने रोजनामचे मे लिखा था।

"अपनी हुकूमत के आठवें साल हिजरी १०२२ सन् १६१३ ईसवी मे मैंने इरादा किया कि अजमेर की तरफ रवाना होने के पहले मैं अपने लडके खुर्रम को भेज दूं। सफर का इन्तजाम हो जाने के बाद कई तरह के कीमती खिलत, एक हाथी, एक घोडा, एक तलवार और एक ढाल मैंने उसको दी। जो फौज उसकी मातहती मे थी, उसके अलावा बारह हजार सवार ज्यादा उसको दिये और अजीम-खां को उसका सिपहसालार बनाकर उसके मातहत लोगो को इनाम दिये।'

'हिजरी १०२३ सन् १६१४ ईसवी को मै अजमेर में था और यह साल मेरी हुकूमत का नवां वर्ष था कि मेरे लडके ने आलमगुमान हाथी के साथ दूसरे सत्रह हाथी और कुछ आदमी जिनमे कुछ औरते भी थी और जो लडाई के वक्त गिरफ्तार की गयी थी—मेरी नजर मे भेजे। दूसरे दिन उस आलमगुमान हाथी पर बैठ कर मैं शहर मे घूमने के लिए गया। उस मौके पर बहुत-सी अशरफियां लुटाई गयी।"

"इसके बाद मुझे खुशखबरी मिली कि राणा अमरसिंह ने सुलह का पैगाम भेजा है और वह मेरी मातहती मंजूर करने के लिए खुशी से तैयार है। मेरे खुर्रम लडके ने राणा के राज्य मे अपनी फौज के बहुत-से थाने कायम कर दिये है और उन थानो पर अपने ही आदमी इन्तजाम कर रहे है। मुल्क की आबहवा खराब है और तमाम राज्य जंगल से भरा हुआ है। वहां पहुँचने मे भी परेशानी होती है। इस वजह से मुल्क को कब्जे मे लाना नामुमकिन मालूम हुआ। लेकिन मेरी फौज ने कोशिशो की कुछ परवाह न करके तमाम मेवाड को अपने काबू मे कर लिया। वहां के कुछ राजपूतो और दीगर लोगो की औरतो के साथ उनके लडके भी कैद किये गये। राणा इन बातो से बहुत नाउम्मेद हो गया और यह ख्याल करके कि अगर इसी तरह की हालत कायम रही तो या तो मुल्क छोडना पडेगा या कैद मे जाना होगा, बहुत आजिज होकर सुलह की दरख्वास्त की। अपने दो सरदारो को खुर्रम के पास भेज कर राणा ने कहला भेजा कि अगर मुझे माफ किया जाय तो मैं जिस तरीके से दूसरे हिन्दू राजा मातहती मे है, मैं भी उसके लिये तैयार हूं और इसके लिये अपने लडके कर्ण को दरबार मे भेज सकता हूँ। मेरा बेटा दरबार मे रहेगा बुढापे के सबब से मैं खुद वहां नही रह सकता। इसके लिए मैं माफी चाहता हूँ।"

"मेरी हुकूमत के जमाने मे चित्तौर मातहत हुआ, इसके लिए मुझे बडी खुशी है और हुक्म दिया कि मेवाड के पुराने मुस्तहक महरूम नही रहेंगे। इस बात का मुझको कामिल यकीन है कि राणा अमरसिंह और उसके बुजुर्गो को अपनी ताकत का पूरा इतकाद था। उनको पहाडी लोगो की

सहायता किया करते थे । उनके ऐसा करने से प्रताप के परिवार के छोटे वच्चो की
भीषण जानवरो से हो सकी थी । उन छोटे वच्चो के खाने-पीने का कोई सुभीता न
पहाडी जगली स्थानो मे जो फल मिलते थे, उन्ही को खाकर वे वच्चे किसी प्रकार
लेते थे, कभी-कभी इस प्रकार के भोजन से भी उन वच्चो को निराश होना पडता
देख-रेख जगली जानवरो से भरे हुए उन पहाडी स्थानो पर भीलो के द्वारा होती थी

वादशाह की सेना प्रतापसिह की खोज मे दौड़ते-दौडते थक गयी । परन्तु
कैद न कर सकी । इन सब वातो को वादशाह अकवर ने खूव सुना था । प्रताप के
रहस्य जानने के लिए उसने एकवार छिपे तौर पर अपना एक विश्वासी सिपाही भेजा
प्रकार छिपे तौर पर वहाँ पहुँचा, जहाँ प्रताप और उसके सभी सरदार एक घने जगल
के नीचे घास पर वैठे हुए भोजन कर रहे थे, खाने के चीजो मे जगली फल, पत्तियाँ अ
उस समय उन सवको एक साथ वैठकर खाते हुए वादशाह के सिपाही ने देखा कि रा
सरदार इस प्रकार की सामग्री उसी उत्साह, महत्व और हर्ष के साथ खाकर प्रसन्न
कोई राजप्रासाद मे वने हुए भोजनो के द्वारा प्रसन्न होता है । उसने सरदारो, और
मण्डण पर किसी प्रकार की उदासी और चिंतना नही देखी । उसने लौटकर राणा
इन सब वातो का वर्णन वादशाह से क्रिया ।

अकवर ने अपने सिपाही के मुख से राणा प्रताप के इन दिनो का हाल सुना ।
हृदय कॉप उठा । प्रताप के प्रति उसके हृदय का मनुष्यत्व जागरित हुआ । उसने मन
की कठिनाइयो का अनुमान लगाया और अपने दरवार के अनेक लोगो से उसने
त्याग, तपस्या और वलिदान की प्रशसाये की । अकबर के प्रसिद्ध सामन्त खानखान
के मुख से प्रताप की प्रशसा सुनी । वह अत्यधिक प्रभावित हुआ और उसने उसी स
"इस ससार मे सभी कुछ नाशवान है । राज्य और धन किसी भी समय नष्ट हो स
महान पुरुषो की ख्याति कभी नष्ट नही होती ।"

भयानक से भयानक विपत्तियो के आने पर भी राणा प्रतापसिह का उत्साह
न पडा । परन्तु अपने परिवार और छोटे-छोटे वच्चो के जीवन मे इस समय जो
रही थी, उससे कभी-कभी वह भयभीत हो उठता था । प्राय उसकी स्त्री और उ
खाने-पीने की कोई व्यवस्था न हो पाती थी, जो कन्द मूल फल खाकर वे अपने दि
जव उनका भी कोई सुभीता न हो पाता तो राणा का हृदय कभी-कभी अधीर ह
मुगल सैनिक इस प्रकार उसके पीछे पड गये थे कि भोजन तैयार होने पर कभी-
अवसर न मिलता था और अचानक शत्रुओ का आक्रमण हो जाने पर भोजन छ
भागना पडता था । एक दिन तो यहाँ तक हुआ कि पाँच वार भोजन पकाया गया
शत्रुओ के आ जाने से सव को भागना पडता । भोजन वही का वही पडा रह गया

एक दिन की घटना है । परिवार के लोगो के साथ एक पहाडी सूनसान स्थान
कुछ वाते हो रही थी । घास के वीजो को पीस कर प्रताप की रानी और उसकी पुत्र
रोटियाँ वनायी । वे काफी न थी । इसलिए वनी हुई रोटियाँ आधी वच्चो को खाने
गयी और आधी इसलिए उठाकर रख दी गयी कि वे भूखे होने पर वच्चे को फिर

X वेरामखाँ के लडके मिर्जाखाँ को खानखाना का खिताव मिला था ।
मनुष्य की ख्याति और प्रसिद्धि वढती है ।

"बाद उसके मुहर्रम की २४ तारीख को (सन् १६१५ ईसवी) कुमार कर्ण का लड़का जगतसिंह जिसकी उम्र बारह वर्ष की थी, दरबार मे आया। उसने अदब के साथ आदाब बजा लाकर अपने वालिद और दादा की अर्जी पेश की। उसके आली खानदान मे पैदा होने का सबूत साफ-साफ उसके चेहरे से जाहिर हो रहा था। उसके साथ बर्ताव मेहरबानी से किया गया, मैं तरह-तरह की बखशीशे देकर उसको खुश करने लगा।"

"सावन के दसवे दिन जगतसिंह मेरी इजाजत लेकर अपने मुल्क को गये। वक्त रुखसत तक मैंने उसको बीस हजार रुपये, एक घोडा, हाथी, और तरह-तरह के खिलत दिये। राजकुमार कर्ण के उस्ताद हरिदास झाला को पाच हजार रुपये, एक घोडा और खिलत देकर उस ही की मारफत राणा के पास सोने की छै मूर्तिया भेजी।"

"तारीख २८-रवि-उल-अव्वल। आज मेरी सल्तनत का ग्यारहवा साल है। मेरे हुक्म से राणा साहब और उनके लडके कर्ण की दो मूर्तियां बनायी गयी, ये मूर्तियां संगमरमर की बनी थी। जिस दिन वह दोनो मूर्तियां तैयार करके मेरे पास लाई गयी, उसी दिन की तारीख उन पर खुदवा कर उन्हे आगरे के बाग मे फरोकश करने का हुक्म दिया।"

"मेरी सलतनत के ग्यारहवे वर्ष मे एतमादखाँ ने मुझको लिख भेजा कि सुलतान खुर्रम राणा जी के मुल्क मे गये। वहाँ पर राणा और उनके लडके ने सात हाथी, सत्ताईस घोडे, जवाहरात और तिलाई गहने वगैरह नजराने मे दिये थे। नजराने मे सुलतान खुर्रम ने सिर्फ तीन घोडे लेकर

मे वह मर्यादा वेची जा रही है। उसका खरीदार अकेला अकबर है। बादशाह ने सी
एक स्वाभिमानी पुत्र को छोडकर सब को मोल ले लिया है। परन्तु वह प्रताप को
वह राजपूत नही है, जो नौरोजा के लिये अपनी मर्यादा का परित्याग कर सकता
कितने ही राजपूतो ने अपनी मर्यादा भग कर दी है। इस विक्री मे राजपूतो के बहुमूल
चुके है। क्या अब चित्तौर का स्वाभिमान भी इस बाजार मे बिकेगा ? प्रताप ने अपना
किया है, क्या अब वह अपने स्वाभिमानी गौरव को बेचना चाहता है। जो अब तक
जिनकी मर्यादा बाजार मे खरीदी गयी है, वे साहसहीन थे—उन्होने अपने आपको श
था। इसीलिए उनके जीवनका यह उपहास हुआ। क्या अब हमीर के वश का भी
वाला है ? आज तक ससार राणा प्रताप के स्वाभिमान, पुरुषार्थ और साहस को देख क
क्या ससार का वह आश्चर्य समाप्त होने वाला है ? इस जीवन मे कुछ भी अनित्य
का नाश होने वाला है। बाजार मे जिसने राजपूतो के गौरव की खरीद की है, वह
मिटने वाला है। उस दशा मे हमारे वश का गौरव राणा प्रताप के द्वारा ही फिर
करेगा। उस दिन की प्रतीक्षा मे राजस्थान के सम्पूर्ण राजपूतो की आँखे लगी हुई है

राठौर पृथ्वीराज की इस ओजस्वी कविता को पढकर प्रताप के अतरतर
अटूट लहरे उठने लगी। उससे एकाएक मालूम हुआ, मानो मेरे शरीर मे दस हजा
शक्ति ने एक साथ प्रवेश किया है। वह तुरन्त अपने मन मे कह उठा "मै कभी भी
मान को नष्ट न करूँगा।"

पृथ्वीराज ने अपने पत्र मे नौरोजा का उल्लेख किया है। उसके सम्बध मे स
र आवश्यक है। नौरोजा का अर्थ वर्ष का नया दिन होता है। यह मुसलमानो का
है। अकबर ने इसकी प्रतिष्ठा करके इसका नाम खुशरोज रखा था। इसका अर्थ हो
दिन। इसकी प्रतिष्ठा अकबर वादशाह ने स्वय की थी। उसके साम्राज्य मे स
मुसलमान इस उत्सव को मनाने लगे। राज-दरबार मे इसके लिए बडे-बडे आनन्द
त्योहार समझकर सभी को उसमे शामिल होने का अधिकार था। दरबार मे एक
जनिक सम्मेलन होता था। प्रतिष्ठित मुसलमानो और राजपूतो की स्त्रियाँ भी उस
आती थी। इस खुशरोज के उत्सव मे एक बात और भी की जाती थी। इस दिन
मे मेला लगता था, उस मेले मे केवल स्त्रियाँ जाती थी और उस मेले मे बाजार
हिन्दू और मुसलमान स्त्रियाँ अपनी चीजो को बेचने के लिये दूकाने रखती थी।

स्त्रियो के उस मेले मे राज-परिवारो की स्त्रियाँ जाकर सौदा खरीदा क
पुरुष के वहाँ जाने की पूर्ण रूप मे मनाही थी और इसके लिए बादशाह की तरफ से
था। राठौर पृथ्वीराज की स्त्री भी इस उत्सव मे एक बार शामिल हुई थी और वह
मे गयी थी। उस मेले मे न जाने कितनी स्त्रियो की मर्यादा नष्ट हो चुकी थी।
की स्त्री ने बडे साहस और शौर्य के साथ अपनी मर्यादा की रक्षा की। वह शक्तावत
थी और मेवाड मे व्याही थी। उस मेले मे मुगल बादशाह का ध्यान पृथ्वीराज की
गया और उसकी सुन्दरता को देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ। उसकी भावनाये
प्रकार उस मेले मे से उसने पृथ्वीराज की स्त्री को अलग लाने की चेष्टा की। उस मौ
की दूषित भावनाओ को समझकर पृथ्वीराज की स्त्री ने आवेश मे आकर और अपने
हुई कटार को निकालकर कहा : "खबरदार, अगर इस प्रकार की तू ने हिम्मत की

अनेक प्रशंसाओ के साथ राजपूतो के गौरव को स्वीकार किया । यह उसकी उदारता थी कि उसने अपने दरबार मे अमरसिह की उपस्थिति को क्षमा कर दिया । मुगलो ने राणा के प्रिय आलमगु-मान हाथी को पकड़ कर बादशाह को भेंट किया था और जहाँगीर उस पर बैठ कर अपनी राज-धानी मे घूमने निकला था, विजय की खुशी मे उसका ऐसा करना, सार्वजनिक उत्सवो की अपेक्षा कही श्रेष्ठ था । जहाँगीर ने अपने लड़के को राणा के पास भेजने के समय हिदायत दी थी कि वह राणा के साथ ठीक उसी प्रकार का व्यवहार करे, जैसा कि एक बादशाह का दूसरे बादशाह के साथ होना चाहिए । उसका यह व्यवहार [illegible] इस बात का प्रमाण है कि वह मनुष्य का सम्मान करना जानता था और उसकी यह नीति किसी भी मनुष्य के हृदय पर प्रभाव डालती है । उसकी यह उदारता उसको अधिक सम्मान पाने का अधिकारी बनाती है । शत्रुओ के राजा के प्रमुख को उसका स्वीकार करना उसकी श्रेष्ठता का प्रमाण है, मेवाड़ के कर्ण राणा के आने पर उसने उसको अन्य उपस्थित राजाओ से अधिक सम्मान दे कर अपने दाहिनी तरफ स्थान दिया । उसने कर्ण के सकोच और लज्जा-भाव को देख कर उसका [illegible] है उससे मालूम होता है कि वह कर्ण की तरफ से सतर्क रहा है । राणा अमरसिंह के दरबार मे आने पर उसके व्यवहार मे बादशाह ने एक सुन्दर शिष्टाचार का अनुभव किया और उसकी प्रशसा की ।

राणा अमरसिह ने अन्त तक अपनी योग्यता और बहादुरी का प्रमाण दिया । वह प्रसिद्ध सीसोदिया वंश मे पैदा हुआ, राणा प्रताप का लड़का था । पिता के बाद उसने बड़ी बुद्धिमानी के साथ सिंहासन पर बैठ कर अपने कर्तव्य का पालन किया । मेवाड़-राज्य मे जितने भी राजा हुए, अमरसिह सभी से योग्य और श्रेष्ठ था ।

बाइसवां परिच्छेद

अमरसिह की मृत्यु—उसका लड़का कर्ण राज्य के सिंहासन पर—मेवाड़-राज्य की दशा—आर्थिक दशा का सुधार—राणा कर्ण के जीवन मे साहस और पुरुषार्थ—प्रजा को सभी प्रकार की सुविधायें—राज्य की आर्थिक निर्बलता को दूर करने के लिए राणा कर्ण का प्रयास—बादशाह जहाँगीर के दरबार मे राणा कर्ण को सम्मान—मुगल दरबार मे स्वाभिमानी राजपूतो का सम्मान—राणा कर्ण के द्वारा मेवाड़-राज्य की उन्नति—राणा कर्ण का छोटा भाई भीम—भीम और शाहजादा खुर्रम—भीम और खुर्रम मे स्नेहपूर्ण व्यवहार—मुगल शासन का अधिकारी शाहजादा परवेज—भीम शाहजादा खुर्रम का पक्षपाती था—भीम पर बादशाह जहाँगीर का अवि-श्वास—शाहजादा खुर्रम की प्रसिद्धि—बादशाह शाहजहाँ के नाम से वह जोधबाई (जगत गोसाई) का पुत्र था—भीम और मुगल सेना पराजय के बाद भीम का संहार—राणा कर्ण के महल मे शाहजादा खुर्रम—उदयपुर मे शाहजादा खुर्रम को सम्मान—मेवाड़ के सिंहासन पर राणा जगतसिह—राणा जगतसिह मे शासन की योग्यता—बादशाह शाहजहाँ के बुढ़ापे मे उसके लड़को का विद्रोह—राजसिह के द्वारा दारा शिकोह का समर्थन—मुगलो के घरेलू संघर्ष मे राज-स्थान के राजाओ ने राजसिह का समर्थन किया—दारा के समर्थक राजपूत राजाओ के साथ औरंग-जेब की शत्रुता—बादशाह औरंगजेब और प्रभावती—औरंगजेब के साथ राणा राजसिह का संघर्ष ।

अमरसिह के मृत्यु के बाद उसका बड़ा लड़का कर्ण अपने पिता के राज सिंहासन पर सम्वत् १६७७ सन् १६२१ ईसवी मे बैठा । इसके पहले से ही मेवाड़ राज्य लगातार युद्धो के कारण शक्ति-

नगर मालपुर को लूट कर बरबाद कर दिया। इसके वाद अपनी सेना के साथ प्रताप
तरफ रवाना हुआ। उदयपुर मे भी शत्रुओ का अधिकार हो गया था। परन्तु इस
कई स्थानो पर मुगल सेनाओ की पराजय हुई और राणा प्रतापसिह की राजपूत से
तो उस समय उदयपुर से विना युद्ध किये चली गयी। इसके वाद अकवर ने राणा
युद्ध वन्द कर दिया।

राणा प्रतापसिह का अब बुढापा आ गया था। सम्पूर्ण जीवन युद्ध करके
कठिनाइयो का सामना करके जिस प्रकार राणा ने अपना जीवन व्यतीत किया उसकी
इस ससार से मिट न सकेगी। अपने जीवन मे राणा ने जो प्रतिज्ञा की थी, अत
निभाया। राजप्रासाद को छोडकर पेशोला सरोवर के समीप प्रतापसिह ने कुछ झोपि
थी कि जिनसे जाडे की सरदी मे और वरसात के पानी मे रक्षा हो सके। इन्ही झो
परिवार को लेकर राणा ने जीवन व्यतीत किया। अब जीवन के अतिम दिन थे। र
के उद्धार की प्रतिज्ञा की थी। उसमे सफलता न मिली। परन्तु वादशाह की विश
को थोडे से राजपूतो के द्वारा इतना छकाया कि अत मे अकवर को युद्ध वन्द कर देन

राणा के शौर्य, स्वाभिमान और कष्ट सहन से मेवाड का प्रत्येक राजपूत शूरवी
वन गया। युद्ध वन्द होने के पहले तक राणा ने वहादुरी के साथ मुगल वादशाह से मो
कभी अपना मस्तक नीचा न किया। अब वृद्धावस्था के दिन थे। एक दिन अपनी झो
थकान और वेवसी की दशा मे लेटे हुए अपने सरदारो के साथ वाते कर रहा था।
नेत्रो से आँसू गिरते हुए देखकर सरदारो ने इसका कारण पूछा। उनको उत्तर देते
कहा · अब मेरा अतिम समय है। लेकिन एक ही कारण है जिससे मेरे प्राण नही नि

इतना कहकर राणा ने सरदारो की तरफ देखा और फिर कहा 'आप लो
प्रतिज्ञा करे कि अपने प्राणो के रहते हुए आप लोग मेवाड की भूमि पर शत्रुओ क
करने देगे। आपके मूँह से इस प्रकार का आश्वसन पाकर मै सदा के लिए आँखे वन
मेरा लडका अमरसिह अपने पूर्वजो के गौरव की रक्षा न कर सकेगा। इस वात को मै
वह शत्रुओ से अपनी मातृ भूमि को सुरक्षित नही रख सकता। अमरसिह स्वभाव भ
जो कष्टो का सामना नही कर सकता, वह अपने जीवन मे कभी कोई वडा काम
इतना कहने के वाद राणा का गला भर आया। कुछ रुककर उसने फिर कहना आ
"एक दिन इस झोपड़ी मे प्रवेश करने के समय अमरसिह अपने सिर की पगडी उतार
था। इसलिए झोपडी के दरवाजे पर लगे हुए वॉस से टकराकर उसकी पगडी
अमरसिह को यह देखकर वुरा लगा। उसने दूसरे दिन मुझसे कहा, रहने के लिये ऐसा
दीजिए, जिससे इस प्रकार का फिर कोई कष्ट न हो।"

यह कहते-कहते राणा गम्भीर हो उठा उसके वाद उसे एक ठण्डी साँस लेकर
यह कहा · "मेरे मरने के वाद इन झोपडियो के स्थान पर राज महल वनेगे और
रहा करेगा। राज महलो मे रहने वाला जीवन के कठोर व्रत का पालन नही कर
की अभिलाषा रखने वाला कभी कोई महान कार्य करने के योग्य नही होता। अमर
है। उसके द्वारा पूर्वजो के गौरव की रक्षा का विश्वास करना विलकुल व्यर्थ है।
मिली हुए स्वतन्त्रता, अमरसिह के समय फिर चली जायगी और जिस स्वतन्त्रता के
राज्य के अगणित शूरवीर राजपूतो ने अपने प्राणो का वलिदान किया, वह स्वतन्त्रता
के अधिकार मे चली जायगी। जिस स्वतन्त्रता के लिए अपने प्यारे राजपूत सैनिको

और वादशाह अकवर मे पत्र व्यवहार भी होते रहे थे। हेनरी और एलिजावेथ के तरह अकवर के मन्त्री भी सुयोग्य और राजनीतिज्ञ थे। फ्रांस के राजमन्त्री सूली की साम्राज्य का मन्त्री वहराम खाँ समझदार और वहादुर था। उसी की योग्यता के साम्राज्य की वहुत वृद्धि हुई। अकवर की उन्नति के इस प्रकार कई कारण थे।

राजा मानसिह वादशाह अकवर से मिलकर और सभी प्रकार मुगल साम्राज्य करके अकवर का दाहिना हाथ वन गया था। वादशाह की सेना मे वह एक प्रसिद्ध और राजपूत राजाओ को अकवर की अधीनता मे लाने के लिए उसने वहुत वडा क अपने इन कार्यों के द्वारा वह वादशाह का अत्यन्त विश्वास पात्र वन गया था। उसी के के कारण राणा प्रताप के साथ युद्ध वन्द कर देने के वाद सम्राट अकवर और राजा वीच जीवन का एक सघर्ष पैदा हुआ। राजा मानसिह की जो वहन मानवाई सलीम को उससे लडका पैदा हुआ और उसका नाम खुशरो था। वह मानसिंह का भान्जा था। मा भान्जे को दिल्ली के सिहासन पर विठाने की कोशिश में था। उसकी इस कोशिश अकवर को मालूम हो गया। अकवर को इससे वहुत आघात पहुँचा और उसने मानसिंह प्रकार मार डालने का निश्चय किया। उसने माजूम वनवाई और उस माजूम के उसने विष मिलवा दिया। होनहार को कोई नही जानता। अकवर ने विष मिली हुई कर मानसिह को मार डालने की वात सोची थी। परन्तु इसका उलटा हुआ। संयोग से हुई माजूम अकवर स्वय खा गया। जिससे मानसिह तो वच गया लेकिन अकवर की मृत्यु

सिहासन पर वैठकर अमरसिह ने अपने राज्य की उन्नति के कई एक कार्य किये सुधार करवाया। भूमि के अनुसार उन पर कर लगाया गया। जिन सामन्त और राणा प्रताप की सहायता करके कठिनाइयो का सामना किया था, उनको नयी-नयी गयी। इन दिनो मे अमरसिह के सामने जीवन का कोई संघर्ष न था। वह शाँति और अपना जीवन विता रहा था। पेशोला झील के किनारे प्रताप ने अपने रहने के लिए वाई थी, अमरसिह ने वहाँ पर अपने लिए एक छोटा-सा राजमहल वनवाया।

दिल्ली के सिहासन पर वैठे हुए अभी चार वर्ष भी न वीते थे कि जहाँगीर ने अपने ो दूर किया और अमरसिह पर आक्रमण करने की वात वह सोचने लगा। उसे मालू मरसिह शाँतिपूर्वक वैठा हुआ है। उसके पास युद्ध की कोई तैयारी नही है। इस प्रकार ाकर दिल्ली की मुगल सेना मेवाड की तरफ रवाना हुई। इस समाचार के मिलते ही वरा उठा। उसने इस प्रकार के आक्रमण का कोई अनुमान न किया था। अपने महल ह सतोप का जीवन विता रहा था। इन दिनो मे उसकी विलासिता वढ गयी थी। शांति

* वुढापे के दिनो मे अकवर और मानसिह के वीच वैमनस्य पैदा हो गया था। य ा वादशाह के उत्तराधिकार के सम्बन्ध मे। मानसिंह ने अकवर की वडी सहायता की थी े कारण अकवर के आधे राज्य की वृद्धि हुई थी। अकवर भी इसीलिए उसका वहुत था। उत्तराधिकार के सम्बन्ध मे अकवर और मानसिह का वैमनस्य वढता चला गया। उसने म विष देकर मारने की कोशिश की थी। परन्तु वह विष अकवर के लिए ही प्राण घातक हो गय ने जो कुछ सोचा था, नैतिकता की दृष्टि से वह एक अपराध था। उस अपराध का वदला उ

भयानक आक्रमण किया । खानखाना के भाई मुगल सेना का सेनापति था । देवेरा पर्व
रास्ते पर दोनो सेनाओ का सामना हुआ और भीषण युद्ध आरम्भ हो गया । दोनो त
देर तक युद्ध होता रहा । उस मारकाट मे दोनो सेनाओ के बहुत से आदमी मारे गये
का समय हो रहा था । राजपूत सरदारो ने इस समय भयानक मारकाट की । उससे
मुगल मारे गये । दिल्ली की सेना पीछे हटकर भागने लगी और थोडी ही देर मे युद्ध
गया । सम्बत् १६६४ सन् १६०८ ईसवी को इस सग्राम मे राजपूतो की विजय हुई ।
राजपूत सेना के कर्ण ने अपनी बहादुरी का परिचय दिया । वह राणा का चाचा था
कर्णावत गोत्र की उत्पति हुई ।

इस युद्ध मे पराजित होने के कारण दिल्ली मे बहुत असंतोष पैदा हुआ । ब
गीर ने इस पराजय की आशा न की थी । इसलिए एक वष के बाद सम्वत् १६६५
युद्ध की दिल्ली मे फिर तैयारी की गयी और एक विशाल मुगल सेना को लेकर अ
सेनापति मेवाड की तरफ चला । इस आक्रमण का समाचार राणा अमरसिह को मि
समय उसने अपने सरदारो को बुलाकर एकत्रित किया और युद्ध की तैयारी करके वह
के साथ रवाना हुआ । रणपुर नाम के पहाड़ी रास्ते पर दोनो सेनाओ का आमना-स
और मारकाट आरम्भ हो गयी ।

दोनो तरफ से बहुत समय तक भीषण युद्ध हुआ । अन्त मे राजपूतो के आगे बढ़
सेना पीछे हटने लगी । उस समय राजपूतो ने मुगलो पर भयानक आक्रमण किया । उस
रूप लगभग सम्पूर्ण मुगल सेना मारी गयी । जो मुगल सैनिक बाकी बचे, वे युद्ध से भाग

देवीर और रणपुर के युद्धो मे मुगलो की भयानक पराजय हुई । इस हार से
अनेक प्रकार की चिन्ताये होने लगी । वादशाह जहाँगीर चिन्तित होकर तरह-तरह
सोचने लगा । उसने किसी प्रकार अमरसिह को नीचा दिखाने के लिए अपने मत्रियो से
किया । उसने सागर जी नामक राजपूत को राणा बनाकर चित्तौर के सिहासन पर बिठ
सागर जी के सम्बन्ध मे पहले लिखा जा चुका है । वह राणा प्रताप का भाई था और
अकबर से मिल गया था । बादशाह जहाँगीर ने स्वय सागर जी का अभिषेक किया
चित्तौर का राजा घोषित किया ।

चित्तौर के सिहासन पर सागर जी को बिठाकर बादशाह जहाँगीर ने समझा था
के राजपूत सागर जी को अपना राजा मान लेगे और इस प्रकार मेवाड़ राज्य मुगलो की
मे आ जायगा । परन्तु ऐसा नही हुआ । मेवाड की प्रजा पहले से ही इस बात को जानत
सागर जी मुगलो से मिल गया है । इसलिए समस्त मेवाड के लोग सागर जी से घृणा
चित्तौर के सिहासन पर बैठने से सागर जी से मेवाड के लोग और भी अधिक घृणा
अभिषेक के उत्सव मे राज्य का कोई भी आदमी शामिल न हुआ । चित्तौर मे रहकर
ने स्वय इस बात को समझा कि यहाँ के लोग मुझको पापी और अपराधी समझते है ।

इस प्रकार के जीवन मे सागर जी ने चित्तौर के सिहासन पर बैठकर सात वर्ष त

* इस लडाई मे राजपुतो की तरफ जो सरदार मारे गये, उनमे प्रमुख इस प्रका
देवगड के ठाकुर दूधा सगावत, नारायण दास, सूरजमल, यशकरण,शक्तावत सरदार,
पुत्र पूर्णमल, राठौर हरिदास, साद्री का राजा झाला, कटिरदास कछवाहा, बेदला का
केशवदास, मुकुन्ददास राठौर और जयमाल का बशज जयमलोत ।

दोनो सरदारों में इस झगडे के वढ जाने पर राणा अमरसिंह ने निर्णय "अन्तला दुर्ग पर पहुँचकर सबसे पहले अधिकार करने का जो प्रमाण देगा, इस अधिकारी होगा।"

राणा के इस निर्णय को सुनकर दोनो ही सरदारो ने स्वीकार कर लि अपने साथ के राजपूतो को लेकर उस दुर्ग की तरफ रवाना हुए। राणा अमर से अन्तला दुर्ग की दूरी नौ कोस थी। यह दुर्ग ऊँची जमीन पर बना हुँआ है तरफ मजबूत पत्थरो की मोटी दीवार है। उस दुर्ग के ऊपर एक सरदार अपनी छ साथ रहा करता था। उसके रहने के लिये दुर्ग के भीतर एक सुरक्षित राजमहल है तरफ खाई खुदी है। उसमे प्रवेश करने के लिये एक ही द्वार है।

इस दुर्ग पर मुगलो का अधिकार था। दुर्ग के रक्षक सरदार और उसके सैनि के बाद ही उस पर अधिकार किया जा सकता था। इसी उद्देश्य मे चन्दावत और श तरफ रवाना हुए थे। सबसे पहले उस दुर्ग के सामने शक्तावत लोग पहुँचे। वहाँ के बात की कोई जानकारी न थी। शक्तावत राजपूतो ने दुर्ग पर आक्रमण किया। उस रक्षक सरदार ने अपने सैनिको के साथ आकर सामना किया। दोनो तरफ से मार हो गयी।

चन्दावत लोग अन्तला दुर्ग का रास्ता भूल गये थे और वे एक ऐसे स्थान थे, जो बहुत दूर तक जल से भरा हुँआ था। उस जलमयी भूमि के कारण अन्तला का खोजना चन्दावत लोगों के लिए मुश्किल हो रहा था। इस दशा मे किसी गडरिये से उन लोगो को रास्ता मिला और उसके बाद वे लोग अन्तला दुर्ग के सामने प अपने साथ एक मजबूत और लम्बी सीढी ले गये थे। उसकी सहायता से चन्दावत चढने की कोशिश करने लगे।

दुर्ग के मुस्लिम अधिकारी ने चन्दावत सरदार के ऊपर एक गोला छोडा। नीचे गिर गया। इस समय चन्दावत और शक्तावत कुछ देर के लिए रुके और फिर शक्ति लगाकर उस दुर्ग पर चढने लगे। शक्तावत सरदार हाथी पर था। उसने अपना द्वार की तरफ बढाया द्वार के मजबूत किवाडो मे लोहे के काँटेदार मोटे-मोटे कीले लगे हाथी के मस्तक का आघात किवाडो को तोड न सका। उस समय एक साथ चन्दा तरफ से जोरदार आवाज उठी। शक्तावत सरदार ने उस आवाज को सुना। वह अ उतर पडा और किवाडो मे लगे हुए लोहे पर पैर रखते हुए वह ऊपर चढ गया और उसकी आज्ञा से हाथी को तेजी के साथ आगे बढावा। इस बार हाथी के भीषण आधा किवाडे टूट गये। लेकिन उन किवाडो के गिरने के साथ-साथ शक्तावत सरदार चोट पर गिरा और तुरन्त उसके प्राण निकल गये। उसके साथ के राजपूत सैनिको ने इस ब भी परवा न की। उनका सरदार हाथी के आघात से चोट खाकर मर गया। परन्तु ने उसकी तरफ देखा तक नही और उसके मृत शरीर पर उसके समस्त राजपूत पैर रख तेजी के साथ खुले हुए द्वार के भीतर चले गये। चन्दावत सरदार गिरकर पहले ही परन्तु शक्तावत लोगो ने दुर्ग पर पहुँचकर देखा कि चन्दावत सरदार का मृत शरीर मौजूद है। उसके गिरने के कुछ ही देर वाद चन्दावत लोगो का जो जय-घोष सुना वह दुर्ग की विजय का परिचय का था और वह चन्दावत लोगो की तरफ से हुआ था।

दुर्ग के सरदार के गोले से गिरकर मर जाने पर उसके स्थान की पूर्ति दूसरे

भर उसका मुकाबिला किया । इन तीनों दिनों में मनुष्य अधिक संख्या में मारे गये । बादशाह की फौज बहुत बड़ी थी । पचास हजार सैनिकों से उसको पराजित करना बहुत कठिन था । इस बात को सरदार चूड़ावत भी जानता था । वह तो राणा राजसिंह के परामर्श के अनुसार बादशाह को रास्ते में उतने समय तक रोकना चाहता था, जिससे कि राणा राजसिंह प्रभावती का व्याह करके उदयपुर चला जाय और उसके बाद रूपनगर पहुँचने पर बादशाह औरङ्गजेब को प्रभावती न मिले ।

तीसरे दिन के भयानक युद्ध में बादशाह के साथ चूड़ावत सरदार की बातचीत हुई । बादशाह ने मुगल सेना के निकल जाने के लिए रास्ता मांगा । सरदार ने समझ लिया कि मुगल सेना को रोकने के लिए जितनी आवश्यकता थी, उतनी पूरी हो चुकी है और रूपनगर यहाँ से काफी दूर है । बादशाह की फौज के पहुँचने के पहले ही राजसिंह प्रभावती को लेकर उदयपुर चला जायगा । उसने बादशाह को उत्तर देते हुए कहा "कि रास्ता देने के लिए तैयार हूँ । लेकिन आप आदरपूर्वक मेरी एक छोटी-सी बात को मंजूर करें ।"

बादशाह किसी भी मूल्य में रूपनगर पहुँचना चाहता था । सरदार के युद्ध की मार उसको असह्य हो रही थी । उसने चूड़ावत की बात को सुना और पूछने के बाद उसकी मांग को मंजूर करने का वादा किया । इसके बाद चूड़ावत सरदार ने कहा "इस युद्ध के बाद उदयपुर में आप कोई आक्रमण न करेंगे । आपके इस वादे पर मैं अपनी सेना लेकर चला जाऊँगा और आपके साथ युद्ध न करूँगा।

बादशाह ने चूड़ावत की मांग को मंजूर कर लिया । उसके बाद सरदार अपनी सेना के साथ रास्ते से हट गया । बादशाह की फौज आगे बढ़कर रूपनगर की तरफ रवाना हुई । वहाँ से रूपनगर पहुँचने के लिए तीन दिन का रास्ता बाकी था । बादशाह की फौज चली गयी । चूड़ावत अपनी सेना के साथ उदयपुर की तरफ लौट रहा था । वह घोड़े पर था । उसके शरीर में बहुत से भयानक जख्म थे । उनसे लगातार खून बह रहा था । रास्ते में उसकी हालत बिगड़ने लगी । वह जैसे ही घोड़े से उतारा गया, उसकी मृत्यु हो गयी ।

राणा राजसिंह ने पूर्णिमा के दिन रूपनगर पहुँचकर प्रभावती के साथ विवाह किया और उसके बाद उदयपुर लौट गया । वहाँ पहुँचने पर सरदार चूड़ावत की मृत्यु का समाचार सुना और यह भी सुना कि बादशाह औरङ्गजेब ने दस वर्ष तक कोई आक्रमण न करने का वादा करने के बाद रूपनगर जाने का मार्ग प्राप्त किया था । राणा को प्रभावती के साथ विवाह करने की जितनी प्रसन्नता हुई, उससे अधिक वेदना चूड़ावत सरदार के मरने से उसको हुई ।

जयपुर के राजा जयसिंह और मारवाड के राजा जसवन्तसिंह ने भी मुगल साम्राज्य की अधीनता स्वीकार की थी । लेकिन इन दोनो राजाओं के हृदयो मे राजपूतों का स्वाभिमान था। इस लिए मुगलो की अधीनता मे रहते हुए भी दोनो राणा राजसिंह से प्रेम करते थे और मेवाड राज्य के शुभचिन्तक थे । इन दिनो मे राजसिंह और औरङ्गजेब के बीच शत्रुता की आग सुलग रही थी । इसमे जयसिंह और जसवंतसिंह राणा राजसिंह के पक्षपाती थे और छिपे तौर पर उसकी सहायता करते; इस बात को औरङ्गजेब भली प्रकार जानता था ।

औरङ्गजेब बहुत दिनो तक जयसिंह और जसवतसिंह से जलता रहा । उसने खुले तौर पर इन दोनो के साथ शत्रुता का कोई व्यवहार न किया । लेकिन अवसर पाकर उसने उन दोनो को बिष खिला दिया, उससे उन दोनो की मृत्यु हो गयी । मारवाड के राजा जसवतसिंह के कई एक लडके थे । उनमे अजित सब से बडा था । पिता के मरने के समय अजित की अवस्था छोटी थी । उसका पालन-पोषण करने के उद्देश्य से उसकी माता अपने पति के साथ सती नही हुई थी । वह अपने इस

ही समय बाद मुगलों की एक बडी फौज तैयार हुई और राणा अमरसिंह पर
लिए वह भेजी गयी। उस फौज का सेनापति जहाँगीर का लड़का परवेज था। यह
मे जा कर रुकी। बादशाह जहाँगीर ने उस समय परवेज को अपने पास बुला कर
करने वाली बहुत-सी बाते कही और समझाया "तुम इस हमले मे अपनी कोई
रखना। मुझे उम्मेद है कि तुमको फतहयाबी हासिल होगी। लेकिन अगर राणा
उसका लडका कर्ण तुम्हारे पास आवे तो तुम खातिरदारी का व्यवहार उसके सा
उस अदब-कायदे को भूल न जाना जो एक बादशाह की तरफ से दूसरे बादशाह
होता है। इस बात का भी ख्याल रखना कि दुश्मन के मुल्क को तुम्हारी फौज के
किसी किस्म का नुकसान न पहुँचे।"

मुगल सेना के आने का समाचार पाकर अमरसिंह ने युद्ध की तैयारी की और
तथा सरदारो के साथ वह मुगल सेना का मुकाबिला करने के लिये रवाना हुआ।
पहाडी रास्ते पर दोनो सेनाओ का सामना हुआ और खामनोर नामक स्थान पर
गया। दोनो तरफ से भयानक मारकाट हुई। अन्त मे मुगलो की विशाल सेना लग
लगी। बादशाह के बहुत-से आदमी मारे गये। इसके बाद दिल्ली की फौज अजमेर की तर

बादशाह जहाँगीर ने अपने लडके परवेज के साथ मुगल सेना भेज कर यह आ
इस लडाई मे मुगलो की जीत होगी। परन्तु उसका उलटा हुआ। अब्बुल फजल ने
हार को मजूर करते हुये लिखा है: "शाहजादा परवेज लडाई से भागने के बाद एक
मुकाम पर पहुँच गया कि जो उसके लिये बहुत खतरनाक साबित हुआ। उस हालत
परवेज वहाँ से निकल कर किसी तरह अपनी जान बचा सका।"

परवेज की सेना के हार जाने के बाद बादशाह ने दूसरी फौज तैयार की औ
महावत खाँ को उसका सेनापति बना कर राजपूतो से लड़ने के लिये भेजा। महा
बहादुर था और उसने कई लडाइयो मे विजय प्राप्त की थी। लगातार राजपूतों से
कारण बादशाह ने महावत खाँ को अपनी फौज के साथ रवाना किया।

महावत खाँ ने राजपूतो की सेना के साथ युद्ध किया लेकिन आखीर मे उस
पराजय हुई। परवेज का बेटा महावत खाँ इस लड़ाई मे मारा गया। बादशाह की
कर और दिल्ली पहुँच कर हाल बताया। उसे सुन कर जहाँगीर जरा भी निराश न
पास न तो धन की कमी थी और न फौज की। एक फौज के हार जाने पर वह दूस
राजपूतो से लड़ने के लिए भेज देता था।

मुगलो से लगातार युद्ध करके राणा अमरसिंह की शक्तियाँ अब क्षीण हो गयी
पास सैनिको की अब बहुत कमी थी। शूरवीर सरदार और सामन्त अधिक संख्या मे
थे। लेकिन राणा अमरसिह ने किसी प्रकार अपनी निर्बलता को अनुभव नही किया।
सन पर बैठने के बाद और राणा प्रतापसिह की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली की
सेना के साथ सत्रह युद्ध किये और प्रत्येक युद्ध मे उसने शत्रु की सेना को पराजित कि

लगातार युद्धो मे पराजित होकर बादशाह जहाँगीर ने एक शक्तिशाली सेना
बेटे खुर्रम के अधिकार मे भेजी। यही खुर्रम बाद मे शाहजहाँ के नाम से दिल्ली के सिंहास
वह युद्ध मे लडाकू और समझदार था। खुर्रम की फौज के पहुँचते ही मेवाड राज्य मे
हुई। राजपूत इन दिनो मे अपनी सैनिक निर्बलता को भली भाँति अनुभव करते थे।
शस्त्रो की भी भयानक रूप से कमी थी। बहुत समय से लगातार युद्धकरते हुए अगणित

अकवर को भागने का जब कोई और रास्ता न मिला तो उसने गोगुण्डा के रास्ते से मारवाड-राज्य के खेतो मे गुजरते हुये निकल जाने का इरादा किया था। लेकिन इसमे भी उसको सफलता नही मिली । सामन्त लोग अपनी सेनाओ के साथ अकबर के निकलने का रास्ता घेरे हुये थे । पीछे की तरफ जयसिह और उसकी सेना थी । अकबर चारो तरफ से घिरा हुआ था । अपने निकलने का कोई रास्ता उसे दिखायी न पडा । इस दशा मे उसको कई एक दिन वीत गये । निराश होकर उसने जयसिह से प्रार्थना की और वादा किया कि आज के बाद सारी लडाइयां खत्म हो जायंगी। इसके बाद जयसिह ने उसके प्राणो की रक्षा की । अकबर वहां से निकलकर चला गया ।*

---

* प्रसिद्ध लेखक अर्म ने लिखा है कि औरङ्गजेब स्वय अपने इस आक्रमण के समय राजपूतो

ताकत का पूरा यकीन था, वे अपनी कौम के नाम पर मगरूर थे, वे हिन्दूस्तान के
को राजा नही समझते थे, उन्होने कभी किसी के सामने सिर नही झुकाया था।
इस अच्छे मौके को हाथ से जाने देना मैने मुनासिब नही समझा। इसलिए फौरन
इख्तियारात दे कर भेजा और राणा को माफी दी। साथ ही एक फरमान भेज
लिख दिया कि आप मेरे साथ बिना किसी फिक्र के रहेगे। उस फरमान पर मैने
लगा दिया। मैने अपने लडके को ताकीद कर दी कि उस मुअज्जिज राणा की मश
के मुआफिक सब बाते काम मे लाई जावे।''

''मेरे लडके ने यह फरसान और एक चिट्ठी सूपकर्ण और हरिदास के जरि
और इन दोंनो सरदारो के साथ शुक्रउल्ला व सुन्दरदास को भी रवाना किया।
कहला भेजा कि बादहाश इस दस्तखती परवाने को कबूल करे। बाद इसके कुछ ता
साहब का शाहजादे के पास आना करार पाया।''

''शिकार खेलने के लिए जब मै अजमेर गया, उस वख्त शाहजादे खुर्रम
नामी नौकर मेरे पास आया उसने खुर्रम की दस्तखती एक चिट्ठी देकर मुझसे
शाहजादा साहब से मुलाकात की थी।''

''इस खबर को सुनते ही मैने मुहम्मद बेग को एक हाथी, एक घोडा औ
इनाम मे दी और उसको जुलफिकार-खाँ की पदवी दी।''

''सुलतान खुर्रम के साथ राणा अमरसिह और राजकुमार कर्ण की मुला
नूरजहाँ का कर्ण को इज्जत के साथ ओहदा देने का बयान।''

''राणा अमरसिंह ने तारीख २६ इकशम्बा के रोज बादशाहत के दूसरे म
तरह इज्जत और लियाकत के साथ शाहजादा से मुलाकात की। मुलाकात के वख्त
शाहजादा खुर्रम को एक वेशकीमती पदमराग, बहुत-से हथियार, बडी कीमत के हाथ
खिराज मे दिये। शाहजादा ने भी उसको हलीमियत और इज्जत के कबूल किया।
शाहजादे के घुटनो को पकड कर माफी चाही। खुर्रम ने भी अच्छी तरह से उनको
दिलासा दिया और एक हाथी, कई घोडे और एक तलवार लायक लिखत भी उन
साहब साथ मे जो राजपूत थे, उनके लिये भी एक सौ बीस खिलत, पचास घोडे और
हुए बारह सिरपेच (कलगी) भेजे गये। अगरचे इन लोगो मे सौ आदमियो से ७
के लायक नही थे तो भी यह सब सामान उनमे बाँट दिया गया। इन राजा लोगो
चला आता है कि बाप-बेटे दोनो एक साथ हम लोगो की मुलाकात को नही आते
इस रिवाज के मुताविक काम किया। वे अपने लडके को साथ नही लाये। उस दिन
ने अमरसिह को रुखसत कर दिया। उस वक्त उनसे वलीअहद कर्ण के भेज देने का
लिया। वक्त पर कर्ण आया। हाथी, तलवार और दूसरे हथियारो के सिवा तरह-
उसको दिये गये। उस दिन ही साहजादे के साथ वह मुझसे मुलाकात करने के लिए

''सुलतान खुर्रम ने मुझसे मुलाकात करके कहा कि अगर हुजूर हुक्म दे तो
आप की कदमबोसी हासिल करे। मैने उसके लाने का हुक्म दिया। वह आजजी और
आया। वादजाँ सुलतान खुर्रम की सिफारिश से मैने उसको अपनी दाहिनी तरफ वि
एक उमदा खिलत दी। राजकुमार इसलिए शरमाया कि वह सख्त पहाडी मुल्को मे
दरबार के कायदो से महज नावाकिफ और ऐश आरामो के सामानो से बिलकुल
शाही के दबदबे को उसने कभी नही देखा था। वह बहुत कम बोलता और हम लोगो

यह समाचार औरङ्गजेब ने सुना । वह घबरा गया । उस समय उसकी दशा बहुत दुर्बल हो गयी थी । इन दिनों में राजपूतों के साथ जो युद्ध चला था, उसमें कई स्थानों पर मुगलों का बुरी तरह संहार हुआ था । उसने दूरदर्शिता से काम लिया था और अपने एक पत्र अकबर के नाम पर पत्र लिख कर भेज दिया । बादशाह का वह पत्र ऐसे ढङ्ग से भेजा गया था कि वह अकबर को न मिल कर दुर्गादास को मिला । मुगल सिंहासन पर अकबर को बिठाने की जो योजना तैयार की थी, उसकी जिम्मेदारी बहुत-कुछ दुर्गादास पर ही थी । पत्र को पढ़ कर दुर्गादास का विश्वास अकबर से हट गया । वह पत्र कुछ ऐसा लिखा हुआ था कि जिससे दुर्गादास को मालूम हुआ कि अकबर स्वयं सिंहासन पर बैठने के बहाने राजपूतों के साथ धोखा करने की कोशिश में है । इसीलिए अकबर को सिंहासन पर बिठाने की जो योजना शुरू की गयी थी, वह खत्म कर दी गयी । औरङ्गजेब की चालाकी सफल हुई । अकबर अत्यन्त दुखी और निराश हो कर इसके बाद फारस देश की तरफ चला गया ।

औरङ्गजेब की दशा इन दिनों में बहुत निर्बल हो गयी थी । वह अब राजपूतों के साथ युद्ध नही करना चाहता था । इसलिए बीकानेर के श्यामसिंह नाम के एक राजपूत को बीच मे डालकर औरङ्गजेब ने राणा राजसिंह के साथ सन्धि की । परन्तु उस होने वाली सन्धि के पहले ही सम्वत् १७३७ सन् १६८१ ईसवी मे राणा राजसिंह की मृत्यु हो गयी । सिंहासन पर बैठने के बाद उसने लगातार युद्ध किये थे और उसके शरीर मे बहुत-से जख्म हो गये थे । उन्ही के कारण उसकी हुई ।

राणा राजसिंह ने अपने शासन काल मे राज्य के वैभव के लिए बहुत से काम किये । गोमती नामक पहाडी नदी की धारा को रोक कर उसने एक बहुत बडी झील बनवाई और अपने नाम के आधार पर राजसमुन्द उसका नाम रखा । यह झील बहुत गहरी है और उसका घेरा लगभग बारह मील का है । यह झील सगमरमर से बनवायी गयी । उसकी सीढ़ियाँ भी सगमरमर की बनी हैं । उस झील की दक्षिण तरफ राणा ने एक नगर बसाया था और उसका नाम राजनगर रखा । उसने सगमरमर का एक मदिर भी बनवाया था । उसके बनवाने मे अट्ठानबे लाख रुपये

बाकी सब सामान फेर दिया। उस दिन यह बात भी करार पाई कि राजकुमार
सौ राजपूतो के मैदान जग में शाहजादा खुर्रम के पास रहे।"

"अपनी सलतनत के तेरहवे वर्ष मे जिस वख्त मेरा दरबार सिदला मे लग
पर राजकुमार कर्ण ने आकर मुझसे मुलाकात की। मुझको मुल्क दक्खन
कामयाबी हासिल हुई थी, उसके लिए खुशी जाहिर कर कर्णसिंह ने सौ मोहर,
तरह-तरह के नजराने और इक्कीस हजार रुपये के सोने चाँदी के जेबरात् व बहुत
मुझको दिये। हाथी, घोडों को वापिस करके बाकी सब नजराना मैने ले लिया,
उसको खिलत देकर फतेहपुरसे लौट जाने का हुक्म दिया। वक्त रुख्सत के उसको
घोड़ा, तलवार व कटार और उसके बाप के लिए एक उमदा घोडा यह सामान

"चौदहवाँ साल। तारीख १७ रवि-उल-अव्वल हिजरी सन् १०२६ को
बहिश्त नशीन होने की खबर पायी। राणा का बेटा भीमसिह और पोता जगतसिह
मेरे पास आये थे। उनको मैने तरह-तरह के खिलत दिये और राजा किशोरीदास
चिट्ठी जिसमे तसल्ली दी गयी थी, कितने एक उमदा घोडे, तख्तनशीन होने का
रवाना करके कर्णसिह को राणा का खिताब दिया। बादजाँ ७ वीं सव्वाल को
की मारफत एक फरमान जिस पर मेरा पजा लगा हुआ था, रवाना करके कहला
लडका मुकर्रिर फौज को साथ लेकर मेरे पास हाजिर हो।"

बादशाह जहाँगीर की यहाँ पर लिखी हुई पक्तियो की एक पक्षीय आलोच
राज्य के गौरव को कम कर सकती है। इसलिए निष्पक्ष भाव से उन पर प्रकाश
श्यकत्ता है। शाहजादा खुर्रम के मुकाबिले मे राजपूतो की पराजय के कारण अम
मुगलो की अधीनता स्वीकार करनी पडी। इतना लिख देने से मेवाड के राजपूतो
व्यक्त न हो सकता था और न राणा अमरसिह के उस साहस और धैर्य का
सकता था, जिसके द्वारा उसने राणा प्रताप के मरने के बाद मेवाड-राज्य के गौरव
था। जहाँगीर के उल्लेख से मेवाड का यह गौरव साफ साफ हमारे सामने आ
दिनो मे मुगल बादशाह के निकट कायम हुँआ। इस परतत्रता के बावजूद भी जहाँग
को वह सम्मान दिया, जो इसके पहले मुगलो से मेवाड-को कभी न मिला था। इस स
ही हम मेबाड के राजपूतो का शौर्य, स्वाभिमान, बलिदान और साहस अनुभव करते है
जहाँगीर के श्रेष्ठ चरित उदार भाव बडप्पन और निष्पक्ष भाव को स्वीकार करने के
पडता है इसमे कोई सन्देह नही कि अमरसिंह के अधीनता स्वीकार करने पर बादशाह
परतु उस प्रसन्नता मे उसका अहंभाव, अभिमान और अमरसिंह के प्रति अपमान
उसने अपनी लेखनी के द्वारा मेवाड के गौरव को स्वीकार किया। बहुत समय तक
प्रकार स्वाभिमान के साथ मुगलो से युद्ध किया था और भयकर कष्टो के जीवन मे
नीचा करने का विचार न किया, अमरसिंह और उसके पूर्वजो के इन गुणो की उसने
और उनके इस क्षत्रियोचित कार्य को बधाई दी। उसने निष्पक्ष भाव से अमरसिंह
के उस श्रेष्ठ उद्देश्य को स्वीकार किया, जिसके लिए उनको मुगलो के साथ इतने
करना पडा था। अधीनता स्वीकार करने के लिए पैगाम भेजने पर जहाँगीर ने
न्यायपूर्ण व्यवहार किया, यह पैगाम उसने उसी समय भेजा, जब उसके सामने दो ह
थी, वह या तो गिरफतार हो सकता था अथवा देश छोडकर कही चला जा सकता
सामने इन दो बातो को छोड़कर, तीसरी कोई बात न थी। ऐसे समय पर वा

तेईसवाँ परिच्छेद

गर्मी के दिन थे। उदयपुर से चलकर भीम ने अपने लोगों और नौकरों के साथ देवारी के पहाड़ी मार्ग में प्रवेश किया और दोपहर की तेज धूप में कुछ देर विश्राम करने के उद्देश्य से एक घने वृक्ष की छाया में वह ठहरा। उस समय उसने घूम कर एक बार अपनी जननी जन्म भूमि—उदयपुर की तरफ देखा। उसके बाद साथ के एक नौकर ने चांदी के लोटे में सामने के झरने से ठन्डा पानी लाकर पीने को दिया। भीम ने उसे हाथ में लेकर पीना चाहा। लेकिन उसी समय उसको अपनी शपथ और प्रतिज्ञा का स्मरण हो आया। वह तुरन्त पानी को जमीन पर फेंककर चलने के लिए फिर तैयार हो गया। वहाँ से चलकर भीम अपने पिता का राज्य पारकर बादशाह के बेटे बहादुरशाह के पास पहुँचा। बादशाह ने उसको बड़े सम्मान के साथ लिया और अपने यहाँ तीन हजार सवार सेना का उसको सरदार बना दिया। साथ ही जीवन-निर्वाह के लिए अपने राज्य के बारह जिले उसको दे दिया।

हीन हो गया था। कनकसेन की सौराष्ट्र मे स्थापना से लेकर इस समय तक पन्द्रह
लम्बा समय बीत चुका है। इस बीच मे बप्पा रावल के वश मे होने वाले राजा
प्रकार की विपत्तियाँ आयी और उन विपदाओ के कारण मेवाड के राजाओ को स
अपना राज्य और देश छोड कर पहाडो के जगलो और निर्जन स्थानो मे रह कर
पडा, इसके वर्णन पिछले परिच्छेदों मे किये जा चुके है।

दूसरी शताब्दी के मध्यकाल मे कनकसेन ने लोहकोट को छोडकर सौराष्ट्र के
अस्तित्व कायम किया था। वहाँ पर उसके वशजो का अरसे तक राज्य करना,
समय, असभ्य पार्थियन लोगो का आक्रमण, परिवार के साथ शिलादित्य का मारा ज
वंश की उत्पत्ति, ईदर राज्य की प्राप्ति, बप्पा रावल का समय, चित्तौर पर बप्पा
उदयपुर की प्रतिष्ठा, सीसोदिया वश का गौरव, बाद मे उसकी शोचनीय अवस्था
मेवाड-राज्य का मुगलो की अधीनता मे आना इत्यादि घटनाओ के उल्लेख उनके समु
किये जा चुके है। राणा अमरसिह के बाद उसके पुत्र कर्ण के शासन काल मे मेवाड-
प्रकार करवट बदली और उसके फलस्वरूप, उस राज्य मे जो परिवर्तन हुए, इस प
पर प्रकाश डाला जायगा।

राणा कर्ण का जीवन साहस और चरित्र से भरा हुआ था। सिहासह पर
उसने अपने राज्य की गिरी हुई परिस्थितियो का अध्ययन किया। राज्य सभी प्रका
हो चुका था। शूरवीर लगातार लडाई के कारण मारे जा चुके थे और सम्पत्ति का
रूप से अभाव था। न तो सरकारी खजाने मे रुपया था और न राज्य की प्रजा के
गया था। कर्ण ने इस अभाव को दूर करने की कोशिश की। प्रजा को सभी प्रकार
दी गयी, जिससे वह खेती के व्यवसाय से अपनी आर्थिक उन्नति कर सके। राणा क
ही सतोष न हुआ। इन सुविधाओ के द्वारा राज्य और प्रजा की गरीबी को दूर
बहुत समय की आवश्यकता थी और कर्ण उस अभाव को जल्दी पूरा करने की
इसके लिए उसने अपने साथ सवारो की एक सेना तैयार की और उसे अपने साथ
पहुँच गया। वहाँ उसने लूट-मार की और अपने साथ लूट की एक अच्छी सम्पत्ति ले
आया। इस सम्पत्ति की सहायता से राणा कर्ण ने राज्य के आर्थिक अभाव को ब
किया और उससे प्रजा को भी सहायता मिली।

गहिलोत वश के राजाओ ने डेढ हजार वर्ष तक भारतवर्ष मे सम्मान
साथ शासन किया। इस दीर्घ काल मे उस वश के कई राजाओ को भयानक क
करना पडा। परन्तु उनके गौरव मे कभी कोई अन्तर नही आया। जय और परा
परिस्थितियो मे इस वश के राजाओ ने अपने पूर्वजो के सम्मान की रक्षा की
उन्होने अपनी स्वाधीनता को कभी जाने नही दिया। इस स्वतत्रता की रक्षा के लिए
को अपने जीवन-भर त्याग और बलिदानो के साथ जिस प्रकार सघर्ष करना पड़ा
सीसोदिया वश के राजाओ का गौरव बहुत ऊँचा हो गया था। उसी गौरव का यह
कि दिल्ली का प्रसिद्ध सम्राट अकबर प्रताप के त्याग और कष्ट सहन की प्रशंसा करता
एक दूसरे के शत्रु थे और कुछ समय के आगे-पीछे दोनो के जीवन का अत हुआ।

बहुत दिनो तक युद्ध करने के बाद और लगातार मुगल सेनाओ को पराजित करने
अमरसिह को अपनी विवशता की अवस्था मे मुगलो की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी
के अन्य सभी राजाओ ने भी अकबर की अधीनता मजूर की थी और बहुत पहले मंजू

राणा जयसिह के उदयपुर लौट आने पर अमरसिह ने अपनी माता से परामर्श किया और उसकी सलाह से वह अपने मामा हाडा राजा के पास बूंदी पहुंचा और वहां से दस हजार सैनिक सवारो की सेना लेकर वह उदयपुर आ गया। राणा जयसिह का [illegible]कारी विरोध आरम्भ हुआ राणा जयसिह से मेवाड राज्य के सरदार और सामन्त प्रसन्न न थे। वे सभी राणा को अत्यन्त विलासी और आलसी समझते थे। इसलिए उन लोगो ने राणा का साथ न दिया। जीवन की यह परिस्थिति राणा के लिए अत्यन्त संकटपूर्ण बन गयी। इसके फलस्वरूप राणा उदयपुर से निकल कर गद्दवाड राज्य चला गया और वहां के सामन्त राजा को उसने अमरसिह के पास भेजा। उसने पिता और पुत्र की बढती हुई शत्रुता को मिटाने की कोशिश की। परन्तु वह सफल न हुआ। उदयपुर के सरदारो की सहायता पाकर वह बहुत निडर हो गया था और पिता की मौजूदगी मे वह सिहासन का अधिकार अपने हाथो मे ले लेना चाहता था। राज्य के खजाने पर अपना अधिकार करने के लिए अपनी सेना के साथ वह कमलमीर की तरफ चला। कमलमीर दिग्रा नामके सरदार के हाथ मे था। वह समझदार, शूरवीर और दूरदर्शी था। उसने अमरसिह की विशाल सेना की परवाह न की और उसने अमरसिह को किसी प्रकार सफल न होने दिया।

खुर्रम के साथ उसकी मित्रता थी ही । इस विषय मे भी दोनो मे परामर्श हुआ । भीम परवेज को दिल्ली के सिहासन पर नही देखना चाहता था । इसलिए उसने अपनी से वेज पर आक्रमण किया । दोनो की सेनाओ मे युद्ध हुआ । अत मे मुगल सेना की परा परवेज मारा गया ।

बादशाह जहाँगीर को अभी तक भीम पर किसी प्रकार का सन्देह न था । प उसकी इस लडाई से जहाँगीर को उस पर अविश्वास हो गया । शाहजादा खुर्रम के सा मित्रता थी, बादशाह जहाँगीर से वह छिपी न थी । अब उसे यह भी मालूम हो गया साथ भीम की लडाई का कारण शाहजादा खुर्रम है । इस बात से जहाँगीर और कटुता पैदा हो गयी । भीम के द्वारा परवेज का मारा जाना जहाँगीर को सहन नही हु उसने भीम के साथ युद्ध करने का निर्णय किया और अपनी सेना लेकर वह रवाना

शाहजादा खुर्रम—जो आगे चलकर और सिहासन पर बैठने के बाद शाहजा प्रसिद्ध हुआ—जोधाबाई (जगत गोसाई) से उत्पन्न हुआ था और जोधावाई राठौर र मे उत्पन्न हुई थी । मारवाड राठौर वश गजसिह शाहजादा खुर्रम का नाना था । ग के स्थान पर खुर्रम को दिल्ली के सिहासन पर बिठाना चाहता था और छिपे तौर प इस कोशिश मे लगा था । भीमसिह से लडने के लिये मुगलो की जो सेना रवाना हुई राजा उसका सेनापति था । मुगल सेना के आने का सयाचार पाकर भीम ने उसके के लिए गजसिह के पास सन्देश भेजा ।

मुगल सेना के साथ भीम ने युद्ध किया । मुगल सेना का मुकाबिला करने पास सेना काफी न थी । इसलिए उसकी पराजय हुई और वह स्वय युद्ध मे मारा गया खुर्रम महावत खाँ के साथ, भीम के मारे जाने पर उदयपुर चला गया । वहाँ पर सम्मानपूर्वक उसके रहने की व्यवस्था कर दी और कुछ दिनो के बाद उसके रहने अच्छा-सा महल बनवा दिया ।

शाहजादा खुर्रम बहुत दिनो तक उस महल मे बना रहा । उसके बाद वह ईर चला गया । * सम्बत् १६४८ सन् १५६२ मे राणा कर्ण की मृत्यु हो गयी । उसके लड़का जगतसिह उसके सिहासन पर बैठा । राणा जगतसिह के शासन काल मे मेवाड र वर्ष बडी शान्ति के साथ व्यतीत हुए । कर्ण के मर जाने के थोडे ही दिनो बाद बाद की भी मृत्यु हो गयी । शाहजादा खुर्रम उस समय सूरत मे था । राणा जगतसिह ने पूतो के साथ अपने भाई के द्वारा बादशाह जहाँगीर के मरने का सम्वाद सूरत मे श के पास भेजा । उस सन्देश को पाकर खुर्रम सूरत से उदयपुर चला आया । उसके राज्य के बहुत से सामन्त और सरदार उदयपुर आकर सुलतान खुर्रम से मिले ।

उदयपुर मे सभी लोग महल के भीतर एकत्रित हुये । उस समय राणा सब से पहले शाहजादा खुर्रम को शाहजहाँ कहकर अभिवादन किया । इसके बाद से दिल्ली चला गया । जाने के बाद पहले उसने राणा जगतसिंह को अपने राज्य के दिये और एक कीमती मणि भेंट मे देकर चित्तौर के टूटे हुए दुर्गों की मरम्मत कराने का

मेवाड राज्य के सिहासन पर बैठकर राणा जगतसिह ने छब्बीस वर्ष तक

* कुछ इतिहासकारो का कहना है कि शाहजादा खुर्रम राणा के वनवाये हुए कुछ दिनो के बाद गोलकुण्डा चला गया था ।

मुअज्जम के कुछ स्वाभाविक गुणों ने राजपूतों का [illegible] किया था। वह हिन्दुओं के साथ पक्षपातहीन व्यवहार करता था। एक विशेषता यह भी थी कि उसका जन्म एक राजपूत स्त्री से हुआ था। शाहजहाँ के बाद मुगल सिंहासन पर यदि मुअज्जम बैठा होता तो राजस्थान के राजाओं के साथ मुगल-साम्राज्य की शत्रुता न बढ़ती और मुगलों का शासन बहुत जल्दी कमजोर न पड जाता। परन्तु शाहजहाँ के बाद औरङ्गजेब दिल्ली के सिंहासन पर बैठा और उसने अपने जीवनकाल मे हिन्दुओं के साथ जिस प्रकार घृणित और पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया, उसके फलस्वरूप मुगलों के साथ राजपूतों के जो सम्बन्ध सुदृढ और सहानुभूतिपूर्ण बहुत दिनों से चले आ रहे थे, वे ढीले पड गये और उत्तरोत्तर वे कमजोर पड़ते गये।

शाहआलम ने बादशाह होने के बाद राजपूतों के टूटते हुए सम्बन्धों को फिर से जोडने की चेष्टा की। परन्तु इसके सम्बन्ध मे उसकी सभी कोशिशें बेकार हो गयी। इन्ही दिनो मे छोटे भाई कामबख्श के साथ बादशाह का भयानक झगडा हुआ। कामबख्श ने अपने आपको भारत के दक्षिणी मुगल राज्य का बादशाह घोषित किया। शाहआलम अपने छोटे भाई के इस अन्यायपूर्ण कार्य का कुछ प्रतिकार करना चाहता था, परन्तु उसी बीच मुगल शासन के विरुद्ध सिक्खों का विद्रोह बढ़ा। बादशाह के लिये यह विद्रोह अधिक भयानक मालूम हुआ और उसने सब से पहले सिक्खों के दमन

प्रकट की थी, वे सब के सब औरंगजेब के दुश्मन बन गये । तैमूर के वंशज बाबर ने
के साथ भारत में अपना राज्य कायम किया था और अकबर ने जिस लोकप्रियता
के द्वारा मुगल राज्य का विस्तार किया था, औरंगजेब ने उसकी परवा न की ।
जहाँगीर और शाहजहाँ तक कायम रही । दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर दोनों ने
किये हुये विशाल साम्राज्य को कमजोर नही होने दिया । बादशाह अकबर ने हिन्दू
भेद नही माना था । जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी ऐसा ही किया । परन्तु औरंगजे
पर बैठने के पहले ही अपनी जिन्दगी मे ऐसा रास्ता अख्तियार किया कि जो हिन्दू अ
बहुत दिनो से एक दूसरे के मित्र होकर चल रहे थे, वे एक दूसरे के शत्रु बन गये ।

जहाँगीर और शाहजहाँ के शासन काल मे मेवाड और दिल्ली राज्यों की
थी । प्रजा से लेकर राज परिवारो और बादशाह के महलो तक हिन्दू-मुसलमान का
था । इन दोनो बादशाहो की इस नीति का कारण था । दोनो ही मारवाड के राजपूत
लेने वाली माताओ से पैदा हुए थे । औरङ्गजेब की परिस्थिति दूसरी थी । उसकी मात
की लडकी थी । जहाँगीर और शाहजहाँ के रगो और नसो मे उनकी हिन्दू माताओ का
हुआ था । परन्तु औरङ्गजेब के जीवन मे सब-कुछ तातारी माता से प्राप्त हुआ था । इसका
सम्पूर्ण जीवन मे रहा और उसके शासन काल मे राज्य के हिन्दू मुसलमान एक होकर

भारतवर्ष मे औरगजेब के समाकालीन अनेक हिन्दू राजा थे और सभी तेजस्वी
थे । सम्पूर्ण राजस्थान राज्यो मे बँटा हुआ था और प्रत्येक राज्य में पराक्रमी राज
था । अम्बेर का राजा जयसिह, मारवाड का जसवतसिह बूँदी और कोटा के राजा ह .
का राठौर, उरछा और दतिया के राजा लोग—सभी शक्तिशाली एवम् अयोग्यता
राजाओ से ईर्षा पैदा कर ली थी । इसके फलस्वरूप कटुता बढी और वह कटुता स्वयं
भी अच्छी नही साबित हुई ।

औरगजेब मे एक प्रधान दोष यह था कि वह किसी का विश्वास नही करता
वह अपना शुभचिंतक और मित्र समझता था, उनसे भी वह अपनी बातों को छिपाकर
इसका परिणाम यह हुआ कि उस पर अविश्वास करने वालो की संख्या बढ़ गयी और
कोई न रह गया । उसने हिन्दुओ के साथ निर्दय व्यवहार किये थे, उनके लिए भयानक
व्यवस्था की थी और तलवार के बल पर धर्म-परिवर्तन के लिए हिन्दुओं को मजबूर
इन सब कारणो से हिन्दू प्रजा उसका राज्य छोड-छोडकर भाग गयी । न्याय के अभाव
राज्य मे अराजकता बढ गयी थी । अधिक सख्या मे हिन्दुओ के भाग जाने से राज्य के
और बाजार बहुत कुछ सूने हो गये थे । कृषको के चले जाने से खेती के व्यवसाय
आघात पहुँचा था । सरकारी खजाने मे धन का अभाव हो गया था । चारो तरफ
गयी थी । इसी अशान्ति और अराजकता ने शिवाजी को प्रोत्साहित किया और उसने
एक योजना बनाकर औरगजेब के शासन काल मे मुगलो के साथ युद्ध किया ।

राणा राजसिह ने सिहासन पर बैठने के बाद एक ऐसा कार्य किया जो बहुत
चित्तौर के द्वारा नही हुआ था । अजमेर मे मालपुर नाम का एक नगर है । राणा राज
नगर पर आक्रमण किया और वहाँ की बहुत-सी सम्पत्ति और सामग्री लूटकर वह लौट
समय दिल्ली के सिंहासन पर शाहजहाँ था । वहाँ के मन्त्रियो ने मालपुर के आक्रमण के .
बादशाह से राजसिह की शिकायत की । परन्तु शाहजहाँ ने उपेक्षा के साथ उसको टाल

अपने साथ ले जायगी। बादशाह उसके साथ अपना विवाह करेगा। यह अफवाह प्रभ
ने सुनी। उसने प्रभावती से बातचीत की और उसने अपनी लड़की का विवाह राणा
साथ करने का निर्णय किया। प्रभावती ने पिता की इस बात को स्वीकार कर लिया
राठौर सामन्त की तरफ से एक आदमी इसी उद्देश्य के लिए उदयपुर भेजा गया।

रूपनगर के आदमी ने उदयपुर पहुँचकर अपने सामन्त राजा का पत्र राणा को
पढकर राणा ने अपने दरबार के सामन्तो और सरदारो के साथ परामर्श किया। सभी
राठौर सामन्त के प्रस्ताव को स्वीकार करने लिए प्रोत्साहित किया। इस विषय मे
राणा ने उनके साथ बातचीत की। बादशाह औरङ्गजेब की शक्तिशाली सेना का और
साम्राज्य की शक्तियो का प्रश्न उठाकर राणा ने सरदारो और सामन्तो से विवाद f
सब के परामर्श से राणा राजसिह ने राठौर सामन्त के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया
कृति राणा की तरफ से रूपनगर राठौर सामन्त के पास भेज दी गयी।

सरदार चूडावत के साथ विचार विनिमय करके राणा राजसिह ने प्रभावती
की तैयारी की। वह उदयपुर के कुछ राजपूतो को लेकर रूपनगर की तरफ विवाह के
हुआ और चूडावत सरदार उदयपुर की शक्तिशाली सेना लेकर चला। उसके साथ पन्द्र
वीर राजपूत घोडो पर थे। राणा राजसिंह सीधा रूपनगर की तरफ गया और चूडा
पूर्व की तरफ रवाना हुआ। सरदार सैनिको की मिलकर जो सेना रवाना हुई, उसके
की संख्या पचास हजार थी।

राजपूतो की यह विशाल सेना उदयपुर से चलकर उस रास्ते पर पहुँच गयी, जो
रूपनगर की तरफ गया था। उस रास्ते पर पहुँचकर सरदार चूडावत ने अपनी सेना
किया। इसके बाद बादशाह के आने वाले लश्कर का पता लगाने के लिए कुछ राजपूत र
उन्होने लौटकर बताया कि मुगल बादशाह की एक बडी फौज आ रही है और उस फौ
बादशाह हाथी पर बैठा हुआ आ रहा है। उसी समय सरदार चूडावत ने राजपूतो को
जाने के लिए आदेश दिया।

कुछ समय के पश्चात् जहाँ पर राजपूतो की सेना पडी थी, बादशाह का लश्कर
रास्ते मे राजपूत सेना की मौजूदगी का समाचार पाकर बादशाह के आदमी आगे बढे
लौटकर बादशाह को बताया कि मेवाड के चूडावत सरदार की सेना पडी हुई है और
रास्ता रोक रही है। बादशाह ने अपनी फौज के निकल जाने के लिए रास्ता चाहा। लेि
ने रास्ता देने से इनकार कर दिया। बादशाह ने चूडावत को यह भी बताया कि हम सबक
जाना है। उदयपुर और मेवाड से हमारा कोई प्रयोजन नही है।

चूडावत सरदार के रास्ता न देने पर बादशाह औरङ्गजेव ने अपनी फौज को आगे
हुक्म दिया। राजपूत सेना इसके लिए पहले से ही तैयार थी। मुगल सेना के आगे
आरम्भ हो गया। वह युद्ध कई दिन तक चलता रहा। कोई निर्णय न हुआ। दोनो पक्ष
आदमी मारे गये। लेकिन कोई पक्ष निर्बल न पड रहा था। युद्ध की यह दशा देखकर
बहुत चिन्तित हुपा। उसने विवाह के लिए जो दिन और समय निश्चित किया था, वह नि
रहा था। लेकिन रास्ते मे होने वाला यह युद्ध जल्दी समाप्त होता हुआ दिखायी न दे रहा

यह देखकर औरङ्गजेब बहुत चिन्तित हुआ। उसने अपना दूत भेजकर चूडावत स
बातचीत की। उसका उद्देश्य इस समय किसी प्रकार रूपनगर पहुँचने से था। रास्ते मे
इस युद्ध का उसे कुछ पता न था। युद्ध के तीसरे दिन मुगल सेना का जोर बढा। राजपूतो

बडे लड़के को मारवाड के सिंहासन पर बिठाना चाहती थी और उसकी छोटी राज्य का प्रबन्ध स्वयं सम्हालना चाहती थी।

इन्हीं दिनों में अजित की माता को अपने प्यारे पुत्र अजित के सम्बन्ध मे बाद से भय उत्पन्न हुआ। इसलिए वह अपने बालक की रक्षा का उपाय सोचने लगी। राजसिंह के आश्रय के सिवा और कुछ दिखायी न पडा। इसके लिए उसने अपना दूत भेजा। राणा ने अजित की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया और जसवंतसिह के भेज देने के लिए उसकी माता के पास संदेश भेजा। राणा का यह सदेश मिलते ही ने दो हजार सैनिकों के सरक्षण मे अजित को मारवाड से रवाना किया।

जिस समय मारवाड के सैनिक अपने साथ अजितसिह को लेकर उदयपुर जा समय कूट गिरि के एक तङ्ग रास्ते से दो हजार मुगल सैनिको ने तेजी के साथ आ उस रास्ते पर दोनो ओर के सैनिको मे कुछ समय तक युद्ध हुआ। उस पहाडी रा मुगल सैनिक मारे गये और मारवाड के सैनिक अजित को लेकर उदयपुर की तरफ अ इसके पश्चात् मुगलो ने उनका पीछा नही किया। राणा राजसिह ने बडे सम्मान सिंह को अपने यहाँ रखा और कैलवा नाम का एक स्थान उसके रहने के लिये दे दि नाम का एक साहसी राजपूत राजकुमार अजित की रक्षा करने लिए नियुक्त हुआ।

अजित की माता ने अपने पुत्र अजित को राजसिह के आश्रय मे भेज दिया बादशाह औरङ्गजेब पर वह जल रही थी। इसलिए उससे बदला लेने के लिए वह बाते सोचने लगी। मारवाड के सामन्त और सरदार जसवतसिह की विधवा रानी के हुए और वे औरङ्गजेब से बदला लेने के प्रश्न पर परामर्श करते रहे।

इन दिनो मे औरङ्गजेब राणा राजसिह से बहुत अप्रसन्न था और राजसिं अनीति को देखकर बहुत सावधानी से काम ले रहा था। अपने साम्राज्य मे वह हि जैसा निन्दनीय व्यवहार कर रहा था, उससे राणा राजसिह बहुत अप्रसन्न था। इस औरङ्गजेब को एक लम्बा पत्र लिखकर भेजा और उसमे उसके सारे कारनामो का जो मुगल साम्राज्य मे हिन्दुओ के विरुद्ध चल रहे थे।

अपना यह पत्र राजसिह ने मुगल बादशाह के पास भेज दिया और उसके परि प्रतीक्षा करने लगा। बादशाह ने उस पत्र को पाकर पढा। उसके क्रोध का ठिकाना बीच मे राणा राजसिह के कई ऐसे कार्य हुए थे, जिनको सहन करने के लिए अब और प्रकार तैयार न था। राजसिंह ने प्रभावती के साथ विवाह किया था। औरङ्गजेब के यह पहली चुनौती थी। इसके बाद उसने अजितसिह को अपने यहाँ आश्रय दिया और इ उसने इस प्रकार का एक पत्र भेजा। यह तीनो बाते औरङ्गजेब को असह्य हो उठी। क्रो उसने राजसिह पर आक्रमण करने का निश्चय किया और अपनी फौज को तैयार उसने हुक्म दिया। मुगल सेना मे युद्ध की तैयारियाँ शुरू हो गयी।

औरङ्गजेब अपनी शक्तिशाली सेना लेकर राजसिह पर आक्रमण करने के लिए उसके जितने प्रसिद्ध सेनापति थे, बादशाह के हुक्म से अपनी बडी से बडी फौज तैयार क गये। बंगाल से शाहजादा अकबर और काबुल से अजीम बुलाया गया। औरगजेब का शाहजादा मुअज्जम दक्षिण मे शिवाजी के साथ युद्ध कर रहा था। औरगजेब का हुक्म फौज के साथ वह लौटकर आ गया और राजसिंह पर आक्रमण करने के लिए तैयार हो

औरगजेब अपनी विशाल और शक्तिशाली सेना लेकर मेवाड़-राज्य की तरफ र

अमीरुल उमरा अपनी दस हजार मराठा सेना के साथ वाहर इन्तजार कर रहा था। फरुखसियर के स्थान पर रफेउलदिजीत दिल्ली के सिंहासन पर वैठा। इस समय मुगल-राज्य की जो हालत चल रही थी, उससे घवरा कर नये वादशाह ने अजितसिंह और दूसरे राजाओ को खुश करने का विचार किया। इसके लिये उसने जजिया टैक्स—जो हिन्दुओ पर लगाया था—उठा लिया। दूसरी तरफ सैयद वधुओ ने राजपूतो को खुश करने की चेष्टा की और इनायत-उल्ला को मन्त्री के पद से हटा कर राजा रत्नचन्द को मुगल-राज्य का मन्त्री वनाया।

तीन महीने तक शासन करने के वाद रफेउलदिजीत की मृत्यु हो गयी। उसके वाद दो अन्य वादशाह वहाँ सिंहासन पर वैठे और चन्द दिनो की वादशाहत का सुख उठा कर ससार से चले गये। इसके वाद वहादुरशाह का वडा लडका रोशन अख्तर मोहम्मद शाह के नाम से सन् १७२० ईसवी मे दिल्ली के सिंहासन पर वैठा। उसने तीस वर्ष तक शासन किया। उसके समय मे सम्पूर्ण साम्राज्य मे भयानक विद्रोह खडे हुये और मुगलो का राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इन्ही दिनो मे मराठो और पहाडी अफगानो ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया और वहुत-से गाँव और नगरो को लूट कर भीषण उत्पात मचाया।

इन दिनो मे मुगल-राज्य की हालत वहुत खराव हो गयी थी। स्थान-स्थान पर उपद्रव हो रहे थे। सैदय वन्धुओ के अत्याचारो से राज्य का विध्वस हो रहा था। इन दोनो वन्धुओ से जो लोग मित्रता रखते थे, उनमे निजामुल-मुल्क उनसे अधिक अप्रसन्न हुआ। निजामुल-मुल्क एक चतुर सेना-पति था। उसने वडी वुद्धिमानी के साथ मालवा-राज्य की उन्नति की थी। इसलिये सैयद वन्धुओ को उससे शका पैदा हो रही थी। निजामुल-मुल्क के अप्रसन्न होने के कारण सैयद वन्धुओ को भय अधिक हो गया। वे दोनो भाई जव से दिल्ली आये थे, मुगल शासको को कठपुतली की तरफ नचा रहे थे। उनकी भयानक राजनीति के कारण मुगलो का राज्य नष्ट होता जा रहा था। मुगल वश मे इस समय ऐसा कोई न था, जो इन भाइयो की राजनीति से मुगल-राज्य की रक्षा कर सकता

सैयद वन्धुओ ने अपनी राजनीति के द्वारा मुगल-सिंहासन पर विठाने का अधिकार अपने हाथ मे ले रखा था। वे किसी ऐसे व्यक्ति को सिंहासन पर नही वैठने देना चाहते थे, जो राज्या-धिकार पाने के वाद उन दोनो का विरोध कर सके। इस लिए दोनो भाइयो के द्वारा अव तक मुगल सिंहासन पर ऐसे ही लोग वादशाह वना कर विठाये गये, जो दोनो भाइयो के इशारो पर काम करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि एक अच्छे वादशाह के अभाव मे मुगल-साम्राज्य की सारी शक्तियाँ नष्ट हो गयी और जो राजा उसकी अधीनता मे थे, वे सभी विद्रोह करके स्वतन्त्र हो गये। शासन मे अच्छा प्रवन्ध और न्याय न होने के कारण प्रजा वहुत दुखी थी और अधिका-रियो के प्रति अपनी सहानुभूति नष्ट कर चुकी थी। निजामुल-मुल्क ने भी अपनी आजादी की आवाज उठायी और असीरगढ तथा बुरहानपुर के किलो पर अधिकार कर लिया। निजाम की इस वढती हुई ताकत को देखकर सैयद वन्धु घवरा उठे और अपनी सहायता के लिए उन्होने राजपूत सामन्तो से प्रार्थना की। इस पर कोटा और नरवर के दोनो राजकुमार निजाम के विरुद्ध सेनाये लेकर रवाना हुये और नर्वदा नदी के किनारे पर पहुँच गये। उस लडाई मे निजाम की विजय हुई और कोटा का राजकुमार मारा गया।

हैदरावाद राज्य जिस समय स्वतन्त्र हुआ, उसके साथ ही अयोध्या का राज्य भी आजाद हो गया। उस समय सैयद खाँ वहाँ का नवाव था। पहले वह वियाना दुर्ग का सरदार था। सैयद भाइयो के विरुद्ध मोहम्मदशाह ने उसको दिल्ली से वुलाया था। वादशाह की आज्ञा पाकर सहादत खाँ ने अमीरुल उमरा को मारने की चेष्टा की और हैदर खाँ ने उसका सहार किया। इस खवर को पाते ही

जिस पहाड़ी स्थान पर युद्ध करने के लिये दोनों तरफ की सेनायें एकत्रित हुँ
भयानक था। अकबर और दिलेर खाँ के पराजित होने के बाद राणा राजसिंह ने
पर आक्रमण किया। दोनो तरफ से भीषण युद्ध आरम्भ हुआ। राजपूतो ने उस सम
से काम लिया। जिस राठौर वश का नाश करने की औरङ्गजेब ने चेष्टा की थी, इ
राठौर वश के राजपूत सैनिक उसके प्राण घातक साबित हुये। युद्ध मे आये हुये राठ
जशवंतसिह की मृत्यु भूली न थी। उसका वदला लेने के लिये राठौर सैनिक इस स
से औरङ्गजेब की फौज के साथ मारकाट कर रहे थे। औरङ्गजेब-एकाएक संकट मे
देखकर मुगल सेना आगे बढी और उसके गोलंदाजो ने तोपो की मार आरम्भ कर दी।
समय मे बहुत से राजपूत मारे गये। लेकिन राजसिह के उत्साह मे किसी प्रकार की

देवारी के सग्राम मे वहुत समय तक भीषण मारकाट हुई। राजपूतो की
सेना के गोलदाज मारे गये। इसी समय तेजी के साथ राजपूत सेना मुगलो के बीच
उसके सैनिको ने अपनी तलवारो से जो मारकाट की, उससे मुगल सेना पीछे हटने
ही देर मे औरङ्गजेब अपनी बची हुई सेना को लेकर वहाँ से भागा। उसकी
वहुत सा सामान जो मुगलो के शिविर मे मौजूद था, राजपूतो ने पहुँचकर अपने
लिया। बादशाह के बहुत से हाथी राजपूतो के कब्जे मे आ गये। यह सग्राम सम
१६८१ के मार्च महीने मे हुआ था। इस युद्ध मे राजसिह की विजय हुई।

युद्ध मे भागने के बाद भी औरङ्गजेब का हृदय पराजित न हुआ। अपनी प
लेने के लिए अपनी सेना के साथ वह चित्तौर के निकट रुका और राणा पर
लिए कोई योजना बना रहा था, उस समय जयमल के वन्शज श्यामलदास ने अपन
वहाँ पहुँच कर आक्रमण किया। औरङ्गजेब उस समय घबरा गया और वह
और अजीम को युद्ध के लिए वहाँ छोडकर अजमेर की तरफ चला गया और वहाँ
दोनो लडको की सहायता के लिए एक बड़ी सेना भेजी।

अजमेर से औरङ्गजेब ने एक नयी सेना खाँ रोहेला नाम के सेनापति के
से युद्ध करने के लिए भेजी। श्यामलदास को जब मालूम हुआ तो वह अपनी
बढा और पुर मण्डल नामक स्थान पर उसने शत्रु सेना पर आक्रमण किया। कुछ
के बाद मुगलो के साथ की सेना अजमेर की तरफ भाग गयी।

राजकुमार भीम अपनी सेना के साथ अभी तक अपने स्थान पर मौजूद था
राज्य पर आक्रमण किया और ईदर नामक नगर को बरबाद किया। हुसेन नाम
मुसलमान बादशाह था। उसके और उसकी सेना को भीम ने वहाँ से निकाल
पट्टन नगर मे पहुँचकर राजपूतो ने लूट-मार की और उसके बाद कई एक
विध्वन्श किया।

राणा रार्जसिह की सेना मे दयालदास नाम का एक अत्यन्त बहादुर आदमी
लडकर उसकी तबियत अभी तक भरी न थी। सवारो की एक सेना लेकर वह र
नर्वदा तथा बेतवा नदी के किनारे तक फैले हुए मालवा राज्य पर आक्रमण करके उ
और उसके बाद सारगपुर, देवास, सरोज, माण्डू, उज्जैन और चन्देरी नगरो को

के बीच मे फँस गया था और वडी मुश्किल से उसको छुटकारा मिला था। जिस
युद्ध करने के लिए वह पहुँचा था, वहाँ के रास्ते से न तो वह स्वय परिचित था और

उदयपुर आ गया। मेवाड के सामन्त राजाओ को इन दिनो मे अपना दुर्ग बनाने के लिए अधिकार न था। इसलिए कि प्रत्येक सरदार राजा को राज्य की तरफ से जो इलाका मिलता था, वह तीन वर्ष के लिये होता था। इन दिनो मे अरावली पर्वत के ऊँचे पहाडी स्थान मेवाड-राज्य के लिये दुर्गों का काम करते थे और राज्य की सीमाओ पर जो दुर्ग बने थे, शत्रुओ के आक्रमण करने पर उन्ही दुर्गों का युद्ध के समय प्रयोग होता था। राज्य मे इस प्रकार की व्यवस्था चल रही थी।

मुगल-राज्य के कमजोर पड जाने के बाद मेवाड-राज्य के इन नियमो मे परिवर्तन होने लगा। मराठो और पठानो ने अपनी शक्तियाँ मजबूत बना कर जब मेवाड-राज्य मे प्रवेश करना आरम्भ किया तो मेवाड के सरदारो ने अपने राज्य की रक्षा के लिये नये-नये दुर्गों का निर्माण किया।

राणा सग्रामसिंह ने मेवाड के सिंहासन पर बैठकर अठारह वर्ष तक राज्य किया। उसके शासनकाल मे राज्य के गौरव को किसी प्रकार का आघात नही पहुँचा। शत्रुओ ने मेवाड-राज्य के जिन नगरो पर अधिकार कर लिया था, सग्रामसिंह ने उनको लेकर अपने राज्य मे मिला लिया। बिहारीदास पाचौली को अपना मत्री बनाकर राणा सग्रामसिंह ने अपनी योग्यता और दूरदर्शिता का परिचय दिया। बिहारीदास पाँचौली की तरह का योग्य मत्री कदाचित पहले कभी मेवाड राज्य के दरबार मे नही रहा था। अपनी योग्यता और प्रतिभा के द्वारा बिहारीदास ने उस राज्य मे बहुत समय तक रह कर मन्त्री के पद पर कार्य किया।

राणा सग्रामसिंह का चरित्र उज्वल और श्रेष्ठ था, प्रजा के अधिकारो को सुरक्षित रखने मे उसने बडी ख्याति पाई थी। इसके सिवा वह न्यायप्रिय था और अपने वचनो को पूरा करना वह खूब जानता था। शासन मे वह जितना ही चतुर था, व्यवहार मे वह उतना ही कुशल माना जाता था, राणा सग्रामसिंह के लोकप्रिय व्यवहारो के सम्बन्ध मे बहुत सी बाते राजस्थान की पुरानी पुस्तको मे पायी जाती है और उनमे से अधिकाँश राजस्थान के लोगो के द्वारा आज तक कही जाती है। उन घटनाओ को—जिनके द्वारा राणा संग्रामसिंह की व्यावहारिकता और लोकप्रियता का प्रमाण मिलता है—विस्तार के भय से यहाँ पर लिखा नही जा सकता। इस लिये सग्रामसिंह के उज्ज्वल चरित्र के सबध मे यहाँ पर इतना ही लिखना काफीहै कि राज्य की प्रजा उसके प्रति सदा आस्था रखती थी और सरदार तथा सामन्त हमेशा विश्वास पूर्वक मेवाड-राज्य के लिये प्राण देने को तैयार रहते थे।

राज्य की रक्षा करने के लिये राणा सग्रामसिंह को अठारह बार शत्रुओ के साथ युद्ध करना पडा था। उसके मरने के पश्चात् मेवाड राज्य मे मराठो का प्रवेश आरम्भ हुआ और सीसोदिया वश के उस प्राचीन राज्य मे अनेक राजनीतिक परिर्वतन हुये। राणा सग्रामसिंह के चार लडके थे। जगतसिंह सबसे बडा था। यह नाम पहले भी आ चुका है। इसलिये प्राचीन ग्रथो मे इसका जगतसिंह दूसरा नाम देकर लिख गया है। संग्रामसिंह की मृत्यु हो जाने पर जगतसिंह सवत् १७६० सन् १७३४ ईसवी मे मेवाड के सिंहासन पर बैठा।

इन दिनो मुगल राज्य की अवस्था लगातार निर्बल होती जा रही थी। स्थान-स्थान पर विद्रोह पैदा हो रहे थे और उसको दमन करने की शक्ति मुगल बादशाह मे न रह गयी थी। एक प्रकार से देश मे भीषण क्रान्तिकारी आँधी चल रही थी। उस समय जगतसिंह के लिए यह बहुत आवश्यक था कि वह भविष्य मे रहने वाले परिवर्तनो को देख कर किसी शक्ति का निर्माण करे। इसलिये उसने राजस्थान के दो अन्य राजाओ के साथ मिलकर एक सधि की।

इस प्रकार कीएक सन्धि राजस्थान के तीन राजाओ मे भी उदयपुर मे हो चुकी थी। उसको मारवाड के राजा उदयसिंह ने भँग किया था और स्वीकृत बातो के विरुद्ध आचरण किया था। इस

खर्च किये गये थे । इस मंदिर के निर्माण में रुपये की सहायता सामन्तो, सरदारो की थी ।

राणा राजसिंह की मृत्यु हो गयी और राजपूतो से लडते-लडते औ शिथिल पड गयी । हमारा विश्वास है कि मुगलो के बाद औरङ्गजेब के साथ राज करते हुये पाठक मेवाड के राजा की प्रशसा करेंगे । यद्यपि औरङ्गजेब के साथ रा करना किसी प्रकार ठीक नही मालूम होता । नैतिकता और मनुष्यता के नाम पर के प्रतिकूल थे । राजसिंह जितना ही उदार और न्यायप्रिय था, औरङ्गजेब उतना पक्षपात से भरा हुआ, स्वार्थी था । एशिया महाद्वीप के राजसिहासन पर आज बादशाह बैठे है, उन सब से अधिक औरङ्गजेब ने अपने जीवन मे अपराध किये राज्य मे सम्भावना से अधिक पक्षपात का स्थान दिया था, लेकिन उसके फलस्वरूप, से उसके साथ कभी विश्वासघात नही किया गया । औरङ्गजेब ने अपने राज्य की लेकर राणा राजसिंह पर आक्रमण किया था और उस आक्रमण मे शाहजादा अक के घेरे मे आ गया था, जिससे उसके बचने का कोई मौका न रहा था, उस समय के लडके जयसिह ने उसके साथ उदारता का व्यवहार किया और उसको सुर औरङ्गजेब के पास पहुँच जाने का मौका दिया । अपनी रक्षा के लिए पूरी शक्ति र भी शत्रु के साथ उसने इतनी उदारता दिखाया, यह राजपूतो का ही काम था । ङ्गजेब ने जो कुछ राणा के विरुद्ध किया, वह पूर्ण रूप से अनैतिक था । शत्रु के पर बुद्धिमान सैनिक और सेनापति की हैसियत से अपने देश की रक्षा करने मे वह मे प्रशंसा का अधिकारी है । शत्रु के भीषण आक्रमण के समय युद्ध के सकटो का हुये राज्य की मर्यादा की रक्षा करने मे एक बहादुर राजपूत की हैसियत से वह एक शूरवीर मे जो योग्यता, नैतिकता और न्याय परायणता होना चाहिये, वह सिंह के जीवन मे था । वह केवल युद्ध मे शूरवीर ही न था, बल्कि उसने राज्य स जो एक विशाल झील बनवाई और राज-नगर नाम का जो नगर बसाया उसके उसकी अद्भुत प्रतिभा का परिचय मिलता है । मै समझता हूँ कि ससार का प्रिय मनुष्य अवश्य ही राणा राजसिह की प्रशसा करेगा ।

मुगल बादशाह की मरजी से मिला था। परन्तु इसके बदले मे उसने मुगल बादशाह के साथ विश्वासघात किया।

मालवा और गुजरात मे अपने अधिकारो को मजबूत बनाकर मराठो ने दूसरे स्थानो पर अधिकार करने का इरादा किया। वे टीडी दल के समान नर्वदा नदी के पार उतर कर उत्तरी भाग के स्थानो और नगरो पर आक्रमण करने लगे। उनके अत्याचारो को देखकर किसानो और मजदूरो ने अपने हाथो मे हथियार लिए। जिन लोगो के आक्रमण उन दिनो मे हो रहे थे, उनमे बाजीराव के मराठा प्रमुख थे। इन लोगो ने कमजोर राजपूत राज्यो को लूटने और बरबाद करने का काम आरम्भ किया और कुछ स्थानो मे वे आबाद भी हो गये। उनका सगठन मजबूत था। राष्ट्रीयता के आधार पर उन मराठो ने अपना सङ्गठन किया था।

सन् १७३५ ईसवी मे मराठो का वह दल चम्बल नदी को पार करके दिल्ली मे पहुँच गया और भयानक उत्पात आरम्भ किया। उनके अत्याचारो से घबरा कर मुगल बादशाह ने मराठो की चौथ अर्थात् साम्राज्य की आमदनी का चौथाई भाग देना मन्जूर किया और इस प्रकार उसने अपनी जान बचाई।

मुगल बादशाह की इस कायरता को देखकर निजाम भयभीत हो उठा। वह सोचने लगा कि दिल्ली के बाद मराठा लोग निजाम राज्य पर आक्रमण करेगे। इसलिए उसने मालवा से मराठो को निकाल देने का इरादा किया। उसको इस बात का विश्वास हो रहा था कि यदि मराठो ने मालवा मे अपना शासन मजबूत बना लिया तो फिर उनको वहाँ मे निकालना बहुत मुश्किल हो जायगा।

इस प्रकार निर्णय करके निजाम ने अपनी सेना लेकर मालवा पर आक्रमण किया और बाजीराव को पराजित किया। इसी अवसर पर उसे समाचार मिला कि हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिये बादशाह नादिरशाह की शक्तिशाली सेना आ रही है। यह सुनते ही निजामुल-मुल्क अनेक प्रकार की चिन्ताओ मे पड गया। वह मालवा मे मराठो को छोडकर अपने राज्य मे लौट आया।

मुगल-राज्य की शक्तियो का इन दिनो मे अन्त हो चुका था। शत्रुओ का सामना करने की अब उसमे कोई शक्ति बाकी न रह गयी थी थी। काबुल को अपने अधिकार मे लेकर विजयी सेना के साथ नादिरशाह ने हिन्दुस्तान की सीमा मे प्रवेश किया। उसके इस आक्रमण के समय राजस्थान के राजा चुप होकर बैठ गये। मुगल बादशाहत निर्बल हो चुकी थी और मुल्क के सभी राजा और नवाब अपनी-अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड रहे थे। सभी के सामने व्यक्तिगत स्वार्थ का प्रश्न था। देश के सार्वजनिक हितो की तरफ किसी का ध्यान था।

नादिरशाह के होने वाले आक्रमण का समाचार सुनकर निजाम भयभीत हो रहा था। सआदत खाँ इन दिनो मे मुगल बादशाह का मत्री था। जिन राजपूतो के बल पर मुगल-राज्य का विस्तार हुआ था, अब उनसे मुगलो को कोई आशा न रह गयी थी। जिन हिन्दू राजाओ ने मुगल शासन के गौरव को बढाने के लिए अपना खून बहाया था, वे इस समय बादशाह के सकट को दूर से देख रहे थे।

निजाम अपनी सेना के मुगल सेनापति के नेतृत्व मे युद्ध के लिए रवाना हुआ। बादशाह की तरफ से अमीरुल-उमरा मुगलो की एक बडी सेना लेकर आगे बढा। सन् १७४० ईसवी मे करनाल के मैदान मे इन सेनाओ ने नादिरशाह की फौज के साथ युद्ध किया। भीषण सग्राम के बाद मुगलो की पराजय हुई। अमीरुल-उमरा मारा गया। सआदतखाँ गिरफ्तार हो गया और मोहम्मद शाह तथा उसका राज्य नादिरशाह के अधिकार मे आ गया। अमीरुल-उमरा के मारे जाने पर निजाम को

लेकिन कुछ समय मे मुगल सेनापति के साथ झगडा होने के कारण भीम को वा
के पार भेज दिया। काबुल मे पहुँचने के बाद कुछ दिनो मे उसकी मृत्यु हो गयी

राणा राजसिंह के मरने के पहले उसके साथ सन्धि की शुरूआत हुई थी
बातो का निर्णय भी हो गया था। परन्तु सन्धि-पत्र पर दस्तखत होने के पहले
की मृत्यु हो गयी। इसलिए वह सन्धि अधूरी रह गयी थी। राणा के मर जाने
अधिकारी हो जाने पर और सिंहासन पर बैठने के उपरान्त जयसिंह ने बादशाह
सन्धि कर ली। यह सन्धि बादशाह के लडके शाहजादा अजीम और सेनापति ि
औरङ्गजेब और राणा जयसिंह के बीच हुई। राणा राजसिंह के विरुद्ध औरङ्गजे
सेना लेकर आक्रमण किया था। उस युद्ध मे अरावली पर्वत के कठिन स्थानो मे
सकट मे पड गयी थी। उस समय जयसिह ने दिलेर खाँ और बादशाह के लड
उदारता का व्यवहार किया जैसा पिछले पृष्ठो मे लिखा जा चुका है।

दिलेर खाँ जयसिह की उस उदारता को भूला न था। सन्धि के समय
और दिल्ली राज्यो के बहुत से आदमियो का जमाव हुआ था। उसमे दस हज
और चालीस हजार पैदल सिपाहियो के अतिरिक्त अरावली पर्वत पर रहने व
मे भील और दूसरी लडाकू जातियो के लोग एकत्रित हुए। इस प्रकार एक ला
त्रित जन समूह ने राणा जयसिंह की जय-जयकार के नारे लगाने शुरू किये। उ
अजीम के मन मे भय उत्पन्न हुआ परन्तु दिलेर खाँ के दिल मे जयसिह की तर
की आशका न थी। सन्धि का काम समाप्त हुआ। मेवाड राज्य की तरफ से
जिले दिये गये और यह तय हुआ कि सन्धि के बाद राणा जयसिंह को लाल रङ्ग
के प्रयोग का अधिकार न रहेगा।

सन्धि का काम समाप्त हो जाने के बाद भी उदयपुर मे राणा के असीम
चित्र देखकर अजीम के मन मे जो सन्देह पैदा हुआ था, वह बराबर बना रहा और
करने के लिए मुगल सेनापति दिलेर खाँ ने उदयपुर से विदा होने के समय राणा
"आपके सरदार और सामन्त स्वाभाविक रूप से कठोर है। इस सन्धि का
आपके बीच जो कुछ हो सकता है, उसे दूसरे लोग नही समझ सकते। आपको इ
रखने की आवश्यकता है कि यह सन्धि जो इस समय समाप्त हुई है, उस मित्रता
जो आपके पिता और मेरे बीच मे कायम हुई थी।

दिलेर खाँ का उद्देश्य दोनो राज्यो के प्रति सराहनीय था परन्तु अपनी चे
न हुआ। राज सिंहासन पर बैठने के चार-पाँच वर्ष बाद जयसिंह को अपनी तल
करना पड़ा। मुगलो के भीषण आक्रमणो से अपनी रक्षा करने के लिए
पर्वतो का आश्रय लेना पडा और अनेक बार युद्ध करने पडे। इन लडाइयो मे रा
आर्थिक हानि उठानी पडी। इन कठिनाइयो का सामना करने के बाद भी जयसि
काम किये, जो उसकी योग्यता का परिचय देते है। उसने जयसमुन्द नाम की एक
का निर्माण पहाड पर करवाया। भट्ट ग्रन्थो मे लिखा गया है कि उस समय इस
झीले थी, जयसिह की बनवाई हुई यह झील सबसे बड़ी और दर्शनीय थी। ८
कोस से अधिक है। इस झील से यहाँ की खेती को बहुत लाभ पहुँचा और कृषक
उठा कर अपनी आर्थिक उन्नति की। इस झील के समीप राणा जयसिह ने अपनी
के लिए एक प्रसिद्ध महल बनवाया था।

दिये गये और इन सूबो को अपने राज्य मे मिलाकर और मुगलो की राजधानी दिल्ली को श्मशान बनाकर वह ईरान लौट गया।

नादिरशाह की फौज के सिपाहियो के द्वारा जो नर सहार हुआ था, उसके उल्लेख कई ग्रन्थो मे पाये जाते है। हाजिन नाम के एक मुसलमान ने सर्वनाश के इस दृश्य को अपनी देखी हुई घटनाओ को उसने एक पुस्तक मे लिखा है। उसमे उसने बताया है कि नादिरशाह के अत्याचार बहुत बढ जाने पर हिन्दुस्तान के लोगो ने उसके साथ मार-काट की थी और उसमे नादिरशाह के सात हजार ईरानी आदमी मारे गये थे। दूसरी पुस्तको मे यह सख्या कुछ और ही पायी जाती है। लेकिन उनमे हाजिन का ग्रन्थ इसलिए प्रामाणिक माना जाता है कि उस सहार को उसने स्वय देखा था।

इस सर्वनाश के समय जब नादिरशाह बडे बाजार की रकमुद्दौला नामक की एक मसजिद में बैठा हुआ था, मोहम्मदशाह ने वहाँ पहुँचकर अपनी आँखो के आँसुओ को पोछते हुए नादिरशाह से प्रार्थना की कि 'मेरी रैयत की जाँ वख्सी करमाई जावे।' नादिरनामा'नाम के एक ऐतिहासिक ग्रंथ मे लिखा है कि नादिरशाह के हुक्म से शहर मे दिन-भर कत्लेआम होता रहा और उसमे बेसुमार आदमियो की जाने ली गयी। एक ऐतिहासिक ग्रथ मे लिखा है कि नादिरशाह की फौज के द्वारा जो लोग मारे गये, उनकी सख्या एक लाख पचास हजार से कम नही हो सकती।

इस कत्लेआम के समय नादिरशाह के सिपाहियो ने अपने हाथो मे तलवारे लिए हुए शहर के घरो मे जाकर लूट-मार की थी। प्रत्येक मकान से रोने और चिल्लाने की आवाज आ रही थी। घर के आदमियो को तलवारो से काटकर जो सम्पत्ति मिलती थी, सिपाही उसको लूट लेते थे और घर के किसी आदमी को जिन्दा न छोडते थे। इस प्रकार का हा-हाकार सम्पूर्ण शहर मे एक साथ प्रारम्भ हुआ। अत्याचार का यह दृश्य देखकर बसतराय नामक मुगल राज्य के एक हाकिम ने जब अपने परिवार को बचाने का कोई उपाय न पाया तो उसने स्वय अपने परिवार को मार डाला और अपनी भी हत्या कर ली। मलिकयार खाँ एक प्रसिद्ध मुसलमान ने तलवार से अपने प्राणो का अन्त किया। न जाने कितने परिवारो मे शर्बत की तरह विप-पान किया गया और प्राणो की आहुतियाँ दी गयी। राज्य का एक बहुत बडा हाकिम पकडा गया और एक प्रसिद्ध चौराहे पर खडे करके बहुत देर तक उसके कोडे लगवाये गये।

इस प्रकार के अत्याचारो की कोई सीमा न रही और वहाँ का कोई भी मनुष्य इस अत्याचार और सहार से अपने आपको बचा न सका। राज्य के कर्मचारियो, अधिकारियो और हाकिमो पर इतना अधिक प्रहार हुआ था कि वे मरने से भी अधिक बुरी अवस्था मे पहुँच गये थे। बादशाह के फर्राशखाने मे आग लगा दी गयी, जिससे उसका एक करोड रुपये का कीमती सामान जल गया। इस प्रकार नादिरशाह के जुल्म और सितम से सारा शहर श्मशान बन गया था।

इस विनाश के बाद वहाँ की हालत बहुत खराब हो गयी थी। खाने-पीने की चीजो का बिलकुल अभाव हो गया। लोगो के पास खाने के लिए जो अनाज था वह आग मे सब जल गया था। रुपये के दो सेर मोटे चावल खाने के लिए मिलते थे। उस नर-सहार के समय और उसके बाद शहर की सफाई न होने के कारण भयानक बीमारियाँ पैदा हुई और उन बीमारियो मे बचे हुए लोग बुरी तरह से मरे। जो लोग भागकर कही जा सकते थे, वे चले गये। फैली हुई बीमारियो मे इतने अधिक सख्या मे लोग एक साथ बीमार पडे कि उनकी देख-भाल करने वाला कोई न था। यह अत्याचार, सहार और सर्वनाश राज्य मे बहुत दूर तक हुआ था और सब मिलाकर पाँच लाख से अधिक आदमी नादिरशाह के आक्रमण के फलस्वरूप मारे गये और मरे।

इस प्रकार के कुछ और भी कारणो के पड़ने से अमरसिंह की शक्तियाँ क्षी
उनसे विवश होकर अमरसिंह ने अपने पिता के साथ सन्धि कर ली। राणा जयसि
तक राज्य किया। उसके मरने पर उसका वडा लडका अमरसिंह सम्वत् १७५६ सन्
मे सिंहासन पर वैठा। पिता के जीवन काल मे वह अपने व्यवहारो के कारण
हानियाँ उठा चुका था जिनसे वह अपनी शक्तियो का सचय न कर सका। फिर भी
और दूरदर्शी था। उन दिनो मे मुगल राज्य मे आपसी झगडे वढ गये थे। उनको देख
ने मुगल राज्य के उत्तरधिकारी शाहआलम के साथ सन्धि कर ली।*

बादशाह वावर ने भारतवर्ष मे मुगलो के राज्य की प्रतिष्ठा की थी और अ
विस्तार देकर लगभग सम्पूर्ण भारत मे अपना साम्राज्य कायम कर लिया था। जिस
वर को अपने राज्य के वढाने मे सफलता मिली थी, औरङ्गजेव ने जीवन-भर
प्रति-कूल काम किया। वह स्वाभाविक रूप से हिन्दुओ का और हिन्दू धर्म का
अपने इस स्वभाव के कारण ही वह उन हिन्दू राजाओ के साथ भी अच्छा व्यवहा
जो अकवर के समय से मुगल साम्राज्य के समर्थक वने थे। वह मुस्लिम धर्म का
था। अपने कठोर शासन के द्वारा उसने हिन्दूओ को इसलाम धर्म स्वीकार करने
किया था।

वादशाह अकवर के समय मुगल साम्राज्य मे मुसलमानो को धार्मिक माम
अधिकार थे। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय तक हिन्दूओ के इस प्रकार के
कायम रहे। औरङ्गजेव ने हिन्दुओ के इन अधिकारो को नष्ट कर दिया था। उसने
जजिया टैक्स की तरह के कठोर कर लगाये थे, जिन लोगो ने इसलाम धर्म को स्वी
था। उसके समय मे इसलाम धर्म की धूम की थी। जो हिन्दू अपनी किसी भी
को मजूर का लेता था, वह वादशाह औरङ्गजेव की हमदर्दी को प्राप्त करने का सह
वन जाता था। औरङ्गजेव का समस्त शासन इस प्रकार के पक्षपात से सदा हुआ
साम्राज्य के पतन की शुरुआत यही से हुई और इसी पक्षपात ने उस विशाल सा
प्रकार कमजोर वना दिया।

सीसोदिया वश की एक छोटी शाखा मे रावगोपाल नाम का एक राजपूत
वह चम्वल नदी के किनारे पर वसे हुए रामपुर के इलाके का एक सामन्त राजा था
सेना के साथ दक्षिण की लडाई मे गया था और जाने के समय उसने रामपुर
लडके को सौंप दिया था। उसके लडके ने उसके साथ विद्रोह किया। इस अवस्था
ने अपने लडके के विरुद्ध मुगल वादशाह के यहा मुकदमा कायम किया। रावगो
अपराधी था। उस अपराध से वचने के लिए उसके सामने कोई रास्ता न था।
हिन्दू धर्म छोडकर इसलाम मंजूर कर लिया। उसके ऐसा करने से वादशाह
पिता रावगोपाल के चलाये हुए मुकदमे को खारिज कर दिया। इसके साथ-सा
रावगोपाल के रामपुर का राज्य भी उसके लडके को दे दिया।

रावगोपाल को इस अन्याय ने वहुत कष्ट पहुँचा। उसने अपनी छोटी-सी से

---

* इस सन्धि मे राणा अमरसिंह ने जो शर्ते पेश की थी और वे मजूर
महत्वपूर्ण शर्ते संक्षेप मे इस प्रकार है (१) चित्तौर की प्रतिष्ठा का अधिकार
(२) गो हत्या न की जाय। (३) शाहजहाँ के समय मे जो जिले मेवाड-राज्य मे शा
के अधिकार मे रहेंगे। (४) धार्मिक वातो मे हिन्दुओ को पूरी स्वतन्त्रता रहेगी।

पढने से साफ मालूम होता है कि वे लोग भविष्य मे आने वाली विपदाओं से जानकार हो चुके थे और उनके प्रतिकार के लिए ही उन लोगो ने पत्र लिखकर राणा जगतसिह के प्रति अपना विश्वास प्रकट किया था। † जिन राजाओ मे यह एकता कायम हुई थी, वह अधिक समय नही चल सकी और सामाजिक विवादो के कारण थोडे ही दिनो मे वह छिन्न-भिन्न हो गयी।

मालवा पर अधिकार करके मराठो ने चौथ लेना आरम्भ कर दिया। उसके वाद अपनी सेना के साथ वाजीराव मेवाड मे पहुँचा। राणा ने उसके साथ युद्ध करने का विचार नही किया। वह स्वय वाजीराव से मिलने भी नही गया। मेवाड के प्रधान मन्त्री विहारीदास ने शालुम्ब्रा सरदार को साथ लेकर वाजीराव से मुलाकात की। मेवाड की तरफ से मराठो के साथ सधि हुई और उसमे राणा ने वाजीराव को चौथ देना मजूर किया। इस चौथ मे एक लाख साठ हजार रुपये वार्षिक राणा ने देना आरम्भ किया, जिसको होलकर, सीधिया और पवाँर वरावर के हिस्सो मे बाँट लेते थे। मेवाड की तरफ से चौथ की यह रकम दस वर्ष तक वरावर मराठो को दी गयी।

मेवाड के राणा ने अपनी लडकी का विवाह अम्वेर के राजा के लडके के साथ किया था। उस समय राजा अम्वेर ने वादा किया था कि इस लडकी से जो लडका पैदा होगा, उसको वडे पुत्र के अधिकार प्राप्त होगे। कुछ समय के वाद उस लडकी से माधवसिंह नाम का वालक उत्पन्न हुआ। नादिरशाह के आक्रमण के दो वर्ष वाद सवाई जयसिह की मृत्यु हो गयी इसलिए उसका वडा लडका ईश्वरीसिह अम्वेर के सिहासन पर वैठा। उस समय वहा के कुछ लोगो ने पहले किये गये वादे के अनुसार माधवसिह को उत्तराधिकारी वनाने की चेष्टा की। परन्तु उस समय कोई सफलता न मिली और ईश्वरीसिंह को सिंहासन पर वैठे हुए पाँच वर्ष वीत गये। इन दिनो मे दुर्रानियो के साथ युद्ध करने के लिए सवाई ईश्वरीसिह अपनी सेना के साथ शतद्रु के किनारे पहुँचा। ‡ अपने भाँजे माधवसिंह के अधिकारो को दिलाने के लिए राणा ने ईश्वरीसिंह के साथ जाकर युद्ध किया। उसमे राणा की पराजय हुई। कोटा और बूँदी के हाडा लोगो ने राणा की सहायता की थी, इसलिए उनको वदला देने के लिए आपाजी सीधिया की सहायता लेकर ईश्वरीसिंह ने उन पर आक्रमण किया। इस लडाई मे आपाजी से सीधिया का एक हाथ कट गया और उस युद्ध का कोई नतीजा न निकला।

ईश्वरीसिंह से पराजित होने के वाद राणा जगतसिह को वहुत ग्लानि मालूम हुई। उसने मल्हारराव होलकर के साथ निर्णय किया कि अगर वह ईश्वरीसिह को सिहासन से उतार देगा तो इसके वदले मे मेवाड राज्य की तरफ से चौसठ लाख रुपये दिये जायेगे। इस निर्णय के अनुसार मल्हारराव और राणा के वीच एक इकरारनामा हो गया। ईश्वरीसिह ने जव यह समाचार सुना

† जिन राजाओ और राजकुमारो ने राणा जगतसिह के पास पत्र भेजकर राणा के प्रति अपनी श्रद्धा और आस्था प्रकट की थी, उनके पत्रो को टाड साहव ने अपनी पुस्तक मे ज्यो की त्यो दिया है।— अनुवादक

‡ कन्धार को जीतने के समय नादिरशाह ने अहमदखाँ अब्दाली नाम के एक अफगान को कैद किया था। अब्दाली उसके वश का गोत्र है। अहमदखाँ तेजस्वी और शूरवीर था। नादिर-शाह ने कैद करने के बाद उसको छोड दिया और उसको एक इलाका दे दिया। नादिरशाह जव मारा गया तो अहमदखाँ ने उसके राज्य पर अधिकार कर लिया और सन् १७४७ ईसवी के अक्टूबर मे वह कन्धार का वादशाह वन गया। ईश्वरीसिह इसी से लडने के लिए शतद्रु नदी के किनारे गया था। अहमदखाँ ने अपना गोत्र अब्दाली वदलकर दुर्रानी कर दिया था।

करने की वात सोची। उन दिनो मे सिक्खो का सगठन जोर पकड़ रहा था और
सिक्ख का अर्थ शिष्य होता है। आक्सस नदी के किनारे शाकद्विपी जित वंश मे इन f
का जन्म हुआ था। पाँचवी शताब्दी के मध्यकाल मे सिक्खो के पूर्वज भारत के
आकर बसे। गुरु नानक से जिन लोगो ने दीक्षा पायी, वे सभी सिक्खो के नाम से
वे इन दिनो मे मुगलो के शासन से अलग होकर अपने आप को स्वतंत्र बनाने की

विद्रोही सिक्खो को दमन करने के वादशाह शाहआलम पजाव की तरफ
जिस समय वह सिक्खो के विरुद्ध जाने की तैयारी कर रहा था, अम्वेर और मार
ने जाकर उससे भेट की और विना कुछ उसको जाहिर किये दोनो हिन्दू राजा वहाँ से
इतिहासकारो का अनुमान है कि उस समय ये दोनो हिन्दू राजा विद्रोही सिक्खो
करके मुगलो की अधीनता से छुटकारा प्राप्त करना चाहते थे।

वादशाह शाहआमल के नेत्रो से इन हिन्दू राजाओ की भावना छिपी न थी
लडके के द्वारा उनके इन भावो को वदलने की चेष्टा की। परन्तु उसमे उसको
अम्वेर और मारवाड के राजा शाहआलम के पास लौटकर उदयपुर मे राणा अम
पहुँचे और उस समय उन तीनो वीच सधि हुई। उसमे निश्चय हुआ कि आज से
कोई भी मुगल वादशाह के साथ सामाजिक अथला राजनीनिक—किसी प्रकार का को
रक्खे। इस सधि के द्वारा उन तीनो राजाओ मे सामाजिक सम्वन्धो की प्रतिष्ठा हुई
दिनो मे भग कर दिये गये थे। इस सधि के द्वारा जो सम्वन्ध राजपूतो के मुगलो के
गये थे, वे निर्जीव पड गये और मुगलो की अधीनता से राजपूतो को छुटकारा प्राप्त करने का
परतु इन्ही दिनो मे सठठित मराठो ने राजस्थान मे प्रवेश किया और उनको छिन्न-भिन्न

रामपुर के राजा रावगोपाल का लडका रतनसिह अपने पिता से विद्रोही हो
हो गया था और उस दशा मे औरङ्गजेव ने रतनसिह की सहायता करके उसके f
उसको सौप दिया था। रावगोपाल इसके वाद राणा अमरसिह की शरण मे गया
उसकी सहायता का वादा किया और अपनी सेना के साथ उसने रतनसिह के विरुद्ध
आक्रमण किया। मुसलमान हो जाने के वाद रतनसिंह का नाम राजमुस्लिमखाँ हो
मुस्लिमखाँ ने राणा की सेना का मुकाविला किया और राणा को पराजित किया।

राणा की पराजय का समाचार वादशाह ने दूत से सुना। उसने यह भी सुना
होने के वाद अपना राज्य छोडकर राणा ने पर्वत पर जाकर रहने का निर्णय किया है
चारो से वादशाह वहुत प्रसन्न हुआ और उसने समाचार लाने वाले दूत को इन
इकराम दिये। इसके कुछ दिनो के वाद वादशाह को यह भी मालूम हुआ कि राणा
सांवलदास नामक एक सरदार ने फिरोजखाँ पर आक्रमण किया। फिरोजखाँ अपना
अजमेर भाग गया। इस लडाई मे साँवलदास का लडका जयमल मारा गया। मारवाड
दुर्गादास उदयपुर चला आया था। मारवाड के राजा से असतुष्ट होने के कारण
पडा था। राणा ने उदयपुर मे उसे सम्मानपूर्ण स्थान दिया था और उसके जीवन-
पाँच सौ रुपये रोजाना के हिसाव से उसको दिये जाने की व्यवस्था कर दी थी।

दुर्गादास जैसे शूरवीरो का कोई लाभ उदयपुर को मिलने के पहले ही
शाह की मृत्यु हो गयी। राज्य के विरोधियो के द्वारा सन् १७१२ ईसवी मे वादशाह
विष देकर उसके प्राणों का अन्त किया गया। वादशाह शाहआलम चरित्रवान आदमी
उसको अपने पिता के अपराधों का फल भोगना पड़ा। औरंगजेव के अत्याचारों से

की यह निर्वलता उसके लिए और भयानक हो उठी। सरदारो के विद्रोह को दवाने की शक्ति राणा अरिसिह मे न रह गयी थी। इसलिए उसकी तरफ से मल्हारराव होलकर से सहायता माँगी गयी। इसके परिणाम स्वरूप, मेवाड राज्य के वहुत से इलाको पर मल्हारराव होलकर का अधिकार हो गया, राज्य के सरदारो के विद्रोह का मराठो ने अनुचित लाभ उठाया और होलकर ने सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार कर लेने की चेष्टा की।

मनुष्य के जीवन मे किसी के उपकारो का प्रभाव अमिट होता है और मनुष्य अपनी कृतज्ञता के द्वारा सदा उसको स्वीकार करता रहता है। परन्तु राजनीति मे उपकारो को भुला देना और कृतघ्न बन जाना आश्चर्य जनक नही होता। राजनीति मे इस प्रकार के अपराध को पाप नही कहा जाता। अम्बेर के सिंहासन पर जिस माधवसिंह को बिठाने के लिए मेवाड के राणा ने अपनी कोई शक्ति उठा न रखी थी, उसी माधवसिंह ने अपने मामा राणा के समस्त उपकारो को भुला कर मेवाड का श्रेष्ठ नगर-रामपुर का इलाका मल्हारराव होलकर को दे दिया। * मेवाड राज्य के साथ बाजीराव की जो संधि हुई थी, उसमे मेवाड के राणा ने कर देना स्वीकार किया था। उस कर को वसूल करने का कार्य होलकर को सौंपा गया था। होलकर ने निश्चित नियमो को तोड कर वसूल करने का कार्य आरम्भ किया, जिससे वह संधि टूट गयी। †

संधि के विरुद्ध मराठो के व्यवहार करने से जो कर मेवाड-राज्य को अदा करना चाहिये था, उसकी अदायगी न हुई। इसलिए मल्हारराव होलकर ने सेना लेकर मेवाड पर आक्रमण किया। इन दिनो मे मेवाड के सरदारो का विद्रोह राणा के साथ चल रहा था। इसलिए राणा ने विवश होकर होलकर के साथ संधि कर ली और उस संधि के अनुसार इक्यावन लाख रुपये होलकर को दिये।

इन दिनो मे मेवाड-राज्य की आर्थिक परिस्थितियाँ वहुत निर्वल हो गयी थी। ऐसे समय पर इस इक्यावन लाख की अदायगी राज्य के लिए भयानक हो उठी। इन्ही दिनो मे मेवाड राज्य मे प्रकृति का प्रकोप आरम्भ हुआ और भीषण दुर्भिक्ष के कारण राज्य मे खाने पीने की समस्या अत्यन्त भयानक हो उठी। इसके चार वर्षों के पश्चात् मेवाड राज्य मे आपसी झगडे आरम्भ हुए जिनसे राज्य की अवस्था और भी अधिक भयानक हो गयी।

मेवाड के राणा अरिसिंह के विरुद्ध राज्य के सरदारो ने विद्रोह किया। इस विद्रोह का कारण क्या था, यह साफ-साफ समझ मे नही आता। इसके सम्वन्ध मे कई प्रकार के उल्लेख पाये जाते है। कुछ लोगो की धारणा है कि मराठो के आक्रमणो को न रोक सकने के कारण राणा सरदारो की आँखो मे अयोग्य सावित हुआ। इसलिए वे राणा को सिंहासन मे उतार देना चाहते थे और इसीलिए उन लोगो ने विद्रोह किया। कुछ अधिकारियो का कहना है कि सामन्तो की स्वार्थपरता के कारण यह विद्रोह उत्पन्न हुआ था। इसके सम्वन्ध मे कहने वालो का अनुमान है कि राणा अरिसिंह ने अपने भतीजे राजसिंह को मारकर सिंहासन पर अधिकार किया था। कुछ लोगो का कहना यह है कि अरिसिंह राज्याधिकारी होने के पहले मेवाड राज्य का एक साधारण सामन्त था और राज्य की तरफ से उसको जो इलाका मिला था, उसकी आमदनी तीस हजार रुपये वार्षिक थी। उस समय कितने ही सामन्त उससे ऊँची श्रेणी के माने जाते थे। इस दशा मे अरिसिंह के सिंहासन पर बैठने से

* सन् १७५२ की यह घटना है। इस घटना के बाद रामपुर इलाके के कुछ गाँव मेवाड राज्य मे रह गये थे। रामपुर के झगडे का उल्लेख पहले किया जा चुका है।

† बाजीराव के साथ जो संधि हुई थी, उसमे निश्चय हुआ था कि मेवाड पर आज के बाद मराठो के आक्रमण न होंगे। परन्तु मराठो ने स्वयं इस शर्त को भंग किया।

कारण यह था कि वह दोनो सैयद बन्धुओं से बहुत दबा हुआ था और अपने आपको बादशाह समझता था। उसके इस पत्र का कोई लाभ उसको न हुआ। अजितसिंह ने मुगल सेनापति अमीरुलउमरा के साथ सधि कर ली और एक निश्चित साथ-साथ अपनी लडकी का ब्याह बादशाह के साथ करने का वादा कर लिया।

इस विवाह के होने के कुछ दिन पहले बादशाह फरूखसियर की पीठ मे एक वह धीरे-धीरे बढ गया। हकीमो और जर्राहो की बहुत चिकित्सा के बाद भी उसमे पहुँचा। एक तरफ बादशाह को उस फोडे का कष्ट था, जो दिन पर दिन भयानक हो था और दूसरी तरफ उसके विवाह के जो दिन करीब आ रहे थे। इलाज करते-क कुछ दिन बीत गये। विवाह का जो दिन नियत हुआ था, वह दिन भी निकल गया ले का फोडा सेहत न हुआ।

उन दिनो मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत मे व्यवसाय करने के लिए आयी कम्पनी के अँगरेज सूरत मे मौजूद थे। उन अँगरेजो मे हेमिल्टन नाम का एक डाक्ट उसने जब बादशाह को बीमार सुना तो वह देखने गया। फोडे की हालत देखकर उ हुए बादशाह को अनेक तरह की बाते समझाई और अपनी चिकित्सा करने का उसने इ किया। बादशाह की आज्ञा पाकर उस अँगरेज डाक्टर ने फोडे की चिकित्सा आरम्भ इलाज से थोडे ही दिनो मे फोडा अच्छा हो गया।

सेहत होने के बाद बादशाह फरुखसियर ने डाक्टर हेमिल्टन को इनाम देने किया। बादशाह के इस इरादे को सुनकर डाक्टर हेमिल्टन ने कहा कि "मुझे इस बदले बादशाह का लिखा हुआ वह फरमान मिलना चाहिए, जिससे हमारी कम्पनी मे रहने का अधिकार मिले और हमारे मुल्क इगलैण्ड से आने वाले माल पर जो चुंग है, वह माफ कर दी जाय।"

बादशाह डाक्टर हेमिल्टन की इस माँग को सुनकर—जिसमे किसी प्रकार की भावना न थी और उसके एक-एक अक्षर से देशभक्ति की महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती प्रभावित हुआ और उसने डाक्टर की माँग को स्वीकार किया। स्वस्थ हो जाने के प शाह ने मारवाड की राजकुमारी के साथ अपना विवाह किया।

फरुखसियर दोनो सैयद बन्धुओ से बहुत असन्तुष्ट था। कुछ और न कर सकने मे उसने औरङ्गजेब के पुराने मन्त्री इनायतउल्ला खाँ को अपना मन्त्री मुकर्रर किया। इ खाँ ने अपने इस पद पर आते ही हिन्दुओ पर अनेक प्रकार के अत्याचार आरम्भ किये टैक्स उसने फिर से कायम किया। बादशाह औरङ्गजेब के समय मे यह टैक्स हिन्दुओ गया था। उसका एक मशोधित रूप इनायतउल्ला खाँ ने अपने मन्त्री काल मे फिर से आरम्भ किया। इसके सिवा और भी अनेक प्रकार के भीषण अत्याचार उस समय हिन्दु आरम्भ किये गये।

इसी परिच्छेद मे पहले लिखा जा चुका है कि मुगल बादशाह के विरुद्ध जिन ने उदयपुर मे सधि की थी, उसमे मारवाड के राजा अजितसिंह भी था। उस सधि मे कि हममे से कोई मुगल बादशाह के साथ सामाजिक अथवा राजनीतिक—किसी प्रकार न करेगा। सधि की उस शर्त को तोड कर अजितसिंह ने मुगल बादशाह फरुखसियर क

लिए ईश्वरीसिह के साथ युद्ध किया था, उन दिनो मे जालिमसिंह का पिता कोटा का राजा था। उससे बदला लेने के लिए सीधिया के साथ मिलकर ईश्वरीसिंह ने कोटा राज्य पर आक्रमण किया। उस मौके पर जालिमसिह ने मराठो की सेना का सामना किया था। उसके वाद जालिमसिंह कोटा छोडकर मेवाड के राणा के पास चला आया था और राणा ने उसको अपने राज्य मे एक सरदार का पद देकर उसका सम्मान किया। साथ ही छत्रखैरी का इलाका देकर उसकी सहायता की थी।

जालिमसिंह योग्य और दूरदर्शी राजपूत था। उसके परामर्श से राणा ने मराठो से सहायता लेने का निश्चय किया और इसके लिए राघूपागेवाला और दौलामिया नाम के दो मराठा नेता अपनी सेनाओ के साथ बुलाये गये। इस बीच मे राणा ने राज्य के प्राचीन पचोलियो को मन्त्री के पद से पृथक करके उग्रजी मेहता को राज्य के प्रवध का भार दे दिया। ये घटनाये सम्वत् १८२४ सन् १७६८ ईसवी मे मेवाड के राज्य मे चल रही थी। माधव जी सीधिया इन दिनो मे उज्जैन मे था। उसकी सहायता प्राप्त करने के लिए मेवाड के दोनो विरोधी दलो ने कोशिश की। सबसे पहले रत्नसिह उसके पास पहुँचा और सीधिया के साथ कुछ बातो का निर्णय करके उसने क्षिप्रा नदी के किनारे अपने सहायक आदमियो को लेकर मुकाम किया। इस दशा मे राणा सीधिया की सहायता न प्राप्त कर सका।

राणा अरिसिह रत्नसिंह की सेना का सामना करने के लिए रवाना हुआ। शालुम्ब्रा का सरदार शाहपुर और बुनेरा के दोनो राजा और जालिमसिंह एवम् दोनो मराठा नेताओ ने उससमय राणा की सहायता की। रत्नसिंह की सहायता मे माधव जी सीधिया की सेना मौजूद थी। राणा अरिसिह ने सब को लेकर सीधिया की सेना पर आक्रमण किया दोनो तरफ से युद्ध आरम्भ हुआ। मेवाड के राजपूतो ने उस समय अपनी बहादुरी का परिचय दिया और उन लोगो ने बडी तेजी के साथ शत्रुओ का सहार किया। उस युद्ध मे रत्नसिह की पराजय हुई और वह सीधिया की सेना के साथ उज्जैन की तरफ भागा और सीधिया का सेना ने उज्जैन की तरफ दूर जाकर अपनी छावनी डाली।

इसके बाद माधव जी सीधिया ने अवसर पाकर एक ऐसे समय पर अपनी सेना के साथ राजपूतो पर आक्रमण किया, जब कि मेवाड की तरफ से आयी हुई सेना युद्ध के लिए तैयार न थी। उस समय शालुम्ब्रा का सरदार शाहपुर और बुनेरा के दोनो राजा मारे गये। मराठा सेनापति दौलामिया साद्री का उत्तराधिकारी राजकुमार और कई अन्य शूरवीर भयानक रूप से घायल हुए। जालिमसिह का घोडा मारा गया और वह स्वयं भीषण रूप से जख्मी हुआ। वह कैद कर लिया गया। उसके साथ प्रसिद्ध अम्बा जी के पिता त्रयबकराव ने अत्यन्त सम्मानपूर्ण व्यवहार किया। राजपूतो की पराजित सेना उदयपुर की तरफ चली गयी।

उज्जैन के करीब होने वाले युद्ध मे मेवाड का जो शालुम्ब्रा का सरदार मारा गया, भीमसिह उसका चाचा और उत्तराधिकारी था। भीमसिह राणा की सेना का सेनापति बनाया गया और उदयपुर की रक्षा का भार उसको सौपा गया। लेकिन उस विपदकाल मे जिसके द्वारा उदयपुर की रक्षा हुई, उसका नाम अमरचद बरवा था। अमरचन्द बरवा का जन्म वैश्य कुल मे हुआ था। इसके पहले वह मेवाड का मन्त्री था। वह अत्यन्त बुद्धिमान और राज्य के कार्य मे दूरदर्शी था। स्वर्गीय राणा के समय मेवाड मे होने वाले उपद्रवो को रोकने मे उसने बडी बुद्धिमानी से काम लिया था। राणा अरिसिंह ने उसके साथ भी शत्रुता पैदा कर ली थी और उसको मन्त्री पद से हटा दिया था। यह आघात अमरचन्द के हृदय मे कम अपमानपूर्ण न था। मन्त्री पद से उसके पृथक हो जाने के बाद धीरे-धीरे दस वर्ष बीत गये। इन दिनो मे मेवाड मे बहुत से परिवर्तन हो गये।

कोई एक बडी शक्ति न थी, इसलिए इस विशाल देश का शासन एक सौ वर्षों के भ
से आये मुट्ठी-भर आदमियो के हाथो मे चला गया। किसी बडी शक्ति के छिन्न-भिन्न
का परिणाम यही होता है। जहाँ पर सभी शक्तियाँ स्वतन्त्रता से काम लेती है और
केन्द्रीय शक्ति का नियत्रण नही रहता तो उन शक्तियो का पतन स्वाभाविक हो जा
स्वाभाविकता के उदाहरण छोटे-छोटे परिवारो से लेकर बडे-बड़े साम्राज्यो तक एक से
और ससार का प्रत्येक इतिहास इस स्वाभाविकता को बिना किसी विवाद के स्वीकार
प्राचीन परसिया के सूबेदारो ने अपनी अनियन्त्रित स्वतन्त्रता का भोग करके परसिया
बीज बोया था और यूनान से लेकर हिन्दुस्तान तक फैली हुई सिकन्दर की बादशाह
उस समय आरम्भ हुआ था, जब उसके मरने के बाद, उसके सेनापतियो ने अनिय
अलग-अलग प्रान्तो मे अपने-अपने अधिकारो की घोषणा की थी। विशाल और समुन्नत
कभी पतन न हुआ होता, यदि इस विस्तृत देश मे राजओ और नरेशो की सख्या बढी न
विशाल मुगल-साम्राज्य का पतन न होता, यदि अकबर के वंशजो ने अनियत्रित अवस्था
होकर राज्याधिकार के लिए विद्रोह न किया होता।

बादशाह फर्रूखसियर का थोडे दिनो का शासन अपने अतिम दिनो मे चल रहा
मुगल-सिहासन पर था। परन्तु सैयद बन्धुओ के हाथो मे वह कठपुतली हो रहा था। श
तो उसका कुछ अधिकार था और न सम्मान था। उसने सैयद बन्धुओ के आधिपत्य
करने के लिए अनेक प्रयास किये थे, परन्तु किसी मे उसको सफलता न मिली। उसने इनायत
अपना मन्त्री इसलिए मुकर्रर किया था कि उसकी सहायता से दोनो सैयद बन्धुओ का प्र
हो जायगा परन्तु ऐसा न हुआ। इनायतउल्ला ने मन्त्री होने के पश्चात् जजिया जैसे कर
हिन्दुओ के साथ जो असगत और अन्यायपूर्ण व्यवहार किया, उससे बादशाह के साथ र
जो सहानुभूति बाकी रह गयी थी, वह भी नष्ट हो गयी।

जब बादशाह को अपने किसी प्रयत्न मे सफलता न मिली तो उसने हैदराबाद
प्रतिष्ठा करने वाले निजामुल-मुल्क को अपनी सहायता के लिए बुलाया। इसके पहले
मुल्क मुरादाबाद का सूबेदार था। वह शासन-सम्बन्धी कार्यो मे बहुत चतुर
बादशाह ने सैयद बन्धुओ से राहत प्राप्त करने के लिए उसको बुलाया और
देने का वादा किया।

पश्चिम तरफ उदयसागर का विस्तृत जल था और पहाडी घने वृक्षो से वह दिशा परिपूर्ण थी। इसी लिए उदयपुर के पश्चिम का रास्ता शत्रु सेना से खाली रहा। इसलिए उदयपुर के लोग इसी रास्ते से बाहर आते-जाते और नावो पर बैठकर उदयसागर को पार करते। इस समय राणा के सामने भयकर संकट था। राज्य के लगभग सभी सरदार शत्रु से मिल गये थे। सिंधी सेना के अतिरिक्त दूसरा कोई भी राणा की सहायता करने वाला न था। लेकिन वह सिंधी सेना भी राणा से विद्रोह कर रही थी। राणा और मेवाड राज्य की दुरवस्था देखकर सिंधी सेना अपने वेतन के सम्बन्ध मे निराश हो रही थी और किसी प्रकार लड-झगड कर वह राणा से अपना वेतन वसूल करना चाहती थी।

राणा के पास धन का अभाव था। वेतन न दे सकने के कारण कई मौको पर सिंधी सेना के द्वारा उसको अपना अपमान सहन करना पडा। वह अब अपनी रक्षा करने मे निराश और असहाय हो रहा था। जिस सिंधी सेना का उसको कुछ बल-भरोसा था, उसका विद्रोह बढता जा रहा था। इस निराश अवस्था के समय राणा को अपने और राज्य की रक्षा का कोई उपाय सूझ न पडा। रघुदेव नाम का एक व्यक्ति उसका दूध भाई था।* वह झाला सरदार का उत्तराधिकारी होकर उसके मन्त्री का कार्य कर रहा था। इस सकट के समय उसने राणा को सलाह दी कि "आप उदयपुर छोड कर मण्डलगढ चले जाये।" राणा को इस सलाह पर सतोष न हुआ। उसने शाशुम्भा सरदार से परामर्श किया और उसने राणा को अमरचद के बुलाने की सलाह दी। बुलाये जाने पर अमरचद ने आकर कहा : "इस समय राज्य के सामने भीषण सकट है। इन सकटो का सामना करने के लिए मैं सहज ही साहस नही करता। यह बात जरूर है कि आज के पहले भी अनेक मौको पर मेवाड को भयानक सकटो का सामना करना पडा है और उन दिनो मे मुझे सफलता मिली है। लेकिन आज की परिस्थितियाँ पहले की निस्बत बहुत कुछ भिन्न है। मेरे स्वभाव मे भी एक दोष है और वह यह है कि मै जो सही समझता हूँ, वही करता हूँ। किसी के अयोग्य परामर्श अथवा आदेश का मैं पालन नही कर पाता। मैं अपने इस अपराध को स्वय स्वीकार करता हूँ। मेवाड राज्य मे इस समय धन का अभाव है। सरदार शत्रुओ से मिल गये है। सेना विद्रोह कर रही है। राज्य के सामने खाने-पीने का भी सकट है ऐसी दशा मे इन सकटो का मुकाबिला करना आसान नही है। फिर भी जो कुछ कर सकता हूँ, उसके लिए तैयार हूँ। लेकिन उसी अवस्था मे जब कि मेरे कार्यो मे बाधा और अविश्वास न उत्पन्न किया जाय। इस सकट के समय मे जो उचित समझूँगा करूँगा।"

राणा के सामने और कोई उपाय न था। उसने अमरचंद की बातो को स्वीकार किया और भगवान एक लिंग की शपथ लेकर अमरचद को आश्वासन देते हुए उसने कहा "मै किसी प्रकार का अविश्वास न करूँगा यदि आप रानी का रत्नहार और नथ भी माँगेगे तो उसके देने मे इनकार न करूँगा। आप इसका विश्वास रखे।"

जिस समय अमरचद के साथ राणा की ये बाते हो रही थी, रघुदेव भी वहाँ पर बैठा था। उसने ऐसे मौके पर राणा को जो सलाह दी थी उसका विरोध करते हुए अमरचन्द ने रघुदेव से अनेक बाते ऐसी कही, जिनको सुनकर उसने अपना तिरस्कार अनुभव किया।

इसके बाद, अमरचद ने सिंधी सेना के प्रधान को बुला कर कहा—आप लोग मेरे साथ आइए। आप लोगो के वेतन के जो रुपये बाकी है उनके अदा करने का मै अभी उपाय करता हूँ।

---

*एक ही माता के दूध को पीकर पलने वाले दूध भाई कहलाते है। यद्यपि उनके जन्म का सम्बन्ध अलग-अलग माता-पिता से होता है।

कि अमीरुल उमरा मारा गया, मोहम्मदशाह ने उसके भाई अब्दुल्ला खाँ को कैद करने क
की। इस पर उसके वजीर ने बगावत की और दिल्ली के सिंहासन पर इब्राहीम को बिठ
मोहम्मदशाह के विरुद्ध युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। कुछ देर के संग्राम मे दिल्ली के
सआदत खाँ ने वजीर को गिरफ्तार कर मोहम्मदशाह के सामने उपस्थित किया और बाद
आज्ञा से उसको फाँसी की सजा दी गयी।

सेनापति शआदतखाँ की इस बहादुरी से मोहम्मद शाह बहुत प्रसन्न हुआ।
बहादुर जंग की पदवी दी और उसे अयोध्या का राजा बना दिया। इस सफलता के
हिन्दू राजा बादशाह को बधाई देने के लिए गये। बादशाह ने अम्बेर और जोधपुर के राज
अपने राज्य के कुछ इलाके इनाम मे दिये। गिरधरदास ने मराठो को युद्ध करके पीछे हटा
इसलिए बादशाह ने उसको पुरस्कार मे मालवा का राज्य दिया और निजाम को अपना व
के लिए हैदराबाद से बुलाया। गिरधरदास, रत्नचन्द्र के दीवान जुबीलराम नागर नामक
लडका था। इसी सिलसिले मे बादशाह ने जयसिंह को आगरा एवम् अजितसिह को गुजर
अजमेर दिया।

मुगल-साम्राज्य के इन बिगड़े हुए दिनो मे राजस्थान के सभी राजा और नरेश अ
के निर्माण मे लगे थे। परन्तु मेवाड राज्य मे इस प्रकार का कोई भी कार्य न हो रहा था।
मे अम्बेर का राज्य जमुना नदी के किनारे तक फैल गया था और मेवाड का राजा अज
अजमेर के किले पर अपना झंडा फहरा कर और गुजरात के राज्य को तहस-नहस करके अ
राजस्थान की मरुभूमि तक पहुँचा दी थी।

इस प्रकार उन दिनो मे राजस्थान के सभी राजा अपनी उन्नति मे लगे थे और अ
राज्यों की सीमा का विस्तार कर रहे थे। परन्तु मेवाड के राणा का इस तरफ बिल्कुल
था। मेवाड़ के सिसोदिया वंश मे पूर्वजो के सिद्धान्तो की सदा रक्षा हुई थी और आज भ
थी। सिद्धान्तो की रक्षा के लिए ही इस वश के राजपूतो ने सदा अपने प्राणो को उत्सर्ग
और जीवन-भर कठोर सकटो का मुकाबिला किया था। मुगल राज्य के पतन के दिनो मे
राणा अपने राज्य के लिए कुछ भी न कर रहा था। वह करना भी नही चाहता था। अ
होना एक शूरवीर का धर्म नही होता। ऐसे मौको का लाभ उठाना अयोग्य और का
जानते है। सीसोदिया वश के सिद्धान्तवादी शूरवीर राणाओ ने ऐसा कभी नही किया
राज्य का राणा अपने पूर्वजो के सिद्धान्तो के अनुसार आज भी कुछ करना नही चाहता थ
बात इतनी ही न थी। बल्कि मेवाड राज्य का यदि कोई सामन्त राजा ऐसे अवसर
राज्य का विस्तार करके लाभ उठाना चाहता था तो राणा की तरफ से उसको मना ही
जाती थी।

मेवाड के राणा के अनेक कार्य उसके सिद्धान्तवादी होने का प्रमाण देते है। यहाँ
छोटा-सा उदाहरण लिख कर उसको स्पष्ट कर देना आवश्यक मालूम हो ा है। शक्ताव
जैतसिंह ने राठौरो के हाथो से ईदर देश छीनकर कोलोवाडा के पहाडी भागो तक सम्पूर्ण
अपने अधिकार मे कर लिया था और उसके वाद वह आगे वढना चाहता था। यह समाच
को मिला। उसी समय अपनी सेना के साथ लौटकर उदयपुर आने के लिये शक्तावत सर
राणा की ओर से आदेश भेजा गया।

इस प्रकार का आदेश शक्तावत सरदार जैतसिंह को जैसे ही मिला, वह अपनी सेना

थे, उनको बेचकर अमरचन्द ने खाने के अनाजो का सग्रह किया। राणा अरिसिह की अयोग्यता के कारण राज्य मे अनाज का वडा अभाव हो गया था और वह इतना महँगा विक रहा था, कि जिससे वहुत वडी सख्या मे राज्य के परिवार बहुत दिनो से पेट-भर भोजन न कर सकते थे। प्रजा की यह तवाही राणा और राज्य के लिए अभिशाप हो गयी थी।

अमरचन्द ने राज्य की इस अवस्था को वदलने की तुरत चेष्टा की। राज्य का जो खजाना अब तक वाकी था, उससे जितना भी अनाज मिल सका, खरीदा गया और राज्य के प्रत्येक वाजार मे उसको भेजकर उसको अधिक से अधिक सस्ता विकवाने की कोशिश की गयी। इस वात की चेष्टा की गयी कि कोई भी व्यापारी अनुचित लाभ उठाने की अभिलाषा न करे। सम्पूर्ण राज्य मे ढोल पिटवा कर इस वात की मुनादी की गयी कि राज्य की रक्षा के लिए लडने वाले किसी भी आदमी को उसके प्रार्थना करने पर छै महीने के खाने-पीने की सामग्री दी जायगी, जिससे उसका परिवार सुख और सतोष के सथ रह सके।

अमरचन्द की इन कोशिशो के फलस्वरूप राज्य की दुरवस्था मे वडा परिवर्तन हुआ। मेवाड के जो शूरवीर राणा के विद्रोही हो रहे थे, उनमे से वहुत से राणा के दरवार मे पहुँचे और उन सभी ने अपनी सुभकामनाये वडी नम्रता के साथ राणा और राज्य के प्रति प्रकट की। सरदार आदिल वेग ने कहा . "हम सव लोग मेवाड राज्य मे रहते हैं। राज्य का नमक खाया है। सभी प्रकार की सुविधाओ का भोग किया है। हम सव का कर्त्तव्य है कि ऐसे समय पर जव शत्रुओ का राज्य पर आक्रमण होने वाला है, राज्य की रक्षा के लिए अपने प्राणो का वलिदान दे। इसलिए हम सव शपथपूर्वक इस वात को स्वीकार करते हैं कि भयानक से भयानक सकटो के समय मे भी हम राणा का साथ नही छोडेगे। मेवाड-राज्य हमारी जन्मभूमि है। इस राज्य की रक्षा के लिए वलिदान होना ही हमारा धर्म है। हम लोगो को अव वेतन की आवश्यकता नही है। आज हमारे घरो मे खाने-पीने की कमी नही है। यदि ऐसा समय आया जव उसका अभाव होगा तो हम लोग अपने हाथो मे तलवारे लेकर शत्रुओ के साथ युद्ध करेगे और अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए हँसते हुए अपने प्राणो को उत्सर्ग करेगे।"

मेवाड राज्य के सरदार आदिलवेग की इस प्रकार की वातो का कारण अमरचन्द का प्रभाव था। * दरवार मे राणा मौजूद था। आदिलवेग की वातो को सुन कर उसके नेत्र खुल गये। इस समय राजपूतो और सिंधी लोगो का का उत्साह असीम लहरे मार रहा था। मन्त्री अमरचन्द ने राज्य की परिस्थितियाँ ही वदल दी और उसका परिणाम यह हुआ कि राज्य की निर्वल शक्तियाँ सजग और सवल हो उठी। मेवाड दरवार का यह नव-जागरण सीधिया से छिपा न रहा। उसके मन मे अनेक प्रकार की शकाये पैदा होने लगी। इसी वीच मे सीधिया की सेना जो कुछ आगे वढ आयी थी, उसको पीछे हटाने के लिए राजपूतो ने आक्रमण किया। समय को देखकर सीधिया ने संधि का फिर से प्रस्ताव किया। अमरचन्द इन दिनो मेवाड राज्य को पहले की तरह निर्वल नही समझता था। सीधिया के द्वारा आने वाले प्रस्ताव का उत्तर देते हुए उसने कहला भेजा कि इधर छै महीने तक सीधिया के द्वारा जो अवरोध किया गया है, उसकी क्षति को काटकर सधि की जा सकती है। सीधिया को अमरचन्द की यह वात स्वीकार करनी पडी और अत मे अमरचन्द क्षति के तिरसठ लाख पचास हजार रुपये मजूर करने पर सीधिया को सधि करनी पडी।

---

* सरदार आदिलवेग के वेटे का नाम मिर्जा अब्दुल रहीमवेग था। राणा ने मेवाड-राज्य की तरफ से उसको एक जागीर दी थी।

बार की संधि में वह अजितसिंह फिर शामिल हुआ और अपराध को स्वीकार करते मे सधि के अनुसार आचरण करने का उसने वादा किया। दूसरे दोनों राजाओं ने एक अजितसिंह का विश्वास किया और तीनों ने मिलकर निश्चित शर्तों को शपथ पूर्वक स्वी कि हममे से कोई भी मुसलमानो के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध न कायम करेगा। इस शपथ लेने के बाद तीनो राजाओ ने—जिसमे राणा सग्रामसिंह का बडा लडका जगतसिंह था—मेवाड के अन्तर्गत हुर्ला नामक नगर मे सधि-पत्र पर हस्ताक्षर किये।

सधि के पश्चात् उन तीनो राजाओ ने मुगलो के साथ युद्ध करने का निश्चय उसकी तैयारियाँ होने लगी। बरसात के दिन समीप आ गये थे, इसलिये उसके बीतने होने लगी। बरसात के दिन पूरी तौर पर बीतने भी न पाये थे कि मुगल बादशाहत पडने पर अम्बेर और मारवाड के दोनो राजाओं ने अबनी शक्तियो को मजबूत बनाकर थी और अब वे दोनो मेवाड राज्य से किमी समय बाद मे अपने आप को कमजोर थे। मेवाड का राजा जगतसिंह पहले की परिस्थितियो के अनुसार अपना गौरव अ था। इस प्रकार की धारणाओ के कारण उन तीनो राजाओ मे कोई भी अपने को छोटा नही समझता था। उस सधि के शिथिल होने का यही कारण हुआ और समय उस संधि के द्वारा जो सगठन किया गया था, छिन्न-भिन्न हो गया।

निजामुल-मुल्क ने मुगलो की अधीनता से अपने राज्य को पूर्णरूप से स्वतन्त्र था। ऐसी दशा मे मुगलो का सेनापति मुबारिज खा एक मुगल फौज लेकर निजामुल-मुल के लिये रवाना हुआ। निजामुल-मुल्क बहुत चालाक आदमी था। उसने मुगल सेना करने की कोशिश की, परन्तु इसमे उसको कामयाबी न हुई। इसलिए उसको मुगल-से युद्ध करना पडा। उस संग्राम मे मुगल-सेना की पराजय हुई। निजामुल-मुल्क ने सेना खाँ का सिर काट कर बादशाह के पास भेजा और यह कहला भेजा कि बादशाह के करने के कारण इसको पराजित करके और उसका सिर काट कर भेजा है। बादशाह ने अपनी कमजोरी मे निजामुल मुल्क की इस बात को सुना और उसने उसको बरदाश्त

निजामुल-मुस्क बडी बुद्धिमानी के साथ इन दिनो मे अपने राज्य को मजबूत हुआ था। उसे मुगल बादशाह से किसी प्रकार का डर न था। उसने अनेक प्रकार कर राजपूतो के साथ मित्रता बढायी और मालवा तथा गुजरात राज्यो के सम्बन्ध मे उसकाया। बाजीराव अपनी सेना के साथ रवाना हुआ और उसने मालवा को घेर लिया बहादुर उन दिनो मे मालवा का अधिकारी था और वह मालवा के राजा गिरधारीसिंह था। बाजीराव के साथ युद्ध करते हुए वह मारा गया और मालवा मराठो के अधि गया। ठीक यही अवस्था गुजरात की भी हुई। इसके पहले इस राज्य को राठौरो ने पाया था। परन्तु उनके द्वारा शर्तों के पूरा न होने पर अमरसिंह के लडके अभयसिंह पर आक्रमण किया और उसके अधिकारी बुलन्द खाँ को निकाल दिया। इस अवस उठाकर राठौरो के जीते हुए गुर्जर राज्य पर मराठो ने अधिकार कर लिया। अभ तरफ अधिक ध्यान न दिया। अब उसके अधिकार मे गुर्जर राज्य के केवल उत्तरी इलाके

जिन दिनो मे भारत के दक्षिण मे और राजस्थान मे इस प्रकार के सघर्ष हो बिहार और उडीसा मे शुजा-उद्दौला अपने सहकारी अलीवर्दी खाँ के साथ शासन कर अयोध्या का राज्य सआदत खाँ के लड़के सफदर जङ्ग के अधिकार मे था। यह राज्य

राज्य के हित के लिए उज्जैन के युद्ध मे अपनी जान दे दी थी, राणा अरिसिंह ने उसका भयानक रूप से अपमान किया था और राज्य से निकल जाने के लिए उसे आदेश दिया था। उस सरदार के विनयावनत होने पर भी राणा ने किसी प्रकार दया न की थी, बल्कि अपनी आज्ञा को अधिक कठोर बनाकर चन्दावत सरदार से कहा था "यदि तुम मेरा आदेश पूरा न करोगे तो मै तुम्हारा सिर कटवा लूंगा।" चन्दावत सरदार को विवश हो कर राणा का आदेश पालन करना पडा। राज्य से जाने के समय उसने राणा से कहा था "आपकी आज्ञा से मै जा रहा हूँ लेकिन इसका फल आपको और आपके परिवार को अच्छा न मिलेगा।"

राणा के मारे जाने के सम्बन्ध मे कई प्रकार के अनुमान लगाये जाते है। यह भी कहा जाता है कि मेवाड की सीमा पर बिलौना नाम का एक ग्राम है। बूंदी के राजा ने उस ग्राम पर अधिकार कर लिया था। यह घटना भी झगडे की एक कारण बनी। इस प्रकार के अनुमानो मे राणा के वध का सही कारण क्या है, यह ठीक नही कहा जा सकता। परन्तु जो अनुमान लगाये जाते है, उन्ही मे से किसी के कारण राणा अरिसिंह की हत्या की गयी।

राणा के मारे जाने पर उसके साथ के सभी सरदार उसका साथ छोडकर चले गये। केवल उसकी एक छोटी रानी रह गयी। उसने चिता बनवाकर उसमे आग लगवाई और राणा का मृत शरीर गोद मे लेकर वह भस्मीभूत हो गयी। राणा अरिसिंह के दो लडके थे। बडा लडका हमीर था और उससे छोटा भीमसिंह था। सम्वत् १८२८ सन् १७७२ ईसवी मे हमीर मेवाड के सिहासन पर बैठा। गहिलोत बश मे हमीर नाम का पहले भी एक शूरवीर पुरुष हो चुका था। लेकिन उन दिनो का आज न तो मेवाड था और न आज का यह हमीर, वह हमीर था। इन दिनो मे मेवाड की अवस्था बहुत गिर चुकी थी। सिहासन पर बैठने के समय हमीर की अवस्था बारह वर्ष की थी। इसलिए राज्य का प्रबन्ध राजमाता के सिर पर रहा।

राणा अरिसिंह के दिनो मे ही मेवाड का पूर्ण रूप से पतन हो चुका था। उसके मरने के बाद जो शक्तियाँ बाकी रह गयी थी, वे भी छिन्न-भिन्न हो गयी। इन दिनो मे कोई भी प्रतापी पुरुष मेवाड मे न था, मराठो के उत्पात अब तक बराबर चल रहे थे, राज्य के सिंहासन पर एक बालक था और उसकी छोटी अवस्था के कारण राज्य का शासन एक स्त्री के हाथ मे था। इन सभी बातो के कारण मेवाड-राज्य इन दिनो मे अनाथ हो रहा था। एक महान शक्ति के अभाव मे पतन के सभी द्वार खुल गये। चन्दावत और शक्तावत सरदारो का विरोध इस राज्य मे बहुत दिनो से चला आ रहा था। राज्य के इन पतन के दिनो मे भी वे अपनी-अपनी प्रधानता के लिए एक दूसरे का खून बहाने के लिए तैयार हो गये।

राज्य के लिए इतनी ही बात दुर्भाग्य की न थी। जितनी भी समस्याये थी वे सब एक साथ आकर मेवाड राज्य को मिटाने मे लगी थी। शालुम्ब्रा सरदार का अपमान राणा अरिसिंह ने किया था। इसीलिए अपने उस अपमान का बदला लेने के लिए शालुम्ब्रा सरदार ने अपनी कमर कसी और स्वर्गीय राणा अरिसिंह की विधवा रानी के विरुद्ध उसने अपना विद्रोह आरम्भ किया। इस विद्रोह ने सभी प्रकार मेवाड-राज्य को मिट्टी मे मिला दिया। राज्य की शक्तियाँ समाप्त हो गयी और अनाथ अवस्था मे मेवाड निवासियो के दिन व्यतीत होने लगे।

अमरचन्द ने जिन सिंधी लोगो का वेतन मेवाड के खजाने के द्वारा अदा किया था उन्ही सिंधी लोगो ने मेवाड-राज्य को निर्बल पाकर उसकी राजधानी पर आक्रमण किया और अपने बाकी वेतन के अदा करने की माँग की। राजधानी की रक्षा का भार शालुम्ब्रा सरदार के ऊपर था। सिंधी लोगो ने उस सरदार के साथ भयानक व्यवहार आरम्भ किये। शालुम्ब्रा सरदार के वेतन न दे सकने पर

नादिरशाह ने अमीरुल-उमरा का अधिकार दिया। सम्रादतखाँ को निजाम की इस र
लता से बडी ईर्ष्या पैदा हुई। उसने निजाम के विरुद्ध नादिरशाह को भडकाया अ
दिल्ली के खजाने मे अपरिमित सम्पत्ति है। निजाम जिस रकम के देने का वादा करके
चाहता है, इतनी सम्पत्ति तो वह स्वय अपने पास से दे सकता है। सम्रादतखाँ की
नादिरशाह का लोभ बढ गया। निजाम के द्वारा जो सधि होने जा रही थी, वह टूट ग
शाह ने दिल्ली के खजाने की कुँजी माँगी। इसके बाद नादिरशाह के सैनिक खु
बादशाह मोहम्मद शाह को पराधीन अवस्था मे अपने कैम्पो के सामने से लेकर गुज
नादिरशाह ८ मार्च सन् १७४० ईसवी मे दिल्ली के सिहासन पर बैठा और उसने
चलाया। उस सिक्के मे लिखा गया :

ससार के बादशाहो का बादशाह,
युग का शाहशाह बादशाह नादिरशाह।

मुगलो के खजाने मे जो बहुत दिनो की एकत्रित सम्पत्ति थी, वह आपसी झगडो
सम्बन्ध के अनेक मौको पर राजाओ तथा सामन्तो को प्रसन्न करने के लिए इनामो के देने
साथ खर्च की गयी थी। फिर भी, नकदी रुपयो के साथ सोना और जवाहिरात मिला
करोड रुपये मुगलो के खजाने से नादिरशाह के अधिकार मे आ गये। इनके सिवा राज
कीमती चीजे और बहुमूल्य साजो-सामान उसके हाथ लगा। लेकिन इस अपरिमित सम्प
शाह की भूख को मिटाने और उसको तृप्त करने के बजाय उसके क्रोध को भडका
दो करोड पचास लाख रुपये की और माँग की और इसके लिए उसने मुगल-राज्य मे स
कर दिया। राज्य के नेक और भले आदमियो को अपनी रक्षा का कोई मार्ग दिखाई न
लोगो ने अपने और परिवारो की इज्जत बचाने के लिये आत्म-हत्याये करके उस स
कारा पाया। इसी मौके पर नादिरशाह को मालूम हुआ कि उसके साथ के कुछ ईरान
गये है, वह भयानक रूप से उत्तेजित हो उठा। एक बडी मसजिद पर चढकर उसने
सिपाहियो को कत्ले-आम का हुक्म दिया। उसके फलस्वरूप, लाखो मनुष्य काट-काट
गये। इस नर संहार के साथ-साथ नादिरशाह की फौज ने भयानक रूप से शहर को
और आम रास्तो मे बरसाती पानी की तरह खून बहने लगा। पूरे शहर मे आग ल
मकानो की जलती हूई होली मे बेशुमार स्त्रियाँ, बच्चे और बूढे जलकर खाक हो ग
नक नर-सहार के समय अगर कोई बात जरा भी सतोष की हो सकती थी तो
नादिरशाह ने मुगल बादशाह के मन्त्री सम्रादतखाँ को—जो इस सर्वनाश का क
सम्पत्ति की फेहरिस्त के पेश करने की आज्ञा दी, जो उसके और उसके बादशाह
थी और निजाम ने जो ढाई करोड रुपये उसको देने का निर्णय किया था, वह रकम
से दाखिल करने के लिये नादिरशाह ने सम्रादतखाँ को हुक्म दिया। सम्रादतखाँ को
कृतघ्नता उसका दुर्भाग्य बनकर उसके सिर पर मँडराने लगी। उसकी जो कृतघ्नता म
के सर्वनाश का कारण बनी थी, वही उसके विनाश की भी कारण हो गयी।
बिनाश नही करता। मनुष्य स्वयं अपना सर्वनाश करता है।

नादिरशाह की आज्ञाओ को सुनते ही सम्रादतखाँ के होश उड गये। उसकी
कोई उपाय न रह गया था। उसने विष खाकर अपनी हत्या की। उसके दीवान राज
ने भी जहर खाकर अपनी जिन्दगी को खत्म किया। इसके बाद नयी सधि की गयी
सार, समस्त पश्चिमी सूबे काबूल, ठट्टा, सिध और मुलतान मोहम्मद की तरफ से

अयोग्यता और निर्वलता का लाभ उठा रहे थे, वे सभी अमरचद के विरोधी थे और राज्य की विगडती हुई परिस्थितियो से विवश होकर जव राणा ने अमरचद को फिर से मत्री वनाया तो विरोधियो ने विद्रोही वातावरण उत्पन्न किया था। परन्तु राज्य के शुभचितक होने के कारण अमरचद ने उसकी कुछ परवाह न थी। अरिसिंह की मृत्यु के वाद वालक हमीर के सिंहासन पर बैठने और सत्ता राजमाता के हाथो मे आने पर उन विरोधियो को फिर से एक वार अवसर मिला। इन सव वातो को समझते और जानते हुए भी अमरचद राज्य के हितो की रक्षा मे प्रत्येक समय रहा करता था। राजमाता की अवस्था इन दिनो मे वडी विचित्र थी। उसे अमर के विरुद्ध जैसे कोई भडका देता, उसी पर वह विश्वास कर लेती। उसको अपनी भलाई और बुराई के समझने का ज्ञान न रहा।

एक दिन रामप्यारी अमरचन्द के सामने आयी और उसने राजमाता की तरफ से कुछ ऐसी बाते अमरचन्द से कही, जो उसके सम्मान के सर्वथा विरुद्ध थी। अमरचन्द ने उसे डाँट दिया। रामप्यारी वहाँ से लौट गयी और राजमाता के पास जाकर उसने अनेक झूठी वाते कही। राजमाता उन बातो को सुनकर क्रोध मे आकर शालुम्ब्रा सरदार के पास जाने को तैयार हुई। रामप्यारी के चले जाने पर अमरचन्द को कुछ आशका मालूम हुई थी। वह अपने स्थान से उठकर चला गया और जाते हुए उसने रास्ते मे राजमाता को पालकी पर जाते हुए देखा। अमरचद ने नौकरो को राजमाता के राजमहल ले जाने का आदेश दिया। महल के पास पहुँचने पर अमरचन्द ने वडी नम्रता के साथ राजमाता से कहा "आपने इस समय अपने महल से निकल कर अच्छा काम नही किया। राणा को मरे हुए अभी छै महीने भी नही वीते। आपको अभी अपने महल से निकल कर कही जाना न चाहिए। ऐसा करना आपके प्रसिद्ध वश के नियमो के विरुद्ध है। आप स्वय बुद्धिमान है। मै आपको समझाने की सामर्थ्य नही रखता। मैं आपका और आपके राज्य का शुभचिंतक हूँ। आपके राज्य पर भयानक सकट आने वाले हैं, मे उनका सामना करने की चिन्ता मे हूँ। मै आशा करता हूँ कि मेरे इस कार्य मे आप सहायता करेगी।"

अमरचन्द ने इस प्रकार वहुत-सी वाते नम्रता के साथ कही। लेकिन अमरचन्द का राजमाता पर कोई प्रभाव न पडा। उसने अमरचन्द को अपना विरोधी और शत्रु समझा और जो लोग उसकी झूठी प्रशसा किया करते थे, उन्ही पर वह विश्वास करती थी। अमरचद पर राजमाता का अविश्वास वढता गया और उसी अविश्वास के फलस्वरूप उसने विष खिलवा कर मन्त्री अमरचद के प्राणो का सहार किया। इन दिनो मे मेवाड राज्य के सम्मान की रक्षा करने वाला यही एक अमरचन्द था। वह चरित्रवान था और अपने देश की रक्षा करने के लिए प्रत्येक समय चिंतित रहता था। उसकी योग्यता और बुद्धिमता मे कोई कमी न थी। उसमे लोकहित की अटूट भावना थी। इस प्रकार का योग्य और चरित्रवान व्यक्ति किसी भी देश के लिए आराध्य हो सकता है। मेवाड का दुर्भाग्य समीप आ गया था। इसीलिए वह राज्य ऐसे व्यक्ति का सम्मान न कर सका। पतन के दिनो मे मनुष्य के बुद्धि की कीमत मानी जाती है। जव किसी परिवार, देश और राज्य का विनाश होने वाला होता है तो उस परिवार—देश और राज्य मे अच्छे आदमियो के लिए स्थान नही रह जाता और वहाँ पर अयोग्य आदमियो का सम्मान वढ जाता है। खुशामद पसदगी मनुष्य की अयोग्यता का लक्षण है। जो अधिकारी खुशामद पसद होता है, वह कभी कोई अच्छा कार्य नही कर सकता। इस प्रकार के आदमियो के द्वारा, समाज का, देश का और राज्य का सर्वनाश होता। राजमाता मे खुशामद पसंद का रोग था। वह अमरचद की योग्यता का लाभ न उठा सकी। मेवाड-राज्य का पतन और सर्वनाश निश्चित था। इसीलिए उस राज्य मे अमरचद के त्याग और वलिदान का आदर उसके जीवन मे न हुआ। विष देकर उसके प्राण लिए गए। उसने अपनी जिदगी मे राज्य के लिए अपना सर्वस्वदान

छब्बीसवाँ परिच्छेद

राणा के पद पर बालक भीमसिंह—चन्दावत सरदारो की प्रधानता—पतन और आपस की फूट—सीधिया के विरुद्ध मारवाड और जयपुर—घरेलू फूट का परिणाम—अराजकता की वृद्धि—राणा की असमर्थता—मराठा सेना के अत्याचार—सीधिया और राणा की भेट—मेवाड मे शत्रुओ की सहायता—राज्य मे लुटेरो के दल—सीधिया और होलकर के सघर्ष—मेवाड मे लूट—मेवाड के राजपुरुष गिरवी रखे गये—मराठो और अँगरेजो मे तनातनी ।

राणा हमीर की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई भीमसिह आठ वर्ष की अवस्था मे सम्वत् १८३४ सन् १७७८ ईसवी मे मेवाड के सिंहासन पर बैठा । चालीस वर्षों मे जो चार राजकुमार इस राज्य के अधिकारी बने, भीम उनमे चौथा था । उसने मेवाड के सिंहासन पर बैठकर पचास वर्ष तक राज्य किया । इस अर्द्ध शताब्दी मे जो अनर्थ और उत्पात इस राज्य मे पैदा हुए, उनके द्वारा इस राज्य की शेष शक्तियाँ भी छिन्न-भिन्न हो गयी ।

भीमसिंह बाल्यावस्था मे राज्य का अधिकारी हुआ था । वयस्क हो जाने के बाद भी बहुत समय तक उसको अपनी माता की अधीनता मे रहना पडा । वह जन्म से ही अयोग्य और उत्साह-हीन था । उसमे स्वय समझने और विचार करने की शक्ति न थी । इसलिए दूसरे लोग आसानी से उसको अपने अधिकार मे कर लेते थे । इन दिनो मे विद्रोही रत्नसिंह का बहुत पतन हो चुका था और उसका जो कुछ प्रभाव बाकी रह गया था, उसमे कुछ शक्ति न थी । इसीलिए भट्ट ग्रथो मे आगे उसका कोई उल्लेख नही किया गया ।

मेवाड-राज्य मे चन्दावत और शक्तावत वंशो का पारस्परिक विरोध बहुत दिनो से चला आ रहा था । इस राज्य मे ये दोनो वश अत्यन्त प्रभावशाली थे । लेकिन अपनी-अपनी प्रधानता के लिए दोनो वशो के सरदार एक दूसरे से वैमनस्य रखते थे । चन्दावत लोगो ने राणा पर प्रभाव डालकर अपनी प्रधानता कायम कर रखी थी । इन दिनो मे राणा की निर्बलता के कारण दोनो वशो के सरदारो का विरोध अधिक बढ गया था और सम्वत् १८४० सन् १७८४ ईसवी मे चन्दावत सरदार ने शक्तावत सरदारो के विरुद्ध आधिपत्य आरम्भ किये । राज्य मे उनको प्रधानता मिली । उस प्रधानता का उन्होने दुरुपयोग किया और शक्तावत वश के लोगो को मिटाने की कोशिश की ।

कोरावाड का अर्जुनसिह और अमैत प्रतापसिंह शालुम्ब्रा सरदार का निकटवर्ती सम्बन्धी था । * चन्तावत शालुम्ब्रा सरदार ने अर्जुनसिह और प्रतापसिंह के साथ शक्तावत सरदार मोहकम के भेदर दुर्ग को घेर लिया और उसके आस-पास तोपे लगवा दी । चन्दावत सरदार का यह आक्रमण अकस्मात हुआ ।

शक्तावत वश की एक छोटी शाखा मे सग्रामसिंह नाम का एक व्यक्ति हुआ, वह वीर और साहसी था । उसके द्वारा मेवाड-राज्य मे कई एक अच्छे कार्य हुए । भेदर दुर्ग के घेरे जाने के कुछ

---

* जगवत वश मे प्रतापसिंह का जन्म हुआ था । मराठो के साथ युद्ध करते हुए वह मारा गया ।

तो वह घबरा उठा और अपनी रक्षा का कोई उपाय न देखकर विष खाकर वह मर
मरने के बाद माधवसिंह अम्बेर के सिंहासन पर बिठाया गया ।

राणा को अपने इकरारनामे के अनुसार चौसठ लाख रुपये देने पडे । इस सम
की शक्तियाँ बढ़ गयी और राजपूतो का पतन उसी समय से आरम्भ हुआ । अट्टारह
करने के बाद सम्वत् १८०८ सन् १७५२ ईसवी में राणा जगतसिह की मृत्यु हो गयी

पच्चीसवाँ परिच्छेद

मेवाड की निर्बलता—राज्य का आर्थिक पतन—राणा अरिसिह की अयोग
के आक्रमण—मेवाड मे सरदारो के विद्रोह—बाजीराव की सधि—राणा के सिर
बोझ—घरेलू विद्रोह—माधव जी सीधिया के साथ युद्ध—अमरचन्द वरवा की
सीधिया का आक्रमण—सीधिया के साथ सधि—मराठो मे फूट—लूट और अत्याचा
का लाभ शत्रुओ को मिलता है ।

राणा जगतसिह की मृत्यु के बाद प्रतापसिह दूसरा सन् १७५२ ईसवी मे मे
पर बैठा । उदयसिह के पुत्र राणा प्रतापसिह की तरह का यह न शूरवीर था और
यद्यपि दोनो का नाम एक ही था । इसके शासन काल से कोई कार्य उल्लेखनीय न
तीन वर्ष तक राज्य किया इन दिनो मे लगातार मराठो के उत्पात उसके राज्य
उसका विवाह अम्बेर के राजा जयसिह लडकी के साथ हुआ था । उससे राजसिंह
लडका पैदा हुआ । यही राजसिह उसके पश्चात् मेवाड के सिंहासन पर बैठा ।

इस राजसिह के पहले मेवाड के सिहासन पर इसी नाम से एक राजा बैठ चु
उसका-सा बल और प्रताप इस दूसरे राजसिंह मे न था । इसने सात वर्ष तक राज
शासन काल मे सात बार मराठो के आक्रमण हुए । उनके कारण मेवाड का र
निर्बल हो गया और आर्थिक अवस्था राज्य की इतनी खराब हो गयी कि राणा
एक ब्राह्मण मन्त्री से धन लेकर काम चलाना पडा । इस राणा का विवाह राठौर
कुमारी के साथ हुआ था । राजसिह के मरने के बाद अरिसिह मेवाड के सिहासन
सम्वत् १८१८ सन् १७६२ ईसवी मे उसने मेवाड राज्य की बागडोर अपने हाथो मे

राणा अरिसिह भी वास्तव मे मेवाड-राज्य के योग्य राजा न था । उस
व्यवहार आरम्भ के ही उसकी अयोग्यता का परिचय देने लगा था और उसकी
कारण राज्य मे अनेक प्रकार के उत्पात पैदा हुए । उन उत्पातो के कारण राज्य की
रूप से बिगड गयी । इसके पहले मराठो के उपद्रव और आक्रमण हुए थे । लेकिन
इसके शासन काल मे जितना अधिक हुआ, उतना पहले कभी नही हुआ था । अरिसिह
मे भीतरी और बाहरी आक्रमणो ने राज्य को बुरी तरह से निर्बल बनाया । प्रजा
प्रकार क्षत-विक्षत हो गयी । मेवाड राज्य की इस बढ़ती हुई कमजोरी को देखकर
दलो ने राज्य पर अपने हमले आरम्भ किये । उन हमलो के दिनो मे राज्य के
नष्ट हो गयी थी और राज्य की रक्षा के लिये आक्रमणकारी मराठो से सहायता

योग्य शक्तावत को देने का निश्चय किया। परन्तु चन्दावत लोगो ने राज्य मे अपना इतना अधिकार कायम कर लिया था कि राणा और राजमाता का आदेश कुछ महत्व न रखता था। शक्तावतो मे स्वय इतना बल और पराक्रम न था कि वे चन्दावत लोगो को पराजित करके उनके प्रभुत्व को अपने अधिकार मे ले सकते। ऐसी दशा मे कोटा सरदार जालिमसिंह से सहायता माँगी गयी। जालिमसिंह से सहायता माँगने के कुछ कारण भी थे। वह चन्दावत लोगो से पहले से ही अप्रसन्न था और शक्तावत वश के लोगो के साथ उसके वैवाहिक सम्बन्ध थे। इसलिए जालिमसिंह ने सहायता देना स्वीकार कर लिया। उस समय शक्तावत लोगो के सामने दो कार्य प्रमुख थे। एक तो चंदावत लोगो का दमन करना और दूसरा कमलमीर से विद्रोही रत्नसिंह को निकाल देना। चन्दावत लोगो ने सिन्धी सेना को मिलाकर राज्य मे षडयन्त्रो का एक जाल फैला दिया था और उस जाल मे राणा को निकाल सकना आसान न था। इसलिए उस जाल का छिन्न-भिन्न कर देना शक्तावत लोगो का उस समय प्रधान कार्य था।

मेवाड की इस दुरवस्था के दिनो मे मारवाड और जयपुर वालो ने मिलकर एक शक्ति का निर्माण किया और माधवजी सीधिया के बढते हुये प्रभुत्व को नष्ट करने का काम किया था। लाल-सोट नामक मैदान मे मारवाड और जयपुर की सगठित सेना ने माधवजी सीधिया को बुरी तरह पराजित किया और जो इलाके सीधिया के अधिकार मे चले गये थे, उन पर राजपूतो ने फिर से अपना अधिकार कर लिया। इसका प्रभाव मेवाड राज्य पर भी पडा और वहाँ के राणा ने भी अपने उन इलाको पर अधिकार करने की चेष्टा की, जो मेवाड राज्य के थे और जिन पर सीधिया ने अधिकार कर लिया था। मालदास मेहता और उसका सहकारी मौजीराम—दोनो ही राणा के यहाँ सुयोग्य अधिकारी थे। उनके द्वारा नीमवहेडा और उसके निकटवर्ती दुर्गो पर सबसे पहले अधिकार किया गया। मराठो ने घबरा कर जावद नामक स्थान पर एकत्रित होकर सामना करने की कोशिश की, परन्तु वे राजपूतो का सामना न कर सके। जावद का अधिकारी शिवाजीनाना पराजित होकर राजपूतो से क्षमा माँगकर अपने सामान और आदमियो के साथ भाग गया। इसी बीच मे वेगू-सरदार मेघसिह के पुत्र ने वेगू-सिगौली और दूसरे स्थानो से मराठो को निकाल दिया और चन्दावत लोगो ने भी मराठो से रामपुर राज्य का उद्धार किया। *

इन दिनो मे राजपूतो ने लगातार मराठो को पराजित किया और मेवाड तथा मारवाड की सीमा पर प्रवाहित होने वाली रिरकिया नामक नदी के किनारे चई नामक स्थान पर एकत्रित होकर वे मराठो के दूसरे इलाको मे अधिकार करने के लिए बढने लगे। यह देखकर हौलकर राज्य की रानी अहिल्या बाई सीधिया से मिल गयी और तुलाजी राव सीधिया तथा श्री भाई पाँच हजार सवारो की सेना को लेकर पराजित शिवाजी नाना की सहायता के लिये मन्दसोर की तरफ रवाना हुए। वहाँ पर राजपूतो के साथ शिवाजीनाना युद्ध कर रहा था। इसी अवसर पर मराठो की एक दूसरी सेना ने वहाँ पहुँचकर राजपूतो पर अचानक आक्रमण किया। माघ शुक्ल चौथ, मङ्गलवार सम्वत् १८४४ सन् १७८८ ईसवी को दोनो ओर से घमासन युद्ध। उसमे राजपूतो की पराजय हुई और राणा का मन्त्री अपने बहुत से सैनिको के साथ मारा गया। कानोर और साद्री के सरदार घायल हो गये। साद्री का सरदार घायल अवस्था मे ही कैद हो गया और दो वर्ष तक बन्दी अवस्था मे रहने के बाद अपने

---

* मेघ जी बेगू का सरदार था। उसने चदावत वश मे जन्म लिया था, उसके वश के लोग मेघावत वश के नाम से प्रसिद्ध हुए। मेघसिंह के शरीर का रग बिल्कुल काला था, इसलिए उसे लोग कालामेघ कहते थे।

और राज्याधिकारी हो जाने के बाद मेवाड के कई एक सामन्तो और सरदारो का उसके
भाव बढ गया था। इस प्रकार सामन्तो और सरदारो के विद्रोह के सम्बन्ध मे विभिन्न
मत पाये जाते है। इन मतो मे सही क्या है, निश्चित रूप से यह नही लिखा जा सक
का कुछ तो कारण जरूर रहा होगा। लेकिन यदि राणा अरिसिह दूरदर्शी और सुय
होता तो सामन्तो तथा सरदारो के विद्रोह करने की नौबत न आती। परन्तु उसमे य
बहुत अभाव था, इसीलिए उसके विरुद्ध सामन्तो और सरदारो ने विद्रोह किया।

मनुष्य के अनुचित व्यवहारो के कारण उसके विरोधियो की सख्या बढती
अरिसिह ने अपने रूखे स्वभाव के कारण अपने सरदारो को और राज्य के शक्तिशा
को अपना शत्रु बना लिया था। उसने मेवाड के प्रधान सरदार साद्री के राजा को
अलग कर दिया था। जिस झाला सरदार ने हल्दीघाटी के भयानक युद्ध क्षेत्र मे प्रत
की रक्षा करके अपने प्राण उत्सर्ग किये थे, राणा अरिसिंह ने उसके प्रति भी कृतज्ञ ब
कोशिश नही की। उसने इस प्रकार के अनुचित व्यवहार दूसरे लोगो के साथ भ
देवगढ के राजा यशवर्तसिह के साथ भी उसने इसी प्रकार का असम्मानपूर्ण व्यवह
यशवतसिह ने प्रतापी चण्ड वश मे जन्म लिया था। अरिसिह के अनुचित व्यवहा
यशवर्तसिह भी उससे बहुत अप्रसन्न था और राणा को उसके अनुचित व्यवहारो का
लिए वह समय और सयोग की प्रतीक्षा मे रहा।

इस प्रकार के कितने ही कारण थे, जिनसे मेवाड के सामन्त और सरदार रा
को सिंहासन से उतारने की चेष्टा कर रहे थे। इन्ही दिनो मे यह अफवाह फैल गयी
अरिसिह जिस सिंहासन पर बैठा है, उसका वास्तव मे अधिकारी रत्नसिह है। इस
सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की बाते मेवाड राज्य मे कही जाने लगी और लोगो ने
विश्वास किया कि रत्नसिह राजसिह का बेटा है और वह गोगुण्डा सरदार की लडकी
है। यह लडकी राजसिंह को ब्याही गयी थी। इस बात के सत्य और असत्य होने क
निर्णय वहाँ के लोगो के सामने नही आया। हुआ यह कि विरोधी सामन्तो और सरद
को पदच्युत करने के लिए रत्नसिह का आश्रय लिया। मेवाड के प्रधान सोलह सरदार
राणा के पक्ष मे रह गये और बाकी ने रत्नसिह के अधिकारो का समर्थन किया। इ
प्रसिद्ध शालुम्ब्रा सरदार प्रमुख रूप से रत्नसिंह का समर्थक था। परन्तु कुछ दिनो
राणा के पक्षपाती सरदारो मे मिल गया।

दिप्रा वश के बसतपाल के पूर्वज बारहवी शताब्दी मे दिल्ली से समरसिह के
मे आये थे और इसके पहले उसके पूर्वज पृथ्वीराज के मन्त्रि मण्डल मे रह चुके थे।
रत्नसिंह के पक्ष मे थे, उनमे बसतपाल भी एक था, जो कमलमीर मे रहता था।
सरदारो और सामन्तो ने रत्नसिंह को मेवाड के सिंहासन पर बिठाने के लिए एक
निर्माण किया और अरिसिंह को सिंहासन से उतारने के लिए उन विरोधी सरदारो
सहायता लेने का निर्णय किया और इस सहायता की कीमत मे एक करोड पचीस
लोगो ने सीधिया को देना मंजूर किया। मेवाड के सरदारो की इन राजनीतिक भूलो
को पतन के निकट पहुँचा दिया।

इन दिनो मे कोटा का सरदार जालिमसिंह राजस्थान के राजाओ मे वडी
था। उसने मेवाड के इस आपसी विद्रोह को सुना। यहाँ पर जालिमसिह के सम्बन्ध
लेना आवश्यक है कि जिस समय राणा जगतसिंह ने माधवसिह को अम्बेर के सिंहासन

था। उसकी अवस्था बहुत दयनीय हो गयी थी, उसको अपनी रक्षा की आवश्यकता थी। राणा की इस असमर्थता के कारण शासन का डर लोगो के दिलो से मिट गया था। बढती हुई चोरी, बदमाशी और डकैती मे लोगो को अपनी रक्षा की जरूरत थी। इसलिए जो राजपूत शक्तिशाली थे, उन्होने भयभीत प्रजा की रक्षा करने का व्यवमाय आरम्भ किया। वे घोडो पर चढकर और अपने हाथो मे तलवार तथा भाला लेकर निकलते और लुटेरो से प्रजा की रक्षा करते। उस दशा मे लोग अपने ही राज्य मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते और अपने साथ की सामग्री की वे रक्षा कर सकते। दुरवस्था सम्पूर्ण राज्य मे फैल गयी। शासन ढीला पड जाने के कारण रक्षक राजपूतो का व्यवसाय बढने लगा और प्रजा का प्रत्येक व्यक्ति एवम् परिवार सहायता का अनिश्चित मूल्य देकर सहायता प्राप्त करने लगा। राज्य की यह दुरवस्था अत्यन्त भयानक हो उठी और लुटेरे मराठो के गिरोह मेवाड-राज्य मे आकर लूट मार करने लगे। उस समय मेवाड की जो शोचनीय दशा हो गयी थी, उसका वर्णन करना असम्भव है।

राज्य की इस दुरवस्था का कारण एकमात्र चन्दावत लोग थे। उनके दमन की कोई व्यवस्था न हो सकने पर राणा और उसके मन्त्रियो ने प्राचीन राजधानी से विद्रोही चन्दावत लोगो को निकाल देने के लिए सीधिया से प्रार्थना की। जिस सीधिया ने रत्नसिंह की सहायता करके मेवाड-राज्य का सर्वनाश किया था, आज राणा को स्वय अपनी असमर्थता मे उसकी सहायता के लिए प्रार्थना करनी पडी। इसके लिए जालिमसिंह ने राणा को परामर्श दिया था। सीधिया उन दिनो मे पुष्कर के तट पर अपनी सेना के साथ था और अपनी सेना को युद्ध की शिक्षा देने के लिए उसने डिवोइन नामक एक फ्रासीसी सरदार को अपने यहाँ नियुक्त किया। उसकी शिक्षा पाकर सीधिया की सेना इन दिनो मे अधिक शक्तिशाली हो गयी थी और मेडता तथा पट्टन मे उसके उत्पात फिर से बढ गये थे, राठौर राजपूतो ने पूरी शक्ति लगाकर उनका मुकाबिला किया, लेकिन उनको सफलता न मिली और वे पराजित हुए। राठौर राजपूतो को जीतने के कारण सीधिया की शक्तियाँ फिर से भयानक हो उठी।

जालिमसिंह उन दिनो मे कोटा का सरदार था। वह किसी प्रकार मेवाड के सिंहासन पर अधिकार करना चाहता था। शूरवीर और राजनीतिक होने के साथ-साथ वह दूरदर्शी था। निर्बल राणा को असमर्थ बनाकर वह मेवाड का राज्याधिकार लेने के लिए अनेक प्रकार के षडयंत्रो की रचना करने लगा। मारवाड और जयपुर के राजाओ का उसे कोई भय न था। उसने मारवाड के प्रसिद्ध सामन्तो को मिलाकर अपने पक्ष मे कर लिया।

अपनी आशा को पूरा करने लिए जालिमसिंह अवसर की प्रतीक्षा मे था। परिस्थितियाँ स्वय मनुष्य को निर्बल और सबल बनाने का काम करती है। अपनी बढती हुई कमजोरियो मे राणा ने अपनी सेना का अधिकार जालिमसिंह को सौप दिया। इस समय और सुयोग का लाभ उठाने के लिए जालिमसिंह ने राजनीतिक चालो से काम लिया। राणा ने सेना का जो कार्य जालिमसिंह को सौपा था, उसके लिए धन की आवश्यकता थी। इस धन का प्रबन्ध करने के लिए जालिमसिंह ने समझा कि राज्य की कुछ जागीरो पर चन्दावत लोगो ने जबरदस्ती अधिकार कर लिया है, इसलिए उन जागीरो के बदले मे चन्दावत लोगो से चौसठ लाख रुपये वसूल किये जा सकते है। इसके लिए उसने सीधिया की सहायता लेने का विचार किया और निर्णय किया कि चन्दावत लोगो से जो यह धन वसूल किया जायगा, उसका तीन भाग सीधिया को और बाकी रुपये मेवाड-राज्य के आवश्यक कार्यों मे खर्च किया जायगा।

अपने कार्य की सिद्धि के लिए जालिमसिंह ने एक योजना बना कर सीधिया की सहायता प्राप्त की और अम्बाजी इगले के सेनापतित्व मे एक मराठो की सेना लेकर वह चित्तौर की तरफ

राणा अरिसिंह की अयोग्यता उसके पतन का रास्ता पैदा करती जाती थी। जि
ने उसको छोडकर रत्नसिह का पक्ष समर्थन किया था, उनके स्थानो पर राणा ने जिन आ
नियुक्त किया, वे अयोग्य और राणा के झूठे प्रशसक थे। वे राज्य की तरफ से वेतन
इसके सिवा जो सरदार राज्य से अलग हो गये थे, इन वेतन पाने वाले आदमियो ने उन
के इलाको पर अधिकार कर लिया था। राणा अरिसिह अपनी अयोग्यता और निर्बलता
उनके इन अनुचित अधिकारो को सहन किया था। लेकिन इसका प्रभाव राज्य की प्रजा प
न पडा और उसके फलस्वरूप समस्त राज्य मे असतोष बढता जा रहा था। इस असंतोष
की निर्बलता को बढाने का काम किया। असतुष्ट सरदार राज्य की इस दुरवस्था को दूर से दे

अमरचद बरवा के नेत्रो से राज्य का होने वाला यह पतन छिपा न था। अपने म-
मे उसने राज्य के हित के लिए बडे से बडे प्रयत्न किये थे और अपने अथक परिश्रम से उ
के बहुत से अच्छे कामो का निर्माण किया था। वह मन्त्री पद से अलग कर दिया गया था
अरिसिंह की तरफ से उसकी योग्यता का उसे यह पुरस्कार मिला था। अपमानित होकर उ
वर्ष से अधिक दिन व्यतीत किये। इन दिनो मे मेवाड के पतन की पीड़ा उसको मिलने वाले
से भी अधिक भयानक और असह्य हो रही थी। इन दिनो मे राज्य का वह कोई अधि
था। परन्तु वह राज्य की रक्षा के उपाय एकान्त मे बैठकर सोचा करता था। मेवाड
बढती हुई विपद को देखकर उसने बहुत कुछ सोच डाला। उसने देखा कि उदयपुर के
तरफ रक्षा के लिए कोई खाई नही है। उदयपुर से दक्षिण की तरफ कुछ दूरी पर एक
नाम का एक ऊँचा पहाड था। उदयपुर का वह एक प्रमुख द्वार था। इसलिए उसको
बनाने के लिए राणा ने कुछ कार्य आरम्भ किया। उस स्थान की जमीन पहाडी होने के
ऊँची और अत्यन्त असुविधाजनक थी। इसलिए राणा अरिसिह को अपनी योजना के
उसमे उसको सफलता न मिल रही थी।

राणा एक दिन उस पहाडी स्थान पर गया, जहाँ पर उदयपुर को सुरक्षित बनाने
उसने कार्य आरम्भ किया था। अचानक अमरचद से उसकी भेंट हुई। राणा उसकी
को जानता था। उसने अमरचंद से परामर्श किया और उससे पूछा कि इसके बनवाने मे
रुपया खर्च होगा और कितना समय लगेगा?

राणा अरिसिह की इस बात को सुनकर अमरचद ने सहज ही उत्तर दिया : जो
कार्य करेंगे उनके खाने पीने के लिये कुछ चाहिये और कुछ थोडे दिनो का समय चाहिए।

राणा-अमरचद के उत्तर से वह बहुत प्रसन्न हुआ। जो कार्य उसके लिए भयानक था
जिसके लिए वह बहुत बडी सम्पत्ति की आवश्यकता समझता था, उसके लिए अमरचद के मु
इतना सीधा सादा उत्तर सुनकर वह बहुत सतुष्ट हुआ और उसने उसी समय उसके नि
कार्य अमरचद बरवा को सौप दिया। अमरचद ने उसको स्वीकार करते हुये कहा कि इस
सम्पादन मे कोई भी सशय और मतभेद पैदा न करेगा यदि यह अधिकार मुझे मिल सकता
इसके निर्माण के उत्तरदायित्व को मै अपने ऊपर लेने को तैयार हूँ। राणा ने इस बात को स
कर लिया। अमरचंद ने उस कार्य को आरम्भ करवा दिया और उदयपुर से एकलिगगढ
एक रास्ता तैयार करवा दिया। इसके बाद थोडे ही दिनो मे इस कार्य को समाप्त करके
ने उस पहाड के ऊपर से तोप छोडकर राणा अरिसिह का अभिवादन किया।

माधव जी सीधिया की सेना ने उत्तर-दक्षिण और पूर्व की तरफ से उदयपुर को घेर लि

नही है ।" इसके बाद अम्बाजी ने प्रश्न करते हुए, जालिमसिंह से पूछा 'क्या वास्तव मे आप चले जाने के लिए तैयार है ?"—'निश्चित रूप से ।' जालिमसिंह के इस उत्तर को सुनकर अम्बाजी ने उसको कुछ सोचने समझने का मौका न दिया और वह तुरन्त अपने घोड़े पर बैठकर सींधिया से पास उसके खेमे मे चला गया ।

जालिमसिंह सीधिया पर विश्वास करता था और समझता था कि वह अम्बाजी के द्वारा पहुँचे हुए इस प्रस्ताव को स्वीकार नही करेगा । इसका कारण यह था कि सींधिया ने यहाँ आने के पहले उससे वादा किया था कि वह मेवाड के इस मामले मे सहायता के लिए अपनी एक सेना देगा जो मेवाड राज्य से चन्दावतो को निकाल देगी और राज्य मे शान्ति कायम करेगी । इस कार्य के लिये राणा की तरफ से सींधिया को एक निश्चित रकम दी जायगी । जालिमसिंह समझता था कि इसी वादे पर सींधिया की सेना चन्दावतो के विरुद्ध यहा पर आयी है । अगर इस समय सीधिया इस प्रस्ताव को स्वीकार करता है तो उसके साथ जो मैंने शर्ते तय की थी, उनका उत्तर-दायित्व किस पर होगा ? इसलिए उसका विश्वास था कि यदि सींधिया अम्बाजी के इस प्रस्ताव को कभी स्वीकार न करेगा । वह यह भी समझता था कि यदि सींधिया ने इसे स्वीकार भी कर लिया तो राणा की तरफ से उसका विरोध होगा । क्योंकि राणा मेरे बल और पराक्रम से प्रभावित है और वह समझता है कि मेरे बिना राज्य की इस बढती हुई अशान्ति मे दूसरा कोई कुछ नही कर सकता था ।

जालिमसिह इस प्रकार की जितनी भी बाते सोच रहा था, अम्बा जी उनको पहले ही समझता और उसने उनका उपाय भी सोच समझ लिया था । † सींधिया के पास पहुँच कर अम्बा जी ने उस प्रस्ताव को उसके सामने पेश किया और उस समय राणा के वादे की रकम माँगने पर अम्बाजी ने पूरे रुपये की एक हुण्डी सींधिया को दे दी । ‡ सींधिया पूना जल्दी पहुँचना चाहता था । चित्तौर से आने के पहले उसने अम्बाजी को अपना अधिकारी बनाया और उसके अधिकार मे वह एक अपनी सेना भी छोड गया, जिससे वह मेवाड से पहले छिपे हुए रुपयो को वसूल कर सके ।

माधवजी सींधिया पूना चला गया । अम्बा जी ने लौटकर जालिमसिह से कहा "सभी ने आपके इरादे को स्वीकार कर लिया है ।" इसी समय राणा के कर्मचारी ने आकर उससे कहा "आपकी विदाई की भेट तैयार है ।" यह सुनते ही जालिमसिंह के हृदय को एक आघात पहुँचा । लेकिन उसने किसी को अपनी इस दशा को समझने का अवसर न दिया और वह चित्तौर से चला गया । उसके बाद शालुम्ब्रा सरदार चित्तौर के दुर्ग से निकल कर बाहर आया और राणा के चरणो को स्पर्श करके उसने क्षमा माँगी ।

बिना किसी युद्ध के चन्दावतो का दमन करने मे अम्बाजी को सफलता मिली । राज्य मे फैली हुई अशान्ति और अराजकता अपने आप कम हो गयी और उसका श्रेय अम्बाजी को मिला । वह जालिमसिंह का मित्र होने की अपेक्षा अपना मित्र अधिक था और यह उसी की राजनीति थी कि उसने चन्दावतो को नियन्त्रण मे लाकर जालिमसिंह के स्थान पर मेवाड-राज्य मे अपना प्रभुत्व कायम किया । अब वह पूरे मेवाड-राज्य का अधिकारी बन बैठा । इसके पहले जब जालिमसिह मेवाड को छोडकर जा रहा था - अम्बा जी राणा के मन्त्री शिवदास और सतीदास के पास गया और दोनो

---

† चित्तौर से चन्दावतो को निकाल कर राज्य मे शान्ति कायम करने के लिए राणा ने सींधिया को बीस लाख रुपये देने का वादा किया था ।

‡ दक्षिण मे अम्बाजी की जो रियासत थी, उसके नाम पर उसने अपनी तरफ से बीस लाख रुपये की एक हुण्डी सीधिया को दे दी । उससे राणा के वादे की रकम सींधिया ने वसूल कर ली ।

परन्तु जिस कार्य के लिए आपको यह वेतन दिया जा रहा है, उसमे सफलता न मिलने से मै
बनूंगा।'' अमरचद ने यह कह कर वेतन के बाकी रुपये अदा करने के लिये सिंधी सेना
दिन का वादा किया।

सिंधी सेना के सैनिको का जो वेतन बाकी था, सबका हिसाब लगाया गया और
ने उनके बाकी वेतन को अदा करने के लिए इन्तजाम किया। मेवाड-राज्य के खजाने मे
सम्पत्ति थी, उसको अमरचन्द ने अपने अधिकार मे लेने की कोशिश की। खजाने के अधि
को जब यह समाचार मिला तो वे सब अपने स्थानो से भाग गये। इसलिए कि अमरचद
खजाने की चाभियाँ माँगी थी। इस दशा मे खजाने के ताले और मजबूत दरवाजे तोडे
सोना, चाँदी, हीरा, जवाहिरात मिला कर जितनी भी सम्पत्ति खजाने मे मौजूद थी, उस
सिंधी सेना का बाकी वेतन अदा किया गया। उसी सम्पत्ति से युद्ध के अस्त्र-शस्त्र खरीदे
गोला गोली और बारूद एकत्रित किया गया। खाने-पीने की सामग्री का प्रबध बहुत वडी
मे किया गया। इस प्रकार खजाने की सम्पत्ति का उपयोग करके अमरचन्द ने छै महीने त
सेना को आगे नही बढने दिया।

रत्नसिंह ने इन दिनो मे उदयपुर के कितने ही स्थानो पर अधिकार कर लिया था।
पहले उसने सीधिया की सहायता लेने के समय एक निश्चित और लम्बी रकम देने का वाद
था। उस रकम की अदायगी वह न कर सका। इस दशा मे मराठो ने—जो अभी तक रत्न
सहायता कर रहे थे—अमरचन्द के साथ सधि करने की कोशिश की और उन लोगो ने
शर्तों मे अमरचन्द से सत्तर लाख रुपये की माँग की। साथ ही वादा किया कि इस सधि
हम लोग रत्नसिह की सहायता न करके वापस चले जायेगे।

अमरचन्द ने सीधिया के साथ सधि करना मन्जूर किया। सधि का पत्र लिख गय
दोनो तरफ से उस सधि-पत्र पर हस्ताक्षर भी हो गये। इसी अवसर पर सीधिया को अ
की कमजोरियाँ मालूम हुई। उसे विश्वास हो गया कि ऐसे अवसर पर अमरचन्द से और भ
लिया जा सकता है। इसीलिए उसने सधि-पत्र के सत्तर लाख रुपये के अतिरिक्त बीस लाख
की और माँग की। सीधिया की इस नयी माँग से अमरचन्द को बहुत क्रोध मालूम हुआ
लिखे गये सधि-पत्र को फाड डाला और उसके टुकडो को सीधिया के पास भेज दिया। इस
जो सधि हुई थी, वह खत्म हो गयी।

अमरचन्द सीधिया से निराश होकर अपनी रक्षा के नये-नये उपाय सोचने लगा
विपदकाल मे साहस से काम लेना जानता था। उसने राज्य के योग्य और शूरवीरो के साथ
किया। उसे इस समय इस बात का भी यकीन हो गया कि आपत्तियो के दिनो मे ही मनुष्य के
की वृद्धि होती है। सिंधी सेना के बाकी वेतन की अदायगी हो चुकी थी। इसलिए उस से
शुभकामनाये फिर मेवाड-राज्य के साथ हो गयी थी जो राजपूत और सरदार राणा के विरो
विद्रोही थे, अमरचन्द ने उनको मिलाने के लिये वडी बुद्धिमानी से काम लिया। वह स्वय साह
और दूसरो को अपना बनाना जानता था। उसके बोलने और समझाने का दूसरो पर जादू क
प्रभाव पडता था। उसमे चरित्र का बल था। उसमे योग्यता और दूरदर्शिता थी। राज्य
सम्पत्ति उसके अधिकार मे आयी थी, उसका उपयोग उसने राज्य की प्रजा के हित के लिए
जिनके द्वारा राज्य की रक्षा हो सकती थी, उनको प्रसन्न करने के लिए उसने राज्य को सम
पानी की तरह खर्च किया और समस्त प्रजा मे सुख तथा सतोष पैदा करने के लिए उसने उस
का अच्छा उपयोग किया। राज्य के खजाने मे अब तक जो बहुमूल्य हीरा और जवाहिरात वेका

दोनो मन्त्रियो ने अपनी रक्षा का कोई उपाय न देखकर अम्बाजी से प्रार्थना की कि मेवाड मे विशेष प्रबध करने के लिए एक सेना की आवश्यकता है। मन्त्रियो ने इस आवश्यकता को भली प्रकार समझाया, जिसको अम्बाजी ने स्वीकार कर लिया और जो सेना मन्त्रियो की प्रार्थना के अनुसार रखी गयी, उसके खर्च के लिए आठ लाख रुपये वार्षिक आमदनी की जागीरे दी गयी।

राणा अपने राज्य मे नाम के लिए राजा था। कुल अधिकार अम्बाजी के हाथो मे थे। राज्य की आर्थिक अवस्था इन दिनो मे बहुत खराब हो गयी थी। सम्वत १८५१ मे राणा ने जयपुर के राजकुमार के साथ अपनी बहन का विवाह किया। उसके खर्च के लिए राणा को पाँच लाख रुपये कर्ज लेने पडे। उसके दूसरे वर्ष राजमाता की मृत्यु हो गयी। राणा के बालक पैदा हुआ और उदयसागर का बाँध टूट जाने से जल की वृद्धि से मेवाड की बहुत हानि हुई। राज्य की बहुत सी खेती नष्ट हो गयी।

सीधिया ने सम्वत् १८५१ मे अम्बा जी को मेवाडराज्य का अकिारी बनाया और अम्बाजी ने अपनी तरफ से मेवाड का प्रवंध करने के लिए गणेशपन्त नामक एक मराठा को मुकर्रर किया। सवाई और श्री जी मेहता नाम के राणा के दो कर्मचारी थे, जो राज्य मे अधिकारी माने गये। वे दोनो गणेशपत्त के साथ मिल गये और तीनो प्रजा के साथ अत्याचार आरम्भ किया। अम्बाजी को जब यह मालूम हुआ तो उसने गणेशपत को हटा कर उसके सामनेरायचन्द को मुकर्रर किया। रायचन्द राज्य मे कुछ प्रबथ न कर सका। प्रजा से लेकर राणा के कर्मचारियो तक किसी के ऊपर उसका प्रभाव न पडा। लोगो का शासन मे जो भय था, वह उस समय बिलकुल ढीला पड गया। इसका परिणाम यह हुआ कि राज्य मे फिर से उपद्रव और उत्पात आरम्भ हो गये। राज्य की शाति मिटने लगी और दुराचारियो ने प्रजा को लूटना आरम्भ कर दिया।

राज्य की यह दुरवस्था देखकर मराठो, रुहेलो और दूसरे लोगो के दल के दल मेवाड-राज्य मे घूमने लगे। उनको रोकने के लि" राज्य की तरफ से कोई व्यवस्था न थी। इसलिये उन दलो ने निर्भीक होकर राणा की प्रजा को लूटना शुरु कर दिया। चन्दावत लोग इधर बहुत दिनो से चुपचाप थे। अवसर पाकर वे सीधिया से मिल गये और मेवाड-राज्य मे लूटमार करके भयानक अत्याचार करने लगे। राणा को राज्य की ये सभी बाते मालूम थी। कुछ दिनो तक चुपचाप रह कर उसने चन्दावत लोगो के अत्याचार लगातार देखे और अन्त मे विवश होकर उसने आदेश दिया कि चन्दावत लोगो को राज्य की तरफ से जो जागीरे दी गयी है, वे जब्त कर ली जायें।

राणा का यह आदेश मिलने पर राज्य की सेना कोरावाड को अपने कब्जे मे कर लिया और शालुम्ब्रा के दुर्ग पर आक्रमण करके उसके विध्वश के लिए तोपे लगा दी। सिंधी लोग उन दिनो मे वही रहते थे। राणा की सेना के आक्रमण करने पर वे लोग शालुम्ब्रा को छोडकर चले गये और देवगढ मे जाकर आश्रय प्राप्त किया।

मेवाड की सेना के आक्रमण करने पर चदावत लोग घबरा उठे। उन्होंने अपनी रक्षा का कोई उपाय न देखकर अम्बा जी के पास दूत भेजा और दस लाख रुपये देने के वादे पर सहायता के लिए उससे प्रार्थना की। अम्बा जी बहुत लोभी आदमी था। उसने चदावतो को सहायता देना स्वीकार कर लिया। उसने शिवदास और सतीदास को मन्त्री के पदो से हटाकर चदावत लोगो के पक्ष का समर्थन किया। शालुम्ब्रा सरदार को राणा के दरबार मे फिर वही स्थान प्राप्त हुआ। श्रीजी मेहता को राज्य मन्त्री बनाया गया।

चंदावत लोगो ने अम्बाजी की सहायता प्राप्त करते ही शक्तावत लोगो के विरुद्ध अत्याचार आरम्भ किया और मौका पाते ही आक्रमण करके उन लोगो ने शक्तावत लोगो को पराजित किया।

अमरचन्द ने राज्य के खजाने का सोना, रत्न और जवाहिरात देकर संधि के तेतीस लाख अदा कर दिये और बाकी रुपयो के लिए उसने जावद, जीरण, नीमच और इत्यादि ग्रामो को गिरवी मे देते हुए सौधिया के इस प्रकार अधिकार मे दे दिये कि उनकी दोनो राज्यो के कर्मचारी वसूल करेगे और वर्ष में एक बार उसका हिसाब हो जाया करे तरह सधि होकर सौधिया की शत्रुता का अन्त हुआ।

सम्वत् १८२५ से लेकर सम्वत् १८३१ तक इस सधि के अनुसार कार्य चलता मे सीधिया के कर्मचारियो ने राणा के कर्मचारियो को उन स्थानो से निकाल दिया, ज सीधिया के पास गिरवी रखे गये थे। इस दशा मे उन गाँवो का समस्त इलाका मेवाड के से निकल गया। लेकिन सीधिया की शक्तियाँ भी बहुत समय तक कायम न रही और जो इलाके मेवाड के राज्य से निकल गये थे, राणा के फिर अधिकार मे आ गये। परन्तु थ के वाद वे फिर शत्रुओ के हाथ मे चले गये।

सम्वत् १८३१ मे मराठो मे आपस मे मतभेद पैदा हुआ। उनके सरदारो ने अपनी स्व के लिये विद्रोही कोशिशे आरम्भ की। इस प्रकार की परिस्थितियो मे सीधिया ने मोरव गाँव होलकर को दे दिया और होलकर ने उसको अपने अधिकार मे लेकर एक वर्ष के बा से उसके राज्य का नीमबहेडा नामक इलाके की माँग की।

किसी भी अवस्था मे अमरचन्द ने रत्नसिह को असफल बना दिया। वह उदयपुर कर मराठो की सेना के साथ चला गया। लेकिन जाने के पहले उसने उदयपुर के कई पर अधिकार कर लिया था और कितने ही नगर और ग्राम उसके कब्जे मे आ गये थे उन पर उसका अधिकार बहुत दिनो तक न रहा। राजनगर, रायपुर और अन्तला पर राणा का फिर से अधिकार हो गया। जो सरदार अरिसिह से विद्रोह करके रत्नसिह के गये थे, वे सब अब उसके साथ न रह सके और कई एक सरदार उसे छोडकर उदयपुर चले राणा ने उनके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार किया और उनकी जागीरे उनको दे दी। अब की आशाये बिल्कुल निर्बल हो गयी थी। मन्त्री और मेवाड के सोलह श्रेष्ठ सरदारो मे साथ रह गये थे, उनमे देवगढ, भिण्डी और आमेता के तीन सरदार थे। कुछ दिनो के तीनो सरदार भी राणा की तरफ आ गये।

जिन दिनो मे रत्नसिह कमलमीर मे रहने लगा था, राणा अरिसिह ने जोधपुर विजयसिह को गढवाड का अधिकार दे दिया था। राणा को यह आशका हुई थी कि कमलमीर मे रहकर गढवाड पर अधिकार कर लेगा। गढवाड, मारवाड के सभी इलाको मे उपजाऊ है। गढवाड को देकर राणा ने विजयसिह के साथ एक इकरारनामे की लिखा-पढी

बसन्त का आहेरिया उत्सव राजपूतो का एक पुराना उत्सव है। यह उत्सव मेवाड कई वार अनर्थकारी सावित हुआ है। इस राज्य के तीन राणा इस उत्सव मे अपने प्राणो कर चुके थे। फिर भी इस उत्सव के महत्व को कोई आघात नही पहुँचा था। राणा अरि इस उत्सव मे भाग लेने के लिये गया था और जब वह वापस होने लगा तो रास्ते मे हाडा कुमार अजीत ने उस पर अपने भाले का वार किया। उस भाले से जख्मी होने के वाद इन एक सरदार ने तलवार से राणा का सिर अलग कर दिया। अजीत के इस अनुचित कार्य से पिता वहुत अप्रसन्न हुआ और सभी हाडा सरदारो ने इस कार्य के लिये अजित की निंदा की

राणा अडिसिह के इस प्रकार मारे जाने के कुछ कारण थे। यह पहले लिखा जा कि अरिसिह से उसके सरदार आरम्भ से ही विद्रोह रखते थे। जिस सालुम्ब्रा सरदार के पिता ने

बीच मे घिरा हुआ था। अम्बा जी की भेजी हुई सेना की सहायता से वह शत्रुओ के घेरे से निकल सका और अपने बचे हुए सैनिको के साथ वह अजमेर की तरफ चला गया। उसके कुछ दूर निकल जाने के बाद मूसामूसी नामक स्थान पर शत्रुओ ने उसे फिर घेर लिया। नाना गणेशपत को उनके साथ फिर युद्ध करना पडा। चन्दावत लोगो ने इस लडाई मे भयानक मारकाट की। गणेशपत की सेना पीछे हटने लगी। इसी समय बडे जोर की आवाज सुनायी पडी—"भागो! भागो!" इस आवाज को सुनते ही दोनो तरफ के सैनिक आश्चर्य चकित हो उठे। इसी समय फिर सुनायी पडा-'मिल गयी! मिल गयी!" इस प्रकार की आवाजो को सुनकर चन्दावत लोग भयभीत हो उठे। उन्हे विश्वास हो गया कि हमारी सेना शत्रुओ से मिल गयी। इस प्रकार का विश्वास करते ही चन्दावत लोग युद्ध से भागने लगे। नाना गणेशपत की सेना ने भागते हुए चन्दावतो का पीछा किया और उस भगदड मे बहुत से चन्दावत लोग तलवारो से काट डाले गये। इसी समय सिंधी सेना का एक अधिकारी चन्दन भी मारा गया। बहुत से सैनिक और अधिकारी घायल हुए। भगाते हुए चन्दावत राजपूत शापुरा पहुंचे। देवगढ के राजपूतो ने उनको अपने यहाँ आश्रय दिया।

इस युद्ध मे नाना गणेशपत ने राजनीतिक चाल से विजय प्राप्त की और चन्दावत राजपूत धोखे मे आकर मारे गये। विजयी होने के बाद भी गणेशपत ने मेवाड पर अपना प्रभुत्व कायम न कर पाया। राजपूत सरदारो ने पत को अयोग्य और निर्बल समझ लिया था। इसीलिये वे सभी उसके आधिपत्य से स्वतन्त्र होने के लिए चेष्टाये करने लगे।

इसी बीच मे एक बात और हुई। मेवाड मे प्रधानता प्राप्त करने के लिये अम्बा जी और लखवादादा मे झगडा पैदा हो गया। अम्बा जी ने मेवाड राज्य का सर्वनाश करने मे कुछ उठा न रखा था। लखवादादा ने उसका विरोध करना आरम्भ किया। मेवाड के सरदार इस झगडे और विरोध मे नाना गणेशपत के विरुद्ध उसके साथी बने। जिस समय नाना गणेशपत की सहायक सेना हमीरगढ मे मौजूद थी, लखवादादा ने अपनी सेना लेकर हमीरगढ को घेर लिया और उसके दुर्ग को गिराने के लिए तोपो की वर्षा आरम्भ कर दी। लगातार तोपो की मार से दुर्ग का एक हिस्सा गिर गया और दुर्ग मे पहुँचने का रास्ता खुल गया। लखवादादा की सेना ने उसी रास्ते से उसमे प्रवेश करने का इरादा किया। इसी समय बालाराव इगले, बापू सिन्दा और यशवतराव सिन्दा की सेनाये नाना पन्त की सेना की सहायता के लिये हमीरगढ पहुँच गयी। कोटा के जालिमसिंह ने भी उसकी सहायता करने के लिए अपना एक गोलदाज भेजा था। अम्बा जी का लडका उसकी सहायक सेना का सेनापति था। इन नयी सेनाओ के आ जाने के कारण लखवादादा ने हमीरगढ से सेना हटा ली और चित्तौर की सीमा पर मुकाम किया। नाना गणेशपत ने हमीरगढ को छोडकर नयी आने वाली सेनाओ से गोसुन्दर नामक स्थान पर जाकर मिला। दोनो विरोधी सेनाओ की तोपे बूनस नदी के दोनो किनारो पर लग गयी और दोनो सेनाये युद्ध होने का रास्ता देखने लगी।

इसी मौके पर नाना गणेशपत और बालाराव इगले मे सेना के वेतन के प्रश्न के सम्बन्ध मे एक झगडा पैदा हो गया। उस झगडे का कोई निर्णय न हुआ और नानापत उस स्थान को छोडकर सिंगनेर नामक स्थान की तरफ चला गया। उस झगडे का कोई विशेष प्रभाव उन दोनो सेनाओ पर नही पडा। मराठो का संगठन इतना दुर्बल नही था कि वह किसी भी आपसी झगडे के कारण छिन्न-भिन हो सके और उसका लाभ वे लोग शत्रु को उठाने दे। मराठो का आपसी झगडा आपस तक ही सीमित रहता था और शत्रुओ के मुकाबिले मे वे फिर एक हो जाते थे।

नाना गणेशपत के उस स्थान से हट जाने के बाद युद्ध मे रुकावट पड गयी। बालाराव इंगले युद्ध नही करना चाहता था। इसके सम्बन्ध मे दो प्रकार की धारणाये पायी जाती हैं। एक तो यह

सिंधी लोगो के भयानक अत्याचार किये और जलते हुए लोहे पर बिठाने एवम् उसको दण्ड
वे व्यवस्था करने लगे। * ऐसे समय पर अमरचन्द बूंदी से लौट कर आया। उसके आते ह
सरदार के साथ सिंधी लोगो के अत्याचार समाप्त हो गये।

राज्य मे जो गडबडी चल रही थी, अमरचद से वह छिपी न थी। वह समझता
समय चारो तरफ विपदाये राज्य को घेरे है। उसने संकट के दिनो मे कुमार हमीर के
रक्षा करने की प्रतिज्ञा की। अमरचन्द एक योग्य और चरित्रवान आदमी था लेकिन
बहुत से मनुष्य किसी अच्छे आदमी के बढते हुए यश और वैभव को देख नही सकते।
भयानक सकट के दिनो मे जिस प्रकार मेवाड-राज्य की रक्षा और सहायता की थी, उ
प्रशसा करने के स्थान पर बहुत से मेवाड के लोग उसके साथ ईर्षा करते थे। हमीर के ब
के कारण राज्य का शासन जिन राज माता के हाथो मे था उसके विचारो को भी राज्य
अमरचन्द के प्रति दूषिक बना दिया था। इस प्रकार की सभी बातो को अमरचन्द जान

अच्छे से अच्छे आदमी के साथ भी ईर्षा करने वाले मनुष्य पैदा हो जाते है और
आदमी के द्वारा जिन लोगो का अहित होता है, वही उसके विरोधी बन जाते है। अमर
काम कर सकता था, परन्तु वह दूसरो को प्रसन्न नही कर सकता था। उसने अपने पास
सम्पत्ति की एक सूची तैयार की और उसे उसने राज माता के पास भेज दिया।
सोना, चाँदी और हीरा जवाहिरात के साथ अमरचन्द ने सूची बना कर वस्त्रो को भी
के, पास भेजा। राजमाता ने उसकी भेजी हुई बहुमूल्य सामग्री और सूची को देखकर
और अमरचन्द को लौटा देने की चेष्टा की। परन्तु प्रयोग मे लाये गये वस्त्रो को वापस
सब-कुछ अमरचन्द ने राजमाता के अधिकार मे दे दिया। उसने ऐसा राजमाता के हृदय को
पूर्ण वनाये रखने के लिए किया और उसका प्रभाव उस समय राजमाता पर पड़ा भी।
कुछ ही दिनो के बाद बदल गया। इसमे राजमाता का अधिक अपराध न था। उसकी
अवश्य थी। वास्तव मे वह रामप्यारी नाम की एक स्त्री से प्रभावित था और उस स्त्री
एक चरित्रहीन आदमी के साथ था। जो लोग वहाँ पर अमरचन्द के विरोधी थे, उनके
आदमी का सम्बन्ध था। वह आदमी रामप्यारी को जितना पाठ पढाता था, रामप्यारी
अनुसार राजमाता को सोलह दूना पाठ पढ़ाया करती थी। रामप्यारी से सम्बन्ध रखने
व्यक्ति राणा का एक कर्मचारी था। सही बात यह है कि राजमाता उस कर्मचारी
कठपुतली हो रही थी।

अमरचन्द रात दिन राज्य की और नवयुवक हमीर के सम्मान की रक्षा का
करता था। लेकिन इन बातो की चिन्ता करने वाला उन दिनो मे मेवाड़ मे दूसरा क
अमरचन्द के इस अच्छे कार्य मे सहायको की अपेक्षा विरोधियो का प्रभाव राजमाता
काम कर रहा था और इस विरोध का सिलसिला उस चरित्रहीन कर्मचारी के द्वारा
था। अमरचन्द को इन सब बातों की खबर थी, परन्तु वह दरबार और महल की इन
मे नही पडना चाहता था। वह समझता था कि राज्य के सिर पर विपत्ति के बादल मँ
और उनसे मेवाड की रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है।

दूसरी बार अमरचद के मत्री होने के पूर्व मेवाड-राज्य के जो लोग राणा अ

*अपराधी को दण्ड देने के लिए राजपूत लोहे की एक चद्दर को गरम करते थे
पर बिठाकर वे लोग अपराधी को दण्ड देते थे।

थी। उनको घेरकर नानापत ने भयानक अत्याचार आरम्भ किया। कितने ही गावो मे आग लगा दी गई, जिससे सैकडो और सहस्त्रो घर जल कर राख हो गये। उनमे रहने वाले मनुष्य कीडो और पतिगो की तरह मरे। भीषण रूप से लोग लूटे गये। जो लोग अपने घर-द्वार छोडकर भागे, वे रास्ते मे घेरकर मारे गये। वडी निर्दयता के साथ कर लगाया गया और लोगो से रुपये वसूल किये गये। जार्ज थामस ने देवगढ और अमैता पर आक्रमण करके वहाँ के राजा को कर देने के लिये मजबूर किया। उसने कारवीतल और लुसानी के दुर्गों पर अधिकार कर लिया। लुसानी के रहने वालो ने उसके अत्याचारो का मुकाविला किया। इसलिए सेनापति थामस ने उस नगर का भयानक रूप से विनाश किया। इस प्रकार के अत्याचार नाना गणेशपत अम्वा जी की सहायता के बल पर कर रहा था।

सीधिया को जव अम्वाजी के द्वारा होने वाले इन अत्याचारो के समाचार मिले तो उसने मेवाड राज्य से उसको अलग करके उसके स्थान पर लखवादादा को नियुक्त किया।*

अम्वा जी के पदच्युत होने पर नाना गणेशपत की सभी आशाये मिट्टी मे मिल गयी। उसने जितने स्थानो पर अधिकार कर लिया था, उन सवको उसने लौटा दिया। सीधिया के इस कार्य का लाभ मेवाडको न हुआ वल्कि उसकी प्रतिष्ठा को अघात पहुँचा। इसलिए कि उस समय से सीधिया मेवाड को अपना एक अधीन राज्य समझने लगा। लखवादादा सीधिया के आदेश से मेवाड का अधिकारी मुकर्रर हुआ। वह एक वडी सेना के साथ मेवाड की तरफ चला। अग्रजी मेहता फिर से मेवाड के मन्त्री बनाये गये और चन्दावत लोगो ने अपने पहले के पदो को पाकर राणा के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया। यह पहले लिखा जा चुका है कि लखवादादा ने अपना इलाका जिहाजपुर शापुरा के राजा को दे दिया था। लखवादादा ने उमसे जिहाजपुर वापस ले लिया। उस इलाके मे छत्तीस ग्राम थे। इन ग्रामो को गिरवी करके लखवादादा ने छै लाख रुपये एकत्रित करने की चेष्टा की। ये रकम जालिमसिंह ने अदा की और जिहाजपुर इलाके के सभी ग्रामो पर उसने अधिकार कर लिया।

लखवादादा को रुपये की भूख अव वढ गयी थी। छै लाख रुपये पाने के वाद उसकी भूख मिटी नही। उसने चौवीस लाख रुपये की एक दूसरी माँग की। उसकी यह माँग राणा से थी और उसके न दे सकने पर उसने राज्य से इस लम्वी रकम को वसूल करने का निश्चय किया। इस समय वह पहले का लखवादादा न था। शक्तियो के वढ जाने पर मनुष्य, मनुष्य नही रह जाता। लखवादादा के अधिकार मे इस समय मराठो की एक वडी सेना थी। मेवाड-राज्य से चौवीस लाख रुपये वसूल करने के लिए उसने अपनी सेना को आज्ञा दी। मराठे सैनिक राज्य मे चारो तरफ दौड पडे और वहाँ पर जैसे जो रकम मिली, उसे वसूल करके चौवीस लाख रुपये जमा किये गये। इन दिनो मे लखवादादा की शक्तियाँ महान हो रही थी। उसके पास अव रुपये का कोई अभाव न था। उसने यशवतराव भाऊ नामक मराठा को अपनी तरफ से मेवाड-राज्य का अधिकारी वनाया और उसको मेवाड मे छोडकर वह जयपुर की तरफ चला गया। भाऊ ने मेवाड-राज्य का प्रवन्ध अपने अनुसार शुरू किया।

अग्रजी मेहता राणा का मन्त्री था और मौजीराम उपमन्त्री के स्थान पर काम कर रहा था। राज्य

---

* वालोवा तातिया और वकसी नारायण राव—दोनो ही सीधिया मन्त्री थे और दोनो ही शैनवी ब्राह्मण मराठा थे। लखवादादा के माथ उनका वशगत सम्वन्ध था। इसका लाभ लखवादादा को मिला और इसलिए वह सीधिया के द्वारा अम्वाजी के स्थान पर नियुक्त किया गया।

कर दिया था। मरने पर उसके अंतिम सरकार के लिए भी पैसो का अभाव था। प्रसि· राज्य का प्रधान मन्त्री होने के बाद भी उसकी मृत्यु एक दीन-दरिद्र की-सी हुई। जीवन का यह पीडामय दृश्य मेवाड-राज्य के सर्वनाश का कारण बना।

राजमाता ने अमरचन्द को अपना शत्रु समझा था। इसलिए उसका अन्त करके वह जीवन व्यतीत करना चाहती थी। उसे न मालूम थ कि अमरचन्द के मरते ही राज्य मे वाला है। बडी बुद्धिमानी के साथ अमरचन्द ने शत्रुओ से मेवाड-राज्य को सुरक्षित बना और मराठो के षडयन्त्रो मे राज्य को बचाने मे उसने सफलता प्राप्त की थी। उसके मर सम्वत् १८३१ सन् १७७५ ईसवी मे वेगू सरदार ने राज्य पर आक्रमण किया। उसको लिए मेवाड मे अब कोइ शूरवीर न था। इसलिए राजमाता को उस सीधिया से सहायत पडी जो बहुत दिनो से मेवाड के विरुद्ध अवसर की ताक मे था। वेगू एक मेघावत सर मेघावत वश चन्द्रावत गोत्र की एक प्रधान शाखा है।

सीधिया की मराठा सेना ने मेवाड का पक्ष लेकर वेगू सरदार पर आक्रमण किया सरदार ने मेवाड राज्य के जिन स्थानो पर अधिकार कर लिया था, उसने सरदार को अपना अधिकार कर लिया और वेगू सरदार पर विद्रोह करने के अपराध मे बारह लाख जुर्माना किया। जुर्माने की इस सम्पत्ति को सीधिया ने अपने हिस्से मे रखा और रत सिंगौली के प्रसिद्ध स्थान अपने जामाता वीर जी प्रताप को देकर इंनिया, जाठ, विचूर इत्यादि अनेक राज्य के प्रसिद्ध स्थान होलकर को दे दिये। इन इलाको की वार्षिक अ लाख रुपये थी। मराठो ने मेवाड-राज्य के इतने ही इलाको पर अधिकार नही कि सम्वत् १८३०-३१ और ३६ मे युद्ध की सहायता की कीमत मे अत्यधिक सम्पत्ति की राज्य से की और उस सम्पत्ति की अदायगी न होने कारण मराठो ने मेवाड-राज्य के प्रसिद्ध इलाको पर अधिकार कर लिया। राज्य के इन सर्वनाश के दिनो मे अठारह वर्ष क मे सम्वत्-१८३४ सन् १७७८ ईसवी मे हमीर की मृत्यु हो गयी।

मेवाड के राजाओ से भिन्न-भिन्न अवसरो पर मराठो ने जिस प्रकार रुपये लि प्रकार है :

छाछठ लाख रुपये सम्वत् १८०८ सन् १७५२ ईसवी मे राणा जगतसिह से होलकर

इक्यावन लाख रुपये सम्वत् १८२० सन् १७६४ ईसवी मे राणा अरिसिंह से सीधिया ने लिए।

चौसठ लाख रुपये सम्वत् १८२६ सन् १८७० ईसवी मे राणा अरिसिंह से सीधिया ने लिए।

इस प्रकार तीन बार मे मेवाड के राजाओ से मराठो ने जो सम्पत्ति वसूल की, मिलाकर एक करोड इक्यासी लाख रुपये थी। इस नकद सम्पत्ति के सिवा सम्वत् १८०८ सम्वत् १८३१ तक मेवाड-राज्य के जितने इलाको पर मराठो ने अधिकार कर लिया, उनक आमदनी अट्ठाईस लाख पचास हजार रुपये थी, मराठो के अधिकार मे गये हुए इलाको मे भनपुरा, जावद, जीरण, नीमच, नीम बहेडा, रतनगढ, खेडी, सिंगौली, इंनिया, जाठ, - नदोई प्रमुख थे।

पुजारी दामोदर उदयपुर पहुँच गया। परन्तु वहाँ पर उसकी तबीयत न लगी । राणा की हालत को देख कर उसने वहाँ का रहना अपने लिए सुरक्षित न समझा। इसलिए छै महीने के बाद वह गसियर नामक एक पहाडी स्थान पर चला गया और वहाँ की पहाडी दीवारो के बीच एक मन्दिर बनाकर अपनी देव मूर्ति के साथ वह रहने लगा।

सीधिया की सेना अब भी होलकर का पीछा कर रही थी। नाथद्वारा की सम्पत्ति लूटकर और बनैडा तथा शापुरा से बहुत-सा धन लेकर होलकर अजमेर मे पहुँचा और वहाँ से वह जयपुर की तरफ चला गया। मेवाड मे पहुँच कर सीधिया की सेना ने जब होलकर को वहाँ न पाया तो उसने उसका पीछा करना छोड़ दिया और सीधिया के सरदारो ने राणा से तीन लाख रुपये की माँग की। इस समय राणा की अवस्था बहुत खराब थी। इस रकम को अदा करने के लिए उसमे सामर्थ न थी। परन्तु बिना रुपये दिये हुए छुटकारा न मिल सकता था। इसलिए राणा भीमसिंह ने अपनी व्यक्तिगत और रानियो की बहुमूल्य सामग्री तथा उनके आभूषण तीन लाख रुपये की अदायगी मे दे दिये। इतना सब पा जाने के बाद भी सीधिया के सरदारो को सन्तोष न हुआ। इसलिए यशवत राय भाऊ के परामर्श से उन सरदारो ने राणा से और भी रुपये अदा करने की माँग की। ये रकम राणा के न दे सकने पर राज्य की प्रजा से कठोर अत्याचारो के साथ वसूल की गयी। जो लोग रुपये न दे सके, उनको कैद किया गया और उनके साथ अमानुषिक अत्याचार किये गये।

सम्वत् १८५६ सन् १८०३ ईसवी मे सीधिया की सेना के द्वारा मेवाड-राज्य मे अकथनीय अत्याचार हुए। उन्ही दिनो मे सीधिया के द्वारा लखवादादा का अपमान किया गया, जिसने शालुम्ब्रा-दुर्ग मे पहुँच कर उसकी मृत्यु हो गयी। लखवादादा के मर जाने के बाद उनके स्थान पर अम्बां जी का भाई बालाराव नियुक्त किया गया। शक्तावत लोगो ने बालाराव के साथ मेल कर लिया। सतीदास भी उससे मिल गया। इस मेल के परिणाम स्वरूप, चन्दावत लोगो पर अत्याचार आरम्भ हुए। राज्य के कार्यो से अलग किये गये। जालिमसिंह पहले से ही चन्दावतो को अपना शत्रु समझता था। इसलिए जब उन पर अत्याचार हुए तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। जालिमसिंह भी इन विद्रोही लोगो से मिल गया और राणा का मन्त्री देवीचन्द कैद कर लिया गया। इसलिए चन्दावतो के द्वारा वह राणा का मन्त्री बना था।

मेवाड-राज्य मे चन्दावतो की जो जागीरे थी, बालाराव इगले ने उनको भयानक रूप से लूटा और उनमे रहने वालो पर भीषण अत्याचार किये। प्रजा के घरो पर आग लगा दी गयी। इसके बाद बालाराव अपनी सेना के साथ राणा के महल की तरफ चला और मन्त्री के सहकारी मौजीराम की। उसने माँग को राणा ने मौजीराम को देने से इनकार कर दिया पर बालाराव ने अपने सैनिको को राणा के महलो मे प्रवेश करने का आदेश दिया।

उदयपुर के लोग बालाराव के इस अत्याचार को अब सहन कर सके। इसी समय मौजीराम का आदेश पाकर वे सब अपने हाथो मे तलवारे लेकर बालाराव के सैनिको पर टूट पडे। बहुत-से आदमी मारे मये। नाना गणेश पत, जमाल कर और ऊदाजी कुँवर कैद कर लिए गये। बालाराव इंगले ने छिपकर भागने की चेष्टा की। लेकिन वह भी पकड कर कैद कर लिया गया। मराठा सरदारो के कैद हो जाने पर चन्दावत लोग अपने स्थानो से निकले और वे पर्वत के ऊपर स्थान पर पहुँचे, जहाँ सीधिया की सेना ने अपना शिविर बनाया था। चन्दावतो ने वहाँ की समस्त मराठा सम्पत्ति और सामग्री पर अधिकार कर लिया। हियर्स नामक एक अँग्रेज सेनापति मराठो की सहायता करने के लिए आया था। उसने उदयपुर मे सीधिया की सेना की यह दशा देखकर अपने वापस चले जाने का प्रबन्ध किया। वह तुरन्त भयभीत होकर वहाँ से तेजी के साथ लौट गया।

पूर्व पुरावत सरदार के साथ सग्रामसिह का एक झगडा पैदा हुआ। लव्हा नामक उ
का एक दुर्ग था। संग्रामसिंह ने उस दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इसी वीच मे भेदर
जा चुका था। शक्तावत वश के साथ सग्रामसिंह का सम्वन्ध था। इसलिए उसने
कोरावाड पर आक्रमण किया। अर्जुनसिंह वहाँ का अधिकारी था। सग्रामसिंह ने वहाँ
पशुओ को अपने अधिकार मे ले लिया। उसी मौके पर अर्जुनसिह के पुत्र सालिमसिंह
साथ युद्ध किया और वह सग्रामसिंह के भाले से मारा गया। पुत्र के मारे जाने का
सिंह ने सुना, उसने अपने सिर का साफा फेक कर प्रतिज्ञा की कि 'जव तक सग्रामसिंह
बेटे के मारे जाने का वदला न ले लूँगा अपने सिर पर साफा न वाँधूगा।'' इसके वाद
वाड की तरफ रवाना हुआ। सग्रामसिंह अपने को शत्रुओ से सुरक्षित समझता था। इ
वार वही पर रहा करता था।

अर्जुनसिंह अपनी सेना के साथ शिवगढ पहुँचा। वहाँ के दुर्ग मे लालजी के सिवा
शूरवीर न था। बुढापे मे पहुँच कर उसने अपनी अवस्था के सत्तर वर्ष पूरे किये थे। उ
शिथिल और निर्वल हो गया था। उसके पास लडने वालो की सख्या वहुत थोडी थी।
अपने हाथो मे तलवार और ढाल लेकर निकला और अपने थोडे से आदमियो की शक्ति
लेकर उसने युद्ध किया। लडते हुए वह मारा गया। अर्जुनसिह ने सग्रामसिंह के
वच्चो का सर्वनाश किया। लालजी की वृद्धा स्त्री उसके मृत शरीर को लेकर सती हुई।

कोरावाड के अधिकारी अर्जुनसिंह के द्वारा होने वाले इस सर्वनाश का परिण
राज्य पर अच्छा नही पडा। आपसी फूट पहले से चली आ रही थी। उसने इन दिनो
रूप धारण किया और राज्य का अपहरण करने मे उस फूट ने मराठो को एक
दिया। शिवगढ के सर्वनाश के वाद चन्दावत और शक्तावत वश की शत्रुता भयानक
चन्दावत वश के लोगो को राणा के यहाँ प्रधानता मिली थी और उस वश के शालुम्ब्रा
राज्य की रक्षा का अधिकारी वनाया गया। मेवाड मे इन दिनो राजपूत वीरो का
शताब्दियो से शत्रुओ के आक्रमणो का सामना करते-करते वे सभी अपने प्राणो की
चुके थे। जो वाकी रह गये थे, उनको और उनकी सतानो को राज्य के वर्तमान रा
मण्यता ने भीरु वना दिया था था। इसलिए राज्य की रक्षा के लिए किराये पर सिंधी
गयी थी और चित्तौर तथा उदयपुर के वीच का समस्त श्रेष्ठ इलाका उसको दे दिया
चन्दावत मन्त्री-भीमसिह इन दिन मे मेवाड का मन्त्री था और उसने सिंधी सेना
देकर उनको अपने अनुकूल वना रखा था। इस भीमसिह ने अपनी कुटिल राजनीति
और भी अधिक मिट्टी मे मिलाने का काम किया था। उसने अपने अधिकारो का दुरु
था और राज्य की सम्पत्ति को पानी की तरह वहाकर उसने वरवाद किया। राणा
सम्पत्ति का इतना अभाव उस समय था कि उसने अपना विवाह जव ईदर राज्य मे
उसके खर्च के लिए उसको कर्ज लेना पडा। लेकिन राज्य की इस दुरवस्था के दिनो
भीम ने अपनी लडकी के विवाह मे दस लाख रुपये से अधिक खर्च किये। राणा
अयोग्यता का यह परिणाम था कि उसका मन्त्री राज्य मे मनमानी कर रहा था और
राजमाता की उपेक्षा करने मे उसे कुछ भी भय न होता था।

राजमाता मन्त्री भीम के असद् व्यवहार को अधिक समय तक सहन न कर
शक्तावत वंश के श्रेष्ठ जनो को बुलाकर अपने राज मे प्रतिष्ठा दी और भेदर तथा लव्हा
को बुलाकर उनका सम्मान किया। राजमाता ने चन्दावत मन्त्री को हटाकर राज्य का

उनको अपने अधिकार मे ले लिया और जब वहाँ के सरदारो ने होलकर की माँगी हुई रकम अदा की तो उनके दुर्ग छोड दिये गये ।

होलकर की रुपये की भूख बराबर बढती जा रही थी । उसकी सेना ने देवगढ के दुर्ग पर आक्रमण किया और वहाँ के सरदार से होलकर ने साढे चार लाख रुपये वसूल किये । इस तरह आठ महीने तक लगातार होलकर ने मेवाड राज्य के भिन्न-भिन्न इलाको और उनके दुर्गों पर हमले करके अगणित रुपये वसूल किये । किसी एक स्थान पर आक्रमण करके और रुपये वसूल करके वह तुरन्त किसी दूसरे राज्य पर आक्रमण करने का कार्यक्रम बना लेता था । उन दिनो मे मेवाड के इन राज्यो की दशा बहुत दयनीय हो रही थी ।

राणा जी पर होलकर के जो रुपये बाकी रह गये थे, उनके बदले मे राणा के कितने ही प्रमुख व्यक्तियो के साथ अजितसिंह भी गिरवी मे रखा गया था और उस रुपये को मेवाड मे एकत्रित करने के लिए बलराम सेठ उदयपुर मे रह गया था । राज्य मे रुपये वसूल करने की कोई सूरत बाकी न रह गयी थी, फिर भी लोगो से रुपये लिए जाने का कार्य राज्य के अधिकारियो के द्वारा होता रहा ।

होलकर अपनी सेना के साथ मेवाड के राज्यो को लूटकर शापुरा मे पहुँचा । इसी समय सीधिया की सेना मेवाड पहुँच गयी । इन दिनो मे अग्रेजो की शक्तियाँ भारत मे शक्तिशाली हो रही थी । सीधिया और होलकर—दोनो को अग्रेजो से भय उत्पन्न हुआ । इसी उद्देश्य से दोनो ने एक दूसरे से मुलाकात की और इस बात को वे परामर्श करने लगे कि अग्रेजो की इस बढती हुई शक्ति का किस प्रकार सामना किया जाय ।

इन्ही दिनो मै अग्रेजी सेना को पराजित होना पड़ा । इसलिए सीधिया और होलकर को अग्रेजो से अधिक भय उत्पन्न हो गया । दोनो आपस मे परामर्श करके अग्रेजो से लडने की तैयारी की । सन् १८०५ ईसवी के वर्षाकालीन दिनो मे होलकर और सीधिया के सैनिक बिदनौर के मैदानो मे एकत्रित हुए और अग्रेजी सेना को पराजित करने के लिये अनेक प्रकार के मसूबे बाँधने लगे, इसमे कुछ दिन बीत गये ।

राजस्थान के और विशेषकर मेवाड के राज्यो को लूटने के लिए होलकर और सीधिया ने अपनी सेनाओ को अत्यन्त विशाल बना रखा था । लूट की रकमो से सेनाओ का वेतन अदा किये जाते थे । इधर कुछ दिनो से लूट का काम बन्द हो गया और वे लुटेरे मराठे अंग्रेजो से चिन्तित हो उठे थे । एक तरफ वे लोग अग्रेजो से लडने की तैयारी कर रहे थे, और दूसरी तरफ लूट की जो सम्पति होलकर और सीधिया के पास थी, वह खर्च हो चुकी थी । इसलिए सैनिको के वेतन बाकी पडे थे । उनको अदायगी न हो सकने की अवस्था मे मराठा सैनिक अपने राजाओ से विद्रोह करने के लिए तैयार थे । सीधिया और होलकर ने अपने सैनिको से केवल लूटमार का काम लिया था । इसलिए सैनिको के आचरणो मे अनुशासन का अभाव हो गया । वेतन न पाने की दशा मै मराठा सैनिक निरकुश हो गये । सीधिया और होलकर को फिर अपनी लूटमार की नीति अपनानी पडी । उनके झुण्ड के झुण्ड आस पास के देहातो मे जाते और भयानक अत्याचार करके वे लोग ग्रामीण लोगो से रुपये वसूल करते ।

मराठो के ये अत्याचार अत्यन्त भयानक हो उठे । जिन लोगो के पास धन न होता, उनके मकानो मे मराठा सैनिक आग लगा देते और उनसे भागने वालो को अपनी तलवारो से मार डालते उनके इन अत्याचारो से मेवाड-राज्य के गाँव और नगर श्मशान बन गये । मेवाड राज्य की यह दुरवस्था दस वर्ष तक बराबर चलती रही । भारत मे अब तक अनेक अवसरो पर भीषण अत्याचार

अधिकृत राज्य के चार नगरो को देकर उसने मुक्ति पायी। माधवजी सीधिया के जिन राजपूतो ने अधिकार कर लिया था, जावद को छोडकर बाकी पर फिर मराठो ने अ कर लिया। दीपचन्द ने बडी बहादुरी के साथ एक महीने तक जावद की रक्षा की।

इन दिनो मे चन्दावत लोगो को छोडकर बाकी सभी सरदार राणा के साथ राजमाता और मेवाड के नवीन मन्त्री सोमजी ने चन्दावतो को दमन करने की चेष्ट परिस्थितियो मे चन्दावत सालुम्ब्रा सरदार राणा से क्षमा माँगने के लिये उदयपुर आय चापलूसी करने लगा। उसने कहा "मै राज्य के मन्त्री सोमजी के साथ मिलकर चाहता हूँ।" परन्तु उसकी इस बात मे सच्चाई न थी। वह किसी प्रकार मन्त्री सोम करना चाहता था और इसके लिये वह भीतर ही भीतर षडयन्त्र की रचना कर रह दिन कोराबाड का सरदार अर्जुनसिह और भदेसर का सामन्त सरदारसिह— दोनो एक सोमजी के सामने पहुँचे और बडे आवेश के साथ कहा "आपको हमारी जागीर के जब् क्या अधिकार था ?" इसके साथ ही सरदारसिह ने अपनी तलवार का भीषण वा किया। यह देखकर सोमजी के दोनो भाई उसकी रक्षा के लिये दौड पडे अर्जुनसिह ने कर उनका सामना किया। अन्त मे दोनो आक्रमणकारी सालुम्ब्रा सरदार के साथ ि गये। राणा भीम मे हत्याकारियो को दण्ड देने का सामर्थ्य न था। मन्त्री सोमजी पर उसके भाई शिवदास और सतीदास राज्य के मन्त्री बनाये गये।

शिवदास और सतीदास ने मन्त्री पद पाने के बाद शक्तावत लोगो की सहायता चन्दावत लोगो के साथ युद्ध किया। उन लडाइयो मे मन्त्रियो को अकोला मे होने केवल विजय प्राप्त हुई। इस लडाई मे कोरवाड का सरदार अर्जुनसिह चन्दावत लोगो बना। अकोला के युद्ध के थोडे ही दिनो बाद खैरीद नामक स्थान पर युद्ध हुआ। उस फिर पराजित हुए।

मेवाड राज्य मे आपसी झगडो के कारण प्रजा के सामने भयानक कठिनाइयाँ थी। उन दिनो मे जो पक्ष विजयी होता था वह उन्मत्त होकर प्रजा का सर्वनाश करत विद्रोहो को दबाने की शक्ति राणा मे न थी। इसलिये सम्पूर्ण राज्य मे अराजकता थी। विद्रोही सैकडो और सहस्त्रो की सख्या मे तलवारे लिये हुए राज्य मे चारो ओर और प्रजा का सभी प्रकार विनाश कर रहे थे। कृपको से लेकर सभी प्रकार के व्यवसा सङ्कट का सामना कर रहे थे। चोरो,लुटेरो और डाकुओ की सख्या बहुत अधिक बढ जो अपराध पहले कभी मेवाड मे सुनने को न मिलते थे, इन दिनो मे उनकी अधिकत प्रत्येक समय प्रजा की सम्पत्ति, प्रतिष्टा और जिन्दगी खतरे मे थी। चन्दावत लोगो के से राज्य मे चतुर्दिक त्राहि-त्राहि मच गयी। राज्य की तरफ से कोई प्रबन्ध न होने के अपने-अपने घर द्वार छोडकर भागने लगे। राज्य के जो स्थान सदा मनुष्यो से भरे सुनसान दिखायी देने लगे। जो लोग खेती करते थे, वे इस बढती हुई अराजकता के अनिश्चित रहते थे। ठीक वही अवस्था राज्य के दूसरे व्यवसायो की हो गयी थी। मजदूरो की अवस्था अत्यन्त भयानक हो गयी थी। राज्य के इस आन्तरिक विद्रोह के ही वर्षो मे मेवाड की आबादी घटकर आधी रह गयी। व्यवसाय नष्ट हो गया था की सख्या बढती जाती थी। खेती का काम नष्ट हो गया था और जुलाहो का बुना ह जो चारो तरफ बिक्री के लिये जाता था, खतम हो गया था। राज्य की अवस्था २ थी। प्रजा की रक्षा करने के स्थान पर राणा स्वय अपनी रक्षा कर सकने मे

वस्था के दिनो मे वे दोनो वश एक हो गये और उनके सरदार लोग पंचौली किशनदास के साथ होलकर से पूछा "क्या आपने मेवाड के टुकडे-टुकडे करके वेचने का अधिकार अम्बा जी को दिया है ?"

इस प्रश्न को सुन कर सरदारो को उत्तर देते हुये होलकर ने गम्भीरता के साथ कहा "नही मैं ऐसा कभी न होने दूंगा। मै आप सबके सामने शपथपूर्वक कहता हूँ कि मेवाड की यह दुरवस्था मै कमी देख न सकूँगा। मै आप सबको सलाह दूंगा कि इस सकट के समय एक होकर राज्य की रक्षा का उपाय करे।"

होलकर के मुख से इस प्रकार की बात को सुनकर मेवाड के सरदारो को बहुत सतोष मिला। होलकर ने इतना ही नही कहा, बल्कि मेवाड के इन सरदारो को लेकर वह सींधिया के पास गया और राणा की प्रशसा करते हुये उसने सींधिया से कहा 'राणा ने राजस्थान के एक श्रेष्ठ वश मे जन्म लिया है। यहाँ के सभी राजपूत राणा को सम्मान देते है। इस दशा मे राणा के साथ शत्रुता रखना हम लोगो का कर्त्तव्य नही है। मेवाड राज्य की आज जो अधोगति है, क्या उसमे हम लोगो का कुछ कर्त्तव्य नही है ? उस राज्य की भूमि का भोग बहुत समय से हमारे पूर्वज करते चले आ रहे है। मुनासिब तो यही था कि इस सकट के समय हम सब लोग उस राज्य की सम्पूर्ण बंधक भूमि को लौटा देते। इस कर्त्तव्य पालन के समय क्या उचित है कि हम सबके देखते-देखते उस राज्य को बहुत से टुकडो मे बाँट दिया जाय ? यदि ऐसा है तो हम लोगो को लज्जा मालूम होना चाहिये। ऐसे अवसर पर मैं साफ यह कह देना चाहता हूँ कि आपकी जो तबीयत हो, करे। परन्तु मैं तो शपथ खा चुका हूँ कि राणा के पक्ष को छोडकर मैं कभी दूसरे पक्ष मे न जाऊँगा। इस विषय मे मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि मेवाड के इन संकट के दिनो मे मैंने नीमबहेडा नामक अधिकार किया हुआ इलाका राणा को दे दिया है। ऐसा करके मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है।"

होलकर अपनी इन बातो को कहकर चुप हो गया। सींधिया चुपचाप सुनता रहा। उसने कुछ कहा नही। सींधिया होलकर की कही हुई बातो को अभी सोच रहा था, उसी समय होलकर ने फिर कहा "आप इस समय की परिस्थितियो पर ध्यान दे। यदि आज राणा हम लोगो का साथ छोडकर अलग हो जाँय तो हम लोगो के सामने कितना बडा सकट पैदा हो सकता है। अंग्रेजो के साथ जो युद्ध होने को है, उसके किसी प्रकार दिन कट रहे है। यदि लडाई शुरु होती है तो हम लोग अपनी सम्पत्ति और परिवार के लोगो को कहाँ रखेगे ? इस सकट के समय राणा के दुर्ग ही हमारे लिये सुरक्षित हो सकते है। राणा के साथ शत्रुता पैदा करके हम किस प्रकार उन दुर्गो का लाभ उठा सकते है। इस समय हमे यह न भूलना चाहिए कि राणा की शत्रुता हमारी विपदाओ को पहाड बना देगी।

होलकर की लगातार बातो को सुनकर सींधिया के मन की आशकाये दूर हो गयी और वर्तमान परिस्थितियो का अनुमान लगाकर वह एक बार प्रसन्न हो उठा। होलकर के शब्दो ने सींधिया को प्रभावित किया और सींधिया ने मेवाड के दूतो को बुलाकर अपने यहाँ सम्मानपूर्ण स्थान दिया।

सींधिया और होलकर के कैम्पो मे दस कोस का फासला था। इन्ही दिनो मे वहाँ पर कई दिनो तक भीषण वर्षा हुई। इसलिए आने जाने के रास्ते कुछ समय के लिए बद हो गये। इसी वर्षा के दिनो मे होलकर किसी समय मे अपने कैम्प मे बैठा था। एक कर्मचारी ने आकर उसके हाथ में एक समाचार-पत्र दिया। होलकर ने तुरन्त तत्परता के साथ उसे पढा और फिर गम्भीर होकर उसने अपने कर्मचारियो से कहा " राणा के दूतो को अभी बुलाकर मेरे पास ले आओ।" होलकर के अचा-

रवाना हुआ । दोनो सेनाओ ने चित्तौर की तरफ बढते हुए रास्ते मे खेती को बडी हानि जो स्थान सुन्दर और सम्पन्न थे, उसको लूट लिया । इस अत्याचार मे जालिमसिंह ने को सार्थक कर दिया । धीरजसिंह हमीरगढ का अधिकारी था और वह चन्दावत लोगो था । जालिमसिंह ने उसके राज्य हमीरगढ पर आक्रमण किया, डेढ महीने तक लगातार वह होता रहा । जालिमसिंह के पास युद्ध की तोपे थी, उसने उस युद्ध मे अपनी तोपो का प्रयो जिससे हमीरगढ के कुएँ बरबाद हो गये । इसलिए धीरजसिंह के सैनिको ने विवश होक दुर्ग का द्वार खोल दिया । जालिमसिंह ने उस पर अधिकार कर लिया और आस-पास के पर कब्जा करके मराठा सेना के साथ चित्तौर की तरफ बढ़ा । रास्ते मे बुसी नामक चन्दा का एक इलाका था । जालिमसिह ने उस पर आक्रमण किया और उस पर भी उसने अ लिया । सीधिया की सेना इन दिनो मे मारवाड की तरफ थी । चित्तौर मे जालिमसिह के पहुँचते ही सीधिया भी अपनी सेना के साथ उसकी सहायता करने के लिए वहाँ पर अ

माधव जी सीधिया की राणा से मिलने की अभिलाषा थी । इसलिए उसने अपना जालिमसिह से प्रकट किया । वह राणा को लाने के लिए उदयपुर की तरफ रवाना हुआ । से कुछ दूर व्याघ्रमेरु नामक एक पहाडी स्थान पर राणा और माधवजी सीधिया की मुला सीधिया ने राणा के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया । इस समय सीधिया और जालिम छोडकर उदयपुर की तरफ चले आये और अम्बा जी अकेला अपनी सेना के साथ चित्त गया । जालिमसिह ने अम्बाजी से डगले से सहायता ली । लेकिन वे दोनो ही एक दूसरे नहीं करते थे । अम्बा जी ने अवसर पाकर विद्रोही चन्दावत सरदार के साथ मेल कर की और जालिमसिह का उद्देश्य उसे जाहिर कर देने का निश्चय किया । इसी आधार सरदार भीमसिह के साथ जो राणा का विद्रोही था—अम्बाजी की गुप्त बातचीत हुई और की योजना को समझ कर चन्दावत सरदार भीमसिह ने राणा के प्रति आत्म-समर्पण करन लाख रुपये देना स्वीकार किया, इस शर्त पर कि यदि राणा अपने यहाँ से जालिमसिह को

जालिमसिंह अम्बाजी को अपना मित्र समझता था । उज्जैन के युद्ध मे त्रयम्बकज बडी मदद की थी । परन्तु राजनीति मे इस प्रकार की मित्रता बहुत बडा मूल्य नही रख का सघर्ष होते ही इस प्रकार की मित्रता छिन्न-भिन्न हो जाती है । जालिमसिह स्वभावत. था । वह अपने हितो को बहुत दूर से देखा करता था । ठीक यही अवस्था अम्बा जी क दोनो ही अपने-अपने स्वार्थो को बहुत दूर से देख रहे थे । इसीलिए न तो जालिमसि अम्बाजी से जाहिर किया था कि मेवाड के सम्बन्ध मे उसका भीतरी इरादा क्या अम्बाजी ने जालिमसिह को इस बात के समझने का मौका दिया कि वह राणा की सह से क्या लाभ उठा सकता है । दोनो ही परिस्थितियो का फायदा उठाना चाहते थे ।

राणा के साथ चित्तौर मे जालिमसिह के आने पर अम्बाजी ने चन्दावत भीमसिह उपस्थित किया और कहा कि विद्रोही सरदार राणा के सामने आत्म-समर्पण करके के बदले मे बीस लाख रुपये देने को तैयार है, इस शर्त पर कि जालिमसिंह मेवाड से ि जाय । अम्बाजी के मुख से सरदार भीमसिह का प्रस्ताव सुनकर जालिमसिंह ने कहा सम्बन्ध में इस प्रकार की आपत्ति की जाती है तो मैं मेवाड छोडकर कोटा चले तैयार हूँ, यदि मेरा चला जाना राणा जी को स्वीकार है ।"

अम्बाजी ने जालिमसिंह के उत्तर को को ध्यान पूर्वक सुना । उसने कहा : " उत्तर सुनने मे बडा सुन्दर मालूम होता है । लेकिन इस पर वही लोग विश्वास करेंगे, जो आ

कृष्णाकुमारी का विवाह न हो सके इसके लिए राजा मानसिंह ने अपनी तीन हजार सैनिको की सेना उदयपुर भेज दी।

जयपुर की सेना उदयपुर मे पहले ही आ चुकी थी। कृष्णाकुमारी का विवाह जगतसिंह के साथ रोकने के लिए मानसिंह ने भूठी बातो का प्रचार करना आरम्भ किया। सीधिया ने मारवाड के राजा मानसिंह का पक्ष लिया और इसके लिये उसने सदाशिव राव को आदेश दिया था कि उदयपुर की सेना निकाल दी जाय। सीधिया ने राणा को एक धमकी भी दी थी और उसके लिए सदेश भेजा था कि यदि वह मेरी बातो को न मानेगा और अपनी लडकी का विवाह जयपुर के राजा के साथ करेगा तो मै किसी प्रकार उस विवाह को होने न दूँगा।

कृष्णाकुमारी का विवाह जगतसिंह के साथ न हो, इसके लिये विरोधियो की तरफ से अनेक प्रकार के उपाय किये गये। राजा मानसिंह ने चन्दावत लोगो को मिलाकर अपने पक्ष मे कर लिया था और उनके सरदार अजितसिंह को रिश्वत दी थी। जयपुर के राजा जगतसिंह के साथ सीधिया की अप्रसन्नता का कारण था। कुछ समय पहले सीधिया ने जगतसिंह से रुपये मांगे थे और जगतसिंह ने रुपये देने से साफ-साफ इनकार कर दिया था। इस अप्रसन्नता के कारण सीधिया ने मानसिंह का पक्ष समर्थन करके कृष्णाकुमारी के विवाह मे जगतसिंह का विरोध किया और अपनी आठ हजार सेना को लेकर वह उदयपुर पहुँच गया। नगर से कुछ दूरी पर उसने अपने डेरे डाले।

राणा भीमसिंह के सामने इस समय भयानक सकट था उदयपुर मे जयपुर की सेना को वापस भेज देने के सिवा अब उसके सामने कोई उपाय न था। उसने यही किया। जयपुर की आयी हुई सेना उदयपुर से चली गयी। राजा जगतसिंह ने सेना के लौट आने पर अपना अपमान अनुभव किया और राणा से इसका बदला लेने के लिये उसने अपनी सेना के साथ मेवाड पर आक्रमण किया। राजा जगतसिंह के साथ उस समय जितनी बडी सेना थी, उतनी जयपुर मे कदाचित कभी न रही थी।

राजा जगतसिंह की सेना के आक्रमण का समाचार सुन कर राजा मानसिंह उससे युद्ध करने को तैयार हुआ और अपनी सेना लेकर वह मेवाड की तरफ चल पडा। परन्तु इसी समय उसके राज्य मारवाड मे कुछ घरेलू झगडे पैदा हो गये, जिनसे मानसिंह बडी मजबूरी मे पड गया। इस प्रकार के विवाद और घरेलू झगडे मारवाड मे बहुत पहले से चल रहे थे। वहा के इन भीतरी झगडो के कारण मारवाड की युद्ध सम्बन्धी योग्यता निर्बल पड गयी थी। मानसिंह युद्ध के लिए रवाना हो गया था। उसके चले जाने पर विरोधी सरदारो ने अपने साथ के एक सरदार को कल्पित राजा बनाया और एक सेना का सगठन करके वे लोग मानसिंह के शत्रुओ से मिल जाने को रवाना हुये। जयपुर के राजा जगतसिंह ने एक लाख बीस हजार सैनिको की सेना लेकर चढाई की थी। मानसिंह के पास जो सेना थी, वह लगभग इसकी आधी थी। पुरुवत्सर सामक स्थान पर जयपुर और मारवाड की सेनाओ का मुकाबिला हुआ युद्ध आरम्भ होने के कुछ समय बाद मानसिंह की सेना के बहुत से सैनिक और सरदार मारवाड के कल्पित राजा की तरफ चले गये। राजा मानसिंह की शक्तियाँ इस समय युद्ध मे बहुत क्षीण पड गयी। वह युद्ध से अलग जाकर खडा हो गया। उस समय शत्रुओ के आक्रमण करने पर उसके सामन्तो और सरदारो ने उसकी रक्षा की। वहाँ से हटकर शत्रु-सेना ने जोधपुर को घेर लिया। वहाँ पर छै महीने युद्ध हुआ। अत मे जोधपुर शत्रुओ के अधिकार मे चला गया और वहाँ पर लूट आरम्भ हुई। इन शत्रुओ मे मारवाड के जो विरोधी सरदार अपनी सेना के आकर मिल गये थे, वह जोधपुर की यह अवस्था न देख सके। यहाँ पर कछवाहो और राठौरो का प्रश्न पैदा हो गया। जयपुर के लोग कछवाहा राजपूत थे और मारवाड़ के रठौर थे। इस प्रश्न ने जयपुर की सेना

मन्त्रियो से वादा करके उसने राज्य की अशान्ति को दूर करने का भार अपने ऊपर लिया
उत्तरदायित्वो को लेकर अम्बा जी ने मेवाड मे अपना स्थान सर्वेसर्वा बना लिया ।

अम्बा जी ने मेवाड मे रहकर आठ वर्ष व्यतीत किये । इन दिनो मे उसने राज्य की
को चूसकर बारह लाख रुपये अपने अधिकार मे कर लिए । चन्दावतो के शान्त हो जाने से
समस्त उपद्रव खतम हो गये । मेवाड राज्य के प्रवन्ध के सम्बन्ध मे सीधिया ने निम्नलिखित
आदेश अम्बा जी को दिये थे ।

(१) विद्रोही रत्नसिंह ने कमलमीर मे अधिकार कर रखा है, उसको वहाँ से निक
जाय ।

(२) मारवाड़ के राजा से गोदवाड (गोद्वार) लेकर मेवाड मे मिला लिया जाय ।

(३) विद्रोहियो और सिंधी सेना ने राज्य के जिन इलाको पर कब्जा कर रखा है,
उनसे छीन लिया जाय और समस्त अधिकार राणा को दिये जॉय ।

(४) बूंदी के राजकुमार के द्वारा अरिसिंह का वध होने के कारण जो झगड़ा पैदा
उसका अन्त किया जाय ,

सीधिया को जो बीस लाख रुपये दिये गये थे, वे इस प्रकार वसूल किए गये :
जागीर से बारह लाख रुपये और * शक्तावतो से शेष आठ लाख रुपये । इस प्रकार उन
रुपयो की पूर्ति हुई । राणा ने अम्बा जी से वादा किया था कि राज्य के सभी कार्य हो जाने
के खर्च के साथ-साथ साठ लाख रुपये राज्य की तरफ से अम्बाजी को अधिक दिये जाये
निर्णय के अनुसार, दो वर्ष के भीतर कमलमीर से रत्नसिंह को निकाल दिया गया ।
चन्दावत सरदार जिहाजपुर और अन्य सरदारो से उनके इलाके छीनकर राणा के
दिये गये । †

मेवाड-राज्य के कार्यों के सम्बन्ध मे अम्बाजी और राणा के बीच जो कुछ
था, उसके अनुसार अम्बाजी ने कुछ कार्य किया । लेकिन राज्य की कई एक समस्यायें
ज्यो-की-त्यो पडी हुई थी । गोदवाड का इलाका अभी तक मारवाड़-राज्य में शामिल
और मेवाड का झगडा ज्यो-का-त्यो पड़ा था और मराठो ने जिन स्थानो पर अधिकार
था, उनका भी अभी तक कोई निर्णय न हुआ था । इस प्रकार के कितने ही काम वा
अम्बाजी ने मेवाड राज्य के सूबेदार होने की घोषणा कर दी थी ।

राज्य के सभी प्रवन्ध अम्बाजी के अनुसार हो रहे थे । चन्दावत लोगो को राज्य के
मे पुराने अधिकार प्राप्त हो गये थे । इसलिए मत्री शिवदास और सतीदास को उनसे भय
गया । उनके भाई मत्री सोमजी का जिस प्रकार वध किया था, उसकी स्मृति-उनको दिन रात
कर रही थी । धीरे-धीरे उन दोनो को इस वात का विश्वास होने लगा कि चन्दावत
दोनो के प्राण लेने की चेष्टा कर रहे है ।

---

* चन्दावतो से जो वारह लाख रुपये वसूल किये गये, उनके विवरण इस प्रकार है
लाख रुपये शालुम्ब्रा से, तीन लाख रुपये देवगढ से, दो लाख रुपये सिंगिनगढ के मंत्रियो से,
तल से एक लाख, अमेत से दो लाख कोरावाड से एक लाख । इस प्रकार वारह लाख
किये गये ।

† सिंधी सेना से रायपुर, राजनगर, पुरावत लोगों से गुरला, गादरमाला,।.
हमीरगढ़ और शालुम्ब्रा से कुर्जकोवारियो नामक इलाको का उद्धार किया गया ।

उसके बाद वह उदयपुर आया। राणा के दरबार मे बडे सम्मान के साथ वह लिया गया। समय पाकर अजितसिंह ने कृष्ण कुमारी के विवाह के सम्बन्ध मे उससे परामर्श किया। अमीर खां ने अजितसिंह को साफ-साफ बताया कि राणा की अपनी लडकी कृष्ण कुमारी का विवाह मानसिंह के साथ करना पडेगा और यदि वह ऐसा नही करता तो कृष्ण कुमारी को अपने प्राणो का अन्त करना पडेगा।

अजितसिंह और अमीर खाँ का परामर्श राणा भीमसिंह ने भी सुना। उसका हृदय काँप उठा। उसकी समझ मे न आया कि इस सकट के समय किस उपाय का आश्रय लिया जा सकता है। वह मानसिंह के साथ अपनी बेटी का ब्याह करने के लिए किसी भी दशा मे तैयार न था और न वह अपनी प्यारी-दुलारी लडकी के प्राणो का नाश ही अपने नेत्रो से देखना चाहता था।

राणा के सामने भयानक सकट था। उसने अपने जीवन मे बडे-से-बडे सकट देखे थे। लेकिन इस समय उन सब को वह भूल गया था। इस समय क्या करना चाहिये, यह उसकी समझ मे न आया। राणा इस बात को समझता था कि अमीर खा की बातो मे सत्य है। और यदि वैसा न किया गया तो मेवाड मे भायनक से भयानक दृश्य उपस्थित होंगे। इस समस्या को लेकर राणा ने अपने महल मे बैठकर सरदारो और परिवार वालो के साथ कई बार परामर्श किया। परन्तु किसी रास्ते का निर्णय न हुआ। बहुत सोचने और समझने के बाद अन्त मे जो तय हुआ, उसमे राणा ने इस बात को स्वीकार किया कि यह कार्य किसी स्त्री के द्वारा ही होना चाहिए इसको मान लेने के बाद भी किसी की समझ मे यह न आया कि एक स्त्री इस कठोर कार्य मे कहाँ तक सफल हो सकती है।

बहुत सोचने-विचारने के बाद निश्चय हुआ कि राणा के परिवार के दौलत सिंह से इस सकट के समय सहायता ली जाय। उस परामर्श के समय दौलतसिंह राणा के पास बैठा था। सीसोदिया वश का सम्मान सुरक्षित रखने के लिए जिस कठोर कार्य का निर्णय हुआ, उसका उत्तर-दायित्व दौलतसिंह पर रखा गया लेकिन उस कार्य के सम्हालने मे दौलत ने काँपते हुए स्वर मे असमर्थता प्रकट की। उसके नेत्रो से आँसू बह उठे। उसने इनकार करते हुए कहा. "मेरी तलवार कृष्ण कुमारी के प्राणो का संहार न कर सकेगी। मैं अपने वश और देश के प्रति इस प्रकार लज्जा-पूर्ण कार्य नही कर सकता।'

दौलतसिंह के इनकार करने पर यह कार्य जवानदास को सौपा गया। जवानदास भीमसिंह के स्वर्गीय पिता की उप पत्नी से उत्पन्न हुआ था। उसके बुलाए जाने पर उसने इस कार्य को स्वीकार कर लिया। लेकिन जिस समय कृष्णकुमारी वहाँ पर बुलाई गयी, उसको सामने देखकर जवानदास की आँखे नीची हो गयी और उसकी तलवार हाथ से फिसल गयी। खिले हुए फूल के समान कृष्ण कुमारी के मुखमण्डल को देखकर वह काँप उठा और बिना कुछ कहे हुए वह उस स्थान से चुपके चला गया। कृष्णकुमारी को यह रहस्य कुछ मालूम न था। लेकिन अब वह किसी से छिपा न रह सका। राजमहल मे सभी को राणा का निर्णय मालूम हो गया। कृष्णकुमारी की माता ने उसके प्राणो को बचाने का प्रयास किया। परन्तु उसको सफलता न मिली। वह निराश हो गयी।

पूर्व निर्णय के अनुसार, एक स्त्री ने विष तैयार करके राणा के नाम से राजकुमारी कृष्ण को दिया। सब-कुछ जानते और समझते हुए भी कुमारी कृष्ण ने विष का प्याला अपने हाथ मे ले लिया। उसके चेहरे पर किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न हुआ और सहज स्वभाव से वह प्याले को अपने मुख मे लगा कर विष को पी गयी। उसकी माँ वही पर खडी हो कर यह सब देख रही थी। उसके नेत्रो मे आँसू देखकर राजकुमारी ने कहा. "माँ, तुम क्यो रज करती हो। मुझे मृत्यु से कोई

इसके साथ-साथ होता और सायमारी नामक शक्तावतो की जागीरों से दस लाख रुपये चंदावत लोगों ने अम्बा जी को दिये।

माधव जी सीधिया की इन्ही दिनो मे मृत्यु हो गयी। उसका भतीजा दौलतरा सिहासन पर वैठा। सीधिया का लडका उस समय नाबालिग था। दौलतराव ने सिहासन पर वाद सीधिया की विधवा पत्नियो के साथ अत्याचार करना आरम्भ किया। उसने शैनवी को मरवा डाला। सीधिया के लडके नाबालिग होने के कारण अम्वा जी को लाभ उठाने मौका था। लेकिन कुछ लोगो ने सीधिया की विधवा रानियो का पक्ष लिया और उन लोगो जी के साथ उन रानियो की तरफ से युद्ध किया। उन लोगो मे लखवादादा, खीची क दुर्जनसाल और दतिया का राजा प्रमुख था। इन सभी लोगो ने सीधिया की विधवा सहायता की। लखवादादा ने मेवाड के राणा को इस आशय का एक गुप्त पत्र भेजकर अनुरो कि आप किसी भी दशा मे अम्बा जी को राज्य मे अधिकारी न माने और जो लोग उसकी राज्य मे प्रवध करते है, उनको राज्य से निकाल दे।

इसके पहले जिन शैनवी * सरदारो को मार डाला गया था, वे सब लखवादादा मे थे। मेवाड-राज्य मे उनकी वहुत सी जमीन थी। अम्बा जी ने गणेशपत को लिखा कि मे जो जमीन शैनवी ब्राह्मणो के अधिकार मे है, वह सब उनसे ले लो। अम्बा जी के इस पाकर गणेशपत ने राणा के मन्त्री और सरदारो को बुलाकर परामर्श किया। मन्त्री और उसकी हाँ-मे-हाँ मिलाते रहे। लेकिन वास्तव मे गणेशपत के समर्थक न थे।

राणा के मन्त्री और सरदारो ने गणेशपंत को धोखे मे रखा। इसी अवसर पर उ ने शैनवी ब्राह्मणो के पास गणेशपत पर आक्रमण करने का सन्देश भेजा। इस सन्देश को एक सेना लेकर शैनवी लोग रवाना हुए। उनका सामना करने के लिए गणेशपंत अपनी साथ जावद की तरफ चला। साला नाम के स्थान पर दोनो ओर की सेनाओ का सामना हुअ मे गणेशपत की पराजय हुई। उसकी सेना के आदमी अपने प्राण लेकर भागे। गणेशपत के मे जो युद्ध की सामग्री थी, तोपो और वन्दूको के साथ वह सब शैनवी लोगो को मिली।

इस लडाई मे गणेशपत की वहुत हानि हुई। वह युद्ध स्थल से चित्तौर की तरफ चन्दावत लोगो ने उसको रोक कर फिर से उसे युद्ध करने के लिए तैयार किया और सहा का वादा किया। नाना गणेशपत ने उन लोगो का विश्वास करके युद्ध की फिर से तैयारी अपनी सेना को एकत्रित करके उसने शैनवी लोगो के साथ फिर युद्ध किया। चन्दावत लोगो न पत की सहायता न की और वह दूसरी बार भी पराजित होकर हमीरगढ की तरफ चला जिन चन्दावतो ने सहायता देने के लिए नाना गणेशपत से वादा किया था, वे उसके शत्रुओ कर और उनके पन्द्रह हजार सैनिको को लेकर हमीरगढ को घेर लिया। नाना गणेशपत रक्षा के लिए वडे साहस के साथ नौ बार उनसे युद्ध किया। परन्तु किसी मे उसको वि मिली। हमीरगढ के राजा धीरजसिह के दो लडके इन युद्धो मे मारे गये।

नाना गणेशपत की पराजय के समाचार जव अम्वा जी को मिले तो उसने गुलाबर के सेनापति के साथ अपने कुछ सैनिक सवारो को भेजा। उन दिनो मे नाना गणेशपंत ०-

---

* मराठा ब्राह्मण तीन भागो मे विभाजित है—शैनवी, पूर्वा और माहरत। लख वल्लभा, सातिह्वा, जीवदादा, शिवाजी नाना, लालजी पण्डित और जसवन्तसिह भाऊ मेवाड भूमि को अधिकार मे रखते थे, जो राणा की तरफ से उनको गिरवी करके दी गयी थी।

और इतिहास के पन्नो मे हमारे पूर्वज बप्पा रावल का नाम अमिट अक्षरो मे लिखा जाता । तूने इस वश के लोगो को राजपूतो की मौत मरने क्यो नही दिया—उस प्रकार, जैसे हमारे पूर्वज अब तक मरे है ? उन सबने सकटो का सामना करके अपने प्राणो का बलिदान देकर अपनी श्रेष्ठता और कीर्ति को अमर बनाया था । जीवन की अटूट कीर्ति उनको ऐसे ही न मिल गयी थी । हमारे पूर्वजो ने कभी किसी शक्तिशाली के सामने अपना मस्तक नीचा नही किया था । ससार की शक्तियाँ एक तरफ थी और सीसोदिया वश की शक्ति दूसरी तरफ थी, उस वश ने बडी-से-बडी शक्तियो के साथ युद्ध किया था और शत्रुओ का सहार करते हुए अपने प्राणो को उत्सर्ग किया था । चित्तौर की कीर्ति को तू भूल गया है । मैं किसको सम्बोधन करके ये बाते कह रहा हूँ । एक राजपूत को ? —नही, उसको जो राजपूत जाति का कलक है । यदि हमारी बहू-बेटियो और बहनो पर कोई विपत्ति आयी थी तो अपने हाथ मे तलवार लेकर तूने शत्रु का सामना क्यो न किया था ? यदि तूने ऐसा किया होता तो तेरा नाम भविष्य मे प्रसिद्ध होता और तेरी उस बहादुरी मे बप्पा रावल को स्वर्ग मे सुख प्राप्त होता । परन्तु तूने कुछ न किया, उसके द्वारा इस वश की सम्पूर्ण योग्यता और श्रेष्ठता को मिटा कर तूने सदा के लिए इस वश को निर्लज्ज बना दिया । आज ससार क्या कहेगा। यही न कि दुष्टो और दुराचारियो के भय से बप्पा रावल के वशज राणा भीमसिह ने अपनी युवती राजकुमारी को विष देकर अपनी कायरता का परिचय दिया । तूने आने वाली विपत्ति की प्रतीक्षा न की । तेरे भय ने तेरे जीवन के समस्त गुणो को नाश कर दिया । बुद्धि नष्ट हो गयी है और इसीलिये तूने यह घृणित कार्य किया । हमारे वश के सर्वनाश का समय अब निकट आ गया है ।"

विश्वासघातक अजितसिह सग्रामसिंह की बातो को चुपचाप सुनता रहा । उसने किसी बात का उत्तर न दिया । लडके और लडकियाँ—सब मिलाकर राणा के पचानबे संताने हुई थी। लेकिन एक पुत्र को छोडकर—जो कृष्णाकुमारी का भाई था—सब की मृत्यु हो गयी थी । उसके दो लडकियो के अभी कुछ दिन पूर्व विवाह हुये थे । एक जैसलमेर मे दूसरी बीकानेर के राजा को व्याही गयी थी । उनसे जो लडके हुये वे राजस्थान की प्रणाली के अनुसार नाना के सिहासन के अधिकारी न हो सके ।

सग्रामसिह ने अजितसिह को शाप दिया था, वह पूरा हुआ राजकुमारी के मृत्यु के बाद एक महीना भी न बीता था, उसकी स्त्री की मृत्यु हो गयी और दो पुत्रो की मृत्यु हुई । इस विनाश से अजितसिह का जीवन सूना हो गया । ससार मे उसे अन्धकार दिखायी दे रहा था । जिन्दगी-भर के पापो का फल उसको बुढापे मे मिला । उसने सम्पूर्ण जीवन मे जो अपराध किये थे, वे सब उसके सामने आये । अब बुढापे मे उसको वैराग्य सूझा । भगवान का भक्त बन कर उसने अपने पापो का प्रायश्चित करना आरम्भ किया ।

अमीर खाँ जन्म से ही धूर्त और विश्वासघाती था । वह होलकर का सामन्त था । वह किसी का साथी न था । जिससे उसका स्वार्थ-साधन होता, उसी से वह मिल जाता था । अपने स्वार्थो के ही कारण ही होलकर को छोडकर वह अगरेजो से मिल गया था और इसके लिए उसने अगरेजो से सिरौज, टोक, रामपुरा और नीमबहेडा आदि अनेक स्थान पाये थे ।

सन् १८०६ ईसवी के बसत ऋतु मे अँगरेजो का दूत मेवाड मे आया । सम्पूर्ण मेवाड-राज्य उजड चुका था । उसके शूरवीर मारे जा चुके थे, उसकी समस्त सम्पत्ति लूटी जा चुकी थी और अच्छे-अच्छे मकानो तथा महलो के स्थानो पर खँडहर दिखायी देते थे । सम्पूर्ण राज्य जगल हो गया था राज्य का व्यवसाय और वाणिज्य मिट गया था । कृषक दरिद्र हो गये थे । मराठा सेनाओ ने राज्य

कि गोगुलछप्रा की लड़ाई मे लखवादादा ने बालाराव इंगले की सहायता की थी और
की रक्षा की थी। लखवादादा का यह उपकार बालाराव के सिर पर था। इसलिए वह
से युद्ध नही करना चाहता था। दूसरी धारणा यह है कि लखवादादा इगले के पास धन
था और उसे अपनी सेना का वेतन देना था। इसी समस्या को लेकर बालाराव और न
विरोध पैदा हुआ था। लखवादादा ने बालाराव को धन देकर उसकी सहायता करने
किया था, इसलिए बालाराव युद्ध से इनकार कर रहा था।

अम्बाजी ने नाना गणेशपत की सहायता करने के लिये अपनी एक सेना देकर
नामक एक अग्रेज को भेजा। लेकिन नानापंत को इस सेना की सहायता न मिल सकी।
मे उसने जार्ज थाँमस नामक एक अंग्रेज सेनापति से सहायता माँगी और उसके
गणेशपत युद्ध के लिए तैयार हो गया। दोनो ओर की सेनाये बूनस नदी के दक्षिण
के लिए खड़ी होकर समय की प्रतीक्षा करने लगी। उसको इस अवस्था मे बरसात के
बीत गये। राणा और उसके सरदार अभी तक लखवादादा के पक्ष मे थे। लेकिन अब वे
पक्ष की बाते करने लगे। इसलिए कि दोनो दलो की तरफ से उसको इन दिनो मे सम
रहा था।

बूनस नदी के किनारे पर दोनो सेनाये युद्ध के लिये तैयार थी और दोनो ही श
समय लगभग बराबर थी। नाना गणेशपत इस समय कोई बाहरी सेना की सहायात
सके इसलिए खीची का राजा दुर्जनसाल मेवाड के सरदारो और पाँच सो सवारो को लिए
के शिविर के इधर-उधर घूमने लगा। परन्तु उसको अपने उद्देश्य मे सफलता न मिली
थामस शापुरा से एक सेना के साथ नानापत की छावनी मे पहुँच गया और कुछ स
लखवादादा को घेरने के उद्देश्य से वह अपनी छावनी से निकला। इस युद्ध के शुरू हो
ही वहाँ पर एक भयानक आँधी आयी और बहुत तेजी के साथ वृष्टि हुई। इस भीषण
वृष्टि के कारण थामस की सेना अस्त व्यस्त हो गयी, उसके रहने का स्थान शापुर कई स
नष्ट हो गया और वहाँ के दुर्ग का फाटक टूटकर चकनाचूर हो गया।*

शत्रु-सेना के तितर-बितर हो जाने पर लखवादादा ने सवाड के सरदारो की
शत्रु सेना का पीछा किया और युद्ध की वहुत-सी सामग्री के साथ उसकी पन्द्रह तोपो पर
कर लिया। आज के पहले शापुरा के राजा ने सेना और रसद से नानापत की सहायता
परन्तु इस अवसर पर उसने उसकी किसी प्रकार सहायता न की। इस दशा मे नाना
सिगनोर की तरफ भागा। इस भागने की अवस्था मे उसकी सेना की बडी हानि हुई। उ
से सैनिक मारे गये। मेवाड के सरदारो ने नाना गणेशपत को भयानक क्षति पहुँचायी।
नाना गणेशपंत मेवाडके सरदारो से बहुत अप्रसन्न हुआ और उसने उनसे बदला लेनेका निश्च

बरसात बीत चुकी थी। रास्ते साफ हो चुके थे। गणेशपत लखवादादा से युद्ध
लिए तैयारी करने लगा। इन दिनो मे उसके क्रोध का ठिकाना न था। उसने चारो तरफ
और मनुष्यो का वध आरम्भ किया। अरावली पहाड की तलैटी मे चन्दावत लोगो की ज

---

* सम्बत् १८५६ सन् १८०० ईसवी मे यह घटना घटी थी। लखवादादा ने जिहा
अपना इलाका शापुरा के राजा को दे दिया था इसके सम्बन्ध के पुराने उल्लेखो से पता
कि राणा ने छिपे तौर पर शापुरा के राजा से दो लाख रुपये लेकर अपनी मन्जूरी दी थ
लिए लखवादादा और मेवाड़ के सरदार लोग वहुत नाराज हुए।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

मेवाड की उजडी हुई अवस्था मे मराठो की लूट—देश मे आपसी फूट की आग—अंग्रेजो के द्वारा राजस्थान के निर्वल राज्यो का सगठन—राणा को अंग्रेजो का आश्वासन—अंग्रेजो के साथ राणा की सधि—मेवाड मे अगरेजी एजेन्ट का स्वागत—राज्य का सुधार—राणा पर कर्ज का वोझ—मेवाड मे शाति के प्रत्यन—अत्याचारो का अन्त—भूमि पर किसानो का अधिकार—मेवाड मे राजकर की व्यवस्था।

दूसरी शताव्दी से लेकर उन्नीसवी शताव्दी तक राणा के वश का इतिहास लिखा जा चुका है और उसके सौभाग्य एवम् दुर्भाग्य की सभी घटनाओ पर गम्भीरता के साथ प्रकाश डाला जा चुका है। पारसियो, भीलो, तातारियो और मराठो ने समय-समय पर लगातार आक्रमणो के द्वारा जिस प्रकार इस प्रसिद्ध वंश और उसके राज्य को क्षत-विक्षत करके श्मशान वना देने का काम किया, उसको स्पष्ट रूप से लिखा जा चुका है। मेवाड की उजडी हुई अवस्था मे मराठो की लूट आरम्भ हुई और उनकी अमानुषिक निष्ठुरता ने उस राज्य के जीवन मे केवल हड्डियाँ और पसलियाँ वाकी रखी। इन दिनो मे पश्चिमी कई देशो के व्यवसायी कम्पनियाँ वना वनाकर व्यवसाय के लिए इस देश मे आ चुके थे। अगरेजो की ईस्ट इण्डिया कम्पनी भी उनमे से एक थी। इस कम्पनी के अगरेजो ने वडी राजनीति से काम लिया। राजस्थान के प्रसिद्ध राज्य मेवाड के सकटो मे उन लोगो ने अपनी उदारता प्रकट की।

देश मे घरेलू विद्रोह की भीपण आग जल रही थी। अगरेजो को विद्रोह के इन दिनो मे अपना अस्तित्व कायम करने का अवसर मिला। धीरे-धीरे उनकी शक्तियाँ मजवूत वन गयी। पीडित प्रजा और राजाओ को मिलाकर एक वडी शक्ति अगरेजो ने अपने पक्ष मे की और उनकी इस नीति से मेवाड के मिटाने वाले प्राणी को जीवन मिला। देशी राज्यो की शक्तियाँ पहले से ही छिन्न-भिन्न थी, मराठो को छोड कर अन्य किसी मे सगठन न था। विरोधी शक्तियो के मुकाविले अगरेजो ने देशी राज्यो को मिलाकर एक महान शक्ति का निर्माण किया। अगरेजो की तरफ से एक घोपणा की गयी कि आततायियो और लुटेरो का रोकने के लिए इस देश मे एक ऐसा सगठन किया जायगा, जिसके द्वारा निर्वल राज्यो की रक्षा हो सके और कोई शक्तिशाली आक्रमण करके उसको लूट न सके। उस समय जितने निर्वल राज्य रोज लूटे और मारे जा रहे थे, इस घोपणा को सुनकर सभी प्रसन्न हो उठे। उन्होने एक वार सुख और सतोप की साँस ली। घोपणा के अनुसार, दिल्ली मे एक सभा की गयी। जयपुर के अतिरिक्त शेष राजाओ के प्रतिनिधियो ने उसमे भाग लिया और उस उद्देश्य को स्वीकार किया। उस सभा को सफलता मिली और उसके द्वारा इस देश के राजाओ की वागडोर अगरेजो के हाथो मे पहुँच गयी। एक सधि पत्र लिखा गया, उसमे इस वात को स्वीकार किया गया कि राजपूत अपनी स्वतन्त्रता को कायम रखे, लुटेरे शत्रुओ से अगरेज सरकार उनकी रक्षा करेगी और इस काय के लिए देशी राज्य अँगरेजो को एक निश्चित कर अदा करेगे। * रायपुर, राजनगर आदि जिन दुर्गो पर विद्रोही सरदारो ने राणा के विरुद्ध अधिकार कर लिया था, उनको लेकर राणा के

* इन दिनो मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ राणा भीमसिह ने जो सधि की थी, उसका साराश इस प्रकार है [१] अगरेजो और राणा भीमसिह के वीच इस सधि के द्वारा जो मित्रता कायम

की दुरवस्था देखकर दोनों ही बहुत चिंतित हो रहे थे। इन दिनों में योरप के कई एक
मे आ गये थे। उनकी शासन प्रणाली का प्रभाव इस देश के राजाओं पर पड रहा था।
अग्रजी मेहता के मनोभावो पर भी उनका असर पडा। उसने भी मेवाड-राज्य मे उनका
करने की चेष्टा की और उसने यह भी सोच डाला कि उनकी एक सहायता रखकर राज्य क
शान्तिपूर्वक चलाया जा सकता है। लेकिन इसके लिए अधिक धन की जरूरत थी और
मामलो मे देश की अवस्था बडी भयानक हो गयी थी। इस दशा मे उसने राज्य के
बुलाकर इस विषय मे गम्भीरता के साथ परामर्श किया।

राज्य के सरदारो ने एकत्रित होकर अग्रजी की बाते सुनी। उन लोगो ने योरप
हुए लोगो के प्रभुत्व को अपनाने का समर्थन नही किया और इसी उद्देश्य से उन लोगों ने
अग्रजी को कैद कर लिया। उसके स्थान पर सतीदास को फिर मन्त्री बनाया गया। उस
शिवदास चन्दावत लोगो के भय से कोटा चला गया था। उसे वहाँ से बुलवाया गया।

सन् १८०२ ईसवी मे मराठा शासन के सम्बन्ध मे जो एक लाख पचास हजार
एकत्रित हुए थे, उन्होने होलकर से उसका राज्याधिकार छीन लिया और उसकी
हाथियो और घोडो के अतिरिक्त जो भी युद्ध की साग्रमी और सम्पत्ति मौजूद थी, उस पर
कर लिया। होलकर के मेवाड की तरफ भागने पर सीधिया की सेना ने उसका पीछा
सदाशिवराव और बालाराव सीधिया की सेना के प्रधान थे। मेवाड की तरफ भागते हुए
ने रतलाम का दुर्ग लूट लिया और शक्तावत लोगो के स्थान भेदर दुर्ग को घेर कर उसने
सहायता माँगी। शक्तावत लोग होलकर की इस माँग से घबरा उठे। सीधिया की सेना
होलकर का पीछा कर रही थी। इसलिए होलकर भेदर को छोड़ कर नाथद्वारा चला
वहाँ के पुरोहित और पुजारी से उसने तीन लाख रुपये वसूल किये। रुपये की यह
नाथद्वारा के लोगो से बड़ी निर्दयता के साथ वसूल की।

नाथद्वारा का प्रधान पुजारी दामोदर जी था। होलकर के इस आक्रमण से भय
उसने वहाँ की देवमूर्ति को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाने का इरादा किया और इस
उसने कोटारियो के सरदार से परामर्श किया। निश्चय हुआ कि इसके लिए उदयपुर से *
कोई स्थान नही हो सकता। इसलिए पुजारी दामोदर जी अपनी देव मूर्ति को वहाँ ले
तैयार हुआ। उसकी रक्षा करने के लिए बीस सवारो के साथ कोटारियो का सरदार
और पुजारी को वहाँ पहुँचा कर अपने सवारो के साथ जब वह लौट रहा था, तो रास्ते मे
की सेना के सिपाहियो ने कठोर-स्वर मे उससे कहा . 'आप लोग अपने घोडे हम लोगो
अगर ऐसा न करेंगे तो उसका नतीजा बुरा होगा।''

इस बात को सुनकर कोटारियो का सरदार क्रोध के साथ बोला 'हम लोग रा
इस प्रकार प्राण रहते हुए हम लोग अपने घोडे नही देख सकते।''

उस सरदार ने होलकर के सैनिको की कुछ परवा न की। फलस्वरूप मराठा
आक्रमण किया। सरदार ने अपने थोडे-से आदमियो के द्वारा कुछ देर तक युद्ध किया औ
वह मारा गया। उसके मारे जाने पर नाथद्वारे का कोई रक्षक न रह गया। होलकर
पुजारी से और वहाँ के निवासियो से तीन लाख रुपये वसूल किये।

* उदयपुर से पच्चीस मील उत्तर की तरफ नाथद्वारा बसा हुआ है। इस स्थान
आगे विस्तार से साथ किया जायगा।

पर था। रामप्यारी का उल्लेख पहले किया जा चुका है। यह महल, राजपूताना के अन्यान्य महलो के समान कई मंजिलो का बना था। उसकी सुन्दरता और श्रेष्ठता प्रशंसा के योग्य थी। उसका निर्माण अन्य महल के समान हुआ था। आस-पास की ऊँची दीवारो पर अद्भुत नक्कासी का काम था और महल के भीतर मनोहर कमरे और दालाने थी। बीच मे खुला हुआ दीवानखाना था। वही पर हम लोगो के स्वागत की तैयारियाँ थी। बाद मे हमे रहने के लिए यही महल मिल गया था। इस महल के एक भाग मे हम लोगो के खाने के लिए भोजन बना था उस भोजन मे मीठी, नमकीन बहुत-सी चीजे थी। खाने के पदार्थों मे अनेक प्रकार के फल भी थे। वहाँ पर एक हजार रुपये की एक थैली भी रखी थी। रुपये उन लोगो मे बाँटे जाने के लिए थे, जिन्होंने हम सब के आने का पहले पहल समाचार राणा को दिया था। इस प्रकार का पुरस्कार देना, राजपूतो की एक पुरानी प्रथा के अनुसार था। राणा के भेट के लिए दूसरा दिन निश्चित हुआ। लेकिन उसी दिन शाम को चार बजे राणा के आदमियो से समाचार मिला कि राणा ने आप से मिलने का प्रबन्ध आज ही किया है।

इस समाचार के बाद कुछ समय मे लोगो की भीड दिखायी पडने लगी। भीड के लोग दूर से हम लोगो की तरफ देख रहे थे। राजभवन मे जाने के लिए हम लोग अपने स्थान से रवाना हुए। आगे बढते हुए हम लोगो ने लोगो को नारे लगाते हुए सुना—"जय! जय! फिरंगी राज!" राज्य के भाट लोग मेरे नाम का प्रयोग अपनी कविताओ मे करके जोर से साथ कवितायें कह रहे थे और स्थान-स्थान पर अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे, उनके द्वारा हम सब के स्वागत की खुशी मनायी जा रही थी, स्वागत मे हम लोगो ने स्त्रियो को राजस्थानी भाषा मे गाना गाते हुये सुना। जिस मार्ग से हम लोग जा रहे थे, वह दर्शको की भीड से भरा हुआ था। राजभवन के समीप आ जाने पर हम लोगो ने हाथी और घोडो से उतर कर पैदल चलना शुरु किया और कुछ ही देर मे राजभवन मे प्रवेश किया। वहाँ पर ऊँचे और विस्तृत चबूतरे बने हुए थे जिनमे हाथी और घोडे अपना खेल दिखा रहे थे।

राजभवन की बनावट अत्यन्त सुन्दर सुदृढ है, उसमे संगमरमर और दूसरे मजबूत पत्थर लगे हुए हैं। जमीन से उसकी ऊँचाई एक सौ फीट है। राजभवन के प्रत्येक पार्श्व मे आठ कोने के बुर्जो पर गुम्बज बने हुये हैं। पर्वत के ऊपर होने के कारण वे बहुत ऊँचे मालूम होते हैं। बुर्ज के ऊपर चढ कर देखने से पर्वत के सभी दृश्य साफ-साफ दिखयी देते हैं। भवन के बाहर—बडे द्वार पर

जहाँ तक प्रश्न है, उसमे अँगरेज सरकार सहायता करेगी। अँगरेजो की सहायता से जो इलाके राणा को वापस मिल जायँगे, राणा को उनकी आमदनी का ३/८ भाग देना पडेगा। (८) आवश्यकता पडने पर अँगरेज सरकार राणा की सेना ले सकेगी। (९) मेवाड-राज्य मे अँगरेजो का नही, राणा का प्रभुत्व रहेगा।

यह संधि पत्र १६ जनवरी सन् १८१८ ईसवी को दिल्ली मे लिखा गया। इस पर अगरेजो की तरफ से मिस्टर चार्ल्स मेटकॉफ और राणा की तरफ से अजितसिंह ने हस्ताक्षर किये और अपने-अपने राज्यो की तरफ से मोहरे लगायी।

टॉड साहब ने इन्ही दिनो मे लार्ड हेस्टिंग्ज से पश्चिमी राज्यो के पोलिटिकिल एजेण्ट होने का पद प्राप्त किया। साथ ही वह राणा के दरबार का एजेण्ट भी बनाया गया। सन् १८१७ और १८ ईसवी के युद्धो मे टॉड साहब के अधिकार मे एक अंगरेजी सेना थी। उसको लेकर टॉड ने होलकर और बूँदी के राजाओ के साथ युद्ध किया था और कोटा राजा से संधि की थी।

बालाराव इगले की गिरफ्तारी का समाचार जालिमसिंह को मिला। उसने बा
कैद से छुडाने का निश्चय किया। भिराडीर और लावा के सरदारो के साथ अपनी सेना
चेजाघाट नामक प'ाडी रास्ते की तरफ लह आगे बढा। यदि राणा ने कैद करके इन विद्रो
को मरवा डाला होता तो उसका यह कार्य कभी किसी प्रकार अनुचित और अन्यायपूर्ण न
बात जरूर है कि उसके ऐसा करने से सम्पूर्ण मराठे उसके शत्रु बन जाते। परन्तु राणा
कोई विशेष हानि न होती। जालिमसिंह की सेना के आने का समाचार पाकर राणा की तर
अरबी और गोसई इत्यादि अनेक जातियो के आदमियो को लेकर और छै हजार सैनि
बनाकर जयसिह अपनी शक्तिशाली खीची सेना के साथ युद्ध करने के लिये रव
उसके साथ राणा और उसकी सेना भी थी। मेवाड की ये सेनाये चेजाघाट के रास्ते पर
वहां पर दोनो से पाँच दिनो तक भयानक युद्ध हुआ। मराठो के लगातार गोले बरसाने प
की सेना युद्ध मे बराबर डटी रही। छठे दिन राणा की पराजय हुई और उसके बाद ही
राब इगले को कैद से छोड दिया। इस युद्ध के बदले मे सम्पूर्ण जिहाजपुर का इलाका
दुर्ग जालिमसिंह ने ले लिया। उसके बाद भी मराठो ने युद्ध का खर्च राणा से माँगा।
ही मराठो ने मेवाड को लूट कर और समय-समय पर अगणित सम्पत्ति लेकर रा
दुरावस्था मे पहुँचा दिया था कि इस समय जो रकम उससे माँगी गयी, उसकी अदाय
उपाय राणा के पास न था। इस दशा मे वह रकम मेवाड-निवासियो से बडी निर्दय
वसूल की गयी।

सन् १८६० और १८०४ ईसवी मे होलकर ने निराश होकर दक्षिण छोड दि
के युद्ध मे पराजित होकर भागने पर होलकर ने भिराडीर के सरदार से रुपये माँगे, जिस
का सरदार अप्रसन्न हुआ और उसने उसको एक पैसा न दिया। इस समय होलकर ने
आक्रमण किया और उसके सरदार से उसने दो लाख रुपये वसूल किये। इसके बाद वह
तरफ रवाना हुरा। उसका समाचार पाते ही राणा घबरा उठा और सधि के विए उसने
नाम के एक राजपूत को भेजा। अजितसिह ने होलकर की सेना मे पहुँचकर बातचीत क
के नाम पर लालजी मराठा ने चालीस लाख रुपये माँगे। राणा ने इस माँग को सुना।
रुपये के नाम पर देने के लिए कुछ न था। लेकिन इनकार वह किस बल पर करता।
अवस्था मे बिना कुछ सोचे समझे उसने उस माँग को मजूर कर लिया। इन रुपयो का
किया जायगा, इस बात का निर्णय राणा स्वय कुछ न कर सका। उसका खजाना
मराठो को रुपया देते-देते राज्य की प्रजा दीन और दरिद्र हो चुकी थी। इस दशा मे
लाख रुपयो का प्रबन्ध कहाँ से होगा, राणा की समझ यह मे न आया। परन्तु इस रक
अदा किये किसी प्रकार छुटकारा न मिल सकता था, इसलिए उसने अपने मन्त्रियो, स
राज्य के अधिकारियो के साथ परामर्श किया। किसी भी दशा मे राज्य के निवासियो
का कार्य आरम्भ किया गया, राणा के पास जो कुछ रह गया था, उसे लेकर, रानियो
को बेच कर और प्रजा से मिले हुए रुपयो को मिलाकर बारह लाख रुपये जमा किये गये।
बहुत बडी रकम बाकी थी। उसकी कोई व्यवस्था न हो सकी। इसलिए बारह लाख रु
के पास पहुँचाये गये। बाकी रुपयो की अदायगी के लिए राज परिवार और नगर के प्र
ही व्यक्ति होलकर के अधिकार मे गिरवी किये और निश्चय हुआ कि जब तक बाकी
न हो जायगा गिरवी मे रखे गये आदमी होलकर के कैम्प मे बराबर मौजूद रहेगे।

इसके बाद होलकर की मराठा सेना ने लावा और बिदनौर के दुर्गों पर आक्र

और उसमे से कितने ही आकर राणा से मिल गये। अगरेजो की सहायता से अनेक कार्य राज्य की उन्नति के लिए किये गये। मराठो के अत्याचारो से राज्य के जो लोग भाग कर चले गये थे, उनको वापस बुलाने का राणा ने इरादा किया। परन्तु इसमे दो बाधाये भयानक थी। एक तो यह कि जो लोग राज्य छोडकर चले गये थे। वे दूसरे राज्यो मे जाकर बस गये थे और उन्होंने अपने सम्बन्ध वहाँ के लोगो के साथ कायम कर लिये थे। अब आसानी से उन सम्बन्धो को तोडा नही जा सकता था। फिर भी राणा ने इस आशय की एक विज्ञप्ति लिखकर प्रकाशित की कि मेवाड के जो लोग शत्रुओ के अत्याचारो से राज्य छोडकर भाग गये है, उनको लौटकर अपने स्थानो पर आ जाना चाहिये। इसका उत्तर उन लोगो ने जो राज्य छोड कर चले गये थे—अत्यन्त प्रभावशाली शब्दो मे दिया। उन्होने कहा "शत्रुओ के अत्याचारो तथा देश द्रोहियो के पाखन्डो मे अपना हम बपौती का अधिकार न छोड देगे।" ×

भागे हुए लोगो के लिए राणा की घोषणा हो चुकी थी। अपनी मातृभूमि मे लौट कर जाने के लिए लोगो को अपार आनन्द का अनुभव होने लगा। अपने घरो का सामान छकडो पर लादकर लोग मेवाड की तरफ रवाना हुए। इस समय उनके मन मे प्रसन्नता का ठिकाना न था। रास्ते मे चलते हुए वे सब मिलकर गाना गा रहे थे। मेवाड मे पहुँच कर लोगो ने अपने-अपने घरो मे प्रवेश किया। अगरेजो के साथ सधि होने के आठ महीने बाद मेवाड के तीन सौ नगर और ग्राम मनुष्यो से आबाद हो गये। जो जमीन बहुत दिनो से बेकार पडी थी, उसमे फिर से खेती का काम आरम्भ हुआ। जो नगर और ग्राम सुनसान हो गये थे, उनमे फिर मनुष्यो का कोलाहल सुनायी पडने लगा। निर्जन हो जाने के कारण जहाँ पर जगली पशुओ ने अपने रहने के लिए स्थान बना लिए थे, अब फिर से वहाँ पर मनुष्यो की चहल-पहल दिखायी पडने लगी।

अगरेजो के साथ सधि करने के बाद राणा को बहुत बडी राहत मिली थी। इसीलिए अपने मन्त्रियो के परामर्श से उसने उन लोगो को पास बुलाने की घोषणा की थी, जो अत्याचारो के दिनो मे राज्य से भाग गये थे। वे लोग बडे सुख तथा स्वाभिमान के साथ लौट कर आ गये। उनके आ जाने से उजडे हुए घर, ग्राम और नगर बहुत कुछ बस गये लेकिन राज्य के लिये इतना ही काफी नही था जो लोग लौटकर आये थे, उनके पास कोई कार्य, व्यवसाय न था। राणा के पास उनकी सहायता के लिए सम्पत्ति न थी। राज्य मे फैले हुए अत्याचारो के दिनो मे भी जिन लोगो ने किसी प्रकार अपने धन की रक्षा कर ली थी, राणा ने उन लोगो से इस समय ऋण माँगा और विवश अवस्था मे राज्य के इन लोगो से छत्तीस रुपये प्रतिशत सूद पर राणा को कर्ज लेना पडा।

राणा के ऊपर पहले के ही कर्ज का भार था, वह अब और भी अधिक कर्जी हो गया। इन दिनो मे बाहरी व्यापारियो ने कर्ज देने का व्यापार मेवाड मे शुरू किया और राज्य मे स्थान-स्थान् पर उसकी शाखाये कायम हो गयी। लेकिन यह बहुत दिनो तक नही चला। राज्य मे इन व्यवसायियो के विरुद्ध प्रबन्ध हुआ और जो व्यवस्था की गयी, उ से बाहरी व्यवसायियो का आतक समाप्त हो गया। अपने व्यवसाय को नष्ट करके भीलवाडा उजड चुका था। लेकिन इन दिनो मे उसने फिर उन्नति की और जिस भीलवाडे मे पहले छै सौ दूकाने थी, वहाँ पर बारह सौ दूकाने खुल गयी। उसके टूटे-फूटे मकानो की मरम्मत हो गयी और उसका बाजार रोजाना उन्नति करने लगा।

राज्य की इस उन्नति मे अनेक बाधाये भी पडी। स्वार्थो के कारण व्यवसायी लोग आपस

---

* पूर्वजो के रहने के स्थान् को राजपूत लोग बपौता कहते हैं।

हुए थे परन्तु मराठो के इन अत्याचारो के सामने वे सब इस देश के लोगो को भूल गये
मराठो के उन अत्याचारो कों रोकने के लिए उन दिनो मे किसी राजपूत मे शक्ति न रह

अग्रेजो के साथ युद्ध करने के लिये मराठा लोग अपनी सभी प्रकार की तैयारि
थे। उनको इस होने वाले युद्ध से सभी प्रकार की आशकाये थी। इसलिये मराठो ने अपन
सामग्री और अपने परिवार के लोगो को मेवाड के दुर्गो मे छिपाना शुरू किया।
का प्रधान सरदारसिह सीधिया के सभा मे राणा का प्रतिनिधि बनाया गया। अम्बाजी स
फिर से मन्त्री बना। † आज से पहले मेवाड के राणा ने अम्बाजी के विरुद्ध लखवादादा क
की थी। अम्वाजी इस बात को भूला न था। सीधिया का मन्त्री पद पाने के बाद उस
राणा के विरुद्ध द्वेश की आग प्रज्वलित हुई। उसने राणा से बदला लेने का निश्चय ि
मेवाड-राज्य को कई भागों मे विभाजित करके उन पर उसने मराठो का अधिकार क
देने की चेष्टा की।

शक्तावत सरदार सग्रामसिह ने जब अम्वाजी के इस कार्यक्रम को सुना तो उ
वट डालने का निश्चय किया। इन देनो मे देश की राजनितिक स्थिति को देखकर मे
होलकर के हृदय मे सहानुभूति पैदा हो गयी थी। सग्रामसिह ने अपने उस कार्य मे होलक
यता लेने का इरादा किया।

सीधिया की स्त्री वायजाबाई बडी समझदार और दूरदेश थी। उसका विवाह
शत्रु सीधिया के साथ हुआ था। परन्तु वह राजपूतो के गौरव के साथ-साथ समय क
पहचानती थी। प्रसिद्ध शूरजीराव की वह लडकी थी। मेवाड के सम्बन्ध मे अम्बाजी
और कार्यक्रम बायजाबाई को मालूम हुआ। उसने तुरन्त अम्बाजी का विरोध करने के
किया। वह मेवाड-राज्य के सम्बन्ध मे इस प्रकार की कूटनीति नही देखना चाहती थी
चाहती थी कि प्रसिद्ध मेवाड-राज्य का इस प्रकार सर्वनाश किया जाय। इसके लिए उ
की पारस्परिक फूट को दूर करने की कोशिश की। जो चन्दावत और शक्तावत सरदार
से एक, दूसरे के विरोधी चल रहे थे, वे एक, दूसरे से मिल गये और दोनो ही वश
सरदारो ने अम्बाजी की योजना को असफल बनाने की प्रतिज्ञा की।

चन्दावतो का प्रधान सरदारसिह पहले से ही सीधिया के राज-दरबार मे था। अ
उद्देश्य जानकर उसने उनसे घृणा की और सीधिया का दरवार छोडकर वह मेवाड के
आकर मिल गया और अम्वाजी को विफल बनाने के लिए जो तैयारी हो रही थी उसमे
लेना आरम्भ कर दिया।

चन्दावतो और शक्तावतो का मेल आज मेवाड के लिए एक वडे भाग्य की वा
दोनो वशो के राजपूत सरदारो की पारिस्परिक शत्रुता के कारण प्रसिद्ध मेवाड-राज
हुआ था। राजस्थान मे जो मेवाड-राज्य किसी समय उन्नति के शिखर पर था, वही
विशाल राजस्थान मे सव से अधिक पतित और गिरी अवस्था मे था। इसके वहुत से
चन्दावतो और शक्तावतो की पारस्परिक शत्रुता भी एक प्रधान कारण थी। राज्य की

* भारत के राजाओ मे जिन लोगो ने अग्रेजो की सहायता की थी उनमे गोहुद,
राधोगढ और वहादुरगढ के राजा प्रमुख थे। भूपाल के नवाव ने भी अग्रेजो की सहायत

† अम्वाजी, वापू चितनवीस माधव हजूरिया और अन्ना जी भास्कर सीधिया
मन्त्री थे।

एक-सा था और दोनो ने अपनी कुटिल राजनीति से राणा को प्रभावित कर लिया था। अन्य विद्रोही सरदारो की जागीरे जब राणा ने वापस ले ली थी, उन दिनो मे भी लाव्हा सरदार और हमीर अनधिकार रूप से अपनी जागीरो का भोग कर रहे थे।

इस दशा मे कुछ दिनो के बाद राणा ने लाव्हा-सरदार को हिदायत दी कि "जब तक आप खैरोदा का दुर्ग और बलपूर्वक अधिकार मे रखी हुई जागीर राज्य को वापस नही देते, आपको राज-दरबार मे प्रवेश करने का अधिकार नही है।" इससे हमीर जल उठा और आवेश मे आकर उसने इस प्रकार की कडुवी बाते कही, जो किसी प्रकार उसको न कहनी चाहिए थी। राणा ने उसके दमन का कार्य मुझे सौप दिया। मै इसके लिए अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। एक बार राणा की आज्ञा से राज्य के सैनिक उस दुर्ग पर अपना कब्जा करने गये तो दुर्ग के अधिकारी ने अपमान के साथ उनको दुर्ग के बाहर से लौटा दिया। यह जानकर मुझे बहुत बुरा लगा और विवश होकर मुझे हमीर के साथ कठोर व्यवहार करना पडा और राज दरबार मे बैठे हुए हमीर को सबके सामने जाहिर किया कि जो दुर्ग तुम्हारे अधिकार मे था, उसे लेकर राज्य मे मिला लिया गया है। मेरी इस बात को सुनकर राणा ने सामन्तो और सरदारो को सतोष देने के लिए कुछ बाते कही और अपनी निर्भीकता भी प्रकट की। हमीर के अशिष्ट व्यवहारो के कारण अन्त मे राणा ने उसको राज्य से निकल जाने का आदेश दिया। परन्तु इसके सम्बन्ध मे कुछ बातो के बाद निर्णय हुआ कि हमीर के अधिकार से सम्पूर्ण इलाका जब्त करके राज्य मे उस समय तक के लिए मिला लिया जाय, जब तक बल पूर्वक अधिकार मे लाये हुए राज्य के ग्रामो से वह अपना अधिकार वापस न ले ले।

इस प्रकार के निर्णय से हमीर बहुत निराश और दुखी हुआ। उसी रात वह उदयपुर छोडकर चला गया और अपने अधिकार की समस्त भूमि उसने राणा को दे दी। साथ ही उसने भदेश्वर का दुर्ग भी राणा को दे दिया है।

इसी प्रकार आमली दुर्ग की भी घटना है। इस दुर्ग की सम्पूर्ण भूमि अमाइत के सरदार के अधिकारो मे सत्ताईस वर्षों से थी और अर्द्ध शताब्दी से वहाँ के लोग उसकी भूमि पर अधिकार किये चले आ रहे थे। वे लोग जगवत शाखा मे पैदा हुए थे और मेवाड के सोहल सरदारो मे माने जाते थे। बिदनोर के सरदार के बाद उन्ही लोगो का स्थान है। इस आमली दुर्ग का अधिकार भी राणा ने अँगरेजो की सहायता से प्राप्त किया।

मेवाड-राज्य मे भूमि का मालिक किसान माना जाता है। इस अधिकार को वहाँ के किसान बपौता कहते है। किसानो की भूमि पर कभी कोई दखल नही दे सकता और न उस पर कोई कर लगाया जाता है। किसानो के इस अधिकार के सम्बन्ध मे यहाँ पर कुछ घटनाओ को समाने लाना आवश्यक है। किसी समय मन्दोर नगर मे मारवाड की राजधानी थी। गहिलोत राजकुमार का विवाह किसी समय मारवाड की राजकुमारी के साथ हुआ। राजपूतो की प्रथा के अनुसार कन्या के पिता को जामाता की माग को पूरा करना पडता था। इस प्रथा के अनेक दुष्परिणाम राजस्थान मे देखे गये है। गहिलोत राजकुमार ने लडकी के पिता से दस हजार जाटो की माँग की। ये जाट मारवाड राज्य मे खेती करते थे। लडकी के पिता ने जामाता के माँगने पर आदेश दिया कि दस हजार जाटो को मेवाड जाने की आज्ञा दी। राजा के इस आदेश को सुनकर जाट लोग घबरा उठे। वे जाने के लिए तैयार न थे।

अन्त मे जाटो ने आपस मे परामर्श करके निर्णय किया और अपने राजा से उन लोगो ने प्रार्थना की "क्या हम लोग अपना बपौता छोडकर एक अपरिचित राज्य मे चले जायँगे? अगर

नक आवेश मे आ जाने का कारण यह था कि समाचार-पत्र से उसे मालूम हुआ कि र
वक्श नामक एक दूत मराठो को मेवाड से निकालने के सम्बन्ध मे अंग्रेजो के लार्ड लेक
टोक मे परामर्श कर रहा था। इस को पढते ही वह क्रोध मे आ गया।

किशनदास और मेवाड के दूसरे दूतो ने आकर होलकर के कैम्पो मे प्रवेश किया।
का क्रोध अभी ज्यो का त्यो बना था। उसने उस पत्र को किशनदास की तरफ फेक क
"मेवाड वालो का हमारे साथ क्या यह विश्वासघात नही है ? तुम्हारे राणा के लिए मैने
छोडा है, सीधिया के भय की कुछ परवा न की है। अँगरेजो के साथ युद्ध करने के लिए जो
हो रही हैं, उनमे समस्त हिन्दू-जाति को सगठित हो जाना चाहिए। ऐसे समय मे सबसे
तुम्हारे राणा ने अँगरेजो के साथ सधि करने का निर्णय किया है ? किसी समय राणा ने
कि हम दिल्ली की अधीनता स्वीकार नही कर सकते। राणा का यह स्वाभिमान आज

इस समय पचौली किशनदास ने शात होने के लिये होलकर को सकेत किया। पर
कूर तातिया नामक मत्री ने अपने स्वामी होलकर से कहा "महाराज आपने इन रा
व्यवहार अपने नेत्रो से देखा। ये लोग सीधिया के साथ आपको लडाना चाहते है। इस'ल
इन राजपूतो का समर्थन छोडकर सीधिया से मिल जाना चाहिए और शूरजी राव के
अम्बाजी को मेवाड का सूबेदार बनाना चाहिये। यदि आप ऐसा न करेगे तो मै सी
जाकर मालवा चला जाऊँगा।"

अलीकूर तातिया की बाते भाऊ भास्कर को छोडकर वहाँ पर उपस्थित सभ
पसन्द की। होलकर को भी उसका परामर्श मानना पडा। उसने शूरजी राव को
से बरखास्त कर दिया और अंगरेजी सेना के साथ युद्ध करने के लिए वह उत्तर की तर
हुआ। वहाँ पर अंगरेजी सेना के साथ लडकर वह पराजित हुआ और पजाब तक अगरेजो
पीछा किया। अन्त मे होलकर को लार्ड लेक के साथ सधि करनी पडी।

अगरेजो के साथ राणा का सम्पर्क और व्यवहार मालूम करके होलकर बहुत ...
लेकिन इस समय उसने मेवाड के विरुद्ध कोई कार्य नही किया। मेवाड़ छोड़ते ...
से कहा था "अम्बाजी द्वारा मवाड-राज्य को कोई हानि न होगी, ...
इसलिये ऐसा कोई कार्य न हो, जो मेरी प्रतिज्ञा के विरुद्ध समझा ...
उत्तरदायित्व आपके ऊपर होगा।

सन् १८१८ ईसवी से १८२२ ईसवी तक मेवाड से जो राज कर वसूल हुआ, उसकी फेहरिस्त नीचे लिखी जाती है। उसके द्वारा मेवाड की होने वाली उन्नति का अनुमान आसानी के साथ किया जा सकता है

रबी की फसल से	सन् १८१८ ई० का	४००००) रुपये
,, ,,	,, १८१९ ई० का	४५१-८१) रुपये
,, ,,	,, १८२० ई० का	६५६१००) रुपये
,, ,,	,, १८२१ ई० का	१०१८४७८) रुपये
,, ,,	,, १८२२ ई० का	६३६६५०) रुपये

अँगरेजो के साथ सधि होने के पहले मेवाड की क्या दशा थी, इस पर पहले लिखा जा चुका है। सधि के बाद पहले की दशा मे परिवर्तन हुआ और राज्य मे सभी प्रकार की शाति और सुविधा बढी, जिनसे उन्नति आरम्भ हुई। सन् १८१८ से १८२२ ईसवी तक राज्य के पाँच प्रमुख नगरो की मनुष्य-गणना का हिसाब नीचे लिखा जाता है। उससे मालूम होता है कि सधि के पहले क्या हालत थी और उसके बाद चार वर्षो मे किस प्रकार मनुष्यो की सख्या बढी

नगर	सन् १-१८ ई० मे	घरो की सख्या	सन् १८२२ ई० मे	घरो की सख्या
उदयपुर	,,	३५००	,,	१००००
भीलवाडा	,,	६०००	,,	२७०००
पुरा	,,	२००	,,	१२००
मराडल	,,	८०	,,	४००
गोसुन्द	,,	६०	,,	२५०

इस तालिका मे जो घर दिखाये गये है, वे सब मनुष्यो से भरे हुये थे। यह बढती हुई आबादी इस बात का प्रमाण है कि सधि के पहले लोगो के जीवन मे जो अशान्ति और दुरवस्था थी, वह सधि के बाद दूर हो गयी। इन दिनो मे राज्य की खेती ने जो उन्नति की थी, उसे ऊपर लिखा जा चुका है। व्यावसायिक उन्नति का विवरण नीचे दिया जाता है :

सन् १८१८ ई०	बहुत साधारण
सन् १८१९ ई०	९६६८३) रुपये
सन् १८२० ई०	१६५१०८) रुपये
सन् १८२१ ई०	२२००००) रुपये
सन् १८२२ ई०	२१५०००) रुपये

ऊपर लिखे गये विवरण इस बात के प्रमाण है कि अगरेजो की सधि से बाद मेवाड-राज्य ने उन्नति की। इस राज्य की आर्थिक आय का साधन उसकी खाने थी। करीब आधी शताब्दी से उन खानो के द्वारा राज्य को तीन लाख रुपये वार्षिक से अधिक आमदनी होती थी। *

बहुत दिनो से मेवाड राज्य मे अशान्ति फैली हुई थी। राज्य के सिंहासन पर इधर बहुत दिनो से जो बैठे, उनकी अयोग्यता और निर्बलता के कारण जो बाहरी आक्रमण आरम्भ हुए, उनका सिलसिला भयानक रूप से अगरेजो की सधि के समय तक बराबर चलता रहा। उसके फल

* सन् १६१८ ईसवी मे जाबडा की टीन खान से २२२०००) रुपये और दुरिबाडा से ८०००) रुपये की आमदनी हुई थी। इन खानो मे टीन के साथ-साथ चाँदी भी निकली थी।

से कल्पित राजा के सरदारो और सैनिको को अलग कर दिया और अब दोनो सेनाओ मे आरम्भ हो गयी।

जोधपुर मे जो सम्पत्ति और सामग्री लूटी गयी थी, जगतसिंह ने सब की सब दी थी। मारवाड की विद्रोही सेना इस बात को सहन न कर सकी और उसने रास्ते मे ही करके उस सम्पत्ति और सामग्री को लूट लिया। इस विद्रही सेना के साथ मारकाट मे बहुत-से सैनिक मारे गये और जगतसिंह स्वय युद्ध से भाग गया।

जगतसिंह युद्ध से भागकर जयपुर चला गया। मेवाड पर चडाई करने के लिए उ से सैनिको की भरती की थी। वे युद्ध मे काम न आ सके। उसकी पराजय का वह कार जयपुर पहुँच कर वह भयानक सकट मे पडा गया। जिन अगणित जनो को उसने अपनी भरती किया था, उनके वेतन वह न दे सका और इसका परिणाम उसके लिए भयानक मारवाड मे मानसिंह के विरुद्ध जो विद्रोही पैदा हो गये थे, वे अब कमजोर पडने लगे।

अमीर खॉ शुरू मे मानसिंह के शत्रुओ के साथ था। उसके बाद वह राजा मानसिंह गया और मारवड के कल्पित राजा का विनाश करके वह मानसिंह को प्रसन्न करने की लगा। अमीर खॉ न केवल राजनीतिज्ञ था, बल्कि वह घूर्त और कूटनीतिज्ञ था। वह जिस चाहता था, उसके साथ वह अपने हृदय का गहरा स्नेह प्रकट करता था। अपनी इसी अनुसार अमीर खॉ ने उस कल्पित राजा के साथ व्यवहार आरम्भ किया। एक मसजिद मे बैठकर मित्रता की गॉठ बॉधी। मानसिंह का विद्रोही—मारवाड का वह कल्पित राजा की चालो को समझ न सका। उसकी मित्रता को पाकर वह बहुत प्रसन्न हो उठा और उसने नाच और गाना शुरू कराके अपने सुख सौभाग्य का अनुभव करके लगा। इसी अ जब वह कल्पित राजा अपने यहाँ नाच-गाने मे मस्त हो रहा था। अमीर खॉ ने उस पर किया और बडी निर्दयता के साथ उसने उन सब का सहार किया। उस कल्पित राजा के से मारवाड मे मानसिंह के जो विरोध हो रहे थे, सब समाप्त हो गये।

राणा की लडकी कृष्ण कुमारी ने सोलहवे वर्ष मे प्रवेश किया। वह अत्यन्त गुणवती स्वस्थ और सुशील थी। उसकी प्रशसा दूर-दूर तक फैल रही थी। उसके मन औ की यह अच्छाइयां उसके लिए दुर्भाग्य बन गयी। इस प्रकार की घटनाये और भी कभी-क के सामने आयी है। रोम की प्रसिद्ध वर्जीनिया को भी अपनी सुदन्रता और श्रेष्टता के का देने पडे थे ‡ और यूनान की महान सुन्दरी इफीजीनिया को अपने अटूट रूप और सौन्दर्य प्राणो का उत्सर्ग करना पडा था। *

अमीर खाँ ने अपने विश्वासघात के द्वारा मारवाड के कल्पित राठौर राजा का सह

---

‡ वर्जीनिया रोम के विख्यात व्यूसियस की लडकी थी। एपियस क्लडियस न चरित- हीन व्यक्ति ने वर्जीनिया को उसको माता-पिता से बलपूर्वक छीन कर ले जाने की की थी। उसका पिता जब अपनी लडकी की रक्षा करने मे असमर्थ हुआ तो उसने अपने उसको मारकर उस नराधम से उसकी रक्षा की थी। यह घटना ईसा से ४४९ वर्ष पहले

* इफीजीनिया यूनान के एगेमेनन की लडकी थी। एलिस नाम के टापू मे यूनान जब जंगी जहाज रुक गया तो डियाना देवी को प्रसन्न करने के लिए एगेमेनन ने उस सामने अपनी बेटी को मार कर बलिदान किया था। यूनान के पुराने ग्रन्थो से कुछ मतभेद घटना का समर्थन मिलता है।

मेवाड़ के प्रधान सरदार, उनकी उपाधियाँ, जागीर, ग्राम—संख्या, उनके गोत्र और वंश

स०	उपाधि	नाम	गोत्र	वंश	जागीर	ग्राम स०	सन् १७६० ई० के अनुसार कीमत	विशेष विवरण
१	राजा	चन्दनसिंह	झाला	झाला	सादड़ी	१२७	१०००००)	ये तीनो जागीरें बिगड़ कर आधी से कम हो गयी। लेकिन उनकी मालगुजारी अब तक बहुत है।
२	राव	प्रतापसिंह	चौहान	चौहान	बेदला	८०	१०००००)	
३	राव	मोहकमसिंह	चौहान	चौहान	कोठारिया	६५	८००००)	
४	रावत	पद्मसिंह	चदावत	सीसोदिया	सालुम्बा	८५	८४०००)	यह आमदनी उसकी जमीन के जोते जाने पर निर्भर है।
५	ठाकुर	जोरावरसिंह	मेड़तिया	राठौर	गानोर	१००	१०००००)	राणा के हाथ से गोढ़वार निकल के बाद से यह सरदार राज्य के सोलह सरदारो मे नही रहा।
६	राव	केशवदास	मेड़तिया	परमार	बिजोली	४०	४५०००)	यह आमदनी उसके जमीन मे खेती होने मे निर्भर है।
७	रावत	गोकुलदास	सगावत	सीसोदिया	देवगढ	१२५	८००००)	खेती होने पर इससे भी अधिक आमदनी हो सकती है।
८	रावत	महासिंह	मेघावत	सीसोदिया	बेगू	१५०	८००००)	आजकल इस जागीर पर सीधिया का अधिकार है। खेती होने पर ७००००) रुपये की आमदनी हो सकती है।
९	राजा	कल्याणसिंह	झाला	झाला	देलवाड़ा	१२५	१०००००)	
१०	रावत	सालिमसिंह	जगावत	सीसोदिया	अमायित	६०	६००००)	खेती होने पर दो तिहाई आमदनी हो सकती है
११	राजा	छत्रसाल	झाला	झाला	गोगुण्डा	५०	५००००)	" " "
१२	रावत	फतहसिंह	सारंगदेवत	सीसोदिया	कानोड़	५०	६५०००)	खेती होने पर यह आमदनी हो सकती है।
१३	महाराजा	जोरावरसिंह	शक्तावत	सीसोदिया	भिण्डीर	६४	६४०००)	खेती होने पर आधी आमदनी हो सकती है।
१४	ठाकुर	जैतसिंह	मेड़तिया	राठौर	बिदनौर	८०	८००००)	खेती होने पर यह आमदनी हो सकती है।
१५	रावत	सालिमसिंह	शक्तावत	सीसोदिया	बानसी	४०	४००००)	" " "
१६	राव	सूरजमल	चौहान	चौहान	पारसौली	४०	४००००)	इन सरदारो को जागीर और उनका प्रभाव—सब कुछ नष्ट हो गया है।
१७	रावत	केसरीसिंह	किसनावत	सीसोदिया	भैंसरोड़	६०	६००००)	ऊपर के सरदारो के विपद मे पड़ने पर इन दोनो को ये पद प्राप्त हुए।
१८	रावत	जवानसिंह	किसनावत	सीसोदिया	कुरावड़	३५	३५०००)	

साठ वर्ष पहले भैंसरोड और कोरावड के सरदार दूसरी श्रेणी के सरदारो मे माने जाते थे। इसलिये दोनो को छोडकर बाकी सरदारो को जागीरो की आमदनी—जैसी की ऊपर लिखी गयी है—होती थी। उनसे छोटे सरदारो की आमदनी तीस लाख रुपए वार्षिक थी।

भय नही है । भय क्यो हो ? क्या मै तुम्हारी बेटी नही हूँ ? राजपूत वंश मे जन्म लेकर भय करना कैसा ? हम सब का जन्म ही बलिदान होने के लिये होता है, फिर उसका भय मै अब तक जीती रही, क्या यह कम आश्चर्य की बात है ?"

इसी समय विष का दूसरा प्याला तैयार किया गया । राजकुमारी ने उसे लेकर बि भय के उसको पी डाला और प्याला खाली कर दिया । प्याला हाथ मे लेते हुए उसके श एक भी रोम काँपा नही । उसके मुख पर किसी प्रकार की घबराहट पैदा नही हुई ।

राजकुमारी के आस पास एक अपूर्व दृश्य था । दो बार विष का प्याला कुमारी क असफल हो चुका था । तीसरी बार उस विष को अधिक भयानक बनाया गया । अफीम कुसुम्बे को मिलाकर विष तैयार किया गया । जिस समय वह प्याला मे भरा जा रहा था, कुमारी समझ गयी, यह मेरे जीवन का अन्तिम प्याला है । प्याला सामने आते ही मधुर मुस साथ उसने अपने हाथ मे उसे ले लिया और अपने आस-पास के दृश्य पर एक बार दृष्टिपात हुए—मानो वह ससार से बिदा हो रही थी—प्याले को उसने मुख मे लगाया और पीकर फिर किसी की तरफ नही देखा । राजकुमारी लेट गयी और सदा के लिए सो कर वह स बिदा हो गयी ।

कुमारी कृष्णा की इस प्रकार की मृत्यु के बाद उसकी माता अधिक दिनो तक रही । अपनी बेटी के शोक मे उसने भोजन छोड दिया और उन सभी बातो का परित्याग कर जो मनुष्य को जिन्दा रखती है । इस दशा मे कुछ ही दिनों के बाद उसकी मृत्यु हो गयी ।

अमीर खाँ ने जिस समय अजितसिंह से यह समाचार सुना, उसने उसको बहुत धिव कहा. "क्या यह कार्य शूरवीर राजपूतो के योग्य था ? सीसोदिया वश मे इस प्रकार का कार्य कभी नही हुआ था । इस समाचार को मुझसे कहते हुए तुमको लज्जा नही मालूम हुई ?'

राजकुमारी की मृत्यु के चार दिन बाद शक्तावत सग्रामसिंह राजधानी मे आया । वह सिंह का विरोधी था । सग्रामसिंह स्वभाव से ही बहादुर और स्वाभिमानी था । उसको न तो राजा का भय था और न शत्रुओ की तलवारो का । निर्भीकता के साथ वह उस स्थान पर जहाँ पर अजितसिंह बैठा हुआ था । उसको देखते ही आवेश मे आकर उसने कहा : "नीच सी वश को कलकित किसने किया ? राजस्थान के जिस वश ने अपनी पवित्रता को बनाये रखने के भयानक सकटो का सामना करते हुए सैकडो वर्ष बिताये थे, उसके माथे पर यह कलक का किसने लगाया ? राजकुमारी का वध करके आज इस वंश ने जो अपराध किया है, उसके जीव इसको अभी मिटाया नही जा सकता । अपनी इस कायरता के कारण यह वश भविष्य मे क अपना मस्तक ऊँचा न कर सकेगा । यह ऐसा पाप हुआ है, जिसकी समानता के लिए दूसरा उदाहरण नही दिया जा सकता । इस वश के मिटाने का समय अब समीप आ गया है ! बप्पा के वश की सम्पूर्ण कीर्ति इस पाप के साथ-साथ मिट चुकी है ! यह अपराध इस वश के सर्वना सूचक है ।" क्रोध के आवेश मे जिस समय संग्रामसिह इस प्रकार की बाते कह रहा था, राणा दोनो हाथो की हथेलियाँ मुख पर रखे हुए चुपचाप सुन रहा था । सग्रामसिह ने फिर कहा "न तेरा यह कार्य सीसोदिया वश के माथे पर अटिल कलक है । इसमे सम्पूर्ण राजपूत जाति का नाम मृत्यु के साथ-साथ मिट जायेगा । क्या सोचकर तूने राणा से यह अधर्म कराया, किस भय ने करने के लिए तुझे विवश किया था ? जिस शत्रु का भय था, उसका आक्रमण होने क्यो नही अच्छा होता, यदि इस प्रकार के किसी आक्रमण से इस वश के एक-एक बच्चे का सर्वनाश हुआ

नियन्त्रण रखने का दावा करता था। इसके लिए अपराधियो से उसे लम्बी रकमे मिलती थी। पादरी अपराधी की हैसियत के अनुसार सम्पत्ति लेकर दण्ड मे मुक्ति का परवाना दिया करता था। जो ऐसा न करते थे, उनको मरने के बाद नरक की यातना भोगनी पडती थी। चर्च के जो अधिकारी ऐसा करते थे, वे पोप के नाम से पुकारे जाते थे। बहुत समय तक योरप मे पोपो का आतक काम कर चुका है और आज के योरप मे उस प्रकार के अधविश्वास मिट गये है। भारतवर्ष मे फैले हुए इस धार्मिक भय को देखकर और जानकर योरप के पोप लोगो के द्वारा फैले हुए आतक की सहसा याद आती है। योरप के देशो मे जब इस प्रकार के विश्वास फैले हुए थे, उस समय का इतिहासकारो ने काला युग नाम दिया है। इस देश मे ऐसे समय को कलियुग कहा जाता है। सही बातो का ज्ञान न होने पर मनुष्य मिथ्या बातो पर विश्वास कर लेता है। वह जान बूझकर ऐसा नही करता अपनी समझ मे वह सही है। उसके विरुद्ध वह कुछ सुनना और जानना नही चाहता। इसी को अधविश्वास कहा जाता है। भारत की इस प्रकार की बहुत-सी बाते किसी समय योरप मे गुजर चुकी है। मिश्र के निवासियो और ज्यूइश लोगो की बहुत-सी बाते भी इस प्रकार की थी। उनके धार्मिक अन्धविश्वासो के सम्बन्ध मे बहुत-सी बाते विद्वानो के द्वारा लिखी जा चुकी है। राजपूतो के वपौता का अधिकार मिश्र के निवासियो मे बराबर मिलता है।

मध्यकालीन योरप के धर्माधिकारियो का वहाँ के देशो मे वही स्थान था, जो राजस्थान के राज्यो मे उनके सरदारो का है। लेकिन जब उनको मिली हुई सुविधाये धार्मिक वातावरण मे आ जाती है तो उन पर न तो राजा का अधिकार रहता है और न उन पर कोई प्रतिबध काम करता है। यद्यपि राणा के वश की एक दो घटनाये ऐसी भी है जो इसके विपरीत अपना अस्तित्व प्रकट करती है।

मेवाड के सभी धार्मिक कार्यो मे ब्राह्मणो का एक मात्र आधिकर है। मृत्यु के बाद अतिम सस्कारो मे वही लोग काम करते है और इसके लिए वे अनिश्चित सम्पत्ति प्राप्त करते है। सन् १८१८ ईसवी मे मेवाड की पटरानी ने राजकुमार अमर के मर जाने पर अतिम सस्कार के अवसर पर पन्द्रह बीघा भूमि दान मे दी थी। ऐसे अवसरो पर ब्राह्मण लोग प्राय धमकी देकर और लोगो को भयभीत करके भी धन वसूल करते है। लोगो को ब्राहाण की अप्रसन्नता का वडा भय रहता है और किसी भी दशा मे वे लोग उनको अप्रसन्न होने का मौका नही देते। ग्रामीण मन्दिरो और उनके पुजारियो के वहाँ के निवासी नगरो की अपेक्षा अधिक सम्मान देते है। पुजारी का पूरा अधिकार मदिरो मे होता है, वह एकलिंग भगवान की पूजा करता है और इसके बदले मे वह सर्व साधारण से दान-दक्षिणा पाता है। आज की उन्नीसवी शताब्दी मे भी यहाँ की प्रजा इन पुजारियो से उतनी ही भयभीत रहती है, जितनी कि वह अपने भगवान से रह सकती है। गुरु, पुरोहितो, पुजारियो और ज्योतिषियो पर लोग आँखे बन्द करके विश्वाश करते है। ये सब लोग ब्राह्मण ही होते है और वे सभी राज्य से विना किसी कर अथवा नियन्त्रण के भूमि पाते है। इसके सिवा जन्म मृत्यु, शादी, विवाह, भाग्य, दुर्भाग्य कथा भागवत आदि सैकडो-सहस्त्रो अवसरो पर उनको दान-दक्षिणा मिलता है। राजा से लेकर प्रजा तक सभी श्रेणी के लोग उनको समय-समय पर दान और दक्षिणा देकर अपने भविष्य जीवन का निर्माण करते है। किसान लोग अपनी पैदावार का चालीसवाँ भाग अपने पुरोहित को दान मे दे देते है और प्रत्येक व्यवसायी की अपनी आय का एक निश्चित भाग उसे देना पडता है। प्रचीनकाल से मेवाड मे ब्राह्मणो, सन्यासियो और गुसाई लोगो का सम्मान चला आ रहा है। राणा के पूर्वजो की वल्लभी मे राजधानी थी और वे जैन धर्मावलम्बी थे। यही कारण था कि वहाँ पर जैनियो को सभी प्रकार का सम्मान प्राप्त था। यहाँ पर साम्प्रदा-

को लूट कर सभी प्रकार बरबाद कर दिया था। जिस अम्बा जी ने निर्दयता के साथ विनाश किया था, उसको उसके पापो का बदला खूब मिला। अभिमान मे आकर उसने सीधिया को धोखा देकर ग्वालियर मे अपनी स्वतन्त्रता का झण्डा खडा किया। सीधिया ने अपराधो की सजा उसको दी। उसने उसके हाथो-पाँवों की उँगलियाँ जलवा दी और उसका धन छीन लिया। अम्बा जी ने तलवार मार कर आत्महत्या करने की चेष्टा की। अम्बा खजाने से सीधिया ने पचपन लाख रुपये निकाल कर अपने अधिकार मे कर लिए। इस अम्बा जी फिर मेवाड मे सीधिया की तरफ से सूबेदार बनाकर भेजा गया। परन्तु थोडे ि उसकी मृत्यु हो गयी। उसके मरने पर उसकी समस्त सम्पत्ति पर उसके मित्र जालिम अपना अधिकार कर लिया।

राणा के मन्त्री सतीदास ने सत्तर हजार रुपये देकर यशवतराव भाऊ से कमलमीर ले लिया। सन् १८०६ ईसवी मे अमीर खाँ ने अपनी सेना के साथ मेवाड पर आक्रमण किय राणा से ग्यारह लाख रुपये मॉगे। राणा अवस्था इस रकम को दे सकने के योग्य न थी। भी विवश अवस्था मे उसने नौ लाख रुपये देना मन्जूर किया। परन्तु वह दे न सका। इ अमीर खाँ ने राज्य मे भयानक अत्याचार शुरू किये और उन अत्याचारो मे राणा का किशनदास घायल हुआ। *

सम्बत् १८६७ सन् १८११ ईसवी मे बापू सीधिया ने सूबेदार बनकर मेवाड मे प्रवेश उसके साथ उसकी एक सेना थी। अमीर खाँ की सेना उस समय मेवाड मे लूट मार कर रही मेवाड को अब दोनो सेनाओ ने लूटना शुरू किया। इन लुटेरो को वहाँ पर कोई रोकने वा था। राज्य की प्रजा के सामने इन दिनो में जो भयानक कष्ट थे, वे लिखे नही जा सकते। खाँ के पठानो और बापू सीधिया के मराठो ने मेवाड राज्य मे भीषण अत्याचार किये। इन अ चारो से राज्य का अन्तिम विनाश हुआ, कृषि का जो व्यवसाय बाकी रह गया था उसका भी हो गया। नगरो का विध्वस हो गया। राज्य के लोग अपने परिवारो के साथ घर-द्वार छो भाग गये, सरदारो का पतन हो गया, राणा और उसके परिवार के जीवन मे साधारण सुि भी न रह गयी। ऐसी दशा मे सीधिया के बाकी कर को अदा करने की धृष्टता पूर्ण माँग सीधिया ने राणा से की और उसके बदले मे राज्य के सरदारो, कृषको और व्यवसायिय अजमेर मे ले जाकर कैद मे रखा। वहाँ पर उनमे से बहुतो की मृत्यु हो गयी और बाकी लोग सीधिया की कैद से उस समय छुटकारा मिला, जब सन् १८१७ ईसवी मे अंगरेजो की संधि हु

---

* अपनी उस विपद के समय किशनदास बहुत दिनो तक टॉड साहब के साथ रहा। र से भेट के समय टॉड साहब की बातो को किशनदास ही अनुवाद करके राणा को समझाता किशनदास के मरने पर मेवाड़ के लोगो ने बहुत दु ख प्रकट किया था।

जाता है और मरने पर उसको स्वर्ग मिलता है और पापो से उसकी मुक्ति हो जाती है।

मेवाड के पर्वो और त्योहारो का बहुत महत्व है। इनका आरम्भ वसत काल से होता है। राजस्थान के इस भाग मे जो पर्व और त्योहार मनाये जाते है, सक्षेप मे उन पर हम प्रकाश डालने की चेष्टा करते है। वसत नये वर्ष को नवजीवन देता है। इस देश मे वर्ष के बाकी दिनो का उतना महत्व नही है, जितना वसत का है।

वसन्त पञ्चमी—माघ शुक्ल पञ्चमी को यह त्योहार मनाया जाता है। इसका महत्व इस देश भर मे है। इस त्योहार मे राजपूत अनेक प्रकार की खुशियाँ मनाते हैं और नाच और गाने होते है। लोग मादक द्रव्यो का प्रयोग करते है। छोटे बडे सब एक हो जाते हैं। किसी प्राकर का भेद नही रहता। नाच और गाने मे अश्लीलता का भी प्रयोग होता है।

भानुसप्तमी—वसन्त पञ्चमी के एक दिन बाद यह त्योहार मनाया जाता है। लोगो का विश्वास है कि उस दिन सूर्य भगवान का जन्म हुआ है। सूर्य वशी राजपूत इस त्योहार को अधिक महत्व देते है इस दिन राणा अपने सरदारो और सामन्तो के साथ चोगा नाम के स्थान मे जाता है। वहाँ पर सूर्य भगवान की पूजा होती है। जयपुर मे इस त्योहार को अधिक महानता दी जाती है। कुशवाहा राजपूत बडी धूमधाम से इस त्योहार को मनाते हैं। वहाँ का राजा सूर्य नारायण के मदिर मे जाता है। आठ घोडो के रथ मे वे लोग अपने देवता की मूर्ति को रखकर बाहर घुमाते हैं। कही-कही यह रथ मनुष्यो के द्वारा खीचा जाता है। उसमे सभी लोग शामिल होते है।

शिवरात्रि—फागुन की कृष्ण चतुर्दशी को इस त्योहार का उत्सव होता है राणा के साथ-साथ सभी लोग इसको महत्व देते है। लोगो की धारणा है कि शिवरात्रि का व्रत रहने से स्वर्ग मिलता है राणा स्वय शिव की पूजा करता है। शिव के मानने वाले इस दिन किसी प्रकार का काम नही करते और पूरी रात जागकर लोग महादेव का भजन करते है।

अहेरिया—मेवाड के राजपूतो और विशेषकर राणा के वश मे यह उत्सव बडी धूमधाम से मनाया जाता है। इसका सम्बन्ध उनके क्षात्र धर्म के साथ है। एक दिन पहले राज्य के सरदारो और प्रमुख कर्मचारियो को राणा से हरे रग का पहनने के लिए कपडा मिलता है। ज्योतिषी अहेरिया उत्सव का समय निर्धारित करता है। उसके अनुसार राणा अपने सरदारो और मन्त्रियो के साथ वाराह का शिकार करने के लिए नगर के बाहर जाता है। जो शूकर मारा जाता हे, वह अभीष्ट देवता के सामने लाया जाता हे। वहाँ पर उसका बलिदान होता है।

इस त्योहार मे राणा अपने भाग्य की परीक्षा करता हे। शिकार की सफलता मे वर्ष—जो शुरू होने वाला है—मगलमय माना जाता है। असफलता का उसके विरुद्ध परिस्थितियो का अनुमान किया जाता है। राजपूतो का विश्वास है कि इस शिकार मे सफलता न मिलने से राणा को आगामी वर्ष मे भयानक विपदाओ का सामना करना पडता है। इस शिकार के समय राणा का रसोइया भी साथ जाता है मारे गये वाराह को पकाकर रसोइया भोजन तैयार करता हे और राणा सभी के साथ बैठकर उसका भोजन करता है।

फागोत्सव—यह त्योहार फागुन के महीने मे मनाया जाता है। फाग गाते है, एक दूसरे को अबीर लगाते है और रग खेलते है। यह त्योहार बिना किसी भेद-भाव के मनाया जाता है। राणा अन्त पुर मे जाकर रानियो और उनकी सहेलियो के साथ रंग खेलता है। इस अवसर पर सभी प्रकार के बधन टूट जाते है सरदार लोग अपने घोड़ो पर चढ़ कर रग खेलने निकलते है। इस त्योहार मे एक-दूसरे पर रंग फेका जाता है।

अधिकार मे दे दिया और एक विशाल दुर्ग पर अँगरेजो ने अपना अधिकार कर लिया। के दुर्ग मे रहने वाली सेना का बहुत दिनो से वेतन बाकी था, उसको देकर अँगरेजो ने उस अपना अधिकार कर लिया।

कमलमीर के उत्तर मे जिहाजपुर था। वहाँ से एजेन्ट की हैसियत से मै राणा के लिए रवाना हुआ। उदयपुर वहाँ से एक सौ चालीस मील था। इस लम्बी यात्रा मे मुझे नगर मिले। मनुष्यो की आबादी बहुत कम थी, उनकी घनी आबादी उजड गयी थी। सम्पू मनुष्यो से खाली था। चारो तरफ वृक्ष दिखायी देते थे। चतुर्दिक फैले हुए जगलो को देख होता था कि यहाँ पर मनुष्यो की आबादी नही है। स्थान-स्थान पर जंगली जानवर दिखाई देते थे। राज-मार्ग नष्ट हो गये थे और वे सब जंगली रास्ते बन गये थे राजस्थान वाडा एक प्रसिद्ध व्यावसायिक नगर था। दस वर्ष पहले यहाँ पर छै हजार अच्छे घर थे लोग अपने परिवारो के साथ रहते थे। भीलवाडे से होकर मै गुजरा। उसकी गलियाँ सुनसा एक भी आदमी वहाँ पर न मिला। एक मन्दिर मे बैठे हुए कुत्ते ने मुझे देखा, वह मुझे अपरिचित समझ कर भागा।

मैं अपने लश्कर के साथ उदयपुर के करीब नाथद्वारे मे ठहरा। वहाँ पर राणा प्रतिनिधि मुझे मिला और उससे लौटकर जाने के मौके पर मैंने कमलमीर दुर्ग प्राप्त किया बाद राणा का पुत्र जवानसिह सामन्तो, सिपाहियो और बहुत से राज्य के अधिकारियो को लेकर स्वागत के लिये आया और हम सब को राजधानी ले गया। उदयपुर से एक कोस पर हम सब का स्वागत करने के लिये एक स्थान सजाया गया था। वहाँ पर शतरंजियाँ ि और उनके ऊपर बडी खूबसूरती के साथ गलीचे बिछाये गये थे। वहाँ पर सब से पहले मैंने जवानसिह को देखा। उसका सुन्दर बदन, शिष्टाचार स्वाभिमान, मिनम्रभाव और अच्छा देख कर मै बहुत प्रभावित हुआ। इसके पहले भी मैंने एक बार देखा था। उस समय वह छो उसके आज के व्यवहारो के प्रति मैने उस समय उसको देखकर कल्पना नही की थी।

सूरजद्वार से होकर मैंने उदयपुर मे प्रवेश किया। रास्ते मे दोनो तरफ सुन्दर वृक्ष थे। वहाँ का दृश्य देखकर भी इस बात का सहज ही आभास होता था कि जहाँ से हम लो रहे है, बुरी तरह से वीरान हो चुका है। जहाँ से हम लोग चल रहे थे, रामप्यारी का महल

हो रही है, वह सदा के लिये है। एक का मित्र और शत्रु, दूसरे का भी मित्र और शत्रु हो राणा के राज्य को सुरक्षित रखने के लिए अँगरेज सरकार पूरी चेष्टा करेगी और उस आक्रमण नही कर सकेगा। (३) उदयपुर के राणा को अँगरेज सरकार की अधीनता मे और कार्य करने पडेगे। राज्य के सामन्तो और सरदारो से राणा का कोई सम्बन्ध न रहेगा। (अँगरेज सरकार की स्वीकृति के राणा को किसी राजा के साथ संधि अथवा राजनीतिक सम्बन्ध करने का अधिकार न होगा। (५) राणा को स्वय किसी पर आक्रमण करने का अधिकार न यदि किसी के साथ इस प्रकार की परिस्थिति पैदा हो तो उसका निर्णय अँगरेज सरकार (६) पांच वर्ष तक राणा अपनी आमदनी का एक चौथाई अँगरेज सरकार को अदा करेगी उसके बाद आमदनी का ३।८ भाग राणा को अदा करना पड़ेगा। राणा ने दूसरा कोई कर न ले इसका उत्तरदायित्व अँगरेज सरकार पर होगा। (८) मेवाड़ राज्य के जो इलाके दूसरे रा छीनकर अपने अधिकार मे कर लिये हैं, राणा का इरादा उनको वापस लेने का है। लेकिन अँगरेज सरकार इस प्रकार के मामलो मे किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही कर सकती। ८९

विश्वास करते है। उनकी धारणा है कि पार्वती देवी की पूजा करने से मनोकामना पूरी होती है। इसी विश्वास पर राजपूत स्त्रियाँ पार्वती का व्रत रखती है। बहुत से अच्छे काम इस दिन राजपूत इसलिए करते हे कि वे इस दिन को वहुत पवित्र मानते हैं उनका यह भी कहना है कि इस दिन जो काम किया जाता है निश्चित रूप से उसमे सफलता मिलती है।

नागपञ्चमी—सावन सुदी पञ्चमी को यह त्योहार मनाया जाता है। बरसात के दिनो मे साँपो का भय वढ जाता है। नागपचमी का त्योहार मनाने से साँपो का डर नही रहता, लोगो का ऐसा विश्वास है।

राखी पूर्णिमा—सावन की पूर्णिमा को मेवाड के राजपूत इस त्योहार को मानते है। जन साधारण के विश्वास के अनुसार राखी बाँधने का अधिकार केवल स्त्रियो को है। राजपूत स्त्रियाँ और लडकियाँ अपने भाइयो के हाथो मे राखी बाँधती है अथवा बाँधने के लिए अपने भाइयो के पास भेजती है। राखी बँधवाने अथवा पाने के वाद राजपूत अपनी बहनो को रुपये-पैसे अथवा अन्य कोई बहुमूल्य वस्त्र देकर सम्मानित करते है। मेवाड मे राखी बन्धन को बहुत पवित्र माना जाता है।

जन्माष्टमी—भादो वदी अष्टमी के दिन यह त्योहार होता है। हिन्दुओ की धारणा के अनुसार इसी दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। इसीलिए समस्त हिन्दू जन्माष्टमी के त्योहार को मानते है भादो वदी तीज को राणा अपने सरदारो और सामन्तो के साथ चौगान महल को चला जाता है। उस दिन से लेकर अष्टमी तक वहाँ पर श्रीकृष्ण की पूजा होती। अष्टमी के दिन प्रात काल से इस त्योहार की धूम-धाम शुरू हो जाती है। वाजे वजते हैं और अनेक तरीको से खुशी मनायी जाती है।

खड्गपूजा—यह उत्सव राजपूतो के युद्ध-देवता की पूजा से सम्बन्ध रखता है। कुवार सुदी प्रतिपदा को यह त्योहार मनाया जाता है। उपवास करके राणा खड्ग पूजा मे लवलीन होता है। गहिलोत वश की प्रसिद्ध तलवार इसी समय शस्त्रागार से वाहर निकाली जाती है और फिर उसकी पूजा होती है। उसके वाद राणा के द्वारा वह खड्ग कृष्णपोर नामक प्रसिद्ध द्वार पर लाया जाता है। वहाँ पर अष्टभुजा देवी का मन्दिर हे। वह खड्ग वहा पर देवी के सामने रखा जाता है। मन्दिर के सामने एक भैसे की वलि दी जाती हे और फिर नियमित रूप से खड्ग की पूजा होती है। इस त्योहार का सिलसिला लगतार ग्यारह दिनो तक चलता है।

गणेशपूजा—इस त्योहार का महत्व भारतवर्ष मे है। प्रत्येक हिन्दू गणेश के नाम पर श्रद्धा रखता है। हिन्दुओ के सभी अच्छे कार्य गणेश की पूजा के साथ आरम्भ होते है। शूरवीर राजपूत गणेश के समाने मस्तक झुकाते है। व्यवसायी लोग अपनी सफलता के लिए गणेश पर अधिक विश्वास करते है। राजस्थान मे प्रत्येक राजपूत घर मे गणेश की मूर्ति मिलती है। गणेश का वाहन चूहा माना जाता है। गणेश की पूजा करने वाले चूहे की भी पूजा करते है। इन त्योहारो के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार के विश्वास हिन्दू सामज मे पाये जाते है। इन विश्वासो को राजपूतो मे और भी अधिक महत्व दिया गया है। ऊपर खड्ग पूजा का उल्लेख हो चुका है। मेवाड के राजपूतो का विश्वास है कि चतुर्भुजा देवी ने विश्वकर्मा से उस खड्ग को लेकर वप्पा रावल को दिया था। उस समय से वह खड्ग वप्पा रावल के वश के अधिकार मे है।

लक्ष्मी पूजा—कार्तिक सुदी पूर्णिमा को राजपूत लक्ष्मी की पूजा करते है। लक्ष्मी पूजा का त्योहार साधारणतया वैश्य लोगो से सम्बन्ध रखता है।

दीपावली—कार्तिक महीने की अमावस्या को दीपावली का त्योहार मनाया जाता है।

सिंधी सिपाहियो का पहरा था। राजभवन से दीवानखाने तक दोनो तरफ राजपूत शसस्त्र थे। राजभवन के भीतर एक गणेश दरवाजा है, उस द्वार से होकर दीवानखाने जाना पत्थरो से वनी हुई दीवानखाने की सीढियो को हम लोगो ने पार किया। आगे बढने पर चोपदार मिले, जो किसी के आगमन की सूचना राणा को देते थे। अनेक दालानो को पारकर खाने जाना पडता है। दीवानखाने के द्वार पर पहुँचते ही हम लोगो के आने की सूचना खडे हुए भालेदार ने दी। उसी समय राणा ने सिंहासन से उठकर हमारी तरफ कदम राणा के उठते ही सरदारो ने भी खडे होकर हम लोगो का स्वागत किया। यहाँ की सजावट प्रकार दिल्ली दरबार से कम न थी। सिंहासन के सामने ही हम लोगो को स्थान मिला। य स्थान था, जो इस दरबार मे किसी पेशवा को दिया गया था इस दरबार का स्थान सूर्य नाम से प्रसिद्ध है। राणा के बैठने का सिंहासन बहुत ही कीमती और सुदृढ बना हुआ है। द के प्रधान सोलह सरदार राणा के दाहिने और वाये बैठते है। उनके नीचे एक तरफ राज जवानसिंह के बैठने का स्थान है। राणा के सामने राज्य के मन्त्री का स्थान है। राणा की तरफ राज्य के प्रधान अधिकारी और विश्वासी लोग बैठते है। हम सब के पहुँचने पर को जो प्रसन्नता हो रही थी, उसे हम लोगो ने सहज ही अनुभव किया। राणा ने कुछ अपने सकटो की वाते कही। उनकी बातो को सुनकर मैं बहुत प्रभावित हुआ और मन राणा की सहायता करने का संकल्प किया। राणा की वातो को सुनकर मैंने कहा :

"हमारे गवर्नर-जनरल को आपके वंश की श्रेष्ठता मालूम है। आपके संकटो के सब को पूरी सहानुभूति है। हमारे गवर्नर जनरल का इरादा है कि आपके सकटो को अवस्था मे दूर किया जाय और हम सब लोग सहायता करके गौरव की वृद्धि करे।"

वाते हो जाने के वाद राणा ने हमको और हमारे साथ के लोगो को भेट मे वहुमूल्य दी। हमे राणा ने एक सजा हुआ हाथी, एक श्रेष्ठ घोडा, जवाहिरात जडे हुए आभूषण, की एक माला, एक कीमती शाल और कुछ अन्य वस्त्र दिये। इसके वाद राणा से विदा हम लोग अपने ठहरने के स्थान पर चले आये। हमारे लौट कर आ जाने के बाद राणा वे राज्य के मन्त्री और सरदार लोग हम लोगो से मिलने के लिए हमारे स्थान पर आये। मैं स्थान से चलकर कुछ दूरी पर स्वागत के लिए गया और राणा के सम्मान मे मैंने सेना से करायी। राणा के बैठने के लिये मैने पहले ही से एक ऊँचे स्थान की व्यवस्था की थी। उ राणा को मैने विठाया। राणा ने उस समय वहुत सी वाते की। अन्त मे मैंने राणा को एक दो घोडे, उसकी कीमती झूले और कुछ चीजे भेट मे दी। इनके सिवा मैंने वहुमूल्य रत्न भी को भेट मे दिये। राजकुमार उमराव सिंह वीमार होने के कारण राणा के साथ नही आया मैने उसके लिए एक उत्तम घोडा और कुछ कीमती चीजे भेट मे देते हुए राणा के सामने राणा का वेटा जवानसिंह राणा के साथ आया था। मैंने उसको भेट मे एक घोडा और कीमती सामान दिया। जो कर्मचारी राणा के साथ आये थे, मैंने उनको भी भेटो मे रुपये उस समय राणा के सम्मान मे मैने वीस हजार रुपये खर्च किये।

राणा की उदारता और महानता मे कोई अन्तर नही है। राज्य के मन्त्रियो मे किश वहुत समझदार और विचारशील था। उसने राज्य का सदा हित करना अपना कर्त्तव्य समझ परन्तु उस समय उसकी मृत्यु हो चुकी थी। राज्य के पतन मे वहुत से सरदार राणा के वि हो गये थे। परन्तु अँगरेजो के साथ सधि होने के कुछ दिन वाद विरोधी सरदारो मे

हैं नीति और धर्म का सिद्धान्त ससार के सभी महापुरुषो की दृष्टि मे एक रहा है। मनु, मोहम्मद और ईसा ने एक ही प्रकार के नैतिक और धार्मिक सिद्धान्तो का उपदेश किया है, उनका लक्ष्य एक ही था और वे मनुष्य को जीवन के एक ही मार्ग पर ले जाने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन मे प्रयत्नशील रहे। उनके समर्थको ने अपना-अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए नीति और धर्म के नये-नये रास्तो का निर्माण किया। लेकिन उनका मूल एक दूसरे के विरोधी नही है मूल व्यवस्था उन सब की एक है। समय और स्थानो की बहुत दूरी पर जन्म लेकर भी उन सिद्धान्तो ने एक ही सत्य का प्रचार किया। हम सभी इस बात को जानते है कि हजरत मूसा के सिद्धान्तो का आधार लेकर कुरान का जन्म हुआ और मनु के द्वारा मनुस्मृति की रचना हुई, उसमे यहूदी विश्वासो की आभा थी। एक दूसरे के विरोधी आवरणो को यदि हटा जाय तो यह मानना पडेगा की धर्म के मूल सिद्धान्तो मे कही किसी प्रकार का असादृश्य नही है। उन महापुरुषो ने एक ही तथ्य हम सब के सामने उपस्थित किया है। उस सत्य मे मनुष्य को नैतिक प्रकाश मिलता है। उसके द्वारा मनुष्य-समाज विभाजित नही होता, जातीयता की उत्पत्ति नही होती और एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के साथ विरोधी भाव नही पैदा होता। जीवन के नियमो और व्यवहारो की असमानता ने धर्म के अलग-अलग अखाडे पैदा कर दिये है और उन्ही के आधार पर प्राचीन काल मे मनुष्य सगठन एक दूसरे से अलग दिखायी देते है। मनुष्यो के नियमो और व्यवहारो मे भी बहुत से अतर पैदा हो गये है। इस प्रकार के अतर दूरवर्ती देशो मे ही नही है, बल्कि एक देश और पडोसी प्रान्तो मे भी उनके अलग-अलग रूप है। राजस्थान मे कई राज्य है, परन्तु जीवन के नियमो, व्यवहारो और सिद्धान्तो मे वे एक नही हैं। मेवाड और मारवाड राज्य एक दूसरे के पडोसी है। परन्तु मेवाड के सीसोदिया वश के साथ मारवाड के राठौरो की समता नही हो सकती। उनके नियमो और व्यवहारो मे विशाल अतर है। हम यहाँ पर उनके जीवन के वही विवरण देना चाहते है, जिनको इतिहास हमारे सामने उपस्थित करता है और जिनके सत्य और सही होने मे किसी को सन्देह नही हो सकता। उन्ही के आधार पर राजपूतो का चरित्र निर्माण हुआ है। उनके विचारो, विश्वासो और सामाजिक नियमो को ठीक-ठीक समझने के लिए उनके पूर्वजो के उन चरित्रो और विश्वासो की तहो को उलटना पडेगा, जिससे उनके व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन का स्रोत प्रवाहित हुआ है। प्रसिद्ध विचारक गोगेट के लिखने के अनुसार, मनुष्य के व्यवहार और वर्ताव उसकी उन्नति और अवनति का परिचय देते है। इस सिद्धान्त के आधार पर हम राजपूतो के अतीत और वर्तमान जीवन की आलोचना करे तो हमे स्वीकार करना पडेगा कि राजपूतो का पतन हुआ है। उनके पूर्वजो ने उनके प्राचीन पुरुषो को जीवन की फिलॉसॉफी मे हम उतना ही उन्नत पाते है, जितना कि यूनान वालो को, जिनके शिष्यो मे प्लेटो, थेलीज और पेथागोरस के नाम आज तक प्रसिद्ध है। उनके वे प्रसिद्ध ज्योतिषी आज कहाँ है, जिनके कार्यो ने योरप को आश्चर्य चकित किया था और उनके वे श्रेष्ट शिल्पी अब कहाँ है, जिनकी ससार ने किसी समय मुक्त कण्ठ से प्रशसा की थी ? उनका वह सगीत कहाँ है जिसके स्वरो ने विश्व को मोहित किया था और जिसको सुनकर रोता हुआ मनुष्य मुस्कराने लगता था।

प्राचीन काल मे उनके पूर्वजो के जीवन मे बहुत सी अच्छी बातो की सृष्टि हुई थी जिनके फलस्वरूप राजपूत लोग बहुत समय तक सजीव और शक्तिशाली बने रहे। यह सभी स्वीकार करते कि राजस्थान मे स्त्रियो का राजपूतो ने जो सम्मान दिया है, वह किसी दूसरे देश मे नही मिलता। ससार की किसी भी जाति ने स्त्रियो का उतना आदर नही किया, जितना कि राजपूतो ने किया है। उनके

मे विद्वेप करने लगे। चन्दावतो और शक्तावतो का पिछले दिनो मे मेल भी हो गया था, ले
बीच मे कलुषित व्यवहारो ने इन दिनो मे फिर से उग्र रूप धारण किया। राज्य के जिन ०
ने उनमे एकता कायम रखने की कोशिश की थी, वे निराश हो गये। शक्तावत सरदार
सिंह ने तो यहाँ तक कह डाला कि भेड और वकरी का एक घाट पानी पीना सम्भव हो
परन्तु चन्दावत और शक्तावत लोगो का मेल के साथ रह सकना सम्भव नही हो सकता

अँगरेजो के साथ राणा की सधि हो चुकी थी, परन्तु सामन्तो और सरदारो के स
के क्या सम्बन्ध रहेगे, इसका निर्णय अभी तक बाकी था। इसके लिए राणा ने सब म
सरदारो की एक सभा की और इसके सम्बन्ध मे लिखी गयी पत्रिका विचार और नि
सब के सामने उपस्थित की गयी। बडी उलझनो और आलोचनाओ के बाद जो निर्णय
पर राणा तथा सामन्तो और सरदारो के हस्ताक्षर हो गये। राज्य की व्यवस्था मु
आरम्भ हुई। जो सरदार निकाले गये थे, उनको बुलाया गया और जिन सरदारो ने f
रखा था, दमन किया गया। व्यवसाय की उन्नति के सभी साधन जुटाए गये, विद्रोही
राज्य के जिन इलाको पर अधिकार कर लिया था, उन पर फिर से अपना अधिकार कर
राणा ने वडी बुद्धिमानी से काम लिया और उसमे राणा को सफलता भी मिली। इस f
कुछ घटनाओ का यहाँ पर सक्षेप मे उल्लेख करना आवश्यक है।

मेवाड मे अरझा नाम का एक दुर्ग है। पूरावत गोत्र के सरदारो ने इस दुर्ग को
अधिकार से जवरदस्ती ले लिया था। पन्द्रह वर्षो के बाद शक्तावतो ने उस दुर्ग पर अपना
कर लिया और राणा को दस हजार रुपये देकर उन लोगो ने उस दुर्ग पर अपना अधिकार
लिया। इन दिनो मे उस दुर्ग को शक्तावत लोगो से ले लेना जरूरी समझा ग
शक्तावत लोगो ने सुना कि राणा का इरादा इस दुर्ग के भी लेने का है तो वे लोग वहु
हो उठे। शक्तावतो और चन्दावतो पर मेवाड का गौरव निर्भर करता है। इस विद्रोह क
होने से राणा को भी बडी चिंता हुई। लेकिन अरझा दुर्ग के सम्बन्ध मे वडी बुद्धिमान
निर्णय किया गया, जिससे राणा और शक्तावतो के बीच पैदा होने वाला विद्रोह दव ग
दुर्ग के सम्बन्ध मे जिन सरदारो के विद्रोही होने की सम्भावना थी, उसमे दो प्रमुख थे
एक का नाम जैतसिह था। राठौर वश की मेंडतिया शाखा मे इसका जन्म हुआ था वादश
के साथ युद्ध करने वाले शूरवीर जयमल ने भी इस शाखा मे जन्म लिया था।

राणा के साथ जैतसिह का विरोध जब शांत न हो रहा था तो राणा ने उसका f
सौंप दिया था। मैंने उसे सभी प्रकार समझाने की कोशिश की और उसमे मुझे ˎ
मैंने उसका विरोध समाप्त कर दिया और जैतसिह ने अधिकारो को खतम करते हुए र
जो कुछ लिखा, उसे उसने मेरे हाथो मे दे दिया।

भदेस्वर के सरदार हमीर का वर्णन पहले किया जा चुका है। चन्दावत गोत्र मे
लिया था। मेवाड-राज्य मे वह दूसरी श्रेणी का सरदार था, राणा के प्रधान मन्त्री सो
जिस सरदार ने मार डाला था, हमीर उसी का वेटा था। जिन सरदारो ने मेवाड-र ७
विद्रोह किया था, हमीर उनमे प्रधान था उनकी जागीर की आमदनी तीस हजार रुपये से
थी। लेकिन अपने दल-पौरुष के द्वारा उसने अपनी आमदनी अस्सी हजार रुपये वार्षिक
रखी थी। उसने राणा पर अपना अनुचित प्रभाव कायम कर रखा था। लाव्हा का ० ५० ५
उसका अभिन्न मित्र था। वैरोदा का दुर्ग भी उस समय उसी के अधिकार मे था। दोनों ०

विवाह के बाद राणा की लडकी जब अपने पति के परिवार मे गयी तो एक दिन उसके पति ने उससे पीने के लिए पानी माँगा। राणा की लडकी ने पानी देने मे अपना अपमान अनुभव किया। उसने पानी नही दिया और उसके उत्तर मे उसने जो कुछ कहा, उसमे उसका स्वाभिमान भरा हुआ था। उसके पति ने उसका उत्तर सुनकर बुरा माना और उसने अपनी पत्नी को उत्तर देते हुए कहा "यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नही कर सकती हो तो तुम इसी समय अपने पिता के पास चली जाओ।"

उस सामन्त ने अपने दूत के साथ राणा की लडकी को भेज दिया। कुछ समय के बाद राणा ने अपने जामाता को बुलाया और उसके आने पर राणा ने अपने सिंहासन पर उसे दाहिनी ओर स्थान दिया। राणा ने जामाता से सभी प्रकार की बाते की और अन्त मे आश्वासन देते हुए कहा कि आज से फिर कभी हमारी लडकी आपके साथ इस प्रकार का अशिष्ट व्यवहार न करेगी। इसके बाद राणा ने जामाता के साथ अपनी लडकी को भेज दिया।

राजपूतो मे पति और पत्नी के बीच का व्यवहार सर्वथा आदर्श है। यह व्यवहार ससार के किसी भी युग मे और किसी भी देश मे प्रशंसा का अधिकारी है। दाम्पत्य जीवन को सुन्दर और सुखमय बनाने के लिए पति का सम्मान और स्त्री का अनुराग अनिवार्य रूप से आवश्यक है, जैसा कि राजपूतो के जीवन मे देखा जाता है। उसके सम्बन्ध मे इतना ही कहना आवश्यक है। "दोनो के इस अनुराग को मरने के समय तक कायम रहने दो।" यह अनुराग सक्षेप मे, पति और पत्नी का आदर्श जीवन है। अतीत काल मे राजपूतो का यह जीवन था और आज भी है, हम इस बात पर पूरी तौर पर विश्वास करते है कि पति और पत्नी का यह जीवन किसी भी देश मे और किसी भी युग मे मनुष्य समाज को सुखी और सतोप पूर्ण बना सकता है। यह आदर्श राजपूत स्त्रियो मे जितना आज भी मौजूद है, उतना और उस प्रकार का अन्यत्र कही मिलेगा, इसमे मैं सन्देह करता हूँ। इतना ही नही मेरा तो विश्वास है कि स्त्री के जीवन का यह आदर्श, इस देश मे ही अन्यत्र कदाचित न मिलेगा। इस अटूट अनुराग का ही यह परिणाम है कि एक राजपूत अपनी पत्नी मे एक छोटे से अविचार के प्रति भी अवहेलना नही कर सकता। पति के प्रति राजपूत रमणी का जो अनुराग होता है वह ससार के इतिहास मे कही न मिलेगा। मनुष्य के जीवन की यह सबसे बडी सभ्यता है, जिसको सजीव मैंने राजपूतो मे देखा है। यह अनुराग उनके जीवन मे कभी छिन्न-भिन्न नही होता। स्त्रियो की रक्षा मे एक राजपूत अपने प्राणो को उत्सर्ग करता है और ऐसे अवसरो पर राजपूत रमणी अपने जीवन का बलिदान करती है।"

अपने जीवन के निर्माण मे हिन्दू जाति जिन धार्मिक ग्रन्थो का महत्व देती है, उनमे मनुस्मृति प्रधान है। इस ग्रथ मे मनुष्य के जीवन का आदर्श विधान पाया जाता है। प्राचीन काल मे विद्वान मनु के द्वारा यह ग्रन्थ लिखा गया था। इसमे स्त्री और पुरुष के जीवन की आदर्श प्रतिष्ठा की गयी है। राजपूतो के जीवन मे इस महान ग्रन्थ की छाया है और उसके विधान के अनुसार उनके जीवन का निर्माण हुआ है। मनुस्मृति मे स्त्री के सम्बन्ध मे बहुत सी प्रशसात्मक बाते लिखी गयी है। यहाँ पर दो-चार बातो का उल्लेख हमे आवश्यक मालूम होता है। उस महान ग्रथ मे बहुत साफ-साफ लिखा गया है "स्त्री का मुख जितना सुन्दर होता है, उतना ही वह पवित्र भी होता है। स्त्री का जीवन गगा के जल और सूर्य के किरणो के समान स्वय पवित्र है और दूसरो के जीवन को पवित्र करने वाला है × × स्त्री के जीवन का माधुर्य उसके नाम से आरम्भ होता है। जिन शब्दो को लेकर लडकियो के नाम रखे जाते है, उनमे कोमलता, नम्रता, मधुरता, प्यार स्नेह, उदारता, सुन्दरता और स्नेह परायणता का सामञ्जस्य रहता है।"

आप चाहे तो हमारा सहार करा सकते है । लेकिन हम लोग अपना यह अधिकार छो० जा नही सकते ।" इस विरोध मे मारवाड के राजा को उन सभी जाटो के लिए जिन्हे की माँग पर मेवाड भेजा जा रहा था—उनकी जमीनें सदा के लिए लिख देनी पडी । अधिकार को प्राप्त करके जाटो ने जाना स्वीकार कर लिया ।

इस प्रकार की घटनाओ से साबित होता है कि राजस्थान मे भूमि पर पूर्ण रूप से का अधिकार है । राजा कर वसूल करता है । मेवाड मे इस कर के लेने की व्यवस्था आ अनाज के ऊपर मेवाड मे दो तरह का कर लिया जाता है । ये दोनो कर ककूट और भुट्टाई से प्रसिद्ध है । गन्ना, पोस्ता, सरसो, सन, तमाखू, रुई, नील और फूलो पर दो रुपये प्रति लेकर छै रुपये तक लिया जाता है । खेतो मे अनाज के काटे जाने के पहले राज कर्मचारी के आधार पर जो कर लगा देते है, उसको ककूट कहते है । खेत का स्वामी कृषक यदि च समझे कि उस पर कर अधिक लगा लिया गया है, तो उसके विरुद्ध वह राजा के यहाँ प्रा दे सकता है । भुट्टाई कर के लिए भी वह राणा को प्रार्थना पत्र दे सकता है । खलिहान मे तैयार हो जाने पर और पैदावार ठीक-ठीक मालूम हो जाने पर राज कर्मचारियो के द्वारा लगाया जाता है, उसे भुट्टई करते है ।

यहाँ पर भुट्टाई की प्रथा पुरानी है । इस रीति के अनुसार जौ, गेहूँ और इस त दूसरी चीजो पर पैदावार का तृतीयाँश अथवा दो पंचमांश राजा को मिलता है और आधा भी ककूट और भुट्टाई की रीतियो के अनुसार, बाजार भाव से कर जोडकर निश्चि जाता है ।

इन करो के लगाने मे राज कर्मचारी आमतौर पर किसानो के साथ बेईमानी करते किसानो से रिश्वत लेते है और रिश्वत लेकर वे किसानो की पैदावार कम दिखाते है । रि पाने पर वे पैदावार को अधिक जाहिर करते हैं । ऐसा करने से किसानो पर लगने वाला जाता है । एक कर्मचारी के वाद दूसरा आता है और वह भी रिश्वत लेता है । किसानो का एक ही कर्मचारी से नही रहता । रिश्वत देकर एक कर्मचारी की सहायता प्राप्त कर लेने किसान अपनी दी हुई रिश्वत का लाभ नही उठा पाता । दूसरा कर्मचारी आकर उससे रिश्व की आशा करता है । न पाने पर वह किसान के विरुद्ध रिपोर्ट करता है कि उसके खेतो की राज्य के कागजो मे कम दिखलाता है । कर के सम्बन्ध की यह व्यवस्था किसानो के घातक है । सन् १८१८ ईसवी मे मेवाड-राज्य मे सुधार आरम्भ हुए । उनकी शुरुआत अ सधि के वाद से हुई । सन् १८२१ ईसवी के अन्तिम दिनो मे राज्य के तीन इलाको की मनुष्य की गयी । उनके सत्ताईस गाँवो मे केवल छै गावो मे मनुष्यो की आवादी थी और उनमें सव कर केवल तीन सौ उनहत्तर मनुष्य पहले रहते थे । इनमे भी तीन चौथाई आमली दुर्ग लेकिन नवीन गणना के अनुसार, उन छै गावो मे नौ सौ छब्बीस परिवार रहते हुए पाये तीन वर्षो मे उनकी आवादी वढकर तीन गुनी हो गयी । इसके साथ-साथ वहाँ की खेती और व्यवसायों मे भी उन्नति हुई । चौगुनी भूमि मे खेती का काम होने लगा । अगरेजो की सं वाद राज्य ने तेजी के साथ सभी प्रकार की उन्नति की । कमलमीर, रायपुर, राजनगर, मादी कुनेडा मराठो से लेकर, कोटा से जिहाजपुर, विद्रोही सरदारो से बहुत-सी भूमि और पहाडी से मेरवाडा लेकर राज्य मे मिला लिया गया । इस प्रकार जो नगर और ग्राम फिर से मिलाये गये, उनकी संख्या कुछ ही दिनो मे एक हजार पहुँच गयी ।

विपरीत, आपके साथ रहकर जगल का जीवन मेरे लिए स्वर्ग वन जायगा। स्त्री का धर्म यह है कि वह पति के सुख मे सुखो का और दुख मे दुखो का भोग करे। आपके चले जाने पर यहा के राजमहलो का सुख भोगना मेरे जीवन का सब से बडा पाप और अपराध होगा। उसमे पडनेकी अपेक्षा प्राण दे देना मेरे लिए कल्याणप्रद साबित होगा।"

राजपूत स्त्रियो का यह जीवन है, जिसका वर्णन यहाँ के प्राचीन ग्रथो मे मिलता है। यदि सावधानी के साथ राजपूत जाति का अध्ययन किया जाय तो उनके जीवन का नैतिक सौन्दर्य आज भी उनके घरो मे मिलता है। इस जीवन को कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति प्रशसा करेगा, इसमे सन्देह नही, यहाँ के ग्रन्थो मे और भी इस प्रकार के बहुत से उदाहरण पढने को मिलते है जिनका प्रतिपादन यहाँ के प्राचीन कवियो ने अपने ग्रथो मे किया है। ये सभी घटनाये राजपूतो की है। विस्तार के भय से यहाँ पर उनके उल्लेख आवश्यक नही है। भारत के अनेक प्राचीन ग्रथो के अँगरेजी और दूसरी भाषाओ मे अनुवाद प्रकाशित हुए है। उनके पढने मे दूसरे देशो के लोग राजपूतो के ऊँचे चरित्रो से बहुत-कुछ परिचित हो चुके हैं और विलसन, जोन्स कोलब्रुक, ग्रिफिथ, शेरिंग, टार्न, काडयेल, मनियार, और मेक्समूलर आदि विद्वानो ने राजपूत स्त्रियो की प्रशसा की है।

भारत के ऐतिहासिक ग्रथो का अध्ययन करने से राजपूतो के श्रेष्ठ चरित्र का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके लिए निष्पक्ष भाव से खोज करने की आवश्यकता है। यहाँ का इतिहास बहुत कुछ अस्पष्ट है। इसीलिए हम लोग राजपूतो के गुणो से परिचित नही हैं। लेकिन इसमे राजपूतो के महत्वपूर्ण चरित्र को कुछ आघात नही पहुँचता। यह हमारा काम है कि हम उनके चरित्र की श्रेष्ठता की खोज, करे और जो सत्य है, उसे स्वीकार करे। यहाँ पर इतिहास की हम उन्ही घटनाओ का उल्लेख करेगे जिनसे राजपूतो को श्रेष्ठता का पता चलता है।

पृथ्वीराज चोहान ने समेता की राजकन्या का अपहरण किया था। उस समय उसकी सहायता के लिए जो सेना साथ गयी थी, उस पर महोबा नामक स्थान पर चन्देल राजा परिमाल ने आक्रमण किया था। उस आक्रमण से उसके बहुत से आदमी मारे गये थे। इसका बदला लेने के लिए पृथ्वीराज ने अपनी शक्तिशाली सेना लेकर राजा परिमाल के विरुद्ध आक्रमण किया। सिरसा नामक स्थान मे पहुँच कर पृथ्वीराज की सेना ने परिमाल की सेना का विध्वश किया।

पृथ्वीराज के इस आक्रमण का समाचार राजा परिमाल ने सुना। उसे यह भी मालूम हुआ कि पृथ्वीराज की सेना महोबा पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ रही है। परिमाल भयभीत हो उठा। उसने अपनी रानी मालिनी के साथ परामर्श किया और अपना दूत भेज कर पृथ्वीराज से प्रार्थना की कि वह एक महीना महोबा पर आक्रमण न करे।

परिमाल के दूत ने पहोज नदी के करीब पृथ्वीराज से भेट की और प्रार्थना की कि इस समय राजा परिमाल की सेना के दो सरदार—आल्हा और ऊदल राज्य से बाहर हैं। इसलिए इस असहाय अवस्था मे राजा परिमाल ने एक महीना आक्रमण न करने के लिए आप से प्रार्थना की है।

दूत की इस बात को सुनकर पृथ्वीराज ने राजा परिमाल की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और ठीक एक महीना आक्रमण न करने के लिए उसने दूत को आश्वासन दिया। दूत वहाँ से लौट गया। उसके जाने के बाद पृथ्वीराज ने अपने मित्र कवि चद से पूछा कि महोबा के सरदार आल्हा और ऊदल कौन है और वे महोबा छोडकर क्यो चले गये है।

पृथ्वीराज के प्रश्न का उत्तर देते हुए चद कवि ने कहा "वत्सराज एक शूरवीर सरदार राजा परिमाल की सेना का सेनापति था। उन्हीं दिनो मे गौद जाति के लोगो ने आक्रमण करके

स्वरूप राज्य की शक्तियाँ सभी प्रकार भीपरा रूप से क्षीरा हो गयी। इन्ही दिनो मे सरदारो ने विद्रोह किये। उसके फलस्वरूप अराजकता की वृद्धि हुई।

इस प्रकार की परिस्थितियो के काररा राज्य का भीषरा रूप से पतन हुआ। के नाम पर राज्य की गरीबी भयानक हो उठी। ऐसी दशा मे जब कि राज्य व्यवसाय नष्ट हो चुके थे, खानो के खुदवाने का काम बिल्कुल असम्भव था। इसीलिए राज्य मे वह कार्य बन्द रहा और अब तक बन्द है। खानो की जमीन पर बहुत दूरी भरा हुआ है और अब वे नष्ट हो चुकी है। एक बार इसके लिये चेष्टा की गयी थी। उससे लाभ होने की आशा न होने के काररा उस कार्य को बन्द कर देना पडा।

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

मेवाड मे धार्मिक प्रवृत्ति—लोगो के विश्वासो का आधार—महादेव के भक्त रा राज्य मे गुसाईं लोगो का सम्मान—जैनियो का प्रभाव—ब्राह्मराो सन्यासियो का उनको राज्य की सहायता—प्रजा का अधविश्वास—जैन सम्प्रदाय का प्रभाव—राज्य के त्योहार।

भारत का प्रधान और पुराना धर्म सनातन धर्म है। उस धर्म के सभी र पौराशिक कथाओ के आधार पर चलते है। हिन्दुओं के शास्त्रो मे जो धार्मिक आदेश उनका समन्वय कथाओ के रूप मे पुराराो मे किया गया है। इन कथाओ की आलोच हमारा यहाँ पर उद्देश्य नही है। इसलिये उनके सम्बन्ध मे यहाँ पर इतना ही लिखना है कि धर्म के नाम पर जो रीति और रिवाज इस देश मे प्रचलित है, उनको पुराराो मिलती है। राजस्थान मे इन पुराराो का अधिक प्रभाव है। इस देश मे और विशेषकर के राज्यो मे आश्चर्यजनक परिवर्तन हुये है। उनके पुराने अस्तित्व मिट गये हैं। बडी-ब धानियाँ बरबाद हो गयी है, विशाल नगर वीरान हो गये है और उनमे रहने वाले मनुष्यो मे अगरिगत परिवर्तन हुए हैं। परन्तु उनके प्रचलित रिवाजो और व्यवहारो मे कोई नही हुआ।

हिन्दुओ के धार्मिक मूल ग्रन्थ वेद है। परन्तु उनके धार्मिक विश्वासो को प्राच लेकर अब तक पुराराो से प्रेररा मिली है। राजपूत इन पुराराो को सबसे अधिक महत्व राजस्थान मे महादेव की पूजा होती है। राजपूत महादेव को ही अपना आराध्य देवता म वे लोग महादेव को एकलिंग भगवान के नाम से भी पुकारते है। मेवाड मे एकलिंग के f मन्दिर है, उनमे आराध्य देव की मूर्त्ति के आगे धातु की बनी हुई वृषभ की मूर्त्ति पायी गहिलोत वश के राजा एकलिंग को अपना भगवान मानते है और उसी की पूजा करते है

उदयपुर से तीन कोस उत्तर की तरफ एक पहाडी मार्ग के बीच मे भगवान ,फ प्रसिद्ध मन्दिर है। एकलिंग के पुजारियो को गोस्वामी कहा जाता है। ये लोग अपना प करते। उनके शिष्य उत्तराधिकारी होते है। शैवपुजारी अपने शरीर मे भस्म लगाते है अ वस्त्र पहनते हैं। मरने पर ये लोग जलाये नही जाते। बल्कि मृत शरीर को समाधि दी

महोवा पर फिर से अधिकार किया था। राजा परिमाल के राज्य का विस्तार हमारे पिता ने किया था और गोदी लोगो के प्रसिद्ध दुर्ग देवगढ और चाँदवारी को जीतकर महोवा के राज्य मे मिला दिया था। यादुनो के युद्ध मे हमने विजय पायी थी और महोवा की सेना को लेकर हमने हिन्दोल का विध्वस किया था। इस तरह की अनेक लडाइयो मे विजय प्राप्त करके राजा परिमाल का प्रभुत्व कात्वाइर देश तक हमने कायम किया था। कुशवाहा लोगो के आक्रमण को हमने रोका था। गया के युद्ध मे हमने विजय पायी थी और कितने ही भयकर युद्धो मे हमने शत्रुओ को पराजित किया था। इस प्रकार अनेक लडाइयो मे विजय प्राप्त करके हमारे पिता ने राजा परिमाल के गौरव की वृद्धि की थी। उसका पुरस्कार हमको राजा से मिल चुका है। पिता के मरने के बाद महोवा की रक्षा के लिये हम दोनो भाइयो ने चौतीस बार शत्रुओं का मुकाविला किया था और सात युद्धो मे शत्रुओ को पराजित कर उनकी सम्पत्ति हमने राजा परिमाल को सौपी थी तीन युद्धो मे हमारे प्राण सकट मे पड गये थे किसी प्रकार से हमने शत्रुओ को नीचा दिखाया था यह सब हमने महोवा के गौरव की रक्षा के लिए किया जिसके पुरस्कार मे राजा परिमाल ने हमको राज्य से निकल जाने का आदेश दिया। इस लिए हमारा महोवा लोटकर जाना सम्भव नही है।'

आल्हा के मुख से इन वातो को सुन कर दूत को निराशा होने लगी। उसने कुछ सोच-समझकर आल्हा को उत्तर देते हुए कहा 'आपने जो कुछ कहा है, वह सब सही है। आप के पिता ने और आपने वहुत समय तक महोवा के गौरव की रक्षा की है। राजा परिमाल ने आपके साथ जो अपराध किया है उसकी पीडा आपको न भूलना चाहिए ऐसा होना स्वाभाविक है। मैं राजा परिमाल को क्षमा करने की वात आप से नही कहता। गोदी लोगो के आकमण राजा परिमाल ने महोवा से भागकर अपने प्राणो की रक्षा की थी। आज फिर वही हो सकता है। परन्तु यहाँ पर प्रश्न महोवा के गौरव की रक्षा का है। रानी मालिनी को आप ने सदा महोवा मे आकर माता कहकर पुकारा है और राजमाता मालिनी ने सदा आप को वेटा कहकर पुकारा है। जिसको आप ने सैकडो और हजारो वार माता कहा, उसने शत्रुओ के आक्रमण पर अपने पुत्रो की याद की है। महोवा आज असहाय हो रहा है। पृथ्वीराज ने तीस दिनो तक युद्ध न करने को जो आश्वासन दिया है, वह समय समाप्त होने वाला हे। इकतीसवे दिन चौहानो की विशाल सेना महोवे के भीतर प्रवेश करेगी। उस समय वहाँ की लडकियो और स्त्रियो का क्या दृश्य होगा। महोवा के राज महल मे शत्रुओ के आक्रमण करने पर आपकी माता रानी मालिनी के गौरव की रक्षा कौन करेगा। ये सव वाते आप को सुनने को मिलेगी। आज महोवे के एक-एक स्त्री-पुरुष के नेत्र आप की तरफ देख रहे है। इस सकट काल मे महोवे की रक्षा करना आपका कर्तव्य है। पृथ्वीराज के आक्रमण करने पर रानी मालिनी ने आप दोनो भाइयो के नामो को लेकर अपने महल मे क्रन्दन किया है। मेरे आने के समय रानी ने रो-रो-कर वहुत-सी वाते कहने के लिए मुझे समझाया है। मै आप को समझाने नही आया। केवल इतना ही कहने आया हूँ कि जिस महोवे के गौरव की रक्षा आपके द्वारा सदा हुई है, वह गौरव अव नष्ट होने जा रहा है।'

जिस समय दूत महोवे के सम्बन्ध मे ये वाते कह रहा था, पास ही आल्हा की माता देवला देवी खडी हुई इन वातो को सुन रही थी। वह कुछ कहना चाहती थी। उस समय ऊदल ने दूत से कहा . 'महोवे के गौरव का विनाश हो जाय परन्तु हम लोग अव लौट कर महोवा नही जा सकते। राजा परिमाल का वह आदेश आज हमारे कानो मे गूँज रहा है। अव कन्नौज छोड कर महोवा जाना हमारे लिए असम्भव है।''

बोलचाल की भाषा मे गोस्वामियो को [गोसाई] कहा जाता है। मेवाड मे बहुत से ऐ लोग पाये जाते है, जो केवल पुजारी ही नही होते, बल्कि वे जीवन के दूसरा व्यवसाय भी

इन गोसई लोगो ने मेवाड मे राजा की तरफ से सदा सम्मान प्राप्त किया है। राजकर्मचारी वहाँ पर गोसाई देखे गये है। लोग अपने मठो और आश्रमो मे रहा जीवन-निर्वाह के लिए राज्य की तरफ से उनको भूमि दी जाती है। कुछ लोग भिक्षा अपना जीवन निर्वाह करते है। यहाँ के बहुत से ब्राह्मण और राजपूत इन गोसाई लोगो के मे पहुँच जाते है और उनकी धार्मिक दीक्षा ले लेते है। गुर्जर लोगो मे अधिक सख्या लोग मिलते है। मेवाड के राजपरिवार मे एकलिग भगवान की पूजा होती है। उसके राणा के जाने पर एक बडा उत्सव मनाया जाता है।

राजस्थान मे जैन सम्पप्रदायवालो की भी अच्छी सख्या है। बहुत से राजपूत इस के लोगो को महत्व देते है। राजस्थान मे एक लाख से अधिक परिवार जैनियो के है। ध सम्पत्तिशालियो के द्वारा इस सम्प्रदाय के लोगो को बहुत बडी आर्थिक सहायता मिलत सम्प्रदाय के लोग जिन पर्वतो को पवित्र मानते है, उनमे आबू, पालिथान * और गिर लोग अधिक महत्व देते है। मेवाड के अनेक मत्री और राजविभाग के अधिकाश कर्मचारी पजाब से लेकर समुद्र के किनारे के सभी प्रसिद्ध नगरो मे जैन सम्प्रदाय को मानने वाले रहते है। उदयपुर और उसके दूसरे नगरो मे प्रसिद्ध कर्मचारी इसी सम्प्रदाय के लोग है अहिंसा को अपना सबसे प्रधान धर्म मानते है। अनहिलवाडा पट्टन का राजकुमार सम्प्रदाय को माननेवाला था। इस सप्रम्दाय के लोग बरसात के दिनो मे अपना चलना-जहाँ तक सम्भव होता है—बद रहते है। उनको भय रहता है कि इन दिनो मे कीडे मक सख्या मे होते है और उनमे किसी के पैरो के नीचे दवकर मर जाने से हिसा होती है बरसात के दिनो मे प्रकाश के लिए लालटेन भी नही जलाते। क्योकि उसके द्वारा बहुत से पतिगो की मृत्यु होती है।

मेवाड मे ब्राह्मणो, सन्यासियो और गुसाइयो की बहुत बडी सख्या है। पुराणो वाली प्रेरणा के आधार पर राज्य मे इन सब लोगो को सम्मान मिलता है और धर्म उन लोगो की सहायता की जाती है। मेवाड की वार्षिक आमदनी का पाँचवा भाग धा मे खर्च किया जाता है। इस भावना से ब्राह्मणो और गुसाइयो को जो भूमि दी जाती है, फर लौटाई नही जाती। उस भूमि पर पाने वाले का उसके पुत्रों और प्रपौत्रो त अधिकार होता है। इस प्रकार दी गयी भूमि किसी भी दशा में लौटालना एक धार्मिक है, जिसके लिए राजा को साठ वर्ष नरक मे रहना पडता है और उसके राज्य की उ बजर हो जाती है, इसका डर मेवाड के राणा और उसके परिवार को सदा रहता है।

इस प्रकार के अधविश्वास मेवाड मे एक दो नही बहुत है। राजस्थान के लिए नयी बात नही है। योरप के धार्मिक जीवन मे ऐसी बहुत-सी बाते गुजर चुकी है, जो विश्वासो के साथ पूर्ण रूप से मिलती-जुलती है। योरप मे चर्च का पादरी मनुष्यो के

* पालिथान जैनियो का एक मशहूर तीर्थस्थान है। पाली एक जाति का नाम है। से जो विभिन्न जातियाँ भारत मे आक्रमण करने के लिए आयी थी, उनमे एक पाली जाति उसी पाली जाति से इस स्थान का नाम पालिथान पडा है।

उसके मस्यतक पर रखा और आशीर्वाद। + उसी समय आल्हा और ऊदल ने राजमाता के सामने प्रतिज्ञा की 'अपनी जिन्दगी के अन्तिम समय तक हम लोग महोबा के गौरव की रक्षा करेंगे।" राजमाता मालिनी ने दोनो भाइयो की उस प्रतिज्ञा को सुन कर मोतियो की वर्षा की और फिर वे मोती राज्य के नौकरो मे बाँटे गये। * कन्नौज मे जाकर जो दूत आल्हा और ऊदल को महोबा लाया था उसको पुरस्कार मे चार ग्राम दिये गये। साथ ही प्रशंसा की गयी।

आल्हा और ऊदल के आने का समाचार पृथ्वीराज के शिविर मे भी पहुँच चुका था। चन्द कवि ने पृथ्वीराज को परामर्श देते हुए कहा "आक्रमण न करने के लिए महोबा के लिए महोबा के दूत को जो आपने आश्वासन दिया था, उसकी अवधि समाप्त हो चुकी है। इसलिए दूत को भेज कर राजा परिमाल को सन्देश देना चाहिए कि वह या तो युद्ध के लिए तैयार हो जाय अथवा अपनी राजधानी महोवा खाली कर दे।"

चन्दकवि के इस परामर्श का उत्तर देते हुए पृथ्वीराज ने कहा "वह अवधि बीत चुकी है। लेकिन इस प्रकार युद्ध रोकने के लिए जो समय दिया जाता है, उसके बाद सात दिनो तक किसी प्रकार का आक्रमण नही किया जाता है। यह राजपूतो की प्राचीन मर्यादा है।"

सात दिन और बीत गये। चन्दकवि के परामर्श के अनुसार पृथ्वीराज के शिविर से महोबा दूत भेजा गया। राजा परिमाल ने दूत के मुख से पृथ्वीराज चौहान का सदेश सुना। उसने उत्तर मे कहला भेज गया . "मैं महीने के पहले दिन रविवार को अपनी सेना के साथ युद्ध स्थल मे पृथ्वीराज से भेट करूँगा।"

पृथ्वीराज के शिविर मे शुक्रवार के दिन शखध्वनि की गयी और युद्ध के बाजे बजे। इससे महोबा के लोगो को युद्ध के आरम्भ होने की सूचना मिली ‡ पृथ्वीराज के शिविर मे युद्ध की तैयारियाँ होने लगी। उसकी विशाल सेना के शूरवीर सरदार और सैनिक तेजी के साथ युद्ध के लिए तैयार होने लगे।

राजपूतो का विश्वास है कि युद्ध करना राजपूतो का धर्म है। युद्ध मे विजयी होने पर उनको इस लोक मे कीर्ति मिलती है और युद्ध मे मारे जाने पर परलोक मे स्वर्ग प्राप्त होता है। राजपूतो को मिलने वाले स्वर्ग की प्रशंसाये उनके प्राचीन ग्रथो मे बडे विस्तार के साथ लिखी गयी है। उन ग्रथो को राजपूत पढते है और उन पर वे पूरी तौर विश्वास करते है। उनकी धारणा है कि युद्ध मे मारे जाने के बाद स्वर्ग मे राजपूतो को सबसे ऊँचा स्थान मिलता है। वहाँ पर सुन्दरी अप्सराये उनका स्वागत करती है और अनेक प्रकार आदर सत्कार करती है।

× राजस्थान मे सोने और चाँदी के सिक्को को एक पात्र मे लेकर और उसे मस्तक पर रखकर अशीर्वाद देने की पुरानी प्रथा है। ये सिक्के बाद मे दीन-दुखियो को बाँट दिये जाते हैं।

* राजस्थान की यह प्रथा बहुत प्राचीन और नाथरावली के नाम से प्रसिद्ध है। अत्यन्त प्रसन्नता और सतोष के समय इस प्रथा का राजपूतो मे पालन किया जाता हे। आल्हा और ऊदल के आने पर राजमाता को अकथनीय प्रसन्नता हुई थी। वह पहले से ही इन दोनो पराक्रमी भाइयो का बहुत सत्कार करती थी। इन दिनो भाइयो के न होने के कारण पृथ्वीराज के आक्रमण करने पर राजमाता को घबराहट हुई थी। इस समय उसकी घबराहट का कोई कारण न था।

‡ तीन बार शखध्वनि करके और प्रत्येक शखध्वनि के साथ युद्ध का बाजा बजा कर राजपूत अपनी सेना लेकर युद्ध स्थल की ओर रवाना होते है। राजस्थान मे युद्ध सम्बन्धी इस प्रकार की पुरानी प्रथाये है, जिनका पालन राजपूत लोग अब तक करते है।

यिक बातों को विस्तार देना हमारा उद्देश्य नही है। आवश्यकता के अनुसार संक्षेप में
पर प्रकाश डालना पडा है।

भारत मे बौद्ध, वैष्णव, शैव और शाक्त सम्प्रदायो का प्रचार है। इन सम्प्रदायो
दिनो तक झगडा चलता रहा है। परन्तु अब वह बहुत कुछ खतम हो गया है। इस प्रकार
दिनो मे बहुत से जैन धर्मावलम्बी भागकर मेवाड आ गये थे। इस सम्प्रदाय को गहिलोत
आदि पुरुषो से प्रोत्साहन मिला था। पार्श्वनाथ का स्तम्भ—जो चित्तौर मे बना हुआ है—इ
का प्रमाण है। राजस्थान के अनेक राज्य जैन सम्प्रदाय के पोषक रहे है। यहाँ के रा
वैष्णव धर्म का भी प्रचार है। मेवाड के नाथद्वारा मे जो प्रसिद्ध मन्दिर बना हुआ है, उसमे
की मूर्ति है। औरङ्गजेब से सताये जाने पर नाथद्वारा के पुजारी श्रीकृष्ण की मूर्ति लेकर
और उस समय राणा ने उदयपुर मे उनको आश्रय दिया था। उदयपुर से ग्यारह कोस उ
की तरफ जो मन्दिर बना हुआ है, उसमे वैष्णव पुजारियो ने कृष्ण की मूर्ति को रखा। इस
की सीढियाँ बडी मजबूत सगमरमर की बनी हुई है। उनके बीच बूनस नदी बहती है। ना
के मन्दिर मे श्रीकृष्ण की मूर्ति के सिवा और कोई मूर्ति नही थी। उस मन्दिर की ख्याति
के नाम से ही है।

अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने हिन्दू विचारो को प्रधानता दी थी। जहाँगीर
राजपूत महिला से हुआ था। इसलिए उसके विचारो मे हिन्दू सस्कृति का समन्वय था। शाह
शैव धर्म की दीक्षा ली थी। इसके फलस्वरूप वैष्णव लोगो पर अत्याचार किये गये।
उदयपुर से श्रीकृष्ण की मूर्ति लेकर चले गये थे और भारत के अनेक स्थानो मे घूमते रहे
दिनो मे शैव लोगो ने शाहजहाँ को दीक्षा देकर अपना प्रभुत्व कायम किया उस समय
अत्याचारो से पीडित होकर कृष्ण की मूर्ति के साथ फिर भागे और अत मे फिर उदयपुर मे ही
मिला। परन्तु वहाँ पर वे लोग अधिक समय तक ठहर न सके। उन दिनो मे औ
अत्याचार आरम्भ हो गये थे। उससे श्रीकृष्ण की मूर्ति की रक्षा करने के लिए राणा रा
औरङ्गजेब के साथ युद्ध किया। उस समय अगणित राजपूतो ने अपने जीवन की आहुतियाँ
वैष्णव पुजारी अपनी मूर्ति के साथ कोटा होकर रामपुर चले गये और मेवाड मे पहुँच गये।
का इरादा कृष्ण की मूर्ति को उदयपुर ले आने का था। लेकिन रास्ते की एक घटना से
बाधा पडी। मेवाड मे शियोर नामक एक गाँव है। वहाँ से होकर एक रथ पर बैठे हुए
पुजारी श्रीकृष्ण की मूर्ति को ला रहे थे। पृथ्वी मे एकाएक रथ का पहिया ऐसा धँस गया f
बडी देर तक निकल न सका। उसी समय एक ज्योतिषी ने आकर के कहा . "भगवान
का इरादा यही पर रहने का है। इसीलिए रथ का पहिया ऊपर को उचक नही रहा है।

ज्योतिषी की इस बात को सुनकर राणा ने वही पर मन्दिर बनवाने की आज्ञा
शियोर ग्राम मेवाड-राज्य के दैलवाडा सरदार की जागीर मे था। वह सरदार ज्योतिषी की
को सुनकर वहाँ आया और मदिर बनने का कार्य आरम्भ हो गया। उस मदिर मे उस ग
सिवा और भी बहुत सी भूमि लगा दी गयी। राणा ने इसे स्वीकार कर लिया। मदिर
जाने पर श्रीकृष्ण की मूर्ति उसमे रखी गयी। उसी समय से वह ग्राम नाथद्वारा के नाम से
हुआ और थोडे ही दिनो मे वह ग्राम एक विशाल नगर बन गया।

नाथद्वारे के पूर्व की तरफ के पर्वत दीवार का काम करते है और उत्तर-पश्चिम की
बूनस नदी प्रवाहित होती है। पहाड़ और नदी के बीच मे श्रीकृष्ण का यह मंदिर बना हुआ
राजपूतो का विश्वास है कि यहाँ पर आकर श्रीकृष्ण के दर्शन करने पर मनुष्य के पापो का

रवाना हो चुकी है। उसके मुकाविले मे युद्ध के लिए महोवा की सेना न पहुँचेगी तो इस राज्य की प्रजा का शत्रु-सेना भयानक रूप से विनाश करेगी।"

चदेल राजा परिमाल ने इस प्रकार की बातो को समाप्त करते हुए कहा "आज शनिश्चर का शुभ दिन है। कल हमारी सेना शत्रुओ का सहार करने के लिए रवाना होगी।

राजा परिमाल के चुप होते ही आल्हा ने आवेश मे आकर कहा, "मैं समझता हूँ, शत्रुओ की सेना इस राज्य के गामो को विध्वश करने के लिए पहुँच गयी है। इस दशा मे चुप होकर बैठे रहना राजपूतो की मर्यादा के विरुद्ध है। शत्रु के आक्रमण करने पर जो राजपूत युद्ध नही करना चाहता, उसको मरने पर नर्क होता है और जिन्दगी के दिनो मे अपयश की कालिमा उसके मुख पर लगती है। मृत्यु के बाद युद्ध से डरने वाले राजपूतो को नरक की भीषण यातनाये सहनी पडती हैं। परन्तु जो राजपूत युद्ध के समय अपने कर्त्तव्य का पालन करते है उनको अक्षय कीर्ति और स्वर्ग की प्राप्ति होती है।"

इस परामर्श के समय आल्हा और ऊदल ने उत्तेजना पैदा करने वाली बाते कही। परन्तु राजा परिमाल के निर्बल अन्त करण पर उनका कोई प्रभाव पडा। परामर्श के बाद परिमाल रानी मालिनी के महल मे गया। रानी ने उसके मुख से अनेक कायरता पूर्ण बाते सुनी। उनको सुनकर उसे अपमान मालूम हुआ। वह परिमाल की निर्बलता और कायरता को पहले से जानती थी। उसे किसी प्रकार प्रोत्साहन दे कर परिमाल को युद्ध के लिए तैयार किया और अपनी सेना मे उसी समय संदेश भेजा कि राजा की तैयारी युद्ध के लिए हो रही है। इसके बाद भी मालिनी ने परिमाल को बहुत-सी बाते समझायी और युद्ध के लिए उसको तैयार किया।

महोवा मे युद्ध की तैयारिया शुरु हो गयी। सभी सैनिक युद्ध के वस्त्र पहनने लगे समर के लिए तैयार हो चुकने पर आल्हा ने अपने इष्ट देव हनुमान की मूर्ति का पूजन किया और फिर अपने छोटे भाई ऊदल को बुलाकर एवम् अपने पुत्र इन्दल को सामने देख कर कहना आरम्भ किया "हमको अपने पिता वत्सराज के यश को कायम रखना है। हम दोनो भाइयो ने देवल देवी के गर्भ से जन्म पाया है। हमारी नसो मे राजपूत का स्वाभिमान है और शरीर के कण-कण मे हम अपने पूर्वजो का गौरव अनुभव करते हैं। युद्ध-क्षेत्र मे शत्रुओ का सहार करेगे। आक्रमण-कारियो के सामने मस्तक नीचा करना राजपूतो का कभी किसी अवस्था मे धर्म नही है।"

बडे भाई आल्हा के मुख से इस प्रकार की वीरोचित बातो को सुनकर ऊदल ने कहा "आपने एक सच्चे राजपूत की भाँति इस समय युद्ध करने की प्रतिज्ञा की है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आज मेरी यह तेज तलवार शत्रुओ की गरदन पर अविराम गति से चलेगी और भयकर रूप से शत्रुओ का संहार करेगी। जिस अभिमानी पृथ्वीराज ने महोवे के गौरव को नष्ट करने के लिए आक्रमण किया है, युद्ध क्षेत्र मे मै उसकी तलवार देख लेना चाहता हूँ।"

देवल देवी पास खडी हुई अपने बेटो की प्रतिज्ञाओ को सुन रही थी। ऊदल के चुप हो जाने पर उसने कहा "तुम्हारी इन प्रतिज्ञाओ को मैंने सुना है। तुम दोनो मेरे सुयोग्य बेटे हो। तुम्हारे मुख से प्रतिज्ञा के इन शब्दो को सुनकर मेरा मस्तक ऊँचा हो गया है। निश्चय ही तुम राजपूतो की मर्यादा को कायम रखोगे। युद्ध मे जाने के समय मै तुमको अन्तरात्मा से आशीर्वाद देती हूँ। युद्ध मे तुम्हारी विजय होगी। यदि तुद शत्रु के पराक्रम को पराजित न कर सको तो मैं पूरी आशा करती हूँ कि अपनी जननी जन्म भूमि के गौरव की रक्षा के लिए तुम अपने प्राणो को उत्सर्ग करोगे।

त्यौहार का दिन समाप्त होने पर एक ऊँचे मकान की छत से नगाडा बजाया उसको सुनते ही सरदार और सामन्त अपनी टोलियो के साथ राणा के पास जाते है। सब को लेकर एक निश्चित स्थान पर पहुँचता है। वहाँ पर नृत्य और गान की व्यवस है। प्रजा बडी सख्या मे पहुँचकर उस उत्सव को देखती है।

शीतला षष्ठी—चैत महीने के शुक्लपक्ष मे छठे दिन यह उत्सव होता है। रा विश्वास है कि शीतला देवी की पूजा करने से बच्चो की रक्षा होती है। इसलिए इस दि शीतला देवी के मदिर मे जाती है। यह मदिर उदयपुर के पास एक पहाडी शिखर पर ब है। वहाँ जाकर राजपूत स्त्रियाँ देवी का पूजा करती है। वहाँ से लौटने पर उनके घरो तरह की खुशियाँ मनायी जाती है।

फूलडोल—बरसात के आरम्भ मे इस त्योहार का उत्सव होता है। इस त्य शुरूआत तलवार की पूजा से होती है। यह पूजा प्रत्येक राजपूत के घर से लेकर राणा तक होती है। इस त्योहार को राजपूत लोग बडे उत्साह के साथ मानते है और अपनी की पूजा करते है।

रामनवमी—लोगो की धारणा है कि भगवान रामचन्द्र ने इसी दिन जन्म लि इसीलिए इसका नाम रामनवमी पड़ा है। राम के वशज इस दिन को बहुत पवित्र मान रामनवमी के पहले दिन अशोकाष्टमी का त्योहार होता है। उनमे राणा अपने सरदा सामन्तों के साथ नगर के बाहर जाकर भगवती की उपासना करता है।

रामनवमी के दिन हाथी, घोडो और अस्त्र-शस्त्रो की पूजा होती है। राणा बडी धू के साथ चौगान महल मे जाता है। वहाँ पर अनेक प्रकार के उल्लास मनाये जाने की ० होती है। हिन्दू धर्म-ग्रन्थो मे लिखा है कि इस दिन रामचन्द्र की पूजा करने से बहुत पुण है और उपवास तथा जागरण करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

नव गौरी पूजा—हिन्दू धर्म ग्रन्थो के अनुसार, बैसाख का महीना बहुत पवित्र हो इस महीने मे राजपूत लोग नव गौरी पूजा का त्योहार मनाते है। इस दिन मेवाड के सोलह सरदार अपने घोडो पर सवार होकर राणा के साथ पंशोला के करीब एक स्थान पर जा वहाँ पर भगवती गौरी की पूजा होती है।

सावित्री व्रत और रम्भा तृतीया—ये दो त्योहार है। जेठ वदी चतुर्दशी को सावि- मनाया जाता है। यह त्योहार स्त्रियो से सम्बन्ध रखता है। स्त्रियाँ उपवास करती है और प सावित्री की कथा सुनती है। उन्हे बताया गया है कि इस दिन उपवास करने से और सावि- कथा सुनने से कोई भी स्त्री विधवा नही होती। इसीलिए किसी वट के पास जाकर विधि स्त्रियाँ सावित्री की पूजा करती है, उपवास रहती है और कथा सुनती है।

जेठ सुदी तीज को रम्भा तृतीया का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियाँ व्रत है। रम्भा देवी की पूजा करती है। स्त्रियो को ये विश्वास कराया गया है कि रम्भा देवी आराधना करने से धन की प्राप्ति होती है।

अरण्यषष्ठी—जेठ महीने के शुक्लपक्ष मे भगवती षष्ठी की जो पूजा होती है, उसे अरु कहते है। विवाहित स्त्रियाँ इस पर्व को विशेष महत्व देती है और वट अथवा पीपल की जल देकर देवी की आराधना करती है। स्त्री-समाज मे इस प्रकार का विश्वास है कि ० की पूजा करने से स्त्रियो को पुत्र लाभ होता है।

पार्वती तृतीया—सवान सुदी तृतीया का व्रत रखा जाता है। राजपूत लोग इस व्रत मे

प्रसिद्ध इतिहासकार वर्नियर यशवंतसिंह की रानी से बहुत प्रभावित हुआ था। उसने अपने प्रसिद्ध ग्रथ मे लिखा है · "राजपूत स्त्रियो का इस प्रकार साहस और शौर्य ससार मे अन्यत्र कही न मिलेगा।"

राजस्थान के इतिहास मे इस प्रकार की घटनाये बहुत अधिक है। पृथ्वीराज ने जब कन्नौज के राजा जयचन्द की बेटी सयुक्ता का हरण किया था, उस समय भी हमको इसी प्रकार के विवरण यहाँ के इतिहास मे पढने को मिलते हैं। राजा जयचन्द ने अपनी अनुपम रूपवती सयुक्ता का विवाह करने के लिए स्वयवर की रचना की थी। उस समय सयुक्ता के स्वयम्बर मे सम्राट पृथ्वीराज को आने के लिए निमत्रण नही भेजा गया था। उसमे जयचद की एक राजनीति थी। स्वयवर मे देश के सैकडो राजाओ ने आकर भाग लिया था।, जयचन्द ने पृथ्वीराज की मूर्ति बनवाकर स्वयंवर मे रखी थी। उस समय राजकुमारी सयुक्ता ने सैकडो राजाओ को ठुकराकर धातु से बनी हुई पृथ्वीराज की मूर्ति को अपनी वरमाला पहनायी। इसके फलस्वरूप पृथ्वीराज और जयचद के बीच भीषण सग्राम हुआ और उस सग्राम मे मैं सैकडो अपमानित राजाओ ने जयचद की सहायता की। लगातार पाँच दिनो के उस संग्राम मे पृथ्वीराज की विजय हुई।

अपने स्वयंवर मे अपमानित पृथ्वीराज की मूर्ति को वरमाला पहनाकर राजकुमारी सयुक्ता ने नारी जीवन के जिस अलौकिक प्रेम की श्रेष्ठता का परिचय दिया, उसका महत्व ससार मे सदा अमिट होकर रहेगा।

मोहम्मद गोरी ने सिंध नदी को पार कर जब दूसरी बार पृथ्वीराज के विरुद्ध दिल्ली पर आक्रमण किया था, उस समय पृथ्वीराज सयुक्ता के साथ विलासिता का जीवन व्यतीत कर रहा था। उसने जब मुहम्मद गोरी के आक्रमण का समाचार सुना तो वह आतकित हो उठा। उन दिनो के अपनी विलासित के कारण पृथ्वीराज कदाचित युद्ध मे जाने की मनोवृत्ति मे न था। उस समय सयुक्ता ने बहुत-सी बाते कहकर पृथ्वीराज को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया था। उसने अत मे कहा था "हे नाथ मेरा और आपका कल्याण इसी मे है कि आप दुविधा छोडकर युद्ध मे जावे और शत्रुओ का सहार करे।"

सयुक्ता के जीवन की अनेक बाते उसके श्रेष्ठ चरित्र का परिचय देती है। मोहम्मद गोरी के दूसरी बार भारत मे आने के पहले पृथ्वीराज ने एक स्वप्न देखा था। उसका जिक्र करते हुए उसने सयुक्ता से कहा - "आज रात को जब मैं सो रहा था, रम्भा के समान एक सुन्दरी ने बडी कठोरता के साथ मेरे दोनो हाथो को पकड लिया। उसके बाद उसने तुम्हारे ऊपर आक्रमण किया। जिस समय तुमने उससे छुटकारा पाने की चेष्टा की, एक भयानक राक्षस ने आकर मेरे ऊपर हमला किया। उसके कुछ देर बाद मेरी नीद टूट गयी। फिर मैंने कुछ नही देखा। भगवान जाने इसका क्या परिणाम होगा।"

पृथ्वीराज के मुख से स्वप्न की बात को सुन कर धैर्य के साथ सयुक्ता ने कहा : "प्राणेश्वर आप शूरवीर और बुद्धिमान है। आपके समान यशस्वी और पराक्रमी पुरुष बहुत कम ससार मे देखे गये हैं। आपकी तरह के शूरवीर राजपूतो को यह बताने की आवश्यकता नही है कि जो कर्मवीर होते हैं, वे शकुनो और अपशकुनो की तरफ नही देखा करते। इस सृष्टि मे ऐसा कौन है, जिसकी मृत्यु न होती हो। मृत्यु तो देवताओ की भी होती है। पुराने शरीर के बदलने का नाम मृत्यु हैं। अधिक समय तक निर्बल होकर जिन्दा रहने की अपेक्षा स्वाभिमान के साथ मर जाना श्रेष्ठ होता है। जब यह बात सत्य है तो शकुन और अपशकुन का विचार ही कैसा है। शक्तिशाली अपनी शक्ति पर विश्वास करते है। वे शकुन और अपशकुन को महत्व नही देते।"

इस दिन रात को पूरे मेवाड मे चिराग जलाकर प्रकाश किया जाता है। एक साधार
लेकर देश के बडे-बडे नगरो तक—सर्वत्र दीपावली का त्योहार मनाया जाता है। मेव
लोग मन्दिर में जाकर लक्ष्मी की पूजा करते है। दीपावली के त्योहार मे दो बाते प्रमु
तो दीपक जला कर प्रकाश करना और दूसरे जुआ खेलना। ये दोनो बाते इस देश मे
जाती है। राजपूत भी जुआ खेलते है। जन-साधारण का और राजपूतो का विश
दीपावली के दिन जुआ की विजय, पूरे वर्ष की विजय का प्रमाण देती है।

दीपावली के बाद ही भ्रातृ द्वितीया का त्योहार होता है। इसको बोलचाल की
भइयाद्वीज कहते है। कहा जाता है कि सूर्य की पुत्री यमुना ने इसी दिन अपने भाई यम
अपने यहाँ भोजन कराया था। इसी आधार पर इस त्योहार की सृष्टि हुई। हिन्दू-ग्रन्थ
है कि जो स्त्री कार्तिक सुदी द्वीज को सम्मानपूर्वक अपने बन्धुओ को भोजन कराती है,
विधवा नही होती और उसका भाई दीर्घायु होता है।

अन्नकूट—राजस्थान मे श्री कृष्ण की पूजा के लिए जितने त्योहार मनाये जाते
अन्नकूट अधिक महत्व रखता है। नाथ द्वारा मे अन्नकूट का उत्सव बडी धूम-धाम से म
है। आज से पहले जब राजपूत लोग उन्नत अवस्था मे थे, यह त्योहार अधिक उत्सा
मनाया जाता था। श्रीकृष्ण की पूजा मे अन्नकूट के दिन राजा लोग कीमती सोना,
रत्नो से जडे हुये अलकार दान मे देते है। इस प्रकार के दान के लिये राजस्थान सदा
ऐसे अवसरो पर जो सम्पत्ति राजस्थान के मन्दिरो को दान मे दी जाती थी, उसका अनु
इस एक उदाहरण से हो सकता है कि सूरत की एक विधवा स्त्री ने सत्तर हजार रुपये क
ठाकुर जी के मन्दिर के नाम दान मे दी थी।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

राजपूतो का नैतिक जीवन—मनुष्य के जीवन मे धर्म का प्रभाव—राजपूतो का
है—स्त्रियो का सम्मान—स्त्रियो के सम्बन्ध मे मनु के आदेश—राजपूत की बात का
राजपूत बालायें—वे युद्ध के लिए संतान उत्पन्न करती है—माता का प्रोत्साहन—राज
शौर्य—स्त्री का परामर्श—विवाह के बाद चिता की होली!

राष्ट्र के आचरण और व्यवहार उसके इतिहास मे महत्वपूर्ण अग की पूर्ति करते है
उनका सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत परिश्रम और खोज की आवश्यकता होती है।
के आचरणो का वास्तविक चित्र अंकित करने के लिये असाधारण अध्यवसाय और साधन
जिससे उनके सिद्धान्तो और नैतिक आचरणो को स्पष्ट रूप मे समझा जा सके। राजपूतो
के साथ सिद्धान्तो का अटूट सम्बन्ध है, जिनका वे युद्ध के समय अपने शत्रुओ के साथ भी
और युद्ध समाप्त हो जाने के बाद उन सिद्धान्तो और व्यवहारो का समर्थन करते है।
राजपूतो मे उनके पूर्वजो के गुणो का जितना सामञ्जस्य मिलता है उतना अन्यत्र न मिलेग
दादो की चाल को छोड़ देने वालो से वे घृणा करते है और उनको असम्मान पूर्ण नेत्रो से

दूत ने गानोर की रानी के पास पहुँच कर सेनापति खान का सन्देश सुनाया। रानी ने क्षण-भर सोचकर सेनापति के प्रस्ताव को स्वीकार किया और कहा : मैंने सेनापति खान के विक्रम और शौर्य को सुना है। विवाह कार्य के सम्पादन के लिए समय चाहिए। मैं दो घण्टे मे उसकी आवश्यक व्यवस्था कर लूँगी और तैयारी हो जाने के बाद मेरे बुलाने पर सेनापति खान को यहाँ पर आना पडेगा। क्योकि उसकी सभी बाते विधान के अनुसार होनी चाहिए।"

सेनापति खान ने दूत के मुख से रानी का उत्तर सुना। उसे बहुत प्रसन्नता हुई। उसने दो घण्टे का समय स्वीकार कर लिया। इस मजूरी का समाचार भी रानी के पास भेज दिया गया। विवाह की तैयारियाँ आरम्भ हो गयी। बाजे बजने लगे और अनेक प्रकार के सगीत सुनायी पडने लगे। रानी ने सेनापति को पहनने के लिए मूल्यवान आभूषण और वस्त्र भेजे और दूत मे कहला भेजा कि राजपूतो मे प्रचलित परिपाटी के अनुसार सेनापति को उन्हे पहन कर वैवाहिक कार्य के लिए मेरे बुलाने पर आना चाहिए। आभूषण और वस्त्रो के साथ-साथ रानी के सदेश को पाकर सेनापति की खुशी का ठिकाना न रहा। दूत वहाँ से लौट कर चला गया।

विवाह की सारी तैयारी हो जाने के बाद रानी ने सेनापति को बुलाने के लिए दूत भेजा। सेनापति ने रानी के भेजे हुए वस्त्र और आभूषण पहने और उसके बाद वह रानी के महल मे पहुँच गया। वहाँ पर उसे सम्मानपूर्ण स्थान दिया गया। सेनापति ने अपने स्थान पर बैठकर अनेक बार रानी के सौन्दर्य को देखा। वहाँ पर बैठे हुए कुछ समय बीत गया। इस समय वहाँ क्या हो रहा था और अब तक क्या होता रहा, सेनापति कुछ समझ न सका। उसका ध्यान रानी की तरफ था।

इसी समय एकाएक सेनापति खान को अपने सम्पूर्ण शरीर मे भीषण गरमी की अनुभूति हुई। वह थोडी ही देर मे व्याकुल हो उठा। उसकी उस बेचैनी को देखकर रानी ने अपने स्थान पर खडे होकर कहा पखा करने, जल छिडकने और दूसरे सैकडो उपाय किये जाने पर कुछ न होगा। सेनापति! तेरा अब अन्तिम समय है। भगवान को यह मजूर है कि हम दोनो के प्राणो का अत एक साथ हो।"

रानी के चुप होते सेनापति की दशा भयानक हो उठी। वह जिन वस्त्रो को पहन कर महल मे आया था, उनमे विष का इस प्रकार प्रयोग किया गया था कि उनके पहनने के कुछ देर बाद शरीर से एक साथ आग प्रज्वलित होगी और फिर किसी तरह उन वस्त्रो का पहनने वाला अपनी रक्षा न कर सकेगा। यही हुआ। सेनापति के सारे शरीर मे एक साथ आग जल उठी। वह अचेत होकर गिर पडा। जिस समय उसके प्राण निकल रहे थे, रानी तेजी से अपने महल की छत पर चढ गयी। उसके नीचे गहरी नदी प्रवाहित हो रही थी। उसमे कूद कर रानी ने अपने प्राणो का अत कर दिया। सेनापति खान की समाधि जो बनवाई गयी, वह भूपाल जाने के रास्ते मे आज तक मौजूद है।

राजपूत स्त्रियो मे अपने कर्त्तव्य पालन की बहुत सी बाते पायी जाती है। अम्बेर के प्रसिद्ध राजा जयसिह ने कोटा की राजकुमारी के साथ विवाह किया था, उस राजकुमारी को सादगी से प्रेम था और आडम्बर की बातो की वह पसद न करती थी। उसके वस्त्रो और आभूषणो मे भी बहुत सादगी थी। उसकी यह अवस्था राजमहलो मे रहने वाली रानियो के सर्वथा विरुद्ध थी। उसकी सादगी को उसका पति राजा जयसिंह पसन्द न करता था। परन्तु उसने बहुत दिन तक कुछ न कहा।

जयसिंह को रानी की यह सादगी सदा खटकती रहती थी। उन दिनो मे सभी रानियाँ बहु-

धर्म-ग्रन्थो मे स्त्रियो की जो प्रशसा की गयी है, उससे मालूम होता है कि इस जाति ने
सभ्यता मे बहुत उन्नति की थी राजपूतो मे स्त्री का स्थान सदा ऊँचा रहा है। यही देश
पर स्त्री को लक्ष्मी और देवी का रूप माना गया है। यहाँ के लोगो का विश्वास है कि स्त्री
पुरुष को सुख और शांति मिलती है। मनुष्य के जीवन मे उसके घर का महत्वपूर्ण स्थान
जो घर उतना सम्मान पूर्ण माना जाता है उसकी रचना गृहिणी के द्वारा होती है। गृहि
को कहते है और वह अपने घर की अधिकारिणी होती है। यहाँ के धार्मिक ग्रन्थो मे
है कि वह घर, घर नही कहलाता, जिसमे स्त्री नही होती। उनमे यह भी लिखा गया है f
पुरुष के स्त्री नही है उसको जगल मे रहना चाहिए। ससार के सभी रत्नो मे स्त्री को ए
रत्न माना गया है। साथ ही जीवन मे स्त्री की प्रधानता दी गयी है। यहाँ के धार्मिक
बताया गया है कि स्त्री से विद्रोह करके कोई भी मनुष्य अपने जीवन को कल्याण के
नही ले जा सकता। स्त्री के विरोधी को व्यवसाय मे सफलता नही मिलती, किसी कार्य मे
शान्ति नही मिलती और तप करके वह मोक्ष नही प्राप्त कर सकता। सृष्टि की रचना मे
स्त्री को श्रेष्ठता दी है। उसी के अधार पर यहाँ के शास्त्रकारो ने इस बात को स्वीकार f
कि झोपडियो से लेकर राज महलो तक स्त्री ही सुख और शाति की देने वाली है। राजपूत
वारो मे इन सिद्धान्तो का पालन होता है और प्रत्येक राजपूत अपने जीवन मे इनको स्थान

राजपूत लोग स्त्रियो के साथ जिस प्रकार का व्यवहार करते है। उसके सम्बन्ध मे
पर कुछ और भी लिखना चाहते है। प्राचीन जर्मनी और स्कैण्डीनेविया के लोगो की तरह
अपने प्रत्येक कार्य मे स्त्रियो से परामर्श करते है और उसके जीवन की अनेक बातो मे
सफलता के लिए शकुन मानते है। राजपूत स्त्रिया को बहुत सम्मान देते है इसका सबसे बड़ा
यह है कि वे लोग स्त्रियो के नाम के साथ देवी शब्द का प्रयोग करते है। प्राचीन काल मे
लोग स्त्रियो को घरो मे बन्द करके नही रखते थे। राजस्थान मे साधारण और निम्न श्रे
लडकियाँ घरो के बाहर कुओ पर पानी भरने जाती है और वहाँ पर स्वतन्त्रता के साथ f
पुरुष से वे बाते करती है। ऐसे अवसरो पर कभी-कभी वे अपने-अपने विवाहो का निर्णय
लेती है। बहुत कुछ यही अवस्था प्राचीन काल मे यहूदी लडकियो की भी थी। वे घरो के
पानी भरने जाती थी और वहाँ पर उनके विवाहो का निश्चय भी हो जाता था।
मिश्र देश मे घरो के भीतर बद रहने की प्रथा का प्रचार हुआ। राजपूत स्त्रियो का जीवन
भीतर बहुत-कुछ सीमित रहता है, परन्तु उनके जीवन मे दासता नही है।

राजपूत अपनी स्त्रियो का सम्मान करते है और राजपूत स्त्रियाँ अपने पति की आज्ञा
पालन करती है। दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने का यह सबसे अच्छा साधन है। स्त्रियाँ
पति और उसके परिवार के प्रति सदा शिष्ट और सुशील साबित हो, इस उद्देश्य की रक्षा के
राजपूतो मे लडकियो के विवाह ऊँचे और सम्पन्न वश मे किये जाते हैं। उनमे यह प्रथा
प्राचीन काल से चली आ रही है। उसका इतना ही उद्देश्य है कि लडकी ससुराल जाकर
प्रति शिष्ट और सुशील साबित हो। यदि ससुराल के लोग और उसका पति उसके पिता के
से श्रेष्ठ नही होता तो लडकी के व्यवहारो मे अशिष्टता पैदा हो सकती है। इसीलिए
मे लडकियो के विवाह किये जाते है। लेकिन ऐसे भी उदाहरण पाये जाते है, जो इस उद्दे
विपरीत होते हैं और उनका परिणाम अच्छा नही होता। मेवाड के राणा के जीवन में
घटनाये पैदा हुई थी। उसने अपनी लडकी का विवाह शाही के सामन्त के साथ किया था
सामन्त मेवाड-राज्य की अधीनता मे था।

इस प्रकार की घटनाये राजपूत स्त्रियो के सम्बन्ध मे बहुत मिलती हैं, जिनसे उनकी श्रेष्ठता और वीरता का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। यहाँ पर जैसलमेर राज्य की एक घटनाका हम और उल्लेख करेंगे। यह राज्य राजस्थान से बहुत दूरी पर है। पूगल का राजा नरगदेव उस राज्य का सामन्त था। उसका उत्तराधिकारी पुत्र साधु नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसका आतक मरुभूमि के सभी लोगो मे फैल गया था। वह साहसी और शूरवीर था। उसके अत्याचार दक्षिण मे सिन्ध नदी तक और पश्चिम मे नागौर तक हो रहे थे। उसका यह नित्य का कार्य था। एक बार वह लूटमार करता हुआ माणिक राव की राजधानी अरिन्त नगर की तरफ चला गया। माणिक राव मोहिल जाति के लोगो का सरदार था। उसने जब सुना कि साधु बहुत-से आदमियो के साथ-साथ लूट मार करता हुआ इस तरफ आ रहा है तो उसने अपना दूत भेजकर साधु को अपनी राजधानी अरिन्त नगर मे बुलाया।

मोहिल लोगो के सरदार माणिकराव का निमन्त्रण पाकर साधु बहुत प्रसन्न हुआ। राजधानी मे आने पर माणिकराव ने उसका बहुत सत्कार किया। वह वृद्ध था और कर्मदेवी नाम की उसकी एक परम सुन्दरी लडकी थी। उसने युवावस्था मे प्रवेश किया था। साधु सम्पूर्ण मरुभूमि मे एक प्रसिद्ध अश्वारोही और शूरवीर था। कर्मदेवी ने उसकी प्रशसा पहले से सुनी थी उसकी राजधानी मे आने पर कर्मदेवी ने उसको अपने नेत्रो से देखा। कर्मदेवी का विवाह मदोर के राठौर वश मे होने का निश्चय हो चुका था। साधु की वीर भूषा देख कर कर्मदेवी प्रसन्न हो उठी और उसने उसके साथ अपना विवाह करने का सकल्प कर लिया।

कर्मदेवी ने अपने पिता माणिकराव से अपना निश्चय प्रकट किया। माणिकराव ने ही उसका विवाह मदोर राज्य मे तय किया था। लेकिन जब उसने कर्मदेवी का सकल्प सुना तो उसने एक बार भी उसका विरोध नही किया। यद्यपि वह तुरन्त इस बात को समझ गया कि कर्मदेवी का विवाह यदि मदोर राज्य मे न हुआ तो एक बार भयानक परिस्थिति उत्पन्न होगी। इस बात को जानते और समझते हुए भी उसने कर्मदेवी से कुछ न कहा।

साधु के साथ विवाह करने का निर्णय पूर्ण रूप से कर्मदेवी कर चुकी थी। इसलिए माणिक राव ने साधु से उसका प्रस्ताव किया। उसने प्रसन्न होकर स्वीकार कर लिया। उस समय साधु अपने साथ के लोगो के साथ वहाँ से लौट कर चला गया। माणिकराव ने कर्मदेवी के विवाह की तैयारी की और विवाह का दिन निश्चित हो गया। साधु ने वहाँ आकर निश्चित दिन और शुभ मुहूर्त मे कर्मदेवी के साथ विवाह किया। माणिकराव ने इस विवाह के उपलक्ष मे बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण, सोने-चाँदी के बर्तन और एक सोने का बैल दिया। साथ ही कर्मदेवी के साथ जाने के लिए तेरह सहेलियाँ दी।

कर्मदेवी के इस विवाह का समाचार चारो तरफ फैल गया। इस समाचार को मदोर राज्य के युवराज अरण्य कमल ने भी सुना, जिसके साथ कर्मदेवी का विवाह होना पहले निश्चय हुआ था अरण्य कमल को इस समाचार से बहुत क्रोध मालूम हुआ। उसने अपने राज्य के चार हजार राठौर सैनिको को मार्ग मे साधु का विरोध करने के लिए भेज दिया। इन चार हजार राजपूत मे कुछ लोग ऐसे भी थे जो साधु के अत्याचारो से पहले से ही नाराज थे। इसलिए उनको उससे बदला लेने का अवसर मिला। वे प्रसन्नता के साथ साधु से युद्ध करने के लिये मदोर राज्य से रवाना हुए।

माणिकराव पहले से ही इस बात को जानता था कि कर्मदेवी के विवाह का समाचार सुन कर राजकुमार अरण्य कमल सभी प्रकार उपद्रव करेगा। इसलिए अपने जामाता के साथ कर्मदेवी

विद्वान मनु ने अपने प्रसिद्ध ग्रथ मनुस्मृति मे निर्भीक होकर घोषणा की है "ि
स्त्री का अनादर होता है, उस घर का पूर्ण रूप मे नाश हो जाता है।" इस देश के ए
विद्वान ने लिखा है . "स्त्री को सैकडो अपराध करने पर भी उसकी अवहेलना न क
प्रकार वहुत सी वाते स्त्रियो के सम्मान मे यहाँ के प्रसिद्ध प्राचीन ग्रथो मे पायी जाती है।
के जीवन मे उनका प्रभाव है। और प्रत्येक राजपूत स्त्री के किसी भी जीवन को उ
नही देता जितना उसके गार्हस्थ्य जीवन को। उसका विश्वास है कि मनुष्य के जीव
उसका घर है और इस घर के सचालन का कार्य स्त्री के हाथ मे है। जो स्त्री बुद्धिमान
अपने घर का सचालन करती है, वह सभी प्रकार अपने जीवन मे सफल मानी जाती है।

इस देश मे और विशेषकर राजपूतो मे स्त्री का जीवन क्या है, इसको यदि हम
समझना चाहते है तो हमको सीता के जीवन का अध्ययन करना पडेगा, जिसका चरि
वालमीकि ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक रामायण मे किया। दशरथ के पुत्र रामचन्द्र का
होने वाला था। लेकिन विमाता के विद्रोह के कारण अभिषेक का कार्य रुक गया था औ
को चौदह वर्ष के लिये वनवास की आज्ञा हुई थी। वन के लिये रवाना होने के सम
साथ चलने का रामचन्द्र से अनुरोध किया। परन्तु सीता के अनुरोध को स्वीकार न कर
ने यह समझाया कि हमारे चले जाने पर तुमको यहाँ पर रहना चाहिये और हमारे
की सेवा करना चाहिये। उस समय सीता और रामचन्द्र मे वहुत देर तक वाते हुई।
इरादा था कि सीता को अयोध्या के राजमहल मे ही रखा जाय। इसलिये कि चौदह वर्ष
वास कोमलाङ्गिनी सीता के लिये असह्य हो जायगा। इसलिये यहाँ के महलो मे रहना ही
अच्छा रहेगा। अपने इस इरादे से राम ने वहुत-सी वाते सीता को समझायी और अनेक
उपदेश उनको दिये। लेकिन सीता ने एक भी वात को स्वीकार न किया। उसने अत्य
के साथ रामचन्द्र की वातो का उत्तर देते हुए कहा . "मै जानती हूँ कि मेरे सुख और क
लिये ही आप मुझे ऐसा समझा रहे है। मुझे आपकी वातो का विरोध न करना चाहिये
मै वहुत विनम्र शब्दो मे इतना ही कहना चाहती हूँ कि यदि आप मुझे सुखी बनाने के
साथ न ले जाकर अयोध्या मे छोडना चाहते है तो मै यहाँ रहकर न तो सुखी रहूँगी औ
कल्याण हो सकेगा। पिता-माता और सभी दूसरे आत्मीय जनो का आदर और स्नेह स्त्री
देने वाला नही होता। उसका सुख और कल्याण ससार मे एक मात्र उसके पति का स
स्त्री अपने पति के सम्पर्क से जुदा होकर कभी सुखी नही हो सकती। इसीलिये यदि
जीवन के सुख और कल्याण की कल्पना करते है तो आप मेरे अनुरोध को स्वीकार करे
अपने साथ ले चले।

इस प्रश्न को लेकर सीता और राम मे वहुत देर तक वात होती रही। अन्त मे
अपना अनुरोध स्वीकार करने के लिये रामचन्द्र को विवश किया और अपने अनुरोध
करते हुए कहा . "अयोध्या के राजमहल मे रहने की अपेक्षा जगल के निर्जन स्थानो मे अ
रहकर मै अधिक प्रसन्न रहूँगी। आपके चले जाने के वाद राजप्रासाद के भोजन मुझे सु
मालूम होंगे और उनके स्थान पर आपके साथ जगल मे पेट भरने के लिये जो कुछ भी
कभी मुझे मिल सकेगा, उसमे मै अधिक सुखी और प्रसन्न रहूँगी। यदि आप मेरे हित के
यहाँ छोडना चाहते है तो मेरे अनुरोध को स्वीकार करे और मेरे कल्याण के लिये आप मु
साथ ले चले। पति के अभाव मे ससार के समस्त सौभाग्य स्त्री को सुखी नही वना सकते
आप मुझे छोड कर चले गये तो अयोध्या मेरे लिये नरक से भी अधिक दुखदायी हो जायगी।

से आपके बाहुबल का प्रताप देखा है। आपकी विजय पर मैं पूर्ण विश्वास रखती हूँ। लेकिन यदि आप युद्ध मे मारे गये तो यही चिता बनाकर आपके मृत शरीर के साथ मैं अपने प्राणो को भस्मीभूत करूँगी और स्वर्ग लोक पहुँचकर आप से भेट करूँगी।"

कर्मदेवी से विदा लेकर साधु अरण्य कमल के साथ युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। दोनो ही एक दूसरे के रक्त के प्यासे थे। अरण्य कमल साधु का सर्वनाश करने के लिए अपने दाहिने हाथ की तलवार को बार-बार घुमा रहा था।

इसी समय अपनी घोडी पर बैठा हुआ साधु युद्ध-क्षेत्र मे अरण्य कमल के सामने पहुँच गया। दोनों ने एक साथ एक दूसरे पर भीषण आक्रमण करने का प्रयास किया। साधु ने अरण्य कमल पर अपने भाले का वार किया। वह भाला अरण्य कमल की गरदन मे जाकर लगा। उसी समय अरण्य कमल ने अपना भीषण प्रहार साधु के ऊपर किया। रथ पर बैठी हुई कर्मदेवी ने देखा कि अरण्य कमल के भाले से उसके पति के मस्तक मे भयानक आघात हुआ। दोनो शूरवीर एक साथ भूमि पर गिर गये। साधु का मस्तक अरण्य कमल के भाले से फट गया था। इसलिए उसके गिरते ही उसकी मृत्यु हो गयी। अरण्य कमल की गरदन का जख्म बहुत गहरा न था। इसलिए कुछ देर बेहोश रहने के बाद उसके नेत्र खुल गये। दोनो ओर के सरदारो के गिर जाने पर युद्ध बन्द हो गया और दोनो तरफ की सेनाये युद्ध स्थल से पीछे की ओर हट गयी।

साधु के मारे जाने पर कर्मदेवी रथ से निकली और चिता बनाने की तैयारी करने लगी। चिता के तैयार होने पर कर्मदेवी अपने साथ के बचे हुए आदमियों के बीच मे खडी हुई। उसने अपनी तलवार निकालकर सबके सामने अपनी बाईं भुजा को काट कर कहा "अपने प्राणेश्वर के पिता के पास मै अपनी यह भुजा भेजती हूँ। उनसे कहना की आपकी पुत्री ने अपने हाथ से काटकर यह भुजा भेजी है।" इसके बाद उसने अपनी दूसरी भुजा को काटकर कहा "विवाह का कंकण पहने हुए मेरी यह दाहिनी भुजा मोहिलयो के भट्ट कवि को देना।"

मनुष्यो के रक्त से डूबी हुई युद्ध भूमि मे चिता तैयार हो चुकी थी। अपने प्राण प्यारे पति के मृत शरीर को लेकर कर्मदेवी चिता मे जाकर बैठ गयी। उसी समय चिता मे आग लगायी गयी। चिता की लपटों के उठते ही हजारो एकत्रित मनुष्यो के द्वारा वीरबाला कर्मदेवी के नाम की जयध्वनि से रणभूमि गूज उठी। कर्मदेवी की आज्ञानुसार, उसकी दोनो भुजाये भेज दी गयी। पूगल के वृद्ध सामन्त नरगदेव ने अपनी पुत्र वधू कर्मदेवी की कटी हुई भुजा का दाह-संस्कार करके उसी स्थान पर एक विशाल सरोवर बनवाया। कर्मदेवी का सरोवर के नाम से वह सरोवर आज तक प्रसिद्ध है। सम्वत् १४६२ सन् १४०६ ईसवी मे यह लडाई हुई थी। मन्दोर के राजकुमार अरण्य कमल के चार भाई थे, इस लडाई मे वे भी भयानक रूप से घायल हुए थे। अरण्य कमल स्वय अपने शरीर मे कई एक भीषण जख्मो को लेकर मन्दोर वापस गया। वहाँ पर छै महीने तक उसके घावो की चिकित्सा होती रही। परन्तु वे ठीक न हो सके और उसके बाद अरण्य कमल की मृत्यु हो गयी।

कर्मदेवी के विवाह के कारण दो राजपूत वशो मे जो कलह उत्पन्न हुई, उसका अत हो गया। पूगल और मन्दोर राज्य के सैनिको का भीषण रूप सर्वनाश हुआ। परन्तु बदला लेने की आग जो पैदा हुई थी उसका अत न हुआ। शूरवीर साधु और राजकुमार अरण्य कमल—दोनो के प्राणो का अत हो गया। अरण्य कमल ने अपने अपमान का बदला लेने के लिए साधु पर आक्रमण किया था। उस आक्रमण मे हजारो मनुष्यो के सर्वनाश के साथ साधु मारा गया और कुछ दिनो बाद अरण्य कमल की भी मृत्यु हो गयी। परन्तु बदला लेने की भावना का अत न हुआ। साधु

राजा परिमाल को पराजित किया और परिमाल भयभीत होकर महोबा से भाग गया। से
वत्सराज परिमाल के चले जाने पर भी शत्रुओ के साथ युद्ध करता रहा। वह साहसी और
था। अत मे उसने शत्रुओ को पराजित किया और परिमाल की राजधानी महोबा पर उसने
अधिकार कर लिया। आक्रमणकारी परिमाल के राज्य से भाग गये। सेनापति वत्सराज ने
पर अधिकार करके राजा परिमाल को बुलाया। अपने परिवार के साथ राजधानी मे लौट
वत्सराज से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने राज्य के कई एक प्रसिद्ध स्थान वत्सराज को दे
सेनापति के आल्हा और ऊदल दो बेटे थे। रानी मालिनी उस दिन से वत्सराज के इन दोन
को बहुत सम्मान के साथ अपने यहाँ रखने लगी। बडे होने पर वत्सराज के दोनो बेटे कालिज
के अधिकारी बने। राजा परिमाल के राज्य मे कलिजर का इलाका विशाल और प्रसिद्ध था।
परिमाल किसी मौके पर कलिजर गये। आल्हा और ऊदल की भेट हुई। अल्हा के पास एक
घोडा था उसको देखकर परिमाल बहुत प्रसन्न हुआ और आल्हा से उस घोडे की माँग की राजपू
अपना घोडा बहुत प्रिय होता है। उसने परिमाल को घोडा देने से इनकार कर दिया राजा प
को यह सहन न हुआ क्रोध मे आकर उसने दोनो भाइयो को राज्य से निकल जाने का आदेश
उसके फलस्वरुप आल्हा और ऊदल परिवार और सेना के साथ वहाँ से निकल गये।

रास्ते मे माहिल का नगर मिला। यह राजा परिमाल का दरबारी मन्त्री था। दोनो
को मालूम हुआ कि राजा परिमाल ने माहिल के कहने से ही दण्ड दिया है। इसलिए
आकर ऊदल ने माहिल के नगर मे आक्रमण किया और आग लगवा दी। इसके बाद दोन
कन्नौज चले गये वहाँ के राजा ने उनको बड़े सम्मान के साथ अपने यहाँ स्थान दिया। उस
से वत्सराज के दोनो लडके आल्हा और ऊदल कन्नौज के राजा के यहाँ रहते है।'

एक महीने तक आक्रमण न होने का आश्वासन पाकर राजा परिमाल को बहुत कुछ
मिली। उसके बाद रानी मालिनी ने आल्हा और ऊदल को बुलाने के लिए अपना दूत कन्नौज
उसने वहाँ जाकर वत्सराज के दोनो बेटो से भेट की और महोबा पर आई हुई विपद का
करते हुए उसने कहा . 'पृथ्वीराज ने महोबा पर आक्रमण किया है। सिरसा मे नरसिंह और वी
महोबा की सेना के साथ मारे गये है। पृथ्वीराज ने सिरसा नगर मे आग लगवा दी है और
नक रूप से लूट-मार की है। राज्य के दूसरे कई एक स्थानो को चौहानो की सेना ने लूटमार क
राज्य के दूसरे कई एक स्थानो को चौहानो की सेना ने लूट लिया है। बहुत प्रार्थना करने पर
राज ने तीस दिन महोबा पर आक्रमण न करने का बचन दिया है। इस विपत्ति के समय
मालिनी ने आपके पास मुझे भेजा है और रानी आपको महोबा बुलाया है। कलिजर से आप
चले आने के कारण रानी को जो कष्ट पहुँचा था, उसका वर्णन करना असम्भव है। अपने पु
समान रानी ने आप के साथ स्नेह किया था। रानी ने रो-रोकर इतने दिन काटे है।
असहाय अवस्था मे उसने आपको याद की है और मुझे भेजकर उसने किसी प्रकार आपको
बुलाया है।''

दूत की इस बात को सुनकर आल्हा ने उत्तर दिया ''महोबा का विध्वस हो जाने
हम लोग किसी प्रकार महोबा नही जा सकते। राजा परिमाल ने राज्य से निकल जाने
आदेश दिया था। हमने उस आदेश का पालन किया। राजा परिमाल को यह भूल गया
शत्रुओ ने आक्रमण करके महोबा पर अधिकार कर लिया था और आपका राजा अपने प
को लेकर महोबा से भाग गया। उस समय हमारे पिता ने शत्रुओ को पराजित किया था

विवाह की आती हुई सामग्री को देखा। वह नागोर की तरफ चल रहा था और कल्याण के भेजे हुए रथ और सवार भी उसी तरफ जा रहे थे। बहुत निकट आ जाने पर राजा चण्ड ने परदो से बन्द रथो की तरफ देखा। अकस्मात उसे कुछ सन्देह पैदा हुआ। अब तक वह रथो के बिल्कुल समीप पहुँच गया था। उसने तेजी के साथ भागने की कोशिश की। इसी समय रथो के परदे खोल-कर सशस्त्र सैनिक भाटिया लोग निकल पडे। उन सब ने एक साथ मन्दोर के राजा चण्ड पर आक्रमण किया और उसे पकड कर मार डाला। इसके बाद उन लोगो ने नागोर के आस-पास कुछ समय तक लूटमार की।

नरगदेव के दोनो पुत्र तुनो और महीर राजा चण्ड को मार कर अपने पिता का बदला लेकर पूगल राज्य के बाहर आभोरिया के भाटियो से जाकर मिल गये।

हिन्दुओ के इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ स्त्री के प्रभाव से रगा हुआ है। बहुत प्राचीन काल से इस देश की यह अवस्था रही है। रावण का वध सीता के कारण हुआ था। द्रौपदी के अपमान के कारण महाभारत हुआ था। स्त्री के कारण ही राजा भर्तृहरि ने अपना राज-सिहासन छोडा था। इस देश के इतिहास की प्रत्येक घटनाएँ स्त्रियो से सम्बन्ध रखती है। राजस्थान के बहुत से युद्ध आपस मे केवल स्त्रियो के कारण हुए। राजकुमारी सयुक्ता जयचन्द और पृथ्वीराज की शत्रुता का कारण बनी और उसके फलस्वरूप, मोहम्मद गोरी के युद्ध मे पृथ्वीराज मारा गया। यहाँ के इतिहास मे इस प्रकार की सहस्रो घटनाये है, उनमे से कुछ के उल्लेख ऊपर किये गये है।

राजपूतो के शौर्य और विक्रम में किसी को सदेह नही हो सकता। उसके साथ-साथ जिसने राजस्थान का सच्चा इतिहास देखा है, वह राजपूत स्त्रियो के श्रेष्ठ चरित्र की प्रशसा करेगा। राजपूत लडकियाँ अपने विवाह के लिए शूरवीरो को पसन्द करती थी और अपने पुत्रो को वे शूरवीर बनाती थी। राजस्थान के इतिहास मे जितनी प्रशसा राजपूतो की जा सकती है, उतनी ही प्रशसा की अधिकारिणी यहाँ की राजपूत स्त्रियाँ है। इसमे किसी का मतभेद नही हो सकता।

तीसवाँ परिच्छेद

राजपूतो का जीवन, बलिदानो का जीवन है—युद्ध के लिए राजपूतो का जन्म—सती प्रथा—कन्याओ के वध की प्रथा—उसका मूल कारण—सामाजिक जीवन की खराबियाँ—राजपूत लडकियो के विवाहो मे भीषण दृश्य—राजपूत स्त्रियो मे जौहर व्रत-युद्धमे बदी स्त्रियाँ-राजपूतो अफीम का सेवन।

राजस्थान के इतिहास मे राजपूतो के चरित्र की जो विशेषता है, उसको राजपूत स्त्रियो के बलिदानो ने अधिक आकर्षण और अद्वितीय बना दिया है। इस परिच्छेद मे हम उन पर प्रकाश डालने की चेष्टा करेंगे और इस बात के समझने की कोशिश करेंगे कि उनके उन बलिदानो का मूल आधार क्या है। राजपूत स्त्रियो के बलिदानो मे सब से प्रधान हमारे सामने सती प्रथा है। इस प्रथा का अकुर कहाँ और कैसे पैदा हुआ और फिर कैसे उसका विस्तार हुआ, इसे हम ऐतिहासिक दृष्टि कोण से यहाँ पर स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे। राजपूतो मे प्रचलित इस प्रकार की पुरानी प्रथाओ के समझने की सामग्री बहुत कुछ उनके धार्मिक ग्रन्थो और पुराणो से मिलती है। इसलिए उनका आश्रय लेना हमारे लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

देवलदेवी अब चुप न रह सकी । उसने एक बार आल्हा और ऊदल की तरफ दे
फिर दूत की तरफ देखकर कहा "असहाय अवस्था मे शत्रु की भी सहायता करना राज
धर्म है । इस समय मेरे बेटो ने महोबा जाने से क्यो इनकार किया है, मै इसे समझ नही
इतना कहकर वह चुप हो गयी । उसके नेत्रो मे आदेश झलक रहा था । रह-रह कर वह
और ऊदल की तरफ देखती थी और फिर अपने नेत्रो को नीचा कर लेती थी । उसने
चुप रह कर फिर कहा : "इस समय मेरे बेटो ने जो कुछ कहा है, वह राजपूतो की म
विरुद्ध है । जिस महोबे का गौरव विध्वस होने जा रहा है, वहाँ बहुत समय तक मेरा अ
परिवार का पालन हुआ है । जहाँ का नमक खाया है और जिसका पानी पिया है, विपत्ति
पर और वहाँ के लोगो की प्रार्थना पर सहायता न करना राजपूतो के धर्म के विपरीत
समय मैने अपने बेटो के मुख से जो कुछ सुना है उससे मुझको आघात पहुँचा है । मै यदि
हीन होती तो मुझे इतना दुख न होता, जितना कि इस समय मुझको हुआ है । यदि
महोबा के चीत्कार को सुनकर उसकी रक्षा के लिए नही जाते तो ये अपने पिता के गौरव
नष्ट करते है ।"

इतना कह देवलदेवी ने एक बार आल्हा और ऊदल की तरफ देखा और वह चुप हो

आल्हा और ऊदल ने अपनी माता के शब्दो को सुना । वे परिमाल के द्वारा मि
अपमान को भूल कर मुस्करा उठे । दूत ने उस समय आल्हा और ऊदल को देखा । उ
लिया कि परिस्थिति अब बदल रही है । उसी समय आल्हा ने दूत से कहा : "महोबा
करने के लिए माँ का आदेश मिल चुका है । अब हम लोगो के सामने कोई सशय नही है
कह कर उसने ऊदल को तरफ देखा और तैयार होने की आज्ञा दी ।

दूत प्रसन्न हो उठा । उसने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया । महोबा चलने
तैयारियाँ होने लगी । दोनो भाइयो ने कन्नौज के राजा के पास जाकर सब बाते कही । राजा
समय पर महोबा जाने के लिए परामर्श दिया । दोनो भाइयो ने अपनी सेना तैयार की औ
के साथ महोबा जाने के लिए रवाना हो गये ।

रास्ते मे दूत को अनेक प्रकार के अपशकुन हुए । उनको देख कर वह भयभीत हो
उसको चिन्तित और अप्रसन्न देखकर आल्हा ने कारण पूछा । दूत ने उत्तर देते हुए कहा '
ओर से उडते हुए एक सारस का जाना, उडते हुए पक्षी के मुख से उसके खाने की चीज
जाना, चकवे का अपनी स्त्री के बिरह मे होना, युद्ध के घोडो के नेत्रो से आसुओ का बहना,
का एक साथ रोना, सूर्य के बीच मे कालापन दिखायी देना अपशकुन है । इसीलिए मै कुछ
हो उठा हूँ ।"

दूत के मुख से अपशकुन की बातो को सुन कर आल्हा ने कहा राजपूतो के
शकुन और अपशकुन का कोई प्रभाव नही पडता । जो युद्ध के लिए जाता है, वह अपनी
बात पहले सोच लेता है । जो मृत्यु के लिए ही घर से निकलता है, उसके सामने अ २
क्या अर्थ होता है "

आल्हा के मुख से दूत ने इन शब्दो को सुना, उसका भाव और सकोच मिट गया
मुस्कराने लगा ।

अपनी माता देवल देवी और सेना के साथ आल्हा-ऊदल महोबा पहुँच गये । उनके
समाचार रानी मालिनी ने सुना । उसने तुरत देवल देवी को अपने महल मे बुलाया और
प्रकार से उसका सत्कार किया । आल्हा के आने पर राजमाता मालिनी ने अपना दा

सती प्रथा समाज की कोई अच्छी व्यवस्था नही कही जा सकती। इस प्रथा के साथ न तो धार्मिक दृढता है और न दाम्पत्य प्रेम है। बल्कि प्रचलित प्रथा की एक ऐसी दासता है, जिसे सती होने वाली स्त्रियो को स्वीकार करना पडता था। इस प्रकार की निर्दय प्रथा का प्रचार केवल राजपूतो मे ही नही था, बल्कि उस समय की अनेक जातियो मे था, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। स्त्री के लिए इसे दाम्पत्य प्रेम कहा जा सकता है, लेकिन मृतक के साथ उसका घोडा और उसके अस्त्र-शस्त्र चिता मे जला देने का क्या अभिप्राय था? उन दिनो मे गुलामी की प्रथा ससार के बहुत से स्थानो मे थी और ऐसी जातियो मे मालिक के मरने पर उसके गुलामो को चिता मे जला देने की प्रथा भी थी। उसमे कोन सा धर्म था? इस प्रकार की प्रथाये उस युग की घृणित गुलामी का परिचय देती थी, जो मनुष्यो मे ही नही—पशुओ मे भी नही कायम रखी जा सकती।*

सती प्रथा से भी अधिक अमानुषिक राजपूतो मे कन्याओ के मार डालने की प्रथा थी। स्त्रियो के सती होने के सम्बन्ध मे अनेक बाते कही जा सकती है, लेकिन कन्याओ के मारे जाने का कारण क्या था? राजपूतो मे लडकी को पैदा होने के बाद मार डालने का रिवाज बहुत दिनो से चला आ रहा था। कन्या के उत्पन्न होते ही उसकी और उसकी माता की उपेक्षा होती थी। जैसे भी हो सकता था, उस कन्या को मार डाला जाता था। इस प्रकार का प्रचार आमतौर से राजपूतो मे था।

उत्पन्न होते ही कन्याओ को राजपूतो मे क्यो मार डाला जाता था, इसको सावधानी के साथ समझने की आवश्यकता है। सन्तान के साथ स्नेह होना अत्यन्त स्वाभाविक है और यह स्वाभाविकता पक्षियो और पशुओ मे भी पायी जाती है। मनुष्य अन्य जीवो की अपेक्षा बुद्धिमान माना जाता है। फिर उत्पन्न होते ही कन्याओ के मार डालने का आम प्रचार राजपूतो मे क्यो था इसका कोई विशेध कारण होना चाहिए।

इस प्रकार नृशसता ससार के अन्य देशो मे भी देखी गयी है और आज भी उस तरह की कितनी बाते देखी जाती है। उनका भी कोई कारण रहा है। फ्रास के फ्रीजियन के लोगो, इटली के लाङ्गोवार्डी लोगो और स्पेन के कुछ लोगो मे कन्याओ को जिन्दगी भर धर्मशालाओ मे बन्दी बना कर रखने की प्रथा थी और इसी प्रकार की प्रथा गाथियो मे फैली रही। राजपूतो और जर्मनी के लडाकू लोगो मे स्त्रियो के विरुद्ध अपवाद के भय से इस प्रकार की बातो का प्रचार था। वे लोग अपनी स्त्रियो मे दूसरो का अधिकार देख न सकते थे। इसलिए ऐसे मौके पैदा होने पर वे लोग अपनी स्त्रियो पर आघात करते थे। प्राचीन काल मे इस नृशसता के विभिन्न रूप ससार के भिन्न भिन्न देशो मे पाये थे। उन सब के कारण थे और राजपूतो मे भी कन्याओ के मार डालने का निश्चित रूप से कारण था।†

---

* मुगल बादशाह जहाँगीर ने अपने राज्य मे आदेश दिया था कि जिस हिन्दू विधवा के पुत्र अथवा कन्या है, वह मृत पति के साथ जल नही सकती। लार्ड विलियम बैंटिक के शासन-काल मे भारत मे सती होने की प्रथा कानूनन बद कर दी गयी।

† सिन्ध नदी के किनारे धिक्कर नाम की एक सीथियन जाति रहती थी। प्राचीन काल मे उस जाति के लोग कन्या के उत्पन्न होते ही मार डालते थे। इतिहास फरिश्ता मे उन लोगो की इस प्रकार की बातो का वर्णन कुछ विस्तार मे किया गया है। यही कारण था कि उस जाति मे स्त्रियो की सख्या बहुत कम थी।

युद्ध की तैयारी करने के पूर्व राजा परिमाल ने अपने दरबार मे सेनापतियो और को बुला कर परामर्श किया । उस समय राजमाता मालिनी दरबार से कुछ दूरी पर बैठकर को सुनने लगी । उसके निकट आल्हा की माता देवलादेवी भी मौजूद थी । उसको सम्बोध राजमाता ने कहा 'पृथ्वीराज के साथ आयी हुई सेना बहुत बडी है । हम सब को परिणाम पर एक बार विचार कर लेना चाहिए । यदि पराजय हुई तो हम सब क छोड देना पडेगा । इस दशा मे यदि चौहान राजा के साथ सधि कर ली जाय तो सब भ सकता है ।''

राजमाता के मुख से इस बात को सुनकर आल्हा ने सावधान होकर कहा ''दुष्ट के भय से जो राजपूत अपने कर्तव्य का पालन नही करता, वह राजपूत कहलाने का अधिक है । मेरे सामने महोबा के गौरव का प्रश्न है । इस समय दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज विशाल सेना लेकर हमारे राज्य पर आक्रमण किया है । इसलिए आक्रमणकारी के साथ यु हम लोगो का नैतिक धर्म है । यदि हम लोग ऐसा न करेगे, तो निश्चित रूप से हम राजपूती मर्यादा का अपने हाथो विनाश करेगे । सधि का अर्थ है शत्रु की अधीनता स्वीक राजपूतो की मर्यादा मे अपनी ओर से सधि को कोई स्थान नही दिया गया । राजपूतो मे पराधीनता के पराजय और पराजय से मृत्यु श्रेष्ठ होती है । मै जब तक जिन्दा हूँ, रा इस श्रेष्ठता की रक्षा करूँगा । मेरे मारे जाने पर यदि वह जीवित रही * तो मै विश्वा हूँ कि वह जीवन-भर अपने धर्म की रक्षा करेगी और सती-साध्वी राजपूत स्त्रियो की भ जीवन व्यतीत करेगी ।

इसी समय रानी मालिनी ने कहा ' मै चाहती हूँ कि युद्ध की परिस्थिति प कर लिया जाय । किस प्रकार महोबे की रक्षा करना चाहिए ।

राजमाता के मुख से इस प्रकार की निर्बल बातो को सुनकर ऊदल ने आवेश मे कह बात का निर्णय आप को पहले ही कर लेना चाहिए था । उस समय, जब युद्ध की तैयारी है, इस प्रकार की बातो का सोचना अपनी शक्तियो को निर्बल बनाना है, चौहानो की जख्मी सेना पर आपकी सेना ने आक्रमण किया था, उस समय युद्ध के दुष्परिणाम को यहाँ को सोच लेना चाहिये था । इस समय जो बाते आप कह रही है, उनको सुनने और स यह अवसर नही है । मै जब तक जीवित हूँ, शत्रु की अधीनता को कानो से सुनना नही दूत को उत्तर देते हुए राजा परिमाल ने युद्ध की घोषणा की अब इस घोषणा को किस लौटाया नही जा सकता ।''

देवलदेवी बडी देर से इस प्रकार की बातो को सुन रही थी । ऊदल के चुप हो उसने साहस और धैर्य के साथ कहा ''इस अवसर पर मेरे बेटो ने उसी प्रकार की बा जैसी कि सच्चे राजपूतो के मुख से सुनने को मिलनी चाहिए । मेरा विश्वास है कि ऐसे ह अवसरो पर राजपूत अपने कर्त्तव्यो का पालन करके पूर्वजो के यश और कीर्ति की वृद्धि क इस समय व्यर्थ की बातो को सोचना नही चाहिए । क्योकि शत्रुओ की सेना युद्ध करने

* आल्हा ने इस वाक्य मे वह शब्द अपनी स्त्री के लिए इस्तेमाल किया है । अपनी स्त्री का नाम सर्वसाधारण के सामने और विशेष कर जहाँ पर वृद्ध जन उपस्थित लेने की पुरानी परिपाटी है । इसलिए आल्हा ने यहाँ अपनी स्त्री का नाम नही लिया ।

जिन दिनो मे राजा जयसिह ने यह प्रस्ताव किया था, राजपूतो की आर्थिक दशा उन दिनो मे बहुत खराब हो चुकी थी। उनकी आमदनी के रास्ते बिगडते जाते थे और खर्चो के नाजायज बोझ उनके सिर पर नये-नये पैदा होते जाते थे। उन दिनो भट्ट कवियो का प्रभाव बहुत बढ गया था। राजाओ, सामन्तो और सरदारो की झूठी प्रशसाये करना उनका काम था। उसके बदले मे उनको राजपूतो से सदा लम्बी-लम्बी रकमे मिला करती थी। इन कवियो ने अपनी झूठी प्रशसाओ के सुनने का उनको आदी बना दिया था।

विवाहो के अवसरो पर कवि लोग राजपूतो की झूठी प्रशसाये करके और उनके पूर्वजो के हजारो वर्ष पहले के दृश्य उपस्थित करके वे कवि उनको मूर्ख बनाने का काम करते थे। विवाहो मे राजपूत अपनी मर्यादा के बाहर जो धन खर्च करते थे, उसके अपराधी यह कवि थे। ये लोग अपनी कविताओ के द्वारा उनको प्रोत्साहन देते थे। इन कवियो ने राजपूतो को जीवन की सही बाते कभी नही बतायी थी। घर के लडाई—झगडो मे राजपूतो को इन कवियो से अनुचित प्रोत्साहन मिलता था।

राजा जयसिह ने राजपूतो मे प्रचलित कुरीतियो को सुधारने की कोशिश की थी। परन्तु इन झूठे प्रशसक कवियो के विरोध प्रचार के कारण उसमे सफलता न मिली। इस सुधार के कार्य मे राजपूत आगे न बढ सके। उनके सलाहकारो ने उनको विरोधी सलाहे इस लिए दी कि कुरीतियो मे सुधार होने से सबसे बडी हानि उन्ही की होती थी। विवाहो के अवसरो पर कवि और ब्राह्मण राजपूतो के यहाँ जाते थे और झूठी प्रशसाये करके वे लोग दोनो पक्ष से धन वसूल करते थे। जो लोग इन कवियो और ब्राह्मणो को अधिक से अधिक सम्पत्ति देकर प्रसन्न न कर सकते थे, उनके विरुद्ध कविताये बनाकर ये लोग उसका तिरस्कार करते थे। उस अपमान से बचने के लिए विवाह के अवसरो पर इन कवियो को अधिक-से-अधिक सम्पत्ति देकर प्रसन्न करने की कोशिश की जाती थी।

विवाह मे अधिक व्यय करने के लिए प्रोत्साहन देना और दान करने की प्रथा का वर्णन करके राजपूतो को अधिक खर्च करने के लिए विवश करना कवियो का काम था। लडकी के विवाह मे पिता को किस प्रकार अपनी सम्पत्ति लुटानी पडती थी, उसका सहज ही कोई अनुमान नही लगा सकता। प्रसिद्ध कवि चराड ने लिखा है 'पृथ्वीराज के साथ अपनी लडकी के विवाह मे दाहिमा ने अपना पूरा खजाना खाली कर दिया था। धन के इस दुरुपयोग मे उसकी प्रशसा की गयी और भविष्य की विपदाओ मे उसको आधारहीन बना दिया गया। इस विवाह मे लडकी के पिता को आँखे बन्द करके जो कुछ खर्च करना पडा था, उसमे एक लाख रुपये उसने राज कवि को दिये थे।'

विवाह मे लडकी के पिता को धन देना पडता था, उसमे ब्राह्मण और कवियो को दी जाने वाली सम्पत्ति पहले से ही निर्धारित रहती थी। राणा भीमसिह की आर्थिक अवस्था बहुत जीर्ण शीर्ण हो गयी थी परन्तु अपनी लडकी के विवाह मे राज कवि को उसे भी एक लाख रुपये देने पडे थे। राजपूतो की आर्थिफ दशा लगातार गिरती जाती थी। परन्तु लडकियो के विवाहो मे खर्च की जाने वाली सम्पत्ति मे वृद्धि होती थी। राजा जयसिह ने इसको रोकने की कोशिश की थी। परन्तु उसको सफलता न मिली।

राजपूतो मे उनकी लडकियो के विवाहो की समस्या बहुत पहले से भयानक थी। कितनी ही बातो को लेकर राजपूतो के लिए यह समस्या बहुत असह्य हो गयी थी। यही कारण था कि

और इस बलिदान के फलस्वरूप स्वर्ग मे उस श्रेष्ठ सिंहासन को प्राप्त करोगे, जो देवता नही प्राप्त होता।"

वीरमाता देवल देवी इतना कह कर चुप हो गयी। आल्हा और ऊदल युद्ध में तैयार थे। उसी समय दोनो की स्त्रियो ने आकर कहा: "शत्रुओ का सहार करना धर्म है। युद्ध करते हुए यदि वे मारे जाते है तो उनकी स्त्रियाँ अपने मृत पति के शरीर के होकर अपने धर्म का पालन करती है।"

राजपूतो के जीवन मे जितना शौर्य था, उतनी ही उनकी स्त्रियो मे अपने धर्म के मभता थी। राजस्थान के इतिहास मे इस प्रकार के अगणित उदाहरण मिलते है जो रा स्त्रियो की श्रेष्ठ मर्यादा का उज्जवल प्रमाण देते है। यहाँ पर आवश्यकतानुसार संक्षेप मे के कुछ उदाहरणो का वर्णन करना आवश्यक है। मुगल बादशाह औरगजेब ने अपने पिता को सिंहासन से उतार कर कैद मे रखा था और अपने सगे भाई दारा शिकोह को मार सिर काट लिया था। उस समय राजपूतो ने औरगजेब के विरुद्ध तलवार उठायी थी। राठौर यशवत सिह के नेतृत्व मे तीस हजार राजपूत औरङ्गजेब के साथ युद्ध करने के लि हुए और नर्वदा नदी की तरफ बढ कर मुराद के साथ आयी हुई मुगल सेना पर टूट पड़े। सेना ने राजपूतो पर गोलो की वर्षा की और अत मे नर्वदा नदी को पार कर मुराद औरङ्गजेब की सेना के पास पहुँच गया।

दूसरे दिन राजपूतो ने मुगलो के साथ प्रातःकाल से ही युद्ध आरम्भ किया। उस युद्ध मे सारा दिन बीत गया। उस सग्राम मे मुगलो की विजय हुई और यशवंतसिंह बचे हुए के साथ लौट कर अपने राज्य मे पहुँच गया। इतिहासकार फरिश्ता ने लिखा है कि यशव ब्याह उदयपुर के राणा की बेटी के साथ हुआ था। राणा की पुत्री ने जब सुना कि पराजित होकर शत्रुओ के डर से भाग कर अपने राज्य मे आया है तो उसने अपने दरवाजा बन्द करवा दिया और यशवतसिह को भीतर नही आने दिया।

यशवतसिंह के जीवन की इस घटना का उल्लेख करते हुए इतिहासकार बर्नियर है. "जब यशवतसिंह की रानी ने सुना कि उसका पति शत्रुओ के सामने युद्ध करता हुआ हुआ है और बहुत से राजपूतो के मारे जाने पर वह भागकर आया है तो रानी ने अपमानित अपने महल का द्वार बन्द करवा दिया और पति को महल मे आने की आज्ञा नही दी। आवेश मे आकर यहाँ तक कह डाला कि जो शत्रुओ को पीठ दिखाकर भागा है, वह मेरा नही हो सकता। इतना कहने के बाद भी राणा की पुत्री को सतोष नही हुआ। उसने विजय न मिलने पर राजपूत को युद्ध क्षेत्र मे ही अपने प्राणो को उत्सर्ग करना चाहिए। चिता तैयार करने की आज्ञा दी और उसमे बैठकर उसने भस्म हो जाने का निर्णय किया। की सखियो ने जब यह सुना तो उन्होने उसको समझाते हुए कहा—"आपके ऐसा करने से को भी आपकी चिता मे बैठकर जलना पडेगा। इसलिए धैर्य के साथ आप थोडा-सा विचार सखियो को उत्तर देते हुए जो कुछ रानी ने कहा, उसमे राजा यशवतसिंह के लिए वहुत से शब्द मान-जनक थे। रानी ने एक सप्ताह तक अनशन रहकर एकान्त जीवन व्यतीत किया।"यह उदयपुर पहुँचा और वहाँ से रानी की माता ने आकर अपनी बेटी को समझाया कि—' थकावट को मिटाकर यशवतसिंह अपनी नयी सेना के साथ युद्ध मे जाने की तैयारी कर रह इसलिए तुम ऐसा न करो।" माता के इस प्रकार विश्वास दिलाने पर रानी ने अपना अनशन

मे हिन्दुओ ने मुसलमानो से यह प्रथा सीखी, जिसका पालन हिन्दू अब तक करते है ।

स्त्रियो के सम्बन्ध मे मनु ने एक स्थान पर लिखा है "त्यौहरो और खुशी के अवसरो पर उनको आभूषणो और अच्छे वस्त्रो को पहनकर अपने पति से स्त्रियो को मिलना चाहिए । इससे उनके पति प्रसन्न होगे ।"

मनु ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक मनुस्मृति मे स्त्रियो को सम्मान भी दिया है और उनकी मर्यादा के विरुद्ध भी लिखा है "ससार मे स्त्री मूर्ख को ही नही, बल्कि तपस्वी को भी सन्मार्ग से खीचकर गन्दे मार्ग पर ले जाने की योग्यता रखती है ।" इस प्रकार का विश्वास स्त्रियो को परदे मे रखने की प्रथा का समर्थन करता है और इस धारणा का सम्बन्ध न केवल राजस्थान के साथ है, बल्कि ससार की समस्त स्त्रियो से सम्बन्ध रखता है ।

पति के मर जाने पर स्त्री को विधवा और स्त्री के मर जाने पर पुरुष को विधुर कहा जाता है । लेकिन पति के मरने पर उसकी स्त्री के माथे पर जिस प्रकार विधवा शब्द का साइनबोर्ड लगता है, उतना स्त्री के मर जाने पर माथे पर विधुर शब्द का नही लगता । वैधव्य अवस्था आ जाने के बाद कोई भी स्त्री इस देश मे विधवा के नाम से ही आम तौर पर पुकारी जाती है । पति के रहने पर वैधव्य उसके जीवन की एक अवस्था है, जो उसके माथे पर न मढी जानी चाहिए । विधवा शब्द मे स्त्री के तिरस्कार की भावना है, जिससे उनके प्रति पुरुषो के दृष्टिकोण का सहज ही अनुमान होता है । *

कन्याओ को मार डालने, सती होने और जौहर व्रत पालन करने की प्रथाओ को अपने जीवन मे आश्रय देकर राजपूतो ने अपने जिस स्वाभिमान और स्वातन्त्र्य का परिचय दिया था, वह ससार मे अन्यत्र आसानी से देखने को न मिलेगा । जिन जातियो मे इस प्रकार के आचरणो के थोडे-बहुत आभास ससार के जिन लोगो मे मिलते थे, राजपूत उनमे प्रधान थे । इस प्रकार की प्रथाये स्वाभिमानी राजपूतो के बलिदानो का परिचय देती है । ससार के जिन लोगो मे बलिदान होने की शक्ति नही, वह कभी स्वतन्त्र नही रह सकती । बलिदानो की शक्ति मनुष्य की श्रेष्ठता का प्रमाण देती है । इसलिए राजपूतो की उन प्रथाओ की निन्दा बिना समझे बूझे नही की जा सकती । उन प्रथाओ के कारण थे । और उनके द्वारा भविष्य मे जो असह्य अपमान सामने आ सकता था उनको रोकने के लिए रापूतो की ये प्रथाये औषधि के रूप मे थी । इसे सभी स्वीकार करेगे ।

इन प्रथाओ के सम्बन्ध मे इतनी ही बात नही है । आक्रमणकारी राजपूतो पर इस प्रकार अत्याचार करते थे और उनके परिणामो को भोगना न पडे, इसलिए राजपूतो ने इस प्रकार की प्रथाओ को अपने यहाँ प्रचलित कर रखा था, यह अवस्था राजपूतो के लिए कभी प्रशसनीय नही को सकती । लेकिन राजपूतो की समस्या को लेकर हम यहाँ अधिक विस्तार नही देना चाहते । किसी भी अवस्था मे, उनकी वे प्रथाये बलिदानो से भरी हुई थी । राजस्थान की वे परिस्थितियाँ बडा

---

* बोल-चाल की भाषा मे विधवा को रॉड कहा जाता है । जिन दिनो मे मै अपने साथ कुछ राजपूत सैनिको को लेकर राजस्थान के देहातो मे घूम रहा था, साथ के एक सैनिक ने एक कुएँ पर जाकर पानी भरती हुई एक विधवा स्त्री को रॉड कहकर पानी माँगा । वह विधवा स्त्री इस शब्द को सुनकर क्रोध मे तमतमा उठी और अपने आवेश पूर्ण शब्दो मे कहा " मै एक राजपूत स्त्री हूँ ।" यह कहकर उसने उस सैनिक की तरफ देखा, सैनिक ने अपने आपको सम्हालकर क्षमा माँगी । इसके बाद उस स्त्री ने उस सैनिक को पानी दिया ।

गजनी के सुलतान के आक्रमरण करने पर पृथ्वीराज के दरबार में बहुत से युद्ध कुशल सरदार, सामन्त और नरेश परामर्श के लिए एकत्रित हुए थे। उसको यह निर्णय क कि गजनी के सुलतान के साथ किस प्रकार युद्ध किया जाय। इसी अवसर पर पृथ्वीराज उन छोड़ कर संयुक्ता के पास परामर्श के लिए गया था। सयुक्ता ने पृथ्वीराज को अपनी सम हुए कहा :

"स्त्रियो से भी कोई परामर्श लेता है? ससार के पुरुषो का विश्वास है कि होती है। यह विश्वास यहाँ तक बढा हुआ है कि अगर स्त्रियाँ सही बात भी कहती है तो पुरुष महत्व नही देते। सत्य तो यह है कि स्त्री स्वय शक्ति का स्वरूप है। लेकिन उससे लोगो की यह धारणा मे हम पवित्र और अपवित्र—दोनो है! गुण और अवगुण, योग्यत अयोग्यता—सब कुछ हम मे है। पुरुष बुद्धिमान होते है स्त्रिया मूर्ख होती है! एक पुरुष ज पुस्तको को देखकर ग्रहो की चाल के आधार पर मनुष्य के जीवन की अज्ञात बाते जान स लेकिन उसकी पुस्तको का ज्ञान स्त्रियो को समझाने मे सहायता नही करता। स्त्रियो के सम पुरुषों की यह धारणा—आज की नही, बहुत पुरानी है और सदा से यही रही है। उसकी ने स्त्रियो को समझाने के योग्य नही रखा। इतना सब होने पर भी स्त्रिया पुरुषो के दुख औ मे भाग लेती है। भूख और प्यास मे स्त्री कभी पुरुष से जुदा नही होती। स्त्रिया यदि सरो तो पुरुष राजहस होते है। स्त्री और पुरुष की यह मर्यादा बहुत पुरानी है। फिर उसक कौन सुनता है!'

उस समय सयुक्ता ने पृथ्वीराज से इस प्रकार की बातें की। उसके शब्दो मे उस जी आभास था, जिसका भोग ससार मे अत्यन्त प्राचीन काल से स्त्रियो ने आज तक किया है। पर संयुक्ता के ऐसा कहने का अभिप्राय क्या था, यह समझ मे नही आता। गजनी के सुल युद्ध करने के सम्बन्ध मे वह पहले से ही अपना परामर्श दे चुकी थी। फिर उससे पृथ्वी पूछने और परामर्श लेने का क्या अर्थ हो सकता है!

मोहम्मद गोरी से युद्ध करने के लिये दिल्ली मे सभी प्रकार की तैयारियाँ हुई। अ अपनी सेनाओ के साथ सरदार-सामन्त और दूर-दूर के राजा आकर वहा पर एकत्रित हुए। स ने पृथ्वीराज को युद्ध मे जाने के लिए अपने हाथो से तैयार किया। युद्ध के बाजो के साथ की विराट सेना युद्ध के लिए रवाना हो गयी। युद्ध स्थल मे दोनो ओर की सेनाओ का सग्राम हुआ। दोनो तरफ के अगणित मनुष्य काट-काटकर फेक दिये गये और उनके रक्त के बहे। अत मे युद्ध करते हुए पृथ्वीराज बदी होकर मारा गया। चिता बनाई गयी। अपने मृत के साथ उस चिता मे बैठकर सयुक्ता ने अपने प्राणो की आहुति दी।

हम लोगो ने लुक्रेशिया का जीवन-चरित्र पढा है, ठीक उसी प्रकार की घटना गा रानो के जीवन मे मिलती है। शत्रुओ के आक्रमण से अपने पाँच दुर्गों को सुरक्षित करके उसने के किनारे पर अपनी सेना का मुकाम किया और वहा से नदी को पार करके उसका इरादा दुर्ग मे जाने का था। उसी समय शत्रु-सेना वहा पर आ पहुँची। रानी की सेना उस समय थोडी थी। इसलिए आसानी से शत्रु-सेना ने रानी के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। उसी से व आज भूपाल मे शासन करते है! गानोर की रानी का रूप लावण्य देखकर शत्रु-सेना का से खान बहुत प्रसन्न हुआ, अपने दूत के द्वारा खान ने रानी के पास सदेश भेजा कि वह हमारी प्रा को स्वीकार करे और वह हमारे साथ इस राज्य पर शासन करे। अगर रानी ने उसे स्व किया तो उसका परिणाम अच्छा न होगा।

दूसरे से भिन्न थे। जयपुर, उदयपुर, नही हो सकता और सीसोदिया वंश की योग्यता दूसरे राजपूत वंशो मे नही मिल सकती। ठीक यही अवस्था वहाँ के अन्य राज्यो और राजपूत वंशो की थी। इतना सब होने पर भी कोई भी निष्पक्ष मनुष्य राजपूतो के चरित्र की प्रशंसा करेगा। सम्राट अकवर के प्रसिद्ध मन्त्री अवुल फजल ने लिखा है : "धार्मिकता, व्यवहार की मधुरता, स्नेह परायणता, न्यायप्रियता, कार्यकुशलता, सभ्यता और लोकप्रियता की तरह के बहुत-से गुण राजपूतो मे पाये जाते हैं। इन सब गुणो के साथ वे युद्ध प्रिय होते हैं। पराजित होने पर भी भागकर प्राणो की रक्षा करने के वजाय रणभूमि मे मर जाना वे अधिक श्रेष्ठ समझते हैं।"

राजपूतो के अनेक गुणो को स्वीकार करने के बाद हम उनके जीवन की उन बातो का उल्लेख करना भी यहाँ पर आवश्यक समझते हैं कि जिनके कारण भारतवर्ष की इस प्रसिद्ध जाति की शक्तियाँ छिन्न भिन्न हुई थी। राजपूतो मे आमतौर पर अफीम सेवन करने की आदते पायी जाती थीं और उनकी इन आदतो ने उनको बहुत-कुछ बरबाद करने का काम किया। मुगल सम्राट बाबर के द्वारा इस देश मे सबसे पहले अंगूर आये थे और उसके प्रपौत्र जहाँगीर ने हिन्दुस्तान मे तम्बाकू का प्रचार किया। अफीम के सेवन करने की आदत इस देश के लोगो मे कब से शुरू हुई थी, इसे मैं ठीक-ठीक नही कह सकता। चण्ड कवि ने अपने प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ मे इसका कोई उल्लेख नही किया। लेकिन यह मानना पडेगा कि राजपूतो के विनाश का कारण उनके अफीम के सेवन करने की आदत थी। वे लोग इसका सेवन क्यो करते थे, इसे मैं नही समझ सका। अफीम खाने के बाद कुछ समय के लिये शरीर मे एक अद्भुत शक्ति का संचार होता है। सम्भव है लडाकू राजपूतो ने इस प्रलोभन से अफीम का सेवन आरम्भ किया हो और उसके बाद वे उसके अभ्यासी हो गये हो कि बाद मे वे उसे छोड न सके हो। उनकी इस आदत के सम्बन्ध मे इस प्रकार की कल्पना की जा सकती है।

राजपूत लोग जल में अफीम घोलकर उसका सेवन करते थे। यहाँ के प्राचीन ग्रन्थो में—जहाँ तक हमको समझने का मौका मिला है—अफीम के सम्बन्ध मे कोई जिक्र नही पाया जाता। अपने जीवन के विशेष अवसरो पर राजपूत अफीम का सेवन करते थे और इसके बाद वे भयानक से भयानक कार्यों की वे प्रतिज्ञा करते थे। राजपूतो की एक साधारण प्रतिज्ञा भी शपथ से अधिक महत्व रखती थी। आदर और सत्कार के अवसरो पर राजपूतो को पानी मे घोलकर अफीम पिलायी जाती थी। पुत्र उत्पन्न होने की खुशी मे अथवा विवाह के उत्सवो मे जल के बडे बडे बरतनो मे अफीम घोलकर तैयार की जाती थी और उसके बाद वह एकत्रित राजपूतो को बडे आदर और सम्मान के साथ पिलाई जाती थी। पीने के बाद उनको खाने के लिये मीठे लड्डू दिये जाते थे।

अफीम का प्रभाव जब राजपूतो के शरीर मे न रहता था तो वे बिलकुल अकर्मण्य हो जाते थे। इस प्रकार की बातो को स्वय मैंने अपने नेत्रो से देखा है। राजपूत कर्मचारी जब काम करने में असमर्थ हो जाते थे तो मैं उनको अफीम का सेवन करने के लिये छुट्टी दे देता था। इसलिये कि यदि

गढा राज्य जबलपुर के समीप है। रानी दुर्गावती की राजधानी जब बिलकुल विध्वंस हो गयी, उस समय भी ऊँचे शिखर से ऊपर गोल पत्थर का बना हुआ तिमञ्जिला महल बना हुआ था। उसका नाम था, महल। उस शिखर मे रहने के और भी बहुत-से मकान बने हुये थे। वे सब अब खण्डहर हो चुके हैं।

मूल्य वस्त्र और आभूषण पहना करती थी। परन्तु कोटा की राजकुमारी इस प्रकार की घृणा करती थी। एक दिन राजा जयसिंह ने साधारण बातचीत करते हुए कोटा की कहा : "तुम्हारे वस्त्रों और आभूषणो से तो इस राज्य की प्रजा के घरो की स्त्रियाँ क और आभूषण पहनती है।"

कोटा की राजकुमारी ने इसका कुछ उत्तर न दिया। राजा जयसिंह ने कॉच का लेकर रानी के पहने हुए वस्त्रो को फाडना चाहा। कोटा की राजकुमारी ने इससे अपना अनुभव किया। उसने तेजी के साथ तलवार निकाल कर आवेश पूर्व शब्दो मे कहा . ' वश मे जन्म लिया है, वह वंस इस प्रकार के उपहास को कभी सहन नही कर सकता। ने मेरा इस प्रकार अपमान किया तो आप देखेंगे कि अम्बेर के राजकुमार कॉच का टु मे उतने होशियार नही होते जितनी होशियार कोटा की राजकुमारियाँ तलवार होती है।'

राजा जयसिंह ने गम्भीर होकर कोटा की राजकुमारी की तरफ देखा। उसकी से इस बात का आभास हो रहा था, मानो वह अपनी भूल का अनुभव कर रहा है। उसी सम की राजकुमारी ने कहा : "कोटा वश की किसी लडकी का भविष्य मे कभी ऐसा अपमान इसलिए इस अपमान के विरुद्ध मुझे ऐसा करना पडा है।" राजकुमारी के सतोष के लि जयसिंह ने उस समय जो शपथ उठायी, वह अब तक वहाँ पर मानी जाती है।

राजस्थान की साधारण स्त्रियो मे जो साहस और शौर्य पढने और देखने को मि उससे आश्चर्य चकित हो जाना पडता है। गरीब राजपूत यहाँ हर खेती का काम करते है की लडकियाँ तथा स्त्रियाँ उनके कार्य मे सहायता देती है। राजपूत कृषक जब काम लिए अपने खेतो पर जाते है, तो उनकी लडकियाँ और स्त्रियाँ भोजन पका कर खेतो पर जाती है।

पञ्चपहाड के शिखर से मिले हुए एक जगल के भीतर से एक राजपूत रमणी जा रह उसका पति वहाँ से कुछ दूरी पर अपने खेतो मे काम कर रहा था। राजपूत स्त्री उस भोजन ले जा रही थी। उस जगली रास्ते मे एक शूकर ने आकर स्त्री पर आक्रमण करना स्त्री तेजी से एक बडे वृक्ष की तरफ दौडी। शूकर ने पीछा किया। स्त्री उस वृक्ष के आ घूमने लगी। उसको पकडने के लिए शूकर भी उसके पीछे-पीछे दौडने लगा। स्त्री ने जब क उपाय न देखा तो उसने अपने दोनो हाथो से शूकर की गरदन को इस प्रकार पकड लिया दाहिने और बायें अपनी गरदन को घुमा न सका। इसी समय कुछ फासले पर स्त्री सैनिक को जाते हुए देखा। स्त्री ने चिल्ला कर अपनी सहायता के लिए उस सैं बुलाया।

बुलाने की आवाज सुनते ही सैनिक उस स्त्री के पास तेजी के साथ आया और उसने को दोनों हाथो से पकड लिया। स्त्री वहाँ से चल पडी। वह अभी कुछ ही दूर आगे गयी थी, समय उस सैनिक ने जोर के साथ चिल्ला कर कहा : "यह शूकर मेरे काबू का नही है।"

सैनिक की इस बात को उस स्त्री ने सुना। वह तेजी के साथ दौड कर उस खेत पर जहाँ उसका पति काम कर रहा था और वहाँ से अपनी पति की तलवार को लेकर वह लौट शूकर के पास आकर उसने सैनिक से अलग हो जाने के लिए कहा। उसके हटते ही उस अपनी तलवार का जोरदार वार शूकर की गरदन पर किया। वह जख्मी होकर जमीन पर गया। उसके बाद स्त्री अपने पति के खेत पर चली गयी।

राजपूत जब कभी किसी बडे कार्य के करने की प्रतिज्ञा करते थे तो उसके लिये उनके तीन नियम थे। पहला नियम तो यह था कि बहुत से लोगो के बीच मे बैठकर और अफीम का सेवन करके वे उस कार्य के करने की प्रतिज्ञा करते थे। दूसरा नियम यह था कि उसके लिये वे परस्पर पगडी का परिवर्तन करते थे। इसके लिये एक तीसरा नियम यह भी था कि वे लोग आपस मे दाहिना हाथ मिलाते थे। इस प्रकार जिस कार्य के लिये राजपूत एक बार प्रतिज्ञा कर लेते थे, उसको वे किसी प्रकार पूरा करते थे और आवश्यकता पडने पर उसके लिये वे अपनी जान दे देते थे।

राजपूतो के शिकार खेलने के सम्बन्ध मे भी बहुत सी-बाते लिखी गयी हैं। वे लोग अपने कुत्तो और अपनी बन्दूको के साथ बडा प्रेम करते थे। वे शिकार खेलने के शौकीन थे। उनके कुत्ते शिकार खेलने मे उनकी सहायता करते थे। जङ्गल मे जाकर जब राजपूत किसी शूकर अथवा इस प्रकार के किसी जङ्गली जानवर पर आक्रमण करता था तो उसका कुत्ता उस जानवर का पीछा करता था। राजपूत घोडो के अच्छे सवार होते थे और प्राय: अपने घोडो पर बैठकर वे शिकार खेलने के लिये जाया करते थे।

शिकार खेलने के लिये राजस्थान के राज्यो मे बडे-बडे जङ्गल सुरक्षित रक्खे जाते थे और 'रूमना' के नाम से उन जङ्गलो की रक्षा की जाती थी। राजा के सिवा उन जङ्गलो मे जाकर दूसरा कोई शिकार नही कर सकता था। अगर कोई उन जङ्गलो मे शिकार खेलते हुये पाया जाता था तो गिरफ्तार करके उसको दण्ड दिया जाता था। इन सुरक्षित जङ्गलो मे मृग, शूकर, हिरन, बाघ, जङ्गली कुत्ते, नेकडे और इस प्रकार के कितने ही दूसरे जानवर पाये जाते थे। समय-समय पर उनका शिकार खेलने के लिये राजा लोग अपने सामन्तो और सरदारो के साथ उन जङ्गलो मे जाया करते थे। वे लोग तलवार भाले से इन जानवरो का शिकार करते थे।

राजपूत बन्दूको के प्रयोग मे बडे अभ्यासी होते थे। उनके निशाने अचूक होते थे। तेजी के साथ दौडाते हुये घोडो की जब वे तलवारो और बर्छों का प्रयोग करते थे तो उनके वे दृश्य देखने के योग्य होते थे। राजपूत तीरदाजी मे भी अद्वितीय होते थे। इस प्रकार के सभी कार्यों के लिये शक्ति और अभ्यास की आवश्यकता होती है। राजपूतो के शरीरो मे अपार शक्ति होती थी। वे अपनी बहुत छोटी अवस्था से तीर, तलवार और भाला चलाने का अभ्यास करते थे। राजपूतो मे इस प्रकार का अभ्यास बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा था। उन लोगो मे लडने, युद्ध करने, शिकार खेलने और शत्रु पर आक्रमण करने को जितना महत्व दिया जाता था, उतना दूसरी किसी बात को नही।

प्रत्येक राजपूत अपनी सतान मे साहस और शौर्य उत्पन्न करने का काम करता था। जन्म और मृत्यु को वे अधिक महत्व न देते थे। किसी भी अवसर पर राजपूत लडको का मारा जाना विषद की कोई विशेषता न रखता था। लडना और युद्ध करना राजपूतो के जीवन का अत्यन्त प्रिय विषय था। ऐसे अवसरो पर यदि कोई राजपूत अथवा किसी राजपूत का बेटा मारा जाता था तो उसके परिवार के लोग क्रन्दन नही करते थे। बल्कि यदि वे आवश्यक समझते तो उसका बदला लेने के लिये वे लोग चेष्टा करते थे। अपने प्राणो की बलि दे देना, साधारण बातो मे मारना और मार डालना अथवा इसके लिये भयानक आक्रमण कर देना, वे लोग अपने जीवन की साधारण बात समझते थे।

को विदा करने के समय उसने चार हजार मोहिल सैनिकों को रास्ते में रक्षा करने के
माणिकराव की इस सहायता के लिए धन्यवाद देकर साधु ने कहा : "मार्ग मे किसी
के साथ युद्ध करने के लिए मेरे साथ के सात सौ सैनिक काफी है । आप किसी प्रकार
करे ! मै सुरक्षित अवस्था मे मरुभूमि पहुँच जाऊँगा ।"

साधु के इतना कहने पर भी कर्मदेवी के बडे भाई ने अपने पचास शूरवीर
भेजे । सब के साथ पराक्रमी साधु मरुभूमि की तरफ रवाना हुआ । चंदन नामक स्थान
कर उसने सबके साथ विश्राम किया । इसी समय मदोर राज्य से अरण्य कमल की भेजी
ने वहाँ पहुँचकर आक्रमण करने की चेष्टा की । शूरवीर साधु अपनी पञ्चकल्याणी नाम
घोडी की पीठ के वस्त्रो को बिछा कर उस समय विश्राम कर रहा था ! पञ्चकल्याणी
उसकी दाहिनी भुजा मे बँधी थी । इस समय मन्दोर के दूत ने आकर साधु का अभिव
और भेजे गये सदेश को कहते हुए उसने प्रार्थना की कि मन्दोर राज्य की सेना आपके
करने के लिए आयी है ।

शूरवीर साधु ने सहज स्वभाव से युद्ध की बात स्वीकार कर लिया और अपनी
देते हुए उसने दूत से कहा . "मेरे साथ जो अफीम थी, वह कही खो गई है । इसलिए
लिए तुम थोडी-सी अफीम अपने स्वामी से लेकर मेरे पास भेज देना ।"

दूत ने ऐसा ही किया । साधु के सेवन करने के लिए दूत ने तुरत अफीम भेज
पाकर साधु बहुत सतुष्ट हुआ और एक खूराक खा कर वह फिर लेट गया । कुछ देर तक
करने के बाद वह उठ कर खडा हुआ । अपने साथ के सैनिको को युद्ध के लिए तैयार होने
दी और वह स्वय तैयार होने लगा । युद्ध की पोशाक पहनने के बाद उसने अपने
तैयार किये ।

मदोर राज्य से आयी हुई सेना भी युद्ध के लिए तैयार हो रही थी । इन तैयारिय
दोनो तरफ से युद्ध के बाजे बजे और दोनो सेनाये युद्ध करने के लिए एक दूसरे की त
लगी । थोडी देर मे दोनो ओर से घमासान युद्ध आरम्भ हुआ । जहाँ पर यह मारकाट
उससे कुछ दूरी पर कर्मदेवी का रथ खडा हुआ था और उस पर बैठी हुई वह युद्ध मे
साधु के पराक्रम को देखकर प्रसन्न हो रही थी । पञ्चकल्याणी घोडी पर बैठा हुआ साधु
तलवार से मंदोर के सैनिको का सहार कर रहा था उसकी तलवार की इस तेजी
कर्मदेवी अत्यन्त प्रसन्न हो रही थी । युद्ध के समय अनेक बार उसने साधु की वीरता
जयकार की ।

बहुत देर की मारकाट के बाद दोनो ओर की सेनाये पीछे हट गयी । अब त
दोनो तरफ के बहुत से सैनिक मारे गये थे । मदोर के छै सौ सैनिको का अंत हो चुका था
के साथी आधे सैनिक युद्ध मे धराशायी हो चुके थे । इस अवस्था मे पराक्रमी साधु अपनी
बैठा हुआ कर्मदेवी के रथ के पास आया । उसके शरीर मे कई घावो से रक्त बह रहा था
पास देखकर कर्मदेवी ने हँसकर उसकी प्रशसा की । साधु ने युद्ध की परिस्थित पर
हुए कुछ बाते कर्मदेवी से कही और कर्मदेवी की मुख की तरफ देखकर साधु ने अपने
मे कहा "युद्ध की हालत अच्छी नही है । अब वह फिर आरंभ होने वाला है । मै अब तु
लिए अपने जीवन की अतिम बिदा लेने आया हूँ ।"

पति की बात को सुनकर कर्मदेवी ने अपने ओजस्वी शब्दो मे कहा : "राजपूत
उसके युद्ध की वीरता मे है । मैने आपकी प्रशसा अपने कानो से पहले सुनी थी । आज

राजपूतो मे सङ्गीत प्रियता का गुण भी बहुत पाया जाता था। वे स्वय गाने और बजाने के शौकीन होते थे और जो लोग अच्छे गाने और बजाने वाले होते थे, उनका वे बहुत आदर करते थे। राजाओ मे जिनको सङ्गीत के साथ अधिक प्रेम था, राजा शिवधनसिह उनमे एक अच्छा सङ्गीतज्ञ माना जाता था। वह करीब-करीब रोज मेरे पास आता था और बिना किसी काम के बहुत समय तक वह मेरे पास बैठा रहता था।

राजा शिवधनसिह मे अनेक गुण थे। वह बन्दूक चलाने मे बहुत होशियार माना जाता था। उसमें प्राचीन साहित्य के प्रति बडी लगन थी। लोगो का विश्वास था कि राजा शिवधन राजपूतो की प्राचीन बातो को जितना अधिक जानता है, उतना शायद कोई दूसरा नही जानता। बातचीत मे उसकी इस योग्यता का सहज ही आभास होता था। उसके विचारो मे कवियो के समान ऊँची कल्पनाये होती थी और उसकी बातचीत मे मधुरता रहती थी। जब वह दूसरो से बातचीत करता था तो सुनने वालो को अपने मधुर भाषण से वह सदा प्रभावित किया करता था।

बहुत से लोगो ने मुझसे राजा शिवधनसिह के सङ्गीत-ज्ञान की प्रशसा की थी। बातचीत के सिलसिले मे मैंने उसकी इस योग्यता को अनुभव किया था। अनेक अवसरों पर मैंने उसके मुख से सुन्दर गाने सुने थे। वह स्वय मुझे अपने गाने सुनाने की कोशिश किया करता था। मैं उसके मुख से जो गाने सुनता था उनकी कला को मैं ठीक-ठीक तो न समझ सकता था। लेकिन उसके गाने का तरीका बहुत प्रिय मालूम होता था। उसके इस गुण की सभी लोग प्रशसा करते थे।

राजा शिवधन के पास गाने और बजाने वालो की एक अच्छी सख्या रहा करती थी। उसको इस बात का बहुत शौक था। उनके बीच मे बैठकर वह स्वय गाना गाता था और दूसरो के गानो को सुनता था। कई बार अपने साथ के इन लोगो को मेरे पास लाकर उसने उनके गाने मुझे सुनवाये थे। उसके समीप जो गाने और बजाने वाले रहते थे, उनमे पुरुष भी थे और स्त्रियां भी।

राजा शिवधनसिह के साथ के गाने बजाने वालो मे एक स्त्री बहुत प्रसिद्ध थी। उसके गाने लोग बहुत पसन्द करते थे। उसकी आवाज मे मधुरता थी। उसके बहुत-से गानो ने लोगो को प्रभावित किया था। उज्जयिनी से आने वाली एक स्त्री भी गाने मे बहुत प्रसिद्ध मानी जाती थी। मैंने उन दोनो स्त्रियो को एक साथ गाने के लिये कहा। शक्तावतो के सरदार और सालम्ब्रू के सामन्त अक्सर शिवधनसिंह के यहाँ गाना सुनने के लिये आया करते थे। वे सङ्गीत प्रिय थे और अच्छे गानो को सुनकर वे लोग बहुत प्रशसा किया करते थे। इन लोगो के गानो मे टप्पे अधिक गाये जाते थे और लोग उन्ही को अधिक सुनते भी थे। लडको के जन्म और विवाहो के उत्सवो मे इस प्रकार के गाने बजाने का प्राय. प्रबन्ध होता था। ऐसे अवसरो पर मुझे भी बुलाया जाता था। उन मौको पर दूर-दूर से आकर लोग शामिल होते थे।

राजा शिवधनसिह बन्दूक की गोली चलाने मे बहुत मशहूर था। वह बड़ी सफाई से गोल मारा करता था। किसी लड़के के सिर पर कोई छोटी चीज रखकर वह बडी सफाई के साथ अपनी बन्दूक की गोली से उसको उडा दिया करता था। लेकिन उस लडके को जरा भी चोट न आती थी।

शिवधनसिह के गोली चलाने की कला को मैंने स्वय अनेक अवसरो पर अपने नेत्रो से देखा था। उडती हुई छोटी-छोटी चिडियो के पङ्खो को वह गोली से मार देता था और अपने सामने आती हुई बन्दूक की गोली के दो टुकडे वह अपनी तेज तलवार से कर देता था। उसकी निशाना बाजी ने लोगो को आश्चर्य मे डाल दिया था। एक दिन उसने एक मिट्टी की हांडी मे जल भर कर उसमे एक

के पिता नरगदेव जिस समय अपने बेटे का बदला लेने की तैयारी कर रहा था उन्
अरण्य कमल का पिता राजा चण्ड मन्दोर मे नरगदेव से युद्ध करने की तैयारी कर रहा
के बेटे मारे गये थे और दोनो ही अपने बेटो का बदला लेना चाहते थे। मन्दोर राज्य की
मे सकल के सामन्तो ने साधु के साथ होने वाले युद्ध मे मन्दोर राज्य की सेना का साथ
इसलिए नरवदेव ने पूगल के वीरो को एकत्रित करके सकल के सामन्तो पर आक्रमण
उनके अधिकृत नगरो मे लूटमार की।

नरगदेव ने अपने इस आक्रमण मे सभी प्रकार के अत्याचार किये। लूटी हुई
लेकर वह पूगल की तरफ लौटा। रास्ते मे मन्दोर का राजा चण्ड एक विशाल सेना के
वह नरगदेव पर आक्रमण करने के लिए आया था। बात की बात मे दोनो ओर की
के लिए तैयार हो गयी और भीषण मारकाट आरम्भ हो गयी। इस लडाई मे वृद्ध नरं
गया। इसके बाद युद्ध समाप्त हो गया और मन्दोर का राजा अपनी सेना के सा
चला गया।

नरगदेव के दो शेष पुत्र तूनो और महीर को पिता के मारे जाने का असाधार
दोनो ही राजा चण्ड से बदला लेने की तैयारी करने लगे। उनका भाई साधु पहले ही
था। वृद्ध पिता का भी अत हो गया। अब उसके पास मन्दोर की सेना का सामना क
किसी प्रकार का बल न था। फिर भी दोनो भाइयो को सतोष न हुआ।

तूनो और महीर ने राजा चण्ड से बदला लेने के लिए बहुत से उपाय सोच डाले
भी दशा मे अपने पिता का बदला लेना चाहते थे। बादशाह खिजरखाँ उन दिनो मे मु
दोनो भाइयो ने वहाँ पहुँचकर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और मन्दोर राज्य
करने के लिए दोनो भाइयो ने बादशाह से सहायता माँगी।

बादशाह खिजिर खाँ ने उन दोनो भाइयो की बात को मजूर कर लिया और उन
के लिये अपनी एक फौज भेजी। उस फौज को लेकर राजा चण्ड पर आक्रमण करने के
और महीर रवाना हुए' इसी मौके पर जयशाल के राजकुमार कल्याल के साथ उनकी
कल्याण ने उन दोनो भाइयो को परामर्श दिया कि राजा चण्ड पर बिना किसी सूचना
आक्रमण किया जाय और उसका बदला लिया जाय। दोनो भाइयो ने इस बात
कर लिया।

राजकुमार कल्याण ने इतना ही नही किया। बल्कि उसने राजा चण्ड को धोखे
लिए और भी बहुत-से उपाय सोच डाले। उसने दोनो भाइयो के साथ अनेक प्रकार के प
एक षडयन्त्र की सृष्टि की। उसने राजा चण्ड के पास अपनी लडकी के विवाह का
और साथ ही यह भी कहला भेजा कि मै राजा चण्ठ के सतोप के लिए अपनी लडकी
भेजने के लिए तैयार हूँ। राजा चण्ड ने कल्याण के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।
का विस्तार इन दिनो मे नागोर तक हो चुका था।

राजा चण्ड के द्वारा प्रस्ताव की मन्जूरी मिल चुकने पर पहरेदार पाँच सौ रथ
साथ तैयार कराये गये और उन रथो मे पूगल के शूरवीर सशस्त्र सैनिक बैठे। रथो के
राजपूत रवाना हुए। सैकडो ऊँटो पर खाने-पीने की सामग्री रवाना हुई और उसकी
सशस्त्र सैनिक साथ मे चले। इसी अवसर पर राजा चण्ड विवाह के लिए नागोर की
हुआ। उसको नवीन पत्नी के पाने की प्रसन्नता थी।

नागोर के समीप पहुँचने पर राजा चण्ड ने रथो और सवारो के साथ ऊँटो

एक प्रकार से वशी की सी ध्वनि देता है। राजपूतो मे कई प्रकार के बाजो का प्रचार था और उनके बजाने वाले चतुर कलाकार राजस्थान के अनेक स्थानो मे पाये जाते थे।

अब हम राजस्थान के राजाओ की शिक्षा-दीक्षा पर कुछ प्रकाश डालना चाहते हैं। यहाँ पर ऐसा कोई राजा न था, जो लिखना-पढना न जानता हो। हम इङ्गलैण्ड के राजवंश मे उत्पन्न होने वाले उन लोगो को जानते हैं जो राज्य के कागजो पर हस्ताक्षर करना भी नही जानते थे और वे केवल राजवश मे उत्पन्न होने का अभिमान किया करते थे। राजस्थान के राजपूत राजाओ मे उस प्रकार कोई भी अशिक्षित नही था। उदयपुर के राणा मे लिखने की अच्छी शक्ति थी। उसके लिखे हुये पत्रो को पढकर कोई भी राणा की प्रशसा कर सकता है। मैं तो इङ्गलैण्ड के द्वितीय चार्ल्स का समर्थन करते हुये उदयपुर के राणा के सम्बन्ध में कह सकता हूँ : "उसने कभी कोई गलत बात नही लिखी बल्कि उसके पत्रो के अनेक स्थल उसकी योग्यता का परिचय देते हैं।" राणा के पत्रो मे मैने सदा शिष्टाचार पाया है, बन्धुत्व की पराकाष्ठा देखी है।

यहाँ के राजाओ और सामन्तों मे पत्र-व्यवहार की नकलो के रखने का बहुत अच्छा तरीका मैंने देखा है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वे लोग जिस किसी के साथ पत्र-व्यवहार करते हैं, उसका वे महत्व समझते हैं और जानते हैं कि सैकडो हजारो वर्षों के बाद इन पत्रो की सुरक्षित नकलो के द्वारा कितने उपयोगी कार्यो की पूर्ति हो सकेगी। इस प्रकार के पत्रो की नकलो के सग्रह मैंने राजस्थान के अनेक राज्यो मे पाये है। सग्रह किये हुये इन पत्रो के द्वारा इतिहास के जिन सही अशो की रचना की जा सकती है, उनका निर्माण दूसरे तरीको से उतना सही नही हो सकता। इसका यह भी अर्थ है कि यहाँ के राजा ऐतिहासिक सामग्री को सुरक्षित रखने मे बहुत बडी योग्यता रखते थे। इस प्रकार के पत्रो के द्वारा राज्य की परिस्थितियो का सही अध्ययन किया जा सकता है। उनके द्वारा प्राचीन बातो का जितना अच्छा ज्ञान हो सकता है, उतना अच्छा दूसरे साधनो द्वारा नही हो सकता। उनके राज्यो की राजनीतिक और सामाजिक कब कैसी परिस्थितियाँ हैं, इनके अध्ययन मे यहाँ के राजाओ के ये सग्रह प्रशसनीय हैं।

———

प्राचीन राजपूत स्त्रियो मे सती होने की एक प्रथा थी और राजा दक्ष ज
का नाम सती था। राजा दक्ष ने एक यज्ञ किया था और उसमे भाग लेने के लिए
राजाओ तथा नरेशो को आमन्त्रित किया था। लेकिन उसने अपने जामाता शिवजी क
नही भेजा था। सती को जब मालूम हुआ कि मेरे पिता ने यह यज्ञ किया है तो बिना
वह अपने पिता के यहाँ चली आयी। राजा दक्ष ने अपने यहाँ आये हुए राजाओ की
की निन्दा की। सती को अपने पिता से इस बात की आशा न थी। वह अपने पति
अपमान को सहन न कर सकी और उसने उस अपमान के विरोध मे जान दे दी।
के अनुसार, उस सती ने राजा हिमालय के यहाँ पार्वती के नाम से जन्म लिया और
को व्याही गयी। राजपूत स्त्रियो मे यह पुराना विश्वास था कि जो स्त्री अपने पति के
प्राणो का बलिदान करती है दूसरे जन्म मे उसे वही मनुष्य फिर पति के रूप मे मिलता
मे इस बलिदान की प्रथा की शुरुआत शैव लोगो से हुई। उसके बाद दूसरे लोगो मे उ
हुआ। शैव लोग शिव के पुजारी थे। उनकी स्त्रियोका इस दशा मे पार्वती या सती
का होना स्वाभाविक था। उन दिनो मे सीथियन, जित अथवा जठ जाति के लोगो मे ज
पुरुष मरता था, तो उसके मृत शरीर के साथ उसकी स्त्री, उसकी सवारी का थोडा
अस्त्र-शस्त्र चिता की प्रज्वलित अग्नि मे जलाये जाते थे। स्कैण्डीनेविया के लोगो से
यन, फ्रैङ्को और सैक्सन जाति के लोगो मे यह प्रथा फैली! इस प्रथा का प्रधान
प्राप्त करने का था। सती प्रथा के सम्बन्ध मे यह विश्वास किया जाता था कि सती
स्त्री न केवल अपने पापो से अपने आपको और पति को उसके पापो से मुक्त करती है,
जन्म मे फिर अपने पूर्व जन्म के पति को व्याही जाती है। इस प्रथा के सम्बन्ध मे
बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा था। इस विश्वास ने सती होने वाली स्त्रियो के
शक्ति मे वृद्धि की थी और इसी का यह परिणाम था कि बगाल की सहज ही भयभीत
स्त्रियाँ भी मृत पति के शरीर को लेकर प्रज्वलित चिता मे जलती थी।

सती प्रथा के सम्बन्ध मे हिन्दुओ के ग्रन्थ एक नही है। वेदव्यास ने अपने ग्रन्थ
मे इस प्रथा का समर्थन किया है। लेकिन मनु ने स्त्रियो को सती होने का उपदेश
इस सत्य को मानने से कोई इनकार न करेगा कि हिन्दुओ के आचरणो का निर्माण
के अनुसार हुआ है। मनुस्मृति नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ मे विधवा स्त्रियो के लिए बहुत-सी
लिखी गयी है और मनु ने आदेश देते हुए कहा है "विधवा हो जाने के बाद स्त्रियो
कि वे अपना शेष जीवन बडी सादगी के साथ बितावे, साधारण भोजन करे और सादे
वे भूलकर भी कभी दूसरे पुरुष का नाम न ले। पति के मर जाने पर जो स्त्री पवित्र जी
करती है, उसको मरने पर स्वर्ग मिलता है। परन्तु जो स्त्री विधवा हो जाने के बाद
विवाह करके मृत पति का अपमान करती है, इस लोक मे उसका नाम कलकित ह
मरने पर उसे नरक मिलता है।"

इस देश के सभी प्राचीन विद्वानो ने पवित्र जीवन बिताने के लिए विधवाओ
प्रकार के उपदेश दिये है। लेकिन उनमे से किसी ने सती प्रथा के निर्दय और अमानु
उपदेश नही दिया। इस प्रथा मे भीषण निर्दयता है। उसमे दाम्पत्य प्रेम नही है। व
की इतनी बडी कठोरता है, जो सुनने पर ही भयानक रूप से रोमाञ्चकारी है।
चरित्रबल पैदा करना और चरित्रवान बनाना एक श्रेष्ठ गुण है। परन्तु सती प्रथा
के विरुद्ध और अमानुषिक निर्दयता है।

और वहाँ के राजा अजयपाल को मार डाला। उस समय के इस वश का नाम कन्नौजिया राठौर पडा। कन्नौज का अन्तिम राजा जयचन्द हुआ। उसके भतीजे सियाजी को देश निकाला हुआ। वह कन्नौज के राज्य से भयभीत होकर भाग गया। राजा जयचन्द के वश के कितने ही लोग मरुदेश में जाकर बसे थे। कन्नौज के पतन के बाद राठौर वंश एक प्रकार मिट-सा गया था। परन्तु उसके बाद उस मृतप्राय वश ने धीरे-धीरे फिर से अपनी उन्नति की। मारवाड के इतिहास में इस प्रकार की सभी घटनाये पढने के योग्य हैं।

इतिहास की बहुत सी घटनाये प्रायः पाठको को नीरस मालूम होती हैं। परन्तु उनके भीतर मनुष्य के जीवन के अद्भुत रहस्य छिपे होते हैं। जो लोग मानव जीवन के रहस्यो को देखना और समझना चाहते , इतिहास की वे घटनाये उनके लिये बडी महत्वपूर्ण साबित होती हैं। इसी सत्य के आधार पर हम मारवाड राज्य के इतिहास की उन घटनाओ का वर्णन भी यहाँ पर करना चाहते हैं जो साधारण पाठको को सम्भव है, रुचिकर न मालूम हो, परन्तु इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वालो के लिये वे बडे काम की है।

सन् ११९३ ईसवी मे राजा जयचन्द के राज्य कन्नौज का पतन हुआ। उसके भाई और भतीजे मारवाड के बालुकामय प्रदेश मे चले गये। वहाँ पर जो सरदार रहते थे, इन लोगो ने उनके यहाँ पहुँच कर आश्रय लिया। कन्नौज से भागकर लगभग चार सौ वर्ष तक ये लोग गङ्गा के किनारे रेतीले स्थानो मे रहे। यहाँ पर इन्होने अपनी तीन राजधानियाँ बनायी। बड़े-बडे राजमहलो का निर्माण कराया। वे लोग एक ही बाप से पैदा हुये और पचास हजार की सख्या मे पहुँच गये। राजा जयचन्द ने इन शूरवीर वशजो ने दिल्ली के बादशाह का मुकाबिला किया। कन्नौज के पतन के बाद इस समय तक एक लम्बा समय बीत चुका था। इन चार शताब्दियो में राजा जयचन्द के जो वशज उत्पन्न हुये उनके मनोभावो मे कन्नौज विजेता के प्रति शत्रुता का भाव जीवित रहा। बादशाह शेरशाह की अभिलाषा ने सिया जी के वशजो की उस भावना को जाग्रत किया और पचास हजार राठौर कन्नौज का बदला लेने के लिये युद्ध-क्षेत्र मे पहुँच गये।

ऊपर जिन वशावलियो का उल्लेख किया गया है, उनके सिवा मारवाड के इतिहास के सम्बन्ध मे जो कई एक भट्ट ग्रन्थ पाये जाते है उनमे सूर्य प्रकाश प्रमुख हैं। इसलिये हम यहाँ पर इन्ही तीनो का आश्रय लेकर अपना वर्णन आरम्भ करते हैं।

मारवाड के दूसरे राठौर राजा अभयसिंह के शासनकाल मे उसकी आज्ञानुसार कर्णीदान नाम के एक भट्ट कवि ने सूर्य प्रकाश ग्रन्थ तैयार किया। इस ग्रन्थ मे पचहत्तर सौ छन्द हैं। सन् १८२० ईसवी मे राजा मान ने इसकी नकल मेरे पास भेजी थी। कर्णीदान कवि ने अपने इस ग्रन्थ को मनुष्यो की उत्पत्ति से आरम्भ किया है और राजा सुमित्र तक राजवशो का वर्णन किया है परन्तु नयनपाल तक किसी राजा अथवा राजवश का इस ग्रन्थ मे कोई विवरण नही मिलता। सूर्य प्रकाश मे लिखा है कि राजा नयनपाल ने कन्नौज राज्य को जीतकर और उस पर अपना अधिकार करके कमध्वज की उपाधि धारण की थी। कर्णीदान ने राजवशो के वर्णन को लेकर अपना यह ग्रन्थ तैयार किया है। नाडोल के देव मन्दिर मे जो वशावली पायी गयी है उसके साथ सूर्य प्रकाश की घटनाये अधिक मिलती है। परन्तु इन घटनाओ को सक्षेप मे लिखा गया है। इस ग्रन्थ मे कन्नौज के राठौरो के ऐतिहासिक वर्णन बहुत कम पाये जाते हे। इस ग्रन्थ मे यह अभाव बहुत खटकता है। इस ग्रन्थ मे कन्नौज के राजा जयचन्द की पराजय और उससे सम्बन्ध रखने वाली घटनाओ का भी

राजपूतो मे कन्याओं के मार डालने के तरीके अनेक प्रकार के थे। अधिकांश खिला कर उसे खतम कर देते थे। इस घृणित हत्या का सम्बन्ध राजपूतो मे प्रचलि प्रणाली के साथ था। राजस्थान के इतिहास मे न जाने कितनी घटनाये इस प्रकार मिलती है कि जिसमे राजपूतो की लडकियो के विवाहो मे भयानक युद्ध हुए, अमानुषिक किये गये और माता-पिता तथा लडकियो की इच्छाओ के विरुद्ध उनके विवाह हुए। इस घटनाओ के साथ होने वाले विवाहो मे लडकियो ने विष खाकर अपने प्राणो का अन्त। भीषण मारकाट हुई और हजारो मनुष्यो की जाने गयी। विवाहो के सम्बन्ध मे इतिहास इस प्रकार की दुर्घटनाओ से भरा हुआ है।

इस दशा मे इस बात को मान लेना कुछ भी अनुचित नही हो सकता कि राजपूतो के मार डालने की जो प्रथा थी, उसका कारण उनमे विवाह की प्रचलित प्रणाली अपने स्वाभिमान के लिए सदा प्रसिद्ध रहे है। इसी स्वाभिमान के कारण सदा उनका है और उनके स्वाभिमान का ही यह कारण था कि राजपूत वश मे जन्म लेने वाला अपने प्राणो पर खेल जाना बहुत मामूली बात समझता था।

ऊपर यह लिखा जा चुका है कि राजपूत अपनी लडकियो के विवाह श्रेष्ठ वश के करते थे। परन्तु उनके जिन दिनो का यह इतिहास लिखा जा रहा है, यह समय उन भयानक था। नियमो और व्यवस्थाओ को एक तरफ रखकर छोटी-छोटी बातो मे राजपू के सर्वनाश के लिए तैयार हो जाते थे और उसके साथ-साथ वे अपना भी सर्वनाश करते इतिहास मे सर्वनाश की जितनी दुर्घटनाये मिलती है, उनमे अधिकांश उनके विवाहो से सम है। उनकी लडकियो के विवाहो मे मनुष्य के जीवन का कोई अनाचार बाकी न रह सर्वनाश से सुरक्षित रहने के लिए राजपूत उत्पन्न होते ही कन्या को मार डालते थे।

राजपूतो मे लडकियो के जो विवाह सकुशल व्यतीत होते थे, उनमे भयानक रूप अपव्यय होता था। आपस मे लडते-लडते राजपूत भीषण पतन मे पहुँच गये थे। उ परिस्थितियाँ शोचनीय हो गयी थी। परन्तु उनके कार्य उसी प्रकार हो रहे थे, `` सम्पन्न अवस्थाओ मे होते थे। धन अपव्यय के साथ-साथ अनेक प्रकार की वैवाहिक कु प्रचार राजपूतो मे था। परन्तु उनका कभी सुधार न हुआ और जब कभी उन कुरीतियो मे कोई सुधार का कार्य किया गया तो उसमे उनको सफलता मे मिली। इसका कारण पूतो का आपस मे कोई सगठन न था। कही पर कोई उनका अधिकारी अथवा नेता न ' लेकर बाहर तक उनके बीच मे कोई ऐसा आदमी न था, जो अपने प्रभुत्व और पराक्रम नियन्त्रण रख सकता। राजपूत सभी स्वतत्र थे और उनके जीवन का स्वाभिमान कि उनको सिर झुकाने के लिए तैयार न होने देता था। वे अपना सर्वनाश स्वीकार करते कभी कोई किसी का अच्छा परामर्श मानने के लिए तैयार न होता था। उनके जी परिस्थितिया प्राचीन काल से बराबर चली आ रही थी।

राजपूतो मे कुछ लोगो ने कुरीतियो के सुधार की चेष्टा भी की थी। अम्बेर के सिंह ने एक बार कोशिश की कि राजपूतो मे बढती हुई वैवाहिक कुरीतियो को रोका का जो अपव्यय होता है, उसके विरुद्ध आन्दोलन किया जाय। जयसिंह ने उस समय राजाओ से प्रस्ताव किया था कि कोई भी अपनी मर्यादा के बाहर विवाहो मे धन का करे। साथ ही प्रत्येक राजा अपने सामन्तो को परामर्श दे कि वे अपने एक वर्ष की अधिक खर्च विवाह मे न करे।

राठौर राजपूत सूर्यवंशी हैं अथवा नहीं, इसी विवाद में हम नहीं पड़ना चाहते। इस बात का निर्णय करना भी हमारा यहाँ पर उद्देश्य नहीं है कि राठौरो की उत्पत्ति इन्द्र के मेरुदण्ड से हुई अथवा नहीं। उनके पूर्वजो की राजधानी उत्तर मे कहाँ थी, इससे भी हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। हमे तो यहाँ पर इतना ही लिखना है कि यवनाश्व—जो पाटलीपुत्र का राजा था और जो इसी वंश से सम्बन्ध रखता था—अश्व अथवा असी शाखा में उत्पन्न हुआ था और यह शाखा सीथियन जाति से निकली थी। इस शाखा के पूर्वज—सीथियन लोग सिन्धु नदी से दूरवर्ती स्थानो मे रहा करते थे। चन्द्रवंशी लोगो की वंशावली मे—जिनकी उत्पत्ति बुध देवता और पृथ्वी से बतायी गयी है—लिखा है कि विजयाश्व के पाँचो पुत्र सिन्धु नदी के किनारे के देशो मे रहा करते थे। यूनान के बादशाह सिकन्दर के आक्रमण के इतिहास मे आसासेनी और आमाकानी जातियो के वर्णन पाये जाते हैं। वे जातियाँ इन देशो मे अब तक रहा करती हैं। प्राचीन जातियो के जीवन मे अनेक प्रकार के परिवर्तित हुये और उनके फलस्वरूप, कई जातियो और उनकी शाखाओ ने भारत की उत्तर-पश्चिम सीमाओ पर अपनी-अपनी बस्तियाँ कायम कर ली।

सम्वत् ५२६ सन् ४७० ईसवी मे राजा नयनपाल ने कन्नौज को जीतकर उस पर अपना अधिकार किया था। और उसी समय राठौरो ने कमध्वज की पदवी ग्रहण की थी। नयनपाल के पुत्र पदारथ और उसके पुत्र पञ्जा से उन तेरह वंशो की उत्पत्ति हुई। जिनमे से प्रत्येक की कमध्वज पदवी थी। इन तेरह वंशो का परिचय इस प्रकार पाया जाता है :

(१) धर्मबिम्ब—इसके वंशज कमध्वज के नाम से प्रसिद्ध हुये।

(२) भानुन्दा—इसने कागडा नामक स्थान मे अफगानो के साथ युद्ध किया और अभयपुर की स्थापना की थी और उसके वंशज अभयपुरी कमध्वज के नाम से प्रसिद्ध हुये।

(३) वीरचन्द—इसने अनहलपुर पत्तन के राजा हीरा चौहान की बेटी से विवाह किया था। वीरचन्द के चौदह लडके पैदा हुये। वे अपना देश छोडकर दक्षिण चले गये और वहाँ पर वीरचन्द के वंशज कपालिया कमध्वज के नाम से प्रसिद्ध हुए।

(४) अमर विजय—इसने गङ्गा के किनारे बसे हुए गोरागढ परमार राजा की लडकी से विवाह किया और राज्य के लोभ से उसने अपने ससुर के सोलह हजार परमारो को मारकर गोरागढ पर अधिकार किया था। उससे गोरा कमध्वज की उत्पत्ति हुई।

(५) सुजन विनोद—इसके वंशज जिरखोरिया कमध्वज के नाम से प्रसिद्ध हुए।

(६) पद्म—यदुवंशी राजा तेजोमान को जीतकर इसने बुगलाना पर अधिकार किया। उसने उडीसा को भी परास्त किया था।

(७) ऐहर—यदुवंशियो को पराजित करके इसने बङ्गाल पर अधिकार किया था। इससे ऐहर कमध्वज लोगो की उत्पत्ति हुई।

(८) वासुदेव—इसके बडे भाई ने इसको बनारस और अडतालीस गाँव जागीर की तौर पर दिये थे। वासुदेव ने पारकपुर नाम का एक नगर बसाया। इसके वंशज परकरा कमध्वज के नाम से विख्यात हुये।

(९) उग्रप्रभु—इसने हिंगलाज चन्देल नामक स्थान के प्रसिद्ध मन्दिर मे जाकर कठोर तप किया था। उग्रप्रभू के तप से प्रसन्न होकर मन्दिर के देवता ने उसे एक तलवार दी थी। देवता के सामने एक कुण्ड बना हुआ था। उसी कुण्ड से तलवार उसी समय निकली थी। उस तलवार के

राजपूतो मे पैदा होने के बाद लडकियो को मार डालने की प्रथा चल रही थी। अँगरेजी यह प्रथा निर्मूल हो गयी।

सती होने और जन्म के बाद लडकियो को मार डालने की प्रथाओ से भी भयानक ए प्रथा का प्रचार जो राजपूतो मे था वह प्रथा जौहर व्रत के नाम से प्रसिद्ध थी। इस ती एक साथ कई-कई हजार राजपूत बालाये आग की होली मे जल कर खाक होती थी। इतिहास मे जौहर व्रत की घटनाओ का वर्णन कई बार किया जा चुका है। राजपूतो मे सम्पूर्ण जीवन बलिदानो से भरा हुआ है। जन्म के बाद वे जीवित मार डाली जाती थी। जाती थी, उनमे अधिकाश लडकियो को विवाह की दुर्घटनाओ मे विष खाकर प्राण देने जो इससे सुरक्षित रह जाती थी, उनको पति के मृत शरीर के साथ सती होना पडता भी जो बच जाती थी, उनको जौहर व्रत की प्रथा के अनुसार, हजारो बालाओ को जीवि होना पडता था। राजपूत स्त्रियो का जीवन ही बलिदानो का जीवन था। किसी भी की उत्सर्ग करने के लिए उनको तैयार रहना पडता था।

राजपूत स्त्रियो के जीवन मे एक समय और भी बडा भयानक आता था। आ विजय होने के बाद न केवल लूटमार करता था, बल्कि वह स्त्रियो को कैद करके जाता था और वे उसके आदमियो से उसी प्रकार बाँटी जाती थी, जैसे लूट की सम जाती है।

युद्ध के बाद युवतियो और स्त्रियो को कैद करने की प्रथा बहुत पहले से चली आ इस समस्या के सम्बन्ध मे हिन्दुओ के धर्म ग्रन्थ मनुस्मृति मे लिखा है: "युद्ध के बाद उसी जाति के लोगो के द्वारा कैद की जाती है तो उनके विवाह वैधानिक है।"

इसी प्रकार का आदेश यहूदी लोगो के धर्म ग्रन्थो मे भी पाया जाता है। हिन्दुओ मे मनु का है, यहूदी लोगो मे वही स्थान मोजेज का है। युद्ध के बाद जो लडकियाँ और - जाती है, उनके विवाहो के सम्बन्ध मे मनु और मोजेज ने एक ही प्रकार का निर्णय हिन्दुओ के धर्म शास्त्रो मे राक्षस विवाह को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है "यदि किसी स्त्री का अपहरण करे और उस स्त्री के चीत्कार करने पर कुटुम्बी और दूसरे सहा आक्रमणकारी के द्वारा मारे जावे और उसके बाद आक्रमणकारी उस स्त्री को अपने साथ विवाह करे, उसे राक्षस विवाह कहा जाता है।"

किसी भी स्वाभिमानी मनुष्य या जाति को अपनी लडकियो के लिए इस प्रकार मंजूर न होगा। इसलिए राजपूतो मे अपनी बेटियो और स्त्रियो के लिए उस प्रकार की का प्रचार था, जिनका ऊपर वर्णन किया गया है। ये प्रथाये सुनने और देखने मे बहुत इसमे सन्देह नही, लेकिन अभाव मे जीवन-भर जो असह्य तिरस्कार सामने आ सकता अपेक्षा इस प्रकार का कोई भी बलिदान अधिक सम्मान पूर्ण हो सकता है। इसलिए राजपूतो ने इस प्रकार की प्रथाओ को अपने यहाँ प्रचलित कर रखा था। सच बात तो जीवन के ऐसे तिरस्कृत अवसरो पर ऐसा कौन स्वाभिमानी मनुष्य हो सकता है, जो और राजपूत की प्रथाओ का पालन करना पसद न करे।

मनु ने स्त्रियो के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार के आदेश दिये है। स्त्रियो के रक्षा करते हुए मनुस्मृति मे साफ-साफ आज्ञा दी गयी है : "रास्ते मे किसी स्त्री को देख पुरोहित और राजा को भी चाहिए कि वह उसके लिए रास्ता छोड दे। × × नव-वधू, गर्भवती स्त्री, दूसरे घरो से आई हुई किसी भी रमणी को सबके पहले भोजन कराना प्राचीन काल मे हिन्दुओ मे स्त्रियो को पर्दे मे रखने की प्रथा न थी। लेकिन मुस्लिम -

उत्थान के दिनों में कन्नौज का विस्तार तीस मील से अधिक हो गया था और उसकी अपरिमित सेना दलपिङ्गल के नाम से प्रसिद्ध हो गयी थी। उसका अभिप्राय यह है कि विशाल होने के कारण, सेना को जब वह कहीं जाने के लिये रवाना होती थी, रास्ते में उसको पड़ाव डालना पड़ता था। इस बात को कविचन्द ने अपने ग्रन्थ में स्वीकार किया है।

राठौरो की यह प्रबल सेना सिन्धु पारवर्ती यवनो का सामना करने के लिये काफी थी। इस विशाल सेना का वर्णन करते हुये सूर्यप्रकाश ग्रन्थ में लिखा है : "राठौरो की इस सेना मे अस्सी हजार कवचधारी शूरवीर, तीस हजार वस्तर पहने हुये सवार सैनिक, तीन लाख पैदल और दो लाख धनुष एवम् फरशाधारी सैनिक थे। इनके अतिरिक्त काले बादलो की तरह उन्मत हाथियो का एक विशाल समूह शूरवीरो को लेकर चलता था।

यह विशाल और शक्तिशाली सेना सिन्धु नदी से दूरवर्ती प्रचण्ड यवनो के साथ युद्ध करने के लिये गयी थी और गोर तथा ईरान के बादशाह के सिन्धु नदी के पार करते ही, भारत की सीमा पर युद्ध कुशल जयसिह ने अपनी विशाल राठौर सेना के साथ यवनो का मुकाबिला किया था। दोनो तरफ से भयानक सग्राम हुआ। उस युद्ध मे बहुत से शूरवीर योद्धा और सैनिक मारे गये। युद्ध-क्षेत्र का रक्त-प्रवाहित होकर सिन्धु नदी मे पहुँचा और उसका नीला जल रक्त वर्ण हो उठा। अन्त में यवनो की पराजय हुई।

राठौरो के साथ यवनों की पुरानी शत्रुता थी। चन्दवरदाई चौहानो का मित्र था। फिर भी उसने नयनपाल के वशजो की प्रशसा की है और राठौरो को माण्डलीक की उपाधि देकर लिखा है : कि उत्तर मे रहने वाले माण्डलीक यवन ने शहाबुद्दीन गोरी को पराजित करके उसके अधीन बादशाहो को कैद कर लिया था। उन दिनो मे कन्नौज के राजा ने कई एक हिन्दू राजाओ को पराजित किया था और अनहिलवाडा पट्टन के सोलङ्की राजा सिद्धराज को जीतकर उसने कन्नौज राज्य की सीमा नर्मदा नदी के दक्षिणी किनारे तक पहुँचा दी थी। राठौरो की इस बढती हुई मर्यादा के दिनो मे राजा जयचन्द ने राजसूय यज्ञ करने का विचार किया।

राजसूय यज्ञ की मर्यादा बहुत बडी मानी जाती है। महाराज युधिष्ठिर के बाद अब तक कोई हिन्दू राजा राजसूय यज्ञ न कर सका था। राजा जयचन्द ने इस यज्ञ का निर्णय करके उसका कार्य आरम्भ किया। भारत वर्ष के समस्त राजाओ को निमन्त्रण भेजे गये, देश के राजाओ मे जयचन्द के राजसूय यज्ञ की चर्चा होने लगी। जो निमन्त्रण भेजे गये उनमे यह भी लिखा गया कि "राजकुमारी सयोगिता का स्वयम्बर और राजसूय यज्ञ—दोनो का कार्य-सम्पादन एक साथ होगा।" इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि जो राजा यज्ञ मे सम्मिलित होगे, उन्ही मे प्राचीन प्रथा के अनुसार राजकुमारी सयोगिता अपने वर का चुनाव करेगी।

कन्नोज मे राजसूय यज्ञ की तैयारियाँ बडी धूमधाम से की गयी। कविचन्द ने उसकी शोभा का वर्णन अपने ग्रन्थ मे पूर्ण रूप से किया है। यज्ञ का समय निकट आने पर निमन्त्रित राजा अपनी-अपनी सेनाओ के साथ कन्नौज मे आने लगे। भारत के राजाओ के आने से कन्नौज का दृश्य अपूर्व हो उठा। देश के समस्त राजा आकर राजसूय यज्ञ मे सम्मिलित हुये, लेकिन दिल्ली का चौहान राजा पृथ्वीराज और मेवाड का गहिलोत राजा समरसिह नही आया। राजा जयचन्द ने उन दोनो की सोने की प्रतिमाये बनवाईं और राजसूय यज्ञ मे उन मूर्तियो को वहाँ पर रखवाया, जहाँ पर द्वारपाल खडे होते हैं। पृथ्वीराज और उसके बहनोई समरसिह का अपमान करने के उद्देश्य से राजा जयचन्द ने ऐसा किया। यह समाचार दिल्ली मे पृथ्वीराज ने सुना। उसने तुरन्त इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया।

तेजी के साथ बदल रही है। इसलिये उनकी इन प्रथाओ को भी खत्म हो जाना चाहिये। ने यहाँ आकर यही किया भी है।

राजपूतो का इतिहास ही भारतवर्ष का इतिहास है। इस देश के इतिहास से यदि के हिस्से को निकाल दिया जाय तो इस देश का इतिहास बहुत निर्बल हो जायगा। जो लो दूर से हिन्दू स्त्रियो को जानते है और जिनको उनके समझने का अवसर नही मिला, ऐसे हिन्दू स्त्रियो के सम्बन्ध मे बहुत भ्रमात्मक बातो का प्रचार किया है और बताया है कि कई- स्त्रियो मे एक स्त्री भी ऐसी नही है, जो पढना भी जानती हो। मैं ऐसे लोगो से पूछना वे राजपूतो के सम्बन्ध मे कुछ जानते भी है ? क्योकि उनमें नीची श्रेणी के सामन्तो मे भी कम हैं, जिनकी लडकियां पढना और लिखना न जानती हो। यद्यपि वे लिखने का काम करती हैं, और उनकी तरफ से जो पत्र लिखे हैं, उनमे वे केवल हस्ताक्षर कर देती हैं। पर के सभी कामो के सम्बन्ध मे, वे बहुत योग्यता रखती हैं। राजपूत स्त्रियो मे जिनको अपने न बालको के सिहासन पर बैठने के कारण राज्य का प्रबन्ध देखना पड़ा है उन्होने शासन अपनी अद्भुत प्रतिज्ञा का परिचय दिया है। यद्यपि इस देश के विधान के अनुसार स्त्रियो को मे अधिकार नही मिला। फिर भी उन्होने जो कार्य करके दिखलाये हैं, उनसे उनकी योग्य परिचय मिलता है और इस प्रकार की स्त्रियो से हिन्दुस्तान का इतिहास भरा हुआ है। *

राजपूतो के सम्बन्ध मे जिनको सच्ची जानकारी नही है, ऐसे लोग उनकी स्त्रियों के ि भी कह सकते हैं परन्तु राजपूतो को समझने के लिये जिनको अवसर मिला है, वे जानते हैं ि राज्य करने की योग्यता होती है। राजस्थान के इतिहास में ऐसे बहुत-से उदाहरण पढ़ने है, जिनमे सिहासन पर बैठने वाला कभी-कभी बिलकुल बालक रहा है और उसकी नाबालिग मे राज्य का प्रबन्ध उसकी माता ने किया है। †

स्वाधीनता, राजभक्ति, देशभक्ति, धार्मिकता, स्वाभिमान और शुद्ध आचरण की तरह गुण राजपूतो मे पाये जाते हैं। यह बात सही है कि सभी मनुष्यो के गुण और स्वभाव एक होते। प्रकृति का यह नियम है। एक माता पिता से उत्पन्न होने वाले बच्चो की योग्यतायें अलग होती हैं, एक जाति के सभी मनुष्य एक से नही होते और एक राज्य में विभिन्न श्रेणी पाये जाते है। राजस्थान मे कई राज्य थे और प्रत्येक राज्य के आचरण बहुत-सी बातो

---

* बूँदी के राजा ने अपनी मृत्यु के समय मुझे अपने बेटे का संरक्षक नियुक्त किया थ बालक और उसके राज्य के कल्याण के लिये अनेक मौको पर बूँदी राज्य की राजमाता बाते करने के मुझे अवसर मिले थे। मेरी बाते एक तीसरे विश्वस्त आदमी के समान होती राजमाता परदे मे बैठकर मुझसे बाते करती थी। उनकी बातो को सुनकर मैं उनकी योग अनुभव करता था। राजमाता के लिखे हुये कितने ही पत्र अब तक मेरे पास हैं। राजमा साथ उसी प्रकार बाते करती थी जिस प्रकार एक स्त्री अपने भाई के साथ बाते करती है। माता मे मैं अनेक प्रकार के गुणो को अनुभव करता था।

† राजस्थान के इतिहास मे राजपूत स्त्रियो के वीरोचित कार्य अनेक स्थानो मे प मिलते है। सम्राट अकबर के सेनापति आसफखाँ के आक्रमण करने पर गढ़ा राज्य की रानी वती ने अपनी सेना लेकर उसका मुकाबिला किया था। उसका नाबालिग बेटा राज्य के सिहा था। इस युद्ध मे वह बडी बहादुरी के साथ लडी और अन्त मे घायल होकर वह मारी गयी

न थे। पश्चिमी देशोकी भाँति इस देश के राज्यो मे भी शासन की व्यवस्था जागीरदारी प्रथा के द्वारा होती थी। लेकिन उनकी आपस की फूट ने उन्हे आपस मे लडाकर निर्बल बना दिया था। बाहरी आक्रमणकारियो ने उनकी इस निर्बलता का सदा लाभ उठाया और शहाबुद्दीन गोरी ने दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध करके उसको पराजित किया। इस पराजय का कारण राजपूत राजाओ की फूट थी।

शहाबुद्दीन गोरी ने पृथ्वीराज को जीतकर दिल्ली पर अधिकार किया उसके बाद उसने कन्नौज के राजा जयचन्द पर आक्रमण किया। जयचन्द इसके पहले पृथ्वीराज के साथ युद्ध करके अपनी शक्तियो का क्षय कर चुका था। गोरी के आक्रमण करने पर जयचन्द के सामने एक भयानक विपद पैदा हो गयी। किसी प्रकार अपनी सेना लेकर वह युद्ध-क्षेत्र मे पहुँचा और उसने शहाबुद्दीन गोरी की विजयी सेना का सामना किया। उस युद्ध मे अपनी पराजय को देखकर जयचन्द ने गङ्गा को पार कर भाग जाने की चेष्टा की। परन्तु उसका दुर्भाग्य उसके सिर पर मँडरा रहा था। गङ्गा के अगाध जल मे जयचन्द की नाव डूब गयी और वही पर उसकी मृत्यु हो गयी।

इस प्रकार राजा जयचन्द का अन्त और कन्नौज राज्य का पतन सम्वत् १२४९ सन् ११९३ ईसवी मे हुआ। इस पतन के बाद कन्नौज राज्य की अधीनता मे जो छत्तीस राजा शासन करते थे, और आवश्यकता पडने पर राठौरो के झण्डे के नीचे एकत्रित होते थे, वे सभी कन्नौज के राज्य की अधीनता से पृथक् हो गये। राठौरो का विशाल राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। लेकिन राठौर वंश का अन्त नही हुआ। कन्नौज के पतन के बाद नयनपाल के वशजो ने मरु प्रदेश मे जाकर अपना अस्तित्व कायम किया। इस वश की इकतीसवी पीढी मे मानसिह उत्पन्न हुआ, वह महान् प्रतापी हुआ। अपने शासन काल मे उसने राठौर वश के उस गौरव की फिर से प्रतिष्ठा की, जिसको नयनपाल ने कन्नौज जीतकर उन्नत बनाया था।

बत्तीसवाँ परिच्छेद

सियाजी के मरुभूमि मे जाने का कारण—मरुभूमि मे सियाजी के आश्रय का प्रथम स्थान—मोहिली राजधानी—मरुभूमि की प्राचीन जातियाँ—मरुस्थल का सोलङ्की राजा और सियाजी—लाखा फूलाणी के साथ सियाजी का युद्ध—लाखा की पराजय—पहाडो जातियो का पतन—मरुभूमि मे राठौर वश की उन्नति—राठौरो का विस्तार।

कन्नौज पतन के अठारह वर्षों के बाद सम्वत् १२६८ सन् १२१२ ईसवी मे राजा जयचन्द के पौत्र सियाजी और सेतराम अपने राज्य की भूमि को छोडकर मरु प्रदेश चले गये। उनके साथ दो सौ अन्य लोग भी वहाँ गये।

सियाजी और सेतराम के कन्नौज छोडकर मरु प्रदेश चले जाने का कारण क्या था, इस पर जो ग्रन्थ मिलते हैं, उनका मत एक नही है। कुछ ग्रन्थो मे लिखा है कि वे धार्मिक स्थानो के दर्शन करने के लिये वे कन्नौज से चले गये। उनका इरादा द्वारिका जाने को था किसी का कहना है कि कन्नौज के पतन के बाद उन्होंने अपने सुख-सौभाग्य की खोज मे मरु प्रदेश की यात्रा की थी। इस प्रकार के मतो में यद्यपि निश्चित रूप से नही कहा जा सकता कि सही बात क्या थी। परन्तु अनुमान के आधार पर सत्य की खोज की जाती है।

उनको इसके लिये मौका न दिया जाता, तो वे कर्मचारी अफीम के अभाव में किसी काम
योग्य न रह जाते थे। *

राजपूतो मे अफीम के सेवन का इतना प्रचार था कि वह उनके लिये खाने और
एक साधारण चीज हो गयी थी। एक राजपूत किसी दूसरे से मुलाकात करने के समय
मांगता था और फिर मिलकर दोनो शिष्टाचार के साथ उसका सेवन करते थे। मैं तो यह भ
का साहस करता हूँ कि एक राजपूत जब तक अफीम का सेवन न कर लेता था, वह कोई का
न सकता था। सच बात तो यह है कि भोजन की चीजो की अपेक्षा अफीम किसी भी राज
लिये अधिक जरूरी थी। मैंने राणा को अफीम पर अधिक कर लगाने का परामर्श दिया
जिससे उसके राज्य मे अफीम का सेवन कम हो जाय, परन्तु राणा ने मेरे परामर्श को प
किया। फिर भी मैं उसको समझाता रहता था।

राजपूतो की अनेक अच्छाइयो से मैं जितना ही प्रसन्न था उनके अफीम के सेवन से मैं
ही चिन्तित था। मैं चाहता था कि इन प्रसिद्ध राजपूतो का किसी प्रकार विनाश न हो, इस
मैं राजपूतो को और विशेषकर जवान लड़को को अफीम के विरुद्ध समझाया करता था। मेर
अभिलाषा थी कि राजपूतो मे किसी प्रकार अफीम का सेवन रोका जा सके। मैं पूर्णरूप से स
था कि यदि ऐसा किया जा सके तो इन मिटनेवाले राजपूतो का और हिन्दुस्तान की इस प्रसि
का बहुत कुछ कल्याण हो सकता है।

अफीम से होने वाली हानियाँ जब मैं लोगो को बताता था तो लोग बडे प्रेम के साथ
बातो को सुना करते थे। अनेक अवसरो पर बहुत से राजपूतो ने और खास तौर पर इस
युवको ने कभी अफीम के सेवन न करने का मुझसे वादा किया था। शायद मेरे समझाने
परिणाम था कि बहुत-से युवको ने अफीम का सेवन न करने की प्रतीक्षा की थी। राजपूतो
मैं इस प्रकार के युवको को देखता, जो अफीम का सेवन नही करते हैं तो मुझे बडी प्रसन्नता
थी। मेरा विश्वास है कि जो लोग राजपूतो मे अफीम का सेवन बन्द करा सकते है, वे राज
सबसे अधिक शुभचिन्तक और मित्र है।

---

* बातचीत करने के समय राजपूतो मे मैं प्रायः अफीम के प्रभाव को अनुभव किया
था। बाते करते हुये उनकी आँखे बन्द हो जाती थी और कभी-कभी उनके वाक्य पूरे न हो
जब कोई सामन्त मेरे पास आकर बैठता और कुछ देर बाते करता तो अक्सर उनकी आँखे ब
जाती और वे अफीम के नशे मे अलसाये हुये हिलने लगते। इस प्रकार के अनुभव राजपूतो के
मे मैंने बहुत से किये थे। राणा प्रतापसिह का दाहिना हाथ, साहसी श्याम का वशधर सा
सामन्त राजा कल्याण अफीम का सेवन करने के कारण ही सभी प्रकार अयोग्य और अकर्म
गया था। वह अपने सिर पर पगडी बाँधता था। अनेक मौको पर, जब वह अफीम के नशे मे
था तो उसकी पगडी उसके मस्तक के नीचे गिर जाती थी। मैंने कितने ही सामन्तो को देखा
व अपने पहनने के वस्त्रो मे अफीम को बाँधकर लाते थे। ये लोग जब एकत्रित होते थे तो एक,
को अपने पास की अफीम खिलाते थे। अक्सर भेट के लिये आने वाले सामन्त जब मेरे पास
ाते करते थे तो अपने खाने के लिये वे मुझसे अफीम मांगते थे। मैं उनके खाने के लिये अपन
पर अफीम रखा दिया करता था।

और ग्राम थे, उनके निवासी लाखा का नाम सुनते ही घबरा उठते थे। *

सोलङ्की राजा ने सियाजी और उसके साथियो को आदर पूर्वक अपने यहाँ स्थान दिया। वहाँ रहकर सियाजी को लाखा की बहुत सी बाते सुनने को मिली। उसे यह भी मालूम हुआ कि यहाँ के लोग लाखा से बहुत डरते हैं और सोलङ्की राजा स्वय उससे भयभीत रहता है। वहाँ पर रहकर सोलङ्की राजा के अच्छे व्यवहारो से सियाजी बहुत प्रभावित हुआ और उसने सोलङ्की राजा के शत्रु लाखा को पराजित करने का निश्चय किया।

सोलङ्की राजा को सियाजी का इरादा मालूम हुआ। उसने सियाजी की सहायता में अपनी सेना के देने का वादा किया और सियाजी ने जब लाखा से युद्ध करने की तैयारी की तो सोलङ्की राजा ने अपनी सेना देकर सियाजी को सेनापति बनाया। सियाजी का भाई सेतराम भी युद्ध के लिये तैयार हुआ। जो राठौर राजपूत सियाजी के साथ कन्नोज से मरुप्रदेश आये थे, वे भी युद्ध-क्षेत्र में जाने के लिये तैयार हो गये।

सियाजी ने सोलङ्की राजा की सेना लेकर लाखा फूलाणी पर आक्रमण किया। दोनो ओर से युद्ध आरम्भ हुआ। अन्त मे सियाजी की विजय हुई। यद्यपि उस युद्ध में उसके भाई सेतराम के साथ-साथ कन्नोज के राठौर वीर भी बहुत-से मारे गये।

कोलूमठ का सोलङ्की राजा सियाजी की इस विजय को सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सियाजी के साथ अपनी बहन का विवाह कर दिया। सियाजी कुछ दिनो तक यहाँ रहा। उसके बाद वह द्वारिका की तरफ रवाना हुआ। रास्ते मे अनहिलवाडा पट्टन उसे मिला। अपनी थकान को मिटाने के लिये उसने उस नगर मे रुकने का इरादा किया। वहाँ के राजा को जब यह मालूम हुआ तो उसने बडे आदर-सत्कार के साथ सियाजी का स्वागत किया। वहाँ पर कुछ दिनो तक सियाजी ने विश्राम किया।

सियाजी जिन दिनो मे अनहिलवाडा पट्टन मे था, उसने सुना कि यहाँ पर लाखा फूलाणी का आक्रमण होने वाला है। इस आक्रमण के समाचार को सुनकर पट्टन का राजा बहुत भयभीत हो गया। सियाजी ने उसके भय को दूर किया और लाखा फूलाणी के साथ उसने फिर युद्ध करने का निश्चय किया।

सोलङ्की राजा की तरफ से जब सियाजी लाखा के साथ युद्ध करने गया था, उस समय उसका भाई सेतराम मारा गया। उस युद्ध मे लाखा ने भागकर अपने प्राणो की रक्षा की थी। इस प्रकार सियाजी को उस पर विजय हुई। लेकिन भाई के मारे जाने का उसे रञ्ज था। इसलिये उसका बदला लेने के लिये सियाजी ने लाखा के साथ युद्ध करने की तैयारी की। समय पर दोनो तरफ के आदमियो का सामना हुआ और लाखा के साथ सियाजी का मारकाट आरम्भ हो गया। इस लडाई के अन्त मे लाखा मारा गया। उसके सिर के दो टुकडे होकर जमीन पर गिरे। पट्टन की सेना के जय-घोष से आकाश गूँज उठा।

लाखा के अत्याचारो से लोग बहुत दिनो से पीडित हो रहे थे। सियाजी द्वारा उसके मारे

---

* यद्यपि लाखा फूलाणी का आतङ्क चारो तरफ फैला हुआ था, परन्तु उसने निर्बलो पर कभी अत्याचार नही किया। वह अपने अनेक धार्मिक कार्यों के लिये भी प्रसिद्ध था। इसीलिये बहुत-से लोग उसकी प्रशसा किया करते थे। राजस्थान के छै प्रसिद्ध नगरो पर लाखा फूलाणी का पूर्ण रूप से अधिकार था।

राजपूतो के जीवन में लड़ने और युद्ध करने के सिवा और कुछ न था। जिन्दगी क
बातो का उन्हें ज्ञान भी न था। उनके जीवन में इसी एक बात को महत्व दिया जाता था
करने की योग्यता और कुशलता उनके जीवन की प्रतिभा थी। प्रत्येक राजपूत अपनी और
सन्तान की इसी योग्यता को बढाने की चेष्टा करता था। उनके छोटे-छोटे लडके जब अ
खेलते थे तो उनके हाथो मे छोटी-छोटी तलवारे होती थी। छोटी अवस्था मे ही उनको तलवा
डने और उसके चलाने का उनको अभ्यास कराया जाता था। इस अभ्यास के लिये प्रभा
सैनिक अथवा अस्त्र-शस्त्र चलाने मे कुशल आदमी नौकर रखे जाते थे। वे राजपूतो के बालको
प्रकार की शिक्षा देते थे और सन्तान की शिक्षा और उनके अभ्यास के समय माता-पिता अप
से देखते थे और प्रसन्न होते थे। जिस दिन कोई राजपूत किसी बडे जानवर का शिकार क
लौटता था तो उस समय उसके परिवार मे खुशियाँ मनायी जाती थी। ꙮ

राजपूतो के बालको पर इस प्रकार की खुशियो का बहुत प्रभाव पड़ता था। इस प्र
गुणो के साथ राजपूतो के जीवन मे और भी अनेक बाते थी। वे सङ्गीत के प्रेमी थे। नृत्य
और प्रसन्न होते थे। साहसपूर्ण कार्यों से उनको बहुत प्रोत्साहन मिलता था। वे स्वय कुश्ती
और जो लोग अच्छी कुश्ती लडते थे, उनको देखकर वे प्रसन्न होते थे। इस प्रकार की इन
उनके जीवन का बहुत-सा समय व्यतीत होता था। वे आपस में एक स्थान पर बैठकर इसी
की बाते करते थे।

प्रत्येक राजा के यहाँ अच्छे व्यायामशील और कुशल कुश्ती लडने वाले रहा करते थे
की तरफ से उनको आर्थिक सहायता दी जाती थी। अनेक अवसरो पर उनको पारितोषिक
उनका सम्मान किया जाता था। इस प्रकार की बहुत-सी बाते राजपूतो के जीवन मे आम
पायी जाती थी।

राज्य के सभी सामन्त और सरदार अपने-अपने अस्त्रागार रखते थे और वे अपने
शस्त्रो की हमेशा परीक्षा किया करते थे। इसमे वे कभी असावधान न होते थे। उनके
मे तलवारे, बन्दूके, बर्छे और धनुष-बाण रहते थे। इन अस्त्रागारो का सरक्षण अत्यन्त वि
शूरवीर सैनिको को दिया जाता था। उनके अस्त्र-शस्त्र अत्यन्त सुन्दर और मूल्यवान ह
सिरोही की तलवार राजस्थान मे बहुत प्रसिद्ध मानी जाती थी। उनके हथियारो मे दोनो
धारवाला खाँडा नाम का एक तेज हथियार होता था। राजस्थान के अनेक स्थानो मे बन
कारखाने थे। वहाँ पर वे बनायी जाती थी। अन्य स्थानो की अपेक्षा बूँदी की तलवार श्रेष्ठ
जाती थी।

राजपूतो के अस्त्रागारो मे बहुत मजबूत ढाले होती थी। शत्रुओ से युद्ध करते हुये
ढालो के द्वारा राजपूत अपनी रक्षा करते थे। गेडे के चमडे की ढाल बहुत मजबूत बनती थी।
पूत लोग अपने तीरो पर जिन बाणो का प्रयोग करते थे, वे बहुत मजबूत और भयानक हो
जिन दिनो मे बन्दूको का आविष्कार और प्रचार न हुआ था, उन दिनो मे इन्ही बाणो के द्वारा
पूत शत्रुओ के साथ भीषण युद्ध करते थे और शत्रु सेना को पराजित करते थे।

ꙮ बूँदी का राजकुमार एक बार मृग का शिकार करके लौटा था। उसकी सफलत
वीरता को सुनकर, उसकी माता बहुत प्रसन्न हुई। उसी प्रसन्नता मे आकर उसने मुझे एक पत्र
था। उस दिन बूँदी राज्य मे खुशियाँ मनायी गयी और सभी सामन्तो को कीमती पदार्थ उ
दिये गये।

ईदर नगर गुजरात की सीमा पर बसा हुआ है। उन दिनो मे यह नगर दाबी वश के किसी राजा के अधिकार मे था। सियाजी का बडा लडका आसथाम अपनी राजनीतिक चतुरता के लिये प्रसिद्ध था। ईदर के राजा के मरने पर उसने वहाँ पर अपना अधिकार कर लिया और उसका भाई सोनग वहाँ पर शासन करने लगा। उसके वशज हातोंदिया राठौर के नाम से प्रसिद्ध हुये। सियाजी का तीसरा लडका अजमल भी बडा लडाकू था। सौराष्ट्र के पश्चिम तरफ ऊरवामण्डल नाम का एक नगर था। सोरवशी भीपमशाह नाम का एक राजा वहाँ पर राज्य करता था। अज मल ने उसे मार डाला और उसके राज्य पर अधिकार कर लिया। उसके वशज वाटेला नाम से विख्यात हुये और वे लोग अब तक द्वारिका और उसके आस-पास के नगरो मे पाये जाते हैं।

आसथाम आठ पुत्रो को छोडकर मरा। * दूँहड उसका सबसे बडा लडका था। इसलिये पिता के मरने के बाद वही गद्दी पर बैठा। उसके अधिकार मे बहुत छोटा-सा राज्य था। कन्नौज का उद्धार करने की अभिलाषा बहुत दिनो से उसके हृदय मे थी। पिता के मरने के पश्चात् सिहा-सन पर बैठते ही उसने कन्नौज के उद्धार का सकल्प किया। परन्तु वह पूरा न हुआ। इन्ही दिनो मे उसने मन्दोर पर आक्रमण किया। वहाँ पर वह मारा गया। दूँहड के सात लडके पैदा हुये थे। रायपाल सबसे बडा था। इसलिये पिता के मरने के बाद वही सिहासन पर बैठा। उसके बाद उसने मन्दोर पर आक्रमण किया और उसके परिहार राजा को मार कर उसने मन्दोर के दुर्ग पर अधि कार कर लिया। परन्तु थोडे ही दिनो के बाद परिहारो ने सङ्गठित होकर रायपाल के साथ युद्ध किया और उन लोगो ने उसे मन्दोर से भगा दिया।

रायपाल के तेरह लडके थे। उसके बाद उसका बडा लडका कनहुल सिहासन पर बैठा। उसका बेटा जाल्हन, जाल्हन का बेटा छाडा और छाडा का लडका टीडा क्रम से सिहासन पर बैठे। इनके सम्बन्ध मे कोई विशेष विवरण नही पाया जाता। जो कुछ उल्लेख मिलता है उससे इतना ही मालूम होता है कि ये लोग अपने आस पास के छोटे-छोटे राजाओ के साथ युद्ध करते रहे। वे कही पर हारे और कही पर जीते। उनका यह क्रम कुछ दिनो तक लगातार चलता रहा। टीडा ने अपने राज्य की उन्नति की थी। उसने कई राज्यो पर अधिकार कर लिया था जैसलमेर के भट्ट ग्रंथो मे लिखा है कि छाडा और टीडा बडे लडाकू थे। टीडा के मरने के बाद सलखा उसके सिहासन पर बैठा। †

वह भीलवाडे से किसी प्रकार कम नही है। यह नगर चारो ओर ऊंची दीवारो से घिरा हुआ है। मराठो के आक्रमण से बचने के लिये वहाँ की इन दीवारो का निर्माण हुआ था। अब वे बहुत कुछ टूट-फूट गयी है। इस नगर मे दस हजार से अधिक घर पाये जाते है। यह नगर प्राचीन काल से प्रसिद्ध रहा है। तिब्बत और उत्तरी भारत की बहुत-सी व्यावसायिक चीजे यहाँ पर आकर एकत्रित होती थी और फिर यहाँ से अरब, योरप अफ्रीका को वे चीजे जाती थी। इस नगर मे प्रतिवर्ष पछ-त्तर हजार रुपये चुङ्गी के आते थे।

* दूँहड, जोपसाव, खीमसी, भूपसू, धाडल, जैतमल, बांदर और ऊदड नाम के आठ बेटे आसथाम के थे। इन आठो भाइयो ने अपने-अपने राज्यो का सङ्गठन अलग-अलग किया। इन आठ पुत्रो से दूँहड, धाडल जैतमल और अहड के वशो का पता चलता है। शेष भाइयो का नही।

† सलखा के वशज सलखावत के नाम से प्रसिद्ध हुये। वे लोग अब तक बहुत-से स्थानो मे पाये जाते है।

चाकू डाल दी और बन्दूक की गोली किसी दूसरे से भरवाकर उसने अपने हाथ में ले ली
बाद वह उस हांडी से बीस कदम की दूरी पर खडा हो गया और लोगो की तरफ देख
कहा : "मैं अपनी गोली से हांडी मे रखी हुई चाकू के दो टुकडे करूंगा।"

उसकी इस बात को लोगो ने सावधानी के साथ सुना। मैं स्वयं वहाँ पर मौजूद
गोली मार कर हांडो के भीतर के चाकू के दो टुकडे कर दिये। मैंने भी हांडी के पास जा
के उन दो टुकडो को देखा और शिवधनसिह के निशानाबाजी की मैंने भी तारीफ की।

शिवधनसिह में इस प्रकार को अनेक बाते प्रशंसा के योग्य थी। कितने ही अवस
उसको निशानेबाजी अपनी आँखो से देखो थी। वह किसी लकड़ी पर एक नीबू रखवा
किसी मनुष्य से अपनी बन्दूक मे गोलो भरवाकर बन्दूक को अपने हाथ मे ले लेता। इसके
सामने वह उस नीबू को अपनी गोली का निशाना बनाता। गोली के छूकर निकल जाने
जमीन पर गिर जाता परन्तु आश्चर्य की बात तो यह होती कि नीबू मे गोली के लगने
निशान तक दिखायी न पड़ता। नीबू को कोई आघात न पहुँचता। नीबू की हालत ज्यो की
रहती और गोली अपना काम करके अदृश्य हो जाती।

शिवधनसिंह के सम्बन्ध में मैने जितनी प्रशसनाये सुनी थी, उन सबको अपने नेत्रो
देखने का अवसर मिला। उसके सम्बन्ध मे बिना किसी पक्षपात के मैं यह कह सकता हूँ f
इस योग्यताओ के सम्बन्ध मे ससार के सभी लोग उसकी प्रशंसा कर सकते हैं। किसी म
गुण प्रधान रूप से होता है और उसके लिये वह प्रसिद्ध हो जाता है। लेकिन शिवधनसिंह
गुण थे और अपने उन सभी गुणो मे उसने ख्याति पायी थो। राजस्थान के सामन्तो और
को अधिक सख्या मे मैंने सङ्गीत प्रिय पाया है। मैंने सुना है कि उदयपुर के सबसे श्रेष्ठ ग
वालो को कुछ वर्ष पहले महाराज सीन्धिया अपने साथ लाया था। अनेक प्रकार के गानो
पूत लोग टप्पा अधिक पसन्द करते है इसीलिये यहाँ पर इसके गाने वाले भी अधिक हैं।

राणा भीमसिह को भी गाना और बजाना बहुत प्रिय था। कभी-कभी वह स्वयं
के बीच में बैठकर गाया करता था। महलो की छतो पर गाने वाले एकत्रित होते हैं और
वे गाना गाया करते थे। राणा के यहाँ कुछ लोग बंशी बजाने वाले थे। उनसे जो स्वर
था, उसे लोग बहुत पसन्द करते थे।*

यहाँ के पहाड़ी शिखरो पर रहने वाले लोगो के द्वारा रात्रि की गम्भीरता में जिन
गाना सुनने का अवसर मिला है, वे उसको कभी भूल नही सकते।

योरप की केल्टिक जातियो मे बैगड पाइप नाम के बाजे की बहुत प्रसिद्धि थी।
राजपूत उससे अपरिचित न थे। इन लोगो मे उस बाजे को मीशेक कहा जाता था। यह बा
प्रिय और हृदयग्राही था। राजपूतो के इस बाजे का जिक्र इस देश के ग्रन्थो मे किया गया

* सम्राट पृथ्वीराज स्वयं सङ्गीत प्रेमी था। इन गानो के सम्बन्ध मे मैं अधिक कु
लिख सकता। मेरा अनुमान है कि राजपूतो मे प्रचलित गाने अश्लील नही होते थे। उन
मे धार्मिक प्रेरणा रहती थो। इन बातो का जिक्र चन्द कवि ने अपने मशहूर ग्रन्थ मे f
राजपूतो मे जयदेव के गानो का अधिक प्रचार है। चन्द कवि के अनुसार मन्दिरो के पुजा
भक्त अपने देवता के सामने धार्मिक गाने गाते थे। यहाँ पर इन गानो की शुरूआत सुख और
के दिनो मे हुई थी।

रिडमल्ल के विश्वासघात के कारण मेवाड और मन्दोर की सीमाये अलग-अलग हो गयी थी और वे बहुत समय तक अलग बनी रही। रिडमल्ल का वर्णन मेवाड के इतिहास में भली-भाँति किया जा चुका है। उसके चौबीस लडके थे, जिनकी सन्तानो ने और बडे लडके जोधा ने मारवाड की अधीनता स्वीकार कर ली। मियार्जा के वशजो ने मरुभूमि मे चारो तरफ फैल कर अपना विस्तार किया था। उनकी नामावली जागीरो के साथ नीचे दी जाती है :

नाम	शाखा	जगीरा
१—जोधा (सिहासन पर)	जोधा	
२—कांधलजी	कांधलोत	बीकानेर
३—चम्पाजी	चम्पावत	अहवा, पैटो, पलरी, हरसोला, जावला, सथलाना, सिगरी।
४—अरवैराज इसके सात बेटे थे। कूँपा सबसे बडा था।	कुम्पावत	असोप, कुम्पालिया, चन्दावल, सिरयारी, खारलो, हरसोर, बल्लू, बिजोरिया, शिवपुरा देवरिया।
५—मण्डला जी	माण्डलोत	सरोदा
६—पाता जी	पत्तावत	कूनिचरी, बरोह, देसनोख।
७—लाखा जी	लाखावत	
८—बालो जी	बालावत	घुनार
९—जैतमल	जैतमालोत	पालासनी
१०—करन	करनोत	
११—रूपा जी	रूपावत	लूनावास
१२—नाथ जी	नाथावत	चौतला
१३—डूंगर जी	डूंगरोत	बीकानेर
१४—सांडा जी	सांडावत	इनकी जागीरो का कोई वर्णन नही पाया जाता। इन लोगो ने अपने-अपने श्रेष्ठ वशजो की अधीनता स्वीकार कर ली थी।
१५—माडन जी	माडनोत	
१६—बीरा	बीरोत	
१७—जगमल जी	जगमालोत	
१८—हम्पा जी	हम्पावत	
१९—शक्ता जी	शक्तावत	
२०—कर्मचन्द	कर्मचन्द्रोत	
२१—अरिवाल जी	अरिवालोत	
२२—केतसी	केतसीओत	
२३—शत्रुशाल	शत्रुशालोत	
२४—तेजमल	तेजमालोत	

मारवाड़ का इतिहास

इकतीसवाँ परिच्छेद

मारवाड का राज्य और उसका विस्तार—राठौर वंश—कन्नौज की विजय—ई
महानता—कन्नौज का पतन—जयचन्द के वंशजो की मरु-भूमि मे प्रतिष्ठा—मारवाड
ऐतिहासिक आधार—मरु-भूमि में सियाजी का आश्रय—मारवाड राज्य के इतिहास की
राठौर वंश की शाखायें--राठौर राजाओ की पदवी—उत्थान के दिनो का कन्नौज—राठ
चौहानो की शत्रुता—दिल्ली और कन्नौज ।

मारवाड शब्द मारवार से बना है। इसका वास्तविक नाम मरुस्थल, मरुभूमि अ
प्रदेश है अर्थात् वह स्थल, भूमि अथवा देश जो बालुकामय हो और जिसमें जल के प्राण
न रहते हो। कवियो ने अपनी सुविधाओ के अनुसार, मारवाड के भिन्न-भिन्न नामो का
किया है। राजस्थान मे जो राज्य बालुकामय है, उसका नाम मारवाड़ है। राठौर वंश के
के अधिकार मे राजस्थान का जितना राज्य है, आजकल उतनी भूमि को मारवाड कहा
लेकिन प्राचीन काल मे मारवाड़ की समस्त मरुभूमि सतलज से समुद्र तक फैली हुई थी।

राठौर राजाओ का वश परिचय पहले लिखा जा चुका है। उसके समर्थन मे औ
की अन्यान्य ऐतिहासिक खोजो मे हम उन्ही के प्रसिद्ध ग्रन्थो का आश्रय लेकर यहाँ लिखने
करेगे, जिनमें इस वंश के राजाओ का इतिहास अधिक प्रामाणिक माना जाता है। मे
का इतिहास लिखते हुये हमने राजस्थान के दूसरे राज्यो की वहुत-सी बातो का उल्लेख
परन्तु मारवाड के इतिहास को लिखने में हम ऐसा नही करेगे।

सबसे पहले हम उन ग्रन्थो का उल्लेख करना चाहते हैं, जिनमे राठौर वश के र
ऐतिहासिक वर्णन पाये जाते हैं। उनमें सबसे पहले हमारे सामने नाड़लाई जैन मन्दिर के
की बनाई हुई वशावली है। यह वंशावली पचास फुट लम्बी है। इस वंशावली मे राठौरो
इन्द्र के मेरुदण्ड से स्वीकार की गयी है।

इस वंशावली मे पारलीपुर के राजा यवनाश्व को कल्पित माना गया है। इस
सम्बन्ध मे राठौरो को बहुत कम जानकारी है। उनका अनुमान है कि पारलीपुर राज्य
तरफ है। वे अधिक कुछ नही जानते। परन्तु राजा यवनाश्व के पूर्वज अश्व अथवा अ
थे और यह वंश सीथियन जाति की एक शाखा है, इसका हमारे पास प्रमाण है।

मारवाड का इतिहास कमध्वज वंश के कान्यकुब्ज अथवा कन्नौज के इतिहास के
होता है और राठौरो की तरह शाखाओ और उनके गोत्रो के आचार्यों के वर्णन के साथ-
होता है। दूसरा वंश वृक्ष भी उसी प्राचीनकाल का है, जब वशावली के साथ अन्य कोई
था। नयनपाल से पहले का जो वर्णन है उसे छोडकर जहां से हम लिखने जा रहे हैं,
से आरम्भ होता है। राजा नयनपाल ने सम्वत् ५२६, सन् ४७० ईसवी में कन्नौज को ि

सर्वसाधारण की इस धारणा का आधार मारवाड के भट्ट कवियो का प्रचार था। उन्होने जोधा और राज्य के प्रधान अधिकारियो को सुरक्षित रखने के लिये जन साधारण मे इस प्रकार का प्रचार किया था।

शुद्ध जल की जब कोई व्यवस्था न हो सकी तो उसके लिये अनेक प्रकार के उपाय सोचे गये। जिन पहाडी ऊँची चट्टानो के ऊपर जोधपुर का दुर्ग बना था, उसके नीचे एक सरोवर था। उस सरोवर से जल लाने की व्यवस्था की गयी। उस सरोवर मे ऐसी कलें लगवाई गयी, जिनसे उस सरोवर का जल दुर्ग के ऊपर पहुँचने लगा।

जोधपुर नगर और दुर्ग मे अच्छे जल के लिये बहुत-से उपाय किये गये, लेकिन वे सब व्यर्थ गये और किसी से कुछ लाभ न हुआ। इस अभाव का मूल कारण क्या था, इसे उस समय किसी ने नहीं जाना परन्तु इस पर सभी ने विश्वास किया कि सन्यासी के अभिशाप से जोधपुर में जल का अभाव पैदा हुआ और वह अभाव कभी मिट न सकेगा।

सम्वत् १५१५ के जेठ महीने मे जोधा ने अपने नवीन नगर की प्रतिष्ठा की। उसके बाद तीस वर्ष तक जीवित रहकर सम्वत् १५४५ मे इकसठ वर्ष की अवस्था मे उसने परलोक की यात्रा की। उसके द्वारा प्रतिष्ठित जोधपुर राजस्थान का एक प्रसिद्ध नगर बना। उसके साथियो मे और सहायको मे कई शूरवीर थे, जिन्होने जीवन भर उसके लिये त्याग और बलिदान से काम लिया था। जोधा अपने जीवन के अन्त तक उनका सम्मान करता रहा। हरबूसांकला, पाबूजी और रामदेव राठौर की प्रस्तर मूर्तियां बनवा कर जोधा ने मारवाड की प्राचीन राजधानी मन्दोर के श्रेष्ठ भाग पर लगवाईं थी। ⁂

जोधा ने अपने जिन तीन वीरो की प्रस्तर मूर्तियां बनवाई थी, उनको देखकर उन तेजस्वी प्रताप का सहज ही आभास होता है। उनके यशस्वी नामो को कोई भी राठौर कभी भूल न सकेगा। प्रस्तर की बनी हुई उनकी मूर्तियां आज भी दर्शको के सामने उनके शौर्य और प्रताप की तरफ सकेत करती है। + सियाजी ने जिस समय कन्नौज छोडकर भारत के मरुप्रदेश मे जाकर आश्रय लिया था, उस समय से लेकर अब तक तीन शताब्दियां बीत चुकी हैं। इन तीन सौ वर्षों मे उसके वशजो ने

⁂ पाबूजी की प्रस्तर मूर्ति उसकी प्रसिद्ध घोडी पर बनी हुई है। उस पर बैठा हुआ शूरवीर पाबू बडा आकर्षक मालूम होता है। रामदेव का नाम सम्पूर्ण मरुप्रदेश मे फैला हुआ है। वहां के गांवो के निवासी भी उसके प्रसिद्ध नाम से परिचित हैं।

+ जिन शूरवीरो ने जोधा की सदा सहायता की और अपने अद्भुत शौर्य का परिचय दिया था। ऐसे कई एक वीरो की प्रस्तर मूर्तियां जोधा ने बनवाई। वे सभी कलाकारो के द्वारा पाषाणो पर तैयार की गयी। प्रत्येक शूरवीर अपने युद्ध के वेष मे घोडो पर चढा हुआ दिखायी देता है। उनके दाहिने हाथ मे बर्छे और बाये हाथ मे घोडो की लगामे हैं उनकी पीठ पर ढाले लटक रही हैं। कमर मे लटकती हुई तलवारे दिखायी देती हैं। युद्ध के दूसरे अस्त्र भी उनके शरीर की शोभा बढ़ा रहे हैं। देखने मे ये शूरवीर जीवित मालूम होते है। ये सब मूर्तियां मन्दोर नगर के एक विशाल मैदान मे ऊँचाई पर लगी हुई हैं। एक स्थान पर तीन मूर्तियां है। पाबूजी, रामदेव और हरबूसांकला की मूर्तियां एक साथ लगी हुई हैं। उसके अन्त मे प्रसिद्ध चौहान वीर गङ्गा की प्रस्तर मूर्ति है। जिसने महमूद का आक्रमण रोकने के लिये सतलज नदी के किनारे अपने सैंतालीस बेटो के साथ प्राणो की बलि दी थी।

उल्लेख नही किया। कवि ने सिया जी के बशजो का वर्णन सक्षेप मे करके अपनी बशावल
कर दिया है।

मारवाड के इतिहास के सम्बन्ध में राज रूपाख्यात दूसरा प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इस ग्र
पहले सूर्यबंश के कई एक वर्णन लिखे गये हैं और उस समय का भी संक्षेप मे वर्णन ि
जब राजा इक्ष्वाकु के बंशजो ने अपनी पुरानी राजधानी अयोध्या के राज सिहासन पर
किया था। उनके बाद इस ग्रन्थ मे सियाजी के राज्य छोडने की घटनाओ का वर्णन कि
जिस समय राठौर सियाजी ने अपने थोडे से अनुचरो के साथ राजस्थान की विशाल मरु
कर आश्रय लिया और वहाँ पर उसने अपनी शक्तियो का सञ्चय करके अपना प्रभाव काय
उस समय से लेकर राजा यशवन्तसिंह की मृत्यु के समय तक राठौरो का वर्णन संक्षेप
में पाया जाता है।

राजा यशवन्तसिह के बाद की घटनाओ के वर्णन इस ग्रन्थ मे विस्तार के साथ
हैं। उसके मरने के बाद नाबालिग उत्तराधिकारी अजीत उसके सिहासन का अधिकारी
इस प्रकार के वर्णन इस ग्रन्थ मे किये गये हैं और अजितसिह एवम् उसके लडके अभयसि
काल से लेकर गुजरात के सूबेदार सर बुलन्दखाँ के साथ होने वाले युद्ध के अन्तिभ स
घटनाओ के उल्लेख इस ग्रन्थ मे किये गये हैं। ये सभी घटनाये सम्वत् १७३५ सन् १६७
सम्वत् १७८७ सन् १७३१ तक की है।

इन दोनो ग्रन्थो के अतिरिक्त विजय-विलास का एक भाग मुझे देखने को मिला
राजा विजयसिह के शासनकाल की घटनाओ का वर्णन है। विजयसिह बख्तसिंह का
इस भाग मे विजयसिंह और उसके भतीजे रामसिह् के आपसी झगड़ो का भी वर्णन कि
रामसिह अभयसिह का लड़का था। इस आपसी झगडे के फलस्वरूप मारवाड़ मे मराठो
द्वार खुला।

यहाँ के इतिहास के सम्बन्ध मे ख्यात नाम की एक चौथी पुस्तक है, जो किसी भ
हुई है। इस पुस्तक मे कुछ राजबश के जीवन चरित्रो का सङ्कलन है। यह सङ्कलन कथ
मे है। इस पुस्तक का भी एक भाग हमे प्राप्त हुआ है। उसमे अकबर के मित्र राठौर
सिह, उसके बेटे गजसिह और पौत्र यशवन्तसिह का वर्णन मिलता है। इन जीवन चरित्र
के जीवन का सच्चा चरित्र हमारे सामने आ जाता है।

राठौरो की उत्पत्ति का वर्णन हम पहले कर चुके है। यहाँ पर हम उनका इ
का प्रयास करेगे। जोधपुर दरबार के किसी आदमी ने कुछ सस्मरण लिखे थे। उस
जीवन जोधपुर दरबार मे व्यतीत हुआ था। उसके सस्मरण मे सन् १६२६ ईसवी मे र
सिह की मृत्यु से लेकर सन् १८१८ ईसवी मे अङ्गरेजो की सन्धि तक के वर्णन पाये जा
लेखक के पूर्वज जोधपुर के ऊँचे पदो पर थे और जिसने ये सस्मरण लिखे है, उसमे ऐ
नाओ के लिखने की अच्छी योग्यता थी।

इस इतिहास को लिखने के लिये अनेक साधनो से मुझे काम लेना पडा है। ऐति
से मैंने सहायता ली है। राजाओ मन्त्रियो और राज-दरबार के योग्य व्यक्तियो के साथ
मर्श किया है। इसके सिवा अन्य लोगो से भी मिलकर मैंने सामग्री प्राप्त करने की
इस प्रकार के अनेक साधनो से जो कुछ मिल सका है, उन सबको मिलाकर और एक क
का ऐतिहासिक वर्णन करने की कोशिश की है।

और गुणवती थी। * उसका नाम मीराबाई था। इस मीराबाई के साथ राणा कुम्भा का विवाह हुआ था। जोधाराव के छठे पुत्र बीका ने जाटो के कुछ गांवो और नगरो पर अधिकार कर लिया था और बीकानेर की प्रतिष्ठा की थी। उसका वर्णन बीकानेर के इतिहास में किया जायगा। जोधा की मृत्यु के बाद उसका दूसरा लडका सूजा मारवाड के सिंहासन पर बैठा। + उसने सत्ताईस वर्ष तक बुद्धिमानी के साथ शासन किया।

सम्वत् १५७२ सन् १५१६ ईसवी के सावन महीने के शुक्ल पक्ष की पार्वती तृतीया को पीपार नामक नगर मे एक उत्सव हो रहा था। = इस उत्सव मे मारवाड की बहुत सी राजपूत स्त्रियाँ गौरी पूजा करने आयी थी। उस उत्सव के दिन पठानो की एक सेना ने मेले मे आकर आक्रमण किया और एक सौ चालीस राजपूत कुमारियो को उस सेना के पठान अपने साथ ले गये। इस घटना को राजा ने सुना। वह क्रोध मे आ गया और जो राजपूत कुमारियाँ पठानो के द्वारा अपहरण की गयी थी, उनका उद्धार करने के लिये वह कातर हो उठा। इतनी जल्दी मे सेना की तैयारी न हो सकती थी। इसलिये बिना विलम्ब किये अपने साथ पहरेदार सिपाहियो को लेकर वह रवाना हुआ और बडी तेजी के साथ चलकर उसने पठानो का पीछा किया। रास्ते में पठानो की सेना से मिल जाने से युद्ध आरम्भ हो गया। सूजा ने पठानो के साथ भयानक मारकाट की और उसने अपहरण की हुई सभी राजपूत कुमारियो का उद्धार किया। परन्तु लडते हुये उसके शरीर में इतने अधिक जख्म हो गये थे कि उनके कारण वह युद्ध भूमि मे गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी।

राजा सूजा के पाँच लडके थे। सबसे बडे लडके की मृत्यु हो गयी थी। इस दशा मे उसका दूसरा बेटा गङ्गा राज सिंहासन पर बैठा। सूरजमल के चार लडके थे। उसके दूसरे पुत्र ऊदा से ग्यारह लडके पैदा हुये और उसके वंशज ऊदावत नाम से प्रसिद्ध हुये। इस वंश के लोगो को मारवाड और मेवाड मे कई एक जागीरे मिली थी। उन जागीरो मे तीमाज, जेतारन, गूदोज, बराठिया और रायपुर आदि अधिक मशहूर हैं। तीसरे पुत्र साँगा को एक स्वाधीन नगर प्राप्त हुआ था। उसका नाम बरोह था। साँगा के वंशज साँगावत के नाम से प्रसिद्ध हुये। चौथे पुत्र प्रयाग से प्रागदास शाखा की उत्पत्ति हुई। वीरनदेव सूजा का पाँचवा लडका था। उसके नारा नाम का एक लडका पैदा हुआ था। × नारा के वंशज नारावत जोधा के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसकी एक शाखा हाडौती के पञ्चपहाड नामक स्थान मे पायी जाती है।

---

* कुछ लोगो का कहना है कि मीराबाई दूदा की बेटी नही थी और न यह राणा कुम्भा को ब्याही गयी थी। मीराबाई दूदा के दूसरे बेटे रत्नसिंह की लडकी थी और वह राणा कुम्भा के प्रपौत्र साँगा के लडके भोजराज को ब्याही गयी थी।

+ कुछ लेखको का कहना है कि जोधा के मरने के पश्चात् उसका बडा लडका सातल उसके सिंहासन पर बैठा और सातल के बाद सम्वत् १५४८ मे उसका भाई उसका उत्तराधिकारी हुआ।

= जोधपुर से तीस मील की दूरी पर पीपार नाम का एक छोटा-सा नगर है। इसमे लगभग पन्द्रह सौ घर हैं। इस नगर मे व्यवसायी लोग अधिक रहते हैं। यहाँ पर एक शिलालेख मिला था। उसमे विजयसिंह और देलून राजा की कुछ बातो का उल्लेख था। ये दोनो राजा गहिलोत वंश मे पैदा हुये थे और उनकी उपाधि रावल थी।

× कुछ लोगो का कहना है कि वीरनदेव राजा सूजा का लडका नही था। बल्कि सूजा के लडके बाघा जी का बेटा था। वह छोटी आयु मे ही मर गया था। नाराजी वीरनदेव का नही सूजा का बेटा था और वह बाघा जी से बड़ा था।

द्वारा उग्रप्रभू ने समुद्र के किनारे के सम्पूर्ण दक्षिणी प्रदेश को जीत लिया था। उससे ध्वजों का बंश आरम्भ हुआ।

(१०) मुक्तमान—इसने तोअरबंशी राजा भानु पर आक्रमण किया और उसके र हिस्सा जीतकर अपने अधिकार मे कर लिया। इसके बंशज वीर कमध्वज के नाम से प्र

(११) भरत—इसने इकसठ वर्ष की अवस्था में गूजर बंशी रुद्रसेन राजा को परा पहाड़ो के नीचे बसे हुये कनकसीर नामक एक नगर पर अधिकार कर लिया। इसके बंश कमध्वज के नाम से प्रसिद्ध हुये।

(१२) अनलकुल—इसने खैरोदा नाम का एक नगर बसाया। अनलकुल पराक्र अटक में मुसलमानो के साथ इसने युद्ध किया। इसके बश के लोग खैरोदिया कमध्वज विख्यात है।

(१३) चन्द—इसने उत्तर में तारापुर नाम के नगर पर अधिकार किया था। इ नाम के नगर के चौहान राजा की लडकी के साथ विवाह किया और उसके बाद वह अ लेकर काशी चला गया। वही पर वह रहने लगा।

कन्नौज के राजा धर्मबिम्ब के एक लड़का था, उसका नाम था अजयचन्द। इक्क तक वहाँ के राजाओ ने राज्य किया। उसमे से कुछ ने राव की पदवी धारण की। उनकी पदवी राजा हो गयी। उदयचन्द, नृपती, कनकसेन, सहेशसाल, मेघसेन, देवसेन, दानसेन, मुकुन्द, भूदू, राजसेन, त्रिपाल, श्रीपुञ्ज, विजयचन्द और उसका लड़का जयचन्द का राजा हुआ।

सन् ४७० ईसवी मे नयनपाल की कन्नौज मे विजय से लेकर उसके तेरह प जिन्होंने भारत के विभिन्न स्थानो पर अपने राज्य कायम किये—जयचन्द के पहले का नही मिलता। सन् ११९३ ईसवी मे जयचन्द की पराजय हुई और राठौरो का शासन खतम होकर गङ्गा के किनारे प्रतिष्ठित हुआ। नयनपाल से लेकर इस समय तक सात का समय बीत जाता है और इस दीर्घकाल मे इक्कीस राठौर राजाओ के नामो का उल्ले है जिन्होने राव की पदवी धारण की थी और उसके बाद राजा की पदवी ग्रहण की। की पदवी सबसे पहले किस राजा ने धारण की, इसका कही पर कोई उल्लेख नही मि की बंशावली मे जो नाम दिये गये हैं, वे सूर्य प्रकाश ग्रन्थ मे नही है। यती की बशावल ध्वज राजा का एक नाम आता है, उसके सम्बन्ध मे लिखा है कि उसने दिल्ली के प्र राजा यशोराज को युद्ध मे पराजित किया था, परन्तु इस प्रकार का उल्लेख सूर्यप्रक मिलता। उसके समय का ठीक अनुमान लगा सकने के साधन हमारे पास हैं, फिर भी वली मे जो नाम दिये गये है, उनके सम्बन्ध मे कुछ नही कहा जा सकता। उनका कोई मिलने के कारण उनके समय का विवाद बिलकुल व्यर्थ मालूम होता है। लेकिन निश्चित यह कह सकते हैं कि उनका राज्य शक्तिशाली था और नयनपाल से लेकर राजा जयचन्द राठौर राजाओ की मर्यादा प्रशसा के योग्य थी। उनके सम्बन्ध मे जो थोडे-बहुत विवर उनमे उनकी प्रशसा की गयी है।

पतन के पहले कन्नौज राज्य ने बडी उन्नति की थी। यद्यपि उसके वर्णन भट्ट ग्र नही पाये जाते। लेकिन मुस्लिम इतिहासकारो ने उसकी उन्नति को स्वीकार किया है। के उन दिनो की उन्नति का सबसे बड़ा मित्र चन्द वरदाई ने अपने ग्रंथ मे उसका वर्णन

पहले बहुत शक्तिशाली और कट्टर माने जाते थे, वे सभी मालदेव से पराजित हो चुके थे और उन्होने मारवाड की अधीनता स्वीकार कर ली।

इस प्रकार अपनी शक्तियो को उन्नत बनाकर मालदेव का ध्यान प्रचण्ड भाटी लोगो की तरफ आकर्षित हुआ। उसके साथ उसका जो युद्ध आरम्भ हुआ, वह बहुत दिनो तक चला। इस बीच मे उसने भाटी लोगो के कुछ स्थानो को अपने अधिकार में कर लिया। विक्रमपुर ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। ❀

आमेर की राजधानी से दक्षिण की तरफ बसे हुए चाटसू नाम का एक नगर था, मालदेव ने उस पर अधिकार कर लिया और देवरा लोगो से सिरोही लेकर मारवाड में मिला लिया। इन्ही दिनो मे उसने मारवाड मे कई एक महल बनवाये और मजबूत दुर्गो का निर्माण करवाया। जोधपुर को सुरक्षित रखने के लिए उसने उसके आस-पास मजबूत दीवारे बनवाई। जोधा ने जोधपुर मे जो राजभवन बनवाये थे, मालदेव ने उनमे आवश्यक मरम्मत करवाई। सातलमेर को तोडवा कर उसकी सामग्री से उसने पोकर्ण को सुदृढ बनाने का काम किया। + सिवाना नगर मे कुडल कोट और उसके निकट पीपलोद नामक पहाडियो पर भद्राजून बसा हुआ है। उसके पास जूडोजरिया पीपाड और दूनाडा नामक नगरो मे उसने दुर्ग बनवाये। दुर्गो के ऊपर जल ले जाने के लिए उसने एक यन्त्र लगवाया था। इस प्रकार के कार्यो मे उसने अपरिमित धन व्यय किया था।' × केवल मेहता के दुर्ग की मरम्मत मे उसने चौबीस हजार पौण्ड खर्च किये थे। भट्ट कवियो का कहना है कि साम्भर झील से जो आय मारवाड राज्य की होती थी, उसी को खर्च करके मालदेव ने इस प्रकार के बहुत से काम किये थे। इसका अर्थ यह है कि उन दिनो मे साम्भर झील मे नमक बहुत अधिक तादाद मे तैयार होता था।

मालदेव के शासन काल मे मारवाड के राज्य का बहुत विस्तार हो गया था। सोजत, साम्भर, मेडता, खाट्ट, विदनोर, लोनू, रायपुर भद्राजून, नागोर, सिवाना, लोहागढ, झागलगढ, बीकानेर, भीनपाल, पोकर्ण, बाढमेर, कसोली, रैवासी जोजावर, जालौर, बवली, मलार, नाडोक, फिलोडी, सांचोर, डीडवाना, चाटसू, लोहान, मलारना, देवरा, फतहपुर, अमृतसर, फावर, मीनापुर, टोंक, टोडा, अजमेर, जेहाजपुर, प्रेमरका और उदयपुर (शेखावटी के अन्तर्गत) नामक अडतालीस जिलो मे अधिकांश जालौर, अजमेर, टोक, टोडा और विदनोर के अन्तर्गत हैं। ऊपर लिखे हुए विशाल नगर मालदेव के प्रताप और ऐश्वर्य का प्रमाण देते हैं। इन अडतालीस जिलो मे मालदेव ने अधिक समय राज्य नही किया। चाटसू, लावान, टोक, टोडा और जेहाजपुर थोडे ही समय मे उसके हाथ से निकल गये। विदनोर की भी यही अवस्था हुई। जिला

❀ यहां पर उसके पूर्वजो की एक शाखा रहती थी, इस शाखा के लोग जैसलमेर वालो के साथ मिल गये है और अब वे मालदोत के नाम से प्रसिद्ध है। मारवाड मे मालदोत लोग बडे साहसी समझे जाते है।

+ पोकर्ण झालामण्ड और जोधपुर के मध्य मे बसा हुआ है। यहां का दुर्ग बहुत मजबूत और सुरक्षित है। इन दिनो मे यहां का सामन्त राजा सालमसिह था' वह मारवाड के सभी सामन्तो मे श्रेष्ठ माना जाता था। वह चम्पावत के नाम से प्रसिद्ध है। यद्यपि चम्पावत मारवाड की अधीनता मे है। लेकिन इसको मारवाड के राजा का कोई भय नही रहता।

× मेडता नगर मन्दोर के राजा राजा का बसाया हुआ था। मालदेव ने इसमे एक दुर्ग बनवा कर अपने नाम पर मालकोट उसका नाम रखा। इस दुर्ग का व्यास दो मील से कम नही है।

पृथ्वीराज स्वयं एक पराक्रमी राजपूत था। बचपन से उसने युद्ध का ज्ञान प्राप्त कि
वह अत्यन्त स्वाभिमानी था। अपने अपमान का वह बदला लेना जानता था। राजसूय यज्ञ
जयचन्द ने उसके साथ जैसा व्यवहार किया, उस तिरस्कार का बदला लेने के लिये प्रतिज्ञा
उसने निश्चय किया। इस राजसूय यज्ञ मे चौहानो और राठौरो के बीच जो सङ्घर्ष पैदा
भारतवर्ष का सर्वनाश का कारण बना। जयचन्द और पृथ्वीराज मे युद्ध हुआ। दोनो पक्ष
से शूरवीर योद्धा और सैनिक मारे गये। इस सङ्घर्ष का वर्णन कविचन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन
विस्तार के साथ किया है। उस ग्रन्थ मे लिखा है कि पृथ्वीराज के द्वारा सयोगिता का अपह
पर दिल्ली और कन्नौज की सेनाओं में पाँच दिनो तक भीषण युद्ध हुआ। इस सग्राम में भ
प्रसिद्ध वीरों के मारे जाने पर यह देश निर्बल पड गया। इस अवसर का लाभ उठाकर
गोरी ने भारत में आक्रमण किया। गोरी के इस युद्ध के परिणाम स्वरूप भारत की स्वाधी
हो गयी।

महमूद के आने के पहले से और इस समय तक भारत का शासन चार प्रधान
विभाजित था : (१) दिल्ली, तोअर और चोहानो का राज्य, (२) कन्नौज, राठौरो का रा
मेवाड़, गहिलोतो का राज्य (४) अनहिलवाडा, चावडा और सोलङ्कियो का राज्य।

उन दिनो मे सम्पूर्ण भारतवर्ष इन चार राज्यो मे विभाजित था और उनमे से प्रत्ये
की अधीनता मे बहुत-से छोटे-छोटे राजा शासन करते थे। बडे राजा की अधीनता मे जो
राज्य थे, उनमें जागीरदारी प्रथा चलती थी।

दिल्ली और कन्नौज—दोनों स्वतन्त्र राज्य थे और दोनो एक, दूसरे से बहुत दूर न
दोनो राज्यो के बीच काली नदी बहती थी। यूनानी लोगो ने इस नदी का नाम कालिन्दी लि
काली नदी से सिन्धु नदी के पश्चिमी किनारे तक और हिमालय पहाड के नीचे से मारव
अर्वली पहाड़ तक दिल्ली का विशाल राज्य फैला हुआ था। इस राज्य में चौहानो के एक
सूबे थे। उनमें से बहुत से अधीन राजा शासन करते थे। इस विशाल राज्य का स्वामी अ
तोअर था। पृथ्वीराज चौहान ने दिल्ली का राज्य अनङ्गपाल से पाया था। *

कन्नौज का राज्य उत्तर मे हिमालय पर्वत, पूर्व मे काशी और चम्बल नदी को पा
बुन्देलखण्ड तक फैला था। दक्षिण में यह राज्य मेवाड की उत्तरी सीमा तक पहुँच गया
पश्चिम में उसकी सीमा अनहिलवाड़ा तक थी।

भट्ट ग्रन्थो के पढने से मालूम होता है कि इस देश के राजा सदा एक दूसरे के साथ
हैं। गहिलोतो और चौहानो से मित्रता और चौहानों तथा राठौरो मे शत्रुता का भाव हमेश
है। राठौरो और तोवर राजपूतो की शत्रुता से इस देश को बहुत क्षति पहुँची है। वैवाहिक
के कारण उनके कुछ सङ्घर्ष कुछ दिनो के लिये शान्त हो गये थे, परन्तु उनके आन्तरिक वैमन
मिट नही सके। यह फूट इस देश के विनाश की सदा कारण रही है। इस बात का प्रमाण
प्राचीन इतिहास देते हैं।

महमूद गजनवी के पश्चात् यदि किसी यात्री ने योरप के बाद गजनी होकर दिल्ली,
और अनहिलवाड़ा की यात्रा की होती तो वह निश्चित रूप से राजपूतो की सभ्यता और योग
स्वीकार करता। उसे स्वीकार करना पड़ता कि जो राजपूत जीवन की अन्य बातो मे किसी

---

* पृथ्वीराज चौहान अनङ्गपाल की लड़की का बेटा था। अनङ्गपाल पृथ्वीराज को
उत्तराधिकारी बनाकर और दिल्ली का राज्य सौंप कर बद्रिकाश्रम तप करने चला गया था।

देने से इनकार किया था। परन्तु शेरशाह के नेत्रो मे इसका कोई महत्व न हुआ। वह मुगलो को पराजित करके दिल्ली के राजसिहासन पर बैठा था। मारवाड का राज्य दिल्ली से बहुत दूरी पर न था। वहाँ का राजा मालदेव अपनी शक्तियो के लिये इस देश मे प्रसिद्ध हो रहा था। शेरशाह को ऐसे समय पर उससे भयभीत होना स्वाभाविक था। हुमायूँ के बाद उसका मालदेव के साथ युद्ध करना कभी भी सम्भव हो सकता था। इस दशा मे बादशाह शेरशाह के लिये यह जरूरी था कि वह पडोसी शक्तिशाली राजा को मिटाकर और शक्तिहीन बनाकर इस देश मे शासन करे।

शेरशाह ने मारवाड पर आक्रमण करने की तैयारी आरम्भ कर दी। उसने अस्सी हजार लडाकू वीरो की एक सेना तैयार की और मारवाड पर आक्रमण करने के लिये वह दिल्ली से रवाना हो गया। शेरशाह के इस आक्रमण का समाचार मारवाड मे राजा मालदेव ने सुना। उसके सामने किसी प्रकार की चिन्ता पैदा नही हुई। वह चुपचाप अपनी राजधानी मे बैठा रहा और शेरशाह की सेना को मारवाड की तरफ लगातार बढने का उसने अवसर दिया।

राजा मालदेव ने इसके बाद शेरशाह से युद्ध करने के लिये अपनी तैयारी आरम्भ की। परन्तु उस तैयारी मे किसी प्रकार की उतावली न थी। मारवाड के निकट पहुँच कर शेरशाह की फौज ने मुकाम किया और बडी सावधानी के साथ वह राजा मालदेव की खबरे लेने लगा।

मारवाड मे युद्ध की तैयारियाँ हो गयी। मुसलमानो के आक्रमण को व्यर्थ करने के लिये पचास हजार राठौर शूरवीर युद्ध के लिये तैयार हो गये। लेकिन मालदेव की सेना अभी तक अपनी राजधानी मे ही थी। उसके सामने भी किसी प्रकार की चिन्ता और उतावली न थी। उसके ये समाचार भी बादशाह शेरशाह को बराबर मिलते रहे। उसकी समझ मे यह न आया कि राजा मालदेव की इस निश्चिन्त अवस्था का कारण क्या है। अपनी छावनी मे बैठकर बडी सावधानी के साथ शेरशाह मारवाड की परिस्थितियो पर विचार करने लगता। राठौरो की शक्तियो से वह अपरिचित न था। मालदेव को पराजित करना वह बहुत आसान न समझता था इसलिये होने वाले युद्ध की परिस्थितियो पर बडी गम्भीरता के साथ वह विचार करने लगा।

मालदेव की शक्तियाँ उन दिनो मे इतनी साधारण न थी, जिनको तुच्छ समझकर कोई मारवाड पर आक्रमण करने का साहस करता। इसीलिये शेरशाह मालदेव को पराजित करने के लिये अनेक प्रकार के उपाय सोचता रहा। उसने अपने जीवन मे राजनीतिक चालो के द्वारा सदा सफलता पायी थी। हुमायूँ को पराजित करने मे भी उसने बडी राजनीति से काम लिया था। इस समय उसने अपनी विशाल सेना लेकर मालदेव के साथ युद्ध करने के लिये मारवाड पर आक्रमण किया था। उसकी फौज मारवाड राज्य की सीमा के बाहर अभी तक पडी थी और युद्ध की पूरी तैयारी कर चुकने के बाद भी मालदेव अपनी सेना के साथ अभी तक राजधानी मे ही थी।

बहुत सोच-समझ कर शेरशाह ने मालदेव को पराजित करने के लिये निर्णय किया। वह राठौरो के युद्ध-कौशल को भली-भाँति जानता था। मालदेव के शूरवीर सरदारो की शक्तियो से भी वह परिचित था। शेरशाह भली प्रकार समझता था कि यदि सरदारो के साथ मालदेव का विश्वास किसी प्रकार भङ्ग किया जा सकता है तो राजा मालदेव की शक्तियाँ बहुत दुर्बल हो जायँगी और उस दशा मे उसको पराजित करना कोई बडा मुश्किल कार्य न होगा। अपनी सफलता के लिये उसने एक षडयन्त्र की रचना की। बडी बुद्धिमानी के साथ उसने एक पत्र तैयार किया, जिसके पढने से राजा मालदेव का विश्वास तुरन्त अपने सरदारो से हट जायगा। यह पत्र तैयार करके किसी प्रकार उसने राजा मालदेव के दरबार मे पहुँचाने की कोशिश की। शेरशाह को अपने

सियाजी राजा जयचन्द का पौत्र था। उसने स्वाभिमानी राठौर बश में जन्म शहाबुद्दीन गोरी के आक्रमण करने पर जयचन्द की मृत्यु हुई और उसके पूर्वजों के राज्य हुआ, उस समय सियाजी की तरह किसी भी स्वाभिमानी मनुष्य को राज्य छोडकर चला उचित था। इस दशा मे सियाजी ने कन्नौज छोडकर अच्छा ही किया। यदि उसने ऐसा होता तो कन्नौज के पतन के बाद, भारत के मरुप्रदेश मे जिस प्रकार राठौर बश का उ- विस्तार हुआ, वह होता अथवा नही, यह नही कहा जा सकता।

मरुप्रदेश मे पहुँचकर सियाजी ने जिस विस्तृत स्थान पर अपना आधिपत्य और प्रभा किया, वह जमना, सिन्ध और गारा नदी तथा अर्वली पहाड की ऊँची चोटियो से घिरा हु वहाँ पर विभिन्न जाति के लोग उन दिनो मे रहा करते थे। कछवाहो ने उस समय तक कोई नही पायी थी। उनके बश का राजा पजोन कन्नौज के युद्ध में मुसलमानो के द्वारा मारा ग उसका बेटा मलैसी सिंहासन पर बैठा था। अजमेर, आमेर, साँभर और दूसरे चौहान राज्य मानो के अधिकार मे चले गये थे। परन्तु अर्वलो के अनेक दुर्ग अब भी राजपूतो के अधिकार मुसलमानो के आक्रमण के बाद भी नाडोल नगर अपनी स्वाधीनता के साथ सुरक्षित था और देव का एक बशधर नाडोल मे शासन करता था। मन्दोर नगर मे अब भी परिहारो प्रतिष्ठा पा रहा था। ईदाकुल परिहारो की एक शाखा है। मानसिह इसी कुल मे उत्पन्न हुअ मन्दोर नगर मे उसका अधिकार था। मानसिह ने बहुत ख्याति पायी थी और मरुप्रदेश मे श्रेष्ठ राजा माना जाता था।

उत्तर की तरफ नागौर कोट के करीब मोहिल लोग रहते थे। यद्यपि उनकी प्रतिष्ठ कुछ नष्ट हो गयी है। परन्तु ग्रन्थो मे उनके बहुत से उल्लेख पाये जाते हैं। उन लोगो के ओरीन्त नाम के स्थान पर अपनी राजधानी कायम की थी और उसके अन्तर्गत चौदह सौ गाँवो मे उनका अधिकार था। बीकानेर से लेकर भटनेर तक सम्पूर्ण प्रदेश बहुत-से छोटे-छोटे मे विभाजित था और वे जाट लोगो के अधिकार मे थे। उनके पूर्व की तरफ गारा की रेतील पर कई जङ्गली जातियो का अधिकार था। जैसलमेर मे भाटी उसके दक्षिण मे सोन और f कच्छ प्रदेश मे जारीजा जाति के लोग रहा करते थे।

मरुप्रदेश में और भी अनेक जातियाँ रहती थी। चन्दावती के पवारो के बीच सोल थे। ईदर और मेवाड की कुछ जातियाँ खण्डधर के गोहिल लोग, साचोर के देवड़ा, जालोर गरा, ओरीन्त के मोहिल लोग और सिनली के साला लोग—इस प्रकार कितने ही प्राचीन के लोग उस विस्तृत मरुभूमि में रहा करते थे।

बीकानेर नगर से पश्चिम की तरफ बीस मील की दूरी पर कोलूमठ नामक एक स्था सियाजी अपने साथियो के साथ वहाँ पर पहुँचा। कोलूमठ मे एक सोलङ्की राजा का शासन उसने सियाजी के साथ शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार किया। सोलङ्की राजा के स्नेहपूर्ण व्यवह सियाजी बहुत प्रसन्न हुआ। वहाँ पर लाखाफूलाणी नाम का एक राजपूत रहा करता था जारीजा बश मे उत्पन्न हुआ था। मरुप्रदेश मे उसका एक प्रसिद्ध दुर्ग था। उसकी शक्तियाँ थी और उसने वहाँ के लोगो को अपने अत्याचारो से बहुत दुखी बना रखा था। लाखा का ना दिनो मे वहाँ दूर तक फैला हुआ था और सतलज से लेकर समुद्र के किनारे तक जितने भी

के शिविर पर आक्रमण किया। उसके साथ ही भीषण मार काट आरम्भ हो गयी। शेरशाह की विशाल सेना ने सम्हल कर अपनी पूरी शक्ति के साथ राजपूतो से युद्ध आरम्भ किया। बादशाह की फौज के मुकाबिले मे राजपूतो की सख्या बहुत कम थी। इसलिये युद्ध मे राजपूत अधिक मारे गये।

राजा मालदेव ने जब युद्ध का समाचार सुना और उसे मालूम हुआ कि राज्य के सरदार और उनके साथ के थोडे से सैनिक बादशाह की बहुत बडी फौज के साथ युद्ध मे भयानक रूप से मारे जा रहे हैं। उस समय उसको अपने भ्रम पर बहुत अफसोस हुआ और उसने समझ लिया कि सरदारो पर अविश्वास करने के लिये मेरे साथ एक भीषण षडयन्त्र रचा गया था। उसने बडी पीडा के साथ इस बात को अनुभव किया कि अपने सरदारो पर अविश्वास करने मे मैंने बहुत बडी भूल की है। उसी समय उसने मारवाड की रक्षा के लिये अपनी सेना को तैयार किया और युद्ध के क्षेत्र मे पहुँचने की उसने चेष्टा की। मालदेव की सेना जिस समय वहाँ पर पहुँची, उसके सरदारो की सेना मारी जा चुकी थी और बहुत से सरदार युद्ध-क्षेत्र मे अपने प्राण दे चुके थे।

इस दुरवस्था मे मालदेव की सेना ने शेरशाह की फौज का सामना किया। परन्तु वह सेना भी अधिक समय तक युद्ध न कर सकी। मालदेव के बहुत से सैनिक मारे गये और अन्त मे उसकी पराजय हुई।

शेरशाह से पराजित होकर दिल्ली की राजधानी से हुमायूँ के भागने पर हिन्दुस्तान मे उसे कही शरण न मिली थी। इसलिये इस देश की मरुभूमि में जाकर अमरकोट में हुमायूँ ने आश्रय लिया था। वही पर उसके बेटे अकबर का जन्म हुआ। उसके पश्चात् हुमायूँ भारतवर्ष से निकलकर परसिया के राज्य मे चला गया और वहाँ पर बहुत समय तक रहकर उसने अपने जीवन के दिन काटे। वहाँ से लौटकर वह फिर भारतवर्ष मे आया और उसने शेरशाह पर आक्रमण किया। उस युद्ध मे शेरशाह की पराजय हुई और हुमायूँ फिर दिल्ली के सिहासन पर बैठा।

शेरशाह को पराजित करने के बाद हुमायूँ अधिक समय तक राज्य का सुख भोग न सका। उसकी अकाल मृत्यु हो गयी। उसके मरने के बाद अकबर उसके सिहासन पर बैठा। वह आरम्भ से ही बुद्धिमान और दूरदर्शी था। अपनी माता के मुख से पिता के दुर्दिनो की घटनाये वह सुना करता था। उन्ही दिनो मे उसने अपनी माता के मुख से यह भी सुना था कि दिल्ली से भागने पर किस प्रकार उसका पिता आश्रय पाने के उद्देश्य से, मारवाड गया और वहाँ के राजा मालदेव ने उस विपदकाल मे आश्रय न देकर किस प्रकार असम्मानपूर्ण व्यवहार किया था। इस प्रकार की घटनाओ को सुनने के बाद अकबर के कोमल अन्तःकरण मे राजा मालदेव से बदला लेने की भावनाये एक साथ जाग्रत हो उठी। उसने कुछ दिन और व्यतीत किये।

अभी अकबर की अवस्था पूरे पन्द्रह वर्ष की भी न हुई थी, सम्वत् १६१७ सन् १५६१ ईसवी मे अकबर अपनी विशाल सेना लेकर रवाना हुआ और मारवाड मे पहुँचकर उसने वहाँ के दुर्ग को घेर लिया। वहाँ पर दुर्ग की रक्षा के लिये मारवाड की जो छोटी सी एक सेना थी, उसने अकबर की फौज के साथ युद्ध किया। उनकी सख्या बहुत थोडी थी। उनमे बहुत-से राजपूत मारे गये और जो बाकी रहे वे किसी प्रकार दुर्ग से निकलकर भाग गये। अकबर की फौज ने उस दुर्ग पर अधिकार कर लिया। उसके बाद अकबर की सेना नागौर की तरफ रवाना हुई और वहाँ पर भी अकबर ने अधिकार कर लिया। इन जीते हुये दोनो नगरो को अकबर ने बीकानेर के राजा रायसिह को दे दिया और उसको अपनी तरफ से अधिकारी बना दिया।

अकबर का प्रताप इन दिनो मे बढ रहा था। मेवाड को छोड कर राजस्थान के सभी

जाने का समाचार सुनकर अनहिलवाडा पट्टन के स्त्री-पुरुषो को बडी प्रसन्नता हुई। लाखा का जहाँ तक फैला हुआ था, सभी लोगो ने सियाजी की प्रशंसा की।

सियाजी तीर्थ यात्रा करने के लिये कोलूमठ से रवाना हुआ। अनहिलवाडा पट्टन मे को मारकर उसने विजय की ख्याति प्राप्त की। इसके पश्चात् वह तीर्थ यात्रा के लिये गया नही, इसका उल्लेख भट्ट ग्रन्थो मे कुछ नही मिलता। उनमें जो कुछ लिखा है, उससे प्रकट कि सियाजी अनहिलवाड़ा पट्टन से बिदा होकर लूनी नदी के किनारे चला गया और वहाँ पर कुछ दिनो तक बास किया। वहाँ पर महबा नाम का एक नगर था। उस पर दावी वश के का शासन था। * सियाजी ने वहाँ के राजा को मार कर नगर पर अपना अधिकार कर f

कई स्थानो की लगातार विजय से सियाजी के हृदय मे राज्य का प्रलोभन बढने लगा। दिनो मे उसने खेरधर पर आक्रमण किया। गोहिलो का प्रभुत्व था। गोहिल राजा महेश सियाजी का सामना किया। वह युद्ध मे मारा गया और गोहिल लोग युद्ध-क्षेत्र से चले गये। जी ने उसके बाद खेरधर पर भी अपना अधिकार कर लिया।

यहाँ पर पाली नगर में कुछ ब्राह्मण रहते थे। उनके अधिकार मे बहुत बडी भूमि थी ब्राह्मणो पर मेर और मीना जाति के पहाडी लोगो के अक्सर आक्रमण होते रहते थे और वे लूट मार करके ब्राह्मणो पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते थे। उनके आतङ्क से पाली न ब्राह्मण सदा भयभीत रहा करते थे। इन दिनो मे उन ब्राह्मणों ने पराक्रमी सियाजी की वि लगातार समाचार सुने। वे लोग सियाजी के पास गये और पहाड़ी जातियो के अत्याचारो करने के लिये उन्होने सियाजी से प्रार्थना की। सियाजी ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर और पहाड़ी जातियो पर आक्रमण करके उसने पाली के ब्राह्मणो को निर्भीक बना दिया।

जङ्गली जातियो के आक्रमण का भय कुछ दिनो के लिये पाली के ब्राह्मणो के मन से गया। परन्तु उनको इस बात का सन्देह होने लगा कि सियाजी के चले जाने के बाद पहाडी ज फिर आक्रमण करेगी। इसलिये उन ब्राह्मणो ने बहुत-सी भूमि सियाजी को देकर यह प्रार्थना क वह वही पर बना रहे।

सियाजी वहाँ रहने लगा। उसने कोलूमठ की सोलङ्किनी राजकुमारी के साथ विवाह था। यहाँ पर उसके गर्भ से एक लड़का उत्पन्न हुआ। सियाजी ने आसथाम उसका नाम रखा

पालीनगर मे रहकर सियाजी के विचार कुछ और ही होने लगे। वह पाली नगर के ब्राह्मणो की विस्तृत भूमि पर अधिकार करने का विचार करने लगा। इस बीच मे उसने व ब्राह्मणो के प्रधान को मार डाला और वहाँ की सम्पूर्ण भूमि पर उसने अधिकार कर लिया।

सियाजी के तीन लडके पैदा हुए। सबसे बडे लड़के का नाम था आसथाम, दूसरे का और तीसरे का नाम अजमल था। किसी भट्ट कवि ने अपने ग्रन्थ मे लिखा है कि सियाजी का पुत्र ठीक उसी की तरह का शूरवीर और पराक्रमी था। उसी ने गोहिलो पर आक्रमण करके खे पर अधिकार किया था। सियाजी ने जिन दिनो मे पाली नगर † पर अधिकार किया था, उसके पुत्र आसथाम ने ईदर को जीतकर अपने छोटे भाई सोनग को वहाँ का अधिकारी बना दिया था

* दावी राजस्थान के छत्तीस राजवशो मे एक है। मैंने इन स्थानो की यात्रा की है और की खाड़ी मे भावनगर के गोहिलो से मैं मिला था। उनके इतिहास के सम्बन्ध मे मैंने उससे बाते की

† पाली नगर राजस्थान के पश्चिम मे है। यह नगर व्यवसाय का एक प्रसिद्ध स्थान

चौंतीसवाँ परिच्छेद

राजा मालदेव की मृत्यु के बाद मारवाड राज्य—मारवाड की परिस्थितियाँ—राठौरों का ऐतिहासिक जीवन और उसकी आलोचना—राज्य मे जागीरो की व्यवस्था—मारवाड राज्य का विधान और उसका पालन—योरप और राजस्थान की जागीरदारी प्रथा मे समानता—उदयसिह की अयोग्यता—मोटा शरीर मोटी बुद्धि—बादशाह अकबर और उदयसिह—उदयसिह को मुगलो से सुविधाये।

राजा मालदेव की मृत्यु के पश्चात् मारवाड राज्य के इतिहास का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। वहाँ के शासन और सम्मान मे अनेक प्रकार के परिवर्तन हो गये। मालदेव के समय तक मारवाड मे सिया जी के वशजो का शासन रहा। और अब वह शासन मुगलो की अधीनता पर जीवन के दिन व्यतीत करने लगा। मारवाड मे जहाँ पर राजपूतो का पचरङ्गा झण्डा फहराता था वहाँ पर अब मुगलो का झण्डा फहरा रहा था। जहाँ की शासन सत्ता राठौरो के सकेत पर चल रही थी, वहाँ अब मुगलो की सत्ता काम करने लगी। राजा मालदेव के अन्तिम दिनो मे मुगलो का आधिपत्य मारवाड के नगरों मे आरम्भ हुआ और उसके मरने के पश्चात् सम्पूर्ण राज्य को मुसलमानो की पराधीनता स्वीकार करनी पडी। उदयसिह राजा मालदेव का बडा लडका था। पिता के मरने के बाद सिहासन का वही अधिकारी था। परन्तु सम्राट अकबर की आज्ञा के बिना वह सिहासन पर बैठ न सका। उसका अधिकार अकबर की प्रसन्नता पर निर्भर था। राज्य सिहासन को प्राप्त करने के लिये अकबर को प्रसन्न करना उदयसिह के लिये सभी प्रकार आवश्यक था। उसके अन्त:करण मे राजपूतो का स्वाभिमान न था। पूर्वजो के उज्वल गौरव को सम्मान देने की योग्यता उसमे न थी। उदयसिह सियाजी का अयोग्य वशज था। उसने स्वाभिमान और स्वातन्त्र्य के सामने राज-सिहासन को अधिक महत्व दिया। उसने अकबर को प्रसन्न करने मे सफलता प्राप्त की। राजा मालदेव का सिहासन और मारवाड का राज्याधिकार प्राप्त हुआ, लेकिन पूर्वजो का स्वाभिमान और गौरव उसे खो देना पडा। बादशाह अकबर की आज्ञा लेकर उदयसिह पिता के सूने राज्य सिहासन पर बैठा और इस सिहासन के प्रत्युपकार मे उसे अपनी बहन को मुगल घराने मे व्याह कर देना पडा। उदयसिंह ने मुगल दरबार मे मनसबदारी का पद प्राप्त किया और उस दिन से मारवाड खुलकर मुगलो की पराधीनता मे आ गया।

सम्वत् १६२५ मे राठौर राजा मालदेव का परलोकवास हुआ। उसका सबसे बडा लडका उदयसिह उसका उत्तराधिकारी था और वही उसके बाद राज सिहासन पर बैठा। परन्तु भट्ट ग्रन्थो मे लिखा गया है कि राजा मालदेव का दूसरा लडका चन्द्रसेन जब तक जीवित रहा, उदयसिह को राजसिहासन प्राप्त नही हुआ। मालदेव के समय मे ही उदयसिह की जिन्दगी का रास्ता बिगडा हुआ दिखायी देता था। उनके मनोभावो मे पूर्वजो के गौरव के प्रति सम्मान न था, उसमे स्वाभिमान का बिलकुल अभाव था। वह स्वार्थी था और किसी प्रकार राजसिहासन पर बैठ कर राज्य सुख का भोग करना चाहता था। मारवाड के सामन्तो से उदयसिह की यह अवस्था छिपी न थी। उसका छोटा भाई चन्द्रसेन इन्ही कारणो से उसका विरोधी था। इन्ही कारणो के फल-स्वरूप

उत्थान और पतन राजपूतों के जीवन का खेल रहा है। उनके न तो पतन होने में देर थी और न उनके उन्नत होने मे। अपनी उन्नति के थोडे ही दिनो के भीतर चूडा उन सभी से निकाल दिया गया जिन पर उसके पूर्वजो ने अधिकार कर लिया था। अपने उन दुर्दिनों कल्लू नामक नगर मे चला गया। वहाँ पर एक चारण ने अपने घर में उसे शरण दी।

मन्दोर नगर में अधिकार करने के बाद चूडा ने नागौर की बादशाही सेना पर हमला वहाँ पर उसे विजय प्राप्त हुई। इसके पश्चात् अपनी सेना लेकर वह दक्षिण की तरफ रवा और गोडवाड राज्य की राजधानी नाडौल मे पहुँच गया। वहाँ के दुर्ग पर उसने अपनी सेन और उस राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। उसने एक परिहार राजा की लडकी के साथ किया। उससे चौदह लडके और एक लडकी पैदा हुई। रिडमल्ल, सत्ता, रणधीर, अडकमल्ल, भीम, कान्हा, अज्जा, रामदेव, बीजा, सहेशमल्ल, बोधा, लम्भा और शिवराज उसके चौदहो के नाम थे। उसकी लडकी का नाम हसा था। मेवाड़ के राणा लाखा के साथ हंसा का विवा था। इसी हसा से जो लडका पैदा हुआ, उसने मेवाड़ के सिंहासन पर बैठकर राणा कुम्भा पर महान कीर्ति प्राप्त को।

चूडा के सम्बन्ध मे अधिक विवरण नही पाये जाते। संक्षेप में इतना ही लिखकर वर्णन समाप्त किया है कि चूडा नागौर में एक हजार राजपूतो के साथ मारा गया। सम्वत् सन् १३८२ ईसवी मे वह सिंहासन पर बैठा था और सम्वत् १४६५ मे वह मारा गया। उस के बाद उसका बड़ा लड़का रिडमल्ल मन्दोर के सिंहासन पर बैठा। उसकी माँ मोहिल लड़की थी।

चूडा की मृत्यु हो जाने के बाद नागौर राठौरो के अधिकार से निकल गया। राणा रिडमल्ल से बहुत स्नेह करता था और अपने सामन्तों से उसे वह बहुत सम्मान देता था। लाखा ने रिडमल्ल को चालीस गाँव और धनला नाम का एक नगर दे दिया था। राणा ल जीवन काल मे रिडमल्ल उसका राजभक्त बना रहा और कई अवसरो पर उसने अपने कार्यों अपनी राजभक्ति का प्रमाण दिया। एक बार वह अपनी और मेवाड़ की सेना लेकर चौहानो पुराने दुर्ग पर पहुँचा और वहाँ की रक्षक सेना को मारकर उसने उस दुर्ग को अपने अधि कर लिया। रिडमल्ल ने दुर्ग को जीतकर राणा लाखा को दे दिया था। राणा लाखा उस कार्य से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसको कैटो नामक एक नगर इनाम मे दिया। रिडमल यात्रा करने के उद्देश्य से गया जी गया था। वहाँ पर उसने कई एक धार्मिक कार्य ऐसे किये वहाँ पर उसकी बडी प्रशसा हुई। जो लोग तीर्थ यात्रा करते थे, उनको कर देना पड़ता था। मल्ल ने वह सम्पूर्ण कर अदा कर दिया।

राज्य के कार्यों मे रिडमल्ल बड़ा बुद्धिमान था। उसके अच्छे कार्यो से प्रजा को ब सुविधाये मिली थी। उसने मेवाड के नाबालिग राणा के सिंहासन पर अधिकार करने की चेष्ट थी, जिसके फलस्वरूप वह मारा गया। इसका वर्णन मेवाड़ के इतिहास मे किया जा चुका है झगडे के कारण मेवाड और मन्दोर मे बहुत अन्तर पड़ गया था और दोनो राज्यो के स दूसरे से अलग हो गये थे। राठौर वश के भट्ट कवियो ने रिडमल्ल की अपने ग्रन्थो मे प्रशसा है और इस बात को स्वीकार किया है, कि उसने अपने राज्य मे भूमि और कर के सम्बन्ध पक्षपात से काम नही लिया।

जागीरो की संख्या और उनकी सीमा का निश्चय कर दिया था। उसके बड़े भाई कांधल ने बीकानेर के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की थी। उसके वंशज कांधलोत नाम से प्रसिद्ध हुये और उन लोगो ने स्वतन्त्रता के साथ वहाँ पर राज्य किया।

जोधाराव का तीसरा भाई चम्पा जी ने अपने नाम पर एक शाखा की प्रतिष्ठा की और इस प्रकार की शाखाये वहुतो के द्वारा स्थापित हुई थी। जोधाराव ने जागीरदारी प्रथा मे जो परिवर्तन किये थे, उसी के अनुसार उसने भाइयो, भतीजो, और पौत्रो को जागीरे दी थीं।

जोधाराव ने अपने राज्य मे जिस प्रकार जागीरो का विभाजन किया था, राव मालदेव ने उनको स्वीकार किया यद्यपि उसने दूसरी श्रेणी जागीरो की वृद्ध कर दी थी, फिर भी उनकी पूर्ति राज्य की सीमा के वढ जाने के कारण हो गयी थी। जोधा से लेकर मालदेव तक जो जागीरे इस राजवंश के लोगो को दी गयी थी, उनके नियमो में कुछ भिन्नता थी। जो जागीरें विजय करके प्राप्त की गयी थी, उनके लिये यह नियम रखा गया कि यदि जागीरदार के कोई पुत्र न हो तो गोद लिया हुआ लडका भी उसका अधिकारी हो सकता है। परन्तु इसके वाद जो जागीरे दी गयी, उनमे यह नियम काम नही करता और वे पुत्र के अभाव से राज्य मे मिला ली जाती थी।

इस प्रकार का नियम प्राचीन काल से मेवाड मे चल रहा था। इसके पालन में कभी-कभी उपेक्षा भी हो जाती थी। ये जागीरे दो प्रकार की थी। कुछ जागीरो मे राजा को कर देना पड़ता था और कुछ मे कर नही देना पडता था। सियाजी से लेकर जोधा तक वश के जिन लोगो का स्थान राज्य के उत्तर और पश्चिम मे था, वे अपनी दुर्वल आर्थिक अवस्था के कारण और कुछ अभिमान के कारण अपनी जागीरो का स्वतन्त्रता पूर्वक भोग करते थे, इतना सव होने पर भी सभी जागीरदार मारवाड के राजा को प्रधानता देते रहे और जब कभी राजा पर सङ्कट आता तो वे अपनी-अपनी जागीर के अनुसार धन देकर राजा की सहायता करते थे। ये लोग राजा को किसी प्रकार का कर नही देते थे। इसीलिये उनकी जागीरे स्वतन्त्र मानी जाती थी। इस प्रकार की जागीरें, जिनको कुछ नही देना पड़ता वाढमेर कोटडा से फलपूंस तक फैली हुई थी।

इसके वाद जो दूसरी जागीरे थी, यद्यपि वे पूर्णरूप से स्वतन्त्र नही थी, तो भी वे छोटे माफीदार कहे जाते थे। आवश्यकता पडने पर उनसे सहायता ली जाती है और विशेष उत्सवो पर वे लोग राजा को भेट देते हैं। महेवा और सनदारी इसी प्रकार की माफीदार जागीरो मे से हैं। इस वश के लोग पूर्वजो की उपाधि से अपना परिचय देते हैं। इनमे से कुछ लोगो को दुहड़िया, किसी को मॉगलिया, किसी को ऊहड और किसी को धादल के नाम से सम्बोधन किया जाता है। परन्तु उनके द्वारा इस बात का पता नही चलता कि ये लोग राठौर हैं।

मारवाड राज्य मे जागीरदारी प्रथा चल रही थी, वह सियाजी के समय से चली आ रही थी। यही प्रथा पहले कन्नौज मे चला करती थी। राजस्थान के सभी राज्यो की जागीरदारी प्रथा करीव-करीव एक-सी थी और योरप की जागीरदारी प्रथा से विलकुल मिलती-जुलती थी।

उदयसिह के सिहासन पर बैठने के सम्बन्ध मे भट्ट ग्रन्थो मे जो उल्लेख पाया जाता है, वह एक-सा नही है। किसी ग्रन्थ मे लिखा है कि मालदेव की मृत्यु के बाद सम्वत् १६२५ सन् १५६६ ईसवी मे वह मारवाड के सिहासन पर वैठा। कुछ ग्रन्थो मे लिखा है कि वह बड़े भाई चन्द्रसेन के मारे जाने पर गद्दी पर बैठा। इस प्रकार के कुछ मतभेद उसके सिहासन पर बैठने के सम्बन्ध मे पाये जाते हैं। इसमे सही क्या है, यह नही कहा जा सकता।

तेंतीसवाँ परिच्छेद

जोधा का जन्म जोधपुर का निर्माण -जोधपुर में जल का अभाव—मरुभूमि में के वशजो का विस्तार और शासन—जोधा की सन्ताने—मेड़तिया बंश की उत्पत्ति—पी का उत्सव—ऊदावत बश का प्रतिष्ठाता ऊदा - मारवाड़ के सिंहासन पर मालदेव—मार का उत्थान और विस्तार।

सम्वत् १४८४ के बैसाख महीने मे जोधा ने मेवाड़-राज्य के धनला नामक एक नग लिया था। वह रिडमल्ल का लड़का था। जोधा के पितामह ने मन्दोर पर अधिकार कर अपने राज्य की राजधानी बनायी थी और यह नगर बहुत दिनों तक मारवाड की राजधानी मे रहा। जोधा ने इस नगर से हटकर अलग अपने नाम का एक नगर बसाने का इरादा कहा जाता है कि इसके लिये किसी सन्यासी ने उसको परामर्श दिया था। वह सन्यासी चार मील दक्षिण की तरफ विहङ्गकूट नामक एक पहाड की गुफा में रहा करता था। वह का शुभचिन्तक था। उसी ने जोधा से कहा था कि मन्दोर नगर में अनेक प्रकार के स होंगे। इसलिये बकरचीरा की सीमा पर आप एक नगर की प्रतिष्ठा कराइये।

सन्यासी के इस परामर्श को पाकर जोधा ने उस नये नगर के निर्माण का विचार कर लिया और विहङ्गकूट पर्वत की ऊँची चट्टानो के ऊपर उनके बनाये जाने का कार्य अ गया। इसी पर्वत के ऊपर मन्दोर नगर बसा हुआ था। इस पर्वत पर बसे हुये नगर पर करना किसी के लिये आसान न था। उस पर्वत के चारो तरफ घना जङ्गल था और उस ऊँचाई बहुत अधिक थी। उसकी ऊँची चोटियो पर खडे होकर देखने से सम्पूर्ण मारवाड़ देता था। मारवाड के तीन तरफ विस्तृत मरुभूमि थी। उस बालुकामय प्रदेश में जल का स रूप से अभाव था। जोधा ने अपने नये नगर के निर्माण में इस अभाव की तरफ ध्यान न कार्य आरम्भ हुआ और निर्माण का कार्य समाप्त हुआ। जोधा ने अपने नाम के आधार नवीन नगर का नाम जोधपुर रखा। उसमें जल की कोई व्यवस्था न थी। जिस स्थान पर बसाया गया था, वहाँ पहले से ही पहाड़ी चट्टानो पर इसका अभाव था। इसका विचार होना चाहिये था, जब उस नगर की प्रतिष्ठा होने जा रही थी। उस समय स्वय जोधा ने परामर्श देने वाले मन्त्रियो ने इसके सम्बन्ध मे कुछ न सोचा। नगर के निर्माण का कार्य जाने पर लोगो का ध्यान इस अभाव की तरफ गया।

जल का अभाव जोधपुर का एक बड़ा अभाव था। मारवाड भट्ट लोगो ने इस उस सन्यासी के माथे पर मढ़ने की चेष्टा की और वे लोग सफल भी हुये। सर्व साधारण जाने लगा कि नगर के निर्माण मे उस सन्यासी के साथ—जिसने इस नगर के निर्माण सलाह दी थी—अत्याचार किया गया है। जिस पहाड़ी गुफा मे वह सन्यासी रहता था, इसमे शामिल कर लिया गया है। सन्यासी को इससे बड़ा कष्ट हुआ और उसके राज्य के रियो से प्रार्थना की। लेकिन किसी ने कुछ सुना नही। इस दशा मे उसके शाप से यह न अच्छे जल के लिये दुखी रहेगा।

राजा उदयसिह ने भी यह समाचार सुना। इस समय उसको अपनी अभिलाषा एक भयानक अपराध मे मालूम हुई। इसी दिन से उसके मन मे एक अशान्ति पैदा हो गयी और प्रत्येक घडी वह अस्थिर रहने लगा। इसके कुछ ही दिनो बाद उसकी मृत्यु हो गयी। ऊपर लिखा जा चुका है कि उदयसिह के चौतीस सन्ताने थी। उनके सत्रह लडके थे और सत्रह लडकियाँ। उसकी इन सन्तानों के सम्बन्ध मे नीचे लिखा हुआ विवरण पाया जाता है :

१—शूरसिह, सिहासन पर।

२—अखयराज।

३—भगवानदास, इसके बल्लू, गोपालदास और गोविन्ददास नाम के तीन लडके थे। गोविन्द दास ने गोविन्दगढ बसाया था।

४—नरहरदास
५—शक्तसिह
६—भूपतसिह
} इनके कोई सन्तान नही हुई।

७—दलपत, इसके चार पुत्र हुये महेशदास उनमें सबसे बडा था। उसके लडके रतन ने रतलाम नामक एक दुर्ग बनवाया था। उसके तीन लडके थे, यशवन्तसिह, प्रतापसिह और कुनीरैन।

८—जयत, इसके चार लडके उत्पन्न हुये, हरी, अमर, कन्हीराम और प्रेमराज। इनकी सन्तानो को बलूँता और खरवा की भूमि मिली थी।

९—किशनसिह, इसने सम्वत् १६६९ सन् १६१३ ईसवी मे किशनगढ बसाया। साहसमल, जगमल, भारमल नाम के इसके तीन लडके थे। भारमल का लडका हरीसिह था और हरीसिह के रूपसिह नाम का एक बेटा था। रूपसिह ने रूप नगर बसाया।

१०—यशवन्तसिह, इसके लडके मानसिह ने मानपुर बसाया। उसकी सन्ताने मनुरूा जोधा के नाम से विख्यात हुई।

११—केशव इसने पीसानगढ बसाया था।

१२—रामदास
१३—पूरनमल
१४—माधवसिह
१५—मोहनदास
१६—कीरतसिह
} इनके केवल नाम पाये जाते हैं।

१७—× × ×

इन पुत्रो के अतिरिक्त उदयसिह के सत्रह लडकियाँ भी पैदा हुई थी, परन्तु भट्ट ग्रन्थो मे उनका कोई वर्णन नही पाया जाता।

राजावली नामक एक पुस्तक मे उदयसिह की सन्तानो का ऊपर लिखा हुआ विवरण पाया जाता है।

मरुप्रदेश में फैलकर वहाँ की समस्त उत्तम भूमि पर अधिकार कर लिया। सियाजी के संख्या इन दिनो मे इतनी बढ गयी थी कि जो विस्तृत भूमि उनके अधिकार मे थी वह उ कम पड़ रही थी और नयी भूमि पर उनको अधिकार करने की आवश्यकता थी, जिसमे र वंश सुविधाओ के साथ अपना विस्तार कर सके।

जोधा की चौदह सन्तानें

नाम	शाखा	जागीर	विशेष विवरण
१—साँतल जी	×	साँतलमेर	पोकर्ण से छै मील
२—सूजा जी	×	×	जोधपुर का उत्तराधिकारी
३—जोगा जी	×	×	वशहीन
४—दूदा जी	मेड़तिया	मेडता	दूदा जी ने चौहानो से साम्भर छ था। उसके वीरन नाम का एक वीरन के दो लडके जयमल और हुये। उनसे जयमलोत और शाखाये निकली।
५—बरसिंह	बरसिहोत	नोलाई	मालवा मे
६—बीका जी	बीकावत	बीकानेर	स्वतन्त्र जागीर
७—भारमल्ल	भारमल्लोत	बिलारा	... ...
८—शिवराज	शिवराजोत	दूनारा	लूनी पर
९—कर्मसिंह	कर्मसिंहोत	क्योनसर	...
१०—रायपाल	रायपालोत	×	... ...
११—सावतसिंह	सावतसिंहोत	दावारो	.. ...
१२—बीदा जी	बीदावती	बीदावती	नागौर जिले मे
१३—बनबीर	×	×	... ...
१४—नीम जी	×	×	... ...

जोधाराव के चौदह लडको मे साँतल जी सबसे बडा था। वह पिता के राज्य को राजस्थान के उत्तर-पश्चिम की तरफ भाटिया राज्य मे चला गया था। वहाँ पर उसने नाम का एक दुर्ग बनवाया। यह दुर्ग पोकर्ण से छै मील की दूरी पर है।

मरुभूमि के एक भाग मे सराई नामक एक यवन जाति रहा करती थी। उसके र के साथ साँतल का सङ्घर्ष पैदा हो गया। दोनो मे युद्ध हुआ। उसमें खान के साथ-साथ मारा गया। उसके सात स्त्रियाँ थी। वे सातो साँतल के साथ सती हुई।

दूदा जोधाराव का चौथा लडका था। मेडता की विशाल भूमि में उसने अपने प्रतिष्ठा की। उसके बशज मेडतिया राठौर के नाम से प्रसिद्ध हुये। मरुप्रदेश मे उसकी ख्याति थी। जिस शूरवीर जयमल ने बादशाह अकबर की प्रचण्ड और विशाल सेना के करते हुये चित्तौर की रक्षा करने मे अपने प्राणो का बलिदान किया था और जिसकी सम्मान में बादशाह अकबर ने प्रस्तर की मूर्ति बनवा कर दिल्ली के सिहद्वार पर रखवाई कुमार दूदा उसी जयमल का पितामह था। दूदा के एक लड़की पैदा हुई थी वह अत्यन्त

गये। लेकिन अन्त में शूरसिंह की ही विजय हुई। शाह मुजफ्फर पराजित हुआ। उसके अधिकार में अनेक नगर और ग्राम थे। वे सबके सब शूर सिंह के अधिकार में आ गये। शाह मुजफ्फर के नगरों को लूटकर शूरसिंह ने जो सम्पत्ति एकत्रित की, उसको उसने बादशाह के पास दिल्ली भेज दिया। शूरसिंह की इस विजय से अकबर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसको एक तलवार इनाम में देकर बहुत सी उसको भूमि दी।

गुजरात की विजय मे शूरसिंह को लूट मे बहुत-सी सम्पत्ति मिली थी। उससे उसने जोधपुर नगर और उसके दुर्ग की उन्नति की। इसी सम्पत्ति में से उसने मारवाड के छै भट्ट कवियों को पुरस्कार दिये। प्रत्येक पुरस्कार एक लाख पचास हजार रुपये का था। गुजरात की विजय से शूर-सिंह की ख्याति राजस्थान में चारो तरफ फैल गयी। बादशाह अकबर ने उसकी शक्तियों से प्रभा-वित होकर और भी उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य सौंपे। नर्मदा नदी के किनारे अमरबलेचा नाम का एक शूरवीर राजपूत राज्य करता था। उसने मुगलो की अधीनता स्वीकार नही की थी। इसलिये अक-बर बादशाह ने उसको पराजित करने के लिये शूरसिंह को भेजा। वह अपने साथ तेरह हजार सवारो की सेना, दस बडी-बड़ी तोपे और बीस लडाकू हाथियो को लेकर रवाना हुआ और नर्मदा नदी के किनारे पहुँचकर उसने अमर बलेचा पर आक्रमण किया। × उसका सामना करने के लिये अपने साथ पांच हजार सवारो को लेकर अमर रवाना हुआ और मुगल सेना के सामने पहुँचकर उसने युद्ध आरम्भ किया। अमर के साथ बहुत छोटी सेना थी। फिर भी उसने शक्ति भर युद्ध किया, अन्त मे उसकी पराजय हुई और वह मारा गया। शूरसिंह ने उसके राज्य पर अधिकार कर लिया। इस विजय का समाचार सुनकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने शूरसिंह को नौबत भेजी और विजय मे मिला हुआ राज्य उसने उसको दे दिया।

इन्ही दिनो मे मुगल बादशाह की मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका बडा लडका जहाँगीर मुगलो के सिंहासन पर बैठा। इस नवीन बादशाह के प्रति अपनी राजभक्ति प्रकट करने के लिये अनेक प्रकार की बहुमूल्य भेटो के साथ अपने उत्तराधिकारी गजसिंह को लेकर शूरसिंह मुगल दरबार मे गया। युवक गजसिंह को देखकर बादशाह जहाँगीर बहुत खुश हुआ। राजकुमार गजसिंह शूरसिंह का सुयोग्य लड़का था। बादशाह ने जालौर के युद्ध में उसकी वीरता का प्रमाण पाया था। इस समय उसको दरबार मे देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ और अपने दरबारियो के सामने उसकी वीरता और योग्यता की बड़ी देर तक प्रशंसा की।

जालौर के युद्ध-क्षेत्र मे गजसिंह ने अपने अद्भुत शौर्य का परिचय दिया। उसकी उन्नति का आरम्भ वही से हुआ। उसने जालौर को गुजरात के बादशाह से जीतकर मुगल बादशाह को दे दिया था।

इन्ही दिनो में पठानो के साथ युद्ध करने के लिये बादशाह ने आदेश दिया। गजसिंह ने युद्ध की तैयारी की। उसने जालन्धर पर—जिसका नाम जालौर है—आक्रमण किया। उस युद्ध मे बहुत से राठौर शूरवीर मारे गये। लेकिन अन्त में सात हजार पठानो को मारकर उसने उस शहर को लुटवा लिया और लूट मे मिली हुई सम्पत्ति उसने बादशाह के पास भेज दी।

सम्वत् १६७६ सन् १६२० ईसवी में राठौर नरेश शूरसिंह की दक्षिण मे मृत्यु हो गयी। वह एक शूरवीर और सुयोग्य राजपूत था। बादशाह के दरबार मे उसको सम्मान मिला था। दक्षिण में उसने बड़ी ख्याति पायी थी। उसके शासन-काल मे जोधपुर का गौरव बढ़ गया था।

× बलेचा चौहान वंश की एक शाखा है। अमर उस राजपूत का नाम था।

सम्वत् १५७२ सन् १५१६ ईसवी मे राजा सूजा के मर जाने पर उसका पौत्र
वाड के सिंहासन पर बैठा । उसके चाचा साँगा ने उसका विरोध किया । उसने गङ्गा
से उतार कर उस पर अधिकार करने की कोशिश की । इसके फलस्वरूप, मारवाड मे
उत्पात पैदा हो गया । मारवाड के राठौर दो भागो मे विभाजित हो गये । कुछ लोग
मे थे और कुछ लोग साँगा के । साँगा ने दौलत खाँ लोदी से सहायता माँगी, जिसने कु
राठौरो से नागौर को छीनकर अपने अधिकार मे कर लिया था । उसकी सहायता से साँ
के साथ युद्ध करने की तैयारी की । दोनो ओर से युद्ध के बाजे बजे और भयानक मारका
लडाई में साँगा मारा गया और दौलत खाँ लोदी पराजित होकर युद्ध से भाग गया ।

गङ्गा ने बारह वर्ष तक मारवाड मे राज्य किया । उसके शासन मे बाबर और रा
सिह के बीच सघर्ष पैदा हुआ । बाबर के आक्रमण को रोकने के लिये राणा सग्रामसि
सघर्ष पैदा हुआ । राणा सग्रामसिह ने युद्ध की तैयारी की और उस समय राजस्थान
राजाओ, सामन्तो और सरदारो के साथ-साथ मारवाड़ का राजा गङ्गा भी अपनी सेन
मेवाड का सहायक बना । मारवाड से जो सेना मेवाड़ की सहायता मे बाबर के साथ युद्ध
थी, राव गङ्गा का पौत्र रायमल उसका सेनापति था । बियाना के विस्तृत मैदान म बा
सिह की सेनाओ मे भीषण युद्ध हुआ । राजपूतो का यह अन्तिम युद्ध था, जिसमे उन्होने अ
सङ्गठन का परिचय दिया था । इस युद्ध में मारवाड का राजकुमार रायमल, मेड़ति
सरदार खैराती और नवरत्न के साथ मारा गया ।

इसके चार वर्षों के बाद गङ्गा की मृत्यु हो गयी और सम्वत् १५८८ सन् १५३
मालदेव उसके सिहासन पर बैठा । उसके शासनकाल में मारवाड़ ने बडी उन्नति की थी
शक्तिशाली राणा सग्रामसिंह पर बाबर विजय प्राप्त कर चुका था । लेकिन उसका क
मारवाड की तरफ न था । इसीलिये मालदेव को मारवाड की उन्नति करने का अवसर
था । दिल्ली और मारवाड की सीमा के कई दुर्गों पर मालदेव ने अधिकार कर लिया औ
से दूरवर्ती ढूँढास पर उसने राठौरो का झण्डा फहराया था । मारवाड की उन्नति मे
किसी प्रकार की रुकावट न थी ।

राणा सग्राम की मृत्यु और मेवाड राज्य का दुर्भाग्य राजस्थान के छोटे राजा
अभिशाप हो गया और उत्तर की तरफ से मुगलो और गुजरात के बादशाहो ने आक्रम
कर दिये । लेकिन मालदेव को उनसे कोई आघात नही पहुँचा । इस अवसर पर उसने
शत्रु—दोनो से लाभ उठाया और बिना किसी सन्देह के वह राजस्थान का उस समय एक
बन गया । इन दिनो मे मारवाड की परिस्थितियो की आलोचना करते हुये प्रसिद्ध मुस्लि
कार फरिश्ता ने मालदेव को "हिन्दुस्तान का अत्यन्त शक्तिशाली राजा" लिखा है ।
सिहासन पर बैठने के बाद उसने अपने पूर्वजो के प्राप्त किये हुये दो प्रधान नगरो नागौर
मेर को मुसलमानो से लेकर अपने अधिकार मे कर लिया और आठ वर्षों के बाद सम्वत्
उसने सिधिलो के जालोर, सिवाना और भाद्राजून नामक तीन नगरो को लेकर अपने रा
लिया । बीका के वशजो को बीकानेर से निकाल दिया । लूनी नदी के तटवर्ती जिन नग
जी ने अपने अधिकार मे कर लिया था, उनके राजाओ ने राठौरो की अधीनता को ठुकरा
आपको स्वतन्त्र घोषित कर दिया था । मालदेव ने उन सबको पराजित करके फिर उन प
कर लिया और उनको राठौरो की अधीनता मे रहने के लिये मजबूर किया । मालदेव के
इन दिनो मे मरुप्रदेश के समस्त राजाओ ने स्वीकार किया । मरुस्थलो के जो भूमिया

अवसर पाकर उसको जान से मार डाला । गजसिंह के हृदय को इस दुर्घटना से बहुत आघात पहुँचा। खुर्रम के इस आचरण से उसको घृणा हो गयी और वह दक्षिण को छोड़कर अपने राज्य को चला गया । इसके थोड़े दिनों के बाद बादशाह जहाँगीर के साथ खुर्रम का विद्रोह बढ़ गया । इसीलिये उसने बादशाह को सिंहासन से उतार कर स्वयं बैठने का प्रयास किया ।

शाहजादा खुर्रम ने जहाँगीर के विरुद्ध सैनिक आक्रमण की तैयारी की । उसकी वह चेष्टा जहाँगीर को मालूम हो गयी । इसलिये उसने राजपूत नरेशों से सहायता लेने का निर्णय किया। उसका सन्देश पाकर मारवाड़, आमेर, कोटा, बूँदी के राजा लोग अपनी सेनाओं के साथ बादशाह की सहायता के लिये आ गये ।

शाहजादा खुर्रम भी अपनी सैनिक तैयारी कर चुका था । उन्हीं दिनों में बादशाह को समाचार मिला कि अपनी फौज के साथ खुर्रम आ रहा है । वह भयभीत हो उठा । राठौर राजा गजसिंह ने उस समय बादशाह को बहुत धैर्य दिया । गजसिंह के प्रोत्साहन को सुनकर बादशाह जहाँगीर को बहुत शान्ति मिली । प्रसन्न होकर उसने गजसिंह से हाथ मिलाया और उसके हाथ का चुम्बन किया ।

जो राजपूत नरेश सहायता करने के लिये आये थे, वे बादशाह के आदेश से अपनी सेनाओं के साथ खुर्रम के विद्रोह के दमन करने को रवाना हुये । बनारस के पास खुर्रम की फौज मौजूद थी । उसको देखकर हिन्दू राजाओं की सेनायें रुक गयीं और संग्राम करने के लिये श्रेणी बद्ध होकर खड़ी हो गयीं । बादशाह की तरफ से जो सेनायें आयी थीं, उनका नेतृत्व आमेर के राजा को दिया गया ।

यह नेतृत्व गजसिंह को मिलना चाहिये था । फिर बादशाह जहाँगीर ने ऐसा क्यों किया। इसका निर्णय करते हुये मारवाड़ के एक भट्ट ग्रन्थ में लिखा है कि उस समय बादशाह की सहायता के लिये जो राजपूत नरेश गये थे, उनमें राजा आमेर के साथ में बड़ी सेना थी । इसका जो भी कारण रहा हो । परन्तु जहाँगीर के द्वारा नेतृत्व का अधिकार राजा आमेर को मिलने से राजपूत नरेशों में एक साथ भयानक ईर्षा पैदा हो गयी । गजसिंह ने इसमें अपना अपमान अनुभव किया। उसने बादशाह के शिविर को छोड़कर और कुछ दूर जाकर अपना एक अलग शिविर कायम किया। उसने निर्णय कर लिया कि इस समय जहाँगीर और खुर्रम में जो युद्ध होने जा रहा है, उसमें मैं सम्मिलित न होकर दूर से तमाशा देखूँगा । परन्तु वह ऐसा न कर सका । राजा भीमसिंह ने उसकी उदासीनता का विरोध किया और अनेक प्रकार की बातें समझाकर उसने गजसिंह को बादशाह की सहायता करने के लिये विवश किया । सीसोदिया भीमसिंह के परामर्श को सुनकर गजसिंह ने अपना निर्णय बदल दिया और वह बादशाह की सहायता के लिये तैयार हो गया । उसको ऐसा करने के लिये भीमसिंह ने सभी प्रकार विवश किया । उसकी उदासीनता का विरोध करके भीमसिंह ने साफ-साफ शब्दों में उससे कहा था ।

"युद्ध-क्षेत्र में आकर आप संग्राम से दूर नहीं रह सकते । यदि किसी भी कारण से आप युद्ध में बादशाह की सहायता नहीं कर सकते तो आपको खुलकर शाहजादा खुर्रम के पक्ष में चले जाना चाहिये । आपको किसी भी अवस्था में खुलकर एक तरफ ही रहना पड़ेगा । जीवन के ऐसे कठोर अवसरों पर जो तटस्थ होकर रहता है, वह कायर होता है ।"

भीमसिंह के इन वाक्यों से गजसिंह की उदासीनता दूर हो गयी और वह बादशाह की सहायता करने के लिये फिर से तैयार हो गया । इस समय युद्ध की परिस्थिति बहुत निकट आ गयी

बिदनोर और उसके अन्तर्गत तीन सौ आठ गाँवो मे राठौर रहा करते थे और वे सभ
शाखा से उत्पन्न हुए थे, शूरबीर जयमल राजपूतो की इसी शाखा मे पैदा हुआ था, ज
एक प्रसिद्ध सरदार हुआ और यही कारण था कि उसके समय से बिदनोर मेवाड-राज
भाग माना गया।

मारवाड के सिंहासन पर बैठकर मालदेव ने दस वर्ष व्यतीत किये। इन दिनो मे
ऊपर लिखा गया है—अवसर पाकर उसने सभी प्रकार अपने राज्य की उन्नति की और
शक्तियाँ उसने बड़ी बुद्धिमानी के साथ मजबूत बना ली थी। इन्ही दिनो मे बाबर
मुगल राज्य की भारत मे नीव डाली थी और बडी सफलता के साथ जिसने दिल्ली के
बैठ कर अब तक राज्य किया—इन्ही दिनो मे मृत्यु हो गयी। उसके मरने पर
हुमायूँ, उसके सिंहासन पर बैठा। लेकिन वह अपने पिता के विशाल राज्य पर अ
शासन नही कर सका।

बादशाह शेरशाह ने अवसर पाकर हुमायूँ पर आक्रमण किया। शेरशाह
शूरबीर था, राजनीत में वह उतना ही निपुण था। उसने युद्ध मे हुमायूँ को भयानक
जित किया। मुगल बादशाह हुमायूँ शेरशाह के भय से कातर हो उठा। कुछ थोडे से सैं
अपना परिवार लेकर वह दिल्ली की तरफ भाग गया। इन दिनो मे राजा मालदेव के
को और कोई दिखायी न पडा, जहाँ जाकर वह शरण ले सकता। इस दशा मे बहुत
कर हुमायूँ मारवाड पहुँच कर मालदेव से उसने आश्रय तथा सहायता के लिए
बिगडे हुए दिनो मे कोई किसी की सहायता नही करता। मुगल सम्राट हुमायूँ के साम
भयानक दुर्भाग्य था। वह पराजित होकर अपने राज्य से भागा था। दुर्भाग्य के दि
के लिए उसे कही आश्रय न मिल रहा था। कुछ दिन पहले जिस भारतवर्ष
बादशाह था आज कुछ इने गिने दिनो के बाद उसी देश मे उसको जीवन रक्षा
स्थान ज मिल रहा था। राजा मालदेव के यहाँ भी उस को आश्रय न मिला। इसका
बियाना के भीषण लुद्ध मे राजा मालदेव का इकलौता बेटा शपनी सेना का नेतृत्व
सिंह की तरफ से बाबर के साथ युद्ध करने गया था। वहाँ पर मारा गया। पुत्र
राजा मालदेव को भूला न था। हुमायूँ बाबर का लडका था और बाबर के साथ यु
बेटा मारा गया था। इसलिए असम्मान के साथ हुमायूँ को राजा मालदेव के पास
कर लौटना पडा।

हुमायूँ को आश्रय न देने के और भी कारण राजा मालदेव के सामने थे।
रायमल तो अभी हाल ही मे बाबर के द्वारा मारा गया था। लेकिन कन्नौज के पतन
देव के सामने मुसलमानो की शत्रुता थी। शहाबुद्दीन गोरी ने पृथ्वीराज का
और दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर कन्नोज पर आक्रमण किया था। उस समय र
की मृत्यु के साथ-साथ कन्नौज का पतन हुआ था और राठौर वंशी राजा
और भतीजो ने कन्नौज से भागकर भारत की मरुभूमि मे जाकर आश्रय लिया। अ
यह दुरवस्था राजा मालदेव को भूली न थी। इस प्रकार के कितने ही कार
अपनी भीषण विपद मे मालदेव से किसी प्रकार का आश्रय न पा सका और वहाँ
जाना पड़ा।

राजनीति मे स्वार्थ को ही महत्व मिलता है। हुमायूँ को शरण न देने के का
शेरशाह के निकट राजा मालदेव के सम्मान की वृद्धि होनी चाहिए थी। उसने उसके श

को राव की उपाधि दी। तीन हजार के ऊपर उसको मनसब बना दिया और नागौर का जिला उसके अधिकार मे दे दिया। *

अमर को राज्याधिकार से वञ्चित करने के चौथे वर्ष, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, गजसिंह युद्ध मे मारा गया और उसके बाद यशवन्तसिंह उसके सिंहासन पर बैठा। आरम्भ में बादशाह उससे प्रसन्न हुआ था। अमरसिंह मुगल बादशाह के यहाँ एक जागीर का अधिकारी हो गया परन्तु उसके स्वभाव और चरित्र मे ऐसी निर्बलता थी, जिसके कारण अधिक समय तक वह बादशाह को प्रसन्न न रख सका। कर्त्तव्य पालन और उत्तरदायित्व का उसके चरित्र मे भयानक अभाव था।

अमरसिंह शिकार खेलने का बहुत शौकीन था। अपनी इसी आदत के कारण एक बार वह मुगल दरबार मे पन्द्रह दिनो तक बराबर अनुपस्थित रहा। उसका यह अपराध था। जिसका जिक्र करते हुए बादशाह शाहजहाँ ने उसको जुर्माने की धमकी दी। परन्तु अमर पर इसका कोई प्रभाव न पडा। उसने स्वाभिमान के साथ उत्तर देते हुए कहा : "मैं केवल शिकार के लिये गया था और इसीलिये दरबार मे मैं नही आ सका।" इसके बाद उसने अपनी तलवार को स्पर्श करते हुए कहा "जुर्माना अदा करने के लिये मेरी यह तलवार ही सम्पत्ति है।"

अमर का यह उत्तर शिष्टाचार के विरुद्ध था। बादशाह ने उसकी अशिष्टता का अनुभव किया और उस पर जुर्माना कर दिया, जिसको वसूल करने के लिये बख्शी सलावत खाँ को आदेश दिया गया। × उस जुर्माने को वसूल करने के लिये सलावत खाँ अमर के पास गया। अमर ने जुर्माना देने से इनकार कर दिया। सलावत खाँ ने बादशाह के पास पहुँच कर बताया कि अमर जुर्माना देने से इनकार कर रहा है। यह सुनकर बादशाह ने अमर को बुलाया। अमर ने आमखास मे पहुँचकर बादशाह से भेंट की। सलावत खाँ भी वहाँ पर मौजूद था। उस समय बादशाह ने जो कुछ कहा, उससे अमर ने अपना तिरस्कार अनुभव किया। उसकी समझ मे यह भी आया कि मेरे इस अपमान का कारण सलावत खाँ बख्शी है।

अमर अपने क्रोध को रोक न सका। उसने तेजी के साथ सलावत खाँ पर आक्रमण किया और अपनी तलवार से उसने उसको घायल कर दिया। इसके बाद वह बादशाह की तरफ झपटा।

---

* कुछ लेखको ने अमरसिंह के उस प्रकार राज्य से निकाले जाने की घटना का उल्लेख दूसरे ढङ्ग से किया है। उनका कहना है कि गजसिंह की अनेक रानियाँ थी। जसवन्तसिंह की माँ दूसरी थी और अमरसिंह की दूसरी। जसवन्तसिंह की माँ के कहने पर गजसिंह को मुगल बादशाह के यहाँ फौज में एक अधिकारी बनवा दिया था और ऐसी व्यवस्था कर दी थी जिससे वह राज्य से अलग रहे। बादशाह की तरफ से अमर को एक जागीर मिली थी। वही पर उसकी माता और स्त्रियों को भी भेज दिया गया था।

× यह सलावत खाँ बख्शी कहलाता था। उसका कार्य केवल वेतन बाँटना ही नही था। जैसा कि उसके पद से जाहिर होता है। बल्कि मुआयना करना और हिसाब की जाँच करना भी उसके अधिकार का काम था। वह बादशाह की तरफ से वसूलयाबी का काम भी करता था। उसका स्थान मुगल कर्मचारियो मे सम्मानपूर्ण था। उसके अधिकार मे बहुत से कर्मचारी थे और उन सबके ऊपर अमरसिंह था। अमर और सलावत खाँ मे पहले से ही द्वेष चला आ रहा था। इसका कारण कदाचित यह था कि अमरसिंह अपने व्यवहारो में बहुत कठोर और उग्र था।

षडयन्त्र मे सफलता प्राप्त हुई। वह पत्र राजा मालदेव के हाथो मे पहुँच गया उसके पढते प्राण सूख गये। वह बार-बार सोचने लगा कि अपने जिन सरदारो पर मैं गर्व करता हूँ शत्रु से मिले हुये है और इन सरदारो को इस बात का प्रलोभन है कि मारवाड का राज्य की अधीनता मे आ जाने पर इस राज्य के सरदारो को आज से अधिक अधिकार और स होगे।

शेरशाह ने जो पत्र भेज राजा मालदेव के साथ षडयन्त्र किया था, उसके रहस्य क समझ न सका। उसने उस पत्र पर पूरा विश्वास किया और उस पत्र को पाने के बाद उस विश्वास सरदारो से हट गया। अपने मन की इस परिस्थिति मे उसमे मन्त्रियो और सरदा बार भी बात करने का विचार न किया। बादशाह शेरशाह से युद्ध करने के लिये उसने हजार राजपूतो की सेना तैयार की थी, वह अभी तक मारवाड की राजधानी मे मौजूद थ सम्बन्ध में राजा मालदेव क्या सोच रहा है, इस बात को वहाँ पर कोई न जानता था।

राजा मालदेव के शूरवीर सरदार युद्ध की प्रतीक्षा कर रहे थे और राजा मालदे से अपना विश्वास खोकर मन की ऐसी क्षत-विक्षत अवस्था मे था, जिसमे यह सोच स लिये असम्भव हो गया था कि अब उसे भयङ्कर विपद के समय क्या करना चाहिये। बा शाह अपने शिविर में बैठा हुआ मारवाड की इन भीतरी परिस्थितियो का अध्ययन कर उसने जो षडयन्त्र रचा था, उसमें उसे पूर्ण रूप से सफलता मिली। उसने अपने षड़ मालदेव और उसके सरदारों के बीच का सुदृढ विश्वास नष्ट कर दिया। मालदेव को यह पूरी तौर पर हो गया कि मेरे सभी सरदार शत्रु से मिले हुये हैं। इस दशा मे उसने कर दिया और कर्त्तव्यहीन होकर वह अपनी राजधानी मे बैठा रहा।

छत्तीसवाँ परिच्छेद

राजा गजसिह के बाद जसवन्तसिह को सिहासन—शाहजहाँ के लडको मे विद्रोह—राजपूत राजाओ की सहायता—फतेहाबाद का सग्राम—युद्ध मे लौटकर जसवन्त सिंह अपनी राजधानी मे—औरङ्गजेब की सफलता—शाहजहाँ को कैद—औरङ्गजेब के साथ शुजा का विद्रोह--औरङ्गजेब और दारा—जसवन्त सिह और औरङ्गजेब—शिवाजी की बन्दी अवस्था—औरङ्गजेब के षडयन्त्र—जसवन्तसिह के विनाश की चेष्टा—पृथ्वीसिह के साथ औरङ्गजेब का विश्वासघात—मारवाड का राठौर वंश ।

राजा गजसिह की मृत्यु के बाद जसवन्तसिह (यशवन्तसिंह) उसके सिहासन पर बैठा । वह मेवाड की राजकुमारी से पैदा हुआ था । मेवाड का सीसोदिया वश सम्पूर्ण राजस्थान मे अत्यन्त गौरव के साथ देखा जाता था ।

राजस्थान के उस समय के राजाओ में जसवन्त सिंह को बहुत ख्याति मिली । वह एक सफल शासक था और उसके शासन मे सभी प्रकार राज्य ने उन्नति की थी । उसके प्रोत्साहन मे कई एक अच्छे ग्रन्थ लिखे गये थे । वह विचारशील, गम्भीर और रणकुशल राजपूत था ।

शूरसिह और गजसिह ने दक्षिणी भारत को प्रधानता दी थी । जसवतसिंह ने भी उसी को महत्व दिया । वह दक्षिणी भारत को अपने अधिकार मे लाना चाहता था परन्तु उसका कोई भी कार्यक्रम मुगल बादशाह की स्वीकृत पर निर्भर था । बादशाह ने अपने अनुमान और अन्दाज से काम लिया । उसने जसवन्तसिंह को आरम्भ मे गोंडवाना भेजा । वहाँ पर मुगलो की एक विशाल सेना औरगजेब के नेतृत्व मे पहले से मौजूद थी और उसकी सहायता बाईस सामन्त राजा अपनी-अपनी सेनाओ के साथ कर रहे थे । उन सब के साथ रह कर जसवन्तसिंह को स्वतन्त्र रूप से अपने रण कौशल का परिचय देने के लिए कोई अवसर न था, फिर भी उसने वहाँ पर बडी योग्यता और वीरता से काम किया ।

जीवन की इस परिस्थिति मे जसवन्तसिंह ने बहुत दिन व्यतीत किये । सन् १६५८ ईसवी मे बादशाह शाहजहाँ भयानक रूप से बीमार पडा । उस समय उसकी तरफ से शासन का प्रबन्ध दारा करता रहा । वह जसवन्तसिह की योग्यता और युद्ध की कुशलता से बहुत प्रसन्न हुआ । इसलिए उसने जसवन्तसिह को पञ्चहजारी की उपाधि दी और उसको मालवा का अधिकारी बना कर उसने भेज दिया ।

बादशाह शाहजहाँ के बीमार पडते ही उसके लडको मे राज्य का अधिकार प्राप्त करने के लए विद्रोह पैदा हुआ । बादशाह की बीमारी जितनी ही भीषण होती जाती थी , उसके लडको के

यहाँ सम्मानपूर्ण स्थान दिया था । एक अयोग्य मनुष्य को आश्रय देने के जो फल मिलता है, शाहजहाँ को भी वही मिला । बादशाह शाहजहाँ ने अमर के अपराधो का दण्ड उसके पुत्र को नही दिया । बल्कि उसके लडके को बादशाह ने नागौर के सिहासन पर बिठाया । उसका नाम रायसिह था । नागौर कीयह जागीर अमर के वशजो मे बहुत दिनो तक चलती रही । रायसिह के बाद हठीसिह, उसका बेटा अनूपसिह, उसका बेटा इन्द्रसिह और उसका बेटा मोहकम सिह उसका मालिक रहा ।

राज्य उससे भयभीत हो रहे थे । मारवाड के राजा मालदेव ने अकबर की प्रधानता स्
ली और सम्वत् १६२५ सन् १५६१ ईसवी में उसने दूसरे पुत्र चन्द्रसेन को अकबर के पा
अकबर उन दिनो में अजमेर मे रहता था । चन्द्रसेन ने वहाँ पहुँचकर बहुमूल्य भेंटे बाद
को दी । लेकिन अकबर को इससे सन्तोष न हुआ । मालदेव का स्वयं न आना अकबर के
का कारण बना । उसने मालदेव के इस अहङ्कार का बदला लेने के लिये रायसिंह को ज
भी अधिकारी बना दिया ।

चन्द्रसेन राजा मालदेव के भेजने से अकबर के पास गया । परन्तु वहाँ के व्यवहारों
स्वाभिमान को जो आघात पहुँचा, उसे किसी प्रकार उसने सहन किया । इन्ही दिनो में
एक सेना ने मारवाड़ के सिकाना नगर पर आक्रमण किया । मुगलो की उस सेना का सा
के लिये राठौरो की एक सेना लेकर चन्द्रसेन युद्ध करने गया और वहाँ पर वह मारा ग
समय उसके तीन लड़के थे । उग्रसेन उनमे बड़ा था ।

सम्वत् १६२५ सन् १५६६ ईसवी मे मालदेव की मृत्यु हो गयी । उसके निम्नलिखि
लड़के थे :

१—रामसिंह, पिता के निकाल देने पर वह मेवाड़ के राणा के पास चला गया
सात लडके थे । उनमे पाँचवे पुत्र केशवदास का कुछ उल्लेख पाया जाता है । केशवदास
महेश्वर नामक स्थान पर अपना निवास स्थान बनाया था ।

२—रायमल, बियाना के युद्ध मे मारा गया ।

३—उदयसिंह, मारवाड़ का राजा ।

४—चन्द्रसेन, झाला वश की राजपूत रमणी से पैदा हुआ था । इसका वर्णन ऊ
जा चुका है । चन्द्रसेन के तीन लड़के हुये । उग्रसेन उनमें सबसे बड़ा था । उसे भिनाय ना
का अधिकार मिला था । उग्रसेन के भी तीन लडके पैदा हुये । कर्ण, कान्ह जी और काहस

५—आस कर्ण, इसका वश आज भी जूनिया नामक स्थान में पाया जाता है ।

६—गोपालदास, ईदर नगर में मारा गया ।

७—पृथ्वीराज इसके वंशज अब तक जालौर में पाये जाते हैं ।

८—रतनसिंह, इसके वंशज भद्राजून मे रहते हैं ।

९—भोजराज, इसके वंशज अहारी में पाये जाते हैं ।

१०—विक्रमाजीत
११—भान
१२—×
} इनके सम्बन्ध में कोई उल्लेख नही मिलता ।

मालदेव के मरने के बाद उसका बड़ा बेटा उदयसिंह उसके सिंहासन पर बैठा । उ
हो समय के बाद उसने अपनी बहन का ब्याह मुगल राजघराने में कर दिया ।

जहाँ पर उसकी फौज ने मुकाम किया था, वही पर वह तरह-तरह के षडयन्त्रों की रचना करने लगा।

औरङ्गजेब और शुजा के सिवा बादशाह का लड़का मुराद भी विद्रोही हो चुका था। इसलिये जसवन्तसिह से युद्ध करने के लिये वह भी एक अपनी फौज लेकर नर्मदा के किनारे पहुँच गया था। औरङ्गजेब और मुराद की फौजो ने मिलकर जसवन्तसिंह के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। जसवन्तसिह अब भी अपने शिविर मे चुपचाप बैठा था। अपनी तरफ मे युद्ध आरम्भ करने के पक्ष मे वह न था। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि उसको अपनी शक्तियो पर विश्वास था और दूसरा यह कि वह बादशाह के पक्ष मे उसके लड़कों के साथ युद्ध करने के लिये आया था। इसलिये वह चाहता था कि युद्ध का आरम्भ मेरी तरफ से न होकर औरङ्गजेब की तरफ से ही होना चाहिये।

इस अवस्था मे युद्ध रुका और बहुत समय तक किसी ने किसी पर आक्रमण नहीं किया। इसका लाभ औरङ्गजेब ने उठाया। उसके आते ही यदि जसवन्तसिह ने एक साथ उस पर आक्रमण कर दिया होता तो निश्चित रूप से औरङ्गजेब की पराजय होती। वह जसवन्तसिह के साथ युद्ध कर के सफलता प्राप्त करने की शक्ति न रखता था। लेकिन जसवन्तसिह ने उसका लाभ न उठाया और वह अपने शिविर मे चुपचाप बैठा रहा।

इस अवसर को पाकर औरङ्गजेब मुराद से मिला और उसने अपनी शक्तियो को युद्ध के लिये मजबूत बना लिया। उसने इतना ही नही किया, बल्कि उसने जसवन्तसिह के साथ जो मुगल सेना आगरा से आयी थी, उसके साथ उसने साजिश शुरू कर दी। जसवन्तसिह के साथ जो मुगल सेना थी, कासिम खाँ उसका सेनापति था। औरङ्गजेब ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ उसको मिला लेने की चेष्टा की और उसकी फौज के सिपाहियो मे राजपूतो के विरुद्ध ऐसी अफवाहे पैदा कर दी, जिनके कारण जसवन्तसिह के साथ मुगल सेना औरङ्गजेब के षडयन्त्र मे आ गयी।

इस अवसर पर औरङ्गजेब ने जसवन्तसिह पर आक्रमण किया। यह युद्ध सन् १६५८ ईसवी के मार्च महीने मे हुआ। राजा जसवन्तसिह ने अपनी सेना के साथ औरङ्गजेब का सामना किया और दोनो ओर से घमासान युद्ध आरम्भ हो गया। मारकाट के थोडे ही समय के बाद, जसवन्तसिह के साथ आगरा से जो मुगल सेना आयी थी और कासिम खाँ जिसका सेनापति था, वह जसवन्तसिह की सेना से निकलकर औरङ्गजेब की फौज के साथ मिल गया। उस मुगल सेना के निकल जाने स जसवन्तसिह की सेना बहुत थोडी रह गयी। अब उसके साथ केवल तीस हजार राजपूत थे। औरङ्गजेब और मुराद की फौजे एक साथ होकर जसवन्तसिह से युद्ध कर रही थी। आगरा की मुगल सेना के मिल जाने से औरङ्गजेब की शक्तियाँ महान् हो गयी और इस विशाल सेना के द्वारा जसवन्तसिह को पराजित करना औरङ्गजेब के लिये कुछ कठिन नही रहा।

युद्ध की यह परिस्थिति जसवन्तसिह के लिये भयानक हो उठी। उसको इस परिस्थिति का पहले कोई भी अनुमान न था। जसवन्तसिह ने यह सब दृश्य अपनी आँखो से देखा, परन्तु उसने साहस से काम लिया और अपने तीस हजार राजपूतो पर विश्वास करके वह बराबर युद्ध करता रहा। उसने युद्ध मे भयानक मारकाट की और अपने घोडे को आगे बढा कर एक साथ वह औरङ्गजेब के सामने पहुँच गया। उस समय मुगलो और राजपूतो मे भीषण मारकाट हुई। इतनी देर के युद्ध क्षेत्र मे दस हजार मुस्लिम सैनिक मारे गये और उसका सहार करने मे सत्रह सौ राठौर

दोनों भाइयों में सङ्घर्ष पैदा हो गया था। वहाँ के सभी श्रेष्ठ सामन्तो ने चन्द्रसेन का स
था।

आरम्भ से लेकर उदयसिंह के समय तक मारवाड़ राज्य के शासन की हम यहाँ आवश्यक आलोचना करने की चेष्टा करेगे। शुरू से लेकर उदयसिंह के समय तक म इतिहास तीन प्रमुख विभागो मे दिखाई देता है और वह इस प्रकार है :—

(१) खेड-राज्य मे सिया जी के सन् १२१२ ईसवी में आने से लेकर सन् १३८१ चण्ड द्वारा मन्दोर जीतने के समय तक।

(२) मन्दोर जीतने के समय से लेकर जोधपुर की प्रतिष्ठा के समय सन् १४५६ ई

(३) जोधपुर की प्रतिष्ठा के समय से उदयसिंह के राज्यसिंहासन पर बैठने के १५८४ ईसवी तक जब राठौरो ने मुगलो की पराधीनता को स्वीकार किया।

इन चार सौ वर्षों मे राठौरो का ऐतिहासिक जीवन किस प्रकार व्यतीत हुआ, उसकी स्पष्ट आलोचना होने की आवश्यकता है। आरम्भ मे बहुत दिनो तक भूमिया लोगो भूमि का पश्चिमी भाग विजय करने मे समय व्यतीत हुआ। उन दिनो मे वहाँ का जि उनको प्राप्त हो सका था, उसी पर उनको सन्तोष करना पडा। उसके बाद मन्दोर नगर प्राप्त करने पर लूनी नदी के दोनो तरफ की उपजाऊ भूमि रणमल्ल और जोधा के लड़को कार मे आ गयी। ❀ इसके पश्चात् जोधपुर बसाया गया और इसके तैयार हो जाने प की राजधानी जोधपुर मे पहुँच गयी।

जोधा के तेईस भाई थे उनमे कोई भी उत्तराधिकारी प्राप्त करने की योग्यता न इसी बात को दूसरे शब्दो मे यो कहा जा सकता है कि उनमे कोई भी उत्तराधिकारी होने न था। राज्य के हित के लिये यह आवश्यक था कि उन तेईस के सिवा किसी अन्य को प्रकार सक्षम और योग्य हो, उत्तराधिकारी बनाया जाय और ऐसा किसी निकटर्ती को प्र किया जा सकता था। परन्तु जोधा ने इस बात का अपने यहाँ एक विधान बना लिया था वशजो के अतिरिक्त दूसरा कोई जोधपुर के सिहासन पर नही बैठ सकता। जो राठौर मा सामन्त हैं, उनमे से किसी को जोधपुर के सिंहासन पर बैठने का अधिकार नही है। इ जोधा ने अपने यहाँ एक निश्चित व्यवस्था बना ली थी, जिसका वर्णन भली प्रकार अजमेर हास मे किया गया है।

सियाजी के वंशजो मे जोधाराव ने प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। अपनी उस प्रतिष्ठा को भी अनुभव करता था। उसने अपने राज्य की जागीरदारी प्रथा के नियमो को बदलने का किया था। उसके पिता रणमल्ल के चौबीस लडके थे और उनमे से वह स्वय एक था। उ. पुत्र पैदा हुये थे। इन सबको देखकर उसको इस बात का ख्याल हुआ कि इन सबके जो स होगी, उनकी सख्या बहुत बढ जायगी और जागीरदारी प्रथा की पुरानी व्यवस्था के अनु जागीरे दी जायँगी, उनसे राज्य की सम्पूर्ण भूमि बहुत से टुकडो मे बट जायगी। उस दशा के प्रश्न को लेकर विवाद पैदा होना बहुत स्वभाविक हो जायगा। इसलिये भविष्य मे पैदा ह इन विवादो के रोकने का कार्य अभी से होना चाहिए। इस प्रकार सोच-विचार कर जोधा

❀ रणमल्ल को पिछले पृष्ठो मे बहुत-से स्थानो पर रिडमल्ल भी लिखा गया है नाम एक ही है। इसी नाम के लिखने मे कही-कही बड़ी भूल हुई है।

युद्ध किया था, उनमे से वचे हुए राजपूतो ने एक वार फिर से वादशाह की सहायता करने का सकल्प किया और जाजी नामक एक ग्राम के निकट औरङ्गजेव की फौज का सामना किया। परन्तु इस युद्ध से भी कोई अनुकूल परिणाम न निकला। राजपूतो की पराजय हुई। शाहजहाँ सिंहासन से उतार कर वन्दी वनाकर रखा गया और उसका वेटा दारा वहा से भाग गया।

औरङ्गजेव ने पिता के विरुद्ध जो विद्रोह किया था, उसमे उसको पूर्ण रूप से सफलता मिली। वादशाह को वन्दी वनाकर वह सिंहासन पर वैठा। अव उसके सामने उसके भाई शुजा का प्रश्न था। इसलिये उसको दमन करने के लिये औरङ्गजेव ने तयारी की। उन्ही दिनो मे उसने जसवतसिह को सन्देश भेजकर वुलवाया और आमेर के राजकुमार के द्वारा कहला भेजा कि हमारे विरुद्ध युद्ध अव तक जो कुछ आपने किया है, उसे क्षमा कर दिया जायगा। परन्तु आपको शुजा के विरुद्ध युद्ध करना होगा।

औरङ्गजेव के साथ-साथ मुगल सिंहासन का अधिकार प्राप्त करने के लिये शाहजहाँ के विरुद्ध शुजा ने भी विद्रोह किया था। वादशाह के वन्दी हो जाने पर और सिंहासन पर औरङ्गजेव के वैठने पर शुजा का विद्रोह औरङ्गजेव के साथ हो गया। वह स्वय मुगल सिंहासन का अधिकारी वनना चाहता था। इस दशा मे औरङ्गजेव के साथ युद्ध करने के लिये अपनी फौज लेकर रवाना हुआ और आगरा की तरफ वढ रहा था।

जसवन्त सिंह को औरङ्गजेव का सन्देश मिला। उसने सोच-समझकर औरङ्गजेव का संदेश मन्जूर किया। उसने शुजा के साथ युद्ध करने की तैयारी की। उससे पहले ही औरङ्गजेव अपनी फौज लेकर शुजा का सामना करने के लिए रवाना हुआ। इलाहावाद से तीस मील उत्तर की तरफ खजुआ नामक स्थान पर दोनो शाहजादो की फौजो का सामना हुआ। उनमे युद्ध आरम्भ हो गया। युद्ध के इसी अवसर पर अपनी राठौर सेना लिए हुए जसवन्त सिंह वहाँ पहुँच गया। उस युद्ध को देखकर उसने समझा कि इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। औरङ्गजेव और शुजा दोनो एक दूसरे के प्राणो के घातक हो रहे है उसने मोहम्मद की फौज पर आक्रमण किया और उसके सिपाहियो को काट-काटकर फेक दिया। उसके वाद वह वादशाही डेरे की तरफ वढा और वहाँ पर जो सामग्री मिली, उसको ऊँटो पर लदवाकर आगरा की तरफ रवाना हुआ। औरङ्गजेव और शुजा मे उस समय भयानक युद्ध हो रहा था।

जिस समय जसवन्त सिंह अपनी सेना के साथ आगरा पहुँचा, उसके पहले ही वहाँ पर औरङ्गजेव के हारने की अफवाह उड रही थी। ऐसे अवसर पर जसवन्त सिंह का अपनी सेना के साथ वहाँ पहुँच जाना वहाँ के लोगो के लिए घवराहट का कारण हो गया। आगरा मे रक्षा करने के लिए औरङ्गजेव की जो फौज मौजूद थी, उस अफवाह को सुन कर वहुत भयभीत हो चुकी थी। उस समय जसवन्त सिंह यदि चाहता तो वहाँ की वादशाही फौज उसके सामने आत्म-समर्पण कर देती और उस समय जसवन्त सिंह शाहजहाँ को कारागार मे निकाल सकता था। परन्तु इस तरफ उसका ध्यान न था।

शुजा के साथ औरगजेव का सन्देश जसवन्त सिंह को मिला। उस अवसर पर औरङ्गजेव ने वडी राजनीति से काम लिया। जसवन्त सिंह ने उस समय समझा कि औरंगजेव शुजा के साथ युद्ध करने जा रहा है। इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। वह समझता था कि शाहजहाँ की वृद्धावस्था है और दारा उसका उत्ताराधिकारी है, वह इस अवसर का लाभ उठा सकता है। इसलिए उसने छिपे तौर पर दारा के साथ परामर्श किया और इस अवसर पर उसने अपने सुझाव दिये। इसके लिए दारा ने जहाँ पर जसवन्त सिंह से मिलने का वादा किया था, वहाँ न पहुँचा।

उदयसिंह जोधाराव का अयोग्य वंशज था और अपनी अयोग्यता के कारण ही उ
न्नता नष्ट हुई। उसमें स्वाभाविक रूप से विलासिता थी। राजपूतो में जो तेज और प्रत
पाया जाता है उसके जीवन मे इस प्रकार के गुणों का पूर्ण रूप से अभाव था। अपनी
के कारण वह स्वाभिमान को खोकर सब कुछ कर सकता था। उसने अपनी बहन का विव
राज घराने में करके अपने पूर्वजों के गौरव को नष्ट कर दिया। इसके प्रसन्न होकर अकब
वाड़ राज्य का अजमेर नगर अपने अधिकार में रखकर राज्य का शेष भाग उदयसिंह
दिया था। इसके अतिरिक्त उसने मालवा के कई नगरो का अधिकार भी बादशाह से प्राप्त
था। वह बादशाह अकबर की अधीनता मे था। परन्तु उसके राज्य की आमदनी पहले
अधिक हो गयी थी। उसको मुगलों की सैनिक सहायता भी प्राप्त थी, जिससे उसने दूदा
से समस्त भूमि लेकर अपने अधिकार मे कर ली और कुछ नगर दूसरो से भी उसने छीन लि

बादशाह अकबर से उदयसिंह को बहुत-सी सुविधाये प्राप्त थी। अकबर उसे मरु
राजा कहा करता था। उसके चौतीस सन्ताने थी। उसके द्वारा कितने ही नये वंशो की स
और उसके लडको ने गोविन्दगढ तथा पीसागढ आदि कई एक जागीरें कायम की थी। कु
उसके राज्य की सीमा से बाहर थी और उनके नाम संस्थापको के नाम पर रखे गये थे।
किशनगढ़ और रतलाम में है।

उदयसिह का शरीर मोटा था, और उसकी बुद्धि भी मोटी थी। उसे लोग मोटा
करते थे। स्थूल शरीर के कारण वह घोडे पर नही चढ सकता था। उसने तेरह वर्ष राज
मृत्यु से पहले उसकी एक घटना का उल्लेख मिलता है। यो तो भट्ट ग्रन्थो से पता चल
राठौर राजकुमारो को छोटी आयु मे नैतिक शिक्षा दी जाती थी और उससे प्रत्येक राजकुमा
वान बनने को चेष्टा करता था। उदयसिह को नैतिक शिक्षा मिली था अथवा नही, इ
उल्लेख नही मिलता। उसके सत्ताईस रानियाँ थी। उनके अतिरिक्त बुढापे मे उसने एक
लडकी से विवाह करने की चेष्टा की थी। उनकी घटना का उल्लेख इस प्रकार मिलता है

'ख्यात' नामक एक भट्ट ग्रन्थ मे लिखा है कि उदयसिंह एक दिन बादशाह अकबर
से लौटकर अपने राज्य को आ रहा था। रास्ते मे बीलड़ा नामक एक ग्राम के निकट
अत्यन्त रूपवती लडकी को देखा। उदयसिंह ने उस लड़की से बातचीत की। मालूम हुआ
पन्थी सम्प्रदाय के किसी ब्राह्मण की वह लडकी है। इस पन्थ के ब्राह्मण लोग किसी देवी के
होते हैं और तान्त्रिक विद्या पर विश्वास करते हैं। वे लोग मदिरा और मास के द्वारा अपन
देवी की पूजा करते हैं।

उदयसिंह ने उस सुन्दरी युवती को अपने साथ लाकर विवाह करने का निश्च
उदयसिह ने उस लडकी के पिता को बुलाकर उससे अपनी अभिलाषा प्रकट की। ब्राह्मण
की बात को सुनकर बहुत दुखी और लज्जित हुआ। उसने सोच डाला कि मैं अपनी लड़की
डालूगा, परन्तु इस प्रकार का कलङ्कित कार्य न करूँगा। उसने एक बडा होमकुण्ड खोद
किया और एक तलवार लेकर उसने अपनी लड़की को मार डाला। उसने उसके शरीर के
किये और उनको अपने जलते हुये होमकुण्ड मे डाल दिया। कुण्ड में बहुत-सी लकड़ियो के
डाला गया था। इसलिये उसमें से होली की-सी लपटे उठने लगी। उसी समय उस ब्राह्म
होकर राजा को श्राप दिया और उसके बाद वह तान्त्रिक ब्राह्मण जलते हुये अग्नि कुण्ड मे
थोड़ी देर मे पिता पुत्री के शरीरो से राख का ढेर बन गया।

वहाँ पहुँचकर जयसिंह ने शिवाजी के साथ युद्ध किया और उसको गिरफ्तार करके औरङ्गजेब के पास भेज दिया। शिवाजी के जाने पर औरङ्गजेब ने उसके सर्वनाश की योजना बना डाली।

जयसिंह को स्वय इस बात का विश्वास न था कि औरङ्गजेब इस प्रकार का विश्वासघात करेगा। उसने शिवाजी को इस उद्देश्य से औरङ्गजेब के पास नही भेजा था। इसीलिये शिवाजी के बन्दी हो जाने पर जयसिंह को मानसिक वेदना हुई। वह किसी प्रकार शिवाजी के छुटकारे की बात सोचने लगा। शिवाजी स्वय बहुत दूरदर्शी था। बन्दी जीवन मे छुटकारा पाने के लिये उसने अनेक उपाय सोच डाले और किसी प्रकार अवसर पाकर वह औरङ्गजेब के हाथ से निकल गया।

शिवाजी के निकल जाने पर औरङ्गजेब को जयसिंह पर सन्देह हुआ। उसने जयसिंह को हटाकर उसके स्थान पर फिर से जसवन्त सिंह को नियुक्त किया। जसवन्त सिंह ने इस बार मुअज्जम के साथ साजिश आरम्भ की। इस अवसर पर उसके कई कार्य देखकर औरङ्गजेब के मन मे फिर से सन्देह उत्पन्न होने लगे और अन्त मे उसने जसवन्तसिंह को उसके पद से हटा दिया। इसके साथ ही दिलेरखाँ को प्रधान सेनापति बनाकर वहाँ भेज दिया। वह औरङ्गाबाद पहुँच गया। उसकी वह रात उसके जीवन मे आखिरी होती परन्तु एकाएक उसे सूचना मिली और वह तुरन्त वहाँ से चला गया। औरङ्गाबाद से उसके चलते ही जसवन्तसिंह और मुअज्जम ने उसका पीछा किया।

दिलेरखाँ—जसवन्तसिंह और मुअज्जम से भयभीत हो उठा। अपने प्राण बचाने के लिये वह नर्मदा नदी की तरफ भागा। जसवन्तसिंह और मुअज्जम बराबर उसका पीछा कर रहे थे। यह समाचार औरङ्गजेब को मिला। उसने तुरन्त जसवन्तसिंह को बुलाया और उसे गुजरात का अधिकारी बनाकर वहाँ भेज दिया। अहमदाबाद पहुँचने पर उसे मालूम हुआ कि औरङ्गजेब ने मुझे भयानक रूप से धोखा दिया है। सम्वत् १७२६ सन् १६७० ईसवी मे वह अपने राज्य मे चला गया।

औरङ्गजेब भयानक रूप से षडयन्त्रकारी था। अब तक उसकी सम्पूर्ण सफलता का कारण उसके षडयन्त्रो को छोडकर और कुछ न था। उसने जसवन्त सिंह के साथ भी वही किया। जसवन्त सिंह उसकी चालो से बहुत परिचित था और हृदय मे उसके साथ ईर्षा रखता था। उसका यह भाव औरङ्गजेब से छिपा न था। वह जसवन्त सिंह से काम लेता था परन्तु उस पर विश्वास न करता था। इस प्रकार दोनो के बीच एक गम्भीर अविश्वास चल रहा था। जसवन्त सिंह से बदला लेने के लिये औरङ्गजेब ने अनेक प्रकार के प्रयत्न अब तक किये थे। परन्तु उसे सफलता न मिली थी। फिर भी वह अपनी कोशिश मे लगा रहा।

इन्ही दिनो मे अफगानो ने काबुल मे विद्रोह कर दिया। उसका समाचार पाते ही औरङ्गजेब ने जसवन्त सिंह को बुलाया और बडी प्रशसा के साथ काबुल का विद्रोह दमन करने के लिये उसे जाने का आदेश दिया। जसवन्त सिंह काबुल जाने की तैयारी करने लगा। उसने अपने बडे लडके पृथ्वीसिंह को राज्य का अधिकार सौप दिया और मारवाड के शूरवीर राठौरो को लेकर काबुल की तरफ रवाना हुआ जहाँ से लौटकर फिर वह न आया।

जसवन्त सिंह के काबुल चले जाने पर औरङ्गजेब ने उसके उत्तराधिकारी पृथ्वीसिंह को राज दरबार मे आने के लिये सन्देश भेजा। उस सन्देश को पाकर पृथ्वीसिंह औरगजेब के पास आया। बादशाह औरङ्गजेब ने उसका सम्मान किया और अपने समीप उसे बिठाया। एक दिन वह औरङ्गजेब के दरबार मे पहुँचा और उसने बादशाह को सलाम किया। औरङ्गजेब ने हाथ जोडे हुए पृथ्वीसिंह को खडे देख कर अपने समीप बुलाया और सावधानी के साथ उसके दोनो हाथो को पकडकर गम्भीरता के साथ कहा "राठौर, मैने सुना है तुम्हारे हाथो मे वही बल है, जो कि

पैंतीसवाँ परिच्छेद

मारवाड के सिंहासन नर शूरसिह—शूरसिह की रण कुशलता—बादशाह अकबर से शूरसिह का सिरोही पर आक्रमण—सिरोही का पतन—शाहमुजफ्फर के साथ शूरसिह क शूरसिह की विजय—जोधपुर की उन्नति—अगर बलेचा पर आक्रमण—अकबर की मृत्यु को राज सिंहासन—जहाँगीर के लडको में सङ्घर्ष—खुरम का आक्रमण—गजसिह के बड़े पु सिह का निर्वासन।

उदयसिह की मृत्यु के पश्चात् उसका बडा लड़का शूरसिह सम्वत् १६५१ सन् १५६ मे मारवाड के सिंहासन पर बैठा। इस राज्य का गौरव उदयसिह के शासन काल मे निर्बल था। पिता की मृत्यु के समय मे शूरसिह लाहौर मे था। वहाँ पर वह मुगल बादशाह की भारत की सीमा का अधिकारी था। वही पर उसे उदयसिह के मरने का समाचार मिला थ १६४८ ईसवी मे सिन्ध को विजय किया गया। शूरसिह उसी समय से वहाँ पर था।

शूरसिह अपने पिता उदयसिह की तरह का न था। जीवन के आरम्भ से ही वह कुशल और पराक्रमी था। उदयसिह के जीवन काल मे उसने अपनी रणकुशलता और वी परिचय दिया था। उससे प्रसन्न होकर मुगल बादशाह अकबर ने उसे एक सम्मानपूर्ण सवाई राजा की उपाधि दी थी।

बादशाह अकबर शूरसिह की योग्यता से बहुत प्रभावित था। इसीलिये उसने इन उसको एक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने का आदेश दिया। सिरोही का स्वामी राव सुरता एक सुदृढ पहाडी दुर्ग पर रहा करता था। उसका राज्य समस्त पर्वतमय था। उसको इस विश्वास हो गया था कि उसके पहाडी और जङ्गली राज्य के नगरो और स्थानो मे मुगल की सेना प्रवेश नही कर सकेगो। इसी विश्वास के कारण उसने मुगलो की अधीनता की थी।

बादशाह अकबर की तरफ से शूरसिह ने सिरोही राज्य पर आक्रमण किया। भी सिरोही राज्य के साथ उसका एक संघर्ष हो चुका था। शूरसिह ने सिरोही के राजा कर, उसका सिरोही नगर लुटवा लिया। इस लूट में यहाँ तक अत्याचार किया गया कि तान के पास चारपाई पर बिछाने के लिये कपडे तक न रह गये, भट्ट ग्रन्थो मे लिखा है कि के राजा राव सुरतान का अभिमान नष्ट करने के लिये शूरसिह को उसके साथ ऐसा करन शूरसिह ने उसका सम्मानपूर्ण अभिमान मिट्टी मे मिला दिया और उसे मुगलो की पराधीन कार करनी पडी।

सामन्त शासन प्रणाली के अनुसार राव सुरतान ने मुगल बादशाह का फरमान म और अपनी सेना को लेकर वह दिल्ली के लिये रवाना हुआ। इन्ही दिनो मे बादशाह पाकर शूरसिह गुजरात के शाहमुजफ्फर के पास युद्ध करने के लिये रवाना हुआ। उसके सा का राजा भी अपनी सेना के साथ था। शूरसिह की सेनाय धुंधला नामक स्थान पर पहुँ वही पर शाहमुजफ्फर की फौज ने आकर युद्ध शुरू किया। इस लड़ाई मे शूरसिह के सैनिक

आघात पहुँचा, उसे वह सहन न कर सका और सम्वत १७३९ सन १६८१ ईसवी मे उसने परलोक की यात्रा की। उसकी मृत्यु के कुछ महीनो के पश्चात शिवाजी के जीवन का भी अन्त हुआ। औरगजेब के यही दो शत्रु थे। उन दोनो की मृत्यु से औरगजेब के जीवन का मार्ग साफ हो गया। एक भट्ट ग्रन्थ मे जसवन्त सिह की मृत्यु का उल्लेख करते हुए लिखा है कि "जसवन्तसिह जब तक जीवित रहा, औरगजेब एक दिन भी सुख की नीद सो नही सका। उसके मरते ही औरङ्गजेब की सारी कठिनाइयो का अन्त हो गया।"

जसवन्त सिह ने बयालीस वर्ष राज्य किया। राजस्थान मे जितने भी गौरवशाली राजा हुए है उन सब मे जसवन्त सिह को सम्मानपूर्ण स्थान दिया जा सकता है। वह एक स्वाभिमानी राजपूत था। मुगलो की अधीनता मे रहने पर भी उसने अपने गौरव को कभी भुलाया न था। मुगलो की शक्तियो को महान समझते हुए भी सदा उसने स्वाभिमान की रक्षा की थी। उसने जीवन भर औरगजेब की जड काटने का काम किया।

जसवन्त सिह औरगजेब से घृणा करता था। लेकिन उसकी यह घृणा समस्त मुगलो के प्रति नही थी। उन दिनो शाहजहाँ दिल्ली के सिहासन पर था। यदि जसवन्त सिह की घृणा का कारण राजनीतिक होता तो उसको मुगल बादशाह शाहजहा के साथ घृणा करना चाहिए था। लेकिन उसके साथ जसवन्त सिह ने सदा अपनी राजभक्ति का परिचय दिया और उसके सम्मान की रक्षा मे उसने फतेहाबाद मे औरङ्गजेब के साथ युद्ध किया। उस युद्ध मे यदि मुगल सेना और उसके सेनापति कासिम खा ने विश्वासघात न किया होता तो युद्ध मे—जैसा कि उस समय के इतिहासकारो का विश्वास है—जसवन्त सिह की विजय हुई होती।

जसवन्त सिह स्वभावत शाहजहा के साथ प्रेम और औरङ्गजेब के साथ घृणा करता था। बादशाह के बडे लडके दारा के साथ भी उसकी मित्रता थी। लेकिन दारा स्वयं जसवन्त सिह की मित्रता के योग्य न था। वह अयोग्य और अकर्मण्य था। इसीलिए जसवन्त सिह और राजस्थान के अनेक दूसरे राजाओ की सहानुभूति और सहायता मिलने पर भी वह अपनी और बादशाह शाहजहाँ की रक्षा न कर सका। शाहजादा शुजा के साथ औरङ्गजेब का युद्ध आरम्भ हुआ था, उस समय भी दारा को सम्भल जाने का अवसर था। उस मौके का लाभ उठाने के सम्बन्ध मे जसवन्त सिह ने दारा को परामर्श भी दिया था। परन्तु दारा कुछ न कर सका। जसवन्त सिह किसी भी अवस्था मे शाहजहाँ का उद्धार करना चाहता था। उसका साधन दारा के सिवा और कुछ नही था। इसीलिए जसवन्त सिह ने बादशाह की तरफ से दारा को औरङ्गजेब के सामने खडा किया था। यदि वह अयोग्य और अकर्मण्य न होता तो बादशाह शाहजहाँ के सिहासन से उतारे जाने की नौबत न आती और दारा का भी पतन न होता।

शाहजहाँ और दारा के कारण ही औरगजेब के साथ जसवन्त सिह की शत्रुता बढी थी। औरङ्गजेब भली प्रकार इस बात को जानता था कि बादशाह और दारा का सहायक प्रधान रूप से जसवन्त सिह है। बादशाह को सिहासन से उतारने के बाद औरगजेब ने जो पत्र जसवन्त सिह को भेजा था, उसने इस बात का साफ-साफ जिक्र किया था और उसने जसवन्त सिह को गुजरात का अधिकारी इसी शर्त पर बनाया था कि वह किसी भी दशा मे दारा का साथ न दे। शक्तियो के अभाव मे और दारा की अकर्मण्यता मे जसवन्त सिह को औरङ्गजेब की लिखी हुई शर्त को स्वीकार करना पडा था।

इसके बाद जसवन्त सिह को शिवाजी के साथ युद्ध करने के लिए औरङ्गजेब ने दक्षिण भेज दिया। वह दारा से सभी प्रकार हताश हो चुका था और शाहजहाँ सिहासन से उतारा जा

उसने बहुत-से कुएं, तालाब और अनेक इमारतें बनवाई थी, जिनमे से बहुत-सी अब तक म
उसके इस निर्माण कार्य मे शूरसागर बहुत प्रसिद्ध है। यद्यपि उस मरुभूमि मे उसकी कोई उ
नही है।

शूरसिंह ने छै पुत्र और सात कन्याये छोड़कर परलोक की यात्रा की। गजसिंह,
वीरनदेव, विजयसिंह, प्रतापसिंह और यशवन्तसिंह नाम के उसके छै बेटे थे। उसकी सात
के सम्बन्ध मे कोई उल्लेख नही पाया जाता गजसिंह इन छै मे सबसे बड़ा लड़का था।
मृत्यु के बाद सन् १६२० ईसवी मे वह सिंहासन पर बैठा। उसका जन्म लाहौर में हुआ
पर दरावखाँ बादशाह की तरफ से उसके पास पहुँचा और उसके सिर पर मुकुट रखकर उ
पर राजतिलक किया और उसकी कमर में तलवार बाँधी।

मारवाड़ के सिंहासन पर बैठने के बाद अजमेर के पास मसूदा नगर भी उसको दि
इन्ही दिनो मे बादशाह ने उसको दक्षिण की सूबेदारी दी और कई प्रकार से उसका सम्मा
गजसिंह अपने जीवन के आरम्भ से ही होनहार और सुयोग्य था। उसमे कई एक
दक्षिण की सूबेदारी पाने के बाद उसने अपनी योग्यता और गम्भीरता के परिचय दिये
कितने ही नगरो को जीतकर अपने अधिकार में कर लिया। खिडकीगढ, गोलकुण्डा, केलि
नाला, कञ्चनगढ, आमेर और सितारा पर उसने इन्ही दिनो मे विजय पायी और ये सभी
राज्य मे मिला लिये गये। इनको विजय करने मे उसने अपने जिस रणकौशल का परिचय
उससे प्रसन्न होकर बादशाह ने उसको 'दलथम्भन' की उपाधि दी थी।

राजपूत राजकुमारियो के विवाहो का सम्बन्ध मुगलो मे अकबर के साथ आरम्भ
वह क्रम बराबर जारी रहा। जहाँगीर इस समय दिल्ली के सिंहासन पर था। उसने भी
कुमारियो के साथ विवाह किये थे। उनमे से राठौर के गर्भ से परवेज नाम का एक ल
हुआ। वह जहाँगीर का सबसे बडा लड़का था। इसलिये सिंहासन पर बैठने का वही अधि
आमेर राजकुमारी से खुर्रम नाम का लड़का पैदा हुआ। वह परवेज से छोटा था। इन दो
मे उत्तराधिकारी बनने के लिये झगडा पैदा हुआ। खुर्रम छोटा था। परन्तु वह परवेज
अधिक बुद्धिमान था। वह युद्ध मे निपुण और साहसी था। उसमे लोकप्रियता अधिक थी।
मुगल दरबार के अधिकांश लोग उससे प्रसन्न रहते थे और खुर्रम का समर्थन करते थे।
वश के तेजस्वी भीमसिंह और प्रसिद्ध सेनापति महावत खाँ ने प्रसन्न होकर उसके पक्ष का
किया था। इन दोनो भाइयो के बीच उत्तराधिकार का झगडा बहुत बढ गया और खुर्रम
को मार डालने की चेष्टा की।

मारवाड़ के राजा गजसिंह का सम्मान बादशाह के दरबार मे इन दिनो बढा हुआ
दक्षिण मे खुर्रम के साथ था। अवसर पाकर सुल्तान खुर्रम ने उससे अपनी अभिलाषा प्रकट
उसने उससे अपने उद्देश्य मे सहायता माँगी। गजसिंह पहले से ही परवेज का सम्मान कर
इसलिये उसने खुर्रम की बातो पर ध्यान न दिया। उसकी उदासीनता देखकर खुर्रम को
हुई। वह किसी प्रकार उत्तराधिकारी बनना चाहता था। गोविन्ददास नामक एक भाटी
मारवाड़ का विदेशी सामन्त था। वह योग्य और दूरदर्शी था। इसलिये खुर्रम प्रायः
परामर्श किया करता था। इन दिनो मे उसने सहायता करने के लिये कहा। परन्तु भाटी
के ऊपर उसका कोई प्रभाव न पड़ा। इसके फलस्वरूप खुर्रम उससे नाराज हो गया
इसका बदला देने के लिये किशनसिंह नाम के एक राजपूत को उसने नियुक्त किया।

इसी अवसर पर शाहजादा औरंगजेब ने मुकुन्ददास की तरफ देखा और हँसकर कहा 'राठौर तुम्हारे अद्भुत पराक्रम को मैंने अपनी आँखो से देखा। अब यह तो बताओ कि तुम्हारे कितने लड़के है ?"

मुकुन्ददास ने औरंगजेब के प्रश्न को सुना और मुस्कुराते हुये उत्तर दिया "बादशाह जब आपने मेरी स्त्री से जुदा करके अटक की दूसरी तरफ पश्चिम की ओर भेज दिया था तो फिर मेरे लड़के कैसे पैदा हो सकते है।"

मुकुन्ददास के इस उत्तर को सुनकर औरंगजेब ने एक अस्वाभाविक हँसी के साथ प्रसन्नता प्रकट की। इस प्रकार की बातचीत मुकुन्ददास के साथ औरंगजेब की और भी हुई थी। किसी समय औरंगजेब ने मुकुन्ददास से कहा . 'क्या आप अपने घोड़े पर बैठ कर उसको बड़ी तेजी से दौड़ाते हुये पेड़ की डाली पकड़ कर झूल सकते हो ?"

इस प्रश्न को सुनकर स्वाभिमान के साथ मुकुन्ददास ने कहा 'मै बन्दर नही हूँ' राजपूत हूँ। राजपूत के समस्त कार्य तलवार के द्वारा होते है। किसी राजपूत की तलवार का मेल उस समय देखना चाहिये, जब शत्रु उसके सामने हो।"

मुकुन्ददास ने अपने सहज स्वभाव से औरंगजेब को इस प्रकार का उत्तर दिया था। उस समय वह शाहजादा था। परन्तु उसके व्यवहारो मे बादशाहत की गन्ध थी इसीलिये मुकुन्ददास ने उसके साथ इस प्रकार की बातचीत की थी।

मुकुन्ददास की बातो को सुनकर औरंगजेब को प्रसन्नता नही हुई। उसके वाक्यो मे जिस स्वाभिमान का प्रदर्शन होता था, औरंगजेब उसे उसका अभिमान समझता था। इसलिये वह सदा उसके सर्वनाश की बात सोचा करता था और उससे ऐसे काम लेना चाहता था, जिससे उसका विनाश हो। इसी उद्देश्य से उसने उसको देवड़ा के राजा सुरतान के विरुद्ध युद्ध करने के लिये भेजा। मुकुन्ददास ने बिना किसी प्रकार के भय के शाहजादे की आज्ञा का पालन किया और अपनी राठौर सेना को लेकर वह रवाना हो गया।

देवड़ा के राजा सुरतान ने जब मुकुन्ददास की सेना के साथ आते हुये सुना तो वह पहाड़ के कठिन स्थानो पर पहुँच गया। अनुमान था कि वहाँ पर शत्रु का प्रवेश नही हो सकता। इस विश्वास पर वह निश्चिंत भाव से वहाँ रहने लगा। एक दिन रात को सुरतान अपने दुर्ग मे निर्भीकता के साथ सो रहा था। उस समय दुर्ग मे भीतर से लेकर बाहर तक सन्नाटा था। केवल एक पहरेदार वहाँ पर मौजूद था। उस समय मुकुन्ददास अपनी सेना के साथ बढ़ा और बड़ी सावधानी के साथ वह दीवार पर चढ़ गया। वहाँ पर उसने देखा कि अकेला पहरेदार वहाँ पर खड़ा है। उसने उस पर आक्रमण किया और उसके बाद दुर्ग के उस स्थान मे उसने प्रवेश किया, जहाँ पर सुरतान सो रहा था।

मुकुन्ददास ने सुरतान को उसकी पगड़ी से चारपाई के साथ बाँध लिया और उस चारपाई को उठाकर वह अपने साथ ले आया। * मुकुन्ददास ने सुरतान को अपनी सेना की सुपुर्दगी मे दे दिया। उसके बाद जब राठौर सेना वहाँ से लौटने लगी उस समय देवड़ा की सेना जाग पड़ी और उसके सैनिक को जब मालूम हुआ कि राव सुरतान को शत्रु अपने साथ ले जा रहे है तो वे सब मिल कर सुरतान के छुड़ाने की चेष्टा करने लगे। यह देखकर मुकुन्ददास ने गरजते हुये कहा '

---

* कुछ लेखको का कहना है कि सुरतान की मृत्यु बहुत पहले हो चुकी थी। नाहर खाँ के समय मे उसका प्रपौत्र देवड़ा अखयराज सिरोही का राव था। —अनुवादक

थी। विद्रोहियों की फौज के आगे बढते ही गजसिह ने अपनी शक्तिशाली सेना को आगे बढा उस पर भयानक आक्रमण किया। बडी तेजी के साथ युद्ध आरम्भ हो गया। बहुत समय होने के बाद शाहजादा खुर्रम की पराजय हुई। वह अपनी जान बचाकर भाग गया। जि भीमसिह ने युद्ध आरम्भ होने के पहले गजसिह की उदासीनता दूर करके युद्ध के लिये उत्तेि था, वह इस युद्ध मे मारा गया।

शाहजादा खुर्रम की फौज को पराजित करने के लिये आये हुये सभी राजपूत र सम्मान मिला। लेकिन उस श्रेय का वास्तव मे अधिकारी राजा गजसिह बना। उसकी स विद्रोही सेना की पराजय हुई। गजसिह इस श्रेय का भोग अधिक दिनो तक न कर सका १६६४ सन् १६३८ ईसवी मे वह गुजरात के एक युद्ध मे गया था, जिसमे वह मारा गया।

गजसिह राठौर वश का एक योग्य राजा था। राजस्थान मे उसको बहुत सम्मान अमर और यशवन्त नाम के उसके दो लडके थे। अचल नाम का एक तीसरा लडका भी किन्तु वह छोटी अवस्था मे मर गया। अमर गजसिह का बडा लड़का था। इसलिये रा उत्तराधिकारी था और पिता के सिहासन पर बैठने का वही अधिकारी था। परन्तु गजसि अमर को इस अधिकार से वञ्चित कर दिया और इस सम्बन्ध मे वह जो निर्णय कर गया अनुसार उसका दूसरा पुत्र यशवन्तसिह सिहासन पर बिठाया गया।

गजसिह का पहला पुत्र अमरसिह था। भाइयो मे सबसे बडा होने के कारण वही का उत्तराधिकारी था। परन्तु राजा गजसिह ने उसको इस अधिकार से क्यो वञ्चित इसका कोई स्पष्ट उल्लेख नही पाया जाता। सम्वत् १६६० सन् १६३४ ईसवी मे गजसिह वाड के सिहासन पर बैठकर अपने मन्त्रियो के सामने घोषित किया था : "अमरसिह उत्त से वञ्चित किया जाता है। वह कभी मारवाड के इस सिहासन पर बैठ न सकेगा। मेरा कारी दूसरा बेटा यशवन्तसिह है। राज्य से निकल जाने का उसे आदेश दिया जाता है।"

इस आदेश के साथ-साथ अमरसिह के राज्य से निकाले जाने की तैयारी होने लगी वस्त्र और आभूषण उसे दे दिये गये। उसके पहनने के सभी कपडे काले रङ्ग के थे। काला काला अङ्गरखा, काले रङ्ग की टोपी और काले ही रङ्ग की ढाल और तलवार भी उसको अमर जब इन सब कपडो को पहन कर तैयार हुआ तो काले रङ्ग का एक घोडा उसको दि उस पर बैठकर वह राज्य से निकल जाने के लिये रवाना हुआ।

अमरसिह ने अकेले अपने पिता का राज्य नही छोडा। उसके वंश के बहुत-से लोग लोग, जो राज्य का उत्तराधिकारी समझकर उसका सम्मान करते थे, अपनी इच्छाओ से के साथ राज्य छोडना स्वीकार किया और वे सबके सब अमरसिह के साथ रवाना हुए। सबके साथ मारवाड से निकलकर मुगल बादशाह के यहाँ पहुँचा। बादशाह को यह घटना ही मालूम थी। राज्य से उसका निकाला जाना बादशाह ने भी स्वीकार किया। फिर अमरसिह को अपने यहाँ आश्रय दिया और मुगल सेना मे उसको एक अधिकारी के पद कर दिया। अमरसिह पराक्रमी और युद्ध मे कुशल था। इसलिये थोडे ही दिनो मे बादशाह ऐसे अवसर आये, जिनसे उसको अमर की योग्यता का परिचय मिला। उसने प्रसन्न हो

× कुछ लेखको ने गजसिह की इस मृत्यु का विरोध किया है। उसका कहना है f आगरा मे जेठ सुदी १३ सम्वत् १६६४ मे बीमार होकर मरा था।

सैंतीसवाँ परिच्छेद

जसवत सिह् की गर्भवती विधवा रानी—अजित का जन्म—औरगजेब की राक्षसी चेष्टा—मारवाड के सामन्तो और सरदारो के द्वारा अजित की सहायता—राठौरो और मुगलो मे संघर्ष—सामन्तो की दूरदर्शिता—सामन्तो की तैयारी—अजित की रक्षा—अजित का एकान्त जीवन—जोधपुर मे मुगल सेना का आक्रमण—युद्ध के लिए राणा राजसिह् की तैयारी—मुगलो के लगातार आक्रमण—नाडोल का सग्राम—शाति के लिए चेष्टा—अकबर और दुर्गादास मे मेल—औरगजेब का षडयत्र—मेवाड और मारवाड का विनाश—मुगलो पर आक्रमण।

पृथ्वीसिह् की मृत्यु के समय जसवन्त सिह् काबुल मे था। उसके शोक मे जसवन्त सिह् ने परलोक की यात्रा की। उनके मरने ही उनकी रानी, जो उनके साथ थी, सती होने के लिए तैयार होने लगी। उसने चिता बनवाने का आदेश दिया। लेकिन वह गर्भवती थी। सात महीने का शिशु उसके पेट मे था। इसलिए उसका सती होना सरदार लोगो ने उचित नही समझा। उन्होने बडी सावधानी के साथ रानी से प्रार्थना की और उसे समझाया कि इस दशा मे आपको सती न होना चाहिए। उससे जो पुत्र पैदा हुए थे, उनकी अकाल मृत्यु हो गयी थी। अब जसवन्त सिह् के कोई बालक न था। इसलिए साथ के सरदारो ने मिलकर गर्भवती रानी को सती होने से रोका। इस दशा मे जसवन्त सिह् की रानी सती न हो सकी। जसवन्त सिह् के साथ काबुल मे जो उप पत्नियाँ थी, वे सती हो गयी। उसकी दूसरी रानी मन्दोर नगर मे रहती थी। उसको जब जसवन्त सिह की मृत्यु का समाचार मिला तो उसने सती होने की तैयारी की और अपने पति की पगडी साथ मे लेकर चिता मे बैठी और सती हो गयी।

जसवन्त सिह् के मरने के बाद सम्पूर्ण राजस्थान मे शोक मनाया गया। मारवाड के स्त्री-पुरुष बहुत दिनो तक दुखी रहे। जसवन्त सिह् ने मारवाड के गौरव की रक्षा की थी। अब वह गौरव राज्य के सभी लोगो को अरक्षित दिखायी देने लगा। मन्दिरो मे घण्टो का बजना बन्द हो गया प्रात काल और सायकाल राज्य मे शख बजा करते थे, अब उनकी आवाज कही सुनायी न पडती थी। मारवाड की परिस्थितियाँ जसवन्त सिंह के मरते ही एक साथ भयानक हो उठी। राज्य के सभी लोग अत्यन्त भयभीत हो उठे। अब उनको कोई ऐसा दिखायी न पडता था। जिसके द्वारा मारवाड की रक्षा हो सकती। जो ब्राह्मण जसवन्त सिह् के शासन काल मे निर्भीक होकर अपने धर्म का प्रचार करते थे, उनका सुझाव अब इस्लाम की तरफ दिखायी पडने लगा। इस प्रकार के अनेक परिवर्तन जसवन्त सिंह् के मरने के बाद एक साथ सामने आये।

जसवन्त सिह् की विधवा रानी अभी तक काबुल मे थी। उसके साथ बहुत से राठौर सैनिक और शूरवीर सरदार थे। समय पर उससे एक पुत्र पैदा हुआ। अजित उसका नाम रखा गया। कुछ समय के बाद जब रानी वहाँ से आने के योग्य हो सकी तो राठौर सरदार अपने साथ के सब लोगो को लेकर काबुल से मारवाड की तरफ रवाना हुए। उन सब के दिल्ली मे पहुँचते ही औरगजेब ने राठौर सरदारो को आगे न जाने दिया और उसने उनको दिल्ली मे ही रोक लिया। उसने शिशु अजित को सरदारो से लेने का प्रयत्न किया।

बादशाह भयभीत होकर सिंहासन छोड़कर भागा और महल के भीतर चला गया। अम
आक्रमण से बादशाह का दरबार भयानक हो उठा। अमर उस समय एक उन्मादी की त
सामने मौजूद था और वह अपने कर्त्तव्य का ज्ञान भूल गया था। उस समय जो उसके सा
उसी का उसने संहार किया। थोडे से समय के भीतर उसके हाथ से पाँच मुगल सेनापति
बादशाह का दरबार रक्तमय हो उठा। इस भयानक दृश्य को देखकर उसके साले अ
उसको रोकने की चेष्टा की। लेकिन कोई परिणाम न निकलने पर उसने सम्हल कर
आक्रमण किया और अपनी तलवार से उसको घायल करके पृथ्वी पर गिरा दिया।

अमर की मृत्यु हो गयी। यह देखकर अमर के सरदार उत्तेजित हो उठे और अर्जु
अमर का बदला लेने के लिये वे तैयार हो गये। उसके बाद उन लोगो ने लड़ने की
चम्पावत बल्लू और कुम्पावत भाऊ नाम के दो शूरवीर राजपूत उस सेना के सेनापति हुये,
से युद्ध करने के लिये अमर के सरदारो के द्वारा तैयार की गयी थी। वे राजपूत बडी तेज
लाल किले मे पहुँच गये।

इन राजपूतो की सख्या बहुत थोड़ी थी। परन्तु दरबार मे अमर का मारा जाना
कर सके और उसका बदला लेने के लिये वे तैयार हो गये। राजपूतो के इस आक्रमण को
लिये मुगलो की सेना आ गयी और उसने इन राजपूतो पर आक्रमण किया। दोनो तर
आरम्भ हुआ। राजपूतो ने कुछ समय तक भयानक मारकाट की। मुगल सेना बहुत बड़ी
लिये राजपूत सरदार और उनके सैनिक मारे गये। अमर का विवाह बूँदी की राजकुमार
हुआ था। अमर के मारे जाने पर उसकी रानी चिता बनाकर उस पर बैठी और अपने प
को लेकर प्रज्वलित चिता की आग मे भस्मीभूत हो गयी।

अमरसिंह के मारे जाने पर उसके सैनिको और सरदारो ने मुगलो के साथ युद्ध
अपने प्राणो को उत्सर्ग किया। अपने सम्मान और स्वाभिमान के लिये जो राजपूत बलिद
आज संसार मे नही हैं। परन्तु उनके बलिदानो की कथाएँ आज भी जीवित हैं और
मिटाया नही जा सकता। अमरसिंह के सरदारो और सैनिको ने जिसे बुरवारा नामक
लाल किले के भीतर प्रवेश किया था, वह ईंटो से बन्द करा दिया गया और उसी दिन से
द्वार 'अमरसिंह का फाटक' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह फाटक बहुत समय तक बन्द
१८०६ मे जब जार्ज स्टील नामक अङ्गरेज यहाँ पर आया तो उसके आदेश से वह फा
गया।

अमरसिंह के उत्तराधिकारी होने पर भी उसके पिता गजसिंह ने उसको रा॰
वञ्चित कर दिया था। इसके कारणो का कोई उल्लेख न मिलने पर भी जो घटनाये बाद
होती हैं, उनसे साफ जाहिर हो जाता है कि अमर अनुत्तरदायी, अव्यावहारिक और
उसके इन्ही अपराधो के कारण उसके पिता राजा गजसिंह ने उसको राज्य मे रहने नही
समय उसे बादशाह ने अपने यहाँ शरण दी थी। परन्तु उसके उद्दण्ड स्वाभाव के कारण
भी वह सकुशल रह न सका। उसने स्वय अपना नाश किया और उसके साथ जिनका स
उन सबके संहार का वह कारण बना। ×

× इन घटनाओ से उस समय की बहुत-सी बातो का मनुष्य को ज्ञान होता है।
का यह इतिहास लिखा जा रहा है। अमरसिंह को अपराधी जानते हुये भी शाहजहाँ ने उ

इसलिए उन सामन्तो ने साथ की स्त्रियो के अत करने का निर्णय किया। क्योंकि इसके सिवा उनके धर्म की रक्षा का दूसरा कोई उपाय न था। घर के भीतर एक बड़े कोठे में बहुत सी बारूद फूस और लकडी एकत्रित की। राजपूत स्त्रियो ने अपने देवता का नाम लेकर उस कोठे मे प्रवेश किया। उसके बाद कोठे का दरवाजा बद कर दिया गया और एक सूराख मे बारूद मे आग लगा दी गयी। कोठे के भीतर एकत्रित बहुत-सी बरुद का ढेर एक साथ जल उठा और थोडी देर मे वे समस्त स्त्रियाँ राख के ढेर मे परिणित हो गयी।

राठौर सामन्तो का पहला कार्य था किसी प्रकार शिशु अजित की रक्षा करना और दूसरा कार्य था अपनी स्त्रियो और लडकियो के धर्म को सुरक्षित रखना। इन दोनो कार्यों के सम्बन्ध मे जो कुछ सम्भव हो सकता था, मुगलो की राजधानी दिल्ली मे उन्होंने किया। अजित की जान बचाने मे उनको सफलता मिली। स्त्रियो के धर्म की रक्षा करने के लिए उनको, उनके प्राणो का अत करना पडा। अब वे मुगल सेना के साथ युद्ध करने के लिये तैयार हो गये। अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर राठौरो ने मुगल सेना का सामना किया। बात की बात मे घमासान युद्ध जारी हो गया। उस मारकाट मे दूहड के वशजो ने भयानक रूप से मुगल सैनिको का सहार किया। ×

नौ हजार मुगल सैनिको ने थोडे से राठौरो के साथ युद्ध आरम्भ किया था उस लड़ाई मे राठोरो को स्वय सफलता की आशा न थी। लेकिन युद्ध के सिवा उनके सामने और दूसरा कोई उपाय न था। उन मुगल सैनिको मे भीषण मारकाट करते हुए रत्नसिंह मारा गया उसके बाद कई एक राठौर धराशायी हुए। चद्रभान ने अपने प्राणो की बलि दी। राठौरो के साथ जो शूरवीर योद्धा थे, वे एक-एक करके मारे जाने लगे। कवि चन्द बडे साहस के साथ अपने दोनो हाथो मे तलवारे लिये शत्रुओ के साथ युद्ध कर रहा था। थोडी ही देर मे वह भी मारा गया।

मुगल सेना के साथ थोडे से राठौरो का यह युद्ध श्रावण कृष्णपक्ष सम्वत् १७३६ सन् १६८० ईसवी मे हुआ। भट्ट ग्रथो मे इस युद्ध का वर्णन भली प्रकार किया गया है। शूर वीर राठोरो ने अपने प्राण देकर शिशु अजित की रक्षा की। राठौर सामन्त ने ही बुद्धिमानी से काम लिया था। दिल्ली मे पहुँच जाने के बाद अजित के प्राणो को बचाने के लिये उनके पास कोई उपाय न था। इसलिये उन्होंने मिष्ठान बँटवाने का प्रबन्ध किया और मिठाइयो से भरे हुये जो बडे-बडे टोकरे वहाँ से भेजे गये, उनमे एक टोकरे के भीतर राठौर सामन्तो ने अजित को छिपा दिया। यह टोकरा— जिसमे अजित छिपाया गया था - एक मुसलमान को सौपा गया। वह पहले से राठौरो का विश्वासी था। वह टोकरा एक मुसलमान के द्वारा रवाना किया गया। इसलिये उस पर किसी शाही कर्मचारी को सदेह न हो सकता था। राठौरो की यह दूरदर्शिता थी। लोग पहले से उस मुसलमान का विश्वास करते थे। उस टोकरे को ले जाने वाला मुसलमान जानता था कि इस टोकरे मे राजा जसवत सिह का शिशु छिपाया गया है। राठौरो ने उससे यह बात छिपाकर नही रखी थी। इसमे कोई सन्देह नही कि उस मुसलमान ने अजित के प्राणो की रक्षा करने मे सहायता की।

वह मुसलमान एक निश्चित स्थान पर टोकरा लेकर पहुँच गया और उसके कुछ समय के बाद दुर्गादास युद्ध मे बचे हुए सरदारो को साथ मे लेकर वहाँ पहुँचा। उसके शरीर मे सैकडो जख्म थे जिनसे बराबर रक्त निकल रहा था। दुर्गादास ने उन जख्मो की परवा न की। वह किसी

× मारवाड़ मे दूहड नाम का एक राजा हुआ था। राव उसकी उपाधि थी।

विद्रोह उतने ही भयानक होते जाते थे। लडको के इन झगडों को सुनकर बादशाह को हुआ। वह रोग की जिस दशा मे पड़ा हुआ था, उसमे वह कुछ कर सकने के योग्य न अयोग्यता और असमर्थता मे उसने चारो तरफ देखा। राजपूत राजाओ के सिवा उसे दिखायी न पडा।

बुढापे की असमर्थता के पहले बादशाह शाहजहाँ अपने लडको पर बडा गर्व क परन्तु बुढापे का आक्रमण होते ही उसका वह गर्व एक साथ अदृश्य हो गया और इस सां मे बीमार पडते ही उसके लडको ने विद्रोह का जो दृश्य उपस्थित किया, उससे बादशाह क सीमा पार कर गयी। इस असमर्थता के समय सहायता प्राप्त करने के लिये बादशाह ने की तरफ देखा। उसने राजपूत राजाओ को बुलाया और उनके सामने उसने अपनी वर्तमा तियाँ रखी। राजपूत राजाओ ने सभी प्रकार उसको आश्वासन दिया और किसी भी स सहायता करने के लिये राजाओ ने बादशाह को वचन दिया, जिनको सुनकर बादशाह को मिली।

बादशाह के लडको मे औरङ्गजेब ने खुल कर विद्रोह किया और उसने वृद्ध श सिंहासन से उतार कर उस पर बैठने का निश्चय कर लिया। इस समाचार को जानकर राजपूत राजाओ के पास सन्देश भेजा। उस सन्देश को पाते ही आमेर का राजा जयसिंह वाड का राजा जसवन्तसिह—दोनो ही बादशाह की सहायता के लिये रवाना हुये। औ साथ साथ उसका भाई शुजा भी विद्रोही हो चुका था और वह औरङ्गजेब का साथी बन विद्रोही सेना की तैयारी कर चुका था। इस प्रकार की खबरे बादशाह को मालूम हो चुकी लिये बादशाह ने दोनो विद्रोहियो के दमन का प्रयत्न किया और उसकी इच्छा के अनुसार र सिह शुजा के विरुद्ध और जसवन्तसिह औरङ्गजेब के विरुद्ध युद्ध करने के लिये रवाना हुआ।

जसवन्तसिंह के साथ तीस हजार राजपूतो की एक सेना थी। उसके सिवा उसने अ कार मे मुगलो की एक सेना भी और वह आगरा से रवाना हुआ। जसवन्तसिह के साथ एक विशाल सेना हो गयी थी। वह तेजी के साथ नर्मदा की तरफ चला। जिस समय वह करीब पहुँच गया उसे समाचार मिला कि औरङ्गजेब अपनी फौज के साथ युद्ध करने के लिये है और वह अब अधिक दूर नही है। यह सुनकर जसवन्तसिह की सेना ने वही रुककर मुका औरङ्गजेब की फौज ने नर्मदा के किनारे पहुँच कर नदी को पार किया और जहाँ पर वह गयी थी, जसवन्तसिंह का शिविर उस स्थान से बहुत दूर न था।

औरङ्गजेब की फौज के आ जाने का समाचार जसवन्तसिह को मिला। वह और तरफ से युद्ध के आरम्भ होने की प्रतीक्षा करने लगा। औरङ्गजेब युद्ध करने मे जितना ब उससे बहुत अधिक वह राजनीतिज्ञ और षडयन्त्रकारी था। उसने युद्ध आरम्भ नही f

---

❀ शाहजहाँ की बीमारी के दिनो मे शुजा बङ्गाल का सूबेदार था। वहो पर उसने बीमारी का समाचार सुना और यह भी सुना कि उसके बचने की आशा नही है। इसलिये पर बैठने का अधिकार प्राप्त करने के लिये जब वह बङ्गाल से आ रहा था, बनारस के पास पुत्र सुलेमान शिकोह ने उसके साथ युद्ध किया और उसको परास्त किया। उस लडाई मे र सिह ने सुलेमान शिकोह की सफलता की थी। औरङ्गजेब उन दिनो मे दक्षिण का सूबेदार आरम्भ से ही भयानक कपटी था।

के लिए तैयार किया था परन्तु उसको सफलता न मिली। राठौर सरदारों ने अजित का पक्ष लेकर उसके साथ युद्ध किया। उस युद्ध मे रत्नसिंह की पराजय हुई। वह युद्ध से भाग कर नागोर के दुर्ग मे पहुँच गया। उसके बाद राठौर सरदारो ने ईंदा वंशजो पर आक्रमण किया और उन्हे मन्दोर से निकाल दिया।

औरंगजेब ने रत्नसिंह को राठौरो से लड़ाने की चेष्टा की थी। परन्तु जब उसको सफलता न मिली तो उसने स्वयं राठौर सरदारो पर आक्रमण करने की तैयारी की और एक विशाल सेना लेकर वह मारवाड की तरफ रवाना हुआ। मुगल सेना ने जोधपुर पहुँच कर उस नगर को घेर लिया। मुगलो की सेना इतनी बडी थी कि मारवाड के राठौर उसके आक्रमण को रोक न सके। औरंगजेब ने जोधपुर को अपने अधिकार मे ले लिया। उसके बाद मुगल सेना ने वहाँ पर लूट मार और भयानक अत्याचार किये। वहाँ की सम्पत्ति को लूट कर मुगल सेना ने मेडता, डिडवाना और रोहत नगरो पर आक्रमण किया, लूट मार की और निर्दयता के साथ वहाँ की सम्पत्ति लूटी।

औरंगजेब की मुगल सेना ने एक-एक करके मारवाड के सभी नगरो पर अधिकार किया। वहाँ के गावो, कस्बो और नगरो को लूटकर उनमे आग लगा दी। वहाँ के मंदिर और स्तम्भ गिरा दिये गये। देवताओ की मूर्तियाँ तोड डाली गयी और अगणित हिन्दुओ को मुसलमान बनाने का कार्य किया गया। मंदिरो के स्थानो पर मसजिदे बनवाई गयी। उसके बाद औरंगजेब अपनी फौज के साथ राजधानी लौट गया। मेवाड का राणा राजसिंह मारवाड मे किये गये मुगलो के अत्याचारो को सहन न कर सका। उसने राठौरो को मिला कर मुगलो से युद्ध करने की तैयारी की। उसके साथ संग्राम करने के लिए औरंगजेब ने सत्तर हजार फौज के साथ तहव्वर खाँ को भेजा और उसको रवाना करने के पश्चात् वह स्वयं मुगलो की एक बडी फौज लेकर अजमेर की तरफ चला। उसके साथ युद्ध करने के लिए मेडता के सामन्तो ने तैयारी की और अपने सैनिको को लेकर वे पुष्कर के सामने पहुँच गये। वहाँ पर वाराह का एक प्रसिद्ध मंदिर था। उस मंदिर के सामने मेडता की सेना ने मुगलो के साथ युद्ध आरम्भ किया। उनको देखते हुए मुगलो की सेना बहुत अधिक थी। यह युद्ध सम्वत् १७३६ के भादो महीने मे हुआ। उसमे मेडता के सैनिक और सरदार मारे गये।

मेडता के युद्ध मे विजयी होकर तहव्वर खाँ अपनी फौज के साथ आगे बढा। पुरवर के निवासी घबरा कर पहाडो की तरफ भागने लगे। तहव्वर खाँ की फौज का सामना करने के लिए रूपा और कूँपा नाम के दोनो भाइयो ने सेना की तैयारी की और वे दोनो बडी तेजी के साथ गुडा नाम के स्थान पर पहुँच गये। मुगल सेनापति के साथ बहुत बडी फौज थी इसलिए अपने सैनिको के साथ दोनो भाई मारे गये।

औरङ्गजेब इन दिनो मे राजपूतो के सर्वनाश मे लगा हुआ था। उसकी शक्तियाँ विशाल थी। इसलिये वह भयानक अत्याचार करने मे भी किसी प्रकार का सोच विचार न करता। अजय दुर्ग मे पाँच दिन तक रह कर उसने चित्तोर का रास्ता पकडा और वहाँ पहुँचते ही उसने रोमाञ्चकारी अत्याचार आरम्भ कर दिये। राणा ने शिशु राजकुमार की रक्षा की और राठौरो के युद्ध मे सीसोदिया सेना आगे रही थी।

औरङ्गजेब के साथ बहुत बडी फौज देखकर चित्तौर के लोगो ने शिशु अजित को बचाने की कोशिश की। उसे एक गुप्त स्थान मे छिपा कर रखा। औरङ्गजेब अपनी फौज के साथ देवाडी के निकट आ गया। उसका सामना करने के लिए कुम्भा, उग्रसेन और ऊदा आदि कई एक राठौर शूर वीर अपनी सेना के साथ पहाडी मार्ग पर पहुँच गये। राठौरो ने मुगलो को रोकने की कोशिश की। औरंगजेब ने उस पहाडी रास्ते से होकर जब उदयपुर मे आक्रमण किया, तो उस समय

राजपूतो ने युद्ध-क्षेत्र मे अपने प्राण दे दिये। इनके साथ-साथ गहिलोत; हाड़ा, गौड़ अ
सामन्त के वहुत-से शूरवीर सैनिक मारे गये। *

युद्ध की परिस्थिति बडी भयानक थी। जसवत सिह और उसका महबूब रक्त से नहा
था। अत मे दोनो ओर की सेनाये हट गयी और युद्ध रुक गया। उस समय रक्त से डूबा
वंत सिंह भूखे शेर की तरह दिखायी पड रहा था। इस युद्ध के सम्बन्ध मे भट्ट ग्रथों मे
को मिलता है, भारत यात्रा करने वाले बर्नियर और मुस्लिम इतिहासकारो ने उसी प्रकार
किया है। उन्होने लिखा है "यद्यपि औरङ्गजेब ने फ्रासीसी गोलन्दाजो, तोपों और बहुत से
के साथ एक विशाल सेना लेकर राजपूतो से युद्ध किया था, फिर भी जसवत सिंह ने उसक
जित किया होता, यदि जसवत सिंह ने औरङ्गजेब की सेना के आने पर असावधानी से काम
होता। जसवंत सिंह अपनी अदूरदर्शिता के कारण विजय से वचित हुआ। †

फतेहाबाद के इस युद्ध मे राजपूतो ने बादशाह शाहजहाँ के प्रति अपनी राजभक्ति
परिचय दिया। इसमे राजस्थान के अनेक राजवश बिलकुल नष्ट हो गये। उनमे छै बूंदी
कुमार थे। इन राजकुमारो मे छत्रसाल ने बडी बहादुरी के साथ युद्ध किया था। उसके
शौर्य का वर्णन बूंदी के इतिहास मे भली प्रकार किया गया है। खाफीखाँ और बर्नियर
इतिहासकार इन बातो को स्वीकार करते है। भट्ट कवियो ने मेवाड और शिवपुर के
और गौड़ राजपूतो का ही उल्लेख किया है। ये लोग उस युद्ध मे प्रमुख थे। लेकिन वृद्ध
बादशाह के सम्मान की रक्षा के लिए राजस्थानी अनेक वशो के शूरवीर योद्धा जो इस युद्ध
थे, उनमे से अधिकाश मारे गये।

फतेहाबाद के इस युद्ध मे जिन राजपूतो ने अपनी वीरता का प्रदर्शन किया, उनमे
का रतनसिह विशेष स्थान रखता है। सभी इतिहासकारो ने उसकी प्रशंसा की है।
नामक ग्रथ मे उसकी वीरता का वर्णन विस्तार के साथ किया गया है। रतनसिंह ने राठ
मे जन्म लिया था और वह राठौर उदयसिह का प्रपौत्र था। उसने इस युद्ध मे भयानक
शत्रुओ का सहार किया।

इस युद्ध से लौटकर अपनी बची हुई सेना के साथ जसवतसिह अपनी राजधानी
उसकी रानी को जब मालूम हुआ कि वह पराजित होकर और युद्ध से भागकर आया है त
अपना फाटक बन्द करवा लिया और जसवतसिह को भीतर आने नही दिया। वह युद्ध में
होकर भागने की अपेक्षा वहाँ पर युद्ध करते हुए मर जाना श्रेष्ठ समझती थी। इसका वि
वर्णन दूसरे स्थान पर किया गया है।

शाहजहाँ बादशाह ने जिस उद्देश्य से राजपूत राजाओ की सहायता ली थी, उसमें
सफलता न मिली। उसके विरुद्ध उसके लडको के विद्रोह अब और भी भयानक हो उठे।
इस विपद मे राजपूतो के सिवा और कोई साथी न था। जिन राजपूतो ने बादशाह की
करने का वचन दिया था और जिन्होने फतेहाबाद के युद्ध मे औरङ्गजेब की विशाल सेना

* कोटा के इतिहास से प्रकट होता है कि राजा कोटा और उसके पाँचो भाई
मारे गये।

† बर्नियर और खाफी खाँ--दोनो ही इस बात को स्वीकार करते हैं कि जस
साथ जो मुगल सेना आयी थी, उसके सेनापति कासिमखा के औरङ्गजेब से मिल जाने के
जसवन्त सिंह की पराजय हुई।

से बातें की और इस बात को स्वीकार किया कि इस सर्वनाश का कारण हम लोगों के सिवा कोई दूसरा नहीं हो सकता। शाहजादा अकबर की बात तहव्वर खाँ की समझ में आ गयी। उसने उसकी बातों का समर्थन किया। सेनापति के साथ परामर्श करके शाहजादा अकबर ने अपना दूत दुर्गादास के पास भेजकर कहा : "राज्य में शान्ति कायम होने के लिये यह जरूरी है कि आपके साथ मेरी मुलाकात हो और इस सिलसिले में बातचीत हो।"

शाहजादा अकबर के द्वारा यह संदेश पाकर दुर्गादास ने राठौर सरदारों को बुलाया और शाहजादा अकबर का संदेश सुनाकर उसने उनके साथ परामर्श किया। सभी लोगों ने विरुद्ध सम्मतियाँ प्रकट कीं। किसी ने कहा यवनों का विश्वास करना किसी प्रकार ठीक नहीं है। उनकी विश्वासघातकता से राजपूतों का सर्वदा नाश हुआ है। किसी ने कहा शाहजादा अकबर का संदेश किसी रहस्य से खाली नहीं है।'

दुर्गादास ने सब को समझाते हुए कहा 'आपकी सम्मतियाँ बिल्कुल ठीक हैं। हमें शत्रु का विश्वास न करना चाहिये। लेकिन यदि सच्चाई के साथ यह संदेश आपके पास भेजा गया है तो उससे आपको भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है विश्वास करके हमको उतना निर्बल नहीं बन जाना चाहिये कि शत्रु हमारा विनाश कर सके। इस लिये यदि आप लोग मंजूर करें तो मेरा कहना यह है कि हम सब लोग सन्देश भेजकर अकबर के शिविर में चलें और उसके साथ परामर्श करें लेकिन इतना सतर्क और सावधान रहें कि शत्रु हमको क्षति न पहुँचा सके।"

सरदारों ने दुर्गादास की बातों को स्वीकार कर लिया। उसके बाद शाहजादा अकबर से भेंट हुई। किसी प्रकार का विवाद नहीं पैदा हुआ और संधि के रूप में सारी बातें तय हो गयीं। जो कुछ निर्णय हुआ, उससे दोनों तरफ के लोगों को सुख और सन्तोष मिला।

अकबर ने राठौरों के साथ संधि करके अपने नाम का सिक्का चलाया। मारवाड़ और मुगल राज्य की सीमायें निर्धारित हो गयीं। राठौरों ने अकबर को बादशाह माना। मुगल साम्राज्य के सभी प्रधान सामन्तों ने उसकी बादशाहत को स्वीकार किया। उसके बाद इस प्रकार के कार्य आरम्भ हुए, जिसने राठौरों और मुगलों की इस मित्रता को आघात पहुँचने की सम्भावना न थी।

अजमेर में औरंगजेब को इन सब बातों का समाचार मिला। उसके हृदय को बहुत चोट पहुँची। वह एक साथ अधीर हो उठा। मिले हुए समाचारों से उसने विश्वास कर लिया कि शाहजादा अकबर दुर्गादास के साथ मिल गया है। इस विश्वास के कारण उसके हृदय में एक आग पैदा हो गयी। उसकी अशान्ति का कोई ठिकाना न रहा। दुर्गादास और शाहजादा अकबर के मिल जाने की बात चारों तरफ फैल गयी। लोग तरह-तरह की बातें आपस में करने लगे।

अगणित राजपूतों के साथ शाहजादा अकबर अपनी फौज लिए हुए अजमेर की तरफ रवाना हुआ। यह समाचार जब औरंगजेब को मिला तो वह घबरा उठा और सोचने लगा, 'क्या अब मुझे राजपूतों को छोड़कर अकबर के साथ युद्ध करना पड़ेगा ? क्या यह बात सही नहीं है कि शाहजादा अपनी और राजपूतों की विशाल सेना लेकर मुझे सिंहासन से उतारने के लिए आ रहा है ?' इस प्रकार की अनेक बातें सोच कर उसने बड़ी दूरंदेशी से काम लिया और सेनापति तहव्वर खाँ को सम्पूर्ण भार देकर वह अपनी बेगमों के बीच में चला गया। वह सोचने लगा, "भाग्य के आधीन है। मनुष्य भाग्य का खिलौना होता है। भाग्य हम सब को डोरे में बाँधकर नचाता है और हमको नाचना पड़ता है।"

इसलिये जसवन्त सिह ने उसकी सहायता के लिए जो योजना बनायी थी, वह निष्फल हो

दारा उन दिनो मे मारवाड के दक्षिण मे घूम रहा था। उसको इस समय अपने क
ज्ञान न था। औरङ्गजेब से बहुत भयभीत हो चुका था। उसकी अपनी शक्ति कोई काम
रही थी। इन्ही दिनो मे उसने सुना कि औरङ्गजेव से लडते हुये शुजा की पराजय हो
इस अवस्था मे औरङ्गजेब से मेल कर लेने के बजाय और कोई रास्ता उसके सामने न था।
विवश होकर दारा ने मेडता पहुँचकर औरङ्गजेब के साथ मेल कर लिया।

आगरा पहुँचकर जसवत सिह वहाँ रुका नही। लूट का माल जितना उसके साथ था,
सब उसने जोधा के दुर्ग मे बन्द करवा दिया। शुजा पर विजय प्राप्त करने के बाद कितने ह
पूत राजा औरङ्गजेब के साथ हो गये। औरङ्गजेब आज का नही बहुत पहले का अर
राजनीतिज्ञ और षडयत्रकारी था। वह तलवार की शक्ति की अपेक्षा षडयत्रो की शक्ति पर
विश्वास करता था। शुजा पर विजयी होने के बाद उसने एक पत्र जसवतसिह के पास भेजा,
उसने जसवतसिह को न केवल पूर्ण रूप से क्षमा कर देने का जिक्र किया, बल्कि उसको उस
रात का अधिकारी बना दिया। लेकिन इस शर्त पर कि वह किसी प्रकार दारा को सहायता
और हम लोगो के आपसी झगडे मे तटस्थ ही रहे।

औरङ्गजेब ने अपने पत्र मे जो शर्ते लिखी थी, जसवतसिह ने स्वीकार कर लिया
दिनो मे शिवाजी के साथ दक्षिण मे मुगलो का युद्ध चल रहा था। औरङ्गजेब ने जसवत
वहाँ भेज दिया। दक्षिण मे पहुँचकर जसवत सिह ने वहाँ की परिस्थितियो का अध्ययन
अन्तरात्मा से वह औरङ्गजेब का पक्षपाती न था। शाहजहाँ की सहायता करने के लिये
औरङ्गजेब के साथ युद्ध किया था परन्तु मुगल सेना के विश्वासघात करने से उसकी
थी और उसके बाद जो विरोधी परिस्थितियाँ सामने आयी, उनसे विवश होकर उसे
की सभी बाते स्वीकार करनी पडी।

जसवतसिह शाहजहाँ के साथ-साथ दारा का पक्षपाती था। परन्तु अपनी अय
कारण दारा स्वय अपनी रक्षा न कर सकता था। उसकी यह अवस्था जसवत सिह के f
भयानक थी। परन्तु इस समय उसके सामने कोई प्रतिकार न था। वह दक्षिण मे
था और बडी सावधानी के साथ वहाँ पर वह अपनी योजनाओ पर विचार कर रहा था
शिवाजी के साथ पत्र-व्यवहार करना आरम्भ किया और उन पत्रो के द्वारा उसने अपना
कार्यक्रम आरम्भ किया।

इसके थोडे ही दिनो बाद औरङ्गजेब का प्रसिद्ध सेनापति शाइस्ताखाँ शिवाजी के
युद्ध करते हुआ मारा गया। उसके मरते ही जसवत सिह ने उसके स्थान की पूर्ति की और
सेना का सेनापति होकर उसने शिवाजी के साथ युद्ध आरम्भ किया। सेनापति शाइस्ताखाँ के
का समाचार औरङ्गजेव के पास पहुँचा। इस समाचार के साथ-साथ अपने दूत के द्वारा
ने यह भी सुना कि सेनापति के मारे जाने मे जसवतसिह का षडयत्र है। इसको सुनते ही
जेब के हृदय मे आग लग गयी। परन्तु उसने उस समय शान्ति से काम लिया और उसने
सिह के पास अपनी इस प्रसन्नता का समाचार भेजा कि उसने सेनापति शाइस्ताखाँ के मारे
उसके स्थान की पूर्ति की है और मुगलो की फौज मे किसी प्रकार की कोई निर्वलता नही आने

जसवंत सिह के विरुद्ध औरङ्गजेब के हृदय मे जो आग पैदा हुई, उसको वह अधिक
तक छिपा न सका। चुपके-चुपके प्रबन्ध करता रहा और जब वह अपनी व्यवस्था कर
उसने अम्बेर के राजा जयसिंह को अधिकारी बनाकर जसवंतसिह के स्थान पर दक्षिण भेज

अपनी फौज को पाने के बाद उसने राठौर सेना का पता लगाया। राजपूत सेना के मिल जाने पर अकबर ने राठौरो के सन्देह को दूर करने की कोशिश की।

इसके पहले तहव्वर खाँ के पत्र से राठौरो को मालूम हुआ था कि अकबर अपने पिता औरङ्गजेब के साथ मिल गया है। इसलिए अब वे अकबर का विश्वास करने मे बहुत सोच विचार कर रहे थे। चम्पावत, कुम्पावत, पातावत, लाखावत, कर्णोत, डुगरोत, मेरतिया, वरसिहोत, ऊदावत और विदावत आदि सामन्त एक स्थान पर बैठकर परामर्श करने लगे कि अकबर के साथ हमे अब क्या करना चाहिये। उस परामर्श के अन्त मे सभी लोगो ने मिलकर निश्चय किया कि अकबर के मिल जाने के सम्बन्ध मे जो पत्र मिला है, वह रहस्यपूर्ण मालूम होता है। क्योंकि उसके बाद ही तुरन्त सेनापति तहव्वर खाँ बादशाह औरङ्गजेब के आदेश से तुरन्त मारा जाता है। इससे साफ जाहिर है कि अकबर के इधर मिल जाने से औरङ्गजेब का षड्यन्त्र चल रहा है। इस दशा मे अभी तक अकबर का कोई अपराध नही है। जब तक वह हम लोगो से अलग नही हो जाता, हमे भी उसे छोड नही देना चाहिये।

अकबर और उसके साथ के सैनिक सेना के साथ मिलकर फिर एक हो गये। चम्पावत सरदार के छोटे भाई जैत को अकबर के परिवार की रक्षा का भार सौपा गया। दुर्गादास ने बडी सावधानी और गम्भीरता के साथ, भविष्य के उत्तरदायित्व को अपने ऊपर लिया। इन दिनो मे जिस प्रकार दुर्गादास साहस, धैर्य और शौर्य से काम ले रहा था, उसकी प्रशसा भट्ट ग्रन्थो ने बहुत अधिक की गयी है। उसी की शक्तियो के द्वारा इन दिनो मे मारवाड विध्वस होने से बच सका था। उसी ने अपने प्राणो की बाजी लगा कर शिशु अजित की रक्षा की थी। उसने महान शक्तिशाली सम्राट औरङ्गजेब की परवा न की।

अन्य सभी शत्रुओ की अपेक्षा दुर्गादास के द्वारा औरङ्गजेब की परेशानियाँ अधिक बढ गयी थी। इन दिनो मे बादशाह के दो शत्रु शिवाजी और दुर्गादास अधिक विद्रोही हो रहे थे। औरङ्गजेब ने एक चित्रकार को बुलाकर उन दोनो के चित्र लाने का आदेश दिया। कुछ समय मे चित्रकार ने दोनो चित्र लाकर बादशाह औरङ्गजेब के सामने रखे। शिवाजी का चित्र एक आसन पर बैठा हुआ था और दुर्गादास अपने भाले की नोक मे रोटी पिरोकर उसे आग पर सेक रहा था। औरङ्गजब ने दोनो चित्रो को देखकर कहा . 'मै शिवाजी को तो किसी प्रकार जाल मे फँसा सकता हूँ परन्तु यह कुत्ता मेरी जिन्दगी के लिये जहर से भी ज्यादा खतरनाक हो गया है।"

दुर्गादास और शाहजादा अकबर मिलकर अब फिर एक हो गये थे। औरङ्गजेब पर आक्रमण करने के लिये दुर्गादास तैयारी करने लगा। इन्ही दिनो मे बादशाह औरङ्गजेब ने उसके विरुद्ध एक नया जाल तैयार किया। उसने सेनापति तहव्वर खाँ को फँसा कर शाहजादा अकबर को दुर्गादास से अलग करने की जो कोशिश की थी, उसकी वह चाल असफल हो गयी थी। अब उसने दुर्गादास को फँसाने के लिये एक नयी कोशिश की। उसने आठ हजार सोने की मोहरे दुर्गादास के पास भेज दी और उसके बाद भी उसने उसको प्रलोभन दिये। परन्तु दुर्गादास पर इन प्रलोभनो का कोई प्रभाव न पडा। दुर्गादास ने आयी हुई मोहरो का जिक्र शाहजादा अकबर से किया और उनमे से बहुत सी मोहरे अकबर की जरूरतो मे खर्च की गयी। कुछ रुपया दोनो तरफ के गरीब नौकरो मे बाँटा गया।

तुम्हारे पिता जसवन्त सिंह के हाथो मे है। अच्छा यह बताओ कि तुम क्या कर सकते हो।

औरगजेब की इस बात को सुनकर पृथ्वीसिह ने राजपूतो के स्वाभाविक गौरव को करते हुए उत्तर दिया "ईश्वर आपके गौरव की रक्षा करे। जब साधारण तौर पर रा को आश्रय देता है तो प्रजा की शक्तियाँ विशाल हो जाती है। आप ने तो आज मेरे दो को पकडा है। इससे मुझे मालूम होता है कि मै अब सम्पूर्ण पृथ्वी को विजय कर सकता

यह कहकर पृथ्वीसिह चुप हो गया। इस समय उसके मनोभावो मे अद्भुत शक्ति हो रहा था। वह बार-बार अपने गम्भीर नेत्रो से बादशाह की तरफ देखता था। औरंगजेब ने कहा 'यह दूसरा कुट्टन मालूम होता है।" ×

जसवन्त सिह का बेटा पृथ्वीसिह अभी युवक था। बादशाह के बुलाने पर वह बडी के साथ दरबार मे आया था। उसे इस बात का गर्व था कि उसका पिता जसवन्त सिंह की तरफ से अफगानो के साथ काबुल मे युद्ध करने गया है। उसका अन्त करण नि लेकिन औरंगजेब ने अपनी जिस कुत्सित भावना से प्रेरित होकर उसके साथ यह बातचीत युवक हृदय पृथ्वीसिह उसको समझ न सका था। दरबार की पुरानी रीति के अनुसार बा तरफ से पृथ्वीसिह को खिलअत दी गयी। उसे लेते हुए पृथ्वीसिंह ने बादशाह को सला और उसे पहनकर वह जब राज दरबार से अपने नगर को जाने लगा तो उसने बादशाह एक बार सलाम किया।

राजकुमार पृथ्वी सिंह जैसे ही अपने नगर मे पहुँचा, उसके हृदय मे एक साथ भयान उत्पन्न हुई। उसका मस्तक चकराने लगा और थोडी ही देर मे उसका सम्पूर्ण शरीर श गया। लोगो के देखते-देखते उसके प्राणो का अन्त हो गया। मुगल दरबार मे पृथ्वीसिह खिलअत दी गयी थी, उसमे विष का प्रयोग किया गया था। उसका प्रभाव कुछ समय हुआ। उस खिलअत को पहनकर पृथ्वीसिह औरंगजेब से विदा हुआ और अपने नगर उसके प्राणो का अन्त हो गया। *

राजकुमार पृथ्वीसिह जसवन्त सिह का बडा लडका था। वह योग्य, प्रतिभाशाली अ क्रमी था। जसवन्त सिह पृथ्वीसिह से बडी-बडी आशाये रखता था। काबुल जाने के प इसी पृथ्वीसिह को राज्य का प्रबन्ध सौपा था। उसे क्या मालूम था कि मेरे जाने के बाद जेब मेरे पुत्र पृथ्वीसिंह के साथ इस प्रकार विश्वासघात करेगा।

जसवन्त सिंह ने हिन्दूकुश की तराई मे राजकुमार पृथ्वीसिंह की इस प्रकार मृत्यु चार सुना। उसके दो लडके और थे। जगत सिंह और दलथम्मन सिह। वे भी ज सके। जसवन्तसिह के अब और कौन था, जिसका वह भरोसा करता और जिसकी आशा जीवित रहता। पृथ्वीसिंह की मृत्यु के साथ-साथ उसकी आशाओ का दीपक बुझ गया। ससार मे अधकार दिखायी देने लगा। प्यारे पुत्र पृथ्वी सिंह की इस प्रकार मृत्यु के समा

×औरङ्गजेब जसवन्त सिह को कुट्टन कहकर सम्बोधन किया करता था।

* राजपूतो के इतिहास मे इस प्रकार के और भी उदाहरण पाये जाते है। को विषाक्त बनाकर पहनने वालो का सर्वनाश किया गया था। शत्रु को मारने के प्रकार विष के प्रयोग प्राचीन योरप मे भी किये जाते थे। उनका वर्णन हरक्यूलस ने अपने किया है। उसने स्वीकार किया है कि पहनने के किसी वस्त्र मे विष का प्रयोग करके सर्वनाश करने की रीतिया प्राचीन योरप मे प्रचलित थी।

अपनी फौज को पाने के बाद उसने राठोर सेना का पता लगाया। राजपूत सेना के मिल जाने पर अकबर ने राठोरो के सन्देह को दूर करने की कोशिश की।

इसके पहले तहव्वर खाँ के पत्र से राठोरो को मालूम हुआ था कि अकबर अपने पिता औरङ्गजेब के साथ मिल गया है। इसलिए अब वे अकबर का विश्वास करने मे बहुत सोच विचार कर रहे थे। चम्पावत, कुम्पावत, पातावत, लाखावत, कर्णोत, डुगरोत, मेरतिया, वरसिहोत, ऊदावत और विदावत आदि सामन्त एक स्थान पर बैठकर परामर्श करने लगे कि अकबर के साथ हमे अब क्या करना चाहिये। उस परामर्श के अन्त मे सभी लोगो ने मिलकर निश्चय किया कि अकबर के मिल जाने के सम्बन्ध मे जो पत्र मिला है, वह रहस्यपूर्ण मालूम होता है। क्योकि उनके बाद ही तुरन्त सेनापति तहव्वर खाँ बादशाह औरङ्गजेब के आदेश से तुरन्त मारा जाता है। इससे साफ जाहिर है कि अकबर के इधर मिल जाने से औरङ्गजेब का षडयन्त्र चल रहा है। इस दशा मे अभी तक अकबर का कोई अपराध नही है। जब तक वह हम लोगो से अलग नही हो जाता, हमे भी उसे छोड नही देना चाहिये।

अकबर और उसके साथ के सैनिक सेना के साथ मिलकर फिर एक हो गये। चम्पावत सरदार के छोटे भाई जैत को अकबर के परिवार की रक्षा का भार सौपा गया। दुर्गादास ने बडी सावधानी और गम्भीरता के साथ, भविष्य के उत्तरदायित्व को अपने ऊपर लिया। इन दिनो मे जिस प्रकार दुर्गादास साहस, धैर्य और शौर्य से काम ले रहा था, उसकी प्रशसा भट्ट ग्रन्थो ने बहुत अधिक की गयी है। उसी की शक्तियो के द्वारा इन दिनो मे मारवाड विध्वस होने से बच सका था। उसी ने अपने प्रणो की बाजी लगा कर शिशु अजित की रक्षा की थी। उसने महान शक्तिशाली सम्राट औरङ्गजेब की परवा न की।

अन्य सभी शत्रुओ की अपेक्षा दुर्गादास के द्वारा औरङ्गजेब की परेशानियाँ अधिक बढ गयी थी। इन दिनो मे बादशाह के दो शत्रु शिवाजी और दुर्गादास अधिक विद्रोही हो रहे थे। औरङ्गजेब ने एक चित्रकार को बुलाकर उन दोनो के चित्र लाने का आदेश दिया। कुछ समय मे चित्रकार ने दोनो चित्र लाकर बादशाह औरङ्गजेब के सामने रखे। शिवाजी का चित्र एक आसन पर बैठा हुआ था और दुर्गादास अपने भाले को नोक मे रोटी पिरोकर उसे आग पर सेक रहा था। औरङ्गजब ने दोनो चित्रो को देखकर कहा 'मै शिवाजी को तो किसी प्रकार जाल मे फँसा सकता हूँ परन्तु यह कुत्ता मेरी जिन्दगी के लिये जहर से भी ज्यादा खतरनाक हो गया है।"

दुर्गादास और शाहजादा अकबर मिलकर अब फिर एक हो गये थे। औरङ्गजेब पर आक्रमण करने के लिये दुर्गादास तैयारी करने लगा। इन्ही दिनो मे बादशाह औरङ्गजेब ने उसके विरुद्ध एक नया जाल तैयार किया। उसने सेनापति तहव्वर खाँ को फँसा कर शाहजादा अकबर को दुर्गादास से अलग करने की जो कोशिश की थी, उसकी वह चाल असफल हो गयी थी। अब उसने दुर्गादास को फँसाने के लिये एक नयी कोशिश की। उसने आठ हजार सोने की मोहरे दुर्गादास के पास भेज दी और उसके बाद भी उसने उसको प्रलोभन दिये। परन्तु दुर्गादास पर इन प्रलोभनो का कोई प्रभाव न पडा। दुर्गादास ने आयी हुई मोहरो का जिक्र शाहजादा अकबर से किया और उनमे से बहुत सी मोहरे अकबर की जरूरतो मे खर्च की गयी। कुछ रुपया दोनो तरफ के गरीब नौकरो मे बाँटा गया।

चुका था, फिर भी उसके हृदय मे पीडा थी। उसके प्रतिकार के लिये वह औरगजेब पक्षपाती न था। इसके परिणाम स्वरूप दक्षिण मे पहुँच कर उसने शिवाजी के सा तैयार किया। औरगजेब का सेनापति दक्षिण मे युद्ध करते हुए मारा गया। उससे शान्ति न मिली। औरगजेब ने दिलेर खॉ को प्रधान सेनापति बनाकर वहॉ भेजा। उसने दिलेर खॉ के विरुद्ध मुअज्जम को प्रोत्साहित किया।

औरगजेब से जसवन्त सिह की ये चाले अप्रकट न रह सकी। परन्तु वह खुल • सिह को अपना शत्रु नही बनाना चाहता था। इसीलिये वह राजनीति से काम लेता रहा वन्त सिह के सर्वनाश की वह चेष्टा करता रहा। जसवन्तसिह की जो भीतरी अभिलाषा सफलता के लिये वह भी बराबर अपना कार्य करता रहा। औरगजेब जसवन्तसिह को और जसवन्तसिह औरगजेब को समझता था। दोनो ही अपने-अपने उद्देश्य की पूर्ति मे

राजनीतिज्ञ औरगजेब जसवन्तसिह से जो कार्य लेना चाहता था, जसवन्त अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये साधन बनाने की कोशिश करता था। औरङ्गजेब जिस खोज मे था, वह जसवन्तसिह के काबुल जाने पर उसको मिल गया। उसने राजकुमार पृ बुला कर उसका सर्वनाश किया और यह सर्वनाश जसवन्तसिह की मृत्यु का कारण बना

पृथ्वीसिह और जसवन्तसिह की मृत्यु के बाद मारवड के राठौर राजवश पर ि वज्रपात हुआ, उसका वर्णन करने के पहले राठौर सरदारो के सम्बन्ध मे कुछ लिखना बहु मालूम होता है। जो सामन्त और सरदार औरङ्गजेब के विरुद्ध जसवन्तसिह की सदा सह करते थे, उनमे नाहर राव प्रमुख था। इसका नाम अनेक ग्रथो मे नाहर खान लिखा यह कुम्पावत वश का शूरवीर सरदार था और उन दिनो मे इसका स्थान बहुत श्रेष्ठ था। उसका वास्तव मे नाम मुकुन्ददास था। नाहर खॉ नाम मुगल बादशाह का रखा उसकी घटना इस प्रकार है।

बादशाह ने मुकुन्ददास को दरबार मे आने के लिये सदेश भेजा। जो बुलाने गया व्यवहार और बातचीत का तरीका राजपूतो के योग्य न था। इसीलिये मुकुन्ददास ने देकर उसे वापस कर दिया। बादशाह उसके उत्तर सुन कर बहुत अप्रसन्न हुआ और जब दरबार मे आया तो उसको दण्ड देने के लिए बादशाह ने बिना किसी अस्त्र के उसको वा मे जाने की आज्ञा दी। इस कठोर आज्ञा को सुनकर मुकुन्ददास भयभीत नही हुआ और हुए वह बाघ के पिंजडे की तरफ रवाना हुआ, वहॉ पहुँच कर उसने देखा कि बाघ पिंजडे घूम रहा है। उसके समीप पहुँचकर और उसके सामने खडे होकर मुकुन्ददास ने कहा के बाघ, आ और जसवन्तसिह के बाघ का सामना कर। मुकुन्ददास की इस बात को सु चौकन्ना हुआ और मुकुन्ददास की तरफ देख कर उसने गरजते हुये भयानक आवाज की। वाघ की तरफ देख रहा था। भीषण गर्जना करने के बाद बाघ ने अपना मुख दूसरी लिया और मुकुन्ददास के सामने वह पिजडे मे दूसरी तरफ चला गया। यह देखकर ने ऊँचे स्वर मे कहा यह देखो, बाघ मेरे साथ युद्ध नही कर सका। रण से भागे हुए आक्रमण करना राजपूतो के धर्म के विरुद्ध है।' बहुत से लोग खडे होकर यह घटना औरगजेब के विस्मय का ठिकाना न रहा। मुकुन्ददास के सामने गरज कर बाघ का घूम जाना औरगजेब की समझ मे भी एक आश्चर्य की बात थी। वह मुकुन्ददास के शौर्य पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसी समय उसने मुकुन्ददास का नाम नाहर खॉ अर्थात् बाघ और उसे बहुत-सा इनाम दिया।

मेवाड़ और मारवाड का विध्वस और विनाश करके इनायत खाँ ने दस हजार मुगल सेना के साथ जोधपुर मे प्रवेश किया और वहाँ पर उसने मुकाम किया। जोधपुर इन दिनो मे मुगलो के अधिकार मे था। इस पराधीनता से जोधपुर को निकालने के लिये मारवाड के राठौरो ने प्रतिज्ञाये की। कर्णोत क्षेमकर्ण, जोधावशी, महेचा, विजयमल, सूजावत, जैतमाल, शिवदान आदि और भी शूरवीरो ने अपनी सेनाये तैयार की। इन लोगो को जब मालूम हुआ कि बादशाह औरङ्गजेब ने अजमेर से आठ मील की दूरी पर आकर विश्राम किया है, तो उस समय राठौर सेना ने जोधपुर पहुँच कर उसकी फौज का सामना किया। परन्तु उसके बाद ही बीस हजार मुगल सेना इनायत खाँ की सहायता के लिये वहाँ पहुँच गयी। उस समय जोधपुर मे मुगल फौज के साथ राठौरो का भयानक युद्ध हुआ और उस सग्राम मे दोनो तरफ के बहुत से आदमी मारे गये। जोधपुर का यह सग्राम सम्वत् १७३७ सन् १६८१ मे आषाढ़ वदी ७ दिन हुआ था।

इसके बाद दूसरा युद्ध राठौरो और मुगलो के बीच फिर हुआ। उस युद्ध मे हरनाथ और कर्ण अपने परिवार के कई लोगो के साथ मारे गये। इस युद्ध का अन्त सम्वत १७३८ के आरम्भ मे हुआ।

इन सग्रामो मे सोनग ने जिस प्रकार अपने अद्‌भुत पराक्रम का परिचय दे कर युद्ध किया था, उसको देखकर औरङ्गजेब आश्चर्य मे आ गया। युद्ध के बाद बादशाह ने अपना दूत उसके पास भेजा और उसके साथ सन्धि की बातचीत शुरू की। इसके साथ-साथ उसने उसको सात हजारी की पदवी दी और उसके वशजो को अजमेर देकर सोनग को वहाँ का अधिकारी बना दिया।

इसके सम्बन्ध मे एक सन्धि पत्र लिखा गया। उसमे औरङ्गजेव ने यह भी लिख दिया: कि मैं भगवान की कसम खाकर इस सन्धि पत्र पर मुहर करता हूँ और वादा करता हूँ कि इसके विरुद्ध मैं कभी कोई कार्य न करूंगा।''

इस सन्धि पत्र को लेकर दीवान असद खाँ वहाँ पर आया और राठौरो के बीच पहुँचकर उसने शपथ के साथ कहा: 'इस सन्धि के विरुद्ध बादशाह कोई भी कार्य न करेगा।''

शाहजादा अकबर के जीवन की परिस्थितियाँ इस समय भयानक हो उठी। वह अपने साथ के सैनिको को लेकर दक्षिण की तरफ चला गया। असद खाँ अजमेर मे और सोनग मेरता नगर मे रहने लगा। औरङ्गजेब की दृष्टि मेरता पर गयी। वह सोनग के सम्बन्ध मे विचार करने लगा। उसने जो राठौरो को अश्वासन दिया था, उसे उसने भुला दिया और ब्राह्मण को धन देकर उसने सोनग का अन्त करने के लिये रास्ता बनाया। भट्ट ग्रन्थो मे लिखा गया है कि उस ब्राह्मण के द्वारा सोनग की मृत्यु हो गयी। वहाँ पर यह बात स्पष्ट नही की गयी कि उसकी मृत्यु का कारण क्या हुआ। परन्तु इस बात का अनुमान किया जाता है कि उस ब्राह्मण के द्वारा सोनग को विष खिलाकर मारा गया।

सोनग की मृत्यु का समाचार दीवान असद खाँ ने औरङ्गजेब के पास भेजा। उससे बाशाह को बहुत सतोष मिला। उसने ब्राह्मण को जो धन दिया था, सफल हो गया।

राठौरो के साथ की गयी सन्धि को तोडकर और सोनग को ससार से विदाकर औरङ्गजेब दक्षिण की तरफ रवाना हुआ। इन दिनो मे मेडता निवासी कल्याण के पुत्र मुकुन्दसिंह को बादशाह की तरफ से एक उपाधि दी गयी थी। मुकुन्दसिंह ने उस उपाधि को ठुकराकर मुगलो के

"देवडा के सैनिकों, शांत होकर हमारी बात सुनो। यदि आप लोगो ने इस समय
की तो मै राव सुरतान का सिर कटवा लूंगा। इसलिए कि उसकी जिन्दगी इस समय
है और यदि आप लोगो ने मेरा कहना मान लिया तो विश्वास रखिये कि राव सुरतान
पूर्ण रूप से सुरक्षित रहेगा और उसके सम्मान को कुछ भी क्षति न पहुँचेगी।"

मुकुन्ददास की इन बातो को सुन कर देवडा के सैनिक शात हो गये। मुकुन्ददास सु
बन्दी बना कर ले गया और राजा जसवन्तसिह् को सौप दिया। जसवन्तसिह् ने सिरोही
सुरतान को सान्त्वना देकर कहा कि आप बादशाह् से मुलाकात करें। इससे आपकी को
होगी। राव सुरतान ने इस बात को स्वीकार कर लिया।

बादशाह् से भेंट करने के लिए सुरतान शाही कर्मचारियो के साथ रवाना हुआ।
उन कर्मचारियो ने सुरतान को समझाया कि बादशाह् के सामने पहुँच कर सलाम करना।
को भूल न जाना। कर्मचारियो के इस उपदेश को सुन-सुन कर राव सुरतान के स्वाभिमान
का आघात पहुँचा। उसने अपने मन मे कहा "मेरे प्राण बादशाह् के हाथ मे है और मे
मेरे अधिकार मे है। जो मेरे अधिकार मे है उसकी मै रक्षा करूँगा। कर्मचारियो ने
मुख से कुछ उत्तर न सुना तो उनको संदेह पैदा हुआ लेकिन राजा जसवन्त सिह् ने रा
के सम्बन्ध मे बहुत समझा बुझाकर भेजा था। इस लिए कर्मचारियो ने बडी
काम लिया।

जो कर्मचारी राव सुरतान को बादशाह् के पास ले जा रहे थे, उनको विश्वास ह्
यह बादशाह् को सलाम नही करेगा। इसलिए राजा जसवन्तसिह् की बातो को ध्यान मे र
सुरतान को ऐसे रास्ते से बादशाह् के सामन ले गये, जो एक आदमी की छाती से ऊँचा न
रास्ते को पार करते ही राव सुरतान ने अपने आप को बादशाह् के सामने पाया। उसका
से पार होना बादशाह् के निकट सम्मानपूर्ण अभिवादन के रूप मे स्वीकार किया गया।

बादशाह् ने अपने सामने राव सुरतान को देखा। उसका वीरोचित शरीर, ऊँ
और साहसपूर्ण मुख मण्डल देखकर बादशाह् को प्रसन्नता हुई। उसने राव सुरतान को न
ही कर दिया, बल्कि उसकी पसन्द के अनुसार बादशाह् ने उसको एक जागीर देना भी स्वीक

बादशाह् की इस उदारता से राव सुरतान को सतोष नही मिला। वह एक स
राजपूत था। उसने बादशाह् की इस उदारता मे अपनी पराधीनता को अनुभव किया।
तक एक छोटा किन्तु स्वतत्र राजा था और राव उसकी उपाधि थी। लेकिन बादशाह्
उसको एक जागीर देकर अपनी अधीनता मे एक सामन्त बनाना चाहता था।

राव सुरतान को इससे कभी भी सतोष न मिल सकता था। इसलिए उसने नि
साथ कहा "बादशाह, आप ने मुझे मेरी पसन्द के अनुसार जागीर देने का वचन दिया
लिए मै आपका शुक्रिया अदा करता हूँ और अपनी पसन्द को आप के सामने रखते हुए कह
हूँ कि अपने छोटे-से राज्य मे मुझे रहने का अवसर दिया जाय। मेरा अचलगढ मेरे लिए
जागीर है।"

स्वाभिमानी देवडा राजा सुरतान की बात को सुन कर बादशाह् को किसी प्रकार
नही हुआ। उसने उदारता के साथ उसकी माँग को स्वीकार कर लिया और उसे आबू
चले जाने की आज्ञा दे दी, राव सुरतान अचलगढ वापस लौट गया।

इसके बाद उदयसिंह ने सोजत पर आक्रमण किया। जेतारण मे राठौरो का फिर से प्रभुत्व कायम हुआ। बैसाख के महीने मे मोहकमसिंह ने मेडता के बचे हुए मुगल सैनिको पर आक्रमण किया। उस लडाई मे सैयदअली मारा गया और उसके गिरते ही मुगल सेना युद्ध के क्षेत्र मे भाग गयी।

लगातार युद्धो, आक्रमणो और नर हत्याओ के साथ सम्वत् १७३६ खतम हुआ। इस वर्ष राठौर अधिक सख्या मे मारे गये। लेकिन सख्या मे बहुत कम होते हुए भी उन्होने मुगलो के साथ भयानक युद्ध किये और भीषण रूप से शत्रुओ का नर सहार किया। इस वर्ष की लडाइयो मे राजस्थान के सभी राजपूत मिलकर एक हो गये थे। इसका कारण मुगलो का अत्याचार था। इसलिये जो राजपूत एक, दूसरे के साथ कभी न मिल सके थे, वे भी इन दिनो मे मिलकर एक हो गये। सम्वत् १७३६ के आखिर मे जैसलमेर के भाटी लोग भी राठौरो के साथ मिल गये थे और उन लोगो ने राठौरो की सहायता मे अपने प्राणो को उत्सर्ग किया।

सम्वत् १७४२ के आरम्भ से मुसलमानो की नई तैयारियाँ आरम्भ हुई। अब वे अपनी नवीन शक्तियो को लेकर युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। आजम और असदखाँ भारत के दक्षिण मे चले गये और वहाँ जाकर औरङ्गजेब से मिले। इनायत खाँ अधिकारी बनकर अजमेर मे रहने लगा। उसे औरङ्गजेब ने आज्ञा दी थी कि राठोरो के साथ युद्ध बराबर जारी रहे और बरसात के दिनो मे भी युद्ध बन्द न किया जाय।

इनायत खाँ ने यही किया। इन दिनो मे मारवाड के सभी नगर और ग्राम मुगलो के अधिकार मे थे और उनके अत्याचार से मारवाड सभी प्रकार मिट चुका था। जो लोग उन गाँवा और नगरो मे बाकी रह गये थे, मुगलो के नाम मे घबरा रहे थे। अपनी इस निर्बलता मे मारवाड के वे लोग मेरवाडा मे पहुँच कर आश्रय लेने लगे और थोडे समय के भीतर सभी राठौर अपने परिवारो को लेकर मेरवाडा के पहाडी स्थानो पर जाकर रहने लगे।

यहाँ आकर उन लोगो ने फिर से अपना सगठन किया और भयानक कठिनाइयो मे होने पर भी उन्होने मुगलो पर आक्रमण आरम्भ कर दिये। वे किसी समय अपने स्थानो से निकल कर अचानक उन गाँवो और नगरो पर आक्रमण कर देने, जो मुगलो के अधिकार मे थे। उन नगरो को लूट-मार कर वे फिर अपने पहाडी और जगली स्थानो को भाग जाते। मुगलो से बदला लेने के लिये भी जितने अवसर राठौरो को मिल सकते थे, उनको उन्होने बेकार नही जाने दिया। राठौरो ने पाली, सोजत और गोडवाड आदि कितने ही नगरो और ग्रामो को लूट कर बरबाद कर दिया।

प्राचीन मन्दोर नगर का अधिकार ख्वाजा सालह नाम के एक मुस्लिम सेनापति के हाथ मे था। भाटियो ने उस पर आक्रमण किया और उसे वहाँ से निकाल दिया। वैसाख के महीने मे बगडी नाम के स्थान पर एक भयानक युद्ध हुआ। उसमे रामसिंह और सामन्तसिंह नाम के दो भाटी सरदारो ने हजारो मुसलमानो का अन्त किया और अपने दो-सौ सैनिको के साथ वे दोनो सरदार मारे गये। अनूपसिंह नाम का एक सरदार कुम्पावतो को लेकर लूनी नदी के समीप पहुँच गया और उसने वहाँ के मुसलमानो का सहार करना आरम्भ किया। उसके इस आक्रमण से उस्तरां और गाँगणी नाम के दो दुर्गों से मुगलो के सैनिक भाग गये। मोहकमसिंह मेडतिया सेना के साथ अपनी प्राचीन भूमि मे आया और वहाँ के रहने वाले मुसलमानो पर उसने आक्रमण किया। मुगल सेनापति मोहम्मद अली ने अपनी फौज लेकर उसका सामना किया। दोनो ओर से मारकाट

राठौर सरदारो के दिल्ली आते ही औरंगजेब ने उनको आदेश दिया कि वे ज शिशु अजित को उसके हवाले कर दे । जब औरगजेब ने देखा कि जसवन्त सिंह के सरदार इसके लिए तैयार नही हैं तो उसने सामन्तो और सरदारो को अनेक प्रकार दिये । उसने उनसे साफ-साफ कहा 'यदि तुम शिशु राजकुमार को मुझे दे दोगे त मारवाड राज्य तुम सब को बाँट दूँगा ।''

औरगजेब किसी भी दशा मे जसवन्तसिह के शिशु अजित को लेना चाहता मारवाड के सामन्तो और सरदारो ने औरंगजेब की बात को स्वीकार नही किया और यह निश्चय कर लिया कि जब तक हम लोग जीवित रहेगे अजित को औरगजेब करेगे । अजित के लेने के लिए औरगजेब बराबर आग्रह करता रहा । उसने अनेक प्रक की । परन्तु सामन्तो और सरदारो ने अजित को देना स्वीकार नही किया ।

औरगजेब ने दरबार मे मारवाड के सामन्तो और सरदारो को बुलाकर कहा को दे देने के लिए उसने आदेश दिया । राठौर सामन्त इसके लिए तैयार न हुए और ने एक मत होकर औरगजेब को उत्तर देते हुए स्पष्ट कहा . ''जिस मातृभूमि के द्वारा ह हुआ है उस मातृभूमि की रक्षा हमारी प्रत्येक अस्थिमज्जा और नस के द्वारा होगी ।''

सामन्तो और सरदारो ने किसी भी दशा मे शिशु अजित को देना स्वीकार नह बादशाह के दरबार से निकल कर चले आये और जहाँ पर वे ठहरे थे, वहाँ वे उसके थोडे ही समय के बाद मुगलो की एक सेना ने आकर उनको घेर लिया । इस अत्याचार से राठौर सामन्त बहुत क्रोधित हुए किन्तु वे सावधान होकर अजित के रक्षा का उपाय सोचने लगे । सभी ने मिलकर एक निर्णय कर लिया । राजधानी के मिष्ठान्न पहुँचाने की तैयारिया होने लगी और टोकरो मे मिठाइयाँ भर-भरकर हिन्दु भेजना शुरू कर दिया । इस प्राकार जो हजारो टोकरे हिन्दुओ के घरो पर पहुँचाने के ि हुए, उनमे एक टोकरे मे शिशु अजित को छिपा कर भेज दिया गया ।

इस मिष्ठान्न के बँटवाने का कार्य समाप्त होने के बाद सभी राठौरो ने अपनी तै औरगजेब ने इस समय जैसा व्यवहार इन राठौरो के साथ किया था उसके बदले मे के सिवा और कोई भी रास्ता राठौर सामन्तो के सामने न रह गया था । इसलिए युद्ध कर चुकने पर और अपने अपने घोडो पर बैठ कर राठौर आगे बढे और साथ के लोगो क रते हुए राठौर सामन्तो ने कहा . 'आज हम लोगो के सामने राठौरो की गौरव के रक्ष है । बादशाह ने हमारे सर्वनाश की चेप्टा की है । इसलिए जो सकट हमारे सामने ' उसका हम सामना करे और मारे जाने पर स्वर्ग की यात्रा करे ।'।

राठौर वीरो के इन शब्दो को सुनकर भट्ट कवि सूजा ने गम्भीर होकर कहा की लाज आज आप लोगो के हाथो मे है । आप के सामने मातृ भूमि और राजपूतो के रक्षा का प्रश्न है । अपने प्राणो की बलि देकर आपको इस गौरव की रक्षा करना है ।''

इसी समय दुर्गादास ने कहा '' हिन्दुओ का सर्वनाश करके बादशाह का माह है । हम सब लोग जितना दबे है उतने ही हम लोग दबाये गये है । आज हम सब लोग ? का बदला देगे । राठौर सामन्तो ने अजित के प्राणो की किसी प्रकार रक्षा कर ली थ अब उनके सामने उन स्त्रियो के गौरव का प्रश्न था, जो काबुल से उनके साथ आयी थ धर्म की रक्षा कैसे होगी इस प्रश्न को लेकर राठौर सामन्त बार-बार सोचने लगे । ने चारो ओर से घेरा डाल रखा था । उनके घेरे से बाहर ले जाने का कोई १०९

किया और वहाँ से चलकर वे मेडता के मैदानो मे पहुँच गये और वहाँ के मुसलमानो पर उन्होंने आक्रमण किया। दोनो ओर से भयानक मवर्प हुआ।

इस लडाई मे राठौरो की पराजय हुई। विजयी मुमलमानो ने राठौर सेना को युद्ध मे भगा दिया। सग्रामसिंह असफल होने के वाद फिर युद्ध की तैयारी करने लगा। अपनी वची हुई सेना को लेकर वह रवाना हुआ और जोधपुर के गाँवो मे पहुँच कर उसने आग लगवा दी। इसके वाद दूवाडा नगर मे वह अपनी सेना के साथ पहुँच गया। वहाँ से उसने जालौर पर आक्रमण किया। वहाँ का मुस्लिम अधिकारी घवरा उठा। परन्तु उस पर कोई अत्याचार नही किया गया। उसको आत्म-समर्पण करने के लिये विवश किया गया और इसके लिये उसे सम्मान पूर्वक अवसर दिया गया। इस प्रकार सम्वत् १७४२ भी समाप्त हो गया।

अड़तालीसवाँ परिच्छेद

अजित का गुप्त रूप से पालन—राज्य मे चर्चा और उत्सुकता—अजित की खोज मे राज्य के सामन्त—अजित के गुप्तवास का अन्त—राज्य मे स्वागत - औरङ्गजेब की चिन्तायें—उसके षड-यन्त्रो का जाल—मुगलो पर आक्रमण—दुर्गादास की विजय—औरङ्गजेब के प्रलोभन—अजित को फँसाने की चेष्टा—मेवाड मे घरेलू विद्रोह—सन्धि के नाम पर विश्वासघात—राजकुमार अजित पर आक्रमण—मुगलो की पराजय—युद्ध की फिर से तैयारियाँ—दुर्गादास के आश्रय मे शाहजादा अकवर की लडकी—औरङ्गजेब की चिन्ता—उसके नवीन षडयन्त्र—राजपूतो के चरित्र की प्रशसा—मुगलो के फिर अत्याचार—औरङ्गजेब की धूर्तनीति।

राजकुमार अजित अभी तक आवू पर्वत के किसी एक गुप्त स्थान मे था। दुर्गादास ने अत्यन्त विश्वासी राठौर सरदारो को सरक्षण और पालन-पोषण का भार इन दिनो मे दे रखा था। यो तो मारवाड मे वहुतो को यह मालूम हो चुका था कि जसवन्तसिंह का अन्तिम वेटा अजित जीवित है। परन्तु वह कहाँ है और उसका सरक्षण किस प्रकार हो रहा है, यह सव ठीक तौर पर किसी को मालूम न था।

सम्वत् १७४३ के आरम्भ से ही मारवाड मे राजकुमार अजित की चर्चा अधिक होने लगी। चम्पावत, कुम्पावत, ऊदावत, मेरतिया, जोधावत, करमसोत और मारवाड राज्य के दूसरे सामन्त तथा सरदार राजकुमार अजित को देखने के लिये अधीर होने लगे। उन सव ने मिलकर खीची वशीय मुकुन्द के पास दूत के द्वारा सन्देश भेजा—"कि हम सव एक वार राजकुमार अजित को देखना चाहते हैं।"

इस सन्देश को पाकर मुकुन्द ने दूत को उत्तर दिया · "जिसने विश्वास करके राजकुमार को मुझे सौंपा है, वह इस समय दक्षिण मे है।"

सरदारो को इस उत्तर से सन्तोष न मिला। उन सव लोगो ने निश्चय किया कि हम लोग एक वार राजकुमार के दर्शन करेंगे। इसी आधार पर मुकुन्द के पास सन्देशो का आना जाना

प्रकार अजित को सुरक्षित देखना चाहता था। उस मुसलमान से जिस स्थान का निश्च
वहाँ पर पहुँच कर जब दुर्गादास ने टोकरे मे अजित को सुरक्षित और सकुशल देखा
सतोष और सुख मिला उस समय वह अपने शरीर के सैकडो जख्मो की पीडा को भूल
मुसलमान अजित को छिपा कर टोकरा लाया था, वह राठौरो का परम विश्वासी था।
था कि राजपूतो के साथ जो उपकार किया जाता है, वह कभी व्यर्थ नही जाता। अ
की रक्षा करने वाले मुसलमान को उसके इस उपकार के बदले मारवाड़-राज्य की त
दी गयी जो अब तक उसके वशजो मे पायी जाती है। इसके साथ-साथ मारवाड के
उसको बहुत बडी प्रतिष्ठा मिली। अजित जब बडा हुआ तो उसने उस मुसलमान का
किया और अत तक अजित उसको काका कह कर पुकारता रहा।

दुर्गादास अपने कुछ विश्वासी आदमियो के साथ राजकुमार अजित को लेकर
पर चला गया और वहाँ एकान्त स्थान मे रह कर वह उस बालक का पालन-पोषण
दुर्गादास को वहाँ रह कर भी औरगजेब का भय बना रहा। इसलिए उसने अपने ए
समाचार शक्ति भर किसी को प्रकट नही होने दिया।

धीरे-धीरे बहुत दिन बीत गये। अजित के साथ बहुत दिनो तक दुर्गादास
रहना अप्रकट न रह सका। किसी प्रकार मारवाड़ के राजपूतो मे यह अफवाह फै
जसवत सिह का पुत्र अजित जीवित है। दुर्गादास के सरक्षण मे उसका पालन-पोषण
इस अफवाह के फैलते ही वहाँ के अगणित राजपूत आपस मे एक दूसरे से बाते करने
बात की खोज मे रहने लगे कि यह अफवाह सही कहाँ तक है। इस खोज मे मार
राजपूत दुर्गादास का पता लगाने के लिए बाहर निकले। वे इधर-उधर घूमते हुए
पहुँच गये।

राजकुमार शिशु अजित को बहुत पहले से दूनाडा का सरदार धनी के नाम
किया करता था। जो राजपूत आबू पर्वत पर पहुँच गये थे उन्होने दुर्गादास और अ
लगा लिया और जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ पर अजित रहा करता था तो वे
देखकर बहुत प्रसन्न हुए और आपस मे बात-चीत करके उन लोगो ने मारवाड के
अजित को बिठाने का निश्चय किया।

आबू पहाड पर अजित का वह एकान्त स्थान धीरे-धीरे मारवाड के दूसरे
मालूम हो गया, अब वहाँ पर बहुत-से राठौर भट्ट और चारण एकत्रित होने लगे।
मे ईदा नामक एक प्राचीन राजवश मरुभूमि मे राज्य करता था। ईदा परिहार राज
शाखा है। मारवाड मे राठौरो का आधिपत्य कायम होने पर ईदा वंश के लोग
छोडकर दूर चले गये थे और अपना राज्य खोकर किसी प्रकार दिन बिताने लगे।
राज्य के छूट जाने की वेदना अभी तक उस वंश के लोगो मे थी। इस समय उनको
गया और थोडे ही दिनो मे परिहारो का झण्डा प्राचीन मन्दोर मे फहराने लगा।

इस विजय मे परिहार वंश के राजपूतो को बहुत प्रोत्साहन मिला। रत्नसिह
राठौर ने जोधपुर को जीतकर अपने अधिकार मे लाने की चेष्टा की * अमर
के द्वारा राज्याधिकार से वंचित किया गया था। औरगजेब ने रत्नसिंह को जोधपुर

---

* कुछ लेखको का कहना है कि रत्नसिंह गलत नाम है। उसका सही नाम
था राव अमर सिह का बेटा था और जसवंत सिह का भतीजा था।

बधावना और टीकादौड से राजकुमार अजित के सौभाग्य का परिचय मिला। *इस अवसर पर राजकुमार का जिस प्रकार स्वागत सत्कार किया गया, उससे राठौरो के उत्साह की अपरिमित वृद्धि हुई। दुर्जनशाल ने † इस अवसर पर अपने जिस उत्साह और सहयोगी का परिचय दिया, उससे राठौरो को अपना भविष्य उज्वल दिखायी देने लगा।

राजकुमार अजित को पाकर राठौरो मे जिस उत्साह की वृद्धि हुई, उसे देखकर बादशाह औरङ्गजेब का सेनापति इनायतखाँ बहुत भयभीत हुआ। उसने सोच समझ कर एक फौज तैयार की। लेकिन उसकी मृत्यु हो गयी। बादशाह ने मुहम्मदशाह नामक एक मनुष्य को जसवन्तसिंह का पुत्र कहकर उसे मारवाड के सिंहासन पर बिठाने की चेष्टा की। ‡ राजकुमार अजित को पञ्चहजारी की उपाधि देकर बादशाह ने उसे मोहम्मदशाह की अधीनता मे रखना चाहा। किन्तु मोहम्मदशाह औरङ्गजेब के इस षडयत का सम्मान प्राप्त न कर सका। वह जोधपुर की तरफ रवाना हुआ। रास्ते मे बीमार हो जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

इन्ही दिनो मे इनायतखाँ के स्थान पर सुजावतखाँ मारवाड का सेनापति बनाया गया। राठौर लोग अपने राज्य मे मुगलो का आधिपत्य किसी प्रकार सहन करने के लिये तैयार नही थे। इसलिये वे हाडा लोगो के साथ मिल गये और दोनो की मिली हुई सेनाओ ने मारवाड को स्वतन्त्र करने के लिये मुगलो पर आक्रमण किया। मालपुरा और पुरमांडल मे जो मुस्लिम सेना थी, उस पर आक्रमण करके राजपूतो ने उसे तितर-बितर कर दिया। पुरमांडल के दुर्ग को घेरने के समय हाडा राजा की एक गोले से मृत्यु हो गयी। विजय प्राप्त करने पर राजपूतो ने आठ हजार मोहरे सेना के खर्च के लिये लेकर मारवाड की तरफ लौट पडे। राज्य के कई एक अधिकारी अजित की सहायता करने के लिये धन एकत्रित करने मे लग गये। इस प्रकार सम्वत् १७४४ भी बीत गया।

सम्वत् १७४५ के आरम्भ मे सुजावतखाँ ने मारवाड पर कर लगाने का निश्चय किया। इस कर मे जो धन एकत्रित होगा, उसका चौथाई सुजावतखाँ को दिया जाना निश्चित रहा। इसी मौके पर इनायतखाँ का लडका जोधपुर छोडकर दिल्ली की तरफ रवाना हुआ। जिस समय वह रैनवाल नामक स्थान पर पहुँचा। जोधा हरनाथ ने इस पर आक्रमण किया और उसकी स्त्रियो के साथ-साथ उसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति और सामग्री छीन ली। इस समाचार को सुनकर सुजावतखाँ अपनी सेना के साथ अजमेर से रवाना हुआ। चम्पावत मुकुन्ददास ने उस पर आक्रमण किया और उसका सब छीन लिया।

---

* बधावना और टीका दौड की रीति के अनुसार एक मनुष्य मोतियो से भरा हुआ एक बर्तन नवीन राजा अथवा युवराज के मस्तक पर रखकर उसकी परिक्रमा करता है।

† इस मौके पर दुर्जनशाल चम्पावत सरदार सुजानसिंह की लडकी से विवाह करने के लिये आया था। परन्तु राजकुमार का स्वागत-सत्कार देखकर वह अपने उत्साह को दबा न सका। किसी को उससे कुछ कहना न पडा। वह स्वय उत्साहित होकर युद्ध मे साथ देने के लिये तैयार हो गया।

‡ जसवतसिंह के कबीलो की रक्षा के लिये जब राठौर मुगलसेना से युद्ध करके मारवाड चले आये थे, उस समय दिल्ली के एक मुगल अधिकारी ने एक बालक को ले जाकर बादशाह को दिखाया था और कहा था कि यह जसवन्तसिंह का लडका है। बादशाह ने मोहम्मदशाह नाम रखकर उसको पाला था। सम्वत् १७४५ मे उसकी मृत्यु हो गई।

ाँजम चित्तौर मे था । इसी समय औरगजेब को समाचार मिला कि दुर्गादास ने जाल
आक्रमण किया है । इसको सुनते ही वह अजमेर की तरफ लौट पड़ा । वहा जाने के
मुकर्रम खाँ को आज्ञा दी कि वह जालौर के युद्ध में बिहारी की सहायता करे ।

दुर्गादास उन दिनो मे युद्ध का कर वसूल कर रहा था । वह जोधपुर पहुँचा ।
औरगजेब भीषण रूप से धार्मिक पक्षपात कर रहा था और हिन्दुओ के विरुद्ध उसके हृद
जल रही थी । उसने इन दिनो मे बार-बार प्रतिज्ञा की कि इस्लाम को छोडकर इस दे
कोई मजहब न रखूँगा । उसने शाहजादा अकबर को एक मुगल सेना देकर तहव्वरखाँ
दिया । इन दिनो मे मुगल फौजे चारो तरफ लूट मार कर रही थी और उसके बाद उ
आग लगाकर ग्रामो और नगरो का सर्वनाश कर रहे थे । ईदा लोगो ने जोधपुर मे
लिया । परन्तु कुम्पावत लोगो ने खत्तापुर मे उनका सामना किया और भयानक रूप से
किया । मुरधर का राजा एक बार और राव की पदवी से वंचित हुआ था । यद्यपि बाद
था कि परिहार लोग मारवाड पर अधिकार करे । लेकिन उसका यह इरादा सम्वत् १७
महीने की त्रयोदशी को बेकार हो गया ।

इन दिनो मे राठौरो ने अर्बली पहाड पर आश्रय लिया । जहाँ पर वे जाकर र
स्थान अत्यन्त कठोर और जनहीने था । वहाँ पर पहुँचकर राठौरो ने अपना सुदृढ स
वे अचानक अपने पहाडी स्थानो से निकलकर मुसलमानो पर आक्रमण करते और उनक
कर एवम् लूटकर फिर अपने स्थानो को भाग जाते । उनके लगातार ऐसा करने से औ
परेशानियाँ बहुत बढ गयी । अनेक उपाय करने पर भी उन आक्रमणकारी राठौरो से
की रक्षा न कर सका ।

इस प्रकार के आक्रमणो के द्वारा रठौरो को प्रोत्सहन मिल रहा था । उन्होने
एकत्रित होकर मुगलो का विनाश करने के लिये प्रतिज्ञाये की । इन्ही दिनो मे उनके
जालौर पर आक्रमण किया और उनका दूसरा दल सिवाना पर आक्रमण करने के लिये
इसका फल यह हुआ कि औरगजेब को राणा के साथ युद्ध बन्द कर देना पडा और
विशाल सेना मारवाड भेज दी ।

राणा राजसिंह ने अजित को अपने यहाँ आश्रय देकर औरगजेब के साथ आग
थी । राणा ने अपने लडके भीम को सीसोदिया सेना का भार सौपा और उसे राठौरो
के लिये भेज दिया । उन दिनो मे इन्द्रभानु और दुर्गादास राठौर सेना के साथ गोडवाड
थे । भीमसिह वहाँ पहुँच कर उनके साथ मिल गया । शाहजादा अकबर और सेनापति
मुगल फौज को लेकर उनके मुकाबले के लिए पहुँचे । नाडोल नगर मे दोनो तरफ
युद्ध आरम्भ हुआ । इस सग्राम मे दोनो तरफ के बहुत से आदमी मारे गये । रा
युद्ध करते हुये मारा गया । उसकी सेना ने राठौरो के साथ मिलकर मुगलो से भीषण
युद्ध की परिस्थिति लगातार भयानक होती गयी । इन्द्रभानु युद्ध करते हुए ऊदावत
सग्राम भूमि मे गिरा और उसके प्राणों का अन्त हो गया । सोनग और दुर्गादास अ
करते रहे ।

इस युद्ध मे जिस प्रकार नर सहार हुआ, उसको देखकर शाहजादा अकबर घ
उसकी समझ मे न आया कि इस प्रकार का सर्वनाश किस लिये हो रहा है । उसने इस
नेत्रो से राजपूतो की वीरता का दर्शन किया । उसने सोचा, 'जो वीर राजपूत इतने
क्या उनके साथ मिलकर इस नर संहार को रोका नही जा सकता ?' उसने सेनापति

प्रकार की बातें सोचकर औरङ्गजेब शकाये करने लगा। उसने सोचा कि ऐसे मौके पर राठौरों के साथ सुलह कर लेना ही बुद्धिमानी है। इसके लिए उसने नारायणदास कुलवी को मध्यस्थ बनाया। सुलह की बातचीत आरम्भ हो गयी। सम्वत् १७४६ भी बीत गया।

सधि की इस बातचीत के दिनो मे बादशाह की तरफ से विश्वासघात किया गया। सधि की बातो का कदाचित यही अभिप्राय था कि राठौरो को धोखे मे रखा जाय। सम्वत् १७५० मे जोधपुर, जालौर और सिवाना के मुगल अधिकारियो ने अपनी-अपनी सेनाये एकत्रित की और एक साथ राजकुमार अजित पर आक्रमण किया। राठौर इस आक्रमण के लिए तैयार न थे। इस दशा मे राजकुमार अजित को पहाडी स्थानो का आश्रय लेना पडा। वह वल्लभवशी अक्षो को लेकर युद्ध के लिये तैयार हुआ और उसने मुगलो का सामना किया। परन्तु उसे लगातार पराजित होना पडा। इसी मौके पर चम्पावत मुकुन्ददास ने मुगलो पर आक्रमण किया। मोकलसर नामक स्थान पर दोनो ओर की सेनाओ का सामना हुआ। इस युद्ध मे मुकुन्ददास ने मुस्लिम सेना को पराजित करके चौक के अधिकारी, उसकी सेना और उसके सामन्तो को कैद कर लिया।

इस पराजय के बाद मुगलो की शक्तियाँ लगातार कमजोर पडने लगी। सम्वत् १७५१ मे मुगलो की परेशानियाँ बहुत बढ गयी और उनको विवश होकर राठौरो के साथ युद्ध बन्द कर देना पडा। मुगल राज्य से कई एक जनपदो ने राठौरो की अधीनता मजूर की। किसी ने चौथ और किसी ने कर देना आरम्भ किया। इस वर्ष कासिमखाँ और लश्करखाँ ने मुगल राज्य की यह दशा देखकर राठौरो के विरुद्ध युद्ध की तैयारी की।

राजकुमार अजित उन दिनो मे विजयपुर मे था। दुर्गादास का लडका अपनी सेना लेकर मुगलो के सामने पहुँचा। युद्ध आरम्भ हुआ। सग्राम मे सफीखाँ को पराजित होना पडा। इस युद्ध मे हारकर मुगल और भी निर्बल पड गये।

शाहजादा अकबर की लडकी अब भी दुर्गादास के आश्रय मे थी। बादशाह औरङ्गजेब उसको राठौर के आश्रय से लेने का कोई प्रबन्ध न कर सका। उसने उसके सम्बन्ध मे जितने भी उपाय सोचे, सभी बेकार हो गये। राठौरो के साथ सधि करने का अभिप्राय कोई दूसरा न था। परन्तु उसका भी वह कुछ लाभ उठा न सका। इन दिनो मे उसे राठौरो की शत्रुता खल रही थी और उसके साथ मित्रता का एक नाटक खेल कर वह कुछ लाभ न उठा पाता था। औरङ्गजेब ने कभी किसी का विश्वास करना नही सीखा था। नये षडयन्त्रो के द्वारा ससार की बडी-से-बडी शक्ति को अपने अधिकार मे लाना चाहता था।

औरङ्गजेब ने जोधपुर के अधिकारी सुजावतखाँ को लिखा . "जैसे भी हो सके—जिस किसी कीमत पर मुमकिन हो, मेरे सम्मान की रक्षा करो।" औरङ्गजेब के इन शब्दो का अर्थ शाहजादा अकबर की बेटी के सम्बन्ध मे था। वह उसके प्रश्न को लेकर बहुत सशकित हो रहा था और उसे राठौरो के अधिकार से लेना चाहता था। परन्तु इसके लिए अभी तक उसको कोई मार्ग न मिला था।

इसी वर्ष मेवाड के राणा ने अपने छोटे भाई राजसिह की बेटी के साथ राजकुमार अजित का विवाह सम्बन्ध निश्चित किया और इसके लिए मुक्ता जडे हुए नारियल, बहुमूल्य हीरा मोती और दो सजे हुये हाथी तथा दस घोडे राजकुमार अजित के पास भेजे गये।

औरङ्गजेब अपने हृदय को शान्ति देने के लिए अनेक प्रकार की बाते सोच
स्वभाव से षडयन्त्रकारी था और सच्चाई की अपेक्षा वह षड़यन्त्रो पर अधिक विश्वास
भयानक कठिनाइयो के समय उसने षड़यन्त्रो के द्वारा अपने जीवन मे सफलता पायी थी
समय भी उन्ही का आश्रय लिया और तहब्बर खाँ के साथ उसने साजिश शुरू की।
अत्यन्त गुप्त रूप से उसके पास सन्देश भेजा कि यदि वह शाहजादा अकबर को हमारे सि
तो उसे बहुत बडा पुरस्कार मिलेगा।

तहब्बर खाँ ने उस सन्देश पर विश्वास कर लिया और उसने रात मे छिपे तौर
से मुलाकात की और उसके बाद उसने राठौर को एक पत्र भेजा। उसमे उसने लि
लोगो के साथ जो अकबर की सन्धि हुई थी, उसमे मैं गाँठ के रूप मे था। जिस बाँ
दो भाग कर दिये थे, वह बाँध टूट गया है। बाप और बेटा मिलकर एक हो गये हैं।
सन्धि की समस्त बाते अब खत्म हो जाती है और मैं उम्मीद करता हूँ कि आप लो
चले जायेगे।"

तहब्बर खाँ ने यह पत्र लिखकर तैयार किया। उसने उस पर अपनी मुहर
दूत के द्वारा उस पत्र को राठौरो के पास भेज कर वह औरङ्गजेब के पास पहुँचने के
हुआ। औरङ्गजेब का काम पूरा हो चुका था। उसने समझ लिया कि इस प्रकार के प
के साथ राठौरो का जो सम्बन्ध कायम हुआ है, वह खत्म हो जायगा। उसने लम्बा
के वादे पर यह काम सेनापति तहब्बर खाँ से लिया था। सेनापति के पहुँचने के पहले ह
ने सोच डाला : "मैंने अपनी मरजी के मुताबिक पत्र लिखवाकर तहब्बर खाँ से राठ
भिजवा दिया है। शाहजादा के साथ राठौरो की सन्धि का बहुत कुछ कारण यह सेनापति
था। इसलिए इसको पुरस्कार तो मिलना ही चाहिए। पुरस्कार लेने के लिए ही इस स
खाँ औरङ्गजेब के पास गया था। उसके सामने आते ही औरङ्गजेब के एक अधिकारी ने अप
से उसको गरदन को काट कर जमीन पर गिरा दिया। उसके बाद ही आधी रात को
का पत्र लेकर दूत राठौरो के पास पहुँचा। उसने वह पत्र उनको दे दिया और साथ
बताया कि तहब्बर खाँ मारा गया।

उस पत्र और समाचार से राठौर आश्चर्य चकित हो उठे। शाहजादा अकब
राठौरो के डेरो से बहुत दूर न था। इसीलिए वह समाचार शाहजादा के डेरे मे भी
उप पत्र और समाचार से एक साथ गड़बड़ी पैदा हुई। राठौरो ने अकबर से मिलकर
की चेष्टा न की और वे तुरन्त अपने डेरे को उठा कर अकबर के डेरे से बीस मील के
चले गये।

राठौरों और शाहजादा अकबर के डेरे एक दूसरे के करीब थे। लेकिन राठौरो
के सम्बन्बध मे कुछ भी जाँच न की। उस पर उन्होने एक साथ विश्वास कर लिया औ
वहाँ से कुछ दूरी पर चले गये। राठौरो के चले जाने के बाद शाहजादा की फौज भी भाँ
लगी। शाहजादा अकबर अपनी बेगम के साथ था। उसके आने के पहले ही उसकी फौज
तोड़कर उस स्थान से रवाना हो गयी।

दूसरे दिन सवेरे शाहजादा अकबर ने सेनापति तहब्बर खाँ के मारे जाने और
अपनी सेना के यहाँ से भाग जाने का समाचार सुना। उसकी समझ मे वह रहस्य न अ
पहले उसने अपनी फौज को खोजा। उस समय उसके साथ एक हजार सैनिक भी न र

सम्वत् १७६१ मे मुगलो का सौभाग्य सूर्य पश्चिम मे पहुँच कर अपने अस्त होने का प्रदर्शन करने लगा। औरङ्गजेब ने मुगल राज्य के सिंहासन पर बैठाकर हिन्दुओ के साथ जितने अमानुषिक अत्याचार किये थे, उनके अन्त होने का समय लोगो को साफ-साफ दिखायी देने लगा। मुरशिदकुली खाँ इधर कुछ दिनो से मारवाड का शासक था। इस वर्ष उसका पद जाफर खाँ को दिया गया। जाफर खाँ जोधपुर के राठौर सामन्त के पास आया। मोहकमसिंह ने अजित से अप्रसन्न होकर एक पत्र बादशाह के पास भेजा था। वह पत्र अजित को मिला।

मोहकमसिंह को जब यह मालूम हुआ तो वह अत्यन्त भयभीत हो उठा और अपने स्थान से भागकर वह मुगल बादशाह की सेना मे चला गया। अजित को यह अच्छा न मालूम हुआ। उसने राजद्रोही मोहकमसिंह को दण्ड देने का निश्चय किया। उसने युद्ध की तैयारी की और दूनाडा नामक स्थान पर पहुँच कर उसने बादशाह की फौज के साथ युद्ध किया। उस युद्ध से मुगल सेना की पराजय हुई। मोहकमसिंह मारा गया। यह युद्ध सम्वत् १७६२ मे हुआ था।

सम्वत् १७६३ मे इब्राहीम खाँ—जो लाहौर मे बादशाह का सूबेदार था मारवाड होकर गुजरात गया। वहाँ पर उसे शाहजादा आजम से शासन का अधिकार लेना था। चैत मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया को राठौरो ने समाचार सुना कि बादशाह औरङ्गजेब की मृत्यु हो गयी। इस समाचार को सुनकर अजित घोडे पर सवार होकर अपनी सेना के साथ जोधपुर की तरफ रवाना हुआ और वहाँ पहुँचकर राजधानी के तोरण द्वार पर, मारवाड की पुरानी रीति के अनुसार, उसने भैसो का बलिदान किया।

जोधपुर मे अजितसिंह के पहुँचने पर वहाँ की मुगल सेना घबरा उठी। उसका अधिकारी मुगल भयभीत होकर जोधपुर से भाग गया। अजितसिंह ने अपनी सेना के साथ जोधपुर की राजधानी मे प्रवेश किया। राठौर सेना ने मुगल सूबेदार की सम्पूर्ण सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया। इसके साथ-साथ मुसलमानो पर आक्रमण किया और अब तक हिन्दू जाति के साथ जो अत्याचार किये गये थे, उनका पूरी तौर पर बदला लिया।

इस समय जोधपुर के मुसलमानो पर भयानक सकट था कि वे किसी प्रकार अपने प्राणो की रक्षा करना चाहते थे। इसलिये जो भाग सकते थे, वे अपना सब कुछ छोडकर भाग गये और जो न भाग सके, उन्होने अपने प्राणो की रक्षा के लिये हिन्दू वेष धारण किया। बहुतो ने अपनी दाढी मुडवा ली। इतना सब होने पर भी वहाँ के बहुत से मुसलमान भयानक रूप से मारे गये। इसके बाद वहाँ पर अजितसिंह का राजतिलक हुआ।

औरङ्गजेब की मृत्यु हो जाने पर उसके सिंहासन को प्राप्त करने के लिए पुत्रो मे प्रलोभन पैदा हुआ। दक्षिण से आजम, उत्तर से मोअज्जम—दोनो अपनी-अपनी फौजे लेकर रवाना हुये। आगरे मे उन दोनो का भयकर युद्ध हुआ उस युद्ध मे औरङ्गजेब का बडा लडका शाहआलम विजयी होकर मुगल सिंहासन पर बैठा और बहादुरशाह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सिंहासन पर बैठने के बाद उसने सुना कि अजितसिंह ने मारवाड मे मुसलमानो के साथ बडा अत्याचार किया है और उसने मुसलमानो का सब कुछ छीन लिया।

सम्वत् १७६४ मे बरसात के बीत जाने पर नवीन मुगल बादशाह अपनी शक्तिशाली सेना लेकर अजमेर की तरफ रवाना हुआ और अजमेर पहुँचकर उसने भाई बीलडा नामक स्थान पर मुकाम किया। अजितसिंह ने बादशाही फौज का मुकाबिला करने के लिये तैयारी की। औरङ्गजेब

औरङ्गजेब की जब यह चाल भी बेकार हो गयी तो उसने अकबर
रवाना की। उसके आने का समाचार सुनकर वह बहुत भयभीत हुआ। उ
की, 'आशकाये पैदा होने लगी। उसे चिन्तित देखकर दुर्गादास ने सन्तो
आपको किसी प्रकार की चिन्ता नही करना चाहिए। जब तक मैं जिन्दा हूँ
बिगाड नही सकता।"

दुर्गादास ने राजकुमार अजीत की रक्षा का भार सोगनदेव को
लेकर वह दक्षिण की तरफ रवाना हुआ। शाहजादा अकबर की रक्षा के
विश्वासी राजपूतो को नियुक्त किया था, उनका वर्णन कवि कर्णीदान
साथ किया है। उन विश्वस्त राजपूतो मे चम्पावतो की सख्या अधिक
यदु, चौहान, भाटी, देवड़ा, सोनगरा और माँगलिया आदि बहुत से सरद
गये थे। बादशाह ने दुर्गादास की सेना का पीछा किया। उसकी फौज ने
तरफ से घेर लिया। इस दशा मे दुर्गादास ने एक हजार सैनिको को सा
की तरफ का रास्ता छोड़ दिया। औरङ्गजेब ने उसका पीछा किया और
पहुँचा तो उसे उस बात का ख्याल हुआ कि दुर्गादास जालौर की तरफ नही
के दक्षिण तरफ और चम्बल नदी की बायी ओर अकबर को लिये हुए
पहुँच गया है।

इस समय औरङ्गजेब के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह अपने नित्य
भी भूल गया और मन की उलझन मे उसने कुरान को उठाकर फेक दिया
आजम से कहा : "उदयपुर को फतह करने के लिये मैं वहाँ पर रहूँगा। तुम्हा
यह है कि राठौरो पर आक्रमण करके अपने भाई अकबर को गिरफ्तार करो।'

बादशाह औरङ्गजेब ने अजमेर पहुँचने के दस दिनो के बाद अ
और अजमेर मे छोड़ दी और वह स्वय आगे की तरफ रवाना हुआ। दुर्गादा
का भार बहुत विश्वासी राठौरो को सौपा था। इसीलिये बहुत कोशिश करने के
को अजित का पता न मिल सका। वह कहाँ पर किस पर्वत की गुफा मे छिपा
इसका पता तो मारवाड़ के लोगो को भी न था। बहुत से लोग यह जानना
कहाँ है और उसकी रक्षा किस प्रकार हो रही है। परन्तु इन बातो का कोई पता

बादशाह औरङ्गजेब के इन दिनो के सारे अत्याचार मेवाड और मार
अजित के कारण हो रहे थे। वह किसी प्रकार अजित को जीवित नही देखना
जानता था कि मारवाड़ के सरदारो और सामन्तो ने उसके प्राणो की रक्षा
लिया है इसीलिये उसने मारवाड के नौ हजार ग्रामो और नगरो मे भयानक
था और उनको लूटकर तथा आग लगा कर श्मशान बना दिया था। यही अवस
थी। इसलिये कि वहाँ के राणा ने अजित को और उसकी रक्षा करने वाल
आश्रय दिया था। राणा के इस अपराध के बदले औरङ्गजेब ने मेवाड राज्य
और नगरो का भयानक रूप से विनाश किया था। उसके इन अत्याचारो के
राठौर सरदार और सामन्त भयभीत नही हुए और उनकी इस निर्भयता क
दुर्गादास था।

राजाओ के आगे बिछा दी। उस पर पैर रखते हुए दोनो राजा आगे बढे और सामन्त उदयभानु के यहाँ पहुँच गये।

सम्वत् १७६५ के सावन महीने मे मुगलो की परिस्थितियाँ फिर बिगडने लगी। महराबखाँ को जब मालूम हुआ कि अजितसिंह अपनी सेना के साथ लौटकर मारवाड आ गया है तो बहुत भयभीत हुआ। इन्ही दिनो मे तीस हजार राठौरो की सेना ने जोधपुर पहुँचकर उसकी राजधानी को घेर लिया। महराबखाँ ने भयभीत होकर आत्म समर्पण किया। आसकरन के पुत्र ने उस समय उसके प्राणो की रक्षा की। उसके बाद अजितसिंह वहाँ से लौट कर अपनी राजधानी मे आ गया।

राजा जयसिंह अपने राज्य से निकल कर इन दिनो मे सूरसागर के समीप रहने के लिये चला गया था। बरसात के बीत जाने पर कछवाहो के श्रेष्ठ सामन्त अजयमल ने जयसिंह को फिर सिंहासन पर बिठाने का इरादा किया। जयसिंह ने अजितसिंह के साथ सेना लेकर मेडता की तरफ यात्रा की। उन दोनो राजाओ की सेनाओ के मेडता पहुँचने पर दिल्ली और आगरा मे घबराहट पैदा हुई।

अजितसिंह और जयसिंह की सेनायें मेडता से चलकर अजमेर पहुँच गयी। वहाँ का मुगल शासक घबरा उठा और वह ख्वाजा कुतुब मोहम्मदी नाम के एक फकीर की मसजिद मे चला गया और वहाँ से उसने अजितसिंह के पास सन्देश भेजकर अपने प्राणो की रक्षा के लिये प्रार्थना की। उसने दण्ड स्वरूप अजितसिंह को बहुत सी सम्पत्ति दी। इसके बाद अजितसिंह ने आमेर राज्य पर आक्रमण किया। उस राज्य के सभी सामन्त राजा जयसिंह से जाकर मिल गये। आमेर की मुगल सेना के अधिकारी सैयद हुसेन ने बारह हजार मुगलो को लेकर सांभर झील के किनारे अजितसिंह के साथ युद्ध किया।

इस युद्ध मे छै हजार मुगलो के साथ सैयद हुसेन मारा गया। उसकी बाकी सेना युद्ध क्षेत्र से भाग गयी। इस पराजय की खबर पाते ही मुसलमान लोग, सांभर छोडकर इधर-उधर भागने लगे। अजितसिंह ने माघ के महीने मे अपनी एक सेना सांभर मे रखी और आमेर का राज्य उसने जयसिंह को दे दिया। बीकानेर पर आक्रमण करने का पहले से ही इरादा अजितसिंह का था। उसने रघुनाथ भण्डारी को दीवान की उपाधि देकर सांभर का अधिकारी बना दिया और वह अपनी सेना लेकर बीकानेर की तरफ रवाना हुआ।

सम्वत् १७६६ के भादो महीने मे बादशाह शाह आलम ने कामबख्श को मरवा डाला। वह कामबख्श से हमेशा जला करता था। * राजा जयसिंह ने मुगल बादशाह के साथ सन्धि करने के लिये फिर से प्रस्ताव किया। मारवाड के राजा अजितसिंह ने नागौर पर अपनी सेना भेजकर अधिकार कर लिया। नागौर के राजा इन्द्रसिंह ने अजित के सामने आत्म-समर्पण किया। इन्द्रसिंह जसवन्तसिंह के बडे भाई अमरसिंह का लडका था और विश्वासघाती मोहकमसिंह का पिता था। वह अजितसिंह से अप्रसन्न होकर मुगलो से मिल गया था। अजितसिंह ने उसके आत्म-समर्पण करने पर नागौर के स्थान पर लाडनू का अधिकार उसे दे दिया।

---

* कामबख्श औरङ्गजेब का लडका था। वह उसके बुढ़ापे मे एक राजपूत स्त्री से पैदा हुआ था। औरङ्गजेब उससे उससे बहुत प्रेम करता था।

औरङ्गजेब की जब यह चाल भी बेकार हो गयी तो उसने अकबर के विरु
रवाना की। उसके आने का समाचार सुनकर वह बहुत भयभीत हुआ। उसके म
की, 'आशंकाये पैदा होने लगी। उसे चिन्तित देखकर दुर्गादास ने सन्तोष
आपको किसी प्रकार की चिन्ता नही करना चाहिए। जब तक मैं जिन्दा हूँ बाद
बिगाड नही सकता।''

दुर्गादास ने राजकुमार अजीत की रक्षा का भार सोगनदेव को सौपा
लेकर वह दक्षिण की तरफ रवाना हुआ। शाहजादा अकबर की रक्षा के लिये
विश्वासी राजपूतो को नियुक्त किया था, उनका वर्णन कवि कर्णीदान ने
साथ किया है। उन विश्वस्त राजपूतो मे चम्पावतो की सख्या अधिक थी।
यदु, चौहान, भाटी, देवड़ा, सोनगरा और माँगलिया आदि बहुत से सरदार दु
गये थे। बादशाह ने दुर्गादास की सेना का पीछा किया। उसकी फौज ने राठौर
तरफ से घेर लिया। इस दशा मे दुर्गादास ने एक हजार सैनिको को साथ ले
की तरफ का रास्ता छोड़ दिया। औरङ्गजेब ने उसका पीछा किया और जब
पहुँचा तो उसे उस बात का ख्याल हुआ कि दुर्गादास जालौर की तरफ नही आया
के दक्षिण तरफ और चम्बल नदी की बायी ओर अकबर को लिये हुए नर्मदा
पहुँच गया है।

इस समय औरङ्गजेब के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह अपने नित्य के धा
भी भूल गया और मन की उलझन मे उसने कुरान को उठाकर फेक दिया। उ
आजम से कहा : ''उदयपुर को फतह करने के लिये मै वहाँ पर रहूँगा। तुम्हारा स
यह है कि राठौरो पर आक्रमण करके अपने भाई अकबर को गिरफ्तार करो।''

बादशाह औरङ्गजेब ने अजमेर पहुँचने के दस दिनो के बाद अपनी
और अजमेर मे छोड़ दी और वह स्वय आगे की तरफ रवाना हुआ। दुर्गादास ने
का भार बहुत विश्वासी राठौरो को सौपा था। इसीलिये बहुत कोशिश करने के बाद
को अजित का पता न मिल सका। वह कहाँ पर किस पर्वत की गुफा मे छिपा कर
इसका पता तो मारवाड़ के लोगो को भी न था। बहुत से लोग यह जानना चाहते
कहाँ है और उसकी रक्षा किस प्रकार हो रही है। परन्तु इन बातो का कोई पता न ल

बादशाह औरङ्गजेब के इन दिनो के सारे अत्याचार मेवाड और मारवाड़
अजित के कारण हो रहे थे। वह किसी प्रकार अजित को जीवित नही देखना चा
जानता था कि मारवाड़ के सरदारो और सामन्तो ने उसके प्राणो की रक्षा का भा
लिया है इसीलिये उसने मारवाड के नौ हजार ग्रामो और नगरो मे भयानक अ
था और उनको लूटकर तथा आग लगा कर श्मशान बना दिया था। यही अवस्था उ
थी। इसलिये कि वहाँ के राणा ने अजित को और उसकी रक्षा करने वालो को
आश्रय दिया था। राणा के इस अपराध के बदले औरङ्गजेब ने मेवाड राज्य के दस
और नगरो का भयानक रूप से विनाश किया था। उसके इन अत्याचारो के कार
राठौर सरदार और सामन्त भयभीत नही हुए और उनकी इस निर्भयता का का
दुर्गादास था।

मारवाड के राठौर दुर्गादास की तरह स्वाभिमानी और चरित्रवान व्यक्ति ससार की अन्य जातियो मे बहुत कम मिलेगे। उसने मृत्यु का सामना करके जसवन्तसिह के पुत्र शिशु अजित के प्राणो की रक्षा की। सम्पत्ति और राजा के बडे से बडे प्रलोभन भी कर्त्तव्य परायणता से उसको डिगा न सके थे। राजस्थान के राजपूतो ने अपने जिस कर्त्तव्य का परिचय दिया है, उसकी तुलना मे अन्य जातियो के इतिहास से उदाहरण निकाल कर उपस्थित करना एक व्यर्थ का प्रयास मालूम होता है। बादशाह औरङ्गजेब के साथ राठौरो की जो शत्रुता चल रही थी, उसको यहाँ पर लिखने की आवश्यकता नही है। औरङ्गजेब का लडका शाहजादा अकबर विद्रोही हो गया। उस समय षडयन्त्रकारी और निर्दय पिता से बचने की उसे आशा न रह गयी। उसे चारो तरफ अन्धकार दिखाई देने लगा। उसका कोई अपना न रहा, जो उस सकट के समय उसकी सहायता करता और औरङ्गजेब से उसके प्राणो की रक्षा हो सकती। उस समय शाहजादा अकबर ने मुगलो के परम शत्रु राठौरो का आश्रय लिया और उन राठौरो ने भयानक सघर्षों का सामना करके शाहजादा अकबर के प्राणो की रक्षा की।

शाहजादा अकबर के सिलसिले मे उसके परिवार की रक्षा का उत्तरदायित्व राठौरो को सौपा गया। बहुत समय तक अकबर का परिवार राठौरो के आश्रय मे रहा। उन दिनो मे उसके परिवार को जो सम्मान प्राप्त हुआ, उनको लिखकर प्रकट करना सम्भव नही है। अकबर की एक लडकी थी। उसने यौवनवस्था मे प्रवेश किया था। उसके सम्बन्ध मे बादशाह औरङ्गजेब को जो चिन्तायें हुई थी और उस नवयुवती शाहजादी को राठौरो के आश्रय से निकालने के लिये औरङ्गजेब ने जो प्रयास किये थे, उनका उल्लेख पृष्ठो मे किया जा चुका है। वह शाहजादी राठौरो के आश्रय मे कितनी सुरक्षित रही थी और किस मान-मर्यादा से साथ उसका उन दिनो का जीवन व्यतीत हुआ था। उस पर यहाँ कुछ लिखने की आवश्यकता नही मालूम होती। उस सरक्षण और श्रेष्ठ सम्मान का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि उस शाहजादी को राठौरो के अधिकार से निकालने के लिये जब बादशाह औरगजेब के सारे प्रयत्न असफल हो गये तो उसने राठौर के साथ मित्रता की। उस समय राठौरो ने उस शाहजादी को लाकर बादशाह औरङ्गजेब को सुपुर्द कर दिया। शाहजादी को पाकर और उसके मुख से अजितसिह, दुर्गादास और दूसरे राठौरो की प्रशसा सुनकर बादशाह औरङ्गजेब ने दुर्गादास की भूरि-भूरि प्रशसा की और उसने राठौरो के निर्मल चरित्र को बार-बार स्वीकार किया। वास्तव मे चरित्र उसी का श्रेष्ठ है जिसकी श्रेष्ठता और निर्मलता उसके शत्रुओ को भी स्वीकार करनी पडती है। दुर्गादास का जीवन राजपूतो के चरित्र का एक उदाहरण है। दुर्गादास लूनी नदी के किनारे दूनाडा का एक सामन्त था। उसकी प्रस्तर मूर्ति आज भी उसके श्रेष्ठ गौरव का परिचय देती है।

अजितसिंह के श्रेष्ठ पुत्र अभयसिह की जन्मपत्री मे ४, ८, १०, ११ और १२ अको के घर धन, सन्तान एवम् भाग्य का सकेत करते है। ८ मे सूर्य और बुध का प्रभाव है। १० मे केतु है। घरो पर राहु और केतु—दोनो अशुभ है। सौभाग्य के घर पर मगल और राजभवन मे शनि तथा वृहस्पति का अधिकार है। अभयसिह की यह जन्मपत्री शुभ और अशुभ—दोनो प्रकार के लक्षण प्रकट करती है।

साथ युद्ध करने की तैयारी की। उसने मेडता के करीब दोवान आसद खाँ की से
किया। विट्ठलदास का बेटा अजबसिह उस युद्ध मे मारा गया। यह युद्ध सम्वत् १७
२ को हुआ था। इस युद्ध मे शाहजादा आजम असद खाँ के साथ था। इनायतखाँ
लगा और उसकी फौज जोधपुर के आस-पास भयानक अत्याचार करने लगी।

इनायतखाँ के इस अत्याचार को रोकने के लिये चन्द्रावल का अधिकारी
बख्शी उदयसिह और दुर्गादास का बेटा तेजसिह राठौर सेना के साथ रवाना हुआ
रामसिह शाहजादा अकबर के साथ दक्षिण गये थे। वहाँ पर शाहजादा को छोडकर
वत की सहायता करने के लिये आ गये। इनके अतिरिक्त और भी बहुत से राज
युद्ध करने के लिये राठौर सेना मे पहुँच गये। ये लोग मेवाड के कुछ नगरो मे फैल
मुगल अधिकारी कासिमखाँ को उन लोगो ने मार डाला।

इन दिनो मे राठौरो की शक्तियाँ बहुत क्षीण हो गई थी और वे अब
सेना के साथ युद्ध करने के योग्य न रह गये थे। इसलिये उनको पहाडो पर ज
पडा। वे निर्बल हो गये थे। इसलिये वे पहाडो के ऊपर दुर्गम स्थानो मे छिपे
पाकर एकाएक शत्रुओ पर आक्रमण करके उन्हे भीषण रूप से क्षति पहुँचाने थे
बाद वे सब लोग भाग कर फिर पहाडो पर चले जाते थे।

इस प्रकार की परिस्थितियो मे राठौरो के कई महीने बीत गये। उन्होने ए
रूप से मुगलो की उस सेना पर आक्रमण किया, जो जेतारन नामक स्थान प
राठौरो के अचानक आक्रमणो से मुगल सेना का भयानक विनाश हुआ। उसके
भागकर अपने पहाडी स्थानो पर चले गये। इस प्रकार के आक्रमण करके सम्वत् १
ने अपनी शक्तियाँ पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत बना ली। इन्ही दिनो मे चम्प
ने सोजत का दुर्ग जीतकर अपने अधिकार मे कर लिया और राजपूतो की एक सेना
ने मुगलो के साथ एक युद्ध किया। मिर्जा नूर अली नाम का एक मुसलमान चेरई
था। राठौरो ने उस पर आक्रमण किया और तीन घन्टे के युद्ध मे हजारो मु
मारे गये।

चम्पावत उदयसिह और मेडता के मोहकमसिह ने जेतारन के युद्ध में एक र
भेजा था। उसके लौटने पर वे दोनो गुजरात की तरफ रवाना हुए और खेराल न
गुजरात के अधिकारी सैयद मोहम्मद का उन्हे सामना करना पडा। मुस्लिम
राठौरो को घेर लिया। परन्तु रात हो जाने के कारण युद्ध नही हुआ। सवेरा होते
के लोग आगे बढे और युद्ध आरम्भ हो गया। भाटी गोकुलदास अपने बहुत से आ
मारा गया। रामसिह ने सैयद मोहम्मद की सेना के साथ भयानक युद्ध किया। प
भी मारा गया। इस युद्ध मे राठौरो के सैनिक और सामन्त अधिक मारे गये।
मुसलमानो की हुई।

इसी वर्ष भादो के महीने मे मुगल सेना ने पाली नगर पर आक्रमण कि
राठौरो ने पांच सौ मुगलो को युद्ध मे पराजित किया। उनका सेनापति अफजलखाँ
युद्ध मे राठौरो की तरफ से जिसने भीषण युद्ध किया था और मुगलो को भगा
उसका नाम बल्लू था।

उन्तालीसवाँ परिच्छेद

मुगल सिहासन पर बहादुरशाह—मुगलो मे आपसी विद्रोह—जोधपुर मे मुगलो का आक्रमण—दिल्ली दरबार मे अभयसिह—बादशाह के साथ अजितसिह का मेल—मारवाड की उन्नति—अजित-सिह का वैभव—सैयद बन्धुओ की घबराहट—अजितसिह की गुप्त सन्धि—बादशाह के द्वारा अजित सिह का सम्मान—दिल्ली की अस्थिर अवस्था—मुगलो के महलो पर सङ्कट—मुगल राज्य मे अजित सिह के अधिकार—मुगल दरबार मे कलह—अजमेर के दुर्ग पर राठौर पताका—मुगलो की लगातार पराजय—साहसी अभयसिह—अजित की मृत्यु—अजित और दुर्गादास ।

सम्वत् १७६८ मे बादशाह बहादुरशाह ने अजितसिह को कैलाश पर्वत के विद्रोही सामन्तो को दमन करने और नाहन प्रदेश पर अधिकार करने के लिये भेजा । अजितसिह अपनी शक्तिशाली सेना लेकर बादशाह की तरफ से रवाना हुआ और नाहन प्रदेश मे जाकर उसने विद्रोहियो को पराजित किया । वहाँ से विजयी होकर लौटने पर अपनी सेना के साथ अजितसिह ने गगा का स्नान किया और दान-पुण्य करके वसन्त ऋतु मे वह अपनी राजधानी लौट आया ।

सम्वत् १७६६ मे मुगल बादशाह की मृत्यु हो गयी । उसके लड़को में सिहासन पर बैठने का अधिकार प्राप्त करने के लिये आपस मे विद्रोह हुआ । उस विद्रोह मे अजीमुस्शान मारा गया । और मुईजुद्दीन सिहासन पर बैठा । उस समय मारवाड के राजा अजितसिह ने बहुमूल्य उपहार के साथ भण्डारी खीमसी को नये बादशाह के पास भेजा । उस उपहार को पाकर नवीन मुगल बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने अजितसिह को गुजरात का शासक बना दिया ।

सम्वत् १७६९ के माघ महीने मे अजितसिह ने अहमदाबाद पर अधिकार करने के लिये अपनी सेना तैयार की । परन्तु इन दिनो मे मुगल सिहासन का फिर झगडा पैदा हुआ । दोनो सैयद भाइयो ने बादशाह मुईजुद्दीन को मार कर वहाँ के राजसिहासन पर फर्रुखसियर को बिठाया ।

उन्ही दिनो मे जुलफिकार खाँ भी मारा गया । इसके फलस्वरूप मुगलो की शक्ति बहुत कमजोर पड गयी । दोनो सैयद भाइयो ने मुगल दरबार मे अपना आधिपत्य कायम किया । बादशाह फर्रुखसियर ने सैयद बन्धुओ के परामर्श से अजितसिह के पास सन्देश भेजा कि आप अपने बेटे अभयसिह को राठौर सेना के साथ बहुत शीघ्र दिल्ली भेजिये अभयसिह की अवस्था इस समय सत्रह वर्ष की थी । इसी मौके पर अजितसिह को मालूम हुआ कि विश्वासघाती नागौर का राजा मुकुन्द मुगल दरबार मे रहा करता है और बादशाह उसके प्रभाव मे भी है । * इसलिये अजितसिह ने उस विश्वासघाती को ससार से विदा करने के लिये अपने कुछ विश्वस्त आदमियो को दिल्ली भेज

* इस मुकुन्द को मूल पुस्तक मे कही-कही पर मोकाम लिखा गया है । उसका सही नाम मोहकमसिह है ।—अनु०

हुई । अन्त मे मोहम्मद अली ने राठौरो से युद्ध बन्द करने की प्रार्थना की
सन्धि हुई ।

राठौरो ने युद्ध बन्द कर दिया था और मोहम्मद अली के साथ उनकी जो
उससे वे निश्चिन्त हो गये । उनको असावधान देखकर मोहम्मद अली ने सन्धि
राठौर सेनापति पर आक्रमण किया और धोखे से उसे मार डाला । मुसलमानो के
का प्रभाव राठौरो पर बहुत बुरा पडा । उसका बदला लेने के लिये राठौरो ने इ
आक्रमण आरम्भ कर दिये । सुजानसिंह राठौर सेना को लेकर दक्षिण की तरफ च
पुर मे जो मुस्लिम सेना मौजूद थी, उसके साथ राजपूतो के सघर्ष आरम्भ हुए । सु
जाने पर सेनापति सग्रामसिंह युद्ध के लिये तैयार हुआ । *

संग्रामसिंह उन दिनो मे मनसब के पद पर था । उसको एक जागीर मिली
युद्ध की तैयारी की । शूरवीर राठौर उसके झण्डे के नीचे आकर एकत्रित हुए ।
अपनी सेना लेकर शिवांणची पर आक्रमण किया और उसके साथ-साथ बालोतरा
लूटमार की ।

उदयभानु जोधावत सेना के साथ भाद्राजून के सम्मुख पहुँचा और उसने वह
करके शत्रुओ का धन-दौलत लूटकर उनके खाने-पीने की सामग्री अपने अधिकार मे
के मुसलमानो ने सामना किया । परन्तु वे लड न सके और जोधावत सैनिको ने
पराजित किया ।

पुरदिल खाँ ने सिवाना और नाहर खाँ ने मेवाटी तथा कुकारी पर अधिकार
इसलिये उन पर आक्रमण करने के लिये चम्पावत लोग मुकुलदर नाम के स्थान
उसी अवसर पर उन्हे समाचार मिला कि नूरअली, अखानी खानदान की स्त्रियो को
ले गया है । यह सुनते ही रतनसिंह राठौर सेना को लेकर रवाना हुआ । उसने कुना
पर पहुँच कर पुरदिल खाँ पर आक्रमण किया । पुरदिल खाँ के साथ छै सौ लडाकू सै
से बहुत से सैनिको के साथ पुरदिल खाँ मारा गया । उस लडाई मे राठौरो के केवल
मारे गये । इस पराजय को सुनते ही मिरजा दोनो अपहृत स्त्रियो को लेकर थोडा
और कोचाल मे पहुँच कर उसने मुकाम किया ।

इस समाचार को सुनकर आसकर्ण के पुत्र सबलसिंह ने अपनी सेना को
अफीम खाकर मुस्लिम सेनापति के साथ युद्ध करने के लिये वह रवाना हुआ । दोनो
काट आरम्भ हुई । उस लडाई मे भाटी सरदार मारा गया ।

धीरे-धीरे सम्वत् १७४१ भी समाप्त हो गया । इन दिनो मे हिन्दू मुसलमान
बढे थे, उनमे किसी प्रकार कमी न आई । इसके पश्चात् सम्वत् १७४२ आरम्भ
के आरम्भ मे लाखावतो और आशावतो ने सांभर पहुँच कर मुसलमानो के साथ
तैयारियाँ की । कुछ दूसरे सामन्तो मे गोडवाड से निकल कर अजमेर के मुसलमान

* सग्रामसिंह जुझारसिंह का बेटा था । वह मुगल बादशाह के यहाँ
नौकरी छोडकर राठौरो के साथ आकर मिल गया था ।

परिस्थितियो मे जकड़ जाने के कारण उसको ऐसा करना पडा था। ऐसा न करने पर उसका सर्वनाश उसके नेत्रो के सामने था। इसलिये जो अपराध उसे करना चाहिए था उसके लिये उसे तैयार होना पडा। परन्तु उसके साथ-साथ उसने अपने मन में मुगल बादशाहत के सम्बन्ध मे जो निर्णय कर लिये थे, उनके अनुसार वह सैयद बन्धुओ से जाकर मिल गया।

अजितसिंह मुगल बादशाह के साथ बहुत समय कठपुतली बनकर रहा। इसके कारण राजस्थान के राजपूतो की दृष्टि मे उसकी मर्यादा भङ्ग हो गयी। परन्तु वह क्या कर रहा था, इसे वह स्वय जानता था। उसने नौरोजा के उत्सव मे राजपूत स्त्रियो और राजकुमारियो का जाना बन्द कराया। राजपूत लडकियो के बादशाह के साथ होने वाले विवाहो मे रोक लगायी। गोहत्या बन्द कराने की चेष्टा की। हिन्दुओ से विरुद्ध जजिया कर का विरोध किया। इन सब बातो के साथ-साथ बादशाह ने यह भी स्वीकार किया कि हिन्दुओ के मन्दिरो मे बराबर शखध्वनि होगी। हिन्दुओ के धार्मिक कार्यों मे किसी प्रकार की बाधा नही पैदा की जायगी। अजितसिंह ने इन सब बातो के साथ अपने राज्य की सीमा की भी वृद्धि की।

सम्वत् १७१२ के जेठ महीने में मुगल बादशाह ने अजितसिंह को गुजरात का शासक नियुक्त किया। इसके पश्चात् अजित दिल्ली छोडकर जोधपुर चला गया। जजिया कर से हिन्दुओ को मुक्त दी गयी। इसका प्रभाव सम्पूर्ण हिन्दू-समाज पर पडा और सभी लोगो ने अजितसिंह की प्रशसा की।

इस वर्ष अजितसिंह ने अपने राज्य मे अनेक प्रकार के परिवर्तन किये। वह अपने पुत्र अभय सिंह को साथ मे लेकर राज्य के सभी हिस्सो मे घूमा। सबसे पहले वह जालोर में गया और वही पर रहकर उसने बरसात के दिन व्यतीत किये। शरद ऋतु के आते ही अजितसिंह ने अपनी सेना लेकर मेवासा से आबू और सिरोही के देवड़ा लोगो पर आक्रमण किया और नीमाज पर अधिकार करते ही देवड़ा लोगो ने आत्म-समर्पण किया और उसकी आधीनता स्वीकार कर ली। उन लोगो ने कर देना आरम्भ कर दिया।

इन्ही दिनो मे पालनपुर से फीरोजखाँ ने आकर अजितसिंह से भेंट की और उसको बहुत सम्मान दिया। थिराड का राजा अजितसिंह को कर के रूप मे वर्ष मे एक लाख रुपये दिया करता था। कलवी लोगो के नेता क्षेमकर्ण ने भी उसकी आधीनता मजूर की। शक्तावत, चम्पावत और विजय भडारी शासन की व्यवस्था ठीक करने के लिए एक वर्ष पहले पाटन भेजे गये थे। वे सब वहाँ से आकर अजितसिंह से मिले।

सम्वत् १७७३ मे अजितसिंह ने हलवद के झाला को पराजित किया और उसको अधीन बनाकर उसने नवागनर के जाम लोगो पर आक्रमण किया। वे लोग शूरवीर और पराक्रमी थे। उनको अजितसिंह की शरण मे आना पडा। उन्होंने कर मे तीन लाख रुपये और पच्चीस युद्ध की प्रसिद्ध घोडियाँ देकर अजितसिंह को प्रसन्न किया। इस प्रकार अपने राज्य को शक्तिशाली बनाकर अपनी सेना के साथ अजितसिंह द्वारिका चला गया। वहाँ की तीर्थयात्रा करके वह जोधपुर की राजधानी लौट आया।

अजितसिंह ने जोधपुर आकर सुना कि इन्द्रसिंह ने, इन दिनो मे नागौर पर अधिकार कर लिया है। उसने उसी समय अपनी सेना तैयार की और नागौर पहुँचकर उसने इन्द्रसिंह को राज सिंहासन से उतार दिया।

आरम्भ हुआ। अन्त मे सरदारो ने उसके पास सन्देश भेजा: जब तक हम राजकुमा
लेगे, हम सबको सन्तोष न मिलेगा और न हम सबको खाना-पीना अच्छा लगेगा।'

सरदारो के इस आग्रह को मुकुन्द टाल न सका। उनकी बात उसे स्वीकार
सरदारो और मुकुन्द के बीच इस समय जो निर्णय हुआ, उसके अनुसार उत्सुक सामन्त
आबू पहाड़ को रवाना हुये। कोटा राज्य का हाडा राजा दुर्जनशाल भी उनके साथ
साथ दो हजार सैनिक सवार साथ थे। सम्वत् १७४३ के चैत्र के महीने की अन्तिम तिथि
और सरदारो ने राजकुमार अजित के दर्शन किये। उस समय आबू पर्वत के उस र
पर, जहाँ पर राजकुमार अजित ने अब तक पालन पोषण पाया था उदयसिंह, मग्रा
पाल, तेजसिंह, मुकुन्दसिंह और नाहरसिंह आदि चम्पावत और रामसिंह, जगतसिंह औ
आदि कुम्पावत सरदार उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त पुरोहित खीवी-मुकुन्द, परिहार अ
यती ज्ञान विजय भी वहाँ पर मौजूद थे।

अच्छे मुहूर्त्त मे राजकुमार अजित सबके सामने लाया गया। उसको देख
बडी प्रसन्नता हुई। सबसे पहले हाडाराव ने राजकुमार को अभिवादन किया।
सभी सामन्तो ने अभिवादन करते हुये राजकुमार को स्वर्ण, मणि, मुक्ता और घोडे
उस समय जो लोग वहाँ पर उपस्थित थे इस समय का दृश्य देखकर, परम सतोष
रहे थे।

इनायतखाँ के द्वारा यह समाचार औरङ्गजेब को मालूम हुआ। मुगल दरबा
होकर सेनापति इनाइत खाँ ने ऊँचे स्वर मे बादशाह से कहा, 'जहाँपनाह, राजा के अ
लोगो ने अब तक आपके साथ-युद्ध किया है वे अपने राजा की उपस्थिति मे क्या क
आप अनुमान लगा सकते है। मेरे ख्याल से अब इन लोगो को शिकस्त देने के लि
बहुत बडी फौज की जरूरत है। इसके बिना आपका काम नही चल सकता।''

सन्तोष और सुख को अनुभव करते हुये राठोर सरदार राजकुमार अजित
ले गये। वहाँ के राजा ने धूम-धाम के साथ राजकुमार का स्वागत किया और ब
जवाहिरात के साथ उसने बहुत से घोडे भेट मे दिये। उस सामन्त राजा के दुग मे अ
अजितसिंह का स्वागत सत्कार किया गया और उसी स्थान पर टीका दौड की
की गयी।

इसके बाद राजकुमार ने सबके साथ वहाँ से प्रस्थान किया। मार्ग मे रायपुर,
बारोद मिले। वहाँ के सरदारो ने स्वागत के साथ-साथ राजकुमार को भेटे दी। इस
कुमार आसोप दुर्ग मे पहुँचा। वहाँ पर कुम्पावत सरदार ने उसका बहुत सत्कार किया
भाटी सरदार की जागीर लवेरा-लवेरा, से मेडता, फिरारियाँ और रियाँ से करमसोतो
खीमसर मे पहुँच कर उसने वहाँ के सरदारो का स्वागत स्वीकार किया। इस प्रका
अजित अपने साथियो के साथ, अनेक स्थानो मे पहुँचा। प्रत्येक स्थानो पर उसका स
किया गया और सभी लोगो ने उसके झण्डे के नीचे आने के लिये वचन दिया।
पाबूराव धाधल के निवास स्थान कोलूनगर मे पहुँचा। वहाँ पर पाबूराव ने अपनी सेना
किया। इसके पश्चात् सम्वत् १७४४ के भादो मास मे राजकुमार पोकरण पहुँचा। व
से लौटे हुये दुर्गादास ने राजकुमार से भेट की।

परिस्थितियो मे जकड जाने के कारण उसको ऐसा करना पडा था। ऐसा न करने पर उसका सर्व-नाश उसके नेत्रो के सामने था। इसलिये जो अपराध उसे करना चाहिए था उसके लिये उसे तैयार होना पड़ा। परन्तु उसके साथ-साथ उसने अपने मन मे मुगल बादशाहत के सम्बन्ध मे जो निर्णय कर लिये थे, उनके अनुसार वह सैयद बन्धुओ से जाकर मिल गया।

अजितसिंह मुगल बादशाह के साथ बहुत समय कठपुतली बनकर रहा। उसके कारण राजस्थान के राजपूतो की दृष्टि मे उसकी मर्यादा भङ्ग हो गयी। परन्तु वह क्या कर रहा था, इसे वह स्वय जानता था। उसने नौरोजा के उत्सव मे राजपूत स्त्रियो और राजकुमारियो का जाना बन्द कराया। राजपूत लडकियो के बादशाह के साथ होने वाले विवाहो मे रोक लगायी। गोहत्या बन्द कराने की चेष्टा की। हिन्दुओ से विरुद्ध जजिया कर का विरोध किया। इन सब बातो के साथ-साथ बादशाह ने यह भी स्वीकार किया कि हिन्दुओ के मन्दिरो मे बराबर शंखध्वनि होगी। हिन्दुओ के धार्मिक कार्यों मे किसी प्रकार की बाधा नही पैदा की जायगी। अजितसिंह ने इन सब बातो के साथ अपने राज्य की सीमा की भी वृद्धि की।

सम्वत् १७१२ के जेठ महीने में मुगल बादशाह ने अजितसिंह को गुजरात का शासक नियुक्त किया। इसके पश्चात् अजित दिल्ली छोडकर जोधपुर चला गया। जजिया कर से हिन्दुओ को मुक्त दी गयी। इसका प्रभाव सम्पूर्ण हिन्दू-समाज पर पडा और सभी लोगो ने अजितसिंह की प्रशसा की।

इस वर्ष अजितसिंह ने अपने राज्य मे अनेक प्रकार के परिवर्तन किये। वह अपने पुत्र अभय सिंह को साथ मे लेकर राज्य के सभी हिस्सो मे घूमा। सबसे पहले वह जालोर में गया और वही पर रहकर उसने बरसात के दिन व्यतीय किये। शरद ऋतु के आते ही अजितसिंह ने अपनी सेना लेकर मेवासा से आबू और सिरोही के देवड़ा लोगो पर आक्रमण किया और नीमाज पर अधिकार करते ही देवड़ा लोगो ने आत्म-समर्पण किया और उसकी आधीनता स्वीकार कर ली। उन लोगो ने कर देना आरम्भ कर दिया।

इन्ही दिनो मे पालनपुर से फीरोजखाँ ने आकर अजितसिंह से भेट की और उसको बहुत सम्मान दिया। थिराड का राजा अजितसिंह को कर के रूप मे वर्ष मे एक लाख रुपये दिया करता था। कलबी लोगो के नेता क्षेमकर्ण ने भी उसकी आधीनता मंजूर की। शक्तावत, चम्पावत और विजय भडारी शासन की व्यवस्था ठीक करने के लिए एक वर्ष पहले पाटन भेजे गये थे। वे सब वहाँ से आकर अजितसिंह से मिले।

सम्वत् १७७३ मे अजितसिह ने हलवद के झाला को पराजित किया और उसको अधीन बनाकर उसने नवागनर के जाम लोगो पर आक्रमण किया। वे लोग शूरवीर और पराक्रमी थे। उनको अजितसिंह की शरण मे आना पडा। उन्होंने कर मे तीन लाख रुपये और पच्चीस युद्ध की प्रसिद्ध घोडियाँ देकर अजितसिह को प्रसन्न किया। इस प्रकार अपने राज्य को शक्तिशाली बनाकर अपनी सेना के साथ अजितसिह द्वारिका चला गया। वहाँ की तीर्थयात्रा करके वह जोधपुर की राज-धानी लौट आया।

अजितसिह ने जोधपुर आकर सुना कि इन्द्रसिंह ने,इन दिनो मे नागौर पर अधिकार कर लिया है। उसने उसी समय अपनी सेना तैयार की और नागौर पहुँचकर उसने इन्द्रसिंह को राज सिंहासन के उतार दिया।

सम्वत् १७४७ में सफीखाँ अजमेर का सूबेदार बनाया गया। दुर्गादास ने उस करने की तैयारी की। सफीखाँ एक पहाडी मैदान मे अपनी सेना के साथ पहुँच गया। उस पर जोरदार आक्रमण किया और उसे मारकर अजमेर की तरफ भाग दिया।

इस प्रकार लगातार पराजय के समाचार बादशाह औरङ्गजेब को मिले। उसने लिखा : "अगर तुम दुर्गादास को परास्त कर सके तो मै अपने यहाँ तुमको सम्मानपूर्ण और यदि तुम खुद पराजित हुये तो तुमको पदच्युत करके अपमानित किया जायगा।"

बादशाह का यह तरीका देखकर सफीखाँ बडी परेशानी मे पड गया और भय अपने सम्मान की रक्षा के लिये वह तरह तरह के उपाय सोचने लगा। अन्त मे उसने अजित के साथ षडयन्त्र रचने की चेष्टा की और राजकुमार को लिखा "आप का पैतृक करने के लिये बादशाह की तरफ से मुझे अधिकार मिला है। इसलिये आप आकर मु जिससे मैं बादशाह के हुक्म की पाबन्दी कर सकूँ।"

सफीखाँ का यह पत्र पाकर बीस हजार राठौर सेना के साथ राजकुमार अजित तरफ रवाना हुआ। रास्ते मे उसे सफीखाँ पर कुछ सदेह पैदा हुआ। इसलिये उसकी अ समझने के वास्ते उसने चम्पावत मुकुन्ददास को रवाना किया और वह स्वय अपनी सेन रास्ते मे रुका रहा। पर्वत श्रेणी के आगे बढकर कुछ दूर जाने पर मुकुन्ददास को शत्रु के पता चल गया। उसने लौटकर राजकुमार अजित को सभी बाते बतायी। परन्तु राज भयभीत न हुआ। उसने अपने सरदारो से बातीचत करते हुये कहा : "जब हम लोग आ गये हैं तो अजयदुर्ग पर पहुँचकर हमे सफीखाँ का रंग-ढङ्ग देख लेना चाहिये।"

इस प्रकार निर्णय करके राजकुमार अपनी सेना के साथ आगे बढा। सफीखाँ सेना के आने का समाचार मिला। वह घबरा उठा और अपनी कमजोरी को समझ कर रक्षा का उपाय सोचने लगा। उसने बहुत सी सम्पत्ति और घोडो को साथ मे लेकर अजित के पास पहुँचा और उन्हे भेट मे देकर उसने अधीनता स्वीकार की।

सवत् १७४८ का वर्ष आरम्भ हुआ इन दिनो मे राणा के विरुद्ध मेवाड मे वि राजकुमार अमर अपने पिता राणा जयसिंह को सिंहासन से उतार कर उस पर बैठ था। मेवाड राज्य के सभी सामन्तो और सरदारो ने राजकुमार अजित का साथ दिया कर राणा जयसिंह भयभीत हो उठा और वह घबरा कर गोडवाड राज्य मे भाग घाणेराव मे सेना का सगठन करने लगा। अमर ने उस पर आक्रमण करने की तैयारी जयसिंह घबरा उठा। अपनी इस विपद मे उसने राठौरो से सहायता माँगी। राजकुमार राणा की सहायता करने का निश्चय किया। उसने तुरन्त मेडतिया लोगो को राणा की लिये भेजा और उसके बाद उसने दुर्गादास और भगवानदास को रवाना किया। दुर्गादास ने रिडमल्ल और मारवाड के आठ सामन्तो को लेकर राणा की सहायता के लिये यात्रा क उसके पहुँचने के पहले हो चूडावत, शक्तावत, झालावत और चौहानो ने पिता-पुत्र के विद्रो कर दिया था।

इन दिनो मे राठौरो का साहस और बल जिस प्रकार बढ रहा था, वह औ छिपा न था। इन दिनो मे औरङ्गजेब की चिन्ता का और भी कारण था। बर की लड़की दुर्गादास के आश्रय मे थी। वह अब बड़ी हो गई थी। उसके सम्बन्ध

की म्यान मे ढकी हुई तलवार किरिच, हीरो के सिरपेच, दो कीमती मोतियो की मालाये और बहुमूल्य हीरा-जवाहिरात बादशाह फर्रुखसियर ने उपहार मे अजितसिंह को दिये। इसके पश्चात् अबदुल्ला खाँ ने बड़े आदर के साथ अजित का स्वागत किया। इस प्रकार के स्वागत-सत्कार के समाचारो को सुनकर सैयद बन्धुओ के विरोधी अनेक प्रकार की शकायें करने लगे और गुप्त रूप से उन्होंने अजित सिंह पर एक साथ आक्रमण करने का निश्चय किया।

भट्ट ग्रन्थो के अनुसार सम्वत् १७७५ के मास पूस की सुदी दूज के दिन बादशाह फर्रुखसियर ने अजित सिंह से भेंट की। अजित सिंह ने भी बादशाह का अधिक से अधिक सम्मान किया। उसने एक लाख रुपये का आसन बिछाकर उसके ऊपर बादशाह के बैठने का जो स्थान तैयार किया गया, वह सर्वथा अपूर्व था। बादशाह उसके ऊपर बिठाया गया और उसको हाथी, घोड़े तथा बहुमूल्य हीरे, जवाहिरात भेट मे दिये गये। बादशाह इस सम्मान से बहुत प्रसन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली में अजित सिंह को जो सम्मान दिया गया वह पहले कभी किसी को यहाँ पर न मिला था। फागुन के महीने मे बादशाह के साथ अजित सिंह और सैयद बन्धुओ ने एक गुप्त परामर्श किया और उस परामर्श मे जो निश्चय हुआ, उसके द्वारा एक षडयन्त्र की सृष्टि की गयी और उसे लिखकर दक्षिण में हुसेन अली के पास भेज दिया गया। इसके साथ ही उसको तुरन्त आकर मिलने के लिये लिखा गया। इस प्रकार के कई एक कार्य गुप्त रूप से किये गये।

भट्ट कवियो ने इस अवसर की आलोचना करते हुए लिखा है: "इस समय दिल्ली का वातावरण अत्यन्त अनिश्चित रूप में दिखायी दे रहा था। चारो तरफ प्रज्वलित दावानल दिखायी दे रहे थे। भविष्य अन्धकारपूर्ण हो रहा था। दिल्ली के विचारशील व्यक्ति अनेक प्रकार की दुर्भाग्यपूर्ण कल्पनाये कर रहे थे। इन्ही दिनो मे दक्षिण से लौट कर हुसेन अली दिल्ली मे आ गया।

उसके महल के पास पहुँचते ही प्रसन्नता के बाजे बजाये गये। हुसेन अली के साथ बड़ी संख्या मे जो अश्वारोही सैनिक आये थे, उनको देखकर विद्रोही लोग तरह-तरह के अनुमान लगाने लगे। बादशाह ने हुसेन अली के पास उपहार मे बहुत-सी चीजे भेजी। इस समय दिल्ली मे विद्रोहात्मक वातावरण शान्त दिखायी दे रहा था। हुसेन अली के आने के दूसरे दिन सैयद बन्धु और उनके साथी जमुना के किनारे अजित सिंह के शिविर मे जाकर मिले और उन्होंने गुप्त रूप से कुछ बातें की।

सैयद बन्धुओ के चले जाने के बाद अजित सिंह अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर अपनी घोड़ी पर सवार हुआ और राठौर सेना को लेकर वह बादशाह के महलो की तरफ चला। वहाँ पहुँचकर उसने महलो के आस-पास अपनी सेना का घेरा डाल दिया और महलो को अपने अधिकार मे ले लिया। दिल्ली के उस समय का उल्लेख करते हुए भट्ट ग्रन्थो मे लिखा गया है कि अजित सिंह उस समय दिल्ली के मुगलो को अत्यन्त भयानक रूप मे दिखायी दे रहा था।

अजित सिंह के आने के पहले दिल्ली की अवस्था अत्यन्त भयानक थी। इस समय विद्रोह की आग फिर भड़की। बादशाह का खजाना लूट लिया गया। फर्रुखसियर के प्राणो की रक्षा करने वाला कोई दिखायी न पड़ा। आमेर का राजा जयसिंह दिल्ली की इस भयानक परिस्थिति को देखकर वहाँ से अपने राज्य को चला गया। फर्रुखसियर मार डाला गया और उसके स्थान पर दूसरा मनुष्य दिल्ली के राज सिंहासन पर बिठाया गया। परन्तु चार महीने मे

जेठ के महीने मे सीसोदिया राजकुमारी के साथ अजित का का विवाह सस्कार हुआ महीने आषाढ़ मे राजकुमार अजित ने अपना दूसरा विवाह देवलिया मे किया । *

बादशाह औरङ्गजेब की चिन्तायें दिन-पर-दिन बढती जा रही थी । वह सब कु चाहता था, परन्तु वह नही चाहता था कि शाहजादा अकबर की बेटी के गौरव को आघात पहुँचे और उसके द्वारा उसका असम्मान हो । लेकिन इसके लिये उसके पास था । कभी कभी चिन्तित होकर वह राजकुमार अजित को पत्र भेजता । परन्तु उनका मिलने पर सम्वत् १७५३ मे उसने दुर्गादास के साथ पत्र व्यवहार किया । उसके फल की लडकी बादशाह को दे दी गयो † और उसी अवसर पर राजकुमार अजित अपने सन पर बैठा । बादशाह ने दुर्गादास को पचहजारी पद पर प्रतिष्ठित करने का इरादा दुर्गादास ने उसे नामञ्जूर करके कहा : "इसके बदले मे आप मुझे जालौर सिकानची थिराद दे सकते है ।" दुर्गादास ने शाहजादा अकबर की लडकी को जिस सम्मान के स रखा था । उसे जानकर औरङ्गजेब ने दुर्गादास की बहुत प्रशसा की ।

सम्वत् १७५७ के पौष महीने मे अजित अपने पिता के राजसिंहासन जोधपुर मे जाकर वहाँ के पाँचो द्वारो के सामने एक भैसे की बलि दी । इन्ही दिनो की मृत्यु हुई ।

सम्वत् १७५६ मे आजमशाह ने फिर जोधपुर मे आक्रमण किया । अजित जाकर रहने लगा । उसके कुछ सरदार शत्रुओ के साथ चले गये । इन दिनो मे अत्याचार फिर से बढे और मथुरा प्रयाग, तथा ओकामडल मे गोहत्याये होने लगी हिन्दुओ की शक्तियाँ क्षीण पड रही थी और मुसलमानो के अत्याचार बढते इसी वर्ष माघ के महोने मे अजित की बडी रानी से एक लड़का पैदा हुआ । उसका न रखा गया ।

यूसुफ खाँ इन दिनो मे जोधपुर का प्रधान अधिकारी होकर रहा था । पहुँचकर बादशाह की आज्ञानुसार मेड़ता प्रदेश का शासन अधिकार अजित के सुपुर्द मेडतिया के सरदार कुशलसिसह और धाँधल गोविन्ददास को वहाँ का प्रबन्ध करने मिला । इन्द्रसिह का पुत्र मुहकमसिह ने शिशु अवस्था मे अजित की रक्षा की थी । का अधिकार अपने लिये चाहता था । लेकिन अजित के ऐसा न करने से उसको हुआ । इसलिये उसने बादशाह को एक पत्र लिखा : "यदि आप मुझे मारवाड बना दे तो मैं वहाँ के हिन्दू और मुसलमानो—दोनो के लिये सन्तोषजनक सकता हूँ ।"

* मेवाड-राज्य मे प्रतापगढ देवलिवा नाम की एक छोटी सी रियासत है । बसाया था । इसकी उत्पत्ति और प्रतिष्ठा का उल्लेख मेवाड़-राज्य के इतिहास मे किय

† अकबर को बेटी के लौटाये जाने के सम्बन्ध मे दो प्रकार के उल्लेख पाये लेखको का कहना है कि अजित के इच्छा के विरुद्ध दुर्गादास ने उस लडकी को औरङ्गजे था । इससे अजित दुर्गादास से नाराज हुआ था । इस अवसर पर अजित राजसिंहासन

सम्वत् १७७७ मे आमेर के राजा जयसिह ने अजित सिह के यहाँ कुछ दिन व्यतीत किये थे। अजित सिह ने सैयद बन्धुओ के साथ मिलकर मोहम्मद शाह को उस समय मुगल सिहासन पर बिठाया था, जब मुगल दरबार मे भयानक कलह चल रही थी और सम्पूर्ण साम्राज्य विद्रोह के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो रहा था। सिहासन पर बैठने के बाद मोहम्मदशाह अजित सिह से बहुत प्रसन्न हुआ और उसी सतोष मे उसमे जैसा कि ऊपर लिखा चुका है—अहमदाबाद का शासन देकर अजित सिह को जोधपुर भेज दिया था।

मोहम्मदशाह से विदा होकर जयसिह और बुधसिह के साथ वह जोधपुर आ गया था। मोहम्मदशाह सिहासन पर बैठने के बाद पहले का मोहम्मदशाह न रह गया था। सिंहासन पर बैठने के पूर्व वह केवल मोहम्मदशाह था और अब वह बादशाह मोहम्मदशाह था। अब उसकी शक्तियाँ अत्यन्त विशाल और महान हो चुकी थी। ससार मे ऐसे मनुष्य बहुत कम पाये जाते हैं, जो महान बन जाने के बाद उपकार करने वालो के प्रति कृतज्ञ बने रहते हैं। मोहम्मदशाह उस प्रकार के कृतज्ञ पुरुषो मे से न था। साम्राज्य के सिहासन पर बैठने के बाद वह अपने व्यवहारो मे भी बादशाह बन गया। उसने सैयद बन्धुओ को जान से मरवा डाला और अजित सिह पर आक्रमण करने के लिए तैयारी करने लगा।

जोधपुर मे यह समाचार अजितसिह ने सुना। उसे अत्यन्त क्रोध मालूम हुआ। उसने अपनी तलवार लेकर शपथ ली कि जैसे भी होगा, मैं अजमेर पर अधिकार करूँगा।

अपना निश्चय कर लेने के बाद अजित सिह ने जयसिंह को जोधपुर से विदा किया और बारह दिन व्यतीत होने के पहले ही वह अपनी शक्तिशाली राठौर सेना को लेकर मेडता पहुँच गया। उसके बाद उसने अजमेर पर आक्रमण किया और वहाँ के मुसलमान अजमेर छोड कर भागने लगे। अजित सिह ने तारागढ के मजबूत दुर्ग पर अधिकार कर लिया। वहाँ पर बहुत दिनो से मुगलो का शासन चल रहा था। इसलिए हिन्दुओ के मन्दिरो मे शखो और घण्टो का बजना चिर-काल से बन्द था। अब उनकी आवाजे फिर से सुनायी देने लगी। जहाँ पर कुरान के पाठ पढे जाते थे, वहाँ पण्डितो के द्वारा पुराण पढे जाने लगे।

अजित सिह ने साँभर और डीडवाना पर भी अधिकार कर लिया। उसने अनेक दुर्गो पर राठौरो के झण्डे फहराये। जयपुर पर अधिकार करके अजित सिह ने अपने नाम का सिक्का चलाया। इसके अतिरिक्त उसने शासन मे अनेक प्रकार के परिवर्तन किये। वहाँ के सामन्तो की मर्यादा मे उसने वृद्धि की। इन सब बातो के साथ-साथ अजित सिह ने स्वतन्त्र रूप से अजमेर मे अपना शासन आरम्भ किया। उसकी इस सफलता के समाचार न केवल भारतवर्ष के कोने-कोने मे पहुँचे, बल्कि इस देश के बाहर मुस्लिम देशो मे भी उसकी खबरे पहुँच गयी।

सम्वत् १७७८ मे मुगल बादशाह ने अजमेर पर फिर से अपना अधिकार करने का इरादा किया। बादशाह ने मुजफ्फरखाँ को सेनापति बनाकर और उसके अधिकार मे एक बहुत बड़ी मुगलो की फौज देकर बरसात के दिनो मे अजमेर की तरफ रवाना किया। मुजफ्फरखाँ के आने का समाचार सुनकर उसके साथ युद्ध करने के लिये अजित सिह ने अपने बेटे अभय सिह को तैयार किया। अभय सिह के साथ तीस हजार अश्वारोही सैनिक थे और मारवाड के आठ सामन्त अपनी सेनाओ के साथ थे। सेना की दाहिनी तरफ चम्पावत लोग, बायी तरफ कुम्पावत लोग, करमसोत, मेडतिया, जोधा,

टी, सोनगरा, देवडा, खीची, धांधत और गोगवत लोग चल रहे थे।

संघर्ष के दिनो मे धूर्त व्यवहारो का अधिक आश्रय लेता था। नवीन मुगल बादशाह अपने पिता का अनुसरण किया। जब उसने सुना कि अजितसिंह युद्ध की तैयारी क उसने अपना दूत भेजकर सन्धि का प्रस्ताव किया।

अजितसिंह ने सन्धि के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इसके बाद बादशाह ने राज सनद देने के लिये फिर उस दूत को अजितसिंह के पास भेजा। अजितसिंह ने उस करने के पहले भेंट करने की अभिलाषा प्रकट की। फागुन मास के पहले दिन अजित अ साथ रवाना होकर बीसलपुर पहुँच गया। बादशाह के प्रधान मन्त्री खानखाना के बडे खाँ ने कई एक अमीर, भदावर के राजा तथा बूँदी के राव बुधसिंह के साथ बादशाह पीपड नामक स्थान पर अजितसिंह का स्वागत-सत्कार किया।

पीपड नामक स्थान पर एक बैठक हुई। उसमे सन्धि के सम्बन्ध मे परामर्श होता र बाद आनन्दपुर नामक स्थान मे मुगल बादशाह के साथ अजितसिंह की भेंट हुई। बादशाह सिंह को 'तेजबहादुर' की उपाधि दी। वह एक तरफ अजित को प्रसन्न करने की चेष्टा क और दूसरी तरफ उसकी दूसरी कोशिशे चल रही थी। इसी अवसर पर बादशाह ने महरा मुगल सेना के साथ जोधपुर पर अधिकार करने के लिये भेज दिया था। विश्वासघाती मोह साथ गया था। जिस समय बादशाह ने अजितसिंह को अपने आदर सत्कार मे उलझा रखा राब खाँ ने बड़ी आसानी के साथ जोधपुर मे अधिकार कर लिया।

जिस समय अजितसिंह को यह मालूम हुआ कि मुगल सेना को लेकर महरावखाँ ने को अपने अधिकार मे कर लिया हूँ तो उसे बड़ा क्रोध आया। उस समय बादशाह ने चालाकी से काम लिया। अजितसिंह को आवेश मे देखकर उसने अपने मनके भावो को रखा और तरह-तरह से वह अजितसिंह की खुशामद करता रहा। बादशाह शाहआलम ने दक्षिण जाने और कामबख्श की सहायता करने के लिये विवश किया। आमेर का राजा जय समय बादशाह के साथ था। उसने बादशाह का व्यवहार देखा। उसमे अजित को फँसाने एक जाल के सिवा और कुछ न था। इसलिये उसको बड़ा असन्तोष हुआ।

इसी मौके पर बादशाह शाहआलम ने छिपे तौर पर अपनी एक फौज आमेर राज्य दी। उसने वहाँ जाकर उस राज्य पर अधिकार कर लिया और जयसिंह के छोटे भाई विजयं वहाँ का अधिकारी बना दिया। उस समय जयसिंह और अजितसिंह को लेकर बादशाह दं गया था। उस यात्रा मे औरङ्गजेब के बेटे बादशाह शाहआलम ने राजपूत सेनाओ का लाभ जयसिंह और अजितसिंह दोनो अब बादशाह की चालो को साफ-साफ समझने लगे। नर्म को पार करने के बाद दोनो राजपूत राजा अपनी सेनाओ के साथ बिना बादशाह से कुछ क राजस्थान की तरफ वापस लौट पडे। रवाना होने के पहले उन दोनो राजाओ ने अपना एक क्रम बना लिया।

अजितसिंह और जयसिंह की सेनाये सबसे पहले उदयपुर पहुँची। राणा अमरसिंह ने धानी से निकल कर उनका स्वागत किया और दोनो राजाओ को वह अपनी राजधानी मे ले ग उसके बाद अजितसिंह और जयसिंह मारवाड मे पहुँचे। उनके वहाँ पहुँचने पर चम्पावत स उदयभानु के पुत्र संग्रामसिंह ने उनका स्वागत किया और उसने अपने मस्तक से पगड़ी उतार कर

अधीनता स्वीकार करेगा और उसके फलस्वरूप उसको आवश्यकतानुसार बादशाह के दरबार मे रहना पडेगा। इस प्रकार के निर्णय मे जयसिह ने मध्यस्थ का काम किया। निर्भीक अभयसिह ने अपनी तलवार हाथ मे लेकर कहा : "मेरी कुशलता इस पर निर्भर है।"

बादशाह के यहाँ पहुँचकर अभयसिह ने वहाँ पर अत्यधिक सम्मान प्राप्त किया। उसने यह समझकर कि मेरे पिता को बादशाह के दाहिने स्थान मिलता है, इसलिये मैं भी उसका अधिकारी हूँ। इसलिये कि यहाँ पर मैं अपने पिता का प्रतिनिधि बनकर आया हूँ, इसके सम्बन्ध मे मुगल दरबार की व्यवस्था क्या है इस पर कुछ भी ध्यान न देकर वह सिंहासन की तरफ आगे बढा। उसी समय मुगल अमीरो मे से किसी एक ने अपने सकेत से उसे रोका। उससे अभयसिह को क्रोध मालूम हुआ। उसने हाथ मे तलवार लेकर अपने आवेश पूर्ण नेत्रो से इधर-उधर देखा। बादशाह मोहम्मदशाह को यह परिस्थिति बडी भयानक मालूम हुई उसने बडी बुद्धिमानी मे काम लिया और गले से हीरो का हार उतारकर उसने अभयसिह को पहना दिया।

बादशाह के ऐसा करने से उस समय की भयानक परिस्थिति शान्ति मे परिवर्तित हो गयी। यदि बादशाह ने इस समय ऐसा न किया होता तो उस परिस्थिति का परिणाम क्या होता, उसका कोई अनुमान नही लगाया जा सकता।

अभयसिंह साहसी और महान पराक्रमी था। वह जयसिंह के साथ बादशाह के दरबार मे जा रहा था, तो उसके पिता अजितसिह ने उसका विरोध किया था। परन्तु अभयसिह ने पिता के विरोध की परवा न की थी। पिता और पुत्र के बीच इन दिनो मे अथवा कुछ समय पहले से किस प्रकार के व्यवहार चल रहे थे इसके सम्बन्ध मे भट्ट ग्रन्थो मे स्पष्ट उल्लेख नही मिलता। इन्ही दिनो मे अजितसिह की मृत्यु हुई। राजा अजितसिह का जीवन चरित्र जिन राठौर कवियो के द्वारा काव्य मे लिखा गया है, अजितसिह की मृत्यु के सम्बन्ध मे खोज करने के लिये हमने उसके पन्नो का भली-भाँति अवलोकन किया है। इन राठौर कवियो ने अजितसिह का ऐतिहासिक जीवन चरित्र, उसके पुत्र अभयसिह के आदेश से और उसकी देख रेख मे लिखा है। सूर्य पुराण नामक ग्रन्थ मे केवल इतना ही लिखा है : "इस समय अजित सिह ने ससार को छोड कर स्वर्ग की यात्रा की।"

इसके सम्बन्ध मे दूसरा ग्रन्थ 'राज रूपक नाम का है। उसके ग्रन्थकार ने भी अजित सिह की रहस्यपूर्ण मृत्यु पर कोई प्रकाश नही डाला बल्कि उसने जो कुछ भी लिखा है, उसके शब्दो से स्पष्ट मालूम होता है कि उसने उस मृत्यु के रहस्य को ढकने की पूरी चेष्टा की है इस दूसरे ग्रन्थ मे लिखा गया है : "अश्वपति के साथ राजकुमार अभयसिह के होने वाले परिचय को सुनकर अजित सिह को प्रसन्नता हुई। इस ससार मे अविनाशी कोई वस्तु नही है। एक दिन विनाश सबका होता है। आगे और पीछे—इस ससार को छोडकर जाना सभी को है। इस पृथ्वी पर ऐसा कोई नही है, जिसका कभी विध्वस और विनाश न हो सके। रक से लेकर राव तक मृत्यु सबके लिये है। जो जन्म लेता है, वह एक दिन मरता है। जो सबसे निर्बल है, उसको भी एक दिन मृत्यु है और जो महान शक्तिशाली है, उसे भी एक दिन मर कर यहाँ से जाना है। ससार मे कोई ऐसा नही है, जिसकी कभी मृत्यु न हो। इस विश्व मे रहने का समय सबका पहले से निर्धारित होता है। उस समय के बीत जाने पर एक क्षण भी किसी का रह सकना सम्भव नही होता। मनुष्य सब कुछ कर सकता है, परन्तु मृत्यु के सामने उसका कोई बस नही चलता।"

मारवाड़ के राजा अजित सिह की मृत्यु का उल्लेख करते हुए 'राजरूपक' के ग्रन्थकार ने लिखा है : "जन्म के साथ मृत्यु को अपने भाग्य मे लेकर मनुष्य इस ससार में आता

इन्द्रसिंह को इससे सन्तोष न हुआ। वह नागौर का राज्य लेना चाहता था। इ
मुगल बादशाह के पास जाकर कहा कि अजितसिंह ने नागौर पर अधिकार कर
बादशाह इस खबर को सुनकर अजितसिंह से बहुत अप्रसन्न हुआ। उसी समय अजितसिं
हुआ कि इन्द्रसिंह ने मुगल बादशाह को भड़काने की चेष्टा की है। लेकिन इस
तरफ से कोई असंगत बात पैदा नही हुई और दोनों ने मिलकर उस झगडे को
इरादा किया।

मुगल बादशाह के साथ झगड़े का निपटारा करने के लिये राजपूत डीडवाना नग
कोलिया नामक स्थान पर पहुँच गये। बादशाह दिल्ली से अजमेर चला गया। अजितसिं
राजस्थान के और भी राजा लोग थे, जिनको धमकी मिली थी और जो बादशाह के साथ
का निर्णय करने के लिये वहाँ पर आये थे। मुगल बादशाह ने उनके साथ मित्रता का प्रद
किया। उसने राजाओ के पास जो वहाँ पर एकत्रित हुये थे, अपने हाथ की सनदे भे
लेकर नाहर खाँ राजाओ के पास गया।

आषाढ़ मास के पहले दिन मारवाड़ और आमेर के राजाओं ने उन सनदो को प्रा
इसके बाद वे बादशाह से भेट करने के लिये अजमेर गये। बादशाह ने आदरपूर्वक उनसे
वहाँ से दोनो राजपूत राजा शासन की सनदे लेकर वापस लौटे। अजितसिंह सम्वत् १७६७
के महीने मे जोधपुर की राजधानी मे आकर अपने पिता के सिंहासन पर बैठा। इस वर्ष उ
राजकुमारी के साथ विवाह किया।

अर्जुनसिंह ने दिल्ली के आमखास दरबार में अमरसिंह को जान से मार डाला था
राठौर लोगो के साथ उसकी शत्रुता बढ गयी थी। अजितसिंह ने इस शत्रुता को मिटाकर उ
मैत्री कायम की। इसके पश्चात् वह उस कुरुक्षेत्र को चला गया, जहाँ पर कौरवों और
युद्ध हुआ था। इस तरह से १७६७ का सम्वत् समाप्त हो गया।

मारवाड़ के राठौरो को बहुत समय तक जीवन के संघर्ष में रहना पड़ा। उनको
प्रकार के कष्टो का सामना करना पड़ा। परन्तु दुर्भाग्य के उन दिनों में भी उन लोगो ने अ
उज्वल चरित्र को कायम रखा और विपदायो की पराकाष्ठा मे पहुँच जाने के बाद भी
अपनी जिस राजभक्ति का परिचय दिया उसकी उपमा ससार के इतिहास में खोजने पर भी अ
से न मिलेगी।

मारवाड़ के भट्ट ग्रन्थों से जाहिर होता है कि सघर्ष के इस दीर्घकाल मे वहाँ से एक स
ने भी स्वाभाविक मृत्यु नही पायी। इसका साफ अर्थ यह है कि मारवाड़ में तीस वर्ष तक ल
युद्ध का जो सघर्ष जारी रहा, उस दीर्घकाल मे मारवाड़ के सभी सामन्त और सरदार—ि
परलोक गमन किया—वे केवल युद्ध मे मारे गये। उनमें से एक भी बीमार होकर और चा
पर लेट कर नही मरा।

मारवाड़ के राठौर राजपूतो के चरित्र की कई श्रेष्ठ बाते हमारे सामने आती हैं। बा
की तरफ से अपरिमित सम्पत्ति देकर देश और धर्म के विरुद्ध उनको आकृष्ट किया गया।
सम्पत्ति और राज्य के प्रलोभन मे एक भी राठौर ने देशद्रोह और जातिद्रोह न किया। उनको
नक[illegible]पदाओं में रह कर मृत्यु का आलिंगन करना स्वीकार था, परन्तु सम्पत्ति और सम्मा
नाम पर उनको जातिद्रोह करना मन्जूर न था।

इसके पश्चात् सभी रानियो ने स्नान करके बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण पहले । इसके उपरान्त शव के पास जाकर अजितसिंह के चरणों पर सभी ने अपने मस्तक रखे और अपने इस जीवन का अन्तिम प्रणाम किया । उस समय मन्त्रियो, सरदारो और अन्य सभी गुरुजनो ने रानियो को चिता पर जाने से रोका । उन सब ने पटरानी से प्रार्थना की . "आप चिता पर न बैठकर अपने पुत्र अभय और वख्त के स्नेह का विचार करे । महाराज के न रहने पर राज्य का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व–दोनो बेटो का विश्वास और भरोसा आपके साथ है । महाराज के न रहने पर मारवाड की समस्त प्रजा आपको देखकर सन्तोष करेगी । राज्य के प्रति और अपने बेटो के प्रति आपका जो धर्म है, उसे आपको पालन करना है ।"

पटरानी ने इन बातो को सुनकर कहा : "आप सब इस वंश के कल्याण के लिये ऐसा कहते हैं । परन्तु मेरे कल्याण की तरफ आपका ध्यान नहीं है । पति को छोडकर स्त्री का अलग से कोई अस्तित्व नही होता । इसके सम्बन्ध मे मैं आप लोगो से अधिक नही कहना चाहती । आपको समझाने की आवश्यकता नही है । इसलिये मैं चाहती हूँ कि आप लोग मेरे कल्याण का रास्ता बन्द न करे और मुझे आशीर्वाद दे कि मैं चिता पर बैठकर उसकी प्रज्वलित अग्नि मे हँसते हुए जलकर अपने पति की मैं चिरसगिनी बन सकूँ । इसके सिवा मेरा कल्याण किसी प्रकार किसी दूसरे मार्ग पर चलकर नही हो सकता ।"

इसके बाद स्मशान भूमि मे बाजे बजे । सहस्त्रो मुख से एक साथ भगवान का नाम निकला । दीन-दुखियो को धन लुटाया गया । सभी रानियाँ चिता पर बैठ चुकी थी । उसमें आग दी गयी और क्षण-भर मे चिता की होली जली । अजितसिंह की अवस्था इस समय पैंतालीस वर्ष तीन महीने और बाईस दिन की थी ।

मारवाड के सिंहासन पर अब तक जितने भी राजा बैठे थे, अजितसिंह का स्थान सबसे अधिक श्रेष्ठ रहा । उसका जन्म और पालन-पोषण जिस प्रकार कठोर रहा, उसकी मृत्यु उसी प्रकार रहस्यपूर्ण रही । अजितसिंह ने अपनी परिस्थितियो मे जकडे रहने पर भी वंश और राज्य के लिये बहुत कुछ किया ।

अजित जब सत्रह वर्ष की अवस्था मे भी न पहुँचा था, मारवाड के सामन्त, सरदार और श्रेष्ठ पुरुष उसको देखने के लिये इतने लालायित हो उठे थे कि यदि वे राजकुमार को देखने का अवसर न पाते तो पता नही वे क्या करते । राज्य की यह श्रद्धा और भक्ति अजितसिंह को उस समय प्राप्त हुई थी, जब वह सोलह वर्ष का एक नवयुवक था और न तो उसने अपने राज्य के दर्शन किये थे और न राज्य के लोगो ने उसके दर्शन किये थे । उस अवस्था मे मारवाड के लोगो ने प्रतिज्ञा की थी कि हम सब लोग उसी समय अन्न-जल ग्रहण करेंगे, जब हम अपने नेत्रो से राजकुमार को देख लेंगे ।

अजितसिंह असाधारण रूप से साहसी, वीर और दृढ प्रतिज्ञ था । उसके शरीर का गठन उसके शौर्य का परिचय देता था । अजितसिंह ने शत्रुओ के साथ लगातार तीस वर्षों तक युद्ध किया था । सम्वत् १७६५ मे अजमेर मे सैयद बन्धुओ के साथ जिस सग्राम की आग भडकी थी, उसमे अजित ने अपनी राजनीति और दूरदर्शिता का परिचय दिया था । उस समय सैयद बन्धुओ के साथ उसकी गुप्त सन्धि हुई थी ।

अजितसिंह के जीवन का शेष भाग मुगल बादशाह के दरबार मे ही बीता था । मुगल बादशाह ने जैसा व्यवहार उसके साथ किया था, ठीक वैसा ही व्यवहार अजितसिंह ने मुगल

राजकुमार अभयसिंह की जन्मपत्री

४
राहु

२
व्यय

५
सहजस्थान

३
तनस्थान

६
सुखस्थान

१२
राजभवन
श० बृ०

७
उत्तराधिकारी
चं० शु०

९
स्त्री स्थान

भाग्य

८
शत्रु का घर
सू० बु०

१०
केतु

किनारे रहा करता है। उसके आवश्यक खर्चों के लिये राणा की तरफ से प्रति दिन पाँच सौ रुपये के हिसाब से उसको दिये जाते है।"

बादशाह की तरफ से दुर्गादास को आत्म—समर्पण करने के लिये आदेश दिया गया था। लेकिन दुर्गादास ने किसी भी सूरत मे उसे मजूर नही किया। मैंने इसके सम्बन्ध मे सही घटना को जानने के लिये चेष्टा की और मारवाड इतिहास के विशेष जानकार एक यती से मैंने पूछा। वह इस घटना की जानकारी रखता था। उसने अपना उत्तर कविता मे दिया : 'दुर्गा दशों काढियाँ गोला गांगानी।" अर्थात् दुर्गादास को निकाल कर गांगानी नगर गोला को दिया गया था। गोला का अर्थ गुलाम होता है।

यह गांगनी नगर लूनी नदी के उत्तर की तरफ बसा हुआ था। और वह कर्मसोत वंश के राजपूतो का प्रधान नगर था। दुर्गादास उस वश के लोगो का अधिनायक था। यह नगर इन दिनो मे मारवाड के राजा के अधिकार मे है। परन्तु दुर्गादास के समय वह उसी के अधिकार मे था। करणोत वंश के राजपूतो ने गांगनी नगर मे एक प्रसिद्ध मन्दिर दुर्गादास के स्मारक मे बनवाया। वह मन्दिर आज भी दुर्गादास की स्मृतियाँ लोगो को दिलाता है। अपने त्याग और बलिदान के पुरस्कार मे दुर्गादास को जिस प्रकार मारवाड राज्य से निकाला गया, उसकी वह दुरवस्था प्रसिद्ध कहावत का समर्थन करती है : "राजाओ पर कभी विश्वास न करना।"

चालीसवाँ परिच्छेद

अजित सिंह की हत्या—मारवाड का पतन—अभय सिंह का राजतिलक—अभय सिंह का स्वागत—नागोर का पतन—भूमिया लोगो का दमन—अभय सिंह का सम्मान—सेना पति का विद्रोह—मुगल साम्राज्य का पतन—अभय सिंह का साहस—अभय सिंह और जयसिंह का परामर्श—सिरोही पर आक्रमण—अभय सिंह की विजय—सरबुलन्द खाँ के साथ अभय सिंह का युद्ध—सरबुलद खाँ की पराजय—अभय सिंह का शासन।

अजित सिंह की रहस्यमयी हत्या का यद्यपि कोई उल्लेख उस समय के ग्रन्थो मे नही पाया जाता, फिर भी अनेक परिस्थितियाँ इस ओर सङ्केत करती हैं। आमेर के राजा जयसिंह के परामर्श से राजकुमार अभय सिंह ने बादशाह के दरबार मे न केवल जाना स्वीकार किया था, बल्कि पिता अजित सिंह के विरोध करने पर भी उसने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली थी। उसके वहाँ जाने पर अभय सिंह के मनोभावो मे राज्य का प्रलोभन पैदा हुआ और उसी के आधार पर अजित सिंह की हत्या के षडयन्त्र की रचना आरम्भ हुई। उसमे किसी को सन्देह नही हो सकता। इसके परिणाम स्वरूप अजित सिंह की हत्या की गयी।

मारवाड के राजा अजित सिंह के मरते ही उसके राज्य का पतन आरम्भ हुआ। इस विनाश की जड़ राजमहलो मे पडी। मुगलो की जिस पराधीनता को मिटाने और षडयन्त्रकारी मुगलो का बदला देने के लिये अजित सिंह को बडे-से-बडे त्याग बलिदान करने पडे थे, उस पराधीनता को अभय सिंह ने प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया।

दिया। उन्होंने वहाँ पहुँचकर और मौका पाकर मुकुन्द को जान से मार डाला। मुगलो मे आग भड़की। मारवाड़ पर आक्रमण करने के लिए मुगलो की विशाल बन्धु दिल्ली से रवाना हुये।

अजितसिंह को मुगलो के इस आक्रमण का समाचार मिला। उसने अभयसिंह के साथ मरु प्रदेश के राडधडा नामक स्थान पर भेज दिया। * मुगल की राजधानी को वहाँ पहुँच कर घेर लिया। उसके बाद बादशाह की तरफ से अ आदेश भेजा गया कि उसे भविष्य मे अपने अच्छे व्यवहारो का प्रमाण देना जमानत मे उसका लड़का अभयसिंह बादशाह के दरबार मे बराबर रहेगा और भी वहाँ जाना पड़ेगा।

अजितसिंह ने इस आदेश को मानने से इन्कार कर दिया। परन्तु दीवान और कवि केसर के परामर्श से उसने उस आदेश को स्वीकार कर लिया। केसर हुए कहा: "बादशाह के इस आदेश को मानने मे कोई हानि नही है। दौलत खाँ मारवाड़ पर आक्रमण किया था, मारवाड़ के राजा राव गङ्गा ने अपने पुत्र मालदेव के आदेश के अनुसार दरबार मे रहने के लिये भेजा था।"

अजितसिंह ने राडधडा से अभयसिंह को बुलाया और उसके आ जाने पर आषाढ महीने के अन्त मे उसे हुसेनअली के साथ दिल्ली भेज दिया। वहाँ पहुँ अभयसिंह ने बादशाह से पाँच हजार सेना के अधिकार का पद प्राप्त किया।

पुत्र को भेजने के बाद अजितसिंह भी दिल्ली के लिये रवाना हुआ। पहुँचकर वीर राठौरो की मृत्यु के स्थानो को देखा, जो उसकी शिशु अवस्था मे उसके प्राणो की लिए मुगल सेना के द्वारा मारे गये थे। उन स्थानो को देखकर स्वाभिमान अजितसि प्रतिहिंसा की आग एक साथ प्रज्वलित हो उठी। उसने उसी समय इस प्रकार के बदला लेने के लिये प्रतिज्ञा की।

अजितसिंह दिल्ली पहुँच चुका था। वह मुगल दरबार मे उपस्थित हुआ। उसने विरुद्ध नीचे लिखे हुये चार अपराधो का आरोप किया:

१—नौरोज।†　　२—बादशाह के साथ राजाओ की लड़कियो का वि

३—गोहत्या।　　३—जजिया कर।

सैयद बन्धुओ के मारवाड़ पर आक्रमण करने के बाद ऊपर लिखे हुये अजित के प्रस्ताव बादशाह के सामने पेश किये गये थे, उनमे से बादशाह फर्रुखसियर के साथ अ लड़की के विवाह का भी एक प्रस्ताव था। उसका उल्लेख इस ग्रन्थ मे पहले किया जा अजितसिंह ने इच्छा पूर्वक अपनी लडकी का विवाह बादशाह के साथ नही किया

* राडधडा लूनी नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा हुआ है। वह मरुभूमि का ए स्थान है।

† नौरोजा का मेला प्रत्येक महीने के नवे दिन होता था। उस मेले मे राजमहल बड़े अमीर-उमराओ के घरो के लोग अपनी-अपनी दस्तकारी की चीजे लाते थे और उन विक्रय होता था। इसी नौरोजा के नाम पर वर्ष मे एक बार केवल स्त्रियो का मेला होता था प्रसिद्ध घरो की स्त्रियाँ ही शामिल होती थी। वहाँ पर कोई पुरुष न जाता था। इस मेले बर ने जारी किया था।

नागौर पर अधिकार करके बख्त सिंह को वहाँ का अधिकारी बनाया। नागौर का अधिकार प्राप्त करने पर मेवाड, जैसलमेर, बीकानेर और आमेर के राजाओ ने बडे सम्मान के साथ अभय सिंह को बधाइयाँ भेजी। सन् १७२५ मे नागौर को विजय करके अभय सिंह अपनी राजधानी लौट आया।

सन् १७२६ मे अभय सिंह उन भूमिया लोगो का दमन करने के लिए गया जो उसके राज्य की दक्षिणी सीमा के निकटवर्ती स्थानो पर रहा करते थे। अभय सिंह के वहाँ पहुँचने पर सिन्धल देवडा, बालावोडा, बलीसा और सोढा जाति के लोगो ने उसकी अधीनता स्वीकार की।

सन् १७२७ मे अभयसिंह को बादशाह का एक आदेश मिला। उसने अपने सभी सामन्तो की सेनाओ के साथ बुलवाया। आदेश पाते ही अपनी अपनी सेनायें लेकर सामन्त लोग वहाँ पहुँच गये। उन सब को लेकर दिल्ली जाने के पूर्व अभय सिंह अपने राज्य के प्रमुख नगरो को देखने गया और सर्वत्र अपना शासन-प्रबन्ध मजबूत बनाया। पर्वत सर नामक स्थान पर पहुँचने के बाद अभय सिंह को चेचक का रोग हो गया। उस रोग मे सेहत पाने के बाद सन् १७२८ मे अभय सिंह दिल्ली पहुँचा। बादशाह ने उसको बुलाने के लिये अपने प्रधान अमीर खान दौरान्ताँ को भेजा था।

अभय सिंह के आने पर बादशाह ने सम्मान के साथ उसको लिया और आदर पूर्वक बातें करते हुए उसने अभय सिंह से कहा : 'आज बहुत दिनो के बाद आपसे मुलाकात हुई है। आपको देखकर इस समय मुझे बडी खुशी हो रही है।" कुछ देर तक बादशाह के पास रहकर और उसका सम्मान प्राप्त कर अभय सिंह वहाँ से अपने मुकाम पर चला गया। जहाँ पर वह ठहरा हुआ था, बादशाह ने बहुत-सी चीजे वहाँ भेजी।

इन्ही दिनो मे दक्षिण के झगडे बहुत बढ गये। शाहजादा जङ्गली ने अपने साथ साठ हजार विद्रोहियो की सेना का सङ्गठन किया और उसने मालवा, सूरत और अहमदपुर पर आक्रमण करके वहाँ के गिरधर बहादुर, इब्राहीम कुली, रुस्तम अली और मुगल शुजाअत आदि अधिकारियो को मरवा डाला।

बादशाह ने इस समाचार को सुनकर तुरन्त वहाँ के विद्रोह को दबाने की चेष्टा की और पचास हजार सैनिको की एक विशाल सेना देकर उसने सरबुलन्द खाँ को रवाना किया। सेना के खर्च के लिए बादशाह ने खजाने से एक करोड रुपये भी दिये। सेनापति सरबुलन्दखाँ अपनी फौज के साथ रवाना हुआ। उसके आगे चलने वाली मुगलो की दस हजार सेना ने विद्रोहियो के साथ युद्ध किया। लेकिन उसकी पराजय हो गई।

विद्रोहियो का इस प्रकार बल और पराक्रम देखकर सरबुलन्द खाँ ने सन्धि का प्रस्ताव किया और अन्त मे उसने वहाँ के राज्य के विभाजन को स्वीकार कर लिया। एक दिन जिस समय मोहम्मदशाह दिल्ली के सिंहासन पर बैठा हुआ था और दरबार मे ऊँची श्रेणी के दो सौ सामन्त और उमराव मौजूद थे, दक्षिण से समाचार आया कि सरबुलन्द खाँ वहाँ पहुँच कर विद्रोहियो के साथ मिल गया। दरबार मे उस समय प्रधान राजमन्त्री कमरुद्दीनखाँ, ऐतमादुद्दौला, खा नदौरान, मीरबख्शी, समशुद्दौला, अमीरुलउमरा, मनसूरअली, रोशनउद्दौला, तुर्रबाज खाँ, रुस्तमजङ्ग, अफगान खाँ, ख्वाजा सैयदउद्दीन, सआदत खाँ, बुरहान उलमुल्क, अब्दुलसमद खाँ, दलीलखाँ, जफरखाँ, दलेलखाँ, मीरहमला, खानखाना, जफर जङ्ग, इरादत खाँ, मुरशिद कुली खाँ, जफरयाबर खाँ, अलीवर्दी खाँ और अजमेर का शासक मुजफ्फर खाँ आदि बहुत-से अमीर-उमराव बैठे थे। उन सभी की उपस्थिति मे ऊँचे स्वर से पढाया गया कि सरबुलन्द खाँ ने गुजरात पर अधि-

सम्वत् १७६४ में दिल्ली के दरबार मे परस्पर विद्रोह पैदा हुआ। फर्रुख
चल रहा था। यह विद्रोह, सैदय बन्धुओ के विरोध में था। एक तरफ मुगल अमीर
दूसरी तरफ दोनो भाई सैयद थे। यह विद्रोह अधिक बढ गया और उसके भीषण
बादशाह ने अजितसिह को बुलवाया। हुसेन अली इस समय दक्षिण मे था। अबदुल
विरुद्ध छिपे तौर पर विद्रोहियो की सहायता कर रहा था।

सैयद बन्धु इस समय बडी घबराहट मे थे। इस सङ्कट के समय दोनो भाइयो
का भरोसा किया और सेना के साथ उसे दिल्ली आने के लिये सन्देश भेजा। अजित
सेना तैयार की और उसे लेकर वह नागौर, मेड़ता, पुष्कर, मारोट और साँभर होक
पहुँचा। साँभर के दुर्ग मे उसने अपनी सेना का एक बड़ा भाग छोड़ दिया और मारोट
पुत्र अभयसिह को राजधानी की रक्षा करने के लिये भेज दिया। सैयद बन्धुओ को
कि अजितसिह अपनी सेना के साथ आ रहा है, वह तुरन्त उसके स्वागत के लिये दि॰
हुआ और अलीवर्दी खाँ की सरांय मे पहुँचकर उसने अजितसिह का स्वागत-सत्कार किय
विद्रोह की सारी बाते अजितसिह से कही।

राजा जयसिह और मुगल अमीर बादशाह की तरफ थे। उन्होने सैयद बन्धुओ
किया। इसी अवसर पर जयसिह ने अजितसिह को समझाया कि मुगलो से बद
लिये इससे अच्छा अवसर दूसरा कोई नही मिलेगा। अजितसिह ने गुप्त रूप से
के साथ सन्धि की। इसके बाद सैयद बन्धुओ ने अपने विरोधी विद्रोही जुलफिकारखाँ
मार डाला।

भविष्य में आने वाली परिस्थितियों को कोई नही जानता। एक समय था,
बादशाह औरङ्गजेब ने हिन्दुओ के साथ अत्याचार करने में अपनी शक्ति को उठा न रख
जसवन्तसिह के पुत्र शिशु अजित को संसार से विदा कर देने के लिये उसने भयानक अत्या
थे। एक समय आज था, जब अत्याचारी औरङ्गजेब इस संसार से विदा हो चुका था अ
सिंहासन पर बैठा हुआ मुगल बादशाह फर्रुखसियर केवल अजितसिह की सहायता के बल
सौभाग्य के सपने देख रहा था।

दिल्ली मे अजितसिह के आने का समाचार सुनकर मुगल बादशाह ने कोटा
हाडाराव भीम और खान दौरानखाँ को तुरन्त अजितसिह के पास भेजा और उसने अ
से भेट करने की अपनी तीव्र अभिलाषा प्रकट की। मोती बाग के महल के ऊपर बादशाह
अजितसिह की भेट का स्थान नियुक्त हुआ। अजितसिह अपने साथ सामन्तो और बहुत से
शूरवीरो को लेकर मोतीबाग के लिये रवाना हुआ। उसके साथ जैसलमेर के रावविष्णुसिह
के पद्मसिह, मेवाड के फतेहसिह सीतामऊ के राठौर प्रधान मानसिह, रामपुरा के चन्दावत
खण्डेला के उदयसिह, मनोहरपुर के शक्तिसिह, खिलचीपुर के कृष्णसिह आदि बहुत से
और सबल राजपूत अजित के साथ चले। इस समय मारवाड़ के राजा होने के कारण ही नही,
बादशाह की तरफ से गुजरात के शासक होने के कारण समस्त राजपूत सामन्त और सरदा
समय अजितसिह को अधिक महत्व दे रहे थे। बादशाह ने अत्यन्त सम्मान के साथ मोती
अजितसिह से भेट की और उससे अजितसिह को सातहजारी मनसब की उपाधि दी। मुगल
का कुछ हिस्सा देकर उसके राज्य की सीमा बढायी। इसके साथ-साथ उसने एक करोड रु
जागीर भी अजितसिह को दी।

बादशाह फर्रुखसियर ने अनेक प्रकार से अजितसिह का सम्मान किया। हाथी-घोडे

इसके बाद एक तीसरे अमीर ने कहा : "सरबुलन्द खाँ के साथ युद्ध करना जहरीले साँप के मुख को पकडने से कम संकट पूर्ण नही है।"

दरबार की यह परिस्थिति बादशाह को लगातार भयभीत बना रही थी। इस अवसर पर अमीरो ने दरबार मे जो कुछ कहा, उससे दरबारियो के दिल और भी निर्बल पड गये। मारवाड का राजा अभयसिंह भी उस समय दरबार मे बैठा था। वह गम्भीरता के साथ दरबार की परिस्थिति का और उपस्थित लोगो के मनोभावो का अध्ययन कर रहा था। उसने जब देखा कि दरबार मे पान का जो बीडा रखा गया था, उसके उठाने का किसी ने साहस नही किया तो उसने बीडा उठाने के लिये अपने मन मे निर्णय किया। वह अपने स्थान से उठा और पान के उस बीडा को उठाकर उसने अपनी पगडी पर रखा और फिर बादशाह को सम्बोधन करके कहा :

"बादशाह आप निराश न हो। मैं इस विद्रोही सरबुलन्द खाँ को परास्त करूँगा और उसे मारकर, उसका मस्तक आपके सामने लाकर रखूँगा।"

अभयसिंह के इस प्रकार बीडा उठाने को सभा मे बैठे हुए अमीरो ने देखा और उसके बाद उन लोगो ने अभयसिंह की कही हुई बातो को सुना। उनके दिलो मे अभयसिंह के प्रति ईर्षा का भाव पैदा हुआ। बादशाह ने अभयसिंह की बातो को सुनकर शान्ति और सन्तोष को अनुभव किया। उसने उसी समय अभयसिंह को गुजरात के शासन की सनद दी। यह देखकर अमीरो के दिलो मे अभयसिंह के विरुद्ध ईर्षा की आग प्रज्वलित हो उठी।

सिंहासन पर बैठे हुए बादशाह मोहम्मदशाह ने अभयसिंह को सम्बोधन करते हुए कहा : "आपके पूर्वजो ने इस सिंहासन की मर्यादा को सुरक्षित रखने के लिये सदा कोशिश की है और उसकी सहायता से मुगल राज्य की परेशानियाँ अनेक बार दूर हुई हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि आपके सहयोग और साहाय्य से आज भी इस सिंहासन के सम्मान की रक्षा होगी।"

मारवाड के इतिहास मे इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि सम्राट मोहम्मद शाह ने अभयसिंह की मर्यादा को बढाने के लिये सात हीरो का एक आभूषण उसी समय उपहार मे दिया। उसके साथ साथ उसने और भी बहुमूल्य चीजे अभयसिंह को भेंट मे दी। सम्वत् १७८६ के आषाढ महीने मे अभयसिंह अहमदाबाद और अजमेर के शासन की सनद लेकर दिल्ली से बिदा हुआ।

मुगल साम्राज्य के अनेक भागो मे विभक्त होने की परिस्थिति सरबुलन्द खाँ के विद्रोही होने के साथ-साथ आरम्भ हुई। सन् १७३० ईसवी के जून महीने मे अभयसिंह दिल्ली से रवाना हुआ। वह सीधा अजमेर की तरफ आगे बढा। उस तरफ जाने मे उसके दो उद्देश्य थे। अजमेर के शासन की सनद उसे बादशाह से मिल चुकी थी। वहाँ पर अधिकार कर लेने से न केवल मारवाड मे उसकी शक्तियाँ मजबूत हो जाती थी, बल्कि राजस्थान के समस्त राज्यो की कुञ्जी उसके हाथ मे आ जाने को थी। दिल्ली से अजमेर जाने मे उस समय उसका पहला उद्देश्य यह था। दूसरा उद्देश्य यह था कि अभयसिंह इस भयानक समय मे जयसिंह के साथ परामर्श करना चाहता था। आमेर का राजा जयसिंह किस अभिप्राय से इस समय अजमेर आया था, इसका स्पष्टीकरण राठौरो के इतिहास मे नही किया गया। परन्तु दूसरे ग्रन्थो मे जो उल्लेख किया गया है, उससे जाहिर होता है कि जयसिंह पुष्कर तीर्थ मे अपने स्वर्गीय पूर्वजो का श्राद्ध करने के लिये वह अजमेर गया था।

अजमेर मे अभयसिंह और जयसिंह की भेंट हुई। दोनो राजाओ ने एक ही स्थान पर विश्राम किया और साथ-साथ बैठकर भोजन किया। उसी अवसर पर दोनो ने वर्तमान राज-

सम्वत् १७६४ में दिल्ली के दरबार में परस्पर विद्रोह पैदा हुआ। फर्रुख
चल रहा था। यह विद्रोह, सैदय बन्धुओ के विरोध में था। एक तरफ मुगल अमीर
दूसरी तरफ दोनो भाई सैयद थे। यह विद्रोह अधिक बढ गया और उसके भीषण
बादशाह ने अजितसिह को बुलवाया। हुसेन अली इस समय दक्षिण मे था। अबदुल
विरुद्ध छिपे तौर पर विद्रोहियो की सहायता कर रहा था।

सैयद बन्धु इस समय बडी घबराहट मे थे। इस सङ्कट के समय दोनों भाइयो
का भरोसा किया और सेना के साथ उसे दिल्ली आने के लिये सन्देश भेजा। अजित
सेना तैयार की और उसे लेकर वह नागौर, मेड़ता, पुष्कर, मारोट और सांभर होक
पहुँचा। सांभर के दुर्ग मे उसने अपनी सेना का एक बड़ा भाग छोड दिया और मारोट
पुत्र अभयसिह को राजधानी की रक्षा करने के लिये भेज दिया। सैयद बन्धुओ को
कि अजितसिह अपनी सेना के साथ आ रहा है, वह तुरन्त उसके स्वागत के लिये दि
हुआ और अलीवर्दी खां की सरांय मे पहुँचकर उसने अजितसिह का स्वागत-सत्कार किय
विद्रोह की सारी बातें अजितसिह से कही।

राजा जयसिह और मुगल अमीर बादशाह की तरफ थे। उन्होने सैयद बन्धुओ
किया। इसी अवसर पर जयसिह ने अजितसिह को समझाया कि मुगलो से बद
लिये इससे अच्छा अवसर दूसरा कोई नही मिलेगा। अजितसिह ने गुप्त रूप से
के साथ सन्धि की। इसके बाद सैयद बन्धुओ ने अपने विरोधी विद्रोही जुलफिकारखां
मार डाला।

भविष्य मे आने वाली परिस्थितियों को कोई नही जानता। एक समय था,
बादशाह औरङ्गजेब ने हिन्दुओ के साथ अत्याचार करने में अपनी शक्ति को उठा न रख
जसवन्तसिह के पुत्र शिशु अजित को संसार से विदा कर देने के लिये उसने भयानक अत्या
थे। एक समय आज था, जब अत्याचारी औरङ्गजेब इस संसार से विदा हो चुका था अ
सिंहासन पर बैठा हुआ मुगल बादशाह फर्रुखसियर केवल अजितसिह की सहायता के बल
सौभाग्य के सपने देख रहा था।

दिल्ली मे अजितसिह के आने का समाचार सुनकर मुगल बादशाह ने कोटा
हाड़ाराव भीम और खान दौरानखां को तुरन्त अजितसिह के पास भेजा और उसने अ
से भेट करने की अपनी तीव्र अभिलाषा प्रकट की। मोती बाग के महल के ऊपर बादशाह
अजितसिह की भेट का स्थान नियुक्त हुआ। अजितसिह अपने साथ सामन्तो और बहुत से
शूरवीरो को लेकर मोतीबाग के लिये रवाना हुआ। उसके साथ जैसलमेर के रावविष्णुसिह
के पद्मसिह, मेवाड के फतेहसिह सीतामऊ के राठौर प्रधान मानसिह, रामपुरा के चन्दावत
खण्डेला के उदयसिह, मनोहरपुर के शक्तिसिह, खिलचीपुर के कृष्णसिह आदि बहुत से
और सबल राजपूत अजित के साथ चले। इस समय मारवाड के राजा होने के कारण ही नही,
बादशाह की तरफ से गुजरात के शासक होने के कारण समस्त राजपूत सामन्त और सरदार
समय अजितसिह को अधिक महत्व दे रहे थे। बादशाह ने अत्यन्त सम्मान के साथ मोतीब
अजितसिह से भेट की और उससे अजितसिह को सातहजारी मतसब की उपाधि दी। मुगल
का कुछ हिस्सा देकर उसके राज्य की सीमा बढायी। इसके साथ-साथ उसने एक करोड रु
जागीर भी अजितसिह को दी।

बादशाह फर्रुखसियर ने अनेक प्रकार से अजितसिह का सम्मान किया। हाथी-घोड़े

स्थान के अनेक राज्यो की सेनाओ के साथ-साथ दो मुस्लिम सेनापतियो की सेनाये भी थीं। इस अवसर पर अभयसिंह के झण्डे के नीचे जो अनेक राजा अपनी-अपनी सेनाओ के साथ आये थे, उनमें कोटा और बूंदी की हाडा सेना गागरौन की खीची सेना, शिवपुर की गौड सेना, आमेर की कुशवाहा सेना और मरुभूमि की अनेक सेनाये प्रमुख थी। अभयसिंह उन सभी सेनाओ का प्रधान सेनापति था।

सन् १७३० के चैत्र महीने मे जोधपुर को छोडकर अभयसिंह अपनी शक्तिशाली सेना के साथ भाद्राजून 'मालगढे' सिवाना और जालौर होता हुआ आगे बढा। रिवाड़ा पहुँचकर उसने आक्रमण किया। उसी समय सग्राम आरम्भ हो गया। चम्पावत सरदार कुछ समय के बाद मारा गया। देवडा के लोग पराजित होकर भागने लगे। वहाँ पर राठौर सेना ने भयानक मारपीट की। सिरोही के राजा ने जब सुना कि अभयसिंह की सेना ने रिवाडा और पोसालिया—दोनो का भीषण रूप से विध्वस किया है तो वह घबरा उठा। निराश होकर सिरोही के राजा चौहान राव नारायण दास ने अपने भाई की लडकी का विवाह अभयसिंह के साथ करके अपनी रक्षा का विचार किया।

सिरोही के राजा नारायणदास ने चावडा सामन्त मायाराम को मध्यस्थ बनाकर अभयसिंह के पास सधि का प्रस्ताव भेजा। उस प्रस्ताव मे उसने अपने भाई मानसिंह की लडकी का विवाह कर देने का इरादा प्रकट किया। उसके बाद विवाह के प्रस्ताव मे एक नारियल, आठ श्रेष्ठ घोडियाँ और चार हाथियो का भूल राव नारायणदास ने अभयसिंह के पास भेजा। अभयसिंह ने विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

युद्ध बन्द हो गया। विवाह की तैयारियाँ होने लगी। अभयसिंह ने मानसिंह की लडकी के साथ विवाह किया। इस लडकी से दस महीने के बाद जोधपुर मे जो बालक पैदा हुआ, उसका नाम रामसिंह रखा गया। राव नारायणदास ने भतीजी का विवाह कर देने के अतिरिक्त अभयसिंह को कर देना भी स्वीकार किया।

देवडा के सभी सामन्त अपनी-अपनी सेनाये लेकर अभयसिंह की विशाल सेना मे जाकर मिल गये। इसके पश्चात् अभयसिंह सरस्वती नदी के निकटवर्ती पालनपुर और सिद्धपुर होकर सरबुलन्द खाँ का दमन करने के लिए आगे बढा और वहाँ पहुँचकर अपनी सेना का मुकाम करके उसने सरबुलन्द खाँ के पास अपना एक दूत भेजा और उसके द्वारा अभयसिंह ने कहला भेजा :

"मुगल बादशाह के युद्ध की जितनी सामग्री पर उसने अधिकार कर रखा है। उन सबको वह तुरन्त लौटा दे। राज्य की सम्पूर्ण आमदनी और खर्च का हिसाब करके जो कुछ बादशाह का निकले। उसे वह तुरन्त दे दे। इसके साथ-साथ अहमदाबाद और उसके समस्त दुर्गों से विद्रोही लोग निकल जावे।"

अभयसिंह के दूत से इस माँग को सुनकर सरबुलन्द खाँ जरा भी भयभीत नही हुआ। उसने अहकार के साथ उत्तर दिया : "अहमदाबाद का मैं राजा हूँ। जब तक जिन्दा हूँ। अहमदाबाद नही छोड़ सकता।"

सरबुलन्द खाँ का उत्तर पाकर अभयसिंह ने अपने साथ के सभी राजाओ और सामन्तो के साथ बैठकर परामर्श किया। सरबुलन्द खाँ ने जो उत्तर दिया था, सबको बताया गया। चम्पावत वश के अहवा के हरनाथ का बेटा सामन्त कुशलसिंह अभयसिंह के दाहिनी ओर बैठा हुआ था। सरबुलन्द का उत्तर सुनकर सबसे पहले अपनी सम्मति देते हुए उसने कहा। उसके बाद कुम्पावत वश के सामन्त कन्हीराम—जो अभयसिंह की बायी ओर बैठा था—बोला : "हम सबको अब अधिक देर करने की जरूरत नही है।"

उसकी मृत्यु हो गयी। * उसके मर जाने पर रफीउद्दौला को दिल्ली के सिंहास
गया। परन्तु दिल्ली के मुगल अमीरो ने उसका विरोध किया और उन्होंने आगरा
मुगल राज्य का सम्राट बनाया। उनके विरुद्ध हुसेन अली दिल्ली से आगरा की तरफ
जाने के पहले उसने अजित सिंह और अब्दुल्ला को बादशाह रफीउद्दौला की रक्षा
मे छोडा।

सम्वत् ११७६ मे अजित सिंह और सैयद दिल्ली से रवाना हुये। लेकिन मुगल
को जो सलीमगढ मे कैद कर लिया गया था, छोड़ दिया। उसके बादशाह की
अजित सिंह और सैयदो ने उसके स्थान पर मोहम्मद शाह को सिंहासन पर बिठाया।
मुगल साम्राज्य मे भयानक विद्रोह उत्पन्न हुये। उसमे साम्राज्य के न जाने कित
विध्वंस और विनाश हुआ और न जाने कितने नगरो का निर्माण हुआ। बादशाह फ
मृत्यु के साथ-साथ आमेर के राजा जयसिंह की समस्त आशाये समाप्त हो गयी। सैयद
के स्वामी को दण्ड देने की तैयारी करने लगे। जयसिंह को यह समाचार मिला।
हो उठा।

नवीन सम्राट और सैयद बन्धुओ ने अजित सिंह के साथ सेनाये लेकर जयपु
पकड़ा और जब वे लोग सीकरी पहुँच गये तो जयपुर के सभी सामन्तो ने घबरा कर
की शरण ली। उन सामन्तो ने अजित सिंह से प्रार्थना की यदि आपने सैयद बन्धुओ
राजा की रक्षा न की तो उसके साथ साथ हम सब लोगो का भी सर्वनाश हो जायगा।

जयपुर के सामन्तो की प्रार्थना सुनकर अजितसिंह ने उनको अपने पास बु
चम्पावत सरदार एवम् अपने मन्त्री को जयसिंह के पास भेज कर उसे आश्वासन दिया
को अब आने में किसी प्रकार का भय न करना चाहिये।

अजित सिंह का यह सदेश पाकर जयसिंह, चम्पावत सरदार और अजित सिंह
साथ रवाना होकर वहाँ पहुँच गया। अजित सिंह ने उससे भेट की और सभी प्रकार से
आश्वासन दिया और उसे अपने राज्य मे जाने की आज्ञा दी।

आमेर के राजा जयसिंह और बूँदी के बुधसिंह हाड़ा के साथ अजित सिंह प्रसन्न हो
राजधानी जोधपुर की तरफ रवाना हुआ। रास्ते मे मनोहर पुर के शेखावत सरदार की
लड़की के साथ उसने विवाह किया। कुँवार का महीना था। जोधपुर मे अजित सिंह के
के बाद जयसिंह ने शूर सागर के किनारे और हाडाराव ने जोधपुर की उत्तर की तरफ
लगातार मुकाम किया।

शीत काल का मौसिम व्यतीत हो गया और बसन्त के दिन आरम्भ हो गये।
आमेर के राजा जयसिंह ने अजित सिंह की लडकी सूर्यकुमारी के साथ विवाह किया। अजि
इस विवाह के सम्बन्ध मे प्रधान मन्त्री कुम्पावत भडारी और अपने गुरुदेव के साथ पर
लिया था। इस विवाह का पूर्ण वर्णन करने से बहुत विस्तार हो जायगा। इसलिये यह
संक्षेप मे उसका उल्लेख रखने की चेष्टा करेगे।

* बादशाह फर्रुखसियर के मारे जाने का वर्णन पहले किया जा चुका है। उसके
जो सिंहासन पर बिठाया गया, उसके नाम का कोई उल्लेख नही है। वह उन्माद के रोग
महीने मर गया।

अधिक संख्या मे मारे गये । सरबुलन्द खाँ अब निराश हो चुका था । दूसरे दिन प्रातःकाल आकर अभयसिह के सामने आत्म समर्पण किया । वह कैद कर लिया गया । उसके साथ-साथ उसके बहुत-से आदमी कैद किये गये । अभयसिह ने सरबुलन्द खाँ को बन्दी अवस्था मे आगरा भेज दिया उसके साथ जो दूसरे लोग कैद किये गये थे, घायल होने के कारण उनमे से बहुतो की मार्ग मे ही मृत्यु हो गई ।

इस युद्ध मे राठोर सेना के अनेक सामन्त और मारवाड राजवश के ऐसे लोग भी मारे गये जिनकी मृत्यु से अभयसिंह को अत्यधिक शोक हुआ । अभयसिह ने सत्रह हजार नगरो के गुजरात पर नौ हजार नगरो के मारवाड पर और एक हजार नगरो पर अन्यत्र राज्य किया । ईदर भुज, बागड, सिन्ध, सिरोही फतेहपुर, झुंझनू, जैसलमेर, नागोर, बाँसवाडा, लूनावाडा हलवध आदि राज्यो के राजा और सामन्त अभयसिह की अधीनता में शासन करते थे ।

राजा रामचन्द्र ने विजयादशमी के दिन लका को विजय किया था । सम्वत् १७८७ सन् १७३१ इसवी की उसी विजयादशमी को अभयसिह ने सरबुलन्द खाँ पर विजय प्राप्त की और उसे कैद करके आगरा भेज दिया ।

विजयी अभयसिंह ने गुजरात पर अधिकार करके सत्रह हजार सैनिको की सेना वहाँ की रक्षा के लिये रखी और अन्यान्य कीमती चीजो के साथ-साथ गुजरात को लूटकर चार करोड रुपये नकद, एक हजार चार सौ तोपे बन्दूके और युद्ध का बहुत-सा सामान वह अपने साथ जोधपुर ले गया, जिससे उसने अपने दुर्गों को शक्तिशाली बनाया ।

इकतालीसवाँ परिच्छेद

जोधपुर की उन्नति—बख्तसिह का विद्रोह—बीकानेर की स्वतन्त्रता—अभयसिह का आक्रमण—राजा जयसिह की अयोग्यता—राजदूत की चाल—आमेर राज्य मे युद्ध की तैयारियाँ—कुशवाहा और राठोरो का सघर्ष—आमेर की सेना के साथ बख्तसिह का युद्ध—जयसिह की मृत्यु—जयसिह की योग्यता—अभयसिह का अद्भुत साहस—बादशाह का आश्चर्य ।

सरबुलन्दखाँ को परास्त करके और जैपुर पर अधिकार करके अभयसिह जोधपुर चला गया। जैपुर से अपरिमित सम्पत्ति और युद्ध की सामग्री ले जाकर उसने जोधपुर को सुदृढ बना लिया । इन दिनो मे अभयसिह ने जो कीर्ति प्राप्त की थी, वह उसके गौरव के लिये किसी प्रकार कम न थी । जोधपुर मे उसके जीवन के दिन अब शान्तिपूर्ण व्यतीत होने लगे । अभयसिह ने वृद्धावस्था में प्रवेश किया था । उसकी शक्तियाँ अब धीरे-धीरे निर्बल पडने लगी । उसके छोटे भाई बख्तसिह का साहस और शौर्य, उसकी अवस्था के अनुसार बढ रहा था ।

संघर्ष और संग्राम के दिनो मे जो ममता और स्नेह परायणता काम करती है, शान्ति के दिनो मे वह कायम नही रहती । अभयसिह ने इन दिनो में जो गौरव प्राप्त किया था, उससे बख्तसिह के मनोभावो मे ईर्षा की उत्पत्ति हुई । वह अभयसिह के प्रति द्वेष भरी दृष्टि से देखने लगा । इस ईर्षा का प्रमुख कारण क्या था, इसका कोई उल्लेख उस समय के ग्रन्थो मे कही नही मिलता । जो कुछ लिखा गया है उससे जाहिर होता है कि बख्तसिह अपने आपको साहसी और

आमेर में पहुँचकर मुगलो और राठौरों की सेनाओ का सामना हुआ। मुज
की विशाल सेना को देखकर घबरा उठा। युद्ध के पहले ही मुगल सेना पीछे की तरफ
राठौर सेना उसका पीछा करती हुई आगे बढी। राजकुमार अभयसिह ने शाहजहाँनपुर
में लेकर नारनोल को लूट लिया और तम्बराघाटी तथा रिवाडी से बहुत सा धन एकत्रित
स्थानो पर राठौर सेना ने आग लगा दी, जिससे अलीवर्दी की सराय तक कितने ही गाँ

राठौर सेना का यह दृश्य देखकर दिल्ली और आगरा मे मुगल घबरा उठे।
यात्रा में राजकुमार अभय सिह ने नरूका के राजा की लडकी के साथ विवाह किया। *
अभय सिह के मुकाबिले मे मुजफ्फरखाँ के भाग जाने से सम्राट मोहम्मदशाह ने चार हजा
सेना देकर नाहरखाँ को भेजा। वह मुगल सेना के साथ साँभर पहुँच गया। बादशा
अजित सिह के साथ मित्रता पैदा करने के लिये भेजा था। सम्वत् १७७६ मे अभय सिंह
मुकाम किया और वहाँ पर उसने अपनी शक्तियो को मजबूत बना लिया। उसका पिता
अजमेर से वहाँ पर आ गया था। जिस प्रकार कश्यप के साथ सूर्य की भेट हुई थी, अ
उस प्रकार उसके पुत्र अभय सिह का साक्षात हुआ।

नाहरखाँ जिस उद्देश्य से साँभर पहुँचा था, उसको सफल बनाने के लिये वह उपयो
बातचीत की कटुता और कठोरता के कारण वहाँ पर सघर्ष बढ गया और राठौर सेना के स
का युद्ध आरम्भ हो गया। नाहरखाँ की छोटी-सी सेना राठौरो से पराजित हुई। उसी स
मणि जाट के लड़के ने आकर अजितसिंह के सामने आत्म-समर्पण किया।

बादशाह मोहम्मद इस समय बडी निराशा मे था। उसने जो कुछ भी सोचा
मे भी उसे सफलता न मिली। निराश और भयभीत अवस्था मे मुगलो का सिहासन छोड़
मक्का में जाकर रहने का निर्णय किया।

इन्ही दिनो मे उसने सुना कि मारवाड़ के राजा अजितसिह ने नाहरखाँ को मार ड
यह अत्यन्त क्रोधित हुआ और नाहरखाँ का बदला लेने के लिये वह एक साथ उत्तेजित हो
उसने मुगल साम्राज्य की समस्त सेना एकत्रित की और उसने उसकी आमेर के राजा जयसिह
कुली, इरादतखाँ आदि अनेक शूरवीरो के नेतृत्व मे राठौरो के साथ युद्ध करने के लिये भेजा।

श्रावण के महीने मे मुगलो की उस विशाल सेना ने अजमेर मे पहुँच कर तारागढ
लिया। अभयसिह उस दुर्ग की रक्षा का भार अमरसिह को सौपकर सेना लेकर रवाना
मुगल सेना चार महीने तक तारागढ मे घेरा डाले पडी रही। इस समय मुगलो की सम्पूर्ण श
एक साथ मिलकर आयी थी और उनके साथ युद्ध करने के लिये मारवाड की अकेली
सेना थी।

चार महीने पूरे बीत जाने के बाद आमेर के राजा जयसिह के समझाने-बुझाने पर
सिह ने बादशाह के साथ सन्धि करना स्वीकार किया। यद्यपि उसको मोहम्मदशाह की नीि
विश्वास न था। परन्तु मुगल अमीरो के शपथ लेने पर और सन्धि के पालन करने का अनुशास
पर अजितसिह ने अजमेर छोड़ देना स्वीकार कर लिया। राजकुमार अभयसिह जयसिह के
बादशाह के शिविर मे गया। जाने के पहले यह निश्चय हो गया था कि अभयसिह बाद

---

* नरूका जयपुर राज्य मे सामन्तो का एक प्रसिद्ध वंश था। इस वश के कितने ही लोग
पुर राज्य मे प्रधान सामन्त थे।

राजा जयसिंह का जितना ही बुढापा आता जाता था, अफीम के सेवन की आदत उतनी ही उसमे बढती जाती थी। इससे कभी-कभी वह सही बातो के सोच सकने में असमर्थ हो जाता। अतएव उसने अपने मन्त्रियो और उत्तरदायी कार्यकर्ताओ से कह रखा था कि जिस समय हम अफीम के अधिक नशे मे हो, उस समय हमारे सामने कोई राजनीतिक मामला अथवा राज्य का कोई गम्भीर कार्य उपस्थित न किया जाय।

नागौर के अधिकारी बख्तसिह का पत्र आमेर राज दरबार मे आया। सभी सामन्तो ने उन पर विचार विनिमय किया और अन्त मे सब की सम्मति से निर्णय किया गया कि मारवाड़ और बीकानेर के राजपूत अपने ही वशज है। इसलिए आमेर के राजा का इरादा उसमे हस्तक्षेप करने का बिल्कुल नही है। यह निर्णय लिखकर बख्तसिह के पास भेज दिया गया। उसे पढ़कर बख्तसिह ने जो योजना बनाई थी वह व्यर्थ हो गई। लेकिन बीकानेर का राजदूत उस समय आमेर के राज-दरबार मे बैठा था। उसकी मित्रता आमेर के प्रधान मन्त्री विद्याधर के साथ थी × उसकी सहायता से राजदूत ने राजा जयसिह से भेट की और उसने प्रार्थना करते हुये कहा . "महाराज बीकानेर पर इस समय भयानक विपद है। हमारे राजा ने मारवाड के राजा की प्रधानता कभी स्वीकार नही की। इसलिए राजा अभयसिह ने आक्रमण करके बीकानेर को नष्ट-भ्रष्ट करने की चेष्टा की है।"

राजदूत की इन बातो ने राजा जयसिह को प्रभावित किया। स्वाभिमान मे आकर उसने राजा अभयसिह को लिखा : "हम भी एक ही वंश के साथ सम्बन्ध रखते हैं। इसलिये बीकानेर पर जो आक्रमण किया है, उसे वापस ले लेना चाहिये।

पत्र की इन पक्तियो को लिखकर जयसिह ने फिर अफीम सेवन किया और वह पत्र को बन्द करने लगा। बीकानेर का राजदूत राजनीति कुशल था। उसने राजा जयसिह के मन की परिस्थिति का लाभ उठाया। उसने प्रार्थना करते हुए कहा : "महाराज, दो बाते इस पत्र मे, यदि आप उचित समझे तो और आ जानी चाहिये। एक तो यह कि बीकानेर से राठौर सेनाये वापस चली जांय और दूसरी यह कि यदि ऐसा न हुआ तो मेरा नाम जयसिह है, इसको स्मरण रखिये।"

अफीम के नशे मे राजा जयसिह ने राजदूत की बात सुनी और बिना कुछ सोचे समझे, दूत के कहने के अनुसार उसने पत्र मे दोनो बाते बढा दी। बीकानेर का राजदूत अपनी इस सफलता को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। राजा जयसिह से उस पत्र को लेकर बीकानेर का राजदूत वहाँ से बिदा हुआ और उसने किसी दूसरे दूत के द्वारा राजा जयसिह का पत्र अभयसिह के शिविर मे भेज दिया।

बीकानेर के राजदूत के चले जाने पर आमेर का प्रधान मन्त्री राजा जयसिह के पास पहुँचा। जयसिह ने प्रधान-मन्त्री से उस पत्र का जिक्र किया, जो उसने राजा अभयसिह के पास लिखकर भेजा था। प्रधान मन्त्री ने सुनकर कहा : "आप राजा हैं, जो ठीक समझते हैं करते हैं। लेकिन यह पत्र जो राजा अभयसिह के पास भेजा गया है—मेरी समझ मे कुछ अच्छा न साबित होगा। इसलिये यदि आप मुनासिब समझे तो किसी आदमी को भेज कर रास्ते से पत्र ले जाने वाले दूत को वापस बुला लिया जाय।"

× विद्याधर एक बङ्गाली ब्राह्मण था। वह शास्त्रो का पण्डित था और ज्योतिष के शास्त्र का महान विद्वान था। वर्तमान जयपुर नगर का निर्माण उसी की सुयोग्य सम्पति के आधार पर हुआ था। आमेर का राजा उसका बड़ा सम्मान करता था।

है। अजितसिंह का जन्म भी इसी प्रकार हुआ और उसकी मृत्यु भी हुई। अजितसिं
के गौरव की वृद्धि को। हिन्दू जाति का मस्तक ऊँचा किया। राठौरो की मर्यादा
शत्रुओ पर सदा सफलता प्राप्त की। अजितसिंह के मरने पर जोधपुर की राजधानी
उठी। चारों तरफ रोने और चिल्लाने की आवाजे उठने लगी। बच्चे से लेकर बूढे त
नेत्रों से आँसू बह निकले। अन्त मे सभी को यह समझ कर सन्तोष करना पडा कि ८
होती है।"

अजितसिंह की मृत्यु के सम्बन्ध मे राठौर कवियो ने लिखा है : "सम्वत् १७८०
महीने के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को मरुभूमि के आठ ठाकुरौत" अर्थात् आठ श्रेष्ठ
अधीनता मे सत्रह सौ राठौर वंशी राजपूत नगे सिर, नंगे पैर स्वर्ग को गये हुये अ
शव के निकट एकत्रित हुये। उनके नेत्रो से अश्रुपात हो रहे थे। नौका के आकार
बनायी गयी। * अजितसिंह का शव उसी मे रखा गया और सभी लोग उसी रथी को र
भूमि में ले गये। चन्दन, लकडी, अनेक प्रकार के सुगन्धित द्रव्यो और घी—कपूर
तैयार की गयी। इस मृत्यु का समाचार महलो मे पहुँचा। सोलह दासियो के साथ
ने स्मशान भूमि अर आकर कहा : "आज मै अपने प्राणपति के साथ चिता मे बैठक
यात्रा करूँगी।" †

अजितसिंह की रानियाँ और उपरानियाँ—सब मिलाकर अट्ठावन थी। अजित
जाने के बाद एक-एक करके सभी स्मशान भूमि मे आयी और चिता मे बैठ कर सती ह
तैयार हो गयी। उन सभी ने उस समय अपने कर्त्तव्य के सम्बन्ध मे कुछ बाते कही और प
चिता पर बैठकर भस्म हो जाने को उन्होने अपना धर्म बताया। उनकी कही हुई बातो
उल्लेख करके हम अनावश्यक विस्तार नही देना चाहते।

रानियो के मुख से अनेक प्रकार की बातो को सुन कर नाजिर ने जो एक राठौर
राजमहलो मे सरक्षक के रूप मे रहा करता था, जिसका यह नाम मुस्लिम भाषा के अ
रखा गया था—उनको समझाते हुये कहा : "इस समय आप लोगो का इस प्रकार कह
समुचित है। लेकिन जिस समय चिता मे आग दी जायगी, उस समय उसकी भयानक
लोगो के जीवित शरीर को जलाने का काम करेगी। उस समय का दृश्य कितना भीष
उसका अनुमान आप लोगो को कर लेना चाहिये। उस समय यदि घबराकर चिता से आप
का कार्य किया तो वह कलक आपके वश के माथे से कभी मिटाया न जा सकेगा। इसलि
आप लोगो से प्रार्थना है कि इस पर आपको विचार कर लेना चाहिये। प्रज्वलित अग्नि
जल जाने का कार्य कितना रोमाँचकारी है उसकी कल्पना नही की जा सकती।"

अन्तःपुर के सरक्षक की बातो को सुन कर एक रानी ने कहा : "हम संसार मे सब
सकती हैं, परन्तु अपने पति को छोडकर जीवित नही रह सकती।"

* शव को ले जाने के लिये राजपूत लोग नौका के आकार-प्रकार मे जो अर्थी तैया
थे। उसका नाम रथी है। प्राचीन काल मे और आज भी हिन्दुओ का विश्वास है कि मरने
बैतरणी नदी पार करनी पड़ती है। इसलिये हिन्दुओ में मृत्यु के पश्चात् जितने भी सस्कार कि
हैं, कुछ उसी उद्देश्य से होते है।

† अवस्था में परिपूर्ण होने के पहले ही इसी रानी के साथ अजित ने विवाह किय
पितृ हन्ता अभयसिंह की वह माता थी।

दीजिये। वहाँ से इस समय सेना का हटाना ठीक नही है। आमेर के राजा के साथ युद्ध करने के लिये मैं अकेला काफी हूँ।" अभय सिह ने उसकी बातो को स्वीकार कर लिया।

बख्तसिह नागौर लौट गया। उसने अपने सामन्तो को युद्ध के लिये तैयार होकर आने के लिये सदेश भेजा। नागौर राज्य मे युद्ध की तैयारियाँ होने लगी। आने वाले सामन्तो को अफीम का शर्बत पिलाना शुरू किया गया और उसके बाद कुमकुम का जल उनके ऊपर छिडका जाने लगा। नागौर के सभी सामन्त अपनी सेनाओ के साथ आकर वहाँ पहुँच गये। सभी ने अफीम का शर्बत पिया। उसके बाद नागौर मे एकत्रित आठ हजार राजपूतो की सेना मे युद्ध के बाजे बजे।

उस सेना को लेकर बख्त सिह नागौर के बाहर निकला और एक बाजरा के खडे खेत के पास जाकर बख्त सिह ने ऊँचे स्वर से कहा "इस समय हम आमेर की विशाल सेना के साथ युद्ध करने के लिये जा रहे हैं। इसलिये जो लोग उस युद्ध मे जाने के लिये अपने हृदय मे उत्सुक हो, वही हमारे साथ चले और बाकी लोग प्रसन्नता के साथ अपने घरो को लौट जायँ। यदि आप लोगो मे से कोई पराजित होने की अवस्था मे भागने की इच्छा रखता हो, तो मैं ईश्वर का नाम लेकर उसको लौट जाने की आज्ञा देता हूँ।

इसके बाद बख्त सिह ने अपना घोडा बाजरे के खेत मे ले जाकर दौडाया। इसका अभिप्राय यह था कि उसके हट जाने पर जो लोग लौटकर घर जाना चाहते हैं, वे चले जायँगे। कुछ देर में बाजरा के खेत से लौट कर बख्तसिह ने देखा कि आठ हजार सैनिको और सरदारो मे पाँच हजार से कुछ अधिक लोग युद्ध के लिये मौजूद है। बाकी लोग वहाँ से चले गये हैं। उनको देख कर बख्त सिह ने समझ लिया कि युद्ध करने के लिये असली सैनिक इतने ही हैं।

अपनी छोटी-सी सेना को लेकर बख्तसिह मारवाड के उस स्थान की तरफ बढा जहाँ पर आमेर के राजा जयसिह की सेना मौजूद थी। नागौर की सेना को आता हुआ देखकर आमेर की सेना तैयार होकर युद्ध के लिये आगे बढी। कुछ समय मे नागौर की सेना के निकट आ जाने पर बख्त सिह ने आक्रमण करने की आज्ञा दी। उसी समय शूरवीर राठौर सैनिक एक साथ अपने हाथो मे तलवारे और भाले लिये हुए आमेर राज्य की सेना पर टूट पडे। उस भयानक मारकाट मे रक्त के नाले बह निकले। युद्ध करते हुए बख्त सिह ने एक बार अपनी सेना की तरफ देखा। उसे मालूम हुआ कि उसके पाँच हजार सैनिको मे अब केवल साठ सैनिक बाकी रह गये हैं। बाकी सब मारे गये।

इसी समय नागौर के श्रेष्ठ सामन्त गजसिह पुरापति ने बख्त सिह से कहा : "महराज यहाँ पर एक घना जङ्गल है, वहाँ चल कर आश्रय लीजिये।"

बख्त सिह ने पूछा : "सामने का यह मार्ग कौन-सा है ? जिस रास्ते से हम आये हैं, उस पर होकर हम नही जायेंगे।"

इसी समय दूर से बख्त सिह ने आमेर के राजा जयसिह का पञ्चरङ्गा झण्डा उडता हुआ देखा। उसने समझ लिया कि यहाँ पर जयसिह मालूम होता है। उसने बडी तेजी के साथ, अपने साठ आदमियो को लेकर जयसिह के शिविर पर आक्रमण किया। उसका शरीर रक्तमय हो रहा था। बख्तसिह को घोडे पर तेजी से आता हुआ देख कर दीपसिह ने घबरा कर जयसिह को तुरन्त भागने का सकेत किया। जयसिह ने पहले बख्त सिह का सामना करने की चेष्टा की। परन्तु उसके बाद उत्तर की तरफ से भाग कर वह कुण्डला नामक एक ग्राम मे पहुँच गया।

भागते समय जयसिह ने कहा : "मैंने सत्रह युद्ध देखे है परन्तु आज के युद्ध की तरह

बादशाह के साथ किया था। इस विषय में अजित सिंह की राजनीति, गम्भीरता और प्रशंसनीय थी।

अजित सिंह के जीवन के कार्यों के सम्बन्ध मे सभी बाते ऊपर लिखी जा चु उसके जीवन चरित्र मे एक ऐसा दाग है, जिसका स्पष्टीकरण उस समय के किसी प्र नही होता है। यहाँ पर संक्षेप मे उसका उल्लेख करना आवश्यक है।

अजित के प्राणो की रक्षा का सम्पूर्ण श्रेय दुर्गादास को है। उसने अपने प्रा छोड़कर अजित की रक्षा की थी। औरङ्गजेब अजित के प्राणों का संहार करने के लिये तुला हुआ था। इसके लिये उसने उचित और अनुचित—सभी प्रकार के कार्य किये थे। मुगल बादशाह औरङ्गजेब से शिशु अजित के प्राणो की रक्षा करने का कार्य केव से ही हो सकता था। इसमें किसी को सन्देह नही हो सकता कि यदि दुर्गादास न होता किसी दूसरे को उसकी रक्षा, मे सफलता न मिलती और औरङ्गजेब के द्वारा शिशु अजि विदा कर दिया गया होता।

परन्तु दुर्गादास ने अपने विश्वासी राठौर सरदारो की सहायता से अजित के रक्षा की। उसने अनेक अवसरों पर स्वार्थ त्याग के अपूर्व उदाहरण दिये। बादशाह का प्रलोभन दुर्गादास को आकर्षित न कर सका। वह एक स्वाभिमानी राजपूत था। अपने उत्सर्ग करके जो अजित की रक्षा करना चाहता था, उसके सामने प्रलोभन का क्या म है। उसने अनेक मौको पर बादशाह की सम्पत्ति और जागीरो को ठुकराया था। अजि सम्पूर्ण जीवन की तैयारी दुर्गादास ने की थी। दुर्गादास स्वाभिमानी, साहसी, शूर राजभक्त राजपूत था। उसने अपने ये सभी गुण राजकुमार अजित में पैदा किये थे। अ यदि अपने जीवन मे देश, समाज, वंश और राज्य के लिये उपयोगी साबित हो सका सम्पूर्ण श्रेय केवल दुर्गादास को था। ऐसी दशा मे दुर्गादास ने कौन-सा अपराध किया था कारण वह मारवाड़ से निकाल दिया गया!

अजित सिंह ने किस समय और किस कारण से दुर्गादास के साथ ऐसा व्यवहार f यह नही कहा जा सकता। जिन कवियो ने अजित सिंह का ऐतिहासिक जीवन चरित्र काव्य है, उन्होने इसका कोई उल्लेख कही पर नही किया। इसका कारण यह नही है कि दुर्गा मारवाड़ से निकाले जाने की बात गलत है। उन कवियो के उल्लेख न करने का कारण सकता है कि उन्होने अजित सिंह का जीवन चरित्र अभय सिंह की देख रेख में लिख [illegible]

युद्ध के समय बख्तसिंह की देवी की मूर्ति जयसिंह के अधिकार मे पहुँच गयी थी। जयसिह उस मूर्ति को अपने साथ जयपुर ले गया और वहाँ के देवता की मूर्ति के साथ उस देवी की मूर्ति का विवाह करके बड़ा उत्सव किया। इसके बाद उन दोनो मूर्तियो को जयसिह ने बख्तसिंह के पास भेज दिया।

अभयसिह के जीवन मे यह आखिरी युद्ध था। उसके पश्चात् उसने फिर कोई युद्ध नही किया। सम्वत् १८०६ सन् १७५० ईसवी मे अभयसिह की जोधपुर मे मृत्यु हो गयी। वह अत्यन्त तेजस्वी और शूरवीर था। वृद्धावस्था मे अफीम का अधिक सेवन करने के कारण उसमे आलसी होने का एक दुर्गुण पैदा हो गया था। लेकिन उसके कारण उसने मारवाड के गौरव मे कभी कोई कमी नही आने दी।

जयपुर के कछवाहो और मारवाड के राठोरो मे यद्यपि कोई विशेष अन्तर नही है और दोनो राजपूत एक ही मूल वश से उत्पन्न हुए हैं। परन्तु राजस्थान में कछवाहे निर्बल और कायर माने जाते थे। मारवाड के राठौर आमतौर पर कछवाहो को साहसहीन समझ कर उनसे घृणा किया करते थे। यद्यपि राठोरो और कछवाहो मे वैवाहिक सम्बन्ध चलते थे।

किसी समय अभयसिह ने दिल्ली के बादशाह के सामने हँसी करते हुये जयसिह से कहा था: 'आपका वश कुशवाहा है और यह वश कुश से पैदा हुआ है। कुश काटने मे जिस प्रकार तीक्ष्ण होता है, आपकी तलवार भी उतनी ही तेज है।' अभयसिह की यह बात जयसिह को अच्छी न लगी। उसने बादशाह के सामने इस बातचीत से अपना उपहास समझा। उसने उस समय कुछ न कहा। परन्तु इसके बदले मे वह अभयसिह को अपमान करने के तरह-तरह के उपाय सोचता रहा।

राजस्थान मे जयसिह ने अपनी विद्वत्ता के लिए और अभयसिह ने तलवार चलाने मे अपूर्व ख्याति पायी थी। कृपाराम दिल्ली के मुगलो का कोषाध्यक्ष था। जयसिह उसके साथ अपना मेल रखता था। एक दिन बादशाह के पास कृपाराम मोजूद था। अभयसिह और जयसिह भी वहाँ पर खडे थे। जयसिंह ने कृपाराम को पहले से ही एक संकेत कर रखा था। उसी के आधार पर, अवसर पाकर कृपाराम अभयसिह के बल-पराक्रम की प्रशसा करने लगा। उसी समय बादशाह ने कहा: "मैंने सुना है कि आप तलवार चलाने मे बहुत ख्याति रखते हैं।"

बादशाह की बात को सुन कर अभयसिह ने उत्तर दिया: "मैं आवश्यकता पडने पर उसका प्रयोग करता हूँ।" बादशाह ने कहा: किसी मौके पर मैं आपकी तलवार का काम देखना चाहता हूँ।" अभयसिह ने उसको स्वीकार कर लिया।

बादशाह की आज्ञा से अभयसिह की शक्ति की परीक्षा लेने के लिए एक भयानक भैंसा लाया गया और सभी लोगो से जाहिर किया गया कि आज अभयसिह इस भैंसे के साथ अपनी तलवार का हाथ दिखावेगा। इस बात को सुनते ही वहाँ पर बहुत-से लोग दर्शक बन कर एकत्रित हुए। एक बडी भीड़ के बीच मे वह भयानक और खूंखार भैंसा लाकर खडा किया गया। उस भैंसे को देखते ही लोगो को भय मालूम होता था। वह मनुष्यो पर बडी तेजी के साथ आक्रमण करता था।

उस भैंसे को देखकर अभयसिह अपने विश्राम-गृह मे गया और वहाँ उसने अन्य दिनो की अपेक्षा दो गुनी अफीम का सेवन किया। उस समय उसे मालूम हो गया कि जयसिह ने अपमानित करने के लिए यह षडयन्त्र रचा है। वह क्रोध से उन्मत्त हो उठा। विश्राम-गृह से लौट कर वह बादशाह के पास आकर खडा हो गया।

बादशाह ने मुस्कराते हुये अभयसिह की तरफ देखा। अभयसिह बादशाह का अभिप्राय समझ गया। वह अपने स्थान से भैंसा की तरफ बढा। भैसा बड़ी तेजी से अभयसिह की तरफ

अजित सिंह की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह ने अपने
सिंह के मस्तक पर राजतिलक किया । कमर में तलवार बाँधी, मस्तक पर राज
मणि मुक्ता एवम् हीरा जवाहिरात से जड़ा हुआ किरिच देकर उसको मारवाड़ के
बिठाया । छत्र, चवँर, नौबत और नगाडे इत्यादि बाजे और बहुमूल्य पदार्थ उपहार मे दे
ने अभय सिंह का सम्मान किया । नागौर का शासन अधिकार अमर सिंह को दिया गय
अवसर पर मोहम्मद शाह ने वहाँ का शासन अधिकार अभय सिंह को दिया ।

मुगल बादशाह से इस प्रकार सम्मानित हो कर अभय सिंह अपनी राजधानी
गया । अभय सिंह ने इन दिनो मे जो कुछ किया था, मारवाड़ मे कोई भी उससे अपरि
सभी उसके पिता को मारने वाला हत्यारा और मुगलो की पराधीनता को स्वीकार करने
राधी समझते थे । परन्तु जब वह दिल्ली से सम्मानित होकर अपनी राजधानी को लौ
के सभी लोगो ने बडे सम्मान के साथ उसका स्वागत किया । उसके सभी पापो और
लोग भूल गये थे । मार्ग के प्रत्येक ग्राम मे अभय सिंह का जोरदार स्वागत होता था । रा
स्त्रियाँ पानी से भरे हुए कलसो को सिर पर रख कर गाना गाती हुई वे अपने नवीन
सम्मान कर रही थी । जोधपुर पहुँच कर अभय सिंह ने राठौर सामन्तो को उपहार में
पदार्थ दिये और कवियो, चारणो तथा पुरोहितो को सम्पत्ति और पृथ्वी दान में दी । इस प्र
सभी का सम्मान किया ।

राठौर वंशी करणीदान एक श्रेष्ठ कवि था, वह राजनीति का पण्डित था और
में शूरवीर था । मारवाड के घरेलू विद्रोह के समय की घटनाओ का वर्णन उनसे बडे अच्छे
किया है । सूर्य प्रकाश नामक प्रसिद्ध ग्रथ काव्य उसी का लिखा हुआ है । यह ग्रन्थ उ
के इतिहास का वर्णन करता है । मारवाड के इतिहास का वर्णन हमने बहुत कुछ इसी सूर्य
के आधार पर किया है । यद्यपि उसकी बहुत-सी दूसरी बाते दूसरे साधनो के द्वारा भी प्र
गयी है ।

अभिषेक से छुट्टी पाने के बाद अभय सिंह ने नागौर का अधिकार अपने हाथ में लेने की
की । इस नागौर का अधिकार राव अमर सिंह के उत्तराधिकारी इन्द्रसिंह को बादशाह की
उस समय दिया गया था, जब अजितसिंह के साथ मोहम्मदशाह का युद्ध आरम्भ हुआ था ।
दिनो मे नागदुर्ग के सिंहासन पर इन्द्र सिंह को बिठाया गया था । * अभय सिंह अपनी सेना
नागौर की तरफ रवाना हुआ । इन्द्र सिंह को जब उसके आने का समाचार मिला तो वह अभ
के पास पहुँचा और उसने बादशाह के हस्ताक्षरो की सनद दिखा कर कहा कि यहाँ के शास
अधिकार मुझे मिला है । आमेर का राजा जय सिंह मेरे इस अधिकार का साक्षी है । यहाँ पर
कोई अधिकारी नही हो सकता ।

अभय सिंह ने इन्द्र सिंह की कही हुई बात का कुछ भी ख्याल न किया । उसने नागौर
जा कर घेर लिया । इन्द्रसिंह ने अभय सिंह के साथ युद्ध नहीं किया । उसने नागौर का दुर्ग
दिया । अभय सिंह ने उस पर अधिकार करके अपने छोटे भाई बख्त सिंह को वहाँ का अधि
बना दिया ।

इस नागौर राज्य के प्रलोभन मे ही बख्त सिंह ने अपने पिता के जीवन को नष्ट कि
था । उसने यह अक्षम्य अपराध अभय सिंह के परामर्श से किया था । इसलिए अभय सिंह

* नागौर का प्राचीन नाम नागदुर्ग था ।

रामसिंह स्वभाव का अत्यन्त क्रोधी और अदूरदर्शी था। मारवाड का राज्य-सिंहासन प्राप्त करने के समय तक उसने अपने चरित्र का जो परिचय दिया उससे कदाचित् कोई भी प्रसन्न न था।

रामसिंह के अभिषेक मे मरुभूमि के प्रत्येक सामन्त और श्रेष्ठ व्यक्ति ने राजधानी जोधपुर में आकर नवीन राजा के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया था। परन्तु उस अभिषेक मे नागौर के शासक बख्तसिंह ने आकर भाग नही लिया। इस शुभ अवसर पर उसके न आने पर उसके न आने का क्या कारण था, इसका कोई उल्लेख और स्पष्टीकरण उस समय के भट्ट ग्रन्थो में नही मिलता।

रामसिंह बख्तसिंह का भतीजा था और रामसिंह के अभिषेक मे बख्तसिंह का आना अत्यन्त आवश्यक था। उस अभिषेक मे रामसिंह के मस्तक पर राज तिलक करना बख्तसिंह का परम कर्त्तव्य था। परन्तु न तो वह स्वय उसमे गया और न अपने प्रतिनिधि के रूप मे उसने किसी सामन्त को भेजा। उसकी तरफ से उस अवसर पर एक धात्री जोधपुर गई थी। राजस्थान मे धात्री को माता के समान सम्मान मिलता है।

उस धात्री के भेजने मे बख्तसिंह का क्या अभिप्राय था, इसका भी कोई उल्लेख उस समय के ग्रन्थो मे नही पाया जाता। उस धात्री के साथ रामसिंह ने जो व्यवहार किया, वह किसी प्रकार सम्मानपूर्ण नही कहा जा सकता। इतना ही नही, बल्कि रामसिंह के उस व्यवहार को निन्दनीय कहा जाना किसी प्रकार अनुचित नही हो सकता।

रामसिंह ने इतना ही नही किया, बल्कि राजसिंहासन पर बैठने के बाद जालोर का राज्य छोड देने के लिए उसने अपने चाचा बख्तसिंह के पास दूत भेजा। अभिषेक के अभी बहुत थोडे दिन बीते थे। चाचा और भतीजे मे विद्वेष की आग सुलगने लगी।

रामसिंह ने दूत भेजने के बाद बख्तसिंह के पास अपना एक पत्र भी भेजा और नागौर राज्य पर आक्रमण करने की वह तैयारी करने लगा। इस अवसर पर रामसिंह ने अपने सुयोग्य सामन्तो और मन्त्रियो के साथ परामर्श न किया। उसने निम्न श्रेणी के कर्मचारियो के साथ बातें की और उन्ही के परामर्श से उसने काम किया। इन निम्न श्रेणी के लोगो मे अमियाँ नाम का एक कर्मचारी था। उसके पूर्वज जोधपुर के प्रधान तोरण-द्वार पर नगाडा बजाने का काम करते थे। अमियाँ भी जोधपुर का एक कर्मचारी था और वह अपने पिता के स्थान पर काम करता था। यह अमियाँ रामसिंह का एक प्रिय और प्रधान सलाह देने वाला था।

रामसिंह और अमियाँ के स्वभावो की बहुत-सी बाते मिलती जुलती थी। रामसिंह जो चाहता था, अमियाँ उसी का समर्थन करता था। दोनो के बीच मित्रता का यही प्रधान कारण था। इसी अमियाँ ने रामसिंह को बख्तसिंह से युद्ध करने का परामर्श दिया था।

मारवाड के प्रधान चम्पावत सामन्त कुशलसिंह ने जब सुना कि रामसिंह अपने चाचा बख्त सिंह के साथ युद्ध करने की तैयारी कर रहा है तो वह चिन्तित हो उठा और जोधपुर पहुँच कर उसने रामसिंह को समझाने की चेष्टा की। कुशलसिंह के वहाँ पहुँचते ही और अपने स्थान पर बैठते ही रामसिंह ने उसकी तरफ देखा और आवेश मे आकर उसने कहा : 'आपका मुख न देखना ही मैं अच्छा समझता हूँ।"

रामसिंह के मुख से इस प्रकार के कड़वे शब्द को सुनकर सामन्त कुशलसिंह ने उसकी तरफ देखा और फिर गम्भीर होकर उसने कहा। "आपके इस प्रकार के व्यवहार को देखकर आपके चाचा बख्तसिंह को भी इसी प्रकार का व्यवहार प्रकट करने का अधिकार है। आपने बख्तसिंह के साथ जिस प्रकार का व्यवहार आरम्भ किया है उसका परिणाम आपके सामने अच्छा नही

कार करके अपने आपको वहाँ का स्वतन्त्र बादशाह घोषित किया है और मण्डला, भ
बघेला तथा गोरिल जातियो को परास्त करके उनको विध्वंस कर डाला है । सर
अत्याचारो से भूमिया लोगो ने अपने-अपने दुर्ग छोड दिये हैं और सरबुलन्द खाँ की
हैं । सरबुलन्द खाँ अहमदाबाद का बादशाह बनकर दक्षिण के मराठों से मिल गया है ।

इस समाचार को सुनकर बादशाह मोहम्मदशाह ने गम्भीरता के साथ सो
निर्णय किया यदि सरबुलन्द खाँ का दमन न किया गया तो इसका प्रभाव साम्राज्य मे
और सामन्तो पर पडेगा और वे सभी लोग साम्राज्य की अधीनता को तोडकर स्वतन्त्र
चेष्टा करेगे ।

इन दिनो में साम्राज्य के कई भागो से ऐसे समाचार आये थे, जिनसे मा
साम्राज्य की अधीनता मे चलने वाले कितने ही राजाओ ने स्वतन्त्र हो जाने की कोशि
दी है । इन दिनो मे मुगल बादशाह का प्रताप एक निर्बल दीपक की भाँति कमजोर पड
इस दशा मे मोहम्मदशाह ने अपने साम्राज्य की शक्तियो को फिर से मजबूत बनाने का उप

मुगल साम्राज्य का पतन औरङ्गजेब के शासन-काल मे ही आरम्भ हो गया था ।
जो लोग उस सिंहासन पर बैठे, साम्राज्य के पतन को वे रोक न सके । धीरे-धीरे
शक्तियाँ क्षीण होती गयी और इधर बहुत दिनों से साम्राज्य का सिंहासन डावाँडोल हो
मुगलो की इस बढती हुई कमजोरी मे सभी अधिकृत हिन्दू और मुसलमान राजा अ
साम्राज्य से सम्बन्ध तोड देने की चेष्टा कर रहे थे । इस प्रकार के लोगो मे सरबुलन्द
आदमी था ।

विद्रोहियो के साथ मिलकर सरबुलन्द खाँ ने अपने, आपको स्वतन्त्र बादशाह घोषित
था । उसका दमन करने के लिये बादशाह अनेक प्रकार के उपाय सोचता रहा । इसके लि
एक बड़ा दरबार किया । उस दरबार मे सोने के एक पात्र में पान का एक बीडा बनाकर र
और उस दरबार मे साम्राज्य के जितने भी राजा, सामन्त, अमीर-उमरा उपस्थित थे, सब
सरबुलन्द खाँ के दमन का प्रस्ताव रखा गया ।

उस समय दरबार के सभी लोगो ने इस बात को साफ-साफ समझ लिया कि पान
बीडा उसी को उठाना चाहिये, जो सरबुलन्द खाँ को पराजित कर सकने की सामर्थ रखता हो
को रखे हुए कुछ समय बीत गया । उपस्थित शूरवीरों मे किसी ने भी पान के उस बीडा को
का साहस न किया । दरबार के कितने ही अमीरो ने अपने सिर नीचे की तरफ झुका लिये ।
ही लोगो ने उस बीडा की तरफ देखने का भी साहस न किया ।

जो बादशाह अपनी शक्तियो के सामने किसी की कुछ परवा न करता था और
मामूली सकेत पर बडे-बडे राज्यो का विध्वस और विनाश होता था, आज उसके दरबार मे ए
ऐसा शूरवीर नहीं है जो साम्राज्य की गिरती हुई दीवारो को बचा सके । दरबार मे किसी के
न उठाने पर बादशाह मोहम्मदशाह का अन्तरतर घबरा उठा । इसी समय मे बैठे हुए एक
ने कहा :

"जो सरबुलन्द खाँ को पराजित कर सकता हो, उसी को पान का यह बीडा
चाहिये ।"

उस अमीर की बात समाप्त होते ही दूसरे अमीर ने कहा : "सरबुलन्द खाँ को परास्त क
सरल नहीं है । इसलिये समझ बूझकर आगे कदम उठाना चाहिये ।"

पर है। इसीलिए अयोग्य और उग्र स्वाभाव का होने पर भी रामसिंह अपने पिता अभयसिंह के सिंहासन पर बैठा था। लेकिन वह इस पैतृक अधिकार को अधिक समय तक भोग न सका। उसने अपने चाचा बख्तसिंह के विरुद्ध आक्रमण किया और उसके फल-स्वरूप वह सिंहासन से उतारा गया। जोधपुर राज दरबार के सभी मन्त्रियो और सामन्तो ने बख्तसिंह का समर्थन किया। परन्तु वहाँ का पुरोहित बख्तसिंह के पक्ष मे न रहा। उस पुरोहित का नाम था जग्गू। इस जग्गू ने रामसिंह को उग्र और अयोग्य समझकर भी समर्थन किया था। जोधपुर के सिंहासन पर बख्तसिंह के बैठने पर रामसिंह ने राजा जयपुर के यहाँ जाकर आश्रय लिया। पुरोहित जग्गू पूरी तौर पर रामसिंह के पक्ष मे था। उसने रामसिंह को फिर से राजसिंहासन पर बिठाने का प्रयास किया और इसके लिए मराठो की सहायता प्राप्त करने की इच्छा से जग्गू दक्षिण चला गया।

जग्गू का कार्य बख्तसिंह से छिपा न रहा। उसने देखा कि पुरोहित जग्गू मराठो की सहायता लेकर मारवाड के विनाश की चेष्टा कर रहा है। इसलिए इस पुरोहित को अपने अनुकूल बनाने की कोशिश क्यो न की जाय। इसके सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की बाते सोच-समझ कर बख्तसिंह ने राजनीति से काम लिया। उसने कविता मे एक पत्र लिखकर जग्गू पुरोहित के पास भेजा। उसका आशय इस प्रकार है :

"हे मधुकर जिस फूल के सौरभ पर आप आशक्त हो रहे है, उसका पेड आंधी के आने से नष्ट होकर गिर गया है, उसके सभी पत्ते सूख गये हैं। अब आप क्यो बेकार उसके कांटो में उलझना चाहते हैं।"

पुरोहित ने इसका उत्तर देते हुए बख्तसिंह को लिखा : "सूखा हुआ गुलाब का वृक्ष अवसर पाकर फिर हरा हो सकता है और बसन्त के आने पर उसमे नवीन फूल पैदा होकर फिर से सुगन्धि दे सकते हैं। इसी आशा से मधुकर उस वृक्ष से निराश नही है।"

पुरोहित की इस स्पष्ट बात को पढकर बख्तसिंह को बडी प्रसन्नता हुई। उसने पुरोहित का सम्मान करने के लिये सन्देश भेजा, जिसे पुरोहित ने स्वीकार कर दिया।

बख्तसिंह ने जोधपुर के सिंहासन पर बैठकर बडी बुद्धिमानी के साथ वहाँ के जनो को अपने अनुकूल बना लिया था। उसमे इस प्रकार के गुण थे, जिनसे राजस्थान के लोग सदा प्रसन्न रहते थे। रामसिंह का दूत दक्षिण मे पहुँचा और वहाँ के मराठा नेताओ ने मिलकर रामसिंह को जोधपुर के सिंहासन पर बिठाने के लिये उसने पूरी चेष्टा की। दक्षिण के मराठा रामसिंह की सहायता करने के लिये तैयार हो गये। लेकिन जब उनको मालूम हुआ कि राजस्थान के अधिकाश राजा और सामन्त रामसिंह के विरुद्ध बख्तसिंह की सहायता करेगे, तो वे भयभीत हो उठे।

राजस्थान के राजाओ मे यह अफवाह फैल गई की बख्तसिंह के विरुद्ध रामसिंह की सहायता करने के लिये मराठा लोग आने की तैयारी कर रहे है। इससे राजपूतो मे सनसनी पैदा हो गयी और वे लोग बख्तसिंह की सहायता करने के लिये तैयार हो गये। रामसिंह के दूत ने मराठो को समझा बुझा कर मारवाड की तरफ चलने के लिये तैयार किया। मराठा लोग रामसिंह की सहायता के नाम पर मारवाड को लूटने और वहाँ की अपरिमित सम्पत्ति ले जाने के लिये दक्षिण से रवाना हुए। मरुभूमि के सभी राजाओ और सामन्तो ने मराठो के विरुद्ध बख्तसिंह की सहायता करने के लिये निश्चय किया। इस दशा मे मारवाड पर आक्रमण करने का मराठो का इरादा क्षत्-विक्षत् हो गया और उन्होने जो आशाये की थी, उनमे उनको निराश हो जाना पडा। राजपूतो की एकता ने मराठो को मारवाड़ की तरफ आगे बढने का मौका नही दिया। फिर भी मराठो को

नीतिक परिस्थितियों पर बहुत देर तक गम्भीरता के साथ परामर्श किया। उस परा
बातें मुगल साम्राज्य के निर्व्वंश और विनाश की थी।

अजमेर पहुँचकर अभयसिंह ने अपने कार्यकर्त्ताओं को आवश्यक स्थानों पर
इसके बाद वह मेड़ता चला गया। उसका छोटा भाई बख्तसिंह वहाँ पहले से ही प
वह अभयसिंह से सम्मान पूर्वक मिला। बख्तसिंह को नागौर राज्य के शासन की स
मिल गयी थी। दोनों भाई सेना और सामन्तों के साथ मेड़ता से जोधपुर की तर
मार्ग मे अभयसिंह ने सामन्तों को बिदा करते हुये कहा : "विद्रोही सरबुलन्द खाँ
करने के लिये बहुत शीघ्र जाना है। इसलिये आप लोग देर न करें और अपनी सेनायें
मे आ जावें।

अभयसिंह की बात को सुनकर सभी सामन्त प्रसन्नता के साथ अपने-अपने रा
गये। अभयसिंह बख्तसिंह के साथ जोधपुर पहुँचा। उसके पश्चात् सरबुलन्द खाँ के सा
की वह तैयारी करने लगा। मारवाड के राठौर सामन्त अपनी सेनाओं के साथ एक-एक
पुर में आने लगे। सब सामन्तों के आ जाने पर और सेना के तैयार हो चुकने पर बडव
मुखन और जमराज इत्यादि तोपों की पूजा की गयी। बकरों का बलिदान किया गया।

युद्ध की सम्पूर्ण तैयारी हो चुकने के बाद अभयसिंह के मन में एक नया f
हुआ। इस समय उसके अधिकार मे एक विशाल शक्तिशाली सेना थी। उसके
अपने पडोसी सिरोही के विद्रोही राजा को परास्त करने का इरादा किया। सिरो
जिस प्रकार उपद्रवी था, उसी प्रकार वह स्वाभिमानी और तेजस्वी भी था। सिरोही
अब तक स्वतन्त्र रूप से चल रहा था। सिरोही का राज्य पहाडों के ऊपर था। उस र
स्वभाव के आदमी रहते थे। वे युद्ध करने मे भयानक थे। सिरोही के राजा के साथ
प्रायः संघर्ष हुआ करता था। अभयसिंह ने इस अवसर पर अपनी शक्तिशाली सेना का
की इच्छा की।

सिरोही राज्य के तीन तरफ जो पहाडी जाति के लोग रहते थे, वे मीना नाम
थे। इन मीना लोगों पर अभयसिंह ने आक्रमण करने का निश्चय किया। इन मीन
मारवाड की अनेक परेशानियाँ पैदा हुआ करती थी। सिरोही राज्य का कुछ हिस्सा
राज्य के समीप तक चला गया था। उस हिस्से मे पहुँच कर मीना लोग प्रायः मारव
साथ उत्पात किया करते थे। मारवाड़ के पशुओं को वे लोग अपने राज्य मे ले जाते
हाल मे उन मीना लोगों ने मारवाड के पशुओं का अपहरण किया था। इस प्रकार की पि
में उनको पराजित करना और उनके कार्यों का दण्ड देना अभयसिंह के लिये आवश्यक थ
लिये यह अवसर बहुत अनुकूल था। उसका अभयसिंह ने लाभ उठाने के उद्देश्य से मीना
आक्रमण की तैयारी की।

सिरोही राज्य के मीना लोगों को इस होने वाले आक्रमण का समाचार मिला।
घबरा उठे। राठौर सेना के रवाना होने के पहले ही मीना लोगों ने मारवाड के अपहृत प
अपने यहाँ से लेकर वापस कर गये और उस समय उन लोगों ने राठौरों के साथ ऐसा
किया, जिससे उन पर जो आक्रमण होने जा रहा था, उसकी परिस्थिति ही बदल गयी।

अभयसिंह ने अब सरबुलन्द खाँ पर आक्रमण करने का निर्णय किया। इसके लि
जो विशाल और शक्तिशाली सेना तैयार की थी, उसमे न केवल राठौरों की सेना थी, ब

नता को तोडकर छोटे और वडे सभी राजा अपने आपको स्वतन्त्र समझने लगे थे फिर भी मारवाड के सिहासन पर बैठकर प्राचीन प्रथा के अनुसार विजयसिह ने अपने अभिषेक का समाचार दिल्ली के बादशाह के पास भेजा । उसे मुगल सम्राट ने स्वीकार किया । उस समय राजस्थान के अन्यान्य राजाओ ने विजयसिंह के अभिषेक उत्सव पर बधाई के पत्र भेजे ।

मारोठ नामक स्थान मारवाड की सीमा पर बसा हुआ था, विजयसिह का अभिषेक उत्सव वही पर किया गया । उस समय विजयसिह ने मारोठ मे मेडता जाकर पिता की मृत्यु के कारण कुछ दिन शोक मे व्यतीत किये । वहाँ पर बीकानेर, कृष्णगढ और रूप नगर के स्वतन्त्र राजा अपनी-अपनी सेनाओ को लेकर आये और सभी ने विजयसिह के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया । उनके सिवा सभी सामन्तो ने वहाँ पहुँच कर विजयसिह के आदर सत्कार में अपने कर्त्तव्यो का पालन किया । विजयसिह ने भी आये हुए राजाओ और सामन्तो का पूर्ण रूप से आदर सम्मान किया । उसके पश्चात् जोधपुर जाकर वडे धूम-धाम के साथ उसने अपने पिता का श्राद्ध किया । इस कार्य मे उसने वहुत-सा धन व्यय किया और उसने कवियो, भाटो, चारणो, ब्राह्मण और अनाथो को दान मे वहुत-सा धन दिया ।

राज सिंहासन पर वैठने के समय विजयसिह की अवस्था बीस वर्ष की थी । उसकी इस छोटी-सी आयु मे रामसिह उसका शत्रु हो रहा था । रामसिह की शत्रुता के ही कारण वख्तसिह की अकाल मृत्यु हुई थी । जिस रामसिह ने षडयन्त्र रचकर वख्तसिह को ससार से विदा किया था, वही आज वख्तसिह के प्यारे पुत्र विजयसिह का शत्रु हो रहा था ।

रामसिह अपनी पूर्ण शक्तियो के द्वारा विजयसिह को सिंहासन पर वैठने से रोकना चाहता था । इसके लिए उसने सभी प्रकार की चेष्टाये की । परन्तु मारवाड राज्य के सामन्तो, सरदारो और मन्त्रियो ने विजयसिह के पक्ष का समर्थन किया । इसलिए रामसिह की कोई भी चेष्टा सफल न हो सकी और रामसिह को असफल बनाकर विजयसिह अपने पिता के सिंहासन पर वैठा ।

वख्तसिह के द्वारा मारवाड से निकाले जाने पर रामसिह जयपुर मे रहने लगा और वह अपने उद्देश्य की सफलता के लिये तरह-तरह की चेष्टाये कर रहा था । वख्तसिह की मृत्यु के बाद रामसिह ने विजयसिह के सिंहासन पर वैठने के समय कठोर वाधाये उपस्थित की और जब वह इसमे सफल न हो सका तो वह विजयसिह को पराजित करने और सिंहासन से उतार देने की कोशिश करने लगा ।

रामसिह इन दिनो मे जयपुर मे रहा करता था और इसके सम्बन्ध मे सभी प्रकार के परामर्श वह राजा जयपुर के साथ किया करता था । राजा जयपुर इस बात को भली-भाँति समझता था कि मारवाड के सामन्तो और सरदारो ने जब विजयसिह को सिंहासन पर विठाकर उसका प्रभुत्व स्वीकार किया है तो रामसिह के विरोध करने से उसमे कुछ नही हो सकता ।

नैतिक रूप से विजयसिह को सिहासन से उतारने का कोई रास्ता रामसिह और सहायको के सामने न था । इसलिए उसने अपने उद्देश्य मे सफलता प्राप्त करने के लिए दूसरे उपायो का सहारा लिया । उन दिनो मे दक्षिण के मराठो ने सङ्गठित होकर अपनी शक्तियाँ मजबूत बना ली थी । रामसिह ने उन्ही मराठो का सहारा लेने का निश्चय किया ।

इसके पहले रामसिह के पुरोहित ने मराठो के पास जाकर उनकी सहायता प्राप्त करने की चेष्टा की थी परन्तु उसमे रामसिह को सफलता न मिल सकी । इस समय मराठो को वख्तसिह

मेडता के सामन्त केशरी सिंह और ऊदावत बृद्ध सामन्त ने कुछ समय तक
किया कि अब हम लोगो को क्या करना चाहिये । इसी समय जोधावंश के खैर
कहा : 'मेरी समझ में युद्ध के बाजे बजने चाहिये । मैं तो युद्ध करने के लिये आया
और कुछ बिचार करना बिलकुल व्यर्थ है ।' यह कह कर वह चुप हो गया ।

जेतावत फतेहसिह और करणोत अभयमल्ल ने योधा सामन्त की बातो का
बडी देर तक परामर्श करने के बाद युद्ध करना निश्चित् किया गया । सभी लोग एक
कर चिल्ला उठे । उस समय सभी के मनोभावो मे उत्तेजना की तरंगे उठ रही थी ।
में, सरबुलन्द खाँ का उत्तर सुनकर युद्ध कराना चाहते थे । इसीलिये परामर्श के
आवाजे करने लगे ।

सबकी बातो को सुनने के बाद अभय सिह के भाई बख्त सिह ने उपस्थित
सामन्तो को सम्बोधन करके कहा : "आप सभी लोग अपने-अपने शिविर मे विश्राम
सेना लेकर सरबुलन्द खाँ के साथ युद्ध करने को जाता हूँ ।

बख्त सिह की बात समाप्त होते ही लाल रग का जल लाया गया और जल
अभयसिह के सामने रखा गया । अभय सिह ने बैठे हुये राजाओ और सामन्तो प
छिडकते हुए कहा : "इस युद्ध मे सबको विजय प्राप्त करना है । उसके अभाव मे हम
यात्रा करेगे ।"

जिस समय अभय सिह अपने साथ के राजाओ और सामन्तो के साथ परामश
सरबुलन्द खाँ ने युद्ध की तैयारी की । अपने नगर के प्रत्येक-मार्ग पर उसने दो
और पाँच-पाँच तोपे लगवा दी । उन तोपो पर योरप के लोग नियुक्त थे । बन्दूको
योरप का शक्तिशाली दल सरबुलन्द खाँ के साथ रक्षक के रूप मे था । सरबुलन्द ने
प्राप्त करने के लिये अनेक प्रकार के साधनो का आश्रय लिया था और वह युद्ध आ
प्रतीक्षा कर रहा था ।

इसी समय अभयसिह ने अपने सेना मे युद्ध के बाजे बजवाये । उसके बाद
भयङ्कर गोलो की वर्षा आरम्भ हुई । लगातार तीन दिनो तक गोलो की मार होती
सरबुलन्द का लड़का मारा गया । तीन दिनो के बाद तलवारो और भालो की मार
चम्पावत कुशल सिह युद्ध करते हुये मारा गया । दोनो तरफ के तलवारो और भालो
मार-काट हो रही थी, उसमे अभयसिंह और बख्तसिह ने शत्रुओ के बहुत-से आदि
किया । अन्तिम दिन जब आठ घडी दिन बाकी रह गया था, सरबुलन्द खाँ युद्ध-क्षेत्र
परन्तु उसकी अग्रवर्ती सेना का सेनापति उसके बाद भी युद्ध करता रहा । बख्तसिह
उस पर आक्रमण किया और अपनी तलवार से सरबुलन्द खाँ के सेनापति अलियार
दो टुकडे कर डाले । उसी समय वह गिर गया ।

अलियार के गिरते ही राजपूतो की सेना ने विजय का डका बजाया । सरबु
होकर युद्ध क्षेत्र से भाग था । अहमदाबाद के इस युद्ध मे शत्रु के चार हजार चा
आदमी मारे गये । इनमे से एक सौ व्यक्ति पालकियो पर बैठकर युद्ध कर रहे थे और
पर । राठौर सेना के एक सौ बीस प्रसिद्ध सरदार और अश्वारोही सैनिक मारे
सैनिक घायल हुये ।

इस युद्ध में सरबुलन्द खाँ की पूर्ण रूप से पराजय हुई । उसके सैनिक और

पिता की इन बातो को सुनकर उसके पुत्र को बडी निराशा हुई। वह पिता के पास मे लौट कर आया और राज्य के उद्धार के लिये वह तरह-तरह की बाते सोचने लगा। इन्ही दिनो मे विजय सिंह के साथ रामसिह का सङ्घर्ष बढा। सामन्त सिंह के बेटे ने इसको अपने लिए एक अवसर समझा और वह रामसिह के दूत के साथ दक्षिण मे मराठो के पास पहुँच गया। वहाँ पर रामसिंह के दूत के साथ-साथ अपनी सहायता के लिए भी उसने मराठो से प्रार्थना की।

मेडता के युद्ध मे जिस समय मराठा सेना पराजय की अवस्था मे पहुँच रही थी और अपने प्राणो की रक्षा के लिये युद्ध से वह भागना चाहती थी, ठीक उसी समय मराठा सेनापति जय अप्पा ने सामन्त सिंह के बेटे को बुलाकर कहा : "आपका और रामसिंह का मामला एक साथ है और एक सा है। हम लोग रामसिह की सहायता करने के लिये आये थे। लेकिन युद्ध की परिस्थिति बिलकुल हम लोगो के विपरीत जा रही है। इससे जाहिर होता है कि रामसिंह का भाग्य अच्छा नहीं है। अब प्रश्न यह कि हम लोग इस समय आपकी सहायता कर सकते हैं ?"

वह युवक मराठा सेनापति की इन बातो को सुनकर घबरा उठा। इसको इस प्रकार की आशा न थी। उसी समय उसने गम्भीर दृष्टि से काम लिया। वह समझता था कि इस समय राठौर सेना को पराजित करना साधारण बात नही है। इसलिये उसने सूक्ष्म दृष्टि से काम लिया और तुरन्त उसने अपने एक जातीय अश्वारोही सैनिक को समझा-बुझाकर शत्रुओ की तरफ भेज दिया। वह अश्वारोही सैनिक राठौरो की सेना मे पहुँचा और वहाँ पर उसने माईनोत राजपूत वंश के सेनापति से कहा :

"विजय सिंह शत्रु की गोली से वहाँ मारा गया। इसलिये अब किसके लिये युद्ध होगा।"

माईनोत सामन्त ने उस अश्वारोही सैनिक को अपना समझकर विश्वास किया। वह तुरन्त अधीर हो उठा। विजयसिंह की मृत्यु का समाचार राठौर सेना मे फैल गया। किसी ने उसके सम्बन्ध मे पता लगाने की कोशिश नही की। राठौर सेना घबरा कर इधर-उधर भागने लगी। इस समय राठौर सेना के साथ मेडता के दूसरे क्षेत्र मे विजयसिंह मराठो के साथ युद्ध कर रहा था। वह इस युद्ध मे एक लाख सैनिको की सेना लेकर आया था। उसने आश्चर्य के साथ सुना कि राठौर सेना एक साथ युद्ध के क्षेत्र से भाग रही है। विजयसिंह घबरा उठा। जो राठौर सेना उसके साथ शत्रुओ से लड रही थी, मारवाड की सेना के भागने का समाचार उससे भी अप्रकट न रहा। बिना सोचे-समझे उस सेना के राठौर भी युद्ध छोडकर क्षेत्र से भागने लगे। विजयसिंह के सामने भयकर परिस्थिति पैदा हो गयी। किसी प्रकार शत्रु के सामने से हटकर विजयसिंह वहाँ से भाग गया और एक कृषक के यहाँ जाकर उसने प्राणो की रक्षा की।

रूप नगर के राजा सामन्त सिंह के युवक बेटे की राजनीति से विजयसिंह की एक लाख सेना को पराजित होना पडा। इस विजय का कोई भी श्रेय मराठा सेना को न मिला। फिर भी विजय उसी की मानी गयी। राठौर सेना के भाग जाने पर रामसिंह विजयी होकर युद्ध के क्षेत्र मे घूमने लगा। उसने मारवाड के दुर्गों पर अधिकार कर लिया। मराठा सेना मारवाड के नगरो मे घूम-घूम कर लूट-मार करने लगी।

मराठा सेना का प्रधान जय अप्पा इस युद्ध मे भयानक रूप से मारा गया था।* इस-लिए राठौर सेना के भाग जाने के बाद मराठो ने भीषण अत्याचार आरम्भ किये, उस निर्दयता को

*मराठा सेनापति मेडता के इस युद्ध मे मारा गया था, इस पर दो प्रकार के मत पाये जाते हैं। विजय-विलास नामक ग्रन्थ मे लिखा है कि जयअप्पा युद्ध के सङ्कट मे पडकर रोगी हो गया था।

पराक्रमी समझता था। अभयसिंह को इन दिनो मे जो गौरव मिला था उसका श्रे
आपको कम न देता था। इस दशा मे मिले हुए गौरव का पूर्णरूप से अधिकारी अभ
कुछ इस प्रकार की परिस्थितियो ने अभयसिंह के विचारो मे उलझन पैदा की।

बख्त सिंह को अपने इन विचारो मे राठौर कवि करणीदान से सहायता मिलो
सरबुलन्द खाँ के साथ होने वाले युद्ध मे शामिल था। उसके बाद जब अभय सिंह ज
शांति और सुख के दिन व्यतीत करने लगा, उस समय करणीदान जोधपुर छोडकर ना
सिंह के पास चला गया। अभय सिंह के प्रति बख्तसिंह के विचारो मे जो ईर्षा उत्पन्न हु
स्पष्ट उल्लेख न मिलने पर भी यह जाहिर होता है कि राठौर कवि करणीदान के जोध
चले जाने पर उसका प्रादुर्भाव हुआ।

बख्तसिंह ने कवि करणीदान के साथ अपने उन विचारो मे परामर्श करता रहा
ने दोनो भाइयो के बीच एक षडयन्त्र पैदा करने का कार्य किया। उसके अनुसार निश
आमेर के राजा जयसिंह के साथ यदि अभयसिंह का कोई सङ्घर्ष पैदा हो सके तो अ
मिल सकती है।

बीकानेर का राजा छोटा किन्तु स्वतन्त्र था। वह राठौर वंश की एक शाखा मे
था और स्वतन्त्र रूप से राज्य कर रहा था। अभयसिंह ने इन्ही दिनो मे उसकी स्व
करने का इरादा किया। दिल्ली के मुगलो की शक्तियाँ क्षीण हो चुकी थी। इस दशा मे
राठौर सेना ने अभयसिंह के आदेश से बीकानेर पर आक्रमण किया। उस समय बीका
ने साहस के साथ उसका सामना किया। मारवाड की सेना कई सप्ताह तक बीकानेर को
इस सङ्घर्ष से लाभ उठाने का इरादा बख्तसिंह ने किया। वह पहले से ही करणीद
मर्श के अनुसार इस प्रकार के किसी अवसर की प्रतीक्षा मे था। इसलिए वह अपनी
करने लगा।

अभयसिंह ने अपने सरदारो और सामन्तो के साथ परामर्श करके बीकानेर
किया। फिर भी मारवाड के राठौरो की तरफ से इस सङ्घर्ष मे बीकानेर के राजपू
प्रकार की सहायता मिलती रही। वहाँ के लोगो ने अफीम और युद्ध की सामग्री देक
यदि बीकानेर की सहायता न की होती तो वहाँ का राजा कुछ ही समय के बाद आ
कर देता।

मारवाड के राठौरो के द्वारा बीकानेर को इन दिनो मे जो सहायता मिली, उ
है। मारवाड और बीकानेर के राजपूतो का मूल वंश एक ही था। राठौरो के सहाय
यही प्रमुख कारण था। इस आपसी युद्ध का लाभ उठाने के लिए बख्तसिंह ने करणीदान
किया। करणीदान इस प्रकार की बातो मे बहुत चतुर और दूरदर्शी था। उसने बख्तसि
"अभयसिंह ने बीकानेर पर आक्रमण करके आमेर के राजा जयसिंह का अपमान किया है
को लेकर आप एक पत्र जयसिंह के पास भेजिए और उसमे साफ-साफ जयसिंह को लिखि
सिंह ने यह आक्रमण करके आपको युद्ध के लिए आमन्त्रित किया है। इसलिए अपने
बदला लेने के लिए आप जोधपुर पर आक्रमण कर सकते हैं।"

करणीदान के परामर्श के अनुसार, बख्तसिंह ने उस आशय का एक पत्र लिखकर
पास भेज दिया और उसके साथ ही यह भी लिखा गया कि इस कठिन अवसर पर
चाहिए।

न केवल मारवाड राज्य से कर वसूल किया, बल्कि उसके बाद भी वे लोग लूट मार करके धन एकत्रित करते रहे और उस सम्पत्ति से उन्होंने अपनी शक्तियां प्रबल बना ली। मराठो ने इतना ही अत्याचार नही किया, बल्कि वे अनेक दूसरे उपायो से राजपूतो को निर्बल बनाने का काम करते रहे। मराठो ने सदा दो राजपूतो को लडाने की चेष्टा की और किसी एक का पक्ष लेकर वे दूसरे का सर्वनाश करते रहे। इस प्रकार मराठो ने अपनी प्रबल शक्तियो के द्वारा राजपूतो को भयानक क्षति पहुँचाई। अनेक अत्याचारो से मारवाड और उसके आस-पास बहुत अशान्ति बढ गयी।

मराठो से उपद्रव के कारण कृषक खेती कार्य न कर सकते थे। व्यवसायी सदा डरते थे। मारवाड मे विजय सिंह की निर्बलता बढ जाने के कारण राज्य के समस्त सामन्त स्वतन्त्र हो रहे थे। राज्य व्यवस्था नष्ट हो गई थी और मारवाड मे सर्वत्र अराजकता बढ जाने के कारण सदा लूट-मार होती रहती थी। इस लूट-मार और अत्याचार से खेती का कार्य नष्ट हो गया। व्यवसाय बन्द हो गया और लोगो को राज्य का कोई भय न रह गया। विजय सिंह की मान मर्यादा महलो से लेकर बाहर तक सर्वत्र नष्ट हो गयी।

अन्य राज्यो की अपेक्षा मारवाड के सामन्त अधिक स्वतन्त्र और सदा शक्तिशाली रहे थे। उनकी इस स्वतन्त्रता का कारण यह था कि उनके पूर्वजो के बल—पौरुष से मारवाड राज्य की प्रतिष्ठा हुई थी। यही कारण था कि इस राज्य के सभी सामन्त अधिक स्वाधीनता और सुखो का सदा से भोग करते चले आ रहे थे।

विजय सिंह के प्रभाव के नष्ट हो जाने से वहां के सामन्तो मे जो स्वच्छन्दता पैदा हो गयी थी, वह धीरे-धीरे बढती गई और राज्य की एक घटना ने उस स्वच्छन्दता को अधिक नियन्त्रण हीन बना दिया था। पोकर चम्पावत लोगो की जागीर थी। वहां का सामन्त निस्सन्तान होकर मर गया था। वह मरने के पहले राजा अजित सिंह के दूसरे पुत्र देवी सिंह को गोद लेने के लिये अपनी स्त्री से कह गया था * गोद लेने की प्रथा के अनुसार जब कोई बालक किसी जागीर का अधिकारी बन जाता है तो वह अपने पिता के अधिकारो से वंचित हो जाता है।

देवीसिंह ने पोकरण का अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद भी अपने पिता के अधिकारो की लालसा न छोडी और जिन दिनो मे विजय सिंह जोधपुर के सिंहासन पर अपनी शक्तियो को लगातार खो रहा था, उस समय देवीसिंह का ध्यान मारवाड राज्य की ओर आकर्षित हुआ। वह निरन्तर जोधपुर के सिंहासन को प्राप्त करने की चेष्टा करने लगा। इसके लिये उसने अपनी शक्तियो का सगठन किया। वह इन दिनो मे राज्य का एक सामन्त था और जो सामन्त मारवाड के दरबार मे आकर किसी भी राजनैतिक परिस्थिति का निर्णय किया करते थे, देवीसिंह भी उनमे से एक था।

ऊपर लिखा जा चुका है कि इन दिनो मे विजय सिंह की शक्तियां बिलकुल निर्बल हो गयी थी और इस निर्बलता का राज्य के सामन्त अनुचित लाभ उठा रहे थे उन पर विजय सिंह का कोई प्रभाव न रह गया था। जो सामन्त ऐसा कर रहे थे, देवी सिंह उनमे प्रमुख था। सामन्तो मे इस बढती हुई अराजकता को देखकर विजय सिंह के मन मे अत्यधिक दुख होता था। वह किसी प्रकार अनियन्त्रित सामन्तो को अपने नियन्त्रण मे लाना चाहता था, लेकिन इसके लिये उसे कोई रास्ता मिलता न था।

राजस्थान में राजकुमार की धात्री को बहुत सम्मान देने की पुरानी प्रथा है। उसी के अनु-

---

*इस विषय के कुछ अधिकारियो का कहना है कि देवीसिंह अजित का बेटा नही था और न वह पोकरण की जागीर का दत्तक पुत्र बनाया गया। —अनु०

राजा जयसिंह की समझ में आ गया। उसने अपना पत्र वापस मँगाने के ि
भेजे। परन्तु पत्र ले जाने वाला दूत अपने कार्य मे होशियार था। राजा जयसिंह
उसको पा न सके। दोपहर को अनेक सामन्त आमेर के भोजन गृह मे खाना खाने
हुए। राजा जयसिंह की उपस्थिति मे वृद्ध सामन्त दीपसिंह ने कहा : ''महाराज ज
राजा अभय सिंह के पास भेजा है, उसका परिणाम कुछ अच्छा दिखाई नही देता।''

दीपसिंह की इस बात को सुन कर आमेर के सामन्त कुछ देर तक आपस मे
राजा अभय सिंह ने जयसिंह का पत्र पाकर पढा और उसका उत्तर देते हुए उसने
किसी विवाद मे हस्तक्षेप करने और इस प्रकार का पत्र लिखने का आपको क्या अि
आपका नाम जयसिंह है तो याद रखिये, मेरा नाम भी अभयसिंह है।''

राजा अभय सिंह का यह पत्र जयसिंह के दरबार मे आया। सभी सामन्त
खोल कर पढा गया। कुछ देर तक सभी लोग चुपचाप बैठे रहे। उसके बाद कुछ
पर दीपसिंह ने कहा : ''महाराज, आपके उस पत्र के जाने के बाद जो परिस्थिति उत
सामने है। अब हम सब सामन्तो को गम्भीरता के साथ विचार करके इस राज्य
रक्षा के लिये तैयार हो जाना चाहिये।''

सभी सामन्तो ने दीपसिंह का समर्थन किया। उसी समय राज्य के सामन्तो
तैयार होकर आने के लिये कहा गया। आमेर राज्य मे युद्ध की तैयारियाँ होने ल
सामन्त एक-एक करके अपनी सेनाये लिये हुए आमेर की राजधानी के बाहर एकत्रि
बूंदी राज्य के हाड़ा, करौली के यादव, शाहपुर के सीसोदिया, खीची लोग तथा जाट
वहाँ पहुँच गयी। आमेर राज्य के पचरगी झण्डे के नीचे सब मिलाकर एक लाख सैि
रोह हुआ। इस विशाल सेना को लेकर अभयसिंह के साथ युद्ध करने के लिये जयसिंह
तरफ रवाना हुआ। साथ मे युद्ध के बाजे बज रहे थे। मारवाड़ की सीमा पर ग
स्थान मे आमेर राज्य की विशाल सेना पहुँच गयी और वही पर मुकाम करके व
आने का रास्ता देखने लगी।

अभयसिंह को आमेर की इस विशाल सेना के आने का समाचार मिला।
को छोड़ दिया और अपनी सेना लेकर आमेर की सेना की तरफ रवाना हुआ। बख्ति
में इन सब बातो का समाचार मिला। यह जान कर कि आमेर और मारवाड के
नक संग्राम होने जा रहा है, वह बहुत चिन्तित हो उठा। उसने इस भीषण परिस्ि
कल्पना भी न की थी। ईर्षालु होकर अभयसिंह के प्रति उसने जो एक योजना
कुछ और चीज थी। परन्तु आपसी द्वेष के परिणाम स्वरूप राठौर वश का जो
होने जा रहा था, उसको देखकर और उसके सम्बन्ध में अनेक प्रकार की कल्पनाये क
भयभीत हो उठा। उसकी योजना का यह उद्देश्य न था। वह राठौर वंश का स
नही चाहता था। इसलिये उसकी समझ में आ गया कि आमेर की यह विशाल से
पर आक्रमण करके मारवाड का विध्व स और विनाश करेगी और उस अवस्था मे
वाड़ की शक्तियाँ नष्ट हो जायेगी, बल्कि मारवाड राज्य को जो गौरव प्राप्त हुआ
हो जायगा।

बख्त सिंह नागौर से चलकर अभयसिंह के पास पहुँचा और वर्तमान परिस्थि
करते हुए उसने कहा : ''बीकानेर को जिस प्रकार आपने घेरा था उसका घेरा

करने के लिये तैयारी की। राज्य के आस-पास पहाड़ी जातियों के आतङ्क बहुत बढ़ गये थे। उनको इधर बहुत दिनों से मारवाड़ के राजा का कोई भय न रह गया था। इसलिये उन अत्याचारी जातियों का दमन करना भी अत्यन्त आवश्यक था।

इस प्रकार के सभी कार्यों के लिये धन की आवश्यकता थी। मारवाड़ राज्य का खजाना इन दिनों में खाली पड़ा हुआ था। विजय सिंह की निर्बलता में राज्य का रुपया कहीं पर भी वसूल न होता था। बिना धन के राज्य की कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती थी। इसलिये जग्गू धन की चिन्ता में रहने लगा। उसकी माता विजय सिंह की धाती थी। इसलिये विजय सिंह के जन्म के साथ साथ राज्य की तरफ से उसकी माता को पाँच हजार रुपये वार्षिक मिलने लगे थे। जग्गू को मालूम था कि उसकी माता के पास एक अच्छी सम्पत्ति है। इसलिये जब उसको और कहीं से धन की सहायता न मिल सकी तो उसने अपनी माता से प्रार्थना करने का इरादा किया।

जग्गू इस समय किसी प्रकार धन एकत्रित करके मारवाड़ राज्य का सुधार करना चाहता था उसने अपनी माता से इसके लिये प्रार्थना की और तुरन्त पचास हजार रुपये देने के लिये उसको विवश किया। उसने माता से यह भी कह दिया कि यदि तुम मुझे इतने रुपये न दे सकोगी तो मैं आत्म-हत्या करके मर जाऊँगा।

जग्गू की माता अपने बेटे की इस बात को सुनकर घबरा उठी और उसने अपने पास से पचास हजार रुपये लाकर बेटे को दे दिये। इस धन को पाकर जग्गू ने पहाड़ी जातियों को दमन करने की तैयारी की। इस समय मारवाड़ी सेना को घोड़ों की बहुत आवश्यकता थी और उन दिनों में घोड़ों का बड़ा अभाव हो रहा था। इसलिये जब घोड़े न मिल सके तो जग्गू अपनी नई सेना को नागौर तक दूसरी सवारियों पर बिठाकर ले गया। उस समय सामन्तों के पूछने पर जग्गू ने बताया कि पहाड़ियों को दमन करने के लिये यह सेना जा रही है।

नागौर के दुर्ग में कई सौ तोपें रखी हुई थी, उनको लेकर अपनी सेना के साथ जग्गू पहाड़ों की तरफ रवाना हुआ और वहाँ पहुँचकर उसने पहाड़ के लुटेरी जातियों पर आक्रमण किया। वे जातियाँ बहुत आसानी के साथ परास्त हो गयी। उन पर विजयी होकर जग्गू ने अपनी सेना के साथ थल नगरी पर आक्रमण किया। उस समय लोगों की समझ में आया कि मारवाड़ की इस वेतन भोगी सेना के रखने का क्या उद्देश्य है। उस दुर्ग पर जग्गू के अधिकार कर लेने पर मारवाड़ के सभी सामन्त भयभीत हो उठे और वे अपने-अपने सम्मान की रक्षा करने के लिये जोधपुर की राजधानी से बीस मील पूर्व की तरफ वीसलपुर में एकत्रित हुए।

राज्य के सामन्तों को एकत्रित सुनकर विजय सिंह चिन्तित हो उठा। जग्गू जिस प्रकार सामन्तों को अधिकार में लाने की चेष्टा कर रहा था, उसका परिणाम विजय सिंह को प्रतिकूल दिखाई देने लगा। वह किसी प्रकार सामन्तों को शान्त करने का उपाय सोचने लगा। खीची वंश का राजपूत गोर्धन अपने बल और पराक्रम के द्वारा राजा बख्तसिंह का परम स्नेही हो गया था। मरने के समय बख्त सिंह ने गोर्धन से विजय सिंह की सहायता करने के लिये कहा था। विजय सिंह को यह बात पहले से मालूम थी। इसलिये इस सङ्कट के समय गोर्धन को बुलाकर विजय सिंह ने पूछा कि इस समय में हमें क्या करना मुनासिब है?

गोर्धन मारवाड़ राज्य की वर्तमान परिस्थितियों को समझता था और राज्य के सामन्तों की अनियन्त्रित दशा से भी वह अपरिचित न था। वह दूरदर्शी और बुद्धिमान था। उसने विजय सिंह को अपनी सम्मति देते हुये कहा।

किसी भी युद्ध में किसी को तलवार के द्वारा विजय प्राप्त करते हुए नही देखा
राजा जयसिंह राजस्थान का अत्यन्त बुद्धिमान और शिक्षित माना जाता था। इस यु
राठौरो के डर से उसने युद्ध से भाग कर अपना गौरव नष्ट किया। उसकी आज
से उस बात का समर्थन होता है जो आमतौर से राजस्थान मे कही जाती है। '
कछवाहो के बराबर होता है।

बख्तसिंह ने डर कर भागी हुई आमेर की सेना पर तीसरी बार अक्रामण
किया। परन्तु राठौर कवि करणीदान ने उसको रोक दिया। इस समय जो राठौ
के साथ युद्ध करने के लिये आयी थी, करणीदान भी उसमे था।

आमेर की सेना के चले जाने के बाद बख्तसिंह ने, युद्ध के मैदान मे जो
थे, उनका स्मरण किया। उसके कितने ही प्रिय सामन्तो ने इस युद्ध मे अपने प्रा
किया था, उसके परिवार के कितने ही लोग मारे गये थे। इन सभी लोगो से बख्त
करता था। उन सभी लोगो का स्मरण करके और उनके विश्वासपूर्ण व्यवहारो
बख्तशिह युद्ध के क्षेत्र मे रो उठा। इस युद्ध के पहले ही बख्तसिंह ने जो अनुमान ल
उसको मालूम हुआ था कि इस युद्ध मे सभी प्रकार राठौर वश का सर्वनाश होने जा
राज्यो के राजपूत इसी राठौर वश से उत्पन्न हुए है। इसलिए जो सर्वनाश होने जा
वह पहले ही भयभीत हुआ था। जिस समय बख्तसिंह अपने विश्वासी सामन्तो और
के लिये अश्रुपात कर रहा था, अभयसिंह अपनी सेना के साथ वहाँ आ पहुँचा। उ
समझाते हुये कहा :

"आज के इस युद्ध मे मै तुम्हारी सहायता के लिये नही आ सका। फिर
थोडे से सैनिको को लेकर इस युद्ध मे जो विजय प्राप्त की है, उससे मारवाड़ के रा
बहुत ऊँचा हो गया है।"

बडे भाई अभयसिंह के मुख से प्रशसा के इन शब्दो को सुनकर बख्तसिंह
मिली। उसी समय उसने प्रतिज्ञा करते हुये कहा : 'जयसिंह युद्ध से भाग कर चला
आमेर के दुर्ग से पकड़ कर लाऊँगा।'

आमेर के राजा जयसिंह ने अफीम के नशे मे जो पत्र अभयसिंह को लि
भयानक परिणाम उसके सामने आया। बीकानेर से राजपूत ने उसको अफीम के
उससे अनुचित लाभ उठाया और जो वाक्य जयसिंह को अभयसिंह के पत्र मे न
थे उनको उस राजपूत ने जयसिंह से लिखवा लिया। मादक पदार्थों के सेवन
होना चाहिये, वह जयसिंह के सामने आया। अभयसिंह के साथ उसकी शत्रुता
बुरी तरह उसकी पराजय हुई और संग्राम से भाग जाने के कारण उसके जीवन क
मिट्टी मे मिल गया।

इस युद्ध से यह जरूर हुआ कि बीकानेर विध्वस और विनाश से बच गया।
मेवाड़ के राणा ने मध्यस्थ होकर अम्बेर, बीकानेर और मारवाड़ के राजाओ के बी
मैत्री कायम करने की चेष्टा की। इसमे राणा को सफलता मिली और वे तीनो
मिलकर एक हो गये।

राजपूत युद्ध मे जाने के पहले अपने देवता के दर्शन करते थे और अपनी सेन
के आराध्यदेव को अपने साथ मे ले जाते थे। बख्तसिंह ने इस युद्ध मे भी यही

अधिकार केवल राजा का रहता है। यदि यह अधिकार भी हमारे हाथ से निकल गया तब तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

विजय सिह कुछ समय तक सामन्तो के प्रस्ताव पर विचार करता रहा। उसने अन्त में समझा कि वर्तमान परिस्थितियो मे सामन्तो को अप्रसन्न करना भविष्य के लिये अच्छा नही दिखाई देता। इसलिये उसने बहुत कुछ सोच-विचार कर सामन्तो के प्रस्ताव की तीनो बातो को स्वीकार कर लिया। इससे सभी सामन्त सन्तुष्ट होकर अपने-अपने राज्यो को चले गये। चम्पावत सामन्त अपनी सेना के साथ विजय सिह को लेकर जोधपुर की राजधानी चला गया।

गोर्धन के परामर्श के अनुसार विजय सिह ने सामन्तो से भेंट की और उनके प्रस्ताव की तीनो बातो को उसने स्वीकार कर लिया। इसके परिणाम स्वरूप सामन्त लोग सन्तोष के साथ अपने-अपने नगरो को वापिस चले गये और उनके द्वारा जो सकट उपस्थिति हो सकता था, उसको सम्भावना न रही। इसके कुछ ही दिनो के पश्चात् गुरु आतमाराम की भयानक बीमारी का समाचार विजय सिंह को मिला। वह गुप्त रूप से गुरुदेव के पास गया। विजयसिंह को अपने समीप देखकर गुरु-देव ने कहा "महाराज, आप कुछ चिन्ता न करे मेरी मृत्यु के साथ-साथ आपकी विपदाओ का अन्त हो जायगा।"

गुरुदेव की इस बात का जो अभिप्राय था, उसे साफ-साफ धा भाई जग्गू ने विजय सिंह को बताया। वह अभिप्राय उन दो को छोड़कर किसी तीसरे को मालूम न हो सका। गुरुदेव के मर जाने पर विजय सिंह ने दिखावा मे बहुत दुख प्रकट किया। उसके बाद सर्व साधारण को यह बताया गया कि जोधपुर के दुर्ग मे गुरुदेव का अन्तिम सस्कार होगा।

इस घोषणा के अनुसार राजधानी के दुर्ग मे गुरुदेव के अन्तिम सस्कार की तैयारियाँ होने लगी। निश्चित् दिन और समय पर वहाँ पहुँचने के लिये राजा के अन्त:पुर से लेकर राजधानी तक स्त्रियाँ दुर्ग के लिये रवाना हुई अन्त.पुर से जो स्त्रियाँ दुर्ग की तरफ चली, उनकी रक्षा के लिये राज्य की सेना उनके साथ-साथ चली। मारवाड़ के सामन्तो के पास गुरुदेव की मृत्यु और उसके अन्तिम सस्कार का समाचार भेजा जा चुका था। इसलिये राज गुरु को श्रद्धाजलि देने के लिये सामन्त लोग अपने-अपने नगरो से रवाना हुए।

जोधपुर का दुर्ग पहाडो के ऊपर बना हुआ था। दुर्ग मे जाने के लिये पहाडो को खोद कर सीढियाँ बनायी गयी थी। राज्य के सभी सामन्तो के आगे-आगे देवीसिंह सामन्त चल रहा था। सीढियो पर पहुँच कर उसने कहा : "मुझे आज कुछ अच्छे लक्षण नही दिखायी देते।" देवीसिह की इस बात को सुन कर दूसरे सामन्तो ने कहा : "आप मारवाड़ राज्य के सर्वमान्य हैं। आपकी तरफ आँख उठाकर देखने का कोई साहस नही कर सकता।'

सामन्तो ने आगे बढ कर दुर्ग मे प्रवेश किया। उसी समय उन लोगो ने देखा कि नक्कार खाने का द्वार बन्द हो गया। सामन्त भयभीत हो उठे और उनके मुख से निकल गया—इतना बडा विश्वासघात। इसी समय अहवा के सामन्त ने अपनी कमर से तलवार निकाली और उसने राज सेना का संहार आरम्भ कर दिया।

सामन्त लोग अपनी सेनाओ को साथ मे नही लाये थे। उनको इस प्रकार के विश्वासघात की आशका नही थी। राज-सेना के सामने सामन्त लोग कितनी देर युद्ध कर सकते थे, उस मार-काट मे कितने ही सामन्त मारे गये और बाकी सामन्त धा भाई जग्गू की सेना के द्वारा कैद हो गये।

चला। उसके पास आते ही अभयसिंह ने अपने दोनो हाथो से उसके दोनो सीग प
उसको घसीट कर वह जयसिह की तरफ ले गया। बादशाह ने अभयसिह को उधर जा
लेकिन अभयसिंह ने इसकी कुछ परवा न की और उसने अपने दाहिने हाथ मे तलवार
आघात से उस भयानक और खूखार भैसे की गरदन काट कर उसका सिर अलग कर
दन के कटते ही उस भैसे का शरीर जयसिह के पास गिरा और दबते-दबते वह बच ग
ने अभयसिह की इस बहादुरी की प्रशसा की।

मारवाड पर अभयसिह के शासन काल मे प्रसिद्ध नादिरशाह ने हिन्दुस्तान
किया था। उस समय घबराकर बादशाह मोहम्मदशाह नादिरशाह के साथ युद्ध
राजपूत राजाओ को सेनाओ के साथ बुलवाया। परन्तु कोई राजपूत राजा नही आया
भी नही गया।

करनाल के युद्ध मे मोहम्मदशाह की पराजय हुई। नादिरशाह की विजयी से
मे प्रवेश करके भयानक नर सहार किया और अमानुषिक अत्याचारो के साथ नादिर
ने वहाँ पर लूट-मार की। राजस्थान का कोई भी राजा नादिरशाह के विरोध के
बढ सका।

शिवा जी के वश मे जितने भी राठौर मारवाड के सिहासन पर बैठे अभयसिह
योग्य शासक था लेकिन अम्बेर के राजा जयसिंह के कहने से उसने दिल्ली दरबार मे
की जो अधीनता स्वीकार की थी और उसके बाद उसके पिता अजितसिंह की जिस प्र
थी, उसके द्वारा अभयसिह के गौरव को एक भयानक आघात पहुँचा। सभ्यता की प्र
अपराध स्वय अपराधी को दण्ड देता है। अभयसिंह को उसका दण्ड मिला। उस
स्वरूप मारवाड मे अभयसिह के मरते ही जो आपसी फूट और कलह उत्पन्न हुई,
का राज्य किस प्रकार छिन्न-भिन्न हुआ, इसके विवरण विस्तार के साथ आगामी
जायँगे।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि अजितसिंह को मारने के लिए किस प्रका
काम लिया गया था, उसका दुष्परिणाम मारवाड के राठौरो को थोडे ही दिनो के बाद
और जो मारवाड इन दिनो मे राजस्थान के अन्य राज्यो की अपेक्षा गौरवपूर्ण हो र
विनाश का बीजारोपण अजितसिंह की मृत्यु के साथ-साथ हुआ।

बयालीसवाँ परिच्छेद

जोधपुर के सिहासन पर रामसिंह—रामसिंह की निर्बलता—बख्तसिंह के
तैयारी—अहङ्कारी रामसिंह—बख्तसिंह की विजय—रामसिंह की चाले—मराठो की
बख्तसिंह के साथ विश्वासघात—उसकी मृत्यु—बख्तसिंह का शासन प्रबन्ध।

अभयसिंह की मृत्यु हो जाने पर उसका लडका रामसिंह जोधपुर के सिहास
अभयसिंह के मरने के ठीक बीस वर्ष पहले सिरोही के मानसिंह की लडकी और अभय
से रामसिंह का जन्म हुआ था। सिरोही की देवड़ा शाखा चौहान वश की एक प्रध

यदि विजय सिंह मे राजपूतो का बल पौरुष होता, अथवा उसके स्थान पर कोई दूसरा प्रतापशाली राठौर शासक होता तो राज्य के सामन्तो मे अनुशासनहीनता न पैदा होती और न वे इस प्रकार मारे जाते । विजय सिंह का इस प्रकार का कार्य नैतिक प्रतिष्ठा से वंचित हो जाता है। विजय सिंह दूसरे उपायो से अपने सामन्तो को अपने अनुकूल नही बना सका, यह उसकी अयोग्यता का सब से बडा प्रमाण है ।

जग्गू उसकी धाभी से उत्पन्न हुआ था । उसने एक सगे बन्धु की हैसियत से विजय सिंह के साथ प्रेम किया था । वह प्रत्येक अवस्था मे विजय का बढता हुआ गौरव देखना चाहता था । विजय सिंह के प्रति उसकी शुभकामना और शुभ चिन्तना मे कोई अन्तर न था । उसने निरंकुश सामन्तो को अंकुश मे लाने के लिए जो कुछ भी किया था, उसमे उसका कोई स्वार्थ न था । अपनी पवित्र भावनाओ से प्रेरित हो कर विजय सिंह के कल्याण के लिए उसने सब कुछ किया था । राज्य मे शान्ति की प्रतिष्ठा के लिए और वर्तमान अराजकता को नष्ट करने के लिए उसने एक वैतनिक सेना रखी थी । उसके वेतन के लिए अपनी आत्महत्या का भय दिखा कर उसने अपनी माता से पचास हजार रुपये लिए थे । इतनी बडी सम्पत्ति को उसने राज्य के आवश्यक कार्यों मे खर्च करके उसने अपने अपूर्व स्वार्थ त्याग और बलिदान का परिचय दिया था । इस दशा मे वह किसी प्रकार निन्दा का अधिकारी नही है ।

इतना सब होने पर भी जग्गू की प्रशसा भी नही की जा सकती । सब से अच्छा यह होता कि उसने नैतिक उपायो के द्वारा सामन्तो को अनुकूल बना कर राजा विजय सिंह का कल्याण किया होता । परन्तु उसमे नैतिक शक्तियो का अभाव था । इसीलिए जो राज्य के सगे सम्बन्धी थे, उनका अन्त करने के लिए उसे षडयन्त्र की सहार नीति का आश्रय लेना पडा ।

देवीसिंह ने जिस प्रकार अपने प्राणो का अन्त किया, उसका समाचार बडी तेजी के साथ पोकरण में पहुँच गया । उसके पुत्र सबल सिंह ने इस प्रकार अपने पिता की मृत्यु को सुना । उसने तुरन्त क्रोध मे आकर अपने पिता का बदला लेने की प्रतिज्ञा की और पोकरण के शूरवीर राजपूतो को लेकर वह पिता का बदला लेने के लिए रवाना हुआ । सबल सिंह ने सबसे पहले व्यावसायिक नगर पाली पहुँच कर लूट मार की और बाद मे उसने वहाँ आग लगवा दी । उसके बाद वह बीलाडा पर आक्रमण करने के लिए आगे बढा । यह नगर उन दिनो मे व्यवसाय के लिए बहुत प्रसिद्ध हो रहा था । बीलाडा नगर मे प्रवेश करते ही एक साथ गोलो की वर्षा हुई । उसमे सबल सिंह मारा गया और उसके दूसरे दिन उसका मृत शरीर लूनी नदी के किनारे जलाया गया ।

राज्य के निरंकुश प्रधान सामन्तो के मारे जाने पर मारवाड मे एक साथ परिवर्तन हुआ । राजकर्मचारियो की अनुशासन हीनता बहुत-कुछ समाप्त हो गयी और प्रजा मे फैली हुई अराजकता मिटने लगी । कृषि और व्यवशाय के बढने से राज्य की आर्थिक दशा मे परिवर्तन हुआ । मारवाड के उन दिनो का वर्णन करते हुए उस समय के ग्रन्थो मे लिखा गया है कि थोडे ही दिनो के भीतर मारवाड मे सभी कार्य शान्तिपूर्ण होने लगे और पिछले दिनो मे जो अशान्ति बढ गयी थी, उसके दूर हो जाने से मारवाड राज्य मे शेर और बकरी एक घाट पानी पीने लगे ।

मारवाड राज्य मे अब जो सामन्त रह गये थे उनमे और विजय सिंह मे किसी प्रकार का सघर्ष बाकी न रहा । इसलिए राज्य की शक्तियाँ धीरे-धीरे उन्नत होने लगी और सामन्तो के साथ विजय सिंह के सम्बन्धो मे स्नेह और माधुर्य पैदा हो गया । सभी सामन्त अपने राजा को सम्मान की दृष्टि से देखने लगे ।

यह कह कर कुशल सिह वहाँ से उठ कर चल दिया और अपनी सेना के साथ के प्रधान राजकवि के मूधियापाडा नगर की तरफ रवाना हुआ। यह राजकवि स में बडे सम्मान के साथ देखा जाता था और उसकी वार्षिक आमदनी श्रेष्ठ सामन्तो की तरह एक लाख रुपये से कम न थी।

जोधपुर से चल कर कुशल सिंह उस राजकवि के यहाँ पहुँचा। बख्तसिह ने मारवाड के प्रधान सामन्त कुशल सिह ने जोधपुर छोड कर नागौर राज्य की सीमा में है तो वह उसी समय कुशल सिह का स्वागत करने के लिये रवाना हुआ। कुशल सिंह कर बख्तसिंह ने उसको सोता हुआ देखा। उसने सामन्त को जगाना उचित न समझ वह भी लेट गया।

सबेरा होते ही कुशल सिह ने अपने अनुचारो को हुक्का लाने की आज्ञा दी। अनुचरो ने संकेत करके बख्त सिह की तरफ उसका ध्यान आकर्षित किया। कुशल आश्चर्य चकित होकर खड़ा हो गया। इसी समय बख्तसिह की भी नीद टूट गई। दोन तक बाते होती रही। अन्त मे सामन्त कुशलसिह ने विनम्र होकर राजा बख्तसिंह से कह मेरे इस मस्तक पर अब आप का अधिकार है।" राज कवि वहाँ पर मौजूद था। बख्त सामन्त की ओर सकेत करके कहा : "अहवा से आप की पत्नी और परिवार के लो नागौर ले आइये। राज कवि ने इस आज्ञा को स्वीकार करते हुए कहा : "आज से मैंने से सदा के लिए अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।"

बख्तसिह ने राज-कवि की बात को सुनकर संतोष प्रकट करते हुए कहा : " नागौर मे कोई अन्तर हमको और आपको नही समझना चाहिये। अपने पास की बा रोटी को हम लोग आपस मे बाँटकर खायँगे।" बख्तसिह ने अपनी व्यावहारिक चतुरता कुशल सामन्त सिह और राजकवि के अन्तरतर मे सदा के लिए स्थान बना लिया।

रामसिह ने बख्तसिह को युद्ध की तैयारी का मौका न देकर नागौर पर आक्रम लिये रवाना हुआ। खेरली नामक स्थान पर दोनो तरफ से एक युद्ध हुआ। उसके पश्चात् पर लगातार दोनो सेनाओ की मार काट हुई। अन्त मे रामसिंह की पराजय हुई। वह भाग गया।

बख्तसिह विजयी होकर अपनी सेना के साथ जोधपुर की तरफ रवाना हुआ। उ पुर के निकट पहुँचते ही राठौरो ने उसका स्वागत किया। वहाँ पहुँचकर बख्तसिंह ने अधिकार किया और उसके बाद वह श्रेष्ठ राठौरो के परामर्श से वहाँ के सिहासन पर बैठ के जेतावत सामन्त ने बख्तसिह के मस्तक पर राजतिलक किया। इसके बदले मे उस उपाधि दी।

बख्तसिह ने रामसिह को पराजित करके न केवल तलवार के बल से जोधपुर सिहासन प्राप्त किया, बल्कि उसने अच्छे व्यवहारो के द्वारा वहाँ के बहुत से सामन्तो की भी अपने पक्ष मे कर ली। इस दशा मे रामसिह से कोई अन्देशा उसको न रह गया। उसने जोधपुर के श्रेष्ठ पुरुषो को अपने पक्ष मे कर लेने का इरादा किया।

राजस्थान के प्रत्येक राज्य मे पुरोहित और कवि पूर्वजो के अधिकारी माने जाते प्रकार वहाँ एक पुरानी व्यवस्था है। उसके अनुसार, मन्त्री के पद पर उसका पुत्र और पु पद पर पुरोहित का पुत्र नियुक्त किया जाता है। यही व्यवस्था राज्याधिकार के सम्बध में

जयपुर का राजा प्रताप सिंह पहले से ही मराठो के साथ युद्ध करने के लिए तैयार बैठा था। राठौर सेना के पहुँचते ही तुङ्ग नामक स्थान पर राजपूतो ने मराठो के साथ युद्ध आरम्भ कर दिया। उस सग्राम मे आरम्भ से ही राठौर सेना शक्तिशाली साबित हो रही थी। मराठा सैनिको ने सेनापति डिवोइन के द्वारा युद्ध की शिक्षा पायी थी। फिर भी उस युद्ध में मराठा सेना के पैर उखडने लगे। जवानदास की राठौर सेना मराठा गोलदाजो के ऊपर एक साथ टूट पडी और उस समय राठौरो ने भयानक मारकाट की, जिसमे मराठे घबरा उठे। उनके बहुत-से सैनिक मारे गये और जो बाकी रहे, वे पराजित होकर युद्ध भूमि मे भाग गये। इसी अवसर पर विजयी राठौर सेना ने अजमेर पर अधिकार कर लिया और वहाँ पर राठौरो का झण्डा लगाकर अपना प्रबन्ध आरम्भ कर दिया।

राठौरो ने अजमेर पर अधिकार करके उस सन्धि को खतम कर दिया, जो विजय सिंह के द्वारा मराठो के साथ की गयी थी। उसी समय विजय सिंह ने मराठो को कर देना भी बन्द कर दिया।

युद्ध मे राजपूतो के साथ पराजित होकर माधव जी सीन्धिया निराश नही हुआ। फ्रांसीसी सेनापति डिवोइन के साथ परामर्श करके उसने एक विशाल सेना का सगठन किया और उस सेना को युद्ध की योरोपियन शिक्षा का देना शुरु किया गया। माधव जी सीधिया अत्यन्त बुद्धिमान और मराठा सेना का दूरदर्शी सेनापति था। राजपूतो के साथ पराजित होकर भी उसने बहुत सी बाते सीखी थी। अजमेर मे रहकर मराठो ने राजपूतो के अनेक गुणो और अवगुणो की जानकारी प्राप्त की थी। माधव जी सीधिया ने राजपूतो के युद्ध-कौशल का अध्ययन करके उसका लाभ मराठा सैनिको को पहुँचाया था।

तुङ्ग के युद्ध क्षेत्र मे पराजित होकर मराठा लोग चार वर्ष तक चुपचाप रहे। इन दिनो मे राजपूतो से बदला लेने के लिए उनकी तैयारियाँ गुप्त रूप से होती रही। माधव जी सीधिया अपनी पराजय का कारण भली-भाँति समझता था और वह यह भी समझता था कि दो राज्य के राजपूत अधिक समय तक सगठित हो कर और एक होकर नही रह सकते। चार वर्षो मे उसने अपनी विशाल सेना का सगठन कर लिया। उसके बाद वह राठौरो से बदला लेने के लिए रवाना हुआ। माधव जी सीधिया की इस विशाल सेना के आने का समाचार जोधपुर मे विजय सिंह को मिला। उसी समय उसने जयपुर के राजा के पास अपने दूत से सदेश भेजा कि माधव जी सीधिया की एक बहुत बडी सेना मारवाड पर आक्रमण करने के लिए आ रही है। इसलिए आप तुरन्त जयपुर की एक शक्तिशाली सेना मराठो को पराजित करने के लिए भेज दीजिए।

विजय सिंह के दूत के द्वारा यह सदेश पाकर जयपुर के राजा ने विचार किया कि हमारी माँग पर मराठो के साथ युद्ध करने के लिए मारवाड से राठौर सेना आयी थी और अब इस अवसर पर राजा विजय सिंह की माँग पर मराठो से युद्ध करने के लिए जयपुर की सेना जाना चाहिए। इसलिए उसने जयपुर की एक सेना तैयार करके विजय सिंह के पास भेज दी।

जयपुर की यह सेना मारवाड पहुँच गयी। मराठा सेना के आ जाने पर जिस समय राठौर युद्ध के लिए तैयार हो रहे थे, जयपुर की सेना ने राठौर सेना के साथ झगडा कर दिया। इस दशा मे राठौरो को मराठो की प्रबल सेना के साथ केवल अपने बल पर युद्ध करना पडा। पाटन के युद्ध क्षेत्र मे मराठो के साथ राठौरो ने भीषण युद्ध किया। परन्तु मराठा सेना के अत्यधिक और प्रबल होने के कारण राठौर सेना पराजित हो गयी। राजा विजयसिंह ने अपनी राजधानी मे जयपुर की सेना का विश्वासघात सुना। उससे उसको अत्यन्त क्रोध और दुख हुआ।

रोकने के लिए बख्तसिंह जोधपुर से रवाना हुआ और अजमेर के पास जाकर उसने मुकाम किया, जहाँ से होकर शत्रुओ की सेना मारवाड राज्य मे प्रवेश कर सकती थी।

आमेर के राजा माधवसिंह राठौर की रानी ने वहाँ पर जाकर बख्तसिह से उसने रामसिंह के हितो की रक्षा करने के लिये बख्तसिंह के दीपक के जीवन को बु सम्वत् १८०६ सन् १७५३ ईसवी मे बख्तसिंह ने संसार छोड कर परलोक की यात्रा

मारवाड के राज सिहासन पर बैठ पर बख्तसिंह ने तीन वर्ष व्यतीत किये। समय मे उसने मारवाड के समस्त दुर्गों को सुदृढ बनवाया और जोधपुर मे कई एक ऐ जिनसे राठौरो की शक्तियाँ पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत हो गई थी। मुस्लिम शासको के साथ जो अमानुषिक व्यवहार और अत्याचार किये थे, बख्तसिह ने भली प्रकार लिया। मुसलमानो के अत्याचारो में हिन्दुओ के मन्दिर गिराकर उनके स्थानो पर मस गई थी। बख्तसिह ने नागौर राज्य की मसजिदो को गिरवा कर, उनके स्थानो पर मन्दि थे। बख्तसिह के शासन काल मे दिल्ली मुगल बादशाह की शक्तियाँ बिल्कुल निर्बल और समस्त मुगल साम्राज्य मे विद्रोह पैदा हो गये थे।

कृष्णा नदी के किनारे मराठा किसानो ने सङ्गठित होकर दिल्ली के मुगलो के किया था। उनके सङ्गठन से राजस्थान के राजाओ के सामने एक भीषण आतङ्क पैदा ह यदि बख्तसिह की मृत्यु असमय न हो जाती और उसको मारवाड़ के राज्य सिहासन पर समय तक बैठने का अवसर मिलता तो राजस्थान की शक्तियाँ इतनी सुदृढ हो जाती कि कोई सङ्गठित शक्ति आसानी के साथ दबा न सकती।

तेंतालीसवाँ परिच्छेद

मुगलो की कमजोरी—अधीन राजाओ के विद्रोह—जोधपुर मे फूट—मराठो की मेडता मे मराठो के साथ युद्ध—विजयसिह की पराजय—मराठो के साथ सन्धि—मराठ चार—राठौरो मे आपसी विद्रोह—मारवाड मे अशान्ति—सामन्तो का विरोध—राजगुरू सस्कार—सामन्तो के साथ विश्वासघात—मराठो के साथ सङ्घर्ष—अन्त मे मराठो की विजयसिह का पतन।

बख्तसिह की मृत्यु के पश्चात् उसका बेटा विजयसिह बोस वर्ष की अवस्था मे के सिहासन पर बैठा। उन दिनो मे दिल्ली का मुगल बादशाह नाम मात्र के लिये बादशाह था। क्योंकि उसके शासन की शक्तियाँ इन दिनो मे बिल्कुल क्षीण हो गई थी और मुगल के हिन्दू-मुस्लिम शासको ने उसके प्रभुत्व को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था। मुगलो

कुछ लेखको का कहना है कि जयपुर के राजा ईश्वरीसिह की स्त्री ने वहाँ जा सिह को विषाक्त वस्त्र दिये थे, जिनको पहनने के बाद बख्तसिह की मृत्यु हो गई। कु रामसिह के षडयन्त्र के अनुसार, माधवसिह अथवा ईश्वरीसिह की रानी के विषाक्त वस्त्रो उस समय बख्तसिह की मृत्यु हुई थी।

उसके शासनकाल मे मारवाड राज्य का भयानक रूप मे पतन हुआ। अब उसकी इस विलासिता के कारण राज्य का सर्वनाश आरम्भ हुआ। परन्तु विजय सिह को उसकी परवा न थी।

ओसवाल युवती ने विजय सिह को अन्धा बना दिया। उसको उचित और अनुचित कर्मों का ज्ञान न रहा। उस युवती के प्रेम को पाकर विजय सिह ने सब कुछ भुला दिया और अपनी प्रधान रानी के सम्मान को ठुकरा कर उसने उस युवती को प्रधानता दी। इन दिनो विजयसिह के मनोभाव बहुत पतित हो गये थे। उसने जीवन की सम्पूर्ण मर्यादा को भुलाकर केवल उस युवती को महत्व दिया था। वह युवती विजयसिह की इस अवस्था से पूर्ण रूप मे परिचित थी और वह कभी-कभी उसके इस अन्धे प्रेम को ठुकरा दिया करती थी। उस समय के भट्ट ग्रन्थो मे लिखा गया है कि युवती ने अनेक मौको पर विजयसिह को अपनी जूतियो मे मारा था। परन्तु इस पर भी विजयसिह के स्वाभिमान को आघात न पहुँचा। किसी भी पुरुष के पतन की यह चरम सीमा मानी जा सकती है।

विजय सिह के इस पतन से मारवाड राज्य मे अशान्ति और अराजकता बढने लगी। इस पर भी विजय सिह की आँखे नही खुली। मारवाड मे इन दिनो विजयसिह का नही, उसकी उप-पत्नी का शासन चल रहा था। उस युवती ने ऐसी जाति मे जन्म लिया था, जिसमे किसी राजपूत को राजस्थान की व्यवस्था के अनुसार, विवाह करने का कोई अधिकार न था। इसीलिये वह उप पत्नी के रूप मे मानी गयी और उसे विजय सिह की रानी होने का अधिकार न मिल सका। इतना सब होने पर भी वह युवती अपने आपको गौरवपूर्ण समझती थी और विजयसिह की बडी रानी से भी वह अपने को श्रेष्ठ समझती थी।

उस युवती का विश्वास था कि मुझसे जो लडका पैदा होगा, वह विवाहित रानियो के लडको के होने पर भी इस राज्य का उत्तराधिकारी होगा। लेकिन जब उसके कोई लडका पैदा न हुआ तो अपने अधिकारो को सुरक्षित बनाने के लिये उसने गुमानसिह के पुत्र मानसिह को गोद लिया और वह उसके उत्तराधिकारी होने की घोषणा करने लगी। विजय सिह उसके हाथो की कठपुतली था। उसने अपनी बुद्धि नष्ट कर दी थी और आँखे बन्द करके वह अपनी उप पत्नी के आदेशो का पालन करता था। उस युवती ने इसका खूब लाभ उठाया।

उप पत्नी की आज्ञानुसार, विजयसिह ने अपनी राजधानी मे समस्त सामन्तो को बुलाकर एकत्रित किया और उसने मानसिह को राज्य का उत्तराधिकारी मानने के लिये उनको आदेश दिया। सामन्तो की समझ मे ऐसा करना विधान और न्याय के बिलकुल विरुद्ध था। इसीलिये सामन्तो ने साहस करके स्पष्ट रूप से उस आदेश को मानने से इन्कार कर दिया। विजयसिह ने सामन्तो की इस बात की बिलकुल परवा न की उसने पण्डितो और पुरोहितो को बुलाकर शास्त्र की रीति से दत्तक पुत्र मानसिह को अपना उत्तराधिकारी स्वीकार किया और उसका जो पुत्र वास्तव मे था वह राज्य के उत्तराधिकार से वंचित कर दिया गया।

राजा विजय सिंह के वंशज

का भय न रह गया था। इसलिए रामसिंह ने निर्भीक होकर मराठो के साथ सन्‍ि
बाद मराठा सेना दक्षिण से चलकर कोटा होती हुई जयपुर मे आ गयी । रामसिंह म
साथ जयपुर से जोधपुर के लिए रवाना हुआ।

मराठा सेना लेकर रामसिंह के आने का समाचार मारवाड मे पहुँच गया।
मे यह अफवाह फैलने लगी कि मराठा लोग इस राज्य में आकर भीषण अत्याचारो के
करेगे। इसलिए रामसिंह के इस आक्रमण को व्यर्थ करने के लिए राठौर राजपूत के
मेडता के मैदानो मे आकर एकत्रित होने लगे।

मराठा सेना के साथ पुष्कर तीर्थ मे पहुँचकर रामसिंह ने अपने दूत के द्वारा सन
"तुम इसी समय राज सिंहासन छोड़कर अपने प्राणो की रक्षा करो, अन्यथा तुम्हारी कुश

विजयसिंह ने अपने समस्त सामन्तो के सामने रामसिंह का भेजा हुआ सन्देश
उसकी बात सुनकर सभी राठौर सामन्त क्रोध मे आकर एक साथ कह उठे : हम लोग
तैयार हैं। हमे मराठो का कोई भी भय नही है।"

उत्तेजित राठौर सामन्तो ने एक मत से युद्ध का समर्थन किया। विजयसिंह ने
सन्देश का जवाब भेज दिया। रामसिंह के साथ जो मराठा सेना आयी थी, वह रा
मुकाबिले मे अधिक विशाल थी। उसके साथ जयपुर के कछवाहो की सेना भी थी। रा
को जयपुर की सेना की कुछ भी परवा न थी। लेकिन मराठो की विशाल सेना को पर
के लिये राठौर सामन्त आपस मे परामर्श करने लगे।

विजयसिंह युद्ध की तैयारी करके जोधपुर मे एकत्रित सेनाओ के साथ वह मेडत
मे पहुँच गया। यहाँ पर मराठा सेना के साथ युद्ध करके उसको मारवाड़ के सिंहासन के
का निर्णय करना था। दोनो ओर की सेनाओ का सामना हुआ और युद्ध आरम्भ हो
संग्राम मे कुछ हो समय की मारकाट करके राठौरो ने मराठो के छक्के छुटा दिये।

इस भयानक युद्ध मे दो घटनाये राठौरो के विरुद्ध पैदा हुई। यदि ये घटनाये
राठौरो ने निश्चित् रूप से मराठो को पराजित किया होता। पहली घटना यह हुई कि
राठौरो की अश्वारोही सेना युद्ध क्षेत्र से भाग कर लौट रही थी, राठौरो की दूसरी सेन
शत्रु सेना समझकर भीषण रूप से गोलो की वर्षा की। जिससे राठौरो की सवारो
बहुत क्षति पहुँची और अचानक उसके बहुत से शूरवीर मारे गये। दूसरी घटना भी
प्रकार की थी। मराठा सेना का प्रधान सेनापति सीन्धिया जिस समय युद्ध-क्षेत्र को छोड़
को था, ठीक उसी समय राठौर सेना छिन्न-भिन्न हो गयी।

कृष्णगढ और रूप नगर के दोनो राजा राठौर वश मे ही उत्पन्न हुये थे।
अपने-अपने राज्यो मे स्वाधीनता के साथ शासन करते थे और मुगल बादशाह के प्रभुत्व क
करते थे। कृष्णगढ से राजा ने रूप नगर के राजा को सिंहासन से उतार कर उसके
अधिकार कर लिया था। रूप नगर का राजा सामन्त सिंह अपनी वृद्धावस्था के कारण ज
के किनारे वृंदावन चला गया और वहाँ पह वह वैराग्य लेकर अपने दिन व्यतीत करने लग

सामन्तसिंह के पुत्र को पिता के सन्यास ले लेने से बहुत शोक पहुँचा। वह कि
अपने राज्य का उद्धार करना चाहता था। उसने अपने पिता से भेंट की और बहुत-सी ब
कही। लेकिन पिता पर कोई प्रभाव न पडा और उसने पुत्र को स्वय समझाने की चेष्ट
ससार मे इस माया-जाल को छोड़कर तुमको भी अलग हो जाना चाहिये।

उसके शासनकाल मे मारवाड राज्य का भयानक रूप मे पतन हुआ। अब उसकी इस विलासिता के कारण राज्य का सर्वनाश आरम्भ हुआ। परन्तु विजय सिंह को इसकी परवा न थी।

ओसवाल युवती ने विजय सिंह को अन्धा बना दिया। उसको उचित और अनुचित कर्मों का ज्ञान न रहा। उस युवती के प्रेम को पाकर विजय सिंह ने सब कुछ भुला दिया और अपनी प्रधान रानी के सम्मान को ठुकरा कर उसने उस युवती को प्रधानता दी। इन दिनो विजयसिंह के मनोभाव बहुत पतित हो गये थे। उसने जीवन की गौरवपूर्ण मर्यादा को भुलाकर केवल उस युवती को महत्व दिया था। वह युवती विजयसिंह की इस अवस्था मे पूर्ण रूप से परिचित थी और वह कभी-कभी उसके इस अन्धे प्रेम को ठुकरा दिया करती थी। उस समय के भट्ट ग्रन्थो मे लिखा गया है कि युवती ने अनेक मौको पर विजयसिंह को अपनी जूतियो से मारा था। परन्तु इस पर भी विजयसिंह के स्वाभिमान को आघात न पहुँचा। किसी भी पुरुष के पतन की वह चरम सीमा मानी जा सकती है।

विजय सिंह के इस पतन से मारवाड़ राज्य मे अशान्ति और अराजकता बढने लगी। इस पर भी विजय सिंह की आँखे नही खुली। मारवाड में इन दिनो विजयसिंह का नहीं, उसकी उप-पत्नी का शासन चल रहा था। उस युवती ने ऐसी जाति में जन्म लिया था, जिसमे किसी राजपूत को राजस्थान की व्यवस्था के अनुसार, विवाह करने का कोई अधिकार न था। इसीलिये वह उप पत्नी के रूप मे मानी गयी और उसे विजय सिंह की रानी होने का अधिकार न मिल सका। इतना सब होने पर भी वह युवती अपने आपको गौरवपूर्ण समझती थी और विजयसिंह की बडी रानी से भी वह अपने को श्रेष्ठ समझती थी।

उस युवती का विश्वास था कि मुझसे जो लडका पैदा होगा, वह विवाहित रानियो के लडको के होने पर भी इस राज्य का उत्तराधिकारी होगा। लेकिन जब उसके कोई लडका पैदा न हुआ तो अपने अधिकारो को सुरक्षित बनाने के लिये उसने गुमानसिंह के पुत्र मानसिंह को गोद लिया और वह उसके उत्तराधिकारी होने की घोषणा करने लगी। विजय सिंह उसके हाथो की कठपुतली था। उसने अपनी बुद्धि नष्ट कर दी थी और आँखे बन्द करके वह अपनी उप पत्नी के आदेशो का पालन करता था। उस युवती ने इसका खूब लाभ उठाया।

उप पत्नी की आज्ञानुसार, विजयसिंह ने अपनी राजधानी मे समस्त सामन्तो को बुलाकर एकत्रित किया और उसने मानसिंह को राज्य का उत्तराधिकारी मानने के लिये उनको आदेश दिया। सामन्तो की समझ मे ऐसा करना विधान और न्याय के बिलकुल विरुद्ध था। इसीलिये सामन्तो ने साहस करके स्पष्ट रूप से उस आदेश को मानने से इन्कार कर दिया। विजयसिंह ने सामन्तो की इस बात की बिलकुल परवा न की उसने पण्डितो और पुरोहितो को बुलाकर शास्त्र की रीति से दत्तक पुत्र मानसिंह को अपना उत्तराधिकारी स्वीकार किया और उसका जो पुत्र वास्तव मे था वह राज्य के उत्तराधिकार से वंचित कर दिया गया।

राजा विजय सिंह के वंशज

देखकर विजयसिंह घबरा उठा। उसने अजमेर मराठो को दे दिया और कर देना भी कर लिया।

मारवाड राज्य मे अजमेर सबसे बडी विशेषता रखता है। इसलिये अजमेर पर मारवाड़ का राज्य निर्बल पड गया। रूप नगर के युवक राजकुमार की मराठा सेना ने राठौरो पर विजय प्राप्त की। इसलिये जय अप्पा ने रूप नगर के सि युवक को बिठाने का इरादा किया। उसको सुनकर उस युवक ने कहा : "पहले जोधपुर के सिंहासन पर बैठना चाहिये। इससे रूप नगर का उद्धार बडी आसा जायगा।" इसके कई दिनो बाद जयअप्पा मारे गये।* उससे रामसिंह के साथ राज पैदा हो गया।

सेनापति जयअप्पा की मृत्यु हो जाने पर मराठो का समस्त राजपूतो पर हुआ। उन लोगो ने रामसिंह के समस्त राजपूतो पर आक्रमण किया। विजय सिंह कुवेर सिंह सन्धि के सम्बन्ध मे मराठो के पास आया था। इस आक्रमण मे वह भी नागौर राज्य के ताऊसर नाम के एक ग्राम मे जयअप्पा के स्मारक में एक मन्दिर बन

राठौरो के साथ सन्धि हो जाने के बाद मराठो ने रामसिंह के पक्ष को छोड़ रामसिंह के सामने फिर से कठिनाइयाँ पैदा हो गयी। उसने जोधपुर का सिंहासन लिये बाईस वर्ष तक लगातार युद्ध किया। मराठो के अलग हो जाने के बाद रामसिंह अवस्था मे पहुँच गया। इस समय उसकी सहायता करने वाला कोई न था। इस सिंह के यहाँ जाकर आश्रय लिया।

रामसिंह की इस असहाय अवस्था मे विजय सिंह ने मारवाड़ राज्य के सां उसके जीवन-निर्वाह के लिये दे दिया। सांभर का कुछ भाग जयपुर राज्य के साथ जयपुर के राजा ने भी वह भाग देकर रामसिंह की सहायता की। इसके बाद रा अवस्था मे साभर मे रहकर अपना जीवन व्यतीत करने लगा। उसके स्वभाव मे अब हो गया। पहले की सी उसमे अब उग्रता और कठोरता न रह गयी थी। अब बहुत गया था। सन् १७१७ मे रामसिंह की जयपुर मे मृत्यु हो गई। उसका शरीर वीरोचि शाली था। अपने स्वभाव की उग्रता के कारण जीवन के आरम्भ मे वह अपने सा अप्रिय हो गया था। उसमे पहले भी अनेक अच्छाइयाँ थी। परन्तु वह व्यवहार कुशल इसी अयोग्यता के कारण वह सिंहासन से उतारा गया था।

कुछ भी हो विजय सिंह की विशाल सेना के सामने मराठो की एक छोटी से सिंह विजयी हुआ। इस दशा मे विजय सिंह की अपेक्षा रामसिंह को राजनीतिज्ञ और सु किसी प्रकार अस्वाभाविक नही कहा जा सकता।

निर्वासित अवस्था मे रामसिंह जयपुर मे परलोक की यात्रा की। उसके न विजय सिंह ने निश्चित होकर अपना राज्य शासन चलाया। मराठो ने अजमेर पर अ

*उसकी चिकित्सा करने के लिये राठौर के राजा ने सूरजमल नामक अपना चिकित्सक मल ने वहाँ जाने से इन्कार करते हुए कहा : "आप मुझसे जयअप्पा को विष देने के लि हैं। लेकिन मैं ऐसा न करूँगा। यह सुनकर विजय सिंह ने कहा : मैं ऐसा न जाकर अच्छी चिकित्सा करे। सूरजमल ने जाकर जयअप्पा की चिकित्सा की और उसने उसे नीरोग कर दिया।

गोडवाड राज्य मे पहुँचकर पिता की आज्ञानुसार जालिम सिंह ने भीमसिंह पर आक्रमण करने की तैयारी की, वह अपनी सेना लेकर रवाना हुआ। भीमसिंह को यह समाचार पहले से ही मालूम हो चुका था। जालिम सिंह के वहाँ पहुँचते ही दोनो तरफ से युद्ध आरम्भ हुआ। जालिम सिंह की सेना के मुकाबिले मे भीमसिंह की सेना बहुत छोटी थी। इसलिए युद्ध के अन्त मे भीमसिंह की पराजय हुई और वह युद्ध से भागकर पोकरण के सामन्त के यहाँ चला गया और वहाँ से वह जैसलमेर पहुँच गया।

इन दिनो मे मारवाड राज्य मे बडी अशान्ति पैदा हो गयी थी। राज्य की तरफ से व्यवस्था न होने के कारण भयानक रूप से अराजकता बढ रही थी। राज्य के सभी सामन्त विजय सिंह के विद्रोही हो रहे थे। इस प्रकार न जाने कितनी बाते पैदा होकर राज्य का विनाश और विध्वंस कर रही थी। उन्ही दिनो मे जोधपुर के सिंहासन पर इकतीस वर्ष बैठकर सन् १८५० के आषाढ महीने मे विजय सिंह की मृत्यु हो गयी।*

चवालीसवाँ परिच्छेद

जोधपुर के सिंहासन पर भीमसिंह का अधिकार—जालिमसिंह की योग्यता—भीमसिंह के साथ मानसिंह का संघर्ष—मानसिंह के पक्ष मे सामन्त—सिंहासन पर मानसिंह—राजा जयपुर के साथ शत्रुता—राज्य के सामन्त जयपुर के साथ—राज्य मे मानसिंह का विरोध। सामन्त सवाईसिंह का षडयन्त्र—मराठा होलकर को रिश्वत—मानसिंह के विरुद्ध राजाओ और सामन्तो का संगठन—मानसिंह के शिविर मे लूट—जयपुर की सेना का जोधपुर मे आक्रमण—मारवाड-राज्य मे मराठो और पठानो की लूट—मानसिंह के भाग्य का परिवर्तन—जगतसिंह के सामने प्राणो का सङ्कट।

जालिम सिंह के साथ युद्ध मे पराजित होकर भीमसिंह जैसलमेर चला गया। वहाँ पर उसने विजय सिंह की मृत्यु का समाचार सुना। उसने तुरन्त जैसलमेर से चलने की तैयारी की और अपनी सेना के साथ जैसलमेर से बाईस घन्टे मे जोधपुर पहुँच कर उसने बडी शीघ्रता के साथ राज सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

जालिम सिंह विजय सिंह का सबसे बडा लडका था और प्राचीन प्रणाली के अनुसार राज्य का वही उत्तराधिकारी था। भीमसिंह विजय सिंह का पौत्र था। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर जालिम सिंह जोधपुर राजधानी के लिए रवाना हुआ। मेडता मे आकर उसने मुकाम किया। वहाँ पर उसने सुना कि जैसलमेर से भीम सिंह आकर मारवाड के सिंहासन पर बैठ गया है। यह सुनते ही जालिमसिंह को आश्चर्य हुआ। वह चिन्तित होकर वर्तमान परिस्थिति पर विचार करने लगा कि इस समय क्या करना चाहिए।

---

* कुछ अधिकारियो ने लिखा है कि विजय सिंह ने जोधपुर के सिंहासन पर बैठ कर इकत्तालीस वर्ष राज्य किया था उसका जन्म सन् १७३२ मे हुआ था और सिंहासन पर बैठने के समय उसकी अवस्था बीस वर्ष की थी।

—अनु०

सार विजय सिंह भी अपनी धात्री को सम्मान की दृष्टि से देखता था । धात्री से जो होते थे, उनको राजकुमारो का भाई मानकर उसको धाभाई कहा जाता था । इन बयस्क होने पर राज्य मे ऊँचे पद मिला करते थे । वहाँ की यह पुरानी प्रथा थी ।

राजा विजय सिह की धात्री का एक लडका था । जग्गू उसका नाम था । f धाभाई होने के कारण राज्य मे उसने बहुत सम्मान पाया था । यह जग्गू वयस्क होने बुद्धिमान और दूरदर्शी साबित हुआ । जग्गू विजय सिह से बहुत प्रेम करता था औ परामर्शों से वह उसको सदा सावधान किया करता था ।

विजयसिह भी जग्गू पर विश्वास करता था और किसी भी सङ्कट के समय वह मर्श को अधिक महत्व देता था । दोनो के बीच इस प्रकार श्रद्धा का भाव बहुत दिन रहा था । विजय सिह के मन मे राज्य की दुरवस्था के कारण जो चिन्तना और अशान्ति थी, उसको उसने जग्गू से कई बार प्रकट किया । विजय सिह की इन चिन्तनाओ को स्वयं बहुत मर्माहित होता था और वह किसी प्रकार विजय सिंह की इस अशान्ति अ दूर करना चाहता था । मारवाड़ के सामन्तो को नियन्त्रण मे लाने और राजा वि शक्तियो को प्रवल बनाने के लिये अनेक प्रकार के उपाय सोचने लगा ।

जग्गू ने एक योजना तैयार की और उसने राज्य के सामन्तो को समझा-बुझ के लिये राजी कर लिया कि राज्य की रक्षा के लिये एक शक्तिशाली वैतनिक सेना र वह किसी भी सङ्कट के समय राज्य की रक्षा करे । सामन्तो ने जग्गू की इस बात को लिया । उस सेना के लिये यह भी निश्चय हो गया कि वेतन की अदायगी सामन्तो के

सामन्तो से नई-नई सेना के रखे जाने और उसको वेतन दिये जाने के स्वीकृति मिल गई तो जग्गू ने कई सौ पुरविया राजपूतो को अपने यहाँ रखकर अनुसार एक वैतनिक सेना तैयार की । राजस्थान के सभी राज्यो मे सैनिको को मा स्थान पर भूमि दी जाती थी । लेकिन जग्गू ने जो सेना तैयार की, वह सभी पैदल थी मासिक वेतन दिये जाने की व्यवस्था की गई । इस सेना के सैनिको ने योरोपियन करने की शिक्षा पाई थी । मारवाड की इस सेना को देखकर उदयपुर और जयपुर के र इसी प्रकार की अपने यहाँ सेनाएँ रखी ।

जग्गू ने मारवाड मे जो नई सेना रखी थी, उसमे सिन्धी, अरवी और रुहेले—प राजपूत थे । उस सेना का नियन्त्रण और शासन मारवाड के राजा के अधिकार मे रहा सौ वैतनिक सैनिको का प्रभुत्व और प्रभाव राज्य मे पूर्ण रूप से काम करने लगा । उ लिये राज्य के सामन्त धन-सग्रह करते थे । लेकिन वह सेना मारवाड के राजा की अधीन

कुछ ही दिनो के वाद इस वैतनिक सेना के द्वारा सामन्तो की उपेक्षा होने समय सामन्तो ने अपनी निर्वलता को अनुभव किया । उस नई सेना के साथ सामन्तो विरोध आरम्भ हुआ । मारवाड की देखा-देखी मेवाड, जयपुर और कोटा के राजाओ यहाँ वैतनिक सेनाएँ रखी थी । परन्तु कोटा को छोडकर और किसी राज्य ने वैतनि लाभ नही उठाया ।

मारवाड की इस नवीन सेना को शक्तिशाली बनाकर जग्गू ने राजा विजय सिह फतेहचन्द के साथ परामर्श किया और मारवाड़ मे फैली हुई अराजकता तथा

वह सोचने लगा कि सामन्त सिंह का पुत्र सूरसिंह और गुमानसिंह का पुत्र मानसिंह जिसको विजय सिंह की प्रेमिका युवती उप पत्नी ने गोद लिया था और विजय सिंह जिसको मारवाड़ का शासक बनाना चाहता था, अभी तक जीवित हैं—सूरसिंह अपने अच्छे व्यवहारों के कारण सबका प्रिय हो रहा था और वह भीमसिंह के बड़े भाई का लड़का था। इसीलिये सबसे पहले सिंहासन पर उसका अधिकार हो सकता था। इसलिये भीमसिंह उनके प्राणों का नाश करके अपने राज्य को सङ्कटहीन बनाने का विचार करने लगा।

भीमसिंह को मानसिंह सबसे बड़ा शत्रु दिखायी देने लगा। मानसिंह जालौर के दुर्ग में रहता था। इसलिये उसके प्राणों का नाश करने के उद्देश्य से भीमसिंह एक सेना लेकर रवाना हुआ और उसने जालौर के दुर्ग को घेर लिया। यह दुर्ग बहुत मजबूत बना हुआ था और शत्रु उस पर सहज ही अधिकार नहीं कर सकते थे। भीमसिंह को उसमें सफलता दिखाई न पड़ी। राठौरों की जो सेना उसके साथ आयी थी, वह कई महीने तक उस दुर्ग को घेरे पड़ी रही। लेकिन उसका कोई परिणाम न निकलने पर भीमसिंह ने वहाँ का उत्तरदायित्व अपने सेनापति को सौंपा और वह स्वयं जोधपुर की राजधानी लौट गया इसके बाद भी राठौर सेना वहाँ पर घेरा डाले पड़ी रही।

मानसिंह के अधिकार में इतनी सेना न थी कि वह भीमसिंह की सेना के साथ युद्ध कर सकता। इसीलिये दुर्ग के भीतर रहकर वह अपनी रक्षा करता रहा। इस अवस्था में और बहुत दिन बीत गये। खाने पीने की कठिनाइयाँ बढ़ गयी। उस दुर्ग की बनावट इतनी सुदृढ़ थी कि जिसमें शत्रु का प्रवेश न हो सकता था। लेकिन कई महीने बीत जाने के कारण मानसिंह और उसकी साथ की सेना की कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गयी।

बिना खाये पिये कोई भी मनुष्य कितने दिन जीवित रह सकता है। यही परिस्थिति जालौर के दुर्ग में मानसिंह और उसकी सेना की थी। इसलिये विवश होकर मानसिंह ने अवसर पाकर और उस दुर्ग से निकल कर मारवाड़ के गाँवों और नगरों को लूटना आरम्भ किया। उस लूट में मानसिंह के सैनिक खाने-पीने की सामग्री अधिक लेकर अपने दुर्ग में आ जाते और मौका पाकर वे लोग फिर लूटने के लिये निकल जाते। भीमसिंह की सेना इस लूट को रोक न सकी। इसका नतीजा यह हुआ कि मानसिंह और उसकी सेना के सामने खाने-पीने की जो कठिनाइयाँ थी, वे बहुत-कुछ कम हो गयी। इस प्रकार की लूट में मानसिंह का जीवन एक बार बड़े सङ्कट में पड़ गया। वह अपने सैनिकों के साथ दुर्ग से बाहर गया था और लूट कर जैसे ही वह लौटा, भीमसिंह की सेना ने उन पर आक्रमण किया। मानसिंह उस समय पैदल था और भीमसिंह के सैनिकों के द्वारा उसके कैद हो जाने में देर न थी, उसी समय मानसिंह के सामन्त ने उसको अपनी तरफ पकड़ कर खींचा और अपने घोड़े पर बिठा कर वह बड़ी तेजी के साथ वहाँ से चला गया। इस प्रकार उस भयङ्कर सङ्कट से मानसिंह के प्राणों की रक्षा हो सकी।

राजस्थान के किसी भी राज्य में जब कभी आपसी विद्रोह पैदा होता था उस समय राज्य के सामन्त एक न रह कर दोनों तरफ के सहायक बन जाते थे। राजस्थान के अनेक राज्यों में इस प्रकार देखा जा चुका था। मारवाड़ में इस समय भीमसिंह और मानसिंह में सङ्घर्ष चल रहा था। इसलिये वहाँ के सामन्त दोनों तरफ के सहायक हो रहे थे। कुछ सामन्त भीमसिंह के साथ और कुछ मानसिंह के साथ भी थे। भीमसिंह का पक्ष प्रबल और शक्तिशाली था। इसलिये कितने ही सामन्त भीमसिंह का पक्ष छोड़ कर मानसिंह के समर्थक बन गये थे।

किसी भी दशा मे राज्य के सामन्तो को शत्रु बनाना अच्छा नही हो स
मर्यादा के अनुसार उनको सम्मान देना और उनके प्रति सद्भाव प्रकट करना इस सम
कर साबित हो सकता है। यदि ऐसा न किया गया और यदि सामन्तो ने मिलकर अ
कर विरोध किया तो अनिष्ट होने की पूरी सम्भावना है। इसलिये अपनी सेना को स
आप स्वय उस स्थान को जावे, जहाँ पर सभी सामन्त एकत्रित हो कर परामर्श कर र
सद्भाव तथा शिष्टाचार से सामन्तो को सतोष देने की चेष्टा करे। इसका परिणा
हितकर होगा।"

गोर्धन की बातो को सुनकर विजयसिह को सन्तोष मिला। वह सामन्तो के
तैयारी करने लगा। उस समय गोर्धन स्वय साथ मे चलने के लिये तैयार हुआ ।
विजयसिह को लेकर बीसलपुर मे एकत्रित सामन्तो की भेट के लिये पहुँच गया औ
को एक स्थान पर छोडकर उसने सामन्तो से जाकर कहा "आप लोगो से मिलने
विजय सिह की सवारी बीसल पुर आ गयी है। इसलिये आप लोग चलकर उसका स्वा

गोर्धन की इस बात पर किसी सामन्त ने ध्यान न दिया और न वे विजयसिह
लिये तैयार हुए ! यह देख कर गोर्धन वहाँ से लौटा और वह मारवाड के प्रधान साम
के शिविर मे विजयसिह को लेकर गया यहाँ पर दूसरे सामन्त भी आकर एकत्रित ।
समय विजयसिह ने सभी सामन्तो की ओर देखकर प्रश्न किया "आप सब लोगो
छोड़ दिया है ?"

चम्पावत सामन्त ने विजयसिह के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा : "राज
विभिन्न राजपूत शाखाओ मे पैदा हुए हैं। परन्तु हम लोगो का मूल वश एक ही है।"

चम्पावत सामन्त के बाद अन्य सामन्तो की बातचीत आरम्भ हो गयी औ
उत्पन्न हुआ। उसमे विजयसिह को अपना उद्देश्य सफल होता हुआ दिखायी न पड़
उसने सोच-विचार कर बडी गम्भीरता के साथ कहा "राज्य मे किस प्रकार की
से शान्ति कायम हो सकती है और आप लोगो को सन्तोष मिल सकता है, इस बात को
लिये मै आप सबके पास आया हूँ।" विजयसिह के इस प्रश्न को सुन कर सामन्तो ने
सामने रखे।

१—धा भाई की अधीनता मे जो वैतनिक सेना है, उसको राज्य से निकाल दि
२—राजा को आत्म-समर्पण करके सामन्तो के पट्टे हम लोगो के अधिकार मे
३—न्यायालय दुर्ग से हटा कर नगर मे रखा जाय।

विजय ने सामन्तो के प्रस्ताव मे कही गयी तीनो बातो को ध्यान से सुना और
साथ उस पर विचार किया। पहली और तीसरी बात मे उसको कुछ भी विरोध न था।
के सम्बन्ध मे वह जानता था कि धा भाई के द्वारा जो वैतनिक सेना रखी गयी है, उसी
को इस प्रकार का व्यवहार करने के लिये तैयार होना पडा है। इसलिये उस वैत
समाप्त कर देना ही इस समय बुद्धिमानी की बात मालूम होती है।

तीसरी बात मे सामन्त लोग राज कार्य दुर्ग की अपेक्षा नगर मे चाहते हैं। इसमे
कोई विशेष आपत्ति नही हो सकती। परन्तु दूसरी बात मे जो माँग की गयी हैं, उससे
प्रभुत्व पूरे तौर पर समाप्त हो जाता है। सामन्तो को जागीरे देकर जो पट्टे लिखे जाते

मानसिंह के सिंहासन पर बैठने के समय देवीसिंह का पौत्र और सबल सिंह का बेटा सवाई सिंह पोकरण का सामन्त था। उसने असन्तुष्ट होकर जोधपुर का राज दरबार छोड़ दिया और दूसरे सामन्तो के साथ मिलकर उसने एक नयी योजना का निर्माण कार्य आरम्भ किया। उसने चोपासनी नामक स्थान पर राज्य के सामन्तो को बुलाकर कहा : "स्वर्गीय भीमसिंह की रानी गर्भवती है। इसलिये हम और आप—सभी लोग इस बात की प्रतिज्ञा करे कि यदि रानी के पुत्र उत्पन्न होगा तो मानसिंह को सिंहासन से उतार कर उसको राजतिलक किया जायगा।"

सवाई सिंह रण कुशल होने के साथ-साथ प्रभावशाली था। उसकी उत्तेजना पूर्ण बातो को सुनकर उपस्थित सामन्तो ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। उसके बाद इसी आशय का एक प्रस्ताव लिखा गया, उस पर सभी लोगो ने हस्ताक्षर कर दिये। अपने इस कार्य मे सफलता पाकर सवाई सिंह बहुत प्रसन्न हुआ। भीमसिंह की गर्भवती रानी इन दिनो मे दुर्ग मे रहा करती थी। सवाई सिंह सभी सामन्तो के साथ उस दुर्ग मे गया और भीमसिंह की रानी को दुर्ग से लाकर नगर के राजमहल मे रखा।

सामन्तो का निर्णय राजा मानसिंह को मालूम हो गया और उससे जब सामन्तो ने उसका जिक्र किया तो मानसिंह ने बडी बुद्धिमानी के साथ स्वीकार किया कि यदि रानी के पुत्र पैदा होगा तो वह मारवाड का उत्तराधिकारी होगा और उसके सम्मान को बढाने के लिये नागोर तथा सिवाना की जागीरे उसको दे दी जायेगी। लेकिन यदि रानी के लडकी पैदा हुई तो ढुंढार के राजकुमार के साथ उसका विवाह किया जायगा।"

राजा मानसिंह के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेने पर किसी सामन्त ने कुछ न कहा। उन सामन्तो के साथ उस पोकरण का सामन्त सवाई सिंह भी मौजूद था। कुछ दिनो के बाद भीमसिंह की विधवा रानी के गर्भ से बालक पैदा हुआ। रानी ने मानसिंह से भयभीत होकर नवजात शिशु को एक टोकरी में छिपा कर विश्वासी अनुचर के द्वारा पोकरण मे सवाई सिंह के पास भेज दिया।

सवाई सिंह उस बालक को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और बडी सावधानी के साथ उसके पालन पोषण का प्रबन्ध करा दिया। दो वर्ष तक उस बालक के जन्म को छिपा कर रखा गया। मानसिंह ने सिंहासन पर बैठकर सामन्तो के साथ अच्छा व्यवहार न किया। जिन सामन्तो ने जालोर के दुर्ग के घेरे के समय उसकी सहायता की थी, उनके सम्मान का उसने ख्याल रखा। परन्तु जो सामन्त भीमसिंह के समर्थक थे, मानसिंह ने अपने शासन के दिनो मे उनके साथ कठोर और अनुचित व्यवहार आरम्भ किया। जिन दिनो मे मानसिंह जालोर के दुर्ग मे बन्द था, उसके वंशज दो प्रधान सामन्तो ने उसकी सहायता की थी। जो लोग इसके पक्ष मे थे, उनमे भाटी वंश के राजपूत सैनिक थे और कायमदास की अधीनता मे विष्णु स्वामी नाम का एक सैनिक दल भी था।×

पोकरण का सामन्त सवाईसिंह से अप्रसन्न था इधर अनेक सामन्तो के साथ। उसका अपमान जनक व्यवहार बढ जाने के कारण सवाईसिंह को मौका मिल गया। उसने अपने सामन्तो को बुलाकर भीमसिंह के नवजात शिशु के जन्म का सब हाल बताया और उसने यह भी प्रकट किया कि

×विष्णु का भक्त होने के कारण यह दल विष्णु स्वामी दल के नाम से प्रसिद्ध था। महन्त कायमदास के हितो की रक्षा के लिये इस दल के लोगो ने भीषण युद्ध किया था और आवश्यकता पड़ने पर ये लोग दूसरो का साथ भी देते थे।

कैदी सामन्तो को अपने भविष्य का अनुमान हो गया। इसी समय धाभाई जर होकर वन्दी सामन्तो से कहा : "आप लोग इस ससार को छोडकर परलोक यात्रा हो जाइए।"

सामन्तो ने साहस के साथ उत्तर दिया : "हम सब राजपूत हैं ओर राजा वश मे ही हमने जन्म लिया है। हमारे प्राणो मे राठौरो का स्वाभिमान मौजूद है। इ माँग यह है कि वैतनिक सैनिको की गोलियो से हमारे प्राणो का अन्त न किया जाय। के द्वारा हम सब की गर्दने काट कर फेक दी जायँ।"

सामन्तो की इस माँग के सम्बन्ध मे क्या हुआ, इसका कोई उल्लेख विजय ग्रन्थ मे नही पाया जाता। धाभाई जग्गू के आदेश से चम्पावत तीन प्रमुख सामन्तो, अह सिंह, पोकरण के देवीसिंह हरसोलाव के सामन्त, कुम्पावत के चन्द्र सिंह, चन्द्रायण के निजाम के सामन्त कुमार, रास के सामन्त और उदावत लोगो के प्रधान सामन्तो के किये गये।

देवीसिंह राजा अजित सिंह का बेटा था। * इसलिए गोली अथवा तलवा मारने का किसी ने साहस नही किया। इसलिए विष के साथ अफीम को घोल कर दिया गया। देवी सिंह ने उसके पीने का आदेश सुनकर आवेश मे कहा : ' मैं इस स हूँ। मुझे विष का यह प्याला पीने के लिए दिया गया है। परन्तु मैं मिट्टी के प्याले पी सकता। सोने के प्याले मे मुझे यह विष पीने को दिया जाय। उस समय मैं तुरन्त पालन करूँगा।"

देवीसिंह की इस माँग को पूरा न किया गया और जब उसको मिट्टी के पात्र के लिए विवश किया गया तो उसने विष के उस पात्र को जोर के साथ दूर फेक दिया के विशाल पत्थर पर सिर पटक कर उसने अपने प्राण दे दिये। इसके पहले वहाँ के ने उससे पूछा था : "आप की वह तलवार कहाँ है, जिसके नीचे आप मारवाड के समझते थे ?"

देवीसिंह ने स्वाभिमान के साथ उस मनुष्य की तरफ देखा और कहा : "मेरी इस समय पोकरण मे मेरे बेटे सबल सिंह की कमर मे बंधी हुई है।"

जग्गू की सहायता से विजय सिंह ने अपने राज्य के निरंकुश और स्वच्छन्द प्र को मरवा कर मारवाड मे शान्ति की व्यवस्था की। जो सामन्त इस प्रकार मारे गये उसी वश के थे जिस वश मे विजयसिंह ने जन्म लिया था। उन सामन्तो के मारे जाने उनकी निरकुशता और स्वच्छन्दता थी। सामन्तो की इस निरकुशता का कारण विजयसि लता थी। शासक की कमजोरी—उसके शासन की हीनता प्रजा मे और राज्य के छो कर्मचारियो मे अराजकता उत्पन्न करती है। शासन की निर्वलता शासक का अपराध हो विजयसिंह की यह अवस्था न होती तो सामन्तो के स्वच्छन्द और निरकुश होने का को था। जो सामन्त जग्गू के षडयन्त्र के द्वारा मारे गये थे, उन्होंने और उनके पूर्वजो ने राठोर की मर्यादा को सुरक्षित रखने के लिए सदा अपने आप को बलिदान किया था। सामन्तो का इस प्रकार सहार विजय सिंह के गौरव का कारण नही बन सकता।

* देवीसिंह को कुछ ग्रंथकारो ने अजितसिंह का नही बल्कि महासिंह का बेटा न

सवाईसिंह ने जिस होने वाली दुर्घटना को लक्ष्य करके मानसिंह के साथ इस प्रकार के व्यवहार आरम्भ किये थे, वह घटना धीरे-धीरे सामने आने लगी। मारवाड के स्वर्गीय राजा भीमसिंह ने मेवाड के राणा की लडकी कृष्णाकुमारी के साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया था। राजकुमारी कृष्णा अत्यन्त सुन्दरी थी। विवाह का कोई निर्णय भी न हो पाया था, इसी बीच मे भीमसिंह की मृत्यु हो गयी। सवाईसिंह ने छिपे तौर पर जयपुर के राजा जगतसिंह को सन्देश भेजा कि मेवाड के राणा भीमसिंह की लडकी अत्यन्त सुयोग्य और सुन्दरी है। इसलिए उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव आप राणा के पास भेजिए।

इस सन्देश को पाकर जगतसिंह को बडी प्रसन्नता हुई। उसने राजकुमारी कृष्णा के साथ विवाह करने का निश्चय कर लिया और बहुमूल्य उपहारो के साथ उसने चार हजार सैनिक का एक दल राणा के पास उदयपुर भेज दिया। इसी समय सवाईसिंह ने राजकुमारी कृष्णा के साथ विवाह करने के लिये मानसिंह को प्रोत्साहित किया। उसने कृष्णाकुमारी की अनेक प्रकार से प्रशंसा की और मानसिंह को समझाया कि यह विवाह स्वर्गीय भीमसिंह के साथ होने जा रहा था। अब उसके अधिकारी आप है। जगतसिंह के साथ मेवाड की राजकुमारी का विवाह होने मे मारवाड के गौरव को आघात पहुँचता है।

सवाईसिंह के इस प्रकार समझाने पर मानसिंह ने अपने सामन्तो को बुलाने के लिये आदेश दिया और उसके बाद तीन हजार राठौरो की अश्वारोही सेना लेकर वह रवाना हुआ। जयपुर से मूल्यवान उपहारो को लेकर जो सेना मेवाड के लिए रवाना हुई थी, हीरासिंह उसका नायक था। राठौर सेना ने मारवाड की सीमा के भीतर जाकर जयपुर के राजा का समस्त उपहार लूट लिया। जयपुर की सेना पराजित होकर वहाँ से भाग गयी। जगतसिंह ने मानसिंह के इस व्यवहार पर तुरन्त युद्ध की घोषणा की। दोनो तरफ से लडाई की तैयारी होने लगी।

सवाईसिंह की अभिलाषा सफल हुई। वह किसी प्रकार मानसिंह को सिंहासन से उतारना चाहता था। इसके लिए उसने अब तक जितने उपाय सोचे थे व्यर्थ हो गये थे और अन्त मे मित्र बन कर वह मानसिंह को किसी बडे युद्ध मे फसाने की जो योजना बना रहा था, उसमे इस समय उसे सफलता मिली। जयपुर मे मारवाड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा होते ही सवाईसिंह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने तुरन्त मानसिंह के पास जाकर राजा जगत सिंह का विरोध किया और मानसिंह के प्रति अपनी अपूर्व सहानुभूति दिखाकर वह खेतडी चला गया।

इसी खेतडी मे धौकलसिंह अभयसिंह के सरक्षण मे रहता था। सवाईसिंह धौकलसिंह को लेकर जयपुर मे राजा जगतसिंह से मिला और मानसिंह के द्वारा जयपुर का जो उपहार लूटा गया था उसके सम्बन्ध मे वह बिलकुल अनजान बन गया। जगतसिंह को मालूम हुआ कि मानसिंह के विरुद्ध युद्ध की घोषणा को सुनकर सवाईसिंह धौकलसिंह को साथ मे लेकर सहायता के लिए आया है। इसलिए जगतसिंह ने सम्मान के साथ उसके स्वागत का आदेश दिया।

सवाईसिंह ने राजा जगतसिंह से भेंट करके बहुत-सी बाते मानसिंह के विरुद्ध कही और जगतसिंह को इस बात का विश्वास कराया कि मारवाड के साथ इस युद्ध मे वहाँ के समस्त सामन्त जयपुर का साथ देगे। इसलिये कि वे सभी सामन्त मानसिंह के साथ द्वेष रखते हैं और उनको सिंहासन से उतार कर धौकलसिंह को उसके स्थान पर बिठाना चाहते है। सवाईसिंह ने जगतसिंह को यह भी बताया कि धौकलसिंह के जन्म लेने के पहले ही मारवाड के सभी सामन्तो ने एक प्रतिज्ञा

इन दिनो मे विजय सिंह ने अपने राज्य के साथ-साथ चरित्र में भी अनेक प
थे। उसमे जो स्वाभाविक निर्बलता थी, उसको दूर करके उसने अपने साहस और पर
चय दिया। इन्ही दिनो मे उसने विद्रोही खोसा और सराई जाति के लोगो पर आक्रम
तैयारी की और वहाँ पहुँच कर उसने राजाओ के साथ युद्ध किया। वहाँ पर विजयी
सिंह ने अमरकोट के दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

विजय सिंह इन दिनो मे निर्भीकता से काम ले रहा था। उसने मारवाड
जो भाग जैसलमेर राज्य मे मिला लिया गया था, उस पर उसने अधिकार कर लिया
वाडा राज्य को मेवाड के राणा से छीन कर उसने अपने राज्य मे मिला लिया। मा
राज्य बहुत प्रसिद्ध माना जाता था। इसके पहले गोडवाडा राज्य पाँच शताब्दी त
राणा के अधिकार मे रह चुका था। उसके मारवाड मे मिल जाने के बाद राणा का
अधिकार न रहा।

स्वर्गीय पिता के न रहने के बाद रामसिंह के साथ विजय सिंह का जो सघर्ष पै
और उसके फलस्वरूप अजमेर देकर उसे मराठों को कर देना पडा था उससे विजय सिं
नैतिक और-आर्थिक शक्तियाँ बहुत दीन-दुर्बल हो गयी थी। उन्ही दिनो मे सामन्तो
चारिता के कारण और देवीसिंह के विद्रोही व्यवहारो से विजय सिंह की असमर्थता भ
से बढ गयी। परन्तु उस प्रकार के सभी सकट अब समाप्त हो गये थे। राज्य के वर्तमान
सगठित रूप से चल रहे थे। मारवाड के बुरे दिनो का अब अन्त हो चुका था। राज्य मे ि
आपसी विरोध और संघर्ष न रह गया था। परन्तु अजमेर मे मराठो की शक्तियाँ अब भ
रही थी और उनसे विजय सिंह अभी तक अजमेर वापस न ले सका था।

प्रताप सिंह इन दिनो जयपुर का शासक था। वह योग्य प्रतिभाशाली औ
था। मराठो के अत्याचारो से जयपुर का जो विनाश हो रहा था, उससे वह मन ही
दुखी हो रहा था। सम्वत् १८४३ सन् १७८७ ईसवी मे उसने अपने दूत के द्वार सन्देश
मराठा लोग राज्य मे भयानक अत्याचार कर रहे हैं। इसलिए हम सब लोगो का कर्त्त
उनको परास्त करने के लिए हम सभी सगठित हो जावे। इसके लिए मैंने सभी प्रकार
कर ली है। यदि आप ऐसे समय पर राठौरो की सेना भेजकर हमारी सहायता करेंगे तो
रूप से हम मराठो को पराजित करके राजस्थान से उनको भगा देंगे।"

विजय सिंह ने सङ्कट के समय अजमेर के साथ साथ चौथ देकर मराठो से सन्धि
वह अब भी मराठो से अपना बदला लेना चाहता था। प्रताप सिंह का यह सन्देश पाकर
हो उठा और राठौर की एक सेना तैयार करके उसने प्रताप सिंह के पास उनको भेज दिया।

जयपुर के राजा ईश्वरी सिंह की स्त्री ने किसी समय विजय सिंह के पिता प
करने का काम किया था और ईश्वरी सिंह ने स्वय विजय सिंह को कैद करके उसका
करने की चेष्टा की थी। परन्तु विजय सिंह ने इस अवसर पर उन बातो को भुला दि
समझता था कि आपस की इस शत्रुता को यदि हम लोग मिटा नही सकते तो मराठा ल
सब लोगो का सदा सर्वनाश करते रहेगे। इसलिए राजपूतो के गौरव की रक्षा के लि
पुरानी शत्रुता पर धूल डाली और प्रताप सिंह के अनुसार राठौरो की एक सेन
भेज दी। बियार का सामन्त जवानदास राठौरो की उस सेना का सेनापति होकर गया
जयपुर पहुँच कर प्रताप सिंह की सेना के साथ मिल गया।

हार को देखकर मानसिंह बहुत हताश हो गया। फिर भी उसने साहस से काम लिया और अपनी सेना के बल पर युद्ध करने के लिये वह आगे बढ़ा।

होलकर की मराठा सेना के चले जाने पर जयपुर की विशाल सेना आगे बढ़ी और गागोली नामक स्थान पर उसने गोले बरसाने आरम्भ किये। इस समय युद्ध मे कुचामन, आहवा, जालौर और नीमाज के सामन्त राजा मानसिंह के सहायक थे। गोलो की वर्षा के बाद दोनों ओर से प्रलयकारी युद्ध आरम्भ हुआ।

मानसिंह के सहायक सामन्तो ने उसको समझाया कि जयपुर की इस विशाल सेना के साथ युद्ध कर सकना असम्भव है। इसलिये सग्राम को रोक देना ही अधिक हितकर मालूम होता है। इसी समय कुचामन के सामन्त शिवनाथसिंह ने मानसिंह के पास जाकर उसको हाथी से उतार लिया और एक तेज घोडे पर बिठाकर युद्ध से चले जाने के लिये उससे अनुरोध किया। मानसिंह तुरन्त वहाँ से चला गया। लेकिन इस समय उसको अत्यन्त वेदना हुई।

दोनो ओर से गोलो की वर्षा होने के समय मानसिंह किसी प्रकार वहाँ से निकलकर मेडता मे पहुँच गया। उसके पीछे उसके गोलंदाज भी वहाँ पहुँच गये। वहाँ पहुँचकर मानसिंह को कुछ शान्ति मिली। विशाल शत्रु-सेना के आक्रमण मे उस समय निकल आना उसको कठिन मालूम हो रहा था। उसने सोचा कि मेडता बहुत सुरक्षित स्थान नही है। इसलिये वह पीपाड होकर जोधपुर की राजधानी चला गया। मारवाड के जिन सामन्तो ने इस भयानक विपद मे भी उसका साथ न छोडा था, वे भी उसके साथ राजधानी गये।

मानसिंह और उसके सामन्तो के भाग जाने पर जगतसिंह की सेना ने मानसिंह के शिविर मे लूट की और मारवाड की अठारह तोपे अपने अधिकार मे कर ली। जयपुर की सेना के साथ सीधिया की मराठा सेना भी थी। सेनापति बालाराव के सैनिको ने उस लूट मे अधिक लाभ उठाया। अमीरखाँ की फौज ने वहाँ पर बहुत सी चीजे लूटकर अपने कब्जे मे कर ली। जयपुर की इस विशाल सेना ने युद्ध क्षेत्र से चलकर पर्वतसर और उसके आस-पास के गाँवो को लूट लिया।

मानसिंह को इस युद्ध मे पराजित करके सवाईसिंह और जगतसिंह की आशाएँ पूरी हुई। इसी समय जगतसिंह ने सवाईसिंह को बुलाकर कहा : "मानसिंह पराजित होकर भाग गया है। मैं अब राजकुमारी मेवाड के साथ विवाह करने के लिये जाता हूँ और आप जोधपुर जाकर वहाँ के राजसिंहासन पर धोकलसिंह को बिठाने का प्रबन्ध करिये।"

सवाईसिंह दूरदर्शी और राजनीतिज्ञ था। उसने जगतसिंह की बात को स्वीकार कर लिया। परन्तु उसके साथ साथ उसने कहा : 'मानसिंह अभी तक पूर्ण रूप से पराजित नही हुआ। वह किसी भी समय भयानक परिस्थिति पैदा कर सकता है।" जगतसिंह के परामर्श के अनुसार सवाईसिंह अपनी सेना के साथ रवाना हुआ। जोधपुर की राजधानी न जाकर वह मेडता मे पहुँचा और वहाँ पर वह तीन दिन तक ठहरा रहा। सवाईसिंह सोचने लगा कि मानसिंह के अधिकार मे जो एक छोटी-सी सेना है, उसके द्वारा वह अपनी और राजधानी की रक्षा नही कर सकता। इसलिये यह निश्चित है कि 'वह जोधपुर से जालौर चला जायगा। इसलिये कि वहाँ का दुर्ग अधिक सुदृढ और सुरक्षित है। उसके जोधपुर से चले जाने पर राजधानी मे अपना रास्ता साफ हो जायगा।'

यही हुआ भी। मानसिंह अपनी सेना के साथ जोधपुर छोडकर जालौर के लिये रवाना हुआ और वह बीसलपुर पहुँच गया। उसके साथ गायनमल सिंगवी एक उच्च पदाधिकारी था।

मराठो के साथ पराजित होकर राठौरो ने फिर से युद्ध के लिये
सन् १७६१ ईसवी मे राठौरो ने मेडता के मैदानो मे मराठो के साथ फिर युद्ध ि
युद्ध मे प्राणो का मोह छोडकर राठौर राजपूतो ने मराठो के साथ संग्राम किया
के सामने संख्या मे बहुत कम होने के कारण इस दूसरे युद्ध में भी राठौरो की पराजय
जी सीधिया ने विजयी होकर राजा विजयसिंह से साठ लाख रुपये की माँग की।

विजय सिंह लगातार दो युद्धो मे मराठो से पराजित हो चुका था । अब उसके
आशा न रह गयी थी, इसलिये अपनी विवश अवस्था मे उसने माधव जी सीधिया की
सार साठ लाख रुपये देना स्वीकार कर लिया ।

विजय सिंह के सामने इस स्वीकृत के सिवा और कोई रास्ता न था। जयपुर के
सिंह की सहायता करके उसने मराठो की सन्धि तोडा था और माधव जी सीधिया
नई शत्रुता पैदा की थी । चार वर्षो के उपरान्त जब मराठो ने मारवाड पर आक्रमण
समय जयपुर की सेना ने विश्वासघात किया और उसके फलस्वरूप राठौरो को पराजित
राजा विजय सिंह को दण्ड स्वरूप साठ लाख रुपये देना स्वीकार करना पड़ा ।

इन दिनो मे मारवाड की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। जोधपुर के खज
रुपया न था, जिससे दण्ड की यह भारी रकम अदा की जा सके। इस दशा मे उस रु
यगी कैसे हो, विजय सिह की समझ मे यह किसी प्रकार न आया ।

जोधपुर के खजाने मे जो कुछ मौजूद था, उसको निकाल कर देने पर भी साठ
अदा न हो सके । इस दशा मे माधव जी सीधिया के आदेश से मराठा सेना ने मारवाड़ के
की लूट की और उससे जो सम्पत्ति एकत्रित हुई, उससे भी दण्ड के बाकी रुपये पूरे न हो
दशा मे मारवाड के प्रधान सामन्तो और राज्य के श्रेष्ठ आदमियो को कैद करके उनके
प्रासादो की लूट की गई । इससे जो धन एकत्रित हुआ, उससे दण्ड के बाकी रुपयो की पूर्ति न

विजय सिंह के पास दण्ड के बाकी रुपयो का अदा करने के लिये अब कोई
राज्य के प्रधान सामन्त बन्दी बनाकर मराठा शिविर मे रखे गये थे । बाकी रुपयों को
के लिये माधव जी सीधिया ने मारवाड़ के नगरो और गाँवो मे फिर से लूट करने के ि
सेना को आदेश दिया । उस मराठा सैनिको के अत्याचारो से राज्य मे चारो तरफ हाह
गया । स्थान-स्थान से रोने और चिल्लाने की आवाजे आने लगी । छोटे-छोटे बच्चे जा
गये । स्त्रियो के सम्मान नष्ट किये गये । मराठो ने अत्याचार मे कोई बात बाकी न रखी ।

तुङ्गा के मैदानो मे मराठो को पराजित करके राठौर सेना ने अजमेर को अपने
मे कर लिया था और वहाँ का शासन दुमराज को सौप दिया था । पाटन और मेडता के
मे राठौर सेना को पराजित करके मराठो ने फिर अजमेर पर अधिकार कर लिया । वहाँ
दुमराज ने जब सुना कि मराठो की विशाल सेना भयानक अत्याचारो के साथ अजमेर मे
रही है तो उसने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली । मराठो ने वहाँ पहुँचकर बिना कि
के युद्ध के अधिकार कर लिया और अजमेर मे मराठो का झण्डा फहराने लगा ।

विजय सिंह मराठो के साथ होने वाली पराजय और उसके फलस्वरूप मारवाड
अत्याचारो को थोडे दिनो मे बिलकुल भूल गया । उसके जीवन मे आरम्भ से ही राजपूती
का अभाव था । राठोरो के प्राचीन गौरव को भूलकर उसने विलासिता का आश्रय लि
ओसवाल जाति की एक सुन्दरी युवती पर आसक्त होकर उसने उसको अपनी उपपत्नी

नही हो सकता ।" मानसिंह इस प्रकार की बाते सोचकर राजधानी की रक्षा करने का उपाय सोचने लगा ।

जगतसिंह जयपुर की शक्तिशाली सेना को लेकर सवाईसिंह के साथ मारवाड़ की तरफ बढ़ और जोधपुर पहुँच कर उसकी सेना ने नगर मे प्रवेश किया। मानसिंह की कोई सेना नगर की रक्षा के लिए न थी । इसलिए जगतसिंह ने जोधपुर नगर पर अधिकार कर लिया और मराठा तथा पठानो की सेना ने वहाँ पर लूट मार करके भयानक अत्याचार किये । जोधपुर पर अधिकार करके मराठा और पठानो की सेना राजधानी के आस-पास गामो और नगरो मे लूट मार करने लगी। उस समय फलोदी के रहने वालो ने तीन महीने तक आक्रमणकारियो का सामना किया । लेकिन उसके बाद शत्रु के सामने उनको आत्म समर्पण कर देना पड़ा । इसलिए कि उनकी संख्या बहुत कम थी ।

जगतसिंह की तरफ से बीकानेर के राजा ने अपनी सेना के साथ पहुँच कर फलोदी राज्य पर अधिकार कर लिया । जोधपुर और उसके आस-पास के अनेक नगरो पर अधिकार कर लेने के बाद सवाईसिंह ने एक घोषणा पत्र प्रकाशित करके धोकलसिंह को राज्य के सिंहासन पर बिठाने के लिए मारवाड की प्रजा से प्रार्थना की । मानसिंह जोधपुर के दुर्ग मे अपनी सेना के साथ मौजूद था । उसे किले पर शत्रु सेना के आक्रमण का सन्देह होने लगा ।

जोधपुर और उसके आस-पास के स्थानो मे भीषण रूप से लूट-मार करके मराठा और पठानो की सेना ने जोधपुर के किले पर गोलो की वर्षा आरम्भ की । उस समय मानसिंह ने बड़े साहस और धैर्य से काम लिया । परन्तु दुर्ग की रक्षा उसे असम्भव मालूम होने लगी । जयपुर की विशाल सेना जोधपुर के दुर्ग को पांच महीने तक बराबर घेरे रही । परन्तु उसे सफलता न मिली । जयपुर की सेना ने उस दुर्ग के एक हिस्से को गोलो से विध्वस कर दिया । परन्तु उस स्थान की अस्सी फुट ऊँची पत्थर की दीवार का वे तोड़ न सके । इस दशा मे आक्रमणकारी सेना निराश होने लगी ।

जयपुर की सेना के साथ मराठो और पठानो की जो सेनाएँ आई थी, उनके सैनिको और पदाधिकारियो को पाँच महीने तक वेतन देने का कोई प्रबन्ध न हो सका । उन सब सेनाओ के सैनिको की संख्या एक लाख से ऊपर थी । उनके खाने-पीने की व्यवस्था मे भी बडी कमी आ गई। सेनाओ के साथ जो घोडे थे, उनको पेट भर घास भी न मिलने लगी । जयपुर की सेना के साथ अमीर खाँ की भी एक फौज थी । उसने मारवाड से नगरो और गामो मे भीषण रूप से लूट की थी और राज्य के सभी व्यावसायिक नगरो को लूटकर उसने बरबाद कर दिया था । उसके अत्याचारो से पाली, पीपाड, बोलाऊ और दूसरे बहुत से नगर बुरी तरह से नष्ट हो गये थे । जिन सामन्तो ने मानसिंह का साथ छोडकर धोकलसिंह का पक्ष लिया था, उसके नगरो मे भी अमीरखाँ ने जाकर लूटमार के साथ सर्वनाश किया । यह देखकर उन सामन्तो ने अमीरखाँ का विरोध किया । मारवाड के इस विध्वस का सबसे बडा अपराधी पोकरण का सामन्त सवाईसिंह था । खाने-पीने और वेतन देने की व्यवस्था के हो सकने पर सवाईसिंह से कहा गया कि वह अपने नगर से इतना धन लावे, जिससे खाने-पीने और वेतन की व्यवस्था की जा सके ।

सवाईसिंह ने इस बात को स्वीकार कर लिया । उसने अपने साथी सामन्तो की सहायता से जो धन एकत्रित किया, उसके साथ-साथ उसने अपनी संग्रह की हुई सम्पत्ति लाकर दी । उससे

फतेह सिह	जालिम सिह	सावन्त सिह	शेर सिह	भीम सिह	गुमान सिह	
छोटी आयु मे मृत्यु	विजय सिह का उत्तराधिकारी	शूर सिह		भीम सिह	मान सिह	भी

राजा विजय सिह के वंशजो की ऊपर जो नामावली दी गयी है, उसके पढने से है कि राजा विजय सिह का उत्तराधिकारी जालिम सिह था, जिसके अधिकारो की अव उसने अपनी उप पत्नी के दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी माना था। उस युवती को उप पत बाद उसका भयानक पतन हुआ उसके परिणाम स्वरूप अपनी उप पत्नी को प्रसन्न र वह उचित और अनुचित—सभी प्रकार के कार्य करता था। उसके इस नैतिक पतन मे की भयानक वृद्धि हुई थी।

विजय सिह के कुशासन की वर्तमान परिस्थितियो को देखकर राज्य के सामन्तो बढने लगी। उन सब लोगो ने मिलकर और आपस मे परामर्श करके निर्णय किया कि को सिहासन से उतारकर भीमसिह को मारवाड़ का शासक बनाया जाय। इस निर्णय कार्य करने के लिए सामन्तो ने अपनी योजना बनायी। विजय सिह को सामन्तो का मालूम हो गया। उसने एक बार सामन्तो को अनुकूल बनाने मे सफलता प्राप्त की थी। पर वह इस बार फिर सामन्तो के पास गया और गुप्त रूप से उसने अपना एक पत्र रास के पास भेजा।

उस सामन्त ने विजय सिह की युवती प्रेमिका उप पत्नी के पास जाकर कहा : " सामन्तो के पास पहुँचकर आपको बुलाने के लिए हमें भेजा है। आपके साथ चलने के लिए सरक्षक सेना तैयार है। इसलिए आप तुरन्त हमारे साथ चलिए।" उप पत्नी ने सामन्त क किया और अपने महल से निकलकर जिस समय वह सवारी पर बैठने लगी, उसी समय आघात से उसका मस्तक गर्दन से कटकर नीचे गिर गया। उसके प्राणो का अन्त करके रास भीमसिह को लेकर सेना के साथ अपने स्थान पर पहुँच गया। यदि रास का सामन्त भी वहाँ न ले जाकर एकत्रित सामन्तो के पास लेकर गया होता तो निश्चित रूप से सामन्त पहले के निर्णय के अनुसार, विजय सिह को सिहासन से उतार कर भीमसिह को उसके बिठा दिया होता। उस युवती के मारे जाने का समाचार एकत्रित सामन्तो और विजय साथ सुना सभी लोग वहाँ से उठकर भीमसिह के पास पहुँच गये।

विजय सिह सामन्तो के साथ था। इसलिए सामन्तो को अपने उद्देश्य मे मिली। विजय सिह ने वहाँ पर सबको प्रसन्न करने के लिए बाते की और भीमसिह और सिवाना का अधिकार देकर सिवाना के दुर्ग मे भेज दिया। भीमसिह ने सन्तुष्ट ह स्वीकार कर लिया। उसके चले जाने के बाद विजय सिह ने अपने बड़े पुत्र जालिम बुलाया। मारवाड राज्य का वास्तव मे वही उत्तराधिकारी था। विजय सिह ने जब मान पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाया था, उस समय जालिम सिह को बहुत असन्तोष था। इसलिए उसके उस असन्तोष को दूर करने के लिए विजय सिह ने उसको गोड़वा- अधिकार देकर वहाँ भेज दिया। उसके जाने के समय विजयसिह ने चुपके से उसको आदेश तुम भीमसिह पर आक्रमण करके उसे राज्य से निकाल दो। जालिमसिह ने इसे स्वीकार क

फागी नामक स्थान जयपुर की आखिरी सीमा पर था वहाँ तक अमीरखाँ को भगाकर और जयपुर की सीमा से बाहर कर शिवलाल ने उसका पीछा करना अब आवश्यक न समझा। उसने जयपुर राज्य की सीमा के भीतर एक स्थान पर अपनी सेना का मुकाम किया और विजय के उल्लास मे गौरव अनुभव करने के लिए वह अकेला जयपुर चला गया।

राठौर सामन्तो के साथ अमीरखाँ लेक के पास पीपलू नामक स्थान पर पहुँच गया था। वही उसने सुना कि शिवलाल अपनी सेना को अकेली छोडकर जयपुर चला गया है। इस अवसर का लाभ उठाने की उसने चेष्टा की। उसके साथ की सेना युद्ध करने के लिए काफी न थी। इन दिनो मे मोहम्मदशाह खाँ और राजा बहादुर की सेनाये ईसरदा को घेरे हुए पडी थी। अमीरखाँ ने उन दोनो नेताओ को मिलाकर हैदराबादी रिसाला दल मे वह पहुँचा। यह दल इन दिनो मे लूटमार के लिए बहुत प्रसिद्ध हो रहा था। अमीरखाँ ने उसका भी अपने साथ मिला लिया और एक शक्तिशाली सेना बनाकर उसने शिवलाल की सेना पर आक्रमण किया।

जयपुर की वह सेना इस समय बिना सेनापति के थी और सेनापति के अभाव मे कोई भी फौज युद्ध नही कर सकती। फिर भी उस सेना ने पूरे तौर आक्रमणकारियो का सामना किया। वे युद्ध से पीछे नही हटे और अत मे वे सब पराजित होकर मारे गये। अमीरखाँ की विजयी सेना ने पराजित सेना के शिविर मे जाकर वहाँ की समस्त युद्ध सामग्री को अपने अधिकार मे कर लिया।

जगतसिह की विशाल सेना छै महीने तक जोधपुर के दुर्ग को घेरे हुए पडी। दुर्ग मे प्रवेश करने की सफलता उसको न मिली। इन छै महीनो मे खाने-पीने पर वेतन सम्बन्धी कठिनाइयाँ भयानक रूप से उसकी सेनाओ के सामने पैदा हो गयी। जो सेनाये जयपुर की सहायता मे जोधपुर आयी थी उनके पदाधिकारियो का मतभेद भी सवाईसिह और जगतसिह के साथ पैदा हुआ।

यह झगडा धीरे-धीरे बढने लगा और आपसी असतोष के कठोर हो जाने के कारण बीकानेर और शाहपुर के राजा जोधपुर छोडकर अपने-अपने राज्य को चले गये। परन्तु सवाईसिह और जगतसिह को उनके चले जाने पर किसी प्रकार की चिन्ता नही हुई। इसी अवसर पर उनको मालूम हुआ कि अमीरखाँ को दमन करने के लिए सेनापति शिवलाल के नेतृत्व मे जो सेना भेजी गयी थी, भयानक रूप से उसका विनाश हुआ है। सवाईसिह को यह समाचार पहले ही मालूम हो चुका था। लेकिन उसने जगतसिह को जाहिर नही किया था और जयपुर के दीवान रामचन्द को रिश्वत देकर उसने रोका था कि यह समाचार जगतसिह को मालूम न होने पावे। उसका विश्वास था कि इस समाचार को सुनते ही जगतसिह अपनी सेना लेकर जयपुर चला जायगा और उसके चले जाने पर मानसिह के विरुद्ध सफल न होगा।

सवाईसिह और रामचन्द्र के छिपाने के बाद भी अधिक समय तक वह समाचार छिप न सका। जगतसिह की माता ने जयपुर से उस सेना के विनाश का समाचार उसके पास भेजा, जिसे सुनकर जगतसिह ने सवाईसिह पर बहुत क्रोध किया। जयपुर के दूत से उस समाचार को पाकर जगतसिह जोधपुर से चला गया। उसके सामने षडयत्रकारी अमीरखाँ का भयानक भय पैदा हो गया।

जगतसिह ने जोधपुर की राजधानी की लूट मे बीस तोपो के साथ जो सम्पत्ति पायी थी उसको अपने सामन्तो के पास भेजकर उसने मराठा सेना के सेनापति को बुलाया। जगतसिह के

फतेह सिंह	जालिम सिंह	सावन्त सिंह	शेर सिंह	भीम सिंह	गुमान सिंह	स
छोटी आयु	विजय सिंह	|		|	|	भी
मे मृत्यु	का	शूर सिंह		भीम सिंह	मान सिंह	
	उत्तराधिकारी					

राजा विजय सिंह के वंशजो की ऊपर जो नामावली दी गयी है, उसके पढने से
है कि राजा विजय सिंह का उत्तराधिकारी जालिम सिंह था, जिसके अधिकारो की अव
उसने अपनी उप पत्नी के दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी माना था। उस युवती को उप पत
बाद उसका भयानक पतन हुआ उसके परिणाम स्वरूप अपनी उप पत्नी को प्रसन्न र
वह उचित और अनुचित—सभी प्रकार के कार्य करता था। उसके इस नैतिक पतन मे
की भयानक वृद्धि हुई थी।

विजय सिंह के कुशासन की वर्तमान परिस्थितियो को देखकर राज्य के सामन्तो
बढने लगी। उन सब लोगो ने मिलकर और आपस में परामर्श करके निर्णय किया कि
को सिंहासन से उतारकर भीमसिंह को मारवाड का शासक बनाया जाय। इस निर्णय
कार्य करने के लिए सामन्तो ने अपनी योजना बनायी। विजय सिंह को सामन्तो का
मालूम हो गया। उसने एक बार सामन्तो को अनुकूल बनाने में सफलता प्राप्त की थी। उ
पर वह इस बार फिर सामन्तो के पास गया और गुप्त रूप से उसने अपना एक पत्र रास
के पास भेजा।

उस सामन्त ने विजय सिंह की युवती प्रेमिका उप पत्नी के पास जाकर कहा : "
सामन्तो के पास पहुँचकर आपको बुलाने के लिए हमें भेजा है। आपके साथ चलने के लिए
सरक्षक सेना तैयार है। इसलिए आप तुरन्त हमारे साथ चलिए।" उप पत्नी ने सामन्त क
किया और अपने महल से निकलकर जिस समय वह सवारी पर बैठने लगी, उसी समय
आघात से उसका मस्तक गर्दन से कटकर नीचे गिर गया। उसके प्राणो का अन्त करके रास
भीमसिंह को लेकर सेना के साथ अपसे स्थान पर पहुँच गया। यदि रास का सामन्त भी
वहाँ न ले जाकर एकत्रित सामन्तो के पास लेकर गया होता तो निश्चित रूप से सामन्त
पहले के निर्णय के अनुसार, विजय सिंह को सिंहासन से उतार कर भीमसिंह को उसके
बिठा दिया होता। उस युवती के मारे जाने का समाचार एकत्रित सामन्तो और विजय ि
साथ सुना सभी लोग वहाँ से उठकर भीमसिंह के पास पहुँच गये।

विजय सिंह सामन्तो के साथ था। इसलिए सामन्तो को अपने उद्देश्य मे
मिली। विजय सिंह ने वहाँ पर सबको प्रसन्न करने के लिए बाते की और भीमसिंह
और सिवाना का अधिकार देकर सिवाना के दुर्ग में भेज दिया। भीमसिंह ने सन्तुष्ट
स्वीकार कर लिया। उसके चले जाने के बाद विजय सिंह ने अपने बडे पुत्र जालिम
बुलाया। मारवाड़ राज्य का वास्तव मे वही उत्तराधिकारी था। विजय सिंह ने जब मान
पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाया था, उस समय जालिम सिंह को बहुत असन्तोष
था। इसलिए उसके उस असन्तोष को दूर करने के लिए विजय सिंह ने उसको गोडवाड
अधिकार देकर वहाँ भेज दिया। उसके जाने के समय विजयसिंह ने चुपके से उसको आदेश
तुम भीमसिंह पर आक्रमण करके उसे राज्य से निकाल दो। जालिमसिंह ने इसे स्वीकार क

सेना के साथ जितनी सम्पति और मूल्यवान सामग्री, जा रही थी राठौरो ने सब की सब लूट ली। जयपुर की सेना परास्त होकर इधर-उधर भाग गयी। जगत सिंह घबड़ाकर अपने राज्य की तरफ चला गया और जयपुर पहुँचकर उसने किसी प्रकार अपनी जान बचायी।

जगतसिंह के साथ जोधपुर की चवालीस तोपे जा रही थी, राठौरो ने उनको छीन लिया। जगतसिंह के जयपुर भाग जाने के पहले सवाईसिंह धौकलसिंह के साथ जोधपुर छोड़कर नागौर चला गया। मारवाड के चारो सामन्तो ने अमीरखाँ से मिलकर एक नयी योजना तैयार की। अमीर खाँ धन के लोभ पर ही कोई भी कार्य कर सकने के लिए तैयार हो सकता था। इसलिए उन सामन्तो के सामने धन का प्रश्न पैदा हुआ।

कृष्णगढ का राजा राठौर राजपूत था। उसने इसमे किसी की सहायता न की थी और वह पूर्ण रूप से तटस्थ होकर रहा था। इसलिये उन सामन्तो ने अमीरखाँ को देने के लिये कृष्णगढ के राजा से दो लाख रुपये की माँग की। राजा कृष्णगढ ने अपने खजाने से दो लाख रुपये सामन्तो को दिये। ये रुपये अमीरखाँ को दे दिये गये, जिन्हे पाकर अमीरखाँ ने वादा किया "मै राजा मानसिंह की हर तरीके की सहायता करूँगा।" इसके बाद ये सामन्त अमीरखाँ को लेकर जोधपुर आ गये राजा मानसिंह ने बडे सम्मान के साथ अपने सामन्तो का स्वागत किया और उनके जिन नगरो को छीनकर राज्य मे मिला लिया गया था वे नगर उनको दे दिये गये। इन्द्रराज सिंघी को मारवाड का प्रधान सेनापति बनाया गया।

पैंतालीसवाँ परिच्छेद

अमीरखाँ के साथ मानसिंह की मैत्री—रुपये का लोभी अमीर खाँ—षडयन्त्रो की सफलता—रुपये की लूट—बीकानेर पर आक्रमण—मानसिंह के सकटो का अंत—अमीरखाँ का मारवाड राज्य मे विस्तार—राज्य मे सामन्तो की कठिनाइयाँ—मानसिंह का वैराग्य—जोधपुर की दुरवस्था—मानसिंह से सामन्तो की प्रार्थना—मानसिंह की योग्यता—जोधपुर का शासन फिर से मानसिंह के अधिकार मे—अगरेज प्रतिनिधियो की चेष्टा—अखयचन्द मन्त्री की राज्य मे लूट—राज्य के सामन्तो को मिटाने की चेष्टा- ईस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वारा राज्य की सहायता।

मानसिंह ने अपनी राजधानी मे अमीर खाँ का बहुत आदर और सम्मान किया। योधागिरि के दुर्ग मे सेना के साथ ठहरने का प्रबन्ध किया और बहुत-सी मूल्यवान चीजे उसे भेट मे दी। इसके बाद मानसिंह और अमीरखाँ मे बाते होती रही। मानसिंह उसकी सहायता से सवाईसिंह और धौकल सिंह का विनाश करना चाहता था।

उस बातचीत के सिलसिले मे अमीरखाँ ने वादा किया कि मै न केवल आप की सहायता करूँगा बल्कि सवाई सिंह को इस ससार से विदा कर दूँगा, जिससे उसके द्वारा फिर कभी आप का अनिष्ट न हो सके। अमीरखाँ की इस प्रतिज्ञा को सुनकर मानसिंह बहुत प्रसन्न हुआ। वह अमीर खाँ के षड़यन्त्रो को भली प्रकार जानता था। उसने इस बात को विश्वास कर लिया कि अमीर खाँ

जालिम सिंह के आने का समाचार जोधपुर में भीमसिंह को मिला। उसने
कि जालिम सिंह मेड़ता में आ गया है और वह सिंहासन पर बैठने के लिये आया है।
का समाचार पाते ही भीमसिंह ने जालिम सिंह को गिरफ्तार करके लाने के लिये एक से
की। जालिम सिंह ने जब यह सुना तो वह बीलाडा चला गया। भीमसिंह की सेना ने
कर उस पर आक्रमण किया। उसमें जालिम सिंह की पराजय हुई इसलिये वह भागकर
राणा के पास पहुँचा।

मेवाड की राजनीतिक परिस्थितियाँ उन दिनों में बहुत खराब हो गई थीं। इस
के यहाँ से जालिम सिह की कोई सहायता न हो सकी। जालिम सिंह राणा का भाञ्जा थ
मेवाड राज्य की बढती हुई अशान्ति में वह उसकी कोई सहायता न कर सका। इसलिये
के साथ युद्ध करने के लिये मेवाड़ की सेना न भेजकर उसने जालिम सिंह को राज्य की
जागीर दे दी।

जालिम सिह शिक्षित, विद्वान और कई विषयों का वह एक प्रसिद्ध पण्डित था
विषयो पर उसकी बड़ी श्रद्धा थी और इतिहास का वह जानकार था। उदयपुर में रहकर व
अधिकाश समय काव्य और इतिहास की आलोचना में व्यतीत करने लगा। जालिम सिह वह
दिनो तक जीवित न रहा। उसने अपने हाथ से अपनी एक नस काट डाली थी। उससे अ
निकल जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

जालिम सिंह मारवाड़ राज्य के सिंहासन पर बैठने का पूर्ण रूप से अधिकारी था
वह अवसरवादी और अनावश्यक रूप से युद्ध प्रिय न था। वह एक कवि था। साहित्य
विशेष रुचि रखता था। *

मारवाड़ के सिहासन पर बैठकर भीमसिंह ने राज्य के वास्तविक अधिकारी जालि
को राज्य मे आने तक का अवसर नही किया। उसके भाग जाने के बाद भीमसिह अपने भ
सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की बाते सोचने लगा। वह सोचने लगा कि अब जालिम सिंह के ल
आने की आशका न होने पर भी जोधपुर का सिहासन सङ्कटहीन नही है।

भीमसिह के इस प्रकार सोचने का कारण था। विजय सिंह के सात लडके थे। उस
के समय जालिम सिह और सरदार सिह केवल जीवित थे। फतेह सिह, सामन्त सिह, भी
पिता भीमसिह और गुमानसिंह की पहले ही मृत्यु हो गई थी। सरदारसिह और शेरसिह के
सिहामन के अधिकार का किसी भी समय सङ्घर्ष उपस्थित हो सकता था। उसका अनुमान
भीमसिह करने लगा और इस आने वाले सङ्कट को निर्मूल करने का उसने दृढ निश्चय कर लि

भीमसिह स्वभाव का अत्यन्त कठोर और निर्भीक था। उसने अपने चाचा सरद
और शेरसिह को मरवा डाला। शेरसिह ने भीमसिह को गोद लिया था। परन्तु उसने इ
कुछ परवा न की। इस समय भीमसिह के जीवन से तीनो सङ्कट समाप्त हो गये। जालिमसिं
कर चला गया। उसके दोनो चाचा मारे जा चुके थे। लेकिन इतने से ही उसको शान्ति न

---

* यती ज्ञान चन्द्र—जिसे मैं आदरणीय गुरू के रूप मे मानता था—वह दस वर्ष तक ल
मेरे साथ रहा। यती ज्ञान चन्द्र ने जालिम सिह की योग्यता की मुझसे प्रशसा की थी। उसने
कि जालिम सिह को कविता का बहुत अच्छा ज्ञान था और यह भी स्वीकार किया कि मैंने
बातो की जानकारी जालिम सिंह से प्राप्त की है।

साथ जिस प्रकार गदा व्यवहार किया है, उसे मै कभी नही भूल सकता।" यह कहकर अमीर खाँ चुप हो गया।

सवाई सिंह ने अनुभव किया कि अमीर खाँ निश्चय ही मानसिंह से बहुत असन्तुष्ट है। उसके मनोभावो को अनुकूल पाकर सवाई सिंह ने कहा "यदि आप मानसिंह को सिंहासन से हटाकर धौंकल सिंह को उस पर बिठाने के लिए सहायता कर सके तो मै उस बात का वादा करता हूँ कि आप जितना रुपया माँगेगे, सिंहासन पर बैठने के बाद आप को धौंकल सिंह देगा।"

अमीर खाँ ने सवाई सिंह की बात को सुनकर कहा 'मुझे बीस लाख रुपये की आवश्यकता है"

सवाई सिंह ने उत्तर देते हुए कहा "मैं शपथ पूर्वक आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सिंहासन पर बैठने के बाद बीस लाख रुपये आपको धौंकल सिंह से मिलेंगे।"

सवाई सिंह की बातो को अमीर खाँ ने मजूर कर लिया। एक सधि पत्र लिखा गया। अमीर खाँ ने कुरान को छूकर प्रतिज्ञा की और सधि को स्वीकार किया। राजपूतो की प्रचलित प्रणाली के अनुसार, सवाई सिंह ने अमीर खाँ के साथ पगडी बदली। उसी समय सवाई सिंह ने धौकल सिंह के साथ अमीर खाँ का परिचय कराया। अमीर खाँ ने धौकल सिंह का हाथ अपने मे लेकर कहा : "मैंने आपके साथ जो आज निश्चय किया है, प्राण देकर मैं उसका पालन करूँगा। जोधपुर के सिंहासन पर धौकल सिंह को बिठाने के लिए मैं फिर एक बार प्रतिज्ञा करता हूँ।"

अमीर खाँ से प्रसन्न होकर सवाई सिंह ने बहुमूल्य चीजे उसको भेट दी। इसके बाद अमीर खाँ ने सवाई सिंह को गुप्त रूप से कोई बात प्रकट की और उसके बाद वह नागौर से मूँधियाड चला गया।

अमीर खाँ के साथ सवाई सिंह की जो मित्रता कायम हुई, उसकी खुशी मे अमीर खाँ ने उसको और उसके राठौर सामन्तो को अपने यहाँ आमत्रित किया। निश्चित दिन और समय पर सवाई सिंह राठौर सामन्तो के साथ अमीर खाँ के शिविर पर गया। सन् १८६४ फरवरी के मास मे नागौर से सवाई सिंह के साथ राठोर सामन्तो के अतिरिक्त पाँच सौ सैनिक अमीर खाँ के निमत्रण मे भाग लेने के लिये पहुँचे। अमीर खाँ ने आमत्रित सवाई सिंह और उसके साथ के लोगो को बडे सम्मान के साथ अपने दरबार मे बिठाया। सवाई सिंह के साथ उसने पगडी बदली। इस समय सवाई सिंह बहुत प्रसन्न हो रहा था। उसे विश्वास हो रहा था कि अमीर खाँ की सहायता से निश्चय ही मैं मानसिह को सिंहासन से उतार सकूँगा।

अमीर खाँ के दरबार मे नाच और गाना आरम्भ हुआ। रूपवती नर्तकी के नृत्य और गाने को सुनकर सभी राजपूत आनन्द विभोर हो उठे। अमीर खाँ दरबार से किसी कार्य के लिए चला गया था। उस समय भी नृत्य बराबर होता रहा। उसके गानो को सुनकर सवाई सिंह स्वय बहुत प्रसन्न हो रहा था एकाएक नृत्य बन्द हो गया और हजारो पठानो ने अपनी भयासक तलवारो के साथ वहाँ पहुँच कर आक्रमण किया। उस समय सवाई सिंह को मालूम हुआ कि अमीर खाँ ने भयानक रूप से हमारे साथ विश्वासघात किया है।

आक्रमणकारी पठानो की सख्या अधिक थी। इसलिए उस दरबार मे आये हुए सभी सामन्त काट-काटकर फेक दिये गये। सवाई सिंह भी जान से मारा गया। अमीर खाँ उसका कटा हुआ सिर लेकर राजा मानसिंह के पास भेज दिया। सवाई सिंह के साथ जो पाँच सौ राठौर राजपूत आये थे, वे इस सहार को देखकर एक साथ घबरा उठे और भागने के लिए तैयार हुए। उसी समय पठानो के द्वारा वे भी मारे गये।

भीमसिह के पक्ष से अनेक सामन्तो के निकल जाने का एक और भी कारण सामन्त भीमसिंह को कठोर अव्यवहारिक और अत्याचारी समझते थे। सामन्तों के साथ का व्यवहार अच्छा न था। जो सामन्त अपनी सेनाओं को लेकर जालौर के दुर्ग पर अ गये थे, उनको उसमे -सफलता न मिलने के कारण भीमसिंह ने उनके सम्बन्ध मे कई बाते कही थी, जो सामन्तो के सम्मान के बिलकुल विरुद्ध थी। जालौर के दुर्ग मे भी विशाल सेना को सफलता न मिलने का एक यह भी कारण था।

भीमसिंह के व्यवहारो से अनेक बार अपमानित होकर मारवाड़ के अनेक सामन्त छोडकर बाहर चले गये और वही पर रहने लगे। भीमसिंह ने उनकी परवा न की उनकी जागीरो पर अपना अधिकार कर लिया। इन्ही दिनो में भीमसिंह ने नीमाज आक्रमण करने के लिये एक सेना भेजी और उस दुर्ग पर अधिकार करके भीमसिंह ने भ से उसका विध्वस किया। इसके बाद भीमसिंह ने उस सेना को भी जालौर के दुर्ग पर करने के लिये भेज दिया।

भीमसिंह के द्वारा भेजी हुई इस वैतनिक सेना ने जालौर के नगर पर अधिकार क इससे मानसिंह के सामने भयानक सकट पैदा हो गया। मारवाड़ की वैतनिक सेना के अ मानसिंह को मिलने वाली बाहरी सहायता से निराश हो जाना पड़ा। इन दिनो मे f सामने खाने-पीने की कठिनाइयाँ भयानक रूप से बढ गयी। अब उसके सामने दो ही ब वह अपने सैनिको के साथ या तो भूखे रहकर प्राण दे सकता था अथवा भीमसिंह के सा समर्पण कर सकता था। इन दोनो मे उसे क्या करना चाहिये, इसका निर्णय करना उ बहुत कठिन हो गया।

जीवन की इस भयङ्कर परिस्थिति मे आक्रमणकारी सेना के प्रधान के दूत पहुँचकर मानसिह से कहा : "महाराज, इस दुर्ग को मारवाड़ की जिस सेना ने घेर रखा सेनापति के आदेश से मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि हम सब लोग आप की आज्ञा मानने तैयार है और राजा भीमसिह के स्थान पर हम सब लोग आप को देखना चाहते हैं। निर्भीक होकर आप दुर्ग से निकल कर बाहर आ जाइये।"

मानसिंह ने अपने परिवार को छोड़कर जालौर के दुर्ग में ग्यारह वर्ष व्यतीत किये भयानक विपदाओ का सामना किया था। सम्वत् १८६० कार्तिक, सन् १८०४ ईसवी के महीने मे मानसिंह को दूत के द्वारा यह समाचार मिला और उसके साथ ही मालूम हुआ कि की मृत्यु हो गई है, मानसिंह ने इस समाचार पर विश्वास न किया। यद्यपि दूत ने राजमन राज के हाथ का लिखा पत्र लाकर मानसिंह के हाथ मे दिया था। इस सन्देश को ठीक-ठ झने के लिये राजगुरु देवनाथ को शत्रु के शिविर मे भेजा गया और उसके बाद जब सन्देश यता का समाचार मिल गया तो मानसिंह अपने दुर्ग से बाहर निकला। जो राठौर सेना कैद करने के लिये आई थी' उसने बडे सम्मान के साथ मानसिंह का स्वागत किया।

सन् १८०४ के जनवरी महीने मे मानसिंह का राजतिलक हुआ। इन दिनो मे मा परिस्थिति बडी भयानक हो गई थी और सम्पूर्ण राज्य एक बार विध्वस हो चुका था। के सिंहासन पर बैठकर भी मानसिंह ने शान्ति पूर्ण दिनो की आशा न की। विजयसिंह ने को कैद करके जिस प्रकार उसकी हत्या की थी, उसके लडके सबल सिंह ने पिता का ब लिये जिस सर्वनाश का विष बोया था, उसका वर्णन किया जा चुका है।

एकत्रित की और वह बापरी नामक स्थान मे पहुँच कर मारवाड की सेना का रास्ता देखने लगा। उसी स्थान पर दोनो ओर की सेनाओ का युद्ध आरम्भ हुआ। उस युद्ध मे बीकानेर के राजा की पराजय हुई। वह युद्ध क्षेत्र से भाग कर अपनी राजधानी को चला गया। इस लडाई मे बीकानेर के दो सौ शूरवीर योद्धा मारे गये। युद्ध से उसके भागते ही इन्द्रराज और अमीर खाँ तथा हिन्दाल खाँ की सेनाओ ने उसका पीछा किया। ये सेनाये पीछा करती हुई गजनेर नामक स्थान पर पहुँच गयी।

बीकानेर की सेना सख्या मे बहुत कम न होने पर भी मारवाड की सेना के साथ युद्ध करने के योग्य न थी। पठानो की सेनाओ के साथ होने के कारण राजा मानसिह से बीकानेर का राजा अधिक घबरा उठा। उसने भयभीत होकर सधि का प्रस्ताव किया और दो लाख रुपये देना स्वीकार कर लिया। इस सम्पत्ति को लेकर सन्धि की गयी और उसी समय राजा बीकानेर ने फलोदी नामक स्थान से अपना अधिकार हटा लिया।

पठान सेनापति अमीर खाँ ने जगत सिंह का पक्ष लेकर जोधपुर पर आक्रमण किया था। उसके बाद उसने जगत सिंह का विरोधी बन कर जयपुर मे आक्रमण करने की तैयारी की और इसके पश्चात् उसने मानसिंह के साथ मित्रता जोडकर सवाई सिंह तथा उसके सहायक अन्य राठौर सामन्तो का सर्वनाश किया। अमीर खाँ की राजनीति इन दिनो मे खूब सफल हुई। उसने जयपुर और जोधपुर से अपरिमित सम्पत्ति अपनी लूट नीति की कौशल से प्राप्त की। जोधपुर पर आक्रमण के दिनो मे उसने मारवाड के नगरो को लूटकर मनमानी सम्पत्ति अपने अधिकार मे कर ली थी। उसके जीवन का उद्देश्य किसी प्रकार धन पैदा करना था। सत्य और असत्य एवम् उचित और अनुचित समझने की उसको आवश्यकता न थी।

जयपुर का मित्र बनकर अमीर खाँ ने मारवाड का सर्वनाश किया और मारवाड का मित्र बन कर उसने जयपुर तथा उसके सहायक राज्यो का सर्वनाश किया। अब उसने फिर मारवाड की तरफ दृष्टिपात किया। मारवाड़ का राजा मानसिंह उसके हाथ की कठपुतली हो रहा था। अमीर खाँ ने न केवल मानसिंह के मन और मस्तिष्क पर शासन आरम्भ किया बल्कि उसने मारवाड की शक्तियो को अपने अधिकार मे लेना आरम्भ किया। सम्पूर्ण मारवाड मे अमीर खाँ का आतंक फैल गया और राज्य के बड़े कार्यो मे उसी का आतक काम करने लगा। राजा मानसिंह ने स्वय उसको प्रधानता दे रखी थी। इसलिए अमीर खाँ ने राठौर सामन्तो पर अपना आतक पैदा करने की चेष्टा की, उसका प्रभुत्व लगातार वहाँ बढने लगा।

राजा मानसिंह ने अमीर खाँ की सहायता से अपनी भयानक विपदाओ से मुक्ति पायी थी। उसी की सहायता से मानसिह ने अपने शत्रुओ को परास्त किया था। इसलिए जिसके इतने उपकार मानसिंह के सिर पर थे, वह मानसिंह उस परोपकारी के विरुद्ध इस समय कैसे आवाज उठा सकता था। मानसिंह समझता था कि राज्य पर उसका अत्याचार हो रहा है। परन्तु उसने कुछ कह सकने का अथवा विरोध करने का साहस न किया।

अमीर खाँ ने मनमानी सम्पत्ति मानसिंह से वसूल की थी। तीस हजार वार्षिक रुपये की आमदनी के दो प्रसिद्ध नगर उसने राजा मानसिंह से अपनी बहादुरी के पुरस्कार मे पाये थे। एक सौ रुपये नित्य उसे अलग से मिलता था। राज्य की सभी सुविधाये बिना किसी मूल्य के उसको अपने आप प्राप्त थी। इतना लाभ उठाकर भी अमीर खाँ को सतोष न हुआ। इसलिए राज्य के कई एक ग्रामो और नगरो पर उसने अपना अधिकार कर लिया। परन्तु राजा मानसिंह उससे कभी कुछ कह न सका।

मैंने इस शिशु के जन्म का समाचार किस प्रकार अब तक छिपाकर रखा है । इस शिशु धौकलसिंह रखा गया । उसने यह भी कहा कि दो वर्ष तक मैंने धौकलसिंह का पालन पो है । राजा मानसिंह ने जन्म के बाद इस राजकुमार को नागौर तथा सिवाना देने का वा था । इसलिए इस शिशु को वे दोनो नगर मिल जाने चाहिए ।

सामन्तो की सम्मति से राजकुमार के जन्म का समाचार मानसिंह को जाहिर करन किया गया । सवाईसिंह ने राजा मानसिंह के पास जाकर कहा "महाराज भीमसिंह क रानी से जो शिशु उत्पन्न हुआ था, उसका पालन-पोषण इन दो वर्षो मे मेरे द्वारा हुआ है । का नाम धौकलसिंह है । आप ने इनको नागौर और सिवाना देने का वादा किया था । इस दोनो नगरो को देकर आपको अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना चाहिए ।"

सवाईसिंह के मुख से इस बात को सुनकर मानसिंह ने कहा : "इस बात का पता पर और निश्चय कर लेने पर कि धौकलसिंह भीमसिंह की विधवा रानी का पुत्र है, मैं निश्चि के अपनी कही हुई बात को पूरा करूंगा ।

भीमसिंह की विधवा रानी ने अपने शिशु धौकलसिंह को पोकरन भेज दिया था अ स्वयं जोधपुर के महल मे रहती थी । मानसिंह ने धौलकसिंह के जन्म का पता लगाना आरम्भ भीमसिंह की रानी ने सुना कि इस बात का अनुसन्धान हो रहा है कि धौकलसिंह मेरा बेटा है नही । वह घबरा उठी । उसने सोचा कि यदि मैं धौकलसिंह को अपना पुत्र स्वीकार करत मेरा यह छोटा-बालक मानसिंह के द्वारा सहज ही मारा जायगा । इसलिए उसने सोच स सभी के सामने मानसिंह के पूछने पर कहा—"धौकलसिंह मेरा लडका नही है ।

रानी के मुख से इस बात को सुनकर राजा मानसिंह को बड़ी प्रसन्नता हुई । उसकी चिन्ता मिट गयी । सामन्त सवाई सिंह ने जो कुछ सोच रखा था, उसका एक साथ अन्त हो उस समय सभी सामन्त वहाँ पर मौजूद थे । धौकलसिंह के पैदा होने के पहले इस बात प्रमाण न रखा गया था कि भीमसिंह की विधवा रानी गर्भवती है, इसलिये रानी के उत्तर कर सभी सामन्तो ने इस बात को मान लिया कि धौकलसिंह भीमसिंह की रानी से पैदा नही

सामन्त सवाई सिंह ने धौकलसिंह के जन्म के बाद मानसिंह के विरुद्ध बडी-बडी यो बना रखी थी । वे सब यद्यपि निराधार हो गयी, परन्तु सवाईसिंह निराश न हुआ । उसके कारण मे अनेक प्रकार की कल्पनाये उठने लगी । उसका सबसे पहला कर्त्तव्य था, सावधानी के धौकलसिंह का पालन-पोषण करना । पोकरण का दुर्ग इसके लिये बहुत सुरक्षित और सुदृढ न इसलिये धौकलसिंह को शेखावाटी मे ले जाकर छत्रसिंह भाटी अभय सिंह को सौंप दिया । बाद वह अपनी योजना को सजीव बनाने मे फिर लग गया । वह साहसी और शूरवीर होने के साथ षडयन्त्र रखने का कार्य भी खूब जानता था ।

सवाईसिंह ने स्वय अपने व्यवहारो से अपनी शत्रुता का परिचय मानसिंह को दिया परन्तु जब उसने राजनीति से काम लिया । उसने शत्रुता का भाव बदल कर मित्रता का भाव किया । इससे राजा मानसिंह उसका विश्वास करने लगा । उसने समझा कि इतने दिनो तक रहने के बाद सवाईसिंह ने मित्र बनकर रहने मे अपना कल्याण अनुभव किया है । इसका फल हुआ कि मानसिंह ने भी सवाईसिंह के प्रति अच्छे व्यवहार आरम्भ किये ।

सिंहासन पर विठा कर राज्य का कार्य आरम्भ किया। राजा मानसिंह ने स्वय अपने हाथो से छत्रसिंह के मस्तक पर राजतिलक किया।

राजकुमार छत्रसिंह ने अभी हाल मे ही यौवनावस्था मे प्रवेश किया था। उसको शासन करने का ज्ञान न था। इसलिए राज्य की दुरवस्था के प्रति ध्यान न देकर वह विलासिता मे पडा रहता। इसका परिणाम यह हुआ कि वह सभी के निकट अप्रिय हो गया।

मानसिंह के विराग को देखकर सामन्तो ने वडी आशाओ के साथ छत्रसिंह को सिंहासन पर विठाया था। परन्तु वह अत्यन्त अयोग्य निकला। इसलिए राज्य के सामन्त और मन्त्री फिर से चिन्तित रहने लगे। इन्ही दिनो मे वह वीमार हो गया और एक दिन अचानक उसकी मृत्यु हो गयी। उसके मरने के सम्बन्ध मे कुछ लोगो का एक दूसरा ही मत है। उनका कहना है कि छत्रसिंह ने एक रूपवती युवती पर मोहित होकर उसका धर्म नष्ट किया था। उसी अपराध मे वह मारा गया। इन दोनो वातो मे सही क्या है, इसका निर्णय नही किया जा सकता। कुछ भी हो छत्रसिंह की असमय मृत्यु हुई।

राजा मानसिंह के मानसिक उन्माद का यह दूसरा कारण हुआ। राजगुरु देवनाथ के मारे जाने पर उसने राज्य के शासन से विरक्ति ले ली थी और उसने एकान्त मे रहकर जीवन व्यतीत करना आरम्भ किया था। उसके वाद प्रिय पुत्र छत्रसिंह की मृत्यु ने उसके अन्तरन्तर को ऐसा आघात पहुँचा, जिससे जीवन के प्रति उसे कोई आसक्ति न रह गयी।

छत्रसिंह मानसिंह का इकलौता वेटा था। वह अयोग्य था और मारवाड के सिंहासन पर वैठने के योग्य न था। फिर भी वह अपने पिता का अकेला लडका था। इसलिए राजा मानसिंह का उस पर अगाध स्नेह होना पूर्ण रूप से स्वाभाविक था। इसलिए छत्रसिंह की मृत्यु के वाद मानसिंह को सभी लोगो से अश्रद्धा हो गयी। राज्य के सामन्तो और मन्त्रियो का उसने विश्वास छोड दिया और उसका यह अविश्वास यहाँ तक वढा कि वह अपनी रानी को भी अपना शत्रु समझने लगा।

न जाने क्यो मानसिंह को विश्वास हो गया कि महलो से लेकर वाहर तक—राज्य मे सभी लोग मुझे मार डालना चाहते है। उसके इस विश्वास का क्या आधार क्या था, यह नही कहा जा सकता। परन्तु उसके हृदय मे सभी के लिए इस प्रकार का अविश्वास पैदा हो गया। उसने इस अविश्वास के कारण ही उसने भोजन करना वन्द कर दिया और अपने भोजन का कार्य उसने अपने विस्वासी अनुचर पर छोड दिया। वह जो कुछ खाना लाकर उसे देता था, मानसिंह उसी को खाकर और एकान्त मे रहकर अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

मानसिंह के जीवन की यह विरक्ति लगातार वढती गयी। उसने स्नान करना और वाल वनवाना भी वन्द कर दिया। इन दिनो मे राज्य के शासन मे वडी गडवडी पैदा हो रही थी। इसलिए राजा के अभाव मे मन्त्री कार्य सचालन करते रहे। आवश्यकता पडने पर वे लोग राजा मानसिंह के पास जाकर जव कुछ वाते करते थे तो मानसिंह मौन रहकर उनको सुन लेता। लेकिन कुछ उत्तर न देता।

मानसिंह की इस उन्माद अवस्था के सम्वन्ध मे दो प्रकार के मत पाये जाते हैं। कुछ लोगो का कहना है कि गुरुदेव देवनाथ के मारे जाने से उसे अत्यधिक मानसिक आघात पहुँचा था। कुछ लोगो का विश्वास है कि वास्तव मे उस को उन्माद नही हुआ था। राज्य की विरोधी परिस्थितियो से वह वहुत ऊब गया था और उन्ही दिनो मे देवनाथ के मारे जाने के वाद उसके एकमात्र बेटे छत्रसिंह की मृत्यु हुई थी। जीवन के इस विरोधी वातावरण मे उसने एकान्त जीवन

पत्र पर हस्ताक्षर किये थे जिसमे लिखा गया था कि स्वर्गीय भीमसिह की विधवा रानी से
पैदा होगा तो मानसिह को सिहासन से उतारकर उस राजकुमार को राजतिलक किया

राजा जगतसिह को जब इन यथार्थ बातो की जानकारी हो गयी और उसने जब
को मारवाड का उत्तराधिकारी होना समझ लिया तो जगतसिह ने धौकलसिह के साथ
थाल मे भोजन किया और उसको अपना भाञ्जा एव मारवाड का उत्तराधिकारी कह
जाहिर किया। धौकलसिह के सम्बन्ध मे इस प्रकार का प्रचार होने पर मारवाड के सम
अपनी सेनाओ के साथ जयपुर की सेना मे आकर मिल गये। इससे जयपुर की सेना
हो गयी।

धौकलसिह का पक्ष लेकर राठौर वंश के जो सामन्त और श्रेष्ठ लोग जयपुर
आकर मिल गये थे, उनमे बीकानेर का स्वतन्त्र राजा प्रधान था। मानसिह के विरुद्ध
राजा के खडे होने पर मारवाड के सभी सामन्त एक-एक करके जयपुर मे आ गये। मारवा
मानसिह का साथ देने वाला अब कोई न रह गया। फिर भी, उसने जयपुर की सेना के
करने की तैयारी की और जयपुर की विशाल सेना के पहुँचने के पहले वह अपनी सीमा
सेना को लेकर आ गया।

मारवाड के सामन्तो की सेनाओ के मिल जाने से जयपुर की सेना के अधिकारी
सब मिला कर एक लाख से ऊपर पहुँच चुके थे। इसलिये मारवाड का विनाश होने मे
थी। राजा जगतसिह को मानसिह से इस बात का बदला लेना था कि मानसिह ने
कीमती उपहार अपनी सेना को लेकर लूट लिया था और मारवाड के समस्त सामन्त
विरुद्ध आक्रमण करने के लिये इसलिये तैयार थे कि वे सब मानसिह के स्थान पर धौक
मारवाड का शासक बनाना चाहते थे।

मारवाड की राठौर सेना जयपुर की सेना से बिलकुल भयभीत नही हो रही थी
मारवाड के सामन्तो की सेनाओ का भय था। मारवाड और जयपुर के इस होने वाले
देखकर मराठा लोग बहुत प्रसन्न हुए। वे लोग राजस्थान के राज्यो को एक, दूसरे से
लाभ उठा रहे थे। इस समय भी मराठो को लूटने और लाभ उठाने का अवसर मिला।
दो दल हो गये थे और उन दोनो दलो का एक ही उद्देश्य था। मानसिह ने किसी समय
सहायता की थी। इसलिये अपनी इस भीषण विपद मे उसने होलकर से सहायता माँगी।
अपनी मराठा सेना के साथ मानसिह की सहायता के लिये आ गया और मानसिह की सेना
रह मील की दूरी पर उसने मुकाम करके अपने दूत के द्वारा मानसिह को सन्देश भेजा कि क
काल भेट होगी।

सवाईसिह बडी सावधानी के साथ मानसिह की चालो का अध्ययन कर रहा था।
मालूम हुआ कि होलकर अपनी मराठा सेना को लेकर मानसिंह की सहायता के लिये आ
उसने होलकर को मिला लेने की चेष्टा की। उसने होलकर के पास सन्देश भेजा कि उस
सेना मानसिह की सहायता न करके कोटा की तरफ चली जाय और वहाँ पहुँचने पर उ
लाख रुपये भेट किये जायगे।

होलकर रुपये का लोभी था। बिना युद्ध किये एक लाख रुपये का प्रलोभन
सका। मानसिह के उपकारो को भूलकर उसने सवाईसिह के प्रस्ताव को स्वीकार कर
सवाईसिह से एक लाख रुपये की हुण्डी लेकर वह कोटा की तरफ चला गया। होलकर के

आने वाली है, उस पर भी आपको विचार करना है। इस प्रकार की अनेक बातें कहकर उपस्थित सामन्तो ने प्रार्थना की कि आपको अपने शासन का भार न लेने पर मारवाड़ राज्य की दशा सभी प्रकार खराब हो जायगी।

सामन्तो ने राजा मानसिंह से इस विषय मे बड़ी देर तक बातचीत की। राजा मानसिंह ने सामन्तो का विशेष आग्रह देखकर शासन-भार स्वीकार करने के प्रस्ताव को मजूर कर लिया। राजकुमार छत्रसिंह के साथ ईस्ट इण्डिया कम्पनी की जो सधि होने जा रही थी, उसकी अनेक बातो पर मानसिंह ने असतोष प्रकट किया। उस सधि मे यह भी लिखा गया था कि अधीन सामन्तो की सेना को आवश्यकता पड़ने पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने अधिकार मे ले लेगी।' राजा मानसिंह ने सधि की इस शर्त पर विशेष रूप से अपना विरोध प्रकट किया। सन् १८१७ ईस्वी मे मारवाड के दूत व्यास विष्णु राम नागर ब्राह्मण की उपस्थिति मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ दिल्ली मे यह सधि लिखी गयी थी। मानसिंह का लड़का छत्रसिंह उन दिनो मे मारवाड़ राज्य के सिंहासन पर था।

इस सधि के एक वर्ष बाद सन् १८१८ ईसवी के दिसम्बर मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रतिनिधि मिस्टर विल्डर जोधपुर गया था। उसको उस राज्य की वास्तविक परिस्थितियो की रिपोर्ट ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सामने उपस्थित करनी थी। अखय चद उन दिनो मे मारवाड़ का दीवान था और सालिम सिंह को राठौर सामन्तो ने राज्य का प्रबन्ध करने के लिए नियुक्त किया था। उन दिनो मे आवश्यकतानुसार राज्य मे अनेक प्रबन्ध किये गये थे और अनेक प्रधान पदो पर काम करने के लिए कर्मचारियो को नियुक्त किया गया था। उन दिनो की व्यवस्था मे सामन्तो का परस्पर विद्रोह चल रहा था और उनके द्वारा राज्य मे जो उपद्रव हो रहे थे, स्वर्गीय इन्दराज के बेटे फतेह सिंह राज ने उनका विरोध किया था। फतेह राज जोधपुर की राजधानी मे एक पदाधिकारी था। वह अपने स्वर्गीय पिता इन्दराज का बदला लेने के लिए सामन्तो की व्यवस्था मे बाधाये पैदा करता था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रतिनिधि मि० विल्डर जोधपुर जाकर तीन दिन तक वहाँ पर रहा और उसके बाद वह गुप्त रूप से राजा मानसिंह से मिला। उसने राज्य की परिस्थितियाँ मानसिंह के सामने रखी और उसने मानसिंह से कहा "सामन्तो के स्वच्छाचार और अन्याय को दूर करने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपनी सेना लेकर आपकी सहायता कर सकती है।"

मानसिंह विचारशील और दूरदर्शी था। उसने कम्पनी के प्रतिनिधि की इस बात को सुनकर धन्यवाद दिया और कहा "आवश्यकता पड़ने पर मैं कम्पनी से सैनिक सहायता लूँगा।"

मानसिंह ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ अँगरेज प्रतिनिधि को उत्तर दिया उसने अपने मन मे विचार किया कि राज्य के सामन्तो को नियन्त्रण मे लाने के लिए अँगरेजी सेना की सहायता आवश्यक नही है। इस प्रकार की सहायता के दुष्परिणाम को समझने मे मानसिंह को देर न लगी। जीवन के आरम्भ से ही वह इस प्रकार की बातो मे दूरदर्शी था।

राजा मानसिंह ने सामन्तो के अप्रिय कार्यो पर कठोर व्यवहार करना उचित नही समझा। बल्कि उसने ऐसे मौको पर सामन्तो के साथ उदारता का व्यवहार आरम्भ किया। राठौर सामन्त दो श्रेणियो मे विभाजित होकर कार्य कर रहे थे। एक श्रेणी राजा के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन करती थी और दूसरी श्रेणी प्रतिकूल वातावरण को प्रोत्साहन देती थी।

मानसिंह को जालौर जाते देख कर उसने कहा : "मेरी समझ मे जालौर चला जाना हितकर न होगा । मारवाड की प्रजा उसी समय तक आप के साथ है जब तक आप जो धानी की रक्षा कर सकेंगे । वहाँ आपके चले जाने के बाद राज्य की प्रजा आपकी होकर

अपने उस अधिकारी की बात को सुनकर मानसिंह कुछ समय तक विचार क उसकी समझ मे यह बात आ गई । उसने राजधानी की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की सेना के साथ वहाँ से लौटकर जोधपुर के लिये चल पडा । सवाईसिंह ने जो अनुमान वह सही न निकला । जगतसिंह को जब मालूम हुआ कि मानसिंह जोधपुर पहुँच गया मेवाड़ जाने का विचार छोड दिया और धौकलसिंह का अभिषेक करने के लिए जयपुर सेना को लेकर वह जोधपुर की तरफ चला ।

मारवाड के बहुत से सामन्तो के विरोधी हो जाने के कारण और उनके शत्रु से मि मानसिंह ने अपने उन सामन्तो का भी विश्वास छोड दिया, जो अभी तक उसके साथ थे पहुँच कर वहाँ के दुर्ग की रक्षा का भार अपने सामन्तो को नही दिया और वैतनिक सेन हिन्दाल खाँ को उसका अधिकारी बना दिया । साथ ही तीन हजार शूरवीर सैनिको को मे दे दिया । उनके अतिरिक्त चौहान भाटी और मन्दोर आदि राजवशो के सैनिको के स्वामी दल को मिलाकर दुर्ग की रक्षा के लिए नियुक्त किया । सब मिलाकर पाँच ह जोधपुर के दुर्ग की रक्षा के लिए नियुक्त किए गए ।

जोधपुर के दुर्ग का प्रबन्ध करके मानसिंह ने राज्य के दूसरे दुर्गों की रक्षा करना समझा । जालौर का दुर्ग राज्य के अन्यान्य दुर्गो मे विशेषता रखता था । अमरकोट का की बिलकुल सीमा पर था । उन दोनो दुर्गों की रक्षा के लिए मानसिंह ने अपनी सेनाएँ रख राज्य के तीन दुर्गों पर अपनी सेनाएँ रखकर मानसिंह जोधपुर मे शत्रु-सेना के आने देखने लगा । वह इस समय किसी प्रकार जोधपुर की राजधानी की रक्षा करना चाहता

मानसिंह ने राजधानी के दुर्ग की रक्षा का भार वैतनिक और बाहरी सेनाओ था, इससे उसके साथी सामन्तो ने अपना अपमान अनुभव किया । उन्होने असन्तोष अनु हुए राजा मानसिंह से प्रार्थना की कि राजधानी के दुर्ग की रक्षा का भार हम लोगो क चाहिये । मानसिंह ने उनकी इस बात को सुना परन्तु उसकी कुछ परवा न की । सा उत्तर देते हुये उसने कहा : "नगर और दुर्ग दोनो की रक्षा करना है । आपको जोधपुर रक्षा करने मे अपनी शक्तियो का उपयोग करना चाहिये ।' मानसिंह के इस उत्तर से उसके को सन्तोष न मिला और वे राजधानी को छोडकर सवाईसिंह के साथ जाकर मिल गये ।

जो सामन्त अभी तक मानसिंह के साथ थे, उनके भी चले जाने के बाद मान शक्तियाँ और भी निर्बल पड गयी । अब उसके साथ वैतनिक सेना को छोड़कर और कोई न इसलिये उस सेना पर विश्वास करके वह शत्रुओ से युद्ध करने के लिये तैयार हो गया । मे साहस और धैर्य की कमी न थी । वह सोचने लगा : "यद्यपि शत्रु की सेना अत्यन्त [illegible] समस्त राठौर सामन्त अपनी सेनाओ के साथ शत्रुओ की सहायता कर रहे है । [illegible] सेनाएँ भी शत्रु की तरफ से लड रही है । फिर भी इस राजधानी पर [illegible] शत्रु [illegible]

थे, वे बुरी तरह से सताये जा रहे थे। प्रजा के चीत्कार को सुनने वाला कोई न था। भोजन के अभाव मे सैनिक मर रहे थे। राजपूत अपने कर्त्तव्यो का पालन भूल गये थे और खाने-पीने के अभाव मे उचित अनुचित का ख्याल भूलकर वे कुछ भी खा लेते और अपने प्राणों की रक्षा करते थे।

राजा मानसिह कहने के लिए शासक था, परन्तु राज्य की अव्यवस्था के प्रति उसने अपने नेत्र वन्द कर लिये थे। जोधपुर मे तीन सप्ताह रह कर मै राजा मानसिह से मिला। उस भेट मे राज्य की वर्तमान परिस्थितियो पर बहुत-सी बाते हुई। हम दोनो मे मित्रता का भाव पैदा हुआ। मानसिह ने अपनी बीती हुई विपदाओ की घटनाये मुझे सुनायी। मै बडी सहानुभूति के साथ उनको सुनता रहा और अन्त मे यह कह कर मै राजा मानसिह से विदा हुआ "आपकी उन समस्त विपदाओ को मै भली प्रकार जानता हूँ। आपने उन दिनो मे बडी बुद्धिमानी से काम लिया और उन कष्टो से छुटकारा पाया। उस समय की सभी घटनाओ को मै जानता हूँ। आपने दृढ़ता से काम लेकर अपने शत्रुओ का नाश किया। अब आप अगरेज सरकार के मित्र है। इसलिए आपको हमारी सरकार का विश्वास करना चाहिए। मै इस वात को खूब समझता हूँ कि आपके सामने जितनी भी कठिनाइयाँ है वे सभी थोडे दिनो मे दूर हो जायगी।"

राजा मानसिह ने सावधानी के साथ मेरी बात को सुना और प्रसन्न होकर उत्तर देते हुए उसने कहा "आप जिस शुभकामना को लेकर मेरे पास आये है, उसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। साथ ही आपको विश्वास दिलाता हू कि इस राज्य मे जो कठिनाइयाँ आप देख रहे हैं एक वर्ष के भीतर ही उनका अन्त हो जायगा।'

मानसिह की इस वात को सुनकर मैंने कहा "यदि आप चाहेगे तो इसके आधे दिनो मे ही आपके राज्य की सारी कठिनाइयाँ खत्म हो जायँगी।"

मारवाड राज्य मे इन दिनो जो अव्यवस्था थी, वह राज्य की सभी वातो मे भयानक हो गयी थी। लेकिन इस समय जो सुधार बहुत जरूरी हो रहे थे, उनको राजा मानसिह के सामने मैंने सक्षेप मे उपस्थित किया और वे इस प्रकार थे

१—शासन की शिथिलता को दूर करना।

२—राज्य की आर्थिक दशा सुधारना जो सर्वसाधारण के असन्तोष का कारण वन गयी है

३—राज्य की सेना को शक्तिशाली बनाना, जिसके ऊपर शासन की व्यवस्था निर्भर है।

४—सामन्तो ने निरकुश होकर राज्य के अनेक नगरो पर अधिकार कर लिए है, बुद्धिमानी के साथ उनकी व्यवस्था करना।

राजा मानसिह ने अपने राज्य मे वारह महीने के भीतर सुधार कर लेने पर विश्वास किया था उसके अनुसार राज्य मे कुछ नये कार्य आरम्भ किये गये। गोडवाड राज्य का घाणेराव एक प्रधान नगर था। उसे राज्य मे मिला लिया गया और एक वर्ष की उसकी आमदनी को लेकर उसे छोड दिया गया। घाणेराव के सामन्त ने इस दण्ड का रुपया अपने अधीन सरदारो से वसूल किया और अपनी प्रजा पर कर वढाकर उसने वडी कठोरता से काम लिया। इस प्रकार के और भी कितने ही कार्य किये गये, जिनके कारण सामन्तो और सरदारो मे असन्तोष की वृद्धि हुई। कुछ सामन्तो ने इसका विरोध करते हुए स्वाभिमान के साथ अनेक प्रकार की बाते कही।

जोधपुर के प्रधान मन्त्री अखय चद ने राज्य के प्रत्येक भाग मे इस प्रकार के कार्य किये, जिनसे राज्य मे और भी असतोष की वृद्धि हुई। इन अत्याचारो को देखकर राज्य के कुछ सामन्त भविष्य मे आने वाली विपदाओ का अनुमान लगाने लगे। उनको विश्वास हो गया कि प्रधान मन्त्री

कुछ दिनो तक खाने पीने का काम चलता रहा। उसके बाद धन के अभाव में फिर वही
हो गयी। जयपुर राज्य का खजाना इसके पहले ही खाली हो चुका था। मारवाड के जो
मानसिंह को छोडकर जयपुर की सेना मे आकर मिल गये थे, सवाईसिंह ने उनसे धन की

मारवाड के जिन चार सामन्तो ने अन्त मे मानसिंह का साथ छोडा था और स
जाकर मिल गये थे, उन्होने सवाईसिंह के धन की मांग का विरोध किया और विरोधी
अमीरखाँ से जाकर मिल गये। वे चारो सामन्त मानसिंह का साथ देने के लिए फिर से
परामर्श करने लगे।

उन सामन्तो के अमीरखाँ से मिल जाने का कारण था। वे लोग सवाईसिंह के धन
बहुत असंतुष्ट हुए और उसका साथ छोड देने के लिए उन चारो सामन्तो ने आपस मे ि
लिया इस दशा मे उनके लिए यह जरूरी था कि वे किसी एक पक्ष मे होकर चले और इ
अब फिर मानसिंह के पक्ष का समर्थन करने की बात सोचने लगे। वे चारो सामन्त इस बात
भाँति जानते थे कि अमीरखाँ धन का लोभी है और इसी लोभ मे वह जयपुर की सेना के स
है, उन चारो सामन्तो ने मिलकर अमीरखाँ के सामने एक प्रस्ताव उपस्थित किया और उ
सार उन लोगो ने अमीरखाँ को समझाया कि जयपुर का राजा जगतसिंह अपनी सम्पूर्ण सेना
जोधपुर मे मौजूद है। जयपुर इस समय बिलकुल अरक्षित दशा मे है। इसलिए उस राज्य प
मण करके अपरिमित सम्पत्ति लूटी जा सकती है।

अमीरखाँ के साथ उन सामन्तो की यह बात-चीत बडे मौके पर हुई। अमीरखाँ ने
राज्य के पीपाड, पाली और बीलाडा इत्यादि नगरो को जब लूटा था तो जयपुर के राजा
ने कठोरता के साथ उसका विरोध किया था। इसलिए जगतसिंह के असतोष को अमीर
से ही जानता था। इस समय सामन्तो के उकसाने पर वह जयपुर मे आक्रमण करने के लि
ही तैयार हो गया और चारो सामन्तो के साथ वह अपनी सेना लेकर जयपुर की तरफ रवान

जगतसिंह को जब यह मालूम हुआ तो उसने अपने प्रधान सेनापति शिवलाल को क
सैनिको की सेना देकर अमीरखाँ को दमन करने के लिए भेजा। शिवलाल अपनी सेना
रवाना हुआ और जयपुर के रास्ते मे उसने अमीरखाँ की सेना पर आक्रमण किया। शिव
सेना अमीरखाँ और चारो सामन्तो की सेनाओ से बहुत बडी थी। इसलिए अमीरखाँ अ
सामन्त घबराकर लूनी नदी की तरफ भागने लगे। शिवलाल की सेना ने उनका पीछा
अमीरखाँ और उसके साथी भागकर लूनी नदी के दूसरी तरफ निकल गये और कुछ देर मे वे
गढ़ पहुँच गये।

शिवलाल की सेना लगातार अमीरखाँ का पीछा करती रही। अमीरखाँ सामन्तो
वहाँ से भागकर हरसोर नामक स्थान पर चला गया। शिवलाल ने वहाँ पहुँच कर फिर
आक्रमण किया। चारो सामन्तो के साथ भागता हुआ अमीरखाँ जयपुर की सीमा पर फाग
स्थान पर चला गया। शिवलाल को पहले से इस बात का कुछ भी अनुमान न था कि अमीर
पर भी डटकर युद्ध न करेगा और एक स्थान से दूसरे स्थान की तरफ लगातार वह भागता
अमीरखाँ बहुत पहले से अपने अत्याचारो और षडयन्त्रो के लिए प्रसिद्ध था। शिवलाल के
ने लगातार भागने में भी वह मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहा था।

गये। उनमे बहुत थोडे आदमी ऐसे थे जो अधिक अपराधी न थे उनको छोड दिया गया। नगजी किलेदार और मूल जी जागीरदार दोनो छत्रसिंह के शासन काल मे राज्य के कर्मचारी थे। उस समय इन दोनो ने षडयन्त्रो के द्वारा राज्य का बहुत-सा धन लूटा था और उसके बाद अपने नगरो मे जाकर उन दोनो ने दुर्ग बनवाये थे। राजा मानसिंह ने सिंहासन पर बैठकर यह प्रकाशित किया कि जिन लोगो ने राज्य मे किसी प्रकार का अपराध किया है उनको क्षमा करके उनके पद उनको दिये जायँगे। उस समय नग जी और मूल जी अपने नगरो से जोधपुर की राजधानी आ गये थे। उनके आने पर उनको कैद कर लिया गया और जो सम्पत्ति वे अपने साथ लेकर चले गये थे, उनसे मांगी गयी। प्राणो के भय से उन दोनो ने वह सम्पत्ति ला कर दे दी। उसे लेकर उन दोनो को दुर्ग के ऊँचे बुर्जों से नीचे फेंक दिया गया, जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। कहा जाता है कि इस प्रकार जिन लोगो ने राज्य की प्रजा को लूट कर धन इकट्ठा किया था, उनसे जो सम्पत्ति राजा मानसिंह को मिली वह एक करोड रुपये से कम न थी। लेकिन यदि यह सम्पत्ति उससे आधी भी रही हो तो भी इस समय राजा मानसिंह के लिए कुछ कम साधन नहीं।

राजा मानसिंह ने अखय चन्द के साथ-साथ जितने भी लोगो को राज्य मे अत्याचार करने के कारण अपराधी समझा था उन सभी को लूटी हुई सम्पत्ति को वापस लेकर उनको मृत्यु का दण्ड दिया। इससे राज्य मे भयानक आतंक पैदा हो गया। राजा मानसिंह ने राज्य के अन्य सम्मानित सामन्तो को भी दण्ड देने का इरादा किया। पोकरण का सामन्त सालिमसिंह, नीमाज का सामन्त सुरतान सिंह आहोर का सामन्त ओनाड सिंह भी अखयचन्द के साथ शासन की व्यवस्था मे शामिल था। साधारण श्रेणी के कितने ही सामन्त जोधपुर के दरबार मे रोजाना जाकर भाग लेते थे। इन सभी सामन्तो की सम्मतियां लेकर अखय चन्द राज्य का शासन करता था। अखय चन्द के कैद हो जाने पर ये सभी सामन्त भयभीत हो उठे।

इन भयभीत सामन्तो के पास राजा मानसिंह ने दूत के द्वारा संदेश भेजा कि उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही न की जायगी। अखय चन्द और उसके साथियो ने राज्य मे जो अत्याचार किए था, उनको दण्ड देना आवश्यक था। मानसिंह का यह संदेश पाने के बाद भी उन सामन्तो को विश्वास न हुआ। उनको पहले ही इस बात का पता चल गया था कि मानसिंह ने हम सब लोगो का सर्वनास करने के लिए षडयन्त्र का एक जाल फैला दिया है। उनको यह भी मालूम हो चुका था कि राजा मानसिंह ने पोकरण के सामन्त सालिम सिंह के वंश को मिटा देने के लिए निश्चित इरादा कर लिया है।

मानसिंह के संदेश का सामन्तो ने विश्वास नही किया, इसके कुछ और भी कारण थे। ओनाड सिंह मानसिंह का एक मित्र था। उसके एक निजी अनुचर को मानसिंह ने स्वयं आशा देकर कुछ दूसरे आदमियो के साथ राज-दरबार मे बुलाया था। परन्तु वह नही गया और उसके अविश्वास ने ही उसके प्राणो की रक्षा की।

नीजाम का सामन्त सुरतान सिंह अपनी सेना के साथ जोधपुर की राजधानी मे रहा करता था। मानसिंह की भयानक विपदाओ मे सुरतान सिंह ने बडी सहायता की थी। लेकिन मानसिंह उसके उन सभी उपकारो को भुला दिया और अपनी आठ हजार वैतनिक सेना को तोपो और गोल-दाजो के साथ लेकर सुरतान सिंह पर आक्रमण किया। उस समय सुरतान सिंह के साथ केवल एक सौ अस्सी सैनिक थे। तोपो के द्वारा गोलो की वर्षा होने पर सुरतान सिंह ने अपने सैनिको के साथ तलवार लेकर मानसिंह की सेना का सामना किया उसने और उसके साथ के शूरवीर सैनिको

सामने इस समय भयानक संकट था। * मराठा सेनापति के आ जाने पर जगतसिंह ने समय मेरे सामने बडा सकट है। आपकी सहायता से सकुशल जयपुर पहुँच जाने पर मैं पुरस्कार मे बारह लाख रुपये दूँगा।

मराठा सेनापति ने जगतसिंह की इस बात को स्वीकार कर लिया। परन्तु ज जब मालूम हुआ कि अमीरखाँ एक बडी सेना के साथ जयपुर के रास्ते मे मौजूद है तो वह ब उठा और किसी प्रकार उसने जयपुर जाने का साहस न किया। उसने अपना दूत भेज कर से बातचीत कराई। उसमे अमीरखाँ ने नौ लाख रुपये लेकर इस बात को मंजूर किया कि के जयपुर जाने मे मैं कोई विरुद्ध कार्यवाही न करूँगा।

जगतसिंह ने अमीरखाँ की माँग को स्वीकार कर लिया। अपने प्राणो की रक्षा उसने धन की परवा न की और पानी की तरह सम्पत्ति को बहाकर जोधपुर से वह जयपुर रवाना हुआ। अपने शिविर मे उसने आग लगा दी। जिससे उसका बहुत-सा मूल्यवान सा कर राख हो गया। उसके बाद उसने अपना प्यारा हाथी अपने हाथो से मार डाला। उसकी इच्छा के अनुसार वह तेजी से अपनी पीठ पर बिठाकर उसे ले न जा सका था।

मराठा सेनापति ने बारह लाख रुपये लेकर जगतसिंह को जयपुर पहुँचा देने का वा था और अमीरखाँ ने नौ लाख रुपये लेकर किसी प्रकार का उत्पात न करने का वादा कि फिर भी, जगतसिह अपने राज्य मे पहुँच न सका। जिन चार सामन्तो ने अमीरखाँ को

था। फिर भी, जगतसिह अपने राज्य मे पहुँच न सका। जिन चार सामन्तो ने अमीरखाँ को

कर जयपुर मे आक्रमण करने के लिए तैयार किया था, वे जगतसिह के शत्रु बन गये। निश्चय कर लिया कि मारवाड का धन लूट कर हम उसे जयपुर न ले जाने देगे। इसके f सामन्तो ने मेडता से बीस मील पूर्व की तरफ जा कर जगतसिंह के आने के रास्ते मे मा अगणित राठौरो को एकत्रित किया और इन्दराज सिंघी को अपना सेनापति बनाया।

इन्दराज सिंघी राजा मानसिह के पहले के राजाओ के शासनकाल मे मारवाड के पद पर काम कर चुका था। उस समय एकत्रित राठौरो के साथ बैठकर चारो सामन्तो ने किया कि राजा मानसिंह का हम लोगो पर जो अविश्वास था और उसने हमको शत्रुओ के मिला हुआ समझ लिया था, उस सदेह को दूर करना हम सबका कर्त्तव्य है। मारवाड की धन जगतसिंह अपने साथ जयपुर लेकर जा रहा है। उसे लूटकर राजा मानसिंह को हम अर्पित कर दे ऐसा करने से मानसिंह का विश्वास हम लोगो को फिर से प्राप्त हो सकेगा निर्णय के साथ एकत्रित राठौर वहाँ पर राजा जगतसिंह के आने का रास्ता देखने लगे।

सेना के साथ जगतसिंह के आते ही राठौरो ने उस पर भीषण आक्रमण किया दोनो से मारकाट आरम्भ हो गयी। राजा जगतसिंह ने माडवार के सामन्तो के बल पर ही जोध आक्रमण किया था। इस समय उसके साथ सवाईसिंह न था। उसके साथ कोई भी राठौर सा था। इसलिए राठौरो ने जयपुर की सेना को आसानी के साथ पराजित कर लिया औ

---

*सन् १८०६ ईसवी के पहले की बात है। जगतसिंह ने मराठा सेनापति सींधिया महायता के लिए अपने दूत के द्वारा एक पत्र भेजा था। उस समय मैं सींधिया के शिविर मे था। बापू सींधिया, बालाराव इगले और जीन बैपटिस्ट की सेनाये सींधिया की अधीनता में का रही थी। उन सेनाओ को रवाना होते मैंने स्वय देखा था। सन् १८०७ मे जयपुर में वहाँ की सेना के विनाश चिन्ह भी देखे थे।

यह कह कर वह सेनापति अपने साथ उस बालक को लेकर अर्वली पहाड पर चला गया और उसने उसे ऐसे स्थान पर पहुँचा दिया, जहाँ से वह बालक सुरक्षित मारवाड चला गया।

राजा मानसिंह ने राज्य के सामन्तो को शक्तिहीन बनाने के लिए जो कुछ किया और जिस प्रकार के उपायो का आश्रय लिया, उसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। निरकुश सामन्तो ने मानसिंह के इन कार्यों और व्यवहारो को समझते और जानते हुए भी विरोध करने का साहस न किया। उनको मालूम था कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अगरेजी सेना किसी भी समय राज्य मे आकर हम लोगो का विध्वस और विनाश कर सकती है।

मारवाड के सामन्त मानसिह के अत्याचारो से कुछ महीनो मे इतने भयभीत हो उठे कि वे मारवाड छोडकर अन्यत्र भाग जाने का इरादा करने लगे। उनके सामने इस समय अपनी रक्षा के लिए कोई उपाय न था। इसलिए विवश होकर उन लोगो ने मारवाड राज्य छोड दिया और उसके पडोसी राज्यो मे अपने परिवारो को लेकर वे चले गये।

राजा मानसिंह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ सम्बन्ध जोडकर सभी प्रकार का लाभ उठाया। उसने विरोधी सामन्तो को राज्य से निकाल देने मे सफलता पायी। उसने राज्य की भयानक अराजकता मे शाति कायम करने के लिए वह कार्य किया, जो उसके पूर्ववर्ती राजाओ मे किसी के द्वारा न हो सकता था।

मारवाड के सामन्त अपने राज्य को छोडकर कोटा, मेवाड, बीकानेर और जयपुर मे जाकर रहने लगे। राजा मानसिह ने सामन्त अोनाड सिंह के साथ भी अपनी सहानुभूति और उदारता का प्रदर्शन न किया, जिसकी अनेक सहायताये मानसिंह को मिली थी। उसने उन सभी उपकारो को भुला दिया, जिसके द्वारा भयानक विपदाओ के समक्ष उसके प्राणो की रक्षा हुई थी। अोनाड सिंह ने मानसिंह की भीषण आर्थिक कठिनाइयो मे अपनी स्त्री के आभूषणो को बेच कर सहायता की थी और उसने उस सहायता के समय अपनी स्त्री की नाक की नथ भी बेच डाली थी, जिसका उतारना राजस्थान के राजपूतो मे अपशकुन माना जाता था। जिस समय पाली मे मानसिंह पर शत्रुओ ने उसके साथ भयानक आक्रमण किया था और मानसिंह बिना घोडे के पैदल था, उस समय अोनाड सिंह ने बडे साहस के साथ अपने घोडे पर मानसिंह को बिठा कर और वहाँ से भगाकर उसके प्राणो की रक्षा की थी। जिस समय मारवाड के सामन्तो ने मानसिंह का पक्ष छोडकर धौकल सिह के पक्ष का साथ दिया था और जयपुर की सेना के साथ अनेक सेनाओ ने मानसिंह पर आक्रमण किया था, उस समय राज्य के केवल चार सामन्तो ने मानसिंह का साथ दिया था और उन चार सामन्तो मे अोनाड सिह प्रमुख था। जिस समय जयपुर का राजा जगतसिह जोधपुर और मारवाड के नगरो को लूटकर अपनी सेना के साथ जयपुर जा रहा था, उस समय इन्ही चार सामन्तो ने आक्रमण करके मारवाड की लूटी हुई सम्पत्ति को जयपुर की सेना से छीन लिया था। छत्रसिह की मृत्यु हो जाने पर जिन सामन्तो ने मानसिह को फिर से राज सिंहासन पर लाने के लिए चेष्टा की थी, उनमे अोनाड सिंह प्रधान था। इस प्रकार अोनाड सिह के न जाने कितने उपकारो का भार मानसिह के सिर पर था, परन्तु उसने सबको एक साथ भुला दिया।

मारवाड के जो सामन्त राज्य छोडकर चले गये थे, उन्होने जब कोई दूसरा रास्ता न देखा तो सन् १८२१ ईसवी मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा और उसमे उन्होने अपने और राजा मानसिह के बीच मध्यस्थ बन कर निर्णय करने का प्रस्ताव किया। इस प्रार्थना-पत्र को भेजने के बाद एक वर्ष बीत गया। परन्तु कम्पनी की तरफ से न तो उसका कोई

चाहे तो वह सब-कुछ कर सकता है । अमीर खाँ की चालो से ही जगत सिह की शक्तियाँ
भिन्न हुई और उनके फलस्वरूप मानसिह जोधपुर के दुर्ग से बाहर निकल कर प्रसन्नता का
कर रहा था । अमीर खाँ के वादे से उसे बहुत संतोष मिला और इस कार्य के लिए उसने
रुपये अमीर खाँ को दे दिये ।

पोकरन के सामन्त सवाई सिंह ने अपने पितामह का बदला लेने के लिए मानसिंह के
धौकल सिंह के पक्ष का समर्थन किया और मानसिह पर आक्रमण करने के लिए जयपुर के
जगत सिह को उकसाकर उसने मारवाड राज्य का विध्वंस और विनाश कराया था । जगत
जोधपुर से चले जाने के बाद सवाई सिंह धौकल सिंह को लेकर जोधपुर से नागौर चला
उसके साथ अनेक राठौर सामन्त भी थे । वहाँ पहुँचकर जोधपुर पर एक नया आक्रमण
लिए सवाई सिह एक योजना की तैयारी करने लगा ।

अमीर खाँ ने राजा मानसिह से सवाई सिंह का सर्वनाश करने के लिए प्रतिज्ञा की थी
इस कार्य के लिए उसने तीन लाख रुपये मानसिह से लिये थे । परन्तु वह जानता था कि सवा
भी कम षडयंत्रकारी नही है । वह यह भी जानता था कि मारवाड के अधिक राठौर सामन्त
साथ है । इस दशा मे युद्ध करके उसको परास्त करना आसान नही है । इसलिए सवाई ि
सर्वदा के लिए मिटा देने का उपाय वह सोचने लगा ।

अमीर खाँ को अपने लडने की शक्ति की अपेक्षा कूटनीति पर अधिक विश्वास था
उसी के लिए वह सर्वत्र प्रसिद्ध हो रहा था । बडी दूरदर्शिता के साथ कुछ सोच समझ क
अपनी सेना को लेकर जोधपुर से रवाना हुआ और नागौर से बीस मील की दूरी पर मूँधिय
उसने अपनी सेना का मुकाम किया । यहाँ पहुँचकर उसने प्रचार किया कि राजा मानसिह के
उसकी शत्रुता पैदा हो गयी है । मानसिह ने उसके साथ जो अपमानजनक व्यवहार किया है,
सहन करने के लिए अमीर खाँ किसी प्रकार तैयार नही है ।

इस समाचार के फैलने मे देर न लगी । सवाई सिंह ने भी यह खबर सुनी । वह अप
मे अत्यन्त प्रसन्न हुआ । अमीर खाँ से भेट करने के लिए वह किसी अवसर की प्रतीक्षा करने
इन्ही दिनो मे अमीर खाँ ने अपना एक दूत भेजकर सवाई सिह से कहा कि यदि मुझे इजाजत
तो मै नागौर की पीर तारकीन मसजिद मे आकर वहाँ पर ठहरने के दिनो मे रोजाना नमा
लिया करूँ ।

दिल्ली के बादशाह का प्रभुत्व क्षीण हो जाने पर और मारवाड से उसका अधिक
जाने पर मुसलमानो की मसजिदे और दरगाहे मरुभूमि मे एवम् विशेषकर नागौर मे नष्ट
गयी थी । नागौर मे यह कार्य बख्त सिंह के शासन काल मे विशेष रूप से हुआ था । किसी
पीर तारकीन की मसजिद विध्वस होने से बच गयी थी ।

सवाई सिंह नागौर मे रहकर पहले से ही चाहता था कि अमीर खाँ से किसी प्रकार
हो । अमीर खाँ ने मानसिह के साथ पैदा होने वाली शत्रुता का जो प्रचार किया था, उसका
फल तो फूलता हुआ दिखायी देने लगा । सवाई सिंह ने अमीर खाँ को पीर तारकीन की मसजि
मे आकर नमाज पढ़ने की इजाजत दे दी । अमीर खाँ अपने शिविर से चल कर नागौर पहुँचा ।
सिंह ने सम्मान के साथ उससे भेट की । वह पीर की मसजिद मे जाकर नमाज पढ़ने लगा
वहाँ से लौट कर जब वह सवाई सिंह से विदा हो कर अपने डेरो मे जाने लगा तो उसने सवाई
से कहा : "मैने मानसिह के साथ बहुत उपकार किये है । उनके पुरस्कार के बदले उसने ह

हमने मारवाड की वर्तमान परिस्थितियो को सभी प्रकार समझने की चेष्टा की है। अंग्रेजो के हृदयो मे राजपूतो के प्रति सहानुभूति है। किसी भी दशा मे मारवाड की परिस्थितियाँ बदलनी चाहिये और राजपूतो को एक होकर उत्थान के मार्ग मे आगे बढना चाहिये।

जोधपुर के राज सिहासन पर यदि ईदर का राजकुमार बिठाया जा सके तो बिना किसी सन्देह के वर्तमान सघर्षों का अन्त हो जायगा। अगर सभी राठौर मिलकर और एक स्थान पर बैठ कर इस प्रश्न का निर्णय करे तो निश्चित रूप से ईदर के राजकुमार को सिंहासन पर बिठाने के पक्ष मे राठौरो का बहुमत रहेगा। अगर ऐसा किया जा सके तो मारवाड राज्य का भविष्य उज्वल बन सकता है। इस राज्य मे शांति कायम हो सकती है और ईस्ट इण्डिया कम्पनी को उस राज्य के सम्बन्ध मे जो चिन्ता हो रही है, वह मिट सकती है।

छियालीसवाँ परिच्छेद

जोधपुर का परिचय—मारवाड के निवासी और उनकी जन-सख्या—राज्य के प्रसिद्ध नगर—सैनिक अवस्था—मारवाड राज्य की विशेषताये—राज्य मे आय के साधन—शिल्प कला और व्यवसाय—राज्य के व्यवसायी जैन धर्मावलम्बी—पुत्रो के अधिकार—राज्य के व्यावसायिक नगर—मारवाड मे अपराध और न्याय—अपराधो की वृद्धि का कारण—पचायतो के द्वारा न्याय का कार्य—राज्य की आय—किसानो की पैदावार और राज्य की मालगुजारी—विभिन्न प्रकार के कर—राठौरो की सैनिक शक्ति—राज्य का नैतिक पतन—मारवाड-राज्य के सामन्त—अफीम का व्यवसाय।

मारवाड की राजधानी जोधपुर पश्चिम मे गिरप और पूर्व की ओर अर्वली पहाड के शिखर पर श्यामगढ के बीच मे है इस राज्य की लम्बाई पश्चिम से पूर्व तक अङ्गरेजी के दो सौ सत्तर मील है। सिरोही की सीमा से मारवाड की उत्तरी सीमा तक इस राज्य के जितने भी नगर है, वे सभी बडे है। जिसकी लम्बाई दो सौ बीस मील है। डीडवाना और जालौर के उत्तर पूर्व से साँचोर की सीमा के दक्षिण पश्चिम कोने तक साढे तीन सौ मील की लम्बाई है।

लूनी नदी ने मारवाड के नगरो की अवस्थाओ मे परिवर्तन कर दिया है। यह लूनी नदी मारवाड की पूर्वी सीमा के पुष्कर से निकलकर, पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है और उसके द्वारा राज्य के दो भाग हो जाते है। एक भाग उपजाऊ और दूसरा भाग अनुपजाऊ हो जाता है। इसी नदी के कारण दक्षिणी किनारे से अर्वली पर्वत के ऊपर तक के सभी ग्राम और नगर सम्पत्तिशाली बन गये है। डीडवाना, नागौर, मेडता, जोधपुर, पाली, सोजन, गोडवाड, सिवाना, जालौर, भीनमाल और साँचोर नगरो मे अधिकाँश उपजाऊ है। उनमे रहने वालो की सख्या अधिक है और इन नगरो के निवासी एक वर्ग मील मे अस्सी मनुष्यो की सख्या मे रहा करते है। मारवाड की जन-सख्या का अनुमान बीस लाख है।

मारवाड मे जाट लोगो की संख्या प्रत्येक आठ मे पाँच है, राजपूतो की दो है। शेष लोगो मे ब्राह्मण, व्यवसायी और दूसरे लोग हैं। इस हिसाब से मारवाड़ मे राजपूतो की सख्या पाँच लाख

धौकल सिंह नागौर मे था । अमीर खाँ के द्वारा इस नर-संहार का समाचार की सेना अपने प्राणो की रक्षा के लिए इधर-उधर भाग गयी । अमीर खाँ सेना नागौर मे पहुँचा और उसने वहाँ की सम्पूर्ण सम्पत्ति लूट ली । वख्तसिह ने नागौर जो युद्ध की वहुत-सी सामग्री एकत्रित की थी, उसको अमीर खाँ ने अपनी सेना के अ दिया । उस दुर्ग को तीन सौ तोपे लेकर अमीर खाँ ने अपने दुर्गों को रवाना की । इसके व योजना मे सफल होकर वह सेना के साथ जोधपुर चला गया । वहाँ पर राजा मानसिह अपूर्व स्वागत् किया । इसी समय मानसिह ने अमीर खाँ को दस लाख रुपये पुरस्कार मे दि मूंडवा तथा कुचेरा नाम के दो ग्राम—जिनकी वार्षिक आमदनी—तीस हजार रुपये थी— को दिये । इसके अतिरिक्त राजा मानसिह से अमीर खाँ को एक सौ रुपये प्रति दिन के दिये जाने लगे ।

सवाई सिंह ने अपने पूर्वजो का वदला लेने के लिए मानसिह और मारवाड का सर्व के लिए जो विष वोया था, उसके द्वारा सवाई सिंह का सर्वनाश हुआ । जिस विप के का विनाश किया जाता है, वही विष विनाश करने वाले के लिए भी विष हो जाता है । के जीवन की घटनाओ का अध्ययन करने से मनुष्य को इसी वात की शिक्षा मिलती है । मानसिह का सर्वनाश करने के लिए चला था । परन्तु अत मे उसका स्वय सर्वनाश हुआ । अव भी जीवित रहा और उसने जोधपुर का सिहासन अपने अधिकार से जाने नही दिया । की इन घटनाओ से हमे विश्वास कर लेना चाहिए कि मनुष्य का षडयत्र दूसरो का नही, विनाश करता है । प्रकृति के इस नियम पर मनुष्य को धैर्य के साथ विश्वास रखना चाहि सदा सुरक्षित रहे ।

सवाई सिंह के जीवन का अत हो गया । उसने जो कुछ किया था, उसका फल ठी उसे मिला । मानसिह के जीवन की कठिनाइयो का अभी तक अत नही हुआ । यद्यपि उसने कारी अमीर खाँ के द्वारा अपने परम शत्रु सवाई सिह को ससार से विदा करने मे सफलत थी । परन्तु उसकी विपदाओ का अत यही पर नही होता ।

सवाई सिंह और मारवाड के विरोधी राठौर सामन्तो के प्राणो का नाश करवा क मानसिह ने चारो तरफ से निर्भीक होकर अपना शासन-कार्य आरम्भ किया । धौकल सिह के अव कोई आशा वाकी न रह गयी थी । इसलिए निराश होकर वह नागौर से चला गया राठौर सामन्तो ने धौकल सिंह का पक्ष लेकर मानसिह के साथ युद्ध किया था, उसको दण्ड लिए मानसिह ने तैयारी की । सवाई सिंह के प्रोत्साहन देने पर जयपुर के जगत सिंह ने मा विरुद्ध आक्रमण किया था । इसलिए मानसिह ने अमीर खाँ की पठान सेना के द्वारा जय के कितने ही नगरो और ग्रामो का भयानक रूप से विध्वस और विनाश करवाया ।

मानसिह का दूसरा शत्रु वीकानेर का राजा था । धौकल सिंह का पक्ष लेकर आरम्भ उसने मानसिह के विरुद्ध राजा जगत सिंह का साथ दिया था और जिस समय कई राज्यो की ने मिल कर जोधपुर पर आक्रमण किया था, उस अवसर का लाभ उठा कर राजा वीक फलोदी को वीकानेर के राज्य मे मिला लिया था । इसलिए राजा वीकानेर को दण्ड देने के ने मानसिह प्रधान सेनापति इन्द्रराज के नेतृत्व मे अपनी वारह हजार सेना लेकर वीकानेर प आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ । उसके साथ अमीर खाँ और हिन्दाल खाँ की फौज तोपे लेकर वीकानेर की तरफ चली ।

इस आक्रमण का समाचार राजा वीकानेर को मिला । उस से शीघ्रता के साथ अप

मिला हुआ है। यह मिट्टी बनसर, जोधपुर, जालौर, वालोतरा और कुछ अन्य स्थानो मे पायी जाती है। इस मिट्टी मे जौ, कोकना, गेहूँ, तम्बाकू, प्याज और कई प्रकार के शाक पैदा होते है। सफेद रग की मिट्टी मे खेती नही होती। अधिक वर्षा के बाद कुछ थोडी पैदावार हो जाती है। लेकिन उसी दशा मे, जब वर्षा बहुत अधिक होती है, बाजरा भी बहुत कम होता है।

लूनी नदी के दक्षिणी किनारे पाली, सोजत और गोडवाड आदि स्थानो की मिट्टी नदियो के प्रवाह के द्वारा पहाड के ऊपर से बहकर आती है। यह मिट्टी अधिक उपजाऊ होती है। उस मिट्टी मे बाजरा के सिवा, सभी प्रकार के अनाज अधिक पैदा होते है। नागौर और मेडता मे कुओ के जल से खेती होती है और उसमे अच्छी श्रेणी के अनाज पैदा होते है। पश्चिमी भाग मे ग्रामो और नगरो की सख्या पाँच सौ दस है। जालार, साँचोर और भीनमाल के विशाल नगरो की विस्तृत भूमि का अधिकारी राजा होता है। वहाँ की मिट्टी उपज के लिये सबसे अच्छी समझी जाती है। यहाँ मट्टी नदियो के द्वारा पहाडो मे बहकर आयी है और इसलिए वह अधिक उप-जाऊ हो गयी है। वहाँ की भूमि मे बहुत अच्छी पैदावार हुआ करती थी। लेकिन राजा मानसिंह के शासनकाल मे वह उपज घटकर एक तिहाई भी न रह गयी थी। उस भूमि के नगर और ग्राम अधिक उपजाऊ होने के कारण अधिक सम्पन्न रहते थे। इसीलिए आक्रमणकारियो की लूट इन स्थानो पर अधिक हुआ करती थी। अच्छी मिट्टी होने के कारण इन नगरो की भूमि सब से अधिक उपजाऊ थी और वहाँ पर गेहूँ, जो, धान, ज्वार, मूग और तिल अधिक पैदा होता था। रेतीली भूमि मे केवल बाजरा, मूग और तिल की पैदावार होती है।

इस राज्य मे अनाजो की पैदावार इतनी अधिक होती थी कि जिससे कभी दुर्भिक्ष का भय न रहता था और अनाज के अभाव मे वह राज्य के एक स्थान से दूसरे स्थान मे आसानी से पहुँ-चाया जाता था। नागौर राज्य मे पाँच सौ छै नगर और ग्राम है। उनका अधिकारी मारवाड का राजकुमार होता है। यह राज्य अनेक प्रकार की सुविधाओ के लिए श्रेष्ठ माना जाता था। खेती के लिए वहाँ पर कुँओ की सख्या बहुत अधिक थी और वहाँ के कृषक अपनी खेती मे कुओ के द्वारा अधिक लाभ उठाते थे।

मारवाड की खाने —इस राज्य मे अनाजो की पैदावार की अपेक्षा खनिज पदार्थों की पैदा-वार अधिक होती थी और ये पदार्थ भारत के प्रत्येक भाग मे इस राज्य से पहुँचते थे। पचभद्रा, डीडवाना और साँभर से पैदा होने वाला नमक इस राज्य की आमदनी का सदा विशेष साधन रहा था। यह नमक इस राज्य मे तैयार होकर देश के समस्त बाजारो मे पहुँचता है।

मारवाड के पूर्व मे मकरा नामक एक स्थान है। वहाँ पर सगमरमर की खान थी और उन खान से निकले हुए पत्थरो के द्वारा इस देश की सभी प्रसिद्ध इमारतें किसी समय मे बनी थी। मुगलो के शासनकाल मे इस खान के कीमती पत्थर राज महलो मे लगाये गये थे। दिल्ली और आगरा के सभी प्रसिद्ध मकानो, राजप्रासादो, शिवालयो, मसजिदो और दूसरी इमारतो मे यहाँ के सगमरमर को लगाकर उनकी ख्याति की वृद्धि की गयी है।

मारवाड के राज्य मे खनिज पदार्थो के द्वारा होने वाली आमदनी राज्य की प्रधान आमदनी थी। जोधपुर और नागौर के पास श्वेत पत्थर की खाने थी। सोजत मे टीन और शीशा की खान थी। पाली मे फिटकरी, भीनमाल और गुजरात के करीब की खानो मे लोहे की खाने थी। इन खानो से जो पैदावार होती थी, उनसे किसी समय मारवाड राज्य जो धन की अपरिमित आमदनी होती थी।

शिल्पकला—यह राज्य शिल्प मे कभी श्रेष्ठ नही रहा। यहाँ पर सूत के मोटे कपडे और

इतना सब होने के बाद भी अमीर खाँ ने अपने अधिकारों का विस्तार मारवाड किया। उसने अपने सेनापति गफूर खाँ के नेतृत्व मे एक सेना नागौर के दुर्ग मे भेज दी मेडता की जागीर को नागौर से अलग करके उसने अपने अधिकार मे कर ली। इसके अपने अधिकार को बढाता रहा। उसने अपनी एक सेना नावा के दुर्ग मे भेज दी और नावा साथ-साथ साँभर का विस्तृत इलाका भी उसने अपने अधिकार मे कर लिया। मारवाड राज्य खाँ के इस शासन के विस्तार को देखकर भी राजा मानसिंह विरोध करने का साहस न कर

राजा मानसिंह के दरबार मे अमीर खाँ का प्रभुत्व काम कर रहा था जो रा राज-दरबार मे आते थे, उनको कुछ कहने सुनने का अधिकार न था। यदि कभी कोई की दुरवस्था को उपस्थित करके कुछ कहने का साहस करता तो उसे अपमानित हो कर चुप पडता। मारवाड की इस बढती हुई दुरवस्था को देखकर सामन्तो ने आपस मे परामर्श मानसिंह राज्य मे जो कुछ भी करता है, उसमे इन्द्रराज और राजगुरु देवनाथ की सम्मति र इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अमीर खाँ ने राज्य मे जो अत्यचार कर रखा है, उसके अपरा राज और देवनाथ प्रधान रूप से है इसलिए सामन्तो ने निश्चय किया कि इन्दराज और जब तक जीवित रहेगे, अमीर खाँ के अत्याचार इन राज्य मे कभी समाप्त नही हो सकते। जैसे भी हो सके इन दोनो के जीवन का अन्त किया जाय परन्तु उनका अन्त करे कौन ? राज्य के सामन्तो के सामने पैदा हुआ।

उन सामन्तो के सामने बडी गम्भीर परिस्थिति थी। अमीर खाँ के अत्याचारो से राज्य की दशा अत्यन्त ही दुर्बल हो गयी थी और सभी की समझ मे यह आ गया था कि राजद्रोही इन्द्र और देवनाथ का अन्त न होगा, उस समय तक अमीर खाँ के अत्याचार नही सकते। बहुत सोच समझकर उन सामन्तो ने धन के लोभी अमीर खाँ से यह काम करने किया गया। अमीर खाँ ने उसे स्वीकार कर लिया। उसने कहा :

"इस कार्य के लिए मै सात लाख रुपये लूँगा और उन दोनो को संसार से f दूँगा।"

सामन्तो ने अमीर खाँ की इस माँग को स्वीकार कर लिया उसके बाद अमीर खाँ कार्य आरम्भ कर दिया। उसने इन्दराज के नेतृत्व मे काम करने वाली पठान सेना को भड उसने अपना बहुत दिनो का बाकी पडा हुआ वेतन माँगा और उस सिलसिले मे ऐसा सं हुआ, जिसमे राजगुरु देवनाथ के साथ मन्त्री इन्दराज मारा गया।

देवनाथ के मारे जाने पर मानसिंह बहुत दुखी हुआ। उसने अपने जीवन मे भीष नाइयो का सामना किया था। परन्तु उसके हृदय पर इस प्रकार का घातक प्रभाव कभी था, जिस प्रकार राजगुरु के मारे जाने पर उसके ऊपर प्रभाव पड़ा। इन दिनो मे वह देवनाथ की सम्मति से अपने सभी कार्य करता रहा था। उसने राजगुरु का बहुत विश्वा था। अब उसका कोई ऐसा सहायक न रह गया, जिसके परामर्श पर वह अपनी आँखे बन काम कर सकता। इसलिए अपने जीवन मे बिलकुल निराश होकर उसने राज्य के कार्यो से ले लिया। उसने राज दरबार मे जाना बन्द कर दिया। परिवार के लोगो से लेकर मन्त्रि सब के साथ उसने बातचीत करना बन्द कर दिया। उसके इस विराग को देख कर चिन्तित हो उठे।

राजा मानसिंह की इस उदासीनता को देख कर राज्य के सामन्तो ने उसके की ओर जब उनको उसने कोई आशा न पैदा हुई तो सामन्तो ने उसके एक मात्र बेटे छत्र

हुआ व्यवसाय एक साथ खत्म हो गया था । इसका कारण उन दिनो मे लगातार होने वाली लूट मार थी ।

मारवाड के मेले—इस राज्य मे वर्ष मे दो मेले हुआ करते थे । एक तो मूंडवा नामक स्थान मे और दूसरा वालोतरा मे । मूंडवा के मेले मे हाथी, घोडे और कई दूसरे पशुओ का व्यवसाय होता था । इस मेले मे भारत के अन्यान्य नगरो से विकने के लिये वने हुये पदार्थ आते थे और यह मेला माघ महीने के पहले दिन से आरम्भ होता था और छै सप्ताह तक वरावर चलता था । उन दिनो मे वहाँ वहुत वडी भीड होती थी । वालोतरा के मेले मे भी घोडो, हाथियो और दूसरे पशुओ का क्रय-विक्रय होता था । लेकिन उनकी अपेक्षा दूसरी चीजो के व्यवसाय यहाँ पर मेले के दिनो मे अधिक होते थे । देश के लगभग सभी नगरो के लोग यहाँ के मेले को देखने के लिए आते थे ।

मारवाड के पतन के साथ-साथ इन मेलो का भी पतन हो गया । विदेशी आक्रमण और अत्याचार राज्य मे जितने ही वढते गये, व्यावसायिक नगरो का उतना ही पतन होता गया । मूंडवा और वालोतरा के प्रसिद्ध मेलो की भी यही अवस्था हुई ।

मारवाड मे अपराध और न्याय—इस राज्य मे राजनैतिक पतन के साथ-साथ अपराधो के प्रति न्याय का कार्य वहुत शिथिल पड गया था । राजद्रोह अथवा राजनैतिक अपराध को तो अपराध समझा जाता था और अपराधी को प्राण दण्ड दिया जाता था । पपन्तु दूसरे अपराधो के प्रति दण्ड देने की व्यवस्था वहुत निर्वल पड गयी थी । यदि कोई मनुष्य किसी मनुष्य को मार डालता तो उसे साधारण दण्ड दिया जाता था । उसे कुछ दिनो के लिए कारागार मे रखा जाता अथवा आर्थिक दण्ड देकर उसको छोड दिया जाता था । कभी-कभी इस प्रकार के अपराधी को राज्य से निकल जाने का आदेश होता था ।

चोरी और इस प्रकार के अपराधो को साधारण दृष्टि से देखा जाता था । उसको कुछ आर्थिक दण्ड देकर अथवा कारागार मे कुछ दिनो तक रखकर उसे छोड दिया जाता था । इस प्रकार के जिस अपराधी को कारागार मे रखते थे, उसके भोजन और वस्त्रो का खर्च चोर की सम्पत्ति से वसूल किया जाता था । यदि उससे यह खर्च वसूल न हो सकता था तो उसको अधिक दिनो का दड मिलता था । इन दिनो मे राज्य की आर्थिक अवस्था वहुत खराव हो गयी थी, इसीलिए अपराधियो को प्राय आर्थिक दण्ड अधिक दिया जाता था ।

राजा विजय सिंह की मृत्यु के वाद राज्य मे न्याय का कार्य इतना शिथिल पड गया था, जो विलकुल नही के वरावर था । हालत यह हो गयी थी कि लोगो के घरो की अवस्था अधिक शोचनीय थी और कारागार मे विना किसी चिंता के अपराधियो को पेट भर भोजन मिलता था । अपराधो के वढ जाने का एक यह भी कारण था । राज्य की यह अवस्था भी इतनी अधिक शिथिल पड गयी थी कि अपराध को अपराध नही समझा जाता था । जो अपराधी कारागार भेज दिये जाते थे, उनको सुविधाये देने के लिये राज्य के व्यावसायिक लोग चन्दा करते थे और दान के द्वारा एकत्रित रुपये से कारागार मे अपराधियो को सुविधाये पहुँचाई जाती थी । इसका कारण राज्य मे और विशेष कर राज्य के व्यावसायिक समाज मे जैन धर्म का प्रचार था । कारागार के अपराधियो के खाने-पीने के खर्च मे राज्य की तरफ से रुपये व्यय नही किये जाते थे, धनिक व्यावसायी दान देकर जो सम्पत्ति इकट्ठा करते थे, उसी से अपराधियो के खाने-पीने और वस्त्रो की व्यवस्था होती थी । कभी-कभी यह भी होता था कि राज्य के खजाने से इसके लिए जो रुपये आते थे, वे कारागार के अध्यक्ष के व्यक्तिगत अधिकार मे चले जाते थे और कारागार की व्यवस्था दान की सम्पत्ति के द्वारा होती थी । वर्ष के अनेक अवसरो पर समय से पूर्ण अपराधियो को छोड दिया जाता था । सूर्यग्रहण

व्यतीत करना आरम्भ किया था । कुछ भी हो, मानसिह ने अपने आपको राज्य के शा
प्रकार अलग कर रखा था ।

छत्रसिह की मृत्यु के बाद राजा मानसिह की मानसिक विरक्ति अधिक बढ गयी ।
मारवाड के सामन्तो ने पोकरण के स्वर्गीय सवाई सिह के पुत्र सालिम सिंह को बुलाकर
शासन का प्रधान बनाया और उसने शासन का प्रबन्ध अपने हाथ मे लेकर राज्य मे अ
का विस्तार किया ।

राजकुमार छत्रसिह के जीवन काल मे एक बार दिल्ली मे एक बैठक हुई थी
मारवाड की वर्त्तमान अशान्ति को मिटाने और शाति कायम करने के सम्बन्ध मे विचा
था । यह बैठक मेरे द्वारा आमन्त्रित हुई थी ।* उस बैठक मे भाग लेने के लिए जोधपुर
से एक दूत भेजा गया था । दिल्ली की उस बैठक का परिणाम निकलने के पहले ही छ
मृत्यु हो गयी ।

जोधपुर का शासन सालिम सिंह के अधिकार मे चले जाने पर मारवाड के अधिक
अपने भविष्य को बडी सावधानी से देखने लगे । सालिम सिंह को कुछ समय के लिए ज
शासन-भार दिया गया था । इसलिए वहाँ के सामन्त इस बात से भयभीत हो रहे थे कि र
सिंह फिर किसी समय यहाँ के सिंहासन पर बैठकर शासन न करने लगे । राजा मानसिह के
सामन्तो के भयभीत होने का कारण था । राज्य सिंहासन पर बैठकर मानसिंह ने राठौर
के साथ अच्छा व्यवहार नही किया था । उनकी जागीरे छीन ली गयी थी और विद्रोही
लिए उनको विवश किया गया था । इसलिए उन दुर्घटनाओ से राठौर सामन्त आज भी
होकर अपने भविष्य की ओर देख रहे थे ।

इस प्रकार की परिस्थितियो मे चिन्तित होकर राठौर सामन्तो ने आपस मे प
निश्चय किया कि मानसिह के सिंहासन पर न बैठने पर ईदर के राजकुमार को लाकर
किया जाय और सिहासन पर बिठाया जाय । मानसिह के सिंहासन पर बैठने का इस समय
के सामने कोई प्रश्न नही था । इसलिए कि कई बार प्रार्थना करने पर उसने इनकार
था । सामन्तो ने इसके सम्बन्ध मे ईदर के राजा के पास अपना समाचार भेजा । उसका
हुए ईदर के राजा ने कहा

"हमारे यही एक लडका है । इसलिए किसी भी इस प्रकार के अवसर के लिए
इच्छा है और न हमारी उत्सुकता है । लेकिन यदि मारवाड के सभी सामन्त इस प्रस्ता
मत हो तो मै इसके लिए इनकार न करूँगा । परन्तु दो-चार सामन्तो के प्रस्ताव करने
स्वीकार नही कर सकता ।"

ईदर के राजा का उत्तर पाकर मारवाड के सभी सामन्तो ने एकत्रित होकर
परामर्श किया और सभी की सम्मति लेकर यह निश्चय किया गया कि राज्य का भार
के लिए पहले राजा मानसिह से प्रार्थना की जाय । इस निर्णय के अनुसार सामन्तो को
मानसिह पर निर्भर होना पडा । वे लोग राजा मानसिह से जाकर मिले और मारवाड की
का एक चित्र सामन्तो ने उसके सामने रखा । इसके साथ-साथ सामन्तो ने मानसिह को
वताया कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ जो सधि तैयार की गयी गई है और वह आ

---

*मारवाड की यह अशान्ति लगभग पूरे देश मे फैली हुई थी । जिसको दूर करने
कर्नल टॉड ने दिल्ली मे राजस्थान के राजपूतो की एक बैठक बुलाई थी । अनु०

आय दस हजार रुपये है तो वह दस अश्वारोही और बीस पैदल सैनिक रख सकता है। आवश्यकता के समय अपनी सेना को लेकर सामन्त को राजा की आज्ञा का पालन करना पड़ता है।

राजा की सम्पूर्ण आय, जो राज्य के खजाने मे रखी जाती है, उसका अनुमान दस लाख रुपये है। राज दरबार मे कर्मचारियो को जो भूमि दी जाती है, उसकी मालगुजारी इसमे शामिल नही है।

जो मालगुजारी अथवा आमदनी प्रजा से वसूल की जाती है, वह कई तरह की है। अनाज पर जो कर वसूल होता है और जिसकी प्रथा बहुत प्राचीन काल से इस देश मे चली आ रही है उसको बटाई अथवा विभाग कर कहा जाता है। कृषक जितना अनाज पैदा करता है, उसका आधा भाग वह राजा को दे देता है और आधे भाग का वह स्वय मालिक होता है।

भारतवर्ष की यह प्रथा पुरानी है। लेकिन उसके प्राचीन नियमो मे अब अन्तर पड गया है। पहले कृषक की पैदावार का एक चौथाई अथवा छठा भाग राजा लेता था। बाकी सब अनाज का अधिकारी कृषक होता था। परन्तु अब राजा का अधिकार बढ गया है और वह अब कृषक की पैदावार का आधा भाग ले लेता है।

किसानो के भूमि की पैदावार की निगरानी राज्य के कर्मचारियों के द्वारा होती थी और उन कर्मचारियो का वेतन किसानो से वसूल किया जाता था। इसके लिए प्रत्येक कृषक को दस मन अनाज पर दो रुपये देने पडते थे। इस प्रकार कृषको से वसूल करके जो रुपये एकत्रित होते थे उसमे निगरानी करने वाले कर्मचारियो और कृषको से राजा के हिस्से का अनाज वसूल करने वालो का वेतन चुकाया जाता था। इसके बाद जो रुपये बचते थे वे ग्राम के पटेल अर्थात् राज्य की तरफ से भूमि के अधिकारी के हिस्से मे चले जाते थे, उसमे पटवारी का भी भाग रहता था।

राजा के घोडो और गायो आदि पशुओ के लिए प्रत्येक कृषक से एक-एक गाडी भूसा और ज्वार लिया जाता था। परन्तु अब उसके बदले मे प्रत्येक कृषक से एक-एक रुपया लिया जाता है। दुर्भिक्ष पडने के वर्ष मे इस रुपये के स्थान पर करवी ली जाती है। पटवारी और पटेल को कृषको और राजा — दोनो के हिस्सो से आनाज दिये जाने का नियम था। इसके लिए अस्सी भागो मे एक भाग पटवारी और पटेल का हो जाता था। इस प्रकार के बहुत-से नियम जो प्रचीन काल से अब तक इस देश मे चले आ रहे थे, उनमे कुछ तो ज्यो के त्यो और कुछ परिवर्तन के साथ आज भी राजस्थान में चलते है और वही मारवाड मे भी लागू है।

अङ्गकर—मारवाड मे जितने कर प्रचलित है, उनमे एक अङ्गकर भी है। इसका अर्थ यह है कि राज्य के निवासियो की सख्या पर एक रुपया प्रत्येक प्राणी के हिसाब के जो कर लिया जाता है वह अङ्गकर कहलाता है।

घासमारी कर—यह कर राज्य के पशुओ के ऊपर लगाया जाता है। इस कर को घासमारी कर कहते है : प्रत्येक बकरी और भैंस पर एक आना, प्रत्येक भैसा पर आठ आने और प्रत्येक ऊँट पर तीन रुपये के हिसाब से कर वसूल किया जाता है।

किवाडी कर—इस कर को द्वार कर भी कहा जा सकता है। लेकिन यह कर किवाडी कर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजा विजय सिंह ने इस कर को प्रचलित किया था। उसके शासन के अन्तिम दिनो मे सभी सामन्त विद्रोही हो गये थे और वे पाली मे एकत्रित होकर राजा को सिंहासन से उतारने के लिये तैयारी कर रहे थे। विजय सिह ने वहा पहुँच कर उनको अपने अनुकूल बनाने की चेष्ठा की थी। परन्तु कोई परिणाम न निकला। भीमसिह ने सिंहासन पर बैठकर विजय

मानसिह ने गम्भीरता के साथ शासन कार्य सचालन किया। उसने सामन्तो की का अध्ययन किया और दोनो श्रेणी के सामन्तो मे से योग्य व्यक्तियो को निकाल कर रा पदों पर नियुक्त कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि मानसिंह के व्यवहारो पर दोनो सामन्तो को सन्तोष हुआ।

जो सामन्त विद्रोहात्मक कार्यों मे सहायता कर रहे थे, मानसिह ने उनके साथ भ का व्यवहार किया। इन दिनो मे उसने बडी बुद्धिमानी से काम लिया। अगरेज प्रतिनि कर मानसिह को समझाने की कोशिश की थी और कहा था 'कम्पनी की सैनिक सहायत आप किसी प्रकार अपने राज्य मे शाँति कायम नही कर सकते। "राजा मानसिंह ने न प्रतिनिधि की इस बात का विरोध किया और उसने उसको उत्तर देते हुए स्पष्ट शब्द 'कम्पनी की इस सहायता के लिए धन्यवाद है। परन्तु अपने राज्य मे शान्ति काय मुझे बाहरी सेना की आवश्यकता नही है।"

अँगरेज प्रतिनिधि मि० विल्डर ने मारवाड मे फैली हुई भयानक अशान्ति और को अपने नेत्रो से देखा था। सामन्तो पर राजा का कोई प्रभाव न रह गया था और वे भ से मनमानी कर रहे थे। राज्य की इस दुरावस्था मे प्रजा के कष्ट इतने बढ गये थे, जिन नही जा सकता। उस प्रतिनिधि ने जोधपुर मे भी इसी प्रकार की परिस्थितियाँ देखी प्रतिनिधि ने स्वय स्वीकार किया था कि सामन्तो के स्वेच्छाचार के कारण राज्य मे मा कोई प्रभाव न रह गया था। सभी राज कर्मचारी अनुशासन हीन हो गये थे और राज्य बराबर लुटी जा रही थी। राजा मानसिह की निर्बलता इतनी बढ गयी थी कि वह स किसी भी अनुचित कार्य मे हस्तक्षेप करने का साहस नही करता था। उसके अधिकार मे सेना थी, आर्थिक कष्टो के कारण सभी प्रकार असमर्थ हो रही थी। पिछले तीन वर्षो उसका बाकी था। उसके न मिलने से उस सेना का कष्ट और असन्तोष बहुत बढ गया सेना के सैनिक राजधानी मे प्रजा से माँगकर कभी-कभी अपना पेट भर लेते थे। लेकि अधिकाश सैनिक प्राय अनाहार रहा करते थे। इस प्रकार राजधानी से लेकर राज्य नगर और ग्राम तक भयानक दुरवस्था फैली हुई थी।

सन् १८१६ ईसवी मे उदयपुर, कोटा, बून्दी और सिरोही के राज्यो की तरह ईस्ट कम्पनी के गवर्नर जनरल के द्वारा मै मारवाड राज्य का राजनैतिक एजेण्ट बनाया गया। * के महीने मे मै मारवाड गया और जोधपुर पहुँचकर मैने वैतनिक सेना को भयानक कष्टो उस समय मैने सेना के पिछले वेतन में तीस प्रतिशत दिलाने की कोशिश की। सेना ने इसे कर लिया। लेकिन तीन सप्ताह के बाद जोधपुर से मेरे चले जाने पर उस सेना को जो थी, वह भी जाती रही।

जोधपुर मे बढी हुई अराजकता के कारण लोगो को किसी प्रकार का डर न था। इसका कारण यह था कि अपराधियो को कोई दण्ड देने वाला न था। ऐसा था कि मानो इस राज्य से इन्साफ उठ गया है। इसका परिणाम यह हुआ कि किसी को मार डालता तो हत्या करने वाले के विरुद्ध कोई कुछ कहने वाला न था। ठ अवस्था दूसरे अपराधो की भी थी। समस्त राज्य बिना किसी शासन के हो रहा था।

---

* इस ग्रन्थ के मूल लेखक कर्नल टॉड को सन् १८१६ ईसवी मे अँगरेज गवर्नर ज मारवाड़ राज्य का भी राजनैतिक एजेण्ट नियुक्त किया था। अनु०

वाणिज्य कर और भूमि की मालगुजारी पहले की अपेक्षा इधर बहुत दिनो से कम होती हुई चली आ रही है। नमक के द्वारा होने वाली आमदनी भी पहले से बहुत घट गयी है। राज्य के अच्छे दिनो मे नमक के द्वारा मारवाड मे जो आमदनी होती थी और जो राज्य के पुराने लेखो के आधार पर तैयार की गयी है, वह इस प्रकार है :

पञ्चभद्रा	२०००००० रुपये
फलोदी	१००००० ,,
डीडवाना . ..	११५००० ,,
साँभर ..	२००००० ,,
नाँवा .	१००००० ,,
कुल	७१५००० रुपये

इस विभाग के का। मे कितने ही हजार श्रमजीवी मनुष्य और बैल काम करते है। वे श्रमजीवी बनजारा नाम की जाति के होते है। जो नमक तैयार होता है, उसको ले जाने के लिए बहुत बडी सख्या मे बैलो की जरूरत होती है। इसलिए जो बैल नमक ले जाने का कार्य करते है, उनकी सख्या लाखो मे पहुँच जाती है। सिंधु नदी के तटवर्ती ग्रामो और नगरो से लेकर गगा जी के समीपवर्ती स्थानो तक इस देश मे सर्वत्र यह नमक जाता है यह नमक साँभर नमक के नाम से विख्यात है। यो तो जितने नमक है, उसमे थोडी-बहुत सभी मे विभिन्नता रहती है। परन्तु पञ्चभद्रा का नमक सब से श्रेष्ठ माना जाता है।

मारवाड के पुराने लेखो को देखने से मालूम होता है कि मालगुजारी के द्वारा राज्य मे प्राय तीस लाख रुपये की आमदनी होती थी। जिसका ब्योरा उन पुराने लेखो मे इस प्रकार पाया जाता है :

१—खालसा अर्थात् राजा के अधिकृत १४८४ ग्रामो और नगरो की आमदनी	१५०००००० रुपये
२—वाणिज्य कर	४३०००० ,,
३—नमक की आय	७१५००० ,,
४—हासिल अर्थात् विभिन्न कर	३००००० ,,
योग	२९४५००० रुपये
सामन्तो और मन्त्रियो की आय ...	५०००००० ,,
कुल योग	७९४५००० रुपये

ऊपर राज्य की आमदनी का जो उल्लेख किया गया है, उससे प्रकट होता है कि प्राचीन काल मे मारवाड के राजा की अपनी और सामन्तो की आय मिला कर लगभग अस्सी लाख रुपये होती थी। इस आय आधा भाग भी अब वसूल नही होता। मारवाड के प्राचीन मन्त्रियो के वशो मे बहुत सम्पत्ति पायी जाती थी और उनके वशज आज भी सम्पत्तिशाली माने जाते है।

अखय चन्द कुछ सामन्तों को मिलाकर राज्य का विनाश करने के लिए तैयारी कर रहा है मन्त्री के इन अत्याचारो को देखकर मानसिह ने शासन की व्यवस्था से फिर अपने आ कर लिया और एकान्तवासी बनकर वह फिर अपने जीवन के दिन व्यतीत करने लगा । उ दशा को देखकर अनेक सामन्त भयभीत हो उठे ।

इन्ही दिनो मे प्रधान मन्त्री अखय चन्द के साथ फतहराज का वैमनस्य आरम्भ राजा मानसिह की सहानुभूत फतहराज के साथ अधिक थी और बहुत कुछ उसका प्रिय था । इसके अतिरिक्त मानसिह की रानी फतहराज के साथ उदारता का व्यवहार करती इसलिए राज्य के अनेक सामन्तो के साथ फतहराज की मैत्री थी । परन्तु प्रधान मन्त्री राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी था । उसने बढी बुद्धमानी के साथ राज्य की सेना को अपने अ कर लिया और जोधपुर के तुर्ग के साथ-माथ राज्य के सभी दुर्गो पर उसने अपना कायम कर लिया ।

अखय चन्द की इस शक्ति को देखकर फतहराज का साहस निर्बल पडने लगा । अ इस बात को समझता था कि फतहराज कुछ नही कर सकता । इसलिए निर्भीक हो राज्य मे भयानक अत्याचार आरम्भ किये । इन्ही दिनो मे अखय चन्द ने कई बार का अपमान भी किया । इसलिए विवश होकर उसने अखय चन्द के विरुद्ध उस षडयन्त्र का तैयार करने लगा । राज्य मे अखय चन्द के अत्याचार लगातार बढते जा रहे थे । प्रजा ो उसने अपने पास अपरिमित सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी । जो सामन्त और सरदार उस चारो मे शामिल थे उन्होने भी राज्य को लूटने मे कोई कमी न की थी । इसके बाद अ जोधपुर के दुर्ग मे जाकर रहने लगा । उसने यह अफवाह फैला दी कि राज्य मे मेरे ि खतरा पैदा हो गया है, इसीलिए नगर छोडकर मै दुर्ग चला आया हूँ ।

इस प्रकार छै महीने बीत गये । राजा मानसिह का एकान्त जीवन चल रहा राज्य मे अखय चन्द का आधिपत्य काम कर रहा था । एकाएक मानसिह ने अपना एकान भंग किया और शासन की बागडोर अपने हाथो मे लेकर उसने अखय चन्द एवम् उसके सामन्तो और सरदारो को राजधानी मे बुलाया । अखय चन्द और उसके समर्थकों के मानसिह ने आदेश दिया, वे सब के सब कैद कर लिए गये और उसी समय मानसिह ने अ से कहा · "तुमने राज्य को लूटकर जितनी सम्पत्ति एकत्रित की है, उसे साफ जाहिर अन्यथा तुमको प्राण दण्ड दिया जायगा ।"

अखयचन्द मानसिह के इस आदेश को सुन कर एक साथ भयभीत हो उठा । उस साथ के लोगो के परामर्श से चालीस लाख रुपये का हिसाब लिखकर तैयार किया । राजा ने उस पत्र के अनुसार पूरी सम्पत्ति लेकर अपने अधिकार मे कर ली और अखयचन्द जिनको कैद किया गया था, मानसिह को आज्ञा से उनको प्राण दण्ड दिया गया । नग राज्य का किलेदार था, और मूल जी धाँधल के साथ जो एक जागीरदार था, विष का प्याला कर उसके जीवन का अन्त किया गया और फतह पोल द्वार के बाहर उसका मृत शरीर फि गये । धाँधल का भाई जीव राज और बिहारीदास खीची का एक दर्जी भी मारा गया । शिवदास और श्रीकृष्ण ज्योतिषी को मार कर ससार से बिदा किया गया ।

मानसिह ने उन सभी लोगो के साथ कठोर व्यवहार किया, जिन्होने अखयचन्द के सा कर राज्य मे अत्याचार किये थे और प्रजा को लूटकर धन एकत्रित किया था । इस प्रकार लोग कैद किये गये । उनके पास का धन ले लिया गया और उनमे से अधिकाँश लोग जान

प्रथम श्रेणी के सामन्त

नाम	वश	स्थान	आमदनी	विवरण
१—केशरीसिह	चम्पावत	अहोवा	१०००००	मारवाड का प्रधान मन्त्री।
२—बख्तावरसिह	कम्पावत	आमोप	५०० ०	
३—सालिमसिह	चम्पावत	पोकरण	१०००००	अधिक शक्तिशाली।
४—सुरतानसिह	ऊदावत	नीमाज	५००००	
५— ...	मेडतिया	रियाँ	२५०००	अधिक साहसी और वीर।
६—अजितसिह	मेडतिया	घाडेराम	५००००	पहले यह मेवाड का सामन्त था।
७— ..	करमसोत	खोमसर	४००००	इसका स्थान पहले एक बडा नगर था।
८— .	भाटी	सेजडला	२५०००	यह दूसरे राज्य का निवासी था।

द्वितीय श्रेणी के सामन्त

नाम	वश	स्थान	आमदनी	विवरण
१—शिवनाथसिह	ऊदावत	कुचामन	५००००	शक्तिशाली सामन्त
२—सुरतानसिह	जोधा	खारीकादेव	२५०००	
३—पृथ्वीसिह	ऊदावत	चन्दावत	२५०००	
४—तेजसिह	,,	खादा	२५०००	
५—ओनादसिह	भाटी	आहोर	११०००	राज्य से निर्वासित
६—जीतसिह	कुम्पावत	वगडी	४००००	
७—पदमसिह	,,	गजसिहपुरा	२५०००	
८—	मेर्डतिया	मीठरी	४००००	
९—कर्णसिह	ऊदावत	मारोत	१५०००	
१०—जालिमसिह	चम्पावत	,,	१५०००	
११—सवाईसिह	जोधा	चापुर	१५०००	
१२— ...	...	बूडस।	२००००	
१३—शिवदानसिह	चम्पावत	कावटा (वडा)	४००००	
१४—जालिमसिह	,,	हरसोलाव	१००००	
१५—साँवलसिह	,,	दीगोद	१००००	
१६—हुकुमसिह	,,	कावटा (छोटा)	११०००	

ने मार्नासिह के सैकडो आदमियो को काट-काट कर फेक दिया और अन्त मे उन सभी ने अप
दे दिये। सुरतान सिंह के कुछ इने गिने सैनिक बच गये और वे सुरतान सिंह के परिवार
को लेकर नीमाज की तरफ भाग गये।

सालिम सिंह की भी इसी प्रकार हत्या करने का इरादा मार्नासिह ने किया था। प
तान सिह पर अनायास आक्रमण करके वह कुछ ऐसा हताश हो गया कि जिससे वह सालिम
आक्रमण न कर सका। सालिम सिंह किसी प्रकार जोधपुर से निकल कर मारवाड चला
इसके बाद फतह राज को बुला कर मानसिंह ने राज्य का दीवान बना दिया। फतहराज
इन्दराज का भाई था और वह राजा मानसिह का प्रिय हो रहा था।

राजा मार्नासिह ने अखय चन्द और उसके सहायक लोगो से जो एक बहुत सम्पत्ति व
थी उसने वैतनिक सेना का बकाया वेतन अदा किया। अखय चन्द के मारे जाने से साथ-सा
के दूसरे सामन्त बहुत भयभीत हो उठे थे। उस समय उन लोगो ने निश्चित रूप के सगठ
राजा मानसिह पर आक्रमण किया होता, लेकिन मारवाड मे अफवाह जोरो के साथ फैल
कि राजा मार्नासिह ने राज्य मे शान्ति कायम करने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी से अँगरे
की सहायता माँगी है और वहाँ सेना किसी भी समय जोधपुर मे आकर मानसिंह के आदेश का
कर सकती है। केवल इस भय से राज्य के असन्तुष्ट सामन्तो ने मार्नासिह के विरुद्ध कुछ क
साहस नही किया।

नीमाज के सामन्त सुरतानसिह के राजधानी मे मारे जाने पर नीमाज के कुछ सैनि
तान सिह के परिवार को लेकर नीमाज चले गये थे। उस परिवार मे सुरतान सिह का एक
सा बालक था। उसको खत्म करने के लिए मानसिह ने अपनी एक सेना नीमाज पर आक्रमण
के लिए भेजी।

उस सेना का सामना करने के लिए नीमाज के समस्त निवासी तैयार हो गये। उ
मे राजा मानसिह के हस्ताक्षरो का एक पत्र सुरतान सिह के बालक के नाम दिया गया। उ
मे लिखा था कि सुरतान सिंह के अपराध को क्षमा करके नीमाज का राज्य तुमको दे दिया जा
उसे लेने के लिए राज दरबार मे तुम्हारा आना आवश्यक है।

सुरतान के पुत्र ने मार्नासिह के इस पत्र का विश्वास नही किया। उस समय ज
जोधपुर से नीमाज पर आक्रमण करने के लिए आयी थी, उसके सेनापति ने सुरतान सिंह के
को विश्वास दिलाया और कहा "राजा मानसिह के पत्र की सच्चाई का उत्तरदायी मैं
प्रतिज्ञा करता हूँ कि राजा मार्नासिह ने इस पत्र मे जो लिखा है, उसका पालन मै करूँगा।"

सुरतान सिंह के लडके ने उस सेनापति की बात का विश्वास कर लिया और अपने
निकल कर मार्नासिह के शिविर मे उसके पहुँचते ही पत्र के विरुद्ध उसके साथ कार्यवाही की
एक राज पुरुष ने अपने साथ का आज्ञा-पत्र देकर उस लडके से कहा "महाराज ने आपक
करके राज दरबार मे लाने का आदेश दिया है।"

यह राजपुरुष उस सेना का सेनापति था, जो नीमाज पर आक्रमण करने के लिए गय
और मार्नासिह के पत्र पर विश्वास दिला कर जिसने नीमाज के राजकुमार उस बालक को
समर्पण करने के लिए तैयार किया था। उस सेनापति ने राजा के आदेश को पढ कर सु
और कहा : "मुझे राजा के इस आदेश पर आश्चय हो रहा है। इसके पहले नीमाज मे व
राजकुमार को बुलाने के लिए जो पत्र दिया गया था, वह कुछ और था और यह कुछ और है।
बालक मेरे विश्वास दिलाने पर यहाँ आया है। इसलिए मै इसके साथ विश्वासघात न करूँगा

प्रथम श्रेणी के सामन्त

नाम	वंश	स्थान	आमदनी	विवरण
१—केशरीसिंह	चम्पावत	अहोवा	१०००००	मारवाड का प्रधान मन्त्री।
२—बख्तावरसिंह	कम्पावत	आसोप	५०० ०	
३—सालिमसिंह	चम्पावत	पोकरण	१०००००	अधिक शक्तिशाली।
४—सुरतानसिंह	ऊदावत	नीमाज	५००००	
५— ..	मेडतिया	रियाँ	२५०००	अधिक साहसी और वीर।
६—अजितसिंह	मेडतिया	घाडेराम	१००००	पहले यह मेवाड का सामन्त था।
७— ..	करमसोत	खोमसर	४००००	उसका स्थान पहले एक बडा नगर था।
८—	भाटी	खेजडला	२५०००	यह दूसरे राज्य का निवासी था।

द्वितीय श्रेणी के सामन्त

नाम	वंश	स्थान	आमदनी	विवरण
१—शिवनाथसिंह	ऊदावत	कुचामन	५००००	शक्तिशाली सामन्त
२—सुरतानसिंह	जोधा	खारीकादेव	२५०००	
३—पृथ्वीसिंह	ऊदावत	चन्दावत	२५०००	
४—तेजसिंह	,,	खादा	२५०००	
५—ओनादसिंह	भाटी	आहोर	११०००	राज्य से निर्वासित
६—जीतसिंह	कुम्पावत	बगडी	४००००	
७—पदमसिंह	,,	गजसिंहपुरा	२५०००	
८—	मेडतिया	मीठरी	४००००	
९—कर्णसिंह	ऊदावत	मारोत	१५०००	
१०—जालिमसिंह	चम्पावत	,,	१५०००	
११—सवाईसिंह	जोधा	चापुर	१५०००	
१२— ...	...	बूडसू।	२००००	
१३—शिवदानसिंह	चम्पावत	कावटा (बडा)	४००००	
१४—जालिमसिंह	,,	हरसोलाव	१००००	
१५—साँवलसिंह	,,	दीगोद	१००००	
१६—हुकुमसिंह	,,	कावटा (छोटा)	११०००	

उत्तर दिया गया और न कोई कार्य किया गया। इस दशा मे उन सामन्तो ने अप
मेरे सामने रखी। उसके बाद मैने उनको कम्पनी की तरफ से संतोषजनक मध्य
के लिए जवाब दिलवाया। उसमे यह भी लिखा गया कि यदि समय पर कम्पनी
आप लोग अपने अधिकारो का निर्णय कर करते है।

सन् १८२३ ईसवी तक मारवाड़ की राजनैतिक परिस्थिति इसी प्रकार
दिनों मे राजा मानसिंह ने बुद्धिमानी से काम लेकर राज्य मे शाँति कायम करने
होता तो मारवाड से सामन्तो के बाहर जाने की नौबत न आती और राज्य मे जो
हो गयी थी, वह बिल्कुल दूर हो जाती। लेकिन राजा मानसिंह ने बुद्धिमानी से क

मारवाड़ राज्य के शासन की आलोचना करते हुए इस बात को स्वीकार
इस राज्य के राठौरो और सामन्तो ने आवश्यकता पड़ने पर अपने जीवन के जो
और जो राज्य के गौरव की रक्षा की थी वह सर्वथा प्रशंसनीय है। यदि राजस्था
आपसी फूट न होती और उसके कारण उन्होने एक, दूसरे को मिटाने की
जिन बाहरी जातियो ने उनके राज्य मे आकर भयानक अत्याचार किये और
विध्वंस और विनाश किया, उनकी नौबत न आती।

राजस्थान के राज्यो के पतन के दिनो मे राजपूतो ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी
और कम्पनी ने राजपूतो को सगठित होकर अत्याचारियो का सामना करने के
उस समय बाहरी जातियो के अत्याचार और आक्रमण एक साथ खत्म हो गये।
है कि आज आक्रमण और अत्याचार करने वाले गजनी, गिलजई, लोदी, पठान,
कहाँ है? राजपूतो के आपसी विद्रोह के कारण इन बाहरी जातियो को आक्रमण
का अवसर मिला था। इन जातियो ने संगठित होकर राजपूतो पर इसलिए आ
लोग आपस मे लडकर न केवल निर्बल हो गये थे, बल्कि आपसी द्वेष के कारण
को मिटाने मे लगे थे। पतन की इस अन्तिम अवस्था मे राजपूतो ने अङ्गरेजो के
और अङ्गरेजो ने सहायता करके उनको जिन्दगी के सही रास्ते पर ले जाने की
परिणाम यह हुआ कि राजपूतो को लूटकर और उनका संहार करके जो
नष्ट करने मे लगी हुई थी, उनके साहस छूट गये।

राजपूतो के साथ कम्पनी की जो सधि हुई है, उसमे पूर्ण रूप से न्याय
है और राजपूतो के अधिकारो की रक्षा की गयी है। अग्रेज कम्पनी ने दलित
की राजनैतिक अवस्था को बदलने के लिए पूरे तौर पर कोशिश की है और
अभिप्राय यह है कि जो राजपूत इस प्रकार निर्बल बना दिये गये है, वे फिर से
उनकी इसी शक्ति पर उनके राज्यो मे शान्ति कायम होने की सम्भावना हो स

मारवाड की वर्तमान राजनीति दुरवस्था मे ईदर राज्य के स्वर्गीय
वशधर को यहाँ के सिहासन पर विठा देना हमको वहुत आवश्यक मालूम होता
बुद्धिमानी और दूरदर्शिता से काम लेने की आवश्यकता है। राज्य के सामन्तो
है। उनके प्रति वर्तमान अवहेलना अच्छा परिणाम नही पैदा कर सकती। साम
कम्पनी को अपने मामलो मे मध्यस्थ वनाने की प्रार्थना की है। हमारी सम
सामन्तो का मामला सुलझ जाना आवश्यक है। यदि ऐसा न किया गया तो
सकता है।

बिक्री का कार्य राज्यो मे सर्वत्र होता है। इस प्रकार अफीम के व्यवसाय मे सभी राज्यो ने लगातार उन्नति की है।

अफीम का व्यवसाय जितना बढता गया, सर्वधारण मे उसके सेवन का विस्तार उतना ही अधिक होता गया। इन दिनो मे अफीम की बिक्री इन राज्यो मे बहुत अधिक मात्रा मे होती है। कृषक अफीम की खेती करते है और इस व्यवसाय मे तरक्की करने के लिए कुएँ खुदवा कर कृषको की खूब सहायता की गयी है। इस कार्य के लिए बडे बडे व्यवसायियो ने बहुत अधिक रुपया बाँटा है।

कुओ की सख्या काफी बढ जाने के कारण अफीम की खेती मे बडी सहायता मिली है। इन राज्यो मे अफीम की, जितनी बिक्री बढ गयी है, उतनी ही पोस्त की डण्डी बिकती है। जिन खेतो मे पहले दूसरे अनाजो के पैदा करने का कार्य होता था उन सब मे पोस्त की डण्डी की खेती की जाती है।

इस व्यवसाय के बढ जाने के कारण अफीम की कीमत लगातार घटी है और उसका परिणाम यह हुआ कि गरीब से गरीब आदमी भी अब उसका सेवन करने लगे है। अच्छी अफीम रुपये के लोभ मे चीन और दूसरे देशो को भेज दी जाती है। लेकिन साधारण दर्जे की अफीम यही पर रहकर देश मे सर्वत्र उनकी बिक्री होती है। इसकी खेती मे बट्टी नाम की जो अफीम तैयार होती है, वह बहुत साधारण श्रेणी की अफीम होती है और अच्छी अफीम के मुकाबिले मे उसकी लगभग आधी कीमत होती है। सस्ती होने के कारण राजपूत और दूसरे लोग इसी अफीम का सेवन करते है। उत्तम श्रेणी की न होने के कारण इस सस्ती अफीम के सेवन से स्वास्थ्य को अधिक क्षति पहुँचती है।*

---

*अफीम के व्यवसाय के सम्बन्ध मे मूल लेखक कर्नल जेम्स टॉड ने अपने ग्रन्थ मे कुछ नही लिखा। सिवा इसके कि अनेक स्थलो पर राजपूतो के अफीम के सेवन का उल्लेख किया हो और उसे बहुत हानिकारक समझ हो। अफीम का व्यवसाय और सेवन इन राज्यो मे किस प्रकार बढ़ा है, उसको उपयोगी समझ कर यहाँ पर लिखा गया है।—अनुवादक

है और उनमें पचास हजार सैनिक राजपूत है । यहाँ की छत्तीस जातियों के र अधिक सम्मान प्राप्त किया है । यद्यपि अफीम का सेवन करने के कारण इन गौरव को बहुत कुछ नष्ट कर दिया है, फिर भी मुगलो के शासन काल मे सम्मान मिला था ।

मारवाड़ के राठौरों मे स्वाभिमान था और उसी के कारण आक्रम अधिक अत्याचार किये थे । औरंगजेब स्वयं इन स्वाभिमानी राजपूतो से अधिक राजा मानसिंह के समय राठौरो की शक्तियो का विनाश हुआ । उस समय बहुत कम हो गयी थी । लगातार आक्रमणो और अत्याचारो मे पडे रहने के नैतिक जीवन को बहुत अधिक आघात पहुँचा । इसके पहले इस वश के राठौर अ लिए बहुत प्रसिद्ध थे । इन राजपूतो मे संगठन की शक्ति थी और आवश्यकता गौरव के लिए वे हँस हँसकर बलिदान होते थे । परन्तु विनाश और विध्वश के शक्तियाँ क्षीण पड गयी थी और इसीलिए मारवाड राज्य मे शासन और राज्य वैतनिक सेना रखनी पड़ी थी । इस देश मे राठौर राजपूत अधिक साहसी जाते थे ।

मारवाड़ राज्य के कई नगरो मे घोडो का मेला लगता था । बालोतरा मे कच्छ काठियावाड, मुलतान और अन्य दूरवर्ती स्थानो से उत्तम श्रेणी के घ आते थे । मारवाड की पश्चिमी सीमा के लूनी नदी के किनारे वसने वाले ग्र बहुत अच्छे घोडे पाये जाते थे । उनमे राडधडा से घोडे सर्वश्रेष्ठ माने जाते थे । वर्षो से इस राज्य की राजनीतिक परिस्थितियाँ बहुत बदल गयी है । अन्य व्यव घोड़ों का व्यवसाय भी बहुत निर्बल पड़ गया है । इसलिए घोडो की सख्या अब है । सिंध नदी के पश्चिमी भाग से जो घोडे पहले आते थे, उन मे अब ब है । लूटमार के दिनो मे सैनिको को घोडो की अधिक आवश्यकता रहती थी संख्या मे बिकने के लिए बाहर से आते थे और वे खरीदे जाते थे । इन दिनो मे नीतिक परिस्थतियाँ बिल्कुल बदल गयी है । वहाँ पर अब कोई बाहरी आक्र लूटमार भी बिल्कुल बन्द हो गयी है । इसलिए घोडो की आवश्कताये भी रह गयी ।

आक्रमणकारियो के भयानक अत्याचारो के समय जो राठौर सेना युद्ध चार हजार राठौर सैनिक सवार होते थे । सैनिक सवारो की सख्या चम्पावत अधिक थी । परन्तु मारवाड की दुरवस्था के दिनो मे उनकी सख्या अधिक नही दिनो मे राठौरो के मुकामिले मे चम्पावत राजपूतो ने अपनी राजभक्ति का अ दिया । राठौर की सेना के प्रत्येक सैनिक को जो भूमि वेतन के स्थान पर दी आमदनी पाँच सौ रुपये वार्षिक की होती थी ।

मिट्टी— मारवाड मे जहाँ खेती होती है, वहाँ की मिट्टी चार तरह क बैकलू चिकनी, पीली और सफेद । बैकलू मिट्टी राज्य के अधिकाश भागो मे इस मिट्टी मे रेती का भाग अधिक रहता है । इसमे केवल बाजरा, मूँग, मटर, आदि अनाजो की पैदावार होती है । खरबूजा भी पैदा होता है । चिकनी मिट्टी क है । यह मिट्टी डीडवाना, मेडता, पाली और गोडवाड मे पायी जाती है । इस मिट्टि श्रेणी के दूसरे अनाज पैदा होते है । पीली की मिट्टी का रग हल्दी की तर

बीका पूगल के राजा के साथ सम्बन्ध जोडकर कोडमदेसर नाम के एक स्थान पर अपने रहने का निर्णय किया। उसने वहाँ पर एक दुर्ग बनवाया और वहाँ पर रह कर उसने समीप के राज्यो पर आक्रमण करना आरम्भ किया। जो राज्य पराजित हो जाते, उन पर वह अपना अधिकार कर लेता। उसके लगातार ऐसा करने से वहाँ के सभी राज्यो मे उसका आतक पैदा हो गया। वहाँ के छोटे-छोटे सभी राजा भयभीत हो उठे। ऐसे राज्यो को परास्त करके बीका ने अपने-आप को शक्तिशाली बना लिया।

अपने अधिकार की सेना को प्रबल बनाकर और अपने राज्य का विस्तार करके वह मरुभूमि के जाटो के राज्यो की तरफ अग्रसर हुआ। जो लोग बहुत प्राचीन काल से वहाँ पर रहते आ रहे थे। वर्तमान बीकानेर राज्य का अधिकाँश भाग पहले वहाँ के अधिकार मे था।

मरुभूमि मे बहुत प्राचीन काल से जाट लोग निवासी थे और प्राचीन एशिया मे जितनी भी जातियाँ रहती थी, उनमे इनकी सख्या बहुत अधिक थी। वे लोग अत्यन्त साहसी और पराक्रमी थे। बीका के आक्रमण के दिनो मे उनका राजा निर्बल पड गया था। ईसा की चौथी शताब्दी मे पजाब मे जाटो का शक्तिशाली राज्य था। भारतवर्ष मे आक्रमण के समय इन्ही जाटो ने मुसलमानो का सामना किया था। सिधु नदी को पार करके महमूद के आगे बढने पर इन्ही जाटो ने युद्ध करके अपने राज्य की रक्षा की थी और तैमूर के आक्रमण करने पर उसके साथ इन्ही जाटो ने भयकर सग्राम किया था। बादशाह बाबर ने लिखा है : "भारतवर्ष आक्रमण करने के लिए जब मैं आया था, उस समय जाटो ने मेरे साथ साथ युद्ध किया था। पजाब मे इस्लाम का आतक फैलने पर जाटो ने गुरु नानक के धर्म को स्वीकार किया और वे अपना नाम जाट बदल कर सिक्ख हो गये।'

जाट जाति के लोग भारतवर्ष मे आने के पहले एशिया के दूसरे भागो मे रहते थे और जिट अथवा जट जाति के नाम से प्रसिद्ध थे। अपने प्राचीन स्थानो को छोडकर ये लोग भारतवर्ष की मरुभूमि मे कब आये, इसका कोई ऐतिहासिक आधार हमारे पास नही है। लेकिन यह निश्चय है कि जिन दिनो मे राठौरो ने मरुभूमि के जाटो पर आक्रमण किया था, उस समय इस जाति के सामाजिक आचार और व्यवहार सीथियन आचार-व्यवहार थे। इससे जाहिर होता है कि भारतवर्ष मे आने के पहले इस जाति के लोग सीथिया मे रहते थे और इनकी जाति सीथियन जाति की कोई एक शाखा थी। उन दिनो मे ये लोग खेती का काम करते थे। जाट जाति के लोग प्राचीन काल मे एक देवी की पूजा करते थे।

अपने प्राचीन स्थानो से भारतवर्ष मे आ जाने के बाद इन जाटो पर मुस्लिम साधु शेख फकीर ने अपने धर्म का प्रभाव डाला। उस समय इनके प्राचीन धार्मिक विश्वासो मे अन्तर पडे। उनके बहुत से लोग इस्लाम की अनेक बाते मानने लगे। एक जाट ने बातचीत के सिलसिले मे मुझसे कहा था "हम लोग पजाब के बाहर रहने वाले हे।"

भारतवर्ष मे तैमूर और बाबर के आक्रमण के दिनो मे राठौरो ने जाटो को पराजित किया था। बीका से परास्त होने के पहले जाट लोग कई शताब्दियो से मरुभूमि मे रहते थे। बीकानेर राज्य छै भागो मे विभाजित है। वे छै विभाग इस प्रकार है

१—पुनिया	२—गोदरा	३—सारन
४—असिघ	५—बेनीवाल	६—जोया

कम्बल तैयार किये जाते थे, जो इसी देशो मे खप जाते थे। बन्दूक, तलवार
अस्त्र-शस्त्र जोधपुर की राजधानी मे और पाली मे बनते थे। पाली के बने हुए लो
प्रसिद्ध माने जाते थे। लोहे की कढाइयॉ और कढाह यहॉ पर बहुत
बनते थे।

व्यवसाय के सब से प्रसिद्ध स्थान—राजपूत राज्यो मे सर्वत्र व्यावसायिक
थे। मेवाड मे भीलवाड, बीकानेर मे चुरू और जयपुर मे मालपुर वाणिज्य के
माना जाता था। ठीक इसी प्रकार मारवाड मे पाली नगर बहुत प्रसिद्ध व्याव
राजस्थान मे सब से अधिक प्रसिद्ध माना जाता था। उन दिनो मे भारतीय व्यव
से भी अधिक जैन धर्मावलम्बी थे। खेतरी नामक नगर के व्यवसायी हजारो की
के लिए इस देश के दूसरे प्रान्तो मे जाते थे। ओसिया नामक स्थान मे जो व्य
ओसवाल के नाम से प्रसिद्ध थे। उनकी सख्या लगभग एक लाख के थी। वे सभ
उत्पन्न हुए थे और व्यवसाय करने के कारण वे वैश्यो मे प्रसिद्ध हो गये।

जैनियो की प्रथा के अनुसार की सम्पत्ति सभी लडको मे बराबर-ब
है। लेकिन मध्य एशिया मे जिट जाति और केल्टर के जूट लोगो मे सब से छो
हिस्सा दिया जाता है। यदि पिता के जीवन काल मे सम्पत्ति का बेटो मे बॅ
लडको के साथ पिता को मिला कर सब के भाग बराबर-बराबर कर लिए जा
भाग उनमे से सब कोई ले लेता है। पिता के मर जाने पर उसका भाग स
मिलता है। अपनी सम्पत्ति का बटवारा करके पिता प्राय: अपने छोटे पुत्र के
है। ससार मे व्यवसाय करने वाली जातियो की एक बहुत बडी संख्या है और वे
के नाम से विख्यात है। एक जैन पुरोहित ने व्यावसायिक जातियो की तालिक
चेष्टा की थी, यद्यपि उसका वह कार्य पूरा न हो सका। अपनी उस तालिका
व्यवसाय करने वाली अठारह सौ जातियो का नाम और परिचय दिया था।
व्यावसायिक जातियो के नाम उसको अपने एक जैन मित्र से—जो किसी दूर दे
और मिले। इसलिए जो तालिका तैयार करने की कोशिश की गई थी, उ
छोड दिया।

राजस्थान का ही नही, पाली भारतवर्ष का सब से बडा व्यावसायिक नगर
वहॉ पर देश के विभिन्न प्रान्तो के अतिरिक्त काश्मीर और चीन की बनी हुई व
के लिए पाली मे आती थी और उसके बदले मे वहॉ के लोग इस देश की बहु
थे, जो योरप, अफ्रीका, फारस और दूसरे देशो की बाजारो मे जाकर बिका करत
गुजरात से हाथी दॉत, नावा, खजूर, गोद, सुहागा, नारियल, रेशमी और बनात
के वस्त्र, चन्दन की लकडी, कपूर, रङ्ग विभिन्न प्रकार की औषधियॉ, काफी, म
बहुत-सी चीजे छकडो मे भरकर पाली आती थी और उन सब के बदले मे
वस्त्र, सूखे फल, जीरा, मुलतानी हीग, चीनी, सोडा, अफीम, प्रसिद्ध तैयार किये
शाले, रङ्गीन कम्बल और विभिन्न प्रकार के वस्त्रो के साथ-साथ और भी बहुत-
जाती थी।

सुईवाह, साँचौर, भीनमाल और जालौर होकर छकडो मे भरा हुआ
यहॉ पर दूर-दूर के व्यवसायी एकत्रित होते थे। पाली की वह अवस्था अब नही
व्यावसायिक गौरव बहुत समय पहले से निर्बल पड़ रहा था। लेकिन बीस वर्ष

करता था, उनमे आपसी फूट और द्वेष की जानकारी बीका को हो चुकी थी। इसलिए उसने उनकी फूट का सभी प्रकार लाभ उठाया।

जाटो पर सहज ही राठौरो की सफलता का एक और भी कारण था। बीका के भाई बीदा ने पहले ही मरुभूमि के मोहिलो पर आक्रमण करके उनको पराजित किया था। मोहिलो के साथ बहुत पहले से जाटो की शत्रुता चली आ रही थी। अिन मोहिलो ने मरुभूमि मे आक्रमण के दिनो में बीका का साथ दिया था, उन मोहिलो के द्वारा बीका को ऐसी बहुत-सी बातो की जानकारी हुई कि जिनका लाभ उठाकर बीका ने जाटो को परास्त किया और अधिकाश जाट वशी राज्यो ने भयभीत होकर आत्म-समर्पण किया।

वहाँ के जाट राज्यो मे जैसलमेर का एक राज्य भी था। वहाँ के भाटी लोग जाटो पर अनेक प्रकार के अत्याचार किया करते थे। मोहिलो और भाटी लोगो की शत्रुता के कारण भी विवश और भयभीत होकर जाटो ने बीका की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

उन्ही दिनो मे गोदारा के जाटो ने भी अपने राज्य के सम्बन्ध मे निर्णय किया था। उन लोगो ने एकत्रित होकर और निर्णय करके अपने दो प्रतिनिधियो को बीका के पास भेज कर आत्म-समर्पण करने के लिए निम्न लिखित शर्तें उपस्थित की

१—जोहिया और दूसरे राज्यो के जो जाट लोग हमारे साथ शत्रुता रखते है, उनके अत्याचारो से बीका को हमारी रक्षा करनी होगी।

२—राठौर को ऐसा प्रबन्ध करना होगा, जिसमे हमारे शत्रु भाटी लोग कभी हम लोगो पर आक्रमण न कर सके।

३—हम लोगो के व्यक्तिगत और सामाजिक स्वत्व सदा सुरक्षित रहेगे। उनमे न भी किसी प्रकार का हस्तक्षेप न किया जाएगा।

गोदारा के जाटो की इस प्रार्थना को बीका ने स्वीकार कर लिया। उसके बाद वहाँ के जाटो ने आत्म-समर्पण किया और बीका को अपना राजा मान लिया। वहाँ के जाटो के सम्बन्ध मे निर्णय हुआ कि गोदारा के प्रत्येक घर से एक-एक रुपया कर के रूप मे लिया जायेगा और वहाँ के प्रत्येक किसान से दो रुपये कर के लिए जायँगे। गोदवारा के जाटो ने इन शर्तों को स्वीकार करके राठोरो की अधीनता मन्जूर की।

गोदारा के जाटो को किसी भी अवस्था मे बीका के सामने आत्म-समर्पण करना था। क्योकि बिना किसी आक्रमण और युद्ध के वहाँ के जाटो ने आत्म-समर्पण करने के लिए आपस मे निश्चय कर लिया था। उनकी इस निर्बलता का बीका सभी प्रकार लाभ उठा सकता था। लेकिन उसने ऐसा नही किया और उसने गोदारा के जाटो की माँग को सम्मान पूर्वक स्वीकार किया। राठौरो के उत्तम चरित्र का यह एक सजीव प्रमाण है।

राजपूतो मे इस प्रकार के चरित्र का कभी अभाव नही रहा। मेवाड के प्राचीन निवासी भीलो ने गहलोत वश के प्रथम राजा के सामने आत्म-समर्पण किया था और जिस प्रकार उन भीलो ने उस समय राजा को राज-तिलक करके अधीनता स्वीकार की थी उदयपुर के राणा के वश मे आज तक उन बातो को महत्व दिया जाता है। अब तक अभिषेक के समय मेवाड मे ओगना भीलो का प्रतिनिधि अपने हाथ के अँगूठे को काट कर उसके रक्त से राजा के मस्तक पर तिलक करता है और वह राजा को सिंहासन पर बिठाता है। उन्दरी नामक भीलो का प्रतिनिधि अपने पूर्वजो के समान

चन्द्र ग्रहण, राजपुत्र का जन्य, राजा का अभिषेक इत्यादि अनेक अवसर वर्ष जिनमे अपराधियो को कारागार से छोड दिया जाता था।

दीवानी के सभी मामलो का निर्णय पञ्चायत के द्वारा होता था। पञ्चायत न होने पर राजा से प्रार्थना करने का अधिकार था। इसके लिए प्रार्थी को नियम के रुपये राजा के यहाँ जमा करने पडते थे। इस प्रकार की प्रार्थना, प्रार्थी के ग्राम सामने उपस्थित करने का अधिकारी था। पटेल का अर्थ है राज्य की भूमि का अधि वड़ा, जिसे शासन की पुरानी प्रणाली मे सामन्त कहा जाता था और उस नाम को अथवा जमीदार कहकर सम्बोधन किया जाने लगा। उस प्रर्थना की स्वीकृत राजा वादी और प्रतिवादी दोनो पक्षो को उन ग्रामो का नाम देकर निर्णय करना पडता किस ग्राम मे अपना फिर से निर्णय कराना चाहते है।

जब दोनो पक्षो के द्वारा किसी एक ग्राम का निश्चय हो जाता था, तो के अधिकारो को राजा की तरफ से सूचना दी जाती थी और वह अपने ग्राम बैठकर उस मामले का फिर से निर्णय करता था। उस ग्राम का निर्णायक दो से शपथ लेकर साक्षी लेता था। इतिहासकार हेरोडाटस ने लिखा है मुकदमो के लिए इसी प्रकार की शपथ लेने की प्रथा सीथियन लोगो मे वहुत प्राचीन रही थी।"

साक्षी लोग 'गद्दी का आन' की शपथ लेते थे। राजा के नाम की शपथ केवल राजपूतो को था। अन्य जातियो के साक्षी अपने-अपने धर्म के नाम पर थे। दोनो पक्षो की पूरी वातो को सुनकर निर्णायक अपना निर्णय देता था और वह अपनी मुहर लगा देता था। उस निर्णय के विरुद्ध किसी पक्ष को कुछ होता था।

मारवाड़ मे राज्य की आमदनी दो तरीको से होती थी। एक तो कर से गुजारी से। इसमे चार साधन प्रधान थे :

१—खालसा अर्थात् राजा के अधिकार की भूमि का कर।
२—नाम के द्वारा होने वाली आमदनी।
३—व्यावसायिक चीजो पर लिया जाने वाला कर।
४—राज्य के अन्यान्य कर, जो हासिल के नाम से वसूल किये जाते थे।

पचास वर्ष पहले राजा विजय सिंह के शासनकाल मे मारवाड के राज्य सोलह लाख रुपये की आमदनी होती थी और इस आमदनी का लगभग आधा आता था। लेकिन उसके बाद राज्य की यह आमदनी लगातार घटती गयी और इ लाख रुपये से अधिक नही है।

सामन्तो के अधिकारो मे जो जागीरे है, उनकी आमदनी का अनुमान १७ मिलाकर पचास लाख रुपये है। परन्तु इन दिनो मे इसकी आधी आमदनी के विश्वास करना कठिन मालूम होता है।

सामन्तो के अधिकार मे जो सेनाये है, उनमे पैदल सेनाओ के अतिरिक्त की संख्या पाँच हजार है। सामन्तो को वार्षिक आमदनी के एक हजार रुपये और दो पैदल सैनिक रखने का अधिकार है। इसका अर्थ यह है कि यदि किसी

भारत की मरुभूमि के उत्तरी भाग मे सतलज नदी तक जोहिया राज्य फैला हुआ था और उस राज्य मे ग्यारह सौ नगर और ग्राम थे। यद्यपि उसके वाद उस राज्य के विस्तार मे वहुत कमी हो गयी और तीन सौ वर्ष के पहले ही जोहिया का नाम भी लोप हो गया।

जोहिया का राजा शेरसिंह मरुपाल नामक स्थान मे रहा करता था। वीका के आक्रमण करने पर शेरसिंह ने वडी तेजी के साथ युद्ध की तैयारी की और अपनी सेना को लेकर उसने वीका का सामना किया। मरुभूमि के अनेक युद्धो मे वीका ने सहज ही सफलता प्राप्त की थी, परन्तु जोहिया के युद्ध मे मे शेरसिंह के साथ जो भयानक युद्ध हुआ, उसमे विजय प्राप्त करना वीका को वहुत कठिन दिखायी देने लगा। विजय प्राप्त करने मे निराश होकर वीका ने षडयत्रो का आश्रय लिया और विश्वासघात के द्वारा शेरसिंह मारा गया। इसके वाद वीका ने मरुपाल पर अधिकार कर लिया। शेरसिंह के मारे जाने के वाद जोहिया के लोगो ने विवश होकर वीका की अधीनता स्वीकार कर ली।

जोहिया को जीत कर अपनी विजयी सेना के साथ वीका पश्चिम की तरफ रवाना हुआ। भाटी लोगो के राजा ने वहुत पहले जाटो के वागर नामक नगर को छीन कर अपने अधिकार मे कर लिया था। इसलिए वीका ने सव से पहले जाटो के वागर नगर को अपने अधिकार मे कर लिया और वहाँ पर अपनी राजधानी निर्माण करने का उसने इरादा किया। वागर नगर का अधिकारी एक जाट था, जिसका नाम नेरा था। इसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। वीका ने नेरा से वागर नगर माँगकर सन् १४८६ की १५ मई को राजधानी का निर्माण करके वीकानेर उसका नाम रखा।

वीका अपने चाचा काधल के साथ मन्दोर से रवाना हुआ था। मरुभूमि मे तीस वर्ष तक रहकर और वहाँ के राज्यो को अपने अधिकार मे करके उसने वीकानेर राज्य की प्रतिष्ठा की। इसके वाद काँधल ने वीका को वीकानेर मे छोड कर उत्तर की तरफ रवाना हुआ। उसके साथ राठौरो की एक सेना थी। उस तरफ जाकर काँधल ने सिवाग वेनीवाल और सारण नामक जाटो के वशो को पराजित करके अपनी शक्तियाँ मजवूत वना ली। काँधल के वशज अव तक वीकानेर के उत्तरी भाग मे पाये जाते है और वे अव काँधलोत राठौरो के नाम से विख्यात है।

काँधल ने जिन तीन राज्यो को जीत कर अपना अधिकार कर लिया था, वे वहुत दिनो तक वीकानेर राज्य मे शामिल रहे। परन्तु उसके वाद काँधल के वशज काँधलोत राठौरो ने वीकानेर के राजा को अपना राजा नही माना और न वीकानेर की अधीनता स्वीकार की। उनका कहना था कि काँधल ने राज्यो को जीतकर उन पर अधिकार किया था और हम काँधल के वशज है। हमारे पूर्वज काँधल की सहायता से वीकानेर-राज्य को प्रतिष्ठा हुई थी इस दशा मे वीका के वशजो को, जो आज वीकानेर के सिंहासन पर है, हमको अधीनता मे लाने का अधिकार है।

वीकानेर-राज्य की स्थापना करने के वाद सन् १४६५ मे वीका को मृत्यु हो गयी। उसने पूङ्गल के भाटी राजा की लडकी के साथ विवाह किया था। उससे लूनकरन और गडसी नाम के दो लडके उत्पन्न हुये। वडा भाई होने के कारण लूनकरन पिता के सिंहासन पर बैठा। गडसी ने गडसीसर और अडसीसर नाम के दो नगर वसाये। उसके वशधर गडसियोत वीका के नाम से आज तक प्रसिद्ध है और वे लोग गडसीसर अथवा गरीवदेसर नामक स्थान मे रहते है।

सिंह के आने का रास्ता बंद कर दिया था। उस समय विजय सिंह के सामने भयान
हो गयी थी।

उस समय विजय सिंह ने एक सेना का सगठन किया और उसके खर्च के ि
घर से तीन रुपये वसूल किये। राजा विजय सिंह ने अपनी विपद के समय यह
था। परन्तु वह स्थायी रूप से प्रचलित हो गया। कुछ समय के बाद जब राज्य
के विरुद्ध विद्रोह पैदा हुआ और पठानो ने राजा की भूमि पर अधिकार कर लि
मानसिंह ने तीन रुपये के स्थान पर दस रुपये वसूल किये। इस कर के वसूल कर
रखा गया कि प्रत्येक नगर और ग्राम के घरो की गणना करके एक सूची तैयार
सूची मे प्रत्येक घर की आर्थिक अवस्था का विवरण दिया गया। उस आर्थिक
कम अधिक प्रत्येक घर से कर वसूल किया गया। गरीब घर से दो रुपये और सम्
रुपये वसूल किये गये।

वाणिज्य कर—मारवाड मे वाणिज्य पर जो कर वसूल किया जाता था,
दी जाती है। यह कर व्यवसाय की अवस्था के अनुसार घटता-बढ़ता रहता था।
की लूट, उनके अत्याचार अथवा दुर्भिक्ष के समय यह कर कम कर दिया जाता था
जो सूची दी जाती है, वह प्राचीन ग्रथो के आधार पर तैयार की गयी है।
दिनो मे जो वाणिज्य कर वसूल होता था, वह इस प्रकार है

जोधपुर	...	...
नागौर	...	...
डीडवाना	...	...
परवतसर	...	..
मेडता	...	...
कोलिया	...	...
जालौर	...	.
पाली	...	.
जैसोल और बालोतरा का मेला		.
भीनमाल	...	..
साँचोर	...	.
फलोदी	...	...

कुल

इस कर को वसूल करने के लिए राज्य की तरफ से जो अधिकारी
ढाणी कहा जाता था। एकत्रित कर पर प्रतिशत के हिसाब से ढाणी लोगो क
रूप मे मिलता था। यह कर अनाजो पर भी लिया जाता था। राज्य मे जो
थी, उन पर भी कर लगता था। जो अनाज राज्य से बाहर जाता था, उससे
जाता था।

पिता की हड्डियो को प्रवाहित करने के लिये गया था। वहाँ से लौटकर वह मुगलो की राजधानी मे चला गया। वहाँ पर आमेर का राजा मार्नसिह मौजूद था और उसने मुगल दरबार में बहुत सम्मान प्राप्त किया। राजा मार्नसिह ने रार्यसिह को लेकर बादशाह अकबर से भेंट करायी और उसने बादशाह को रार्यसिह का परिचय दिया।

बादशाह अकबर रायसिह से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने रायसिह को चार हजार अश्वारोही सेना का पदाधिकारी बना दिया। इसके साथ ही बादशाह ने रार्यसिह को हिसार का शासक नियुक्त किया और राजा की उपाधि देकर बादशाह ने विशेष रूप से बीकानेर के नरेश को सम्मानित किया।

इन्ही दिनो मे जोधपुर के राजा मालदेव के अप्रिय व्यवहारो के कारण बादशाह अकबर ने मारवाड पर आक्रमण किया और वहाँ के सम्पत्तिशाली राज्य नागौर को जीतकर उसका अधिकार रार्यसिह को दे दिया। इस प्रकार बादशाह से लगातार सम्मानित होकर रार्यसिह बीकानेर लौट गया और अपने राज्य मे पहुँचकर छोटे भाई रामसिह को एक राठौर सेना के साथ भाटी लोगो के प्रसिद्ध नगर भटनेर पर आक्रमण करने के लिए भेजा। रामसिह ने वहाँ पहुंचकर भटनेर और उसके आस-पास के अनेक स्थानो पर अधिकार कर लिया। इसके बाद वह बीकानेर भटनेर और उनके आस-पास के अनेक स्थानो पर अधिकार कर लिया। इसके बाद वह बीकानेर लौट आया।

जोहिया के जाटो ने राठौरो की अधीनता स्वीकार करने के बाद बहुत समय तक किसी प्रकार का विद्रोह नही किया। लेकिन दिल्ली से लौटकर और बादशाह से सम्मानित होकर जब रार्यसिह अपनी राजधानी को जा रहा था तो जोहिया के जाटो ने विद्रोह करने का इरादा किया। यह देखकर रायसिंह ने एक राठौर सेना उन पर आक्रमण करने के लिए भेजी। बीकानेर की उस सेना ने वहाँ पहुँचकर जोहिया के जाटो के साथ भयानक अत्याचार किया। उस आक्रमण मे हजारो जाट जान से मारे गये और राठौर सेना ने उनके राज्य मे भीषण रूप से नर-सहार किया। उस समय के विध्वस और विनाश से जोहिया का राज्य सदा के लिए निर्बल और जन-शून्य हो गया।

जोहिया राज्य के ग्रामो और नगरो मे यूनान के सिकन्दर का नाम अब तक प्रसिद्ध है। दादूसर नामक स्थान मे नष्ट-भ्रष्ट प्राचीन महल अब तक मौजूद है जिसे लोग रगमहल कहते हैं। कहा जाता है कि यूनान के सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया था, उस समय उसने दादूसर मे पहुँचकर उसके राजा को उसने परास्त किया था और दादूसर को विध्वस किया। यह बात सही है कि सिकन्दर ने भारत मे आकर अनेक राज्यो पर आक्रमण किया था और पजाब मे उसे भीषण सग्राम करना पडा था। लेकिन जोहिया के जाटो पर सिकन्दर के आक्रमण करने का कोई उल्लेख इतिहास मे नही पाया जाता। हो सकता है कि सिकन्दर के जिस यूनानी सेनापति ने समुद्र के समीप अपना राज्य कायम किया था, उसने किसी समय जोहिया पहुँचकर दादूसर पर आक्रमण किया हो और वहाँ के विध्वस के साथ-साथ उसने इस रगमहल को बरबाद किया हो।

रायसिह के भाई रामसिंह ने जोहिया के जाटो को दमन करके अपनी सेना के साथ पूनिया की तरफ जाने का इरादा किया। बीका के वशजो ने गोदारा और जोहिया के जाटो को पराजित कर लिया था। परन्तु पूनिया के जाट अभी तक स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर रहे थे। रामसिह अपनी सेना के साथ वहाँ पहुँच गया। पूनिया के जाटो ने शक्ति भर युद्ध करके राठौर सेना का मुकाबिला किया। अत मे उनकी पराजय हुई और राठौर सेना ने उनके राज्य पर भी अधिकार कर लिया। रामसिह ने इन दिनो मे जिन राज्यो मे अधिकार किया था, वही पर उसने रहने का विचार किया। जिन जाटो ने पराजित होने के बाद राठौरो की

अपनी सम्पत्ति को बहुत छिपा कर रखने की आदत इस देश के निवासियो की
बड़ी-से बडी सम्पत्ति को छिपाकर रखने का सबसे पहला दुष्परिणाम यह होता है
उपयोग नही हो पाता, जिससे वह सम्पत्ति जितनी होती है, उतनी ही रह जाती
कोई वृद्धि हो पाती है और न उसके द्वारा व्यक्तिगत अथवा देश का कोई अच्छा
नागौर के महलो को गिरवाने के समय राजा विजय सिंह को जमीन मे गडी हुई ब
मिली थी ।

मारवाड राज्य के सम्बन्ध मे बहुत सी बातो का वर्णन किया जा चुका है
का उल्लेख करना बाकी है कि राठौर राजपूतो मे युद्ध करने की शक्ति किस प्रकार
आमदनी के घटने-बढने के साथ-साथ उनकी सेना मे समय-समय पर कमती और
है । विद्रोही सामन्तो को दमन करने के लिए मारवाड के राजा को वैतनिक
आवश्यकता पडी थी । उस सेना मे जो सैनिक थे, उनमे रुहेले और अफगानी
बन्दूकधारी थे । उनके साथ मे तोपे भी थी । वे लोग युद्ध करने मे बडे शूरवीर थे ।

कुछ दिनो के बाद मारवाड की वैतनिक सेना और राज्य की राठौर सेना
गया था । राजा मानसिह के शासनकाल मे वैतनिक सेना के अन्तर्गत साढे तीन
पन्द्रह सौ अश्वारोही सैनिक थे । उस सेना मे पच्चीस तोपे थी । पानीपत का र
खॉ उस सेना का सेनापति था । वह विजय सिंह के समय से मारवाड से सम्बन्ध
मारवाड के राज दरबार मे उसने बड़ा सम्मान पाया था । राजा के साथ उसकी
था । राजा मानसिह काका कहकर उसको सम्बोधन करता था ।

इस वैतनिक सेना के अतिरिक्त मारवाड मे योद्धाओ का एक दूसरा द
नाम था विष्णु स्वामी दल । कायमदास उस दल का सेनापति था । उस दल मे
तीन सौ अश्वारोही सैनिक थे और बहुत-से उसके सैनिक धनुर्धारी थे । ये ध
लेकर शत्रुओ के साथ युद्ध करते थे ।

योरप मे बारूद का आविष्कार होने के अर्ध शताब्दी पूर्व भारतवर्ष के
द्वारा युद्ध करने मे बहुत होशियार और शूरवीर होते थे । इस वैतनिक सेना के पह
राठौर की सेना थी और वे राठौर युद्ध करने मे बडे बहादुर समझे जाते थे । प
के साथ राज्य के सामन्तो का जब विद्रोह पैदा हुआ था उस समय मानसिह को स
का विश्वास न रह गया था । उस दशा मे राजा मानसिह ने अपनी रक्षा के लिए
नियुक्ति की थी । इस वैतनिक सेना के द्वारा मानसिह राज्य के सामन्तो को दमन
इन दिनो मे राज्य का नैतिक जीवन बहुत क्षीण हो गया था । लोग अपने कर्त्तव्यो
थे और कर्त्तव्य के अभाव मे मारवाड के राठौर सभी प्रकार अपना विनाश स्वय
विद्रोह के दिनो मे यह वैतनिक सेना राज्य मे रखी गयी थी । उस समय के वा
बल भयानक रूप से नष्ट हुआ था । यह दशा लगातार बढी ।

उन दिनो मे मेवाड के प्रधान सामन्तो की सख्या सोलह थी, जयपुर के
बारह थी । मारवाड मे प्रथम श्रेणी के सामन्त आठ थे । उनके अतिरिक्त दू
की सख्या सोलह थी । इस राज्य के सामन्तो की सूची उनके पूरे विवर
जाती है :

राठौर सेना को लेकर मुगल बादशाह की तरफ से युद्ध करने गये थे। दक्षिणी भारत को विजय करने के लिए मुगल बादशाह की जो फौज गयी थी, उसकी सहायता मे कर्णसिह के चारो लडके राठौर सेना के साथ गये थे। उसमे पद्मसिह केशरीसिह मारे गये। वही दक्षिण मे बादशाह के शिविर मे एक घटना हुई। कर्णसिह का तीसरा लडका मोहनसिह मुगल सेना के शिविर मे बैठा था और वही पर शाहजादा मोअज्जम भी था। एक हिरन के बच्चे के लिए मोअज्जम के साथ मोहन-सिह का झगडा हो गया। उस झगडे मे दोनो ने तलवारे निकाली और एक, दूसरे पर आक्रमण किया। मोअज्जम की तलवार से मोहनसिह जख्मी हुआ और गिरते ही उसकी मृत्यु हो गयी। तवारीख फरिश्ता मे लिखा है कि इस दुर्घटना को सुनकर राजस्थान के उन राजाओ पर बहुत बुरा प्रभाव पडा जो बादशाह की तरफ से युद्ध करने के लिए दक्षिण मे गये थे और वे सभी राजपूत क्रोधित होकर बादशाह के शिविर से बीस मील की दूरी पर चले गये।

तवारीख फरिश्ता के अनुसार दक्षिण मे बीजापुर का युद्ध इस दुर्घटना के बाद हुआ, जिसमे कर्णसिह के दोनो लडके मारे गये थे। अब अनूपसिह अपने पिता का अकेला लडका रह गया था। कर्णसिह के परलोक वास करने पर उसने सन् १६७४ ईसवी मे राजा की उपाधि लेकर और सिहासन पर बैठकर शासन आरम्भ किया।

राजा रायसिह के समय से दिल्ली के बादशाह के यहाँ बीकानेर के राठौरो की मर्यादा बढ गयी थी। इसका कारण यह था कि बीकानेर से अनेक अवसरो पर बादशाह को सहायता मिली थी। अनूपसिह स्वय साहसी और वीर पुरुष था। मुगल बादशाह ने पाँच हजार अश्वारोही सेना का मनसब बनाकर और राजा की उपाधि देकर उसे बीजापुर तथा औरगाबाद का शासक नियुक्त किया था। अनूपसिह ने भी इसके बदले मे कई मौको पर बादशाह की सहायता की थी। इससे बादशाह और भी अधिक प्रसन्न हुआ था।

जिन दिनो मे काबुल के अफगान दिल्ली के बादशाह के विद्रोही हो गये थे, बादशाह ने उन विद्रोहियो को दमन करने के लिए मारवाड के राजा को भेजा था। उस समय अनूपसिह भी बीकनेर की सेना लेकर बादशाह के आदेश से काबुल का विद्रोह दमन करने के लिए गया था। इस विद्रोह के शात हो जाने के बाद भी बादशाह की तरफ से अनूपसिह ने कई युद्ध किये।

अनूपसिह की मृत्यु के सम्बन्ध मे दो प्रकार के उल्लेख पाये जाते है। फरिश्ता ने अपने इतिहास मे लिखा है कि राजा अनूपसिह की मृत्यु दक्षिण मे हुई थी, परन्तु राठौरो के इतिहास से जाहिर होता है कि अनूपसिह दक्षिण के युद्ध मे अपनी सेना लेकर गया था। वहाँ पर शिविर बनाने के स्थान पर बादशाह के प्रधान सेनापति के साथ उसका झगडा हो गया। इसलिए अप्रसन्न होकर वह दक्षिण से अपने राज्य मे चला आया और उसके बाद उसकी मृत्यु हो गयी। स्वरूपसिह और सुजानसिह नाम के दो लडके अनूपसिह के थे।

अनूपसिह की मृत्यु के बाद सम्वत् १७६५ सन् १७०६ ईसवी मे स्वरूपसिह सिहासन पर बैठा।* परन्तु उसने बहुत थोडे दिन राज्य किया। राजा अनूपसिह ने अपने जीवन के अतिम दिनो मे बादशाह के साथ सभी सम्बन्ध तोड दिये थे। इसलिए बादशाह की तरफ से जो उसे ओडनी राज्य मिला था, वह वापस ले लिया गया। सिहासन पर बैठने के बाद स्वारूपसिह ने अधिकार

---

* बीकानेर के एक ग्रथ मे लिखा है कि राजा अनूपसिह की मृत्यु सम्वत् १७५५ मे दक्षिण मे हुई। उसके साथ उसकी अठारह रानियाँ सती हुई थी।

मारवाड के इन सब सामन्तो को उनकी शक्ति और योग्यता के अनुसार जागीरे मिली हुई है, उनके अधिकारी बन कर ये लोग रहते है और आवश्यकता की आज्ञा का पालन करते है। इनके सिवा बाढमर, कोटडा, जसोल, फ बाँकडा, कालिन्दरी और बरूँदा के जागीरदार भी है। यदि राजा आवश्यकता के से माँग करे तो वे भी उसकी आज्ञाओ का पालन कर सकते है। इन जागीरदार जागीरदारो अथवा सामन्तो की सूची मे शामिल नही किये गये।

राज्य के जिन सामन्तो के नाम और परिचय ऊपर लिखे गये है, उनके अथवा जागीर पूर्ण रूप से सही नही हो सकती। इसका कारण है कि ऊप राज्य के बहुत पुराने लेखो से तैयार की गयी है। वे लेख जिन दिनो मे लिखे ग वर्तमान दिनो मे बहुत अन्तर पड गया है। बाहरी आक्रमणो, अत्याचारो औ कारण राज्य सभी परिस्थितियाँ बहुत निर्बल पड गयी है। यह निर्बलता प्रा लगातार बढी है। इसीलिए इस बढती हुई निर्बलता मे सामन्तो की परिस्थितिय कुछ भी अस्वाभाविक नही है। इसलिए राज्य के अधिकारी बहुत दिनो से स एक नयी तालिका तैयार करने की आवश्यकता को अनुभव कर रहे थे। ज अनुसार, राज्य मे जो विधान प्राचीन काल से चला आ रहा था, उसमे अनेक हो गये है।

अफीम का व्यवसाय

इस ग्रथ से राजपूतो के अफीम सेवन करने का उल्लेख अनेक स्थलो इससे यह जाहिर है कि राजपूत लोग और विशेष कर राजा और नरेश अफी करते थे। यह अफीम खाने-पीने के अन्यान्य पदार्थों की भाँति उनके लिए आ जिसके द्वारा उनकी शारीरिक और नैतिक शक्ति को भयानक आघात पहुँचा था। और व्यवसाय राजपूतो के साथ-साथ अन्य लोगो मे किस प्रकार बढा था, उसके यहाँ पर देने की हम चेष्टा करेगे।

राजस्थान के सभी राज्यो मे प्राचीन काल से अफीम के सेवन की आदते इन आदतो के कारण उन राज्यो मे अफीम की खपत बढने लगी और उसने धीरे व्यवसाय का रूप धारण किया। यह खपत जितनी ही बढती गयी, उसके व्य उन्नति होती गयी और व्यवसाय मे जितनी ही वृद्धि हुई, राज्यो मे उसके विस्तार होता गया, जिससे वहाँ के स्वास्थ्य को बहुत क्षति पहुँची।

गवर्ननर जनरल के एजेएट लेफ्टिनेएट कर्नल ई० आर० सी० ब्राडफोर्ड राजस्थान मे जाकर वहाँ के शासन के सम्बन्ध मे जो विस्तृत वर्णन अँगरेज गवर्न था। उसमे उसने लिखा था :

राजस्थान के बडे-बडे व्यवसायी अपने धन के प्रलोभन मे अफीम के व्य लगे हुए है। बडे व्यवसायी अपने से छोटे व्यवसायियो को पहले से ही रुपये दे व्यवसायी महाजनो को रुपये देते है। महाजनो के द्वारा गाँवो के रहने वाले कृ से ऋण मिलता है। रुपये लेकर कृषक अफीम तैयार करते है और उसे महाजनो का महाजन उस अफीम को लेकर रुपया देने वाले व्यवसायियो के पास पहुँचा सायी उस अफीम को बड़े व्यवसायियो के पास पहुँचाने का काम करते है।

सामन्तो और मन्त्रियो को मिलाने की जो चेष्टा कर रहा था, उसका एक रहस्य था। वह राजसिंह के बालक प्रतापसिंह को सिंहासन पर बिठा कर और थोड़े दिनो का नाटक खेल कर ससार से उसे विदा कर देना चाहता था। इसके लिए पहले के ही सामन्तो और मन्त्रियों का मिला लेना, उसके लिए जरूरी था जिससे वे लोग बाद मे किसी प्रकार का विद्रोह न कर सके।

बालक प्रतापसिंह के नाम पर अठारह महीने के शासन मे उसने अपनी समझ मे सामन्तो और मन्त्रियो को अनुकूल बना लिया। सूरतसिंह महाजन और भादरां के सामन्तो को अपना विशेष अनुयायी और समर्थक समझता था। इसलिए उसने बालक प्रतापसिंह के सम्बन्ध मे अपने विचारो को उन दोनो सामन्तो से प्रकट किया। सूरतसिंह के विचार सुनकर दोनो सामन्त घबरा उठे। उनकी समझ मे सूरतसिंह का यह विचार अत्यन्त घृणित और निन्दनीय था। सूरतसिंह ने उन दोनो सामन्तो को प्रसन्न करने के लिए भूमि और सम्पत्ति दी, जिससे वे उसके अभिप्राय को किसी से प्रकट न कर सके। फिर भी सूरतसिंह का वह इरादा अप्रकट न रह सका। बीकानेर के दीवान बख्तावार सिंह को जब सूरतसिंह के उस पैशाचिक अभिप्राय की जानकारी हुई तो उसने राजसिंह के बालक प्रतापसिंह के प्राणो की रक्षा का प्रयत्न किया। लेकिन बख्तावरसिंह की चेष्टा सफल न हो सकी। सूरतसिंह ने बख्तावरसिंह को अपराधी करवा लिया।

बख्तावरसिंह के सम्बन्ध मे सूरतसिंह की धारणा पहले से ही अच्छी न थी। वह बख्ता-वरसिंह को अपना विरोधी समझता था। बालक प्रतापसिंह के सम्बन्ध मे जो विश्वासघात सूरत-सिंह के हृदय मे छिपा हुआ था उसके प्रकट हो जाने से राज्य के अनेक सामन्तो मे विद्रोहात्मक भावनाये उठने लगी। सूरतसिंह इन परिस्थितियो से अपरिचित न रहा। आने वाली भयानक परिस्थितियो की कल्पना करके सूरतसिंह ने बीकानेर के सामन्तो के पास आदेश भेज कर उनको राजधानी मे बुलाया। लेकिन महाजन और भादरां के दोनो सामन्तो के सिवा अन्य कोई भी सामन्त राजधानी मे नही आया।

भेजे हुए आदेश का सामन्तो के पालन न करने पर सूरतसिंह बहुत क्रोधित हुआ और वह अपने साथ एक सेना लेकर आज्ञा-पालन न करने वाले सामन्तो का दमन करने के लिए राजधानी से रवाना हुआ। नौहर नामक स्थान मे पहुँचकर सूरतसिंह ने भूखर के सामन्त को अपने पास बुलवाया और उनको कैद करके नौहर के दुर्ग मे बन्द करवा दिया। इसके बाद उसने अजितपुर नामक स्थान की लूट की और साँखू नामक स्थान पर आक्रमण किया। वहाँ के सामन्त दुर्जनसिंह ने सूरतसिंह का सामना किया। लेकिन बीकानेर की सेनाके साथ युद्ध करने के लिये उसके पास सेना काफी न थी। इसलिए पराजित होने की अवस्था मे आत्मघात करके वह मर गया।

साँखू मे विजयी होने के बाद सूरतसिंह ने दुर्जनसिंह के लड़को से बारह हजार रुपये लिए। इसके बाद वह अपनी सेना के साथ साँखू से चलकर राज्य के प्रसिद्ध व्यावसायिक नगर चूरू को घेर लिया और छै महीने तक वह उस नगर को घेरे पडा रहा। लेकिन उसको सफलता न मिली।

भूखर के जिन सामन्तो को कैद करके सूरतसिंह ने नौहर के दुर्ग मे रखा था, वे बीकानेर राज्यो के सामन्तो मे शक्तिशाली सामन्त माने जाते थे। उनको इस बात की चिन्ता होने लगी कि सूरतसिंह राज्य के सभी सामन्तो के साथ इस प्रकार अलग-अलग दुर्व्यवहार करेगा और सामन्त कुछ न कर सकेगे। इसलिए वे सूरतसिंह को बीकानेर के सिंहासन पर बिठाने के लिए ही गये और उनके तैयार हो जाने पर कुछ दूसरे सामन्तो ने भी सूरतसिंह के पक्ष मे अपनी सम्मति दे दी। इसके लिए एक कागज लिखा गया। उस पर उन सामन्तो के हस्ताक्षर हो गये, इसके बाद

मारवाड के इन सब सामन्तो को उनकी शक्ति और योग्यता के अनुसार जागीरे मिली हुई है, उनके अधिकारी बन कर ये लोग रहते है और आवश्यकता की आज्ञा का पालन करते है। इनके सिवा बाढमर, कोटडा, जसोल, फ बॉकडा, कालिन्दरी और बरूंदा के जागीरदार भी है। यदि राजा आवश्यकता के से मॉग करे तो वे भी उसकी आज्ञाओ का पालन कर सकते है। इन जागीरदारो जागीरदारो अथवा सामन्तो की सूची मे शामिल नही किये गये।

राज्य के जिन सामन्तो के नाम और परिचय ऊपर लिखे गये है, उनके अ अथवा जागीर पूर्ण रूप से सही नही हो सकती। इसका कारण है कि ऊप राज्य के बहुत पुराने लेखो से तैयार की गयी है। वे लेख जिन दिनो मे लिखे ग वर्तमान दिनो मे बहुत अन्तर पड गया है। बाहरी आक्रमणो, अत्याचारो औ कारण राज्य सभी परिस्थितियाँ बहुत निर्बल पड गयी है। यह निर्बलता प्रा लगातार बढी है। इसीलिए इस बढती हुई निर्बलता मे सामन्तो की परिस्थितिय कुछ भी अस्वाभाविक नही है। इसलिए राज्य के अधिकारी बहुत दिनो से सा एक नयी तालिका तैयार करने की आवश्यकता को अनुभव कर रहे थे। ज अनुसार, राज्य मे जो विधान प्राचीन काल से चला आ रहा था, उसमे अनेक हो गये है।

अफीम का व्यवसाय

इस ग्रथ से राजपूतो के अफीम सेवन करने का उल्लेख अनेक स्थलो इससे यह जाहिर है कि राजपूत लोग और विशेष कर राजा और नरेश अफ करते थे। यह अफीम खाने-पीने के अन्यान्य पदार्थों की भाँति उनके लिए आ जिसके द्वारा उनकी शारीरिक और नैतिक शक्ति को भयानक आघात पहुँचा था। और व्यवसाय राजपूतो के साथ-साथ अन्य लोगो मे किस प्रकार बढा था, उसके यहाँ पर देने की हम चेष्टा करेगे।

राजस्थान के सभी राज्यो मे प्राचीन काल से अफीम के सेवन की आदते इन आदतो के कारण उन राज्यो मे अफीम की खपत बढने लगी और उसने धीरे व्यवसाय का रूप धारण किया। यह खपत जितनी ही बढती गयी, उसके व्य उन्नति होती गयी और व्यवसाय मे जितनी ही वृद्धि हुई, राज्यो मे उसके विस्तार होता गया, जिससे वहाँ के स्वास्थ्य को बहुत क्षति पहुँची।

गवर्ननर जनरल के एजेण्ट लेफ्टिनेण्ट कर्नल ई० आर० सी० ब्रॉडफोर्ड राजस्थान मे जाकर वहाँ के शासन के सम्बन्ध मे जो विस्तृत वर्णन अँगरेज गवर्न था। उसमे उसने लिखा था

राजस्थान के बडे-बडे व्यवसायी अपने धन के प्रलोभन मे अफीम के व्य लगे हुए है। बडे व्यवसायी अपने से छोटे व्यवसासियो को पहले से ही रुपये दे व्यवसायी महाजनो को रुपये देते है। महाजनो के द्वारा गाँवो के रहने वाले से ऋण मिलता है। रुपये लेकर कृषक अफीम तैयार करते है और उसे महाजनो का महाजन उस अफीम को लेकर रुपया देने वाले व्यवसायियो के पास पहुँचा सायी उस अफीम को बड़े व्यवसायियो के पास पहुँचाने का काम करते है।

एक रास्ता खोला है । अब तक मैंने उस बालक की रक्षा की थी । भविष्य मे भगवान उसकी रक्षा करेगा ।"

बहन की इन बातो को सुनकर सूरतसिह के ऊपर कोई प्रभाव न पडा । प्रकट रूप मे उसको सान्त्वना देने के लिए उसने कहा कि ऐसी बात बिलकुल नही है । तुम्हारा अनुमान बिलकुल निराधार है । सूरतसिह के मुख से इस बात को सुनकर राजकुमारी ने साहसपूर्ण शब्दो मे कहा : "वास्तव मे यदि आपके हृदय मे उस बालक के प्रति इस प्रकार का विश्वासघात नही है तो सब के सामने अपने देवता की शपथ लेकर कहिए कि मैं अपने इस भतीजे के साथ किसी प्रकार का विश्वास घात न करूँगा ।"

राजकुमारी की एक भी न चली । उसके ससुराल चले जाने के बाद सूरतसिह ने महाजन के सामन्तो को बुलाकर उस बालक की हत्या करने का आदेश दिया । वे सामन्त बहुत दिनो से सूरतसिंह के अनुयायी और पक्षपाती थे । परन्तु ऐसा करने से उन्होंने साफ-साफ इनकार कर दिया । इसके लिए सूरतसिह को जब और कोई रास्ता न मिला तो उसने स्वय अपनी तलवार से राजसिह के बालक को मार डाला ।

उस बालक के मारे जाने के बाद सूरतसिह अपने सौभाग्य का निर्माण न कर सका । उस बालक की जिस प्रकार हत्या हुई उसका समाचार बीकानेर के प्रत्येक घर मे फैला और राज्य के प्रत्येक राठोर ने उस बालक के प्रति इस अपराध को सुनकर आँखो से आँसू गिराये । राजसिह के दो भाई सुरतानसिह और अजबसिह भयभीत होकर जयपुर चले गये थे, सूरतसिह के द्वारा राजसिह के बालक के मारे जाने का समाचार उन्होंने सुना । अत्यन्त क्रोधित होकर उन दोनो भाइयो ने सूरतसिंह को इसका बदला देने का निश्चय किया और भटनेर मे आकर दोनो भाइयो ने बीकानेर के सामन्तो को बुलाकर सूरतसिह को सिंहासन से उतार देने की तैयारी की । सूरतसिह के इस असभ्य अपराध को सभी सामन्त जानते थे । लेकिन जिन सामन्तो को अनैतिक रूप से भूमि और सम्पत्ति देकर सूरतसिह ने अपने पक्ष मे कर रखा था, वे सूरतसिह के विरोध मे सुरतानसिह और अजबसिह की सहायता करने का साहस न कर सके । परन्तु भाटी लोग खुलकर दोनो भाइयो की सहायता करने के लिए तैयार हो गये वह समाचार बीकानेर मे सूरतसिह को मिला । उसने सुरतानसिह और अजबसिह को युद्ध की तैयारी का मौका नही दिया और उसने अपनी सेना लेकर एक साथ उन पर आक्रमण कर दिया ।

बागोर नामक स्थान मे दोनो ओर से भयानक युद्ध हुआ । तीन हजार भाटी लोगो ने सूरतसिह के विरुद्ध सुरतानसिह और अजबसिह का साथ देकर युद्ध किया था । उनके मारे जाने पर सूरतसिह की विशाल सेना विजयी हुई । विरोधियो का सर्वनाश करके और युद्ध मे विजयी होकर उस युद्ध भूमि मे सूरतसिह ने एक दुर्ग का निर्माण कराया, जिसका नाम रखा गया, फतहगढ ।

सूरतसिह के जीवन मे जो बाधाये थी, वे अब सब की सब समाप्त हो चुकी थी । सूरतसिंह को अब किसी का भय न था । इसलिए सभी प्रकार निर्भीक होकर उसने शासन का कार्य आरम्भ किया । उसने सजातीय बीदावत लोगो के राज्य पर आक्रमण किया और वहाँ से उसने पचास हजार रुपये कर के सम्बन्ध मे वसूल किये । सूरतसिह ने सुना था कि चूरू के सामन्त सुरतानसिह और अजबसिह की युद्ध मे सहायता करेगे । इसलिए उसने चूरू पर फिर से आक्रमण

बीकानेर का इतिहास

सैंतालीसवाँ परिच्छेद

बीकानेर राज्य और उनका प्रष्ठिाता—बीका की प्रतिज्ञा—उसके अ
उसकी विजय मरुभूमि के निवासी जाट—बीकानेर का विभाजन—बीका का रण-
आत्म-समर्पण—बादशाह अकबर—अकबर का मारवाड पर आक्रमण—रार्या
अकबर—अकबर के दरबार मे राठौर की मर्यादा—राजा सूरतसिंह के साथ सामन
सामन्तों का दमन—प्रजा का असन्तोष—भावलपुर से युद्ध ।

राजस्थान के राज्यो मे बीकानेर का स्थान दूसरी श्रेणी मे है । यह राज्य
शाखा है । इसके राजवशी राठौर वशज है । बीकानेर के जिस प्रथम राजा ने इस
की थी, उसके पूर्वज राठौर वशी थे । राठौर राजा जोधा ने प्राचीन राजधानी मन
जोधपुर का निर्माण किया था, इसका वर्णन मारवाड के इतिहास मे किया जा चुका

बीका राजा जोधा का दूसरा लडका था । नवीन राजधानी जोधपुर का ि
बाद और मन्दोर से जोधा के जोधपुर मे आ जाने के पश्चात् बीका अपने चाचा
मरुभूमि मे अपने राज्य का विस्तार करने के लिए निकला । उसके साथ तीन सौ
सेना थी । बीका के जोधपुर से निकलने के पहले उसके भाई बीदा ने मोहिलो पर
और उनके राज्य को जीत कर अपने राज्य मे मिला लिया । माहिल लोग बहुत
अपने राज्य मे रहा करते थे । बीदा की इस सफलता से बीका को प्रोत्साहन मि
के दूसरे राज्यो को परास्त करके राठौरो का राज्य बढाने के लिए वह जोधपुर से

जोधपुर से रवाना होने के समय बीका ने स्वाभिमान के साथ यह प्रतिज्ञा क
के जिन राज्यो पर मै आक्रमण करूँगा, उनको या तो मै परास्त करूँगा, अथवा
जाऊँगा । उसकी यह प्रतिज्ञा यहाँ के किसी भी दूसरे राज्य के सम्बन्ध मे हुई थी ।
राज्य मित्रता रखता हो अथवा शत्रुता । इस प्रकार के आक्रमण करके दूसरे रा
करना और उनको अपने राज्य मे मिला देना राजपूत लोग अपना धर्म समझते थे ।

जोधपुर से रवाना होकर बीका ने जांगल नामक स्थान पर साङ्खला नाम
जाति पर आक्रमण किया । उस युद्ध मे राठौरो की विजय हुई । उसमे सफलता प्र
पूंगल राज्य के भाठी लोगो के साथ बीका का परिचय हुआ । पूगल का राजा बीक
देखकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने बीका के साथ अपनी लडकी का विवाह
राजा को बीका से भय उत्पन्न हुआ था । इसलिए अपनी लडकी का विवाह उसके
अपने राज्य की रक्षा की ।

४—सतीसर का सामन्त कर्णसिंह ...	१५०	६		
५—जसाना शारोह का अनूपसिंह ...	२५०	४०		
६—इमनसर का सामन्त खेतसिंह ...	३५०	६०		
७—जाँगल का सामन्त वेनीसिंह ...	२५०	६		
८—वितानो का सामन्त भूमसिंह	६१	२		
जोड	३६११	५२८		
६—मोजी परिहार के अधिकार की ...				२१
१०—नरपति की विदेशी सेना और खासपटार्गा		२००		
११—गगासिंह के अधिकार मे	१५००	२००	...	४
१२—दुर्जनसिंह के अधिकार मे ..	६००	३०	...	४
१३—अनेकासिंह (सिक्ख सामन्त)		३००		
१४—लाहौरीसिह (सिक्ख सामन्त) ...		२५०		
१५—बुधसिंह (सिक्ख सामन्त)		२५०		
१६—अफगान सामन्त सुलतानखाँ और अहमदखाँ के साथ		...		
जोड	५७११	१७५८		२६

राजा सूरतसिंह ने इन सब सेनाओ को एकत्रित करके अपने राज्य के दीवान के लडके जैतराव मेहता को प्रधान सेनापति बनाया और वह सन् १८०० जनवरी के महीने मे भावलपुर राज्य पर आक्रमण करने के लिये रवाना हुआ। सेनापति जैतराव ने अपनी राजधानी से चलकर कुनसर, पराजसर केली और रानेर होकर अनोहागढ पहुँच गया और वहाँ से चलकर शिवगढ और भोजगढ को पार करके फूलरा मे मुकाम किया।* हिन्दूसिंह नाम के एक भाटिया सरदार ने भोजगढ पहुँचकर उस पर अधिकार कर लिया और और वहाँ के दुर्ग मे पहुँचकर दुर्ग के अधिकारी मोहम्मद मासफ की सेना को पराजित किया और उसकी स्त्री को कैद करके उसने बीकानेर भेज दिया। उसके बाद पाँच हजार रुपये और चार हजार ऊँट लेकर उस स्त्री को छोड दिया गया। बीकानेर की सेना कई सप्ताह तक शिवगढ भोजगढ और फूलरा के दुर्गो को घेरे रही। इसके बाद विजयी होकर उस सेना ने वहाँ से एक लाख पच्चीस हजार रुपये अनेक कीमती चीजे और नौ तोपे लेकर अधिकार मे कर ली।

भावलपुर राज्य की सीमा के निकटवर्ती स्थानो और नगरो पर आतक पैदा करके बीकानेर की सेना सिन्धु नदी से तीन मील के फासिले पर खेरपुर पहुँच गयी। भावलपुर राज्य के जो सामन्त वहाँ के राजा से असन्तुष्ट थे, वे भी जैतराव के साथ आकर मिल गये। भावलपुर के राजा भावलखाँ ने बीकानेर की सेना को आगे बढता हुआ देखकर युद्ध की परिस्थिति पर विचार किया। उसने इस अवसर पर बुद्धिमानी से काम लिया और अनेक प्रकार के प्रलोभनो के द्वारा उसने बीकानेर की सेना के सहायको को तोडने की कोशिश की। उसने सेनापति जैतराव का बहुत सम्मान किया, जिससे प्रभावित होकर जैतराव ने भावलपुर राज्य के जीते हुये नगरो से अपना अधिकार हटा लिया और भावलपुर से लौटकर चला आया। इससे सूरतसिंह उससे बहुत अप्रसन्न हुआ और उसको

*भोजगढ का पुराना नाम कुल्लूर था और यह मरुभूमि के प्राचीन नगरो मे एक नगर था जो जोहिया की तरह प्रसिद्ध था।

जाट जाति के लोग छै शाखाओ मे विभाजित थे। उन्ही के नामों से प्रसिद्ध हुए थे। इन छै विभागो के सिवा बीकानेर राज्य के तीन विभाग और है, पट्टा और मोहिल के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार सम्पूर्ण बीकानेर राज्य के ने राज्य के छै विभाग जाटो से छीने थे और तीन विभाग दूसरे राजपूतो से। ८ राज्य का एक जिला है। ये छै जिले जो जाटो से छीने गये थे, बीकानेर राज्य भाग मे है। शेष तीन जिले राज्य के दक्षिण और पश्चिम मे है उस समय के छै इस प्रकार है :

विभाग	ग्राम	परगने
१—पूनिया	३००	भादरॉ, अजितपुर, सीधमुख, राजगढ़ दारद, साँकू
२—बेनीवाल	१५०	भूरवरखा, सुन्दरी, मनोहरपुर, कूई बाई आदि।
३—जोया	६००	जैतपुर, कंवानो, महाजन, पीपसर, उदयपुर आदि।
४—असिध	१५०	रावतसर, विरामसर, दादूसर, गुंडइली, कोजर, फु
५—सारन	३००	बूचावास, सोवाई, बादनू, सिरसिला आदि।
६—गोदारा	७००	पुन्दरासर, गोसेनसर (बड़ा), शेखसर, गडसीसर,
जौड	२२००	कालू आदि।

शेष तीन भाग अथवा जिले

विभाग	ग्राम	परगने
७—भागौर	३००...	बीकानेर, नगर, किला राजासर, सतासर, बीतनख, भवासीपुर, जयमलसर इत्यादि।
८—मोहिल	१४०...	चौपुरा (मोहिलो की राजधानी), सावन्ता, चारवास, बीदासर, लाडनू, मलसीसर, खरबूजारा,
९—खारीपदा	३०...	
कुल जोड	२६७०	

जोधपुर से चले जाने के बाद कुछ ही वर्षो में बीका को मरुभूमि में मिली कि वह छब्बीस सौ सत्तर ग्रामो का राजा बन गया। उसका आतंक वहाँ के कितने ही राज्यो ने स्वय आत्म-समर्पण कर दिया था। लेकिन मुश्किल गुजरी होगी कि बीकानेर राज्य के ग्रामो की संख्या बहुत कम हो गयी। वर्तमान सुरतसिंह के शासनकाल मे वहाँ के ग्रामो की संख्या तेरह सौ से भी कम रह गयी

मरुभूमि मे बीका के जाने और वहाँ पर अपने राज्य का विस्तार करने के जोहिया लोग वहाँ रहते थे, वे पशुओ के पालन का व्यवसाय करते थे। वे गायो तैयार करके बेचते थे। भेडो के बालो के बेचने का व्यवसाय करते थे और अपनी मे वे गेहूँ, चावल इत्यादि खाने की चीजे लिया करते थे।

यह पहले लिखा जा चुका है कि भारतवर्ष की मरुभूमि मे रहने वाले अधिक थी। वे साहसी, लडाकू शूरवीर भी थे। इस प्रकार उनके शक्तिशाली होने के द्वारा आसानी से उनकी पराजय के कारण थे। समस्त जाट छै शाखाओ मे वशों के जाटो मे आपसी फूट बहुत बढ गयी थी और वे स्वयं एक दूसरे के लिए इन्ही दिनो मे बीका ने वहाँ के छोटे-छोटे कितने ही राज्यो को जीत कर अपना और उसके बाद वह जाट राज्यो की तरफ आगे बढा। जाटों का प्रत्येक वश

मारे गये। सूरत सिंह ने चूरू पर तीसरी बार आक्रमण करके वहाँ के सामन्त को जो विद्रोही हो रहे थे, अनुकूल बना लिया।

राजा सूरत सिंह के अप्रिय और कठोर शासन से बीकानेर राज्य को अनेक प्रकार की क्षति पहुँची वहाँ की आर्थिक दशा खराब हो गयी और जन-सख्या मे भी बहुत कमी आ गयी। राज्य के उत्तरी भाग के सामन्तो ने उसकी अधीनता को मन्जूर न किया और भाटी लोगो की लूटमार बीकानेर के जाटो और किसानो पर धीरे-धीरे बढने लगी। इससे भयभीत होकर राज्य के जाटो और किसानो ने भागकर अपने प्राणो की रक्षा करने का विचार किया। बहुत से जाट, जो खेती का काम करते थे, राज्य से भाग गये और ईस्ट इण्डिया कम्पनी अधिकृत हासी और हरियाना नामक स्थानो मे जाकर रहने लगे। वहाँ पर उनको बडी शाति मिली। उन्ही दिनो मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बहादुर खाँ के राज्य के कई नगरो पर अधिकार कर लिया। उन नगरो के रहने वाले लूटमार करने के अधिक अभ्यासी थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकार मे आ जाने के बाद वहाँ के लोग लूटमार करके बीकानेर को अधिक हानि पहुँचाने लगे।

बीकानेर के राजा की तरफ से जब इन लुटेरो के रोकने का कोई प्रबन्ध न हुआ तो राज्य के जाटो ने अपनी रक्षा करने के लिए अपनी तैयारी की। उनके प्रत्येक ग्राम मे मिट्टी का एक बहुत ऊँचा टीला तैयार किया गया और उस टीले पर एक पहरेदार रखा गया। वह पहरेदार जब लुटेरो को आता हुआ देखता तो वह अपने ऊँचे टीले पर मे रखा हुआ ढोल बडे जोर से बजाता उसको सुन कर ग्राम के सभी लोग लुटेरो से सावधान हो जाते। इस प्रकार का ढोल बजने पर कई ग्रामो के जाट एकत्रित होकर उन लुटेरो का सामना करते और मार कर भगा देते। उनका सामना करने के लिए सभी जाटो के पास भाले थे और अपनी रक्षा के लिए वे ढाले भी रखते थे।

बीदावाटी बीकानेर राज्य का एक प्रसिद्ध भाग था। उसमे बीदा वशधर रहा करते थे। पहले यह लिखा जा चुका है कि मारवाड के राज्य से बीका के निकलने के पहले उसका भाई बीदा अपनी प्राचीन राजधानी मदोर से सेना के साथ निकला था। उसने सबसे पहले मेवाड के गोडवाड राज्य पर आक्रमण किया। वहाँ पर राणा की शक्तिशाली सेना उसके साथ युद्ध करके लिए आ गयी। इसलिए भयभीत होकर वह उस स्थान से उत्तर की तरफ चला गया और मोहिल के एक नगर मे पहुँचकर उसने मुकाम किया। कुछ लोगो की धारणा है कि मोहिल वश यदुवशी राजपूतो की एक शाखा है और कुछ लोगो का कहना है कि मोहिलो की एक स्वतन्त्र जाति है।

जो कुछ हो, मोहिल लोगो के राजा की पदवी ठाकुर थी और वह एक सो चालीस ग्रामो तथा नगरो पर शासन करता था। वहाँ के सगठित मोहिलो का पराजित करने का साहस बीदा को न हुआ। इसलिए अपनी सफलता के लिये उसने एक योजना तैयार की। बीदा ने मोहिलो के राजा के साथ मारवाड की एक राजकुमारी के विवाह का प्रस्ताव किया। राठौर राजकुमारी के साथ विवाह करना मोहिल राजा के लिए अत्यन्त सम्मान पूर्ण था। इसलिए उसने उस प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया।

मोहिलो का राजा छापरनगर मे रहता था। इसलिए मारवाड के राठौर विवाह करने के लिए राजकुमारी को छापर मे ले आये। उसके साथ बहुत-सी डोलियाँ और बहले आयी। मोहिलो के राजा ने बडे सम्मान के साथ उन सब को अपने दुर्ग मे स्थान दिया। दुर्ग के भीतर पहुँचने पर डोलियो और बहलो से बहुत बडी सख्या मे तलवारे लिए हुये राठौर सैनिक निकल पडे और उन्होंने मोहिल के राजा पर आक्रमण किया।

अभिषेक के समय चाँदी के एक पात्र मे धान, दूर्वा और रुपये रखकर भेट मे
प्राचीन निवासी मीना लोग भी राजा के अभिषेक के समय कुछ इसी प्रकार की
अनुकरण करते है ।

बीका के द्वारा प्रार्थना स्वीकार करने पर गोदारा के जाटो ने आत्म-स
अधीनता स्वीकार करके उनके प्रतिनिधि ने जिस प्रकार बीका के मस्तक पर र
राजा के अभिषेक के समय आज तक गोदारा के जाटो के वशज उसी प्रकार व
किया करते है और अभिषेक के समय सोने की पच्चीस मुद्रा भेट मे देते है ।

बीका मे न केवल युद्ध करने की शक्ति थी, बल्कि उसमे नैतिक बल
करके जिन जातियो को उसने अपने अधिकार मे लिया था, उनके सम्मान
रखता था । इसके सम्बन्ध मे उसके जीवन की एक छोटी-सी किन्तु अत्यन्त
उल्लेख करना बहुत आवश्यक मालूम होता है । बीकानेर की राजधानी का
उसने जो स्थान पसन्द किया था, उसका अधिकारी एक जाट था । उस जाट से
की माँग की और कहा —"राजधानी बनाने के लिये यदि आप यह स्थान ह
और आपके नाम को जोड कर मैं इस राज्य का नाम रखूँगा ।" उस जाट ने ह
इस माँग को स्वीकार कर लिया । इसके बाद राजधानी का निर्माण हुआ और
जिस राज्य की प्रतिष्ठा की, उसका नाम बीकानेर रखा गया । उस जाट का
ने उस जाट की उदारता को निरन्तर कायम रखने के लिए अपने नाम के
सम्मिलित करके बीकानेर नाम रखा ।

कृतज्ञता मनुष्य के चरित्र का सबसे ऊँचा गुण है । किसी की सहायता
भुला देना अथवा उसकी अवहेलना करना मनुष्य के जीवन का सब से बडा अपरा
का अपराधी अपने जीवन मे कभी उन्नति नही करता । अन्याय गुणो के साथ-
ज्ञता का एक महान गुण भी था और अपने इन्ही गुणो के कारण वह बीकानेर
कर सका ।

दिवाली और होली के अवसर पर शेखासर और रूणियाँ के प्रधान व
तिलक करने के लिए आते है । रूणियाँ का प्रधान चाँदी के पात्र मे चन्दन
की सामग्री तैयार करता है और शेखासर का प्रधान उस पात्र को अपने हाथ
मस्तक पर तिलक करता है । इसके बदले मे उन प्रधानो को राजा की तरफ से
और रुपये भेट मे दिये जाते हैं ।

जाटो के इन प्रधानो के द्वारा तिलक हो जाने के बाद राज्य के सामन्त
है । इस प्रकार की प्रथाये बीकानेर राज्य मे अब तक मौजूद है और वे राजा के सा-
भक्ति का प्रमाण देती है ।

गोदारा के जाटो को अधिकार मे ले लेने के बाद बीका ने जोहिया
अधिकार मे करने का इरादा किया । जोहिया के साथ जाटो की पुरानी शत्रुता थी ।
के इस प्रकार इरादा करने पर जोहिया के विरुद्ध युद्ध करने के लिये गोदारा के जाट
बीका राठौरो और जाटो की प्रबल सेना को लेकर रवाना हुआ और उसने जोहिय
किया ।

हो सकती है। परन्तु कई कारणो से उस पैदावार का लाभ राज्य के निवासी इन दिनो मे नही उठा पाते।

बीकानेर के इस अभाव के दो प्रमुख कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि शासक की निर्बलता मे राज्य की चोरी और डकैती बहुत-बहुत बढ गयी है। राज्य के बाहर की जातियाँ प्राय: सङ्गठित होकर इस राज्य के निवासियो पर आक्रमण करती हैं और लोगो के घरो की सम्पत्ति के साथ-साथ उनका अनाज लूटकर ले जाती हैं। इस प्रकार की लूट राज्य मे प्राय: होती रहती है, जिससे प्रजा खाने-पीने की चीजो और आर्थिक परिस्थितियो मे लगातार गरीब होती जाती है। राज्य की तरफ से उसका कोई प्रबन्ध नही हो पाता।

प्रजा की बढती हुई आर्थिक निर्बलता का दूसरा कारण राजा का क्रूर शासन है। प्रजा से अनावश्यक कर वसूल किये जाते हैं। इन करो के वसूल करने का राज्य में कोई विधान नही है। पुराने करो के अतिरिक्त राजा कभी भी कोई नया कर लगा सकता है और वह कर निर्दयता के साथ वसूल किया जाता है। इन दोनो कारणो से राज्य की आर्थिक परिस्थितियाँ दिन पर दिन निर्बल होती जाती हैं। एक तरफ खेती की पैदावार कम हो रही है, राज्य का वाणिज्य क्षीण होता जा रहा है और दूसरी तरफ राजा के कर और लुटेरो के अत्याचार बढते जा रहे हैं।

इन कारणो का प्रभाव यह पड़ा है कि राज्य की पुरानी अवस्था तेजी के साथ बदल रही है। जन-सख्या लगातार कम हो रही है। तीन शताब्दी पहले राज्य के जो नगर और ग्राम जन-सख्या से भरे हुये दिखाई देते थे, वे बहुत कुछ पहले की अपेक्षा जनहीन हो गये हैं और न जाने कितने ग्राम अपने अस्तित्व खो चुके हैं। जो बाकी रह गये हैं, वे उत्तरोत्तर दीन और दुर्बल होते जाते हैं।

किसी समय इस राज्य मे बहुत अच्छा व्यवसाय होता था और उस व्यवसाय से जो महसूल वसूल किया जाता था, उससे राज्य का खजाना सदा भरा रहता था। उस खजाने की दशा अब शोचनीय हो गयी है। जो खजाने राज्य के साधारण करो के द्वारा परिपूर्ण रहते थे, वे अनेक नये कर लगाये जाने के बाद भी अब खाली रहते हैं। राजा का ध्यान प्रजा की एवम् खजाने की इस दुरवस्था की तरफ नही है। वह आवश्यकता पडने पर प्रजा से उसी प्रकार रुपये वसूल करता है, जिस प्रकार कुओ से पानी भर लिया जाता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि राज्य की शक्तियाँ निर्बल पड गयी हैं और प्रजा के कष्टो मे अधिक वृद्धि हो गयी है।

बिकने के लिये जो चीजे राज्य मे बाहर से आती थी और जिनकी चुङ्गी से राज्य को अच्छी आमदनी होती थी, लुटेरो के भय से उनका आना बन्द हो गया है। इसके फलस्वरूप राज्य के व्यावसायिक नगर चूरू, राजगढ और रेनी आदि की बाजारें खाली पडी रहती हैं। इन बाजारो मे सिन्धु और गङ्गा के निकटवर्ती नगरो का बहुत सा माल जो बिकने के लिये आया करता था, सब एक साथ बन्द हो गया है। इस प्रबन्ध की हानि न केवल बीकानेर राज्य को पहुँची है, बल्कि जैसलमेर और पूर्वी सीमा के राज्यो की भी दशा इसी प्रकार की हो गयी है। बीकानेर की तरह उन राज्यो में लुटेरो के आतङ्क बढ गये है।

बीकानेर राज्य को बीदावत लोगो ने लूटमार करके क्षति पहुँचायी है, उसी प्रकार जैसलमेर को मालदेवोत और जयपुर की सेखावत लोगो ने लगातार लूट करके कमजोर बना दिया है। इन लुटेरो की सख्या बढ गयी है। मरुभूमि के पश्चिमी भाग के रहने वाले सराई, खोसा और राजड लोगो का यही व्यवसाय हो गया है। उनके झुण्ड के झुण्ड इधर-उधर घूमा करते हैं और जहाँ कही मौका पा जाते हैं लूटकर भाग जाते हैं। इन लुटेरो की दशा अरेबिया के बेडूइन लोगो की तरह हो गयी है।

इन दोनों नगरो के अधिकार मे चौबीस-चौबीस ग्राम है। लूनकरन ने सिंह
बीकानेर के पश्चिम तरफ भाटियो के राज्यो पर आक्रमण किया और
अधिकार मे कर लिया।

लूनकरन की इस सफलता के बाद उसके चार पुत्रो मे से बडे पुत्र ने
के एक सौ चवालीस ग्रामो को अधिकार मे लेकर स्वतन्त्र जीवन बिताने की अ
उसके पिता लूनकरन ने इस बात को स्वीकार कर लिया। बडे पुत्र ने उन एक
सिंहासन का अधिकार अपने छोटे भाई जेतसी को दे दिया।

सन् १५१३ मे लूनकरन की मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका बडा
सिंहासन पर बैठा। जेतसी के दो भाइयो ने दो स्वतन्त्र राज्यो को जीतकर उ
लिया। जेतसी के तीन लडके पैदा हुए—पहला कल्याणमल, दूसरा शिवजी औ
जेतसी ने नारनोत के राजा पर आक्रमण करके और उसको पराजित करके
कर लिया था और अपने दूसरे पुत्र सिरग जी को वहाँ का अधिकारी बना दिय

बीदा के लडको ने उपनिवेश कायम किये थे। जेतसी ने उन उपनि
करके बीदा के लडको को कर देने के लिए विवश किया। उनको यह माँग मं
वे अपने उपनिवेशो से वार्षिक कर देने लगे।

सन् १५४६ मे जेतसी के मर जाने पर कल्याणमल पिता के सिंह
शासन काल मे किसी प्रकार का परिवर्तन नही हुआ। उसके तीन लडके पैदा हुए
और पृथ्वीसिंह।

सन् १५७० मे कल्याणसिंह की मृत्यु हो गयी। उसके स्थान पर
अधिकारी हुआ और उसी साल मे वह अपने पिता की गद्दी पर बैठा। उसके
की उन्नति आरम्भ हुई। इन दिनो मे अकबर बादशाह दिल्ली के सिंहासन
समझता था कि बादशाह अकबर ने राजस्थान के अनेक राजाओ को अधीनता
का विस्तार कर लिया है और वह दिन भी शीघ्र आ सकता है, जब मुगल स
पर प्रभुत्व कायम करने की चेष्टा करे। उस समय शक्तिशाली मुगलो का सामन
बहुत कठिन हो जायगा। इसलिए कि अब तक अनेक राजपूत राजा उसकी अ
कर चुके है। इस अवस्था मे सब से अच्छा यह होगा कि मुगल बादशाह के साथ
कायम कर ली जाय।

रायसिंह के सिंहासन पर बैठने के समय तक जाट लोग राज्य के पूरे
रहे। परन्तु अब जाटो के साथ राज्य की तरफ से और विशेषकर राठौरो के
बदल गये थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जाट लोगो को जो अधिकार
कमी आ गयी। उन अधिकारो से वञ्चित होने के बाद जाट लोग निरंतर नि
इसका प्रभाव बीकानेर राज्य की शक्तियो पर पडा और वह मुगल सम्राट के
करने के लिए विवश किया गया।

जैसलमेर के राजा की एक लडकी का विवाह राजा रायसिंह के साथ हु
दूसरी लडकी बादशाह अकबर को व्याही गयी थी। इस वैवाहिक सम्बन्ध के
प्रति बादशाह अकबर का आकर्षण स्वाभाविक था। पिता की मृत्यु के बाद र

ऊपर लिखे हुये स्थानो के घरो की सख्या का उल्लेख किया गया है। यदि प्रत्येक घर मे पाँच मनुष्यो का औसत रखा जाय तो ऊपर लिखे हुये समस्त घरो की जन सख्या ५,३६,२५० होती है। राज्य की भूमि के हिसाब से प्रत्येक पच्चीस मनुष्यो के हिस्से मे एक वर्ग मील की भूमि आती है। यहाँ के निवासियो मे तीन चौथाई जाटो की सख्या है और राज्य के बाकी लोग बीका के वशज हैं। राज्य मे सारस्वत ब्राह्मण, चारण कवि और कुछ अन्य जातियाँ रहती हैं। उनकी सख्या राजपूतो की सख्या का दशाश भी नही है।

जाट लोग—बीकानेर राज्य मे, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, जाटो की सख्या बहुत अधिक है और वे अन्य लोगो की अपेक्षा अधिक सम्पत्तिशाली हैं। उनके अधिकार मे राज्य की अधिक भूमि भी है। परन्तु वे बडी गरीबी के साथ रहते हैं। विवाह जैसे कार्यो मे वे आवश्यकता से अधिक व्यय करते हैं। उनमे आतिथ्य सत्कार की भावना विशेष रूप से पायी जाती है। मार्ग मे चलने वाले यात्रियो को भी बुलाकर भोजन कराने मे वे अपना गौरव अनुभव करते हैं।

सारस्वत ब्राह्मण—इस राज्य मे सारस्वत ब्राह्मणो की अधिक सख्या है। वे गर्व के साथ अब भी कहा करते हैं कि मरुभूमि मे जाटो के आने से पहले हमारे पूर्वज यहाँ के राजा थे। ये स्वभावत: परिश्रमशील और शान्तिप्रिय देखे जाते हैं। ये लोग मास खाते हैं, तम्बाकू का सेवन करते हैं और खेती के साथ-साथ अधिक सख्या मे गाये रखते हैं।

चारण लोग—बीकानेर मे चारण लोगो का सम्मान अधिक होता है। ये लोग अपनी कविताओ मे राजपूतो के शौर्य का वर्णन करते हैं। यही कारण है कि राठौर लोग उनकी कविताओ को सुनकर बहुत प्रसन्न होते है। राज्य की तरफ से जीवन निर्वाह के लिये इन लोगो को भूमि दी जाती है। जैसलमेर के इतिहास मे चारण कवियो का वर्णन विस्तार मे किया गया है।

प्रत्येक राजपूत परिवार मे माली और नाई काम करते हुये देखे जाते हैं। उनकी सख्या प्रत्येक ग्राम मे है। यहाँ के राजपूतो के घरो पर यही लोग भोजन बनाने का भी प्राय: काम करते हैं।

चूहड और थोरी—ये दोनो वास्तव मे लुटेरो की जातियाँ हैं। चूहड लोग लक्खी जङ्गल के और थोरी लोग मेवाड के रहने वाले हैं। बीकानेर के सामन्तो के यहाँ इन दोनो जातियो के लोग वेतन लेकर काम करते हैं। ये लोग भयानक कार्यों के सामने भी कभी भयभीत नही होते। भादरां के सामन्तो के यहाँ नौकरो मे इन दोनो जातियो के लोगो की सख्या अधिक थी। लोगो का विश्वास है कि चूहड लोग बहुत विश्वासी होते है। इसलिये सीमा और नगर की रक्षा का भार प्राय उनके हाथो मे दिया जाता है। शव-दाह के समय ये लोग एक-एक आना सभी से अपनी दस्तूरी लेते हैं। इससे जाहिर होता है कि इस प्रकार दस्तूरी लेने की प्रथा प्राचीन-काल मे उनके पूर्वजो मे थी।

राजपूत—इस राज्य के अनेक परिवर्तन होने के बाद भी बीकानेर के राठौरो की वीरता मे कोई परिवर्तन नही हुआ। भारत की अन्य शूरवीर जातियो मे इन राठौरो का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण माना जाता है। मारवाड, आमेर और मेवाड के राजपूतो की तरह बीकानेर के राठौर पर मराठा और पठान अत्याचार नही कर सके। लेकिन उनको अपने ही राज्य की क्रूरता से अत्याचारो को अधिक सहना पडा है।

राठौर राजपूत खाने-पीने के सम्बन्ध मे बहुत पुराने विचारो के पक्षपाती नही हैं। वे लोग जिसके हाथ का पानी पीते हैं, उसके हाथ का भोजन भी करते हैं। ये लोग जन्म से सी साहसी, धैर्यशील, सरल स्वभाव और शूरवीर होते हैं। अफीम, गाँजा और दूसरी मादक चीजो का सेवन करने के कारण इन लोगो ने अपनी शारीरिक शक्तियो का क्षय किया है।

अधीनता स्वीकार की थी, वे अब तक विद्रोही बने हुए थे और उन्होने अवसर
जान से मार डाला।

रामसिंह के मारे जाने पर भी वहाँ के जाट राज्यो पर राठौरो का
रामसिंह के जीवन काल मे वहाँ पर बहुत से राठौर रहने लगे थे और उन्होंने व
नगरो पर अधिकार कर किया था। उन राठौरो के वंशज अब तक रामसिह
है। रामसिंह के जीते हुए राज्यो के द्वारा बीकानेर राज्य की वृद्धि हुई थी लेकि
ने कॉधलोतो की तरह बीकानेर के राजा के प्रभुत्व को स्वीकार नही किया।
जिन नगरो मे रहते थे, उनमे दो प्रमुख थे, सीधमुख और साँखू।

पूनिया को पराजित करने के बाद जाटो के छै राज्य राजा बीकानेर
गये। वहाँ के जाट लोग खेती और पशुओ के पालन का काम करते थे।
स्वतन्त्रता खोकर बीकानेर को कर देना स्वीकार कर लिया।

राजा रायसिह ने मुगल सम्राट की प्रधानता स्वीकार ली थी और उ
राज्य को शक्तिशाली बना लिया। मुगलो को उन दिनो मे जो युद्ध करने पडे थे,
राठौर सेना को लेकर युद्ध किया था। उसने अहमदाबाद के शासक मिर्जा मो
युद्ध करके उसको पराजित किया और अहमदाबाद पर अधिकार कर लिया।
मे उसका सम्मान बहुत बढ गया। राजस्थान के राजाओ से मेल करके अथवा
अकबर बादशाह ने मुगल साम्राज्य की बहुत बड़ी उन्नति की थी। वहाँ के
अधिक शक्तिशाली समझता था, उसके साथ मित्रता कायम करने के लिए
और राजनीति से काम लिया था।

रायसिह की योग्यता और रण कुशलता को देखकर बादशाह अकबर
था। इसलिए उसके सम्बन्ध को स्थायी और सुदृढ बनाये रखने के लिए उसने
सलीम का विवाह रायसिह की लडकी के साथ करने का इरादा किया।
कर लिया। इस विवाह के बाद रायसिह की लड़की से जो लडका पैदा हुआ,
रखा गया। राजा रायसिह ने बादशाह अकबर के साथ सम्बन्ध जोडकर अपने
सभी प्रकार उन्नति की। इसके बाद सन् १६३२ ईसवी मे इस संसार को
की यात्रा की।

रायसिह के मर जाने के बाद उसका लडका कर्णसिह अपने पिता के
रायसिह के जीवन काल मे ही उसने मुगल-सम्राट की अधीनता मे दो हजार
अधिकारी का पद प्राप्त करके सम्मान पाया था और बादशाह ने उसे दौल
किया। कर्णसिह सुलतान दारा शिकोह के साथ विशेष अनुराग रखता था।
हुआ कि दारा शिकोह के जो विरोधी थे, वे कर्णसिह के साथ ईर्षा और द्वेष रखते
ने कर्णसिह की हत्या करने के लिए एक षड्यन्त्र की रचना की। परन्तु वह
को मालूम हो गया और उसने कर्णसिह को सावधान कर दिया।

सिंहासन पर बैठकर कर्णसिह ने कई वर्ष तक बडी योग्यता के साथ
बाद उसकी मृत्यु हो गयी। उसके चार लड़के थे पद्मसिह, केशरीसिह, मोहनसि
कर्णसिह के इन चार लडको मे पहला और दूसरा युद्ध मे उस समय मारा गया,

स्थानो मे दो सौ और कही तीन सौ फुट जमीन खोदने पर जल निकलता है। यहाँ पर ऐसा कोई स्थान नही है, जहाँ साठ फुट खोदने के पहले पीने का पानी निकल सके। तीस फुट खोदने के बाद जो पानी निकलता है, वह पशुओ के पीने के लायक होता है। प्रत्येक कुएँ के आस-पास एक तरह के वृक्ष की दीवार बँधी रहती है। इसका घेरा बालू को कुएँ मे जाने मे रोकता है। राज्य के सभी प्रधान नगरो मे माली लोग जल बेचने का कार्य करते हैं। लोगो के घरो पर हौज बने होते हैं। उनमे बरसात का पानी भरकर इकट्ठा हो जाता है। ये हौज ईंटो और पत्थरो से बनाये जाते हैं। उनके ऊपर हवा जाने का एक मार्ग खुला रहता है। इनमें से कुछ हौज बहुत बड़े होते हैं। इनका पानी आठ महीने तक और कभी-कभी बारह महीने तक उपयोग मे लाने के लिये अच्छा बना रहता है। बीकानेर मे जल का बहुत अभाव होने के कारण वहाँ के लोगो को इस प्रकार का प्रबन्ध करने पड़ते हैं।

नमक की झीले—यहाँ पर नमक की जो झीले हैं, वे एक मे मिलाकर सिर झील के नाम से प्रसिद्ध हो गयी हैं। मारवाड की झीलो की तरह यहाँ की कोई भी झील बड़ी और विशाल नही है। सिर झील के तट पर सिर नाम का एक विशाल नगर बसा हुआ है। उसका नाम यहाँ की बड़ी झील के नाम से रखा गया है।

इस राज्य का सिर झील की लम्बाई और चौड़ाई प्राय. छै मील की समझी जाती है। दूसरी नमक की झील लम्बाई और चौडाई मे दो मील की है और वह चौपूर के पास है। ये दोनो झीले कही पर भी पाँच फुट से अधिक गहरी नही है। गर्मी के दिनो मे इन झीलो का नमक अपने आप जल के ऊपर आ जाता है और वह जमी हुई सूरत मे लोगो को मिलता है। इन दोनो झीलो का नमक राज्य की दक्षिणी झील से हलका होता है और इसलिये वह सस्ता भी बिकता है।

खनिज पदार्थ—इस राज्य मे खनिज पदार्थों की पैदावार बहुत कम है। राज्य के कई भागो मे अच्छे पत्थर की खाने है। राजधानी से छब्बीस मील की दूरी पर उत्तर-पश्चिम की तरफ पूसियारा नाम की एक खान है।* बीदासर और बिरामसर मे तांबे की खाने हैं। लेकिन बिरामसर की खान से कोई लाभ नही होता। क्योंकि उससे जो तांबा निकलता है, वह खर्च को भी पूरा नही करता। बीदासर की खानो से तीस वर्ष तक तांबा निकालने का काम किया गया है। परन्तु अब वह बन्द है।

बीकानेर मे कोलाद नाम का एक स्थान है। उसके करीब की एक खान से तेल से भीगी हुई मिट्टी निकलती है। वह बिकने के लिये दूसरे देशो और राज्यो मे भेजी जाती है। इस मिट्टी से शरीर और बालो की सफाई होती है। कहा जाता है कि इस मिट्टी के प्रयोग से शरीर की सुन्दरता बढती है। राज्य को इस मिट्टी से पन्द्रह सौ रुपये की आमदनी होती है।

राज्य के पशु—यहाँ की गाये श्रेष्ठ मानी जाती है। ऊँट बोझ लादने और युद्ध मे सवारी का काम देते हैं। भारतवर्ष के अन्यान्य स्थानो की अपेक्षा यहाँ के ऊँट अधिक उपयोगी समझे जाते हैं। इसीलिये उनकी कीमत भी अधिक होती है। इस राज्य मे भेडो की सख्या बहुत है। नील गाय और हिरण भी यहाँ बहुत मिलते हैं। बीकानेर के जङ्गलो मे शेर पाये जाते हैं। भैसो, बकरियो और गायो के दूध से घी अधिक मात्रा मे तैयार होता है। उनकी बिक्री करके यहाँ के लोग बहुत लाभ उठाते हैं।

---

* पूसियारा नामक खान से राज्य को प्रत्येक वर्ष दो हजार रुपये की आमदनी होती है।

करने के लिए ओडनी राज्य पर आक्रमण किया और उसी युद्ध मे वह मारा
भाई सुजानसिंह उसके बाद सिंहासन पर बैठा। उसके शासन काल मे कोई घ
१७३७ ईसवी मे जोरावरसिंह बीकानेर के सिहासन पर बैठा।

जोरावरसिंह ने दस वर्ष तक राज्य किया। उसके बाद उसकी मृत्यु हो
गजसिंह बीकानेर के सिंहासन पर बैठा। उसके शासन के साथ-साथ राज्य मे घट
गजसिंह साहसी और पराक्रमी था। उसने गौरव के साथ इकतालीस वर्ष राज्य
बीकानेर की उन्नति की। राज्य की सीमा पर रहने वाले शक्तिशाली भाटी लोग
मुसलमान राजाओ के साथ युद्ध करके उसने अपनी बहादुरी का परिचय दिया
लोगो के राजासर कालिया रनियार सतसर बुन्नीपुर मुतालाई और अनेक
अधिकार मे लेकर अपने राज्य मे मिला लिया। इन्ही दिनो मे भावलपुर
युद्ध किया और उसके प्रसिद्ध दुर्ग अनूपगढ पर अधिकार कर लिया। दाऊद
विध्वंस उसने इसलिए किया कि जिससे वे कभी विद्रोह न कर सके और इसी
गढ के पश्चिम तरफ बसे हुए स्थानो का भी विनाश किया।

राजा गजसिंह के इकसठ पुत्र पैदा हुए, उनमे विवाहित रानियो से केवल
है :—

१—छत्रसिह २—राजसिंह ३—
४—अजबसिंह ५—सूरतसिंह ६—

छत्रसिंह की मृत्यु शिशु अवस्था मे ही हो गयी थी। राजसिंह को सूरत
देकर मार डाला था। सुरतानसिह और अजबसिंह इस प्रकार दुर्घटना से
चले गये थे। इस दशा मे सूरतसिंह बीकानेर के सिहासन का अधिकारी हुआ।
की छोटी-सी जागीर को पाकर वही पर रहने लगा। इस प्रकार उस राज्य
कोई प्रतिद्वन्दी न रह गया था।

राजसिंह वास्तव मे बीकानेर के सिंहासन का अधिकारी था। गजसिंह
१७८७ ईसवी मे गजसिंह बीकानेर के सिंहासन पर बैठा। उसके शासन के के
थे, उसके बाद सूरतसिंह की माँ ने विश्वासघात करके उसको विष पिला दिया,
हो गयी।

राजसिंह के दो लडके थे—प्रतापसिंह और जयसिंह। विष के द्वारा जर्या
के बाद राज्य के मन्त्री और सामन्त बहुत असतुष्ट हुए। उनके असन्तोष को
राजसिंह के बडे लडके प्रतापसिह को सिंहासन पर बिठा कर शासन
प्रतापसिंह की अवस्था बहुत छोटी थी। इसलिए शासन के सम्पूर्ण अ[illegible]
रहे। इस प्रकार शासन करते हुए सूरतसिंह ने अठारह महीने [illegible]
के मन्त्रियो और सामन्तो को पूर्ण रूप से अपने अनुकूल बनाने [illegible]
बहुमूल्य पदार्थ भेट मे दिये और अनेक प्रकार के प्रलोभन [illegible]
करने की कोशिश की।

सूरतसिंह ने सामन्तो, मन्त्रियो और [illegible]
प्रतापसिंह को सिंहासन पर बिठाया था। परन्तु [illegible]
लिए कि प्रतापसिंह बिल्कुल बालक था। [illegible]
था। फिर भी उसको सन्तोष न था। [illegible]

शासनकाल मे यह कर लगाया गया और प्रत्येक घर अथवा परिवार मे इस कर का एक रुपया वसूल किया जाता था। इस कर के पहले अन्य करो से जो रुपये वसूल होते थे, वे कम न थे। प्रत्येक प्रधान सामन्त को इस कर के पहले लगभग एक लाख रुपये का आमदनी होती थी। फिर भी यह कर लगाया गया था। यह कर केवल जैसलमेर और बीकानेर के राज्यो मे ही वसूल किये जाते हैं।

३—अंग कर—यह एक प्रकार का शारीरिक कर है, जो प्रत्येक शरीर पर वसूल किया जाता है। राजा अनूप सिंह ने यह कर प्रचलित किया था। इस कर मे प्रत्येक स्त्री-पुरुष से चार आने के हिसाब से वसूल किया जाता है। इस कर मे गाये, बैल और भैंसे भी शामिल हैं। उन पर भी यह कर लगता है। दस बकरियो का कर एक भैंस के कर के बराबर होता है। प्रत्येक ऊँट पर इस कर का एक रुपया लगता है। राजा गजसिंह ने उस कर को दो गुना कर दिया था। इस कर मे प्रायः कमती और बढती होती रही है। राज्य को इसके द्वारा दो लाख रुपके की आमदनी होती है।

४—यातायात अथवा वाणिज्य कर—इस कर मे प्राय परिवर्तन हो जाता है। राजा सूरत सिंह के शासन काल मे इस कर की आमदनी बहुत कम हो गयी थी। प्राचीन काल मे केवल राजधानी से इस कर की जो आमदनी होती थी, उतनी इन दिनो मे पूरे राज्य से भी नही होती। पहले इस कर से राज्य को दो लाख रुपये मिलते थे। परन्तु आजकल जो आमदनी होती है, वह एक लाख रुपया भी नही है। लुटेरो के अत्याचारो के कारण राज्य के वाणिज्य को बहुत आघात पहुँचा है और उसी से वाणिज्य कर की आमदनी बहुत घट गयी है। मुलतान, भावलपुर और शिकारपुर से जो व्यवसायी बीकानेर होकर पूर्व के नगरो और राज्यो को जाते थे, लुटेरो के भय के कारण उनका राज्य मे आना बन्द हो गया है।

५—कृषि कर- यह कर खेतो का काम करने वालो पर लगता है और प्रत्येक हल पर पांच रुपये वसूल किये जाते हैं। प्राचीन काल मे इस कर मे किसानो के अनाज लिया जाता था। खेतो की पैदावार का एक चौथाई अनाज राजा ले लेता था। राजा रायसिंह ने इस व्यवस्था मे परिवर्तन किया। परिवर्तन का कारण यह था कि पहले किसानो से जो एक चौथाई अनाज वसूल किया जाता था, उसमे राज्य के कर्मचारी बडी बेईमानी करते थे और किसानो को बहुत क्षति उठानी पडती थी। राजा रायसिंह के द्वारा इस कर मे परिवर्तन होने से राज्य के कर्मचारियो को पहले की तरह बेईमानी करने का मौका न रहा। इससे जाट लोग बहुत प्रसन्न हुए। इस कर से राज्य को पहले दो लाख रुपये की आमदनी होती थी। बीकानेर की खेती लगातार अवनत होती, जा रही थी। इसलिए इसके द्वारा एक लाख पच्चीस हजार रुपये की आमदनी होने लगी। इस कमी का बहुत-कुछ कारण राज्य मे फैली हुई अशान्ति थी, अब उस अवस्था मे परिवर्तन हो गया है। इसलिए राज्य की आमदनी भी बढना चाहिए।

६—मालबा—माल शब्द का अर्थ भूमि हैं। बीकानेर मे भूमि का जो कर लिया जाता है, वह मालबा कर के नाम से प्रसिद्ध है। यह कर वह है जिसे जाटो ने बीका के सम्मुख आत्म समर्पण करके देना स्वीकार किया था। यह कर बीका के बाद उसके उत्तराधिकारियो मे अब तक चला आता है और बीकानेर के राजा उसे बराबर वसूल करते हैं। राज्य की प्रत्येक सो बीघा पृथ्वी पर इस कर के दो रुपये लिये जाते हैं। इन दिनो मे राज्य को इसके जो आमदनी होती है, वह पचास हजार रुपये से भी कम है। करो के द्वारा राज्य की आमदनी का विवरण इस प्रकार है।

जिन सामन्तो को सूरतसिह ने कैद करवाया था, उनको छोड दिया गया और दो
सूरतसिह अपनी सेना के साथ चूरू नगर से लौट आया।

सूरतसिह ने राज्य के कितने ही सामन्तो के साथ इस प्रकार का अत्या
अपने अनुकूल बना लिया। उसके बाद वह अपनी राजधानी लौट आया। अब
विरोध का डर न रहा था। इसलिए निर्भीक होकर वह बालक प्रतापसिह की ह
लगा। इसी बीच मे उसको मालूम हुआ कि बालक प्रतापसिह की रक्षा का भा
हाथ मे है। उसकी बहन बुद्धिमती और शीलवती थी। वह किसी प्रकार इस ब
थी कि बालक प्रपापसिह की हत्या की जाय। इसके लिए उसको अपने भाई सूर
पर आशका थी। वह समझती थी कि सूरतसिह के द्वारा इस बालक के प्राण ख
वह राजकुमारी उस बालक को सदा अपने पास रखती थी और एक क्षण के
अपने पास से अलग न होने देती थी।

सूरतसिह ने अनेक उपायों से अपनी बहन को अनुकूल बनाने की क
समझाने-बुझाने के अतिरिक्त प्रतारणा का भी प्रयोग किया। परन्तु उसकी ब
व्यवहारो का कोई प्रभाव नही पडा। अपने इन उपायो से निराश होने के बाद
उस बहन का विवाह करके उसे ससुराल भेज देने का निश्चय किया। क्योकि उ
तक अविवाहिता थी। सूरतसिह ने उसका विवाह करने के लिए नरवर के र
भेजा और वह स्वय उसकी तैयारी करने लगा।

भारतवर्ष मे राजा नल के नाम से सभी परिचित है। हिन्दू ग्रथो मे राजा
कथाये लिखी गयी हैं। उसी राजा नल ने नरवर राज्य की प्रतिष्ठा की। सूरत
का विवाह करने के लिए जिस राजा से प्रस्ताव किया वह राजा नल का वशज
अत्याचारो से नरवर राज्य बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट हो गया था और इन दिनो मे
अच्छी न थी। सीधिया की लूट के कारण यह राज्य बहुत समय से दीन-दुर्व
व्यतीत कर रहा था। लेकिन सूरतसिह ने इसका कुछ भी विचार न किया।
का विवाह बडी जल्दबाजी के साथ करके उसे ससुराल भेज देना चाहता था।

अपने विवाह का समाचार सूरतसिह की बहन ने सुना और उसने यह भी
ने नरवर के जिस राजा के साथ मेरे विवाह का प्रस्ताव किया है, उसने उस
करके अपनी स्वीकृति सूरतसिह के पास दी है। राकुमारी ने सूरतसिह को बुल
मेरी अवस्था अधिक हो चुकी है। विवाह न करके मै आजन्म कुमारी रहूँगी।
विवाह की व्यवस्था न करे। इसके बाद राजकुमारी ने नरवर के राजा के पास
मेरा विवाह मेवाड के राणा अरिसिह के साथ बहुत पहले निश्चय हो चुका है। इ
प्रस्ताव किया गया है, वह सही नही है। आपको किसी धोखे मे नही पडना चा

राजकुमारी के इन विरोधो का कोई परिणाम न निकला। नरवर के र
विवाह कर दिया गया और सूरतसिह ने इस विवाह के दहेज मे तीन लाख रुपये
का अब कोई वस न था। उसने अब तक राजसिह के बालक की रक्षा की थी
सुरक्षित रहेगा, इसको वह समझ न सकी। बीकानेर से ससुराल [illegible]
सूरतसिह से इस विषय मे स्पष्ट बाते की। उसने कहा "इस [illegible]
घात करना चाहते है और इसीलिए मेरा विवाह करके [illegible]

दण्ड और खुशहाली—इन दोनो नामो पर भी कर वसूल किये जाते थे। अपराधियो से जो लिया जाता था, वह दण्ड कर कहलाता था और आवश्यकता पड़ने पर प्रजा से जो कर माँग कर वसूल किया जाता था, उसे खुशहाली कर कहा जाता था, यह कर सामन्तो, व्यवसायियो और सम्पत्तिशालियो से लेकर साधारण प्रजा तक वसूल किया जाता था।

दण्ड कर वसूल करने के लिये राज्य की तरफ से चौदह कर्मचारी थे। ये कर्मचारी राज्य के प्रमुख नगरो मे रहा करते थे। अपराधी पर जो दण्ड दिया जाता था, उसका आदेश राज्य के यही कर्मचारी करते थे और जुर्माना करने के बाद यही लोग उसको वसूल भी करते थे। अपराधियो को दण्ड देने के लिये कोई विधान न था। प्रत्येक कर्मचारी, जो राज्य की तरफ से अपराधो का निर्णय करने के लिये नियुक्त होता था, अपनी इच्छानुसार अपराधी को दण्ड की आज्ञा देता था। यह न्यायोचित न था। इसलिये गन्धोली के सामन्तो ने राज्य के इन कर्मचारियो का विरोध किया और अपने नगर से निकाल दिया।

राजा सूरतसिंह ने भटनेर पर विजय प्राप्त करके युद्ध के खर्च के लिये खुशहाली कर के नाम पर राज्य के प्रत्येक परिवार से दस रुपये वसूल करने के लिये आदेश दिया और ये रुपये कठोर अत्याचारो के साथ प्रजा से वसूल किये गये थे। बीकानेर मे राजा की तरफ से इस प्रकार के जो कर लगते थे और जिनका प्रचार अब तक है, वे खुशहाली कर के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस नाम से तो जाहिर यह होता है कि इस कर के रुपये प्रजा को खुश करके वसूल किये जाते हैं। इसीलिये इस कर का नाम खुशहाली कर है। परन्तु किस प्रकार के अत्याचारो के साथ राज्य के कर्मचारी प्रजा से इस कर को रुपये वसूल करते है, इसका अनुभव राज्य की उस प्रजा को ही हैं, जिस राज्य के अत्याचारो का सामना करना पडता है।

सामन्तो की सेनाये—राजा के व्यवहार और चरित्र पर सामन्तो की सेनाये निर्भर होती हैं। यदि सूरतसिंह मे प्रजा की भक्ति का भाव होता और उसने किसी भी विपद के समय राज्य और प्रजा की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझा होता तो बीकानेर के सामन्त किसी भी समय बाहरी शक्ति के आक्रमण करने पर दस हजार राजपूतो की सेना लेकर राजा की सहायता कर सकते थे और सामन्तो के द्वारा आने वालो राजपूतो की सेना मे बारह सौ अश्वारोही राजपूत होते। यह बात जरूर है कि इन दिनो मे राज्य की राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ बहुत निर्बल हो गयी थी। इसलिये इन दिनो मे सामन्तो के द्वारा आने वाली राजपूत सेना की उतनी सम्भावना नही हो सकती। इन दिनो मे राजा के अधिकार मे जो सेना है, उसमे एक सेना, जो विदेशी कही जाती है, पाँच सौ पैदल, ढाई सौ अश्वारोही और पाँच बन्दूके रखती हैं। इस सेना का सेनापति भी बीकानेर राज्य की राजधानी के दुर्ग की रक्षा के लिये एक राजपूत सेना बराबर रखता है। उस सेना को वेतन देने के लिए पच्चीस ग्राम राज्य की तरफ से अलग कर दिये गये हैं।

राजा सूरतसिंह के समय बाहरी सेनाये

	अश्वारोही	पैदल	बन्दूके
सुलतान खाँ	...	२००	...
अनोखेसिंह सिक्ख	...	२५०	...
बुधसिंह देवडा	...	२००	....

किया । वीकानेर की सेना ने चूरू पहुँचकर भयानक रूप से वहाँ पर लूट क
राज्यो मे लूट मार करता हुआ सूरतसिह ने भादरा के करीब छानी राज्य के
आक्रमण किया । वहाँ के सामन्तो ने धैर्य के साथ सूरतसिह का सामना किया
छै महीने तक उस दुर्ग को घेरे पडी रही और अन्त मे निराश होकर वहाँ से व

सूरतसिह अपने विरोधियो का दमन करके निर्भीक हो गया था और
मजवूत करने के लिए उसने योजना बनानी आरम्भ कर दी थी । परन्दू राज्य
न थी । विरोधियो को दवाने के लिए सूरतसिह ने जिस प्रकार अपने राज्य के अ
किये थे और भूमि तथा सम्पत्ति देकर सामन्तो को अपने पक्ष मे कर लिया था
ने अच्छा नही समझा था । न्याय और उदारता के अभाव मे प्रजा सूरतसिह से
हो रही थी । राज्य की इस परिस्थिति को सूरतसिह ने साफ-साफ अनुभव कि
के असन्तोप को दूर करने की चेष्टा की ।

सूरतसिह प्रजा के असन्तोष को दूर करना चाहता था । लेकिन न्याय
के द्वारा नही । वह दमन पर विश्वास करता था । शक्तिशाली विरोधियो को ध
मिला लेना चाहता था । वह इस समय भी इसी प्रकार की वातो को स
समय अच्छा था । प्रजा के इस असन्तोष के दिनो मे भी जो परिस्थितियाँ
सावित हुई ।

वीकानेर राज्य की सीमा के समीप भावलपुर राज्य था । उसके राजा
से विरोध चला आ रहा था । उसके सम्वन्ध मे वीकानेर के सामन्तो को
पडा था । इन दिनो मे भावलपुर के राजा भावलखाँ ने अपने राज्य के तियारो
पर आक्रमण किया । खुदावख्श ने सूरतसिह से सहायता माँगी । सूरतसिह ने
यहाँ आश्रय देकर वीस ग्राम दिये और रोजाना के खर्च के लिए प्रतिदिन के हि.
देना मजूर किया ।

भावसपुर राज्य मे किरणी वश के लोग रहते थे । वे युद्ध मे सा
सूरतसिह ने उस वश के लोगो को मिलाकर लाभ उठाने का इरादा किया
से पूछा : "मैं आपकी सहायता करने के लिए तैयार हूँ । परन्तु इसके वदले
करेंगे ।"

खुदावख्श ने इसका उत्तर देते हुए कहा . "वीकानेर राज्य की सीमा
प्रकार आपकी सहायता करूँगा ।" उसके इस उत्तर को सुनकर सूरतसिह
भावलखाँ के साथ युद्ध करने के लिए अपने सभी सामन्तो के पास सन्देश भे
सामन्त सूरतसिह से सन्तुष्ट न थे । परन्तु इस समय राज्य के सामने राजन
शामिल होना उन्होंने अपना कर्तव्य समझा । इसलिए अपनी-अपनी सेनाएँ ले
की राजधानी मे आने लगे । तियारो का सामन्त खुदावख्श भी अपने साथ पाँच
सौ सैनिक सवारो की सेना लेकर राजधानी में पहुँच गया । भावलपुर के ...
के लिए वीकानेर के जो सामन्त अपनी सेनाओं के साथ आये, उनकी संख्या इस

सामन्त		पैदल	अश्वारोही
१—भूकर का सामन्त अभयसिंह	...	२०००	३००
२—सूरन का सामन्त रावतसिंह		५००	१००
३—रानेर का सामन्त हाथीसिंह	...	१५०	८

सामन्त	वंश	निवास	आमदनी	पैदल सेना	अश्वारोही	विवरण
३—सरदार सिंह	भाटी	सुरजीरा	८००	३०	२	
४—कायम सिंह	,,	रनदीपर	६००	३२	२	
चन्दन सिंह	करमसोत	नोरवा	११०००	१५००	५००	ग्यारह वर्ष पूर्व जोधपुर से २७ ग्राम पाकर यहाँ रहने लगा।
सतीदान	रूपावत	बादोला	५०००	२००	२५	
भूमसिंह	भाटी	जागलू	२५००	४००	६	
केतसी	,,	जामिनसर	१५०००	५००	१५०	२७ ग्राम
ईश्वरी सिंह	मण्डला	सारोदा	११०००	२००	१५०	
पद्मसिंह	भाटी	कूंदसू	१५००	६०	२	
कल्याणसिह	,,	नैनिया	१०००	४०	४	
		जोड	३३२१००	४२२७२	५४०२	

ऊपर लिखी हुई बीकानेर राज्य के सामन्तो की नामावली उस समय की है, जब राज्य अपने गौरव पर था। लेकिन उसकी राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के पतन के साथ साथ राज्य के सामन्तो की सख्या और अवस्था भी बदलती गयी।

उनचासवाँ परिच्छेद

जाटो का प्रसिद्ध स्थान भटनेर—जाटो की मर्यादा—भटनेर पर तैमूर का आक्रमण—लगातार सङ्घर्ष—भटनेर का राजा बैरसी—उसके बाद का भटनेर—भटनेर पर राजा सूरतसिंह का आक्रमण।

भटनेर जो इस समय बीकानेर का एक महत्वपूर्ण अङ्ग है और जिसके द्वारा इस राज्य के विस्तार की वृद्धि हुई है किसी समय जाटो का प्रसिद्ध निवास स्थान था। वे जाट उस समय इतने शक्तिशाली थे कि वे अपने राजा के साथ भी युद्ध करने के लिये कभी-कभी तैयार हो जाते थे और राजा पर जब कोई आक्रमण करता था तो वे अपनी पूरी शक्ति के साथ राजा की सहायता करते थे। इसका भटनेर नाम इस बात को जाहिर करता है कि राज्य का सम्बन्ध भाटी लोगो के साथ हुआ। कुछ पुरानी खोजो से पता चलता है कि एक शक्तिशाली राजा ने इस राज्य की प्रतिष्ठा की थी। भटनेर भाट शब्द से बना है। इसलिये जाहिर है कि प्राचीनकाल मे भाटी जाति ने यहाँ पर अपना राज्य कायम किया था और उसका नाम भटनेर रखा। जैसलमेर के इतिहास मे इसके सम्बन्ध मे अधिक आलोचना की गयी है।

जो सेनापति का पद दिया था, उसे उसने तोड दिया ।

बागोर के युद्ध मे भाटिया लोग सूरत सिह की सेना के साथ पराजित हो
दो वर्ष तक वे लोग युद्ध की तैयारी करते रहे । इसके बाद वे लोग सूरत सिह
देने के लिये रवाना हुए । बीकानेर राज्य के लोगो का जो असन्तोष सूरत सिंह
रहा था, उसे इन दिनों मे सूरत सिह ने खत्म कर दिया था । इसलिए उसको
डर न हुआ और वह उससे युद्ध करने के लिये अपनी सेना लेकर राजधानी से र

भाटी लोगो के साथ बीकानेर की सेना ने फिर युद्ध किया और भयानक
उसने भाटीलोगो को पराजित किया । इसके बाद भी सन् १८०५ ईसवी तक
समय पर सूरत सिह करते रहे । अत मे बीकानेर की सेना ने भाटी लोगो की
पर आक्रमण किया । वहाॅ के राजा जाब्ताखाॅ ने छै महीने तक युद्ध किया अ
आत्म समर्पण कर दिया । सूरत सिह ने भटनेर को अपने राज्य मे मिला f
वहाॅ से रहानियाॅ नामक स्थान मे जाकर रहने लगा ।

इन्ही दिनो मे मारवाड के सामन्त सवाई सिह ने वहाॅ के राजा मार्न
उतारकर धौकल सिंह को राज्याधिकारी बनाने की चेष्टा की थी और इसके लिए
तैयार किया । सवाई सिह ने राजा सूरत सिह से भी प्रार्थना की और सूरत सि
भेजकर मानसिंह के युद्ध मे सवाई सिंह की सहायता की , इसका वर्णन मारव
किया जा चुका है ।

उस सघर्ष के दिनो मे सूरत सिह ने मारवाड के फलोदी नगर पर अधि
परन्तु जब उसे धौकल सिह का पक्ष निर्बल मालूम हुआ तो वह अपनी राजधानी
उन्ही दिनो मे अपनी शक्तियाॅ मजबूत बनाकर जब मानसिंह ने फलोदी पर फिर
लिया, उस समय सूरत सिह ने मानसिंह से मेल करके बहुत रुपये उसको भेट मे

मानसिंह के विरुद्ध धौकलसिंह का पक्ष लेकर सूरत सिह ने अपनी बुद्धिमत्त
दिया । इसीलिए उसको वहाॅ से अपमानित होकर भागना पडा । इससे उसने बी
क्षति पहुँचायी । अपने इस अपराध के वदले राज्य की लगभग पाॅच वर्ष की आम
रुपये उसे मानसिह को दे देने पड़े । इस क्षति और अपमान की पीडा से सूरत
और उस बीमारी मे उसका सेहत होना लोगो को असम्भव दिखायी देने लगा ।
रोग से मुक्ति मिली और उसने एक तरह से नया जीवन प्राप्त किया ।

सूरत सिह ने अपने राज्य की प्रजा पर लगातार कर के बोझ बढ़ाकर
किये । वह स्वय अपने इस अत्याचार को अनुभव करता था और अपने इन पापो
लिए उसने ब्राह्मणो और पुरोहितो को बहुत-सा धन दान मे दिया था । इसके
हमेशा घेरे रहते थे और अपने आशीर्वादो से उसको प्रसन्न करने की चेष्टा करते

सूरत सिह अपने खजाने के भरने के लिए एक तरफ प्रजा से उसके कष्टो
तार कर वसूल करता था और दूसरी तरफ इस प्रकार के पाप से मुक्ति पाने के
के बताये हुए विभिन्न प्रकार के दान करता था । वह स्वभावत. आत्याचारी और f
के अनेक सामन्तो ने अनेक कठिन अवसरो पर उसकी सहायता की थी । परन्तु
उपकारो को भुला दिया और उन सामन्तो का विनाश किया । बीकानेर राज्य
सीधमुख के नाहर सिह, गुन्दाइल के गुमान सिह और ज्ञानसिंह भी उसके

भीरू के सामने इस समय भयानक विपद थी। वह अपनी छोटी-सी सेना के साथ भटनेर के दुर्ग मे था और खाने-पीने तथा दूसरी कठिनाइयाँ भयानक रूप से उसके सामने थी। प्राणो की रक्षा का कोई दूसरा उपाय न देखकर उसने पहली शर्त--इसलाम को स्वीकार कर लिया। उसी समय से भीरू का वश भट्टी वश के नाम से प्रसिद्ध हुआ और शेप भाटी लोगो से उसका सम्बन्ध टूट गया।

भीरू के पश्चात् उसके वश के अन्य छै लोगो ने भटनेर के सिंहासन पर बैठकर राज्य किया। भीरू से छठे राजा का नाम रावदुलीच उर्फ हयातखाँ था। वह जिस समय भटनेर के सिंहासन पर बैठा, उस समय बीकानेर के राजा रायसिंह ने आक्रमण करके भटनेर पर अधिकार कर लिया। उसके बाद भीरू के वशज फतेहाबाद मे जाकर रहने लगे। हयातखाँ के मरने के बाद उसके पोते हुसेन खाँ ने राजा सुजानसिंह के समय आक्रमण करके भटनेर पर अपना अधिकार कर लिया। अन्त मे राजा सूरतसिंह ने बहादुर खाँ के शासनकाल मे भटनेर पर आक्रमण करके उसको अपने राज्य मे मिला लिया।

राजा सूरतसिंह ने जब भटनेर पर आक्रमण किया था, जाब्ता खाँ भटनेर मे उस समय राजा था। वह रेनी नामक स्थान मे रहा करता था और उसके अधिकार में पच्चीस ग्राम थे। इस रेनी नगर को बीकानेर के रायसिंह ने अपनी रानी के नाम से बसाया था। इमाम मोहम्मद ने उस नगर पर अधिकार कर लिया था। जाब्ता खाँ ने लूटमार करके बहुत सी सम्पत्ति अपने अधिकार में कर ली थी। उसके अत्याचारो से जाट लोग बहुत भयभीत रहा करते थे। बीकानेर के उत्तरी सीमा से गाड नदी तक की सम्पूर्ण भूमि बहुत उपजाऊ थी। इसलिये वहाँ पर खेती का काम बहुत अच्छा होता था। बहुत दिनो के बाद वहाँ की परिस्थितियाँ बिगडी और उस तरफ की सम्पूर्ण भूमि जन-शून्य हो गयी। पहले वहाँ पर जो ग्राम और नगर बसे थे, वे बहुत अच्छी परिस्थितियो मे थे। परन्तु वे धीरे-धीरे सब बरबाद हो गये। भटनेर से पच्चीस मील की दूरी पर दक्षिण तरफ दन्दूसर नामक एक स्थान है। वहाँ के लोगो का कहना है कि प्रमार वंश का राजा जब यहा शासन करता था, उस समय सिकन्दर रूमी ने वहा आकर और आक्रमण करके राज्य का विध्वन्स किया था।

उस दुर्ग मे मोहिलो की जो सेना थी, उसके साथ बडी तेजी से मारकाट इसी समय राठौर की एक सेना बाहर से आकर उस दुर्ग में पहुँच गयी। उसकी ने वहाँ विजय प्राप्त की और उसने मोहिलो को अपनी अधीनता स्वीकार करने के इस जीत के उपलक्ष में बीदा ने लाडनू नामक नगर और बारह ग्राम अपने पिता तक मारवाड राज्य के अधिकार मे हैं।

बीदा की मृत्यु के बाद उसके पुत्र तेजसिंह ने अपने पिता के नाम से वहाँ वाई। इसके बाद के वशज बीदावत के नाम मे प्रसिद्ध हुये। बीदावत लोग साहस बीकानेर के राजा ने उनमे कभी कर नही लिया। यहाँ की जमीन एक सी थी अत्यन्त उपयोगी थी। इसलिये वहाँ पर गेहूँ की पैदावार बहुत होती थी। उस स चलता है कि मोहिलो के समस्त नगरो और ग्रामो मे चालीस हजार से लेकर पचा तक रहते थे। इस आबादी का एक तिहाई भाग राठौर का था। वह राज्य बार जित था और प्रत्येक भाग एक जागीर मे रूप मे था। उनमे पाँच जागीर के स थे। इस राज्य के आदि निवासी मोहिल लोग थे। जिनके परिवार वहाँ पर अब रह गये। वहाँ की शेष जातियो मे जाट कृषक और व्यावसायिक हैं।

अड़तालीसवाँ परिच्छेद

योरप के लोगो को बीकानेर की जानकारी—राज्य की परिस्थितियो में कारण—शासन की क्रूरता—राज्य की पूर्व अवस्था आर्थिक पतन—राज्य में बारह नगरो के घर और जन—जाटो की सख्या—राज्य की अन्य जातियाँ—राज्य की अन्य परिस्थितियाँ—खेती और वर्षा—नमक की झीले—खाने और र

योरप के लोग बीकानेर की बहुत कम जानकारी रखते थे। वे इसे पूर्ण रू झते थे। राठौर राजपूतो के द्वारा आज से तीन सौ वर्ष पहले इस राज्य की प्रतिष्ठ समय इसकी जैसी हालत थी, वह अब नही रह गयी। पहले की अपेक्षा यह राज्य गया है। उन दिनो मे बीकानेर राज्य की आबादी बहुत घनी थी और दूसरी बात उन्नत अवस्था मे था। परन्तु उसकी वे अवस्थाये अब एक भी नही रह गयी।

इस राज्य की प्राकृतिक अवस्था मे बहुत परिवर्तन हो गया है। इसकी बालू की अधिकता हो गयी है फिर भी यहाँ पर खेती के द्वारा जो अनाज पैदा ह के निवासियो के खाने पीने की कोई कमी नही रह सकती।

बीकानेर के राजा आवश्यकता पडने के समय दस हजार सैनिको की सेना मे कर लेते थे और उस सेना के खाने-पीने की पूरी व्यवस्था राज्य की पैदावार भूमि की उस पैदावार मे भी कमी हो गई है। लेकिन राज्य की आवश्यकताओ की

उन सबकी उत्पत्ति एक ही विशाल वंश से हुई थी और उस वंश के लोगो की एक ही भाषा थी और एक ही धर्म था। जो लोग अपने मूल पूर्वजो के प्राचीन निवास-स्थानो को छोडकर गङ्गा की तरफ आये, उनका प्रधान बुध का पुत्र भारत नाम का एक व्यक्ति था, जिसने एशिया के इस भाग मे आकर अपने राज्य की प्रतिष्ठा की और उसका नाम भारतवर्ष रखा। उसी भारत के वंशज यदु भाटी लोग इस समय यह स्थल के एक कोने मे शासन करते है।

यहाँ की भूमि मे जब भारतवर्ष ने उपनिवेश कायम किया, उस समय किसी राजवंश के लोग न रहते थे। बल्कि सूर्यवंश और चन्द्रवंश के पहले भील, गोंड और मीना आदि कई जातियो के लोग यहाँ पर रहते थे। इन जातियो के लोग भी उसी एक विशाल वंश के वंशज थे। लेकिन राजनीतिक पतन के कारण उनकी यह दशा हो गयी थी। इस प्रकार के ऐतिहासिक सत्य का कोई प्रमाण नही है, इसलिये हमको यहाँ पर यदुवंशी भाटी लोगो का ऐतिहासिक विवरण देने के लिये हिन्दू ब्राह्मणो के ग्रन्थो का आश्रय लेना पडा।

गम्भीरता पूर्वक अध्ययन और अनुशीलन के बाद इस बात को स्वीकार करना पडता है कि हिन्दुओ मे जो आज संकीर्णता मिलती है, उसका जन्म मध्य कालीन युग मे हुआ है। इसी आधार पर कल्पना की जाती है कि मुसलमानो के भारत पर आक्रमण और अधिकार करने के बाद यह संकीर्णता पैदा हुई है और इसी संकीर्णता से प्रभावित होकर हिन्दुओ को अटक नदी के पार अथवा जहाज पर चढकर समुद्र के दूसरी तरफ के देशो में जाना धर्म के विरुद्ध बताया गया है। हिन्दुओं में इस प्रकार की संकीर्णता प्राचीनकाल मे न थी। इस सत्य के प्रमाण मे बहुत-सी बातें कही जा सकती हैं। परन्तु उनके सम्बन्ध मे बहुत अनुसन्धान की आवश्यकता है। हिन्दू जाति के लोग प्राचीन काल मे जल युद्ध मे क्षमताशाली थे और इसीलिये वे लोग अफ्रीका, अरेबिया और परसिया तक पहुँचे थे। ❀ यह कहना अत्यन्त भ्रमात्मक है कि हिन्दू जाति सदा से संकीर्ण रही है। क्योंकि हिन्दुओ की मनुसंहिता तथा उनकी प्राचीन धार्मिक और पौराणिक पुस्तको मे इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि वे लोग प्राचीन काल मे आक्सस नदी से लेकर गङ्गा तक के सभी देशो मे आते जाते थे। पौराणिक ग्रन्थो के अनुसार हिन्दुओ ने मध्य एशिया के लोगो को म्लेच्छ कहना आरम्भ किया है। परन्तु वही से भारतवर्ष मे अनेक प्रकार की विद्या और ज्ञान का प्रचार हुआ है। मनुस्मृति नामक ग्रन्थ मे पौराणिक विचारो का समर्थन किया गया है। इसका अर्थ यह है कि उस समय शाक द्वीप से लेकर गङ्गा के किनारे तक लोगो का एक ही मत था। इस देश के ग्रन्थो मे लिखा गया है कि श्रीकृष्ण की मृत्यु के बाद यदुवंश के लोग भारत छोडकर चले गये। यदुवंश के आदि पुरुष बुध से श्रीकृष्ण तक पचास पीढियाँ व्यतीत हो जाती हैं। बुध ने भारतवर्ष मे आकर सूर्यवंश की कुमारी इला के साथ विवाह किया था। ×

❀ प्राचीन हिन्दू साहित्य के सम्बन्ध मे सर विलियम जोन्स के साथ अनुसन्धान करते हुये मि० मार्सडन ने स्वीकार किया है कि मेडेगास्कर से पूर्वी द्वीप तक जो मलायन भाषा प्रचलित है, उसमे बहुत-से संस्कृत के शब्द पाये जाते हैं। उनकी भाषा की यह अवस्था उस समय थी, जब वहाँ के लोगो ने इस्लाम धर्म को स्वीकार नही किया था।

× भागवत मे इस बात का उल्लेख मिलता है कि बुध अपने पापो का क्षय करने के लिये भारतवर्ष मे आया था। यहाँ आकर उसने इला नाम सूर्यवंशी कुमारी के साथ विवाह किया था। उस कुमारी से पुरूरवा नामक लडका पैदा हुआ। उसने मथुरा में अपनी राजधानी कायम की और

बीकानेर का विस्तार, उसकी भूमि और जनसंख्या—इस राज्य के पूगल सभी ग्राम और नगर पूर्वी ग्रामो और नगरों की अपेक्षा अधिक विशाल है। वे ए पक्की भूमि मे फैले हुये हैं। उनकी चौड़ाई उत्तर से दक्षिण की तरफ है। भट इलाके के मध्यवर्ती ग्राम और नगर एक सौ साठ मील तक फैले हुये हैं। समस्त भूमि लगभग बाईस सौ मील तक विस्तार रखती है। पहले किसी समय इस राज्य सौ नगर ग्राम थे। परन्तु इन दिनो में उनकी सख्या आधी से भी कम हो गयी है।

बीकानेर राज्य की जनसख्या का यो तो कोई हिसाब हमारे सामने नही प्रधान बारह नगरो की जनसंख्या जो नीचे दी जा रही है, उसके आधार पर रा का अनुमान लगाया जा सकता है और वह अनुमान लगभग सही होना चाहिये। की आवश्यकता नही है।

जैतपुर के पश्चिम की तरफ के ग्राम और नगर अधिक जन शून्य हो गये भटनेर तक क ग्रामो और नगरो की भी यही अवस्था है। उत्तर पूर्व के ग्रामो औ सख्या बहुत कम है। राज्य के दूसरे भागो की जन सख्या की भी यही व्यवस्था है वर्ती स्थानो की जनसख्या साधारण है। वहां पर इस कमी का अधिक प्रभाव न भाग के स्थानो की जनसख्या भी ठीक है। राज्य के प्रमुख बारह नगरो के घर प्रकार है :

नगर		घ
१ बीकानेर	...	
२—नोहर	...	
३—भादरां	...	
४—नरैनी	...	
५—राजगढ़	..	
६—चुरू	...	
७—महाजन	...	
८—जैतपुर	...	
९—बोदासर	...	
१०—रत्नगढ़	...	
११—देशमुख	...	
१२—सनथाल	...	
	जोड़	...

१०० ग्राम, प्रत्येक के घरो की संख्या	२००	...
१०० ,, ,, ,, ,,	१५०	...
२०० ,, ,, ,, ,,	१००	...
८०० छोटे ग्राम ,, ,, ,,	३०	...

कुल जोड़ ...

नाभ के पुत्र प्रतिबाहु के वाहुवल नाम का एक लडका पैदा हुआ। उसने मालवा के राजा विजय सिंह की लडकी कमलावती के साथ विवाह किया। उस विवाह में विजयसिंह ने खुरासान के एक हजार घोडे, एक सौ हाथी, बहुत से हीरा जवाहिरात, और सोने के साथ-साथ पांच सौ दासियां दी थी। बहुत से रथो के साथ स्वर्णजडित पलग भी दिये। प्रमार वश की राजकुमारी कमलावती से सुबाहु नामक एक लडका पैदा हुआ।

घोडे पर से गिर जाने के कारण प्रतिबाहु के पुत्र बाहुबल की मृत्यु हो गयी। सुबाहु बाहुवल का लडका था। उसने अजमेर के चौहान वशीय राजा नन्द की लडकी के साथ विवाह किया। उस चौहान राजकुमारी ने विष देकर अपने पति सुबाहु को मार डाला।

सुबाहु के रिज नाम का एक लडका पैदा हुआ। उसने अपने पिता के राजसिंहासन पर बैठकर बारह वर्ष तक राज्य किया। उसने मालवा के राजा बैरसी की लडकी के साथ विवाह किया। उसका नाम था सौभाग्य सुन्दरी। जब वह गर्भवती थी, उन दिनो मे उसने एक स्वप्न देखा कि मुझसे एक हाथी पैदा हुआ है। इस पर परामर्श देते हुए ज्योतिषियो ने कहा कि रानी से जो पुत्र उत्पन्न होगा, वह अत्यन्त पराक्रमी और शूरवीर होगा। उस रानी से जो लडका पैदा हुआ, पण्डितो के द्वारा उसका गज नाम रखा गया। जिस समय वह पूर्ण अवस्था मे पहुँचा उसके साथ पूर्व देश के राजा यदुभानु ने अपनी लडकी के विवाह का प्रस्ताव भेजा। वह मजूर किया गया।

इन्ही दिनो मे समाचार मिला कि समुद्र के समीपवर्ती राज्यो के म्लेच्छो की विशाल सेना आक्रमण करने के लिए आ रही है और उस चार लाख अश्वारोही का सेनापति खुरासान का फरीदशाह है। उसी समय यह भी मालूम हुआ कि इस होने वाले भयानक आक्रमण से घबरा कर राज्य के लोग चारो तरफ भाग रहे है। इस प्रकार के समाचारो को सुनते ही राजा रिज ने तुरत युद्ध की तैयारी की और अपनी सेना को लेकर वह हरियू नामक स्थान पर पहुँच गया। वहाँ से चार मील की दूरी पर शत्रु-सेना का शिविर था।

दोनो ओर की सेनाये आक्रमण के लिए तैयार थी। उसके फलस्वरूप भीषण युद्ध आरम्भ हुआ। अंत मे आक्रमणकारी यवनो की पराजय हुई और उनके तीस हजार सैनिक युद्ध के क्षेत्र मे मारे गये। हिन्दुओ की तरफ से जो मारे गये, उनकी सख्या चार हजार थी। इन म्लेच्छो ने इसके पहले सुबाहु पर आक्रमण किया था।

नहीं सकता और न वह बिहाड के सम्बन्ध मे कुछ जानकारी रखता है। परन्तु मि० आरसकिन ने बाबरनामा नामक ग्रन्थ का जो अनुवाद किया है। उसमे यदुपुरी का उल्लेख किया गया है। सन् १५१६ ईसवी की १७ फरवरी को बाबर ने सिंधु नदी को पार किया और १६ फरवरी को इस नदी और नगर के बीच बिहाड नामक स्थान पर वह पहुँचा, जहाँ पर दो हजार पाँच सौ वर्ष पहले कृष्ण के वशज रहा करते थे। बाबरनामा मे लिखा है, उस स्थान से सात कोस की दूरी पर एक पहाड है। जाफरनामा अर्थात तैमूर की ऐतिहासिक स्मृतियाँ नामक ग्रन्थ मे और कुछ दूसरी पुस्तको मे भी उस पहाड का नाम यदुगिरि लिखा गया है। पहले मैं पहाड के नाम से अपरिचित न था, लेकिन उसके बाद खोज करने पर मालूम हुआ कि इस पहाड पर दो वश के लोग रहा करते है और वे कृष्ण के वशज है। उनमें एक वश यदु के नाम से और दूसरा वश जनजूहा के नाम से प्रसिद्ध था। दोनो वश इस पर्वत के निवासियो पर शासन करते थे। इन दिनो मे दोनो वशो की अनेक शाखाये हो गयी है।

प्राकृतिक अवस्था—कुछ स्थानों को छोडकर राज्य के लगभग सभी स्थान
अधिक पायी जाती है—कही कम और कही अधिक । पूर्व से लेकर पश्चिमी सीमा
और नगरो की भूमि रेतीली है । उत्तरी और पूर्वी भाग में राजगढ से नोहर और
मिट्टी उत्तम श्रेणी की पायी जाती है । उस मिट्टी का रङ्ग काला है । कही-कही
भी देखा जाता है । यह मिट्टी खेती के लिये उपयोगी है । इसलिये उस भूमि मे गेहूँ,
की अधिक पैदावार होती है । भटनेर से गारा के नजदीक तक की मिट्टी भी अच्छी
मोजिलो के ग्रामो और नगरो की भूमि अधिक रेतीली है । बरसात का पानी वहाँ प
भर जाता है । जिससे खेतो को आबपाशी करने में बड़ी सहायता मिलती है । मेवा
की अपेक्षा इस राज्य मे जो बाजरा पैदा होता है । वह अधिक अच्छा समझा जात
सोठ की पैदावार भी यहाँ अच्छी होती है ।

जो मिट्टी गेहूँ के लिये उपयोगी होती है, उसमे कपास भी अधिक पैदा हो
की बोई हुई कपास सात-सात और कभी-कभी दस-दस वर्ष तक बराबर फलती है ।
को निकाल लेने के बाद कृषक लोग उनके वृक्षो की शाखाओ के नीचे से आधा काट
वृक्षो के नीचे का भाग जो रह जाता है, वह फिर बढता है और पूरे आकार मे पहुँ
बीकानेर मे रुई की पैदावार अधिक होती है ।

इस राज्य मे शाक-सब्जी भी अधिक पैदा होती है । ज्वार, कचरी, कक
तरबूज पैदा होते हैं । जल की कम वृष्टि का प्रभाव इन चीजो की पैदावार मे नही
बूजो का आटा स्वास्थ्य के लिये उपयोगी माना जाता है । भारत के अन्य प्रान्तो को
के तरबूज स्वादिष्ट और उत्तम माने जाते हैं ।

इस राज्य की खेती वर्षा पर निर्भर है । यहाँ पर दुर्भिक्ष का भय हरदम
इसलिये यहाँ के निवासी यथा सम्भव खाने के पदार्थों को अपने यहाँ सग्रह करके रख
सरो पर गरीब लोग प्रायः भुरट, बूट, हिरारू आदि के फलो को सुखाकर और उन
बाजरे के आटे के साथ मिलाकर खाते हैं । छोटी श्रेणी के लोग बनबेर, खैर और f
का अपने यहाँ संग्रह करते हैं । कुछ और भी ऐसी चीजे है जो एकत्रित करके रख
दूसरे अनाजो के अभावो मे वे खाने मे प्रयोग की जाती है ।

यहाँ की रेतीली भूमि मे बडे वृक्ष नही पाये जाते । राज्य के प्रमुख स्थानों मे
के वृक्षो के लगाने की कोशिश की जाती है । परन्तु बबूल, पीलू, और जाल नाम के
यहाँ अधिक पैदा होते हैं । सेटुडा नाम का एक वृक्ष यहाँ पाया जाता है, उसकी ऊंचा
फुट के होती है । नीम के वृक्ष भी यहाँ पाये जाते हैं । सक नाम का वृक्ष यहाँ अधिक
जाता है । लोग उसे कुएँ के चारो ओर उसका घेरा बना देते हैं जिससे कुएँ मे रेती

बीकानेर राज्य मे आक के वृक्ष बहुत पाये जाते हैं । वे बडे और मजबूत भी
जड़ो से जो रस्सियाँ बनायी जाती हैं, वे बडे काम की और मजबूत साबित होती हैं
रस्सियो से अच्छी समझी जाती है । बीदावटी मे सन और मूंज भी पैदा होती है ।

खेती के यन्त्र—यहाँ पर हल के द्वारा खेती होती है । बैलो और ऊँटो के
जाते हैं । दो बैलो अथवा ऊँटो से हल माली लोग उस दशा मे चलाते है, जब मिट्टी
होती हैं ।

जल—यहाँ की भूमि मे जल बहुत गहराई मे मिलता है । बीकानेर की रा

पश्चात् सम्पूर्ण युद्ध स्थल रक्तमय हो उठा। युद्ध की परिस्थिति लगातार भयानक होती जाती थी। एक तरफ राजपूत सैनिक थे और दूसरी तरफ यवन फौज के खूँख्वार आदमी थे।

दोनो तरफ की भयानक मार काट से युद्ध की भूमि पर लाशो के चारो तरफ ढेर दिखायी देने लगे। बहुत समय तक भयानक मार काट होने लगी और यवन सेना भागने लगी। उसके पच्चीस हजार शूरवीर सैनिक इस युद्ध मे मारे गये और सात हजार हिन्दुओ ने शत्रुओ का सहार करते हुए अपने प्राणो की आहुतियाँ दी। यवन सेना के भागते ही हिन्दुओ की सेना मे विजय का डका बजा और राजा गज अपनी विजयी सेना को लेकर अपनी राजधानी की तरफ लौटा।

अपनी राजधानी मे पहुँच कर गज युधिष्ठिर के सम्वत् ३००८ के बैसाख महीने के तीसरे दिन रविवार को रोहिणी नक्षत्र मे गजनी के सिहासन पर बैठा और यदुवशियो का शासन आरम्भ किया। इस विजय से राजा गज की शक्तियाँ अत्यन्त महान हो गयी। उसने एक एक करके समस्त पश्चिमी राज्यो को जीत कर अपने अधिकार मे कर लिया और उसके बाद उसने काश्मीर के राजा कदर्पकेलि को अपने यहाँ बुलवाया। राजा कदर्पकेलि ने उसके उत्तर मे सदेश भेजा कि मैं राजा गज की राजधानी मे नही, रणभूमि मे मिलूँगा। इस प्रकार का उत्तर पाकर राजा गज ने युद्ध की तैयारी की। काश्मीर मे जाकर उसने आक्रमण किया और राजा कदर्पकेलि को पराजित करके उसकी लडकी के साथ विवाह किया। उस रानी ने राजा गज के शालिवाहन नाम का एक लडका पैदा हुआ।

शालिवाहन को उसकी बारह वर्ष की अवस्था मे समाचार मिला कि खुरासान की सेना आक्रमण करने के लिए आने वाली है। इस समाचार को पाकर राजा गज अपने वश की देवी के मन्दिर मे जाकर तीन दिन तक पूजा करता रहा। चौथे दिन आकाशवाणी हुई कि शत्रु की विजय होगी। गजनी का अधिकार शत्रुओ के हाथो मे चला जायगा। परन्तु किसी समय तुम्हारे वश मे लोग उस पर फिर से अधिकार कर लेगे। लेकिन हिन्दुओ की हैसियत मे नही, मुसलमानो की हैसियत से। तुम इस समय अपने पुत्र शालिवाहन को पूर्व के हिन्दूओ के पास भेज दो वहाँ जाकर शालिवाहन एक राजधानी की प्रतिष्ठा करेगा। उसके पन्द्रह लडके होगे और उसके वश की वृद्धि होगी। गजनी के इस युद्ध मे तुम्हारी मृत्यु होगी। लेकिन उससे तुमको स्वर्ग और यश मिलेगा।

इस आकाशवाणी को सुनकर राजा गज ने अपने पुत्र शालिवाहन और परिवार को तीर्थ के बहाने पूर्व दिशा मे भेज दिया।

इसके बाद खुरासान की फौज रवाना होकर गजनी से दस मील की दूरी पर आ गयी। राजा गज ने गजनी की रक्षा का उतरदायित्व अपने चाचा श्रीदेव को सौपा और वह अपनी सेना लेकर शत्रु के साथ युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। खुरासान के बादशाह ने अपनी फौज को पाँच भागो मे विभक्त करके राजा गज की सेना पर आक्रमण किया। उसने अपनी सेना को तीन भागो मे बाँट कर शत्रु के साथ युद्ध आरम्भ किया।

उस युद्ध मे खुरासान का बादशाह और राजा गज—दोनो ही मारे गये। इस भीषण युद्ध मे एक लाख म्लेच्छो और तीस हजार हिन्दुओ ने अपने प्राणो को उत्सर्ग किया। इसके बाद खुरासान नरेश के लडके ने गजनी पर आक्रमण किया। उसके साथ युद्ध करते हुए श्रीदेव ने तीस दिन तक गजनी की रक्षा की। इसमे नौ हजार मनुष्यो का सर्वनाश हुआ। इसी समय श्रीदेव ने गजनी मे जौहर व्रत की पूर्ति की।*

---

* जौहर व्रत का वर्णन मेवाड के इतिहास मे लिखा जा चुका है।

लोहे की चीजे—लोहे की बनी हुई चीजे बीकानेर की बहुत प्रसिद्ध है
नगरो मे लोहे के कारखानें हैं। उनमे छोटी-बडे चाकुओ से लेकर तलवारे, भाले
की जाती हैं। यहाँ के कारीगर हाथी दाँत की बहुत-सी चीजें तैयार करते हैं।
उनकी चुड़ियाँ और कडे भी बनाते हैं।

राज्य मे साधारण श्रेणी का कपडा भी तैयार होता है, जो स्त्रियो और
काम आता है।

मेले—कोलाद और गजनेर नामक नगरो मे मेले लगते हैं। कार्तिक
महीनो मे ये मेले वर्ष मे दो बार हुआ करते है। उनमे अनेक प्रकार के व्यवस
छोटी-मोटी बहुत-सी चीजो के सिवा ऊँटो, गायो के साथ-साथ मुलतान और
प्रसिद्ध घोडे बिकते है। राज्य के ये मेले पहले बहुत प्रसिद्ध थे। लेकिन उनके वे
रह गये।

राज्य के कर—बीकानेर मे पहले कई प्रकार के कर वसूल किये जाते
भूमि का कर, खेती का कर और अपराधियो से लिया जाने वाला कर—इस प्रक
कर प्रमुख थे और उनसे राजा को पाँच लाख रुपये से अधिक की आमदनी नही हो
के सामन्तो के अधिकार मे अन्य राज्यो के सामन्तो की अपेक्षा अधिक भूमि है।
है कि बीदावत और कांधलोत लोगो ने अपने अधिककार की भूमि पर स्वतंत्र शास
उन दोनो वशो के अधिकारी की भूमि को यदि एक मे मिला दिया जाय तो वह
बीकानेर राज्य की शेष सम्पूर्ण भूमि से अधिक हो जाती है। इन दोनो वंशो ने
को कर कभी नही दिया। केवल सम्मान के लिए वे लोग राजा का गौरव स्वीकार
गढ़, रेनी, नोहर, गारा, रत्नगढ और चुरू की भूमि राजा के अधिकार में हैं।
अभी थोडे दिन पहले राजा के हाथ में आया है।

राज्य मे छै प्रकार के कर वसूल किये जाते है—(१) खालसा भूमि क
कर (३) अंग कर (४) चुंगी और यातायात का कर (५) कृषि का कर औ
का कर।

१—खालसा भूमि के कर से राज्य को पहले दो लाख रुपये वार्षिक की
थी। परन्तु अच्छे शासन के अभाव मे राज्य के कितने ही नगर और ग्राम ब
खालसा भूमि के ग्रामो की सख्या पहले दो सौ थी परन्तु अब उनकी संख्या अस्सी
है और इन अस्सी ग्रामो से राजा को जो आय होती है, वह एक लाख रुपये से अ
इस हानि का बहुत-कुछ कारण राजा सूरत सिह था। उसने राज्य की भूमि
बुद्धि से काम नही लिया। किसको देना चाहिए और किसको नही—कितनी भू
और कितनी न देना चाहिए, विचार सूरत सिह ने कभी नही किया। जिसको
देनी चाही, उसको उतनी दे दी। इसका परिणाम यह हुआ कि राज्य की दूसरी भू
मारी गयी और राजा के अधिकार मे केवल खालसा भूमि रह गयी। इस आमदनी
कारण खजाने की कमी को वह प्रजा से मनमानी धन लेकर पूरा करता रहा।

२—धुआँ कर—यह कर वास्तव मे चूल्हा कर है। प्रत्येक घर मे रसोई
खाना पकाया जाता है। घरो मे धुआँ निकलने के लिये धुआँरे नही होते। इस

बालन्द अपने पौत्र चाकेता को गजनी का शासन सौंप कर शालिवाहनपुर चला आया। उन दिनो मे जैसा कि ऊपर लिखा गया है, म्लेच्छो अर्थात् तुर्कों की संख्या बढ गयी थी। इसलिए चाकेता ने उन लोगो को अपनी सेना मे भरती कर लिया और अनेक तुर्क वहाँ के सामन्त बन गये। उन तुर्क सामन्तो और सैनिको ने चाकेता के सामने प्रस्ताव किया कि यदि आप अपने पूर्वजो का धर्म छोड दे तो हम लोग आपको बलखबुखारा के सिंहासन पर बिठायेंगे।'

बलखबुखारा मे उजबक जाति के लोग रहते थे और वहाँ के राजा के कोई लडका न था। उसके एक बहुत सुन्दर लडकी थी। चाकेता ने राज्य के लालच मे आकर बलखबुखारा की शाहजादी के साथ विवाह कर लिया और उसके बाद वहाँ के सिंहासन पर बैठकर उसने अट्ठाईस हजार अश्वारोही सेना को अपने अधिकार मे रखा। बलख से लेकर भारतवर्ष तक चाकेता ने एक विस्तृत राज्य पर शासन किया। इन चाकेता लोगो से ही मुगलो के चगत्त वंश की उत्पत्ति हुई। ×

बालन्द के तीसरे लडके कलूराव के आठ पुत्र पैदा हुए। उसके वंशज कलर नाम से प्रसिद्ध हुए। बालन्द के आठ पुत्रो के नाम इस प्रकार है—(१) शिवदास (२) रामदास (३) अस्सो (४) किसतन (५) समोह (६) गंगू (७) जस्सू और (८) भागू। ये लोग सभी इस्लाम धर्म स्वीकार करके मुसलमान हो गये थे। इनके वंशवालो की संख्या अधिक हो गयी थी। ये लोग नदी के पश्चिम मे पहाडी इलाको मे रहा करते थे।

बालनन्द के चौथे पुत्र भूभू के सात लडके पैदा हुए—(१) चम्पू (२) गोकुल (३) मेवराज (४) हसा (५) भादोन (६) रासू और (७) जागू। इस वंश के लोग भूभू नाम से पुकारे गये और इन लोगो से अनेक वंशो की उत्पत्ति हुई।

भट्टी बालन्द का सबसे बडा लडका था। वही अपने पिता के राजसिंहासन पर बैठा। भट्टी अत्यन्त पराक्रमी और प्रतापशाली राजा हुआ। उसने चौदह राज्यो को जीतकर उनकी समस्त सम्पत्ति अपने अधिकार मे कर ली और वहाँ की बहुमूल्य सामग्री और सम्पत्ति चौबीस हजार खच्चरो पर लाद कर वह ले गया। साठ हजार अश्वारोही और अगणित पैदल सैनिको की सेना उसके अधिकार मे थी।

राजा भट्टी ने सिंहासन पर बैठने के बाद लहौर मे अपनी सेना एकत्रित की और कनकपुर के राजा वीरभानु बघेले के साथ युद्ध किया। उस युद्ध मे वीरभानु के चालीस हजार सैनिक मारे गये।

भट्टी की मृत्यु हो जाने पर उसका पुत्र मंगलराव सिंहासन पर बैठा। इसके शासन काल मे गजनी के राजा धुन्धी ने अपनी विशाल सेना लेकर लाहौर पर आक्रमण किया। मंगलराव युद्ध से घबराकर अपने बडे पुत्र के साथ नदी के तट पर जंगल मे भाग गया। शालिवाहनपुर मे उसके परिवार के लोगो को शत्रुओ ने जाकर घेर लिया। जब मंगलराव ने यह सुना तो वह जिस जंगल मे जाकर छिप गया था, वहाँ से भाग कर वह लक्खा जंगल मे चला गया। वहाँ पर किसानो की आबादी थी। इसलिये मंगलराव ने उनको अपनी अधीनता मे लेकर वहाँ पर अपना राज्य कायम किया। उसके दो लडके पैदा हुये। एक का नाम था अभयराव और दूसरे का नाम शरणराव।

× यदुवंशी राजा चाकेता ने जिस प्रकार लालच मे आकर इस्लाम धर्म स्वीकार किया है, उसमे किसी को सन्देह करने की गुंजाइश नही है। इसलिये कि मुस्लिम तवारीखो मे चाकेता लोगो के प्रधान तसूचीन जो चंगेजखाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ 'जिक किया गया है। इस चंगेजखाँ से भारतीय इतिहास के पाठक अपरिचित नही हे।

१ —खालसा ×	...	१
२ —धुआंधार	...	१
३—अङ्गकर	...	२
४—वाणिज्य कर ❀	...	
५—कृषि कर	...	१
६—मालवा	...	

जोड ६

बीकानेर राज्य में धातुई नाम का भी एक कर लगता है। वह तीन वर्ष
किया जाता है और एक हल पर पांच रुपये देने पडते हैं। राजा जोरावर सिंह
किया था। एशिया गाटी के पचास ग्रामो और बेनीपाल के सत्तर ग्रामो को छो
राज्य को यह कर देना पडता है। जिन ग्रामो से यह कर नही लिया जाता, उ
कि उन ग्रामो के निवासी राज्य की सीमा की रक्षा का कार्य करते है। इस कर
को मुक्त रखा गया है। इसके द्वारा राज्य की आमदनी एक लाख रुपये से भी क

ऊपर जिन करो का वर्णन किया गया है राजा सूरतसिंह ने उनके अ
कर लगाकर अपने शासनकाल मे रुपये वसूल किये थे। उन दिनो मे राज कर्म
भयानक अत्याचार करते थे और मनमानी धन वसूल करते थे। राजा सूरतसिंह
को आमदनी दो गुनी हो गयी थी।

× नोहर जिले के	...	८४ ग्रामो का कर	...
रेनी ,,	...	२४ ,,	...
राणियाँ ,,	...	४४ ,,	...
जालोली ,,	...	१ ,,	...

(राजगढ, चुरू आदि के मिल जाने पर खालसा भूमि का कर — जोड

❀ प्राचीन काल के वाणिज्य कर का विवरण नीचे दिया जाता है :

लूनकरण नगर	...	...	...
राजगढ ,,	...	...	...
शेखसर ,,	...	...	...
राजधानी बीकानेर	...	...	...
चुरू और दूसरे नगर	...	...	...

१३

अभिषेक के समय उन लोगो ने उसे मूल्यवान सामग्री और सम्पत्ति भेट दी । अमरकोट के सोढा वशी राजा ने मन्डमराव के साथ अपनी लडकी के विवाह का इरादा किया । मण्डमराव के स्वीकार कर लेने पर अमरकोट की राजधानी मे बडी धूमधाम के साथ विवाह सम्पन्न हुआ । मडमराव के तीन लडके पैदा हुये—(१) केहर (२) मूलराज और (३) गोगली ।

केहर नाम का बालक आरम्भ से ही तेजस्वी और साहसी था । किसी समय पाँच सौ घोडे व्यावसायिक चीजो से लदे हुये आरोर मे मुलतान आ रहे थे । केहर ने अपने कुछ वीरो को उनके पीछे रवाना किया । ये लोग व्यवसायी बन कर और ऊँटो पर बैठकर उनके पीछे चले । पचनद के किनारे पहुँच कर इन लोगो ने उन व्यवसायियो पर आक्रमण किया और उन घोडो की समस्त सामग्री लूट ली । इसके बाद वे लोग लौटकर चले आये । इन्ही दिनो मे वहाँ पर केहर का नाम प्रसिद्ध हुआ । कुछ दिनो के बाद जालौर के आल्लनसिंह देवरा ने मडमराव के वयस्क पुत्रो के विवाह का सदेश भेजा । मडमराव ने उसे स्वीकार कर लिया और विवाह का कार्य बडी धूम धाम से समाप्त हुआ । इसके बाद केहर ने दुर्ग बनवाने का कार्य आरम्भ किया और उसका नाम उसने अपने कुल देवी के नाम के आधार पर रखने का विचार किया । दुर्ग तैयार होने के पहले ही मडमराव की मृत्यु हो गयी ।

केहर अपने पिता के स्थान पर अधिकारी हुआ । उसके बनवाये हुये दुर्ग का नाम तन्नो देवी के नाम पर तनोट का दुर्ग रखा गया । इन्हीं दिनो मे बराहा वंश के यशोरथ राजा ने अपनी सेना लेकर तनोट के दुर्ग पर आक्रमण किया और कहा कि यह दुर्ग हमारे राज्य की सीमा के भीतर बनाया गया है । मूल राज ने बडी बहादुरी के साथ तनोट दुर्ग की रक्षा की और यशोरथ की सेना पराजित होकर भाग गयी इसके बाद केहर और यशोरथ मे सन्धि हो गयी और उस सन्धि के फलस्वरूप मूल राज की लडकी के साथ यशोरथ का विवाह हो गया ।

यदुभारी लोगो की राजधानी कायम होने के बाद इस प्राचीन वंश का ऐतिहासिक वर्णन समाप्त करके उसका सारांश अत्यन्त सक्षेप मे दिया जाता है

१—श्रीकृष्ण यदुवशियो के प्रसिद्ध पूर्वज ।

२—जो यदुवशी अपने मूल निवास से भाग कर सिन्धु नदी के पश्चिम तरफ चले गये थे, उन्होंने मरुस्थली मे जाकर उपनिवेश कायम किया और रूम तथा खुरासान के बादशाहो के साथ युद्ध किया ।

३—जबूलिस्तान अर्थात् गजनी से भागने पर उन लोगो ने पजाब मे अपना उपनिवेश कायम किया और शालिवाहन पुर नामक राजधानी की प्रतिष्ठा की ।

४—पजाब से भागने पर मरुभूमि के पर्वत के ऊपर पहुँच कर तनोट का दुर्ग बनवाया ।

चगताई लोगो की उत्पत्ति यदु वशियो से हुई है, यह अनुमान ऐतिहासिक आधार पर कम महत्वपूर्ण नही है । मेवाड के सीसोदिया वश के आदि पुरुष बप्पा रावल को भी चित्तौड मे अपनी राजधानी कायम करने के बाद मध्य भारतवर्ष को छोड कर खुरासान चला जाना पडा था । इन सभी बातो से जाहिर होता है कि हिन्दू धर्म भारत से लेकर अत्यन्त सुदूरवर्ती देशो और राज्यो तक उन दिनो मे फैला हुआ था और मध्य एशिया के साथ भारतवर्ष के सभी प्रकार सम्पर्क थे ।

दुर्जन सिह		७००	४
गङ्गा सिह		१०००	२५
	जोड	१७००	६७६
	बन्दूके	...	...
		१७००	६७६

बीकानेर के प्राचीन सामन्तों के विवरण

सामन्त	वंश	निवास	आमदनी	पैदल सेना	अश्वा
वैरीशाल	बीका	महाजन	४००००	५००००	१००
अभयसिह	बेनीरोत	भूकरका	२५०००	५००००	२००
अनूपसिह	बीका	जसाना	५०००	४००	४०
प्रेमसिह	,,	बाई	५०००	४००	२५
चैनसिह	बेनीरोत	सावा	२००००	२०००	३००
हिम्मतसिह	रावोत	रावतसर	२००००	२०००	३००
शिवसिह	बेनीरोत	चुरू	२५०००	२०००	२००
उमेदसिह, जैतसिह	बीदावत	बीदासर, साउनदवा	५००००	१००००	२०
बहादुरसिह, सूर्यमल्ल, गुमानसिह, अताईसिह	नारनोत	मैमनसर, तिनदीसर, काटर, कुटचौर	४००००	४०००	५०
शेरसिह		निम्बाजी	५०००	५००	१२
देवीसिह, उम्मेदसिह, सुरतानसिह, करणीगन	नारनोत	सीधमुख, कारीपुरा, अनीतपुरा, बिगासर	२००००	५०००	४०
सुरतानसिह	कछवाहा	नयनावास	४०००	१५०	३
पद्मसिह	पवार	जैसीसर	५०००	२००	१०
किशनसिह	बीका	हैदेसर	५०००	२००	५
रावसिह	भाटी	पूगल	६०००	१५००	४
सुरतानसिह	,,	राजासर	१५००	२००	५
लखनेरसिह	,,	सनेर	२०००	४००	७
करणीसिह	,,	सतीसर	११००	२००	
भूमसिह	,,	चक्करा	१५००	६०	
बीका के प्रारंभिक चार सामन्त ।					
१—भवानीसिह	भाटी	बिचनोक	१५००	६०	
२—जालिमसिह	,,	गुरियाला	११००	४०	

पर एक साथ भयानक आक्रमण किया। उस समय की भीषण मार-काट से शत्रु की सेना परास्त होकर युद्ध के क्षेत्र से भाग गयी। वराह लोगो के युद्ध-क्षेत्र से भागते ही म्लेच्छ लोग भी बड़ी तेजी के साथ इधर-उधर भागे। युद्ध मे विजयी होकर तनू ने शत्रुओ के शिविर पर आक्रमण किया और उनके साथ की समस्त सम्पत्ति और सामग्री लूट ली। मुलतान और लगा लोगो की सेना के पराजित हो जाने पर बूता राजपूतो के राजा जीजू ने विवाह के लिए तनू के पास नारियल भेजा। उस विवाह के पश्चात् मुलतान के राजा के साथ तनू की मैत्री हो गयी।

तनू से पाँच लड़के पैदा हुए—(१) विजयराव (२) मुकुर (३) जयतुग (४) आलन और (५) राखेचा। दूसरे पुत्र मुकुर के माहपा नाम का एक लड़का पैदा हुआ। माहपा के मथोरा और दिकाऊ नाम के दो बालक पैदा हुए। दिकाऊ ने अपने नाम पर एक झील बनवायी। उसके वशज मुकुर सुतार के नाम से सम्बोधन किये जाते है।

तीसरे पुत्र जतुग के दो बालक पैदा हुए—रुनसी और चोहर। रुनसी बीकमपुर मे जाकर रहने लगा। चोहर के कोला और गिरिराज नामक दो बालक पैदा हुए। उन दोनो ने अपने-अपने नामो पर कोलासर और गिर राजसर नाम के दो नगर बसाये।

चौथे पुत्र आलन के चार लड़के पैदा हुए—(१) देवसी (२) तिराक (३) मसानी और (४) राकेचा। देवसी के वशज ऊँटो के व्यवसायी हो गये और राकेचा के वशजो ने व्यवसाय आरम्भ किया। इसलिए भविष्य मे वे लोग ओसवाल के नाम से प्रसिद्ध हुए।

तनू को विजसनी देवी के आशीर्वाद से एक स्थान पर बहुत बड़ी छिपी हुई सम्पत्ति मिली। तनू ने उस सम्पत्ति से एक विशाल दुर्ग बनवाया और उसका नाम विजनोट दुर्ग रखा। उस दुर्ग मे उसने सन् ७५७ ईसवी मे उस देवी की मूर्ति की स्थापना की। अस्सी वर्ष तक राज्य करने के बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

सन् ४ ईसवी मे विजयराव अपने पिता के सिंहासन पर बैठा और उसके बाद उसने अपने वश के परम शत्रु वराह जाति के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। और वराह लोगो पर आक्रमण करके उनकी सारी सम्पत्ति लूट ली। सन् ८३६ मे बूता वंश की रानी से देवराज नाम का एक बालक पैदा हुआ।

विजय राव से बदला लेने के लिए वराह और लगा जाति के लोग आपस मे मिल गये और विजय राव पर आक्रमण किया। उस युद्ध मे विजय राव ने उनको पराजित किया। उस दशा मे युद्ध से निराश होकर इन दोनो जातियो के लोगो ने षड्यन्त्र करके विजयराव के सर्वनाश का विचार किया। उन लोगो से इन दिनो की शत्रुता को भुलाकर सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार आरम्भ किया और वराह लोगो के राजा ने विजयराव के लड़के देवराज के साथ अपनी लड़की के विवाह का प्रस्ताव किया।

विजयराव को उन लोगो के षडयंत्र का कुछ भी ज्ञान न था। इसलिए उसने विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और अपने वश के आठ सो आदमियो को लेकर अपने पुत्र देवराज के साथ विजयराव राजा वराह की राजधानी भटिण्डा मे पहुँच गया। उसके वहाँ पहुँचते ही वराहो की सेना ने एक साथ आक्रमण किया और उन सबको जान से मार डाला। लेकिन देव-राज अभी तक सुरक्षित था। उसने मृत्यु का सकट अपने निकट देखकर राजा वराह के पुरोहित की शरण ली। जब वराह लोगो को मालूम हुआ तो उन लोगो ने पुरोहित के घर आक्रमण किया।

यह दृश्य देखकर पुरोहित घबरा उठा। परन्तु शरण मे आये हुए देवराज के प्राणो की

भटनेर राज्य के उत्तरी भाग की भूमि जो गाडा नदी के किनारे तक
में जन-शून्य हो रही है परन्तु प्राचीन काल मे उसकी कुछ और ही दशा थी ।
का इलाका बहुत गौरवपूर्ण माना जाता था । भारतवर्ष मे भटनेर एक प्रसि
और उसको ऐतिहासिक गौरव मिलने का कारण यह है कि मध्य एशिया से
रास्ता भटनेर से होकर है । इसलिये यह बहुत सम्भव है कि गजनी के महमूद
करने के समय भटनेर के शूरवीर जाटो ने युद्ध करके उसको रोकने की चेष्टा
पूर्वजो ने महमूद गजनी के भारत में आने के बहुत पहले इस देश देश को मरु
किया था ।

जाट वश को जब राजस्थान के छत्तीस राजवशो मे माना गया है तो
कि महमूद गजनी के बहुत पहले से ये जाट लोग बहुत शक्तिशाली थे । शहाबु
विजयी होने के बारह वर्ष पहले सन् १२०५ ईसवी मे उसके उत्तराधिकारी कु
साथ युद्ध किया था, जो मरुभूमि के उत्तरी भाग मे रहते थे और इस युद्ध
उन जाटो ने मुस्लिम साम्राज्य क हाँसी नामक इलाके पर अधिकार कर लिया
की उत्तराधिकारणी रजिया बेगम अपने राज्य का सिंहासन छोडने के लिये वा
लिये जाटो के पास गयी थी और उन जाटो ने रजिया बेगम को अपने यहाँ
जाटो ने रजिया बेगम की सहायता मे उसके शत्रुओ के साथ युद्ध भी किया थ
परिणाम न निकला और रजिया बेगम स्वय युद्ध मे मारी गयी ।

सन् १३५७ ईसवी मे फिर से आक्रमण करके तैमूर ने जब भारत
लिया, उस समय उसने भटनेर पर आक्रमण किया था और उसके इस आक्र
कि तैमूर ने जब मुलतान पर आक्रमण किया था, उस समय जाटो ने उसके
था । इसके लिये उसके बदले मे तैमूर ने अपनी सेना लेकर भटनेर पर आक्र
जाटो को उसने भयानक क्षति पहुँचायी ।

इस भटनेर के साथ जाटो और भाटी लोगो का इतना निकटवर्ती स
को ऐतिहासिक आधार लेकर और सही की खोज करके, एक दूसरे से पृ
होता है । तैमूर के आक्रमण करने के कुछ दिनो के बद मरोठ और फूलर
राजा की अधीनता से निकलकर भटनेर पर अधिकार कर लिया था । उस
बैरसी । भटनेर मे उन दिनो एक मुसलमान शासन करता था । उसकी नि
थी अथवा दिल्ली के बादशाह के द्वारा, इसको निश्चित रूप से नही कहा जा
उन दिनो भटनेर मे जो मुसलमान शासन करता था, उसका नाम था, चिगा

भटनेर पर सत्ताईस वर्ष तक राज्य करके बैरसी ने संसार छोडकर र
उसके स्थान पर उसका बेटा भीरू राजा हुआ । भीरू के शासनकाल मे चिगा
रियो ने दिल्ली के बादशाह की सहायता लेकर दो बार भटनेर पर आक्रमण
भीरू ने उसको पराजित किया । इसके पश्चात् तीसरी बार फिर उसने एक
भटनेर पर आक्रमण किया । उस समय युद्ध में भीरू की शक्तियाँ निर्बल पड़
में शत्रु से सन्धि का प्रस्ताव करना पड़ा । उस समय शत्रु पक्ष से उसको उत्त
इस्लाम धर्म को स्वीकार कर ले अथवा दिल्ली के बादशाह के साथ अपनी ल
आप के राज्य भटनेर का होने वाला विनाश रोका जायगा ।

वह योगी वहाँ पर आकर देवराज से मिला और उसने देवराज को सिद्ध पुरुष की पदवी दी। वह योगी अपनी शक्ति से किसी भी धातु को सुवर्ण बना देता था। वराह राज मे देवराज गुप्त रूप से जिस घर मे रहता था, उसी घर मे यह योगी भी रहा करता था। एक दिन वह योगी अपने रासायनिक घडे को वही पर रखकर बाहर चला गया। उस घडे मे एक प्रकार का रासायनिक रस भरा हुआ था। उस रस के एक बूँद के स्पर्श से देवराज की सम्पूर्ण तलवार सुवर्ण की हो गई देवराज उसी अवसर पर उस घर मे निकल और वराह राज से भाग कर अपने नाना के यहाँ पहुँचा था और वहाँ से मरुभूमि मे पहुँच कर एव घडे मे भरे हुए रासायनिक तत्वो की सहायता से उसने अपरिमित सम्पत्ति अपने अधिकार मे करली, जिससे वह उस मरुभूमि मे विशाल दुर्गों का निर्माण करा सका।

देवराज के चले आने के बाद बहुत दिनो मे उस योगी ने सुना कि देवराज आजकल एक राज्य का अधिकारी है तो उसने देवराज के पास आकर और उससे भेंट करके उसने कहा : "आपने मेरी जिस सम्पति का अपहरण किया है, उसको मैं केवल उस शर्त पर नही प्रकट न करूँगा यदि आप मेरे चेला हो जायँ और मेरी तरह योगी का वेष धारण करे।

देवराज ने उसी समय योगी की बात को स्वीकार कर लिया। उसने गेरुए वस्त्र पहने। कानो मे कुण्डल पहने और हाथ मे कमण्डल लेकर उसने अपने वश वालो के दर्वाजो पर जाकर भीख माँगना आरम्भ किया। उसका वह कमण्डल सोने के बहुमूल्य चीजो से भर जाता था। यदुवशियो की उपाधि बहुत पहले से राय थी। लेकिन इस योगी के सम्पर्क के बाद यदुवशियो की उपाधि रावल हो गयी। इस रावल की उपाधि को देकर योगी ने जिस विधान से देवराज को राजतिलक किया उस विधान को राजतिलक के समय मानने के लिए देवराज को विवश किया। जब तक यदु का वश रहेगा देवराज ने हर्षपूर्वक उसे स्वीकार किया। इसके बाद वह योगी अदृश्य हो गया।

देवराज के जीवन की सभी परिस्थितियाँ बदल गयी थी और उसने अपने आपको शक्तिशाली बना लिया था। इसलिए यदुवशियो का विनाश करने वाली वराह जाति के लोगो से बदला लेने की उसने तैयारी की और आक्रमण करके उसने वराह लोगो को परास्त किया। इसके साथ-साथ उसने जाति के राजमहलो मे प्रवेश करके सभी प्रकार के अत्याचार किये और उन लोगो से बदला लेकर वह देवरावल लौट आया। इसके बाद उसने लगा लोगो पर आक्रमण किया। लगा का युवराज अपनी सेना के साथ विवाह के लिए अलीपुर जा रहा था। इसी अवसर पर देवराज ने अपनी सेना लेकर रवाना हुआ और उन लोगो पर आक्रमण करके उसके एक हजार आदमियो को मार डाला। परास्त होकर लगा के युवराज ने देवराज की अधीनता स्वीकार कर ली।

यदुभट्टी वश के पजाब से भागने के समय से लेकर मरुभूमि मे उनकी राजधानी के कायम होने के समय तक प्रत्येक सघर्ष मे लगा जाति के लोगो ने यदुभट्टी लोगो की बराबर सहायता की थी। इसलिए उस जाति के सम्बन्ध मे यहाँ पर कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है।

लगा जाति के लोग वास्तव मे राजपूत थे और वे अग्निकुल की चार शाखाओ मे चालुक्य अथवा सोलकी राजपूतो से सम्बन्ध रखते थे। वे लौकोट के प्राचीन निवासी थे। इससे प्रकट होता है कि आबू पर्वत से आने के बाद और हिन्दू धर्म स्वीकार करने के पहले वे लौकोट मे रहते थे।

सम्बत् ७८७ सन् ७३१ ईसवी मे यदुभट्टी लोगो के द्वारा तनोट के दुर्ग के निर्माण से लेकर सम्बत् १५३० सन् १४७४ ईसवी तक सात सौ तेतालीस वर्षों का एक लम्बा समय होता है। इन

जैसलमेर का इतिहास

पचासवाँ परिच्छेद

मरुभूमि में जैसलमेर—उसका प्राचीन नाम— राज्य की भाटी जाति—
की शाखा है—भाटी लोगो का क्रमहीन इतिहास — प्राचीनकाल का जैसलमेर—
विचारो का जन्म—मध्य एशिया के लोगो को म्लेच्छ कहना — यदुबंशी श्रीकृष्ण
यदुबशियो के अत्याचार—कृष्ण के बाद यदुबंशियो का इतिहास—म्लेच्छो के सा

भारत की मरुभूमि मे फैले हुये राज्य का नाम जैसलमेर आधुनिक है।
राज्य का नाम मेर था, जैसा कि इस देश के पुराने भूगोल से प्रकट होता है। र
पथरीली भूमि होने के कारण इसका नाम पहले मेर राज्य था। भारत के सम
एक राज्य ऐसा है, जिसकी भूमि मे कङ्कड़-पत्थर बहुत हैं। इस राज्य की अनेक
ऐतिहासिक अनुसन्धान करने वालो को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, उनमे यह
वाली जाति की स्वाभाविकता और राज्य की प्राकृतिक सुन्दरता का विशेष स्था

इस राज्य की भाटी जाति यदुबशी राजपूतो की एक शाखा है। तीन ह
भाटी लोग अत्यन्त शक्तिशाली थे और जो राजा आजकल भारत के इस दूरव
करता है। वह यदुबशी राजाओ का बशज होना स्वीकार करता है। वह जमना
स्थानो से लेकर जगतकुण्ठ तक का राजा है। इस जगतकुण्ठ का नाम बाद मे द्वा

इन लोगों का कोई क्रमबद्ध इतिहास नही मिलता, जिससे उनके पूर्वजो के
के साथ क्रम से लिखा जा सके, परन्तु जो कडियाँ मिलती है, उनसे एक ऐसी
जाती है जो उनके मौलिक सम्बन्ध को उपस्थित करती है। यदुबशी भाटी लो
खोज करने के समय दो अनुमान हमारे मस्तिष्क मे क्रम से उत्पन्न होते है और
ही अविश्वास करना कठिन मालूम होता है। पहला अनुमान तो यह है कि यदुब
लोगो से उत्पन्न हुये है और उनके पूर्वज सीथियन जाति के लोग थे। दूसरे अनुम
होती है कि इन लोगो की मूल उत्पत्ति हिन्दुओ से है। मनुष्य जाति के सम्बन्ध में
जब हम इतिहास के अत्यन्त प्रचीनकाल मे पहुँच जाते हैं, जब सीथियन और
ही थे तो हमे इतिहास के इस सत्य पर विश्वास करना पड़ता है कि इन दोनो
उत्पत्ति एक थी और उनके आदि पूर्वज एक थे। उन पूर्वजो के बशो ने अपने मूल
कर एक, दूसरे से पृथक हो गये। कुछ लोग सीथिया में जाकर रहने लगे और वे
प्रसिद्ध हुये। दूसरे लोगो ने भारत में आकर रहना आरम्भ किया और हिन्दुओ
हुये। क्योकि कास्पियन सागर से लेकर गङ्गा के किनारे तक जितनी जातियाँ इस

ली । यशोकर्ण ने देवरावल मे आकर रोते हुए देवराज मे प्रार्थना की · "राजन, नगरी के राजा ने विना कोई अपराध के मुझे कैद कर लिया, मेरी सम्पूर्ण सम्पत्ति छीनकर अनेक प्रकार के कष्ट मुझे दिये और उसने बाद मुझे छोड दिया । कैद करने के समय मेरे गले मे रस्सी बांधी गयी थी, जिसके निशान अब तक मेरी गर्दन मे मौजूद है ।"

देवराज ने यशोकर्ण की प्रार्थना को सुनकर उसकी गर्दन मे रस्सी के निशान देखे । वह मन ही मन सोचने लगा कि यशोकर्ण के साथ जो यह अपमानपूर्ण व्यवहार किया गया है, वह मेरा अपमान है । इसलिए क्रोध मे आकर उसने प्रतिज्ञा की कि मैं उस अपमान का जब तक बदला न ले लूँगा, अन्न-जल ग्रहण न करूँगा ।

देवराज ने धारानगरी के राजा से अपमान का बदला लेने के लिए प्रतिज्ञा की । परन्तु उस समय उसने देवरावल और धारा नगरी की दूरी का विचार न किया । बिना अन्न-ग्रहण किये तो कोई भी कई दिनो तक रह सकता है । परन्तु बिना जल के एक दिन भी काटना कठिन हो जाता है । देवरावल से धारानगरी पहुँचने और उसके विजय करने के लिए समय की आवश्यकता है । उतने समय तक बिना जल के कोई मनुष्य जीवित नही रह सकता । उस दशा मे देवराज की प्रतिज्ञा का क्या परिणाम होगा, इस प्रश्न को सोचकर देवराज के मन्त्री एक साथ चिन्तित हो उठे ।

इस विषय मे मन्त्रियो ने देवराज के पास जाकर बातचीत की और जो सकट सामने था, उस पर विचार करने के लिए देवराज से प्रार्थना की । उनकी बातो को सुनकर देवराज ने क्षण भर कुछ सोचा और अपने मन्त्रियो की तरफ देखकर कहा "फिर अब क्या होना चाहिए ?"

मन्त्रियो ने आपस मे परामर्श करके और एक मत होकर देवराज से कहा "राजन्, सब-कुछ हो सकता है । धारा नगरी के निवासी प्रमार राजपूत है । वहां का राजा भी इस वश का है । आपके सेना मे बहुत से सैनिक प्रमार वशी है । मिट्टी की एक धारा नगरी तैयार करवायी जाय । उसको रक्षा के लिए आपकी सेना के प्रमार राजपूत अपने हाथो मे तलवारे लेकर इस धारा नगरी की रक्षा करे और आप अपनी सेना के साथ उन पर आक्रमण करे । उस समय आप के प्रमार वशी सैनिक पराजित हो और इस प्रकार विजयी होकर आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करे ।'

मन्त्रियो के परामर्श के अनुसार धारा नगरी के निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ । देवराज की सेना के सभी प्रमार सैनिक तलवारे और भाले लेकर उस नगरी की रक्षा करने के लिये पहुँच गये । इसके बाद देवराज ने पूर्व निश्चय के अनुसार, सेना लेकर उस नगरी पर आक्रमण किया । रक्षा करने वाले प्रमार सैनिको ने देवराज के साथ युद्ध करना आरम्भ किया । उसी समय प्रमार सैनिको ने कहा .

जँह पँवार तँह धार है, जहाँ धार वहाँ पँवार ।
धारक विना पवार नहि, नहि पवार विन धार ।

जहाँ पर प्रमार रहते है, धारानगरी वही पर है । जहाँ पमार नही रहते, धारानगरी वहाँ वहाँ नही है ।

प्रमार सैसिक ने बडे साहस और शौर्य के साथ उस कृत्रिम धारानगरी की रक्षा करते हुए देवराज के साथ युद्ध किया । तेजसिंह और सारग नामक प्रमार सैनिक उनका नेतृत्व कर रहे थे । उस युद्ध मे समस्त प्रमार सैनिक—जो सख्या मे एक सौ बीस थे—मारे गये और उनको जीत कर देवराज ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की । जो प्रमार सैनिक युद्ध करते हुए मारे गये, उनके सिद्धान्त

उस सूर्यकुमारी से पुरूरवा नामक लडका पैदा हुआ। उसने मथुरा मे प्रतिष्ठा की और बहुत समय तक वह उस राज्य पर शासन करता रहा। मथुरा राजधानी थी। चन्द्रवशी यादव प्रयाग के मूल निवासी थे। यदुवंश मे श्रीकृष्ण ने और द्वारिकापुरी की प्रतिष्ठा की थी। कृष्ण के आठ रानियाँ थी इन रानियो मे थी। उसके पुत्रो मे प्रद्युम्न सब से बडा था। उसने विदर्भ की राजकुमारी से उस राजकुमारी से अनिरुद्ध और बज्र नाम के दो पुत्र पैदा हुए। बज्र से भाटियो की बज्र के दो लडके हुए। पहला का नाम था नाभ और दूसरे का खेर अथवा क्षेर।

द्वारिका मे जब यादव युद्ध कर रहे थे, उनके साथ के बहुत से लोग मारे गये ने स्वर्ग की यात्रा की, उस समय बज्र मथुरा से अपने पिता को देखने के लिए वहाँ चालीस मील के आगे मार्ग मे उसने सुना कि उसके परिवार के सभी लोग युद्ध में है, यह सुनते ही उसको इतना अधिक मानसिक आघात पहुँचा कि उसकी वही पर उसके बाद नाभ मथुरा के सिंहासन पर बैठा और खेर द्वारिका चला गया।

यादवो ने सम्पूर्ण भारत मे अपने राज्य का विस्तार करके जिन छत्तीस अत्याचार किया था, वे सभी राजवश अब उनसे अपना बदला लेने लगे। इसका परि कि खेर को द्वारिकापुरी से भागना पडा और वह मरुस्थली मे पहुँचकर पश्चिम मे उ सन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ तक भागवत में उल्लेख पाया जाता है। इतिहास लिखने के लिए मथुरा के ब्राह्मण शुक्र धर्म का हम आधार ले रहे है।

नाभ के एक बेटे का नाम प्रतिब्राहु था। खेर से जाडेचा और यदुभानु का यदुभानु जिन दिनो मे तीर्थ यात्रा के लिए गया था, मार्ग मे उसके वंश की देवी ने और सोते हुए जगा कर उससे कहा "तुम्हारी जो इच्छा हो मुझसे माँगो।"

यदुभानु ने कहा : "देवी, तुम मुझे किसी राज्य का राजा बना दो, जिससे साथ वहाँ पर रह सकूँ।"

"तुम इन्ही पहाडो पर राज्य करो"—यह कह कर देवी वहाँ से

सवेरा होने पर यदुभानु की नीद खुली। उस समय उसको रात मे देखे हुए आयी। उसके बाद ही उसके कुछ दूरी पर मनुष्यो का कोलाहल सुनायी पड़ा। तो मालूम हुआ कि यहाँ के राजा की मृत्यु हो गयी है। उसके कोई पुत्र नही है। इ स्थान पर किसको राजा बनाया जाय, लोग इसके लिए आन्दोलन कर रहे हैं।

उस बढते हुए कोलाहल के समय मृत राजा के मंत्री ने कहा : "आज मैंने है कि श्रीकृष्ण का एक वशज यहाँ पर आया है।"

मत्री के मुख से इस बात को सुनकर सभी लोग बहुत-प्रसन्न हुए और कृष्ण को लोग खोजने निकले। यदुभानु के मिल जाने पर लोग उसे राजधानी मे ले गये परामर्श से यदुभानु को उस राज्य के सिंहासन पर बिठाया गया। यदुभानु ने अपने न यदु गिरि की प्रतिष्ठा की, उसके बाद बहुत प्रसिद्ध हुआ।*

अपने राज्य मथुरा मे शासन करता रहा। उसके छे लडके पैदा हुए, उनमे बडे लडके था। उसने भारत मे इन्दुवश की प्रतिष्ठा की।

*इस विषय मे भाटी वश के इतिहास मे जो उल्लेख मिलता है, वह अधिक मालूम होता है। जैसलमेर के किसी आदमी से यदि पूछा जाय कि यदुगिरी कहाँ पर है

एक घोडो का व्यवसायी अपने साथ एक सौ घोडे लिये जा रहा था। उन घोडो मे एक घ डा बहुत श्रेष्ठ था। उस व्यवसायी ने एक लाख रुपये मे उसको बेचने का निश्चय किया। सिंधु नदी की पश्चिमी सीमा का रहने वाला गाजीखाँ नाम का एक पठान उस घोडे का मालिक था। दूसा ने अपनी सेना लेकर गाजी खाँ पर आक्रमण किया और उसको मारकर वह उसके साथ उस श्रेष्ठ घोडे को अपने साथ ले आया।

सिंह के एक बालक पैदा हुआ, उसका नाम मच्छागार था। उसके पुत्र अल्हा के रतन और जग्गा नामक दो लडके पैदा हुआ। उन्होने मन्दोर के परिहार राजा जगनाथ पर आक्रमण किया और उसके पाँच सौ ऊँटो को जीतकर अपने राज्य मे ले आये। सिंह के वंशज सिंहराव राजपूत के नाम से प्रसिद्ध हुए।

वापेराव के दो बालक हुए। एक का नाम था, पाहुर और दूसरे का नाम था, मांदन। पाहुर के विरम और तोलर नाम के दो लडके हुए। उनके वंशज पाहुर राजपूत के नाम से प्रसिद्ध हुए। पाहुर राजपूतो ने जोहिया के समस्त नगरो मे अपना अधिकार कर लिया और पूगल मे राजधानी बनाकर वहाँ पर बहुत से कुए खुदवाये। ये कुए पाहुर कूप के नाम से प्रसिद्ध है।

मारवाड के नगौर जिले मे खाचो के करीब सींची वंश के लोग रहते थे। उनमे जिंझा नामक एक आदमी बडा साहसी था। उसने पूगल की सीमा तक पहुँचकर लूटमार की और अगणित भट्टियो का सर्वनाश किया। इन लुटेरो से बदला लेने के लिए दूसा अपने साथ कुछ साहसी वीरो को लेकर रवाना हुआ और उनके नगरो मे पहुँचकर उसने सौ सौ लुटेरो का सर्वनाश किया।

गहिलोत राजा प्रताप सिंह खडाल राज्य मे रहता था। दूसा अपने तीन भाइयो के साथ वहाँ पहुँचा और उनकी तीन लडकियो के साथ विवाह किया। उसके कुछ दिनो के बाद खडाल राज्य मे बिलोचियो के अत्याचार आरम्भ हुए। उन्ही दिनो मे उनके साथ युद्ध हुआ, जिसमे पाँच सो बिलोची मारे गये और बाकी सब भाग गये। बाछराव की मृत्यु के बाद उसका बडा पुत्र दूसा सवत् १०४४ मे यदुवंशियों के सिंहासन पर बैठा।

दूसा के सिंहासन पर बैठने के थोडे दिनो बाद सोटा जाति के राजा हमीर सिंह ने दूसा के राज्य पर आक्रमण किया और वहाँ के कई एक नगरो को लूट लिया। यह देखकर दूसा अपनी सेना लेकर रवाना हुआ और उसने हमीर सिंह पर उसकी राजधानी मे जाकर आक्रमण किया। उस लडाई मे हमीर सिंह की पराजय हुई।

दूसा के जयसलदेव और विजयराव नाम के दो बालक पैदा हुए। उसकी वृद्धावस्था मे तीसरा लडका पैदा हुआ। जिसका नाम लजा विजयराव रखा गया। दूसा के मरने पर राज्य के सामन्तो ने उसके तीसरे राजकुमार लजा विजयराव को राजसिंहासन पर बिठाया। राज्य का अधिकार प्राप्त करने के पहले लजा विजयराव ने सोलकी वंश के सिद्धराज जयसिंह की लडकी के साथ विवाह किया था। उस विवाह के अवसर पर जयसिंह की रानी ने लजा विजयराव के मस्तक पर तिलक करते हुए कहा था "प्रिय, उत्तर दिशा मे रहने वाले लोग इस राज्य से ईर्षा रखते है और वे प्राय इस राज्य पर अत्याचार किया करते है। इसलिए उन लोगो से इस राज्य की रक्षा करना।"

सोलंकिनी राजकुमारी से लजा विजयराव के एक बालक पैदा हुआ। उसका नाम भोजदेव रखा गया। अपने पिता की मृत्यु के बाद पच्चीस वर्ष की अवस्था मे भोजदेव लुद्रवा का राजा हुआ। दूसा के दूसरे लडके इस समय वयस्क हो चुके थे। जयसल की अवस्था पैंतीस वर्ष और विजयराव की आयु बत्तीस वर्ष की थी।

राजा यदुभान ने गज के साथ अपनी लडकी का विवाह निश्चय किया
तिथियाँ इन्ही दिनो मे थी, जब कि म्लेच्छो के आक्रमण का समाचार गज के
को मिला था। इस आक्रकरण के समाचार का कोई प्रभाव उस विवाह पर न पडा।
के लिए राजा यदुभानु के राज्य मे गया था। वह यदुभानु की कुमारी हसावती के सा
अपनी नव विवाहिता पत्नी के साथ युद्ध भूमि मे आया। युद्ध का अत हो चुका था।
तीस हजार आदमी मारे जा चुके थे। खुरासान का राजा पूर्ण रूप से पराजित हो
उन यवनो को पराजित करने मे राजा रिज भयानक रूप से जख्मी हुआ और
उसकी मृत्यु हो गयी।

खुरासान का बादशाह पराजित होकर वहाँ से भाग गया और राजा रिज
दो बार युद्ध करके वह पराजित हुआ। दूसरे युद्ध मे जख्मी हो जाने के कारण
परास्त होने के बाद खुरासान के बादशाह की सहायता के लिए रूम के बादशाह
फौज पहुँच गयी थी। यह फौज कुरान और इस्लाम का प्रचार करके अपने राज्य
रही थी। असुरो की इस सेना के वहाँ पहुँच जाने पर म्लेच्छो ने फिर से युद्ध की तैय
रिज की मृत्यु हो चुकी थी। उसके पुत्र गज ने उसका स्थान लिया और तुरन्त उसने
को बुलाकर परामर्श किया।

म्लेच्छो के साथ जहाँ पर यह युद्ध हुआ था, वहाँ कोई ऐसा सुदृढ और
जिसका आश्रय लेकर अगणित सैनिको की विशाल सेना के साथ युद्ध किया जा सके।
के परामर्श के अनुसार उत्तर दिशा की ओर वाल पहाड पर एक मजबूत दुर्ग का
बाद कुल देवी से प्रार्थना की गयी। देवी ने भविष्य वाणी की कि हिन्दुओ की शास
जायगी। देवी ने अपनी भविष्य वाणी मे नव निर्मित दुर्ग का नाम गजनी रखने का
इस दुर्ग के निर्माण का कार्य समाप्त होते होते राजा गज को समाचार मिला कि रूम
की फौजे बहुत समीप आ गयी है। उसी समय युद्ध के बाजे बजने लगे और सेना
लगी। ज्योतिषियो ने युद्ध के लिए रवाना होने के लिये मूहूर्त बताया। उसके
की सुदी त्रयोदशी बृहस्पति के दिन एक पहर के बाद वह शुभ घडी थी। उस शुभ
यात्रा करने के लिए बाजे बजे और राजा गज ने अपनी सेना लेकर सोलह मील
मुकाम किया। दोनो म्लेच्छ सेनाये युद्ध की प्रतीक्षा कर रही थी।

जिस दिन राजा गज की सेना ने शत्रु के निकट पहुँचकर मुकाम किया, उसी
मान बादशाह के पेट मे भयानक पीडा उत्पन्न हुई जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। जब
शाह सिकन्दर को यह समाचार मिला तो उसने बहुत रंज किया और अन्त मे उसने
सेना के साथ युद्ध करने का इरादा कायम रखा। उसने अपनी फौज को तैयार
और हाथी पर हौदा कसे जाने के बाद वह युद्ध के लिए तैयार होकर उस हौदे पर
तैयार होते ही यवन सेना मे युद्ध के बाजे बजे। वह फौज आगे की तरफ रवाना

दोनो ओर की सेनाये एक दूसरे के करीब पहुँच गयी। उसी समय भयान
हुआ। अगणित सैनिको के पदाघातो से पृथ्वी कम्पायमान हो उठी। आकाश की
दिखायी देने लगा। उस समय युद्ध मे लडते हुए सैनिको की तलवारो की आवाज के
सुनायी न पडता था। कभी-कभी घोडो के बोलने की आवाज कानो मे आती। दोनो अ
सैनिक अपनी भीषण मार के साथ शत्रुओ का संहार करते हुये आगे बढने की चे
तलवारो की धारो से सैकडो शूरवीरो के सिर कट-कट कर भूमि पर गिर रहे थे। टूट

१—हे प्रतापी यदुवशी राजन, आप यहाँ पर आइए और इस पर्वत के ऊपर अपना दुर्ग बनवाइए।

२—लुद्रवा की राजधानी नष्ट हो गयी है और जयसल राज्य यहाँ से दस मील की दूरी पर है, जो सुदृढ और सुरक्षित है।

३—हे यदुवंशी राजन् आप जयसल और लुद्रवा को त्याग कर यहाँ पर आइए और अपनी राजधानी की प्रतिष्ठा करिए।

पत्थर पर लिखी हुई ये पक्तियाँ सस्कृत भाषा के श्लोको में थी। इनकी जानकारी उस ब्राह्मण के सिवा और किसी को न थी। उसने जयसल से यह भी कहा कि आप यहाँ पर अपनी रक्षा के लिए जो दुर्ग के निर्माण का विचार कर रहे है। वह दो बार बाहरी जातियों के द्वारा विध्वंश किया जायगा, युद्ध होगा, रक्त के नाले बहेंगे और आपके उत्तराधिकारी उसे अपने अधिकार से खो देंगे।

सम्वत् १२१२ के श्रावण महीने की वदी द्वादशी रविवार के दिन सन् ११५६ ईसवी को जैसलमेर की राजधानी की प्रतिष्ठा हुई। इसके बाद लुद्रवा के निवासी अपने परिवारों के साथ वहाँ आकर रहने लगे। जयसल के केलन और शालिवाहन नाम के दो बालक पैदा हुए। जयसल ने पाहुवशी एक विद्वान को अपना मन्त्री नियुक्त किया। भट्टी लोगो के पुराने शत्रु राजपूतो ने इन्ही दिनो मे फिर खडाल राज्य पर आक्रमण किया और उसके फलस्वरूप, उन लोगो को भयानक क्षति उठानी पडी। इस घटना के बाद जयसल पाँच वर्ष तक जीवित रहा। उसके मरने के बाद उसका छोटा लडका सालिवाहन द्वितीय उसके राज सिहासन पर बैठा।

बावनवाँ परिच्छेद

राजा के साथ मत्री का विरोध—युद्ध मे राजा जगभानु की पराजय—रावल शालिवाहन के साथ षडयन्त्र—प्रजा का विरोध—जैसलमेर का सूना राज-सिहासन—खडाल राज्य पर खिजर खाँ का आक्रमण—चन्ना राजपूतो से साथ युद्ध—नागौर मे मुजफर खाँ के अत्याचार—राजा लाखन की मूर्खता—राज्याधिकार के लिए सघर्ष-अलाउद्दीन का आक्रमण।

जैसल ने अपनी बनवाई हुई राजधानी का नाम जैसलमेर रखकर बारह वर्ष तक शासन किया। जैसलमेर अब तक यदुवशी लोगो के अधिकार मे था। जैसल यदुवशी एक योग्य मनुष्य के अपने राज्य मे प्रधान मन्त्री काल मे जैसलमेर राज्य की उन्नति हुई।

जैसल की मृत्यु के पश्चात उसके बडे पुत्र केलन को राज्य का अधिकार था। वह पिता के राज्यसिंहासन पर बैठा। परन्तु राज्य का प्रधान मन्त्री पाहु उससे प्रसन्न न था। इसलिए उसने केलन का विरोध किया और राज्य से उसे निर्वासित करके जैसल के छोटे पुत्र राजकुमार शालिवाहन द्वितीय को सबके परामर्श से सन् ११६८ ईसवी मे राज्य सिहासन पर बिठाया।

पिता के मारे जाने का समाचार सुन कर शालिवाहन बारह दिनो तक
उसके वाद पंजाव मे आकर एक स्थान पर उसने अपनी नयी राजधानी कायम की
शालिवाहन पुर रखा। उस राजधानी के आस-पास जो भूमिधर रहते थे, उन्होंने वह
वाहन को अपना राजा माना। विक्रम सम्वत् ७२ के भादो के महीने मे अष्टमी
शालिवाहन पुर राजधानी की प्रतिष्ठा हुई। ×

शालिवाहन ने पजाव के अनेक राज्यो को जीतकर अपने शासन को २
उसके पन्द्रह लडके पैदा हुये। जिनमे तेरह लड़को के नाम इस प्रकार है—(१)
(३) धर्माङ्गद (४) बच्च (५) रूपा (६) सुन्दर (७) लेख (८) जसकर्ण (६) न
(११) नेपक (१२) गाङ्गेव और (१३) जागेव। इन सभी राजकुमारो ने अपनी
स्वतन्त्र राज्यो की स्थापना की।

वालन्द के युवावस्था मे पहुँचने पर दिल्ली के तोवर वशी राजा जयमाल ने
विवाह का उसके साथ प्रस्ताव किया और राजपूतो की प्रचलित प्रणाली के
भेजा। वालन्द ने उसको स्वीकार कर लिया। दिल्ली की राजकुमारी के साथ
हो गया। वह अपनी नव विवाहिता पत्नी के साथ दिल्ली से शालिवाहनपुर आया
शालिवाहन ने अपने पिता का वदला लेने के लिये तैयारियाँ शुरू कर दी। और
अपनी सेना लेकर वह अटक नदी को पार करके आगे बढ़ा।

गजनी की म्लेच्छ सेना ने उसके साथ युद्ध किया। शत्रु की तरफ से २
रणभूमि मे पहुँचे। उस भयानक संग्राम मे गजनी के म्लेच्छ मारे गये। शा
सेना लेकर गजनी पर अधिकार कर लिया। कुछ दिनो तक वह गजनी मे वना
वहाँ का शासन अपने वडे पुत्र वालन्द को सौप कर वह अपनी राजधानी लौट आ
ही दिनो के वाद तेंतीस वर्ष नौ महीने तक राज्य करके उसने परलोक की यात्रा की

शालिवाहन के वाद उसके राज्य सिंहासन पर वडा पुत्र वालन्द वैठा। ७
ने पजाव के सम्पूर्ण पहाडी भागो पर अपने स्वतन्त्र राज्य कायम कर लिए थे। इन
की शक्तियाँ फिर प्रवल हो गयी थी। उन तुर्को ने गजनी के आस-पास के सभी नग
पर अधिकार कर लिया। इन दिनो मे वालन्द का कोई मन्त्री न था। वह अकेले ह
का शासन करता था। उसके सात लडके पैदा हुये—(१) भट्टी (२) भूपति (३) क
(५) सहराव (६) भैसडच और (७) मँगरेव। वालन्द के दूसरे पुत्र भूपति से च त
लडका पैदा हुआ। उससे चाकेता वश की सृष्टि हुई।

चाकेता के आठ लडके पैदा हुए—(१) देवसी २) भैरो (३) क्षेमकर्ण (४)
पाल ६) धरसी (७) विजलीखान और (८) साहसमन्द। *

× अपने परिवार और दूसरे लोगो के साथ शालिवाहन गजनी से भागकर
आया था और राजा गज के मारे जाने के वाद विक्रम सम्वत ७२ के भादो के मह
ईसवी को शालीवाहनपुर राजधानी की प्रतिष्ठा की। उस स्थान का सही उल्लेख
नहीं मिलता। लेकिन उस समय की अनेक वातो के आधार पर मालूम होता है कि वह
० समीप था।

* वादशाह वावर ने यदुवशी से उत्पन्न यदुगिरि की जिस जनजूही जाति का
है। वही जोहिया अथवा जदु जाति है। यह झझू उसी जोहिया जाति का आदि पुरुष

देखा। उसने शालिवाहन के लौटने पर उससे साफ-साफ कह दिया

"जैसलमेर के सिंहासन पर अब आपका कोई अधिकार नहीं।"

शालिवाहन ने देखा कि राज्य प्रजा बीजलदेव का पक्षपात कर रही है और उसको हमारा कुछ भी ख्याल नहीं है। इस दशा में सभी प्रकार निराश होकर वह खडाल राज्य चला गया। यह राज्य देरावर की अधीनता में था। वहाँ पहुँचकर शालिवाहन अधिक समय तक जीवित न रहा। वहाँ पर खिजरखाँ नामक एक बलोची ने विद्रोह किया। शालिवाहन उसको दमन करने के लिए रवाना हुआ और अपने तीन सौ आदमियों के साथ वहाँ पर वह मारा गया।

इस प्रकार शालिवाहन द्वितीय का सर्वनाश हुआ परन्तु विश्वासघाती उसका पुत्र बीजलदेव भी अधिक दिनों तक जीवित न रहा। धाभाई के साथ उसका द्वेषभाव उत्पन्न हुआ। उससे बीजलदेव पूरी तौर पर उसका शत्रु बन गया। उसने एक बार अपने धाभाई पर तलवार लेकर आक्रमण किया। लेकिन अपने इस आक्रमण से लज्जित होकर बाद में बीजलदेव ने आत्महत्या कर ली।

शालिवाहन और उसके लडके बीजलदेव के न रहने पर जैसलमेर का राज्य सिंहासन सूना हो गया। उस पर अब किसको बिठाया जाय, यह प्रश्न पैदा हुआ। शालिवाहन ने बड़े भाई राजकुमार केलन को राज्य से निकाल दिया था। सभी के परामर्श से सन् १२०० ईसवी में उसी को लाकर, उसकी पचास वर्ष की अवस्था में जैसलमेर के सिंहासन के सिंहासन पर बिठाया गया। केलन के छै बालक पैदा हुए—(१) चाचकदेव (२) पाल्हान (३) जयचन्द (४) पीतमसी (५) पीतमचन्द और (६) ओमराड। दूसरे और तीसरे लडके-पाल्हन और जयचन्द के बहुत-सी सन्तानें पैदा हुईं, जो जेसर और सिहाना राजपूत के नाम से प्रसिद्ध हुई।

खिजरखाँ ने अपने साथ पाँच हजार सवारों की सेना लेकर सिंधु नदी को पार किया और उसने दूसरी बार खडाल राज्य पर आक्रमण किया। इसी खिजरखाँ ने रावल शालिवाहन को पहले आक्रमण में पराजित किया था। उसके आक्रमण का समाचार सुनकर केलन सात हजार यदुवंशियों की सेना लेकर रवाना हुआ और खिजरखाँ के साथ उसने भयानक युद्ध किया। संग्राम में अपने पाँच सौ सैनिकों के साथ बलोच खिजरखाँ मारा गया और वृद्धावस्था में केलन को अपने शत्रु पर विजय प्राप्त हुई। जसलमेर के सिंहासन पर बैठकर उसने उन्नीस वर्ष तक राज्य किया। उसके बाद उसकी मृत्यु हो गय।।

रावल केलन की मृत्यु के बाद उसके बडे लडके चाचकदेव को सम्वत् १२७५ सन् १२१९ ईसवी में राज्य सिंहासन पर बिठाया गया इसके थोडे ही दिनों बाद चाचक देव ने चन्ना राजपूतों के साथ युद्ध किया और शत्रु के दो हजार राजपूतों का संहार करके उनकी चौदह सौ गायें छीन ली। चन्ना राजपूत पराजित हो जाने के बाद अपने राज्य को छोडकर जोहिया राज्य में जाकर रहने लगे।

रावल चाचकदेव ने चन्ना राजपूतों को परास्त करने के बाद सोढा के राजा राणा अमरसी के राज्य पर आक्रमण किया। राजा अमरसी को इस आक्रमण से बहुत आश्चर्य हुआ और चाचक देव का सामना करने के लिए अपने चार हजार सवारों की सेना को लेकर वह रवाना हुआ। इस युद्ध में चाचक देव से पाराजित होकर प्रमार राजपूत अपनी राजधानी अमरकोट भाग गये और उनके राजा अमरसी ने चाचकदेव के साथ अपनी लडकी का विवाह कर दिया।

इन्हीं दिनों में राठौर राजपूतों ने मरुभूमि में आकर खेड नाम का एक नया राज्य बसाया था। वहाँ पर राठौरों ने अनेक प्रकार के अत्याचार आरम्भ किये, इसलिए रावल चाचक ने उन राठौरों को दमन करने का विचार किया। जसोल और बालोतरा नामक दो राज्यों पर राठौरों

अभय राव ने वहाँ के समस्त नगरो को जीत कर अपने राज्य का विस्तार किया। वंशजो की संख्या बढी और वे लोग आभोरिया भट्टी के नाम से प्रसिद्ध हुये। भतीजे से लडकर कही चला गया। भट्टी के बडे पुत्र मंगलराव ने तुर्को के भय से धानी शालिवाहनपुर को छोड दिया था और वहाँ से भागकर वह जंगल मे चला लडके थे, जो इस प्रकार है—(१) मडमराव (२) कलरसी (३) मूलराज (४) शि और (६) केवल।

राजधानी से मगलराव के भाग जाने पर उसके पुत्रो और परिवार के लोगो प्रजा ने की। तक्षक वंशी सतीदास नाम का वहाँ पर एक भूमिधर रहता था। भट्टी राजाओ ने भयानक अत्याचार किये थे। उसने अपने पूर्वजो का बदला लेने तुर्को से जाहिर किया कि मंगलराव के पुत्र और कुटुम्व के लोग इसी नगर के हैं। उसकी इस बात को सुनकर कुछ तुर्क सैनिक उसके साथ गये। सतीदास ने लेकर श्रीधर महाजन के यहाँ मगलराव के लडको को कैद कराया और वे रा सामने लाये गये। उस सेना के प्रधान ने श्रीधर से कहा :

"शालिवाहन के प्रत्येक राजकुमार को तुम मेरे सामने लेकर आओ, नही तो वार मे किसी को जिन्दा न छोडूँगा।"

इस बात को सुनते ही श्रीथर अत्यन्त भयभीत हुआ और घबरा कर उसने अब राजा का कोई लडका नही है। जो लडके मेरे यहाँ रहते है, वे एक भूमिधर वह भूमिधर इस युद्ध के भय से भाग गया है।" तुर्कों के सेनापति ने उसकी बात किया और जिन लडको के रहने की बात उसने कही, उसने उनको लाने का आदेश

जब श्रीधर महाजन ने देखा कि राजकुमारो के प्राणो की रक्षा का अब है, तो उसने तुर्क सेनापति की आज्ञा का पालन किया। यदुबशी राजकुमार वेष-भूषा मे तुर्क सेनापति के सामने लाये गये और उसने राजकुमारो को किसान वहाँ के भूमिधरो की लडकियो के साथ उनके विवाह करवा दिये। इस तरीके के बश मे उत्पन्न होने वाले राजकुमार केलर के पुत्र कलोरिया जाट भुर्द राज और से प्रसिद्ध हुए। राजकुमार फूल और केवल का परिचय नाई और कुम्हार बालक गया था। इसलिए उन दोनो के बशज नाई और कुम्हार वंश मे माने गये।

भट्टी वश के इतिहास मे लिखा है· "मंगलराव जिस गाडा नदी के मे चला गया था, उसने उस जगल को छोडकर एक नवीन स्थान पर जाकर अपना किया। इस समय उस नदी के किनारे वराहा जाति के लोग रहते थे। * उनके बूता वश के राजपूतो का राज्य था। पूगल के प्रमारो के अतिरिक्त वहाँ पर सोटा के राजपूत भी रहा करते थे। मगल राव ने पहुँच कर और वहाँ के राजाओ से मि रहना आरम्भ किया। मंगलराव की मृत्यु हो जाने पर उसका लडका मडमराव स्थान पर अधिकारी हुआ।

यह पहले लिखा जा चुका है कि मगलराव अपने बडे पुत्र मराडमराव को शालिवाहनपुर से भागा था। यहाँ पहुँच कर धोरे के राजपूतो ने उसको अपना रा

---

* वराहा राजपूतो की एक शाखा है। इस वंश के लोगो ने भी इस्लाम लिया था। इसीलिये वे मुसलमान कहे जाते थे!

इसके उत्तर मे लाखनसेन को बताया गया कि उनके पास रहने के लिए घर नही है इस लिए चिल्ला रहे है। लाखनसेन ने उनके लिए घर बनवाने की आज्ञा दी। आज्ञा के अनुसार उनके लिए मकान बनवाये गये। राजा लाखनसेन के द्वारा इस प्रकार जो घर बनवाये गये थे, उनमे से कुछ अब तक वहाँ पर पाये जाते है।

लाखनसेन कनाडदेव सोनगरा का समकालीन था। उसकी रानी ने एक बार उसके प्राणो की रक्षा की थी। उसकी रानी सोढा वश मे उत्पन्न हुई थी। राज्य मे उसी का प्रभुत्व काम कर रहा था। उसके पिता की राजधानी अमरकोट मे थी। वहाँ से उसने बहुत से आदमियो को बुलवाकर राज्य के अच्छे स्थानो पर रखे थे। लाखनसेन ने चार वर्ष तक सिंहासन पर बैठकर राज्य किया।

पुण्यपाल लाखनसेन का लडका था। पिता के बाद वह सिंहासन पर बैठा। उसका व्यवहार अच्छा न था। इसलिए राज्य के सामन्तो ने उसे सिंहासन से उतार दिया और जैतसी को—जो गुजरात मे जाकर रहने लगा था सिंहासन पर बिठाया। पुण्यपाल राज्य से निकल कर जैसलमेर से कुछ दूरी पर जाकर रहने लगा। वहाँ पर लाखनसी नाम का एक लडका उसके पैदा हुआ। इस लाखनसी के रणिगदेव नाम का एक बालक हुआ। बडा होने पर गन्ना वशी एक राजपूत के साथ मिल कर उसने एक षडयन्त्र आरम्भ किया। उसने जोहिया लोगो से मिल कर मरोट और जाति के अधिकारो मे पूगल राज्य छीन कर अपना राज्य कायम किया और चोरी लोगो के प्रदान को कैद कर लिया। उसने पूगल मे अपने परिवार के लोगो को रखा। राव रणिगदेव के सहदोल नामक एक लडका पैदा हुआ। सन् १२७६ ईसवी मे जैतसी जैसलमेर के सिंहासन पर बैठा। मूलराज और रतनसी नाम के दो बालक उसके पैदा हुए। मूलराज के पुत्र देवराज ने जालौर के सोनगडे वशी राजा की लडकी के साथ विवाह किया।

बादशाह मोहम्मद खूनी ने मन्दोर के परिहार राणा रूपसी के राज्य पर आक्रमण किया। राणा रूपसी ने उससे पराजित होकर अपनी बारह लडकियो के साथ जैसलमेर मे आकर आश्रय लिया। यहाँ आने पर उसे परिवार के साथ बारु नामक स्थान पर रखा गया।

देवराज के तीन बालक पैदा हुए—जद्धन, सिखन और हमीर। हमीर अत्यन्त शूरवीर था। उसने मेहवा के कपो हुसेन पर आक्रमण किया और वहाँ की बहुत सी सम्पत्ति लूटकर वह अपने साथ ले आया। हमीर के तीन बालक पैदा हुए - जैतू, लूनकर्ण और नीरो।

इन दिनो मे मोहम्मद गोरी ने भारत के राजाओ के साथ युद्ध आरम्भ कर दिया था। मुलतान और ठट्ठा उस समय दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन के अधिकार मे थे। इन दोनो नगरो मे आक्रमण करके और वहाँ की लूटी हुई सम्पत्ति और सामग्री पन्द्रह सौ घोडो और पन्द्रह सौ खच्चरो पर लादकर भक्खर से दिल्ली के बादशाह के पास भेजी गयी थी। इसका समाचार जतराव के लडके को मिला। उसने उस सम्पत्ति को लूट लेने का निश्चय किया। उसने अपने साथ सात सौ अश्वारोही और बारह सौ ऊँटो पर सैनिको को लेकर चलने की तैयारी की और छिपे तौर पर वह अपनी सेना को लेकर उस रास्ते पर पहुँच गया, जहाँ से होकर लूट की सम्पत्ति दिल्ली जाने को थी।

पचनद मे एक नदी के समीप पहुँच कर उसने देखा कि जो सम्मत्ति और सामग्री दिल्ली जा रही है, उसकी रक्षा मे चार सौ मुगल और चार सौ पठान सवारो की सेना है। भट्टी लोगो ने बादशाह की सेना के पीछे पहुँचकर कुछ दूरी पर मुकाम किया। उनसे कुछ फासिले पर आगे बादशाह की सेना ने मुकाम किया था। रात को मुगलो और पठानो के सो जाने पर भाटी लोगो ने

इक्यावनवाँ परिच्छेद

भट्टी वश का सही इतिहास—यादवों के साथ हुसेन शाह का युद्ध——विजयी विजयराव—वराहो और लँगा लोगो का षडयन्त्र—बुरे दिनो का योगी—देवराज की शक्तियाँ—लगा जाति के लोग राजपूत थे—लोद्र प्रतिज्ञा—राजा की आज्ञा और वश की मर्यादा—प्रमार सैनिको के बलिदा राजधानी ।

पिछले परिच्छेद मे वर्णन की गयी घटनाओ के जो समय लिखे गये हैं, वे होते । इसलिए इस परिच्छेद मे भट्टी जाति के इतिहास का वर्णन यथासभव हम चेष्टा करेगे । गजनी के यदुवशी राजा ने युधिष्ठिर के सम्वत् ३००० मे रूम बादशाहो को पराजित किया था । इसके समय पर भी विश्वास नही किया जा स सम्वत् ७२ मे शालिवाहन ने अपने परिवार के लोगो के साथ जबूंलिस्तान से आश्रय लिया था, यह समय भी सदेहपूर्ण है । जिन ऐतिहासिक ग्रथो मे लिखा ग लोगो ने मरुभूमि मे जाकर अपना उपनिवेश कायम किया और सम्वत् ७८७ सन् तनोट का दुर्ग बनाया, इस समय मे किसी प्रकार का सन्देह नही मालूम होता ।

भाटी जाति के इतिहास मे जो केहर नाम आया है और जिसके साहस त की गयी है वह खलीफा वलीद का समकालीन था । उसी ने सब से पहले भारत कायम किया और उत्तरी सिन्ध के आरोर नामक नगर मे अपनी राजधानी बनाय लडके पैदा हुए—तनू, उतेराव, चहा, खाफरिया और आथहीन । इन लडको के उन्होने अपने अपने पिता की उपाधि लेकर अलग-अलग शाखाये चालायी ।

उतेराव के पाँच लडके पैदा हुए । सुरना, सेहसी, जीवा, चाको और अज उतेराव के नाम से प्रसिद्ध हुए । केहर से उत्पन्न होने वाले पाँचो लडके माहसी औ के बहुत से नगरो को जीत कर अपने अधिकार मे कर लिया । राजपूतो काचन्न गया है । उन लोगो ने केहर पर आक्रमण किया था और उसे जान से मार *

केहर की मृत्यु के पश्चात् तनू राज्य का अधिकारी हुआ । उसने सि बाद वराहा और मुलतान के लगा लोगो के राज्यो पर आक्रमण किया और भया विध्वंस किया । लेकिन लोहे के वस्तर पहनकर हुसेनशाह ने लंगा लोगो के खोकर, मुगल, जोहिया, जूद और सैद जाति के दस हजार अश्वारोही सैनिक युद्ध करने की तैयारी की । उसकी सेना ने वराहा राज्य पहुँच कर मुकाम किया सुना तो वह अपनी सेना लेकर युद्ध करने के लिये रवाना हुआ । दोनो बराबर युद्ध होता रहा और पाँचवे दिन उसने अपने दुर्ग के द्वार को खोल देने दुर्ग का फाटक खुलते ही अपने पुत्र विजय राव के साथ सेना को लेकर तनू ने

*बादशाह बाबर ने लिखा है कि भारत वर्ष के लोग सिधु नदी की ... के राज्य को खुरासन कहते थे ।

इस समय सेनापति महबूब खाँ ने रत्नसी से कहा "उस पेड़ के नीचे मैं आप के साथ प्राय आपसे बातें किया करता हूँ और युद्ध आरम्भ होने पर हम दोनो अपनी-अपनी सेनाओ मे युद्ध के लिए पहुँच जाते है। परन्तु इसकी असलियत बादशाह को जाहिर नही की गयी और उसे बताया गया है कि मेरे कारण जैसलमेर के दुर्ग पर अभी तक बादशाह का अधिकार नही हो सका इसलिये दुर्ग पर तुरन्त अधिकार करने के लिए मुझे आज्ञा मिली है। ऐसी दशा मे कल प्रात काल अपनी फौज लेकर मैं दुर्ग पर अधिकार करने आऊँगा।"

नवाब महबूब खाँ की इस बात को सुनकर रत्नसी चुपचाप बना रहा। उसके ऊपर इसकी बातो का कोई प्रभाव न पडा। कुछ समय के बाद वह उस स्थान से चलकर दुर्ग मे पहुँच गया।

दूसरे दिन सवेरा होते ही सेनापति महबूब खाँ अपनी शक्तिशाली सेना लेकर रवाना हुआ और उसने दुर्ग पर जोरदार आक्रमण किया। भीषण संग्राम आरम्भ हो गया शत्रु की सेना दुर्ग पर अधिकार करने के लिए पूरी कोशिश कर रही थी और यदुवंशी सेना दुर्ग की रक्षा करती थी। इस युद्ध मे बादशाह के नौ हजार आदमी मारे गये। नवाब महबूब खाँ परास्त अपनी बची हुई सेना के साथ युद्ध से भाग गया। इसके बाद उसने बादशाह की एक नयी सेना लेकर जैसलमेर के दुर्ग को उसने फिर घेर लिया। उसके बाद एक वर्ष और बीत गया।

उस दुर्ग मे जैसलमेर की जो सेना मौजूद थी, अब उसके सामने खाने-पीने का कष्ट बढने लगा और जब उसके लिये कोई व्यवस्था न हो सकी तो मूलराज ने अपने सामन्तो को बुलाकर कहा राजधानी की रक्षा करते हुये हम लोगो ने इतने दिन बिता दिये है। इन दिनो मे खाने-पीने के कष्टो का किसी प्रकार सामना किया गया है। लेकिन अब कठिनाइयाँ बहुत बढ गयी है। शत्रुओ ने जैसलमेर के सभी रास्तो पर अधिकार कर लिया है और बाहर से खाने-पीने की सामग्री का आ सकना अब असम्भव हो गया है। इस दशा मे अब क्या होना चाहिए?"

राजा मूलराज के इस प्रश्न को सुनकर सिहर और बीकमसी नाम के दो सामन्तो ने कहा "राजमहलो की सभी राजकुमारियाँ और रानियाँ जौहर व्रत का पालन करे और हम सब लोग युद्ध-भूमि मे शत्रुओ से लडते हुये अपने प्राणो की बलि दे। इसके सिवा इस समय दूसरा कोई उपाय नही हो सकता।"

जैसलमेर के दुर्ग मे जिस समय राजा मूलराज अपने सामन्तो के साथ इस प्रकार का परामर्श करता था, कुछ भी पता बादशाह की फौज को न था। सेनापति महबूब खाँ और उसके साथियो को मालूम था कि जैसलमेर के दुर्ग मे खाने-पीने की जो व्यवस्था है, वह अभी बहुत दिनो तक काम करेगी। इसलिए सेनापति महबूब खाँ स्वय अधीर हो उठा और निराश होकर वह जैसलमेर से अपनी सेना के साथ चला गया।

बादशाह की फौज के चले जाने के बाद रत्नसी ने महबूब खाँ के छोटे भाई को जैससमेर के दुर्ग मे बुलाया और उसका बडा सत्कार किया। महबूब खाँ के भाई ने दुर्ग मे पहुँचकर वहाँ की जो परिस्थितियाँ देखी, उससे यह बात छिपी न रही कि भोजन की कमी के कारण यदुवशी सेना दुर्ग मे भयकर कठिनाइयो का सामना कर रही है। वहाँ की परिस्थिति को समझकर महबूब खाँ का छोटा भाई तुरन्त दुर्ग से चला आया और बादशाह की फौज मे जाकर उसने दुर्ग की सब हालत बतायी।

नवाब महबूब खाँ उस समाचार को सुनकर अपनी फौज के साथ उसी समय जैसलमेर की तरफ रवाना हुआ और बडी तेजी के साथ उसने फिर दुर्ग को जाकर घेर लिया। यह देखकर

वह रक्षा करना चाहता था। इसलिए उसने बडी बुद्धिमानी से काम लिया। जनेऊ पहना दिया और उसने आक्रमणकारियो से कहा · "जिसको आप खोज घर पर नही है।," पुरोहित ने देवराज पर आक्रमणकारियो को सन्देह करने का उसने उसी समय सबके सामने देवराज के साथ एक थाली मे भोजन किया। मणकारियो का सन्देह दूर हो गया। वे लोग पुरोहित का घर छोडकर चले गये दल के साथ भट्टी लोगो की राजधानी तनोट पर उन्होने आक्रमण f मे जितने भी आदमी थे, मार डाले गये और कुछ दिनो के लिए भ मिटा दिया।

वराह लोगो के भय से देवराज बहुत दिनो तक छिपकर वही बना रहा पर वह वहाँ से निकलकर अपने नाना बूतावन के राज्य मे चला गया। ननिहाल अपनी माता से मिला। तनोट के दुर्ग मे वराह लोगो के द्वारा जो लोग मारे गये थे की माँ ने किसी प्रकार वहाँ से भागकर अपने प्राणो की रक्षा की। माता ने अ देखकर और अनन्त सन्तोष को अनुभव करके कहा :

"बेटा जिस प्रकार शत्रुओ ने हमारे वंश का सर्वनाश किया है, इसी सर्वनाश होगा।

देवराज कुछ दिनो तक ननिहाल मे बना रहा। उसके बाद उसने अ लिए नाना से एक ग्राम माँगा। उसके नाना ने इसे स्वीकार कर लिया। जब को मालूम हुआ कि वह देवराज को एक ग्राम देकर उसके रहने का सुभीता लोगो ने देवराज के नाना को समझा कर कहा · "यदि आपने देवराज के रहने तो निश्चय जानिये कि आपके इस राज्य का भयानक रूप से विनाश होगा।

उस राजा की समझ मे यह बात आ गयी। लेकिन देवराज उसका दौ उसने अपने यहाँ उसको कोई ग्राम न देकर मरुभूमि मे एक साधारण स्थान उसे वहाँ जाकर रहने लगा और वहाँ पर उसने एक दुर्ग बनवाया। जिसका निर्मा के एक चतुर शिल्पी के द्वारा हुआ। उसने उस दुर्ग का नाम भटनेर का दु उसने एक दूसरा विशाल दुर्ग बनवाया जिसकी सन् ६५३ के जनवरी महीने के प को उसकी प्रतिष्ठा की गयी।

जब बूता के राजा को मालूम हुआ कि मेरे दौहित्र देवराज ने वहाँ अपने स्थान न बनाकर दुर्ग बनवाया है तो वह बहुत अप्रसन्न हुआ और उस दुर्ग को उसने एक सेना भेजी। जब यह समाचार देवराज को मालूम हुआ तो उसने दु माता को देकर अपने नाना के पास भेज दिया और जो सेना दुर्ग को गिराने के उसको दुर्ग पर अधिकार करने के लिए बुलवाया। बूता राज्य की सेना के एक ने देवराज के साथ परामर्श करने के लिए दुर्ग मे प्रवेश किया। उनके भीतर उन पर आक्रमण हुआ। वे सब के सब मार डाले गये। जो सेना दुर्ग के बाह सेनापति के अभाव से घबरा कर वहाँ से भाग गयी। जो लोग दुर्ग के भीतर लाशो को देवराज ने दुर्ग के बाहर फिकवा दिया।

जिन दिनों मे देवराज वराहो के राज्य मे छिप कर रहा था, उन्ही योगी वहाँ पर मिला और उसने उसके प्राणो को बचाने मे बड़ी सहायता की

प्रातःकाल होते ही रंग महलो के द्वार पर हृदय विदारक दृश्य उपस्थित हुआ। जितनी भी रानियो और ललनाओ ने जौहर व्रत के लिए तैयारी की थी, सभी ने स्नान करके रेशमी वस्त्र पहने और अपने देवता की पूजा करके वे सभी एक स्थान पर एकत्रित हुई। प्रत्येक स्त्री ने जातीय गौरव का स्मरण करके अपने पूर्वजो के प्रति श्रद्धा और भक्ति के साथ नत मस्तक होकर प्रणाम किया और उसके वाद वह जौहर व्रत के लिए आगे वढी। सभी ने उसका अनुसरण किया। प्रज्व-लित अग्नि मे कूद-कूदकर सभी वलिदान होने लगी। चौवीस हजार जैसलमेर की ललनाओ ने प्रज्वलित अग्नि की होली मे प्रवेश करके अपने प्राणो की आहुतियाँ दी। उस जौहर व्रत के भया-नक किन्तु पवित्र दृश्य को राज्य के सभी लोगो ने देखा।

रावल मूलराज अव सब के साथ शत्रु से युद्ध करने की तैयारी करने लगा। उसने सिर पर तुलसी की कुछ पत्तियाँ और गले मे शालिगराम की मूर्ति वाँधी। इसके वाद तीन हजार आठ सौ यदुभट्टी लोगो ने शत्रुओ के साथ युद्ध किया और उसमे से सभी ने प्राण उत्सर्ग किये।

रत्नसी के दो वालक थे—एक का नाम था घड़सी और दूसरे का नाम था कानड़। घड़सी अपनी आयु के वारह वर्ष व्यतीत किये थे। रत्नसी ने अपने उन दोनो वालको को प्राणो की रक्षा के लिए सेनापत्ति महवूव खाँ के पास भेज दिया था और सदेश भेजा कि आप मेरे इन दोनो वालको की रक्षा करे।

जो दूत रत्नसी के दोनो वालको को वहाँ पर लेकर गया था उसके सामने सेनापति मह-वूवखाँ ने शपथ खाकर विश्वास दिलाया कि इन दोनो लडको की रक्षा मै करूँगा। इसके वाद अपने दो आदमियो के साथ सेनापति ने उन दोनो वालको को वडे सम्मान के सा अपने यहाँ रखा और किश्वासी ब्राह्मणो की निगरानी मे उसने दोनो वालको को दे दिया। यह सब जैसलमेर के अन्तिम विनाश के पहले ही हो चुका था।

जौहर व्रत के वाद जैसलमेर के जिन शूरवीरो ने वादशाह की फौज के साथ अपने जीवन का अन्तिम युद्ध किया था, उनके द्वारा वादशाह के वहुत से आदमी मारे गये। केवल रत्नसी ने अपनी तलवार से एक सौ वीस शत्रुओ का सहार किया था और उसके वाद वह मारा गया। रावल मूलराज ने शत्रुओ के वहुत आदमियो को मार कर युद्ध-क्षेत्र मे अपने प्राण दिये। इस संग्राम मे मारे गये रावल मूलराज और रत्नसी के मृत शरीरो को रणभूमि से मँगाकर उनके धर्म की प्रणाली के अनुसार सेनापति महवूव खाँ ने उनका अन्तिम सस्कार करवाया।

सन् १२९५ ईसवी मे यदुवशियो का पूर्ण रूप से विध्वंस और विनाश हो गया। जैसलमेर का प्रसिद्ध सामन्त देवराज यदुभट्टी सेना के आगे चला करता था और युद्ध-स्थल मे अपनी सेना पर नियन्त्रण रखता था, ज्वर से वीमार हो जाने के कारण उसकी भी मृत्यु हो गयी। यदुवश को विध्वस करके वादशाह की फौज दो वर्ष तक जैसलमेर के दुर्ग मे रही। इसके वाद दुर्ग को मजवूती के साथ वद करके और और उसमे ताले लवाकर वहाँ से वह चली गयी।

जैसलमेर का दुर्ग इसके वाद वहुत दिनो तक पतित अवस्था मे वना रहा। क्योंकि वहाँ पर जो यदुभट्टी लोग रह गये थे, वे न तो दुर्ग का फिर से निर्माण और सुधार कर सकते थे और न उनमे उसकी रक्षा करने की सामर्थ ही थी।

दिनो मे लगातार भट्टी जाति के साथ लंगा लोगो का सघर्ष और युद्ध चला था
सघर्ष एक साथ समाप्त हो गया और उसके थोडे दिनो के पश्चात् बाबर ने भा
किया। उन दिनो मे इस जाति का अस्तित्व तिरोहित हो गया। तवारीख फ
के लोगो को मुलतान के राजवशी कहकर उल्लेख किया है और कुछ ऐसी बाते
जो इस वंश के सम्बन्ध मे जानने के योग्य है।

इस वश के पाँच राजाओ मे से पहला राजा हिजरी सम्वत् ८४७ सन्
रावल चाचक के मरने के तीस वर्ष पूर्व राज्य करता था। तवारीख फरिश्ता के
खिजर खॉ सैयद दिल्ली के सिहासन पर रहा, शेख यूसुफ को अपना प्रतिनि
भेजा। शेख यूसुफ ने मुलतान मे जाकर जिन राज्यो के साथ सम्बन्ध कायम किये
का राजा राय सेहरा भी एक था। राय सेहरा ने मुलतान मे जाकर शेख यूसु
लड़की के विवाह का विचार प्रकट किया और उसकी अधीनता को स्वीकार
वह राजी हो गया।

शेख युसुफ ने राय सेहरा की बात को मजूर कर लिया। राय सेहरा
अभिप्राय क्या था, यह बाद मे लोगो को मालूम हुआ। अपने उस प्रस्ताव के
युसुफ को कैद करके दिल्ली भेज दिया और अपना नाम कुतुबबुद्दीन रखकर वह
कारी बन गया।

फरिश्ता ने अपने इतिहास मे राय सेहरा और उसके वश वाले लगा
है। सेवी राज्य के रहने वाले नूमरी जाति के थे और यही नूमरी जाति का प्रसिद्ध
शाखा थी। भट्टी वंश के इतिहास लेखक ने लगा लोगो को अपने ग्रन्थ मे
कही पर राजपूत लिखा है। पठान अथवा अक्षेगान प्राचीन काल मे, विशेष
दिनो मे मुसलमान थे। राय शब्द राय सेहरा के हिन्दू होने का परिचय देता है
कार एलफिन्सटन ने अफगानो की उत्पत्ति यहूदी लोगो से माना है। यदुवश अ
कोई अन्तर नही मालूम होता। ऐसा मालूम होता है कि एक ही नाम के दो
बन गये है।

देवरावल की दक्षिणी सीमा पर लोद्र राजपूत रहते थे। उनकी राजधा
था। यह नगर अत्यन्त विशाल था। उस राजधानी मे बारह फाटक थे। लु
ने अपने राजा से अप्रसन्न होकर देवराज के यहाँ आकर आश्रय लिया। उसने
विरुद्ध देवराज को उकसाया। उसकी बातो से प्रोत्साहित होकर देवराज ने लुद्रव
उसकी लडकी के साथ विवाह करने का सन्देश भेजा। राजा नृपभानु ने
सम्मान के साथ स्वीकार कर लिया। इसलिए बारह सौ साहसी अश्वारोही सेना
के लिए देवराज लुद्रवा राजधानी पहुँच गया। वहाँ के राजा ने आदरपूर्वक उ
परन्तु राजधानी में पहुँचते ही देवराज के अश्वारोही सैनिको ने वहाँ पर आ
लुद्रवा के राजा को परास्त करके देवराज वहाँ के राजसिंहासन पर बैठ गया।
नृपभानु की लडकी के साथ विवाह किया और अपने साथ के सैनिको का एक दल
वह देवरावल लौट आया। उसके अधिकार मे इस समय छप्पन हजार अश्वारो
पर वह शासन करता था।

यशोकर्ण नाम का व्यवसायी देवरावल ने धारा नगरी मे जाकर रहने
राजा वृजभानु ने उसे सम्पत्तिशाली समझ कर कैद करवा लिया और उसकी

मे कानड छिपकर एक वार जैसलमेर चला आया और बडे भाई घडसी ने पश्चिम के महेवा मे जाकर राठौर राजकुमारी विमला के साथ विवाह किया। जिन दिनो मे घडसी अपने विवाह की धुन मे था, उसके सम्बन्धी सोनिगदेव ने आकर उससे भेट की। सोनिगदेव शरीर से लम्बा चौडा और शक्तिशाली था। विवाह के वाद घडसी अपने साथ सोनिगदेव को दिल्ली ले गया।

भीमकाय सोनिगदेव को देखकर दिल्ली के वादशाह ने आश्चर्य किया और उसने उसकी शक्ति की परीक्षा लेने का विचार किया। खुरासान के वादशाह ने किसी समय दिल्ली के वादशाह को सुदृढ लोहे का वना हुआ एक धनुष भेट मे दिया था। वादशाह ने उस धनुष को मँगाकर सोनिगदेव के हाथो मे दिया और उस धनुष को वाण पर चढाने के लिए कहा। यह सुनकर सोनिग-देव ने धनुष को वाण पर न केवल चढाने की कोशिश की वल्कि उसने उसको यहाँ तक खीचा कि वह लोहे का धनुष टूट गया। यह देखकर वादशाह उससे वहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसकी वहुत प्रशसा की।

इन्ही दिनो मे दिल्ली पर तैमूर वादशाह ने आक्रमण किया। उस अवसर पर वादशाह की तरफ से घडसी ने अपनी वहादुरी का ऐसा परिचय दिया कि जिससे तैमूरशाह का सम्पूर्ण साहस शिथिल पड गया और वह दिल्ली से लौट गया। वादशाह ने घडसी के साहस और पराक्रम को देखकर प्रसन्नता प्रकट की और पुरस्कार के रूप मे जैसलमेर के शासन का अधिकार उसने उसको दे दिया। घडसी ने जैसलमेर का अधिकार प्राप्त करके वहाँ पर अनेक प्रकार के सुधार किये और अपनी शक्तियो का निर्माण किया।

घडसी ने इन दिनो मे वडी बुद्धिमानी से काम लिया। उसने अपने साहस और पुरुषार्थ के पुरस्कार मे जैसलमेर का अधिकार प्राप्त किया था। उसके वश के जो लोग वहाँ पर रहते थे, उन सव को वुलाकर उसने वातचीत की और महेवा के राजा जगमल की सहायता से उसने अपनी एक सेना तैयार की। उसने जैसलमेर और उसके आस पास शाति तथा सुव्यवस्था कायम करने की चेष्टा की। हमीर और उसके पक्ष के लोगो ने सम्मान देने के साथ-साथ उसको राजा के रूप मे स्वीकार किया। परन्तु जसहड के लडके ने इसको मानने से इन्कार कर दिया।

देवराज ने मदोर के राजा राणा रूपडा की लडकी के साथ विवाह किया। उस राजकुमारी से देवराज के केहर नाम का एक वालक पैदा हुआ था। वादशाह की सेना के द्वारा जैसलमेर के घेरे जाने पर केहर को उसकी माता के साथ मदोर भेज दिया गया। वारह वर्ष की अवस्था मे केहर अपने ननिहाल मे ग्वालो के साथ जगल मे जाता और अपनी अवस्था के लडको के साथ खेला करता। एक दिन की वात है केहर जगल मे खेलते हुए जिस स्थान पर लेट गया, वहाँ पर एक साँप की वाबी थी। केहर को नीद आ गयी। उसी समय वाँवी से एक साँप निकला और केहर के मस्तक पर पहुँच कर फन की छाया करके वह वैठा रहा। उसी रास्ते से उस समय एक चारण निकला। उसने अपने नेत्रो से उस सुन्दर वालक के मस्तक पर फन फैलाये हुए साप को देखा। उसने मन्दोर के राजा से जाकर यह घटना वतायी। उसको सुनकर राणा तुरन्त रवाना हुआ और वहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि दौहित्र के मस्तक पर अभी तक अपने फन फैलाये हुए साँप वैठा है। उसने उसी समय इस वात पर विश्वास किया कि यह दृश्य वालक के उज्वल भविष्य का परिचय दे रहा है कि केहर किसी समय राजसिंहासन पर वैठेगा।

घडसी को जैसलमेर मे शासन करते हुए कई वर्ष वीत चुके थे, परन्तु उसके कोई सन्तान पैदा न हुई। इसलिए उसको मानसिक खेद रहने लगा। इस विषय मे निराश हो जाने के वाद

ग्रौर शौर्य से प्रसन्न होकर उनके परिवार के जीवन निर्वाह के लिए देवराज ने तायें दी।

इसके पश्चात् देवराज ने धारानगरी के राजा पर ग्राक्रमण करने की तै समय वह ग्रपनी शक्तिशाली सेना लेकर रवाना हुग्रा, उसके साथ युद्ध करने के ि ने ग्रपनी सेना भेजी। धारानगरी सीमा के बाहर भीषण युद्ध हुग्रा। उसमे धारा सैनिक मारे गये ग्रौर जो सेना बाकी रह गयी, वह युद्ध-क्षेत्र छोड कर भागी। सेना लेकर धारानगरी पर ग्राक्रमण किया। राजा ब्रिजभानु ने ग्रपनी सेना बराबर युद्ध किया ग्रौर ग्रत मे ग्रपने ग्राठ सौ सैनिको के साथ वह युद्ध मे मार ने प्राचीन धारानगरी के दुर्ग पर ग्रपनी विजय का झडा फहराया। इसके बा चला गया। ×

देवराज के मूँद ग्रौर छेद नामक दो लडके पैदा हुए। उसके दूसरे लडके वराह वंश मे पैदा हुई थी—पाँच लडके पैदा हुए। वे लोग छेदूवंशी राजपूतो के हुए। देरावल की निकटवर्ती भूमि मे देवराज ने ग्रनेक विशाल तालाब खुदवाये नगर मे जो तालाब खुदवाया, उसका नाम तनोटसर रखा ग्रौर एक विशाल उसका नाम ग्रपने नाम पर देवसर रखा। एक दिन देवराज ग्रपने ग्रादमियो के गया था। वहाँ पर छानिया जाति के बलोचो ने देवराज पर ग्राक्रमण किया ग्रौर डाला। उसने स्वाभिमान ग्रौर गौरव के साथ बावन वर्ष तक राज्य किया।

देवराज की मृत्यु के पश्चात् उसका बडा लडका मूद उसके राज सिंहास पिता का श्राद्ध कार्य किया। उसके बाद उसका राज्याभिषेक हुग्रा। उसने ग्रड स्नान किया। ग्रभिषेक के समय राज्य के पुरोहित ने ग्राशीर्वाद दिया ग्रौर ग्रपनी-ग्रपनी भेटे दी। सिंहासन पर बैठने के बाद मूद ने ग्रपने पिता का तैयारी की।

जिन लोगो ने देवराज को मारा था, वे पहले से ही सतर्क थे। मूँद ने करके उनके ग्राठ सौ सैनिको का संहार किया। मूद के बाछू नाम का एक जब उसकी ग्रवस्था चौदह वर्ष की थी, पट्टन के राजा सोलकी राजपूत बल्ल ग्रपनी लडकी का विवाह करने के लिए नारियल भेजा। इसके पश्चात् सोलकी राजकुमार वाछूराव का विवाह हुग्रा।

मूंद के परलोक यात्रा करने पर सम्वत् १०३५ श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादश वाछूराव सिंहासन पर बैठा। उसके पाँच बालक पैदा हुए—(१) दूसा (२) डनवे ग्रौर (५) मूलग्रपसा। इन पाँचो लडको के वशधर कई शाखाग्रो मे विभक्त

× राजपूतो मे लुद्र लोगो का वंश क्या है, इसके सम्बन्ध मे कोई स्पष्ट को नही मिला। परन्तु सम्भवत. का प्रत्येक ग्रवस्था मे ये लोग प्रमार वशी रा किसी समय भारतवर्ष की सम्पूर्ण मरुभूमि को ग्रपने ग्रधिकार मे कर लिया भट्टी जाति के लोगो के द्वारा जैसलमेर मे राजधानी कायम हुई थी, उसके पह लोगो की राजधानी थी। यह बहुत प्राचीन नगर माना जाता है। परन्तु ग्रब नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। इन दिनो मे वहाँ पर गडरिया लोगो को की ग्राबादी है के कारण मरुभूमि के सभी प्राचीन नगर विध्वंस हो गये है। लुद्रवा मे दसवी पत्र मुझे मिला था, वह विजराज ग्रथवा बीजीराज के समय का था। जैन भाषा

ले । जो आदमी भेजा जाव, वह आदमी वहाँ की परिस्थितियो का पता लगाकर लावे ।

इस परामर्श के अनुसार एक युवक नाई की स्त्री का भेष धारण करके कुम्भलमेर की तरफ रवाना हुआ । उसने वहाँ पहुँचकर किसी प्रकार रानियो के महलो मे प्रवेश किया और उसने वहाँ से लौटकर जो वर्णन किया, उससे मालूम हुआ कि वहाँ का समाचार अच्छा नही है । यह सुनकर जेतसी ने उसकी बातो पर विश्वास किया और राणा कुम्भ से अप्रसन्न होकर उसने मोहिल की लडकी मारु के साथ विवाह कर लिया ।

राणा कुम्भ ने जब सुना की भट्टी राजकुमार जेतसी ने मोहिल की लडकी के साथ विवाह कर लिया है, तो उसने अत्यधिक अपमान और क्रोध अनुभव किया परन्तु उसने शान्ति से काम लिया और गागरोन के प्रसिद्ध खीची राजा अचलदास के साथ अपनी लडकी का विवाह कर दिया । जेतसी विवाह के वाद सेना लेकर पूगल-राज्य पर अधिकार करने गया और अपने भाई लूनकर्ण तथा साले के साथ वहाँ के युद्ध मे मारा गया । पूगल के राजा वृद्ध रनिगदेव को इसके पहले की परिस्थितियो का कुछ ज्ञान न था । उसके प्रायश्चित करने पर रावल केहर ने उसे क्षमा कर दिया ।

केहर के आठ वालक पैदा हुए—(१) सोम (२) लखमन (३) केलण (४) किलकर्ण (५) सातुल (६) वीजू (७) तन्नू और (८) तेजसी । सोम के बहुत सी सताने पैदा हुई जो सोमभट्टी नाम से प्रसिद्ध हुई । केलड ने अपने वडे भाई सोम से जबरदस्ती बीकमपुर छीन लिया और उस दशा मे सोम अपने वसी लोगो के साथ गिरल नामक स्थान मे जाकर रहने लगा । सातुल ने अपने नाम पर सातुलमेर राजधानी की प्रतिष्ठा की ।

नागौर के राठौर राजा से अपने पिता का बदला लेने के लिये रनिगदेव के लडको ने जब इस्लाम स्वीकार किया तो ये पूगल और मेरोट के अधिकारो से वंचित हो गये और आभोरिया भट्टी लोगो के साथ जाकर वे लोग मिल गये । उसके बाद वे लोग सोमन अर्थात मुस्लिम भट्टी लोगो के नाम से विख्यात हुये । रावल केहर के तीसरे लडके केलण ने पूगल और मेरोट के बाद वीकमपुर मे भी अपना अधिकार कर लिया और पदुमभट्टी लोगो के निर्बल अवस्था मे देरावल नगर को छीन लिया ।

केलण ने अपने पिता के नाम से एक दुर्ग वनवाया । केरोर उसका नाम रक्खा । यही से जौहिया और लगा लोगो के साथ भट्टी लोगो का झगडा पैदा हुआ । लगोहो के सरदार अमीर खाँ कुराई ने केलण पर आक्रमण किया । इस युद्ध मे अमीर खाँ की पराजय हुई । केलण से इन दिनो मे चाहिरव, मोहिल और जोहिया लोग भयभीत रहते थे । केलण ने अपनी शक्तियो के द्वारा दूर-दूर तक ख्याति पायी थी और पचनद तक उसने अपना विस्तार कर लिया था ।

×वसी लोगो के सम्वन्ध मे पहले वर्णन किया जा चुका है । वसी नाम की वहाँ पर गुलामो की एक जाति थी । अपनी दरिद्रता और सभी प्रकार की असमर्थता के कारण जो लोग सदा के लिए अपनी स्वाधीनता वेच देते थे वे लोग वसी कहलाते थे । उसका मालिक उसके सिर के वालो को चाँद पर काट देता था । उनके गुलाम होने की यह पहचान थी । ये लोग पशुओ की भाँति खरीदे और वेचे जाते थे । राजस्थान के अन्य राज्यो को अपेक्षा मरुभूमि के राज्यो मे ये गुलाम अधिक पाये जाते थे । प्रत्येक बडा आदमी अपने अधिकार मे इस प्रकार के गुलाम रखता था । गुलामो की सख्या उसके बडप्पन का परिचय देती थी । श्यामसिह चम्पावत पोकर्ण के पास दो सौ गुलाम थे । ब्राह्मण, राजपूत और अन्य सभी जातियो के लोग गुलाम हो जाते थे ।

भोजदेव के लुद्रवा के सिंहासन पर बैठने के बाद उसके चाचा जयसलदेव उसके विरुद्ध षड्यन्त्र आरम्भ किया। पाँच सौ सोलंकी राजपूतों के द्वारा सुरक्षित जयसलदेव भोजदेव को किसी प्रकार की क्षति पहुँचा न सका। इन दिनों में शहाबुद्दीन राज्य को जीतकर पाटन के राजा के साथ युद्ध कर रहा था। जयसलदेव ने करभोजदेव को पराजित करने की चेष्टा की। उसने शहाबुद्दीन के साथ मित्रता सहायता लेकर उसने अनहिलवाडा पट्टन पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उ कि पट्टन के पाँच सौ सोलंकी राजपूत जो सदा भोजदेव की रक्षा में रहा करते आक्रमण होते ही भोजदेव को छोड़कर चले जायँगे। उस समय भोजदेव के मार्ग साफ हो जायगा। इस प्रकार सोच विचार कर उसने अपने साथ के दो सौ को तैयार किया और उनको लेकर वह पंजाब की तरफ रवाना हुआ। इन्हीं गोरी ठठ्ठा राज्य में विजयी होकर सिंध की प्राचीन राजधानी अरोड़ नगर को जा सल देव शहाबुद्दीन से मिलने के लिए आया। शहाबुद्दीन ने उसका बहुत आदर ने स्वीकार कर लिया। दोनों में मित्रता हो गयी। शहाबुद्दीन गोरी ने अपने कई एक सेना करीमखाँ नाम के सेनापति को देकर जयसलदेव की सहायता में भेजी। सेना को लेकर जयसलदेव भोजदेव को पराजित करने के लिए लुद्रवा राज्य की ओर वहाँ पहुँच कर जयसलदेव ने एक साथ लुद्रवा पर आक्रमण किया। इस युद्ध में गया और उसकी बची हुई सेना ने जयसलदेव की अधीनता स्वीकार कर ली। इसके की फौज ने लुद्रवा में लूट की और वहाँ से बहुत बड़ी सम्पत्ति अपने अधिकार में भक्खर की तरफ चला गया।

जयसलदेव ने लुद्रवा के राज सिंहासन को अपने अधिकार में कर लिया। लें दिनों में उसे आभास हुआ कि लुद्रवा की राजधानी सुरक्षित नहीं है। यहाँ पर शत्रु आक्रमण हो सकता है। इसलिए उसने एक सुरक्षित स्थान की खोज की और इसके निश्चित किया, वह लुद्रवा से दस मील की दूरी पर था। जयसल ने उस स्थान के ब्राह्मण को बैठा देखा। वहाँ पर ब्रह्मसर नामक एक तालाब था। उसी के निकट कुटी थी।

जयसल ने उस ब्राह्मण से बातचीत की। उसको उत्तर देते हुए ब्राह्मण ने युग में काग नाम का एक योगी इस तालाब के समीप रहता था। यहाँ से एक नदी उस योगी के नाम से वह नदी काग नदी के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह तालाब प्राचीन था। कृष्ण के साथ आकर अर्जुन ने इसके दर्शन किये थे। इसे देखकर कहा था कि आज से बहुत दिनों के बाद हमारा कोई वंशज इस पर्वत पर अपनी प्रतिष्ठा करेगा।

कृष्ण की इस बात को सुनकर अर्जुन ने कहा. "राजधानी बनने के बाद लोग रहेंगे, उनको जल का बहुत कष्ट रहेगा। क्योंकि इस नदी का पानी स्वच्छ नहीं

अर्जुन की इस बात को सुनकर कृष्ण ने अपने चक्र से पर्वत को स्पर्श स्वादिष्ट जल की एक नदी प्रवाहित हुई। उस नदी के किनारे एक पत्थर लगा हुआ कुछ पंक्तियाँ खुदी हुई थीं। उस ब्राह्मण ने उन पंक्तियों को पढ़कर जयसल को सु आशय इस प्रकार था :

चेष्टा की और विश्वास दिलाया कि यदि वरजाग अब फिर तुम्हारे साथ किसी प्रकार का अत्याचार करेगा तो मैं उसे दण्ड दूंगा ।

इसके बाद कुछ दिन बीत गये । चाचकदेव एक बार जजराज के गाँव मे पहुँचा । उस समय जजराज ने वरजाग के अत्याचारो का फिर से वर्णन किया । उनको सुनकर चाचकदेव ने वरजाग को दमन करने का निर्णय किया । उसने सोढा जाति सूमर खाँ से सहायता मिलना ली । सूमर खाँ अपने तीन हजार अश्वारोही सैनिको को लेकर चाचकदेव के पास आया । उस जुड़े राठौर का नियम यह था कि जहां पर वे लूट करने के लिए जाते थे, वहां नगर से बाहर ठहरकर वे उस बात को समझने की चेष्टा करते थे कि नगर के विशेष लोग कब बाहर जाते है ।

चाचकदेव ने वरजाग के विरुद्ध एक योजना बना डाली और जो लोग वरजाग की लूट मे सहायक होते थे, उन सबको चाचकदेव ने कैद करवा लिया । वरजाग के साथ-साथ बहुत से महाजन लोग भी कैद किये गये । उन लोगो ने धन देकर अपने छुटकारे के लिए चेष्टा की परन्तु चाचकदेव ने ऐसा नही किया और उसने उन महाजनो से कहा यदि तुम लोग इस नगर को छोड़कर और अपने परिवार के लोगो को लेकर जैसलमेर मे जाकर रह सको तो तुमको इस कैद से छुटकारा मिल सकता है । चाचकदेव की इस बात सुनकर वहां के तीन सौ पैसठ महाजन अपनी सम्पत्ति और सामग्री लेकर जैसलमेर चले गये और वही पर रहने लगे ।

वरजाग के तीन लड़के कैद किये गये थे । चाचकदेव ने उसके सबसे छोटे और मझले बेटे को छोड दिया । परन्तु उसके बड़े बेटे मेरा को नही छोड़ा । चाचकदेव ने इन्ही दिनो मे सोढा वश के राजा की प्रपौत्री सोनलदेवी के साथ विवाह किया । रानी के पितामह ने विवाह के उपलक्ष चाचकदेव को पचास घोडे दो सौ ऊँट, चार पालकियां पैतीस गुलाम दिये । इस दहेज के साथ चाचकदेव ने सोनल देवी के साथ विवाह का कार्य सम्पन्न किया और उसे विदा कराके अपने साथ ले गया ।

इस विवाह के दो वर्ष बीत जाने के बाद पीलवश के राजा के साथ चाचकदेव का युद्ध आरम्भ हुआ । इसका कारण यह था कि भट्टी राजपूत से उनका श्रेष्ठ घोडा छीन लिया गया था । चाचकदेव ने पीलवश के राजा को पराजित करके उसकी राजधानी को लूट लिया । इन्ही दिनो मे यदुवशियो के पुराने शत्रु लगा लोगो ने अवसर पाकर चाचकदेव के दीनापुर के दुर्ग पर आक्रमण किया और दुर्ग की सेना को पराजित किया ।

चाचकदेव को अपना सम्पूर्ण जीवन लगातार युद्धो मे व्यतीत करना पड़ा । उसने अनेक राजाओ के साथ युद्ध किया और विजय प्राप्त की । उसने पंजाब तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया । बुढापे के दिनो मे वह चेचक की बीमारी से रोगी हुआ । उस समय उसे भय हुआ कि इस रोग से मैं अब सेहत न हो सकूगा यह सोचकर वह मन ही-मन बहुत दुखी हुआ । उसका विश्वास था कि रोग से पीडित होकर चारपाई पर मरने वाले राजपूतो को नरक और युद्ध करते हुए प्राण देने वाले राजपूतो को स्वर्ग मिलता है । राजपूतो का यही धर्म है और इसी धर्म के पालन मे उनको गौरव प्राप्त होता है ।

बीमारी के दिनो मे चाचक देव ने अपने शत्रु के साथ युद्ध आरम्भ करने की इच्छा की । उसने मुसलमान लङ्गा जाति के राजा के पास अपना दूत भेजा और उस दूत ने वहाँ पहुच-कर कहा —"चाचक देव की बीमारी के दिन चल रहे है । परन्तु वह बीमारी मे मरने की अपेक्षा शत्रु के साथ युद्ध करते हुए मरना पसन्द करता है । इसलिए आपके साथ युद्ध करने का चाचकदेव ने निर्णय किया है ।

शासन का प्रबन्ध अपने हाथ में लेने के बाद शालिवाहन ने ऐसे कार्य आरम्भ
कीर्ति बढने लगी।

जालौर और अरावली के बीच के स्थानों में काठी नाम की एक जाति
जगभानु उस जाति के लोगो का राजा था। सिंहासन पर बैठने के बाद शालिवाहन
से युद्ध करने का निश्चय किया। इन दोनों राजाओ मे युद्ध हुआ और उसमे काठी
जगभानु परास्त होने के बाद मारा गया। × शालिवाहन ने विजय प्राप्त करने के
जगभानु के घोडो और ऊँटों को अपने अधिकार मे कर लिया और फिर वह अपन
आया। शालिवाहन के तीन बालक पैदा हुए : बीजलदेव, बानर और हसू।

यदुवशी शालिवाहन प्रथम ने गजनी से पजाब मे आकर शालिवाहनपुर राज
की थी। उसके लडके ने बद्रीनाथ पहाड के ऊपर एक स्वतन्त्र राज्य कायम f
सिंहासन पर जिन दिनों मे शालिवाहन द्वितीय बैठा था, उन्ही दिनो मे बद्रीनाथ
राजा की मृत्यु हो गयी। उसके कोई लड़का न था। इसलिए उसके मन्त्रियो और
यदुवन्शी बालक को उस सिंहासन पर बिठाने के लिए शालिवाहन द्वितीय से परामर्श

रावल शालिवाहन ने अपने वंश के एक राज्य की रक्षा करने के लिए वहाँ
सामन्तो की माँग के अनुसार अपने तीसरे पुत्र हंसू को बद्रीनाथ भेज दिया। परन्तु
पहुँचने के ही बाद उसकी मृत्यु हो गयी। हसू की स्त्री गर्भवती थी। बद्रीनाथ
साथ जा रही थी। रास्ते मे उसको प्रसव की पीडा हुई। वही पर एक पलाश के पे
एक बालक पैदा हुआ जिसका नाम पलाश रखा गया। यही राजकुमार पलाश बद्री
अधिकारी हुआ। उसी के नाम के आधार पर उस राज्य का नाम पलाशिया र
उसके वशज पलाशिया भट्टी नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सिरोही के देवरावंशी मानसिह ने रावल शालिवाहन के साथ अपनी लडक
विचार किया और उसका निश्चय करके राजपूतो की प्रणाली के अनुसार उसने
शालिवाहन ने उस विवाह को स्वीकार कर लिया और अपने बडे पुत्र बीजलदे
रक्षा का उत्तरदायित्व देकर सिरोही विवाह करने चला गया। शालिवाहन के
बीजलदेव के धाभाई अर्थात् धात्री माता के लडके ने यह अफवाह उडा दी कि सिर
रावल शालिवाहन ने एक चीते पर आक्रमण किया था। उसमे वह सफल न हुआ
के द्वारा मारा गया।

उस धाभाई ने इस बात की पूरी चेष्टा की कि बीजलदेव को सिंहासन
जाय। बीजलदेव पहले से ही अपने इस धाभाई के साथ विशेष अनुराग रखता थ
वहुत विश्वास करता था। बीजल देव सिंहासन पर बिठा दिया गया। सिरोही से
रावल शालिवाहन जब अपने नगर मे आया तो उसने देखा कि बीज
पर अधिकार कर लिया है। इसी समय उसने बीजल देव की तरफ से अक्षम्य अशि

× सिकन्दर महान के भारतवर्ष मे आक्रमण करने पर जिस काठी जाति ने
किया था, यह वही काठी जाति थी, जिसके लोग उन दिनों मे मुलतान के आस-
ये लोग युद्ध करने मे सदा साहसी और पराक्रमी थे। यदुभट्टी लोगो ने उन
किया था।

राजा कल्लूशाह के पास पहुँच कर उसने उसकी गर्दन पर तलवार मारी । राजा कल्लूशाह गहरी नींद मे सो रहा था । उसकी गरदन कटकर अलग हो गयी । उसके वाद कुम्भा तुरन्त वहाँ से निकलकर और वाहर आकर घोडे पर वैठा । वहाँ से चल कर वह देवरावल आ गया । बरसल दीनापुर मे अधिकार करके केरोर चला गया । वहाँ पर लगा लोगो ने हैवतखाँ की सहायता से उस पर आक्रमण किया । परन्तु उनकी स्वय पराजय हुई । उस युद्ध मे कई हजार लंगा मारे गये । उसके वाद ही हुसेनखाँ ने वीकमपुर पर आक्रमण किया और वह वरसल से साथ युद्ध करके पराजित हुआ । सन १४७४ ईसवी मे वरसल ने वीकमपुर के महलो को बनवाया ।

इसके वाद यहाँ पर कोई बडी लडाई नही हुई । युद्ध की जिन घटनाओ के उल्लेख पाये जाते है, वे केवल रावल केलण के वंशजो और पजाव के सामन्तो से सम्बन्ध रखते हैं । दोनो पक्षो की क्रमश हारजीत होती रही । कोई ऐतिहासिक महत्व न होने के कारण उनका वर्णन करना हमने यहाँ पर आवश्यक नही समझा । अत मे केलण के वंशज गारा नदी के समीप तक विस्तार और विभाजन करके स्वाधीनता के साथ शासन करते रहे । उसके कुछ दिनो के वाद दिल्ली के वादशाह वाबर ने लगाहो से मुलतान छीनकर अपने अधिकार मे कर लिया और वहाँ पर अपना शासक नियुक्त कर दिया । केरोट, दीनापुर, पूगल और मेरोट के भट्टी लोगो ने तत्कालित अपना अधिकार कायम रखने के लिए इस्लाम स्वीकार कर लिया । भट्टी राज वंश के सबल सिंह के शासनकाल मे जैसलमेर की राजनीतिक परिस्थितियो मे असाधारण परिवर्तन आरम्भ हो गये थे ।

चौत्रनवाँ परिच्छेद

था
दिनो
आक्रमण जैसलमेर के सिंहासन पर गोद लिया हुआ वालक--दिल्ली-सम्राट और सबल सिंह--जैसलमेर के पतन का श्री गणेश--जैसलमेर और बीकानेर के सामन्तो का सघर्ष--अफगानी दाऊद खाँ के

च र मे अत्याचार--राज मंत्री स्वरूप सिंह के काले कारनामे--राज्य की दुरवस्था--कैदी रावल राजाओ के स निर्वासित रायसिंह और उसका परिवार--जैन धर्मावलम्बी के पैशाचिक कार्य ।

लिया । बुढापे १

रोग से मै अव नक विश्वासघात के द्वारा घडसी के मारे जाने पर उसकी विधवा रानी विमलादेवी वास था कि र लेने की घोषणा की थी और जैसलमेर के राज्य-सिंहासन पर उसे विठाया था । ते हुए प्राण दे उसने यह निर्णय भी कर लिया था कि हमीर के दोनो पुत्र केहर के उत्तरा- ल मे उनको स इस निर्णय के कारण, केहर के आठ पुत्रो के होने पर भी, उसके उत्तराधिकारी वीमारी के दिनो मौलसी और लूनकर्ण माने गये । परन्तु सिंहासन पर वैठने का अवसर आने उसने मुसलमान लङ्गा ल के युद्ध मे भाई लूनकर्ण के साथ मारा गया और उसके कोई वेटा न था । ह —"चाचक देव की ज के अधिकारी वने ।

साथ युद्ध करते हुए
किया है ।

) हरराज (२) मालदेव और (३) कल्याणदास । केहर की
९९ जैसलमेर राज्य का अधिकारी था परन्तु उसकी मृत्यु

ने अधिकार कर लिया। रावल चाचक अपनी और सोढावंशी लोगो की सेना
विरुद्ध रवाना हुआ और उसने राठौरों से युद्ध आरम्भ कर दिया। इस युद्ध मे रा
और रावल चाचक के साथ राठौर राजकुमारी का विवाह कर दिया।

बत्तीस वर्ष तक राज्य करने के बाद रावल चाचक की मृत्यु हो गयी। उस
तेजराव, उसके सामने ही बयालीस वर्ष की आयु मे चेचक रोग से पीड़ित होकर मर
के जैतसी और कर्णसी नाम के दो बालक थे। कर्णसी छोटा था। रावल चाचक
के साथ अधिक स्नेह करता था। मरने के समय उसने मन्त्रियो सामन्तो और परिव
बुला कर कहा : "मेरे मरने के बाद राजकुमार कर्णसी को राज सिंहासन पर बि
बात मे किसी प्रकार का अन्तर न पडे।"

रावल चाचक के निर्णय के अनुसार राज्य के सामन्तो ने छोटे राजकुमार
लमेर के सिहासन पर बिठाया। इस सिंहासन का वास्तव मे अधिकारी बडा लड
अपने अधिकारो की अवहेलना देखकर व्यथित और लज्जित होकर वह अपने राज
और गुजरात के मुस्लिम बादशाह के यहाँ जाकर रहने लगा। रावल कर्णसी के सि
के बाद नागौर मे हिन्दुओ के साथ मुजफ्फर खॉ के अत्याचार हुए। नागौर से ती
पर बराहवन्शी भगवतीदास नामक एक राजा रहता था। उसके अधिकार मे एक
आश्वारोही सेना थी। भगवतीदास की लडकी अपने सौन्दर्य के लिए बहुत प्रसि
मुजफ्फर खॉ ने अपना एक आदमी भेजकर भगवतीदास से उस लडकी की मॉग की
जब मुजफ्फर खॉ की आज्ञा का पालन न कर सका और उसके साथ युद्ध करने मे
ने अपने आपको असमर्थ समझा तो उसने परिवार के साथ जैसलमेर चले जाने क
और जब वह अपने परिवार को लेकर जैसलमेर जा रहा था, मुजफ्फर खॉ ने अप
मार्ग मे उस पर आक्रमण किया। भगवतीदास के साथ जो सेना थी, उसने मु
फौज के साथ वहुत देर तक युद्ध किया। उसमे चार सौ बराहवन्शी राजपूत सैनिक
मुजफ्फर खॉ ने भगवतीदास के साथ की समस्त स्त्रियॉ को कैद कर लिया। उसमे
गिरफ्तार हो गयीं।

मुजफ्फर खॉ इन सब को कैद करके अपने साथ ले गया। भगवतीदास ने
रावल कर्णसी से मुजफ्फर खॉ के इस अत्याचार का वर्णन किया। कर्णसी को अत्यधि
हुआ। उसने उसी समय अपनी सेना को तैयार होने के लिए आदेश दिया और
सेना लेकर मुजफ्फर खॉ पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। मुजफ्फर खॉ क
जैसलमेर की सेना ने भयानक युद्ध किया और उनके तीन हजार सैनिको का सहार
खॉ से भगवतीदास की लडकी और स्त्रियो के साथ-साथ समस्त सम्पत्ति छीन ली औ
भगवतीदास को लाकर सौप दी।

अट्ठाईस वर्ष तक राज्य करने के बाद रावल कर्णसी ने परलोक की यात्रा क
उसका पुत्र लाखासेन सन् १२७१ ईसवी मे जैसलमेर के सिंहासन पर वैठा। उस
व्यवहारो को सुनकर कोई भी हँसेगा। एक दिन रात की बात है आबादी के वाहर व
चिल्ला रहे थे। लाखन के पूछने पर बताया गया कि ये सियार सरदी के कारण चिल्ल
सुनकर लाखनसेन ने प्रत्येक सियार को एक-एक कम्बल देने का आदेश दिया। इस
कि राज्य की तरफ से कम्बलो का प्रबन्ध हो चुका और उनका चिल्लाना जारी रहा
ने फिर पूछा "अब यह क्यो चिल्ला रहे है ?"

बावर की विजय के पहले जैसलमेर राज्य की सीमा उत्तर में गारा नदी तक थी, पश्चिम मे मेह-राणा अथवा सिधु नदी तक, पूर्व और दक्षिण मे बीकानेर और मारवाड तक थी। लगभग दो सौ वर्षों से जैसलमेर राज्य के नगर और ग्राम बीकानेर और मारवाड राज्य में शामिल होते चले आ रहे थे। रावल सवल सिह ने सिंहासन पर बैठकर बडी योग्यता के साथ अपने राज्य का शासन किया।

रावल सवल सिह के परलोक होने वासी पर उनका लडका अमरसिंह सिंहासन पर बैठा और उसने उसके वाद बलोचियो के साथ युद्ध करके विजय प्राप्त की। उसका राज तिलक उसी युद्ध-क्षेत्र मे हुआ था। सिंहासन पर बैठने के बाद अमर सिंह ने अपनी लडकी के विवाह के लिए राज्य की प्रजा से धन लेने की चेष्टा की। परन्तु उसके मन्त्री रघुनाथ ने उसका विरोध किया। इसलिए अमर सिह ने उसे मरवा डाला। उसके थोडे दिनो के बाद राज्य के उत्तरी और पूर्वी स्थानो पर चन्ना राजपूतो के अत्याचार फिर से बढने लगे। यह देखकर रावल अमर सिह ने अपनी सेना लेकर उसको इस प्रकार पराजय किया कि वे भविष्य मे फिर इस प्रकार उपद्रव न कर सके।

कुछ दिनो के उपरान्त जैसलमेर और बीकानेर के सामन्तो मे संघर्ष पैदा हुआ। बीकानेर के कांधलोत राठौर बहुत दिनो से जैसलमेर के नगरो और ग्रामो पर अनेक प्रकार के अत्याचार कर रहे थे। इसीलिए जैसलमेर राज्य के वीरमपुर के सुन्दर दास और ... के दोनो सामन्तो ने उनके अत्याचारो का फल देने का निश्चय किया और अपनी-अपनी सेनाये लेकर दोनो सामन्तो ने बीकानेर राज्य की सीमा के जाजू नामक नगर पर आक्रमण किया और उसको लूट लेने के बाद उस नगर मे आग लगा दी।

कांधलोत राठौरो ने यह देखकर जैसलमेर वालो से बदला लेने की तैयारी की और जैसलमेर की सीमा के गाँवो और नगरो पर आक्रमण करके अपने नगर जाजू का बदला लिया। इस प्रकार के संघर्ष के परिणाम स्वरूप, दोनो राज्यो के बीच तनातनी बढती गयी और अन्त मे दोनो राज्यो के बीच कठिन संग्राम हुआ। उस युद्ध मे बीकानेर के दो सौ राठौर मारे गये और उस राज्य की सेना पराजित होकर भाग गयी। अपने राज्य के सामन्तो की विजय को देखकर रावल अमर सिह को बडी प्रसन्नता हुई।

उन दिनो मे बीकानेर के राजा दिल्ली के बादशाह की तरफ से दक्षिण गया था। उसने सुना कि जैसलमेर के सामन्तो ने बीकानेर के दो सौ आदमियो को मारकर बाकी सेना को भगा दिया है तो वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपनी राजधानी मे सदेश भेजा कि राज्य के समस्त राठौर जैसलमेर के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो। अनूपसिह का यह आदेश मिलने पर बीकानेर राज्य मे मुनादी की गयी। उसके अनुसार राज्य के राठौर युद्ध के लिए तैयार होकर राजधानी मे एकत्रित होने लगे। इन्ही दिनो मे राजा अनूप सिह ने राठौरो की सहायता के लिए हिसार से पठानो की एक फौज भेजी।

जैसलमेर मे रावल अमर सिह को बीकानेर की इस तैयारी का समाचार मिला। इसलिए उसने बीकानेर के राठौरो के साथ युद्ध की तैयारी की। उसने भट्टी सेना को भेजकर बीकानेर के नगरो पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। भट्टी सेना राठौरो पर आक्रमण करके और उनको पराजित करके पूगल नगर अपने राज्य मे मिला लिया। इसके बाद उस सेना ने बाडमेर तथा कोतडा के सामन्तो को जैसलमेर की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया।

एक साथ उन पर आक्रमण किया और उनको मारकर उनके साथ ही सम्पूर्ण
जैसलसेर ले आये । वादशाह के जो सैनिक वच गये थे, उन्होने बादशाह के पास
का हाल बताया ।

वादशाह ने इस घटना को सुनकर भट्टी राजकुमारो से बदला लेने के
और वादशाह की फौज जैतसी पर आक्रमण करने के लिए तैयार होने लगी । यह
मेर पहुँचा और यह भी मालूम हुआ कि जो सेना आक्रमण करने के लिए आ रह
के निकट सागर तक पहुँच चुकी है । यह सुनकर जैतसी ने भी अपने यहाँ सेना को
आज्ञा दी । वहाँ के दुर्ग मे बहुत दिनो के लिए खाने-पीने की व्यवस्था की गयी
रास्ते मजबूत पत्थरो से वन्द करवा दिये गये । साथ ही दुर्ग के भीतर पत्थरो के
का एक वहुत वडा ढेर तैयार किया गया और निश्चय किया गया कि शत्रु के
पत्थरो के इन टुकडो की मार की जायगी ।

राजमहलो से परिवार के सभी लोगो को मरुभूमि के एक दूरवर्ती स्थान
गया । इसके बाद रावल जैतसी अपने दो लडको और पाँच हजार सैनिको के
लगा । देवराज और हमीर एक सेना को लेकर शत्रु का सामना करने के लिये
निकले । उस समय बादशाह अलाउद्दीन अजमेर की तरफ चला गया और भादो के
खुरासानी फौज को लेकर उसने जैसलमेर को घेर लिया । जैसलमेर के छप्पन
करने के लिए तीन हजार सात सौ शूरवीर तैयार थे और आवश्यकता के लिए
दुर्ग के भीतर थे ।

खुरासानी फौज के आते ही भाटी लोग सभी प्रकार तैयार हो गये
डालते ही भाटी सैनिको ने जो मार आरम्भ की, उससे सात हजार शत्रु के
मीर महवूब खाँ और अली खाँ नामक दोनो सेनापति अपनी वची फौज को लिये
मे मौजूद रहे शत्रु की फौज दो वर्ष तक जैसलमेर पर घेरा डाले पड़ी
उसके सामने खाने-पीने की कठिनाई पैदा होने लगी । क्योंकि मन्दोर से जो
आती थी, उसे देवराज और हमीर रास्ते मे ही लूट लेते थे । दुर्ग मे :भाटी
खाने-पीने की कठिनाई न थी । इसके लिये उन लोगो ने पहले से ही प्रवन्ध
लेकिन युद्ध की इस अवस्था मे धीरे-धीरे आठ वर्ष बीत गये । इन्ही दिनो मे
जैतसी की मृत्यु हो गयी और उसके मृत शरीर का अग्नि-संस्कार दुर्ग के
गया ।

जैसलमेर के इस युद्ध के दिनो मे वादशाह के सेनापति नवाव महवूब खाँ
मित्रता पैदा हुई । जैतसी की मृत्यु हो चुकी थी । सम्वत् १३५० सन् १२६४ ई
पुत्र मूल राज तृतीय का राजतिलक दुर्ग के भीतर हुआ । इस अभिपेक के सम
छोटा भाई रत्नसी खोजड़ा वृक्ष के नीचे सेनापति नवाव महवूब खाँ के साथ
था । इस मित्रता के सिलसिले मे रत्नसी प्राय: इसी वृक्ष के नीचे उसके सा
करता था ।

दुर्ग मे जो उत्सव हो रहा था, उसके सम्बन्ध मे सेनापति महवूब खाँ ने
उत्तर देते हुये रत्नसी ने कहा कि "पिता जी की मृत्यु हो जाने के कारण दुर्ग मे बड़े
का अभिपेक हो रहा है ।"

पर बिठाया गया है वह उसका अधिकारी नही है। मै अपने अधिकारो की रक्षा करने के लिए सभी प्रकार तैयार हूँ और उसके लिए मै सभी प्रकार का बलिदान करूँगा। सारी राजभक्त प्रजा की मैं सहायता चाहता हूँ।"

अखय सिह के इस पत्र को पाकर जैसलमेर के बहुत से सरदार बहुत प्रभावित हुए और वे अखय सिह के पास आकर मिले। उन सरदारो की सहायता को पाकर अखय सिह ने जैसलमेर राज्य के दुर्गों पर आक्रमण किया और राज्य के तीन दुर्गों पर अधिकार कर लिया। इसके थोडे दिनो बाद सवाई सिह की मृत्यु हो गयी। इसलिए अखय सिह जैसलमेर के सिहासन पर बैठा।

रावल अखय सिह ने सिहासन पर बैठकर चालीस वर्ष तक शासन किया। उसके शासन काल मे दाऊद खाँ के लडके भावल खाँ ने जैसलमेर राज्य के गढा नगर पर आक्रमण किया और उसे अपने भावलपुर राज्य मे मिला लिया। रावल अखय सिह के बाद सन् १७६२ ईसवी मे मूलराज राज्य के सिहासन पर बैठा। उसके तीन लडके पैदा हुए—(१) रायसिह (२) जैतसिह (३) मानसिह।

मूलराज जैसलमेर के सिहासन बैठा। लेकिन वह इसके लिए योग्य न था। उसकी अयोग्यता के कारण उसके मत्री स्वरूप सिह ने सभी प्रकार राज्य का सत्यानाश किया। स्वरूप सिह जैन धर्मावलम्बी वैश्य था और वह मेहनता जाति मे पैदा हुआ था। मत्री स्वरूप सिह अत्यन्त स्वेच्छाचारी और स्वार्थी था। उसने राज्य के सामन्तो के सम्मान की भी परवा न की और राज्य मे उसने अनेक प्रकार के अत्याचार किये। उसके कार्यों से राज्य मे बहुत असन्तोष पैदा हुआ। राज्य के सामन्तो ने एक तरफ से उसका विरोध किया। परन्तु मूलराज पर इसका कोई प्रभाव न पडा। रावल मूलराज ने सिहासन पर बैठने के बाद राज्य का कोई भी प्रबन्ध स्वयं न देखा इसीलिए मत्री स्वरूप सिह को राज्य मे मनमानी करने का अवसर मिला।

मत्री स्वरूप सिह के सम्बन्ध मे एक और भी घटना चल रही थी। वह एक वेश्या से प्रेम करता था और वह वेश्या सरदार सिह नाम के राजपूत से प्रेम करती थी। इसलिए स्वरूप सिह सरदार सिह से बहुत ईर्षा करता था और अनेक उपायो से वह उसको क्षति पहुँचाने की चेष्टा करता था। मत्री स्वरूप सिह के द्वारा सरदार सिह अनेक प्रकार की उलझनो का सामना कर चुका था। अत मे उसने अपनी विपदाये युवराज राय सिह के सामने उपस्थित की। रायसिह स्वय मत्री स्वरूप सिह से बहुत अप्रसन्न था। इसलिए कि स्वरूप सिह उससे विमुख न रहता था। कुछ इस प्रकार के कारणो से स्वरूप सिह ने रायसिह के साथ भी अडगे लगाये थे और युवराज को खर्च के लिए जो रुपये मिलते थे, मत्री स्वरूप सिह ने उसमे कमी कर दी थी।

सरदार सिह के प्रार्थना करने पर युवराज रायसिह ने न केवल स्वरूपसिह का विरोध करने के लिए निर्णय किया बल्कि उसके अपराधो का दण्ड देने के लिए उसने निश्चय कर लिया। एक दिन की बात है। मत्री स्वरूप सिह राज-दरबार मे बैठा था और रावल मूलराज भी वहाँ पर मौजूद था। राज्य के सामन्तो की उपस्थिति मे युवराज रायसिह वहाँ पहुँचा और उसने म्यान से तलवार निकाली। यह देखते ही स्वरूप सिह काँप उठा उसने उसी समय घबराये हुए नेत्रो से रावल मूलराज की तरफ देखा। इसी क्षण रायसिह की तलवार से स्वरूप सिह का मस्तक कटकर नीचे गिर गया। सामन्तो को मालूम था कि मत्री स्वरूप सिह के अत्याचारो का मूल कारण रावल मूलराज है। इसलिए दण्ड उसको भी मिलना चाहिए। वे लोग इस प्रकार सोच रहे थे। उसी समय मूलराज भयभीत होकर वहाँ से भागा और रानियो के महलो मे पहुँच गया।

राज्य के सामन्तो ने राज सिहासन पर बैठने के लिए युवराज रायसिह से प्रार्थना की।

मूलराज को वडा आश्चर्य हुआ। उसके वाद ही उसे मालूम हुआ कि सेनापति दुर्ग मे आया था और रत्नसी के द्वारा उसको यहाँ की सम्पूर्ण परिस्थिति मालूम

मूलराज को रत्नसी पर वडा क्रोध मालूम हुआ। उसने उसे बुलाकर कह राध से हम सवका सर्वनाश होने जा रहा है। तुमने दुर्ग की परिस्थिति महबू वतायी है। उसका परिणाम यह हुआ कि वादशाह की जो फौज निराश होकर थी उसने फिर लौटकर दुर्ग पर आक्रमण किया है। इस समय जैसलमेर के सम्पू है। हमारे महलो की राजकुमारियाँ और रानियो के धर्म की रक्षा कैसे होगी ?'

वडे भाई मूलराज के मुख से इन भयानक वातो को सुनकर रत्नसी ने स कहा : "हम लोग इस समय मृत्यु के सामने है। दुर्ग के भीतर खाने-पीने का और दुर्ग के वाहर वादशाह की फौज ने घेरा डाल रखा है। वादशाह की विशाल करना हम लोगो के लिए असम्भव है। अव तक दुर्ग मे वन्द रहकर उसका लेकिन कुछ दिनो से दुर्ग मे खाने-पीने की कोई व्यवस्था नही रह गयी। ऐसी दश हम लोगो के सामने है। या तो हम लोग विना भोजन के तडफ-तडफकर दुर्ग मे शत्रुओ के द्वारा मारे जायेगे। इन दोनो परिस्थितियो मे राजपूतो के लिए युद्ध का त्याग करना सव प्रकार श्रेष्ठ है। इसलिए वलिदान होने के पहले हमे मह जौहर व्रत की आज्ञा दे देना चाहिए। इसलिए कि हम सव लोगो के मारे जाने मे यवन वादशाह का राज्य होगा और उसके द्वारा यदुवशियो का सम्पूर्ण गौरव इसलिए महलो की राजकुमारियाँ और रानियाँ जौहर व्रत का पालन करे और जलने के साथ-साथ जैसलमेर के राजमहलो मे आग लगा दी जाय। सम्पूर्ण जाय। इसके पश्चात् हम सव लोग अपने-अपने हाथो मे तलवारे लेकर युद्ध भूमि शत्रुओ का सहार करते हुए अपने-अपने प्राणो की वलि दे देगे। यदुवशियो के इसके सिवा कोई दूसरा उपाय नही हो सकता।"

रत्नसी के मुख से इन शब्दो को सुनकर मूलराज को सतोष मिला। ... परिवार के लोगो और अन्य प्रमुख व्यक्तियो को वुलाकर कहा . "आप सव का हुआ है और आपके पूर्वजो ने अपने सन्मान की रक्षा के लिए सदा अपने प्राणो इस समय फिर आपके सामने परीक्षा का समय है। इस समय पूर्वजो के गौ एक वार फिर अपने हाथो मे तलवारो को पकडना है।"

इस प्रकार उत्तेजना पूर्ण वाते करके मूलराज महलो की तरफ रवाना हुआ राजकुमारियो और उनकी सहेलियो को एकत्रित करके मूलराज ने कहा : " सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा का समय उपस्थित हुआ है। अपने धर्म और वनाये रखने के लिए हम सवको अपने-अपने प्राणो की आहुतियाँ देना है। अव आप सव लोग जौहर व्रत के तैयारी करे।

इसी समय सोढावंशी मूलराज की प्रधान रानी ने कहा : "जौहर व्रत के मे हम सव तैयारी कर लेगी और कल प्रात.काल इस ससार को छोडकर हम यात्रा करेगे।"

प्रधान रानी के इन शब्दो को सुनकर राजमहलो की रानियाँ, राजकुमा की स्त्रियाँ हर्ष के साथ जौहर व्रत की तैयारी करने लगी।

रावल मूलराज के सिहासन पर बैठने के समय रायसिह अपने महल मे सो रहा था। नगाडो के बजते ही उसकी नीद खुल गयी। जागने पर उसने सुना कि पिता जी ने कारागार से निकलकर और सिहासन पर बैठकर राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ मे ले लिया है। उसी समय एक राज कर्मचारी ने निर्वासन के दण्ड की आज्ञा लेकर रायसिह के पास आया और उसने लिखा हुआ आदेश रायसिह को दिया। साथ ही उसने कहा : 'काला घोडा बाहर तैयार खडा है।'

राजपूतो मे प्रचलित प्रथा के अनुसार निर्वासन का दण्ड पाने पर निर्वासित को काले घोडे पर बैठकर राज्य से निकल जाना पडता था। उस समय उसकी पगडी और उसकी सभी दूसरी चीजे काले रग की होनी चाहिए। रायसिह ने दण्ड को स्वीकार किया। वह नियम के अनुसार काले घोडे पर बैठकर जैसलमेर से बाहर निकला। जो सामन्त और दूसरे लोग रायसिह के पक्ष-पाती थे वे सभी जैसलमेर से निकलकर उसके साथ चले गये। राज्य की दक्षिणी सीमा के अन्त मे कोटरा नामक स्थान पर पहुँचकर सामन्तो ने रायसिह से बात-चीत की और आपस मे वे लोग निश्चय करने लगे कि इस नगर को लूट लेना चाहिए। रायसिह ने इस बात का विरोध किया और कहा . "राज्य की समस्त भूमि हमारी जननी है। उसे हम मातृ-भूमि कहते है। इसलिए हम लोग अपनी मातृ-भूमि पर किसी प्रकार का अत्याचार नही कर सकते। जो अत्याचार करेगा, वह हमारा शत्रु होगा।' रायसिह की इन बातो को सुनकर सभी सामन्त चुप हो गये। फिर किसी ने ऐसी बात नहीं की।

निर्वासित होकर रायसिह जोधपुर चला गया और वहाँ पर उसने दो वर्ष से अधिक व्यतीत किये। जोधपुर के राजा विजय सिह ने सम्मान के साथ अपने यहाँ उसको स्थान दिया। यद्यपि रायसिह अपने अप्रिय स्वभाव के कारण उस सम्मान के पाने का अधिकारी न था। जोधपुर मे रहकर उसने उस राज्य के एक महाजन से कर्ज लिया और बहुत दिनो तक जब उस कर्ज की अदायगी न हुई, तो उस महाजन ने रास्ते मे रायसिह को रोककर उस समय अपने रुपये की माग की, जब वह अपने घोडे पर बैठा हुआ राजा विजय सिह के साथ शिकार खेलने जा रहा था।

उस महाजन ने रायसिह के घोडे की लगाम पकडकर और उसको रोककर अपनी प्रार्थना की थी। रायसिह ने लगाम को छोड देने के लिए कहा। लेकिन महाजन ने लगाम न छोडी और वह बिगडकर बाते करने लगा। यह देखकर रायसिह ने अपनी तलवार से उस महाजन का सिर काटकर जमीन पर गिरा दिया और उसके बाद वह जैसलमेर की तरफ यह कहते हुए आगे बढा : 'दूसरे राज्य मे सम्मान पूर्वक रहने की अपेक्षा अपने राज्य मे गुलाम होकर रहना भी अच्छा है।'

रायसिह के अचानक जैसलमेर की राजधानी मे आ जाने से वहाँ के लोगो मे एक कुतूहल पैदा हुआ और प्रत्येक मनुष्य उसको देखने के लिए लालायित हो उठा। रावल मूलराज को जब मालूम हुआ तो उसने अपने दूत से पूछा रायसिह जैसलमेर क्यो आया है ?'

दूत ने रायसिह के पास जाकर इस बात को जानने की कोशिश की। उसने दूत के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा "मैं तीर्थ यात्रा करने जा रहा हूँ। इसलिए अपनी जन्म भूमि को देखने आया हूँ।'

दूत ने जब मूलराज के पास जाकर यह बात कही तो उसने रायसिह की इस बात पर विश्वास नही किया। उसको इस बात की शका होने लगी कि रायसिह अपने किसी षडयन्त्र के लिए यहाँ पर आया है। इसलिए मूलराज ने रायसिह के साथियो के अस्त्र-शस्त्र ले लेने का आदेश दिया और रायसिह को देवा के दुर्ग मे रहने लिए भेज दिया।

तिरपनवाँ परिच्छेद

जैसलमेर का संघर्ष—पराक्रमी तिलोकसी—फीरोजशाह का आक्रमण—
तैमूर—जैसलमेर का उत्तराधिकार—राजकुमार जैतसी का विवाह—मोमन लोग
आक्रमण—लूट की सम्पत्ति से जैसलमेर का निर्माण—पीलवग के राजा के साथ यु
का महत्व ।

भट्टी राज्य के विनाश के कुछ वर्षों के बाद महेवा के सामन्त मा
लड़के जगमल ने जैसलमेर की राजधानी पर अधिकार करने का निश्चय किया
सेना के साथ सात सौ गाडियो पर रसद और दूसरी सामग्री को लादकर वह जैस
जब यह समाचार भट्टी राजवश के जसहड के दोनो पुत्रो—दूदा और ि
राठौर वश के राजपूत हमारी राजधानी पर अधिकार करने के लिए आ गये
आदमियो को सगठित करके राठौरो का सामना करने की तैयारी की और
गये । भट्टी लोगो ने जैसलमेर पहुँचकर राठौरो की सम्पूर्ण सम्पत्ति लूट ली अ
कर जैसलमेर से भगा दिया ।

राठौरो के चले जाने के बाद दूदा ने जैसलमेर की राजधानी अधिकार मे
प्रजा ने इस पर सन्तोष प्रकट किया और उसे अपना राजा मानकर उसे रा
दूदा ने जैसलमेर के राज्य सिहासन पर बैठकर वहाँ के टूटे हुए मकानो के
आरम्भ किया और थोडे दिनो के बाद जैसलमेर की परिस्थितियाँ बदल गयी ।

रावल दूदा के पाँच बेटे पैदा हुए । उसका भाई तिलोकसी अपने प
प्रसिद्ध हुआ । उसने बलोचियो मुसलमानो मगोलियो देवरा जाति के लोगो
जालौर के सोनगढो को जीतकर अपनी शक्तियो का परिचय दिया । अनेक जा
पराजित करने के बाद उसका साहस बढ गया और उसने अपनी सेना लेकर
यात्रा की । दिल्ली के बादशाह फीरोजशाह के बहुत-से श्रेष्ठ घोडे अजमेर
कराने के लिए लाये गये थे । तिलोकसी ने आक्रमण करके बादशाह के समस्त
वह जैसलमेर लौट आया ।

बादशाह फीरोजशाह ने जब यह घटना सुनी तो उसने जैसलमेर पर आक्र
अपनी एक फौज रवाना की । बादशाह की सेना के साथ युद्ध करने की
इसलिए दिल्ली की इस फौज के पहुँचते ही जैसलमेर पर भयानक विपद आ
अपनी रक्षा का कोई उपाय न देखा तो उसने अपने यहाँ की सोलह हजार
ललनाओ को अग्नि मे जला कर अपने सत्रह सौ आदमियो के साथ युद्ध मे
जैसलमेर के सिहासन पर बैठकर दस वर्ष राज्य किया ।

सम्वत् १३६२ सन् १३०६ ईसवी मे अपने परिवार के लोगो के साथ
गया । उन्ही दिनो मे नवाब महबूबखाँ की मृत्यु हो जाने के कारण रत्नसी
की रक्षा का भार महबूबखाँ के दोनो लड़को गाजीखाँ और जुलफकारखाँ पर

जैसलमेर की राजधानी मे रायसिह के लौट कर आने पर रावल मूलराज ने उसे देवा के दुर्ग मे भेज दिया और वहां पर कैद कर लिया गया। रायसिह के लडके अभय सिह और धौकल सिह निर्वासित सामन्तो के साथ बाडमेर मे रहते थे। मूलराज ने अपने दूतो के द्वारा सामन्तो के पास सदेश भेजकर अपने दोनो पौत्रो को बुलवाया था। लेकिन सामन्तो के न भेजने पर मूलराज ने अपनी सेना भेजकर बाडमेर को चारो तरफ से घेर लिया।

वहा पर जो निर्वासित सामन्त रहते थे, उन्होने बडे साहस के साथ नगर के दुर्ग की रक्षा की। अन्त मे खाने-पीने का कोई प्रबन्ध न रहने के कारण उन सामन्तो ने आत्म-समर्पण कर दिया। सामन्तो ने रायसिह के दोनो लडको को मूलराज के बुलाने पर भी न भेजा था, उसका कारण था। उसको मूलराज पर विश्वास न था। इसलिए जोरावर सिह के आश्वासन देने पर दोनो राजकुमार मूलराज के पास भेज दिये गये। मूलराज ने उन दोनो लडको को देवा के दुर्ग मे रायसिह के साथ रहने के लिए भेज दिया। उसी दुर्ग मे रायसिह की स्त्री भी उसके साथ रहती थी। अकस्मात आग लग जाने से कारण उस दुर्ग मे रायसिह और उसकी स्त्री जल मरी। अभयसिह और धौकलसिह— दोनो उस आग से किसी प्रकार बच गये।

सालिम सिह ने जोरावर सिह के सरक्षण मे अभय सिह और धौकल सिह को जैसलमेर से दूरवर्ती रामगढ नगर मे भेज दिया। इसमे मन्त्री सालिम सिह की दूरदर्शिता थी। रायसिह के राजकुमारो के नाम पर राज्य के सामन्त किसी भी समय मूलराज के साथ विद्रोह कर सकते थे। इस सकट से मूलराज को सुरक्षित रखने के लिए सालिमसिह मेहता ने उन दोनो बालको को राज्य से दूर भेज दिया था।

रायसिह के दोनो राजकुमारो को जैसलमेर लाने के समय जोरावर सिह ने आश्वासन दिया था। इसलिए जब उन दोनो राजकुमारो को राज्य से सुदूरवर्ती स्थान पर भेजने का आदेश हुआ उस समय जोरावर सिह को सन्देह पैदा हुआ। उसी सन्देह के आधार पर जोरावर सिह ने राज दरबार मे निर्भीक होकर मूलराज से कहा "आपके सिहासन के उत्तराधिकारी राजकुमार अभयसिह के जीवन का उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है। जिस उस राजकुमार को राज्य के सिहासन पर किसी समय बैठना है उसको किसी दूरवर्ती स्थान पर भेज देने की अपेक्षा राजधानी मे रखकर उसे राज्य के शासन की शिक्षा देना आपका कर्त्तव्य है।"

जोरावर सिह के निर्भीक शब्दो को सुन कर मेहता सालिम सिह भयभीत हो उठा। वह सोचने लगा कि राज दरबार मे जोरावर सिह की तरह के शक्तिशाली सामन्त का इस प्रकार कहना मेरे लिए किसी प्रकार अच्छा नही है। इसलिए वह किसी षडयन्त्र के द्वारा जोरावर सिह को मार डालने का उपाय सोचने लगा।

जोरावर सिह का एक भाई था। खेतसी उसका नाम था। सालिम सिह ने खेतसी की स्त्री के साथ बहन का सम्बन्ध कायम किया और उसे अपने यहां बुलाकर उसने कई बार सम्मानित किया। उसको प्रभावित करने के बाद सालिम सिह ने एक दिन अपने यहां उससे बडी बुद्धिमानी के साथ बाते की और कहा "हमारी इच्छा तुम्हारे पति खेतसी को प्रधान सामन्त बनाने की है। क्या तुम इस बात को पसन्द करोगी?"

मत्री सालिम सिह की बात को सुनकर खेसती की स्त्री बहुत प्रसन्न हुई और जब उसने इसे स्वीकार कर लिया तो सालिम सिह ने सावधानी के साथ उसको समझाते हुए कहा। "इसके लिए मै जैसा तुम्हे बताऊँ, तुम्हे करना पडेगा।"

उसने अपनी रानी विमला देवी को किसी वालक के गोद लेने का परामर्श दिया।

उसकी रानी ने इस वात को स्वीकार कर लिया और उसके गोद लेने के की खोज होने लगी। वह वालक यदुभट्टी वंश का होना चाहिए। अनेक वाल होने के वाद रावल घडसी ने केहर को गोद लेने का निश्चय किया। यह समा साथ जैसलमेर और उसके आस-पास के स्थानो मे फैल गया। इसे सुनकर जसह वहुत असतुष्ट हुए और घडसी के विरुद्ध कोई षडयन्त्र करने के लिये वे उपाय सोच

इन्ही दिनो मे जैसलमेर-राज्य की तरफ से एक विशाल सरोवर खुद उसको देखने के लिये रावल घडसी रोज वहाँ जाता था। एक दिन जसहड के दो पर आक्रमण किया और उसे जान से मार डाला।

घडसी की मृत्यु का समाचार सुनकर विमला देवी ने भली-भाँति समझ मि लडको ने जैसलमेर-राज्य का अधिकार प्राप्त करने के लिये ही यह अपराध कि उसने केहर को गोद लेने और जैसलमेर का उसे राजा वनाने की घोषणा कर दी हड के पुत्रो का उद्देश्य सकट मे पड गया।

घडसी के मृत शरीर के साथ रानी विमला के सती न होने का कारण य घडसी के द्वारा जो विशाल सरोवर वनवाया जा रहा था, उसका कार्य अभी वहु उसे पूरा करना रानी विमला का कर्तव्य था। एक कारण और था। स्वामी उद्देश्य को असफल वनाने के लिए जिस केहर को गोद लेने की उसने घोषणा सहायता करना भी उसके लिये कुछ दिनो तक जरूरी कार्य था।

रावल घडसी के मारे जाने के वाद छै महीने मे उस विशाल सरोवर के समाप्त हो गया। विधवा विमलादेवी ने अपने पति के नाम से घडसीसर उस रखा। जिन लोगो ने रावल घडसी की हत्या की थी, वे अव केहर के सर्वनाश लगे। घडसीसर का कार्य समाप्त हो जाने पर विधवा रानी विमला ने सती होने और अग्नि मे भस्मी भूत होने के पहले उसने अपना निर्णय सव को सुनाया कि "ह के दत्तक पुत्र और उत्तराधिकारी हो सकते है।" हमीर के दो लडके थे। वडे जेतसी और छोटे का नाम था लूनकर्ण।

जेतसी के वयस्क होने पर चित्तौड के राणा कुम्भ ने उसके विवाह के लिए उसका निश्चय हो जाने पर अपने वहुत-से आदमियो के साथ विवाह के लिये लिए रवाना हुआ। अरावली पर्वत से चौवीस मील के आगे मालवनी का प्र मीराज मिला। भट्टी राजकुमार ने उस दिन उसके यहाँ विश्राम किया और दूस होते ही सव के साथ राजकुमार जेतसी मेवाड की तरफ चला। कुछ दूर आगे कुमार जेतसी को दाहिनी ओर तीतर की वोलने की आवाज सुनायी पडी। सा प्रकार की वातो का अर्थ समझता था। उसने दाहिने हाथ की तरफ तीतर का वताया।

राजकुमार जेतसी ने अशकुन की वात को सुनकर अपने घोडे को रोका उसने उस दिन वहीं पर विश्राम किया। वह तीतर पक्षी साथ के लोगो के द्वारा उस समय मालूम हुआ कि उस तीतर के एक ही आँख है। दूसरे दिन प्रात.काल फिर रवाना हुआ। कुछ दूर आगे जाने पर दामिनी के गरजने की आवाज सुनायी राजकुमार ने इसका अभिप्राय पूछा। उसने कोई वात स्पष्ट न कहकर जेत कि आप सव लोग यहीं पर विश्राम करें और नाई को भेजकर कुम्भलमेर पर समा

मन्त्री होने के वाद किस प्रकार के अत्याचार किये और षड्यन्त्र करके लोगो की हत्याये की, उनके वर्णन ऊपर किये जा चुके है ।

रावल मूलराज ने सालिम सिह के अत्याचारो के प्रति अपने दोनो नेत्र बन्द कर लिए थे जिस मुलराज ने सालिम सिह को सभी प्रकार स्वत्वाधिकारी बना दिया था, उस सालिम सिह का भी कुछ कर्त्तव्य मूलराज के प्रति था । उसने मूलराज के प्रपौत्र गजसिह को राज्य का उत्तराधिकारी बनाने का दृढ निश्चय कर लिया था । राजा का वास्तव मे उत्तराधिकारी रायसिह का बेटा अभयसिह था । रायसिह स्वय अपनी पत्नी के साथ आग मे जलकर मर चुका था । अब रायसिह के जीवन मे अभय सिह काटा था । न केवल उस अभयसिह को, बल्कि रायसिह के दोनो बालको अभय सिह और धौंकल सिह को मरवा डालने का सालिम सिह ने निश्चय किया ।

लगातार पाप और अपराध करने के वाद मनुष्य के हृदय का भय नष्ट हो जाता है । सालिम सिह की यही अवस्था थी । अब उसके हृदय मे किसी बात का भय न रह गया । उसने अपने षड्-यन्त्र द्वारा जोरावर सिह के स्थान पर खेतसी को राज्य का प्रधान सामन्त बनाया था । वह खेतसी पर अपना यह उपकार समझता था । उसका कहना था, वह विश्वास था कि मै जो कुछ कहूँगा खेतसी उसको पूरा करेगा । अपने इसी विश्वास के कारण उसने रायसिह के दोनो बालको को मार डालने के लिए खेतसी को आदेश दिया ।

खेतसी प्रधान मन्त्री सालिम सिह के उस आदेश को सुनकर अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसने सालिम सिंह को उत्तर देते हुए कहा : "मै अपने वश के किसी के भी प्रति इस प्रकार की बात सुनना भी पसन्द न करूँगा ।

खेतसी की इस बात को सालिम सिह ने सुना । उसने कुछ उत्तर न दिया । इसके कुछ दिनो वाद खेतसी बालोतरा राज्य के फूलिया नामक स्थान पर एक निमन्त्रण मे गया । जब वहाँ से लौट रहा था, मन्त्री सालिम सिह के भेजे हुए राज्य के कुछ आदमी उसे जैसलमेर की सीमा के भीतर मिले और सालिम सिह की योजना के अनुसार विश्वासघात करके उन लोगो ने खेतसी को मार डाला । यह समाचार जब खेतसी की स्त्री को मिला तो वह अश्रुपात करती हुई सालिम सिह के यहाँ पहुँची । इसलिए कि वह सालिम सिह को अपना सब से अधिक शुभचिन्तक समझती थी । परन्तु उसे वही पर यह मालूम हो गया कि मेरे स्वामी के मारे जाने मे इसी सालिम सिह का षड्यन्त्र था तो प्रतिहिंसा की भावना से उस स्त्री के अन्तरतर मे आग की लपटे उठने लगी । सालिम सिह को जब यह मालूम हुआ तो उसने खेतसी की स्त्री को भी मरवा डाला ।

सालिम सिंह ने इन दिनो मे लगातार उन लोगो की हत्याये की, जो लोग उसके विरोधी बने । उसने रायसिह के लडके अभय सिह और धौंकल सिंह को भी विष देकर मरवा डाला और उसने गजसिह को जैसलमेर राज्य का उत्तराधिकार घोषित किया । गजसिह के चार भाई और थे । वे अपने प्राणो के भय से बीकानेर मे चले गये ।

मूलराज के तीन लडके थे—रायसिह, जेतसिह और मानसिह । रायसिह आग मे जलकर मर गया । जैतसिह काना था और मानसिह घोडे से गिरकर मर गया था । रायसिह के दो लडके थे, जो विष देकर मारे गये । जैतसिह के एक लडका था, महासिह । यह काना था । मानसिह के पाँच लडके थे—तेजसिह देवीसिह, गजसिह, केशरी सिह और फतेह सिंह । इनमे गजसिह को छोडकर शेष चारो लडके राज्य से निर्वासित कर दिये गये थे । हिन्दू धर्म ग्रन्थो के अनुसार काने को राज सिंहा-सन का अधिकार नही मिलता । इस दशा मे गजसिह ही उस राज्य का अब एक मात्र उत्तराधिकारी रह गया था ।

इन्ही दिनो मे केलण ने समावंश की राजकुमारी के साथ विवाह किया। वश में सिंहासन का अधिकार प्राप्त करने के लिए घरेलू विद्रोह पैदा हुआ। केल को शांत करने मे वडी सहायता की। उसने सुजाअतजाम नाम के समावंशी का दो वर्षो के वाद सुजाअत की मृत्यु हो गयी। उसके बाद केलण ने उस वंश के अधिकार कर लिया। उसके राज्य का विस्तार सिंधु नदी तक पहुँच गया। वहत्तर में उसकी मृत्यु हो गयी।

केलण के परलोकवासी होने पर चाचकदेव उसके सिंहासन पर बैठा। विस्तार इन दिनो मे गाडा नदी के समीप तक पहुँच गया था। यह देखकर मु राजा को वहुत असंतोष मालूम हुआ। परन्तु वह कुछ कर न सका। इसलिये चा मे अपनी राजधानी कायम की और वह वही पर रहने लगा।

इसके कुछ दिनो के पश्चात् मुलतान के राजा यदुवंशी लोगो पर आक्र इरादा किया और इसके लिए उसने तैयारी आरम्भ कर दी। लंगा, जोहिया, ची जातियाँ भट्टी लोगो से शत्रुता रखती थी, सभी ने मिलकर एक शक्तिशाली मुलतान का राजा उस संगठन का प्रधान था। इस सगठन के द्वारा होने वाले आ चार चाचकदेव को मिला। उसने वडी सावधानी के साथ इस आने वाले सकट की तैयारी की।

चाचकदेव मुलतान के राजा के साथ युद्ध करने के लिए अपने साथ सत्रह और चौदह हजार पैदल सेना को लेकर रवाना हुआ और व्यास नदी के पास पहुँ किया। इसके पश्चात् दोनो ओर की सेनाओ का सामना हुआ और युद्ध आरम्भ हो मे मुलतानी फौज की पराजय हुई। वहाँ का राजा युद्ध-क्षेत्र से भाग गया। शिविर मे वहुत-सा युद्ध का सामान लूटा इसके वाद वह मेरोट मे लौट आया।

मुलतान का राजा पराजित होने के वाद शात होकर नही बैठा। वह युद्ध रहा। अपनी शक्तियो को उसने अधिक जोरदार वनाया। जो लोग भट्टी जाति के संगठन उसने फिर किया और दूसरे वर्ष अपनी शक्तिशाली सेना लेकर मुलतान चाचक ने अपनी सेना के साथ चलकर उसके साथ युद्ध आरम्भ किया। इस चावालिस भट्टी और तीन हजार मुलतानी मारे गये। चाचकदेव ने दूसरी वार राजा को पराजित किया और इस विजय से उसके राज्य का विस्तार अधिक हो नगरो पर अधिकर कर लिया और असनीकोट नामक दुर्ग मे अपनी एक सेना अधिकार अपने लडके को सौपा। इसके वाद वह पूगल चला आया।

इसके कुछ दिनो के वाद चाचकदेव ने दूदी के राजा महिपाल पर उसे पराजित किया। वहाँ से लौटकर जैसलमेर मे उसने अपने भाई लखमन से सम्पति वह लूटकर लाया था, उसके द्वारा उसने जैसलमेर मे कई निर्माण के का दिनो मे जंजराज नाम के एक आदमी ने उससे भेट की। आदमी वकरी ओ का काम करता था। वरजाग नाम का एक राठौर लुटेरा उसके यहाँ पहुँच और वकरियो को चुरा ले जाता था। अपने इस विपद के लिए उसने चाचकदेव और अनेक वकरो और भैंसो को उसने उसे भेट मे दिया। जंजराज स्वय नेक प्रसिद्ध व्यावसायिक नगर सातुलमेर पर अधिकार कर लिया था। वरजांग ने मरुभूमि के रहने वालों को भयभीत कर रखा था। रावल चाचकदेव ने जंजराज क

के सिंहासन पर बैठा । प्रधान मन्त्री सालिमसिंह ने राज्य के दूसरे उत्तराधिकारियों का सर्वनाश करके राजकुमार गजसिंह को उत्तराधिकारी घोषित किया था । राज्य के प्रधान मन्त्री का यह कार्य पूर्ण रूप से अनैतिक था । परन्तु उसे सफलता मिली और मूलराज के मरने पर वही गजसिंह—जिसको प्रधान मन्त्री सालिमसिंह सिंहासन पर बिठाना चाहता था —राज्य का शासक बना ।

रावल मूलराज के शासनकाल मे राज्य का सञ्चालक प्रधान मन्त्री था और उस प्रधान मन्त्री ने मूलराज के बाद भी शासन की सत्ता को अपने हाथ मे बनाये रखने के लिये गजसिंह का समर्थन किया । राज्य के दूसरे उत्तराधिकारियो से सालिमसिंह को पहले से ही कोई आशा नही थी और उसने गजसिंह से अपने सम्बन्ध मे पूरी आशाये किस आधार पर रखी थी, इसको स्पष्ट करने के लिए प्राचीन ग्रन्थो मे कोई उल्लेख नही मिलता । लेकिन यह बात सही है कि प्रधान मन्त्री सालिम सिंह ने गजसिंह से जो आशाये की थी, वे पूरे तौर पर पूरी हुई । गजसिंह सालिमसिंह के बल पर राज्य सिंहासन पर बैठा और राज्याधिकार प्राप्त करने के बाद वह सालिमसिंह के हाथो की कठ पुतली बनकर रहा ।

गजसिह की शिक्षा-दीक्षा का कार्य उसकी छोटी आयु से ही सालिमसिंह के हाथ मे रहा था । उसने गजसिह को जिस साँचे मे ढालना चाहा था गजसिंह उसी साँचे मे ढला । पुराने ग्रन्थो मे इस बात के उल्लेख पाये जाते है कि बचपन से ही गजसिंह का सम्पर्क सालिमसिंह के साथ अधिक था । सालिमसिह का पिता मेहता स्वरूपसिंह राज्य का प्रधान मन्त्री था और उस दशा मे गजसिंह के साथ सालिमसिह का सम्पर्क रहना अत्यन्त स्वाभाविक था । शुरू से ही गजसिंह का विश्वास सालिमसिंह ने प्राप्त किया था और उसके जीवन की गति मति को देखकर सालिमसिंह ने पहले से ही सभी प्रकार के अनुमान लगा लिये थे । सिंहासन पर बैठने के पहले तक गजसिंह सालिमसिंह को छोड़कर कदाचित दूसरो को जानता भी न था और उसके सिंहासन पर बैठने के बाद भी सालिमसिंह ने उसकी यही अवस्था कायम रखी । प्रधान मन्त्री ने गजसिंह को उन राज-कर्मचारियो के सम्पर्क मे रात-दिन रखा जो सभी प्रकार सालिमसिंह के पक्षपाती थे और उनके जीवन का प्रधान कार्य यह था कि वे रावल गजसिह से सालिमसिह की खूब प्रशंसा करते रहे । वे राजकर्मचारी इसके लिये प्रधान मन्त्री सालिम सिंह से बराबर पुरस्कृत होते रहते थे ।

रावल मूलराज के समय प्रधान मन्त्री सालिमसिंह को जो अधिकार प्राप्त थे, रावल गजसिंह के समय उनकी अपार वृद्धि हो गयी थी । उसके अधिकारो के सम्बन्ध मे यह कहना अतिशयोक्ति नही है कि प्रधान मन्त्री सालिमसिंह के हाथो मे न केवल राज्य के सब अधिकार थे, बल्कि रावल गजसिंह और उसके परिवार के लोगो को भी सालिमसिह की इच्छा के अनुसार चलना पड़ता था । उस समय जैसलमेर का राजवंश पूर्ण रूप से प्रधान मन्त्री की अधीनता मे जिन्दा रहा था ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ राजस्थान के जितने राज्यो की सन्धियाँ हुई थी, उनमे सबसे पीछे जैसलमेर की संधि हुई । इस देर अबेर का कारण था । वहाँ का प्रधान मन्त्री सालिमसिंह कम्पनी के साथ सधि करने के पक्ष मे न था । उसे भय था कि अङ्गरेजो के साथ इस प्रकार की सधि हो जाने के बाद मेरे अधिकार मारे जायँगे और उस दशा मे मैं अपनी इच्छा के अनुसार इस राज्य मे कुछ न कर सकूँगा । इस भय से उसने बहुत समय तक जैसलमेर की सन्धि को रोकने की कोशिश की । यद्यपि जैसलमेर राज्य की परिस्थितियाँ इतनी खराब हो चुकी थी कि जिनके कारण कम्पनी के साथ उसकी सन्धि बहुत पहले हो जानी चाहिए थी । परन्तु सालिमसिंह ने ऐसा नही होने दिया । उस प्रधान मन्त्री की शक्तियाँ राज्य मे इतनी प्रबल थी कि कोई भी उसके

मुलतान के राजा ने दूत की इन बातो पर विश्वास नही किया। और उसने
चाचक देव अपनी किसी छिपी हुई अभिलाषा को पूरा करने के लिए हमे युद्ध-क्षेत्र मे
है। इस प्रकार की बात अपने मन मे सोचकर उसने चाचक देव के दूत से कहा
राजा के सम्बन्ध मे जो बात कही है मैं उस पर विश्वास नही करता। इसलिए मेरा
कि मैं चाचक देव के साथ युद्ध नही करूँगा।"

दूत ने इस उत्तर को सुन शपथ ग्रहण करते हुए कहा : "राजन आप
विश्वास करना चाहिए। सही बात यह है कि राजा चाचक देव का रोग असाध्य है
मरने की अभिलाषा चाचक देव की नही है। इसलिए अपने सात सौ सैनिको के साथ
देव ने युद्ध मे आने का निर्णय किया है। आप किसी प्रकार का सदेह न करे मैं
करता हूँ, उस पर विश्वास करे।"

मुलतान के राजा ने दूत की बात को स्वीकार कर लिया। उसके बाद दूत
कर चाचकदेव को उसकी स्वीकृत की सूचना दी। उसे सुनकर वह बहुत प्रसन्न
विश्वासी शूरवीरो को सात सौ की सख्या मे लेकर उसने युद्ध मे जाने की तैयारी की
उसने राज्य की व्यवस्था की। सीतावश की रानी से गजसिंह नामक बालक पैदा
चाचकदेव ने उसके ननिहाल भेज दिया। सोढा वश की रानी लीलावती से बरसल,
भीमदेव नाम के तीन बालक पैदा हुए और चौहान वशी की रानी सूरजदेवी से रत्तू
नामी दो बालक पैदा हुए। इन पाँच पुत्रो मे बडे पुत्र बरसल को उसने अपने राज्य
कारी बनाया, खडाल राज्य को छोडकर, तेरावर जिसका प्रधान नगर था, यह
रणधीर को दे दिया। इसके बाद उसने दोनो के मस्तक पर राजतिलक किया और
को अलग-अलग कर दिया। बरसल सत्रह हजार सैनिको की सेना को लेकर अपनी
ओर चला गया।

अपने राज्य को दो लडको मे बाँटकर चाचकदेव सात सौ सैनि-
रवाना हुआ। वहाँ पहुँचकर उसे मालूम हुआ कि मुलतान का रा-
अपनी सेना के साथ मौजूद है। चाचकदेव ने सुख और
का पूजन किया और ससार के माया-मोह से अ-
किया।

इसके थोडी देर के बाद -
ने तुरन्त अपनी सेना को -
कर दिया। उस भय-
सौ वीरो ने अपने -
उसके बाद मुलतान -
देवरावल मे
दूसरा पुत्र कुम्भा पि-
कि मैं मुलतान के राज-
इसके बाद कुम्भ-
के आस-पास चारो तरफ -
पर बैठे हुए रात के अँधकार
अपने घोडे को बाहर बाँधकर -

शक्ति न थी, जहा पर प्रजा पहुँच कर अपना रोना रो सकती और अपने कल्याण के लिए प्रार्थना कर सकती । सालिम सिंह के कठोर अत्याचारो से अब राज्य के निवासियो को किसी भलाई की आशा न रह गयी थी ।

सधि के पश्चात् आरम्भिक दिनो मे प्रधान मत्री सालिम सिंह ने प्रजा के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट करने की कोशिश की । लेकिन उसके इन व्यवहारो का प्रजा पर कोई प्रभाव न पड़ा । लोगो का असतोष इस प्रकार उस पर बढ़ा हुआ था कि उससे बाद मे किसी भलाई की आशा न रखते थे । सालिम सिंह भी प्रजा के इस अविश्वास को जानता था । जब उसने देखा कि लोग मेरा विश्वास नही करते तो वह खुलकर लोगो के साथ अत्याचार करने लगा । इसके पहले उसने प्रजा के साथ सहानुभूति का जो एक दिखावा आरम्भ किया था, उसका भी एक उद्देश्य यह था कि वह राज्य के प्रधान मत्री पद पर अपने बाद अपने उत्तराधिकारी को भी रखना चाहता था । इसी लिए उसने प्रजा के साथ झूठी सहानुभूति आरम्भ की थी और उन्ही दिनो मे उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सामने इस प्रकार का एक प्रस्ताव भी रखा था ।

सालिम सिंह को अपनी उन दोनो चेष्टाओ मे असफल होना पड़ा । प्रजा के अविश्वास मे कोई परिवर्तन न हुआ और अगरेज अधिकारियो के नेत्रो से उसकी सारी चालाकियाँ छिपी न थी । इसलिए असफल हो जाने के बाद सालिम सिंह ने जैसलमेर राज्य मे अपनी भयानकता करना प्रारम्भ की । उन क्रूर और पैशाचिक अत्याचारो ने अँगरेजी दूत को जैसलमेर की राजनीतिक परिस्थितियो पर अपनी सरकार को रिपोर्ट करने के लिए विवश किया ।

अँगरेजी दूत ने सन् १८२१ ईसवी के १७ दिसम्बर को अपनी सरकार से प्रार्थना की "सधि के बाद जैसलमेर मे जो निष्ठुर परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई है, वे हमारी सधि के लिए अपमान जनक है । प्रधान मत्री सालिम सिंह से उनके सम्बन्ध मे प्रार्थनाये की गयी है । परन्तु वे व्यर्थ हो चुकी है । वह अपनी स्वामिभक्ति और दयालुता को ऊँचे स्वर मे वर्णन करता है । परन्तु प्रार्थनाओ के बाद उसने अपनी क्रूरता और पैशाचिकता को पहले की अपेक्षा कई गुना बढा दिया है । उसके अत्याचारो से राज्य की सम्पूर्ण प्रजा मे त्राहि त्राहि मची हुई है । जैसलमेर राज्य की प्रजा के साथ समस्त राजस्थान के राज्यो की सहानुभूति है । जैसलमेर के व्यवसायी, जो पीलीवालो से कर्ज मे रुपये लेकर व्यवसाय करते है, सम्पूर्ण भारत मे फैले हुए है । यह व्यावसायिक श्रेणी—जो पाँच हजार परिवारो मे विभक्त है—विवश होकर राज्य से निर्वासित हो चुकी है । जो बनिए तथा महाजन व्यवसाय के लिए बाहर जाते है, अपने राज्य को लौटकर आने मे घबराते है । राज्य की खेती का व्यवसाय इसलिए नष्ट हो गया कि उसकी रक्षा का राज्य मे कोई प्रबन्ध नही है । राज्य की मालगुजारी कृषको से जबरदस्ती वसूल की जाती है । लोगो का सही अनुमान यह है कि प्रधान मत्री सालिम सिंह ने बीस वर्षो मे दो करोड से अधिक रुपये की सम्पत्ति अपने अधिकारो मे कर ली है और इस सम्पत्ति से दूसरे देशो मे रियासतें खरीदी है । यह अपरिमित सम्पति उसने लूट, अपहरण नीति और भीषण क्रूरता के द्वारा एकत्रित की है । राज्य के सभी अच्छे परिवारो ने कम्पनी की सरकार के पास प्रार्थना पत्र भेजकर माग की है कि हमारे परिवारो को सुरक्षित अवस्था मे इस राज्य से निकालकर बाहर कर दिया जाय ।"

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ राजस्थान के राज्यो की जो सधियाँ हुई थी, उसके अनुसार जब राज्यो मे झगडे पैदा होगे तो कम्पनी की सरकार मध्यस्थ बनकर निर्णय करेगी । इन दिनो मे जैसलमेर की सीमा पर सघर्ष पैदा हुआ और उसके फलस्वरूप युद्ध होने की सम्भावना हो

केहर के जीवन काल मे हो हो चुकी थी। इसलिए इसका इकलौता बेटा भीम वहाँ पर बैठा।
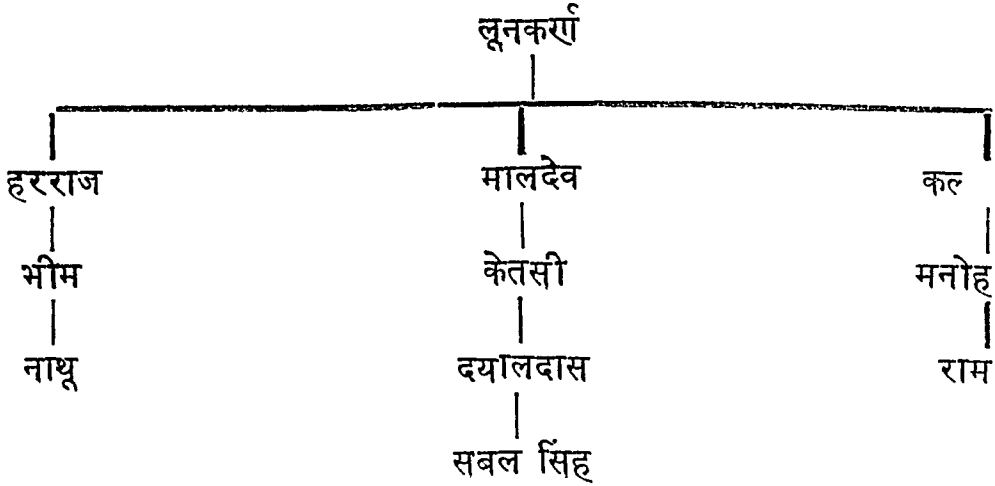
भीम की मृत्यु के पश्चात् उसका बेटा नाथू जैसलमेर के सिहासन पर बैठा। प्राप्त करने के थोडे ही दिनो के बाद नाथू बीकानेर की राजकुमारी के साथ विवा गया और वहाँ से लौटने पर जैसलमेर राज्य के फलोदी नगर मे जब वहाँ ठहरा हु दास के बेटे मनोहर ने राज्य के लोभ से एक स्त्री के द्वारा उसको विष खिलाया, मृत्यु हो गयी। नाथू की इस प्रकार मृत्यु हो जाने पर मनोहरदास वहाँ के सिंह उसने अपने बेटे रामचन्द्र को राज्य का अधिकारी बनाने की बड़ी चेष्टा की। परन्तु न मिली और उसके बाद लूनकर्ण का मझला बेटा मालदेव का प्रपौत्र दयालदास का वहाँ के सिंहासन पर बैठा। रामचन्द्र स्वभाव से जितना ही उपद्रवी और अयोग्य उतना ही योग्य और सुशील था। इसलिए राज्य की प्रजा सबल सिंह के पक्ष मे थ राजा बनाना चाहती थी।

सबल सिह आमेर के राजा का भाञ्जा था। वह राजा आमेर के सरक्ष राजधानी पेशावर राज्य मे एक पदाधिकारी था। किसी समय पहाडो पर रहने लुटेरो ने यवन-सम्राट का खजाना लूटने की चेष्टा की थी। परन्तु साहसी सबल असफल बना दिया था और उसके कारण सम्राट को कुछ भी हानि न हुई थी। उस सबल सिह का बहुत सम्मान करने लगा था। अपने स्वभाव, व्यवहार और दूसरे सबल सिंह ने अन्य राजाओ से भी आदर प्राप्त किया था।

जैसलमेर के सिंहासन पर सबल सिंह के बैठने के जो कारण थे, उनमे एक था और प्रधान कारण था कि उसकी योग्यता, सज्जनता और व्यावहारिकता राजाओ से लेकर यवन सम्राट तक—सभी उससे प्रसन्न और प्रभावित थे। इसलिए बाद जब रामचन्द्र सिंहासन पर बैठ गया था, उस समय यवन बादशाह ने जोधपुर के सिंह को आदेश दिया था कि आप तुरन्त रामचन्द्र को उतार कर सबल सिंह को पर विठावे। राजा जसवन्त सिह ने यही किया। उसने सबल सिंह को जैसलमेर के बिठाने के लिए सेनापति नाहर खाँ के साथ एक सेना भेजी और सबल सिह ने वहाँ बैठकर सेनापति नाहर खाँ को सदा के लिए पोकर्ण का राज्य इनाम मे दे दिया। पोकर्ण जैसलमेर से पृथक होकर जोधपुर राज्य मे शामिल हो गया।

सेनापति नाहर खाँ को जो पोकर्ण दिया गया, उसी से जैसलमेर राज्य का हुआ और उसके पश्चात् लगातार उस राज्य के नगर उससे निकलते गये। भार

यता माँगी। सधि के अनुसार जैसलमेर की रक्षा करने के लिए अंग्रेजों की सेना आयी और उसके फल स्वरूप बीकानेर की सेना अपनी राजधानी लौट गयी। इस प्रकार सालिम सिंह ने बीकानेर के राजा को उकसाकर बारू के सामन्त के प्राण लिए।

रावल मूलराज के बाद गजसिंह जैसलमेर के सिंहासन पर बैठा। उसके बड़े भाइयों ने बीकानेर मे जाकर अपने प्राणो की रक्षा की। मूलराज की तरह गजसिंह भी प्रधान मंत्री सालिम सिंह का खिलौना बनकर रहा। उसकी अयोग्यता और कायरता की बातें पहले लिखी जा चुकी हैं। सालिम सिंह अनेक दूसरे तरीको से गजसिंह को प्रसन्न रखने का उपाय किया करता था। उसकी चेष्टा से मेवाड के राणा ने गजसिंह के साथ अपनी लड़की के विवाह का प्रस्ताव किया और नारियल भेजा। गजसिंह ने उसे स्वीकार कर लिया। मेवाड़ के राजा ने इन्ही दिनो मे अपनी दूसरी लडकी के विवाह के लिए बीकानेर के राजा के पास और तीसरी के विवाह के लिए कृष्णगढ के राजा के पास प्रस्ताव भेजा। ये तीनो विवाह एक साथ तय हो गये और तीनो राज्यो से सेनाये लेकर वर-पक्ष के लोग उदयपुर पहुँच गये। समयानुसार विवाहो के कार्य सम्पन्न हुए। गजसिह मेवाड की राजकुमारी के साथ जैसलमेर मे आकर रहने लगा। उस राजकुमारी से गजसिह के एक लडका पैदा हुआ। इससे गजसिंह की रानी को बहुत सम्मान मिला और सालिम सिंह ने मेवाड की राजकुमारी के साथ गजसिंह का विवाह कराने के कारण अपने आपको बहुत गौरवान्वित समझा।

छप्पनवाँ परिच्छेद

जैसलमेर की अन्य परिस्थितियाँ—वहाँ की प्रकृति, खेती की पैदावार—शिल्प, वाणिज्य और राज्य के कर—कर वसूल करने मे कठोरता— राज्य का पारिवारिक व्यय—भट्टी राजपूत और अफीम।

इस राज्य के पिछले परिच्छेदो मे वहाँ के राजनीतिक इतिहास का वर्णन किया गया है। जैसलमेर राज्य के इतिहास का यह अन्तिम परिच्छेद है। उसमे वहाँ की भौगोलिक प्राकृति, सामाजिक और कुछ दूसरी आवश्यक बाते लिखी गयी हैं, जिनका इस राज्य के इतिहास के साथ-साथ जानना और समझना आवश्यक है।

जैसलमेर राज्य की भूमि नीची-ऊँची है और राज्य की सम्पूर्ण भूमि पन्द्रह हजार वर्ग मील मे है। इस राज्य के ग्रामो और नगरो की सख्या दो सौ पचास के करीब अनुमान की जाती है। कुछ लोगो का कहना है कि उनकी सख्या तीन सौ से कम नही है। सन् १८१५ ईसवी मे जैसलमेर की जितनी जन-सख्या थी, उसकी तालिका इसी परिच्छेद के अन्त मे दी गयी है।

इस राज्य की भूमि कुछ थल अथवा रोही और कुछ ऊजाड एवम् जँगली है। जोधपुर की सीमा पर बसे हुए लोवार से सिन्धु की सीमा से खाडा तक इस राज्य की भूमि पूर्ण रूप से रेतीली और जलहीन है। इसके बीच के भागो मे रेतीले स्तूप पाये जाते है और उसके कुछ भागो मे

सन् १७०२ ईसवी मे अमर सिंह की मृत्यु हो गयी। उसके आठ लडके थे
नाम यशवंत सिह था। शेष सात लडको मे केवल हरीसिह का नाम मिलता है।
एक लडकी थी। उसका विवाह मेवाड के राजकुमर के साथ हुआ।

अमरसिह की मृत्यु के पश्चात् जैसलमेर की अवनति आरम्भ हुई। यहाँ के र
शक्तियो के द्वारा राज्य के गौरव की रक्षा की थी और रावल अमरसिह ने उसको
रखने की चेष्टा की। उसके परलोक यात्रा करने पर राज्य की शक्तियाँ एक
गयी। उस दुर्बलता का बीकानेर के राठौरो ने लाभ उठाया और उन लोगो ने
पूगल, बाडमेर, फलोदी और दूसरे अनेक नगरो को छीनकर बीकानेर राज्य मे मिल

इन्ही दिनो मे शिकारपुर के एक अफगानी दाऊद खाँ ने जैसलमेर के नगर
किया और उन पर अपना अधिकार कर लिया। रावल अमरसिंह के बाद जैसलमे
शक्ति न रह गयी थी, ो आक्रमणकारी शत्रुओ के साथ लडकर राज्य की रक्षा क
लिए थोडे ही दिनो मे जैसलमेर राज्य के कितने ही नगर दूसरे राज्यो मे चले
परिणाम स्वरूप, जैसलमेर राज्य को भयागक रूप से आघात पहुँचा।

अमरसिह के पश्चात् उसका लडका यशवतसिह जैसलमेर के सिहासन पर बै
लडके पैदा हुए (१) जगतसिह (२) ईश्वरीसिह (३) तेजसिंह (४) सरदार सिह औ
सिह। जगतसिह ने आत्म हत्या कर ली थी। उसके तीन लडके पैदा हुये—(१)
बुधसिह और (३) जोरावर सिह। बुधसिह की चेचक की बीमारी मे मृत्यु हो गयी।

यशवन्तसिह की मृत्यु के बाद उसका प्रपौत्र अखयसिह सिंहासन का अधिका
उसके बालक होने के कारण उसके चाचा तेजसिह ने सिंहासन पर हठ पूर्वक अधिक
अखयसिह और जोरावरसिह दोनो भाई-भाई थे। वे तेजसिह से भयभीत होकर
यशवन्त सिंह का भाई हरीसिह दिल्ली के बादशाह के यहाँ रहा करता था। अखयसि
वरसिह ने उसी के यहाँ आश्रय लिया। हरीसिह ने उन दोनो भाइयो के सामने प्र
जैसलमेर जाकर तेजसिह को सिहासन से उतार दूँगा और उसे अधिकारी न रहने द

इसके बाद हरीसिह जैसलमेर गया। वहाँ का एक नियम यह था कि वर्ष
जैसलमेर का राजा घडसीसर सब सामन्तो, परिवार के लोगो और सैनिको के साथ
वहाँ पहुँचकर सरोवर की बालू एक मुट्ठी लेकर बाहर फेकता था उसके बाद राज्य
त्रित लोग उस सरोवर की बालू को बाहर फेकने का कार्य करते थे। राज्य मे इ
एक प्रथा बन गयी थी, जो ल्हास के नाम से प्रसिद्ध थी।

हरीसिह इसी अवसर पर जैसलमेर आया था। उसने सोचा कि घडसीसर
मे तेजसिह पर आक्रमण करने का बडा अच्छा मौका है। उस उत्सव मे नियमानुसा
तेजसिह घडसीसर गया। हरीसिंह अपने अवसर की ताक मे था। अनुकूल समय पर
पर आक्रमण किया। उसके शरीर मे इतने गहरे आघात आ गये कि उसकी मृत्यु हो
इससे हरीसिह के उद्देश्य मे सफलता न मिली।

तेजसिह के मर जाने पर उसका तीन वर्ष का बालक सवाई सिह जैसलमे
पर बैठा। इस अवसर पर अखय सिह ने राज्य के समस्त भट्टी सरदारो के पास
उसमे उसने लिखा :—

"आपको मालूम है, राज्य के सिहासन का नैतिक रूप से अधिकारी मै हूँ।
मेरे साथ अन्याय किया और स्वयं सिहासन पर बैठ गया। जो बालक इस समय

गेहूँ की पैदावार होती है। इस राज्य मे चावल नही पैदा होता और आवश्यकता के लिये राज्य मे सिंध से मगाया जाता है।

राज्य मे जहाँ की मिट्टी मुलायम होती है, वहाँ पर खेती के लिए साधारण हल का प्रयोग किया जाता है। इन हलो मे बैल और ऊँट—दोनों काम करते है। एक हल मे दो बैल अथवा दो ऊंट जोते जाते हैं।

शिल्प-कार्य—इस राज्य मे शिल्प से सम्बन्ध रखने वाला कोई व्यावसायिक कार्य नही होता। थोडे से लोग कपडा बुनने का काम करते हैं और उनसे जो कपडा तैयार होता है, वह बहुत साधारण होता है। कपडा बुनने के लिये उत्तम श्रेणी की रुई राज्य मे बाहर से आती है। राज्य की भेडो के बालो से लोई, कम्बल और कुछ दूसरे कपडे तैयार किये जाते है। यहाँ पर खानारी नाम की खान भी है। उसकी काली मिट्टी से अनेक प्रकार के बर्तन बनाये जाते है और वे बरतन खाने पीने के काम मे आते हैं।

वाणिज्य—राज्य मे उसके निवासियो का कोई विशेष वाणिज्य नही है। भारत के दूसरे नगरो की जो चीजे सिंध की तरफ बिकने के लिए जाती है, उनका रास्ता जैसलमेर हो कर है। हैदराबाद, रोडी, भक्खर, शिकारपुर और कुछ दूसरे स्थानो से वाणिज्य की चीजे इस तरफ आती है। गङ्गा के निकटवर्ती नगरो और पञ्जाब के अनेक स्थानो से बहुत से पदार्थ बिकने के लिये जैसलमेर आते हैं। दुआबे का नील, कोटा और मालवा की अफीम, बीकानेर का गुड और जयपुर की बनी हुई लोहे की चीजे जैसलमेर के रास्ते से शिकारपुर और सिंध के अनेक नगरो मे जाती है। सिन्ध से अफ्रीका के बने हुए हाथी दांत के अनेक पदार्थ रत्न, नारियल अनेक औषधियाँ और चन्दन की लकडी राज्य मे आती है।

मालगुजारी और कर—जैसलमेर राज्य की मालगुजारी पहले चार लाख रुपये से अधिक होती थी। इसमे तीन लाख रुपये के करीब भूमि की मालगुजारी होती थी। प्राचीन काल मे वाणिज्य के शुल्क से राज्य की एक बंधी हुई आमदनी होती थी। परन्तु प्रधान मन्त्री सालिम सिंह के अत्याचारो के कारण उस शुल्क के द्वारा होने वाली आमदनी बिल्कुल नष्ट हो गयी। किसी समय इस शुल्क के द्वारा राज्य को लगभग तीन लाख रुपये की आमदनी होती थी। इस शुल्क को वहाँ पर दान और शुल्क एकत्रित करने वालो को दानी कहा जाता था।

खेती का कर—राज्य के किसान लोग खेती के द्वारा जितना अनाज पैदा करते है उनका पाँचवा भाग और कुछ लोग सातवाँ भाग राजा को कर मे देते है। यह कर राज्य की मालगुजारी के रूप मे वसूल होता है। कुछ ऐसा भी नियम है कि किसान के खेतो मे जो अनाज अधिक पैदा होता है, कृषक उसी अनाज को राज्य की मालगुजारी मे देता है। इन किसानो के इस अनाज को पल्लीवाल ब्राह्मण और बनिया लोग नकद रुपये देकर खरीद लेते है। उसके बाद वह रुपया राज्य के खजाने मे चला जाता है।

धुआ कर—इस करके द्वारा राज्य को एक बंधी हुई आमदनी होती है। यह धुँआँ कर एक प्रकार का रंधन कर अथवा भोजन कर है, जो प्रत्येक परिवार से वसूल किया जाता है। इस कर को थाली कर भी कहा जाता है। थाली का अभिप्राय उस बरतन से है, जिसमे परोस कर भोजन किया जाता है। यह कर प्रत्येक परिवार को देना पडता है। इस कर से राज्य को बीस हजार रुपये की आमदनी होती है, जो एक प्रकार से निश्चित रहती है।

दण्ड कर—इस नाम से भी राज्य मे एक कर वसूल किया जाता है। इसकी वसूलयाबी अनिश्चित रूप से होती है। उसका कोई बँधा हुआ नियम नही है। राजा को आवश्यकता होने

युवराज केवल राज्य-भार स्वीकार करने के लिए तैयार हुआ। रावल मूलरा
कैद कर लिया गया और राज्य का प्रबन्ध रायसिंह के नाम पर होने लगा।
से उतार दिया गया और उसको कैद करने के बाद तीन महीने चार दिन बीत
सामन्तो मे उससे कोई प्रसन्न न था। इसलिए किसी ने उसको कैद से छुडाने की
एक स्त्री किसी प्रकार उसको कैद से छुडाना चाहती थी। यह स्त्री एक षडयन
और वह षडयन्त्रकारी रायसिंह का गुप्त सलाहकार था। उसने माहेचा वंश मे जन
वश राठौरो की एक शाखा है। उस वश का प्रधान सामन्त जिझियाली का अनूप
पत्नी रावल मूलराज का छुटकारा चाहती थी। इसके लिए उसने अपनी सभी
आरम्भ कर दी।

अनूप सिह इस राज्य का प्रधान सामन्त था और मन्त्री स्वरूप सिह तथ
के विरुद्ध जो षडयन्त्र चल रहा था, उसका वह प्रधान नायक था। उसकी पत्नी
के लिए इतनी बडी कोशिश मे थी कि अपने इस उद्देश्य की सफलता के लिए
पति अनूप सिह के लिए भी अनुचित कदम उठाना पडे तो भी उसको कुछ चिंता न
थी कि रायसिह ने पिता को कैद करके अच्छा काम नही किया। इसलिए रायसिह
पर बैठने का अधिकार न मिलना चाहिए।

अनूप सिह राठौर की स्त्री रावल मूलराज को कैद से छुड़ाने के लिए
हो रही थी, इसका स्पष्ट उल्लेख नही मिलता। इसलिए उसका कारण [illegible]
भी मानी जा सकती है। उस स्त्री ने जब कोई दूसरा उपाय मूलराज [illegible]
उसने अपने बेटे जोरावर सिंह को बुलाकर अपनी बात कही। [illegible]
स्वीकार कर लिया। यह जानकर उस स्त्री को बडी प्रसन्नता हुई [illegible]
"बेटा, तुम्हे किसी प्रकार रावल मूलराज को कैद से छुडाना [illegible]
बाधक बने तो तुम उनकी भी परवा न करना और [illegible]
प्रकार सकट देखना तो अपने पिता को भी मार डालना [illegible]
शरीर को लेकर मै चिता मे बैठूगी और सती होकर [illegible]

जोरावर सिंह अपनी माता के मुख से [illegible]
कैद से छुडाने के लिए तैयार हो गया। [illegible]
बारू के सामन्त मेघसिंह को बुलाकर [illegible]
मूलराज के छुटकारे के लिए उनसे [illegible]

मूलराज कारागार में [illegible]
सम्बन्ध मे उसकी धारणा [illegible]
थी, उसका उसे कोई [illegible]
प्रतिज्ञा की थी। इसलिए [illegible]
साथ दिया। ये लोग [illegible]
पर आक्रमण किया। [illegible]
लगे। रावल मूलराज [illegible]
रायसिह पर [illegible]
इस पर जोरावर सिंह [illegible]
राज कारागार [illegible]

जसलमेर राजा के व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक व्यय का ऊपर उल्लेख किया गया है, उसमे वार के नाम से जो रुपये व्यय होते हैं, उनमे राजा के निजी अनुचर शरीर रक्षक खरीदे हुए गुलाम आदि सभी आ जाते हैं। वेतन मे ये लोग खाने-पीने की सामग्री पाते है। इन लोगो की संख्या लगभग एक हजार तक होती है।

जो सामन्त राजधानी मे रह कर राज का काम करते है, उनके सभी खर्चों का प्रबन्ध, जिसमे भोजन भी शामिल है, राज्य को करना पड़ता है और उनका नाम रोजगार सरदार है।

राज्य के मन्त्रियो और अधिकारियो मे कुछ लोगो को भूमि और कुछ लोगो को वाणिज्य शुल्क दिया जाता है। राज्य का व्यय किसी-किसी वर्ष मे वाणिज्य शुल्क से पूरा हो जाता है जिसकी वार्षिक आय लगभग तीन लाख रुपये होती है।

राज्य की जातियाँ—इन दिनो मे भट्टी वंश के जो लोग जैसलमेर मे रहते है, वे सभी हिन्दू हैं। लेकिन फूलरा और गाडा की तरफ रहने वाले भट्टी लोगो ने बहुत पहले इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। राज्य के भट्टी लोग अधिक साहसी और शूरवीर पाये जाते है। चाहे वे राठौरों की तरह शक्तिशाली न हो और कछवाहो की तरह लम्बे चौड़े शरीर न रखते हों, परन्तु शरीर की गठन मे वे इन दोनो वंशो से अच्छे पाये जाते है। राजस्थान के सभी राजपूतो के साथ भट्टी राज-पूतो के वैवाहिक सम्बन्ध होते है।

वस्त्र—भट्टी लोग अधिकतर सफेद और छींट का जामा पहनते है, जो उनकी रानो के नीचे घुटना तक लम्बा होता है, कमर मे कमरबन्द बाँधते हैं। तग मोरी का पाजामा पहनते है। उनके पाजामे ऊपर से घेरदार होते हैं। कुकुम रग की सिर मे पगड़ी बाँधते है। कमर मे प्रत्येक भट्टी एक कृपाण रखता है। उनके साथ ढाल और तलवार रहती है। साधारण श्रेणी का आदमी धोती पह-नता है और पगडी बाँधता है। भट्टी लोगो की स्त्रियाँ आमतौर पर दस गज लम्बा रेशमी कपड़े का घाँघरा पहनती है और प्राय उसी कपड़े का उनका दुपट्टा होता है। उनकी स्त्रियो मे हाथी दाँतकी चूडियाँ पहनने का अधिक रिवाज है। इन चूडियो से उनका पूरा हाथ ढका रहता है। एक जोडा चूडी का मूल्य सोलह रुपये से लेकर पैंतीस रुपये तक होता है। भट्टी स्त्रियाँ हाथो मे चाँदी के कडे भी पहनती है। नीच जाति की स्त्रियाँ दूसरो के घरो पर काम करती है और वे खेती के कामो मे भी बडा परिश्रम करती है।

अफीम—दूसरे राजपूतो की तरह भट्टी राजपूत भी अफीम खाते हैं। अफीम को शरबत की तरह पीते है और उसके बाद तम्बाकू खाते है। अफीम खाने के बाद वे प्रायः नशे मे बेहोश हो जाते हैं।

पल्लीवाल ब्राह्मण—जैसलमेर मे पल्लीवाल ब्राह्मण रहते है और उनकी सख्या भट्टी लोगो के प्रायः बराबर पायी जाती है। पल्लीवाल ब्राह्मण आमतौर पर धनिक होते है। राठौरो के द्वारा मारवाड की प्रतिष्ठा के पहले इन पल्लीवाल ब्राह्मणो के पूर्वज पाली अथवा पल्ली नामक स्थान पर रहा करते थे। बारहवी शताब्दी मे कन्नौज से निकलकर सिया जी ने मारवाड मे पल्ली लोगो को पराजित किया था। परन्तु उसने इनका विनाश नही किया था। उसके बाद एक मुस्लिम बादशाह ने पल्ली पर आक्रमण किया और जीतकर उसने पल्ली वालो से कर मांगा। पल्लीवालो ने पराजित होने के बाद भी कर देने से इनकार किया और कहा कि हम लोग ब्राह्मण है। आज तक किसी बादशाह और राजा ने हम लोगो से कर नही लिया।

मत्री स्वरूप सिह रायसिह के द्वारा मारा गया था। इसलिए मूलराज ने प्रथा के अनुसार उसके बेटे सालिम सिंह को मत्री बनाया। स्वरूप सिह के म सालिम सिंह की आयु ग्यारः वर्ष की थी। उस छोटी अवस्था मे ही सालिम सि प्रतिहिंसा की भावना पैदा हो गयी थी। जैसलमेर राज्य मे जो लोग उसके पिता सालिमसिह उनके और उनके परिवार के लोगो के साथ कटु व्यवहार कर रहा थ और स्वभाव देखने मे प्रिय मालूम होता था। परन्तु हृदय उसका बहुत कठोर थ कारण राज्य मे उसे सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। परन्तु वह लोगो के साथ करना चाहता था, जिससे लोग उसको असम्मान की दृष्टि से देखते।

अपने पिता की तरह सालिम सिंह भी जैन धर्मावलम्बी था। लेकिन क्रूरता पर जैनधर्म का कोई प्रभाव न पडा था। जैनधर्म के अनुसार रात्रि के अच्छा है परन्तु पतिगो और दूसरे कीडो के जलने के डर से दीपक जलाना ध सालिम सिंह उस धर्म के इस प्रकार के सिद्धान्तो को मानता था। परन्तु मनुष्य के क्रूर व्यवहार करके उसको दुख तथा पीडा पहुँचाने मे कभी सकोच न होता था।

सालिम सिह जन्म से जैन धर्मावलम्बी था। परन्तु उसके कार्य बिल्कुल र जैसलमेर राज्य मे बाहरी जातियो के आक्रयरण से भट्टी लोगो का उतना जितना सर्वनाश सालिम सिह के थोडे दिनो के मन्त्रित्व मे इस राज्य के लोगो का हु निर्वाचन के समय जो सामन्त उसके साथ राज्य छोडकर चले गये थे, वे लौटकर मे आ गये।

इन्ही दिनो मे मारवाड के राजा विजय सिंह की मृत्यु हुई और उसके स्थ सिहासन पर बैठा। अभिषेक के दिनो जैसलमेर के रावल मूलराज ने अपने य बनाकर मन्त्री सालिम सिंह को वहाँ भेजा। सालिम सिह मारवाड के अभिषेक से जैसलमेर आ रहा था, मार्ग मे राज्य के सामन्तो ने उसे पकड कर कैद कर लि मार डालने की चेष्टा की। उस समय घबराकर सालिम सिंह रो उठा और उस जोरावर सिह के चरणो पर रख कर अपने प्राणो की भिक्षा माँगी। इस अवस्था ने उसको छोड दिया। जिस स्त्री ने कारागार से मूलराज को निकालने के लिए अप का प्रयोग किया था, उसी के बेटे जोरावर सिह ने इस समय सालिम सिह के प्राणो जिस जोरावर सिह ने अपनी सेना के साथ आक्रमण करके मूलराज को कारागार और फिर उसे सिहासन पर बिठाया था, उसी मूलराज के मत्री सालिम सिह ने इन जानते हुए भी, मत्री-पद पाने के बाद जोरावर सिंह के साथ भयानक अन्याय सामन्त राज्य से निर्वासित किये थे, उनके साथ जोरावर सिह को भी राज्य से गया। जिस सालिम सिंह ने जोरावर सिंह के साथ इस प्रकार के अत्याचार किये सिह के प्राणो की रक्षा करने वाला एक मात्र जोरावर सिह था। यदि उस समय होता तो मारवाड के अभिषेक से लौटने के बाद मार्ग मे जैसलमेर के सामन्तो ने मार डाला होता।

सालिम सिंह की यह घटना उस समय की है, जब जैसलमेर के निर्वासित से बाहर थे। सालिम सिंह ने छुटकारा प्राप्त करके निर्वासित सामन्तो को उनकी परन्तु राज दरबार मे वे सामन्त अपने पूर्व के अधिकारो से अब भी वचित बने रहे।

जैसलमेर-राज्य की जन-संख्या की तालिका

नगर	शासन	घर	मनुष्य संख्या	विशेष विवरण
जैसलमेर	राजधानी	७०००	३५०००	
वीकमपुर	सामन्त शासन	५००	२०००	२४ ग्राम पृथक निवासी
सेरूरो	,,	३००	१२००	केलण भट्टी रायलोत
नचना	,,	४००	१६००	सामन्त
कटोरी	,,	३००	१२००	
कवाह	,,	३००	१२००	
कोलदरू	,,	२००	८००	
सत्तोह	,,	३००	१२००	
जिझियाली	,,	३००	१२००	अधिकारी प्रधान सामन्त
देवीकोट	राजा का शासन	२००	८००	
भाप	,,	२००	८००	
वलाना	सामन्त शासन	१५०	६००	
सतियाहसोह	,,	१००	४००	
वारू	,,	२००	८००	निवासी मानदेवोत
चान	,,	२००	८००	
लोहरकी	,,	१५०	६००	रावलोत वस
नानतल्लो	,,	१५०	६००	,,
लहती	,,	३००	१२००	,,
डाँगरी	,,	१५०	६००	,,
बीजोराय	राज्य शासन	२००	८००	
मुन्दाई	,,	२००	८००	
रामगढ	,,	२००	८००	
बरसलपुर	सामन्त शासन	२००	८००	
गिराजसर	,,	१५०	६००	
			५६४००	
२२५ गाँवो की			१८ ००	
		जोड—	७४४००	

वह स्त्री उत्सुकता के साथ सुन रही थी। सालिम सिह ने गम्भीर होक
"मै जैसा चाहता हूँ, तुम्हे भी उतना ही उसके लिए तैयार होना चाहिए। सा
लेने की आवश्यकता है। इसके लिए मै तुम्हे एक चीज दूंगा और तुम्हे उसका
तुम इस चीज को जोरावर सिह के भोजन मे मिला देना। उसे खाकर जोरावर
बस तुम्हारा रास्ता साफ हो जायगा। उसके बाद मै तुम्हारे पति खेतसी को
सामन्त बना दूंगा।"

अपने पति के गौरव को बढाने के लिए उस स्त्री ने भोजन मे सालिम
विष मिला कर जोरावर सिह को खिला दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी।
जिझियाली का प्रधान सामन्त बना दिया गया।

मन्त्री सालिम सिह के सामने जो सकट और भय था जोरावर सिह
खत्म हो गया। अब उसको किसी प्रकार की चिंता न रह गयी। इसलिए उ
एक मात्र आधिपत्य आरम्भ किया। उसके कार्यो से राज्य का कोई सामन्त
रावल मूलराज के चुप रहने के कारण कोई उसका विरोध न करता था। स
हुए अत्याचारो को देख कर जिन सामन्तो से नही रहा गया और उन्हो
उठाने का साहस किया, सालिम सिह ने सहज ही अपनी कूटनीति के द्वारा
बिदा कर दिया। इस प्रकार जो सामन्त मारे गये, उनमे बारू और डॉग
प्रमुख थे।

जोरावर सिह के मर जाने के बाद राज्य मे खेतसी को प्रधान सामन्त का
पद का वह अधिकारी कैसे हुआ इस बात को वह स्वय कुछ न जानता था। य
न था कि जोरावर सिह को विष दिया गया। परन्तु वह विप किसने दिया और
था यह किसी को जाहिर न हुआ। जोरावर सिह के स्थान पर खेतसी प्रधान
था। इसलिए बडे भाई जोरावर सिह के कर्त्तव्यो का उत्तरायित्व खेतसी पर आ
पालन के कारण ही सालिम सिह के साथ खेतसी का विवाद हो गया।

जोरावर सिंह के मर जाने के बाद रायसिह के पुत्र की अब बात कह
गया था। उन दिनो बालको के प्राणो की रक्षा का भार जोरावर सिह ने अ
उसे मन्त्री सालिम सिह मेहता ने ससार से बिदा कर दिया। इसलिए सालि
से निर्भीक हो गया। उसने मूलराज के बाद राज्य का उत्तराधिकारी अभ
उसके लडके मानसिह के बेटे गजसिह को बनाने की चेष्टा की और जिस
प्रस्ताव राज दरबार मे उपस्थित किया गया, उस समय खेतसी चुपचाप बैठा र
नियमो के अनुसार मत्री सालिम सिह का यह प्रस्ताव पूर्ण रूप से अनैतिक था।
प्रस्ताव का उसे समर्थन न मिल सका। इस प्रकार के अनैतिक कार्यो मे प्रजा क
सामिल सिंह सदेह करने लगा। इस दशा मे गजसिंह को उत्तराधिकारी बनाने के
रह गया था कि रायसिह के दोनो बालको को मारकर इस ससार से बिदा कर
लिए वह प्रयत्न करने लगा।

सालिम सिह ससार के नेत्रो मे जैन धर्मावलम्वी था। उसने उस धर्म
था, जिसके अनुसार बिना जाने एक चीटी और पतिंगे के मर जाने से भी भया
सालिम सिंह स्वरूप सिंह का बेटा था और जैन धर्मावलम्वी होने के बाद
कोई पाप और अपराध बाकी न रखा था। सालिम सिंह उसी स्वरूप सिह

है। परन्तु यहाँ की मरुभूमि की जानकारी के सम्बन्ध मे उसका एक विशेष स्थान होगा, मै इस बात पर विश्वास करता हूँ। निरीक्षण और अध्ययन के बाद मैने जो परिणाम निकाले है उनका समर्थन अँगरेजी राजदूत मिस्टर एलफिन्स्टन के उन कार्यो के द्वारा होता है जो उसने काबुल जाते हुए अपनी प्राप्त सामग्री के आधार पर किया है। इस समर्थन से मुझे सतोष मिला है।

यहाँ पर मुझे यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक मालूम होता है कि मरुभूमि के वर्णन मे कुछ बाते ऐसी भी आ गयी है जिनका वर्णन बीकानेर के इतिहास मे किया जा चुका है। मरुभूमि होने के कारण उस राज्य के इतिहास मे उनका उल्लेख करना भी आवश्यक था और वह उल्लेख आवयश्कतानुसार यहाँ पर भी जरूरी हो गया है। यद्यपि ऐसे स्थलो के वर्णन मे मैने बडी साव-धानी से काम लिया है।

मरुभूमि मरुस्थली का दूसरा नाम है। उसका अर्थ यह है कि वह भूमि अथवा स्थल जो बालुवामय हो। थल अथवा स्थल प्राय सूखी भूमि को कहते है। काबुल का थल सीमा का थल और खेती करने के योग्य थल इस प्रकार आमतौर से थल अथवा स्थल के प्रयोग होते है। प्राय. कहा जाता है जल और स्थल अर्थात् पानी और सूखी जमीन। बाघ के बदन पर जिस प्रकार लम्बी काली धारियाँ होती है उसी प्रकार मरुभूमि मे रेत की पक्तियाँ-सी बन जाती है और इस प्रकार की विस्तृत भूमि पर अगणित गावो और नगरो की आबादी दिखाई देती है। मरुभूमि के उत्तर मे एक लम्बा-चोडा मैदान है। दक्षिण मे नमक का एक विशाल दलदल रिन और कोलीबरी है। पूर्व मे अर्वली और पश्चिम मे सिधु नदी की घाटी है। पूर्व और पश्चिम की सीमाये अधिक विशेषता रखती है। क्योकि पूर्व मे अर्वली पर्वत ने रेत के मार्ग को न रोका होता तो मध्य भारत भी बालुकामय होता। अर्वली पर्वत की दीर्घाकार श्रेणी समुद्र के किनारे से दिल्ली तक चली गयी है। फिर भी बीच मे जहाँ कही रास्ता मिल गया है वही से रेतीली भूमि प्रवेश कर आगे बढ गयी है और पर्वत को पार कर उसने अपना एक स्थल बना लिया है। जिन लोगो ने टोंक के पास बुनास को पार किया है जहाँ पर कोसो की दूरी मे केवल रेत ही रेत दिखायी देती है उनकी समझ मे यह आसानी से आ जायगा।

मरुभूमि का विस्तार समुद्र की तरह अनन्त प्रतीत होता है जिसके ओर-छोर का कही पता नही चलता। हैदराबाद से ओच तक उत्तर की तरफ चलने पर बहुत दूर तक पूर्व की ओर बालू के विशाल दुर्ग दिखाई देते है, जिनकी ऊँचाई नदी की सतह से लगभग दो सौ फीट तक है। बालू के इन ऊँचे और विस्तृत दुर्गों को देखकर मनुष्य अनेक प्रकार की बाते सोच सकता है।

प्राचीन काल मे प्रमार वश के राजा इस मरुभूमि मे शासन करते थे इसका समर्थन करते हुए भट्ट ग्रन्थो मे नौ दुर्गो का उल्लेख किया गया है। पूगल का दुर्ग उत्तर मे है। मन्दोर मरुभूमि के बीच मे है। आबू, खेरालू और परकर दक्षिण मे। चोटन, अमर कोट, आरोर और लुद्रवा पश्चिम मे है। मरुभूमि के इन नौ दुर्गो के अधिकारियो राजा पर आक्रमण करने की शक्ति किसी मे न थी। वहाँ की प्राचीन ऐतिहासिक बातो की जानकारी किसी को नही है। जिन ग्रन्थो मे उसके उल्लेख पाये जाते है, उनमे भी इस प्रकार की बातो का एक बहुत बडा अभाव मिलता है। वहाँ के बडे बडे नगरो के नामो को भी लोग नही जानते। लुद्रवा और आरोर के प्राचीन नगरो के अस्तित्व अब तक मौजूद है। फिर भी उनके नामो को वही लोग मुस्किल से जानते है, जिन्होने मरुभूमि की यात्रा की है और वहाँ की भौगोलिक जानकारी प्राप्त की है। चोटन और खेरालू आदि नगरो के नाम भी नक्शो मे नही पाये जाते। भट्ट ग्रन्थो के छन्दो

रामस्थान के जिन राज्यो मे मन्त्रियो का आधिपत्य रहा और राजा सिहासन पर बैठे रहे, उन राजाओ को अधिक समय तक शासन करने का कोटा राज्य के भूतपूर्व राजा ने भी अपने सिहासन पर बैठकर पचास वर्ष से अधि था और रावल मूल राज ने जैसलमेर मे अपने शासन के अट्ठावन वर्ष व्यतीत किये शासन चालीस वर्ष तक रहा था। रावल मूल राजा के पितामह जसवत सिह जैसलमेर के राज्य का विस्तार हुआ था। उत्तर की सीमा गाडा नदी तक और तक बढी हुई थी। इसके पहले राज्य की इस सीमा का और भी अधिक विस्तार के दक्षिण मे धात राज्य है। पूर्वी सीमा के फलोदी, पोकण और अनेक दूसरे न मे चले गये है। भावलपुर राज्य आजकल एक स्वतत्र राज्य बन गया है। परन्तु जैसलमेर की राजधानी का एक भाग था।

इस राज्य की राजनीतिक परिस्थितियाँ जितनी ही निर्बल होती गयी और पर पैठे हुए राजाओ ने जितनी ही अपनी अयोग्यता और कायरता का [illegible] ही ग्राम और नगर उनके अधिकारो से निकलकर दूसरे [illegible] दुरवस्था का एकमात्र कारण यह था कि पतन से इन दिनो [illegible] बैठे, वे अयोग्य थे और उनमे शासन की शक्तियो का पूर्ण [illegible]

स्थान है, जिनमे से कितने ही ४० मील तक की चौडाई मे हैं। वहाँ पर न तो किसी मनुष्य के दर्शन होते है और न वहाँ पर खाने-पीने की कोई चीज ही मिलती है। जैसलमेर मे मारवाड पहुँचकर और लूनी को पार न करके जालौर तथा सेवाची का वर्णन करेगे। परकार और वीरवाह चौहान राजओ की अधीनता मे है। राना उन राजाओ की उपाधि है। जिस पहाडी पर जैसलमेर बसा हुआ है, उसका नाम त्रिकूट है। इस पर्वत के पश्चिम की ओर सिंधु नदी के नीले जल पर दृष्टि पात करने से हैदराबाद से ओच तक रेतीली पहाडियो पर कही-कही आसानी के साथ जल मिल सकता है। वहाँ छोटे-छोटे गाँवो की आबादी मिलती है। नागौरी ने पाच सौ मील लम्बे और एक सौ मील के चौडे सम्पूर्ण राज्य मे झोपडे वाले छोटे-छोटे गाँव हैं। उनमे मरु भूमि को जोतकर उसमे खेती करते है। वहाँ गडेरिये अपनी भेडो को चराया करते हैं और उपजाऊ भूमि पर ऊँटो की एक लम्बी श्रेणी मिलती है। उसे इस देश मे काफिला कहा जाता। इन ऊँटो पर बहुत से लोग मिलकर चलते है, इसलिए कि उनको रास्ते मे लुटेरो का भय रहता है। जो लोग इस प्रकार रवाना होते है, उनको खाने पीने का बडा कष्ट रहता है। यदि उनको दो दिनो मे एक बार भी खाने पीने के लिए किसी प्रकार की सामग्री और खाने के लिए स्वादहीन झरनो का जल मिल जाता है तो वे लोग अपना बडा सौभाग्य समझते हैं और भगवान को धन्यवाद देते है।

सम्वत् ११०० सन् १०४४ ईसवी मे दूसोज जैसलमेर के राजसिंहासन पर बैठा था। वह हमीर का समकालीन था। कग्गर नदी वलूक से निकलकर हाँसी हिसार मे प्रवाहित होती है। वह किसी समय भटनेर की दीवारो के नीचे बहती थी। भटनेर के बाद कग्गर नदी रङ्गमहल, बुल्लर, और फूदल के समतल मैदानो मे होकर बहती हुई आगे जिस तरफ जाती है, उसके सम्बन्ध मे दो प्रकार के मत हे। किसी का कहना है कि वह बहती हुई ओच के नीचे चली गयी है। लेकिन अबूबरकत के अनुसार—जिसे ,सन् १८०६ ईसवी मे अनुसधान के लिए भेजा था—और जिसने शाहगढ के समीप नदी के सूखे मार्ग को जो सगर कहलाता है, पार किया था—जैसलमेर कथनानुसार वह और रोरी भक्खर के बीच मे प्रवाहित होती है। ऐसा मालूम होता है कि सगर नदी कग्गर नदी मे मिल गयी और उसके बाद सगर का नाम मिटकर केवल कग्गर नाम प्रचलित हो गया। छोटी नदियाँ जब बडी नदियो से मिल जाती है तो उन सब की यही दशा होती है।

मरुभूमि मे लूनी नदी की विशेषता है। इसी नदी को खारी नदी भी कहते है। वह अपनी अनेक सहायक नदियो के साथ अर्वली पर्वल की झीलो और झरनो से निकलती है। मारवाड मे उपजाऊ भूमि और मरुभूमि के बीच मे लूनी नदी प्रवाहित होती है। मारवाड के आगे वह चौहानो के थल विभाग की तरफ बढती है और चौहान वश के राजपूतो का विभाजन करती है। इस नदी के द्वारा उनकी सीमा का निर्माण होता है। उसका पूर्वी भाग शिववाह नामक राज्य के नाम से है और पश्चिमी भाग पारकर के नाम से। उसके दक्षिण तरफ अनेक प्रकार के प्राकृतिक दृश्य दिखाई देते है। नमक का लम्बा चौडा दलदल—जो चौडाई मे डेढ सौ मील से अधिक है—विशेष तौर पर लूनी नदी के द्वारा बना है।

यहा पर थल और रो शब्दो से पाठको को परिचित हो जाना चाहिये। इसलिए कि दोनो शब्दो के प्रयोग यहाँ पर कई बार किये है। उनकी जानकारी न होने से समझने मे बडी कठि-नाई पैदा होगी।' थल सूखी भूमि का उपयोगी भाग कहलाता है। उसमे विस्तृत मैदान भी सम्मि-

विरुद्ध वहा पर कुछ कर न सकता था । रावल मूलराज ने स्वय उसको शासन क
थी और वह चुप होकर बैठ रहा ।

प्रधान मन्त्री सालिम सिह की यह चेष्टा बहुत दिनो तक न चल सकी ।
थे । पहला कारण यह था कि जैसलमेर की राजनीतिक परिस्थितियाँ दिन-पर-f
जाती थी और दूसरा कारण यह था कि राजस्थान मे जैसलमेर को छोडकर और
गया था, जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ सधि न की हो । इन दोनो का
को भी अग्रेजो के साथ सधि करनी पडी और उसका कार्य १२ दिसम्बर सन्
सम्पन्न हो गया । इस सधि पत्र के हो जाने और उसके कार्यान्वित होने के वा
जो भय था और जिसके कारण उसने अब तक इस सधि को रोक रखा था, वह
गया । बल्कि कुछ ऐसी परिस्थितियाँ भी सधि के द्वारा राज्य मे पैदा हुई, जो
सिह के पक्ष मे थी ।

इस सधि के पहले सालिम सिह को बराबर भय बना रहता था कि ग
जैसलमेर छोडकर बीकानेर चले गये है, वे सगठित होकर किसी समय इस
कर सकते है और वह समय मेरे लिए बडा भयानक होगा । अग्रेजो के साथ जै.
जाने के बाद सालिम सिह के मन का यह भ्रम दूर हो गया । क्योकि सधि मे ए
की राज्य पर बाहर से किसी के आक्रमण करने पर अग्रेजी सेना जैसलमेर की
प्रधान मत्री को इसके सम्बन्ध मे एक बडी आशका रहा करती थी, सधि के ब
और सालिम सिह निर्भीकता के साथ अपना शासन करता रहा । अब उ
बाधा न थी ।

इस सधि के पहले जैसलमेर राज्य की जो परिस्थिति चल रही थी,
कोई अनुमान नही हो सकता था कि यह राज्य कब तक अपनी स्वाधीनता की
अगरेजो की इस सधि के बाद राज्य की शक्तियो मे तुरन्त कोई निर्माण नही हु
कमजोरियो के कारण आशकाये पैदा हो रही थी, अब उनका कोई भय न र
किसी से छिपी न थी कि जैसलमेर का शासन बहुत दिनो से शिथिल पड गया
सीमा इतनी कम हो गयी थी कि अब उसमे उसकी केवल राजधानी दिखायी दे
समस्त उत्तरी ग्रामो और नगरो को लेकर भावलपुर का राज्य बन गया था अ
और मारवाड के राज्य लगातार जैसलमेर के नगरो पर कब्जा करते चले जा रहे

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ सधि हो जाने के बाद जैसलमेर के इस
गया । जो पडोसी राज्य उसके नगरो और ग्रामो पर लगातार अधिकार कर
हो गये । यदि इस प्रकार की सधि न हुई होती तो अपनी रक्षा करने के लिए
शक्ति न रह गयी थी । एक समय वह था, जब जैसलमेर का व्यवसाय बढ
नदी के किनारे बसे हुए नगरो तक पहुँच गया था । परन्तु आपसी फूट, ईर्षा अ
सिहासन पर बैठने वालो की अयोग्यता राज्य का यह सारा वैभव थोडे f
हो गया और राज्य पतन की उस दुरवस्था मे पहुँच गया, जब उसकी स्वार्थ न
देने लगी ।

कम्पनी के इस सधि के बाद प्रधान मंत्री सालिम सिह के सभी भय
मे अब उसका अत्याचार फिर से बढने लगा । राज्य की सम्पूर्ण प्रजा उसको क
उसके अत्याचारो को सहन करने के सिवा उसके अधिकार मे और कुछ न था ।

तीन सौ से चार सौ फीट तक है। दुर्ग की बुर्जों पर तोपें रखी हुई हैं। इस दुर्ग के चार विशाल द्वार हैं। नगर की तरफ का द्वार सूरजमेल कहलाता है। उत्तर-पश्चिम का द्वार बालपोल कहलाता है। वहाँ पर जैनियो के गुरु पारसनाथ का मन्दिर है। दुर्ग के भीतर बहुत-से कुएँ और दो बडी-बडी बावडी है। उत्तर की पहाडी नदियो को बाँधकर छोटी-सी झील बनायी गयी है। परन्तु उसका एकत्रित जल मुश्किल मे छै महीने तक काम देता है। नगर की आबादी मे तीन हजार सत्रह घर है। यह नगर के दुर्ग के उत्तर और पूर्व की ओर बसा हुआ है। पूर्व की तरफ लगभग एक मील की लम्बाई मे सुक्री नाम की नदी प्रवाहित होती है। रक्षा के लिए इस नगर के चारो तरफ मजबूत दीवार बनी हुई है और एक दुर्ग है, जिस पर तोपे रखी रहती है। नगर मे अनेक जातियो के लोग रहते है। आश्चर्य की बात यह है कि इस बडी आबादी मे राजपूतो के केवल पाँच परिवार रहते है। सन् १८१३ मे मेरी एक समिति ने यहाँ की जो मनुष्य गणना की थी वह इस प्रकार है—

जाति	घरों की संख्या
माली	१४०
तेली	१००
कुम्हार	६०
ठठेरा	३०
धोबी	२०
व्यवसायी	११५६
मुसलमान	६३६
खटिक	२०
नाई	१६
कुलाल	२०
जुलाहा	१००
रेशम बनाने वाले जुलाहा	१५
जैन पुरोहित	२
ब्राह्मण	१००
गूजर	४०
राजपूत	५
भोजक	२०
मीना	६०
भील	१५
हलवाई	८
लोहार, बढई	१४
मनिहार	४

लूनी और सुक्री के बीच का भाग सेवाञ्ची कहलाता है। जिस पहाडी पर जालौर बसा हुआ है, उसी पहाडी की श्रेणी मे एक शिखर पर सिवाना नाम का एक दुर्ग बना है। वही पर इस राज्य की राजधानी है। इसके सम्बन्ध मे वर्णन करने के लिए कोई नयी सामग्री हमारे सामने नही

गयी। उसमे ईस्ट इण्डिया कम्पनी को मध्यस्थ बनना पड़ा। यह संघर्ष वारू लोगों से सम्बन्ध रखता था।

मालदेवोत, केलन वरसंग पोहर और तेजमालोत भट्टी वंश के हैं। परन्तु अपनाने के कारण अकुज्जाक और पिण्डारियों की तरह वे भी लुटेरो मे प्रसिद्ध राज्य खारीपट्टा के नजदीक है। बीकानेर के राठौरों ने भट्टी लोगों से खारी पट्टा अधिकार मे कर लिया था। राठौरो के साथ भट्टी लोगो के झगड़े का कारण यह भट्टीवश के बहुत-से स्थानो पर अधिकार कर लिया था। इस प्रकार की घटनाये हो चुकी थी। राठौरो ने वारू राज्य पर आक्रमण करके भट्टी लोगो का एक तरफ नगरों और ग्रामो को लूटकर बुरी तरह विध्वंश किया और वहाँ के निवासियो के के अत्याचार किये। भट्टीवश के जो लोग उस सर्वनाश से बच गये थे, वे मरूभू स्थान पर जाकर रहने लगे।

इस घटना के बाद धीरे-धीरे बहुत दिन बीत गये। भट्टीवंश के जो लोग बच के उस स्थान पर—जहाँ पर जाकर वे रहने लगे थे—उसके वंश की वृद्धि हुई। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सन्धि हो जाने पर वे भट्टी लोग अपने प्राचीन नगरों मे प्रधान मन्त्री सालिम सिंह को जब यह मालूम हुआ तो वह उन भट्टी लोगो पर और मालदेवोत लोगो को विध्वस करने के लिए उसने राठौरो से परामर्श किया। जैसलमेर के जब अनेक सामन्तो का नाश किया, तो उस समय वह एक प्रकार से था और उसने वारू के सामन्त की भी हत्या करायी थी। वारू का सामन्त रा रायसिंह का पक्षपाती था और समय-समय पर उसने रायसिंह की सहायता भी इस अपराध से जलकर सालिम सिंह ने उसको भी मरवा डाला। प्रधान मन्त्री की राज्य के प्रत्येक व्यक्ति के साथ पैदा हो गयी थी।

सालिम सिंह वारू के सर्वनाश की बात बराबर सोचा करता था। इसके मिल गया। पेशवा और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के युद्ध के दिनों मे पेशवा का एक खरीदने के लिए जैसलमेर आया और चार सौ ऊँट खरीद कर जिस समय वह नेर राज्य मे पहुँचा, उस समय वारू राज्य के सरदार ने अपने सैनिको के साथ पर आक्रमण किया और उसके ऊँट लेकर अपने अधिकार मे कर लिया।

इस समाचार को सुनकर बीकानेर के राजा ने मालदेवोत लोगो के विरुद्ध भेजी। इस अवसर पर सालिम सिंह ने बीका.र के राजा की मालदेवोत लोगों के का काम किया था। अन्यथा बीकानेर के राजा ने उसके विरुद्ध अपनी सेना न भेजी सिंह अत्यन्त धूर्त था। उसने छिपे तौर पर बीकानेर के राजा को मालदेवोत लोग करने के लिए तैयार किया। परन्तु जाहिरा तौर पर इस झगडे को रोकने की वह रहा। सालिम सिंह ने इस अवसर पर अपनी कूटनीति का प्रयोग किया। वह देखना चाहता था, उसका उलटा हुआ। बीकानेर की सेना ने मालदेवोत लोगो के न मे पहुँच कर भयानक उत्पात किया। वहाँ के सामन्तों को मार डाला और उसके ग्रा बन्द करवा किये।

इसके बाद बीकानेर की सेना बीरमपुर की तरफ रवाना हुई और जैसल स्थानो पर अत्याचार किया। इस समाचार को पाकर सालिम सिंह ने कम्पनी के

अट्ठावनवाँ परिच्छेद

चौहान राज्य-चौहानो की उत्पत्ति—प्राचीन काल मे चौहान राज्य का विस्तार—उसके प्रसिद्ध नगर—चौहान-राज्य की आकृति—पानी और पैदावार—निवासी—रहने वालों के लुटेरा होने का कारण—जल का कष्ट—अमरकोट—सघर्ष और परिणाम—बीमारियो—उनका प्रधान कारण—दुर्भिक्ष और उसके प्रति लोगो का विश्वास ।

चौहान-राज्य राजस्थान के दूरवर्ती एक कोने पर बसा हुआ है । मरुभूमि की अन्यान्य रियासतो मे चौहानो का राज्य अनेक अच्छाइयो और विशाल होने के कारण साम्राज्य मालूम होता है । यह चौहान-राज्य के नाम से प्रसिद्ध है । इसके उत्तर-पूर्व मे मारवाड-राज्य की भूमि है और दक्षिण-पूर्व मे कोलीवाडा है । दक्षिण मे नमक की झील है और पश्चिमी सीमा पर रेगिस्तान है । चौहान-राज्य दो भागो मे विभाजित है । पूर्वी चौहान राज्य वीरवाह के नाम से प्रसिद्ध है और पश्चिमी भाग लूनी नदी की दूसरी तरफ है । मरुभूमि के उन चौहानो को अपनी प्राचीनता का बडा गर्व है और अपने वश की श्रेष्ठता पर वे अभिमान करते हैं । वे अजमेर के मानकराय और बीसल देव को एव दिल्ली के अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज को अपना पूर्वज बतलाते है । लेकिन जितने भी प्राचीन ग्रन्थ हमे प्राप्त हो सके है, उनके आधार पर हम सहज ही यह कह सकते है कि चौहानो का उत्पत्ति सोडा और प्रमार वश के राजपूतो से बाद मे हुई है । क्योंकि सिकन्दर के सिन्धु नदी की तरफ आने के दिनो मे उन व शो के लोग शासन कर रहे थे ।

आठवी शताब्दी से लेकर तेरहवी शताब्दी तक चौहान राज्य अजमेर से सिन्ध की सीमा तक फैला हुआ था । उसकी राजधानियाँ अजमेर, नादोल, जालौर, सिरोही और जूनाचोटन थी । यो तो साधारण तौर पर वे सभी स्वतन्त्रता का जीवन व्यतीत करते थे । परन्तु उनको अजमेर की अधीनता कुछ बातो मे स्वीकार करना पडता था । इसके लिए हमारे पास ऐतिहासिक आधार है । गजनी के महमूद से लेकर अलाउद्दीन द्वितीय और सिकन्दर के समय तक जो मुस्लिम इतिहास लिखे गये हैं, उन सब मे इन चौहान राज्यो के वर्णन पाये जाते है । अपने बारहवें आक्रमण मे मुलतान से अजमेर की तरफ जाते हुए महमूद नादोल के पास से गुजरा था । उसने वहाँ पर लूटमार भी की थी । महमूद के आक्रमण की कथाये अब तक गुनाचाटन के लोगो मे कही जाती है । वहाँ के लोग उन सुरँगो को अब तक जाहिर किया करते है, जिनके द्वारा वहाँ का पहाडी दुर्ग उडाया गया था ।

इतिहास की घटनाये जो हमे जानने को मिलती है, उनमे कितनी ही बाते स्पष्ट नही हो पाती । इसलिए उनका स्पष्टीकरण हमारे लिए कठिन हो जाता है और हमे उन बातो को यो ही छोड देना पडता है । नादोल की लूट और जूनाचोटन मे दुर्ग के पतन के सम्बन्ध मे विस्तार के साथ मे लिखने के लिए हमारे पास सामग्री नही है । लेकिन इतिहास से यह बात साफ मालूम होती है कि अपने अन्तिम आक्रमण मे गजनी के महमूद ने सिन्ध होकर लौटने का इरादा किया था और उस समय सम्पूर्ण सेना के साथ उसके सर्वनाश की परिस्थितियाँ पैदा हो गयी थी । ऐसा मालूम होता है कि जूनाचोटन पर उसके आक्रमण के कारण उसके सामने सँकट पैदा हो गया था ।

जङ्गल है । लोवार से खाडा तक जो राज्य का हिस्सा है, उसने जैसलमेर
विभाजित कर दिया है । यह भूमि उपजाऊ नही है । उसमे कोई भी
उत्तरी दिशा की भूमि भी उजाड है । दक्षिण मे मगरा और रोई नाम के दो छ
उनके दृश्य देखने मे वडे सुहावने मालूम होते है । इन छोटे पर्वतो का रूप
नही है । उसके कुछ स्थानो के दृश्य ऐसे है, जो देखने मे पर्वत नही मालूम
राजधानी के मध्य भाग मे इन पर्वतो की ऊँचाई दो सौ पचास फुट है । उसको
का आभास होता है । भट्टी लोगो की राजधानी पर्वत के बिलकुल नीचे है
सोलह मील तक पर्वत की शाखाये फैली हुई है । एक शाखा जैसलमेर से
पश्चिम की तरफ रामगढ तक चली गयी है और दूसरी पूर्व की तरफ से चल
होती हुई पोकर्ण तक पहुँच गयी है और वहाँ से उत्तर की तरफ फलोदी तक ग
राज्य के अनेक भागो मे पर्वत की शाखाये फैली हुई है । पर्वत के ऊपर रेतीले
गेरु मिट्टी पैदा होती है । जैसलमेर के निवासी अपने पहनने के कपडो को इसी
करते है ।

इस राज्य के पर्वत के ऊपर कोई चीज पैदा नही होती । वहाँ पर कोई
उसके किसी-किसी स्थान पर बट के वृक्ष दिखायी देते है । सम्पूर्ण जैसलमेर
भी नदी नही है जो प्रवाहित होती रहती हो । पर्वत के रेतीले शिखरो से बरसा
पानी की कुछ धाराये निकली है, जिनका पानी राज्य के स्थानो पर एक
तालावो का रूप धारण करता है । उन दिनो के निवासी ऊँचे घेरे बनाकर उ
की कोशिश करते है । अधिक वर्षा होने मे कारण इन छोटे-छोटे तालावो मे
एकत्रित हो जाता है जो साल भर तक लोगो के काम आता है । इस प्रकार के
दसर एक तालाव का नाम है । यह बहुत बडा है और कानोद से मोहन गढ
इस तालाव मे बराबर पानी बना रहता है । बरसात के दिनो मे इसमे इतना
हो जाता है कि उससे एक छोटी-सी नदी निकल कर पूर्व की तरफ तीस म
होती है । इस तालाव से कुछ नमक भी पैदा होता है और उससे राज्य को कुछ
जाता है ।

खेतों की पैदावार—यद्यपि इस राज्य की भूमि रेतीली होने के कारण
इस भूमि से पैदावार की शक्ति का बिल्कुल लोप नही हुआ । राज्य की कुछ
पैदावार के लिए बडी अच्छी समझी जाती है और उसमे बाजरे की पैदावार अ
पर यदि कोई बाधा न पडी तो इतना अधिक बाजरा पैदा हो जाता है कि वहाँ
तक उसे अपने खाने के काम मे लाते है । इस राज्य मे सिंध से गेहूँ आता है ।

यहाँ के किसानो को बाजरे की खेती करने मे अधिक सुविधा रहती है ।
मे दो तीन बार अच्छा पानी हो जाने से भी उसकी पैदावार अच्छी हो जाती
अन्य स्थानो की अपेक्षा जैसलमेर का बाजरा अच्छा माना जाता है । वह र
होता है । फसल के दिनो में यहाँ पर बाजरे का भाव एक रुपये का डेढ मन तक
हो जाता है । परन्तु यह भाव फसल के बाद नही रहता । यहाँ पर ज्वार भी पैदा
उसकी पैदावार साधारण रहती है । पहाडी स्थानो के करीब कहीं-कहीं पर कुछ
जाते हैं । वे खाने मे स्वादिष्ट होते है और राज्य के बाहर भी भेजे जाते है ।
धानी के आस-पास के स्थानो मे, जहाँ पर खेती मे जल का उपयोग किया जा

पानी और पैदावार—समस्त चौहान राज्य मे और विशेषकर उस हिस्से में जहाँ आबादी अच्छी है, भूमि से साधारण गहराई पर पानी मिल जाता है। कुओ की गहराई दस से बीस पुरुषा तक है। मरुभूमि मे पुरुषा की एक माप है। औसत दर्जे का एक पुरुष खडा होकर यदि अपने दोनो हाथो को सिर के ऊपर सीधा करे तो उसके पैरो से लेकर हाथो की उँगलियो तक एक पुरुषा कहलाता है। पुरुष की इस प्रकार ऊँचाई के आधार पर इस माप का नाप पुरुषा पडा है। दूसरे शब्दों मे इस गहराई को लगभग पैंसठ से एक सौ तीस फीट तक कहा जा सकता है। यह गहराई धात के कुओ के मुकाबिले मे कुछ भी नही है। क्योकि वहाँ के कुओ की गहराई कही-कही पर लगभग सात सौ फीट तक पायी जाती है।

लूनी नदी के किनारे की भूमि मे गेहूँ, तिल, मूंग, मोठ, दाले और बाजरा अच्छा पैदा होता है। परन्तु यहाँ के लोग लूट मार के अधिक अभ्यासी हैं और उन्होंने इसे अपना एक व्यवसाय बना लिया है। जो भूमि खेती के लिये अच्छी नही होती, उसे ऊँटो के चरने के लिये छोड़ दी जाती है। ऊँट अधिकतर काटेदार झाडियाँ खाकर रहा करते हैं। भेडे और बकरियाँ अधिक सख्या मे पायी जाती हैं। बैल और घोडे तिलवारा के मेले में बिकने के लिये आते हैं।

निवासी—सिकन्दर के शत्रु मल्लि अथवा पृथ्वीराज के वशजो के नाम हम यहाँ वर्णन करेंगे। जोधपुर के लोगो से यहाँ के लोगो को जो अत्याचार सहने पड़ते थे, उनका बदला लेने के लिये उन लोगो ने लूट मार को अपना एक व्यवसाय बना लिया था और उसके लोग सिन्ध गुजरात और मारवाड तक जाते थे। चौहान राज्य मे प्राय सभी जातियाँ पायी जाती हैं। परन्तु उनमे सहरी, खोसा, कोली और भील जाति के लोग शक्तिशाली हैं और इन्ही जातियो के लोग अधिकतर लूट मार का कार्य करते हैं। यहाँ का शासन चौहानो के हाथो मे है परन्तु प्रत्येक गाँव के रहने वालो मे उनकी संख्या बहुत कम पायी जाती है। कोली, भील और पिथिल लोगो की सख्या अधिक है। पिथिल लोगो की गणना नीच जातियो मे है। परन्तु वे व्यवसायी हैं। खेती के साथ-साथ वे गोंद का व्यवसाय करते हैं। अनेक प्रकार के वृक्षो से वे लोग गोद एकत्रित करते हैं और फिर उसे वे बेच डालते हैं। अन्य राजपूतो की तरह चौहान लोग जनेऊ नही पहनते। ब्राह्मणो के सम्पर्क से जिन लोगो ने अनेक व्यावहारिक प्रणालियो को अपना लिया है, उनकी तरह चौहानो के जीवन की परिस्थितियाँ नही हैं। आचार-विचार सम्बन्धी बहुत-सी बातो मे चौहान भिन्न पाये जाते हैं। पूर्वी चौहानो की अपेक्षा यहाँ के चौहान नैतिक गुणो मे श्रेष्ठ हैं। उनमे बाल-हत्या के अपराध नही पाये जाते। खाने-पीने के विचार मे वे लोग बडी स्वतन्त्रता से काम लेते हैं। वे किसी प्रकार के पाखण्ड को अपने जीवन मे आश्रय नही देते। वे चौका लगाकर भोजन बनाने का काम करते हैं। बचा हुआ भोजन वे लोग रख देते हैं और उसके बाद वे उसे खाते हैं। इस प्रकार के विचारो मे यहाँ के चौहान बडी स्वतन्त्रता से काम लेते है।

कोली और भील—कोली जाति के लोग यहाँ अधिक पाये जाते हैं। उनकी गणना अछूतो मे है। वे लोग मनुष्य के अधिकारो से वञ्चित कर दिये गये हैं। हिन्दू समाज मे उनका स्थान अत्यन्त घृणा पूर्ण है। ऊंची जाति के हिन्दू लोग पशुओ मे भी गिरा हुआ व्यवहार उनके साथ करते हैं। कोली जाति के लोग सभी के घरो का भोजन करते और मुर्दा खाने मे भी वे लोग परहेज नही करते। इतना सब होने पर भी वे अपनी जाति को राजपूतो के साथ जोडते हैं। ये लोग चौहान कोली, राठौर कोली, परिहार कोली, आदि नामो से अपना परिचय देते हैं। कपड़ा बुनना कोली

पर राज्य में दण्ड-कर वढा दिया जाता है और उसकी आवश्यकता को इस कर से
है। इसलिए इस कर मे न्याय को अधिक स्थान नही मिलता। जैसलमेर राज्य
१७७४ ईसवी मे प्रचलित हुआ था। उस समय इसको अतिरिक्त धुआँ अथवा
किया गया था।

व्याज पर रुपया देने वाले वैश्यो से भी कर लिया जाता है और उनसे
सौ रुपयो की आमदनी होती है। महेश्वरी वैश्यो से यह कर आसानी से वसूल हो
ओसवाल वैश्यों के साथ इस कर के वसूल करने मे सख्ती करनी पडती है और इस
भी भेजना पडता है। रावल मूलराज के समय इन वैश्यो ने इस कर की अ
कठोरता से काम लिया था और अत्यन्त विवश अवस्था मे वे लोग इस कर
थे। यो तो रावल मूलराज से राज्य मे कोई प्रसन्न न था। लेकिन ओसवाल वैश्य
प्रकट करने के लिये उस समय अपनी दूकान वन्द कर देते थे, जब मूलराज
नगर की सडको पर निकलता था। इन वैश्यो के असन्तोषपूर्ण व्यवहारो को मूल
उसने इन वैश्यो को प्रसन्न करने की कोशिशे भी की थी उसने इसके सम्वन्ध मे
कि अगर वैश्यो से वरावर धुआँ कर मिलता रहे तो दण्ड कर लेना वन्द कर दिया
वाल वैश्यो ने रावल मूलराज के इस निर्णय को स्वीकार कर लिया था। सम्वत् १
ने ओसवाल वैश्यो से सत्ताईस हजार और सम्वत् १८५२ मे चालीस हजार रुपये ऋ
ये रुपये कुछ दिनो के वाद दे दिये गये थे।

गजसिंह को सिंहासन पर विठाने के वाद से प्रधान मन्त्री सालिम सिंह ने द
लाख रुपये वसूल किये है। इस राज्य में वर्द्धमान नाम का एक सम्पत्तिशाली
राजस्थान मे उसकी वडी ख्याति थी। यह ख्याति उसके पूर्वजो के समय से चल
सालिम सिंह ने उसकी सम्पूर्ण सम्पति लेकर अपने अधिकार मे कर ली थी।

जैसलमेर राज्य के व्यय का उल्लेख इस प्रकार मिलता है जो वहाँ के राजा
व्यय समझा जाता है :—

बार	...	...	...
रोजगार सरदार		...	...
वैतनिक सेना मे		...	..
राजा के निजी घोडे हाथी ऊँट आदि			...
पाँच सौ अश्वारोही			
रानियो का व्यय		..	...
तोशा खान	...	..	...
दान	..	..	...
पाकशाला	...		...
अतिथि	...		...
उत्सव	...		...
वार्षिक ऊँट घोडो की खरीद			...
			....
			जोड़

पानी का बरतन बैलो के द्वारा खीचा जाता था और जो आदमी बैलो के द्वारा उस पानी को खीचता था, उस बरतन के ऊपर आ जाने पर ढोल बजाकर लोगो को सूचना दी जाती थी। उस कुआँ के पास पहुँचने पर सम्राट और उसके साथी प्यास के कारण अधीर हो उठे थे और बिना किसी नियन्त्रण के उसका प्रत्येक आदमी पानी के लिये चिल्ला रहा था। जल का बरतन ऊपर आते ही सबके सब एक साथ पानी पीने की चेष्टा करने लगे। कुएँ के ऊपर पानी के पहुँचते ही एक साथ बहुत से आदमी उस पर टूट पडे। उस समय तक पानी का बरतन कुएं के ऊपर निकालकर रखा भी न गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-से आदमी कुएँ मे गिर गये। इसके दूसरे दिन जो लोग कुएँ मे गिरने से बच गये थे, उनको पानी का एक छोटा-सा नाला मिला। साथ के ऊँटो को पानी पीने के लिये उस नाले की तरफ कर दिया गया। बिना पानी के उन ऊँटो के कई दिन बीत गये थे। इसलिये अधिक पानी पी जाने के कारण उनमे से कुछ ऊँट मर गये। इस प्रकार अकथनीय कष्टो को सहता हुआ सम्राट हुमायूँ अपने बचे हुये साथियो को लिये अमरकोट पहुँचा। वहाँ के राजा ने इस प्रकार की विपद मे पडे हुये सम्राट हुमायूँ की सभी प्रकार सहायता की।

इन कष्टो के साथ सम्राट हुमायूँ जिस राज्य मे पहुँचा था, उसकी राजधानी अमरकोट में थी और इसी अमरकोट मे हुमायूँ के लडके अकबर ने जन्म लिया। अकबर जब अपनी माता के गर्भ मे था, उसी समय से उसके जीवन मे भयानक विपदाये आरम्भ हुई। जन्म लेने के बाद उसको और उसके माता-पिता को ससार में टिकने के लिये कही स्थान न मिल रहा था। ये विपदाये सम्राट हुमायूँ और अकबर के जीवन मे बहुत दिनो तक रही। उनके फल-स्वरूप अकबर भारतवर्ष का महान सम्राट बना।"

दुर्भाग्य के दिनो मे मरुभूमि की तरफ भागकर और किसी प्रकार प्राणो की रक्षा करके सम्राट हुमायूँ ने जहाँ आश्रय लिया था, उसका राजा नाम मात्र के लिये अमरकोट का शासक था और चार गाँव का अधिकारी था। अमरकोट धात-राज्य की राजधानी है। यह राज्य प्राचीनकाल से प्रमार राजपूतो के अधिकार मे चला आ रहा था। वहाँ पर सोढ, ओमरू और सुमुरा जाति के लोग अधिक सख्या मे पाये जाते हैं। इधर बहुत दिनो से ओमरू और सुमुरा को मिलाकर इस राज्य के उत्तरी थल का नाम ओमुर सुमरा हो गया है और अब इसी नाम से प्रसिद्ध है।

अरोर के सम्बन्ध मे हम पहले वर्णन कर चुके हैं। यह नगर सिन्धु नदी के दूसरी तरफ बेखर से छै मील पूर्व की ओर नक्शे मे देखा जाता है और यह ओमुर सुमरा के अन्तर्गत था। प्राचीनकाल मे ओमुर सुमरा की क्या दशा थी, यह हमे नही मालूम। पांच सौ वर्ष पहले सुमरा जाति के राजपूतो का यहाँ पर शासन था। उनके निर्बल पड जाने पर और विरोधी सिन्ध तुम्भा के शक्तिशाली हो जाने पर राज्य की परिस्थितियाँ बदली। परन्तु सिन्ध तुम्भा के राजाओ को भाटी लोगो के द्वारा पराजित होना पडा। उसके बाद इस राज्य का नाम भाटी पोह हुआ। परन्तु उसके प्राचीन नाम ओमुर सुमरा को अब तक लोग भूल नही सके। वहाँ पर गडरियो के छोटे-छोटे गाँव अब तक पाये जाते हैं। यहाँ के राज्यो मे मध्यवर्ती और पश्चिमी राजस्थान के भट्टी लोगो, चावडा लोगो, सोलङ्कियो, गहिलोतो और राठौरो की बस्तियाँ पायी जाती हैं।

आरोर को कुछ लोग अलोर भी कहते है। अब्बुल फजल ने लिखा है 'मरुभूमि के नौ भागो मे आरोर एक भाग था और वहाँ पर प्रमार वशी राजपूत शासन करते थे। इन प्रमारो की कई शाखाये है और सोढा वश भी प्रमारो की शाखा है। बेखर अथवा मानसूरा का टापू अरोर से कुछ मील पश्चिम की तरफ है और वह सोदगो की राजधानी कही जाती है।" सोदगो और सोढा एक

इन ब्राह्मणो के मुख से इस प्रकार का उत्तर सुनकर बादशाह को बहुत क्रोध
पल्ली वालो के सरदारो को कैद करवा लिया । परन्तु उन लोगो ने इसके बाद भी
। इस दशा मे बादशाह ने उनको पल्ली राज्य से निकाल दिया । उसके बाद ये लो
कर जैसलमेर आ गये और इनके बहुत से आदमी बीकानेर, धात और सिंध मे जा
। जैसलमेर मे पल्लीवाल ब्राह्मण प्रसिद्ध व्यवसायी समझे जाते है । वहाँ का
के हाथो मे है । ये लोग व्यवसाय कुशल पाये जाते हैं । राज्य के किसानो को ये
पये देते है और वे लोग जो कुछ पैदा करते है, उसे पल्लीवाल लोग सस्ते भावो मे
राज्यो को भेज देते है ।

पोकर्णा ब्राह्मण—जैसलमेर मे इस नाम के ब्राह्मणो की एक जाति है । इ
ग दो हजार होगी । मारवाड और बीकानेर मे भी पोकर्णा ब्राह्मण रहते है
करते है और पशु पालते है । इन लोगो ने पुष्कर मे जाकर वहाँ की झील को
किया था । उस समय से ये लोग पोकर्णा ब्राह्मण के स्थान पर पुष्कर ब्राह्मण कहे
मेर राज्य मे जाटो के सिवा दूसरी अनेक जातियाँ रहती है, जिनका विस्तार के
मी मरुभूमि के परिच्छेद मे किया गया है । अन्य राज्यो की तरह यहाँ के जाट भी
करते है ।

जैसलमेर की मरुभूमि मे वहाँ के राजा का एक दुर्ग है, जो दो सौ पचास फीट
बना हुआ है । उस दुर्ग के चारो तरफ एक बहुत मजबूत दीवार का घेरा है । दु
ल द्वार है । परन्तु उन चारो मे तोपखाने नही है । दुर्ग के उत्तर की तरफ राजधा
र्ण राजधानी तीन मील लम्बी एक ऊँची दीवार से घिरी हुई है । उसमे तीन बड़े द्वार
दरवाजे है ।

राजधानी मे व्यवसायियो के कुछ अच्छे मकान है । परन्तु साधारण घरो और झो
ा अधिक है । राजा और उसके परिवार के रहने के लिए एक वैभवशाली महल भी है ।
ाथ अच्छा व्यवहार होने के दिनो मे आवश्यकता के समय राजा पाँच हजार पैदल
र अश्वारोही सेना का प्रबन्ध कर सकता है । लेकिन अप्रिय व्यवहारो और अत्याचारो
-जैसा कि रावल मूलराज के समय से प्रधान मन्त्री ने कर रखा था—राज्य की
ा आधी सेना का प्रबन्ध हो सकना भी सन्देहपूर्ण मालूम होता है ।

जैसलमेर का इतिहास अब समाप्त हो रहा है । इसके अंत मे पाठको की जानकारी
य की जनसख्या दी गयी है । यह जन-सख्या सन् १८१५ ईसवी के अनुसार है । इ
र की जन-संख्या अधिक रही होगी, यह बात आसानी के साथ कही जा सकती है
नीतिक पतन के साथ-साथ जन-सख्या का लगातार कम होना स्वाभाविक होता है
िरिक्त प्रधान मन्त्री के अत्याचारो से राज्य की जन-सख्या भयानक रूप से कम हो गयी

कुल जनसंख्या की तालिका मे जो दो सौ पच्चीस गाँवो की जनसख्या शामिल
उसमे छोटे-से छोटे गाँवो की जन-संख्या भी शामिल है । इनमे कुछ गाँव तो ऐसे हैं
की सख्या चार से अधिक नही है । उनमे रहने वालो को भी राज्य की इस जन
लिया गया है ।

बहुत ऊँचे पाये जाते है। आवादी वहुत कम हैं। वहुत थोडे से गाँव उसमे पाये जाते हैं। भूमि की सतह से पानी वहुत गहराई मे मिलता है। यहाँ पर जङ्गल अधिक है जो लोग यहाँ रहते हैं, वे वरसात के पानी को टङ्को मे एकत्रित करते हैं और वडी सावधानी से उसे खर्च करते हैं। उस पानी के सड जाने पर जो लोग उसे पीने के काम मे लाते है, उनकी आँखो मे रतौधी की वीमारी हो जाती है। ×

तिरूरो का थल गोगादेव और जैसलमेर की सीमाओ के बीच मे है। पहले यह थल जैसलमेर राज्य मे शामिल था। पोकर्ण तिरूरो के साथ-साथ समस्त मरुभूमि की राजधानी है और वह मरुस्थली की दो राजधानियो के बीच मे वसा हुआ है। ऊपर जिस भाग का वर्णन किया जा चुका है, इस थल का दक्षिणी भाग उससे पृथक नही है। उत्तरी भाग मे और विशेष कर पोकर्ण नगर के चारो तरफ सोलह से वीस मील तक नीची-ऊँची चट्टानो की पक्तियाँ पायी जाती हैं। इन्ही चट्टानो के एक भाग पर भाटी लोगो की राजधानी वसी हुई है। चट्टानो की पक्तियो के कारण इस भूमि का नाम चट्टानो अथवा चन्दानी है। कुछ लोग इसे चन्द्रानि भी कहते हैं।

पोकर्ण नगर मे दो हजार घरो की आवादी है। यही पर सलीम सिंह का निवास स्थान है। यह नगर पत्थरो से वनी हुई मजवूत दीवार से घिरा हुआ है और उसके किले पर पूर्व की तरफ कितनी ही तोपे रखी हुई है। नगर से पश्चिम की तरफ वरसात के दिनो मे जल का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। वहाँ की रेत इस पानी को थोड़े ही समय मे सोख लेती है। कुछ लोगो का कहना है कि जल कनोड के तालाव से आता है और कुछ लोग उसको पहाडी झरनो से आता हुआ वतलाते हैं। यहाँ के रहने वाले जल के प्रवाह-मार्ग मे खोदकर पीने के योग्य जल निकाल लेते हैं। यहाँ का सरदार चौवीस गाँवो के अतिरिक्त लूनी और वाँदी नदियो के वीच की भूमि का भी मालिक है।

दूनरा और मञ्झिल प्रसिद्ध दुर्गादास की जागीरे थी। लेकिन अव वे देश-द्रोही शलीम के अधिकार मे है। पोकर्ण से तीन कोस उत्तर की ओर रामदेवरा नाम का एक गाँव है। रामदेवरा का मन्दिर होने के कारण इस गाँव का नाम रामदेवरा हो गया है। उस गाँव मे भादो के महीने मे एक मेला लगता है। उस मेले मे वहुत दूर-दूर के आदमी आते हैं। कराची, वन्दर, मुलतान, शिकारपुर और कच्छ के व्यवसायी आकर यहाँ पर क्रय-विक्रय का काम करते हैं। यहाँ के लोग घोडे, ऊँट और बैल अधिक रखते हैं। सन् १८१३ ईसवी के अकाल का यहाँ पर बुरा प्रभाव पड़ा है। राजा मानसिंह के शासनकाल मे जो अराजकता उत्पन्न हुई थी, उससे यहाँ का व्यापार नष्ट हो गया।

खावर का थल—यह थल जैसलमेर के बीच मे है और गिरो के निकट धात की मरुभूमि से जाकर मिल जाता है। यह थल मारवाड के एक दूरवर्ती किनारे पर पाया जाता है। यहाँ पर मनुष्यो की सख्या वहुत कम है। लेकिन उसमे विस्तृत स्थान पाये जाते हैं। उसके कई एक नगर पहाड़ी चोटियो पर वसे हुये है। उनमे शिव और कोटरा अधिक विशाल हैं। ये दोनो नगर उन पहाडी चोटियो पर है, जो भुज से जैसलमेर तक फैली हुई है। शिव मे तीन सौ घरो की आवादी है और कोटरा मे पाँच सौ घरो की। इन दिनो इन नगरो पर राठौर सरदारो का अधिकार है। वे सरदार वहुत साधारण जोधपुर-राज्य की अधीनता मे माने जाते हैं। कुछ समय पहले अनहलवाडा-

---

× यहाँ के लोगो का विश्वास है कि इस रोग मे एक पतला धागा-सा आँख मे पड़ जाता है और वह एक कीडा होता है। इस प्रकार का कीडा घोडे के नेत्रो मे भी पैदा हो जाता है। जिन घोडो की आँखो मे यह वीमारी थी, उसको मैंने स्वय देखा है। एक पतले धागे के समान रोम का कीडा आँखो में दौड़ा करता है। जिसे कीचड़ या आँसू के साथ निकाला जाता है।

मरुभूमि का इतिहास
सत्तावनवाँ परिच्छेद

मन्दोर नगर—ऐतिहासिक खोज—मरुभूमि का वर्णन—विस्तार और दृश्य का प्राचीन काल—उसके प्रसिद्ध नगर—उसका बालुकामय मार्ग—गाँवो का अस्तित्व विस्तृत मैदान नदियाँ, झीले और झरने— प्राचीन राजवश —राज्य और जागीरे—आ और उसका परिणाम ।

मरुभूमि मे मन्दोर से आगे जाने का मुझे अवसर नही मिला । मन्दोर नगर पुरानी राजधानी है । हिसार का प्राचीन दुर्ग इसके उत्तर पश्चिम मे है और आबू नह भुज दक्षिण मे है । मरुभूमि का वर्णन करने के पहले मैं इस बात को स्पष्ट कर दे समझता हूँ कि अनुसधान करने वाली मेरी समिति ने प्रत्येक दिशा मे पहुँचकर उसकी सामग्री को प्राप्त करने की चेष्टा की है और इस कार्य मे जो चीजे प्राप्त हुई है, उनमे सामग्री का अभाव न था, फिर भी बडे परिश्रम के साथ मैंने तैयार करके जो कुछ पाठ उपस्थित किया है, वह काफी नही है । मैं समझता हूँ कि भविष्य मे जो विद्वान इसके खोज का कार्य करेंगे, मेरी यह सामग्री उनके लिए सहायक सिद्ध हो सकेगी । इस कार्य मे यात्रा के दिनो मे मिली हुई सामग्री का मैंने शक्ति भर लाभ उठाया है । * ऐतिहासिक तथ्य निकालने का कार्य सरल न था, फिर भी मैने अपने प्रयत्न मे कुछ बाकी इस सामग्री के साथ-साथ भटनेर से अमरकोट और आबू से आरोर तक के ऐसे बहुत मेरी समिति के द्वारा मेरे पास आये है, जिन्होने अपनी जानकारी से मेरी बडी सहा इतना सब होने पर भी मैं इसे स्वीकार करता हूँ कि मैं इस विषय मे जो कुछ उपस्ि हूँ, पर्याप्त नही है । मुझे केवल इतना ही सतोष है कि मेरे इस कार्य से अभाव के दिनो मे बहुत कुछ सहायता मिल सकेगी ।

ऊपर लिखी हुई बातो को स्पष्ट करने के बाद मैने मरुभूमि का वर्णन ि लिखने का प्रयत्न किया है । यद्यपि मैं जानता हूँ यदि इस कार्य मे मेरे साथ कुछ तो यहाँ पर जो मैंने वर्णन किया है, वह इस पुस्तक के भूगोल सम्बन्धी वर्णन मे स दिया जाता । कुछ लोगो की दृष्टि मे यह वर्णन ऐतिहासिक महत्व न रखे यह सम्भव

---

* मध्य और पश्चिमी भारत के साथ-सा इस देश के दूसरे मार्गों के सम्बन्ध मे मुझे मिली हैं, वे ग्यारह भागो मे विभाजित है । उनकी सहायता से यहाँ के राज्यो के प्रामाणिक नकशे तैयार किये जा सकते है । ऐसा करने का मेरा इरादा भी था । परन्तु बिगडने वाला मेरा स्वास्थ्य मेरे इस कार्य मे बाधक हुआ है । इसलिए जो पुस्तके इस मुझे प्राप्त हुई है वे अब कम्पनी के दफ्तर मे रख दी गयी हैं । यदि बुद्धिमानी और परि लिया गया तो भारत का प्रामाणिक नक्शा तैयार करने मे इन पुस्तको से बहुत बडी मिलेगी ।

व्यवस्था ठीक न होने के कारण लुटेरो ने अत्याचार करके जो सङ्कट उत्पन्न कर दिया है वह अत्यन्त रोमाचकारी है।

अमरकोट—मरुभूमि मे ओमर लोगो का यह एक प्रसिद्ध दुर्ग था और पिछले कुछ वर्षों तक सोढा राजाओ की यहाँ पर राजधानी थी। दो सौ वर्ष पहले इसका विस्तार सिन्धु की घाटी में उत्तर की तरफ लूनी नदी तक था। लेकिन मारवाड के राठौरो और सिन्ध के वर्तमान राजवश ने सोढा लोगो के इस राज्य को बहुत निर्बल और सीमित बना दिया। उन दिनो मे अमरकोट का प्राचीन गौरव नष्ट हो गया और वहाँ की आवादी मे पाँच हजार मकानो के स्थान पर केवल दो सौ पचास मकान झोपडो के रूप मे रह गये थे। वहाँ पर पुराना दुर्ग नगर के उत्तर पश्चिम मे है। वह ईटो से बना हुआ है। उसके अतिरिक्त वहाँ पर दूसरे दुर्ग भी हैं, जिनकी सख्या अठारह बतायी जाती है। वे पत्थरो से बने हैं। नगर मे एक दुर्ग भीतर भी है। राज परिवार के रहने का सुदृढ प्रासाद है। किले के उत्तर की तरफ एक पुरानी नहर है जिसका पानी वर्ष के कुछ दिनो तक बराबर काम देता है। अमरकोट मे राजा मान के समय अनेक गाँवो की प्रतिष्ठा हुई थी। लेकिन वहाँ के गृह-युद्ध के कारण उनकी हालत खराब हो गयी और अमरकोट का अधिकार कुलोरो और राठौरो के हाथो मे चला गया। इसके बाद उनमें झगडे पैदा हो गये, जिनका यहाँ पर सक्षेप मे कुछ वर्णन करना आवश्यक मालूम होता है।

मारवाड़ मे विजयसिंह के शासनकाल मे नूर मोहम्मद कुलोरा सिन्ध मे शासन करता था। कन्धार की फौज के आक्रमण करने पर वह अपने राज्य से भागकर जैसलमेर चला गया और वहाँ पर उसकी मृत्यु हो गयी। उसका बडा लडका अन्तूर खाँ ने अपने भाइयो के साथ बहादुर खाँ खैरानी के पास जाकर शरण ली। उन्ही दिनो मे उसके एक अनैतिक बन्धु गुलामशाह ने अवसर पाकर हैदराबाद के राज सिंहासन पर अधिकार कर लिया। दाऊद पोतरा के सरदारो ने उमर खाँ के पक्ष का समर्थन किया। बहादुर खाँ, सरजल खाँ, अली मोराद, महमूद खाँ, कायम खाँ और अली खाँ खैरानी सरदारो ने युद्ध की तैयारी की और अन्तूर खाँ के साथ वे लोग हैदराबाद के लिये रवाना हुये।

गुलामशाह उनका मुकाबला करने के लिये अपनी फौज के साथ चला। भाइयो के बीच युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध मे अन्तूर खाँ और उसके साथियो को सफलता न मिली। उसकी सहायता के लिये जो खैरानी सरदार युद्ध मे गये, उनमे सभी मारे गये। अन्तूर खाँ कैद कर लिया गया और वह गुजा के दुर्ग मे जन्म भर कैद होकर रहा। यह दुर्ग सिन्ध के टापू हैदराबाद से चौदह मील दक्षिण की तरफ है। गुलामशाह ने उसका राज-सिहासन उसके लडके सर फीरोज को दिया। थोडे ही दिनो मे उसकी मृत्यु हो गयी। उसके बाद अब्दुल नबी उसके सिहासन पर बैठा। उन दिनो मे शिवदानपुर के उत्तर मे चौदह मील की दूरी पर अभयपुर नामक एक नगर था। उसमे तालपुरी वश का एक सरदार रहता था। यह वंश बालोच की शाखा है। उस सरदार का नाम गोराम था। बीजर और सोभान नाम के उसके दो लडके थे। सर फीरोज ने गोराम की लडकी से विवाह करने की माँग की। लेकिन गोराम ने उसको लडकी देने से इन्कार कर दिया। इसके फलस्वरूप उसका परिवार नष्ट कर दिया गया। बीजर खाँ वहाँ से भाग गया और हैदराबाद के निरकुश शासक को वहाँ के सिहासन से उतार कर वह स्वय वहाँ का अधिकारी बन गया। कुलोर लोग छिन्न-भिन्न हो गये। बीजर खाँ ने वहाँ पर एकाधिपत्य शासन करने का इरादा किया। इसलिये अमरकोट मे अधिकार करने के सम्बन्ध मे राठौरो के साथ उसकी शत्रुता पैदा हो गयी। राठौर लोग मारवाड मे शासन कर रहे थे। बीजर खाँ ने मारवाड से केवल कर ही नही माँगा, बल्कि राठौर राजा की लड़की के साथ

मे इस प्रकार के नामो का संकेत पाने पर हमें प्रोत्साहन मिला और हमने उनके सम्बन्ध की
प्राप्त करने की चेष्टा की। उस खोज में जो मिला, उसे हमने यहां पर स्पष्ट रूप
की कोशिश की है।

मरुभूमि की समस्त प्राकृतिक और अप्राकृतिक वातो का उल्लेख करना यहां पर हमा
है। उसके साथ उसके प्रसिद्ध नगरों का भी हमने वर्णन किया है। फिर चाहे वे वर्तमान
नष्ट हो गये हो। इसके पश्चात् जैसलमेर आने-जाने वाले रास्तों का वर्णन किया गया है
वीकानेर और अरवली पर्वत के उत्तर मे वसा हुआ शेखावाटी का हिस्सा भी इस मरुभूमि मे
है। कानोड नगर से मरुभूमि की शुरुआत होती है। इस वात को मिस्टर एलफिन्स्टन ने
किया है। दिल्ली से कानोड नगर की दूसरी कम्पनी के राज्य मे लगभग एक सौ मील
वर्णन करने की हमे कोई आवश्यकता नही मालूम होती। उसके सम्बन्ध मे इतना ही
जरूरी है कि भूमि रेतीली होने पर भी खेती के लिये अच्छी है।

कानोड पहुँचने के वाद हमको मरुभूमि का दृश्य देखने को मिला। उसके दे
पहले से ही उत्सुकता थी। कानोड से तीन मील के पहले से ही वालू की पहाडियाँ दि
थी। दूर से वे झाडियो से घिरी हुई मालूम होती थी। लेकि1 आगे वढने पर समुद्र की
समान वे दिखायी देने लगी। कही-कही पर जमीन की सतह पर वालू के ऊँचे ढेर दिख
थे। वालू के ऊँचे टीलो पर जो रास्ते बने थे, वे पशुओ के चलने के कारण मजबूत हो
मार्ग से इधर-उधर हटने पर हमारे घोडे घुटनो तक वालू मे धंस जाते थे। मरुभूमि का
दृश्य था, जो हमारे सामने आया। सिंगाना और झुँझनू से चूरू का रास्ता गया था।
ने वहाँ पहुँचकर वीकानेर मे प्रवेश किया। शेखावाटी के सम्बन्ध मे मिस्टर एलफिन्स्टन ने
"शेखावाटी को मरुभूमि मे शामिल करने पर जव उसकी तुलना दो सौ अस्सी मील
के साथ—जो कि पश्चिमी सीमा से वहावलपुर तक है—की जाती है तो वह अपने स्वत
हुआ मालूम होता है। इसलिए कि इस विस्तृत मैदान के अंतिम एक सौ मील मे कही
मनुष्य दिखायी नही देता और न कही पर कोई वृक्ष तथा जल ही मिलता है।

शेखावाटी से पूगल तक हम लोगों का मार्ग वालू की पहाडियो और धसकती
घाटियो से होकर था। ये पहाडियाँ कुछ इस प्रकार थी, जैसे समुन्द्र के किनारे कभी-
के द्वारा पानी की ऊँची दीवारे पहाडियो के समान खडी हो जाती है और जिनकी ऊँची
से लेकर एक सौ फीट तक होती है। वहाँ के ये रास्ते सदा एक से नही रहते समय-समय
अन्तर पड जाते है। गर्मी के दिनो मे इन रास्ते पर चलना वहुत मुश्किल जाता है।
वालू के कारण ये रास्ते उन दिनो मे अत्यन्त भयानक हो जाते है। मैंने सरदी के दि
की यात्रा की थी। इसलिये उन दिनो मे यह कठिनाई अधिक भयानक न थी। उन
फोक, वावूल और वट के जो वृक्ष मिलते थे, उनके ऊपर हरी-हरी घास पैदा हो गयी थी।
को दूर से देखने पर मालूम होता था कि उन वृक्षो पर हरी चद्दरे ढँक दी गयी है।

वालू की इन भयानक पहाडियो के वीच मे कही-कही पर गाँव दिखायी देते थे।
के घरो की दीवारें वहुत छोटी-छोटी थी और घरो के नाम पर घास-फूल की झोपडियो
और कुछ न था। भाषा की सादगी और घटनाओ के यथार्थ वर्णन मे एलफिन्स्टन सा
ख्याति पायी है। मरुभूमि के उत्तरी भाग का उसने जो वर्णन किया है उसी के आ
आगे वर्णन करने की कोशिश करेगे। यहा पर मंदीर के स्थान पर जैसलमेर क
की राजधानी मान लेना अधिक उपयोगी मालूम होता है। यहाँ की उपजाऊ भूमि मे

वहाँ पर भयानक रूप से नर-सहार करके अफगानों के द्वारा नगरो की लूट हुई। उसके बाद आक्रमणकारियो ने अमरकोट पर अधिकार कर लिया। इस आक्रमण में विजयसिह की सेना ने भी युद्ध किया था। इसलिये कन्धार की अफगानी फौज के सेनापति फतेहअली ने उस सहायता की कीमत में विजय सिह को अमरकोट का अधिकार दे दिया। उस समय से लेकर अन्तिम गृह-युद्ध के दिनो तक वहाँ पर राठौर का झण्डा फहराता रहा। उसके पश्चात् सिन्धी लोगो ने राठौर को वहाँ से निकाल दिया।

चोर—अमरकोट के पतन के बाद सोढा राजा अपनी राजधानी से उत्तर पूर्व की तरफ पन्द्रह मील की दूरी पर चोर नामक नगर मे जाकर रहने लगा। उसकी उपाधि राना थी। निर्वासित होने के बाद भी वह अपनी इस पदवी को धारण किये रहा। जिस वश के पूर्वजो ने किसी समय सिकन्दर मेनाण्डर और कासिम का—जो खलीफा वलीद का गवर्नर था—सामना किया था और जिन्होने बादशाह हुमायूँ को उस समय अपने यहाँ शरण दी थी, जब वह पराजित होकर और भारतवर्ष का सिहासन छोडकर भागा था, आज उस वश के राजा परिवार की यह अवस्था थी कि वह रोटी के टुकडो के लिये अपनी लडकियो और बहनो का विवाह अन्य धर्मावलम्बियो के साथ कर देते थे। उनके इस पतन का कारण उनकी क्षुधा थी, जिसको मिटाने के लिये उस वश के लोगो के पास कोई दूसरे साधन न थे। अमरकोट के बाद सोन वश के लोग जहाँ पर जाकर रहे थे, वहाँ उनका कोई व्यवसाय न था, जीवन-निर्वाह के लिये उनके अधिकार मे कोई साधन न था। वह स्थान मरुभूमि का एक भाग था, यहाँ कुछ पैदा न होता था। प्रत्येक तीसरे वर्ष अकाल पडता था, जिसके कारण सर्व साधारण का जीवित रहना कठिन हो जाता था। इस दशा मे जिनके पास खाने-पीने का सुभीता न होता था, वे अपने सम्पन्न पडोसियो का आश्रय लेते थे और अधिक सख्या मे लोग सिन्धु की घाटियो मे जाकर वहाँ के लोगो की शरण लेते। उनके उन दुर्दिनो मे जो सहायता करते, उनको वे अपनी लडकियाँ और बहने देकर उनके उपकार का बदला देते। यह सोढा वश हिन्दू जाति का एक अङ्ग था, जिसने अपने दुर्दिनो मे इस्लाम धर्मावलम्बियो की समय-समय पर शरण ली थी और उनके साथ अपनी बेटियो के विवाह करके अपने वंश की पवित्रता को नष्ट किया था। इस प्रकार सोढा और झारीजा की कडियो ने हिन्दू मुसलमानो को एक मे जोडकर जञ्जीर बनाने का काम किया था। भूख मे मरते हुये मनुष्य क्या नही करते। वह धर्म और कर्म की रक्षा उसी समय तक करता है, जब तक उसके प्राण सुरक्षित रहते है। लेकिन जब वह भूख से तडपने लगता है तो उस समय वह सब कुछ भूल जाता है। अमरकोट से भागने के बाद और चोर नगर मे जीवन निर्वाह करने के दिनो मे सोढा वश के लोगो की इस प्रकार दुरवस्था हो गयी थी। उनके अन्तरतर के सुदृढ धार्मिक तथा सामाजिक बन्धन ढीले पड गये थे और क्षुधा की पीडा मे उन्होने वे कार्य करने के लिये विवश हुये थे, जो उन्हे न करना चाहिये थे। इतना सब होने पर भी वे अपने हृदय से धार्मिक और सामाजिक नियमो को तिरोहित न कर सके थे। उन्होने अपनी जिन प्यारी लडकियो और बहनो के विवाह इस्लाम धर्मावलम्बियो के साथ किये थे, उनको उन्होने फिर अपने परिवार मे कभी आने नही दिया था। इस प्रकार उनके वश की जो लडकियाँ इस प्रकार गयी फिर वे अपने जीवन मे लौटकर माता-पिता के घर नही आयी। सोढा वश के वर्तमान राना ने मीर गुलाम अली, मीर सोहराब और दादर के सरदार खोसा को अपनी लडकियाँ देकर उस वश के अन्य लोगो के लिये एक रास्ता पैदा कर दिया था। इस दशा मे जैसलमेर, बाह और पारकर के राजा सोढा राजकुमारी को विवाह करके स्वीकार कर लेते है, क्योकि वे इस वश की पवित्रता पर विश्वास करते है, परन्तु वे अपनी लड़कियाँ राना के

लित है। रो भूमि मरुभूमि का वह भाग है, जिससे कुछ घासों के सिवा और कोई चीज होती। उसे मरुभूमि की बंजर जमीन कह सकते है।

लूनी नदी का थल—यह थल नदी के दोनो किनारो पर है, जिसमे जालौर और उ राज्य बसे हुए है। नदी के दक्षिण भाग इसमे सम्मिलित नही किया जा सकता। फिर बसे हुए राज्य के साथ इतना अधिक निकटवर्ती सम्बन्ध है कि उसका वर्णन हमे बहुत मालूम होता है।

जालौर—यह राज्य मारवाड के श्रेष्ठ भागो मे से एक है। सुक्री और खारी नदि को सेयाञ्ची से पृथक करती है। बहुत-सी छोटी-छोटी नदियाँ अर्बली और आबू पहाडो से मारवाड के इस भाग मे बहती हुई उसके तीन सौ साठ नगरो और गाँवो की भूमि क बनाती है। उनसे मारमाड को मालगुजारी मिलती है। मरुभूमि के नौ दुर्गों मे से प्रसिद्ध दुर्ग था। उन दिनो मे मरुभूमि मे प्रमार बशी राजपूतो का शासन था। प्रमार जालौर कब निकल गया, इसका वर्णन करने के लिए हमारे पास कोई ऐतिहासिक आधार वहुत दिनो तक यह जालौर चौहान राजपूतो के अधिकार मे रहा और चौहानो ने सन् १३ मे जो युद्ध अलाउद्दीन के साथ किया था, उसका वर्णन फरिश्ता और भाटो के ग्रन्थो मे चौहानो की यह शाखा मल्लिनी के नाम से मशहूर थी। हाडौती के साथ चौहान राजपू का वह भाग शामिल था जो हथराज कहलाता था। उसकी राजधानी जूनाचोटन थी। पार कर तक लूनी नदी के किनारे की समस्त भूमि मे जो गाँव और नगर बसे थे, उनमे इ राज्य था। इससे जाहिर होता है कि चौहानो ने प्रमार राजाओ का सर्वनाश करके खा किनारे पारकर तक अपना अधिकार कर लिया था।

सोनगिरि अथवा स्वर्णगिरि इस दुर्ग का पुराना नाम है। चौहान राजाओ ने मल्लिनी का नाम बदलकर सोनगिरि के नाम पर सोनीगुर रख लिया था। यहाँ पर के देवता भल्लिनाथ का मन्दिर वनवाया था। सिया जी के वंशजो के आने के समय त चौहानो का शासन कायम रहा। उनके आने पर सोनगिरि दुर्ग का नाम जालौर रखा जी के वंशजो के आने पर सानीगुरी का शासन वहाँ पर समाप्त हो गया और वे लोग अवस्था मे चित्तलवाना मे जाकर रहने लगे।

भद्राजून, महेवा, जैसोल और सिन्द्री की वडी-वडी जागीरो के अतिरिक्त सेवा मल, साँचोर और मोरसेन के छोटे-छोटे जिले जालौर राज्य मे शामिल है। उनकी है, पानी की सुविधाये है और उन सव की लम्वाई-चौडाई नव्वे मील है। वहाँ पर अच्छे आवश्यकता है, जिससे वहाँ की भूमि अधिक उपयोगी वन सके। यदि ऐसा किया जा स की आमदनी से जोधपुर के राजा का निजी खर्च भली प्रकार चल सकता है। परन्तु र से अच्छा प्रवन्ध न होने के कारण वहाँ पर अराजकता वढ गयी है, राज्य की ओर से जो प्रवन्ध करते है, वे वहुत अधिक वेईमान हो गये है और पहाडी जातियो के लुटेरो के की भयानक अवनति हुई है। इन सभी जागीरो और छोटे-छोटे जिलो मे अनेक पहाड़ियाँ पहाडियो मे एक पर दुर्ग वना हुआ है। इन पहाडियो का सिलसिला आवू पर्वत तक है। वहाँ पर अनेक प्रकार के जङ्गली वृक्ष पाये जाते है।

जालौर का दुर्ग मारवाड की दक्षिणी सीमा के ऊपर वहुत-कुछ महायक सिद्ध जिस पहाडी पर यह दुर्ग बना है, वह उत्तर की ओर सिवाना तक चली गई है और उस

कौरव—कौरव राजपूत घात के थल मे पाये जाते हैं। ये लोग भी लूट-मार करते हैं। लेकिन परिश्रमी होते हैं। इनके रहने का कोई निश्चित स्थान नही होता। ये लोग बड़ी संख्या में भेडे लिये हुये घूमा करते हैं और जहाँ कही अपनी भेडो के चरने के लिये अच्छा स्थान और पानी का सुभीता पाते हैं, वही पर वे लोग ठहर जाते हैं। रहने के लिये वे झोपड़ियाँ बना लेते हैं, जो पत्तो से ढकी होती है। उन झोपडो मे भीतर मिट्टी का प्लास्टर लगा रहता है। लुटेरे सेहरोम लोग जगलो मे घूमा करते हैं और इस प्रकार के स्थानो मे रखा हुआ अनाज चोरी करके अथवा लूटकर ले जाते हैं। इनमे से कुछ लोग ऊंट, गाये, भैंसे और बकरियाँ पालते हैं और ये लोग अपने इन पशुओ को चारुन तथा अन्य व्यवसायियो को बेच देते हैं। दूसरे राजपूतों की तरह ये लोग भी अफीम का सेवन करते हैं। ये लोग इस बात का विश्वास करते हैं कि अफीम के सेवन से शरीर मे रोग नही पैदा होता और जो पैदा होता है वह सेहत हो जाता है।

घात अथवा धाती—यह वश भी राजपूतो की एक शाखा है। इस वंश के लोग घात मे रहते हैं। इनकी सख्या कौरवो की अपेक्षा अधिक नही है। इनकी आदते बहुत कुछ कौरवो से मिलती हैं और गडरियो का जीवन व्यतीत करते हैं। ये लोग खेती भी करते हैं। लेकिन उसकी पैदावार बरसने वाले पानी पर निर्भर करती है। अपना तैयार किया हुआ घी देकर उनके बदले में अनाज और दूसरी आवश्यक चीजे लेते हैं। रबगी और छाँछ यहाँ का अच्छा भोजन माना जाता है।

लोहाना—इस वश के लोग घात और नावपुरा मे अधिक पाये जाते हैं। पहले वे लोहाना राजपूत कहलाते थे। लेकिन व्यवसाय करने के कारण वे लोग अब वैश्य कहे जाते हैं। जीवन-निर्वाह के लिये कोई भी कार्य करने मे वे सकोच नही करते। बिल्ली और गाय के अतिरिक्त अन्य सभी पशुओ का वे लोग मास खाते है।

अरोरा—लहना लोगो की तरह इस जाति के लोग खेती और व्यापार करते हैं। बहुत-से लोग नौकरी भी करते हैं। सिन्ध मे वे छोटी छोटी नौकरियो मे देखे जाते हैं। खाने पोने की साधारण चीजो पर ये लोग अपना जोवन निर्वाह करते हैं। हम यह ठीक नही जानते कि अरोर मे रहने के कारण इन लोगो का नाम अरोरा पड गया है।

भाटिया—इस जाति के लोग पहले अश्वारोही हुआ करते थे। लेकिन अब जब से वे लोग व्यवसाय करने लगे है, उससे उनको बहुत लाभ हुआ है और उनकी आर्थिक परिस्थितियाँ पहले को अपेक्षा अच्छी हो गयी है। इनके जीवन की बहुत-सी बाते अरोरा लोगो के समान हैं। सम्पत्ति मे इनका स्थान अरोरा लोगो के बाद है। शिकारपुर, हैदराबाद, सूरत, और जयपुर मे अरोरा तथा भाटिया लोगो की व्यावसायिक कोठियाँ बनी है।

ब्राह्मण—मरुभूमि और सिन्ध के ब्राह्मण वैष्णव धर्म को अपना धर्म बतलाते हैं। मनु के सिद्धान्तो का यथा सम्भव वे पालन करते हैं। मनु की लिखी हुई बाते जो व्यवहारिक नही होती उनकी वे उपेक्षा कर जाते हैं। ब्राह्मण लोग अपनी बातो को ही कानून और सिद्धान्त मानते है। वे लोग जो कुछ कहते है, उसी को वे सत्य समझते हैं। ब्राह्मण जनेऊ पहनते है। साधारण तौर पर वे खेती का कार्य करते हैं। आवश्यक चीजो को खरीदने के समय मूल्य मे वे अपने घरो का घी देते हैं। इनकी सख्या धात मे अधिक है। चोर नगर मे—जहाँ पर सोढा राणा रहता है—एक सौ घर इन ब्राह्मणो के है। कुछ घर अमरकोट मे भी पाये जाते है। वे लोग मछली नही खाते और हुक्का भी नही पीते। माली और नाऊ के हाथ बना हुआ भोजन वे कर लेते है। भोजन के समय वे चौका नही लगाते। सिन्ध मे रहने वाली सभी हिन्दू जातियाँ भटियारिन के हाथ का बना हुआ भोजन

है। प्राचीन काल मे यह नागौर मे होने के कारण मारवाड के युवराज की जागीर धौंकल सिह को सिंहासन पर विठाने के वाद इसे मारवाड राज्य मे मिला लिया गया।

माचोल और मोरसेद के राजा जालौर के आधीन हैं। मीना लोगो की लूट अत्याचारो से सुरक्षित रहने के लिए माचोल के दक्षिण पूर्व मे एक दुर्ग बना हुआ है। जागीर जालौर की पश्चिमी सीमा पर है। वहाँ पर भी एक दुर्ग है। उस नगर मे पाँ की आवादी है। दक्षिण की तरफ वीनमल और साँचोर दो बडे बडे उपभाग है। वे दो लगभग एक प्रान्त के हो जाते है। प्रत्येक उपभाग मे आठ ग्राम हैं। कच्छ और गुजरा वाले मार्गों पर होने के कारण ये दोनो नगर बहुत पहले से व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध रहे मल मे पन्द्रह सौ घरो का अनुमान किया जाता है और साँचोर मे वहाँ से लगभग आ आवादी है। लेकिन यहाँ पर धनी और महाजन अधिक रहा करते थे। परन्तु रक्षा का न होने के कारण इन दोनो नगरो को बहुत बडी क्षति पहुँची है। वहाँ पर वाराह का है। यह मन्दिर शूकरावतार के सिद्धान्त पर बनवाया गया था और उस मन्दिर मे शू पत्थर मे खुदवाकर रखवाई गयी है। साँचोर नगर साँचोरा नामक ब्राह्मणो की जन्म प्रकार लोगो का विश्वास है। ये ब्राह्मण मन्दिरो के पुरोहित नियुक्त किये जाते है।

भद्राजून—यह नगर जालौर की एक प्रसिद्ध जागीर है। इस नगर मे पाँच आवादी है। उनमे एक चौथाई मीनाओ की बस्ती है। यह नगर पहाडियो के बीच मे है एक दुर्ग बना हुआ है। वहाँ का सरदार जोधावशी है। उसकी जागीर जालौर से पाल गयी है।

महेवा—यह नगर लूनी नदी के दोनो किनारो पर बसा हुआ है। राठौरो ने पहले पहल जिनको विजय किया था, उनमे से यह एक है। यह नगर सेवाची मे शा यहाँ से सेवाँची को कर मिला करता है। महेवा के सरदार की उपाधि रावल है। रहा करता है। वर्तमान राजा का नाम सूरतसिह है। उसके सम्बन्धी शूरजमल की उपाध है। जैसोल से वाईस मील दक्षिण मे लूनी नदी के तट पर सिद्री का दुर्ग और वहाँ उसके अधिकार मे है। उन दोनो मे आपसी द्वेष रहता है। इसीलिए उन दो मे कोई भ महेवा मे नही रहा करता। आपसी द्वेष के कारण उनके चरित्रो का इतना पतन हु डकैती जैसे कार्यो से भी अपना अपमान नही समझते। सन् १८१३ ई० तक उनके परिस्थितियाँ थी, उनका मैने यहाँ पर उल्लेख किया है। सम्भव है, भविष्य मे उनके सुधार हो। खारी ददी के किनारे की उपजाऊ भूमि उसके द्वारा खेती के काम मे आती पर गेहूँ, ज्वार और वाजरा अच्छा पैदा होता है।

वालोतरा और तिलवारा यहाँ के दो प्रसिद्ध नगर हैं। वर्ष मे एक वार यहाँ प करता है। यह मेला राजस्थान मे वहुत प्रसिद्ध है। यह वालतोरा का मेला कहलाता वह लूनी नदी के एक द्वीप के करीव तिलवारा मे लगता है। यह तिलवारा महेवा सम्बन्धी की जागीर मे है और वालतोरा मारवाड के प्रधान सामन्त की अहवा अंग है।

लोग प्रायः ऊंटो पर सवारी करते हैं। कुछ लोग घोडों को भी सवारी के काम में लाते हैं। तलवार और ढाल उनके विशेष हथियार है। बहुत कम लोगो के पास बन्दूक पायी जाती है। लूटने के लिये सैकडो कोसो की दूरी पर और कभी-कभी जोधपुर तथा दाऊदपोतरा के राज्यों में भी चले जाते हैं। ये लोग राजपूतो के साथ युद्ध करने मे डरते हैं। मरुभूमि के दक्षिणी भाग में वे लोग विशेष रूप से रहा करते हैं और नवकोट तथा मित्ती के पास बुलेरी तक वे लोग पाये जाते हैं। इस जाति के बहुत से लोग उदयपुर, जोधपुर और दूसरे राज्य मे नौकरी की खोज किया करते हैं। ये लोग कायर और अविश्वासी समझे जाते हैं।

सोढा वश के जिन लोगो ने इस्लाम-धर्म को स्वीकार कर लिया था, मुमाचा लोग भी उन्ही मे से हैं। वे थल और घाटी मे अधिक सख्या मे पाये जाते हैं। वहाँ पर उनके बहुत से गाँव हैं। उनकी आदते धाती लोगो की तरह है। उनमे अधिकांश लोग सेहरी लोगो के साथ सम्पर्क रखने के कारण चोरी और लूट किया करते है। वे लोग अपने सिर के बालो को कभी मुड़वाते नही हैं। इसलिये वे देखने मे पशु मालूम होते हैं। उन लोगो के यहाँ कोई भी पशु रोगी होकर नही मरता। क्योकि बीमार पशु के सेहत की आशा न होने पर वे लोग उसे मार डालते हैं। उनकी स्त्रियाँ बडी लडाकू और असभ्य होती हैं। वे पर्दा नही करती।

राजूर—इस वश के लोग भाटी कहे जाते हैं और वे मरुभूमि तथा जैसलमेर की सीमाओ पर रहा करते है। ये लोग जैसलमेर और सिन्ध के बीच के थल तक आते जाते रहते हैं। ये लोग खेती करते हैं। भेडे चराते हैं और चोरी करते हैं। जिन लोगो ने इस्लाम को स्वीकार किया है, उनमे ये लोग अधिक पतित माने जाते हैं।

आमुर और सुमरा—ये लोग प्रमारो के वशज हैं और अब वे लोग इस्लाम पर विश्वास रखते हैं। जैसलमेर और आमुर सुमरा के थल मे पाये जाते हैं। इनकी सख्या अधिक नही है। इन लोगो के सम्बन्ध मे हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं।

कुलोरा और तालपुरी सिन्ध मे ये दोनो जातियाँ बहुत प्रसिद्ध है। सिन्ध राज्य का पिछला शासक कुलोरा वश मे ही उत्पन्न हुआ था और वहाँ का वर्तमान शासक तालपुरी जाति का है। इनमे से एक ने ईरान के अब्बशैद से अपनी उत्पत्ति बतलाई है। दूसरे ने पैगम्बर साहब से अपनी उत्पत्ति का दावा किया है। कहा जाता है कि ये दोनो बलोच हैं और उनकी मूल उत्पत्ति जिन वश से हुई है। तालपुरी लोगो की सख्या लोहरी लोगो की सख्या की चौथाई मानी जाती है। उनका सम्बन्ध हैदराबाद राज्य के साथ है। वे थल मे नही पाये जाते।

नुमरी, लुमरी अथवा लुक्का—यह बलोच की शाखा है। अब्बुल फजल ने इसको कुलमानी से नीचे माना है। युद्ध मे तीन सौ सवार और सात हजार पैदल सेना को लाने की इस वश के लोग शक्ति रखते है। इस जाति को विभिन्न लेखको ने विभिन्न नामो से लिखा है। उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध मे भी एक मत नही है। इसलिये उस विवाद मे पडना हमको आवश्यक नही मालूम होता है।

जीहूत, जूत अथवा जित—यह एक प्राचीन जाति है और वह समस्त राजपूतो की सख्या से भी अधिक पायी जाती है। सम्पूर्ण सिन्ध मे समुद्र के किनारे से दाऊदपोतरा तक इस वश के लोग फैले हुये हैं। थल मे उनकी धाबनी नही है। जिन वश के लोगो ने पहले पहल इस्लाम धर्म स्वीकार किया था, ये लोग उन्ही में से हैं।

मैर अथवा मेर—इस नाम की एक पहाडी जाति है जो सिन्ध की घाटी मे पायी जाती है।

काफिरो को मुसलमान बनाना उसका मुख्य कार्य था। सम्भव है, उन दिनों में नहरबल्ल का
सित राजवंश खेरधर की रेतीली पहाड़ियो के बीच मे रहने वाले चौहानो के आश्रय में आ ग
पारकर के राजा ने बीरबाह की अधीनता नही स्वीकार की थी। यद्यपि वह बीरबाह के रा
कर मे कुछ देता था। उन दोनो की उपाधि राना थी और दोनो ने वीरता तथा बहादुरी
ख्याति पायी थी। इस राज्य के थल की लम्बाई चौड़ाई इसलिये लिखना अनावश्यक मालूम
कि वह सदा घटता बढ़ता रहता है। लेकिन इस राज्य के प्रसिद्ध नगरों का वर्णन करना
है। इससे वहाँ के मनुष्यो की संख्या का अनुमान लगाया जा सकता है।

ऊपर लिखा जा चुका है कि चौहान राज्य दो भागो में बंटा हुआ है। प्रथम भाग
बाह, धरणीधर, बङ्कसिर, थेराड, हितीगाँव और चीतलवाना प्रसिद्ध नगर हैं। राज्य के दो
के आस-पास बबूल तथा कांटेदार पेडो का परकोटा है। इसको वहाँ की भाषा मे काठ का
जाता है। यह परकोटा शत्रु के आक्रमण को रोकने मे बहुत बड़ा काम करता है। अपने रेती
से राना नारायण राव को वार्षिक आमदनी तीन लाख रुपये है। इसमे से तृतीयांश अर्थात् ए
रुपये उसे जोधपुर को कर के रूप मे देना पडता है। परन्तु यह बिना युद्ध के जोधपुर को क
मिला, इस राज्य की जो भूमि लूनी नदी के जल के द्वारा सीची जाती है, उसमे अनाज की
अच्छी होती है। गरमी के दिनो मे उस नदी का जल सूख जाता है। उस दशा मे नदी के ज
में कुएँ खोदकर पानी निकाला जाता है और उसके द्वारा जल के अभाव की पूर्ति की जाती है
अवस्था कोहरी नदी मे होती है। मैंने ग्वालियर के जिले मे देखा है कि लोग कोहरी नदी
मार्ग को खोजकर पानी निकाल लेते हैं और उससे अपना काम चलाते हैं।

पारकर की राजधानी नगर अथवा सरनगर है। वहाँ पर पन्द्रह सौ घरो की आ
सन् १८१४ ई० मे इन घरो की आबादी लगभग आधी रह गयी थी। नगर के दक्षिण-पश्चि
तरफ एक छोटा-सा पहाडी दुर्ग है। उसकी ऊँचाई दो सौ फीट कही जाती है। कुएं और बा
के प्रवाह का मार्ग रिन के बीच मे है। बीरबाह के राजा की तरह पारकर के राजा की उ
राना की है। हमें यह नही मालूम कि उनके आपसी सम्बन्ध क्या हैं। फिर भी इस बात के
हमारे पास हैं कि दोनो एक दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्यो का पालन करते हैं। दोनो एक ही
हैं। सरनगर के मुकाबिले मे बक्सर दूसरी श्रेणी का है। कुछ समय पहले यह एक वैभवशा
था। परन्तु सन् १८१४ ईसवी में इसके घरो की सख्या केवल तीन सौ साठ थी। नगर के
लडका यही पर रहा करता है और अपने पिता के समान वह राना की उपाधि का प्रयोग क
यहाँ पर हम छोटे-छोटे नगरो का उल्लेख करना आवश्यक नही समझते।

थेराड लूनी के चौहानो का दूसरा भाग है, जिसका प्रधान नगर उसी नाम से सूई
उत्तर की तरफ कुछ कोसो की दूरी पर है और वह पारकर की तरह नाम मात्र के लिये पर

चौहान राज्य की आकृति—जैसा कि ऊपर लिखा गया है, यहाँ की भूमि ऊसर और
है। वह चोटन से जैसलमेर तक फैली हुई है। वह बङ्कसर के पश्चिम तरफ चार मील की
पायी जाती है। लूनी नदी के दोनो किनारो की भूमि मे गेहूँ और दूसरे अनाजो की पैदावा
है। बीरबाह मे अनेक थल हैं। फिर भी सूई से सत्रह कोस तक और खास तौर पर राधूपुर
एक लम्बा मैदान है। लूनी के पार के थल ऊँचे टीलो के रूप मे पाये जाते हैं। चोटन से बङ्क
सम्पूर्ण भाग ऊसर है और उसमे रेत की बहुत-सी ऊंची-ऊंची पहाड़ियां हैं।

खाँ के वंशज रहने लगे थे। उन दिनो मे भट्टी लोगो की एक शाखा देरावल मे रहती थी। उसके सरदार की उपाधि रावल है।

भावल खाँ ने दाऊदपोतरा की राजधानी बसायी और उसका नाम अपने नाम पर रखा। वहाँ पर पहले भट्टी नगर था। इसके तीस वर्ष बाद कन्धारी फौज ने दाऊदपोतरा पर आक्रमण किया और देरावल को अपने अधिकार मे कर लिया। इसके बाद एक सन्धि हुई और उसके अनुसार भावल खाँ को देरावल वापस दिया गया। भावल खाँ को एक बार अबदाली शाह की अधीनता स्वीकार करनी पडी। उस समय भावल खाँ को अपना लडका मुबारक खाँ अबदाली शाह के साथ भेजना पडा। मुबारक खाँ तीन वर्ष तक काबुल मे रहा। उसके बाद वह स्वतन्त्र कर दिया गया। मुबारक खाँ स्वाधीन होकर अपने राज्य की स्वतन्त्रता के लिये चेष्टा करने लगा। इस दशा मे भावल खाँ ने उसे कैद करा लिया और वह किञ्जर के दुर्ग मे कैद करके रखा गया। वह भावल खाँ की मृत्यु के समय तक वहाँ पर बन्दी होकर रहा। भावल खाँ के मर जाने के बाद दाऊदपोतरा के सरदारो के द्वारा वह दुर्ग से निकाला गया। स्वतन्त्र होकर वह मुरार मे पहुँचा। अपनी राजधानी मे आ जाने के बाद विरोधियो ने धोखे से उसे मरवा डाला। उसके बाद सादिक खाँ मसनद पर बैठा। उसने मुबारक खाँ के लडको को अपने छोटे भाई के साथ-साथ देरावल के दुर्ग मे बन्द करवा दिता। लेकिन वे वहाँ से निकलकर भागे और राजपूतो तथा पुरबिया लोगो की सेना लेकर उन्होने देरावल पर अधिकार कर लिया। सादिक खाँ दुर्ग की दीवार पर चढ गया। उस समय उसके साथ के लोगो ने उसकी रक्षा न की और उसके दोनो भाई और एक भतीजा युद्ध मे मारा गया। उसका दूसरा भतीजा दीवार पर चढ गया। परन्तु वह पकड ही लिया गया। सादिक खाँ ने उसे मरवा डाला। सादिक खाँ ने जिस नसीर खाँ की सहायता से मसनद पर बैठने का अधिकार पाया था, उसने उसको भी मरवा डाला। सादिक मोहम्मद खाँ ने उसके पिता की तरह के अच्छे गुण नही थे। मारवाड का विजयसिंह उसके पिता को अपना भाई कहकर सम्बोधन करता था। दाऊदपोतरा के सरदारो मे मेल नही रहता। वे एक दूसरे के साथ लडा करते हैं। वहाँ के भट्टी लोग चोरी और लूट का काम करते है। और उसके बदले मे दाऊदपोतरा के सरदारो को कर देते है। लेकिन इन भट्टी लोगो के दिलो मे उन सरदारो के लिये कोई विशेष सम्मान नही है। भावलपुर के सरदार को कन्धार से अब किसी प्रकार की आशङ्का नही रहती। वह सरदार अपने पडोसी राज्यो के साथ मिलकर चलता रहता है। लाहौर के रणजीत सिंह की धमकियाँ कभी-कभी उसे मिलती है। उनसे भावलपुर का सरदार कभी-कभी भयभीत हो उठता है।

बीमारियाँ—मरुभूमि मे अनेक प्रकार के रोग पाये जाते हैं। इन रोगो का बहुत-कुछ कारण यह भी है कि वहाँ के लोगो को अच्छा भोजन नही मिलता। वहाँ पर ऐसे लोगो की सख्या अधिक है, जो पेट-भर भोजन नही पाते। इस अभाव के कारण उनको जो कुछ मिलता है, खा लेना पडता है। पीने का जल स्वच्छ और स्वास्थ्य जनक नही मिलता। इसका परिणाम यह है कि रतौधी, नारू और इस प्रकार के दूसरे रोगो ने वहाँ के निवासियो का स्वास्थ्य नष्ट कर डाला है। रतौधी और वेरी कोस के रोग उन्ही लोगो को अधिक होते है, जिनको मरुभूमि मे अधिक दौडना-घूमना और चलना पडता है। मरुभूमि की जलती हुई धूप ने उनके शरीर के रङ्ग को काला बना दिया है। मरुभूमि का जीवन इन गरीबो के लिये अत्यन्त सङ्कट पूर्ण है। उनके शरीर के अङ्गो को अनेक प्रकार की क्षति पहुँचती है। लेकिन वहाँ के निवासी इन सब बातो के ऐसे अभ्यासी हो गये हैं कि वे कभी अपने इस सङ्कटपूर्ण जीवन की आलोचना तक नही करते।

जाति के लोगों का प्रधान व्यवसाय है और आमतौर पर भारतवर्ष के कही के भी कोली अधिक करते हैं।

भील लोगो की परिस्थितियाँ भी कोली लोगो की तरह हैं। बल्कि बहुत-सी बातो कोलियो से भी पतित पाये जाते हैं। भील लोग सभी प्रकार के कीडे, लोमडी, सियार, साँपो को खाते हैं इसलिये कि जिस देवी की वे पूजा करते है, उसको ऊँट और मुर्गे का माँ जाता है। उनके खाने पीने की आदते पतन की चरम सीमा मे पहुँच गयी है। कोलो और वैवाहिक सम्बन्ध नही है और वे एक दूसरे के साथ भोजन करने मे परहेज करते है परन्तु ब

विथिल लोग यहाँ पर खेती का कार्य करते है। उनकी मर्यादा वैश्यो की तरह है। और बैलो के साथ भेडे पालने का काम करते हैं। इनकी संख्या कोलियो और भीलो की तर है। भारत के कुर्मी और मालवा तथा दक्षिण के कोलम्बी लोगो के साथ विथिल लोगो की जाती है। यहाँ पर रेवारी जाति की तरह और अनेक भी जातियाँ रहती हैं। रेवारी लोग पालने का कार्य करते हैं।

धात और ओमुरसुमरा राजस्थान की मरुभूमि को छोडकर अब हम सिन्ध की मरुभू उस भूमि का वर्णन करेंगे, जो पश्चिम मे राजस्थान की सीमा नदी की घाटी तक और तरफ दाऊदपोतरा से रिन के किनारे वुलारी तक फैली हुई है। इस भूमि की लम्बाई लगभग मील है और चौड़ाई लगभग अस्सी मील। यहाँ की सम्पूर्ण भूमि थल के रूप मे है। उसमें ग कम पाये जाते हैं। यह बात जरूर है कि वहाँ गडरियो के कुछ छोटे-छोटे गाँव मिलते हैं। नकशे मे उनका कही स्थान नही है। इसका कारण है। इन छोटे-छोटे गाँवो मे रहने वाले बहुत आसानी के साथ अपने स्थानो को बदल देते है और नये स्थानो पर पहुँचकर वे रहने उनके स्थान परिवर्तन का कारण पानी की सुविधा है। जहाँ इस प्रकार की वे सुविधा पाते पुराने स्थानो को छोडकर वे उन स्थानो पर पहुँच जाते हैं। उनकी ये सुविधायें स्थायी रूप दिनो तक काम नही देती। इसलिये उनको फिर स्थान बदल देना पड़ता है। जहाँ पर ये लो है, यह समस्त भूमि एक विशाल रेगिस्तान के रूप मे है और पचास-पचास मील तक पा मिलता। इसलिये बडी सावधानी और बुद्धिमानी के साथ इस भूमि की यात्रा की जाती है की पहाडियाँ छोटे-छोटे पहाड़ो के रूप मे मिलती हैं। यहाँ पर जो कुएँ मिलते भी हैं, वे बहु गहरे होते हैं। पानी के अभाव मे न जाने कितने मनुष्य तडप-तडप कर मर जाते है। इन गहराई सत्तर से पाँच सौ फीट तक पायी जाती है। इसको जानकर अनुमान लगाया जा कि मरु प्रदेश मे यात्रा करना कितना संकटमय होता है। जयसिह देसिर का एक कुआँ पचास गहराई मे जाकर पानी देता है। इसी प्रकार धोत की बस्ती का कुआँ और गिरप कुआँ साठ के नीचे पानी देता है। हमीर देवरा के कुएँ मे सत्तर और जिझिनियाली मे पछत्तर से अस्स तक की गहराई मे पानी मिलता है।

पराजित होकर सम्राट हुमायूँ के भागने पर इतिहासकार फरिश्ता ने जो वर्णन f वह अत्यन्त रोमाञ्चकारी है उसने लिखा है : ''सम्राट हुमायूँ अपने साथ के लोगो को लेकर की तरफ भागा। वहाँ पर सैकडो कोस की लम्बाई-चौडाई मे केवल बालू थी। उस मरुभूमि न मिलने के कारण सम्राट और उसके साथियो को भयानक कष्ट हुआ। कितने ही लोग कारण त्राहि-त्राहि करने लगे और कुछ लोग जमीन पर गिर गये। तीन दिनो तक लगातार एक बूंद से भेट न हुई। चौथे दिन उनको एक कुआ मिला। उसका पानी बहुत दूर गहराई मे

लिये सभी राज्य अपने यहाँ अधिक ऊँट रखते हैं। जैसलमेर की सेना मे ऊँटो की संख्या दो सौ है। वहाँ के सभी सरदार अपनी सेना रखते हैं और उस सेना मे ऊँट भी होते हैं। प्रत्येक ऊँट पर दो आदमी बैठते हैं। एक का मुख ऊँट के मुख की तरफ और दूसरे का उसकी पूंछ की तरफ होता है। युद्ध मे ऊँटो के प्रयोग कई प्रकार से होते हैं।

खर अर्थात् गदहा—मरुभूमि के अन्य पशुओ मे पाया जाता है। नील गाय, सिंह और हिरन भी मरुभूमि के कुछ भागो मे मिलते हैं। यहाँ पर बाघ, लोमड़ी, सियार और सिंह भी पाये जाते हैं। पालतू पशुओ मे ऊँटो के अतिरिक्त घोडे, बैल, गाये, भेडे और बकरियाँ भी पायी जाती हैं। गदहे हल जोतने मे भी काम आते है। बकरियाँ और भेडो को लोग अधिक संख्या मे यहाँ पर पालते हैं। यहाँ के लोगो का विश्वास है कि बकरियाँ कार्तिक से लेकर चैत तक बिना पानी के रह सकती है। लोगो का यह विश्वास सही नही है। हरी पत्ती और हरी घास खाने के कारण वे कई-कई दिनो तक बिना पानी के बनी रहती हैं, यह सम्भव है। दाऊद पोतरा और भट्टी पोह के थलो को बकरियाँ और भेडें गर्मी के आरम्भ मे सिन्ध के मैदानो मे चली जाती हैं, उनको रखने वाले गडरिया लोग उनके दूध का मट्ठा बनाकर पीते है और उनके मक्खन से जो घी तैयार करते हैं, उसे वे अनाज तथा दूसरी चीजो के लेने मे दे देते हैं। ऊँटो के चराने वाले उनका दूध पीकर अपनी रक्षा करते हैं और रोटी के स्थान पर जङ्गली फल खाते हैं।

वृक्षो मे करील अथवा खैर का हम पहले उल्लेख कर चुके हैं। खैजरी के वृक्ष के छिलके को सुखाकर आटा तैयार किया जाता है। इसको वहाँ की भाषा मे सांग्री कहते हैं। फन के वृक्ष वैसाख और जेठ मे फल देते है। पीलू भोजन के काम मे आता है। वहाँ के लोग बबूल के गोंद को एकत्रित करते है। बेरो के वृक्ष भी पाये जाते हैं। इस प्रकार के वृक्षो की संख्या वहाँ अधिक होती हैं। जवास के रस का गोंद तैयार किया जाता है, वह औषधियो मे काम आता है।

करील वृक्ष को भारतवर्ष मे सभी लोग जानते हैं। इसे खैर भी कहते है। भारत के दूसरे स्थानो मे उसका अचार डाला जाता है। लेकिन मरुभूमि मे वह भोजन के लिये एकत्रित किया जाता है। यह एक तरह की झाडी का वृक्ष है। उसकी ऊँचाई दस फीट से पन्द्रह फीट तक होती है। इसकी हरी-हरी शाखाओ मे पत्तियाँ नही होती। उनमे लाल रङ्ग का फूल निकलता है और फल काले रङ्ग का होता है। खाने के पहले एकत्रित किये हुये करील के फल चौबीस घण्टे तक पानी मे भिगोकर रखे जाते है। उसके बाद उस पानी को फेंककर दो बार दूसरे पानी मे धोया जाता है। इसके पश्चात् उसे उबालकर नमक के साथ खाया जाता है। धनिक लोग घी मे इसे तैयार करके रोटी के साथ खाते हैं। सभी लोग अपने घरो पर इसे सुखाकर रखा करते हैं।

सज्जी—एक छोटा सा पेड है। वह विशेषकर मरुभूमि के उत्तरी भाग मे पैदा होता है। जैसलमेर के खदल नामक स्थान मे इसके वृक्ष अधिक पाये जाते हैं और भी कुछ स्थान हैं, जिनमे सज्जी के पेड बहुत पाये जाते हैं। साफ सज्जी के छोटे-छोटे पेडो को जमीन खोदकर भर देते हैं और आग लगातार तीन-तीन, चार-चार दिनो के बाद जो सज्जी निकाली जाती है, उसको साफ करते हैं। इस निकाली हुई सज्जी का बहुत से लोग व्यवसाय करते हैं। सज्जी रुपये की एक सेर बिकती है। चारूं और मारवाड के रहने वाले इसको खरीद लेते है और वे फिर दूसरे दूकानदारो को बेचकर लाभ उठाते हैं। यह सज्जी तैयार हो करके सभी भागो मे जाकर बिकती है। सिन्ध मे इसका व्यवसाय अधिक होता है। यहाँ पर खरबूजा बहुत पैदा होता है। चिपरा, वामन और गोबर नाम की उनकी तीन किस्मे होती हैं। यह खरबूजा खाने मे अधिक स्वादिष्ट होता है।

———

ही नाम है। सोढा राजवंश के पूर्वज रेगिस्तान पर शासन करते थे . उन्ही दिनो मे भाटी
से यहाँ पर आये थे। उनके आने के बाद का उल्लेख ग्रन्थो मे कुछ नही मिलता। इस दशा
और अब्दुल फजल ने जो कुछ लिखा है, उसका हमे आधार लेना पड़ता है। अब्दुल फजल
है :—

"प्राचीनकाल में सेहरीस नामक नरेश अलोर में राज्य करता था। उसके राज्य
उत्तर मे काश्मीर, पश्चिम मे तेहरान और दक्षिण मे समुद्र तक था। ईरानी फौज ने इस
आक्रमण किया था। उस युद्ध मे अलोर का राजा मारा गया और ईरानी फौज लूट मार
बाद वापस चली गयी। अलोर के राजा के मारे जाने पर रायसा अथवा सोढा वहाँ के रा
सन पर बैठा। इस वश के लोग वलीद के खलीफा के समय तक वहाँ पर शासन करते रहे
दिनो मे ईराक के गवर्नर होजोज ने सन् ७१७ ईसवी में मोहम्मद बिन कासिम को रवाना
उसने हिन्दू राजा दाहिर को पराजित किया। दाहिर उस युद्ध में मारा गया। इसके पश्चा
का वश वहाँ पर राज्य करता रहा। दाहिर उस युद्ध में मारा गया। इसके पश्चात् अनसेर
वहाँ पर राज्य करता रहा। उसके पश्चात् सुमरा वश का शासन चला और आखीर मे सा
लोगो ने वहाँ पर शासन किया। उन लोगो ने अपने आपको जमशेद का वशज कह कर
उपाधि दी।"

इसी प्रकार का वर्णन करते हुये फरिश्ता ने लिखा है : "मुहम्मद बिन कासिम के
के बाद अनसेरी वश के लोगो ने सिन्ध में अपना राज्य कायम किया। उसके पश्चात् जम
उस राज्य को छीनकर अपने अधिकार मे कर लिया और पांच सौ वर्षों तक वे लोग शा
रहे। सुमरा लोगो ने सुमना वंश के राज्य को नष्ट कर दिया। सुमना लोगों के सरदार
जाम थी। अब्दुल फजल ने इस वंश का नाम सुमरा के स्थान पर समा लिखा है। साहन
उत्पत्ति अनैतिक मानी जाती है। उस वंश के लोग सिन्ध मे बेखर और तत्ता के बीच मे
थे। वे लोग अपने आपको जमशेद का वंशज कहते हैं। खोज करने के बाद मालूम ह
सुमना, सेमना और सामा एक ही वंश का नाम है और वह वास्तव में प्रसिद्ध यदुवंश की
है। इस शाखा को भिन्न-भिन्न नामो से लिखा गया है। उसकी राजधानी सुमा का को
नगरी थी। महेवा परिवार के एक सम्बन्धी की जागीर तिलवारा है और बालोतरा
प्रधान सामन्त अहवा की जागीर में थी। बालोतरा और सिन्द्री की प्रसिद्धि कुछ दूसरी बा
इन दोनो पर प्रसिद्ध दुर्गादास का अधिकार था। मरुभूमि मे दुर्गादास का नाम सर्वत्र प्रि
वंशजों का अधिकार अब तक सिन्द्री नगर पर पाया जाता है। महेश जागीर की वार्षिक अ
हजार रुपये की मानी जाती है। वहाँ का सरदार कभी-कभी अपने दरबार मे आता है।
जब कोई सङ्कट आता है अथवा असाधारण प्रसङ्ग पैदा होता है तो उसकी सूचना उसे द
और उस समय उसका आना आवश्यक होता है।"

इन्दुवती—यहाँ पर इन्दु जाति के राजपूतो की बस्ती है और उनका वंश परिहारो
प्रसिद्ध शाखा है। इन्दुवती बालोतारा से उत्तर की तरफ जोधपुर की राजधानी से पश्चिम
है। इसके उत्तर तरफ गोगा का थल पाया जाता है। इन्दुवती का थल लगभग तीन
में है।

गोगादेव का थल—गोगा का थल चौहानो के इतिहास से विशेष सम्बन्ध रखत
थल इन्दुवती की उत्तर तरफ है। इन दोनो की परिस्थितियाँ बिलकुल एक हैं। यहाँ पर

प्रायश्चित्त करने के लिए ढूंढ के शिखर पर जाकर तपस्या करने लगा। उस जनश्रुति का अभिप्राय कुछ इस प्रकार जान पडता है।

अयोध्या कौशल राज्य की राजधानी थी। वहाँ के राजा रामचन्द्र के दूसरे पुत्र कुश से कुशवाहा अथवा कछवाहा वश की उत्पत्ति हुई। कुश के किसी वशज ने अपने पूर्वजो की राजधानी को छोडकर शोण नदी के किनारे रोहतास नाम का एक दुर्ग बनवाया था। उसके बहुत दिनो बाद उसी वश के राजा नल ने सन् २९५ ई० मे नरवर अथवा निषध नाम की राजधानी कायम की। *

राजा नल के उत्तराधिकारियो ने 'पाल' की उपाधि धारण की थी। राजा नल से तेतीस पीढियो के बाद सोढासिंह के पुत्र धोलाराय को उसके पिता के राज्य से निकाला गया और उसने सन् ६६७ ईसवी मे ढूंढाड नाम की राजधानी कायम की।

ऊपर यह लिखा जा चुका है कि जयपुर का प्राचीन नाम ढूंढाड था। अङ्ग्रेज लेखको ने जयपुर को अम्बेर के नाम से लिखा है। अम्बेर आमेर के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस राज्य का इतिहास लिखने के लिए ऐतिहासिक सामग्री हमे मिली है, उसी का हमे आश्रय लेना पडता है। राजा नल से इकतीस पीढी के बाद सोढादेव ने नरवर मे शासन किया। उसकी मृत्यु हो जाने पर उसके भाई ने अपने भतीजे धोलाराय के जो उस समय केवल शिशु अवस्था मे था अधिकारो को छीन लिया और सिंहासन पर बैठा। धोलाराय की मां अपने देवर का अत्याचार देखकर घबरा गयी और अपने पुत्र के प्राणो की चिता करने लगी। वह किसी प्रकार अपने बालक शिशु की रक्षा करना चाहती थी। उसे अपने देवर से बहुत भय उत्पन्न हो गया था। उसको उससे सभी प्रकार की आशकाये थी। इसलिए उस अनाथ माता ने अपने छोटे बच्चे के प्राणो की रक्षा के लिए भिखारिणी का रूप धारण किया और अपने बालक धोलाराय को कपडो मे लपेट कर वह अपने नगर से निकल गयी। अपने बालक को लिए हुए भिखारिणी माता जयपुर राज्य से पांच मील की दूरी पर खोह गांव में पहुँची। उस गांव मे मीना लोगो की आबादी थी। उस गांव के बाहर एक स्थान पर रुककर उसने कुछ देर विश्राम करने का इरादा किया। इस प्रकार के कष्टो का सामना करने के लिए उसके जीवन मे पहला अवसर था। वह भूख और प्यास से पीडित हो रही थी। पैदल चलने के कारण बहुत थक गयी थी। अपने चारो तरफ विपदाओ का पहाड देखकर वह बहुत घबरा रही थी। उसकी समझ मे न आता था कि मेरे और मेरे बच्चे के भविष्य मे क्या होने वाला है। उसके छोटे बालक का मुख सूख रहा था उसकी यह दुरवस्था देखकर भिखारिणी राजमाता की घबराहट बहुत बढ गयी। उस स्थान के निकट एक वृक्ष था। उसमे कुछ फल दिखायी पडे। रानी ने उसके फलो को

---

* कुछ लेखको का कहना है कि बिहार का रोहतासगढ राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व का बनवाया हुआ है। साधारण तौर पर यह बात सही भी मालूम होती है —अनु०

* एक दूसरे ऐतिहासिक विवरण से प्रकट होता है कि राजा नल ने सम्वत् ३१५ मे नरवर की स्थापना की थी। परन्तु नल से धोलाराय तक तैंतीस पुरुषो का जन्म होता है। यदि इनमे से प्रत्येक ने बाईस वर्ष तक राज्य किया तो ७२६ वर्ष होते हैं। धोलाराय सम्वत् १०२३ मे निकाला गया था। इसलिए २७६ को घटा देने से २९७ वर्ष बाकी रहते हे। इस प्रकार ५४ वर्ष का अन्तर पडता है। यदि उनके शासन काल को २१ वर्ष का मान लिया जाय तो बहुत कम अन्तर रह जाता है और सम्वत् ३५१ मे निषध राजधानी की स्थापना सही मालूम होती है।

पट्टन और इस नगर में व्यवसायिक सम्बन्ध था। परन्तु लुटेरो के अत्याचारो के कारण वह
बिलकुल नष्ट हो गया। यहाँ पर भेड़ो और भैसो के चरने के लिये बहुत-सी भूमि पायी जा

मल्लिनाथ का थल—इस थल का नाम बरमेर भी है। प्राचीनकाल मे यहाँ पर म
मालिनी जाति के लोग रहते थे। बहुत से लोगों मे वे लोग राठौर वश के नाम से प्रसिद्ध है
वास्तव मे वे लोग चौहान हैं और यह वही वश है, जिसमे जूनाचोटन के राजा ने जन्म
पिछले दुष्काल के पूर्व बरमेर की आबादी बारह सौ घरो से कम की न थी और उनमे सभ
के लोग रहते थे। उनकी चौथाई आबादी साँचोर ब्राह्मणो की थी। बरमेर उसी पहाड़ी
हुआ है, जिस पर शिव और कोटरा आबाद है। बरमेर के पास उस पहाडी की ऊँचाई क
सौ फीट और कही पर तीन सौ फीट तक है। शिव से लेकर बरमेर तक एक विस्तृत मैदान
पर अनाज की अच्छी पैदावार होती है। बरमेर का सरदार पद्मसिह उसी वंश का है, जि
कोटरा और जैसोल के राजाओ ने जन्म लिया है। इन नरेशो का वंश एक ही है। बरमेर
चौतीस ग्राम है।

खेरधूर—खेर का उल्लेख कई बार किया जा चुका है। गोहिलो को पराजित
पहले राठौरो ने यहाँ पर अधिकार किया था। गोहिल लोग यहाँ से भागकर खम्भात की
गये थे। वे लोग अब गोगा और भावनगर मे शासन करते हैं। ऊंटो पर यात्रा करने वा
को लूट लेना उन लोगो का एक व्यवसाय बन गया था। मरुभूमि मे नौ दुर्ग थे, जिन
किया जा चुका है। राजधानी खेरल का दुर्ग उनमें से एक था और वह दुर्ग प्रमार
अधिकार मे था। लेकिन उसका विनाश बहुत दिनो से हो रहा था और अब वह एक
गाँव रह गया है। इन दिनो मे वहाँ पर जो घर है, उनकी संख्या चालीस से अधिक नही
रङ्ग की पहाडियो ने उसे चारो तरफ से घेर रखा है। जूना चोटन को बहुत से लोग प्रा
भी कहते है। वास्तव मे जूना और चोटन दो अलग-अलग स्थान है। कहा जाता है कि
मे वहाँ पर हथ-राज्य की राजधानियाँ थी। हथ राज्य के सम्बन्ध मे कोई विशेष उल्लेख नह
केवल इतना ही मालूम होता है कि उसमे चौहानो का शासन था। वहाँ की बहुत-सी बा
का प्रमाण देती है कि पूर्वकाल मे यह एक प्रसिद्ध राज्य था और उसके नगर बहुत
प्राचीनकाल मे जूना चारो तरफ से पहाड़ियो से घिरा हुआ था और प्रवेश करने के लिये
तङ्ग रास्ता था। उसके सामने छोटा-सा एक दुर्ग टूटी-फूटी अवस्था मे अब भी पाया जा
पहाडी के शिखर पर दो अन्य दुर्गों के टूटे-फूटे भाग दिखायी देते हैं।

जिस पर्वत पर जूना और चोटन बसे हुए हैं, उसके दूसरे सिरे पर धोरिमन न
नगर है। वहाँ पर एक पवित्र स्थान है, जहाँ पर पूजा करने के लिये श्रावण सुदी तीज
लोग एकत्रित होते है। इस प्रकार की कुछ बातो को छोडकर वहाँ के सम्बन्ध मे कोई वि
नही मिलता।

नागर और गुरु—ये दोनो नगर लूनी नदी के किनारे पर बसे हुए है और वहाँ
के राज्य की सीमा समझी जाती है। पहले किसी समय दोनों नगर चौहानो के राज्य
पर मारवाड के पश्चिमी थलो का वर्णन समाप्त होता है। मारवाड स्वय एक मरुभूमि क
है, जहाँ पर अनाज की पैदावार का कोई सहारा नही रहता। उस पर भी सन् १८१२
उसको एक भयानक दुरवस्था मे पहुँचा दिया था। इसके अतिरिक्त पिछले तीस वर्षों से

के भावो से अपरिचित न था। किसी प्रकार की अभिन्नता न होने के कारण दोनो में सभी प्रकार की बातें प्रायः हुआ करती। उसके साथ परामर्श करने मे घोलाराय कभी सकोच का अनुभव न करता। उसके मन की अभिलाषा को समझकर मीना कवि ने कहा : "मीना राजा को नष्ट करके आप उसके सिंहासन के अधिकारी बन सकते हैं।"

घोलाराय को अन्धकार मे प्रकाश दिखायी दिया। वह इसी प्रकार का परामर्श चाहता था। उसके मन की गम्भीरता को समझकर कवि ने कहा : "चिरकाल से प्रचलित प्रथा के अनुसार दिवाली के दिन सभी मीना राज्य के सरोवर मे स्नान करते हैं। उस समय यहाँ का राजा भी स्नान करने के लिए आता है। ऐसे अवसर पर अपने सैनिको को लेकर आप अकस्मात् उस पर आक्रमण कीजिए। उसके मारे जाने पर आपको यहाँ के सिंहासन पर बैठने का अवसर मिलेगा।"

कवि के इन परामर्श को सुन कर घोलाराय ने गम्भीरता के साथ विचार किया और उसने एक योजना बना डाली। दिवाली का त्योहार आने पर घोलाराय ने बडी सावधानी और बुद्धिमानी से काम लिया। उसने दिल्ली पहुँच कर सैनिक सहायता प्राप्त की और अपनी योजना के अनुसार वह एक राजपूत सेना के साथ खोहगाँव के समीप पहुँच गया। मीना लोगो के साथ स्नान के लिए सरोवर मे प्रवेश करने पर घोलाराय ने एक साथ उस पर आक्रमण किया। राजा के बहुत से रक्षक सरोवर के भीतर मारे गये। घोलाराय ने अपने हाथ से मीना राजा का सहार किया और इसी समय उसने मीना कवि को भी —जिसने घोलाराय को इस प्रकार परामर्श दिया था—मार डाला। उसको मारने के समय घोलाराय ने कहा : "जो अपने राजा के साथ विश्वासघात कर सकता है, वह सहार मे किसी का विश्वास-पात्र नही हो सकता।" घोलाराय ने मीना राजा को मार कर खोहगाँव का अधिकार प्राप्त कर लिया। यहीं से ढूँढार, आमेर अथवा वर्तमान जयपुर राज्य की सृष्टि हुई।

खोहगाँव पर अधिकार करने के बाद घोलाराय ने अपने राज्य को विस्तार देने की चेष्टा की। उन दिनो मे जयपुर से तीस मील पूर्व की तरफ बाण गगा के समीप दिओसा नामक स्थान मे बडगूजर राजपूत रहा करते थे। घोलाराय ने अपनी सेना लेकर उनके दुर्ग के पास जाकर बड-गूजर के राजा के पास सन्देश भेजा : "आप अपनी लडकी का विवाह मेरे साथ कर दे।"

बडगूजर के राजा ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नही किया और कहा कि हम दोनो ही सूर्य वशी हैं। इसलिए यह विवाह नही हो सकता। लेकिन दोनो तरफ की बातचीत होने के पश्चात् बडगूजर के सरदार ने उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उसने अपनी लडकी का विवाह घोलाराय के साथ कर दिया। बडगूजर के सरसार के कोई पुत्र न था। इसलिये उसने घोलाराय को अपने राज्य का उत्तराधिकारी बना दिया और उसके बाद उसने घोलाराय के हाथो मे राज्य का प्रबन्ध सौंप दिया।

इस विवाह के उपरान्त घोलाराय की शक्तियाँ पहले की अपेक्षा अधिक विशाल हो गयी। उसने अपने राज्य को बढ़ाने की इच्छा की। माची नामक स्थान मे राव नाटू नाम का एक मीना राजा रहता था। घोलाराय ने उसको पराजित करने का विचार किया और माची पर उसके आक्र-मण करने पर दोनो ओर से युद्ध हुआ। उस युद्ध मे घोलाराय की विजय हुई। मीना लोगो की सेना मारी गयी। घोलाराय ने माची राज्य मे पहुँच कर अपना अधिकार किया और खोहगाँव की अपेक्षा उस नगर को उसने अधिक पसन्द किया। इसी आधार पर वह अपनी राजधानी खोहगाँव से माची ले आया और वहाँ पर उसने एक नया दुर्ग बनवाया। उस दुर्ग का नाम उसने रामगढ रखा।

विवाह करने के लिये उसने राजकुमारी की माँग भी की। इसके परिणाम स्वरूप राठौ
दुगारा मे उसका युद्ध हुआ। यह स्थान धरनीधर से दस मील की दूरी पर था। उस युद्ध
ने बालोच सेना को बुरी तौर पर पराजित किया। राठौरो ने इतने पर ही सन्तोष न
बीजर खाँ ने मारवाड़ से दो माँगे की थी। एक तो राठौरो के राज्य मारवाड से कर माँ
विवाह करने के लिये मारवाड की राजकुमारी माँगी थी। इन दोनो माँगो का पुरस्कार
को देने के लिये राठौर राजपूत तैयारी करने लगे। उसी समय भाटी और चन्दावत दो
बीजर खाँ को पुरस्कार देने के लिये प्रतिज्ञाये की और वे दोनो मारवाड़ राज्य के राज
बीजर खाँ के दरबार मे गये। बीजर खाँ के सामने एक लिखा हुआ कागज उन सरद
स्थित किया। उस कागज को देखते ही बीजर खाँ ने समझा कि मारवाड के राजदूत
की सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये हैं। उसने बडी तेजी के साथ उस कागज पर लिखी हुई
देखा और उसने उसी समय मुँह बनाते हुए धीरे-धीरे कहा—'इस कागज मे राजकुमार
देने का तो कोई जिक्र ही नही।' उसके इस वाक्य के समाप्त होने के साथ-साथ चन्दावत
बड़ी तेजी के साथ अपनी तलवार का प्रहार बीजर खाँ के वक्ष स्थल पर किया और
डोला है।' और "यह कर है", कहकर उसने अपनी तलवार का दूसरा प्रहार उस प
बीजक खाँ भयानक रूप से जख्मी होकर सिंहासन पर गिर गया। उसी समय उसकी मृत्यु
बीजर खाँ के गिरते ही वहाँ पर दोनो राजपूत सरदारो पर आक्रमण हुआ। उस आक्रम
वत सरदार ने इक्कीस और भाटी सरदार ने पाँच आक्रमणकारियो का सहार किया।
आक्रमणकारियो ने उन दोनो सरदारो के टुकडे-टुकडे कर डाले।

बीजर खाँ के मारे जाने पर उसका भतीजा, सोभान का बेटा फतेहअली वहाँ के र
पर बैठने के लिये चुना गया। कुलोरा का पुराना परिवार भाग कर भुज और राजपूताना
और उसने कन्धार का आश्रय ग्रहण किया। वहाँ पर शाह ने पच्चीस हजार सेना पर उ
बना दिया। उस सेना के द्वारा उसने सिन्ध को विजय किया और भयानक अत्याचार
वहाँ पर अपनी अमानुषिकता का परिचय दिया। फतेहअली ने—जो भागकर भुज चला
अपने अनुयायी साथियो को एकत्रित करके शाह की फौज पर आक्रमण किया और उ
करके शिकारपुर के बाहर उसने भीषण नर-सहार किया। इसके बाद उसने वहाँ पर अ
लिया। फतेहअली वहाँ से लौटकर हैदराबाद चला गया। निर्दय कुलोरा लोगो ने एक बा
पर आक्रमण किया और अपनी भयानक नीचता का व्यवहार करके उन लोगो ने शाह
भगा दिया। वह इधर-उधर घूमता हुआ मुलतान होकर जैसलमेर चला गया और पोकर
वह रहने लगा। वहाँ पर उसकी मृत्यु हो गयी। पोकरण का सरदार उसका उत्तराधिका
उसने स्वर्गीय सिन्ध के बादशाह की सम्पत्ति पर अधिकार करके उस निर्वासित शाह की
उत्तर की तरफ बनवायी।

इन घटनाओ का सम्बन्ध मारवाड़ और सिन्ध के इतिहास के साथ है। लेकिन सो
के अन्तिम प्रभाव को प्रकट करने के लिये यहाँ पर उनका उल्लेख किया गया है। यह सब
वजीर ने जिसका सर्वनाश विजयसिह के सरदारो ने राजदूत बनकर किया। सोढा राजा
से भागकर चला गया था। वहाँ पर सिन्धी और भाटी लोगो ने मिलकर अधिकार
लेकिन सिन्धी फौज के पराजित होने पर विजयसिंह ने सोढा राजा को अमरकोट के f
अधिकार करने के लिये फ़िर से तैयार किया। इसके फलस्वरूप, अमरकोट पर आक्रमण

उस समय मीना लोग अत्यन्त शक्तिशाली थे। भारमल्ल ने नाहन का विध्वस करके उसके स्थान पर मालिवाण नाम का नगर बसाया।

कुन्तल के बाद पजून उसके राजसिंहासन पर बैठा। उसके बल-विक्रम का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उसके साथ चौहान सम्राट पृथ्वीराज की बहन का विवाह हुआ था।* सिंहासन पर बैठने के समय पृथ्वीराज ने एक सौ अस्सी राजाओ को अपने यहाँ आमंत्रित किया था और आने वाले राजाओ मे राव पजून को ऊँचा स्थान दिया गया। पृथ्वीराज के साथ अनेक युद्धो मे राव पजून ने सग्राम किया और दो सग्रामो मे इसको बहुत बडी ख्याति मिली। शहाबुद्दीन गोरी को प्रथम युद्ध में पराजित करने का श्रेय बहुत-कुछ राव पजून को भी था। सग्राम से भागने के बाद पजून ने गोरी का पीछा किया और वह गजनी तक उसका पीछा करता हुआ गया था। चन्देलो के नगर महोबा पर अधिकार कर लेने से राव पजून की बडी प्रसिद्ध हुई थी। वह महोबा का शासक भी नियुक्त किया गया था। पृथ्वीराज ने कन्नौज के राजा जयचन्द की लडकी सयुक्ता को बल पूर्वक लाकर उसके साथ विवाह किया। उस समय पृथ्वीराज और जयचन्द मे जो भीषण युद्ध हुआ था। उस युद्ध मे पृथ्वीराज की तरफ से जो चौंसठ राजाओ ने युद्ध किया, उन चौसठ राजाओ मे एक राव पजून भी था। वह युद्ध भयानक रूप के लगातार पाँच दिव तक हुआ था। उस युद्ध मे राव पजून ने कन्नौज की विशाल सेना के साथ भयानक सग्राम किया और उसके कारण पृथ्वीराज सयुक्ता को लेकर सफलता पूर्वक दिल्ली चला गया। उस युद्ध में यद्यपि राव पजून मारा गया, लेकिन पृथ्वीराज की सफलता का बहुत कुछ कारण राव पजून था। उसने प्राण देकर युद्ध मे पृथ्वीराज को विजयी बनाया। उसकी वीरता का वर्णन कवि ने अपने ग्रन्थ मे बहुत अधिक किया है। राव पजून के साथ मेवाड का गहिलोत सामन्त भी उस युद्ध मे शामिल था और वे दोनो एक साथ युद्ध करते हुए मारे गये। राव पजून के युद्ध करने की प्रशसा करते हुए प्रसिद्ध कवि चन्द ने लिखा है : जिस समय पृथ्वीराज का एक शूरवीर गोविन्दराय मारा गया उस समय शत्रु पक्ष के लोग बहुत प्रसन्न हुये। परन्तु उसके कुछ ही समय के बाद राव पजून अपने दोनो हाथो से भीषण मार काट करता हुआ आगे बढ़ा। उस समय चार सौ शत्रुओ ने एक साथ राव पजून पर आक्रमण किया। यह देखकर पीपा, अजान, बाहु, नरसिंह, कच्चरराय आदि सामन्तो ने पजून राव की सहायता मे शत्रुओ के आक्रमण को रोकने की चेष्टा की। दोनो ओर से तलवारे और भाले चल रहे थे और रणभूमि मे सहस्रो की सख्या मे शूरवीर घायल होकर गिरते हुये दिखायी दे रहे थे। रक्त की नदी बह रही थी। राव पजून ने एतमाद्र पर जोर के साथ आक्रमण किया। उसका कटा हुआ सिर नीचे गिरा। उसके गिरते ही शत्रुओ के सैकड़ो भाले एक साथ राव पजून पर चले। पजून अपनी रक्षा न कर सका और वह भयानक रूप से घायल होकर गिर गया। गोविन्दराय और राव पजून के मारे जाने के समय एक घडी दिन बाकी रह गया था। राव पजून के गिरते ही शूरवीर पाल्हन ने युद्ध मे प्रवेश किया। राव पजून के भाई पाल्हन के पहुँचते ही युद्ध की गति फिर भयानक हो उठी। कुछ देर के सग्राम के बाद कन्नौज की सेना की गति मन्द पड गयी।

राव पजून युद्ध में पृथ्वीराज की ढाल होकर रहता था। उसने अनेक भयानक अवसरो पर पृथ्वीराज की रक्षा की थी। कन्नौज की सेना के साथ होने वाले युद्ध मे भी उसने अपनी जिस वीरता का परिचय दिया, उसका वर्णन नही किया जा सकता। उसने अगणित शूरवीरो का सहार किया

---

* दूसरे लेखको के अनुसार पजून पृथ्वीराज का बहनोई नही, साला था। —अनुवादक

वंश को नही देते। क्योकि उनकी सन्तान का सम्बन्ध बलौच वंश के साथ कभी भी हो इसका सन्देह उनको बना रहता है। लेकिन मारवाड के राठौर न तो अपनी लडकियाँ और न उनकी लड़कियाँ लेगे।

जातियाँ—मरुभूमि और सिन्धु की घाटियो में जो जातियाँ रहती है, यदि उनके जीवन की खोज की जाय तो अनेक महत्वपूर्ण बातो का पता लग सकता है। खोज करने बात को आसानी के साथ जान सकेगे कि मरुभूमि की अनेक जातियाँ आज के पहले कु और सङ्कटो मे पड़कर उनके जीवन का वातावरण आज कुछ और हो गया है। जीवन की स्थितियाँ मरुभूमि की अनेक जातियो के सम्बन्ध मे मिलेगी। जिन वशो का जन्म हिन्दू ज था, वे वश आज किसी दूसरे ही धर्म की चादर से ढके हुए दिखायी देते हैं। इस विषय विस्तार देना आवश्यक नही मालूम होता। जीवन के सङ्कटो मे इस प्रकार के परिवर्तन ब भाविक नही कहे जा सकते। इसलिये इस वर्णन को हम यहाँ पर समाप्त किये देते है।

मुसलमानो मे कुलोरा और सेहरी नाम की दो जातियाँ ऐसी है, जिनकी उत्पत्ति मे हम निश्चित रूप से कुछ नही लिख सकते। जून, राजूर, ओमुरा, लुमरा, मेरमोर अथ बलोच, लुमरिया, मालूका, सुमैचा, मगुलिया, दाहिया, जोहिया, कैरो, मगुरिया, ओदुर बाबुरी, ताबुरी, चरेन्दो, खोसा, सुदानी और लोहाना आदि जातियो ने अपने प्राचीन धर्म कर इस्लाम को स्वीकार कर लिया है। मरुभूमि की इस प्रकार न जाने कितनी जा प्राचीनकाल मे हिन्दू थी—आज इस्लाम के आवरण मे दिखायी देती है। ऐसा क्यो हुआ उत्तर आसानी के साथ नही दिया जा सकता है। एक विस्तृत खोज के बाद जो निष्कर्ष सकता है, वही उसका उत्तर हो सकता है। उनके सम्बन्ध मे बहुत आसानी के साथ, यह सकता कि जीवन की परिस्थितियो और उनके सङ्कटो ने उनमें इस प्रकार के परिवर्तन क लेकिन यह बहुत सम्भव है कि ऐतिहासिक खोज के बाद यह उत्तर सही साबित न हो।

भट्टियो, राठौरो और चौहानो तथा उनकी शाखाओ मालिनी और सोढा वश का मे किया जा चुका है। यहाँ पर सोढा वश की कुछ विशेष बातो का वर्णन करना आवश्य होता है।

सोढा हिन्दू-जाति का एक अङ्ग है। परन्तु इस वश के लोगो के आचरण अब हि नही रह गये। ये लोग खाने और पीने के विचारो मे अब मुसलमानो के बहुत निकट पहुँ उदाहरण के तौर पर सोढा वश के लोग उस बरतन मे बिना किसी सकोच के पानी जिसमे उनके सामने मुसलमानो ने पानी पिया हो। यही अवस्था हुक्का पीने के सम्बन्ध इस वश के लोग बहुत दिनो से निर्धन होते जाते है और अपनी आर्थिक निर्बलता मे उन चोरी और लूट के कार्य को भी अपना लिया।

सोढा लोग जितने ही गरीब होते जाते हैं, उनका उतना ही नैतिक पतन होता जात गरीबी मे वे लुटेरे और चोर बन गये है। सेहरीस और खामा लोग सङ्गठित होकर जहाँ सर पाते हैं, लूटमार करते हैं। सोढा लोग भी उनके सङ्गठन मे सम्मिलित हो गये है। के लोग दाऊदपोतरा से लेकर गुजरात तक लूट किया करते हैं। सोढा लोग तलवार औ अपने साथ रखते है। उनकी कमर मे एक तेज और भयानक कटार भी रहता है। इनमे बन्दूके भी रखते हैं। उनकी पोषाक भट्टो और मुसलमानो से मिलती-जुलती है। वे लोग से पहचाने जाते हैं। मरुभूमि मे वे फैले हुये पाये जाते है। इस वश की बहुत-सी शाखाये हैं उन शाखाओ मे अधिक प्रसिद्ध है।

था, वह सर्वथा सफल हुई और उसके फलस्वरूप वह भारतवर्ष का सबसे बड़ा सम्राट माना गया। अपनी इस नीति का श्रीगणेश अकबर ने भगवानदास से आरम्भ किया था। उसने किन उपायो से कछवाहा राजा भगवानदास को मिलाकर अपना लिया था, उसका विशेष उल्लेख मुझे कही पढने को नही मिला। सम्मान देकर कोई भी किसी के हृदय पर अधिकार कर सकता है, मालूम होता है कि अकबर ने भगवानदास के साथ इस नैतिक बल का प्रयोग किया था और उससे राजा भगवानदास इतना प्रभावित हुआ था कि उसने शाहजादा सलीम के साथ जो बाद मे जहाँगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ—अपनी लडकी का विवाह कर दिया। उस लडकी से जहाँगीर के लडके खुसरो का जन्म हुआ।※

भगवानदास के भतीजे उत्तराधिकारी मानसिंह को अकबर के दरबार मे श्रेष्ठ स्थान मिला था। भगवानदास ने उस दरबार मे सम्मानित होकर सदा मुगल शासन का हित किया था और अनेक अवसरो पर अपने आपको सङ्कट मे डालकर मुगल शासन का हित किया। खुतन से लेकर समुद्र तक कितने ही राज्यो को अपनी तलवार से विजय करके वहाँ पर उसने मुगलो की पताका फहरायी थी। मानसिंह ने उडीसा और आसाम को जीतकर उनको बादशाह अकबर के अधीन बना दिया था। राजा मानसिंह से भयभीत होकर काबुल को भी अकबर की अधीनता स्वीकार करनी पडी थी। अपने इन कार्यों के फल स्वरूप मानसिंह बङ्गाल, बिहार, दक्षिण और काबुल का शासक नियुक्त हुआ था।

बादशाह अकबर ने राजपूत राजाओ पर प्रभुत्व कायम करने के लिये जिस नीति का आश्रय लिया था और उनके साथ वैवाहिक सम्बन्ध जोडे थे, वह नीति किसी समय सङ्कटपूर्ण भी हो सकती है, इसका स्पष्ट प्रमाण मानसिंह के द्वारा बादशाह अकबर को मिला था। जिन दिनो मे बादशाह अकबर भयानक रूप से बीमार होकर अपने मरने की आशङ्का कर रहा था, मानसिंह ने अपने भाञ्जे खुशरो को मुगल सिंहासन पर बिठाने के लिये षडयन्त्रो का जाल बिछा दिया था। उसकी यह चेष्टा दरबार मे सबको मालूम हो गयी और वह बङ्गाल का शासक बनाकर भेज दिया गया। उसके चले जाने के बाद शाहजादा खुसरो को कैद करके कारागार मे रखा गया। मानसिंह चतुर और दूरदर्शी था। वह छिपे तौर पर अपने भाञ्जे का पक्ष समर्थन करता रहा। मानसिंह के अधिकार मे बीस हजार राजपूतो की सेना थी। इसलिये बादशाह ने प्रकट रूप मे उसके साथ शत्रुता नही की। कुछ इतिहासकारो ने लिखा है कि बादशाह ने दस करोड रुपये देकर मानसिंह को अपने अनुकूल बना लिया था। मुस्लिम इतिहासकारो ने लिखा है कि हिजरी १०२४ सन् १६१५ ईसवी मे मानसिंह की बङ्गाल मे मृत्यु हुई। परन्तु दूसरे इतिहासकारो से पता चलता है कि वह उत्तर को तरफ खिलजी

※ मुस्लिम इतिहासकारो ने लिखा है कि हिजरी ९९३ सन् १५८६ ईसवी मे भगवानदास की लडकी का विवाह शाहजादा सलीम के साथ हुआ था। उस समय राजा भगवानदास, उसका गोद लिया हुआ पुत्र मानसिंह और मानसिंह का लडका—तीनो सम्राट की सेनाये सम्मान पूर्ण स्थान पा चुके थे। मानसिंह को अधिक गौरव मिला था, क्योंकि उसने कई अवसरो पर बादशाह की प्रशसनीय सहायता की थी।

मूल लेखक की उपरोक्त टिप्पणी का समर्थन दूसरे लेखको के द्वारा नही होता। उन लेखको का कहना है कि मानसिंह भगवानदास का गोद लिया हुआ लडका नही था। बल्कि भगवन्तदास का लडका था और भगवानदास भगवन्तदास का भाई था। इस समय की सही घटनाये ये हैं कि राजा भारमल्ल ने अकबर के साथ अपनी लडकी का विवाह किया था। उसके बाद उसके बेटे भगवानदास ने अपनी लडकी का विवाह शाहजादा सलीम के साथ किया। —अनुवादक

करती हैं। इन जातियो के लोग एक दूसरे के बरतनों को खाने-पीने के काम मे लाने के ि
प्रकार का विचार नही करते। उनमे मुरदे जलाये नही जाते। बल्कि दरवाजे की देह
जमीन मे गाड़ दिये जाते है। जिनके पास रुपये-पैसे का सुभीता होता है, वे एक चबूतरा
देते हैं। इस प्रकार जो चबूतरा बनता है, उस पर शिव की मूर्ति और उसके ऊपर जल
हुआ कलश रखा जाता है। यहाँ पर कोली और लोहाना लोगो के सिवा सभी हिन्दू जाति
जनेऊ पहनते हैं। परन्तु भारतवर्ष में केवल द्विजाति के लोगो को जनेऊ पहनने का अधि
जाता है।

रेवारी—भारतवर्ष में रेवारी के नाम से सभी लोग परिचित पाये जाते हैं।
रेवारी उन लोगो को कहते हैं, जो ऊँटो का पालन करते हैं। भारतवर्ष मे मुसलमान सा
पर ऊँट रखा करते हैं। मरुभूमि में ऊँटो के पालन और उनके व्यवसाय का काम करने
विशेष जाति कहलाती है, जिसे रेवारी कहते है। यह हिन्दू जाति है और इस जाति के ले
पालन और व्यवसाय करते है। कहा जाता है कि ऊँटो की चोरी करने मे ये लोग बडे हो
हैं और इसके लिये भट्टी लोगो के साथ ये लोग दाऊदपोतरा तक जाते हैं। उनके द्वारा
चोरी के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि उन लोगो को ऊँटो का चरता हुआ समुदाय जब
जाता है तो उनके साथ का शक्तिशाली और अनुभव आदमी उस ऊँट को अपना भाला
जिसके निकट वह पहले-पहल पहुँचता है। उस ऊँट के खून मे कपडे को भिगोकर वह अप
नोक पर रख देता है और दूसरे ऊँट के पास जाकर अपने भाले के द्वारा उसे वह खून सूँ
करके वह आदमी तेजी के साथ भागता है और ऊँटो का समुदाय उसके पीछे पीछे दौडने

जाखूर, शियघ और पूनिया जीत वंश की शाखाये हैं। इन शाखाओ के बहुत
अब तक सामाजिक और धार्मिक पुराने विश्वास पाये जाते हैं। लेकिन अधिक सख्या
इस्लाम-धर्म को स्वीकार कर लिया है। लेकिन अपने वश की शाखाओ को उन लोगो
नष्ट नही किया। ये लोग सीधे-सादे और परिश्रमी होते हैं। मरुभूमि और घाटी मे ये
जाते हैं। उनके बहुत-से प्राचीन घराने इधर-उधर जाकर बस गये हैं। ऐसे घरानो मे सु
खमरा हमारे सामने ऐसे नाम हैं, जिनके ऐतिहासिक उल्लेख हमे नही मिले। जोहिया
आदि ऐसे अनेक नाम हैं, जिनके उल्लेख मरुस्थली के इतिहास मे हम कर चुके हैं।

सेहरी, कोसा, चन्दी, सुदानी—मरुभूमि की मुस्लिम जातियो मे सेहरी का प्रधान
लोगो का कहना है कि इसकी उत्पत्ति हिन्दू जाति से हुई और इस जाति के लोग अ
लोगो से उत्पन्न माने जाते हैं। निश्चित रूप से इसकी उत्पत्ति के बारे मे कोई बात नहं
सकती। अरबी मे सेहरा मरुभूमि को कहते हैं। सम्भव है उसी सेहरा शब्द से इस जा
सेहरी रखा गया हो। जो कुछ हो इसका निर्णय करने के लिये हमारे पास कोई ऐतिहा
नहीं है।

दायित्व मेरे ऊपर है। शिवाजी पर जयसिह की इस बात का प्रभाव पडा था और उसने पूर्णरूप से जयसिह का विश्वास किया था। लेकिन शिवाजी के बन्दी होकर आ जाने पर औरङ्गजेब ने उसके साथ विश्वासघात करने की चेष्टा की। शिवाजी उस समय बन्दी अवस्था मे बादशाह की अधीनता मे था। उसने जयसिह का विश्वास किया था। उसको जयसिह पर किसी प्रकार का सन्देह न था। बादशाह औरङ्गजेब के पास आने पर उसने जयसिह के द्वारा कई एक अच्छी बातो की आशा की थी। परन्तु औरङ्गजेब उसका उलटा हुआ। जीवन की इस भीषण अवस्था मे जयसिह ने अपने वचनो का पालन किया। उसने शिवाजी को विश्वास दिलाया था। वह शिवाजी के साथ विश्वास-घात न कर सका। जयसिह ने बादशाह के भय की परवाह न की और उसने दिल्ली से शिवाजी के भाग जाने मे निर्भीक होकर सहायता की। इसका परिणाम यह हुआ कि औरङ्गजेब से वह रहस्य अप्रकट न रह सका। बादशाह छिपे तौर पर जयसिह से अप्रसन्न रहने लगा।

इन्ही दिनो मे मुगल-सिहासन का अधिकार प्राप्त करने के लिये बादशाह औरङ्गजेब के यहाँ सङ्घर्ष पैदा हुआ। मिर्जा राजा जयसिह ने आरम्भ मे सुलतान दारा के पक्ष का समर्थन किया। लेकिन उसके बाद उसने दारा का पक्ष छोड दिया। औरङ्गजेब जयसिह से बहुत ईर्षा करने लगा था और वह छिपे तौर पर उसके सर्वनाश की चेष्टा कर रहा था। भारतीय इतिहासकारो के अनुसार, मिर्जा राजा जयसिह के अधिकार मे बाईस हजार अश्वारोही सेना थी और प्रथम श्रेणी के बाईस प्रधान जागीरदार उसके नियन्त्रण मे काम करते थे। जयसिह ने एक दिन अपने बाईस शूरवीर जागीरदारो के साथ मुगल-दरबार मे बैठकर अपने दोनो हाथो मे एक-एक गिलास लेकर कहा: "मेरे हाथो का एक गिलास दिल्ली और दूसरा सितारा है।" जिस गिलास को उसने दिल्ली कहा, उसे पृथ्वी पर पटक दिया और दूसरे को टुकडे-टुकडे करके उसने कहा. "सितारा का पतन हो जाने से दिल्ली का सौभाग्य मेरे दाहिने हाथ मे है। यदि मैं चाहूँ तो आसानी के साथ मै दिल्ली का पतन कर सकता हूँ।"

दरबार मे कही हुई जयसिह की यह बात बादशाह औरङ्गजेब तक पहुँच गई। उसमे सब कुछ करने की क्षमता इन दिनो मे थी। वह दिल्ली का सम्राट था। उसने न जाने कितने राजपूत राजाओ का सर्वनाश किया था। उसने जिस तरह से जसवन्तसिह के जीवन को नाश किया था, उसी घृणित तरीके से उसने जयसिह का सर्वनाश करने का निश्चय किया। औरङ्गजेब भयानक षडयन्त्रकारी था, उसने जयसिह के विरुद्ध एक विषैले षडयन्त्र की रचना की। राजस्थान की प्रथा के अनुसार, बडे राजकुमार को ही पिता का सिहासन प्राप्त होता है। जयसिह के दो लडके थे। रामसिह और कीरत-सिह। बडा होने के कारण रामसिह पिता का उत्तराधिकारी था। लेकिन बादशाह औरङ्गजेब ने छोटे लडके कीरतसिह को उकसा कर कहा: "जयसिह के मरने के बाद आमेर का राज्याधिकार रामसिह को मिलेगा। लेकिन यदि तुम अपने पिता जयसिह को मार डालो तो राजस्थान की प्रथा का उलङ्घन करके तुमको आमेर के राज सिहासन पर बिठाऊँगा। इस बात का मैं तुमको वचन देता हूँ।

राजकुमार कीरतसिंह को ससार का ज्ञान न था। वह राजनीति की कलुषित, चालो से अपरिचित था। बादशाह औरङ्गजेब के षडयन्त्र का जादू उस पर काम कर गया। राज्य का प्रलोभन बुरा होता है। औरङ्गजेब ने सिखा-पढाकर राजकुमार कीरतसिह को जयसिह के विरुद्ध तैयार कर दिया और कीरतसिह ने अफीम के साथ विष मिलाकर अपने पिता जयसिह को पिला दिया। उससे उसकी मृत्यु हो गयी। इस प्रकार पिता का सर्वनाश करके राज-सिहासन प्राप्त करने के लिये कीरत-सिह बादशाह औरङ्गजेब के पास गया। बादशाह का मनोर्थ पूरा हो चुका था। अब उसकी कीरत-

इसके सम्बन्ध मे जितना मुझे मालूम हुआ । उसके आधार पर मै कह सकता हूँ कि यह भ
शाखा है ।

मोहर अथवा मोर—इस वश के लोग भी भट्टी माने जाते है ।

जताबुरी, बोरिया—इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध मे कोई बात निश्चित रूप से नही
सकती । इनके जीवन का व्यवसाय अच्छा नही है। बातुरी, खेनगढ, और सम्पूर्ण राजस्था
हुई जो जातियां केवल चोरी का कायम करती है, उन्ही मे इनकी भी गणना है । कोई
और अपराध का कार्य करने मे वे संकोच नही करते । इन्ही कार्यो के द्वारा उन लोगो
आमदनी का साधन बना लिया है । वे लोग दाऊदपोतरा, विजनौत, नोक, नवकोट और
थलों में पाते जाते हैं । वे लोग ऊंट रखते है और उनको किराये पर चलाते है । कारव
करने के लिए भी उनकी नियुक्ति होती है ।

जोहिया, दहिया और मंगुलिया—ये जातियां पहले राजपूतो की शाखाये मानी
परन्तु अब उन्होने इस्लाम स्वीकार कर लिया है । घाटी और मरुभूमि मे वे पाये जाते
संख्या अधिक नही है ।

वैरोवी—यह बालोच की एक शाखा है । इसको तरह खैरोवी, जनग्री, ओदुर
नामक अनेक जातियाँ हैं । इन सबके पूर्वज प्रमार और शाँकला राजपूत थे । इनकी संख्य
है और ये लोग कोई ऐतिहासिक महत्व नही रखते ।

दाऊदपोतरा—यह एक छोटा-सा राज्य है । उसकी गणना हिन्दू धर्म मे नही की जा
उसे मरुस्थली की सीमा के भीतर माना जाता है । जैसलमेर के भट्टी राज्य के कुछ भागो
पोतरा बना ह । दाऊदपोतरा की नीव डालने वाला सिन्धु नदी के पश्चिम मे शिकारपुर
दाऊद खाँ था और उसने एक साधारण आदमी की हैसियत मे रहकर अपने जीवन के
व्यतीत किये थे । उसने इन दिनो मे अपनी बहुत बड़ी शक्ति का सम्पादन कर लिया
दमन करने के लिये कन्धार के बादशाह ने अपनी फौज भेजी थी । उस फौज का वह स
सका । इसलिगे उसने अपनी जन्म भूमि को छोड दिया और अपने परिवार को लेकर सि
दूसरी तरफ चला आया । बादशाह की फौज ने उसका पीछा किया । भाग जाने के बाद
न सका । सूती अल्लाह नामक स्थान पर बादशाह की फौज ने उसे घेर लिया । उस
सामने दो रास्ते थे और उनमे से वह एक को स्वीकार करने के लिये विवश किया गया
तो अपने आपको शत्रुओ के हवाले कर दे अथवा अपने परिवार के साथ-साथ अपनी आत्म
ले । इस सङ्कट के समय उसने साहस और धैर्य से काम किया और शत्रु से लडकर मर
अच्छा समझा । उनके इस साहस को देखकर बादशाह की फौज ने उस पर आक्रमण
और वह उसे छोडकर चली गयी ।

सवाई जयसिंह ने बादशाह के इस कार्य को सहन नहीं किया। उसने कछवाहों की सेना लेकर मुगलों का सामना किया और उसने बादशाह की फौज को पराजित करके भगा दिया। इस घटना के बाद सवाई जयसिंह और बादशाह के बीच भयानक शत्रुता पैदा हो गयी। सवाई जयसिंह ने उस शत्रुता की परवाह न की और मुगलों का सामना करने के लिए उसने मारवाड़ के राजा अजीत सिंह के साथ सन्धि कर ली।

सवाई जयसिंह ने चवालीस वर्ष तक आमेर के सिंहासन पर बैठकर शासन किया। इस बीच में उसे कई बार युद्ध करने पड़े। वह मेवाड़ और बूंदी राज्य का कठोर शत्रु था। उसकी इस शत्रुता का वर्णन मेवाड़ और बूंदी-राज्य के इतिहास में किया गया है। सवाई जयसिंह के शासन काल में मुगल-साम्राज्य में अराजकता की वृद्धि हो रही थी और उसके फलस्वरूप तैमूर के वंशजों का शासन बड़ी तेजी के साथ छिन्न-भिन्न होता जा रहा था। सवाई जयसिंह स्वाभिमानी राजपूत था और अपने स्वाभिमान के कारण ही उसको कई बार युद्ध करना पड़ा। उन युद्धों में उसने सदा अपने गौरव की रक्षा की। मुगलों की विशाल शक्तियाँ उसे मिटा न सकीं।

शासन में राजनीति और न्याय के नाम पर सवाई जयसिंह का स्थान ऊँचा है, इसमें किसी का मतभेद नहीं हो सकता। यह दूसरी बात है कि विदेशी इतिहासकारों ने निष्पक्ष होकर उसके गौरव का वर्णन नहीं किया। सवाई जयसिंह ने अपने नाम पर जयपुर नामक राजधानी की स्थापना की। उस राजधानी में शिल्प और विज्ञान की बहुत उन्नति हुई। जिसके कारण प्राचीन आमेर की राजधानी का गौरव फीका पड़ गया। इन दोनों राजधानियों में छै मील की दूरी थी और यह दूरी बने दुर्गों की श्रेणी के द्वारा मालूम न पड़ती थी। उन दिनों में जितनी भी राजधानियाँ बनी हुई थीं, उन सबमें जयपुर की राजधानी श्रेष्ठ थी। उसका निर्माण वैज्ञानिक रूप से किया गया था। उसमें बने हुए राज मार्ग अनेक प्रकार से सुविधा-पूर्ण थे। कहा जाता है कि विद्याधर नामक एक बंगाली ने इस राजधानी का नक्शा तैयार किया था। सवाई जयसिंह ने ज्योतिष विज्ञान और इतिहास में बड़ी योग्यता प्राप्त की थी। विद्याधर बंगाली उसके इस कार्य में प्रधान सहयोगी था। यों तो अनेक राजपूत राजाओं ने ज्योतिष में ज्ञान प्राप्त किया था। परन्तु सवाई जयसिंह ने विशेष रूप से ज्योतिष में अधिकार प्राप्त किया। अपनी शिक्षा और अध्ययन के द्वारा वह एक अच्छा वैज्ञानिक बन गया। ज्योतिष में उसकी बढ़ी हुई योग्यता को देखकर दिल्ली के बादशाह मोहम्मदशाह ने पञ्चाङ्ग के संशोधन का कार्य उसको सौंपा था। राजा सवाई जयसिंह को चन्द्रमा, सूर्य और दूसरे ग्रहों तथा नक्षत्रों के सम्बन्ध का बहुत अच्छा ज्ञान था। इसके लिए उसने अनुभव और ज्ञान से अनेक प्रकार के यंत्रों की रचना की थी और दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा आदि प्रसिद्ध नगरों में विशाल मंदिर बनाकर उसने अपने समस्त यंत्रों को वहाँ पर रखा था। इस प्रकार के कार्य में सवाई जयसिंह को अत्यधिक रुचि थी और उस रुचि के कारण उसे प्रशंसनीय सफलता मिली। भारत के अनेक प्रसिद्ध नगरों में उसके द्वारा जो मान-मंदिर बने थे और उनमें उसके जो यंत्र रखे गये, उनकी प्रशंसा उस विषय के अनेक विदेशी विद्वानों ने की है।*

---

* काशी के मान मंदिर में जाने का जिनको अवसर मिला है, उन्होंने वहाँ पर इस प्रकार के अनेक यंत्र और उसकी दूसरी सामग्री देखी होगी। यह बात अवश्य है कि इतना समय बीत जाने के बाद उसके यंत्रों और उपकरणों की अवस्था पहले की सी न रह गयी हो। उन यंत्रों को देखकर पश्चिमी अनेक ज्योतिषियों ने सवाई जयसिंह की प्रशंसा की है।

मरुभूमि के लम्बे मैदानो में अधिक चलने के कारण वहाँ के लोगों के पैरो की न
मोटी और भद्दी हो जाती है कि मालूम होता है कि उनकी पिण्डुलियो मे पट्टियाँ बँधी है।
चलने के कारण उनके पैरो की नसो का यह दृश्य हो जाता है। नारू रोग से तो यहाँ के
आदमी का बचाव नही हो पाता। यह रोग एक किसान से लेकर राज परिवार के लोगो
जाता है। कदाचित् ही यहाँ का कोई मनुष्य इस नारू रोग से बच पाता है। मरुभूमि,
राजस्थान और उसके बीच के राज्यो मे यह रोग नही होता परन्तु अरवली पर्वत की दू
रहने वालो मे यह रोग इतना अधिक होता है कि वहाँ के लोग जब एक दूसरे से मिलते
उनसे इस रोग का हाल सबसे पहले पूछते है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वहाँ पर रहने
यह रोग बहुत अधिक पाया जाता है। इस रोग मे इतनी अधिक पीडा होती है, जिसके स
की शक्ति बहुत कम लोगो मे पायी जाती है। शरीर के रोमछिद्रो में सूक्ष्म रेत के प्रविष्ट हो
यह रोग पैदा होता है। चर्म के भीतर उस रेत के अणुओ के पहुँच जाने पर उस स्थान की
ऊपर एक दाग पैदा होता है। वह धीरे-धीरे बढ़ कर सम्पूर्ण शरीर मे जलन और सूजन
है। उस समय शरीर के भीतर कीड़ा पैदा हो जाता है और वह चलता-फिरता है। उस
गति कभी-कभी अधिक तेज हो जाती है। उस दशा में रोगी को असह्य कष्ट होता है। इ
अनुभवी चिकित्सक बुलवाया जाता है। वह सूई के पतले धागे द्वारा उस कीड़े के सिर को
निकालने की चेष्टा करता है। शरीर के भीतर उस धागे के टूट जाने अथवा रह जाने से
सूजन और जलन बढ़कर मवाद देने लगती है। रोगी की यह दशा बड़ी भयानक होती है।

भारतवर्ष के दूसरे स्थानो की तरह यहाँ पर भी शीतला और तिजारी के रोग पाये
शीतला का रोग प्रायः छोटे बच्चो को अधिक होता है। इस रोग की यहाँ पर चिकित्सा
जाती है। उसका सेहत होना शीतला माता के ऊपर छोड़ दिया जाता है। तिजारी और उ
के दूसरे रोगो की चिकित्सा होती है। परन्तु उपचारो के लिये प्राचीन विचारो पर ल
विश्वास करते है।

दुर्भिक्ष—अकाल अथवा दुर्भिक्ष मरुभूमि के लिये एक साधारण रोग है। वहाँ के
करते है कि भूखी माता के आने से दुर्भिक्ष अथवा अकाल पड़ता है। यहाँ पर ग्यारहवी २
एक अकाल पड़ा था और वह बारह वर्ष तक रहा था। उसके कारण राजस्थान के अनेक
भीषण क्षति पहुँची थी। यो तो मरुभूमि मे तीसरे-चौथे वर्ष अकाल पड़ा ही करता है।
ईसवी मे जो अकाल पडा, वह चार वर्ष तक बराबर रहा। उसमे न जाने कितने लोगो की
थी। गरीब लोगो के समूह अपने-अपने स्थानो को छोडकर गङ्गा के निकट मैदानो मे च
और वहाँ पहुँचकर उन लोगो ने अपने बच्चो को बेचकर अनाज प्राप्त किया था। मरुभूमि
के लिये दुर्भिक्ष और अकाल कितने भयानक होते है, इसका सहज ही अनुमान किया जा सक

फसल, पशु और वृक्ष—मरुभूमि के पशुओ मे ऊँट विशेष स्थान रखता है। वह हल
जाता है, उसके द्वारा कुए का पानी खींचा जाता है। ऊँट अपने मालिक के लिये मरुभूमि
मे पीने के लिये मशको मे पानी ले जाता है और वह पानी कई दिनो तक काम देता है। ऊँट
की बनावट ऐसी होती है, जिससे वह मरुभूमि मे [illegible] है। उसके मुख की बनावट ऐ
है, जिससे वह कांटेदार पेड़ो की पत्तियो को खाकर मरुभूमि मे जीवित रह सकता है। यही
कि यहाँ के लोग अधिकतर ऊँट रखते है। यह भी एक प्रकृति की विशेषता है कि अन्य स
अपेक्षा मरुभूमि के ऊँट अधिक मोटे होते है। यहाँ के राज्यो मे ऊँट युद्ध के काम मे आते है

बादशाह के पास गया। बादशाह ने विजय सिंह की बातो को सुना। उसने प्रधान मन्त्री से पूछा : "विजय सिंह के इन वादो की जमानत कौन करेगा ?"

प्रधान मन्त्री ने तुरन्त बादशाह से, कहा : "विजय सिंह के इन वादो की जमानत मैं करूँगा। मैं उसकी तरफ से आपको यकीन दिलाता हूँ कि आमेर-राज्य के सिंहासन पर बैठने पर विजय सिंह आपको पाँच करोड रुपये देगा और आपके हुक्म पर अपने पाँच हजार अश्वारोही सैनिको के साथ वह सदा तैयार रहेगा।"

प्रधान मन्त्री की इन बातो को सुनकर बादशाह ने विजय सिंह की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और उसने विजय सिंह को आमेर का राज्य देने के लिए अपने प्रधान मन्त्री से सनद तैयार करने के लिए कहा। इसके पहले किसी समय सवाई जयसिंह ने खान दौरान खाँ नामक एक मुसलमान अमीर से पगडी बदल कर उसके साथ भाई का सम्बन्ध कायम किया था। वह खान इन दिनो मे बादशाह के यहाँ उच्चाधिकारी था। उसने जब सुना कि बादशाह जयसिंह को सिंहासन से उतार कर विजय सिंह को राज्य का अधिकार देने की तैयारी कर रहा है तो उसने कृपाराम नामक एक दूत को बुलाकर यह समाचार सुनाया और उसने कृपाराम को जयसिंह के पास भेज दिया।

इन दिनो मे कमरुद्दीन खाँ का बादशाह के दरबार में बहुत प्रभाव था और उसने अपने कार्यों के द्वारा दरबार में ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया था। जयसिंह उस समाचार को पाकर चिन्तित हो उठा। उसने तुरन्त अपने मन्त्री को बुलाकर दूत के द्वारा आया हुआ पत्र दिया। उसके मन्त्री ने बडी गम्भीरता के साथ सोचकर कहा—कि वर्तमान सङ्कट पूर्ण परिस्थिति मे तलवार की सहायता नही ली जानी चाहिये। ऐसे समय पर राजनीतिक कौशल से ही सफलता प्राप्त हो सकती है। विजय सिंह ने जिस प्रकार षडयन्त्र का आश्रय लिया है, वह राजनीतिक चालो से ही छिन्न-भिन्न किया जा सकता है। अपने मन्त्री के परामर्श के अनुसार, सवाई जयसिंह ने अपने सामन्तो को बुलाने के लिये सन्देश भेजा। सवाई जयसिंह का सन्देश पाने पर नाथावत् वंश के प्रधान सामन्त मोहन सिंह, बांसखो के सामन्त दीपसिंह, कुम्भानी, ब्रह्म शिव पोता सामन्त जोरावर सिंह नरूका सामन्त हिम्मत सिंह, घूला के सामन्त कुशल सिंह, मीजाबाद के सामन्त भोजराज और माओली के सामन्त फतेह सिंह आदि आमेर राज्य की राजधानी मे आकर एकत्रित हुये। उन सबके आने पर राजा सवाई जयसिंह ने दरबार मे बैठकर कहा : 'आप सबने मुझे आमेर के राज-सिंहासन पर बिठाया है। मेरा भाई विजय सिंह बसवा नगर प्राप्त करने के लिये बादशाह के यहाँ चेष्टा कर रहा था। मैंने जब सुना तो हर्ष पूर्वक वह नगर मैंने उसको दे दिया। अब नवाब कमरुद्दीन खा बलपूर्वक इस सिंहासन से मुझे उतार कर राज्य का अधिकार मेरे भाई विजयसिंह को देना चाहता है।'

राजा जयसिंह की बातो को सुनकर कुछ समय तक सामन्तो ने आपस मे परामर्श किया और फिर एक मत होकर उन लोगो ने कहा : बसवा नगर देकर आपने-अपने भाई के साथ उदारता का परिचय दिया है। उस नगर को दे देने के बाद हम सब लोग एक मत होकर इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि जैसे भी हो सकेगा, विजय सिंह द्वारा होने वाले उपद्रवो को हम लोग शान्त करेगे"

सामन्तो की इस बात को सुन कर सवाई जयसिंह ने बसवा नगर का अधिकार-पत्र लिख कर सामन्तो को दे दिया। इसके बाद सभी सामन्तो ने अपने प्रतिनिधियो को भेजकर विजय सिंह के उपद्रव को शान्त करने की चेष्टा की। उन सब के उत्तर मे विजय सिंह ने कहा : "मुझे अपने भाई के दिये हुये अधिकार-पत्र पर विश्वास नही है।"

जयपुर का इतिहास

उनसठवाँ परिच्छेद

जयपुर राज्य—उसका प्रचीन जीवन और नाम—राजधानी अयोध्या—रानी जीवन—भिखारिणी के बालक का भविष्य— उसके शासन का विस्तार—मीना लो जीवन— मीना जाति की शाखायें—राजा पज्जून का शौर्य—पृथ्वीराज चौहान का सहा शेखावाटी राज्य की स्थापना—राजा भगवानदास और मुगल बादशाह—दूरदर्शी औ बादशाह अकबर—राजपूत राजाओ के साथ अकबर की नीति—सलीम के साथ राजा की लड़की का विवाह—मुगल-दरबार मे घरेलू सघर्ष।

अंग्रेज लेखको ने राजस्थान का इतिहास लिखने मे राज्य का नाम न देकर उस का नाम शीर्षक में देकर लिखा है, जैसे मारवाड के स्थान पर जोधपुर और मेवाड उदयपुर का नाम दिया है। जिस राज्य को हाडौती के नाम से लिखना चाहिए था, उसे और बूंदी का नाम दिया है। इसी प्रकार दूसरे राज्यो के सम्बन्ध मे भी किया गया पाठको के सामने किसी प्रकार का भ्रम न उत्पन्न होना चाहिए।

कछवाहे राजपूत जिस राज्य मे रहते हैं, वह सर्व-साधारण मे जयपुर के ना है। चौहान और राठौर राजपूतो ने जिस प्रकार मरुभूमि की पुरानी जातियो को प अपने जीवन राज्य कायम किये थे, ठीक उसी तरह जयपुर राज्य की भी स्थापना राज्य की प्रतिष्ठा करने वालों ने वहाँ के छोटे-छोटे राजाओ के शासन को मिटाया औ स्थान पर अपने राज्य की सृष्टि की। आज का विस्तृत जयपुर राज्य पहले ढूंढाड के न था। प्राचीन ग्रंथो से मालूम होता है कि ढूंढाड वहाँ के एक प्राचीन स्थान का नाम था से पता चलता है कि प्राचीन काल में बनेर नामक स्थान के पास ढूंढ नाम का एक था। उसी से ढूंढाड नाम की उत्पत्ति हुई है। ढूंढ शिखर के सम्बन्ध मे कहा जाता है वंश के प्रसिद्ध राजा अजमेर के नरेश बीसलदेव ने इसी शिखर पर तपस्या की थी। उसने के साथ भयानक अत्याचार किये थे। इसीलिए वह राक्षस होकर पैदा हुआ। इस जन पहले के समान प्रजा का सहार करता रहा। वह अपने राज्य की प्रजा को खा जाया उसकी इस दशा मे राज्य के लोगो ने उसके पौत्र को उसके सामने पहुँचा दिया। उसे सचेत हो उठा। अपने पौत्र को वह संहार न कर सका और जमुना नदी के किनारे पर अपनी आत्म-हत्या कर ली।

यह जनश्रुति अब तक लोगो में चली आ रही है। ऐसा मालूम होता है कि देव अत्याचारी था और इसीलिए उसे लोग राक्षस कहा करते थे। वह प्रजा के साथ अत्याचार करता था, उसको प्रजा का संहार करना स्वाभाविक रूप से कहा जा सकत वंशज पर इस प्रकार का अवसर आने के समय उसको ज्ञान उत्पन्न हुआ और वह

जयसिंह के मुख से उदारता पूर्ण इस बात को सुनकर विजय ने कहा : "राज सिंहासन पर बैठने की अब मेरी इच्छा नही है । आप इस बात का विश्वास रखे ।"

इसके बाद दोनो भाई सामन्तो के बीच मे बैठ कर स्नेहपूर्वक बाते करते रहे । उसी समय पर जयसिंह के मन्त्री ने आकर सामन्तो से कहा : 'राजमाता ने आप लोगो के पास मुझे भेजकर कहा है कि यदि आप लोग कुछ देर के लिये यहां से चले जावे तो राजमाता यहां आकर दोनो भाइयो को प्रेम से बाते करते हुये देखना चाहती हैं ।"

दूत की इस बात को सुनकर सामन्त कुछ देर तक आपस मे बाते करते रहे । सबकी सलाह से दोनो भाई महल के उस कमरे मे चले गये, जिसमे राजमाता पहले से मौजूद थी । कमरे के द्वार पर एक पहरेदार खड़ा था । जयसिंह ने अपनी कमर से तलवार निकाल कर पहरेदार को दे दी और कहा कि माता के पास जाने मे तलवार की क्या आवश्यकता है । विजय सिंह ने भी अपने भाई का अनुकरण किया और उसने भी अपनी तलवार निकाल कर पहरेदार को दे दी । इसी समय मन्त्री ने कमरे का दरवाजा खोला । विजय सिंह उस कमरे के भीतर पहुँच गया । उसने माता के स्थान पर भट्टी सामन्त उग्रसेन को देखा । उग्रसेन ने उसी समय विजय सिंह के हाथो और पैरो को बांध कर पालकी सांगानेर से आमेर राजधानी की ओर रवाना करवा दी । बाहर के सभी लोगो ने समझा कि राजमाता की पालकी राजधानी वापस जा रही है ।

एक घन्टे के पश्चात् जयसिंह को समाचार मिला कि विजय सिंह कैदी होकर दुर्ग मे आ गया है । इसके कुछ समय बाद सैनिको के साथ जयसिंह को अकेले आता हुआ देखकर सामन्तो ने पूछा : "विजय सिंह कहां है ?"

सामन्तो के इस प्रश्न को सुनकर जयसिंह ने कहा : "मेरे पेट मे है । अपने पिता के हम दोनो बेटे हैं । बडा होने के कारण राज्य का मैं अधिकारी हूँ । राज सिंहासन से उतारने के लिए उसने मेरे साथ जो षड़यन्त्र किया था, उसका बदला मुझे विश्वासघात के द्वारा देना पडा । उसने हम सबका सर्वनाश करने के लिये आमेर-राज्य मे शत्रुओ को आमन्त्रित किया था । मैंने जो कुछ किया है, इसके सिवा मेरे पास और कोई उपाय न था ।"

जयसिंह के इस उत्तर को सुनकर सभी सामन्त आश्चर्य-चकित हो उठे । किसी ने कुछ उत्तर न दिया । वे सभी उस स्थान से चले गये । सांगानेर के बाहर मुगल बादशाह की छै हजार अश्वारोही सेना खडी थी । प्रधान मन्त्री कमरुद्दीन खां ने उस सेना को विजयसिंह की सहायता के लिये भेजा था । विजय सिंह को न पाने के बाद मुगल सेना के अधिकारी ने जयसिंह से पूछा : विजय सिंह कहां है ?"

जयसिंह ने रोष मे आकर उत्तर दिया : "तुम्हे इसके पूछने का क्या अधिकार है ? तुम लोग यहां से वापस चले जाओ नही तो तुम सबके घोडे छीन लिए जाएंगे ।" उस सेना के अधिकारी ने कुछ उत्तर न दिया और मुगल सेना वहां से वापस लौट गयी । विजयसिंह इस प्रकार कैदी हो गया ।

सवाई जयसिंह के समय कछवाहो के राज्य ने सभी प्रकार की उन्नति की । इसके पहले वहां पर जो लोग आमेर के सिंहासन पर बैठे, उन्होने मुगल बादशाह के दरबार मे सम्मान प्राप्त किया था । लेकिन उनमे से किसी ने सवाई जयसिंह की तरह अपने राज्य की उन्नति नही की । बादशाह बाबर से लेकर औरङ्गजेब के समय तक आमेर के राजाओ के साथ पारिवारिक सम्बन्ध रहा । परन्तु किसी कछवाहा राजा ने अपने राज्य की सीमा का विस्तार नही कर पाया था । औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद मुगलो की शक्तियां कमजोर पड गयी और मुगलो का शासन बहुत-से टुकडो मे विभक्त होता

लाकर अपनी क्षुधा मिटाने की इच्छा की। जिस पेड़ के नीचे वह रुकी थी, वहाँ पर अ
छोटे बालक को लिटा कर फल लेने के लिये गयी।

फल लेकर राजरानी ने लौटते हुये दूर से देखा कि उसके बालक के मस्तक पर
फैलाये हुये एक साँप बैठा है। इस दृश्य को देखकर वह एक साथ काँप उठी और f
उठी। उसी समय एक ब्राह्मण वहाँ पर आ पहुँचा। रानी की इस दुरवस्था को देखकर
"आप घबराये नही। घबराने का कोई कारण भी नही है। बालक के मस्तक पर साँप
उसके उज्वल भविष्य की सूचना दे रहा है। आपका बालक किसी समय राज सिंहासन

ब्राह्मण के मुख से इस बात को सुनकर रानी को बहुत सन्तोष मिला। उस
कहा : "इस समय मेरा यह बालक बहुत भूखा है।' वह कुछ और भी कहना चाह
समय उस ब्राह्मण ने खोह गांव की तरफ सकेत किया उसने बताया कि वहाँ जाने पर
प्रकार व्यवस्था हो जायगी।

यह कहकर ब्राह्मण वहाँ से चला गया। बालक के मस्तक से साँप पहले ही
गया था। रानी ने ब्राह्मण को बातो पर विश्वास किया और वह अपने बालक को ले
की तरफ रवाना हुई। उस नगर मे प्रवेश करके रानी ने एक स्त्री से बाते की और
"क्या मुझे कोई नौकरानी बनाकर रख सकता है ? मैं केवल भोजन और कपडा चाहती

वह स्त्री खोहगांव के मीना राजा के यहाँ महल मे दासी थी। रानी की बात को
उसे अपने साथ महल मे ले गयी और अपनी रानी से उसने बाते की। मीना रानी धोला
को अपने यहाँ दासी बनाकर रख लिया और उसे अपनी दासियो के साथ रहने की आज्ञा
राय की माँ प्रसन्नता के साथ मीना रानी की दासियो के साथ रहने लगी। उसने वहाँ प
अपना परिचय नही दिया। वहाँ रहते हुये उसको बहुत दिन बीत गये। एक दिन धोला
को वहाँ पर भोजन बनाने का कार्य करना पड़ा। उसका बनाया हुआ भोजन मीना राज
को बहुत पसन्द आया। राजा ने भोजन की प्रशंसा करते हुये कहा : "आज का भोजन
दिष्ट और मधुर बना है।"

मीना राजा के इस प्रकार भोजन की प्रशंसा करने पर धोलाराय की माँ बुलायी
समय धोलाराय की माँ को अपना परिचय देना पडा। मीना राजा ने परिचय जानकर
सत्कार किया और उस दिन से वह धोलाराय की माँ को बहन कहकर सम्बोधन करने ल
राय उस दिन से मीना राजा का भाञ्जा होकर वहाँ पर रहा। लगातार उसका आदर अ
बढता गया। अपनी अवस्था के अनुसार धोलाराय ने वहाँ पर रहकर क्षत्रियोचित योग्यत
इन दिनो मे दिल्ली के सिंहासन पर तोमर वंशी राजा था। उसने समस्त भारतवर्ष मे अ
का विस्तार किया था। दूसरे राजा उसे कर दिया करते थे। चौदह वर्ष की अवस्था मे
को कर देने के लिये मीना राजा ने दिल्ली भेजा। धोलाराय को इस कार्य के सम्बन्ध
तक दिल्ली मे रहने का अवसर मिला। इन्ही दिनो मे एक मीना कवि के साथ उसका प
धोलाराय एक राजपूत था। उसने राजवंश मे जन्म लिया था। इसलिये उसके शरीर की
नसो मे राजपूती रक्त लहरे मार रहा था। उसके मनोभावो मे शासन की अभिलाषा
शक्तिशाली हो रही थी। उसके जीवन मे ऐसा होना सभी प्रकार स्वाभाविक था। मी
साथ मित्रता दृढ जाने पर धोलाराय ने उससे अपनी अभिलाषा प्रकट की। यदि धोला

इस प्रकार प्रतिज्ञा करके स्वाभिमानी बडगूजर अपने साथ दस शसस्त्र अश्वारोही वीरो को लेकर आमेर की तरफ रवाना हुआ उसके समीप पहुँचकर उसने मुकाम किया । वहाँ पडे हुए उसको पूरा एक मास बीत गया । उसे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का अवसर न मिला । वह फिर भी वही पर पडा रहा और वहाँ पर उसके कई महीने बीत गये । उसके पास जो कुछ था उसे उसने खाने-पीने मे खर्च कर डाला । इसके बाद वह अपने साथ के घोडो को बेचकर दिन काटने लगा । इसके बाद भी उसे अपनी अभिलाषा पूरी करने का अवसर न मिला । उस दशा मे उसने अपने साथ के सैनिको को भेज दिया और अकेले रहकर अवसर की प्रतीक्षा करने लगा । इस बीच मे उसने अपने अस्त्र-शस्त्र बेच डाले और उनसे जो कुछ मिला उनके द्वारा उसने अपना समय व्यतीत किया । इसके बाद भी उसको अवसर न मिला । अब उसके पास केवल एक भाला रह गया था । उसने तीन दिन बिना भोजन के काटे और चौथे दिन उसने अपनी पगड़ी बेच डाली । अब उसके पास बेचने के लिए कोई वस्तु न रह गयी थी । उसने अकस्मात् राजा जयसिंह को दुर्ग से बाहर निकल कर मोरा नामक मार्ग की तरफ जाते हुये देखा । उसी समय उसने अपना भाला फेंककर राजा जयसिंह को मारा । वह भाला जयसिंह को नही लगा । उसके साथ के एक सैनिक ने उस बड़गूजर को पकड लिया और अपनी तलवार से उसने उसका सिर काट लेने का इरादा किया । उसी समय राजा जयसिंह ने जोर के साथ कहा : "इसको राजधानी मे पकड कर ले आओ, यहाँ पर उसका प्राण नाश न करो ।"

बडगूजर को पकड़ कर आमेर राजधानी मे लाया गया । उसको देखकर राजा जयसिंह ने उससे प्रश्न किया : "तुम कौन हो और तुमने भाले का प्रहार किस लिये मेरे ऊपर किया ?"

उस बड़गूजर ने उत्तर देते हुये कहा : "मै देवती के बडगूजर राजा का छोटा भाई हूँ । मैंने अपनी भावज के सामने आपकी छाती मे भाला मारने की प्रतिज्ञा की थी । इसलिए इस राजधानी के समीप आकर और छिपे तौर पर रह कर मैं बहुत दिनो तक पडा रहा । अवसर पाने पर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये मैंने भाले का प्रहार आपके ऊपर किया है । अपने प्रहार मे मुझे सफलता नही मिली । आज मैं आपके सामने कैदी बनाकर लाया गया हूँ । आपको दण्ड देने का पूर्ण अधिकार है ।"

राजा जयसिंह उसकी बातो को सुनकर बहुत प्रभावित हुआ और बिना किसी प्रकार का दण्ड दिये हुए उसने उसको छोड़ दिया । राजा जयसिंह ने उसकी इन दिनो की विपदा का हाल सुनकर उसे मूल्यवान वस्त्र दिये और पचास अश्वारोही सैनिको के सरक्षण मे उसको उसके राज्य भेज दिया । उसने अपने राज्य मे आकर सभी बाते अपनी भावज से कही । उन बातो को सुनकर उसकी भावज ने कहा : "आपने सोते हुए विषैले सांप को उकसाया है । इसके फलस्वरूप अब यह राज्य नष्ट हो जायगा ।"

राजोर के अनेक अनुभवी लोगो की सम्मति से बडगूजर वंश के परिवार को अनूप शहर मे बडगूजर राजा के पास भेज दिया गया और देवती राज्य के राजोर के दुर्ग मे युद्ध की तैयारियाँ होने लगी । इसलिये कि वहाँ पर सब को विश्वास हो गया कि सवाई जयसिंह का शीघ्र ही आक्रमण अब इस राज्य पर होगा ।

ऊपर लिखी हुई घटना के चौथे दिन सवाई जयसिंह ने अपने सभी सामन्तो को बुलाया और अपने दरबार मे बैठकर उनसे कहा : "देवती राज्य पर तुरन्त अधिकार कर लेने की आवश्यकता

इसके थोडे दिनो के बाद धोलाराय ने अजमेर की राजकुमारी भारोनी के
किया। एक दिन धोलाराय अपनी रानी के साथ देवी के मन्दिर मे दर्शन करने के लि
वहाँ के उसके लौटने पर ग्यारह हजार शसस्त्र मीना सैनिको ने एकत्रित होकर मा
सामना किया। धोलाराय निर्भीक और साहसी था। उसने एकत्रित मीना लोगो के साथ
शत्रुओ की सेना अधिक थी। इसलिए युद्ध करते हुए धोलाराय मारा गया। उसके मर
सैनिक वहाँ से भाग गये। धोलाराय को रानी गर्भवती थी इसलिए वह किसी प्रकार
कर निकल गयी।

धोलाराय की मृत्यु के बाद उसकी विधवा रानी से एक बालक उत्पन्न हुआ।
काँकिल रखा गया। काँकिल ने सिंहासन पर बैठकर ढूँढाड राज्य का उद्धार किया।
मेदल भी अत्यन्त शूरवीर और पराक्रमी था। उसने अपनी सेना के साथ आमेर राज्य प
किया और मीना लोगो को पराजित करके उसने आमेर पर अधिकार लिया। मेदल
पिता के राज्य की लगातार वृद्धि की। उसने नान्दला लोगो को जीतकर उसके स्थान गा
भी अधिकार कर लिया।

धोलाराय के वंशधर इन दिनो मे अपने राज्य का विस्तार कर रहे थे। मेदल
हो जाने पर हणदेव ने उनके सिंहासन पर अधिकार किया। उसके राज्य के आस-प
मीना लोग स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर रहे थे। हणदेव ने लगातार उन लोगो के सा
उसकी मृत्यु के बाद उसका लड़का कुन्तल सिंहासन पर बैठा। उसने पहाड़ी लोगो
शासन कायम किया। भूडवाड नामक स्थान पर इन दिनो में एक चौहान राजा रहता
के साथ उसकी लडकी के विवाह का प्रस्ताव आया। राव कुन्तल ने उसे स्वीकार क
जिस समव वह सेना लेकर भूडवाड जाने के लिए तैयार हुआ, मीना लोगो ने उस स
सन्देश भेजा कि "अगर आप हम लोगो के बीच से गुजरे तो अपनी पताका और नगाड़ा
अधिकार मे छोड़ जावे।" राव कुन्तल ने मीना लोगो के इस प्रस्ताव को स्वीकार नही
फलस्वरूप राव कुन्तल को विरोधी मीना लोगो के साथ युद्ध करना पड़ा। उस युद्ध में ब
मारे गये और शेष पराजित होकर भाग गये।

राव कुन्तल की मृत्यु हो जाने पर पजून नामक कछवाहा राजपूत उसके सिंहा
प्रसिद्ध कवि चन्दबरदाई ने अपने ग्रन्थ मे इसकी वीरता का अद्भुत वर्णन किया है।

ढूँढाड ने कछवाहो का उदय होने के पहले वहाँ पर बडे विस्तार से साथ मी
लोग रहते थे और यह जाति पाँच शाखाओ मे विभक्त थी। अजमेर से लेकर जमना नदो
पर्वत माला काली खो के नाम से प्रसिद्ध थी। मीना लोग वही के मूल निवासी थे। वे ल
के पूजारी थे और उसी के नाम से उन लोगो ने अपने राज्य का नाम अम्बेर अथवा
वहाँ की पर्वत माला मे जो लोग रहा करते थे लोहवाँव, माची और बहुत से प्रसिद्ध
अधिकार में थे। बाबर और हुमायूँ तथा भारमल्ल के शासन काल मे मीना लोग
शाली थे। राजपूत लोग उनसे सदा सशकित रहते थे। उन स्वतंत्र मीनो के अधिकार
का एक प्राचीन नगर भी था। भारमल्ल ने मुगलो की सहायता से उस नगर का
विनाश किया था। वहाँ पर जो मीना लोग रहते थे, उनके बल और पराक्रम की
पढने को मिलती है। नाहन नगर मे जो मीना राजा रहता था, उसने अपने राज्य
और तोरण द्वार बनवाये थे। दिल्ली के सिंहासन पर सबसे पहले जो मुसलमान

पडी थी ।" यह कहकर राजा जयसिंह ने मोहनसिंह की जागीर को आमेर-राज्य मे मिला लेने का आदेश दिया और मोहनसिंह को अपने राज्य से निकाल दिया । मोहनसिह आमेर से निकल कर उदयपुर के राणा के यहाँ चला गया । राजा जयसिह ने देवती और राजोर पर अधिकार करके उनको अपने राज्य मे मिला लिया । ❀ वे मिले हुये दोनो नगर मावेडी के नाम से प्रसिद्ध हुये ।

राजा जयसिह के चरित्र मे अनेक अच्छाइयाँ थी । परन्तु उसमे मदिरा पीने का दोष था । वह मधुसजात अथवा चावल की मदिरा पिया करता था । इस प्रकार की कुछ निर्बलताओ के होने पर भी राजा सवाई जयसिह एक श्रेष्ठ पुरुष था, इसमे किसी को मतभेद नही हो सकता ।

सवाई जयसिह के पहले आमेर का राजमहल मानसिंह ने बनवाया था । उन दिनो की अपेक्षा आमेर की अवस्था जयसिह के शासन के दिनो मे बहुत बदल गयी थी । पहले का आमेर बहुत कुछ इन दिनो की अपेक्षा गौरवहीन था । मिर्जा राजा जयसिंह ने वहाँ के महल मे कई एक कमरे बनवाये थे । परन्तु वे कमरे एक राजमहल के लिये अनुकूल न थे । इसलिये सवाई जयसिह ने उनके सम्पर्क मे एक दर्शनीय महल बनवाया, जिसको देखकर सभी लोगो ने प्रशसा की । सन् १७२८ ईस्वी मे सवाई जयसिह ने जयपुर नाम की नवीन राजधानी कायम की । वहाँ के एक इतिहास मे प्रकट होता है कि उन दिनो मे राजा मल्ला सवाई जयसिंह के यहाँ मुसाहिब पद पर नियुक्त था और कृपाराम जयपुर का दूत बनकर दिल्ली मे रहता था । बुधसिह कुम्भानी दक्षिण मे सम्राट के यहाँ दूत बनाकर नियुक्त किया गया था । जयपुर का विशेष विवरण आगामी पृष्ठो मे लिखा गया है ।

राजा जयसिंह राजनीति और शासन में बहुत योग्य था । उसने सामाजिक बातो मे कई एक सुधार किये थे । राजस्थान मे लडकियो के विवाहो और श्राद्ध जैसे कार्यों मे राजपूतो के यहाँ बहुत अधिक धन खर्च किया जाता था और इस प्रकार के खर्चों के कारण ही राजपूतो मे लडकियो को जन्म के बाद मार डालने की एक पुरानी प्रथा प्रचलित थी । कुछ इस प्रकार के वीभत्स कार्यों के कारण वहाँ पर न जाने कितनी स्त्रियो को आत्म हत्याये करनी पडी थी । राजा सवाई जयसिंह ने इस प्रकार के अनिष्ट कार्यों मे बहुत सुधार किया और उनके खर्चों मे बहुत कमी कर दी । उसने इस प्रकार के बहुत से सामाजिक नियम बनाये थे और अपने राज्य मे उसने लोगो को उन नियमो पर चलने के लिये बाध्य किया था । विवाह और श्राद्ध आदि कार्यों के अवसरो पर जो वहाँ अत्यधिक खर्च किया जाता था, उनको उसने अपने राज्य मे बहुत कम करवा दिया । राजपूतो मे प्रचलित पुरानी और अनावश्यक प्रथाओ मे संशोधन का कार्य कितना जरूरी था, इसे सवाई जयसिंह ने भली प्रकार अनुभव किया और इसीलिये उसने उनमे आवश्यक सुधार किये । उसके इन कार्यों से साफ जाहिर होता है कि वह न केवल एक अच्छा शासक था, बल्कि सार्वजनिक हितो की रक्षा करना भी वह खूब जानता था । उसके राज्य मे जैन सम्प्रदाय के लोगो को आवश्यक प्रोत्साहन मिला था । विद्याधर नामक व्यक्ति जो उसके ज्योतिष विज्ञान के कार्य मे सहयोगी था और जिसकी सहायता और योग्यता से जयपुर राजधानी का निर्माण हुआ, वह जैन धर्मावलम्बी था । सवाई जयसिंह योग्य और विद्वान पुरुषो को अपने यहाँ आदरपूर्वक स्थान देना आवश्यक समझता था । उसने प्रसिद्ध

❀ राजोर एक बहुत पुराना नगर था । वहाँ पर देवती राज्य की राजधानी थी । कई शताब्दियो से बडगूजर वंश के राजपूत वहाँ पर रहते थे । इस वंश के लोगो की बहादुरी की प्रशंसा चन्द कवि ने अपने ग्रन्थ मे की है । सम्राट पृथ्वीराज के समय इस वंश के लोग युद्ध करने मे बहुत प्रसिद्ध थे ।

था। उसके मारे जाने के बाद उसके भाई और उसके पुत्र ने युद्ध में एक बार शत्रुओ के
दिये थे। राव पजून के पुत्र मलैसी के शरीर पर उस युद्ध मे तलवारो के साथ जख्म भ
हुये थे और उसके शरीर से इतना अधिक रक्त निकल रहा था कि उस रक्त से उसका
गया था।

चन्द कवि ने मलैसी की वीरता का भी बहुत वर्णन किया है। राव पजून के
लडका मलैसी आमेर के सिहासन पर बैठा। मलैसी के बाद आमेर के सिहासन पर जो र
बैठे, वे इस प्रकार है (१) बीजलदेव (२) राजदेव (३) कल्हण (४) कुन्तल (५)
उदयकर्ण (७) नरसिह (८) बनबीर (९) उद्धरण (१०) चन्द्रसेन और (११) पृथ्वीरा

इन ग्यारह राजाओ मे दस राजाओं का कोई उल्लेख इतिहास मे नही मिलता।
सम्बन्ध मे लिखा गया है कि उसके सत्रह लडके पैदा हुये। उनमे पांच की अकाल मृत्यु
शेष बारह पुत्रों मे पृथ्वीराज ने अपने राज्य को बांट दिया था। उन दिनो मे आमेर रा
बहुत थोडी थी और यह राज्य बहुत छोटा समझा जाता था। इस राज्य के बारह टुकडे
और उसका प्रत्येक भाग पृथ्वीराज के एक एक लडके को मिला था। उदयकर्ण के श
पारिवारिक सङ्घर्ष पैदा हुआ। उसके पुत्र बालाजी ने अपना राज्य छोडकर अमृतसर ना
साथ-साथ कुछ अन्य स्थानो पर अधिकार कर लिया। उसके पुत्र शेखा जी ने सिहासन
बाद शेखावटी राज्य की स्थापना की। शेखावटी का विस्तार उस समय दस हजार वर्ग
इस राज्य का वर्णन आवश्यकतानुसार आगे किया गया है।

पृथ्वीराज ने सिन्ध नदी के तट पर बसे हुये देवल नामक स्थान को विजय किया
वह अपने ही पुत्र भीम के द्वारा मारा गया। जिस भीम ने पिता को मारकर अक्षम्य अ
था, उसका बदला उसके पुत्र आसकर्ण ने उसको दिया और वह भी अपने लड़के के
गया। पिता की हत्या करने के बाद भीम सभी की आंखो मे अपराधी बन गया था अ
लोगो के उकसाने पर उसके पुत्र आसकर्ण ने उसकी हत्या की। अम्बेर राजवंश के इतिह
की हत्या करने वाले भीम और आसकर्ण का कोई उल्लेख नही मिलता।

धोलाराय से लेकर पृथ्वीराज तक इस वश के प्रत्येक राजा ने स्वतन्त्रतापूर्वक शा
सम्राट पृथ्वीराज के समय राव पजून का शासन दिल्ली की अधीनता मे था। परन्तु पृ
तरफ से उसके शासन मे कभी किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही हुआ। बल्कि सम्बन्धी होने
सम्राट पृथ्वीराज के दरबार मे राव पजून को सम्मानपूर्ण स्थान मिला था। अम्बेर के
भारमल्ल ने सबसे पहले मुस्लिम शासन के प्रति अपना मस्तक नीचा किया और यवन
साथ उसने सामाजिक सम्बन्ध कायम किया। बाबर के शासनकाल मे भारमल्ल ने उसक
स्वीकार की और हुमायूँ के समय वह पाँच सहस्त्र सेना पर अधिकारी बनाया गया।

भारमल्ल के लडके भगवानदास ने सिहासन पर बैठने के बाद यवन सम्राट के स
जिक घनिष्ठता पैदा की। उसके फलस्वरूप वह बादशाह अकबर के दरबार मे सम्मा
गया। सम्राट अकबर शूरवीर, साहसी, दूरदर्शी और राजनीतिज्ञ था। अपनी राजनीति
उसने राजपूत राजाओ पर अधिकार प्राप्त किया था। उसने राजपूतो को अपना शुभचिं
के लिये तलवार का ही नही—राजनीति का भी आश्रय लिया था। वह जानता था कि
बल पर जो अधिकार और प्रभुत्व प्राप्त किया जाता है, वह बहुत दिनो तक नही चलता
उसने राजपूतो को मिलाने और उन पर अधिकार प्राप्त करने के लिये जिस नीति का

सन् १७४७ ईसवी मे ईश्वरीसिंह अब्दाली की विशाल सेना के साथ युद्ध करने के लिये सतलज नदी के किनारे गया था। उस युद्ध मे उसके पक्ष के प्रधान सेनापति कमरुद्दीन खाँ के मारे जाने पर ईश्वरीसिंह अपनी सेना के साथ भागा और जब वह लौटकर अपनी राजधानी में आया तो उसकी रानी ने युद्ध से भागने का समाचार सुनकर बहुत असन्तोष प्रकट किया।

अपने पिता सवाई जयसिंह की तरह ईश्वरी सिंह बुद्धिमान और राजनीति कुशल न था। सिंहासन पर बैठने के बाद अपनी प्रजा को प्रसन्न और सन्तुष्ट करने के लिये वह कार्य न कर सका। राज्य के सरदार और सामन्त भी उसके व्यवहारो और कार्यों से थोडे ही दिनो मे असन्तोष अनुभव करने लगे। ईश्वरीसिंह के लिये राज्य की इस प्रकार परिस्थितियाँ आगे चलकर अच्छी साबित न हुई।

मेवाड के इतिहास मे लिखा जा चुका है कि दिल्ली के मुगल बादशाह के विरुद्ध होकर मेवाड, मारवाड़ और आमेर राज्यो ने सन्धि की थी। उस सन्धि के अनुसार उन तीनो राजवंशों में वैवाहिक सम्बन्ध भी होने लगे थे। उस सन्धि के परिणाम स्वरूप मारवाड के राजा ने बादशाह के गुजरात मे अनेक नगरो पर अधिकार कर लिया था, आमेर-राज्य के सवाई जयसिंह ने उन सभी स्थानो को अपने राज्य मे मिला लिया था, जो आमेर के आस-पास कुछ दूरी तक फैले हुये थे और उन्ही दिनो मे उसने शेखावाटी के राजा को कर देने के लिये विवश किया था। उस समय आमेर-राज्य को अपने राज्य की सीमा का विस्तार करने के लिये सभी प्रकार का अवसर था और उसकी सीमा साँभर झील से लेकर जमुना नदी के किनारे तक पहुँच गई थी। इसका कारण यह था कि जो सन्धि हुई थी, उसने इन तीनो राज्यो को शक्तिशाली बना दिया था। लेकिन सन्धि के अनुसार वैवाहिक सम्बन्ध शुरू होने का परिणाम अच्छा साबित नही हुआ।

आमेर और मारवाड के राजाओ ने मुगल बादशाह के वंश मे अपनी लड़कियाँ देकर अपने जातीय गौरव को क्षीण बना लिया था। राजस्थान के दूसरे राजाओ ने भी इस प्रकार के प्रतिष्ठा के विरुद्ध कार्य किये थे। परन्तु मेवाड का एक राणा वंश ही ऐसा था, जिसने उन दिनो में अपना मस्तक ऊँचा रखा था और इस प्रकार का ऐसा कोई कार्य नही किया, जिससे इस वंश की प्रतिष्ठा को किसी प्रकार आघात पहुँच सकता। इस सन्धि के पहले आमेर और मारवाड के राजाओ ने जो इस प्रकार अप्रतिष्ठापूर्ण कार्य किये थे, उनसे उनके मेवाड के राणा वंश के साथ वैवाहिक सम्बन्ध बन्द हो गये थे। लेकिन इस सन्धि के बाद वे फिर आरम्भ हो गये। विवाह के सम्बन्ध को प्रचलित करने के लिये सवाई जयसिंह ने मेवाड की राजकुमारी के साथ विवाह किया था। लेकिन विवाह होने के पहले ही दोनो ओर से इस बात का निर्णय हो गया कि आमेर-राज्य मे मेवाड़ की राजकुमारी का विवाह होने पर यदि उससे बालक पैदा होगा तो वह अपने पिता के राज्य का उत्तराधिकारी होगा। राजस्थान की प्रथा के अनुसार बडा लडका राज्य का अधिकारी होता है। लेकिन मेवाड की राजकुमारी से उत्पन्न होने वाले बालक पर वहाँ की इस प्रथा का कोई प्रभाव पडेगा। यदि उस राजकुमारी से लडकी उत्पन्न होगी तो वह किसी भी अवस्था मे और किसी भी परिस्थिति मे मुगल बादशाह के वंश मे नही दी जायगी। सवाई जयसिंह और मारवाड के राजा ने मेवाड के राणा की इन शर्तों को स्वीकार कर लिया था। उसके बाद राणा वंश की राजकुमारी का विवाह सवाई जयसिंह के साथ हुआ था। विवाह के बाद उस राजकुमारी से एक बालक पैदा हुआ। उसका नाम माधव सिंह रखा गया। राजा जयसिंह ने अपने जीवन काल मे ही उस बालक के सम्मान की रक्षा के लिये आमेर-राज्य के टोंक, रामपुरा, फागी और मालपुरा नामक चार परगने माधवसिंह को

बादशाह के साथ युद्ध करने के लिये गया था। वहाँ पर ऊपर लिखे हुये समय से दो व
मारा गया।

राजा भगवानदास की मृत्यु हो जाने पर मानसिंह जयपुर के सिंहासन पर बैठा
के शासनकाल में आमेर राज्य ने बड़ी उन्नति की। मुगल दरबार मे सम्मानित होकर
अपने राज्य का विस्तार किया। उसने अनेक राज्यो पर आक्रमण करके जो अपरिमित
थी, उसके द्वारा उसने आमेर-राज्य को शक्तिशाली बना दिया। धोलाराय के बाद
राज्य एक साधारण राज्य समझा जाता था, मानसिंह के समय वह एक शक्तिशाली अ
राज्य हो गया था। भारतवर्ष के इतिहास मे कछवाहो अथवा कुशवाहा लोगो को शूरवी
गया, परन्तु राजा भगवानदास और मानसिंह के समय कछवाहा लोगो ने खुतन से समु
बल, पराक्रम और वैभव की प्रतिष्ठा की थी। मानसिंह बादशाह की अधीनता मे था।
साथ काम करने वाली राजपूत सेना बादशाह की सेना से अधिक शक्तिशाली समझी
मानसिंह के मर जाने के बाद उसका बेटा राव भावसिंह आमेर के राज सिंहासन पर बै
शाह ने स्वय उसका अभिषेक किया और पञ्चहजारी मनसब का पद देकर उसको सम्मा
लेकिन भावसिंह बुद्धिमान न था। वह मदिरा पीने का अधिक अभ्यासी था। अधिक म
कारण सिंहासन पर बैठने के कई वर्ष बाद हिजरी १०३० मे उसकी मृत्यु हो गयी।
उसके शासन का अधिक कोई विवरण नही लिखा गया।

भावसिंह के मरने के बाद उसका बेटा महासिंह राज सिंहासन पर बैठा।*
विलासी और अधिक मदिरा सेवी था। इसलिये थोडे ही दिनो के बाद उसकी भी मृत्यु
मानसिंह के बाद आमेर के सिंहासन पर जो बैठे, उनको अयोग्यता के कारण आमेर-र
पड़ गया। इन दिनो मे जोधपुर के राजाओ ने मुगल दरबार मे अपनी प्रतिष्ठा बना ली
सिंह के मर जाने पर आमेर के सिंहासन पर कौन बैठेगा, उस राज्य में यह एक प्रश्न पै

मानसिंह के बाद जिन दो अयोग्य उत्तराधिकारियो ने आमेर के सिंहासन पर बै
को क्षीण और दुर्बल बनाया था, उसकी पूर्ति जयसिंह ने की। जयसिंह मिर्जा के नाम
हुआ। राजा जयसिंह ने कई बातो मे मानसिंह का अनुकरण किया। राजा मानसिंह
अकबर की सहायता करके जिस प्रकार मुगल दरबार मे सम्मानपूर्ण पद प्राप्त किया था
प्रकार मिर्जा राजा जयसिंह ने बादशाह औरङ्गजेब के शासनकाल मे मुगल सम्राज्य के स
किये। अनेक युद्धों में औरङ्गजेब के साथ रहकर जयसिंह ने ससके शत्रुओ से युद्ध किया
प्राप्त की। बादशाह औरङ्गजेब जयसिंह की वीरता और ईमानदारी को देखकर बहुत
और प्रसन्न होकर उसने जयसिंह को छै हजारी मनसब का पद दिया।

मिर्जा राजा जयसिंह ने सभी प्रकार मुगल-साम्राज्य की सहायता की। बादशा
को बढ़ाने के लिये अनेक अवसरो पर उसने अद्‌भुत कार्य किये। दक्षिण मे जिस शिवाज
बादशाह को बहुत समय से कोई सफलता न मिल रही थी और कई एक युद्धो मे जिस
बादशाह की फौज को छिन्न-भिन्न किया था, उस शिवाजी को बादशाह औरङ्गजेब के यह
कर लाने का कार्य अम्बेर के राजा जयसिंह ने किया। कैद करने के समय राजा जय
मराठा शिवाजी को वचन दिया था कि बादशाह के द्वारा आपका कोई अहित न होगा,

* महासिंह भावसिंह का बेटा नही था, बल्कि मानसिंह का पोता था। ऐसा कुछ
कहना है।

चौरासी लाख रुपये की आय के प्रसिद्ध परगने उसे देने पडे थे। राज्याधिकार प्राप्त करने के बाद उसे यह बात भूल न सकी। वह समझता था कि होलकर को किसी भी समय दमन करना हमारा एक आवश्यक कर्त्तव्य होगा। वह अपने इस निश्चय के अनुसार राठौरो और जाटो की सहायता से ऐसा कर सकता था। लेकिन उसके राज्य के पडोसी शत्रुओ ने उसकी कल्पनाये बेकार कर दी।

जाटो के सम्बन्ध मे विस्तृत वर्णन इस ग्रन्थ में अन्यत्र दिया जा चुका है। जाटो का वश राजस्थान के छत्तीस राजवशो मे एक वश था। उस वश का बाद मे पतन हुआ। लेकिन पराधीन होने के बाद भी जाटो ने सदा स्वाधीन होने की चेष्टा की। इस जाति के लोग अत्यन्त लडाकू थे। चूडामणि नामक उनका सरदार उनको प्रोत्साहित किया करता था। इस जाति के लोगो ने सगठित होकर थून और सिनसीनी नामक स्थानो पर दुर्ग बनाने का कार्य आरम्भ किया था। वे आमतौर पर खेती करने का कार्य करते थे। लेकिन अवसर पाकर लूटमार का कार्य भी करते थे। उनके सगठन मे जाटो की बहुत बडी सख्या थी। उन लोगो ने दिल्ली तक लूटमार करने का कई बार साहस किया था। इन जाटो के बढते हुये अत्याचारो को देखकर बादशाह के दरबार मे सवाई जय-सिंह से उनके दमन करने के लिये कहा गया था। राजा सवाई जयसिंह ने अपनी सेना लेकर थून और सिनसिनी को जाकर घेर लिया। उस समय जाटो ने भयङ्कर युद्ध किया और अपने दुर्गों की रक्षा की। राजा जयसिंह को निराश होकर वहाँ से लौट आना पडा।

चूडामणि जाट का सरदार था। छोटे भाई बदनसिंह के साथ उसका सघर्ष आरम्भ हुआ। अन्त मे चूडामणि के द्वारा बदन सिंह कैद कर लिया गया और वह कई वर्ष तक बन्दी अवस्था मे रहा। इसके पश्चात् आमेर के राजा जयसिंह के मध्यस्थ होने पर चूडामणि ने अपने छोटे भाई बदन सिंह को कैद से छोड दिया। बदन सिंह छूटकर जयपुर मे पहुँचा। उसने थून पर अधिकार करने के लिये राजा जयसिंह को प्रोत्साहित किया। जयसिंह ने अपनी सेना लेकर जाटो के नगर थून को जाकर घेर लिया। चूडामणि ने बडे साहस के साथ छै महीने तक युद्ध किया। अन्त मे वह अपने पुत्र मोहन सिंह के साथ दुर्ग से भाग गया। राजा जयसिंह ने थून के दुर्ग पर अधिकार कर लिया और बदन सिंह को वहाँ के जाटो का राजा घोषित किया। घोषणा डीग नामक स्थान पर की गई।

बदन सिंह के कई लडके पैदा हुये थे। उनमे सूर्यमल्ल, शोभाराम, प्रताप सिंह और वीर नारायण नामक चार पुत्र अधिक प्रसिद्ध हुए। बदन सिंह ने जाटो के उन कई नगरो पर भी अधि-कार कर लिया, जिन पर मुगल बादशाह का अधिकार चल रहा था। बदन सिंह ने वेर नामक स्थान पर एक दुर्ग बनवाया और अपने बडे लडके सूर्यमल्ल को उसने सब अधिकार दे दिये।

सूर्यमल्ल बदन सिंह का बडा बेटा सभी प्रकार योग्य और पराक्रमी था। पिता के अधिकारो को प्राप्त करने के बाद उसने भरतपुर पर आक्रमण किया। वहाँ का राजा जाट वशी था। सूर्यमल्ल ने युद्ध मे उसको पराजित किया और भरतपुर पर अधिकार कर लिया।

सूर्यमल्ल की शक्तियाँ धीरे-धीरे विशाल होती गई। उसने साहस और बुद्धिमानी के साथ अपना सङ्गठन बनाया और सन् १७६४ ईसवी मे सूर्यमल्ल ने बादशाह की राजधानी दिल्ली को लूट लेने का विचार किया। परन्तु कुछ कारणो से वह ऐसा न कर सका। जिस समय वह शिकार खेलने गया था, बिल्लोचो के एक समूह ने आकर एकाएक उस पर आक्रमण किया। उस समय वह जान से मारा गया। जवाहिर सिंह, रईन सिंह, नवल सिंह, नाहर सिंह और रणजीत सिंह नामक पाँच लडके उसके पैदा हुये। सूर्यमल्ल एक दिन जब शिकार खेलने गया था, रास्ते मे उसको हरदेव बख्श नामक एक छोटा बालक मिला। उसे लाकर सूर्य मल्ल ने

सिंह की खुशामद करने की आवश्यकता न थी। उसने उपेक्षा पूर्ण उसके साथ व्यवहा
आमेर के राज सिंहासन पर बिठाने के स्थान पर बादशाह ने कीरत सिंह को कागा
जिला जागीर में दे दिया।

जयसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका बडा लडका रामसिंह आमेर के सिंहास
जयसिंह को मुगल दरबार मे छै हजारी मनसब का पद मिला था। परन्तु रामसिंह
चार हजारी मनसब मनसब का पद दिया गया। इसके बाद उसे आसाम के युद्ध मे जा
१६६० में रामसिंह की मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका लडका विशन सिंह आमेर के
पर बैठा।

जयसिंह के बाद आमेर राज्य का फिर से पतन आरम्भ हुआ। इन दिनो मे व
मुगल बादशाह की उगलियो पर चल रहा था। बादशाह औरङ्गजेब किसी का शुभ
जिसने अपने पिता, भाइयो और बहनो का सर्वनाम किया था, वह किसी दूसरे का शु
हो सकता था। स्वाभिमानी जयसिंह ने कभी औरङ्गजेब के षडयन्त्रो की परवा न क
शिवाजी को जो बचन दिया था, उसको उसने पूर्ण रूप से रक्षा की और उसके फल
प्राणो की हत्या हुई। अपनी ईमानदारी का यह पुरस्कार बादशाह औरङ्गजेब से जयसि

इन दिनो मे आमेर का राज्य बहुत निर्बल रह गया था। दिल्ली दरबार मे
जो सम्मान प्राप्त हुआ था, वह भी अब पहले का-सा न रह गया था। इसलिए वि
तीन हजारी मनसब का पद मिला। वह बहुत दिनो तक जीवित न रहा। सन् १७०
शाह के साथ काबुल के युद्ध मे गया था। वही पर उसकी मृत्यु हो गयी।

साठवाँ परिच्छेद

राजा सवाई जयसिंह की ख्याति—ज्योतिष, विज्ञान और इतिहास का विशेष
सिंह—अम्बेर-राज्य की उन्नति—सौतेलेपन का दुष्परिणाम—राज्य के लिए भाई की
राज्य।

प्रथम राजा जयसिंह ने जिस प्रकार मिर्जा राजा जयसिंह के नाम से प्रसिद्धि प
उसी प्रकार द्वितीय राजा जयसिंह सवाई जयसिंह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बादशा
के शासन के चवालीसवे वर्ष सन् १६९९ ईसवी मे वह सिंहासन पर बैठा। इसके
औरङ्गजेब की मृत्यु हुई। सवाई जयसिंह ने दक्षिण के युद्ध मे अपने साहस और श
दिया था। औरङ्गजेब की मृत्यु के पहले मुगल दरबार मे सिंहासन का संघर्ष पैदा ह
जयसिंह ने आजमशाह के लडके शाहजादा बेदार वख्त का पक्ष लिया और उसकी सेह
वह धौलपुर के युद्ध मे गया था। उस संग्राम मे बेदार वख्त मारा गया और शाह अ
शाह के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। सवाई जयसिंह ने बेदार वख्त का पक्ष
आलम का विरोध किया था। इसलिए आमेर का राज्य मुगल साम्राज्य से अलग
सम्राट शाह आलम की तरफ से एक व्यक्ति आमेर राज्य का शासक बनाकर भेज

जवाहरसिंह के मर जाने पर उसका छोटा भाई रतनसिंह सिंहासन पर बैठा इन्ही दिनो में वृन्दाबन के एक गोस्वामी के साथ रतनसिंह की भेट हुई। गोस्वामी ने अपनी योग्यता का परिचय देते हुये रतनसिंह से कहा "किसी भी धातु को मैं सोना बनाना जानता हूँ। लेकिन ऐसा करने में पहले बहुत-सा धन खर्च करना पडता है।" गोस्वामी की इस बात को सुनकर रतनसिंह ने उस पर विश्वास किया और उसकी मॉंग के अनुसार उसने उसको रुपये दिये। गोस्वामी ने उन रुपयो को लेकर सोना देने के लिये एक निश्चित दिन बता दिया। उस बताये हुये दिन को उससे न तो सोना मिला और न उसके दर्शन हुये। लेकिन उसके बाद उसी गोस्वामी ने अवसर पाकर रतनसिंह पर आक्रमण किया और उसके प्राण ले लिये।

रतनसिंह के मारे जाने पर उसका छोटा लडका केशरीसिंह सिंहासन पर बैठा। उसकी अवस्था छोटी थी। इसलिये रतनसिंह का छोटा भाई नवलसिंह शासन की देख भाल करने लगा। केशरीसिंह के बाद रणजीतसिंह जाटो के सिंहासन पर बैठा। उसने अपने शासनकाल में अधिक ख्याति पायी। उन्ही दिनो मे अगरेज सेनापति लार्ड लेक ने भरतपुर पर आक्रमण किया। उसके साथ रणजीतसिंह ने भयानक युद्ध किया। सन् १८०५ ईसवी में रणजीतसिंह की मृत्यु हो गयी। रणधीरसिंह, बलदेवसिंह, हरदेवसिंह और लक्ष्मणसिंह नाम के चार लडके रणजीतसिंह के थे। रणधीरसिंह अपने पिता के सिंहासन पर बैठा। उसके बाद उसका छोटा भाई भरतपुर के सिंहासन पर बैठा। उसके शासनकाल मे अङ्गरेजो ने फिर भरतपुर पर आक्रमण किया और कुछ दिनो तक वहाँ के दुर्ग को घेरे रहकर अङ्गरेजो ने विजय प्राप्त की। भरतपुर राज्य को अधिकार मे लेकर अङ्गरेजो ने राज्य मे धन और सम्पत्ति की लूट की।

यहाँ पर जाटो की कुछ बातो पर प्रकाश डालना जरूरी है। माचेडी आमेर-राज्य की अधीनता मे था। नरुका वश का प्रतापसिंह माचेडी मे शासन करता था। माधवसिंह ने प्रतापसिंह से माचेडी का राज्य लेकर अपने अधिकार मे कर लिया था। प्रतापसिंह माचेडी से जाटो के राजा जवाहरसिंह की शरण मे गया। उसने प्रतापसिंह को अपने यहाँ आश्रय दिया और उसके जीवन-निर्वाह के लिये उसने उसको भूमि भी दी।

प्रतापसिंह के चले जाने पर उसके स्थान पर खुशहाली राम नामक एक व्यक्ति माचेडी का सामन्त बनाया गया और उन्ही दिनो मे जयपुर-दरबार मे नन्दाराम नाम का एक आदमी दून के स्थान पर नियुक्त किया गया।

सत्रह वर्ष तक राज्य कर के पेट की बीमारी से माधवसिंह ने परलोक की यात्रा की। शासन पर बैठने के बाद उसने जो सकल्प किये थे, उन्हे वह पूरा न कर सका। उसकी मृत्यु के बाद शिशु अवस्था मे उसका पुत्र सिंहासन पर बैठा। इसलिये माधवसिंह के बाद जयपुर की अवस्था थोडे ही दिनो मे बहुत निर्बल हो गयी। राजा माधवसिंह ने अपने शासन काल मे कई नगर बसाये थे। उनमे रणथम्भोर नामक नगर अधिक प्रसिद्ध हुआ। उसके दुर्ग के पास माधवसिंह ने अपने नाम पर माधवपुर नामक एक नगर बसाया था। वह नगर कई बातो मे बहुत सुन्दर था। माधवसिंह की दोनो रानियो से पृथ्वीसिंह और प्रताप सिंह नामक दो बालक पैदा हुये थे। माधवसिंह की मृत्यु के बाद छोटा बालक पृथ्वीसिंह जयपुर के सिंहासन पर बैठा। पृथ्वीसिंह की माता छोटी रानी और प्रतापसिंह की माँ बडी रानी थी। इसलिए प्रताप की माता पृथ्वीसिंह के बालक होने के कारण शासन का प्रबन्ध करने लगी। वह चन्द्रावत वश मे पैदा हुई थी। शासन की महत्वाकांक्षा पहले से ही उसके हृदय मे थी। बडी रानी होने के कारण इसके लिये वह अधिकारिणी भी थी। उसके आचरण मे दृढ़ता थी। शासन को अपने हाथ मे लेने के बाद बडी रानी ने फीरोज

जयसिंह ने अपने यन्त्रो का आविष्कार करने के पहले समरकन्द के राज-ज्योतिषी उलग
हुये यन्त्रो का प्रयोग किया था। परन्तु उससे उसको सन्तोष न मिला। इसके बाद
अनेक प्रकार की परीक्षाये और अनुभव करके उसने अपने यन्त्रो की रचना का कार्य अ
इन्ही दिनों मे मैन्युएल नामक एक मिशनरी पादरी पुर्तगाल से भारत में आया था।
सवाई जयसिंह ने पुर्तगाल-राज्य की ज्योतिष के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने की
और इस कार्य के लिये उसने अपने कई एक योग्य सहयोगियो को उस पादरी के साथ
था। वहाँ के राजा ने जेवियर डि सिलवा नामक एक व्यक्ति को भारतवर्ष भेजा। उस
आकर पुर्तगाल के डि ला हायर के बनाये हुये यन्त्र सवाई जयसिंह को दिये थे। उन यन्
करके सवाई जयसिंह ने चन्द्रमा के स्थान के सम्बन्ध मे आधी डिगरी की भूल साबित
बात को स्वीकार किया कि दूसरे ग्रहो के सम्बन्ध मे इन यन्त्रों मे इस प्रकार की भूल न
जयसिंह ने एक तुर्की ज्योतिषी के बनाये हुये यन्त्रो के सम्बन्ध मे भी इसी प्रकार का निर्ण

ज्योतिष-विज्ञान मे उन्नति करने और मान मन्दिर बनवाने के सिवा सवा
यात्रियो की सुविधा के लिये अपने राज्य मे बहुत-सा धन व्यय करके अनेक धर्मशालाये
इसमे सन्देह नही कि उसके हृदय मे सार्वजनिक हितो के लिये उदारता थी। उसके
द्वारा उसके इस उज्वल हृदय का प्रमाण मिलता है। यह बात सही है कि राजस्थान
पूत वीरो मे सवाई जयसिंह की अपेक्षा अधिक साहस और शौर्य था। लेकिन अन्य गु
में जो ख्याति सवाई जयसिंह को मिली वह किसी दूसरे को नही मिली। उसके शासनक
देश मे अविराम युद्ध हो रहे थे और मुगल बादशाह के दरबार मे षडयन्त्रो का अटूट
हुआ था, उस समय सवाई जयसिंह वर्तमान युद्धो और षडयन्त्रो से अपने आपको पृथक
कदाचित ऐसा सम्भव भी न था। मुगल साम्राज्य की शक्तियाँ क्षीण पड़ गयी थी, चारो
कता बढ रही थी और बाहरी जातियां लूट मार करके देश का सर्वनाश कर रही थी,
पूर्ण दिनो मे भी सवाई जयसिंह ने आमेर के राज्य की सम्पत्ति और उन्नति मे अनेक प्र
की थी। इससे उसकी योग्यता का निर्मल प्रमाण मिलता है। सवाई जयसिंह से यह छि
निकट भविष्य मे मुगल-साम्राज्य का पतन होने जा रहा है, लेकिन उस समय भी अप
सुरक्षित रखने के साथ-साथ उसने अवसरवादी बनकर कुछ लाभ नही उठाया। उसने
साथ कभी विश्वासघात करने का विचार नही किया। अवसरवादी होकर नाम उठा
की श्रेष्ठता का परिचय नही मिलता और न इस प्रकार प्राप्त की हुई उन्नति अधिक सम
होकर रहती है। जिस समय मुगल-दरबार मे फर्रूखसियर का संहार करके राज्याधिक
का षडयन्त्र चल रहा था, उस समय कई एक राजाओ ने उसका साथ दिया था।
सवाई जयसिंह भी एक था। फर्रूखसियर मे कई एक निर्बलताये थी। वह अपने पूर्व
योग्य और साहसी न था। यदि उसमे कमजोरियाँ न होती तो सवाई जयसिंह की तरह
की सहायता से उसका कभी अकल्याण न होता।

मेवाड के राजवंश के साथ सवाई जयसिंह ने राजनीतिक और सामाजिक सम
प्रकार की बातो का वर्णन मेवाड के इतिहास मे किया जा चुका है। जिस समय सैय
फर्रूखसियर को मारकर अपना प्रभुत्व कायम किया था, उस समय राजस्थान का

से बातचीत की। इसके पश्चात् मुगलो की एक फौज लेकर वह जाटो के दमन करने के लिये रवाना हुआ। खुशहाली राम राजनीति से काम लेना चाहता था। परामर्श से माचेडो का सामन्त भी अपनी सेना लेकर बादशाह के प्रधान सेनापति की सहायता के लिये पहुँच गया। जाटो के विरुद्ध मराठा सेना भी आ गयी थी। नजफ खाँ ने जाटो पर आक्रमण किया। जाटो की सेना पराजित होकर आगरा से अपनी राजधानी भरतपुर की तरफ भागी। मुगल सेना ने अन्य सेनाओ के साथ भरतपुर राज्य पर आक्रमण किया। नवलसिह इन दिनो मे जाटो का सरदार था। मुगलो के साथ जाटो को पराजित होना पडा। इस युद्ध मे माचेडो के सामन्त ने बादशाह की फौज का साथ दिया था और उसके इस कार्य के बदले मे बादशाह ने खुश होकर उसको राव राजा की उपाधि दी। इसके साथ-साथ जयपुर की अधीनता से निकल कर मुगलो की अधीनता मे शासन करने के लिये बादशाह ने उसे एक सनद भी लिख दी। इस प्रकार माचेडो का सामन्त जयपुर राज्य की अधीनता से अलग हो गया।

राजा खुशहाली राम के परामर्श का पूरा लाभ माचेडो के सामन्त ने उठाया। अब वह जयपुर राज्य की अधीनता से अलग हो चुका था। उसका सीधा सम्बन्ध मुगल बादशाह के साथ हुआ। राजा खुशहाली राम ने इन दिनो मे माचेडी के सामन्त से एक नया परामर्श किया और उसके द्वारा उसने अपने शत्रु फीरोज का नाश करने के लिये सफल किया। राजा खुशहाली राम ने अपनी सेना के साथ बादशाह के यहाँ जाने की तैयारी की। बडी रानी ने इनको बिना किसी विरोध के स्वीकार कर लिया और उसने राजा खुशहाली राम के स्थान पर फिरोज महावत को आमेर की सेना का अधिकारी बना कर भेजा। राजा खुशहाली राम ने इसमे किसी प्रकार की आपत्ति न की फीरोज आमेर की सेना को लेकर बादशाह के प्रधान सेनापति के यहाँ गया। राजा खुशहाली राम ने इसके पहले ही माचेडी के राव राजा से एक गुप्त षडयन्त्र का परामर्श कर लिया था। फीरोज महावत के वहाँ पहुँचने पर माचेडो के सामन्त उससे भेट की और उसने उसके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार किया। फिरोज महावत ने माचेडो के राव राजा का पूर्ण रूप से विश्वास किया। इसी अवसर पर राजा खुशहाली राम का षडयन्त्र सफल हुआ। माचेडो के राव राजा ने फीरोज महावत को विष देकर उसके जीवन का अन्त कर दिया। उसके मर जाने के बाद माचेडी का सामन्त फीरोज के स्थान पर आमेर मन्त्रिमण्डल का सदस्य बनाया गया।

फीरोज के मर जाने के बाद बडी रानी ने उसका अनुसरण किया और उसने अपने प्राण त्याग दिये। प्रतापसिह की अवस्था इस समय भी बहुत थोडी थी। वह बिना किसी दूसरे की सहायता के राज्य का शासन नही कर सकता था। इस परिस्थिति को राजा खुशहाली राम पहले से ही जानता था और माचेडी के राव राजा के साथ वह पहले ही परामर्श कर चुका था। उसने अपनी राजनीति का जो जाल बिछाया था, वह आमेर राज्य मे इस समय पूर्ण रूप से सफल हो रहा था। परन्तु कूटनीति और विश्वासघातकता थोडे ही समय के बाद सङ्कटपूर्ण साबित होती है। राजा खुशहाली राम के सम्बन्ध मे भी ऐसा ही हुआ। उसने अपनी राजनीतिक चालो से आमेर के राज्य को अपने नियन्त्रण मे रखने की चेष्टा की थी। इसके लिये अब तक के उसके सभी प्रयत्न सफल हुये थे। उसका विरोधी फीरोज विष देकर मारा गया और उसके प्रभाव मे रहने वाली राज्य की बडी रानी भी इस संसार से चली गयी थी। यहाँ तक सफलता प्राप्त करने के बाद राजा खुशहाली राम ने आमेर के विरुद्ध एक नया षडयन्त्र किया और उसके फल स्वरूप हमदानी खाँ के नेतृत्व मे बादशाह की एक सेना ने आमेर मे प्रवेश किया। उस समय आमेर के मन्त्रिमण्डल मे यह प्रश्न पैदा हुआ कि अब आमेर की रक्षा कैसे की जाय। इसी समय

विजय सिंह का यह उत्तर पाकर सभी सामन्तों ने उसको विश्वास दिलाते हु
कि यदि राजा जयसिंह ने अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग की तो हम सब लोग आपका समर्थन
राज्य के सिंहासन पर आपको बिठावेंगे।"

सामन्तो की इस प्रतिज्ञा पर विजय सिंह राजी हो गया और उसने राजा जयसि
हुआ अधिकार-पत्र स्वीकार कर लिया। उस अधिकार-पत्र को लेकर विजय सिंह कम
पास गया और उस अधिकार-पत्र को दिखा कर उसने सब बाते कही। कमरुद्दीन खाँ को
कार-पत्र पर संतोष न हुआ। लेकिन उसने बसवा नगर पर अधिकार करने के लिये वि
कहा और उसकी सहायता के लिये खाँन और दौरान खाँ और कृपा राम को साथ मे भे

विजय सिंह के बसवा नगर को स्वीकार कर लेने पर आमेर-राज्य के सामन्तो
हुई। उन लोगो ने दोनो भाइयो मे प्रेम और सहानुभूति पैदा करने के लिए चेष्टाएँ की
ने विजय सिंह को राजधानी मे लाकर राजा जयसिंह से मिलाने की कोशिश की।
सिंह राजधानी मे आने के लिये तैयार नही हुआ। वह जयपुर से पश्चिम की तरफ छः म
पर साँगानेर नामक नगर मे जाकर रहने लगा।

सामन्तो के परामर्श के अनुसार विजय सिंह से भेट करने के लिये जिस समय
सिंह चलने के लिए तैयार हो रहा था, उसी समय उसके मन्त्री ने कहा: "आपकी म
आपके पास भेजा है और कहा है कि दोनो भाइयो मे जो परस्पर मेल और स्नेह पैदा हो
है, उस शुभ अवसर को देखने से मुझे क्यो वचित किया जाता है।"

मन्त्री की इस बात को सुनकर सामन्तो ने कहा: "हम लोगो को इसमें कोई
है। वे जरूर चल सकती हैं।" सामन्तो की इस बात को सुनकर मन्त्री ने राजमा
कहा। वह अपने चलने के लिये तैयारी करने लगी। उसके साथ चलने वाली अन्त.पुर
लिये तीन सौ रथ सजाये गये। जिस पालकी में राजमाता को बैठना चाहिये था, उसमे
पर भट्टी सामन्त उग्रसेन बैठा और प्रत्येक रथ के भीतर स्त्रियो के बदले दो-दो शस्त्रधारी
होकर बैठे। सामन्त लोग पहले ही राजा जयसिंह के साथ चले गये थे। उनको राजम
तैयारी का कुछ भी पता न था। यह तैयारी जयसिंह और उसके बुद्धिमान मन्त्री के द्वार
उग्रसेन और रथो में बैठे हुये सैनिको के अतिरिक्त प्रजा मे इस बात की किसी को भी
थी। पालकी और तीन सौ रथो के रवाना होने पर राजस्थान की प्रजा के अनुसार पाल
के सिक्को की वर्षा की गई। दोनो और दरिद्रो ने मोहरो को लूट कर राजा और र
जय-जयकार मनायी। राज-मार्ग पर एकत्रित स्त्री-पुरुषो ने दोनो भाइयो के स्नेह पूर्ण मि
कर प्रसन्नता प्रकट की।

राजा जयसिंह के साथ सामन्त लोग पहले ही साँगानेर पहुँच गये थे और वे
माता के आने का रास्ता देख रहे थे। इसी समय एक दूत ने आकर कहा: "राजमाता
महल में चली गयी है।" यह सुनते ही जयसिंह घोड़े पर बैठा और महल की तरफ
रास्ते मे विजय सिंह से भेट हो गयी। दोनो भाई स्नेहपूर्वक एक-दूसरे से मिले। इसी स
ने विजयसिंह को प्रसन्न होकर बसवा नगर के शासन की सनद दी और कहा. "यदि तु
राज्य के सिंहासन पर बैठने की अभिलाषा है तो मैं हर्ष पूर्वक तुम्हारे लिये सिंहासन छोड़
बसवा मे जाकर रहने लगूंगा।"

मारवाड को विध्वस करने का निश्चय किया। यह समाचार पाकर विजयसिंह ने प्रतापसिंह के पास अपना दूत भेजा। राजा प्रतापसिंह ने मराठा सेना के आने का समाचार सुनते ही अपनी सेना को तैयार होने का आदेश दिया और तुरन्त मराठो के साथ युद्ध करने के लिये राठौर और कछवाहो की सेना ने सयुक्त मोर्चा तैयार किया। उन दिनो मे एक ओर मराठो के साथ युद्ध आरम्भ हुआ और दूसरी ओर राठौर कवियो ने राठौर सैनिको के प्रोत्साहित करने के लिये जो गाने गाए, उनमें केवल राठौरो की प्रशसा थी। कछवाहे सैनिको पर इसका दूषित प्रभाव यह पडा कि आमेर की सेना युद्ध मे उदासीन हो गयी। उसकी सहायता न मिलने के कारण इस युद्ध में राठौरो की पराजय हुई।

राठौर राजा विजयसिंह के साथ आमेर-राज्य की जो सन्धि हुई थी, वह टूट गयी। इसलिये सन् १७९१ ईसवी मे तुको जी होलकर ने जयपुर राज्य पर आक्रमण किया। उस युद्ध में प्रतापसिंह की पराजय हुई और उसे होलकर को वार्षिक कर देना स्वीकार करना पडा। बाद मे अमीरखाँ उस कर के वसूल करने का अधिकारी बना दिया गया। उस समय से लेकर प्रताप की मृत्यु के समय सन् १८३३ ईसवी तक जयपुर राज्य की दशा बहुत खराब रही। इन दिनो मे मराठा और फ्रांसीसी सेना ने भयानक रूप से जयपुर का विनाश किया।

प्रतापसिंह ने आमेर के सिंहासन पर बैठकर पच्चीस वर्ष तक शासन किया। वह साहसी और दूरदर्शी था। लेकिन लुटेरे शत्रुओ के कारण वह अधिक सफलता न प्राप्त कर सका। माचेडी राज्य के निकल जाने के कारण जयपुर राज्य की आमदनी बहुत कम हो गयी थी। मराठो के कई बार आक्रमण होने पर प्रतापसिंह को लाखो रुपये उनको देने पडे थे, इससे आमेर-राज्य का खजाना खाली हो गया। मराठो ने उस राज्य से सब मिलाकर अस्सी लाख रुपये वसूल किये।

राजपूतो की अधोगति का कारण उनकी संकुचित विचारधारा थी। मराठो ने जिस प्रकार अत्याचार करके राजस्थानो के राज्यो का विध्वस और विनाश किया, उसका बदला लेने के लिये स्वाभिमानी प्रतापसिंह ने अपने राज्य का शासन अपने हाथो में लेते ही जो योजना तैयार की थी और जिसके अनुसार मारवाड़ के राजा विजयसिंह ने एक बार उसका साथ दिया, उसके द्वारा प्रतापसिंह ने निश्चय रूप से मराठो को सदा के लिये निर्बल कर दिया होता। लेकिन सीन्धिया के दूसरी बार आक्रमण करने पर मारवाड के कवियो ने जिस सकुचित विचारधारा से काम लिया, उसके फलस्वरूप न केवल मारवाड का बल्कि आमेर-राज्य का भी पतन हुआ। उसका विवरण ऊपर लिखा जा चुका है।

जा रहा था । इसके पहले मुगल साम्राज्य मे आमेर-राज्य का कोई विशेष स्थान न था
के मर जाने के बाद मुगलो के राज में बहुत-से उपद्रव पैदा हो गये थे । उन दिनो में स
को बादशाह की तरफ से आगरा का शासक नियुक्त किया गया था । इस समय की
लाभ उठाकर सवाई जयसिंह ने अपने राज्य की उन्नति की ।

राजा जयसिह के आमेर के सिंहासन पर बैठने के समय आमेर, दौसा और ि
केवल तीन परगने उस राज्य मे थे और इन्ही तीनो नगरो से बने हुए राज्य का नाम
अम्बर राज्य था । इसके पश्चिम तरफ के सभी नगर बादशाह के अधिकार मे थे और
साथ शामिल थे । शेखावाटी का राज्य आमेर-राज्य से अधिक शक्तिशाली था । उसकी
इस प्रकार थी :

दक्षिण मे चाकस नामक दुर्ग था, पश्चिम मे साभर की झील थी, पश्चिम-उ
हस्तिना और पूर्व मे दौसा तथा बिसाऊ का इलाका था । वहाँ के बारह प्रधान सामन्त ि
अधिकारी थे, वह कोटरी बन्द के नाम से प्रसिद्ध थी । उस इलाके की भूमि बहुत साधा

देवती नाम का एक छोटा-सा प्राचीन राज्य था । राजोर उसकी राजधानी थी ।
गूजर जाति का राजा शासन करता था । कछवाहे राजपूत जिस प्रकार रामचन्द्र के वश
हैं, बडगूजर राजपूत अपने आपको रामचन्द्र के पुत्र लव का वशज कहते हैं । बडगूजर
कभी भी मुसलमान बादशाहो को अपनी लडकियाँ नही दी और इसीलिये राजपूतो मे
अधिक सम्मानपूर्ण माना जाता था । जिस समय कछवाहा राजा ने मुगल बादशाह के व
दी थी और राजपूतों के मस्तक पर कलंक का टीका लगाया था, उस समय बड़गूजर
अपनी स्त्रियो; बहनो और बेटियो की मर्यादा को सुरक्षित बनाये रखने के लिये उन्हे आ
हुई होली मे फूंक कर भस्मीभूत कर दिया था । कछवाहो ने बादशाह के साथ सामाजिक
हिक सम्बन्ध जोड़कर सांसारिक गौरव प्राप्त किया था । लेकिन बड़गूजर राजपूतो ने अप
भयानक त्याग और बलिदान करके अक्षय कीर्ति प्राप्त की थी । इसलिये शताब्दियो के ब
इस विशाल देश में कछवाहो की निन्दा और बड़गूजरो की प्रशंसा की जाती है । मनुष
सदा त्याग और बलिदानो से बढ़ता है ।

जिन दिनो में देवती-राज्य का बडगूजर वंशी राजा अपनी सेना के साथ गङ्गा के
शहर में बादशाह की फौज की अधीनता मे था, उस समय सवाई जयसिंह बादशाह के
हैसियत से उसके राज्य मे काम कर रहा था । बड़गूजर राजा ने राजोर की रक्षा का
छोटे भाई को सौप दिया था । उसने एक दिन जङ्गल मे जाने और शूकर का शिका
इरादा किया । उसने भावज के पास जाकर जल्दी से भोजन करना चाहा । उसकी
देखकर भावज ने कहा : "मालूम होता है कि आप युद्ध मे जयसिंह को भाला मारने
रहे हैं ।" बड़गूजर राजा के हृदय में इस बात से एक ऐसा आघात पहुँचा कि वह अन्यम
कुछ देर तक सोचता रहा । उस स्त्री के द्वारा कही गयी बात का सम्बन्ध एक पुरानी घ
है । कछवाहो के पूर्वज धोलाराय ने नरवर से निकल कर बडगूजरो के दौसा नामक नग
कार किया था । भावज की बात को सुनकर बडगूजर राजा के भाई ने उस घटना का स
और उसने तुरन्त प्रतिज्ञा करते हुए कहा : "मैं अपने देवता की शपथ लेकर प्रतिज्ञा करत
जयसिंह के सीने पर भाले का आघात करके ही आपके हाथो का भोजन पाऊँगा ।"

सङ्घर्ष का कारण जगतसिंह कम्पनी के अधिकारियो के सामने उपस्थित करेगा। कम्पनी उस सङ्घर्ष को दूर करने की चेष्टा करेगी।

(६) किसी भी आवश्यकता के समय आमेर की सेना कम्पनी की सेना के साथ रहकर युद्ध करेगी।

(७) कम्पनी के अधिकारियो के आदेश के बिना राजा जगतसिंह को किसी देशी अथवा विदेशी शक्ति के साथ सन्धि अथवा मेल करने का अधिकार न होगा।

ऊपर लिखी हुई सन्धि पर सन् १८०३ ईसवी के १२ दिसम्बर को दोनो पक्षो की तरफ से हस्ताक्षर किये गये और उस पर मोहर लगायी गयी।

इस प्रकार कम्पनी के साथ राजा जगतसिंह ने सन्धि करके मित्रता की। लेकिन वह मैत्री अधिक दिनो तक कायम न रह सकी। अङ्गरेज लेखको ने राजा जगतसिंह पर दोषारोपण करते हुए इनके सम्बन्ध मे लिखा : "जयपुर के राजा ने सन्धि मे लिखी हुई शर्तों की अवहेलना की। इसलिये लार्ड कार्नवालिस को इस सन्धि के ताड देने का विचार करना पडा।"

अङ्गरेज लेखको का राजा जगतसिंह पर यह झूठा दोषारोपण था। इसका प्रमाण आचिसन साहब के एक लेख से मिलता है। उसने लिखा है : "लार्ड कार्नवालिस ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को जगतसिंह के साथ की गई सन्धि को तोड़ देने का आदेश दिया। इसके पहले राजा जगतसिंह ने ऐसा कोई कार्य नही किया था, जिससे उसकी तरफ से सन्धि की शर्तों की अवहेलना प्रकट होती। सन्धि टूटने के पहले होलकर की सेना के साथ कम्पनी का युद्ध हुआ था। उस समय राजा जगतसिंह ने लार्ड लेक की सेना के साथ जाकर मराठो से युद्ध किया था।" इस लेख से साफ जाहिर होता है कि सन्धि टूटने का अपराध राजा जगतसिंह पर नही, कम्पनी पर था। कम्पनी का हित इसी मे था कि उसने राजा जगतसिंह के साथ जो सन्धि की है, वह टूट जाय। उस सन्धि के टूट जाने से जयपुर को भयानक क्षति उठानी पडी। मराठो के अत्याचार फिर से जयपुर मे आरम्भ हो गये। इनके आरम्भ होने का कारण यह था कि सन्धि के अनुसार जयपुर के राजा जगतसिंह ने अङ्गरेज सेनापति जनरल लेक का साथ देकर होलकर के साथ युद्ध किया था। इसके बाद कम्पनी ने जयपुर की सन्धि तोड दी और उसका परिणाम जयपुर को भोगना पडा।

जगतसिंह जिन दिनो मे आमेर के सिंहासन पर बैठा था, उन दिनो मे मेवाड मे राणा भीमसिंह का और मारवाड मे राजा मानसिंह का शासन चल रहा था। ये तीनो समकालीन राजा थे। राजा मानसिंह से उसके सामन्त प्रसन्न न थे। उन्ही दिनो मे पोकर्ण के सामन्त सवाईसिंह ने राजा मानसिंह के साथ सङ्घर्ष पैदा किया। सवाईसिंह किसी प्रकार मानसिंह को सिंहासन से उतार देने की चेष्टा कर रहा था। उसकी इस चेष्टा को शक्तिशाली बनाने वाले कई एक कारण पैदा हो गये थे। मानसिंह के पहले राजा भीमसिंह मारवाड के सिंहासन पर था। उसके मरने के बाद उसकी गर्भवती रानी से एक लडका पैदा हुआ था। उसका नाम धौकलसिंह था। सवाईसिंह मानसिंह से अप्रसन्न था। इसलिये उसके सिंहासन पर बैठने के बाद सवाईसिंह ने धौकलसिंह का पक्ष लेकर मानसिंह का विरोध किया और एक भयानक सङ्घर्ष पैदा कर दिया। वह राजनीति मे बहुत चतुर था। इसलिये उसने मानसिंह के विरुद्ध एक षडयन्त्र की रचना की और उसके अनुसार उसने आमेर और मारवाड के राजाओ मे सङ्घर्ष पैदा कराने का सफल प्रयत्न किया। उसका अनुमान था कि इन दोनो राजाओ की शत्रुता बढ जाने से मेरी चेष्टा सफल होगी और मारवाड के सिंहासन से मानसिंह को उतार कर धौकलसिंह को बिठाने मे मैं सफल हो सकूँगा। सामन्त सवाईसिंह के द्वारा पैदा होने वाले

है । इस कार्य के लिए मैं पानो का बीड़ा रखता हूँ । आप लोगो मे से जो इसके लिए
बीडे को उठा ले ।"

राजा जयसिह की इस बात को सुनकर आमेर के प्रधान सामन्त चौमू के
सिह ने कहा : "देवती-राज्य के विरुद्ध आक्रमण करना सङ्कट पूर्ण है । इसका का
बडगूजर राजा बादशाह के दरबार का एक सदस्य है और वह इन दिनो मे अपनी
बादशाह को फौज के साथ है ।

प्रधान सामन्त मोहनसिंह की इस बात को सुनकर उपस्थित सामन्त भयभी
किसी ने युद्ध के बीडे को उठाने का साहस न किया । इसके बाद एक महीना बीत गय
सिह ने देवती राज्य पर आक्रमण करने के लिये फिर प्रश्न उपस्थित किया । परन्तु
ने युद्ध का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने का साहस नही किया । सभी को चुप देखकर
सिह ने हाथ से उस बीडे को उठाया और उसने देवती-राज्य पर आक्रमण करने की
राजा जयसिह ने फतेहसिह की अधीनता मे पाँच हजार अश्वारोही सेना भेजने का प्रब
सेना को लेकर फतेहसिह देवती राज्य की तरफ रवाना हुआ । वहाँ पहुँचकर उसने सु
राजा का भाई राजोर से गनगोर नामक मेले मे गया है । यह सुनकर वह मेले की
हुआ । वहाँ पहुँचकर उसने अपना दूत उसके पास भेजा । दूत ने वहाँ जाकर बडगूजर
के हाथ मे एक पत्र दिया । उस पत्र को पढते ही उसने अपने सैनिको को आज्ञा दी ि
सिर काट लिया जाय । इसी समय आमेर की सेना ने वहाँ पहुँचकर बड़गूजर राजा के
कर लिया । उस समय उसके साथ राजोर के जो सैनिक थे, वे सब मारे गये ।

राजोर की रानी चौमू के कछवाहा सामन्त की बहन थी । वह गर्भवती थी
की सेना के राजोर पर आक्रमण करने के समय वह प्रसव वेदना से पीडित थी । रा
के पास कहला भेजा : 'प्रिय बन्धु मेरे गर्भ के कारण बालक के प्राणो की रक्षा करन

इसी समय रानी को स्मरण हुआ कि राजोर पर इस आक्रमण के होने का
हूँ । मेरी ही बात को सुनकर मेरे देवर ने राजा जयसिह पर भाले का वार किया था
मेरे जीवित रहने की आवश्यकता नही है । अपने मन में इस बात को सोचकर रान
अपनी आत्महत्या कर ली । बडगूजर राजा का भाई कैद हो चुका था । उसको मारक
कटे हुये मस्तक को एक कपडे मे लपेट कर फतेहसिह वहाँ से लौटा और आमेर की रा
गया । राजा जयसिह के आदेश से वह कटा हुआ मस्तक उसके सामने दरबार मे लाया
राज्य के प्रधान सामन्त मोहन सिह ने अपने आत्मीय का कटा हुआ सिर देखकर अ
कर ली और उसके नेत्रो से आंसू निकल-निकल कर गिरने लगे । मोहनसिह का यह
राजा जयसिंह को बहुत असन्तोष मालूम हुआ । उसने मन-ही-मन सोच डाला कि
ने देवती राज्य पर आक्रमण करने के प्रस्ताव पर सब सामन्तो के सामने विरोध कि
हमारे शत्रु के कटे हुये मस्तक को देखकर वह अश्रुपात कर रहा है । यह हमारे रा
सामन्त होकर भी राजद्रोही और विश्वासघाती है । राजा जयसिह ने उस समय उससे
लेकिन कुछ दिन बीत जाने के बाद मोहनसिह का अपमान करते हुये उसने कठोर
"आपने उस दिन हमारे शत्रु के कटे हुये सिर को देखकर आंसू बहाये थे । लेकिन ज
हमारे ऊपर भाले का वार किया था, उस समय आपके नेत्रो में एक भी आंसू की बूँ

कारी लुटेरो ने उसकी बची हुई जिन्दगी का भी विनाश कर दिया होता ।

आमेर के सिहासन पर बैठकर जगतसिह ने अपने पूर्वजो के गौरव के अनुसार एक भी कार्य न किया । उसके शासन-काल मे प्राय नित्य ही एक-न-एक ऐसी घटना हुआ करती थी, जो उस राज्य को तेजी के साथ पतन की ओर ले जाने का कार्य कर रही थी । उसके समय मे अनेक बार राज्य पर आक्रमण हुये । राज्य लूटा गया । शत्रुओ ने भयानक रूप मे प्रजा का विध्वस और विनाश किया । जगतसिंह अपनी अयोग्यता के कारण इस दुरवस्था से राज्य की रक्षा न कर सका । उसने ऐसे अवसरो पर आत्म-समर्पण किया और युद्ध का खर्च देकर जान बचायी । वह राजपूत था लेकिन क्षत्रियोचित उसमे शौर्य स्वाभिमान न था । अपने अनुचित कार्यों से उसने व्यक्तिगत चरित्र को भी कलङ्कित किया था । रसकपूर नामक एक वेश्या की लडकी मे उसने प्रेम किया था, जिसके कारण उसको सिहासन से उतार देने के लिये कुछ मन्त्रियो और सामन्तो ने तैयारी की थी । रसकपूर से अप्रसन्न होकर राज्य के अधिकारियो ने उसे नाहरगढ के दुर्ग मे भेज देने का निर्णय किया । उस दुर्ग मे राज्य के अपराधी भेजे जाते थे । लेकिन राजा जगतसिह के कारण रसकपूर वहाँ भेजी न जा सकी ।

राजा जगतसिंह ने उस मुस्लिम लडकी को अपनी रखेन बनाकर अपने यहाँ रखा और आधे राज्य पर उसको अधिकारी बना दिया । राजा जगतसिह ने अपने राज्य मे रसकपूर के नाम से सिक्का चलाया । एक बार वह रसकपूर के साथ घूमने के लिये निकला और अपने सामन्तो से उसने उसके प्रति उसी प्रकार का सम्मान प्रकट करने के लिये आदेश दिया, जिस प्रकार का सम्मान सामन्त लोग अपने राजवश की महिलाओ के प्रति प्रकट किया करते थे । सामन्तो ने उसकी इस आज्ञा को स्वीकार नही किया । उसके दरबार मे शिवनारायण मिश्र नाम का एक ब्राह्मण था । वह राज्य के प्रधान मन्त्री के पद पर इसीलिये नियुक्त किया गया था कि वह रसकपूर को लडकी कहकर पुकारता था । राजा जगतसिह की आज्ञाओ का विरोध करके दूनी के सामन्त चाँदसिह ने आवेश मे आकर कहा था : "मैं किसी भी उस आयोजन मे भाग न लूंगा जिसमे रसकपूर मौजूद होगी ।"

चाँदसिह की इस बात को सुनकर जगतसिह ने उस पर दो लाख रुपये का जुर्माना किया । जुर्माने की यह रकम उसकी जागीर दूनी की चार वर्ष की आमदनी थी ।

मनु ने अपनी पुस्तक मनुस्मृति मे राजा को सिहासन से उतार देने की व्यवस्था दी है । आमेर के सामन्तो ने उस व्यवस्था का आश्रय लेकर जगतसिह को सिहासन से उतारने का प्रयास किया । जगतसिह को इसका पता लग गया । वह अपने बचने की कोशिश करने लगा । कुछ सामन्त और मन्त्री इस अपमान से जगतसिह की रक्षा भी करना चाहते थे । किसी प्रकार रसकपूर को कारागार भेज दिया गया और राजा जगतसिह से जो सम्पत्ति उसे मिली थी, उससे छीन लेने का आदेश दिया गया । जिस दुर्ग के कारागार मे रसकपूर भेजी गयी वहाँ से वह किसी प्रकार निकलकर भाग गयी । जगतसिह ने उसके भाग जाने पर कोई विरुद्ध कार्यवाही न की । सन् १८१८ ईसवी की २१ दिसम्बर को जगतसिंह की मृत्यु हो गई ।

राजा जगतसिंह के कोई लडका न था । उसने अपने जीवन-काल मे किसी को उत्तराधिकारी भी नही बनाया था । राजा के पुत्रहीन मरने पर गोद लेने की व्यवस्था बहुत प्राचीन काल से राजस्थान मे चली आ रही है । इस प्रकार जो बालक गोद लिया जाता है, उसी के द्वारा मृत राजा की दाह-क्रिया का सस्कार कराया जाता है । राजा जगतसिंह के मर जाने पर नरवर के एक राजा के लड़के मोहनसिंह को गोद लेकर आमेर-राज्य के सिंहासन पर बिठाने का निश्चय हुआ ।

पण्डित हेमाचार्य को अपने यहाँ मन्त्री का पद दिया था। विद्याधर उसी हेमाचार्य का वं

अन्यान्य योग्यताओ के साथ साथ सवाई जयसिंह एक अच्छा शासक था। उसकी का एक बड़ा प्रमाण यह भी है कि उसने अपने शासन काल मे अश्वमेघ यज्ञ करने का था। इस यज्ञ का इरादा वही राजा करता है जो अन्य राजाओ की अपेक्षा अपने अ शक्तिशाली समझता है। ऐसा मालूम होता है कि उसका यह इरादा उन दिनो में हु मुगल-राज्य की शक्तियाँ निर्बल पड गयी थी और दूसरे राजाओ का उसे कोई भय न र पाण्डु वंश के जनमेजय से लेकर कन्नौज के अन्तिम राजा जयचन्द तक जितने राजाओ यज्ञ किया था, उन सभी का सर्वनाश हो गया। मुगल बादशाह के दरबार मे जित सवाई जयसिंह उन सभी मे अधिक शक्तिशाली था। इस यज्ञ का निर्माण करके उसने छोडा होता, जैसा कि उस यज्ञ का नियम है तो सम्भव है कि अन्य राजा उसका घोडा साहस न करते। लेकिन उस घोडे के मरुभूमि की तरफ जाने पर राठौर राजा अवश पकड़वा लेता और यही अवस्था चम्बल नदी के किनारे हाडा राजा के राज्य मे भी होत वहाँ पर भी पकडा जाता। सवाई जयसिंह ने बहुत-सा धन खर्च करके यज्ञशाला बनव उसके स्तम्भो तथा उसकी छत को चाँदी के पत्तरो से मढवाया था। इस चाँदी के मूल को उसके वशज स्वर्गीय जगतसिंह ने निकवाकर उनके स्थान पर साधारण चाँदी के दिये। जयसिंह ने जिन ग्रन्थो का सग्रह करने मे अत्यधिक परिश्रम और धन व्यय किया दो भाग कर दिये थे। उनका एक भाग किसी प्रकार जयपुर की एक साधारण वेश्या के पहुँच गया था।

चवालीस वर्षों तक राज्य करके सम्वत् १७९९ सन् १७४३ ईसवी मे सवाई जय पुर मे मृत्यु हो गयी। उसकी तीन विवाहिता रानियाँ और अनेक उपपत्नियाँ उसके जल कर सती हुईं। उसने जिस विज्ञान की अपने जीवन भर उन्नति की थी, उसकी वह एक साथ लोप हो गयी।

इकसठवाँ परिच्छेद

जयपुर का शक्तिशाली राज्य—मेवाड की राजकुमारी के विवाह की शर्त—रा सिंह का असन्तोष जनक शासन—जाटो का सरदार चूडामणि—प्रधान मन्त्री खुशह चाले।

सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उसका लडका ईश्वरी सिंह जयपुर के सिंहासन इन दिनों में जयपुर का राज्य भारतवर्ष के राज्य मे विशाल और शक्तिशाली समझा उस राज्य की सेना ने अनेक अवसरो पर अपनी शक्ति का परिचय देकर सम्मान प्राप्त इन दिनो में जयपुर राज्य की सीमा अन्य राज्यो की अपेक्षा अधिक बडी हो गयी। र सम्पत्ति की कमी न थी। शासन मे राजनीतिज्ञ और बुद्धिमान मन्त्री काम कर रहे थे। सेना भी शक्तिशाली थी। ईश्वरी सिंह के सिंहासन पर बैठने के बाद राज्य मे कोई वि नही हुई।

जानता था। बडी बुद्धिमानी के साथ उसने अपने उद्देश्यो की पूर्ति की थी और राज्य के शासन में अपना अधिकार पैदा कर लिया था। वह स्वार्थ परायण था। अवसर का लाभ उठाना जानता था। जिस मोहनसिंह को आमेर राज्य का उत्तराधिकारी बनाया गया और वहाँ के सिहासन पर बिठाया गया, उसकी अवस्था केवल नौ वर्ष की थी। इस बालक के सिहासन पर बैठने से नाजिर मोहन को बहुत समय तक राज्य से लाभ उठाने का मौका था। इसलिये राजस्थान की प्रथा के अनुकूल न होते पर भी बालक मोहनसिह को आमेर के सिहासन पर बिठाने की नाजिर मोहन ने चेष्टा की थी और उसमे उसको सफलता भी मिली थी।

जयपुर राज्य के श्रेष्ठ सामन्तो मे डिग्गी के मेघराज सिह सामन्त की मित्रता उस नाजिर के साथ थी। सामन्त मेघसिह ने नाजिर की मित्रता का पूरे तौर पर लाभ उठाया था और राजा की खास भूमि पर अधिकार करके स्वतन्त्रता के साथ उसका उपयोग किया था। शासन मे नाजिर का आधिपत्य था और उस नाजिर के साथ मेघसिंह की मैत्री थी। अन्त.पुर से लेकर राज्य के छोटे-बडे सभी कर्मचारियो तक जो लोग नाजिर के मेल के थे, वे सभी राज्य मे मनमानी कर रहे थे। उन पर किसी का नियन्त्रण न था। छोटे बालक के सिहासन पर बैठने से राज्य मे शासन का अधिकार नाजिर के हाथ मे रहेगा और अधिकार बने रहने से अनुकूल कर्मचारी और राज्य के अधिकारी बिना किसी अकुश के रहेगे। इसीलिये वे सब नाजिर के समर्थक हो रहे थे और नाजिर की इच्छानुसार बालक मोहनसिह वहाँ के सिहासन पर बिठाया गया था।

नाजिर ने नरवर से मोहनसिह को लाने और अभिषेक करके सिहासन पर उसे बिठाने के लिये किसी से परामर्श नही किया था। अपनी समझ मे उसको परामर्श करने की जरूरत भी नही थी। दरबार से लेकर राज्य तक सर्वत्र उसका आधिपत्य था। इसीलिये उसने न तो रानियो से कुछ पूछा था और न सामन्तो से कुछ बातचीत की। केवल अपने अधिकारियो के बल पर बालक मोहनसिंह को लेकर उसने जगतसिह का दाह-संस्कार कराया और उसके बाद दूसरे दिन मोहनसिह को मानसिह के नाम से सिहासन पर बिठाकर कछवाहो का राजा बना दिया। इसके बाद जयपुर की राजधानी मे जो सामन्त उपस्थित थे, उनकी सम्मति लेकर उसने राज्य की मोहर लगाने का प्रयास किया। उस समय उसके पक्षपाती सामन्त ही वहाँ पर मौजूद थे। लेकिन उन लोगो ने भी इसे पसन्द न किया और उन लोगो ने सोच समझकर ऐसा कर दिया, जिससे बालक मोहन के अभिषेक में न तो उनकी सम्मति जाहिर होती थी और न उनका विरोध ही प्रकट होता था। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ समय तक उस अभिषेक के सम्बन्ध में किसी ओर से आलोचना न हो सकी। जो लोग इस कार्य को नाजिर की अधिकार चेष्टा समझते थे, वे भी कुछ न कह कर ईस्ट-इण्डिया कम्पनी की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे चाहते थे कि कम्पनी के अधिकारी नाजिर के इस कार्य मे दखल दे। नाजिर बहुत समझदार था। विरोधी अवसरो को वह अनुकूल बनाना जानता था। दिल्ली मे अङ्गरेज रेजीडेण्ट को उसने अपना एक प्रार्थना-पत्र भेजा। उसके अनुसार कम्पनी की तरफ से एक कर्मचारी जयपुर-राज्य मे आया। राजा जगतसिह की मृत्यु के बाद छः दिन बीत चुके थे। कम्पनी ने अपने उस कर्मचारी के द्वारा निम्नलिखित प्रश्नो का उत्तर प्राप्त करने की कोशिश की थी:

१—नरवर राज्य के बालक मोहनसिह को जयपुर-राज्य का अधिकारी किस प्रकार बनाया गया ?

२—मोहनसिह के वश का विवरण क्या है ?

३—मोहनसिह के वश का जयपुर-राज्य के राज वश से क्या सम्बन्ध है ?

दे दिये और उन्ही दिनो में मेवाड़ के राणा ने भी माधव सिंह को मेवाड-राज्य के भानपुरा नामक नगर दिये । माधव सिंह को मिले हुये इन नगरो की वार्षिक आय रुपये थी ।

सिंहासन पर बैठे हुये ईश्वरी सिंह के कई वर्ष बीत गये । आरम्भ से ही सा उसका व्यवहार सन्तोषजनक नही रहा । इसलिये राज्य के सभी सामन्त ईश्वरी सिंह से उतार कर माधव सिंह को राज्य का अधिकार देने का विचार करने लगे । ईश सामन्तो के इन षड़यन्त्रो का कुछ भी पता न था । उसके व्यवहारो के कारण ही भी उससे प्रसन्न न थी । पिता और राणा से जो नगर माधव सिंह को मिले थे, उन सन्तोषजनक अपना जीवन बिता रहा था । ईश्वरी सिंह से लगातार अप्रसन्न औ आमेर-राज्य के मन्त्रियो और सामन्तो ने मेवाड के राणा के पास माधव सिंह को बिठाने के लिये सदेश भेजा और उस मिले हुये सदेश के आधार पर राणा ने अपने ईश्वरी सिंह को कहला भेजा : "विवाह के पहले सवाई जयसिंह के बीच निर्णय ह राणा राजवश की राजकुमारी के साथ विवाह करने से जो बालक पैदा होगा, किसी अपने पिता के राज्य का उत्तराधिकारी होगा । इसके बाद मेवाड़ की राजकुमारी के का विवाह हुआ था । मरने के पूर्व भी सवाई जयसिंह ने निर्णय किया था कि अवस्था पर भी मेरे बाद आमेर के सिंहासन पर माधव सिंह बैठेगा । इसलिए आमेर-राज्य आप माधव सिंह को दे दे ।"

राणा का यह सदेश पाकर ईश्वरी चिन्तित हो उठा । उसने अपनी सहायता से मदद लेने का विचार किया और उसके बाद आपा जी सीधिया के साथ उसने मराठो के सरदार आपा जो सीधिया ने ईश्वरी सिंह के पक्ष का समर्थन किया । यह राणा से छिपी न रही । उसने ईश्वरी सिंह के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की । कोट राजाओ ने माधव सिंह का पक्ष-समर्थन करके मेवाड की सेना का साथ दिया । र स्थान पर दोनो ओर की सेनाओ का भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ । मराठो की शक्तियाँ उ हुई थी । इसलिये कोटा, बूंदी और मेवाड की सेनाये युद्ध मे भयानक हानि उठाकर प

युद्ध मे जीतकर ईश्वरी सिंह का उत्साह बढ गया । कोटा और बूदी के रा विरुद्ध युद्ध मे मेवाड का साथ दिया था । इसलिये ईश्वरी सिंह ने उन दोनो राज्यो किया । कोटा के राजा ने शक्ति भर युद्ध करके शत्रुओ का सामना किया । उस यु सीधिया का एक हाथ कट गया । परन्तु अन्त मे कोटा और बूदी के राजाओ की पर दोनो राज्य के अनेक गाँवो और नगरो पर आपा जी सीधिया ने अधिकार कर लिया दोनो राजाओ को कर देना मन्जूर करके आपा जी के साथ सन्धि करनी पडी ।

आपा जो सीधिया की सहायता मिल जाने के कारण मेवाड के साथ युद्ध मे ई सफलता मिली थी । इसलिए मेवाड के राणा ने ईश्वरी सिंह के विरुद्ध होलकर क और उसके साथ सन्धि करके आमेर के राज्य पर माधव सिंह को बिठाकर चौरास बदले राणा ने माधव सिंह की तरफ से आरम्भ मे उसको मिले हुये परगने होलकर

सिंहासन पर बैठकर माधव सिंह ने आरम्भ से ही अपनी योग्यता का परिच में जो कमजोरियाँ पैदा हो गयी थी । उनको उसने दूर करने की कोशिश की । वह होलकर की सहायता से अपने पिता के सिंहासन पर बैठा था और उसकी सहायता के

साथ पटरानी का आश्रय और आधार लेकर ऐसा उत्तर दिया, जिससे बहुत साफ-साफ बालक मोहनसिंह को सिंहासन देने का विरोध प्रकट होता था। इन सब बातो का परिणाम यह निकला कि फरवरी के अन्त तक नाजिर की विरोधी शक्तियाँ बढने लगी और मोहनसिह का जो अभिषेक किया गया था, उसके प्रति राज्य की प्रजा मे असन्तोष पैदा हो गया। झिलाय का राजावत् सामन्त इस सिंहासन के पाने का अधिकारी था। वह अपने स्वत्व की रक्षा के लिये युद्ध करने के लिये तैयार हो गया। सिवाडा और ईसरदा के दोनो सामन्तो ने उसका साथ देने की प्रतिज्ञा की। पृथ्वीसिह का पुत्र इन दिनो मे ग्वालियर मे रहता था, उसको आमेर के सिहासन पर बिठाने के लिये कुछ लोगो की राय होने लगी। इस प्रकार राज्य मे नाजिर का विरोध आरम्भ हुआ। अभी तक वह समझता था कि अङ्गरेज कम्पनी की स्वीकृति मिल जाने के बाद विरोध करने का किसी में साहस नही हो सकता। लेकिन उसके बाद जो विरोध और विद्रोह पैदा हुआ, उसको असफल बनाने के लिये उसने सभी प्रकार के उपाय सोच डाले।

इन दिनो मे जयपुर-राज्य मे कोई शक्तिशाली सामन्त न था : नही तो नाजिर जैसे व्यक्ति ने राज्य मे अपना आधिपत्य कायम न किया होता। उसकी चालाकी की सीमा न थी। वह अन्त:पुर का एक साधारण सरक्षक था। लेकिन अपनी कूटनीति के द्वारा उसने दरबार से लेकर राज्य तक सबको अपनी मुट्ठी मे बांध रखा था। उसने अङ्गरेज रेजीडेण्ट को भुलावे मे रखा और उसकी तरफ से आने वाले कर्मचारी से अपने पक्ष के समर्थन का काम लिया। इन दिनो मे पटरानी ने यदि साहस करके उसका विरोध न किया होता तो मोहनसिह के अभिषेक का राज्य मे कोई विरोधी न था। पटरानी के विद्रोह करने पर नाजिर का मायाजाल निर्बल पडने लगा। उसके पास कूटनीति के अस्त्रो की कमी न थी। उसने पटरानी को अपने पक्ष मे करने के लिये एक रास्ता निकाला। वह जोधपुर के राजा की बहन थी। * नाजिर जोधपुर के राजा मानसिंह के पास पहुँचा और जयपुर-राज्य की परिस्थितियो की बडी बुद्धिमानी के साथ उसके सामने रखकर सभी प्रकार का शिष्टाचार और सम्मान प्रदर्शित किया। उसका विश्वास था कि पटरानी अपने भाई के आदेश को जरूर मानेगी। राजा मानसिह ने अपने पक्ष मे सम्मति ले लेना वह जरा भी कठिन कार्य नही समझता था। नाजिर ने राजा मानसिह से प्रार्थना करते हुये कहा : "राजा जगतसिंह ने मरने के पहले आमेर के सिंहासन पर बालक मोहनसिह को बिठाने का आदेश दिया था। अपने राजा की आज्ञानुसार ही राज्य मे मोहनसिंह का अभिषेक किया गया है। हमारी पटरानी को इसमे कुछ भ्रम हो गया है। इसलिये आप उसे सुलझा देने की कृपा करे। पटरानी के विरोध से राज्य मे अशान्ति उत्पन्न हो रही है और यह अशान्ति राजा जगतसिह के सम्मान के विरुद्ध है।"

नाजिर ने सभी प्रकार की बाते कह कर राजा मानसिह को प्रभावित करने की चेष्टा की। लेकिन उस राजा पर नाजिर का कोई प्रभाव न पडा। राजा मानसिह ने उसको उत्तर देते हुये कहा : जयपुर के सिंहासन पर इस समय किसको बिठाया जाय, इसका निर्णय करने के लिये प्रचलित प्राचीन प्रथाओ के अनुसार राजा के प्रधान सामन्त अधिकारी है। आप उन सामन्तो की सम्मति उनके हस्ताक्षरो के साथ ले लीजिये। इसके बाद आपको पटरानी की सम्मति की आवश्यकता न रहेगी और यदि होगी तो मै उसके हस्ताक्षर करवा दूंगा।

राजा मानसिह के उत्तर को सुनकर नाजिर ने आश्चर्य चकित होकर उसकी ओर देखा यह उसका अन्तिम अस्त्र था। उसके प्रयोग मे वह पूर्ण रूप से असफल हुआ। जोधपुर से लौटकर नाजिर

* कुछ लेखको ने पटरानी को जोधपुर के राजा की पुत्री माना है। —अनु०

उसको भी अपना बालक बनाकर रखा। ऊपर लिखे हुये पाँच लड़को मे पहला औ
जाति की विवाहिता स्त्री से पैदा हुआ था। तीसरा पुत्र मालिन जाति की स्त्री से और
वंशी स्त्रियो से पैदा हुये थे।

सूर्यमल्ल की मृत्यु हो जाने पर उसका लडका जवाहिर सिंह अपने पिता के र
कारी हुआ। वह माधवसिह का समकालीन था। सिंहासन पर बैठने के बाद जवाहिर
सिंह के साथ विरोध भाव पैदा किया। इसके दो मुख्य कारण थे। पहला कारण यह
सिंह मराठो पर आक्रमण न कर सके और दूसरा कारण यह था कि जयपुर के अ
सामन्त को निकालकर वहाँ पर अपना अधिकार कर ले। हिजरी सन् ११८२ मे
आमेर के राजा से कामा नामक राज्य दे देने के लिये कहा। परन्तु राजा माधव
माँग की कुछ परवा न की। इस अवस्था मे जवाहिर सिह क्रुद्ध होकर माधव ि
करने के लिये अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। वह किसी भी दशा मे माधवसिह के
चाहता था। इसलिए उसने स्वयं अवसर पैदा करने की चेष्टा की। उसने जाटो की
की और पुष्कर तीर्थ जाने के लिये वह अपनी सेना के साथ जयपुर राज्य से होकर
ऐसा करना राजनीति के सर्वथा विरुद्ध था। जब एक राजा अपनी सेना के साथ
भूमि से होकर निकलना चाहता है तो उसे नियम के अनुसार उस राजा से आज्ञा ले
परन्तु जवाहिरसिह ने ऐसा नही किया। वह अपनी सेना के साथ जयपुर राज्य के स
पुष्कर चला गया। वहाँ पर मारवाड के राजा विजयसिंह के साथ उसकी भेट हुई।
पूर्वक पगड़ी बदली।

इन दिनो में आमेर का राजा माधवसिंह बीमार था। उसके दोनो भाई हर
सहाय उसके आदेश के अनुसार शासन का प्रबन्ध करते थे। दोनो भाइयो ने जब सुना
सिंह अपनी सेना के साथ पुष्कर जाते हुये बिना आदेश के जयपुर राज्य से होकर गु
भाइयो ने माधवसिंह के पास जाकर कहा और पूँछा, "ऐसे अवसर पर क्या होना चा

अपने भाइयो के मुख से जवाहरसिह के अहंकारपूर्ण व्यवहार को सुनकर मा
मालूम हुआ। उसने उसी समय अपने भाइयो से कहा : इसके सम्बन्ध मे जवाहरि
लिखो और उससे कहो कि उसका यह कार्य सर्वथा नियम के विरुद्ध है। इसलिये दूस
ऐसा न होना चाहिये। लेकिन यदि जवाहरसिंह दूसरी बार फिर ऐसा करता है त
को उनकी सेनाओ के साथ उस पर आक्रमण करने को कहो।

राजा माधवसिह के आदेश के अनुसार उसके दोनो भाइयो ने तुरन्त प्रबन्ध
राज्य के सामन्तो को सारी बाते लिखकर युद्ध के लिए तैयार होने का अनुरोध किया
से निकलने मे जवाहरसिह का अपना एक उद्देश्य था। वह माधवसिंह के साथ यु
कोई कारण पैदा करना चाहता था। उसकी चाल से कारण पैदा हो गया। राज
भाइयो का भेजा हुआ पत्र पुष्कर मे जवाहरसिंह को मिला। उसने उस पत्र को पू
की और पुष्कर से लौटते हुये वह फिर जयपुर-राज्य से होकर गुज़रा। राजा मा
सामन्त अपनी सेनाओ के साथ युद्ध के लिये तैयार होकर आ चुके थे। जयपुर मे
सेना के प्रवेश करते ही सामन्तो ने उस पर आक्रमण किया। जवाहरसिह इस होने
को पहले से ही जानता था और वह युद्ध के लिए तैयार होकर पुष्कर से लौटा था
से भयानक युद्ध आरम्भ हुआ। अन्त में जवाहरसिह युद्ध से भागा और इस संग्रा
यद्यपि जयपुर के पक्ष मे रहा लेकिन आमेर-राज्य के कितने ही प्रधान सामन्त उस यु

शेखावटी का इतिहास

तिरसठवाँ परिच्छेद

शेखावत वंश—जयपुर राज्य का एक भाग शेखावटी राज्य—शेखावत वंश का आदि पुरुष बालोजी—फकीर का चमत्कार—शेखावत वंश मे फकीर का प्रभाव—शेख का बढता हुआ प्रभाव—आमेर के शासक के साथ सङ्घर्ष—राजा रायसल के बेटे—मुगल दरबार के अमीर का रोष—द्वारिकादास का आश्चर्य-जनक पौरुष—शेर के साथ युद्ध—राजा बहादुरसिंह और मुगल बादशाह का सेनापति ।

इस राज्य का इतिहास शेखावत वंश के इतिहास के साथ आरम्भ होता है । इस वंश का सम्बन्ध आमेर के सामन्तो के साथ है और इस वश का शेखावटी राज्य जयपुर के समान महत्व रखता है । यह बात जरूर है कि इस राज्य के नियम और कानून लिखे हुए नही हैं और न उसका कोई अधिकारी अथवा राजा ऐसा है, जिसे सभी स्वीकार करते हो । इस राज्य मे कोई एक व्यवस्था नही है । लेकिन उसके सभी सामन्तो में एकता है । इस वश के लोगो मे कोई निश्चित राजनीति नही पायी जाती । उनको जब कभी किसी समस्या के निर्णय की जरूरत होती है, उस समय शेखावटी के सभी सामन्त उदयपुर मे एकत्रित होकर निर्णय करते हैं और उनके द्वारा जो निश्चय होता है उसे सभी स्वीकार करते हैं ।

आमेर राजा उदयकर्ण के तीसरे पुत्र बालोजी को सन् १३८८ ईसवी मे सिहासन पर बैठने का अधिकार प्राप्त हुआ था । शेखावत् सभी लोग उसी के वंशज हैं । उन दिनो आमेर की राजनीतिक अवस्था कैसी थी, यदि उस पर ध्यान दिया जाता है तो साफ जाहिर होता है कि उस समय चौहान और नरवर राजवश के सामन्त उस राज्य के विभिन्न भागो पर शासन करते थे । उनकी शक्तियाँ अलग-अलग थी । यही कारण था कि मुसलमानो के आक्रमण के समय उनको सभी प्रकार के अत्याचार सहने पडे थे ।

इस समय जो शेखावश विशेष रूप से प्रसिद्ध है, बालोजी इस वंश का आदि पुरुष था । बालोजी का पोता अमरसर मे शासन करता था । वहाँ का शासन उसे किस प्रकार मिला था, इसको समझने के लिये हमारे सामने कोई सामग्री नही है । उसके तीन लडके पैदा हुये थे । पहले का नाम था मोकलजी, दूसरे का नाम था खेमराज जो और तीसरे का नाम था खारद । मोकल अपने पिता के स्थान पर अमरसर का शासक हुआ । दूसरे पुत्र खेमराज के वंशज बाला पोता के नाम से प्रसिद्ध हुए । खारद के तूमन नाम का एक बालक पैदा हुआ । उसके वशज कुम्भावत नाम से प्रसिद्ध हुए । इन दिनो मे कुम्भावत लोगो का नाम प्राय. लोप सा हो गया है ।

मोकल के बहुत समय तक कोई सन्तान पैदा नही हुई । अन्त मे एक मुसलमान फकीर का नाम था, शेखबुरहान । इसलिये उसके आर्शिवाद से पैदा होने वाले बालक का नाम शेखाजी रखा गया । राजस्थान मे इस समय जो शेखावत वश प्रसिद्ध है उसका आदि पुरुष यही शेखाजी था ।

नामक महावत को दरबार का सदस्य नियुक्त किया। रानी का यह कार्य राज्य के सामन
न लगा। महावत की इस नियुक्त से दरबार के सदस्य का अपमान होता था। इसलिये
रानी के इस कार्य का विरोध किया। परन्तु उसके कुछ परवा न करने पर राज्य के स
अप्रसन्न होकर राजधानी से अपनी-अपनी जागीरो मे चले गये। बडी रानी ने उनके च
कुछ परवा न की और उसने मराठो से मिलकर अम्बाजी की अधीनता मे एक वैतनिक
राज्य मे रखी। उस सेना ने मालगुजारी वसूल करने का काम किया। इन दिनो मे आर
एक व्यक्ति आमेर का प्रधान मन्त्री था और खुशहाली राम बोरा राज्य का एक मन्त्री
राजनीति मे अत्यन्त कुशल था। लेकिन फिरोज के प्रभुत्व ने उसकी मर्यादा को भी क्षी
था। रानी ने प्रभावित होकर एक साधारण महावत को अपने मन्त्रिमण्डल मे रखा
रानी का विशेष अनुराग रखने के कारण उसका प्रभाव मन्त्रिमण्डल से लेकर सम्पूर्ण रा
गया, इस दशा मे राज्य के शासन का कार्य नौ वर्षों तक चलता रहा।

इन्ही दिनो मे आमेर का राजा पृथ्वीसिंह घोडे से गिर कर मर गया। इस दुर्घ
के सर्वसाधारण मे यह अफवाह फैल गयी कि बडी रानी ने अपने लडके प्रतापसिंह
सिंहासन पर बिठाने के लिये विष देकर पृथ्वीसिंह को मरवा डाला है। यद्यपि इस
आधार सही नही था क्योकि पृथ्वीसिंह के न रहने पर राज्य का उत्तराधिकारी उसक
बडी रानी का लडका प्रतापसिंह नही हो सकता था। इसीलिये कि पृथ्वीसिंह का विवाह
और उनके साथ कृष्णगढ की राजकुमारी से जो विवाह हुआ था, उससे मानसिंह नाम
पैदा हुआ था। पृथ्वीसिंह के बाद राज्य का उत्तराधिकारी यह बालक मानसिंह था।
बड़ी रानी के द्वारा पृथ्वीसिंह के मारे जाने का कोई अर्थ नही निकलता। वास्तव मे वह
कर मरा था।

पृथ्वीसिंह के मर जाने पर मानसिंह की माता को अपने पुत्र के सम्बन्ध मे भय
इसलिये उसने अपने बालक को कृष्णगढ भेज देने का इरादा किया। लेकिन वहाँ पर
हुआ। इसलिये वह अपने बालक को लेकर सीन्धियाँ के यहाँ चली गयी और वही पर व
सिंह का पालन-पोषण होने लगा। पृथ्वीसिंह के परलोकवासी होने पर आमेर के सूने
बडी रानी का लडका प्रतापसिंह वैठा। खुशहाली राम इन दिनो मे आमेर का प्रधान
उसने अभिषेक के समय प्रतापसिंह की सभी प्रकार सहायता की। खुशहाली राम क
उपाधि दी गयी थी और वह प्रधान मन्त्री की हैसियत से आमेर-राज्य मे काम कर रहा
की बात है कि फीरोज के साथ उसका भीतर ही भीतर विरोध चल रहा था। प्रधान
हालीराम ने फीरोज के प्रभुत्व को मिटा देने का प्रयत्न किया। इसके लिये उसने जिन
आश्रय लिया, उनसे माचेडी के सामन्त को अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने मे बडी सहाय
प्रतापसिंह के अभिषेक के समय आमेर राज्य के सभी सामन्तो ने भाग लिया था। लेकि
का सामन्त राजधानी मे नही आया था। प्रधान मन्त्री खुशहालजी राम की राजनीतिक
के विरोध में चल रही थी और इसके लिये उसने जो कुछ कर रखा था, उसमे प्रमुख
कि उसने आमेर के मन्त्रिमण्डल से फीरोज को हटाने के लिये दिल्ली के मुगल बादशाह
की थी।

नजफ खाँ दिल्ली के मुगल बादशाह के यहाँ प्रधान सेनापति था और इन दिनो
आस पास जाटो के उपद्रव बढ रहे थे। उनके आगरा पर आक्रमण करने पर प्रधान सेन
ख़ाँ ने बादशाह के साथ परामर्श किया और मराठो की सहायता लेने के लिये उसने

यहाँ का प्रत्येक सामन्त आमेर के राजा का आधिपत्य स्वीकार करता था। उनके यहाँ घोड़ों के जो बच्चे पैदा होते थे वे कर के रूप मे आमेर राज्य को दे दिये जाते थे। * लेकिन शेखा ने आमेर-राज्य के तीनो दुर्गों को छीन लिया था और पूर्ण रूप से अपनी स्वतन्त्रता कायम की थी। इसी समय से शेखावटी राज्य स्वतन्त्र हो गया और आमेर-राज्य के साथ उसका कोई सम्बन्ध न रह गया था। सवाई जयसिंह के समय तक शेखावटी राज्य स्वतन्त्र रहा। परन्तु सवाई जयसिंह ने दिल्ली के बादशाह के यहाँ सम्मानित होकर शेखावटी पर आक्रमण करने का इरादा किया और बादशाह की फौज लेकर उसने शेखावटी के स्वतन्त्र सामन्तो को युद्ध मे पराजित किया। इसके बाद शेखावटी के सामन्तो ने आमेर की अधीनता फिर से स्वीकार की और वे लोग आमेर को कर देने लगे।

शेखावटी-राज्य मे शेखा ने बहुत दिनो तक अपने प्रभुत्व का प्रदर्शन किया। उसके मरने के बाद उसका लडका रायमल्ल उसके स्थान पर अधिकारी हुआ। रायमल्ल के शासन का कोई उल्लेख इतिहास मे नही मिलता। रायमल्ल के बाद सूजा अमरसर के सिंहासन पर बैठा। उसके तीन लडके पैदा हुये—पहला नूनकरण, दूसरा रायसल और तीसरा गोपाल। उसका बडा लडका अमरसर उसके अधीन तीन सौ ग्रामो का अधिकारी हुआ। रायसल को लाम्बी नामक और गोपाल को झाडली नाम की जागीर मिली। रायसल के द्वारा शेखावटी की उन्नति बडी तेजी के साथ हुई।

शेखावटी के अधिकारी नूनकरण का मन्त्री देवीदास नाम का एक वैश्य था। वह अत्यन्त बुद्धिमान और दूरदर्शी था। एक दिन अपने स्वामी के साथ विवाद करते हुये देवीदास ने कहा: "पिता की सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त करने की अपेक्षा अपने बल-पौरुष से अपनी उन्नति करना मनुष्य का श्रेष्ठ कर्त्तव्य है। पिता की सम्पत्ति और जायदाद पर अधिकार पा जाने से उसको श्रेष्ठता का परिचय नही मिलता।" देवीदास की इस बात को सुनकर प्रतिवाद करते हुए नूनकर्ण ने कहा: "आपकी यह बात कुछ महत्व नही रखती। यदि ऐसी ही बात है तो हमारे भाई रायसल के पास लाम्बी मे जाकर आप रहिये और अपनी श्रेष्ठता का परिचय दीजिये।'

नूनकरण ने देवीदास को मन्त्री के पद से हटा दिया। वह अमरसर को छोडकर अपने परिवार के साथ लाम्बी चला गया। उसके वहाँ पहुँचने पर रायसल ने बडे सम्मान के साथ उसे लिया। लेकिन देवीदास इस बात को अनुभव करने लगा कि रायसल की आमदनी बहुत साधारण है। इसलिये मेरे यहाँ रहने से रायसल के ऊपर खर्च की वृद्धि हो जायगी। उसने यह भी सोचा कि जिस उद्देश्य से अमरसर छोडकर मैं यहाँ आया हूँ, उसमे यहाँ रहकर मैं सफलता प्राप्त न कर सकूँगा। इस प्रकार की बाते सोच-समझकर देवीदास ने रायसल से कहा: "मैं दिल्ली मे मुगल बादशाह के यहाँ जाना चाहता हूँ।" इसके साथ उसने रायसल को भी दिल्ली चलने के लिये कहा। रायसल की समझ मे आ गया। वह साहसी और आशावादी था। अपने बीस सवारो के साथ वह दिल्ली पहुँच गया।

---

* इसी प्रकार की प्रथा प्राचीन फारस मे भी प्रचलित थी। उस राज्य के अन्तर्गत जो छोटे-छोटे राजा अथवा सामन्त दूरवर्ती स्थानो पर शासन करते थे, वे अपने घोडो के बच्चो को कर के रूप में फारस राज्य मे भेजते थे। हेरोडोटस ने लिखा है कि आरमेनिया से कर के रूप मे एक वर्ष में बीस हजार घोड़ो के बच्चे वहाँ भेजे गये थे।

मन्त्रिमण्डल के कुछ लोगों ने मराठो के साथ सन्धि करने को सलाह दी। यह
लेकिन दूसरे ही दिन वह सन्धि भङ्ग कर दी गयी। इसका परिणाम यह निकला कि
दिनो तक भयानक अशान्ति रही। चारो तरफ अत्याचार होते रहे और गरीब प्रजा
थी। दुर्भाग्य के इन दिनो को पार करके प्रतापसिह समर्थ हुआ। उसने शासन अ
और जिन लोगो के कारण राज्य की यह दुरवस्था हुई थी, उनको निकाल कर उ
मराठो को दमन करने की प्रतिज्ञा की।

इन दिनो मे मराठो के अत्याचार भारतवर्ष के अनेक स्थानो पर हो रहे थे।
राजस्थान के विभिन्न राज्यो पर लगातार आक्रमण करके पैशाचिक अत्याचार किये
रूप से राज्यो को लूटा था। प्रतापसिह ने इन्ही दिनो मे आमेर-राज्य का शासन-प्रबन्
मे लिया था। युवक प्रतापसिह अत्यन्त स्वाभिमानी और साहसी था। मराठो के द्व
जो अत्याचार हो रहे थे, उनको सुनकर उसका खून उबल रहा था। सन् १७८७ ईस
मे विजयसिह मारवाड के सिंहासन पर था। प्रतापसिह ने बहुत सोच-समझ कर अ
दूत के द्वारा विजयसिह के पास भेजा। उसमे उसने लिखा : "मराठो के द्वारा होने व
से आप अपरिचित न होगे। इन मराठो ने चारो ओर जिस प्रकार निष्ठुर अत्याचा
उनको देखकर मेरे हृदय मे बडी पीड़ा हो रही है और मैं किसी भी अवस्था मे उनका
आवश्यक समझता हूँ। इसके लिये यदि समस्त राजपूत राजा मिलकर मराठो पर आ
शत्रुओ की पराजय आसानी के साथ हो सकती है। इन अत्याचारी मराठो के साथ
लिये मैं स्वय अपनी सेना के साथ जाऊँगा। यदि आप हमारी सहायता में अपने र
सेना भेज सके तो शत्रुओ का विनाश और पराजय बिना किसी सन्देह के हो सकती
ऐसा कर देने से राजस्थान के सभी राजाओ की स्वाधीनता सुरक्षित हो सकेगी।"

प्रतापसिह के इस पत्र को पढ़कर विजयसिंह प्रभावित हुआ। मारवाड-राज्य
उत्साह पैदा हुआ। वहाँ की सेना आमेर की सेना के साथ मिलकर अत्याचारी मराठो
करने के लिये तैयार होने लगी। उन्ही मे मारवाड़ के राजा विजयसिंह ने मराठो के
अपना आमेर का राज्य वापस लेने का निर्णय किया। राठौर सेना मारवाड से चलक
सेना के साथ जाकर मिल गयी।

तुङ्गा नामक स्थान पर मराठो के साथ आमेर और मारवाड़ की सेनाओ का
हुआ। सीधिया मराठा सेना का सेनापति था और उसके साथ फ्रांसीसी सेनापति डी
था। मराठो और राजपूतो मे कुछ समय तक भयङ्कर सग्राम हुआ। अन्त मे सीन्धिया
हुई। वह अपनी युद्ध की सामग्री और अस्त्र-शस्त्र भी छोडकर बची हुई सेना के साथ
कछवाहा और राठौर सेना ने मराठो की समस्त सम्पत्ति और सामग्री पर अधिकार कर
युद्ध मे सीन्धिया के मुकाबिले युद्ध करने के लिये प्रतापसिह स्वय गया था। सन् १७८६
युद्ध मे विजयी होकर प्रतापसिह ने एक विशाल उत्सव किया और उसने चौबीस लाख
दरिद्रो को दान मे दिये।

तुङ्गा के युद्ध मे विजयी होने पर प्रतापसिह की राजस्थान मे बहुत ख्याति मि
की पराजय से चारो ओर के राज्यो मे शान्ति कायम हुई। लेकिन यह परिस्थिति बहुत
रही। कई वर्षों के बाद माधवजी सीन्धिया एक नयी सेना सङ्गठित करके रवाना हुआ

पुर को अपने अधिकार मे कर लिया। उदयपुर पहले कसुम्बी नाम से प्रसिद्ध था और वहाँ पर निर्वाण राजपूतो का अधिकार था। *

बादशाह अकबर के साथ मेवाड के राणा प्रतापसिंह का जो युद्ध हुआ था। उसमें रायसल आमेर के राजा मानसिह के साथ बादशाह के पक्ष में राणा प्रतापसिह से युद्ध करने गया था। काबुल के अन्तर्गत कोहिस्तान के अफगानियो के विरुद्ध युद्ध करने के लिये दिल्ली से मुगलो की एक फौज गयी थी, रायसल को उस फौज के साथ वहाँ पर युद्ध करने के लिये भेजा गया था। रायसल ने सभी युद्धो मे अपने युद्ध-कौशल का प्रदर्शन किया था और उसके लिये बादशाह ने उसको पुरस्कृत किया था।

रायसल ने अपने अधिकार के नगरो और ग्रामो पर शान्तिपूर्वक शासन करने के बाद इस ससार को छोडकर परलोक यात्रा की। मरने के पहले उसने अपने राज्य के सात भाग कर दिये थे और उन सातो भागो को उसने अपने सातो पुत्रो मे बाँट दिया था। उसके पुत्रो के वशजो से अगणित परिवारो और बहुत-से वशो की सृष्टि हुई। रायसल के सातो लडको के नाम और उनके हिस्से मे मिले हुये राज्य इस प्रकार हैं।

१—गिरिधर	...	खण्डेला और रेवासा
२—लाडखान	..	खाचरियावास
३—भोजराज	..	उदयपुर
४—तिरमलराव		कासली और चौरासी ग्राम
५—परशुराम	...	बिशाई
६—हरीराम	...	मूँडरू
७—ताजखान	...	कोई स्थान नही मिला

गिरिधर रायसल का बडा लड़का था। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण उसको राज्य का बडा हिस्सा प्राप्त हुआ था। वह अपने पिता के समान तेजस्वी और शूरवीर था। दिल्ली के बादशाह से उसे खण्डेला राजा की उपाधि मिली।

इन दिनो मे बादशाह के राज्य मे बडी गडबडी मची हुई थी। मेवात के पहाडी इलाको पर मेव जाति के पहाडी लुटेरो ने लूटमार आरम्भ कर दी थी और वे कभी-कभी राजधानी के समीप तक आ जाते थे। उनको दमन करने के लिये बादशाह ने गिरिधर को तैयार किया। उन पहाडी लुटेरो को दमन करने के लिये गिरिधर ने अपनी तैयारी आरम्भ की। उसने सोचा यदि हम एक बड़ी सेना लेकर उन लुटेरो के विरुद्ध जायँगे तो वे भयभीत होकर पहाड की कन्दराओ मे छिप जायँगे और हमारे लौट आने पर उनके अत्याचार फिर होने लगेगे। इसलिये उनका दमन करने के लिये इतनी छोटी सेना साथ लेकर जाने की जरूरत है कि जिसमे वे लोग युद्ध करने के लिये सामने आवे।

* चौहान राजपूतो की एक शाखा निर्वाण के नाम से प्रसिद्ध थी। इस वश के राजपूतो ने अपनी शक्तियो को मजबूत बना लिया था। उदयपुर का नाम पहले कसुम्बी था। वहाँ पर निर्वाण राजपूतो की राजधानी थी। इस उदयपुर मे ही आवश्यकता पडने पर अपनी समस्याओ का निर्णय करने के लिये शेखावटी के सामन्त एकत्रित हुआ करते थे।

बासठवाँ परिच्छेद

आमेर के सिंहासन पर जगतसिंह—राजपूत राज्यो की अवनति—अङ्गरेजों सिंह की सन्धि—राजा जगतसिह पर अङ्गरेज लेखको का झूठा दोषारोपण—स्वा अङ्गरेजो की तरफ की सन्धि की अवहेलना—राजा जगतसिह की अयोग्यता—पतन क का राज्य—जगतसिंह की रखेल रानी—राज्य मे नाजिर मोहन के षड़यन्त्रों का जाल

प्रतापसिंह के बाद सन् १८०३ ईसवी मे जगतसिंह आमेर के सिंहासन पर बैठ मे आमेर के साथ-साथ वहाँ के समस्त राजपूत राज्यो की अवनति हो गयी थी। मर चारो से राजस्थान का प्रत्येक राज्य अशान्ति के दिन व्यतीत कर रहा था। कही पर न थी। सर्वत्र व्यवसाय को भयानक क्षति पहुँची थी। किसानो की खेती लगातार नष्ट चारो तरफ मराठो की लूट मार चल रही थी। उनको रोकने के लिये राजपूत रा कोई साधन न था। मराठो के दो सङ्गठित दल थे। एक का नेतृत्व होलकर कर सीन्धिया दूसरे दल का सेनापति था। पठानो का सेनापति अमीरखां मराठो का सह था। इन दिनो में राजपूतो की अवस्था अच्छी न थी। पठानो और मराठो के शक्ति लगातार उनका विनाश कर रहे थे। जगतसिह के सामने भयानक सङ्कट था। अपने र के लिये उसे कही कुछ दिखायी न देता था। राजपूत राजा सङ्गठित होकर शत्रुओ क कर सकते थे। वे अपने सस्कारो मे एकता को लेकर संसार में न आये थे। इधर राजपूत राजाओ को मुगल बादशाह का आश्रय मिल रहा था। उनकी बादशाहत भी मृतप्राय हो रही थी। समुद्र पार करके जो अङ्गरेज इस देश मे आये थे, केवल उन दिनो में सजीव और जाग्रत हो रही थी। इस दशा मे जगतसिह की आँखे बार-बार की तरफ देख रही थी। उसने सोच-समझकर सन् १८०३ ईसवी मे अङ्गरेजो के सा ली। वह सन्धि सात शर्तों के साथ लिखी गयी थी। उसका सारांश इस प्रकार है:

(१) इस सन्धि के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी और राजा जगतसिह उसके उत्त मे स्थायी रूप से मित्रता कायम होती है।

(२) इस सन्धि के अनुसार एक पक्ष का शत्रु दोनो पक्षो का शत्रु होगा और कि का मित्र दोनो पक्षो का मित्र समझा जायगा।

(३) राजा जगतसिह को अपने राज्य मे शासन करने का पूर्ण अधिकार ह इण्डिया कम्पनी उसमे कभी हस्तक्षेप नही करेगी।

(४) कम्पनी के अधिकृत राज्यो पर अगर इस देश की कोई शक्ति आक्रमण आमेर की सेना कम्पनी की सेना के साथ आक्रमणकारी के साथ युद्ध करेगी।

(५) इस सन्धि को स्वीकार करके राजा जगतसिह ने कम्पनी के अधिकारो को है। यदि किसी समय किसी के साथ राजा जगतसिह का सङ्घर्ष पैदा होगा तो सन्धि के

किया गया। निश्चित समय से पहले ही दर्शको की एक अपार भीड वहाँ पर एकत्रित हो गयी। द्वारिकादास अपनी तैयारी करने लगा। स्नान करके पीतल के एक पात्र मे पूजा की सामग्री लेकर वह आराधना के लिए बैठा और पूजा का कार्य समाप्त करने के बाद द्वारिकादास शेर से लडने के लिये उस स्थान पर पहुँचा, जो उसके लिए तैयार किया गया था। उसके वहाँ पहुँचते ही उसके सामने शेर छोडा गया। मनोहरपुर के राजा का विश्वास था कि द्वारिकादास को सामने देखते ही शेर मार डालेगा। लडाई के इस दृश्य को देखने के लिए उस स्थान पर बादशाह भी आया था। शेर के सामने पहुँच कर द्वारिकादास ने उसके मस्तक पर चन्दन लगाया, उसके गले मे माला डाली और उसके सामने बैठकर वह पूजा करने लगा। शेर द्वारिकादास के समीप चुपचाप खडा हो गया और अपनी जीभ से वह उसको चाटने लगा। द्वारिकादास निर्भीकता के साथ उसके सामने बैठा रहा। उपस्थित दर्शको ने आश्चर्य के साथ यह दृश्य देखा। बादशाह के विस्मय का ठिकाना न रहा। इसके बाद बादशाह का आदेश पाकर द्वारिकदास शेर के सामने से उठ कर चला आया। शेर अपने स्थान पर चुपचाप खडा रहा। उसने द्वारिकादास पर किसी प्रकार का आघात नही किया।

बादशाह ने अत्यन्त आश्चर्य के साथ इस दृश्य को देखा। उसकी समझ मे न आया कि ऐसा क्यो हुआ। वह विश्वास पूर्वक सोचने लगा कि द्वारिकादास मे कोई दैवी शक्ति है। उसने उसे बुला कर कहा - "आप जो चाहे, मुझसे माँग सकते है, मैं वही आप को दूँगा।"

बादशाह की इस बात को सुनकर द्वारिकादास ने कहा "इस विपद से भगवान ने मेरी रक्षा की है। भविष्य मे आप किसी को भी इस प्रकार की विपदा मे न डाले, यही आप से मेरी प्रार्थना है।"

द्वारिकादास अपने समय के अत्यन्त शूरवीर खानजहाँन लोदी के द्वारा मारा गया। ग्रथो से मालूम होता है कि वे दोनो ही एक दूसरे के द्वारा मरे। यह घटना इस प्रकार है "द्वारिकादास और खानजहाँन लोदी मे परस्पर मित्रता थी। कुछ कारणो से दिल्ली का बादशाह खानजहाँन से बहुत चिढ गया और उसने द्वारिकादास को खानजहाँन पर आक्रमण करने और उसके शरीर को दरबार मे लाने का आदेश दिया। बादशाह की इस आज्ञा को सुनकर द्वारिकादास बडे असमजस मे पड गया। खानजहाँन उसका मित्र था। फिर वह उस पर कैसे आक्रमण कर सकता था! बहुत सोच समझकर द्वारिकादास ने खानजहाँन लोदी को सदेश भेजा कि बादशाह ने आपके विरुद्ध अत्यन्त अनुचित कार्य मुझे सौपा है। मैं बडे असमजस मे हूँ। आप या तो बादशाह के सामने आकर आत्म-समर्पण करे अथवा भाग जावे। खानजहाँन ने द्वारिकादास का यह सदेश पाया। वह एक शूरवीर था। द्वारिकादास के परामर्श के अनुसार न तो उसने आत्म-समर्पण करना चाहा और न भाग जाना ही उचित समझा। इन दोनो बातो की अपेक्षा मित्र के हाथो से मारे जाने पर अपनी श्रेष्ठता समझी। फरिश्ता ने अपने इतिहास मे इस घटना का वर्णन करते हुए दोनो वीरो की प्रशसा की है। युद्ध-क्षेत्र मे पहुँच कर दोनो लडे और दोनो ही दूसरे की तलवार से मारे गये।

द्वारिकादास के बाद उसका लडका वीरसिंह देव उसके स्थान पर बैठा। वीरसिंह देव अपनी सेना के साथ मुगल बादशाह की आज्ञा से दक्षिण के युद्ध मे गया था। वहाँ पर उसके युद्ध कौशल से प्रसन्न होकर बादशाह ने उसको परनाला का शासक बना दिया। खण्डेला के एक ऐतिहासिक ग्रथ से पता चलता है कि वीरसिंह देव आमेर के राजा की आधीनता मे न रह कर स्वतन्त्र रूप से शासन करता था। परन्तु उस समय की परिस्थितियो से यह बात सम्भव नही मालूम होती। क्योकि मिर्जा राजा जयसिंह उन दिनो मे सम्राट के यहाँ सम्मानपूर्ण पद पर था। इसलिए

सङ्घर्ष का वर्णन विस्तार के साथ इस पुस्तक में पहले किया जा चुका है, इसलिये उसका उल्लेख करना किसी प्रकार आवश्यक नही ।

राजा जगतसिंह ने ऊपर लिखी हुई सन्धि ईस्ट इण्डिया-कम्पनी के साथ की उसी समय तक चली, जब तक कम्पनी के अङ्गरेजो को उसकी आवश्यकता रही । उस देने में जिस समय कम्पनी को अपना लाभ मालूम हुआ तो वह बिना किसी आधार के और उसका अपराधी राजा जगतसिंह को बनाया गया । इन दिनो में ईस्ट-इण्डिय शक्तियाँ बराबर बढ रही थी । राजस्थान के सभी राजाओ ने क्रम क्रम से कम्पनी के की । उस दशा में जयपुर के राजा को फिर विवश होकर सन् १८१८ ईसवी की २ के साथ नयी सन्धि करनी पडी ।

जगतसिंह न केवल शासन मे बल्कि अन्य बातो मे भी अयोग्य था । उसकी इ कारण जयपुर राज्य का पतन हुआ । अयोग्य मनुष्य को सांसरिक ज्ञान के अभाव भी विश्वास नही रहता और इसीलिये उसको दूसरे के आश्रय पर चलना पडता है उससे उचित और अनुचित कोई भी लाभ उठा सकता है । जगतसिंह की यही अवस्था निर्बलता के कारण उसको होलकर की सेना के एक अधिकारी अमीर खाँ की सहाय. अमीरखाँ दूसरे को लूटने मे एक असाधारण पुरुष था । उसने अपनी सेना के खर्च के पुर राज्य से अपरिमित सम्पत्ति ली थी और उसके बाद भी उसने जयपुर-राज्य के ि और नगरो पर अधिकार कर लिया था । इन दिनो में केवल अमीरखाँ जयपुर-राज्य का कारण बन गया था । वह कूटनीति का पण्डित था । उसने जयपुर मे भयानक रू पैदा कर दी थी । अमीरखाँ एक तरफ अङ्गरेजो का मित्र बनने की कोशिश करता था तरफ वह जयपुर के राजा जगतसिंह को अङ्गरेजो के विरुद्ध उत्तेजित किया करता भलाई इसी मे थी कि अङ्गरेजो के साथ जगतसिंह की सन्धि चल न सकी । वह भ तिकडमबाज था । अङ्गरेजो से जगतसिंह की निन्दा किया करता था और जगतसिंह क सदा सावधान रहने की चेतावनी दिया करता था । जगतसिंह उसकी इन चालो को सम उसमे न तो इतनी योग्यता थी और न आत्म-विश्वास था । अपनी इन निर्बलताओ राज्य के सामन्तो और मन्त्रियो पर भी विश्वास न करता था । उसकी इन कमजोरिय रूप से लाभ अमीरखाँ ने उठाया । उसने जगतसिंह को अङ्गरेजो के साथ सन्धि न करने तैयार किया । वह जगतसिंह का मित्र न था । उसकी अयोग्यता के कारण अमीरखाँ जयपुर को असहाय समझता था । इसलिये इन दिनो मे उसने जयपुर के अत्यन्त समीप पुरा नामक स्थान पर गोलो की वर्षा की थी । जिससे घबराकर जगतसिंह को दूसरी व के साथ सन्धि करनी पडी । इस बार की सन्धि में जयपुर-राज्य पहले की अपेक्षा अ गया । पहली सन्धि मे उससे कर लेने की कोई शर्त न रखी गयी थी । दूसरी बार की स पुर राज्य को कर देना स्वीकार करना पडा । यह सन्धि दस शर्तों में तैयार की गयी । भय से सन्धि की शर्तों का उल्लेख हम यहाँ नही करना चाहते । इस दूसरी सन्धि के जगतसिंह ने ईस्ट-इण्डिया कम्पनी को कर के रूप मे आठ लाख रुपये वार्षिक देना और इस सन्धि को मन्जूर करके उसने जयपुर-राज्य की अधीनता का अन्त कर दिया । दिनो मे राज्य की परिस्थितियाँ इतनी भयानक हो गयी थी कि अङ्गरेजो की सन्धि के ि राज्य का कार्य किसी प्रकार चल न सकता था और यदि उसने ऐसा न किया होता त

खण्डेला मे बादशाह की सेना के प्रवेश करने के समय सुजान सिंह मारवाड मे विवाह करने के लिए गया था। वहाँ से लौटकर सुजान सिंह ने अपनी माता और नवविवाहिता पत्नी से खण्डेला जाने के लिए विदा माँगी। इस समय उनके परिवार के दूसरे लोग भी वहाँ पहुँचकर सुजान सिंह से कहने लगे "खण्डेला मे बादशाह की सेना के आक्रमण करने पर राजा बहादुर सिंह को वहाँ की रक्षा करनी चाहिए। आपको वहाँ पर हस्तक्षेप की क्या आवश्यकता है।"

इस बात को सुनकर सुजान सिंह ने कहा "क्या मैं रायसल का वशज नही हूँ? खण्डेला के मन्दिरो के तोडे जाने पर क्या मेरा कर्त्तव्य नही है कि मैं वहाँ जाकर उन मन्दिरो की रक्षा करूँ! इस प्रकार के अत्याचारो के समय कोई भी राजपूत चुप होकर नही बैठ सकता।'

सुजान सिंह की इस बात को सुनकर किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ। उसके वीरोचित वाक्यो को सुनकर उसके वश के साठ शूरवीर उसकी सहायता के लिए साथ चले। अपने साथियो के साथ सुजान सिंह ने खण्डेला राजधानी मे प्रवेश किया। सेनापति बहादुर खाँ ने सुजान सिंह के आने का समाचार सुना। उसने इस विषय मे सुजान सिंह से बातचीत करने के लिए उसके दो आदमियो को अपने यहाँ बुलवाया। उसके आने पर बहादुर खाँ ने कहा "बादशाह ने खण्डेला के देव-मन्दिरो को विध्वस करने का हमे आदेश दिया है। लेकिन यदि खण्डेला राजा बादशाह की अधीनता स्वीकार कर लेता है और अपने मन्दिरो के समस्त सोने के कलशो को हमे दे देता है तो हम मन्दिरो को विध्वस नही करेगे।"

बहादुर खाँ के मुख से इस बात को सुनकर सुजान सिंह के दोनो प्रतिनिधियो ने नम्रता के साथ उससे बाते की और बहुत-सा धन उसको देना मजूर किया। लेकिन बहादुर खाँ उस पर राजी न हुआ और उसने स्पष्ट शब्दो मे कहा "आपको किसी भी दशा मे यहाँ के मन्दिरो के कलश देने पड़ेगे।' सेनापति बहादुर खाँ की इस हठ को सुनकर स्वाभिमानी दोनो राजपूतो को क्रोध मालूम हुआ। उन्होने गीली मिट्टी का एक-एक कलश बनाकर उसके सामने रखा और एक ने कहा. "मन्दिरो से सोने के कलशो की बात तो बहुत दूर है, इस मिट्टी के कलश को ले लेने का अधिकार किसमे है, यह मै देखना चाहता हूँ।

इस प्रकार दोनो ओर से आवेश पूर्ण बाते हुई। बहादुर खाँ के साथ दोनो राजपूत कुछ निर्णय न कर सके। वे अत मे इस बात को समझकर कि युद्ध होना अनिवार्य है। वहाँ से चले गये।

उन दिनो मे खण्डेला मे कोई दुर्ग न था। वहाँ का राज-प्रसाद एक ऊँचे शिखर पर बना हुआ था। उस शिखर से एक रास्ता सरदारो के निवास-स्थान की तरफ गया था। उस रास्ते

मन्दिर नष्ट किये गये थे, उसका प्रमाण मन्दिरो की टूटी-फूटी इमारतो और मूर्तियो के टुकडो से ही भलीभाँति हो सकता है। लाहौर से लेकर कन्याकुमारी तक एक भी ऐसा मन्दिर नही है, जो औरङ्ग-जेब के हुक्म से नष्ट न किया गया हो। नर्मदा के एक छोटे-से टापू पर ओकार जी का एक प्रसिद्ध मदिर है। उस मदिर की मूर्ति के तोडे जाने के समय की घटना यहाँ पर देने के योग्य है। औरङ्ग-जेब ने उस मदिर की मूर्ति के सामने जाकर कहा "यदि तुममे वास्तविक कोई शक्ति हो तो तुम उसे मेरे सामने प्रकट करो और मेरे आदेश को शक्तिहीन बना दो।" इस घटना का उल्लेख करने वाले ग्रन्थो मे लिखा है कि ओकार जी के मस्तक पर आघात होते ही उनकी नाक और मुख से तेजी के साथ खून गिरना आरम्भ हो गया। इस दशा मे दूसरा आघात करने का साहस नही हुआ। उस समय से ओकार जी का महत्व लोगो मे अधिक बढ गया।

२१ दिसम्बर को जगतसिंह की मृत्यु हो जाने पर राज्य में गोद लेकर
सम्हालने का निश्चय हुआ। लेकिन वर्तमान परिस्थितियो मे यह सम्भव नही है, जैस
के साथ की गयी सन्धि में स्वीकार किया गया है, इस पर राज्य के मन्त्री और सा
परामर्श करने लगे। जयपुर राज्य के मन्त्रिमण्डल के सामने यह एक कठिन समस्या
अवसर पर मैं मन्त्रिमण्डल की सहायता करना चाहता था। लेकिन राज्य की पु
प्रथाओ का ज्ञान न रखने के कारण मैंने जो हस्तक्षेप किया, उसे राज्य के लोगो
समझा और वहाँ के सरदारो को इसके लिये अपनी असमर्थता प्रकट करनी पड़ी।

इन दिनो मे जयपुर के मन्त्रि-मण्डल के सामने राज्य के उत्तराधिकारी के
समस्या थी, उस पर यहाँ कुछ प्रकाश डालना आवश्यक मालूम होता है। साधा
के बडे पुत्र को उत्तराधिकारी होने का पद मिलता है। राजपूतो मे प्रचलित यह ए
है। यद्यपि कभी-कभी इस प्रथा का उलङ्घन होता हुआ भी देखा गया है। लेकिन ब
सम्बन्ध मे मनु ने अपने ग्रन्थ मे निर्णय किया है। यद्यपि बहुत से राजपूतो ने मनु
का अनुशरण नही किया। राजा के बडे लडके को पाटकुमार अथवा राजकुमार के
जाता है और वही अपने पिता के राज्य का उत्तराधिकारी माना जाता है। राजकुम
कुमार नाम से सम्बोधित होते है। राज्य की सबसे बडी रानी को अर्थात् राजा का
साथ सबसे पहले होता है, उसे पटरानी कहा जाता है। अन्य रानियो की अपेक्षा पटर
अधिक होते हैं। छोटी अवस्था मे राजकुमार के सिंहासन पर पटरानी राज्य का शा

यदि कोई राजा पुत्रहीन अवस्था में मरता है तो उस वंश के किसी निकट
बालक को गोद लेने की राजस्थान में बहुत पुरानी व्यवस्था है। ऐसे प्रश्न पर सगे
को सबसे पहले गोद लेने का नियम है। उसके अभाव मे वंश के किसी निकटवर्ती
की जाती है। इस प्रकार की प्रचलित प्रणाली के अनुसार, मेवाड़ राज्य मे उत्तरा
मे राणावत वंश के बालक को गोद लिया जाता है। मारवाड़-राज्य मे जोधावशीय
लेने की व्यवस्था है। बूँदी-राज्य मे दुगारी वंश, कोटा-राज्य मे आपजी वंश, बी
गाँव के सामन्त वंश का बालक गोद लिया जाता है।

जगतसिंह की मृत्यु के बाद दूसरे दिन मोहनसिंह नाम का बालक जयपुर
बैठा। वह बालक न॰वर-राज्य के भूतपूर्व राजा मनोहरसिंह का लडका था। सी
सिंह को राज्य से निकाल दिया था। वह जयपुर-राज्य का वंशज था। उसके पू
पहले जयपुर-राजवश से पृथक् हुये थे। इसलिये मोहनसिंह का अभिषेक प्रचलित
हुआ। क्योकि वर्तमान प्रथा के अनुसार झिलाँय के सामन्त का वंशज आमेर राज्य
का अधिकारी था। उस वश के किसी बालक के न मिलने पर दूसरे कई सामन्त व
रखते थे। उन वशो के किसी बालक की खोज न करके मोहनसिंह के गोद लिये जा
था। जगतसिंह की मृत्यु के समय उसके अन्त:पुर मे मोहन नाम का एक नाजिर थ
शासन की बागडोर उसी के हाथ मे थी। वह बडा चतुर था और स्वार्थ साधन

* मुगल बादशाहो के महलो मे जो मनुष्य रक्षक के पद पर रक्खा जाता
कहा जाता था। राजपूत राजाओ मे जयपुर और बूँदी के राजाओ ने उनका अनुक
अंत:पुर के रक्षक को नाजिर की उपाधि दी थी।

राजमाता ने दीवान के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। खण्डेला राज्य पाँच भागो मे विभाजित किया गया। तीन भाग केशरी सिंह को और दो भाग फतेह सिंह को दिये गये। इस विभाजन के अनुसार दोनो भाई राजधानी मे बराबर के अधिकारी बन गये परन्तु इसके बाद भी दोनो भाइयो के वैर की शांति न हुई। केशरी सिंह खण्डेला को छोड कर कावट नामक स्थान मे जाकर रहने लगा। दोनो भाइयो मे यहा तक शत्रुता बढ गई कि वे एक दूसरे को देखना नही चाहते थे। केशरी सिंह जब खण्डेला राजधानी मे आता तो फतेह सिंह वहा से चला जाता।

मनोहरपुर के राजा का यही अभिप्राय था कि केशरी सिंह और फतेह सिंह कभी मिलकर न रह सके। इसलिए उसने षडयन्त्र रचा था। इसमे उसको सफलता मिली। केशरी सिंह के दीवान को भली-भाँति यह मालूम था कि इन दोनो भाईयो के लडने मे मनोहरपुर के राजा का षडयन्त्र काम कर रहा है। उसने पूरी चेष्टा इस बात की कि दोनो भाइयो मे किसी प्रकार का झगडा न हो और वे प्रेम से रहे। इसीलिए उसने राजमाता से मिल कर राज्य का बटवारा करा दिया था। लेकिन उसके बाद भी वे दोनो एक दूसरे के शत्रु बने रहे। इस प्रकार की परिस्थितियो को देख कर दीवान ने सोचा कि फतेह सिंह कभी केशरी सिंह के लिए सकट हो सकता है। इसलिए उसने केशरी सिंह को गुप्त रूप से सलाह दी कि फतेह सिंह पूरी तौर पर मनोहरसिंह के राजा के सकेतो पर काम कर रहा है और मनोहरपुर का राजा खण्डेला का परम शत्रु है। इसलिए किसी षड्यन्त्र के द्वारा फतेह सिंह के जीवन का अन्त कर दिया जाय। परन्तु केशरी सिंह इसके लिए तैयार न हुआ।

केशरी सिंह का दीवान अब भी उसी बात को सोच रहा। उसने कावटा मे दोनो भाइयो को एकत्रित करके मेल कराने की कोशिश की। फतेह सिंह कावटा मे पहुँच गया। वहाँ पर आक्रमण करके फतेह सिंह को मार डाला गया। दीवान ने स्वय तलवार लेकर आक्रमण किया था। सयोग और सौभाग्य की बात है कि फतेह सिंह के साथ-साथ दीवान भी जख्मी होकर मर गया।

फतेह सिंह के मर जाने के बाद केशरी सिंह ने सम्पूर्ण खण्डेला पर अधिकार कर लिया। रेवासो नगर का कर अजमेर और खण्डेला का कर नारनोल जाता था। केशरी सिंह ने इसका भेजना बन्द कर दिया। सैयद अब्दुल्ला इन दिनो मे दिल्ली के मुगल बादशाह का प्रधान मन्त्री था। वह केशरी सिंह के इस व्यवहार से बहुत अप्रसन्न हुआ और उसको इसका बदला देने के लिए सैयद अब्दुला ने दिल्ली से एक मुगल सेना भेजी। केशरी सिंह ने इन दिनो मे अपनी शक्तियो को अधिक सुदृढ बना लिया था। बादशाह की फौज के आने का समाचार सुनकर केशरी सिंह ने समस्त शेखावत सामन्तो को सेनाओ के साथ बुलाया। उस समय जो सामन्त एकत्रित हुए, उनमे एक केशरी सिंह का परम शत्रु मनोहरपुर का सामन्त भी बादशाह की फौज के विरुद्ध लडने के लिए तैयार होकर आया। केशरी सिंह ने युद्ध की पूरी तैयारी की। मुगल सेना के साथ युद्ध करने के लिए वह रवाना हुआ। खण्डेला-राज्य की सीमा पर बसे हुए देवली नामक स्थान पर दोनो ओर की सेनाओ का युद्ध हुआ। केशरी सिंह को बादशाह की सेना से पराजित होने की कोई आशका न थी। लेकिन युद्ध शुरू होने के कुछ समय बाद उसकी वशगत शत्रुता सजीव हो उठी। इस युद्ध मे कुछ लोग उसकी सहायता करने के लिए ऐसे सामन्त भी आये थे, जिसके साथ, केशरी सिंह की कभी शत्रुता रह चुकी थी। इस प्रकार के लोगो मे शत्रुता का भाव जाग्रत हुआ। कासली का सामन्त केसरी सिंह की सहायता के लिए आया था। वह एक शूरवीर योद्धा था और केशरी सिंह उस पर बहुत विश्वास करता था। वह इस युद्ध मे मारा गया। दाँता राज्य के लाडखानी वश का सामन्त भी केशरी सिंह की सहायता के लिए आया था। उसने मौका पाकर

४—बालक मोहनसिंह के पूर्वजो की नामावली और उसके सम्बन्ध में आवश्य

५—मोहनसिंह को इस राज्य के सिहासन पर बैठने का अधिकार कैसे मिल इस अधिकार को किस आधार पर स्वीकार किया गया ?

६—इस बात का कैसे निर्णय हुआ कि बालक मोहनसिह इस राज्य के सिहा का अधिकारी है।

७—जिनके द्वारा इस प्रकार का निर्णय हुआ, उनका नाम और परिचय।

८—अभिषेक के सम्बन्ध मे अन्त:पुर की रानियो से क्या परामर्श किया लिया गया तो उसका प्रमाण क्या है ?

९—इस बालक को सिहासन पर बिठाने के लिये कितने सामन्तो ने सम्मति षेक के समय समारोह मे भाग लिया ?

१०—जिनकी सम्मतियो और परामर्शों से बालक मोहनसिह को सिंहासन पर क्या उनके हस्ताक्षर लिये गये और यदि लिये गये तो वे कहाँ है ?

११—अभिषेक समारोह मे राज्य की समस्त प्रजा और उसके प्रतिष्ठित लोगो त्रित किया गया ?

नाजिर ने अङ्गरेजी रेजीडेण्ट के पास प्रार्थना-पत्र भेजकर उसको अपने अनुकूल का प्रयास किया, लेकिन रेजीडेण्ट ने कम्पनी की तरफ से एक कर्मचारी भेजा। उसने में आकर ऊपर लिखे हुये प्रश्नो के आधार पर परिस्थितियो को समझने की चेष्टा की अपने सफल प्रयत्नो के द्वारा कम्पनी के उस कर्मचारी को भी अनुकूल बना लिया। उ लौटकर अपने अधिकारियो को ऐसी रिपोर्ट दी, जिससे सन्तुष्ट होकर बालक मोहनि कम्पनी की स्वीकृति नाजिर के पास आ गयी। कम्पनी का वह पत्र दरबार मे सबके सा किया गया और नाजिर ने प्रसन्नता के साथ उसे पढकर सबको सुनाया। इस स्वीकृति बाद मोहनसिंह को राज-सिंहासन मिलने के सम्बन्ध मे नरवर मे खुशियाँ मनायी गयी

नाजिर को अब भी थोडा बहुत सामन्तो पर सन्देह था। उसको दूर करने के सामन्तो से प्रश्न किया : "आप लोगो की क्या सम्मति है ?"

सामन्त लोग नाजिर की चालाकी को खूब जानते थे। इन दिनो मे उसी के राज्य का शासन चल रहा था। नाजिर जिसे चाहता था अधिकारी बना देता था और था, उसे मिटाने की कोशिश करता था। इन परिस्थितियो मे जान बूझकर सामन्त लो नही बनना चाहते थे। इसीलिये उन लोगो ने बुद्धिमानी के साथ एक निर्णय करके ना का उत्तर देते हुये कहा : "जोधपुर के राजा की बहन आजकल इस राज्य की पटरानी मर्यादा को सम्मान देना हम सबका कर्त्तव्य है। इसलिये इस प्रश्न के सम्बन्ध मे हम लो पटरानी के उत्तर पर निर्भर है।

सामन्तो के इस उत्तर को सुनकर नाजिर चौंक पड़ा। उन सामन्तो ने इस प्रक की आशा न थी। पटरानी नाजिर से प्रसन्न न थी। उसने न केवल नाजिर का f बल्कि इस मामले मे जो लोग उसके पक्षपाती थे और जिस किसी ने बालक मोहनसिह पर बिठाने के लिये अपनी सम्मति दी थी, पटरानी ने साहसपूर्वक उसका विरोध फ फरवरी को ईस्ट-इण्डिया कम्पनी की तरफ से मोहनसिह का समर्थन नाजिर को प्राप्त लेकिन पटरानी के विरोध से दरबार की परिस्थिति पलटने लगी। सामन्तो ने बड़ी

छोड सकता हूँ। परन्तु आपकी सहायता से खण्डेला पर फिर से मुगलो का अधिकार हो जायगा, इस पर कैसे विश्वास किया जाय ?"

प्रधान मन्त्री की इस बात को सुन कर उदय सिह ने कहा : "मेरे परिवार मे वृद्धा माता को छोड कर और कोई नही है। मेरे स्थान पर आप मेरी माता को कैदी बना कर रख लीजिये।"

प्रधान मन्त्री इस पर राजी हो गया। उदय सिह की माता कैदी के रूप मे अजमेर मे रखी गई और उदय सिह को छोड दिया गया। उदय सिह ने इस मौके पर बडी बुद्धिमानी से काम लिया। उसने ऐसा कार्य किया, जिससे मुगल प्रधान मन्त्री को बहुत सन्तोष मिला। उसने खण्डेला का अधिकार उदय सिह को सौप दिया और उदय सिह उसके बाद फिर अपने पिता के सिंहासन पर बैठा। खण्डेला का राज्याधिकार पाकर उदय सिह ने अपनी सैनिक शक्ति को मजबूत करने की कोशिश की। वह भली प्रकार इस बात को समझता था कि खण्डेला-राज्य के पतन का कारण मनोहरपुर का राजा है इसीलिए उसने उससे बदला लेने का निश्चित इरादा किया। अपनी सेना को प्रवल बना कर उदय सिह ने मनोहरपुर-राज्य पर आक्रमण किया। मनोहरपुर के राजा को जब यह समाचार मिला तो उसने अपने धा भाई के अधिकार मे सेना देकर युद्ध के लिए भेजा। वह मनोहरपुर की सेना को लेकर रवाना हुआ। लेकिन युद्ध शुरू होने के पहले ही वह भाग गया। इस दशा मे उदय सिह ने अपनी सेना को लेकर मनोहरपुर को घेर लिया।

मनोहरपुर का राजा युद्ध करने की अपेक्षा धोखा देने और विश्वासघात करने मे अधिक चतुर था। उसे मालूम हुआ कि कासली का सामन्त दीपसिह भी अपनी सेना को लेकर उदय सिह के साथ हमारे विरुद्ध युद्ध करने आया है। इसलिए उसने अपने दो अत्यन्त चतुर और विश्वासी दूतो के हाथ दीपसिह के पास अपना एक पत्र भेजा। उसमे उसने दीपसिह को लिखा : "उदय सिह न केवल मनोहरपुर मे अधिकार करेगा, वल्कि इसके बाद कासली को भी अधिकार मे लेने का उसका एक निश्चित इरादा है। इस बात को आप निश्चित समझिए।"

इस पत्र को पाकर और पढ कर दीपसिह ने उस पर विश्वास कर लिया। सवेरा होते ही उदय सिह ने युद्ध के बाजे बजवाये और उसने मनोहरपुर पर आक्रमण करने की तैयारी की। उसी समय दीपसिह अपनी सेना के साथ उस स्थान को छोड कर अपनी राजधानी कासली की तरफ चला गया। उदय सिह की समझ मे न आया कि दीपसिह ने ऐसा क्यो किया। उदय सिह ने अपनी सेना लेकर दीपसिह का पीछा किया। दीपसिह ने जब यह देखा तो उसको मनोहरपुर के राजा के पत्र का पूरा विश्वास हो गया। दीपसिह घबरा कर जयपुर के राजा के यहाँ चला गया। उदय सिह ने कासली पहुँच कर उस पर अधिकार कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि मनोहरपुर मे उदय सिह का जो आक्रमण होने वाला था, वह खत्म हो गया।

राजा जय सिह इन दिनो मे आमेर के सिंहासन पर था। दीपसिह के वहाँ पहुँचने पर राजा जयसिह ने कहा : "यदि आप हमारी अधीनता स्वीकार कर ले तो हम आपकी सहायता करेंगे और कासली का अधिकार फिर से आपको मिल जायगा।"

दीपसिह के सामने अपने उद्धार का और कोई रास्ता न था। उसने राजा जयसिह की बात को स्वीकार कर लिया और जयपुर-राज्य की अधीनता स्वीकार करने के लिये हस्ताक्षर करते हुए उसने चार हजार रुपये वार्षिक कर मे देना भी मंजूर किया।

इस तरह शेखावत सामन्तो पर जयपुर के राजा को आधिपत्य का फिर से सूत्रपात्र हुआ। शेखावत सामन्तो की संख्या बहुत थोड़ी थी और उनके अधिकारो मे जो सेनाये थी, वे भी अधिक न

ने एक नया षडयन्त्र रचा। राज्य के सामन्तो और पटरानी का विरोध करने के
शक्तिशाली राजपूत राजा को खोजना आरम्भ किया। उसने विश्वास किया वह मोह
र्थन करेगा तो आज जो विरोध पैदा हुये है, वे अपने आप सब खत्म हो जायँगे।

बहुत कुछ सोच समझकर नाजिर ने उदयपुर के राणा को अपने पक्ष मे ला
की। उसने राणा की पोती के साथ मोहनसिह के विवाह का प्रस्ताव अपने दूत के
राणा को इसके रहस्य की कोई जानकारी न थी। उसने इस प्रस्ताव को स्वीकार क
के जो प्रतिनिधि दिल्ली में मौजूद थे, नाजिर ने उनकी सम्मति भी प्राप्त कर ली।
दरबार मे कुछ बुद्धिमान व्यक्तियो ने विवाह के प्रस्ताव का विरोध किया। उसका
राणा ने विवाह के उस प्रस्ताव को नामन्जूर कर दिया। नाजिर अपने षड़यन्त्र
इसके बाद भी लगा रहा। उसके सामने अभी तक निराशा का कोई कारण न था।

सन् १८१८ ईसवी के दिसम्बर की २१ तारीख को राजा जगतसिह की मृत्यु
१८१६ ईसवी की २४ मार्च को सुनने को मिला कि राजा जगतसिह की भाटियानी
महीने का गर्भ है। यह बात कई महीने तक नाजिर से छिपा कर रखी गयी थी। इन
दिन राजा जगतसिह की सोलह विधवा रानियाँ राज्य के प्रधान सामन्तो की प
भाटियानी रानी के महल में गयी। उन सबने देख सुनकर और सभी प्रकार समझक
स्वीकार किया कि भाटियानी रानी गर्भवती है, इसमें कोई सन्देह नही। राज्य के
निर्णय को सुनकर अत्यधिक सन्तोष प्रकट किया और सभी ने मिलकर प्रतिज्ञा की कि
यानी रानी से बालक पैदा होगा, तो हम सब लोग उसको अपना राजा मानकर स्वी

इस प्रतिज्ञा पत्र पर सभी सामन्तो के हस्ताक्षर हो गये। उसके बाद वह पत्र
भेजा गया और उससे भी उस पर हस्ताक्षर करने के लिये कहा गया। नाजिर को
के गर्भवती होने का समाचार मालूम न था। इसलिये उस प्रतिज्ञा-पत्र को असङ्गत
समझकर उसने भी हस्ताक्षर कर दिये। इसके बाद रानी के गर्भवती होने का सम
फैलने लगा। राजा जगतसिह की मृत्यु के चार महीने और चार दिन बीत जाने पर
प्रातःकाल भाटियानी रानी से बालक पैदा हुआ। इस समाचार को सुनकर राज्य
बहुत प्रसन्न हुए। राजधानी मे अनेक प्रकार के उत्सव किये गये। लेकिन उस बा
नाजिर पर बज्रघात हुआ। भाटियानी रानी से उत्पन्न हुआ बालक राजसिहासन पर
उसका अभिषेक हुआ और बालक मोहनसिह को सिहासन से उतारकर नरवर भेज दि

———————

किया और अधीनता के पत्र पर उसने हस्ताक्षर कर देने के बाद वार्षिक एक लाख रुपये कर के रूप मे देना भी स्वीकार किया। लेकिन इसके बाद एक लाख रुपये मे कमी की गयी और अन्त मे चौसठ हजार रुपये वार्षिक कर मे आमेर के राजा को देने लगा।

कुछ दिनो के बाद राजा जयसिंह की शक्तियाँ कमजोर पड गयी। मराठो और पठानो की लूट-मार आमेर-राज्य के चारो तरफ आरम्भ हो गयी, उस समय खण्डेला ने कर वसूल करना उसके लिए कठिन हो गया। इसके पहले गगा के किनारे दीपसिंह से राजा जयसिंह ने फतेह सिह के लडके को उसका अधिकार दिलाने का वादा किया था, वह वादा अभी तक बाकी था। इसलिए फतेह सिह ने अपने जीवन-काल मे खण्डेला-राज्य से दो हिस्से पाये थे, उन पर उसके लडके वीरसिह को अधिकारी बना दिया। इस तरह सवाई सिह और वीरसिह—दोनों ही जयसिंह की अधीनता मे चलने लगे।

सवाई सिह जिन दिनो खण्डेला मे न रहता था, उन दिनो मे उदय सिह ने अपने राज्य पर अधिकार करने के अभिप्राय से एक सेना लेकर अचानक उदयगढ पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। सवाई सिह उस समय आमेर-राजधानी मे था। उसने अपने पिता उदय सिह के आक्रमण का समाचार जयसिंह से कहा। उसे सुनते ही जयसिंह ने तुरन्त उदय सिह पर आक्रमण करने का आदेश किया। सवाई सिंह जयपुर की सेना के साथ रवाना हुआ और उसने उदयगढ पर आक्रमण करके उदय सिह को वहाँ से भगा दिया। उदय सिह इसके बाद फिर नारू चला गया और जीवन के शेष दिन उसने वही पर व्यतीत किये। सवाई सिंह ने उसके खर्च के लिए पाँच रुपये नित्य के हिसाब से देने का प्रबन्ध कर दिया था। सवाई सिह के तीन लडके पैदा हुए—वृन्दावन, शम्भू और कुशल। बडे लडके वृन्दावन को खण्डेला का राज्याधिकार मिला। मझले लडके शम्भू को रानौली का और छोटे लडके कुशल को पिपरौली का अधिकारी बना दिया।

चौंसठवाँ परिच्छेद

आमेर-राज्य मे गृह-युद्ध—खण्डेला-राज्य पर उसका प्रभाव—वृन्दावन दास की सहायता मे आमेर के राजा माधव सिंह—पीडित ब्राह्मणो का प्रकोप—राजा माधव सिंह की कूटनीति—खण्डेला-राज्य मे भीषण गृह-युद्ध—मुगल सेना का खण्डेला पर आक्रमण—शेखावाटी मे विपद—भीषण अकाल—मराठो का आक्रमण—प्रसिद्ध सामन्त देवीसिह।

खण्डेला का राज्याधिकार वृन्दावन दास के प्राप्त करने के दिनो मे आमेर-राज्य मे गृह-युद्ध चल रहा था और माधव सिह ने ईश्वरी सिंह के साथ सघर्ष पैदा करके वहाँ पर भयकर परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी। वृन्दावन दास ने माधव सिंह का पक्ष लेकर इस गृह-युद्ध मे काम किया था। उस संघर्ष मे माधव सिह को सफलता मिली। उसके सिंहासन पर बैठने के बाद वृन्दावन दास ने उससे प्रार्थना की। माधव सिह ने भी उसकी सहायता का पुरस्कार देना चाहा। इसलिए उसने कहा कि खण्डेला-राज्य के दो भागो मे विभक्त होने के कारण आपस मे सघर्ष चल रहा है। इस

उस मुसलमान फकीर की दरगाह अवरोल से छः मील की दूरी पर मोकल के निवा
मील की दूरी पर बनी हुई थी। यह दरगाह अब तक उस स्थान पर देखी जा सकती
भारत मे तैमूर के आक्रमण करने के थोडे ही दिनो बाद की है, जिसका उल्लेख इस
है :—

शेख बुरहान भ्रमण करता हुआ किसी समय अमरसर की सीमा के एक ऐसे
गया, जहाँ पर मोकल जी मौजूद था। फकीर उसके पास जाकर साधारण अभिवाद
"क्या आप मुझे कुछ देगे ? मोकल जी ने नम्रता के साथ उत्तर दिया : "आप किस
करेगे।"

मोकल जी के इस उत्तर को सुनकर फकीर ने थोडा-सा दूध माँगा। मोह
से उस फकीर के पास एक ऐसी भैंस लायी गयी, जिसका दूध कुछ ही पहले दुह ि
फकीर ने भैस के थनो से इस प्रकार दूध निकालना शुरू किया जैसे किसी झरने से
है। यह देखकर मोकल को बडा आश्चर्य हुआ। उसे विश्वास हो गया कि फकीर मे
है। उसने प्रभावित होकर बड़ी नम्रता के साथ कहा : "मेरे कोई सन्तान नही है। '
दुआ से मोकल जी के एक लडका पैदा हुआ। उस लड़के का नाम फकीर के ना
शेखा रखा गया। फकीर ने उस बालक के सम्बन्ध मे कहा : यह बालक हमेशा अप
नाम तागा बाँधेगा। आवश्यकता पड़ने पर वह गरडा दरगाह के किसी ऊँचे स्थान पर
यह बालक नीले रङ्ग की टोपी और दूसरे वस्त्र पहनेगा। कभी शूकर अथवा दूसरे
नही करेगा।

इन बातो के साथ-साथ फकीर ने मोकल से कहा कि शेखावत में किसी बालक
पर बकरे की बलि दी जायगी। कुरान का कलमा पढा जायगा और उस बकरे के
बालक पर डाले जायेगे। मोकल ने फकीर की इन बातो को स्वीकार किया। इस
सौ वर्ष बीत चुके हैं लेकिन फकीर की कही हुई बातो का उसके वश के लोगो मे
होता है।

मोकल के वंशज दस हजार वर्ग मील की भूमि मे फैले हुये है। शेखावत ल
बातो का प्रचलन अब कम हो गया है। लेकिन इस वंश के बालको को जन्म से दो वर्ष
के वस्त्र पहनाये जाते है। इस वश मे आज भी उस फकीर का महत्व बहुत-कुछ देखा
उसके सम्मान मे ही वे लोग अपने पीले रङ्ग की पताका के किनारे नीला फीता लग
पहनने की प्रथा उस समय से लेकर अब तक शेखावतो मे देखी जाती है। अमरसर अ
पास के नगर अथवा ग्राम आमेर राज्य के अधिकार मे थे। परन्तु शेख बुरहान की द
स्वतन्त्र मानी जाती है। उस दरगाह की शरण मे जो पहुँच जाता है, राजा को तर
किया जाता है। दरगाह के समीप ताला नाम का एक नगर है। उस नगर मे एक
उसके वंशज रहते है। जिस भूमि पर वे खेती करते हैं। उसका वे लगान नही देते।

अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् शेखा वहाँ का अधिकारी हुआ और थोडे ही
अपने आस-पास क तीन सौ साठ ग्रामो पर अधिकार कर लिया। यह समाचार ि
के राजा ने उस पर आक्रमण किया। उस समय जो युद्ध हुआ, उसमे शेखा को यूना
से सहायता मिली और पठानो की मदद पाकर शेखा ने आमेर की सेना को परा
लौटकर चली गयी।

भयानक सघर्ष पिता-पुत्र के साथ, भाई-भाई के साथ और परिवार के एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ आरम्भ हुआ ।

खण्डेला-राज्य के इस गृहयुद्ध मे एक तरफ वृन्दावन दास था और दूसरी तरफ इन्द्र सिह था । दोनो आमेर के राजा की सहायता अपने पक्ष मे प्राप्त करने के लिए सभी प्रकार के प्रयत्न कर रहे थे । राजा माधव सिह ने सिहासन पर बैठने के बाद अपनी सेना देकर वृन्दावनदास की सहायता की थी और माचेडी के राव पर आक्रमण करने के समय इन्द्रसिह की सहायता मिलने से उसी राजा माधव सिह ने इन्द्र सिह को खण्डेला-राज्य की सनद दे दी । आमेर के राजा की इन दो मुखी चालो से उन दोनो को यह समझना कठिन हो गया कि राजा माधव सिह किस पक्ष का समर्थन कर रहा है । यही कारण था कि इन दिनो मे भी आमेर की सहायता प्राप्त करने के लिए दोनो पक्षो की तरफ से पूरी-पूरी कोशिश हो रही थी ।

इन्द्र सिह वृन्दावनदास से उदयगढ दुर्ग का अधिकार छीन लेने के लिए अपनी सेना के साथ रवाना हुआ । वृन्दावन दास का छोटा लडका रघुनाथ सिह अपने पिता के विरुद्ध युद्ध करने के लिए इन्द्र सिह के साथ चला । वृन्दावन दास ने अपने लडके रघुनाथ को कोछोर का अधिकार दे दिया था । लेकिन इससे उसको सतोष न मिला और उसने कोछोर के अतिरिक्त दूसरे तीन नगरो पर अधिकार कर लिया । उस समय वृन्दावन दास ने रघुनाथ को दबाने के लिए इन्द्र सिह के साथ मेल किया था और उसके बाद उसने कोछोर पर आक्रमण करने का प्रयास किया । रघुनाथ सिह को जब यह रहस्य मालूम हुआ तो उसने इन्द्र सिह का साथ छोडकर उसके भतीजे रानोली के सामन्त पृथ्वी सिह का आश्रय लिया और कोछोर की रक्षा करने का प्रयत्न किया । कोछोर के आक्रमण मे असफलता प्राप्त कर वृन्दावन दास खण्डेला की तरफ लौट गया ।

इन्द्र सिह अपनी सेना के साथ खण्डेला के समीप पहुँच गया । उसी समय नगर के बाहर दोनो तरफ से युद्ध आरम्भ हुआ । वृन्दावन के बडे लडके गोविन्द सिह ने बडे साहस के साथ उदयगढ की रक्षा की । इन्द्र सिह लगातार उसको पराजित करने की कोशिश कर रहा था । कई दिनो तक यह युद्ध चलता रहा अत मे युद्ध करते-करते दोनो पक्ष निर्बल पड गये । लेकिन युद्ध का कोई परिणाम न निकला । इसके बाद वृन्दावन और इन्द्र सिह मे समझौता हो गया और इन्द्र सिह राज्य के जितने हिस्से का वास्तव मे अधिकारी था, उतना राज्य वृन्दावन दास ने उसको दे दिया । इस समझौते के बाद खण्डेला-राज्य के आपसी सघर्ष का अन्त हो गया ।

घरेलू सघर्ष के अत होने के कुछ ही दिनो के बाद दिल्ली के बादशाह के सेनापति नजफ-कुली खाँ ने एक फौज लेकर खण्डेला पर आक्रमण किया । माचेडी का राव मुगल सेनापति को लेकर शेखावाटी राज्य मे आया और वहाँ के छोटे-छोटे राज्यो पर अत्याचार करके मुगल सेनापति ने धन एकत्रित करने का काम आरम्भ किया । नवलगढ के नवल सिह, खेतडी के बाघसिह, बिसाऊ के सूर्यमल आदि शेखाणी वश के राजाओ से मुगल सेनापति ने दण्ड स्वरूप कई लाख रुपये देने के लिए कहा । इस रुपये की अदायगी न हो सकने पर मुगल सेनापति ने उन सब को कैद कर लिया । इसके बाद शेखावाटी के गरीब किसानो से कई लाख रुपये एकत्रित करके जब यवन सेनापति को दिये गये तो उसके बाद वे सामन्त कैद से छोडे गये ।

इन दिनो मे शेखावाटी का प्रत्येक ग्राम और नगर भयानक विपदाओ का सामना कर रहा था । घरेलू सघर्ष के कारण खण्डेला-राज्य निर्बल हो चुका था । उसके बाद वहाँ के ब्राह्मणो ने अपने भय का प्रदर्शन आरम्भ किया । वृन्दावन दास ने खण्डेला की प्रजा से कर वसूल करने के अवसर पर यहाँ के कुछ ब्राह्मणो से भी वसूल किया था । उसको शात करने के लिए आमेर के

इन दिनो में अफगानो के आक्रमण को रोकने के लिये दिल्ली मे बादशाह
तैयार हो रही थी। रायसल किसी से बिना कुछ कहे-सुने अपने बीस सवारो के साथ
गया। उस लडाई मे रायसल के द्वारा अफगानो का एक प्रसिद्ध सेनापति मारा गया।
ही युद्ध मे मुगलो की विजय हुई। मुगल सेनापति को रायसल के सम्बन्ध में कुछ भी
थी। उसने साधारण तौर पर इस बात का अनुसन्धान किया कि अफगानो के सेना
वाला कौन व्यक्ति है। लेकिन कुछ पता न चला। इस दशा मे मुगल सेनापति ने जिय
अपने समस्त सैनिको की एक सभा का आयोजन किया। उसके सम्बन्ध मे बताया गया
अफगानो के इस युद्ध मे लडने के लिये गये थे, वे सभी इस जियाफत मे शरीक हो और
सेनापति के प्रति अपना सम्मान प्रकट करे।

मुगल सेना मे जियाफत का आयोजन किया गया। उसमे सभी प्रमुख व्यक्तियो
ने प्रधान सेनापति के सामने आकर अपना-अपना सम्मान प्रकट किया। रायसल के प
लोगो ने जान लिया। जियाफत का आयोजन समाप्त होने पर रायसल से उसका
गया। अमरसर का राजा नूनकर्ण भी अपनी सेना के साथ वहाँ पर उपस्थित था।
साथ उसकी ईर्षा उत्पन्न हुई। उसने रायसल से कहा: 'मेरे आदेश के बिना आप
आये?' रायसल ने उसके इस प्रश्न का कुछ उत्तर न दिया। रायसल से परिचित
सेनापति उसे अपने बादशाह के पास ले गया और अकबर बादशाह के निकट पहुँच कर
पति ने रायसल की प्रशसा करते हुये उसका परिचय दिया। बादशाह अकबर ने उसी स
को 'रायसल-दरबारी' की उपाधि दी और देवासो तथा कासली नाम के नगरो का अ
दिया। यही से रायसल के सौभाग्य का उदय हुआ। कुछ दिनो के बाद बादशाह के बुला
वह फिर दिल्ली गया। उस समय भटनेर मे युद्ध करने के लिये मुगलो की सेना जा र
शाह ने रायसल को भी उस युद्ध मे भेजा। भटनेर के सग्राम मे रायसल ने अपने जि
प्रदर्शन किया उससे खुश होकर बादशाह ने खण्डेला तथा उदयपुर के शासन की सनद
ये दोनो नगर निर्वाण राजपूतो के अधिकार मे थे। परन्तु उन्होने सम्राट के प्रति अ
व्यवहार प्रकट किये थे।

बादशाह ने जो अन्तिम दो नगरो का अधिकार रायसल को दिया था, वहाँ के
पूतो को पराजित करके उनके प्रभुत्व को वहाँ पर नष्ट करना था। रायसल ने भटनेर
जाने के पहले खण्डेला के राजा की लडकी के साथ विवाह किया था। उस विवाह मे
दहेज मे बहुत कम मिला था। इसलिये रायसल ने खण्डेला के राजा से दहेज को पूरा क
कहा। उसके उत्तर मे उसने कहा: 'अधिक देने के लिये मेरे पास कुछ नही है। मेरे
एक शिखर है। यदि आप चाहे तो उसे ले सकते हैं।'

इसके बाद रायसल भटनेर के युद्ध मे गया और वहाँ से लौटने पर वह अपनी
खण्डेला की तरफ बढ़ा। सेना के साथ रायसल को आता हुआ सुनकर खण्डेला का रा
हुआ और वह अपना नगर छोडकर भाग गया। खण्डेला के निवासियो ने रायसल की
स्वीकार कर ली। इसके बाद खण्डेला शेखावटी मे मिला लिया गया। रायसल के वंशज
नाम से प्रसिद्ध हुये। वे सभी शेखावटी के दक्षिणी स्थानो मे रहते थे। उन दिनो मे सिद्धा
लोग शेखावटी के उत्तर की तरफ रहा करते थे। रायसल ने खण्डेला को शेखावटी मे

बाद वहाँ दुर्ग पर आक्रमण किया। उस दुर्ग मे जो राजपूत मौजूद थे, वे युद्ध करते हुए मारे गये। उस दुर्ग पर अधिकार कर लेने के बाद खण्डेला की तरफ रवाना हुआ।

खण्डेला के चार मील रह जाने पर मरोठो के दल ने होदीगाँव नामक स्थान पर जाकर मुकाम किया और अपना दूत भेजकर खण्डेला के राजा नरसिंह और इन्द्रसिंह से बीस हजार रुपये की माँग की।* नरसिंह और इन्द्रसिंह ने अपने दो सामन्तो को इस विषय मे बातचीत करने के लिए मराठो के पास भेजा। उन सामन्तो के नाम थे, नवल सिंह और दलेल सिंह।

उन सामन्तो ने मराठो के सरदार के पास जाकर संधि की बातचीत की और मराठा को दी जाने वाली रकम का निर्णय हो गया। उस समय दोनो सामन्त वापस आने लगे तो मराठो के सरदार ने उनको रोककर कहा: "जब तक दण्ड की यह रकम हमारे पास न आ जायगी, आप यहाँ से किसी प्रकार जा नही सकते।'

उन सामन्तो ने मराठा सरदार की इस बात का विरोध किया। इसी समय एक सामन्त अपने साथ के एक कर्मचारी से हुक्का लेकर पीने लगा। यह देखकर एक मराठा ने उसका हुक्का छीन कर फेक दिया। उसके इस व्यवहार से सामन्त ने अपमानित होकर अपनी कमर से तलवार निकाल ली और हुक्का फेकने वाले मराठा पर आघात करने के लिए तैयार हो गया। इसी समय मराठा सरदार ने दलेल सिंह के हाथ मे तलवार देखकर अपनी बन्दूक से उसके गोली मारी। यह देखकर अपने साथ के कर्मचारियो को सकेत करके दूसरा सामन्त नवल सिंह लड़ने के लिए तैयार हो गया। इस पर बहुत-से मराठा एक साथ टूट पडे और उन्होंने खण्डेला के सामन्तो और कर्मचारियो को जान से मार डाला।

बहुत समय तक मराठो के पास से सामन्तो के न लौटने पर खण्डेला के राजा इन्द्रसिंह को चिन्ता होने लगी। अपने साथ कुछ आदमियो को लेकर वह मराठो की तरफ रवाना हुआ। उनके करीब पहुँचने पर उसने सुना कि मराठा ने दोनो सामन्तो और साथ के कर्मचारियो पर आक्रमण करके उनको मार डाला है। इस समाचार को सुनते ही साथ के आदमियो ने इन्द्रसिंह से खण्डेला लौट जाने के लिए कहा। उसको समझाते हुए इन्द्रसिंह ने उत्तर दिया "ऐसा नही हो सकता। हमारे सामन्त और आदमी मारे गये है। इसलिए इस समाचार को पाने के बाद लौट जाने की अपेक्षा वहा जाकर मृत्यु का सामना करना अधिक अच्छा है।"

यह कह अपने आदमियो के साथ इन्द्रसिंह आगे बढा और कुछ दूर आगे जाकर सभी लोग घोडो से उतर पडे। समीप के पेडो मे घोडो को बाँधकर अपने आदमियो के साथ हाथो मे तलवारे लिए हुए इन्द्रसिंह ने शत्रुओ पर जाकर आक्रमण किया। उसी समय मराठा का दल उन पर टूट पडा और अपने आदमियो के साथ इन्द्रसिंह मारा गया। दलेल सिंह घायल होने के कारण अभी तक मरा नही। इसीलिए शत्रु के आदमी उसको घसीट कर अपने डेरो मे ले गये।

इन्द्रसिंह के मारे जाने के समय उसका लडका प्रताप सिंह खण्डेला से दस मील दूर एक शिखर पर बने हुए दुर्ग मे मौजूद था। वह अभी शासन के सम्बन्ध मे कुछ नही जानता था। इसलिये

---

*इस लुटेरा मराठा-दल मे सभी मन्त्री, अधिकारी और दूत केवल ब्राह्मण थे। ब्राह्मण लोग इस प्रकार के कार्य मे बडे होशियार होते है। जरूरत पडने पर वे साहस से भी काम लेते हैं। दूत का कार्य करने मे ये ब्राह्मण लोग बहुत चतुर पाये जाते है। इन ब्राह्मण दूतो ने योरप के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ मोकिया वेली को भी बुरी तरह से ठगा था।

गिरिधर ने यही किया । वह अपने साथ एक साधारण सेना लेकर रवा
पर्वत पर पहुँच कर वह घूमने लगा । एकाएक वहाँ पर लुटेरो का एक दल दिखायी
ने तुरन्त उस पर आक्रमण किया । दोनो ओर मार-काट आरम्भ हो गयी उसने
बहुत देर तक युद्ध किया । अन्त मे उन लुटेरो का सरदार मारा गया और उनकी
गिरिधर की इस सफलता पर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और गिरिधर को राजा
गई । गिरिधर इसके बाद बहुत दिनो तक जीवित नही रहा । जमना नदी मे स्नान
मुगल बादशाह के दरबार के एक पदाधिकारी मुसलमान के द्वारा वह मारा गया ।
प्रकार है :

"एक दिन खण्डेला राजा गिरिधर का एक कर्मचारी दिल्ली के एक लोहार
बैठा हुआ अपनी तलवार की मरम्मत करा रहा था । उस समय दूकान के सामने
मुसलमान गुजरा । उसने इस कर्मचारी को एक असभ्य आदमी समझकर और लो
पर बैठकर उसे चिढाना आरम्भ किया । वह कर्मचारी राजपूत था । उसने राजस्थानी
से उत्तर दिया । इसके बाद उस मुसलमान ने आग का एक टुकडा उस कर्मचारी की
दिया । आग से जब पगडी जलने लगी तो उस राजपूत कर्मचारी को क्रोध आया ।
तलवार उठाकर उस मुसलमान के टुकडे-टुकडे कर दिये ।

जो मुसलमान उस राजपूत कर्मचारी के द्वारा मारा गया, वह बादशाह के
प्रसिद्ध अमीर का नौकर था । जब उस अमीर ने यह घटना सुनी तो वह अत्यन्त
अपने साथ कुछ आदमियो को लेकर वह अमीर खण्डेला राजा के निवास-स्थान
गिरिधर उस समय वहाँ पर न था । वह जमना नदी मे स्नान करने गया था ।
क्रोधित अवस्था मे जमना नदी के उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ पर गिरिधर नहा रहा
ने उस पर आक्रमण किया, जिससे खण्डेला राजा गिरिधर स्नान करता हुआ मारा गया

गिरिधर के कई पुत्र थे । द्वारिकादास सब से बड़ा था । इसलिए वही
सिहासन पर बैठा । इसके थोडे ही दिनो के बाद द्वारिकादास एक षडयत्र मे फस गया
का एक वशज मनोहरपुर मे शासन करता था । वह द्वारिकादास के साथ एक पुरानी श
था । दिल्ली का बादशाह एक दिन शिकार खेलने गया था । जंगल से वह एक
लाया । बादशाह ने अपने दरबार के लोगो से पूछा "इस शेर के साथ कौन युद्ध कर स

मनोहरपुर के राजा ने बादशाह से कहा "रायसलोत वशी द्वारिकादास प्र
नाहर सिह का शिष्य है । वह इस सिह के साथ युद्ध कर सकता है ।"

मनोहरपुर के राजा द्वारिकादास का उपहास कराने के लिए बादशाह से यह बात
लेकिन बाहशाह ने उसे गम्भीरता देकर द्वारिकादास को सिह से युद्ध करने के लिए
द्वारिकादास भली प्रकार इस बात को समझता था कि बादशाह से मनोहरपुर के राजा
प्रकार की बात कही है, उसके दो अभिप्राय है, एक तो यह कि इस प्रकार बादशाह
देने पर मै सिंह के साथ युद्ध करने से इनकार करूँगा, उससे मेरा उपहास होगा । दूसरा
उसका यह हो सकता है कि यदि मैने इनकार न किया तो सिह के द्वारा मेरा प्राण ना
बादशाह का आदेश सुनकर द्वारिकादास जरा भी भयभीत न हुआ और उसने शेर के
करना स्वीकार कर लिया ।

बादशाह की सम्पूर्ण राजधानी मे यह बात फैल गयी कि जगल से जो शेर
आया है, द्वारिकादास उसके साथ युद्ध करेगा । बादशाह की तरफ से इस युद्ध के लिए स

वडी सेना को एकत्रित करके सीकर की रक्षा करने के लिये तैयार हो। उस समय "मेरे ऊपर किसी प्रकार का दोषारोपण न हो सकेगा।"

सीकर के दीवान की समझ मे यह आ गया। देवीसिंह ने अनेक नगरो को लूटकर बहुत-सा धन एकत्रित किया था। वह सम्पत्ति लक्ष्मण सिंह के अधिकार मे थी। उस समय उस सम्पत्ति का उपयोग किया गया और सीकर की रक्षा करने के लिए दस हजार सैनिको की सेना का तुरन्त प्रवन्ध किया गया। इन दिनो मे नन्दराम की सेना के अतिरिक्त कई सामन्तो की सेनाये सीकर पर आक्रमण करने के लिए आयी थी। उन सब का युद्ध कौशल नन्दराम पर निर्भर था। साथ के सामन्तो से परामर्श करके नन्दराम ने सीकर मे युद्ध आरम्भ किया।

लक्ष्मण सिह ने अपनी रक्षा के लिए दस हजार सैनिको की व्यवस्था कर ली थी। उसके दीवान के साथ नन्दराम से जो गुप्त वातचीत हुई थी, उसे वह जानता था और उसी के आधार पर दस हजार नयी सेना की व्यवस्था की गई थी। नन्दराम की तरफ से युद्ध आरम्भ हुआ, उसके कई दिन वीत गये। लेकिन वह युद्ध इस प्रकार चलता रहा कि सीकर को कोई क्षति न पहुँच सकी। इसके वाद नन्दराम ने जयपुर राज्य के मन्त्री के पास एक पत्र भेजा। वह मन्त्री नन्दराम का भाई था। उसने पत्र मे लिखा "वर्तमान परिस्थितियो मे सीकर को परास्त करना वहुत कठिन मालूम होता है। इस पर भी सीकर का अधिकारी लक्ष्मण सिंह जयपुर की अधीनता स्वीकार करके दण्ड मे दो लाख रुपये देने के लिए तैयार है। हमारी समझ मे दो लाख रुपये लेकर और सीकर को अधीन वनाकर युद्ध रोक देना अधिक अच्छा है।"

नन्दराम ने अपना यह पत्र जयपुर के मन्त्री के पास भेज दिया। उसके वाद उसने जयपुर से आने वाले उत्तर की प्रतीक्षा नही की। उसने पत्र मे लिखने के अनुसार दो लाख रुपये जयपुर राज्य के लिए और एक लाख रुपया अपने लिए लेकर सीकर छोड दिया। इस प्रकार देवीसिंह के स्नेह पूर्ण व्यवहारो के कारण सीकर को इस सम्पत्ति के सिवा और कोई विशेष क्षति नही उठानी पडी।

खण्डेला के राजा नरसिंह ने आमेर के राजा को कर देने से इनकार किया था। लेकिन प्रताप सिंह ने किसी प्रकार उसे अदा करके आमेर के राजा का सन्तोष प्राप्त किया था। नरसिंह का कर न देना आमेर नरेश को सहन नही हुआ। उसने नरसिंह और प्रताप सिंह से सघर्ष पैदा करने की चेष्टा की। जयपुर राज्य की सहानुभूति अपने पक्ष मे समझने के कारण प्रताप सिह सम्पूर्ण खण्डेला राज्य का अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा करने लगा। उसने जयपुर-राज्य के सेनापति नन्दराम के पास एक पत्र भेजा। उसमे उसने लिखा "खण्डेला-राज्य की जितनी आमदनी है। उसका सम्पूर्ण कर मैं अकेले जयपुर को देने के लिए तैयार हूँ। लेकिन सम्पूर्ण खण्डेला का अधिकार मुझे दिला दिया जाय। जयपुर-राज्य की आज्ञानुसार मैं सदा अपनी सेना के साथ तैयार रहूँगा। मेरे लिखने के अनुसार खण्डेला का जो अभिषेक मेरे लिए किया जायगा, उसमे वहुत-सा धन जयपुर के राजा को उपहार मे दिया जायगा।"

सेनापति नन्दराम ने प्रताप सिंह के इस पत्र को पढकर उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और उसी समय से वह सम्पूर्ण खण्डेला-राज्य की सनद प्रताप को दिये जाने की चेष्टा करने लगा।

उन दिनो मे नाथावत वश का सरदार सामोद का सामन्त रावल इन्द्रसिह जयपुर मे रहता था। उसे जव मालूम हुआ कि नरसिंह के अधिकार का राज्य प्रताप सिंह को देने के लिए जयपुर मे तैयारी हो रही है, तो उसने गुप्त रूप से नरसिंह को अपने पास वुलाया और सभी वाते वताकर

वीरसिंहदेव उसकी अधीनता में अपने राज्य पर शासन करता था, यह अधिक सम्
होता है ।

वीरसिंह देव के सात लडके पैदा हुए—(१) बहादुर सिंह (२) अमर सिंह (३)
(४) जयदेव (५) भूपाल सिंह (६) मोकर सिंह और (७) प्रेमसिंह । वीरसिंह देव ने
काल मे ही बहादुर सिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाया था और शेष छै पुत्रो को एक-
दे दी थी । राजा वीरसिंह देव बहादुर सिंह को अपने राज्य का अधिकार देकर
के साथ बादशाह की सेना मे सम्मिलित होकर दक्षिण गया था । वहाँ पर उसे समा
कि उसका बडा लडका बहादुर सिंह राजा की उपाधि लेकर राज्य का शासन करने
यह सुनकर बहादुर सिंह पर वीरसिंह देव बहुत क्रोधित हुआ और अपने चार सवारो
लेकर दक्षिण से वह अपने राज्य की तरफ रवाना हुआ । अपने राज्य खण्डेला से चार
दूरी पर आकर एक ग्राम की किसी जाट स्त्री के यहाँ वीरसिंह देव ने मुकाम किया और
उसने भोजन तैयार करने के लिए कहा । साथ ही उसने यह भी कहा कि "हमारे घोडो
भाल करना कही कोई उनको खोलकर ले न जाय ।" वीरसिंह देव की इस बात को सु
जाट की स्त्री ने कहा : "आप इस बात की चिंता न करे । राजा बहादुर सिंह का यहाँ
है । रास्ते मे आप सोना छोडकर चले जाइए, कोई उसे छू नही सकता "

अपने लडके के शासन की इस प्रकार प्रशंसा सुनकर वीरसिंह देव बहुत प्रसन्न हु
से वह फिर दक्षिण लौट गया और वही पर उसकी मृत्यु हो गयी ।

वीरसिंह देव के मर जाने के बाद बहादुर सिंह विधान के अनुसार पिता के सिं
बैठा । नियमित रूप से उसका अभिषेक हुआ और उसने शासन का कार्य आरम्भ किया
बादशाह औरंगजेब अपनी सेना के साथ उन दिनों मे दक्षिण मे था । बहादुर सिंह भी अ
लेकर उसकी सहायता के लिए दक्षिण मे पहुँच गया । वहाँ पर बहादुर खाँ नामक ए
मुसलमान के साथ बहादुर सिंह का अपमान हुआ । उससे अपने अपमान का बदला न पा
कारण बहादुर सिंह दक्षिण से लौटकर चला आया । इसलिए मनसबदार सरदारो की
उसका नाम काट दिया गया ।

शेखावाटी के राजा बहादुर सिंह का जिस मुसलमान बहादुर खाँ ने अपमान किया
मुगल बादशाह के यहाँ सेनापति था । बहादुर सिंह के साथ शत्रुता हो जाने के कारण बह
ने बादशाह से खण्डेला राज्य मे जजिया कर वसूल करने का आदेश माँगा और आज्ञा ले
खण्डेला की तरफ रवाना हुआ । बहादुर सिंह को जब मालूम हुआ कि बहादुर खाँ अपनी
साथ इस राज्य मे आ रहा है तो वह अपनी राजधानी छोडकर भाग गया । बादशाह
लेकर बहादुर खाँ खण्डेला राजधानी के समीप पहूँच गया । वहाँ के समस्त शेखावत ल
मालूम हुआ कि बादशाह की फौज के आने का समाचार पाकर बहादुर सिंह खण्डेला से भा
है । बादशाह की फौज ने वहाँ पहुँचकर खण्डेला के मन्दिरो को विध्वस करने का कार्य
किया । रायसल का दूसरा लडका भोजराज का वशज सुजान सिंह छापोली का अधिकार
उसने जब सुना कि बादशाह की फौज ने खण्डेला मे पहुँच कर मंदिरो को गिराने के स
भयानक अत्याचार आरम्भ किया है तो उसने प्रतिज्ञा की कि मैं खण्डेला के मन्दिरो क
करूँगा और अपने इस कर्त्तव्य-पालन मे मै अपने प्राणो की बलि दूँगा ।*

---

* औरङ्गजेब के आदेश से इस प्रकार के अत्याचारो के साथ अगणित देवालय

के अन्यायपूर्ण आदेश के विरुद्ध युद्ध कर सकता था। परन्तु उसमे राजभक्ति की भावना थी। इसी-लिये उसने ऐसा करना किसी प्रकार उचित न समझा।

खण्डेला का राजा नरसिंह अपने व्यवहारो से आमेर के राजा का विरोधी बन चुका था। उसके फलस्वरूप सेनापति नन्दराम हलदिया ने प्रतापसिंह को सम्पूर्ण खण्डेला-राज्य का अधिकारी बना दिया और इस अधिकार की सनद भी उसको दे दी गयी। इसके बाद प्रतापसिंह खण्डेला-राज्य के उस भाग मे पहुँचा, जिसमे अब तक नरसिंह का अधिकार रहा था। वहाँ पहुँचकर सबसे पहले प्रतापसिंह ने उस प्रधान द्वार को गिरवा कर धाराशायी करा दिया, जिसे नरसिंह ने दुर्ग के रूप में बनवाया था और उसके ऊपर से उसने प्रतापसिंह के पिता के महलो पर गोले बरसाये थे। उसकी दीवाल मे लगी हुई गणेश की एक मूर्ति थी। नरसिंह उस मूर्ति की पूजा किया करता था। वह मूर्ति भी टूटकर गिर गयी।

प्रतापसिंह ने सम्पूर्ण खण्डेला के शासन का अधिकार अपने हाथो मे लेकर रेवासो पर अधि-कार करने की तैयारी की और उसे लेकर उसने गोविन्दगढ दुर्ग को जाकर घेर लिया, जिसमें नर-सिंह इन दिनो मे रहता था। रानोली के सामन्त को यह देखकर अच्छा न मालूम हुआ। वह सदा से नरसिंह का समर्थक था। उसने अपने मन्त्री को नन्दराम के पास भेजा और उसके द्वारा उसने हलदिया से प्रार्थना की कि आमेर के राजा को नरसिंह से जो मिलना चाहिए, हम सब देने के लिये तैयार हैं, यदि आप नरसिंह को पूर्ववत् अधिकारी बना रहने दे। साथ ही इसके बदले मे हम आपको उपहार मे अधिक धन देकर सन्तुष्ट करेंगे।

धन की आशा मे सेनापति नन्दराम ने उस सामन्त के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। धन की ही आशा मे उसने अभी कुछ दिन पहले प्रतापसिंह को सम्पूर्ण खण्डेला-राज्य का अधिकारी बनाया था और उसे राजा की तरफ से इसके लिये सनद भी दी गयी थी। अब उसने नरसिंह के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रस्ताव स्वीकार किया और अपनी सफलता के लिये उसने एक नये षडयन्त्र की रचना की। उसने नरसिंह के समर्थक सामन्त के पास गुप्त रूप से समाचार भेजा कि आपने नर-सिंह के पक्ष मे जो प्रस्ताव किया है, उसके लिये गोविन्दगढ से नरसिंह एक सेना को लेकर रात्रि के समय बाहर निकले और हमारी सेना पर आक्रमण करे। उस समय कुछ देर तक बनावटी युद्ध करके हम अपनी सेना के साथ परास्त होकर भाग जायँगे। ऐसा करने से प्रतापसिंह को हम पर किसी प्रकार का सन्देह न होगा और नरसिंह को सफलता मिल जायगी।

नन्दराम का यह सन्देश गुप्त रूप से रानोली के सामन्त के पास पहुँच गया। उसने इस सन्देश के अनुसार तैयारी की। सूर्यमल्ल और बाघसिंह के दो भाई थे। उन दोनो ने गोविन्दगढ के दुर्ग के भीतर तैयारी की और निश्चित दिन तथा समय पर रात मे डेढ सौ सैनिको को लेकर वे दोनो भाई दुर्ग से बाहर निकले और उन्होंने नन्दराम की सेना पर इस प्रकार का आक्रमण किया, जिससे आमेर की सेना को किसी प्रकार की क्षति न पहुँचे। उस आक्रमण पर कुछ देर तक युद्ध करके नन्दराम अपनी सेना के साथ वहाँ से भाग गया और नरसिंह ने अपने भाइयो के साथ अब पाकर राज्य के अपने नगरो और ग्रामो पर अधिकार कर लिया।

इस घटना से प्रतापसिंह को बहुत क्रोध मालूम हुआ। इसके रहस्य का उसे कुछ पता न था। उसने नरसिंह के अधिकार को रोकने की कोशिश की। परन्तु उसे सफलता न मिली। नरसिंह के पक्ष मे कई सेनाये खण्डेला मे आ चुकी थीं। प्रतापसिंह उसको रोक न सका। इसलिये उसने विरोधी सैनिको को पानी का कष्ट पहुँचाने की कोशिश की। उसने कुओ को बन्द करवाने की

पर मन्दिर बना हुआ था। सुजान सिंह ने अपने साथ के कुछ लोगो को शिखर के
रखा और वह स्वयं साथ के दूसरे आदमियों को लेकर मन्दिर की रक्षा करने के लिए
सुजान सिह भली प्रकार इस बात को समझता था कि बादशाह की इतनी बडी
हम लोग कुछ कर न सकेंगे और अन्त मे मारे जायँगे। लेकिन अपने मन्दिरो की
प्राणोत्सर्ग करना वह राजपूतो का एक परम धर्म समझता था। इसलिए अपने थोडे
को लेकर निर्भीकता के साथ वह तैयार हो गया। इसके बाद बादशाह की सेना ने
उन राजपूतो पर गोलियो की वर्षा आरम्भ की, जो मन्दिर की रक्षा के लिए खडे हुए
ने भी साहस के साथ मुगल सेना के आक्रमण का जबाब दिया। युद्ध आरम्भ होने के थ
लडते हुए वे राजपूत मारे गये। इसके बाद मुगल सैनिक मन्दिर की तरफ बढे। यह
सिह और उनके साथियो ने एक बार मन्दिर की मूर्ति को प्रणाम किया और फिर वे
युद्ध करने लगे। कुछ देर के बाद शेष राजपूतो के साथ सुजान सिंह भी मारा गया।
ने मन्दिर को तोडकर उसकी मूर्ति के टुकडे-टुकडे कर डाले। बहादुर खॉ ने सुजान सिह
साथियो को मारकर खण्डेला पर अधिकार कर लिया और वहॉ का प्रबन्ध क
उसने अपने साथ के सैनिको की एक सेना छोड दी।

खण्डेला से भागकर बहादुर सिह कुछ दूरी पर बसे हुए एक ग्राम मे जाकर
था। अपने दीवान की सहायता से वह बहादुर खाँ से मिल गया और आमदनी का
पैदा करके वह अपने दिन काटने लगा। इसके बाद बादशाह की तरफ से उसको कुछ
मिली। उसने अपने रहने के लिए बादशाह से महल भी प्राप्त कर लिया।

इन दिनो मे बादशाह के दरबार मे सैयद बन्धुओ का आधिपत्य चल रहा थ
सिह उनमे मिल गया और उनको प्रसन्न करके उसने अपना राज्य प्राप्त कर लिया।
बाद भी खण्डेला राजधानी मे दिल्ली की एक सेना का मुकाम रहा और उस सेना का
सिंह ने देना मन्जूर किया। राजा बहादुर सिंह के तीन लडके थे—केशरी सिह, फतेह
उदय सिह।

बहादुर सिह की मृत्यु के बाद केशरी सिह पिता के सिहासन पर बैठा। उसने
का अनुकरण किया और बादशाह के दरबार मे जाकर वहॉ की सेना के सरक्षण
अभिलाषा प्रकट की। इन्ही दिनो मे मनोहरपुर के राजा ने बादशाह से मिलकर
का उद्धार किया। उसे जब मालूम हुआ कि केशरीसिह बादशाह के दरबार मे आता है
उसके प्रति ईर्षा पैदा हुई। वह नही चाहता था कि बादशाह के दरबार मे केशरी सिं
स्थान मिले। उसने केशरी सिंह के विरुद्ध षडयन्त्र पैदा किया और उसके भाई फतेह ि
कर उसने कहा : "आप भी बहादुर सिंह के लडके है। खण्डेला मे केवल केशरी सिंह
का अधिकारी बनकर रहने का हक नही है। आप केशरी सिंह से आधा राज्य अ
लीजिये।"

फतेहसिह उसके बहकावे मे आ गया और उसने अपने भाई केशरी सिह के साथ
कर दिया। खण्डेला का दीवान समझदार था। उसने दोनो भाइयो को समझाने की कोि
लेकिन उसको सफलता न मिली। उसने देखा कि दोनो भाइयो के झगडे से खण्डेला का
होगा और शत्रु लोग इसका लाभ उठायेगे तो उसने खण्डेला राजधानी मे जाकर राजमा
की और उनको सभी प्रकार समझाकर कहा कि आप को ऐसा करना चाहिए, जिससे दो
मे झगडा न हो। यदि फतेह सिह नही मानता तो दोनो मे राज्य का बटवारा कर देना

होगा, उसका पालन प्रत्येक अवस्था मे हम लोग करेगे। बिना किसी विरोध के उपस्थित लोगो ने उसको स्वीकार किया। जयपुर मे इस समय शेखावाटी के सभी अधिकारी और सामन्त आये थे। उन लोगो ने निश्चय किया किया कि हम सब को व्यर्थ के आपसी झगड़े खत्म कर देने चाहिए। यदि कभी कोई ऐसा सघर्ष पैदा हो, जो विचारणीय हो, उसके लिए हम सब लोग उसी स्थान पर एकत्रित हो और बिना किसी पक्षपात के हम सब लोग मिल कर उस सघर्ष का निर्णय करे। हमारे पूर्वज भी ऐसा ही करते थे और ऐसे मौको पर वे इसी स्थान पर एकत्रित होते थे।

शेखावाटी के उन एकत्रित अधिकारियो ने यह भी निश्चय किया कि हम लोग अपने किसी सघर्ष को मिटाने के लिये भविष्य मे कभी भी आमेर के राजा को मध्यस्थ नही बनावेंगे। उसके लिए हम लोगो के बीच का कोई भी व्यक्ति चुन लिया जायगा। हम लोगो के किसी भी विवाद के निर्णय करने का अधिकार आज के बाद किसी दूसरे को न होगा। हम सब लोग स्वय अपना निर्णय करेंगे और उसके लिये किसी निर्णायक अथवा मध्यस्थ का निर्वाचन स्वय ही कर लेगे।

उन एकत्रित लोगो मे यह भी निश्चय हुआ कि यदि आमेर का राजा हम लोगो मे जबरदस्ती हस्तक्षेप करेगा तो हम सभी लोग अपनी सेनाओ के साथ एकत्रित होकर आमेर के राजा का सामना करेगे।

शेखावाटी के समस्त अधिकारियो और सामन्तो के उदयपुर मे एकत्रित होने और इस प्रकार निर्णय करने का समाचार जयपुर पहुँच गया। उसे सुनकर वहाँ का राजा बहुत भयभीत हुआ। शेखावत सामन्तो के साथ राज्य की तरफ से अब तक जो कुछ हुआ था, उन पर आमेर के राजा ने गम्भीर होकर विचार किया और इस बात को अनुभव किया कि नन्दराम हलदिया के दूषित व्यवहारो और अत्याचारो के कारण शेखावाटी के सामन्तो को इस प्रकार एकत्रित होकर हमारे विरुद्ध निर्णय करना पड़ा है। इस बात का भली-भाँति अनुभव करके आमेर के राजा ने नन्दराम को उसके पद से हटाकर रोडाराम नामक एक व्यक्ति को नियुक्त किया और उसे सेना के साथ शेखावाटी रवाना किया। राजा की आज्ञानुसार नन्दराम को कैद करके जयपुर भेजने के लिए रोडाराम को आदेश मिला।

नन्दराम हलदिया को आमेर के राजा का यह आदेश रोडाराम के आने के पहले ही मालूम हो गया। उसने समझ लिया कि अब मैं कैद किया जाऊँगा। इसलिए वह इस समाचार के पाते ही भाग गया। जयपुर के राजा से वह बात छिपी न रही कि सेनापति नन्दराम के इन समस्त अत्याचारो का कारण और अपराधी बहुत कुछ राज्य का प्रधान मन्त्री दौलत राम है, जो नन्दराम का भाई है। दौलतराम से नन्दराम को सहायता मिलती थी। इसलिए जयपुर के राजा ने दौलतराम की सम्पूर्ण सम्पत्ति जब्त कर ली।

नवीन सेनापति रोडाराम दर्जी वश मे पैदा हुआ था। नन्दराम को कैद करने के लिए उसे आदेश मिला था और यह भी आज्ञा हुई थी कि उसके अधिकार मे जितनी भी सम्पत्ति हो, उसे लेकर राज्य के अधिकार मे दे दी जाय। सेनापति रोडाराम ने शेखावाटी पहुँचकर उसको कैद करने की चेष्टा की। लेकिन वह पहले से ही तिरोहित हो चुका था। नन्दराम ने राज्य का शत्रु बनकर भयानक अत्याचार आरम्भ किये। उसके अधिकार मे अब भी एक आमेर की सेना थी। इसलिए उसने गांव और नगरो मे लूटमार करके आग लगा देने का कार्य आरम्भ किया।

नन्दराम के इन भयानक अत्याचारो को देखकर नवीन सेनापति रोडाराम ने शेखावाटी के

केशरी सिह के खासा नगर पर अधिकार कर लेने का विचार किया और वह युद्ध कर उस तरफ चला गया। इस प्रकार की विरोधी परिस्थितियों के कारण युद्ध मे पक्ष निर्बल पडने लगा। इस भीषण समय मे केशरी सिह को अपने भाई फतेह आयी। अपने पक्ष को कमजोर होते हुए देख कर भी केशरी सिह को घबराहट नही साहस के साथ युद्ध करता रहा। उस समय दोनो तरफ से भयानक मारकाट हो

युद्ध की गति देख कर केशरी सिह ने अपने भाई उदय सिंह को बुलाया तुरन्त चले जाने के लिए उससे उसने कहा। उदय सिह इसके लिए तैयार न हुआ। करने पर केशरी सिह ने उसको समझाते हुए कहा "मै जानता हूँ कि एक भागना नही चाहिए। लेकिन तुमसे मेरे ऐसा कहने का कुछ अभिप्राय है। मै इस समय तक रहूँगा। लेकिन तुम यहाँ से चले जाओ। क्योंकि तुम्हारे भी मारे जाने का मश नष्ट हो जायगा। केशरी सिंह के सामन्तो ने भी इस बात का समर्थन f लोगो ने केशरी सिह को भी चले जाने की बात कही। लेकिन अपने सामन्तों का उत्तर देते हुए केशरी सिंह ने कहा "युद्ध से हम दोनो भाइयो का चला जाना अच्छा नही हो सकता। इस युद्ध मे यदि पराजय होती है तो उसमें मेरा मारा जान है। राज्य की रक्षा करते हुए बलिदान हो जाना राजा का कर्त्तव्य होता है। मेरे फतेह सिंह की हत्या हुई थी। इस युद्ध मे लडकर और प्राण देकर मुझे उसका चाहिए। लेकिन उदय सिह का चला जाना आवश्यक है।" इसके बाद उदय f चला गया।

मुगल-सेना के साथ राजपूतो ने शक्ति भर युद्ध किया। अन्त मे युद्ध करता सिंह मारा गया। उसके बाद खण्डेला की सेना युद्ध-क्षेत्र से भाग गयी। विजयी खण्डेला पर अधिकार करके उदय सिह को कैद कर लिया और उसे तीन वर्ष तक अजमेर के दुर्ग मे रखा। इसके बाद दो शेखावत सामन्तों ने खण्डेला राज्य को इरादा किया। उन्होंने गुप्त रूप से अजमेर मे कैदी उदय सिंह के पास सन्देश भेजा: ' मुगलो से लडकर खण्डेला राज्य को स्वतन्त्र करने की योजना बनायी है। हमारे ऐसा ऊपर भयातक सकट पैदा होने की पूरी सम्भावना है। इसलिए आप पहले ही ऐसा आपको बादशाह हमारे साथ शामिल न समझे। इसके लिए आप ऐसा कर सकते हैं की इस कोशिश की सूचना आप पहले से ही बादशाह के प्रधान मन्त्री को कर दे आपके ऊपर सन्देह न करेगा।"

इसके कुछ दिनो के बाद उदयपुर और कासली के दोनो सामन्तो ने अपनी एकाएक खण्डेला मे बादशाह की सेना पर आक्रमण किया और उसे परास्त करके उ देवनाथ को मार डाला। यह समाचार दिल्ली पहुँचा। उदय सिह ने अपने सामन्तो अनुसार पहले ही कार्यवाही कर ली थी। इसलिए दिल्ली के दरबार मे किसी को पर सन्देह पैदा न हुआ। खण्डेला मे मुगल सेना के परास्त हो जाने के कारण बादशा मन्त्री फिर से खण्डेला पर अधिकार करने की बात सोचने लगा। उसने इसके सम्बन्ध से परामर्श किया। उसको उत्तर देते हुए उदय सिह ने कहा: 'यदि आप मुझको के तो मै खण्डेला को फिर बादशाह के अधिकार मे करा सकता हूँ।"

उदय सिह की इस बात को सुन कर मुगलो के प्रधान मन्त्री ने कहा: "मैं

था। लेकिन प्रतापसिंह को जयपुर के सेनापति से अपने सम्बन्ध मे कोई आशङ्का न थी। आशाराम ने भी राजनीति से काम लिया। उसके व्यवहारो से मालूम हुआ कि आमेर की सेना केवल नरसिंह के विरुद्ध खराडेला मे आयी है। आशाराम बिना किसी युद्ध के नरसिंह को कैद करना चाहता था और उसका कुछ ऐसा ही इरादा प्रतापसिंह के सम्बन्ध मे भी था। लेकिन उसने उसको जाहिर नही होने दिया।

आशाराम ने मनोहरपुर के सामन्त को नरसिंह के पास उसके दुर्ग मे भेजा और इस बात का वादा किया कि उसके सम्मान के विरुद्ध आमेर मे कोई भी व्यवहार न होगा, इसका उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है। मनोहरपुर के सामन्त के द्वारा नरसिंह ने आशाराम के इस सन्देश को सुना। उसने उस पर विश्वास कर लिया और गोविन्दगढ से निकलकर वह बाहर आ गया। आशाराम ने सम्मान पूर्वक उससे मिलकर बाकी कर के सम्बन्ध मे बातचीत की और उसके सम्बन्ध मे दोनो के बीच एक सन्धि पत्र लिखा जाने लगा। इस प्रकार की बातचीत दो दिन लगातार चलती रही। तीसरे दिन—जब नरसिंह को आशाराम से कोई आशङ्का न रह गयी थी—आशाराम ने एकाएक उसके निवास-स्थान को घेर लिया और उसको अपने साथ चलने के लिये कहा। नरसिंह के पास इस समय कोई दूसरा उपाय न था, वह विवश होकर अपने कुछ राजपूतो के साथ, आशाराम के साथ रवाना हुआ और वह उसके मुकाम पर पहुँच गया।

इसके बाद आशाराम ने अपने पास प्रतापसिंह को बुलाया, वह जानता था कि नरसिंह ने जयपुर-राज्य के विरुद्ध व्यवहार किया है। इसलिये उसका परिणाम नरसिंह के लिये अच्छा नही है। इसी अवसर पर जब आशाराम ने उसे बुलाया तो प्रतापसिंह को इस बात का विश्वास हुआ कि इस समय निश्चय ही मैं आमेर के राजा से लाभ उठा सकता हूँ। इस प्रकार की बात सोच-समझकर प्रतापसिंह भी आशाराम के पास पहुँच गया। चतुर सेनापति आशाराम ने कुछ समय तक दोनो को धोखे मे रखा और जिस समय वे दोनो भोजन कर रहे थे, आशाराम ने आदेश देकर अपनी सेना के द्वारा उन दोनो को कैद करा लिया। इसके बाद वे दोनो जञ्जीरो से बाँधे गये और एक बन्द सवारी गाडी मे बिठाकर पाँच सौ सैनिको के संरक्षण मे उनको जयपुर भेज दिया गया।

जयपुर पहुँचने पर नरसिंह और प्रतापसिंह—दोनो कारागार मे बन्द कर दिये गये और राजा की आज्ञा से खराडेला-राज्य मे मिला लिया गया। इसके बाद वहाँ का प्रबन्ध करने के लिये पाँच सौ सैनिक खराडेला मे रखे गये। जो छोटे-छोटे सामन्त राजा खराडेला की अधीनता मे थे, उनको वहाँ का अधिकार बाँटकर उनसे ऐसे प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लिये कि जिससे वे राज्य के विरुद्ध कभी विद्रोह न कर सके। इस प्रकार खराडेला-राज्य पतित हो पूर्ण रूप से जयपुर-राज्य की पराधीनता मे आ गया।

थी। कासली के सामन्त दीपसिंह के अधीनता स्वीकार कर लेने पर कई दिनो के
राजा जयसिंह ने सूर्य ग्रहण के समय गगा-स्नान के लिए जाने की तैयारी की। उस
भी रवाना हुआ। गंगा के किनारे पहुँचकर जयसिह ने स्नान किया और ब्राह्मणो त
को दान देने के समय उसने एक कर्मचारी से पूछा . "यह दान कौन लेगा।"

कासली के सामन्त दीपसिंह ने यह सुन कर अपने अगरखे का दामन फैलाक
से कहा : "इसके लिए मैं प्रार्थी हूँ।"

राजा जयसिंह ने दीपसिंह को उत्तर दिया : "इस प्रकार का दान केवल
दिया जाता है और उन मँगता लोगो मे पुरोहित, कवि एवम् दरिद्र माने जा
ठाकुर आपकी अभिलाशा क्या है ?"

राजा जयसिंह ने अपनी यह वात दीपसिह से कही। उसको सुनकर उसने
"इस प्रार्थना के द्वारा फतेह सिंह का लडका राज्य मे अपने पिता का
सकता है।"

राजा जयसिह ने दीपसिह की इस प्रार्थना को पूरा करने का वादा किया।

यह घटना सन् १७१६ ईसवी की है। इन दिनो जाटो की शक्तियाँ
और आमेर का राजा जयसिंह उन दिनो मे मुगल वादशाह के यहाँ सम्मानित हो
सेना पर अधिकार रखता था। साधारण श्रेणी के राजा उसकी अधीनता मे थे।
शिरपुर और दूसरे इस श्रेणी के राजाओ के साथ खण्डेला का उदयसिंह भी अप
जयपुर के राजा जयसिह की अधीनता मे रहा करता था। जाटो की वढती हुई श
जयसिंह ने उनके थून नामक दुर्ग को जाकर घेर लिया। उस दुर्ग का सरक्षका चू
जाट सरदार था। जाटो के विरुद्ध आक्रमण करने के लिए राजा जयसिंह के साथ
अपनी सेना लेकर गया था। लेकिन कुछ कारणो से जयसिंह उदय सिह से
इसलिए उदय सिंह अपनी सेना के साथ वहाँ से लौटकर चला आया। थून के
जयसिंह को वहुत दिन वीत गये। इसी वीच मे सरदार चूणामणि ने छिपे तौर
मन्त्री सैयद के साथ सधि कर ली। इसलिए जाटो के विरुद्ध जयसिंह की सारी
हो गयी।

खण्डेला का अधिकार प्राप्त करने के वाद उदयसिंह ने उदयगढ नामक
था। जव उसे मालूम हुआ कि थून मे अप्रसन्न हो जाने के कारण जयसिंह खण्डे
आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है तो वह सचेत और सावधान होकर अपने
सैनिक लोगो के साथ अपने उदयगढ दुर्ग मे जाकर रहने लगा। वजीद खाँ और
सेनाओ को लेकर जयसिंह ने अपनी सेना के साथ उदयगढ पर आक्रमण किया। इ
ने वहाँ पहुँच कर दुर्ग के आस-पास घेरा डाल दिया। उदय सिंह अपने उस दुर्ग मे
वना रहा। इसके वाद उसने खाने-पीने की जो सामग्री दुर्ग मे एकत्रिक की थी,
गयी। इसलिए उदय सिंह के साथ जो लोग दुर्ग मे मौजूद थे, उनको खाने-पीने का क
इस दशा मे उदय सिंह साथ के सव लोगो को लेकर मारवाड के नारु नामक स्
गया। उसके चले जाने पर उसके सवाई सिंह ने विजय सिंह के सामने जाकर आत्म
और उसने किले का फाटक खोल दिया।

सवाई सिंह के इस व्यवहार से जयसिंह प्रसन्न हुआ। उसने उसको क्षमा
की अधीनता स्वीकार करने के लिये कहा। सवाई सिंह ने कासली के राजा दीपसिंह

वसूल किया और इस प्रकार जो धन एकत्रित हुआ, उससे उसने योरप के प्रसिद्ध जार्ज थामस को अपने यहाँ सेनापति बनाकर नियुक्त किया। सेनापति थामस युद्ध मे बहुत बुद्धिमान माना जाता था। उसने बाघसिह की इस नियुक्ति को प्रसन्नता के साथ स्वीकार और उसकी सेना का अधिकार अपने हाथो मे लेकर जयपुर के साथ वह युद्ध की तैयारी करने लगा।

बाघसिह और जार्ज थामस के अधिकार मे जितनी सेना थी, उससे कई गुना बडी जयपुर को सेना बाघसिंह से युद्ध करने के लिए तैयार हुई। परन्तु जार्ज थामस ने इसकी कुछ भी परवा न की। उसके साथ की सेना यद्यपि बहुत छोटी थी, परन्तु उसने युद्ध की पूरी शिक्षा पायी थी और इसलिए सेनापति थामस उस पर बहुत विश्वास करता था। जयपुर की एक विशाल सेना उसके साथ युद्ध करने के लिए तैयार हुई। दोनो ओर से युद्ध आरम्भ हुआ। अन्त मे जयपुर को सेना कमजोर पडने लगी और उसका सेनापति रोडाराम भयभीत होकर युद्ध-स्थल से भाग गया। आमेर की सेना के पराजित होकर भागने पर जार्ज थामस ने शत्रुओ की बहुत-सी युद्ध सामग्री लेकर अपने अधिकार मे कर ली।

रोडाराम की सेना के पराजित होने पर जयपुर में फिर से युद्ध की तैयारियाँ हुईं। चौमू के सामन्त रणजीत ने अपनी शक्तिशाली सेना को एकत्रित करके और जयपुर की सेना को साथ लेकर जार्ज थामस की सेना पर आक्रमण किया। उस समय दोनो सेनाओं मे भयानक युद्ध हुआ और अन्त मे रणजीत सिह की विजय हुई। परन्तु बुरी तरह से वह घायल हुआ और उसके साथ के बहुत-से शूरवीर राजपूत मारे गये। इस युद्ध में साँगारोत वश के दो शक्तिशाली सामन्त बहादुर सिह और पहाड सिह भी भयानक रूप से घायल हुए। जार्ज थामस अपनी सेना के साथ परास्त होकर भाग गया। ॐ

जयपुर के कारागार मे खण्डेला के नरसिह और प्रताप सिह अब भी कैदी थे। जयपुर राज्य के विरुद्ध बाघसिह को प्रयत्नशील सुन कर वे दोनो अपनी मुक्ति की आशा करने लगे। इन दिनो मे इन दोनो ने छिपे तौर पर बाघसिह के साथ पत्र व्यवहार किया और उसने गुप्त रूप से सेनापति रोडाराम के पास ऐसा सन्देश भेजा कि जिससे वह बाघसिह से मिल कर उसको अनुकूल बना सके। रोडाराम ने उस सन्देश के उत्तर मे कहला भेजा कि अगर रायमलोत की शक्तिशाली सेना मेरे साथ आकर मिल जाय तो आपके प्रस्ताव के अनुसार मैं सब-कुछ कर सकता हूँ।

बाघसिह और सेनापति रोडाराम के साथ खण्डेला के कैदी अधिकारियो ने जो गुप्त परामर्श और पत्र-व्यवहार किया, उसके फलस्वरूप रोडाराम की बात को पूरा करने के लिए बाघसिह को मौका दिया गया। रोडाराम राजनीति चतुर एक सेनापति था। वह समझता था शेखावाटी के सामन्तो मे बाघसिह ने अपने बल-पौरुष द्वारा इन दिनो ख्याति प्राप्त की है, इस लिए यदि वह जयपुर-राज्य के पक्ष मे कर लिया जाता है तो यह हमारी राजनीतिक चतुरता होगी। बाघसिह उन दिनो मे अपनी सेना के साथ दुर्ग मे बने हुए महल मे रहता था। उसने अपने छोटे भाई लक्ष्मण सिह को वहाँ पर अधिकारी बना कर रखा और स्वय अपनी सेना के साथ जयपुर के सेनापति के पास जाकर उससे मिल गया।

ॐ प्रसिद्ध लेखक फ्रेंकलिन ने जार्ज थॉमस का जीवन चरित्र लिखा है। उसमे उसने लिखा है कि उसका यह युद्ध जो राजपूतो के साथ हुआ था उसमे राजपूतो की विजय कुछ विशेष कारण रखती थी, फिर भी जार्ज थॉमस ने राजपूतो की बहादुरी की प्रशसा की थी।

आपसी झगडे को दूर करने के लिए एक ही उपाय है कि खण्डेला-राज्य मे ए
बना दिया जाय। फतेह सिंह के लडके बीरसिह का पुत्र इन्द्र सिह इन दिनो
भागो का अधिकारी था। इसलिए आमेर के राजा माधव सिह ने इन्द्र सिंह के
हजार सैनिकों की सेना वृदावन दास के साथ भेजी। उसने खण्डेला पहुँच
आक्रमण किया। इन्द्र सिह कुछ दिनो तक अपने दुर्ग मे रह कर आमेर की
करता रहा। लेकिन अन्त मे निर्बल पड कर वह दुर्ग से निकल गया और पा
चला गया। वृन्दावन दास ने वहाँ जाकर उस पर आक्रमण किया। इसलिए अन्त
आत्म- समर्पण करना पडा। लेकिन इसी बीच मे एक ऐसी घटना हुई कि जिससे
पिता के अधिकार का राज्य मिल गया।

आमेर के राजा माधव सिह ने पाँच हजार सैनिको की सेना जो वृन्दाबन
मे भेजी थी, उसके वेतन देने का भार वृन्दाबन दास के ही ऊपर था। लेकिन
धन था कि वह उस सेना का वेतन अदा कर सकता। इस दशा मे वृन्दाबन दा
का आश्रय लिया। उसने मन्दिरो की मूर्तियो मे लगे हुए चाँदी-सोने को अपने
के साथ-साथ प्रजा से कर लेना आरम्भ किया। यह कर राज्य के ब्राह्मणो
लगा। इसलिए वहाँ के ब्राह्मणो ने इसकी निन्दा की। परन्तु बृन्दाबन दास ने
कुछ परवाह न की। यह देखकर ब्राह्मणो ने वृन्दावन दास का अपमान जनक
वृन्दाबन दास पर इसका भी कोई प्रभाव न पडा तो ब्राह्मण अपने आपको आघात
बन दास को ब्रह्म-हत्या का पापी बनाने लगे। ब्राह्मणो के दल के दल वृन्दाव
पहुँचते और अपने शरीरो को आघात पहुँचा कर उसे कोसते। इस प्रकार की
खण्डेला की प्रजा वृन्दाबन दास की निन्दा करने लगी।

खण्डेला-राज्य की इस प्रकार की घटनाओ के समाचार आमेर-राजधानी
पास पहुँचे। वह ब्राह्मणद्रोही नही बनना चाहता था। इसलिए उसने अपनी भे
वापस बुला लिया और बिद्रोही ब्राह्मणो को आमेर मे आने के लिए उसने सदेश
राज्य के ब्राह्मण बडी सख्या मे आमेर राजधानी पहुँचे। राजा माधव सिंह ने उन
हजार रुपये देकर सतुष्ट किया। इसके बाद वे ब्राह्मण अपने-अपने स्थानो को लौट

आमेर की सेना के लौट जाने से वृन्दाबन दास कमजोर पड गया। इन्द्र
का लाभ उठाने के लिए अपने सैनिको को एकत्रित किया। उसने राजा माधव
प्राप्त करने का भी इरादा किया। इन दिनो मे आमेर के राजा की तरफ से खु
माचेडी के राव पर आक्रमण करने की तैयारी की थी और जिस समय आमेर
बोरा के नेतृत्व मे माचेडी की तरफ जा रही थी, इन्द्रसिह अपनी सेना के
रवाना हुआ था। वह आमेर की सेना के साथ जाकर मिल गया और इन दोनो से
पहुँचकर आक्रमण किया। वहाँ का राव घबराकर जाटो के राजा के पास भाग
आक्रमण मे इन्द्र सिंह ने आमेर की सेना का साथ दिया। इसलिए आमेर के राजा
उसको खण्डेला-राज्य की सनद दे दी। इन दिनो मे इन्द्र सिंह ने राजा माधव
हजार रुपये भी दिये।

राजा माधव सिह से इन्द्र सिह को खण्डेला-राज्य की सदन मिल जाने
शत्रुता वृन्दाबन दास के साथ और भी अधिक हो गयी। दोनो ने एक दूसरे का ना
तैयारी की। इसका परिणाम उसके वश और परिवार के लिए अत्यधिक भयान

उस ब्राह्मण के पास सात हजार सैनिको की सेना थी। वह लडकर पराजित हुई। सामन्तो ने उस ब्राह्मण को परास्त कर उसका खण्डेला नगर लूट लिया। ब्राह्मण वहाँ से अपने बचे हुये सैनिको के साथ भाग गया।

उस ब्राह्मण को पराजित करने के बाद वहाँ के सामन्तो का उत्साह बढ गया। उत्तेजित अवस्था मे वे सब अपनी सेनाओ के साथ जयपुर राज्य की तरफ बढे और वहाँ के ग्रामो तथा नगरो को लूटना आरम्भ किया। इस प्रकार लूटमार करते हुये वे लोग उस नगर मे पहुँचे, जो जयपुर राज्य की बडी रानी के अधिकार मे था। सामन्तो की सेनाये उस नगर का विनाश और विध्वन्स करने लगी।

इस समाचार को सुनकर और क्रोधित होकर जयपुर के राजा ने उनको दमन करने के लिये एक नयी सेना राजधानी से भेजी। उस सेना के पहुँचते ही दोनो ओर से भीषण सग्राम आरम्भ हुआ। इस युद्ध मे सामन्त निर्बल पडने लगे। उस दशा मे रानोली और कई एक दूसरी जागीरो के सामन्तो ने जयपुर के राजा के साथ सन्धि कर ली और उसकी अधीनता को स्वीकार किया। परन्तु रायसल की छोटी शाखा के सामन्तो ने जयपुर की अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया। वे लोग इसके लिये किसी प्रकार तैयार न हुये और अपनी जागीरो को छोडकर बीकानेर एवम् मारवाड मे जाकर रहने लगे। प्रतापसिंह के सजातीय बन्धु सूजावास के सामन्त सग्रामसिंह ने मारवाड मे और बाघसिंह तथा सूर्यसिंह ने बीकानेर मे जाकर आश्रय लिया। वहाँ के राजाओ ने सम्मानपूर्वक उनको स्थान दिया और उनके गुजारे के लिये उनको जागीरे दी गयी। बहुत दिनो तक वहाँ पर रह कर उन लोगो ने अपनी शक्तियो का सङ्गठन किया और सङ्गठित होकर उन्होने जयपुर राज्य के विध्वन्स और विनाश का निश्चय किया।

निर्वासित सामन्त अपनी सेनाये लेकर सग्राम सिंह के नेतृत्व मे जयपुर की तरफ रवाना हुये और आमेर के पास पहुँचकर वहाँ के ग्रामो और नगरो को लूटने लगे। जयपुर राज्य के दुर्गों पर आक्रमण किया और निर्दयता के साथ वहाँ के सैनिको का संहार किया। इस प्रकार विध्वन्स और विनाश करते हुये वे लोग आमेर के निकट खोह नगर मे पहुँच गये। वहाँ पर भी उन लोगो ने लूटमार की और वहाँ के समस्त अच्छे घोडो को अपनी सेना मे ले गये।

सग्रामसिंह ने इन दिनो मे अपनी शक्तियाँ सुदृढ बना ली थी और उसे अब जयपुर राज्य का कोई भय न रह गया था। उसके अत्याचारो से जयपुर राज्य की प्रजा भयानक कष्टो में पड गयी। इस प्रकार के समाचार जयपुर के राजा के पास पहुँचे। राज्य की तरफ से लोगो ने वहाँ के राजा से इस लूट-मार का जिक्र किया। उसे सुनकर सग्रामसिंह से राजा को भय पैदा हुआ और उसने बिसाऊ के सिद्धानी सामन्त श्यामसिंह को अपना प्रतिनिधि बनाकर सग्रामसिंह के पास सन्धि के लिये भेजा। सग्रामसिंह श्यामसिंह की बातो को सुनकर प्रभावित हुआ और उसने भविष्य मे इस प्रकार का कोई अनिष्ठ न करने का निश्चय किया। साथ ही उसने श्यामसिंह के कहने पर जयपुर की राजधानी मे आना और वहाँ के राजा के साथ भेट करना ही स्वीकार कर लिया। इसके कई दिनो के बाद अपनी सेना लेकर संग्रामसिंह ने जयपुर नगर मे प्रवेश किया। उसके वहाँ पहुँचने पर प्रकट रूप से किसी को कुछ कह सकने का साहस न हुआ, परन्तु प्रधान मन्त्री मानजीदास के मनोभावो मे संग्रामसिंह के विरुद्ध कुछ बाते पैदा होने लगी।

जयपुर के राजा की तरफ के श्यामसिंह ने सग्रामसिंह के पास जाकर जो बाते की थी, उनके फलस्वरूप सग्रामसिंह ने शत्रु की राजधानी मे साहसपूर्वक प्रवेश किया था। ऐसे अवसर पर

राजा ने खण्डेला से अपनी सेना वापस बुला ली थी और क्रोधित ब्राह्मणो को
देकर शान्त किया था इसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है। इन दिनो मे बृ
इन्द्र सिंह को निर्बल समझ कर वहाँ के ब्राह्मणो ने उत्पात करना आरम्भ किया।
लोगो से जो कर वसूल किया था, उसके पाप का प्रदर्शन करके वे लोग वृन्दावद
लगे। वृन्दावन ने ब्राह्मणो के श्राप से डर कर प्रायश्चित के रूप मे उनको भूमि
शुरू किया। बहुत समय तक अनाचार देखकर वृन्दावन दास के लडके गोविन्ददास
किया। इसके फलस्वरूप वृन्दावन ने गोविन्ददास को अपने राज्य का भार
अधिकार मे पाँच नगरो को रखकर सिहासन छोड दिया।

गोविन्ददास अपने पिता के सिंहासन पर बैठकर अधिक समय तक राज
न कर सका। सिंहासन पर उसके बैठने के वर्ष मे वर्षा न होने के कारण राज्य
पडा। राज्य मे चारो तरफ हाहाकार आरम्भ हुआ। इस अकाल के कारण गो
से कर वसूल करने मे बडी कठिनाई हुई। महरोली के सामन्त ने गोविन्द सिंह
खेती की दशा देखने की प्रार्थना की। इसके लिए जब गोविन्द सिंह तैयार हु
विरोध करते हुए उससे कहा : "बाहर जाने के लिए आज का दिन अच्छा नही है

गोविन्द सिह ने ब्राह्मणो की इस बात पर ध्यान नही दिया और वह राज्य
देखने के लिए रवाना हुआ। उसके साथ खेजडोली नामक स्थान का रहने वाला ए
गोविन्द सिंह उसका विश्वास करता था। उसकी जिम्मेदारी मे गोविन्द सिह
चीजे रख दी, जो खो गयी। गोविन्द सिंह उससे बहुत अप्रसन्न हुआ। कर्मचा
पराध होने के अनेक प्रमाण दिये। लेकिन गोविन्द सिंह ने उसका विश्वास
अवस्था मे उस कर्मचारी को बहुत ग्लानि मालूम हुई। उसे अपने अपराध मे ि
आशका होने लगी। इसलिए उस कर्मचार ने रात के समय गोविन्द सिंह को जा
गोविन्द सिंह के पॉच लडके थे—(१) नरसिह (२) सूर्यमल (३) बाधसिह (४)
(५) रणजीत सिह। उसके इन पुत्रो के द्वारा उसके वश की वृद्धि हुई।

पिता के बाद नरसिह खण्डेला के सिंहासन पर बैठा। घरेलू संघर्ष और
खण्डेला की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ बहुत निर्बल हो गयी थी।
इस अवसर का लाभ उठाकर अपनी सीमाये बढा ली थी। दिल्ली की मुगल बादशा
पड गयी थी। आमेर के राजा ने अपने निकटवर्ती राज्यो से लाभ उठाकर शक्ति
वृद्धि की थी। शेखावत राज्यो के साथ उसका शान्तिपूर्ण सम्बन्ध चल रहा
वहाँ पर मराठो के अत्याचार आरम्भ हुए। लोगो ने शेखावाटी मे चारो तरफ
कर दी और वहाँ के सामन्तो और उनके लडको को कैद करके वे ले जाने लगे।
सामन्तो ने अपना सब-कुछ बेचकर मराठो को मॉगी हुई रकमे अदा की। इस
ने छुटकारा पाया। जो सामन्त मराठो को उनकी मॉग के अनुसार धन नही दे
दिनो तक कैदी होकर मराठो के साथ रहना पडा। इसके बाद भी उनसे कुछ न
ने उनको छोड दिया।

मराठा लुटेरो ने इन दिनो मे सभी प्रकार के अत्याचार शेखावाटी मे
युद्ध के बाद मराठो के इस दल ने शेखावाटी पहुँचकर सबसे पहले बिवाई पर
वहाँ के लोग घबराकर दूसरे नगरो की तरफ भाग गये। लेकिन अस्सी राजपूत
भीतर जाकर मराठो के साथ लड़ने का निश्चय किया। मराठो ने बिवाई पर

२—खण्डेला-राज्य का अधिकार पूर्ववत् नरसिंह और प्रताप सिंह को लौटा दिया जायगा।

३—शेखावत सामन्त जयपुर राज्य को अपना कर देते रहेंगे और उस अवस्था में सामन्तों के शासन मे हस्तक्षेप करने का जयपुर को कोई अधिकार न होगा।

इस प्रकार की सभी आवश्यक बातो का निर्णय करके जो सन्धि पत्र लिख कर तैयार किया गया उस पर सभी सामन्तो के हस्ताक्षर हो जाने के बाद कृपाराम और कृष्ण सिंह ने जयपुर की राजधानी मे जाकर राजा जगत सिंह के सामने उस सन्धि पत्र को रखा। राजा जगत सिंह ने उसे स्वीकार किया और अपने हस्ताक्षर कर दिये। इसी समय शेखावाटी के सामन्तो ने जयपुर राज्य की सहायता के लिये दस हजार सैनिको को एकत्रित करके देना मन्जूर किया। राजा जगत सिंह ने उस समय कहा कि सामन्तो की यह सेना हमारे राज्य के काम से जब तक जयपुर में रहेगी, उसका समस्त व्यय इस राज्य की तरफ से दिया जायगा। इस सन्धि के सम्पन्न हो जाने के बाद दोनो पक्षो की तरफ से सन्तोष प्रकट किया गया।

पोकरण का सामन्त सवाई सिंह अपने साथ धौकल सिंह को लेकर पहले ही खेतड़ी नामक स्थान पर चला गया था। जयपुर राजा के साथ शेखावाटी के सामन्तो की सन्धि हो जाने पर पोकरण के सामन्त का भतीजा श्याम सिंह खेतडी मे गया और कृपाराम के संरक्षण से धौकलसिंह को लेकर शेखावत सामन्तो के पास पहुँचा। वहाँ पर स्वर्गीय राजा प्रताप सिंह की लड़की और मारवाड के राजा भीम सिंह की विधवा रानी आनन्दी कुंवरि से उसकी भेंट हुई। रानी आनन्दी कुंवरि ने बालक धौकल सिंह को गोद लेकर उसे दत्तक पुत्र के रूप मे स्वीकार किया। उस समय वहाँ पर रानी के राज्य के अनेक कर्मचारी और प्रमुख व्यक्ति मौजूद थे। इसके बाद सब लोग जयपुर की राजधानी मे चले आये। वहाँ पर एक विशाल सेना मारवाड पर आक्रमण करने की तैयारी कर रही थी।

यह सेना जयपुर की राजधानी से रवाना होकर खण्डेला से बीस मील दूर खाटू नामक स्थान मे पहुँची और वहाँ पर ठहर कर वह दूसरी सेनाओ के आने की प्रतीक्षा करने लगी। खडेला मे नरसिंह और प्रतापसिंह कैद से छूट चुके थे। वे दोनो भी अपनी सेनाओ के साथ आकर वहाँ पर मिले। खडेला के भूतपूर्व राजा को जो कई ग्राम दिये थे और जिनको लेकर वह अकेला रहा करता था, राजा वृन्दावन दास भी अपनी वृद्धावस्था मे युद्ध करने के लिये इस सेना मे आकर मिल गया था। राजा जगत सिंह की सहायता मे इस समय एक विशाल सेना इस स्थान पर एकत्रित हो चुकी थी। रायसलोत, सिद्धानी, भोजानी और लाडखानी सेनाओ के साथ शेखावत सामन्तो की सेनायें भी मारवाड पर आक्रमण करने के लिये जगत सिंह के अधिकार मे आ गयी थी। कृष्णाकुमारी के विवाह का प्रश्न लेकर मारवाड के राजा मानसिंह के साथ जगत सिंह का जो युद्ध हुआ था, उसका वर्णन मारवाड के इतिहास मे लिखा जा चुका है। इसलिये यहाँ पर फिर से उसका उल्लेख करने की आवश्यकता नही है। इस युद्ध मे शेखावत सामन्तो ने अपनी जिस वीरता का प्रदर्शन किया था, जगत सिंह के युद्ध से भाग जाने के कारण वह सब बेकार हो गया। इस युद्ध मे खडेला का राजा नरसिंह और वृद्ध वृन्दावनदास—दोनो ही मारे गये।

नरसिंह के बाद उसका लडका अभय सिंह अपने पिता के स्थान पर अधिकारी हुआ। राजा जगत सिंह ने अभय सिंह के साथ आँखे बदली। उसने अभय सिंह को उसके पिता के राज्य का अधिकार देने से इनकार कर दिया। इस दशा मे अभय सिंह माचेडी के राजा बख्तावार सिंह के पास चला गया। उसने भी अभय सिंह के साथ अच्छा व्यवहार नही किया। इसलिये अपना

खण्डेला के प्रसिद्ध पुरुषों ने राज्य मे जिसके पास जो कुछ मौजूद था, अ
की वस्तुएँ तक बेचकर जो धन एकत्रित किया गया, वह मराठो को दे दिया
मराठा वहाँ से चले गये और सिद्धानी वश के अधिकारी नगरो मे वे जा पहुँचे।
मराठो ने उदयपुर पर आक्रमण किया और उसे सभी प्रकार लूटकर उसको अपने
लिया। उसके बाद भी मराठा दल के लोग नगर मे लूटमार के अतिरिक्त भयानक
रहे। इसके बाद उनका दल उदयपुर को छोडकर सिहाना, झुझनू और खेतडी
पर आक्रमण करने के लिए चला।

मराठो के चले जाने के बाद भी खण्डेला के नरसिह और प्रताप सिंह सु
नहीं सके। वहाँ के लोगो ने अपना सब कुछ बेच कर मराठो को दे दिया।
आमेर के राजा ने खण्डेला से कर माँगा। बालक प्रताप इनकार कर सकने की
उसके नगरो मे लोगो के पास खाने के लिए जो कुछ अनाज रह गया था, उसका
प्रताप सिह ने आमेर के राजा को दे दिया। परन्तु नरसिह ने कुछ न दिया।

इन दिनो मे शेखावत वश की एक शाखा मे सामन्त देवीसिह ने ख्याति प्र
कासली के राव तिरमल्ल का वंशज था और सीकर का वह अधिकारी था। उसने
की अधीनता मे रह कर भी लोहागढ, खोह और इस प्रकार के दूसरे पच्चीस नगर
अधिकार कर लिया था। इसके बाद उसने रिवासो पर अधिकार करने की चेष्टा
मृत्यु हो जाने के कारण वह अपनी अभिलाषा पूरी न कर सका।

देवीसिह के कोई लडका न था। इसलिए अपने जीवन काल मे ही उसने शाह
के लडके लक्ष्मण सिह को गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी बना लिया था।
निर्बल सामन्तो से ग्राम और नगरो पर अधिकार कर लेने के कारण देवीसिंह से
बहुत अप्रसन्न हो गया था। इसलिए उसने मन्त्री दौलत राम के भाई नन्द
देवीसिंह के नगरो पर आक्रमण करने का आदेश दिया। नन्दराम ने वहाँ आक्रमण
सिंह को आमेर की अधीनता मे लाने की तैयारी की। इस समय, जिन सामन्तो
नगरो पर देवीसिह ने अधिकार कर लिया था, वे सभी देवीसिंह के विरुद्ध नन्दर
पास जाने लगे। खण्डेला के राजा भी उसके पास पहुँचे। कासली और बि
पात्तवत सामन्त भी नन्दराम के पास पहुँच गये। देवीसिंह ने जिसको क्षति
उसके दत्तक पुत्र लक्ष्मण सिह के विरुद्ध होने वाले आक्रमण मे सहायता करने
हो गये।

सीकर का अधिकारी देवीसिह भी साधारण दूरदर्शी न था। उसने पहले से
बहुत-कुछ कर रखा था। उसने आमेर-राज्य के दरबारी सदस्यो के साथ पहले से ह
रखा था। वह इस बात को समझता था कि इन लोगो के साथ अनुराग पूर्ण सम्बन
से हमारा भविष्य सकटपूर्ण न बन सकेगा। देवीसिह के साथ जयपुर के मन्त्री
का स्नेहपूर्ण सम्बन्ध था। यह सब देवीसिंह ने अपने जीवनकाल मे ही कर लिया
अपनी सेना के साथ सीकर पर आक्रमण करने के लिए जब गया तो एक चन्द्रावत
का दीवान था—लक्ष्मण सिह का प्रतिनिधि होकर नन्दराम के पास गया और उसने
साथ स्वर्गीय देवीसिह का जिक्र करते हुए उसके दत्तक पुत्र लक्ष्मण सिह की पा
सामने रखी। नन्दराम ने उससे कहा "आप जो चाहते है, उसका एक ही रास्ता

इन दिनो मे जयपुर-राज्य के दरबार मे एक दूसरा परिवर्तन हुआ। वहाँ के राजा प्रताप-सिंह ने खुशियाली राम बोहरा को उसके अनेक अपराधो के कारण आजन्म कैद की सजा दी थी और आदेश दिया था कि भविष्य मे उसके वश का कोई भी मनुष्य कभी मन्त्री पद पर न रखा जाय, इस आदेश के अनुसार खुशियाली राम बोहरा को कैद करके जयपुर की कारागार मे रखा गया था। परन्तु कुछ परिस्थितियो के कारण वह छोड दिया गया और उसके बाद वह फिर मन्त्री पद पर नियुक्त हुआ। उन दिनो मे शेखावटी के सामन्तो ने अपने प्रतिनिधियो को भेजकर प्रार्थना की कि हमारे पूर्वजो के अधिकार हमको दे दिये जायँ। खुशियाली राम ने उन सामन्तो की प्रार्थना को राजा के सामने रखा और सामन्तो का पक्ष लेकर राजा से प्रार्थना करते हुए कहा : "सामन्त किसी भी राज्य के स्तम्भ होते हैं। उनके सन्तुष्ट रहने से राज्य का सदा कल्याण होता है। यह बात सही है कि शेखावत सामन्तो ने बहुत समय से अन्याय पूर्ण कार्य किये हैं और उनके अत्याचारो से राज्य में अशान्ति पैदा हुई है। परन्तु राज्य पर कभी किसी प्रकार की विपद आने पर सामन्तो ने राज्य का पक्ष लेकर युद्ध भी किया है। मारवाड के युद्ध मे जयपुर की सेना के साथ शेखावटी के सामन्तो ने दस हजार सैनिको की शक्तिशाली सेना भेजी थी। सामन्तो के इस प्रकार के उपकार भी राज्य के ऊपर है। यदि इन सामन्तो का भय न रहे तो मराठो का दल कभी भी इस राज्य में आकर अत्याचार कर सकता है। इसलिये हमारी समझ मे इन सामन्तो को सन्तुष्ट रखना हमारा कर्त्तव्य है।"

खुशियाली राम बोहरा की इन बातो को सुनकर राजा ने कहा : "जो आप मुनासिब समझें, इन सामन्तो के सम्बन्ध मे करे।"

राजा का आदेश पाकर खुशियाली राम ने शेखावत सामन्तो के साथ एक नयी सन्धि की। उसमे यह निश्चय हुआ कि रायसलोत सामन्त वर्ष मे साठ हजार रुपये जयपुर-राज्य को कर में दिया करे और इस समय चालीस हजार रुपये भेट मे दे। सन्धि की इन शर्तों को सामन्तो ने स्वीकार कर लिया। इसलिये खण्डेला नगर और उसके अधिकार की दूसरी जागीरे उनके वारिसो को दी गयी। इस तरह अभयसिंह और प्रतापसिंह को उनके पिता के अधिकार फिर से खण्डेला-राज्य मे मिल गये।

इन सामन्तो के साथ जयपुर की जो सन्धि हुई थी, उसे स्वीकार करके चालीस हजार रुपये सामन्तो ने राजा को भेट मे दे दिये और उसके बाद शासन की जो सनदे सामन्तो को दी गयी, उन पर प्रधान मन्त्री और राजा के हस्ताक्षर हो चुके थे। परन्तु राज्य की तरफ से नागा लोगो की जो सेना खण्डेला के दुर्ग की रक्षा में थी, वह अभयसिंह और प्रतापसिंह को खडेला के अधिकार देने के लिये तैयार न हुई। यह देखकर हनुमन्तसिंह को सन्देह हुआ और वह सोचने लगा कि खुशियाली राम बोहरा ने धोखा देकर हम लोगो से चालीस हजार रुपये ले लिये है। उसने गम्भीर होकर खण्डेला के अभयसिंह और प्रतापसिंह से पूछा "यदि मैं जयपुर के इन सैनिको से लडकर अधिकार लेने की कोशिश करूँ तो आप लोग कितने सैनिक देकर मेरी सहायता करेगे ?"

अभय सिंह और प्रताप सिंह के अधिकार मे इस समय पाँच सौ सैनिक थे। अभय सिंह और प्रताप सिंह की अनुमति लेकर हनुमन्त सिंह ने उनमे से बीस तेजस्वी और शूरवीर राजपूतो को अपने साथ लिया और वह दुर्ग के द्वार पर पहुँच गया। उसने अपने आपको छिपाकर दुर्ग के भीतर जो नागा लोगो की सेना थी, उनके अधिकारी के पास उसने सन्देश भेजा : मैं हनुमन्त सिंह का दूत हूँ।, आपके पास कुछ परामर्श करने के लिये मैं भेजा गया हूँ। इसलिये मुझे अपने साथियो को लेकर आपके पास आने की आज्ञा हो जाय।

उससे कहा : सम्पूर्ण खण्डेला-राज्य का अधिकार राजा जयपुर की तरफ से प्रतापसिं
जा रहा है। उसके शासन की सनद तैयार हो चुकी है। इसलिये आप तुरन्त जयपुर
साथ सन्धि कर ले और जो माँग की जाय, उसे आप पूरा करे। यदि आप ऐसा च
आपकी सहायता करूंगा।

नरसिह ने इन्द्रसिह की इस बात को स्वीकार नही किया। इसलिये इन्द्रसिंह ने
कर तुरन्त उसको चले जाने के लिये कहा। उसने यह भी कहा यदि आप चुपके से f
राज्य न चले जायँगे तो आपके साथ मेरे ऊपर भी सङ्कट पैदा हो जायगा।

इन्द्रसिह के परामर्श के अनुसार नरसिह रात के समय जयपुर से जाने के लिये
इन्द्रसिह ने उसको रक्षा के लिये अपने साठ कर्मचारियो को उसके साथ भेजा। वे लोग
उसको नवलगढ पहुँचा कर लौट आये। नरसिह सबेरा होते-होते अपने दुर्ग गोविन्
गया।

इन्द्रसिंह के पास नरसिह का आना जयपुर मे प्रकट हो गया इसलिये नन्दरा
को अनेक प्रकार की धमकियाँ दी। उनका उत्तर देते हुये इन्द्रसिंह ने नन्दराम से कहा :
पूतो के कर्त्तव्य का पालन किया है। इसका कोई भी परिणाम हो, मैं उसके लिये जरा
नही हूँ।"

नाथावत बश मे सामोद और चौमू के दोनो सामन्त प्रधान थे, सामोद के सा
से भी अधिक श्रेष्ठता मिली थी और वे दोनो जयपुर-राज्य की अधीनता में रहते थे।
प्रधान सामन्तो को राज्य की तरफ से रावल की उपाधि मिली थी। उनके शासन मे
छोटे सामन्त रहते थे। सामोद के सामन्त के साथ चौमू के सामन्त का बहुत दिनो
भीतर ईर्षाद्वेष चल रहा था और कभी-कभी उन दोनो मे झगड़े भी हो जाते थे।

नरसिह को जयपुर मे अपने आप बुलाने के कारण इन्द्रसिह से नन्दराव सेनापति
सन्न हुआ। इस प्रकार का समाचार पाकर चौमू का सामन्त जयपुर के राज-दरबार मे
नाथावत बश के सामन्तो मे श्रेष्ठ सामन्त का पद प्राप्त करने के लिये वह आमेर के रा
सा धन उपहार मे देने के लिये तैयार हुआ। आमेर का राजा सामोद सामन्त इन्द्रसिंह
था ही। उसने चौमू के सामन्त की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। इन्द्रसिंह इस समय
मे मौजूद था। उसे बुलाकर राज-दरबार मे आज्ञा दी गयी : "आपने राज्य के विरुद्ध
किया है, उसके दण्ड मे सामोद की जागीर राज्य के अधिकार मे ले ली गयी है और आ
दिया जाता है कि आप तुरन्त सामोद की जागीर छोडकर राज्य से चले जायँ।"

राजा के इस आदेश को पाकर सामोद के सामन्त इन्द्रसिह ने कुछ भी विरोध
उसने एक राजभक्त की हैसियत से इस आज्ञा को स्वीकार किया और आमेर राजधानी से
जागीर सामोद चला गया। वहाँ पहुँचकर उसने सामोद से निकल जाने की तैयारी की
सामग्री तथा सम्पत्ति को लेकर अपने परिवार के लोगो के साथ सामोद से निकलकर व
राज्य मे चला गया। कुछ दिन बीत गये। इन्द्रसिह की स्त्री को आमेर-राज्य के दरबार
नामक एक ग्राम का अधिकार मिला। इन्द्रसिह की अवस्था बुढापे की चल रही थी।
जन्मभूमि मे मरने का इरादा किया। इसलिये जीवन के अन्तिम दिनो मे वह अपने परिव
उस ग्राम मे चला गया। वह जन्म से ही साहसी और वीर था यदि वह चाहता तो आमे

रास्ता निकालना चाहिये, जिससे दोनो पक्षो के सम्मान की रक्षा हो सके। खण्डेला-राज्य की सेना ने गोगावत लोगो की सम्पत्ति लूटी है और उसे वे अपने राज्य मे ले गये हैं। लेकिन यदि वे लोग उस सम्पत्ति और सामग्री को प्रधान सेनापति के पास भेज दे तो दोनो तरफ का सम्मान कायम रह सकता है। उसके इस निर्णय को शेखावत लोगो ने स्वीकार कर लिया और उस समय जो युद्ध होने जा रहा था, वह खत्म हो गया। परन्तु इससे राव चाँदसिंह को सन्तोष न मिला। आपसी विनाश से उन लोगो की रक्षा हुई। परन्तु उसका दुष्परिणाम यह निकला कि आपसी सहयोग की भावना छिन्न भिन्न हो गयी और उन सब ने भोमगढ पर जा घेरा डाला था, उसे छोडकर सभी सामन्त अपने-अपने नगरो को चले गये।

सीकर का सामन्त लक्ष्मण सिंह आपसी विद्रोह मे किसी तरफ शामिल नहीं हुआ था। वह पहले से खण्डेला पर अधिकार करने की बात सोच रहा था। समय पा उसने लाभ उठाने की कोशिश की। वह तेजी के साथ सीकर पहुँच गया और गोनोह नामक स्थान को उसने जाकर घेर लिया। किसी प्रकार वहाँ पर उसका अधिकार हो गया। पठान सेनापति के विरुद्ध युद्ध करने के लिए जयपुर की जो सेनाएं गयी थी। उसमे एक सीकर का सामन्त भी था। इस समय आपसी विद्रोह का लाभ उठाकर वह किस प्रकार खण्डेला का शासन प्राप्त करना चाहता था। इसलिये उसने पठान सेनापति को दो लाख रुपये देने का वादा करके उसे अपनी सहायता के लिए बुलाया। मन्नू और महताब खाँ दो पठान सेनापति अपनी फौज लेकर सीकर पहुँच गये। वहाँ के सामन्त लक्ष्मण सिंह ने पठानो की सेना के आ जाने पर खण्डेला पर आक्रमण करने की तैयारी की। यह समाचार हनुमन्तसिंह ने सुना। उसने अभयसिंह और प्रतापसिंह के स्वार्थों की रक्षा करने के लिए पठान सेनापति महताब खाँ को पचास हजार रुपये देने का वादा किया और इसके बदले में खण्डेला जाने और वहाँ पर सीकर का पक्ष लेकर युद्ध करने के लिये उसने उसको रोका। लेकिन पठान सेनापति ने हनुमन्त सिंह के दिये गये प्रलोभन की परवाह न की और वह चुपकर लक्ष्मण सिंह के साथ हो गया।

यह देखकर हनुमन्त सिंह को पठान सेनापति महताब खाँ पर बहुत क्रोध मालूम हुआ और वह खण्डेला की रक्षा करने के लिये युद्ध की तैयारी करने लगा। पठानो की सेना को साथ लेकर लक्ष्मण सिंह ने पहले रेवासो और कुछ दूसरे नगरो पर अधिकार किया और इसके बाद वह अपनी विशाल सेनाओ के साथ खण्डेला नगर मे रह कर वहाँ से दूरवर्ती कोटे के दुर्ग मे उसने खाने-पीने की सामग्री का प्रबन्ध किया। जब उसने सुना कि लक्ष्मण सिंह और पठानो की सेना खण्डेला नगर मे आ गयी है तो वह अपने सैनिको के साथ दुर्ग से निकला और उसने एक साथ शत्रुओ पर भयानक आक्रमण किया। उसके इस अचानक आक्रमण मे शत्रु के बहुत से सैनिक मारे गये। इसके बाद हनुमन्त सिंह अपने सैनिको को लेकर कोटे के दुर्ग मे चला गया। वहाँ पर जाकर वह शत्रु सेना का सहार करने के लिये तरह-तरह के उपाय सोचने लगा।

सामन्त लक्ष्मण सिंह के सीकर की जागीर खण्डेला-राज्य की अधीनता मे थी। इसलिए लक्ष्मण सिंह के खण्डेला पर आक्रमण करने मे वहाँ के सभी सामन्त बहुत क्रोधित हुए और उनमे कई-एक से सामन्तो ने अभय सिंह और प्रताप सिंह की सहायता करने का निश्चय किया। लक्ष्मण सिंह के पास धन की कमी न थी। उसने धन के बल पर ही पठान सेना की सहायता प्राप्त की थी और इस समय जो सामन्त अभय सिंह और प्रताप सिंह की सहायता के लिये तैयार हुए उनको भी उसने धमकियाँ देकर अपने पक्ष मे कर लिया। यह देखकर दूसरे सामन्त भी चुपचाप हो गये और जो लोग अभय सिंह एवम् प्रताप सिंह की सहायता करना चाहते थे, उन्होने तटस्थ रहने मे

आदेश दिया। इसके फलस्वरूप दोनो ओर की सेनाओं में संघर्ष हो गया और दोन
से आदमी घायल हुए। अन्त मे नन्दराम हलदिया ने आमेर-राज्य की पचरगी प
युद्ध को रोका और उसकी कोशिशो से दोनो पक्षो मे सधि की बातचीत आरम्भ हु
को रेवासो का अधिकार और नरसिह को खण्डेला-राज्य मे पैतृक अधिकार
करायी गयी।

इस संधि के बाद भी दोनो पक्षो मे अधिक समय तक शान्ति कायम न रह स
विवाद को लेकर उनमे संघर्ष पैदा हो जाता। गनगौर नामक पर्व के दिन दोनो प
झगड़ा हुआ। उस सिलसिले मे और भी घटनाये पैदा हुई जिनके कारण समस्त शे
ने एकत्रित होकर निर्णय करने की चेष्टा की। आमेर के राजा को उसमे मध्यस्थ
उसके फलस्वरूप, उस समय के सभी उत्पात शान्त हो गये।

इस प्रकार की संघर्षपूर्ण परिस्थितियो मे आमेर के राजा का अधिकार शेखा
धीरे बढता गया। नन्दराम हलदिया ने अपने षडयन्त्रो के द्वारा शेखावत सामन्तो को
की क्षति पहुँचायी, अपरिमित धन वसूल किया, सामन्तो को आपस मे लडाया
जागीरे आमेर-राज्य मे मिलायी गयी। जो लोग अधीनता मे रहने के बा
राज्य को नियमित रूप से किसी प्रकार का कर नही देते थे और किसी सामन्त के मर
उत्तराधिकारी के अभिषेक के सयय आमेर के राजा को उपहार मे कुछ रुपये न देते थे,
मित रूप से नन्दराम के द्वारा कर का बोझ रखने की चेष्टाये हुई। इन दिनो मे शेख
की परिस्थितियां बड़ी भयानक हो उठी थी। कब किसकी स्वाधीनता का अपहरण होगा,
न जानता था : इसलिए सिद्धानी लोगो ने एकत्रित होकर वर्तमान परिस्थितियो पर
करने का विचार किया। इसके पहले नन्दराम के द्वारा कुछ और भी घटनाये हो चुकी
नवलगढ के सामन्तो के तुई नगर को घेर लिया और रानोली पर प्रताप सिह को अधि
के लिए उसके सामन्त को कैद कर लिया गया। इस प्रकार की घटनाओ के फल
सिद्धानी सामन्त अत्यन्त असतुष्ट हो चुके थे। उनके विरुद्ध इस प्रकार की घटनाओ
कोई कारण न था। उस वंश के सभी सामन्त सभी प्रकार के झगडो से दूर रह कर
जागीरो मे रहा करते थे। इस पर भी उनके विरुद्ध जो व्यवहार और आक्रमण कि
देखकर उन लोगो ने निश्चय किया कि राजनीति मे निष्पक्ष-भाव से रह सकना असम्भ
इसलिए सम्पूर्ण शेखावती के राजाओ और सामन्तो को एकत्रित करके उनके झगडो क
की चेष्टा की। उन लोगो ने समझ लिया कि हम लोगो की आपसी फूट के कारण नन्दरा
चित रूप से लाभ उठाने का मौका मिलता है। इसलिए उसका सबसे अच्छा रास्ता य
सब अपने झगडो को मिलकर ईमानदारी से दूर करने की कोशिश करे। उसी दशा
सुरक्षित रह सकते हैं और अपनी स्वाधीनता की रक्षा कर सकते है।

इस निर्णय के अनुसार, शेखावाटी के सामन्तो मे आपसी निर्णय की तैयारियाँ
उस समय से पहले ऐसे अवसरो पर सभी शेखावत सामन्त उदयपुर नामक स्थान पर ए
करते थे और आपसी सघर्षों का निर्णय किया करते थे। उसी उदयपुर मे इस समय
शेखावाटी के अधिकारी और सामन्त एकत्रित हुए। उस समय एक प्रस्ताव सब के
आशय का उपस्थित किया गया कि हम सब लोग कुछ भी निर्णय करने के पहले, प्राची
के अनुसार नमक पर हाथ रख कर इस बात की शपथ ले कि इस सम्मेलन मे जो

जिससे वे आत्म समर्पण करने का विचार करने लगे। इसी मौके पर लक्ष्मण सिंह ने अभय
और प्रताप सिंह को दस नगरो का अधिकार देने के लिए प्रस्ताव किया, लेकिन अभय सि
मन्जूर नही किया। प्रताप सिंह ने लक्ष्मण सिंह से पाँच नगर लेकर युद्ध समाप्त किया। हनु
सिंह के जो सैनिक अभी तक दुर्ग में थे, उन्होने आत्म समर्पण कर दिया। इस प्रकार युद्ध न
हो गया। इसके कुछ दिनो बाद लक्ष्मण सिंह ने प्रताप सिंह को दिये हुये पाँचो नगरो पर अधि
कर लिया। उसके बाद अभय सिंह और प्रताप सिंह झूँझनू नामक स्थान पर चले गये
बड़ी गरीबी के साथ अपने दिन व्यतीत करने लगे। उन दिनो मे उनकी सहायता के लिये सिद
के सामन्तो ने कुछ धन एकत्रित किया और उस धन से पाँच रुपये प्रतिदिन के हिसाब से उ
दिये जाने लगे।

सन् १८१४ ईसवी मे शिवनारायण मिश्र जयपुर का प्रधान मन्त्री था। इसी वर्ष प
के सरदार अमीर खाँ ने जयपुर के राजा से नौ लाख रुपये की माँग की। पाँच लाख रुपये जय
के खजाने से और शेष चार लाख रुपये सिद्धानी के सामन्तो से—कुल नौ लाख रुपये की म
अमीर खाँ की तरफ से हुई। जयपुर के राजा ने प्रधान मन्त्री शिवनारायण मिश्र से इस वि
मे परामर्श किया। जयपुर के खजाने की परिस्थिति ऐसी न थी कि जिससे अमीर खाँ को नौ ल
रुपये दिये जा सकते। इसलिए प्रधान मन्त्री शिवनारायण मिश्र ने लक्ष्मण सिंह से इस रकम
वसूल करने की आशा की। सीकर के सामन्त लक्ष्मणसिंह ने जयपुर की अवहेलना करके खण्डे
पर आक्रमण किया था और अमीर खाँ की सहायता से उसने वहाँ पर अधिकार कर लिया थ
लेकिन जयपुर के राजा से उसको अभी तक खण्डेला के शासन की सनद न मिली थी। इस स
को प्राप्त करने के लिए लक्ष्मण सिंह ने कई बार चेष्टा की थी। परन्तु सनद प्राप्त करने मे
असफल रहा।

प्रधान मन्त्री शिवनारायण मिश्र ने इस समय सनद के नाम पर लक्ष्मण सिंह से इस लम
रकम को लेने का प्रयत्न किया। उसने अपना दूत भेजकर लक्ष्मण सिंह से प्रस्ताव किया कि य
वह स्वय पाँच लाख रुपये दे और सिद्धानी के सामन्तो से चार लाख रुपये एकत्रित कर के कुल
लाख रुपये जयपुर राज्य की तरफ से अमीर खाँ के पास पहुँचा दे तो उसको खण्डेला के शासन
सनद दे दी जायगी। जयपुर के दूत ने लक्ष्मण सिंह के पास जाकर अपने प्रधान मन्त्री का प्रस्ता
उपस्थित किया। उसको सुनकर लक्ष्मण सिंह तैयार हो गया। उन दिनो मे अमीर खाँ राहोली
रहा करता था। लक्ष्मण सिंह ने वहाँ जाकर पाँच लाख रुपये अपने पास से और चार ला
रुपये सिद्धानी के सामन्तो से एकत्रित करके उसको दिये और नौ लाख रुपये की रसीद अमीर ख
से लेकर जब वह जयपुर से राजा के यहाँ आया तो जयपुर नरेश ने खण्डेला के शासन की सन
उसको दे दी। लक्ष्मण सिंह इस सनद को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने राजधानी मे जयपुर
राजा को सत्तावन हजार रुपये खण्डेला के एक वर्ष के कर मे पेशगी दिये। इस रकम को लेक
राजा जगत सिंह ने खण्डेला का वार्षिक कर स्वीकार कर लिया। इसके बाद अभय सिंह और प्रता
सिंह का पैतृक अधिकार खण्डेला से सदा के लिए खतम हो गया।

कुछ दिन पहले की बात है, एक ब्राह्मण पुरोहित ने जयपुर के राजा से खण्डेला का पट्टा
ले लिया था और उन दिनो मे उसने खण्डेला के छोटे-छोटे सामन्तो पर भयानक अत्याचार किय
था। इन दिनो मे खण्डेला पर लक्ष्मण सिंह का अधिकार हो जाने से उस ब्राह्मण पुरोहित क
पट्टा बेकार हो गया। इस लिए उसने लक्ष्मण सिंह के विरुद्ध एक षड्यन्त्र रचने का काम आरम्भ

सामन्तो से सहायता की प्रार्थना की। परन्तु कोई भी शेखावत सामन्त उसकी सहायता
न हुआ। क्योकि जयपुर राज्य के पूर्व सेनापति से उनको बहुत-कुछ शिक्षा मिल चुक
वाटी के सामन्तो के साथ इन बिगडी हुई परिस्थितियो मे जयपुर के राजा की तरफ
प्रस्ताव हुआ, जिससे भविष्य मे उनके राजनैतिक सम्बन्धो को निर्धारित किया जा सके
स्वीकृत हुआ और राजा जयपुर के साथ शेखावटी के अधिकारियो और सामन्तो की उ
सन्धि हुई, वह इस प्रकार है :—

१—सेनापति नन्दराम हलदिया ने तुई और ग्वाला आदि जिन नगरो पर
लिया है, वे उनके पूर्व अधिकारियो को लौटा दिये जायँ।

२—शेखावत सामन्त अब तक जो कर देते रहे हैं, उनके सिवा आमेर के रा
से कोई कर लेने का अधिकार न होगा। सामन्त अपना कर स्वय आमेर की राजधा
रहेगे।

३—किसी भी अवस्था मे आमेर की सेना को शेखावटी मे प्रवेश करने का
होगा। इसलिये कि जयपुर की सेना के कारण खण्डेला राज्य मे रक्तपात हुआ है।

४—आवश्यकता पडने पर आमेर के राजा की सहायता के लिये अपनी से
भेजेगे। परन्तु वे सेनाये जब तक जयपुर-राज्य की सहायता मे रहेगी, उनका सम्पूर्ण
राज्य की तरफ से दिया जायगा।

ऊपर लिखी हुई सन्धि शेखावटी सामन्तो के साथ जयपुर-राज्य के नवीन सेनापि
ने की। यह सन्धि पत्र जयपुर-राज्य के सामने रखा गया और उसने उसे स्वीकार किया
कृति के समय सभी शेखावत सामन्त आमेर की राजधानी में जाकर राजा से मिले और
ने मिलकर दस हजार रुपये राजा को भेट किये। इस सन्धि के अनुसार सामन्तो के साथ
राजनीतिक सम्बन्धों पर राजा ने सन्तोष प्रकट किया और उसने सामन्तो से उनको सहा
अनुरोध किया, जिससे नन्दराम पकडा जा सके।

जिन नगरो और गाँवो पर नन्दराम ने अधिकार कर लिया था, वे उनके अधि
वापस दे दिये गये। सेनापति रोडाराम के साथ जहाँ कही नन्दराम ने युद्ध किया, वह
सामन्तो की सहायता पाकर रोडाराम ने नन्दराम को पराजित किया और वह परास्त
क्षेत्र से भागा।

इसी बीच मे सामन्तो को अनुभव हुआ कि सन्धि के सम्बन्ध मे आमेर के राजा
कोण शुद्ध नही है। शेखावटी मे कई स्थानो पर रोडाराम की सेना ने वहाँ के सामन्तो
करके अधिकार कर रखा था। इसलिये लेखावत सामन्तो ने सङ्गठित होकर उन स्थानो से
की सेना को भगा दिया।

इन्ही दिनो में आमेर के राजा ने खण्डेला के नरसिंह दास से बाकी कर वसूल कर
अपना एक अधिकारी भेजा। नरसिंहदास ने उसे कुछ न दिया और अपमान के साथ उस
अपने यहाँ से वापस कर दिया। उस अधिकारी के साथ होने वाले अपमान पूर्ण व्यवहारो
आमेर के राजा ने आदेश दिया कि नरसिंह दास को कैद करके जयपुर मे लाया जाय।

राजा के आदेश के अनुसार आशाराम नामक एक सेनापति एक सेना लेकर ख
तरफ रवाना हुआ। नरसिह गोविन्दगढ में रहता था। आशाराम ने खण्डेला पहुँचक
और प्रतापसिंह—दोनों को कैद करके की चेष्टा की। नरसिंह अपने दुर्ग में सावधानी

कर केवल अपने आश्रित कर लिया था। उसने अपने पिता के नगर शाहपुरा के दुर्ग और बीलाड़ा भटौती और पासली के दुर्गों को भी गिरवा कर नष्ट कर दिया।

लक्ष्मण सिंह के इस प्रकार के अत्याचारों से दुखी होकर उसका पिता अपने नगर को छोड़ कर जोधपुर चला गया और वहीं पर वह रहने लगा।

लक्ष्मण सिंह के अधिकार में उन दिनों जितने भी ग्राम और नगर थे, उनकी संख्या पन्द्रह सौ थी और उनसे लक्ष्मण सिंह को वार्षिक आठ लाख रुपये की आमदनी होती थी। उसने अपने नाम पर लक्ष्मण गढ नाम का एक दुर्ग बनवाया और उसके अतिरिक्त उसने दूसरे कई एक स्थान पर दुर्ग तैयार कराये। × उसने अपने अधिकार में एक अच्छी सेना का संगठन किया था। उसकी विशाल सेना में पाँच सौ सैनिक को वेतन दिया जाता था और शेष पाँच सौ सैनिकों ने राज्य की तरफ से भूमि पायी थी। खण्डेला पर अधिकार करने के बाद लक्ष्मण सिंह ने अपनी शक्तियों को अधिक सुदृढ बना लिया *।

सिद्धानी शेखावत वंश की एक प्रबल शाखा है। शेखावत लोगों का वर्णन समाप्त करने के बाद सिद्धानी वंश का संक्षिप्त परिचय यहाँ पर देना बहुत आवश्यक है। इसलिए आगामी पंक्तियों और पृष्ठों में हमने उसी वंश का उल्लेख किया है। रायसाल ने अपने राज्य को अपने सातों पुत्रों में बाँट दिया था। उसमें भोजराय को उदयपुर और उसके अधीन ग्राम और नगर मिले थे। भोजराज के वंश में अधिक संख्या बढी और वे भोजराज के नाम पर भोजानी नाम से प्रसिद्ध हुए। भोजराज को मिले हुए इसी उदयपुर में शेखावत सामन्त एकत्रित होकर आवश्यकता पडने पर परामर्श किया करते थे।†

भोजराज से कई पीढियों के बाद उसका वंशज जगराम उदयपुर के सिंहासन पर बैठा। उसके छै लडके थे। सब से बडे लडके का नाम था साधु। वह पिता से झगड़ा करके दशहरा के दिन अपने राज्य से निकल कर चला गया। जहाँ पर सिद्धानी लोग रहा करते थे, वह फतेहपुर-राज्य कहलाता था। झुँझुनू इसका प्राचीन नाम था। वहाँ के निवासी समस्त सिद्धानी कायमखानी अफगानी नवाब के शासन में रहा करते थे।‡ वह नवाब दिल्ली के बादशाह की अधीनता में शासन करता था। साधु अपने राज्य से निकलकर उस नवाब के पास गया। नवाब ने उसको सम्मानपूर्वक अपने यहाँ स्थान दिया।

साधु वहाँ पर कुछ दिनों तक रहने के बाद नवाब के निकट अत्यन्त विश्वासी और उपयोगी साबित हुआ। इसलिए उसने फतेहपुर का समस्त शासन सम्बन्धी कार्य साधु को सौंप दिया।

× सन् १८७६ ईसवी में एक सब से ऊँचे शिखर पर-जहाँ पहले कोई दुर्ग था और इन दिनों में वह नष्ट हो गया था—लक्ष्मण गढ बनवाया था। यह दुर्ग बहुत सुदृढ और श्रेष्ठ समझा जाता है।

* कहा जाता है कि खोकर राजपूतों के नाम पर खण्डेला नाम की उत्पत्ति हुई है। खोकर राजपूतों का उल्लेख भाटी लोगों के साथ पाया जाता है। खोकर राजपूत निश्चित रूप से सीथियन थे। खण्डेला में चार हजार घर हैं और उसमें अस्सी ग्राम लगते है।

†उदयपुर का प्राचीन नाम काइस है उसमें पैंतालीस ग्राम लगते है।

‡कुछ लेखकों ने कायमखानी लोगों को अफगान नहीं, चौहान वंश के मुसलमान राजपूत माना है—अनुवादक

पैंसठवाँ परिच्छेद

जयपुर राज्य मे प्रधान मत्री का बोल बाला—सिद्धानी सामन्तो का असंतोष सेना की पराजय—जयपुर मे फिर से युद्ध की तैयारी—अन्याय के विरुद्ध खण्डेला राज जयपुर की कारागार मे—खण्डेला के अधिकारी नरसिह और प्रताप सिह—जयपुर-रा शेखावत सामन्त—युद्ध और उसका परिणाम—विद्रोही सामन्तो का नेता सग्राम सिह ।

सन् १७६८ और ६६ ईसवी मे दीनाराम बोहरा जयपुर का प्रधान मन्त्री था । आशाराम की सफलता को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और सिद्धानी सामन्तो से कर के लिए वह राजधानी से शेखावाटी के लिये रवाना हुआ । आशाराम की सेना के सा दीनाराम की भेट हुई । इसके बाद उसने सिद्धानी सामन्तो के नगर परशुरामपुर मुकाम किया और वहाँ से उसने समस्त सामन्तो के नाम कर अदा करने के लिए पत्र साथ-साथ उसने प्रत्येक सामन्त के वहाँ कर वसूल करने के लिए अश्वारोही सेनाये उन सेनाओ के अधिकारियो को उसने आदेश दिया कि वे अलग-अलग सामन्तो के पास वसूल करे । उक्त सामन्तो को जो पत्र भेजे गये, उनमें यह भी लिखा गया कि कर देने होने पर दण्ड निर्धारित धन अलग से वसूल किया जायगा और जिन सामन्तो से होगा, उनके विरुद्ध सैनिक आक्रमण होगा ।

जयपुर, के प्रधान मन्त्री का इस प्रकार पत्र पाने पर समस्त सिद्धानी सामन्त ८ हो उठे और उस पत्र को अपमान जनक समझकर सबके हस्ताक्षरो से एक पत्र प्रधा पास भेजा गया । उसमे लिखा गया—हम लोगो के इस पत्र को पाकर यदि प्रधान सेना के साथ झूंझनू तुरन्त न चला जायगा तो उसका नतीजा बहुत खराब होगा । लेि इस पत्र को पाते ही उसी समय झूंझनू चला गया तो यहाँ के सामन्तों से कर के जो रुपये एकत्रित हुए हैं, वे तुरन्त उसे दे दिए जायेगे ।"

इस पत्र में शेखावटी के सभी सामन्तो ने हस्ताक्षर किये । परन्तु खण्डेला के के भाई बाघसिह ने उसमे अपने हस्ताक्षर नही किये । उसका कहना था कि सधि के प्रकार हम लोगो ने आमेर के राजा के साथ नेकियाँ की हैं और नन्दराम के अत्याचा करने के लिए जिस प्रकार हम लोगो ने जयपुर की सेना का साथ दिया है, उन स जयपुर राज्य से हमको अत्याचारो के रूप मे मिला है । इसलिए ऐसे राजा के पास जा रहा है, उस पर मैं हस्ताक्षर नही करूगा । क्योंकि हम सब लोगो के साथ जयपुर जो सधि की थो, उसका उसने पूर्ण रूप से उल्लघन किया है । सन्धि के अनुसार कर व लिए राजा की सेना को आने का अधिकार नही था । प्रधान मन्त्री ने कर वसूल क सामन्तो को जो पत्र भेजा है, वह पूर्ण रूप से अपमानजनक है ।

बाघसिह ने सामन्तो के उस पत्र पर हस्ताक्षर नही किये और वह जयपुर साथ युद्ध करने के लिए तैयारी करने लगा । इसी अवसर पर खेतडी के पाँच सौ सहायता के लिए पहुँच गये । बाघसिह ने उन लोगो की मदद से सीकर और फते

सिहाना और उसके एक सौ पच्चीस ग्रामो पर अधिकार कर लिया था। साधु के वशजो की सख्या धीरे-धीरे बढती गयी। इसलिए उसका राज्य भी छोटे-छोटे टुकडो मे लगातार विभाजित होता गया।

सीकर के सामन्त लक्ष्मण सिंह की तरह अभय सिंह ने भी अपने राज्य के विस्तार की चेष्टा की। उसने अपने वश के अधिकारियो पर आक्रमण किया और उनके अधिकार के ग्रामो और नगरो को लेने मे उसने भयानक अत्याचार किए।

साधु के सबसे छोटे लडके पहाड सिंह के भूपाल नाम का एक लडका पैदा हुआ। लुहारु के युद्ध मे भूपाल सिंह के मारे जाने पर पहाड सिंह ने अपने भाई के पुत्र खेतडी के सामन्त बाघसिंह के सबसे छोटे लडके को गोद लिया। पहाड सिंह के मर जाने के बाद गोद लिया हुआ बालक उसका अधिकारी हुआ। उसकी अवस्था उस समय बहुत कम थी। इसलिए वह अपने पिता के यहाँ जाकर रहने लगा। इसके बारह वर्ष के बाद बाघसिंह की मृत्यु हुई। उसके अनुचित आचरणो के कारण सभी लोग उससे अप्रसन्न रहते थे। उसके मर जाने के बाद किसी ने भी उसके लिए दुख प्रकट नही किया। बल्कि शवदाह के समय उसके वश और परिवार के लोग उसके प्रति अपनी घृणा प्रकट करते रहे।

रायसालोत और सिद्धानी लोगो का वर्णन करने के बाद लाडखानी लोगो के सम्बन्ध मे यहाँ पर कुछ ऐतिहासिक प्रकाश डालना आवश्यक मालूम होता है। लाडखानी शब्द का अर्थ प्यारा प्रभु होता है। इस अर्थ के आधार पर लाडखानी लोगो की मर्यादा का सही अनुमान नही किया जा सकता। क्योकि अपने आचरणो और कार्यो से लाडखानी लोग राजस्थान मे बहुत बदनाम थे। रायसाल के बडे लडके के नाम मे खाँ शब्द का प्रयोग क्यो किया गया और उसके छोटे लडके का नाम ताज खाँ क्यो रखा गया, इसके सम्बन्ध मे हम कुछ नही जानते। रायसाल के लडके लाड खाँ ने दातारामगढ पर अधिकार कर लिया था। यह नगर मारवाड राज्य की सीमा पर बसा हुआ जयपुर-राज्य की अधीनता मे था। लाडखाँ का पिता बादशाह के दरबार मे एक सम्मानपूर्ण स्थान रखता था। सम्भव है उसी आधार पर लाडखाँ को यहाँ का अधिकार मिल गया हो। लाडखाँ का अधिकार तप्पनोसल पर भी हो गया था। सब मिलाकर अस्सी नगर और ग्राम उसके अधिकार मे थे। ये ग्राम और नगर पहले मारवाड और बीकानेर के राज्य मे शामिल थे। लाडखानी लोग उनके राज्यो मे किसी प्रकार लूटमार न करे, इसलिये ये ग्राम और नगर लाडखाँ को दे दिये गये थे। लाडखानी लोग पिंडारियो की तरह लूट मार करते थे। वे सैकडो और हजारो की सख्या मे एकत्रित होकर जहाँ जाते थे, आक्रमण करके लूट लेते थे और अपने स्थानो को भाग जाते थे। जयपुर का राजा कभी-कभी इन लोगो से कर वसूल करने की कोशिश करता था। परन्तु उसे सफलता न मिलती थी। इन लोगो का रामगढ नामक एक बहुत मजबूत दुर्ग था। उसी मे वे लोग भागकर पहुँच जाते थे। यह दुर्ग सभी प्रकार सुरक्षित था लेकिन अमीरखाँ जब इन लोगो पर आक्रमण करता था तो ये लोग उसे बहुत सा धन देकर अपनी रक्षा करते थे। इन लाडखानी लोगो ने अमीर खाँ को बीस हजार रुपये वार्षिक कर देना स्वीकार किया था।

शेखावटी के राज्यो और उसकी जागीरो की आमदनी की तालिका नीचे दी जाती है। यद्यपि उसके बहुत सही होने का हमारे पास कोई प्रमाण नही है। फिर भी जो साधन हमको प्राप्त हुए है उसके आधार पर हमने सही-सही लिखने की चेष्टा की है। वहाँ की कुल आमदनी पच्चीस लाख रुपये से लेकर तीस लाख रुपये वार्षिक तक थी। यद्यपि इन दिनो मे उन जागीरो और राज्यो

कैदी प्रताप सिंह का लडका हनुमन्त सिंह खण्डेला में था। उसने जब सु
जयपुर की सेना के साथ मिल गया है तो उसने इस अवसर का लाभ उठा कर ख
अधिकार करने का निश्चय किया। उसने अपने राजपूत सैनिको के साथ रात मे च
के दुर्ग को घेर लिया और फिर मौका पाकर सूनसान रात मे दुर्ग की दीवारो पर
सैनिको को लिए उसने बडी सावधानी के साथ दुर्ग मे प्रवेश किया। वहाँ पर लक्ष्म
साथ उसके सैनिको को मार डाला गया और हनुमन्त सिह ने उस दुर्ग पर अपना
लिया।

लक्ष्मण सिह के मारे जाने का समाचार बाघसिह को मिला। वह अपने
खण्डेला की तरफ रवाना हुआ। हनुमन्त सिह अपने सैनिको के साथ वहाँ के दुर्ग
था। बाघसिह ने वहाँ पहुँचकर दुर्ग पर गोलो की वर्षा आरम्भ की। हनुमन्त सिह
सिह की हत्या की थी। इसलिए खण्डेला के निवासी उससे बहुत अप्रसन्न हो गये
बाघसिंह की सहायता की। खण्डेला की स्त्रियाँ भी इस अवसर पर बाघसिह के प
से निकली। हनुमन्त सिह और उसके सैनिको ने बहुत समय तक दुर्ग के भीतर अप
लेकिन अन्त मे सन्धि के लिए श्वेत झण्डा दिखाकर उन लोगो ने दुर्ग का फाट
बाघसिह ने अपने सैनिको के साथ उसमे प्रवेश किया। उसने हनुमन्त सिह पर आक्रम
भाई का बदला लेने का निश्चय किया। लेकिन हनुमन्त सिह दुर्ग के भीतर से पहले
था, इसलिए वह निराश हो गया।

इन्ही दिनो मे दीनाराम को जयपुर-राज्य के मन्त्री पद से उतार कर मानज
स्थान पर नियुक्त किया गया। रोडाराम अभी तक शेखावाटी मे कर वसूल करने
था। उसकी तरफ से एक ब्राह्मण इसके लिए नियुक्त किया गया था। वह ब्राह्मण इ
चतुर साबित हुआ और पहले वर्ष मे ही उसने कर वसूल करने का इतना अधिक
रोडाराम ने उसे अगले दो वर्षों का अधिकार भी दे दिया।

रोडाराम की तरफ से शेखावाटी मे जो ब्राह्मण कर वसूल कर रहा था,
में जयपुर की सेना थी। उस ब्राह्मण ने शेखावाटी के उन सामन्तो से भी बलपू
लिया, जो अभी तक स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी जागीरो मे रहते थे। जिन लोगो ने कर न
नगरो और दुर्गों पर आक्रमण करके उसने अधिकार कर लिया। जयपुर के राजा
प्रताप सिह को अपने राज्य मे कैद करके रखा था और खण्डेला-राज्य पर अधिकार
परन्तु उनकी अधीनता मे जो सामन्त थे, उनके ऊपर जयपुर के राजा किसी प्रकार
नही किया और उनसे वह नियमित रूप से कर लेता रहा। इस ब्राह्मण ने उन
आक्रमण किया और उनकी जागीरो मे उसने भयानक अत्याचार किये।

उस ब्राह्मण के इन अत्याचारो को देखकर खण्डेला के सभी रायसलोत सा
उठे और उन सब ने मिलकर उस ब्राह्मण पर आक्रमण करने की तैयारी की।
जयपुर की कारागार से छिपे तौर पर नरसिह और प्रताप सिह ने समाचार भे
दोनो के छूटने की कोई आशा नही है। समाचार को पाकर शेखावाटी के सभी सा
क्रोधित हुए और इस प्रकार के अत्याचारो का बदला लेने के लिए वे लोग उत्ते
सभी ने अपनी सेनाओ के साथ खण्डेला में उस ब्राह्मण पर आक्रमण किया। दोनो
आरम्भ हो गया।

छियासठवाँ परिच्छेद

अम्बेर—राज्य और उसकी जागीरो का विस्तार—जयपुर-राज्य की आबादी—जातियों का विभाजन -खेती और पैदावार—मालगुजारी और अन्यान्य कर—विदेशी सेना—जयपुर राज्य के प्राचीन नगर।

कुशवाहा जाति के जन्म, उत्थान और विस्तार की तरह शेखावटी और माचेडी के अधिकारियो के वशजो का भी इतिहास है। सम्भव है कुछ लोगो को आठ सौ वर्षों मे पन्द्रह हजार वर्ग मील की भूमि पर फैले हुए इन लोगो के इतिहास मे कुछ दिलचस्पी न मालूम हो। लेकिन इस वश के चालीस हजार मनुष्य अपने राजा और राज्य की रक्षा करने के लिए सदा अपने हाथो मे तलवारे लिए हुए तैयार रहते हैं। अपने राज्य को ही वे अपना देश समझते है और देश का नाम राजपूतो मे जादू का सा प्रभाव पैदा करता है। इन राज्यो के अगणित उदाहरणो के अधार पर हमे यह स्वीकार करना पडता है कि इस देश मे देशभक्ति और कृतज्ञता का अभाव नही है।

सीमा और विस्तार—आमेर और उसके अधिकृत राज्यो की सीमा नक्शा देखने से भली भाँति मालूम होता है कि उसकी सीमा का विस्तार कहाँ तक है। फिर भी, पश्चिम मे मारवाड की सीमा के अन्त मे साँभर झील तक, पूर्व मे जाटो की सीमा के पार स्थीव नगर तक फैला हुआ है। अङ्गरेजी पैमाने के हिसाब से एक सौ बीस मील चौडा और उत्तर से दक्षिण मे शेखावाटी को मिलाकर एक सौ अस्सी मील लम्बा है। इसकी जमीन एक सी नही है। खास जयपुर अथवा ढूढार की जमीन नौ हजार पाँच सौ वर्ग मील है और शेखावाटी की पाँच हजार चार सौ वर्ग मील है। समस्त भूमि मिलाकर चोदह हजार नौ सौ वर्ग मील है।

आबादी—जयपुर-राज्य मे रहने वाली सभी जातियो की सही सख्या लिख सकना सम्भव नही है। इसलिए प्राप्त सामग्री के आधार पर बहुत सही अनुपात लगाकर इतना ही कहा जा सकता है कि इस राज्य की एक वर्ग मील की भूमि मे एक सौ पचास और शेखावाटी मे प्रति वर्ग मील अस्सी मनुष्य रहते है। जयपुर और शेखावाटी को मिला कर एक सौ चौबीस मनुष्यो के औसत से एक लाख पचासी हजार छे सौ सत्तर मनुष्यो की वहाँ आबादी है। लेकिन मकान से भरे हुये राज्य के बडे-बडे नगरो को देखकर जब हम समझने की कोशिश करते है तो मालूम होता है कि जो सख्या मनुष्यो की ऊपर दी गयी है वह किसी प्रकार अधिक नही हो सकती। सब मिला कर राज्य मे छोटे-छोटे गाँव और पुरवा छोडकर चार हजार ग्राम और नगर है। शेखावाटी के ग्रामो और नगरो की सख्या जयपुर से आधी है। जिसमे से सीकर और खण्डेला के लक्ष्मण सिह और खेतडी के अभय सिह मे प्रत्येक लगभग सौ ग्रामो और नगरो का स्वामी था।

रहने वालो का जातीय विभाजन—वहाँ पर रहने वाली विभिन्न जातियो की सख्या निश्चित रूप से नही लिखी जा सकती। परन्तु प्राप्त साधनो से यह स्वीकार करना पडता है कि राजपूतो की सख्या शेष सम्मिलित जातियो के मुकाबिले मे बहुत कम थी। लेकिन मीना जाति के लोगो को छोडकर राजपूत किसी भी जाति से अलग-अलग कम न थे। मीना लोगो की सख्या

प्रधान मन्त्री मानजीदास सोचने लगा कि इस अवसर का लाभ क्यो न उठाया
वह जानता था कि यदि किसी प्रकार के षड़यन्त्र के द्वारा सग्राम सिह कैद कि
का यश कलकित होगा, इसलिये ऐसा करना राजनीति के विरुद्ध है; फिर भी
को कैद करने के लिये किसी उपाय की खोज करने लगा। इसके कुछ घण्टो के
राजा को समाचार मिला कि सग्राम सिंह जयपुर को छोड कर तवरावाटी चला ग
तथा लाडखानी लोग भी उससे मिल गये हैं। उसने यह भी सुना कि सग्राम सि
इस समय एक हजार अश्वारोही राजपूत सैनिक हैं।

जयपुर से निकल कर चले आने के बाद सग्राम सिंह ने अपनी सेना के
के ग्रामो और नगरो को फिर से लूटना आरम्भ किया। उनसे कर वसूल करने
भेजे। जिन लोगो ने कर देने से इनकार किया, उनके सरदारो को उसने कैद क
मिल जाने के बाद उसने उनको छोड दिया। जिनसे कर नही वसूल हुआ, उनके
को लूटकर उनकी सम्पत्ति और सामग्री ऊँटो पर लाद कर वह अपने साथ ले चला

इस प्रकार लूटमार करता हुआ सग्राम सिंह जयपुह की एक रानी के
नगर मे पहुँचा। वहाँ पर उसके मस्तक मे एक गोली लगी, जिससे उसकी मृत्यु
शव रानोली मे लाकर जलाया गया। संग्राम सि ह के मारे जाने पर उसका लड़का
अधिकारी हुआ। वह अपने पिता की तरह तेजस्वी और शक्तिशाली था। उसने पि
किया और जयपुर राज्य के ग्रामो और स्थानो को वह लूटने लगा। इसके बाद ज
उसके साथ संधि की और उसके पिता का सूजावास नगर उसको दे दिया। इसके
बन्द हो गयी।

इन दिनो मे राजा जगत सिंह आमेर के सि हासन पर था और रामचन्द
मन्त्री था। पोकरण के सामन्त सवाई सिंह ने बालक धौकल सि ह के अधिकार को
पैदा किया था, वह चल रहा था। प्रधान मन्त्री रायचन्द ने इस बात को पूरी क
जगत सिंह का विवाह कृष्णाकुमारी के साथ हो जाय। इस समय उसने राजनीति
उसने शेखावाटी के असन्तुष्ट सामन्तो को मिलाकर अपने पक्ष मे कर लेना बहुत
इसके लिये उसने सबसे पहले अपने भतीजे कृपाराम को शेखावाटी के सामन्तो के
कृपाराम ने अपनी सहायता के लिये शेखावाटी पहुँचकर वहाँ के एक सामन्त कृष्ण
प्रतिनिधि बनाया। उन सामन्तो के साथ जयपुर के राजा की तरफ से जो बातचीत
फलस्वरूप शेखावाटी के सामन्त अपनी सेनाओ के साथ उदयपुर के रास्ते मे एकत्रित

शेखावाटी के सामन्तो ने अनुभव किया कि नरसिंह और प्रताप सि ह को
से निकालने का यह एक अच्छा अवसर है। इसलिये उन लोगो ने उन दोनो की मुिं
राम के सामने प्रस्ताव किया। इस प्रस्ताव के साथ-साथ अन्यान्य वर्तमान राजनी
पर बहुत समय तक परामर्श होने के बाद कृपाराम और शेखावाटी के सामन्तो के
राजनीतिक संधि का होना निश्चय हुआ। उस सन्धि के अनुसार जो अनेक बाते
निम्नलिखित प्रमुख हैं :—

१—इस सन्धि के अनुसार खण्डेला के अधिकारी नरसिंह और प्रताप सिंह
दी जायगी।

खेती, मिट्टी और पैदावार—ढूंढाड राज्य मे खेती के योग्य सभी प्रकार की मिट्टी पायी जाती है। धान और जुआर की अपेक्षा वहाँ पर बाजरा अधिक पैदा होता है। गेहूँ की अपेक्षा जो की पैदावार विशेष होती है। जयपुर राज्य मे सभी प्रकार के अन्न पैदा होते है। ईख की पैदावार भी वहाँ अधिक होती थी, लेकिन जितने भी कारणो से राज्य के कृषकों ने विवश होकर ईख की खेती कम कर दी। उसका प्रधान कारण यह हुआ कि पहले ईख की खेती पर चार रुपये से लेकर छै रुपये बीघा के हिसाब से निश्चित कर लिया जाता था। लेकिन अब किसानो को खेत देने से पहले साठ रुपये पेशगी ले लिये जाते है। इस राज्य के अनेक जिलो मे रुई की पैदावार अधिक होती है।

मालगुजरी अथवा राज्य कर—जितने भी कर इस राज्य मे वसूल किये जाते है वे सभी यहाँ पर कभी भी एक से नही रहे। वे हमेशा बदलते-बदलते रहते है। इसलिए उनके सम्बन्ध मे सही उल्लेख करना बहुत कठिन मालूम होता है। यह बात जरूर है कि इसके सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की सामग्री हमको मिली है, जिसमे राज्य की मालगुजारी और उसके विभिन्न प्रकार के करो का उल्लेख मिलता है। लेकिन विस्तार मे उनका यहाँ जिक्र करना सतोषजनक नही मालूम होता। इसलिये उनके सम्बन्ध मे इतना ही लिखना अधिक अच्छा मालूम होता है कि मालगुजारी और विभिन्न प्रकार के करो के द्वारा जयपुर राज्य की सम्पूर्ण आमदनी एक करोड़ रुपये थी. लेकिन मराठो और माचेडी नरूका सामन्तो के सत्रह ग्राम और नगर ले लेने से वहाँ की आमदनी बहुत घट गयी। जयपुर राज्य के अधिकार से जो सत्रह ग्राम और नगर निकल गये थे, वे इस प्रकार है

१—कामा
२—खोरी
३—पहाडी
} जनरल पीरन ने अपने स्वामी सिंधिया की तरफ से जयपुर-राज्य के इन तीन नगरो पर अधिकार कर लिया था। उसके बाद जाटो ने उनको पट्टा पर लेकर अपना अधिकार कायम रखा।

४—कान्ती
५—उकरोद
६—पुन्दापुन
७—गाथी का थाना
८—रामपुरा
९—गौनराई
१०—रानी
११—पुरबैनी
१२—मौजपुर हरसाना
} माचेडी के राव ने इन पर अधिकार कर लिया था।

१३—कानोढ अथवा कानोद
१४—नारनोल
} डी बाइन ने इन पर अधिकार करके मुरतजा खाँ को लार्ड लेक की स्वीकृति से दिया था।

१५—कोटपूतली ... सन् १८०३ और ४ के युद्ध मे लार्ड लेक ने मराठो से लेकर खेतडी के अभय सिंह को दे दिया था।

१६—टोक
१७—रामपुर
} राजा माधव सिंह ने लार्ड हेस्टिंग्स के द्वारा अमीर खाँ की प्रधानता मे होलकर को दिया।

यहाँ पर यह समझने की जरूरत है कि ऊपर लिखे हुये जिले—जो जयपुर राज्य के दूसरे राज्यो मे गये—ढूढाड राज्य की पूर्ति करते थे और उनमे से अधिकाँश पहले किसी समय मुगल

अपना अनुभव करके अभयसिंह एक सप्ताह मे माचेडी से चला गया। इन दिनो मे बापू सीन्धिया दौसा नामक स्थान पर रहता था। खण्डेला का प्रतापसिह अपने पुत्र के पास पहुँचा। इन्ही दिनो मे हनुमन्त सिंह गोविन्दगढ पर अधिकार करने के लि की। उसने अपने साठ शूरवीर सैनिको को सायङ्काल एक नदी के किनारे छिपा कर रात के समय पहाडी रास्ते से उसने एक-एक को दुर्ग की तरफ रवाना किया। उन को दीवारो पर चढ़ कर वहाँ की रक्षक सेना का सहार करना आरम्भ किया। दुर्ग और सावधान होकर युद्ध करने लगे। उस युद्ध में हनुमन्तसिह की विजय हुई। दुर्ग भाग गये। उनके चले जाने पर हनुमन्तसिह ने दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

हनुमन्तसिंह ने कई सप्ताह दुर्ग मे रहकर दो हजार सैनिको का सङ्गठन किया उसने जयपुर के राजा के साथ युद्ध करने का इरादा किया। इस बीच मे उसने पास के अनेक स्थानो पर अधिकार कर लिया। वहाँ पर जयपुर की तरफ से जो वह भाग गयी। उन स्थानो की रक्षा के लिये खुशियाली राम नामक एक अधिकारी की तरफ से नियुक्त था। खण्डेला में इस समय उसी का शासन था। वह भाग गया राजा के पास पहुँचकर उसने सब समाचार सुनाया। वह दरोगा बडा षडयन्त्रकारी दुर्ग मे एक सौ सैनिक रखने का जयपुर की तरफ से आदेश था। खुशियाली राम स्थान पर केवल तीस सैनिक रखता था और बाकी सैनिक के वेतन को लेकर वह बन जाता था। उसकी इस चालाकी का लाभ हनुमन्तसिह ने उठाया और उससे परास्त करके उसने उस दुर्ग पर आसानी के साथ अधिकार कर लिया।

दारोगा खुशियाली राम के द्वारा खण्डेला के दुर्ग का समाचार सुनकर ज अत्यन्त क्रोधित हुआ। उसने वहाँ पर फिर से अधिकार करने के लिये रतन चन्द ना पति के अधिकार मे दो पैदल सेनाये भेजी और एक गोलन्दाज भी उनके साथ रवा सबके साथ खुशियाली राम को रवाना करके जयपुर के राजा ने उससे कहा : "यदि हनुमन्तसिंह को परास्त न कर सकोगे तो तुमको इसके लिये दण्ड दिया जायगा।"

जयपुर की सेना को लेकर खुशियाली राम खण्डेला की तरफ चला। वहाँ प की सेना ने हनुमन्तसिह के सैनिको पर आक्रमण किया। कुछ समय तक युद्ध होने के राम अपनी सेना के साथ पराजित हुआ। वह जयपुर की सेना को लेकर युद्ध-स्थल इस लड़ाई मे हनुमन्तसिंह भयानक रूप से घायल हो गया था। जयपुर की सेना के अपनी सेना के साथ दुर्ग मे चला गया। इसके बाद खुशियाली राम ने उस दुर्ग को घे से युद्ध आरम्भ हो गया। हनुमन्तसिह ने घायल होने पर भी शत्रु-सेना के तीस आदमि किया। इस समय पर दुर्ग को जीत सकना खुशियाली राम के लिये सम्भव न था। भीतर पानी का अभाव हो जाने के कारण हनुमन्तसिह और उसके सैनिको को पान कष्ट पहुँचा। इस दशा मे हनुमन्तसिह को आत्म समर्पण करने के लिये मजबूर होना इसके पहले ही राजा जयपुर की तरफ से खुशियाली राम ने हनुमन्तसिह को पाँच ग्रा देने के लिये प्रस्ताव किया। हनुमन्तसिह ने उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और ग्राम लेकर उसने दुर्ग छोड़ दिया।

मे जितनी आय अधिक होगी उसके सोलह भागो मे पांच भाग राजा को अतिरिक्त कर मे देने पड़ेंगे।

विदेशी सेना— सन् १८०३ ईसवी मे जयपुर के राजा ने अपनी सहायता के लिए तेरह हजार सैनिको की एक विदेशी सेना रखी थी। इस सेना, मे बन्दूको के साथ दस कम्पनी पैदल सेना, चार हजार नागा सेना एक प्रहरी सैनिको का दल और सात सौ अश्वारोही सिपाहियो की सेना थी। इस विदेशी सेना के अतिरिक्त सामन्तो की ओर से चार हजार अश्वारोही सैनिकों की सेना राज्य के लिए सदा तैयार रहती थी और आवश्यकता पड़ने पर बीस हजार कुशवाहा सैनिक युद्ध क्षेत्र मे पहुँच सकते थे।

सामन्त जयपुर के राजा पृथ्वीराज ने अपने बारह पुत्रो को राज्य के बारह प्रधान सामन्तो का पद दिया था – उनका उल्लेख ग्रन्थो मे इस प्रकार पाया जाता है

पुत्रो के नाम	वश का नाम	जागीर	वर्तमान सामन्त	आमदनी	सैनिक
१ चतुर्भुज	चतुर्भुजोत	प [illegible] गरु	वाघसिंह	१८०००	२८
२ कल्याण	कल्याणोत	लाटवाड	गङ्गासिंह	२५०००	४७
३ नाथू	नाथावत	चौमू	किशन सिंह	११५०००	२०५
४ बलभद्र	बलभद्रोत	अचरोल	कायम सिंह	२८८५०	५७
५—जगमल उसका बेटा खगर	खगारोत	टोढली	पृथ्वी सिंह	२५०००	४०
६ – सुलतान	सुल्तानीत	चाँदसर		.	...
७— पचायन	पचायनोत	सम्वूयो	सूलीसिंह	१७७००	३२
८ – गोग	गोगावत	धूनी	राव चाँदसिंह	७०००	८८
९ – कायम	खूमबानी	भाँसरवो	पद्मसिंह	२१५३५	३१
१० — कुम्भो	कुम्भावत	माहर	रावत स्वरूप सिंह	२७५३८	४५
११ - सूरत	शिववरन	नीन्दिर	रावत हरिसिंह	१००००	१६
१२ — बनबीर	बनबोरपोत	वाटको	स्वरूप सिंह	२६०००	३४

इन बारह प्रधान सामन्तो के सिवा आमेर-राज्य मे और भी सामन्त थे, उनकी आमदनी, सेना और अन्यान्य बातो का उल्लेख जो पाया गया है वह इस प्रकार है :

दुर्ग के अधिकारी ने यह सन्देश पाकर उसे आने के लिये आदेश दे दिया।

हनुमन्त सिंह ने अपने बीस सशस्त्र सैनिको के साथ दुर्ग मे प्रवेश किया। और भी बीस सैनिक वहाँ पर पहुँच गये। इसके भीतर पहुँच जाने के बाद अभय सिंह की सेना दुर्ग के फाटक पर आ गयी। हनुमन्त सिंह ने नागा सैनिको के सरदार परिचय देकर कहा : "जयपुर के राजा और वहाँ के राज-मन्त्री के हस्ताक्षरो के सा की सनद हमारे पास है। इसलिए यदि आप लोग तुरन्त इस दुर्ग को छोडकर न चले लोगो का एक भी सैनिक यहाँ पर जीवित न रहेगा।"

हनुमन्त सिंह के इन शब्दो को सुनकर दुर्ग का अध्यक्ष भयभीत हो उठा सैनिको को लेकर दुर्ग से चला गया। उन सबके निकल जाने के बाद अभय सिंह ने फिर से अपने पिता के राज्य पर अधिकार प्राप्त किया और उस समय से हनुम उनका कोई वैर-विरोध बाकी न रहा।

इस घटना के कुछ ही दिनो के बाद जयपुर के राजा को समाचार मिला कि अमीर खाँ उसके राज्य पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है, यह सुनकर उसने दमन करने का प्रयत्न किया। राजा जगत सिंह ने राज्य के सभी सामन्तो के पास स उनको सेनाओ के साथ अपनी राजधानी में बुलाया। मोहम्मदशाह खाँ अमीर खाँ और वह धोमगढ़ मे रहता था। राजा जगत सिंह के संदेश के अनुसार सभी साम सेनाय लेकर आमेर की राजधानी मे आ गये। राजा जगत सिंह ने राजधानी मे एक नेतृत्व दूनी के राव चाँदसिंह को सौपा और राव चाँदसिंह उस विशाल सेना को रवाना हुआ। उसने धोमगढ पहुँचकर वहाँ के दुर्ग को घेर लिया।

इसके बाद ही एक दूसरी घटना हो गयी। जयपुर-राज्य के पक्ष मे जो सा आयी थी, उनमे से एक दल ने टोक के अन्तर्गत एक नगर पर आक्रमण किया लिया। उस नगर मे गोगावत वंशी एक आदमी मारा गया और आक्रमणकारी द सम्पत्ति लूट ली। जो आदमी मारा गया था, उसका लडका गोगावत वंश के प्रधान के पास गया और उसने सब कुछ बताकर उससे सहायता माँगी। चाँदसिंह ने उस एक सेना भेजी। उसने अपनी सेना को आदेश दिया कि आक्रमणकारी दल ने जो पर अधिकार कर लिया जाय और आक्रमणकारी दल वहाँ से कुछ ले न जा सके उसने अपनी सेना को आने वाले लडके के साथ भेजा।

राव चाँदसिंह की सेना को आक्रमणकारी दल लूटी हुई सम्पत्ति देने के f हुआ। यह सुनकर राव चाँदसिंह को बहुत क्रोध मालूम हुआ और उसने आक्रमणकारी युद्ध करने के लिए एक बडी सेना तैयार की। इस प्रकार शेखावत और गोगावत लो तैयारियाँ होने लगी। वे लोग अमीर खाँ को दमन करने की बात भूल गए और आ का विनाश करने के लिए तैयार हो गये। शेखावत सामन्तो की सेनाएं राव चाँदसि करने के लिये रवाना हुई। चाँदसिंह स्वय इसके लिये पहले से ही तैयार हो चुका था। हुआ कि दोनो तरफ से युद्ध की आग भड़की।

इस आपसी विद्रोह मे केवल सीकर का सामन्त तटस्थ था। इस युद्ध के शुरू खङ्गारोत वंश के एक सरदार ने मध्यस्थ होकर इस बात की कोशिश की कि ऐसे मोके

भानगढ—यह नगर थोलाई से पाँच कोस की दूरी पर है। वह नगर और उसका प्रसिद्ध दुर्ग—दोनो नष्ट हो चुके हो चुके हैं। कुशवाहा राजाओं के अभ्युदय के पहले ढूँढाड के प्राचीन नगर के द्वारा इसका निर्माण हुआ था।

अमरगढ—खुशालगढ से तीन कोस की दूरी पर है। नाग वंशियो के द्वारा इसका निर्माण हुआ था।

वीरात—माचेडी मे वूसे से तीन कोस के फासिले पर है। कहा जाता है कि पाण्डवों के द्वारा वह वसाया गया था।

पाटन और गनीपुर—इन दोनो को दिल्ली के प्राचीन तोमर राजाओ ने बनाया था।

खुरोर अथवा खण्डार—रणथम्भोर के करीब है।

ओरगिर—चम्बल के किनारे पर है।

आमेर, अम्बेर अथवा अम्बेश्वर—यह नगर इन तीनो नामो से प्रसिद्ध रहा है। यहाँ पर शिव जी का एक प्राचीन मन्दिर है उसमे एक कुण्ड है और कुण्ड के मध्य मे शिवलिङ्ग की मूर्ति है। कुन्ड के जल से यह मूर्ति लगभग आधी डूबी है। सर्व साधारण में इस प्रकार का एक विश्वास भरा हुआ है कि शिवलिङ्ग की मूर्ति जल मे जब डूब जायगी, जयपुर राज्य का उस समय पतन हो जायगा।*

---

*मूल ग्रन्थ मे शेखावाटी का इतिहास जयपुर राज्य से अलग नही है, इसलिए टाड साहब ने शेखावाटी के इतिहास का अन्त इस रूप मे किया है—अनुवादक

इसके पश्चात ध्यानस्थ बैठकर ब्रह्मा ने दूब की एक पुतली बनाकर अग्निकुण्ड में डाली। यज्ञ-कुण्ड में उस पुतली के गिरते ही एक वीर पुरुष का आविर्भाव हुआ। उसके एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में वेद ग्रंथ था। उसका नाम चालुक अथवा सोलंकी रखा गया। उसको राज्य करने के लिए अनहल पट्टन दिया।

तीसरे देवता महादेव ने दूब लेकर एक पुतली बनायी और गंगा जल से स्नान कराकर अग्नि-कुण्ड में डाल दी। उसके साथ ही मन्त्रों का पाठ हुआ। मन्त्रों के उच्चारण होते ही धनुष-बाण हाथ में लिये हुये कृष्ण वर्ण मूर्ति का एक वीर पुरुष अग्नि-कुण्ड से निकला। असुरों के साथ युद्ध करने के लिये उसको प्रस्तुत न देखकर उसका नाम परिहार रखा गया और द्वार की रक्षा का उत्तरदायित्व उसको दिया गया इसके बाद उसको मरुस्थली के ९ स्थान दिये गये।

चौथे देवता विष्णु ने दूब को अपने हाथों में लेकर एक पुतली बनायी और मंत्रों के उच्चारण के साथ-साथ उस पुतली को अग्नि कुण्ड में डाल दिया। उसके बाद ही अपने चारों हाथों में अस्त्र लिये एक वीर पुरुष निकला। चार हाथ होने के कारण उसका नाम चतुर्भुज चौहान रखा गया। उसको मैहकावती नगर का शासन दिया गया। इस समय स्थान गढ़ा मंडला के नाम से मशहूर है, उस समय वह मैहकावती के नाम से प्रसिद्ध था।

किया। वह ब्राह्मण पुरोहित अत्यन्त चतुर और षडयन्त्रकारी था। इन दिनो मे शि
जयपुर राज्य का प्रधान मन्त्री था। इस लिए ब्राह्मण होने के नाते
शिवनारायण मिश्र से लाभ उठाने की चेष्टा की। उसके षडयन्त्र मे फँस
प्रधान मन्त्री इस प्रकार अपराधी बन गया कि उससे आत्म-हत्या करके
कर दिया।

ब्राह्मण पुरोहित ने जो षडयन्त्र आरम्भ किया था और उसके कारण
नारायण मिश्र को आत्म-हत्या करनी पडी उसमे उनको पूरी तौर पर सफलता मि
यण मिश्र के बाद वह बाह्मण पुरोहित जयपुर राज्य का मन्त्री बनाया गया। इस
के मन्त्रीत्व काल मे लक्ष्मणसिह आमेर की राजधानी मे आया। उसने लक्ष्मणसिंह के
को देखकर अपने सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की चिन्तायें की। वह सोचने लगा कि
विरुद्ध कोई ऐसा कार्य होना चाहिए जिससे जयपुर के राजा के साथ उसका विरोध उ

इस प्रकार की अनेक बाते सोच कर प्रधान मन्त्री ब्राह्मण ने गुप्त रूप से ख
मण करने के लिए राज्य की सेना को आदेश दिया। इस समय उसने सिद्धानी सामन्त
पक्ष मे कर लिया और राज्य को सेना के साथ उन सामन्तो की सेनाओ को मिलाकर
पर आक्रमण करने के लिए भेजा। लक्ष्मण सिंह उन दिनो मे जयपुर मे ही था
मालूम हुआ तो उसने पठान सरदार जमशेद खाँ को बहुत-सा धन देकर खण्डेला
के लिए भेजा। जयपुर की जो सेना खण्डेला पर आक्रमण करने के लिए गयी थ
ब्राह्मण उसके साथ था और खण्डेला पहुँचकर उसने मुकाम किया। पठान सरद
ने अपनी सेना के साथ वहाँ पहुँच कर प्रधान मन्त्री ब्राह्मण की सेना पर आक्रमण f
साथ की समस्त सामग्री और सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया। ब्राह्मण मन्त्री घब
जयपुर की राजधानी की तरफ लौट आया। लक्ष्मणसिंह उस समय भी जयपुर मे म
कैद करने के लिए प्रधान मन्त्री ने आज्ञा दी। उस आदेश का समाचार पाकर लक्ष
धानी छोड़कर भाग गया। क्योंकि उसके साथ उस समय केवल पचास अश्वार
लक्ष्मण सिंह के भागने पर राज मन्त्री ने कुछ दूर तक पीछा किया। उसके बाद
राजधानी मे आया और लक्ष्मण सिह की समस्त सम्पत्ति और सामग्री पर अधिका
खण्डेला से इस बार राज्य के प्रधान मन्त्री और सिद्धानी सामन्तो के भागने पर ख
सिंह की आशायें सदा के लिए खत्म हो गयी।

शेखजी के पुत्रो मे सब से बडे राजा रायसाल के सात लडके पैदा हुए थे। उन
का नाम तिरमल था। राव की उपाधि लेकर उसने चौरासी ग्रामो और नगरो के
अधिकार प्राप्त किया था। तिरमल के पुत्र हरिसिंह ने फतेहपुर के कायमखानियो का ब
नगर लेकर उसकी अधीनता के एक सौ पच्चीस ग्रामो और नगरो पर अधिकार कर f
उसके थोडे दिनो बाद रेवासा एवम् उसके पच्चीस ग्रामो और नगरो को भी अपने
कर लिया। हरिसिंह के लडके शिवसिंह ने कामखानियो के प्रधान नगर फतेहपुर को
और उसके बाद वह उसी नगर मे रहने लगा।

शिवसिंह के लडके चाँदसिंह का शासन सीकर मे था। उसके वंशज देवी
निकटवर्ती सम्बन्धी शाहपुर के ठाकुर के लडके लक्ष्मण सिंह को—जिसका ऊपर उल्लेख
है—गोद लिया था। देवीसिंह के समय भी सीकर की हालत अच्छी थी। लक्ष्मण f
और भी उन्नत किया। खण्डेला पर अधिकार करने के पहले उसने अपने सामन्तो को

दोनो मे कौन थे ? यहाँ के आदिम निवासी लोगो का रङ्ग काला होता है और उनमे किसी प्रकार की श्री और सुन्दरता नही होती। लेकिन यज्ञ-कुण्ड से जो चार क्षत्री पैदा किये गये, वे प्राचीन राजाओ के समान शक्तिशाली, श्रीयुत और प्रभावशाली थे। अग्नि-कुण्ड से पैदा होने वाले चारो क्षत्रियो के वल, और पराक्रम ठीक उसी प्रकार पाये जाते हैं, जिस प्रकार प्राचीन भारत मे सीथियन लोगो मे पाये जाते थे।

चौहान, परिहार, सोलकी और प्रमार-चार क्षत्रिय वश अग्नि मे उत्पन्न हुए थे। इन चारो मे चौहान वश क्षत्रिय अधिक प्रबल थे और इसीलिये उन्होंने अपने राज्य को बडे विस्तार मे कायम कर लिया था। प्रमार वशी राजाओ का शासन उन दिनो मे वडे विस्तार मे फैलता जा रहा था। उसके विस्तार के सम्बन्ध मे एक प्रबल लोकोक्ति अब तक पायी जाती है, लेकिन चौहान राजाओ के शासन के विस्तार का खोजना वहुत कुछ कठिन मालूम होता है। उस समय के मिले हुए प्रमाणो के पढने से जाहिर होता है कि जिस समय प्रमार वशी राजाओ का वैभव वढ रहा था, चौहानो का गौरव लगातार घटता जा रहा था।

चौहान वश के इतिहास को पढने से जाहिर होता है कि उनका शासन किसी समय बडे विस्तार मे फैला हुआ था। लेकिन वह अधिक समय तक स्थायी नही रह सका। मैहकावती मे माहेश्वरी पुरी तक नर्मदा नदी के दोनो किनारो के उत्तर और दक्षिण मे चौहानो का राज्य था। उस वश के प्रबल और शक्तिशाली होने के कारण माण्ड, आमेर, गोलकुण्डा और कोकन तक एवम् उत्तर की तरफ गङ्गा के किनारे तक चौहानो का राज्य फैला हुआ था। प्रसिद्ध कवि चन्द ने चौहान राजाओ के वैभव को अपने ग्रन्थ में वडे विस्तार के साथ वर्णन किया है। उसने लिखा है कि चौहान वंशी राजाओ ने अपने बल और पराक्रम से ठ्ठा, लाहौर, मुल्तान और पेशावर आदि पर अधिकार करके भारत मे अपने राज्य का विस्तार किया था। × वहाँ पर जो असुर लोग शासन करते थे, वे चौहानो के भय से भाग गये थे। दिल्ली और कावुल मे चौहानो का शासन था। चौहानो के द्वारा ही नैपाल का राज्य माल्हन को मिला था।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि गढ मण्डला का प्राचीन नाम मैहकावती था। * उस मैहकावती के राजाओ की उपाधि वहुत समय से पाल थी। मालूम होता है कि पशुओ का पालन करने के कारण उनको यह उपाधि मिली थी। अहीर वश के लोगो ने किसी समय समस्त मध्य भारत पर अधिकार कर लिया था। यह अहीर शब्द पाल से वहुत-कुछ सम्बन्ध रखता है और अहीर जाति उस वश की शाखा मालूम होती है। पाल अथवा पालियो का जिन नगरो पर अधिकार था, उनमे भेलसा, भोजपुर, दाप, भोपाल, आइरन, और गर्सपुर आदि प्रमुख है।

× मुस्लिम इतिहासकार ने इसको स्वीकार करते हुए लिखा है कि सम्वत् ७४६ मे मुसलमान जिस समय पहले पहल भारतवर्ष पर आक्रमण करने के लिए आये थे, उस समय लाहौर और अजमेर मे चौहान वश के हिन्दू राजाओ का शासन था और वहाँ का राजा मुस्लिम आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार हुआ था। यह वात भी सही है कि अजमेर मे चौहानो की राजधानी थी।

* यहाँ के प्राचीन ग्रन्थो से पता चलता है कि माल्हन चौहान वश की एक शाखा है। सिकन्दर के भारत पर आक्रमण करने के समय समुद्र के तटवर्ती नगरो पर जिस मल्लारी नाम के राजा ने आक्रमण किया था, वह माल्हन वश का था, ऐसा मालूम होता है। चौहानो की इस शाखा का अव कही कोई अस्तित्व नही मिलता। पांच सौ वर्ष पहले इस शाखा को कोई नही जानता था। हाड़ा

वहाँ पर शासन करते हूये साधु ने कुछ दिन और व्यतीत किये । उसने फतेहपुर-राज्य मे अधिकार जमा लिया । इसके बाद उसने एक दिन बृद्ध नवाब से कहा : "आपकी अब आप को पूर्ण रूप से विश्राम मिलने की आवश्यकता है । मै चाहता हूँ कि आप रा जनक स्थान पर रहकर अपना शेष जीवन शान्तिपूर्ण बितावे । आपकी मर्यादा के अनुसा से आपको इतनी सम्पत्ति मिलती रहेगी, जिससे आप के सामने कभी कोई अभाव न रहेग

नवाब ने साधु की बातो को सुना । उसने साधु के अभिप्राय को आसानी से स शासन का अधिकार और प्रबन्ध साधु के हाथो मे सौप कर नवाब ने स्वय अपने आप क बना लिया था । उसने सोचा कि इस मौके पर साधु का विरोध करना सकटपूर्ण हो इसलिये नवाब झुँझुनू से फतेह पुर—जिसकी आबादी झु झुनू से कुछ दूर थी—चला पर उसके वश के कुछ लोग रहते थे और शासन करते थे । उन लोगो ने नवाब को सम्मान पूर्ण स्थान दिया और वे साधु को फतेहपुर-राज्य से भगाने के लिए एक सेना करने लगे ।

इसका समाचार साधु को मिला । ऐसे मौके पर उसने अपने पिता की सहायता अपने पुत्र साधु से अप्रसन्न था । लेकिन इस सकट के समय उसने अपने लडके की सह का निश्चय किया । उसका एक दूसरा लडका मिर्जा राजा जयसिह के यहाँ अपनी सेना के था । जगराम ने अपने उस लडके को लिखा कि वह तुरन्त जयपुर-राज्य के राजा से सैनि लेकर तुरन्त साधु के पास जावे और इस सकट के समय वह उसकी मदद करे । f पत्र को पाकर जगराम का लडका अपनी सेना के साथ जयपुर की सेना को लेकर और वह साधु के पास पहुँच गया । अपने भाई की सैनिक सहायता पाकर साधु ने सम पुर मे अपना अधिकार कर लिया और उसके अन्तर्गत ग्रामो और नगरो का शासन मिलकर करने लगे । अपने भाई के परामर्श के अनुसार साधु ने जयपुर-राज्य की अधीनत कर ली । इसके कुछ दिनो के बाद साधु ने सिहाना पर भी अधिकार कर लिया । सौ पच्चीस ग्राम थे । उसके पश्चात् उसने सुलतान नामक स्थान को लेकर अपने रा लिया । इन दिनो में लगातार वह अपने राज्य की सीमा को बढाता रहा और खेतड के समस्त ग्रामो को भी उसने अपने अधिकार मे कर लिया । इन दिनो मे सव मिलाकर से अधिक ग्राम और नगर उसके अधिकार मे हो गये थे ।

साधु के पाँच लडके थे—(१) जोरावर सिंह (२) किशन सिंह (३) नवल सिह (सिंह और (५) पहाड़ सिह । साधु ने अपना सम्पूर्ण राज्य अपने पाँचो बेटे मे बाट दिय वंशज सिद्धानी नाम से प्रसिद्ध हुये ।

साधु के बडे लडके जोरावर सिंह ने अपने पैतृक राज्य के अतिरिक्त चोकेड़ी पर कर लिया । उसमे बारह ग्राम थे । लेकिन साधु के मझले लडके किशन सिंह के एक जोरावर सिंह के वंशजो के अधिकार से समस्त नगर और ग्राम ले लिये । उसके अ केवल चोकेडी और उसके ग्राम रह गए । इतना सब होने पर भी किशन सिंह के वशज श्रेष्ठ माने जाते थे ।

साधु के शेष चार पुत्रो के वशजो मे निम्न लिखित अधिक प्रसिद्ध हुये—(१) अभय सिह (२) विसाऊ का श्याम सिह (३) नवलगढ का ज्ञान सिह और (४) शेरसिह ।

साधु ने अपने परिवार के छोटे अधिकारियो को सिहाना, झु झुनू और सूर्यगढ प्राचीन नाम उछैड़ा था इत्यादि कई नगर और ग्राम दिये थे । लेकिन खेतडी के

देखा। उसे बड़ा आश्चर्य मालूम हुआ। जहाँ तक उसकी दृष्टि गयी, सम्पूर्ण मरुभूमि श्वेत चद्दर से ढँकी हुई दिखाई पडी। राजस्थान की प्रसिद्ध नमक की झील की उत्पत्ति का यही कारण कहा जाता है। माणिकराय ने उस झील का नाम देवी के नाम पर शाकम्भरी झील रखा और उस झील के कुछ फासले पर एक छोटे-से द्वीप मे देवी की प्रतिष्ठा की। उस देवी की प्रतिमा आज तक यहाँ पायी जाती है। शाकम्भरी का नाम बहुत दिनो के बाद बिगड कर सांभर हो गया है।

माणिकराय ने—जो उत्तरी भारत के चौहानो का आदि पुरुष माना जाता है—अजमेर पर अपना अधिकार कर लिया। उसके कई सन्ताने पैदा हुई। उसके वशजो ने पश्चिम राजस्थान मे पहुँच कर बहुत-सी शाखाओ की सृष्टि की और सिन्ध नदी तक उनका विस्तार हो गया। खीची, हाडा, मोयल, निरवान, भदौरिया, भूरेचा, धनेरिया अथवा धधेरिया और बाचडेचा आदि समस्त शाखाये माणिकराय के वशजो के द्वारा पैदा हुई है। खीची शाखा के लोगो ने दूरवर्ती दो आब मे जाकर जो—सिन्ध सागर के नाम से प्रसिद्ध है रहना आरम्भ किया। वहाँ की भूमि का विस्तार बेतवा नदी से लेकर सिन्ध नदी तक अडमठ कोस है। उनकी राजधानी का नाम खीची पुर पाटन था। हाडा शाखा के लोग हरियाना प्रान्त के असी अथवा हाँसी नामक स्थान को जीतकर वहाँ रहने लगे और उनकी एक शाखा गोवाल कुण्ड—जो अब गोलकुण्डा के नाम से प्रसिद्ध हैं—पहुँच गयी और उसके बाद उस शाखा के लोगो ने वहाँ से चलकर आमेर नामक स्थान पर अधिकार कर लिया। मोयल लोगो ने नागौर के आस-पास के सब स्थानो पर अधिकार कर लिया था। भदौरिया लोगो ने चम्बल नदी के किनारे विस्तृत भूमि पर अधिकार कर लिया। वह भूमि उसी शाखा के नाम से आज तक भदावर नाम से प्रसिद्ध है और अब तक उन्ही के अधिकार मे है। धुँधेरिया शाखा के लोगो ने शाहाबाद जाकर रहना आरम्भ किया था। यह स्थान कुछ दिनो के बाद कोटा की हाडा शाखा के अधिकार मे चला गया। उनमे से एक शाखा के लोगो ने नारोल मे रहना आरम्भ किया था। × परन्तु उन लोगो ने अपने मूल वश चौहान को कभी नही छोडा।

माणिकराय के वशजो ने मरुभूमि मे फैलकर बहुत से स्थानो पर अधिकार कर लिया था। उनमें से कुछ लोगो ने स्वतन्त्रता पूर्वक शासन किया और कुछ लोगो ने स्वजातीय राजाओ की अधीनता मे शासन किया।

× नारोल अथवा नाडोल किसी समय बिलकुल सम्पन्न था। अनेक बातो के द्वारा इस बात के प्रमाण पाये जाते हैं। आठवी शताब्दी से लेकर बारहवी शताब्दी तक वह अपनी समृद्धि के लिए विख्यात रहा। सन् ९८३ ईसवी मे राव लाखनसी वहाँ के सिंहासन पर था। उसने नाहर वाला के राजा के साथ युद्ध किया। ग्रन्थो मे इस बात के उल्लेख पाये जाते है कि सवत १०३९ मे चौहान राजा ने पाटन और मेवाड से कर वसूल किया था। उन दिनो मे उसकी शक्तियाँ अत्यन्त प्रबल थी, सुबुक्तगीन और उसके लडके महमूद ने लक्ष्मण के शासन-काल में नाडोल पर आक्रमण किया था और भयानक रूप मे उसे लूट कर वहाँ के दुर्ग को बुरी तरह से नष्ट कर दिया था। लेकिन समय का परिवर्तन हुआ। परिस्थितियो के बदलने मे देर नही लगती। नाडोल के राजा ने अपने खोये हुये गौरव को फिर से प्राप्त कर लिया।

तेरहवी शताब्दी से इस वंश के लोगो ने अलाउद्दीन के साथ युद्ध किया था और उस युद्ध मे वे लोग अधिक सख्या मे मारे गये थे। नाडोल के राजा ने शहाबुद्दीन को कर देकर अधीनता स्वीकार ली थी।

होते हैं। मरुस्थली मे गोगा का बल आज तक प्रसिद्ध है। गोगा के घोडे का नाम जवादिया था।* इसीलिए अधिकांश राजपूत अपने उस घोडे का नाम जवादिया रखा करते हैं, जो युद्ध मे काम आते है।

ऐसा मालूम होता है कि ऊपर जिस युद्ध का वर्णन किया गया है, वह उस समय हुआ हो, जब महमूद ने भारत के बाकी हिस्सो को जीतने की चेष्टा की थी। उस समय सुलतान महमूद अपनी फौज लेकर मरुभूमि मे गया होगा और अजमेर पर उसके आक्रमण करते ही चौहान राजा अपना स्थान छोडकर भाग गया हो, यह सम्भव हो सकता हो। उस दशा मे महमूद की सेना ने अजमेर और उसके आस-पास के नगरो को लूटकर विध्वंश और विनाश किया हो, इसका अनुमान किया जा सकता है। उस समय राजपूत राजा ने गढबीठली नाम दुर्ग की रक्षा की। वहाँ पर परास्त और घायल होकर महमूद नाडोल की तरफ भागा और वहाँ पहुँचकर उसने लूटमार की। इसके पश्चात् उसने नहरवाला पर अधिकार कर लिया। सुलतान महमूद ने जिन ग्रामो और नगरो पर अधिकार किया था, वहाँ उसने भयानक अत्याचार किये। इसलिये वहाँ के रहने वाले सभी लोग महमूद के शत्रु हो गये। उस दशा मे महमूद को वहाँ के पश्चिमी मरुभूमि के रास्ते से होकर भागना पडा और वह रास्ता उसकी फौज के लिए अत्यन्त भयानक हो गया।

कवि चन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ मे वीसलदेव के शासन का समय सन् ८६५ लिखा है। परन्तु यह किसी प्रकार सही नही मालूम होता।

उस समय के समस्त हिन्दू राजाओ मे वीसलदेव का नाम अधिक प्रसिद्ध था। उसके इस प्रताप और गौरव को सुनकर सुलतान महमूद लुटेरो की एक बहुत बडी फौज लेकर इस देश मे आया था। उस युद्ध में अनहिल वाडा के चालुक्य राजा को छोडकर सभी राजाओ ने वीसलदेव का साथ दिया था। क्योकि वे सभी उसकी प्रधानता मे शासन करते थे। उस युद्ध मे शामिल होने के लिए कितने राजा अपनी सेनाओ के साथ वीसलदेव की तरफ आये थे, उनका वर्णन चन्द कवि ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ मे इस प्रकार किया है।

गोयलवाल जैत पर विश्वास करके अजमेर के राजा ने कहा—'मैं आपकी राजभक्ति पर विश्वास करता हूँ। चालुक्य राजा को कहाँ आश्रय मिलेगा।' यह कहकर वीसलदेव ने अपनी सेना के साथ अजमेर नगर से रवाना होकर वीसल † नामक सरोवर के तट पर पहुँचकर

---

* राजपूतो के एक ऐतिहासिक ग्रन्थ मे लिखा है कि गोगा चौहान के पहले कोई लडका नही था। उससे वह चिन्तित रहा करता था। एक दिन उसकी कुलदेवी ने गोगा को दो जव दिये। गोगा ने उनमे से एक जव अपनी रानी को खिलाया और दूसरा अपनी घोडी को। जव खाने से उस घोडी के एक बच्चा हुआ। जव खाने से उत्पत्ति होने के कारण घोडी के उस बच्चे का नाम गोगा ने जवादिया रखा। यह जवादिया घोडा उतना ही प्रसिद्ध हुआ, जितना कि गोगा चौहान स्वयं विख्यात हुआ। उदयपुर के राणा ने काठियावाड का एक घोडा मुझे उपहार मे दिया था, इसका नाम भी जवादिया था। वह घोडा देखने मे बहुत साधारण था। परन्तु युद्ध मे वह अपनी अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन करता था। उन दिनो मे युद्ध मे शिक्षित घोडे को बहुत महत्व दिया जाता था। लेकिन अब उस प्रकार के घोडे नही है।

† राजा वीसलदेव ने एक हजार वर्ष पहले इस सरोवर को बनवाया था। वह आज तक इसी नाम से प्रसिद्ध है। बादशाह जहाँगीर ने इस सरोवर के समीप एक राजप्रासाद बनवाया था और इंगलैण्ड के बादशाह प्रथम जेम्स के भेजे हुए दूत को उसने अपने यहाँ इसी प्रासाद मे ठहराया था।

निश्चित रूप से अधिक थी। बाकी जातियो मे राजपूत अधिक थे। वहाँ पर जो जा
है, उनमे प्रमुख इस प्रकार है · मीना, राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य, जाट, धाकर अथ
और गूजर इस प्रकार वहाँ के रहने वालो मे ऊपर लिखी हुई सात जातियाँ
जाती है।

मीना—इस जाति के लोग जिस प्रमुख शाखाओ मे विभाजित है, उनकी स
कम नही है। राजस्थान के प्रत्येक राज्य मे मीना लोगो की सख्या अधिक है। इस
वर्णन हमने एक पृथक परिच्छेद मे करना मुनासिब समझा है। आमेर राज्य मे मीन
सभी प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त है। नरवर के निर्वासित राजा को मीना लो
ही आमेर का सिंहासन प्राप्त हुआ था। मीना लोगो को सभी प्रकार के राज्य धकार
प्रमुख कारण यह था कि आरम्भ मे कुशवाहा राजा ने उनको पराजित करके उन पर f
का आधिपत्य नही किया था बल्कि मीना लोगो ने अपने आप पराजित होने पर उस
स्वीकार कर थी और इसके फलस्वरूप कालो खोह के मीना लोग जयपुर के रा०
अवसरो पर अपने रुधिर से तिलक करने लगे थे। अनेक उदाहरणो से यह जाहिर
विश्वासी होने के कारण उनको जयपुर राज्य मे उत्तरदायी पदो पर रखा जाता था।
खजाने मे और वहाँ के दरबारी कागजो की देखभाल रखने मे मीना लोग ही काम
राजधानी के विश्वस्त कार्य राजा के शरीर-रक्षक सैनिक होने का पद और इस प्रक
उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य उनको सौपे जाते थे। मीना लोगो को पहले अपना झण्डा फ
नक्कारा बजाने का अधिकार था। लेकिन बाद मे इस अधिकारी से वचित कर दिया गय
राज्य मे खेती का काम अधिक सख्या मे मीना जाट और किरात करते है।

जाट—जाटो की सख्या भी लगभग मीना लोगो के बराबर समझी जाती है।
कार के ग्रामो और नगरो की सख्या भी अधिक है। खेती के काम मे ये लोग अधि
होते है।

ब्राह्मण—समाज मे ज. धार्मिक प्रथाये है, उन पर ब्राह्मणो ने अपना अ
रखा है। दूसरी जातियो के लोग धार्मिक कार्यो मे ब्राह्मणो को ही अधिकारी समझते
स्थान के अन्यान्य राज्यो की अपेक्षा जयपुर-राज्य मे बाह्मण अधिक पाये जाते है। इस
नही है कि इन बाह्मणो के राजा अपने पडोसी राजाओ से अधिक धार्मिक है। बल्कि
जयपुर के अन्य राजाओ की अपेक्षा अधिक अधर्मी और अपराधी है।

राजपूत—यह बात अब भी देखी जाती है कि अगर कुशवाहो के राज्य मे
आवश्यकता पडती है और कुशवाहा लोग उत्तेजित किए जाते है तो अपने वश के तीस
को लेकर वे युद्ध क्षेत्र मे पहुँच जाते है। उनमे नरूका और शेखावत वश भी शामिल
वाहा राजाओ मे पाजून राजा मान और मिर्जा राजा आदि उतने ही शूरवीर और यो
जितने की अन्य वशो मे। लेकिन राठौरो की तरह साहस और शौर्य मे ये लोग ख्याि
कर सके। इसका बहुत कुछ कारण यह भी हो सकता है कि मुगल बादशाहो के साथ
ने वैवाहिक सम्बन्ध कायम किये थे और उनके फलस्वरूप उन्होने मुगल-दरबार मे सम्मान
बादशाह की राजनीतिक आवाजो का समर्थन करके उनमे सहयोग दिया था। मराठो
से कुशवाहा राजाओ को अधिक आघात पहुँचा था। उनके प्रबल प्रभाव के समय इन
राजनीतिक, सामाजिक और पारिवारिक—सभी प्रकार की भावनाये दुर्बल पड जाती है।

चौहानों की वंशावली

संवत्	नाम		विवरण
	अनल	...	अथवा अग्निपाल, चौहान वंश का आदि पुरुष जो विक्रमादित्य से ६५० वर्ष पहले अग्नि कुण्ड से पैदा हुआ था। उसने तुरस्क लोगो को जीतकर मैहकावती मे राजधानी कायम की। फिर कोकन, असीर और गोलकुण्डा को विजय किया।
	सुवाहु	...	
	मालन	...	इसके वशज मालन चौहान कहे जाते है।
स० २०२	गलनसूर	...	
	अजयपाल	...	इसने अजमेर नगर की स्थापना की।
स० ७४१	दूलाराय	...	सन् ६८५ ईसवी मे मुसलमानो के द्वारा मारा गया और उसका राज्य अजमेर मुसलमानो के अधिकार मे चला गया।
	माणिक राय	...	इसने सांभर मे चौहानो की राजधानी कायम करके सम्भरीराव की उपाधि धारण की। उस समय से चौहान सम्भरी राव कहे जाते हैं।
	हर्षराज	...	
	वीरवीलन देव	...	
स० १०६६-११३०	वीगनदेव	..	
	सारङ्गदेव	...	छोटी अवस्था मे मारा गया।
	आना	...	अजमेर मे उसने अपने नाम पर आनासातर ताल बनवाया, जो अब तक प्रसिद्ध है।

बादशाह के अधिकार में थे। बादशाह ने उनके शासन का अधिकार जयपुर के राजा था। लगभग आधी शताब्दी पहले राजा पृथ्वी सिंह के शासन काल मे आमेर राज्य **सामन्तों की आमदनी मिलाकर** कुछ सत्तर लाख रुपये थे। राजा प्रताप सिह के शासन **वर्ष सन् १८०२ ईसवी में यह** आमदनी उन्नासी लाख रुपये थी।

राजा जगत सिंह के समय सम्वत् १८८५ सन् १८०२—३ ईसवी मे खालसा अथवा कर-सम्बन्धी राजकोष की आय इस प्रकार थी :

कर-सम्बन्धी अथवा राजा के प्रबन्ध के द्वारा	...	२०५५
देवरो ताल्लुका, अन्तःपुर के व्वय के लिए आय	.	५००
राज-दरबार के नौकरो के लिए होने वाली आय	...	३००
मन्त्रियो और दीवानी के अधिकारियो के लिए	...	२००
सिलहपोष नामक सेना की जागीरो से	...	१५०
दस पैदल और सवार सेनाओ की जागीरो से	...	७१४
सामन्तो की जागीरो की आय	..	१७००
ब्राह्मणो को दी हुई भूमि की आय	...	१६००
कृषि कर और वाणिज्य कर के द्वारा	...	१९०
राजधानी की कचहरी, नगर चुङ्गी आदि से	...	२१५
टकसाल के द्वारा	...	६०
हुंडी भाडा इत्यादि से	...	६०
आमेर की फौजदारी के जुर्माने से	...	१२
जयपुर नगर की फौजदारी कचहरी से	...	८
कचहरी के साधारण जुर्माने से	...	१६
सब्जी मण्डी के द्वारा	...	३०
शेखावाटी राज्य की आय	...	३५०
राजावत और जयपुर के अन्य सामन्तो से	...	३००
हाडौती के सामन्तो से	...	२००
	कुल जोड़	८१८३०

प्राप्त सामग्री से ऊपर लिखी हुई आमदनी यहाँ पर जो दी गयी है, वह अगर उससे वह साबित होता है कि जगत सिंह के सिंहासन पर बैठने के बाद-जैसा कि गया है—अस्सी लाख रुपये से अधिक राज्य की आमदनी हो गयी थी। इसमे से खालसा भूमि अर्थात् राजा के अधिकारी ग्रामो और नगरो की थी। राजस्थान के अन्य निजी आमदनी से यह लगभग दो गुनी थी। अङ्गरेजो के साथ सन्धि करने के समय आममनी का उपरोक्त अनुमान लगाया था और राजा ने अङ्गरेज कम्पनी को आठ वार्षिक देना मन्जूर किया था। उससे यह भी निश्चय हुआ था कि राज्य की वर्तमान

चौहान वशावली मे जिन नामो का उल्लेख किया गया है, उनके विवरण अत्यन्त सक्षेप मे इस प्रकार हैं, जो कुछ नामो से सम्बन्ध रखते हैं :

अनल अथवा अग्निपाल प्रमार वश का आदि पुरुष था। ऐसा भी कुछ लोगो का मत है।

हर्षराज ने नाजिमुद्दीन अथवा मुवुक्तगीन को पराजित किया था।

वीर वीलनदेव अथवा वोलनदेव महमूद गजनवी के साथ युद्ध करता हुआ मारा गया था। इसका दूसरा नाम धर्मराज भी है।

सोमश्वर दिल्ली के तोवर राजा अनगपाल की बेटी रूका बाई के साथ व्याहा था।

ईश्वरीदास का आकर्षण इस्लाम की तरफ हो गया था।

पृथ्वीराज दिल्ली के सिंहासन पर बैठा और सन् ११९३ ईसवी मे शहाबुद्दीन गोरी के द्वारा मारा गया।

रेनसी पृथ्वीराज का उत्तराधिकारी बनाया गया। उसका नाम दिल्ली के स्तम्भ मे लिखा हुआ मिलता है।

विजयदेव राव दिल्ली पर होने वाले आक्रमण मे मारा गया।

लखनसी के इक्कीस लडके हुए। उनमे सात लडके विवाहिता रानियो से पैदा हुए थे। उनके द्वारा चौहान वश की सात शाखाओ की प्रतिष्ठा हुई।

वीसलदेव से पृथ्वीराज तक और भी छै राजाओ के नामो के उल्लेख मिलते हैं। लेकिन इन सब मे वीसलदेव और पृथ्वीराज का नाम अधिक प्रसिद्ध है। वास्तव मे पृथ्वीराज ने वीसलदेव की तरह वीरता और ख्याति मे गौरव प्राप्त किया था। उसने अनेक युद्धो मे मुसलमानो तथा दूसरे शत्रुओ को पराजित किया था।

वीसलदेव के अधीन जो राजा अपनी सेनाओ के साथ युद्ध के लिए आकर एकत्रित हुए थे, कवि चन्द के ग्रन्थ मे उनका उल्लेख मिलता है। लेकिन उनमे केवल चार-राजाओ के समय का जिक्र किया गया है और हम उनमे केवल एक राजा के समय का ही सही रूप मे वर्णन कर सके है। शेष तीन राजाओ के समय का निर्णय अप्रत्यक्ष है। इसीलिए उसको छोड दिया है। पहले राजा भोज का लडका धार का स्वामी उदयादित्य प्रमार था। मैंने अनेक लिपियो और शिला लेखो के आधार पर माना है कि उदयादित्य का समय सन् ११०० से ११५० तक था। इस दशा मे, जब उदयादित्य का सेना लेकर वीसलदेव के यहाँ आना साबित होता है तो साफ जाहिर है कि वीसलदेव का समय उदयादित्य के समय के साथ-साथ था। इसके सिवा, कुछ प्रमाण और भी इसकी सहायता मे हमको मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं :—

कवि चन्द ने देरावल के भट्टी लोगो का वीसलदेव के पास आना स्वीकार किया है। उस दशा मे भट्टी लोगो का नगर और उनकी वर्तमान राजधानी जैसलमेर के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है।

जमुना और गङ्गा के मध्यवर्ती अन्तर्वेद से कछवाहो का आना कवि चन्द के अनुसार साबित है। इससे भी उस समय का अनुमान होता है। क्योंकि उस समय कछवाहो ने नरवर से जाकर अम्बेर मे अपनी राजधानी कायम की थी और वह उस समय प्रसिद्ध नही हुई थी।

मेवाड के शिला लेखो से हमे जानने को मिला है कि समरसिंह का पितामह तेजसिंह राजा वीसलदेव का मित्र था। कहा जाता है कि वीसलदेव चौसठ वर्ष तक जीवित रहा। उससे भी उसके समय का निर्णय किया जा सकता है। इसके सम्बन्ध मे अनेक ग्रन्थो के प्रसग-प्रसग

वंश का नाम	अधीन सामन्त	समस्त आमदनी	अश्वारो
१—चतुर्भुजोत	६	५३८००	
२—कल्याणोत	१६	२४५१६६	५
३ नाथावत्	१०	२२०८००	३
४ बलभद्रोत	२	१३०८५०	१
५—खाँगारोत	२२	४०२८०६	६
६—सुल्तानोत	—	—	
७—पचायनोत	३	२४७००	
८—गोगावत	१३	१६७६००	२७
९—कुम्भानी	२	२३७८७	३
१०—कुम्भावत	६	४०७३८	६
११—शिवबरनपोत	३	४६५००	
१२—बनवीरपोत	३	२६५७५	४
१३—राजावत	१६	१९८१३७	३९
१४—नरूका	६	९१०६९	९
१५—बाँकावत	४	३४६००	५
१६—पूर्णमलोत	१	१००००	१
१७—भाटी	४	१०४०३९	२०
१८—चौहान	४	३०५००	६
१९—बडगूजर	६	३२०००	५
२०—चन्दावत	१	१४०००	२
२१—सीकरवार	२	४५००	
२२—गूजर	३	१५३००	३
२३—राँगल	६	२९११०५	५४
२४—खेतडी	४	१२००००	२८
२५—ब्राह्मण	१२	३१२०००	६०
२६—मुसलमान	९	१४१४००	२७

ऊपर जो तालिका दी गयी है, उसमे एक से बारह तक आमेर के प्रधान सामन्त से सोलह तक कुशवाहा वशज है और उनकी गणना बारह सामन्तो मे नही होती। विदेशी सामन्त हैं उनके वंशज अलग-अलग है।

यहाँ पर राज्य के कुछ प्रसिद्ध और प्राचीन नगरो का सक्षेप मे वर्णन करके हम इस का अन्त कर रहे है। अनुसंधान करने से इन नगरो की प्राचीनता के सम्बन्ध मे बहु जानी जा सकती है।

मोरा – देवनशाह से पूर्व की तरफ अठारह मील की दूरी पर वसा हुआ है' मोरध चौहान राजा ने इसकी प्रतिष्ठा की थी।

आभानेर—यह नगर लालसोन्ट से तीन कोस पूर्व की तरफ है। वह नगर बहुत और यहाँ पर कभी एक चौहान राजा की राजधानी थी।

कुण्डा से भागकर यहाँ आयी, किस प्रकार उसका पिता अपने बारह पुत्रो के साथ आक्रमणकारियो के द्वारा मारा गया ।

सुराबाई के मुख से उसकी करुण कहानी को सुनकर देवी ने संतोष देते हुए उससे कहा — "अब तुम घबराओ नही । इसलिये कि तुम्हारे एक सजातीय चौहान ने आक्रमणकारियो को परास्त करके भगा दिया है ।" यह कहकर सुराबाई को साथ में लेकर देवी उस स्थान पर गयी, जहाँ पर अस्थिपाल घायल अवस्था मे अचेत पडा था । देवी की सहायता से अस्थिपाल ने स्वास्थ्य लाभ किया और उसके पश्चात् उसने असीर के प्रसिद्ध दुर्ग पर अधिकार कर लिया ।

हाडा वश के प्रतिष्ठाता अस्थिपाल ने सन् १०२५ ईसवी मे आसीर पर अधिकार प्राप्त किया था । सुलतान महमूद मुलतान होकर मरुभूमि के रास्ते से हिजरी ७१४ सन् १०२२ ईसवी में अजमेर पहुँचा था । इस दशा में हमे सभी प्रकार अधिकार यह निर्णय करने के लिये है कि अस्थिपाल के पिता अनुराज ने उसी समय अपने प्राणो की बलि देकर असि-राज्य का अधिकार खोया था, जब महमूद ने अजमेर पर आक्रमण करके उसको विध्वस किया था ।

हिन्दू कवि ने कजली वन को असूर कहकर अपने काव्य मे लिखा है । लेकिन मुस्लिम इतिहासकार ने कही पर भी इस बात का उल्लेख नही किया कि मुलतान महमूद किस समय अपनी सेना के साथ दक्षिण गया और कब उसने गोलकुण्डा को जीत कर अधिकार किया । कवि गोविन्द राम ने जिस कजली बन की बर्बर जाति का वर्णन किया है, महमूद मुलतान उस कजली बन का शासक था, इस बात को स्वीकार करने के लिए कोई ठोस प्रमाण होना चाहिये । यद्यपि यह बात सही है कि यदुवशी राजा गज से गजनी की सृष्टि हुई थी फिर भी यदि महमूद दक्षिण की तरफ गया था तो निश्चित रूप से मुस्लिम इतिहासकार को उसका वर्णन कही न कही पर करना चाहिये था । ऐसा मालूम होता है कि दक्षिण मे किसी पहाडी स्थान का नाम कजलीबन रहा होगा । यह कजली बन कहाँ था, इसका निर्णय करने के लिये हमारे पास कोई सामग्री नही है ।

उत्तर और दक्षिण भारत मे जो राजा थे, उनके वशजो ने वहाँ के प्राचीन निवासियो के साथ मिलकर मराठा नाम की एक नयी जाति की उत्पत्ति की और यादव, तोअर एवम् प्रमार आदि अपने प्राचीन राजवशो के नामो को छोडकर देश के जिस भाग मे पैदा हुये, उसी के नाम से नीमालकर, फालकिया और पाटनकर आदि नामो से प्रसिद्ध हुये ।

अस्थिपाल के एक लडका था, चन्द्रकर्ण उसका नाम था । चन्द्रकर्ण के लोकपाल नामक लडका पैदा हुआ । लोकपाल के दो लडके हुये । एक नाम था हमीर और दूसरे का नाम था गम्भीर । वे दोनो सम्राट पृथ्वीराज की अधीनता मे थे और कई युद्धो मे उन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया था । सम्राट पृथ्वीराज की अधीनता मे एक सौ आठ राजा थे, उनमे इन दोनो भाइयो ने अधिक ख्याति पायी थी और इसीलिये सम्राट उनका अधिक सम्मान करता था ।

पृथ्वीराज ने कन्नौज के राजा जयचन्द की लडकी अनगमञ्जरी—जो सयोगिता के नाम से प्रसिद्ध है—अपहरण किया था, उस समय जयचन्द के साथ उसका भयानक सग्राम हुआ । उस युद्ध मे हमीर और गम्भीर—दोनो भाई सम्राट का पक्ष लेकर बडी बहादुरी के साथ लडे थे । हाडाराव हमीर ने अपने छोटे भाई गम्भीर के साथ घोडे पर बैठे हुए पृथ्वीराज के पास जाकर कहा था ।

बूँदी का इतिहास
सरसठवाँ परिच्छेद

बूँदी कोटा के राज्य—हाडा वश की शाखा—उस वश का आदि पुरुष—परशुर क्षत्रियो का सहार—ब्राह्मणो का शासन—अराजकता की वृद्धि—विश्वामित्र की अनुष्ठान — क्षत्रियो की उत्पत्ति—असुरो के साथ क्षत्रियो का युद्ध—कुल देवियो की अग्निवश मे उत्पन्न होने वाले क्षत्रियो की श्रेष्ठता—वे क्षत्री कौन थे ?—चौहान, परिह और प्रमार अग्निवश राजपूत—चौहानो का विस्तृत राज्य—अहीर वश के लोगो का चक्रवर्ती राजा अजय पाल—राजपूताना मे मुसलमानो का प्रवेश—इस्लाम धर्म अली—सिध मे मुसलमानो की फौज—माणिक राय का संकट- शाकम्भरी देवी क —राजस्थान की प्रसिद्ध नमक की झील—साँभर का प्राचीन नाम—चम्बल नदी भदौरिया राजपूत—मरुभूमि मे माणिक राय के वशज—सुलतान महमूद का आक्रमण— वंशावली !

राजस्थान मे हाड़ौती हाडा वश के राजपूतो का देश है। उसमे दो राज्य हैं, है बूंदी और दूसरे का नाम है कोटा। इन दोनो को मिलाकर पहले एक ही राज्य तीन सौ वर्षो से वह राज्य दो भागो विभाजित हो गया है। चम्बल नदी उन दोनो प्रवाहित होती है और यही नदी दोनो राज्यो की सीमा हो गयी है। इन दोनो हाडा वश के राजपूत रहते हैं। इस वश के नाम से ही प्राचीन काल मे इ राज्य हाडौती रखा गया था। इस हाडोती देश के बूंदी-राज्य का इतिहास न गया है।

चौहान राजपूतो की चौबीस शाखाये हे। हाडा उनकी एक प्रसिद्ध शाखा है। राजा माणिक राय का लडका अनुराज इस शाखा का आदि पुरुष माना जाता है राय ने सन् ६८५ ईसवी मे सबसे पहले मुसलमानो के साथ युद्ध किया था। ह उस समय का इतिहास बहुत स्पष्ट नही है उसकी अनेक घटनाये सदेहात्मक है। चन उसके सम्बन्ध मे जो कुछ लिखा है, यद्यापि वह भी स्पष्ट नही होता, फिर भी स्थल के वर्णन करने मे उसी का आश्रय लेना पडा। परशुराम ने इक्कीस वार भयान क्षत्रियो का संहार किया था। उसी समय कुछ क्षत्रियो ने अपने आपको कवि कहकर कुछ लोगो ने स्त्रियो का रूप धारण करके अपने प्राणो की रक्षा की थी।

क्षत्री राजाओ का सहार करके परशुराम ने इस देश का शासन ब्राह्मणो को सौप नर्वदा नदी के किनारे माहेश्वर नगर के हैहय वश का राजा महस्त्रर्जुन ने परशुराम के मार कर क्षत्रियो के प्रति सघर्ष को उपस्थित किया था और उसी के परिणाम स्वरूप ने एक तरफ से क्षत्रियो का नाश किया था।

को मिलती है। मिली हुई ऐतिहासिक सामग्री से जाहिर होता है कि आठवीं शताब्दी में चित्तौर पर पहले-पहल आक्रमण होने पर हूण राजा अंगतसी ने राणा की सहायता से युद्ध किया था। यह भी जाहिर होता है कि प्रसिद्ध बारौली का मन्दिर इसी हूण राजा का बनवाया हुआ है।

कोलन के लड़के राव बांगा ने मैनाल पर अधिकार करके पठार के पश्चिम तरफ एक शिखर पर बंबावदा नामक दुर्ग बनवाया था। पूर्व की तरफ भैंसरोड, पश्चिम की तरफ बंबावदा और मैनाल पठार राज्य में शामिल थे और वहाँ पर हाडा राजा का अधिकार हो गया था। इसके पश्चात् मांडलगढ, बिजोलिया, बेगू, रतनगढ़ और चौराइतगढ आदि अधिकार में आ जाने के कारण पठार राज्य की सीमा पहले से बढ़ गयी थी।

राव बांगा के बारह लड़के पैदा हुये। उन सभी ने अपने वंश और राज्य की उन्नति की। राव बांगा के बाद राव देवा उसके सिंहासन पर बैठा। राव देवा ने हरराज, हथजी और समरसी नामक तीन लड़के पैदा हुये।

हाडा राजाओं के बढ़ते हुये वैभव को देखकर दिल्ली के बादशाह का ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ। सिकन्दर लोदी इन दिनों में दिल्ली के सिंहासन पर था। उसने हाडा राजा को दिल्ली आने के लिये संदेश भेजा। उस संदेश को पाकर राव देवा ने अपने बड़े लड़के को बंबावदा के शासन का अधिकार सौंपा और अपने छोटे लड़के समरसी के साथ वह दिल्ली गया। हाडा वंश कवि के अनुसार राव देवा बहुत दिनों तक दिल्ली में रहा। दिल्ली के बादशाह ने राव देवा का घोड़ा लेने की कोशिश की। वह किसी प्रकार अपना घोड़ा देना नहीं चाहता था। इस घोड़े की कहानी इस प्रकार है: "दिल्ली के बादशाह के पास एक ऐसा घोड़ा था। जो अपने पैरों की टापों को पानी में बिना स्पर्श किये नदी को पार कर जाता था। उस घोड़े की इस प्रशंसा को जानकर राव देवा ने बादशाह के अश्वपाल को रिश्वत देकर मिला लिया और अपने राज्य की एक घोड़ी से बादशाह के उस घोड़े के द्वारा एक बच्चा पैदा करवाया। वह बछेड़ा कुछ दिनों के बाद घोड़ा हो गया। बादशाह ने उस घोड़े को लेने का इरादा किया। लेकिन राव देवा उसे देना नहीं चाहता था। उसने अपने परिवार के साथ के लोगों को दिल्ली से धीरे-धीरे रवाना कर दिया और सबके चले जाने के बाद वह हाथ में तलवार लिये हुये अपने घोड़े पर बैठकर बादशाह के पास पहुँचा। बादशाह उस समय अपने महल के एक बरामदे में था। उसे देखकर घोड़े पर चढ़े हुये राव देवा ने अभिवादन करते हुए कहा, जहांपनाह, आपके साथ मेरा यह अन्तिम अभिवादन है। मेरी इतनी ही आपसे प्रार्थना है जो आपको बताना चाहता हूँ कि कोई भी किसी राजपूत से उसकी तीन चीजों के पाने की अभिलाषा न करे। उन तीनों चीजों में उसका—पहला घोड़ा है, दूसरी उसकी स्त्री है और तीसरी उसकी तलवार है।"

इतना कहने के बाद राव देवा वहाँ पर रुका नहीं। वह तेजी के साथ दिल्ली से रवाना हुआ और पठार पहुँच गया।

राव देवा ने बंबावदा का अधिकार अपने बड़े लड़के हरराज को पहले ही सौंप दिया था। इसलिये वह वहाँ पर नहीं गया और बुन्दानाल की तरफ रवाना हुआ। इसी स्थान पर उसके एक पूर्वज ने अपने एक कठिन रोग से मुक्ति पायी थी। राव देवा वहाँ पर पहुँच गया। यहाँ पर मीना

* हरराज के बारह लड़के पैदा हुये। हालू हाडा उनमें सबसे बड़ा था बम्बावदा का अधिकार उसी को मिला था। पठार के चौबीस दुर्गों पर उसका अधिकार था।

यज्ञ के कार्य को असुर और दानव बड़ी गम्भीरता से देख रहे थे और उनके अग्नि-कुण्ड के बहुत समीप खडे थे। यज्ञ का कार्य समाप्त होने पर चारो शूरवीर क्षत्री दानवो के साथ युद्ध करने के लिए भेजे गये। उन चारो क्षत्रियो ने उनके साथ भीषण किया। क्षत्रियो के द्वारा जो असुर और दानव कट-कट कर जमीन पर गिरते थे, उनके निकलने वाले रक्त से नवीन असुर और दानव पैदा होकर युद्ध करने लगते थे। इससे उस कभी अन्त होने का अनुमान नही लगाया जा सकता था। इस दशा मे चारो क्षत्रियो की कु ने युद्ध-क्षेत्र मे प्रवेश किया और घायल होकर गिरने वाले असुरो एवम् दानवो के रक्त आरम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके रक्त से जो नये असुर और दानव पैदा थे, उनका उत्पन्न हो जाना बन्द हो गया। इसलिये युद्ध करने वाले असुरो और दानवो हो गया।

चारो क्षत्रियो की जिन कुल देवियो ने युद्ध-क्षेत्र मे पहुँचकर असुरो और दानवो के पान किया था, उनके नाम इस प्रकार पढ़ने को मिलते हैं :

चौहान की कुलदेवी ...
परिहार की कुलदेवी ... गा
सोलकी की कुलदेवी ... क्यू
प्रमार की कुलदेवी ...

असुरो और दानवो का अन्त हो जाने के बाद देवताओ ने आकाश मे जयध्वनि की से फूलो की वर्षा की गयी। इसके बाद स्वर्ग लोक से देवताओ ने आकर विजयी क्ष प्रशसा की।

क्षत्रियो के छत्तीस वंशो मे अग्नि वश सबसे श्रेष्ठ है। क्योकि उनके अतिरिक्त जो वश हैं, वे स्त्रियो के गर्भ से उत्पन्न हुए है। लेकिन जो वश अग्नि से उत्पन्न हुये है, वे श्रे पवित्र है।

चन्द कवि का आश्रय लेकर हमने ऊपर लिखा है कि परशुराम के द्वारा क्षत्री रा मारे जाने पर यज्ञ का जो अनुष्ठान हुआ, उसमे ऐसे क्षत्रियो की उत्पत्ति हुई जो राक्ष दानवो का नाश कर सके। हमे इसके सम्बन्ध मे किसी प्रकार का तर्क नही करना चाहिये। आवश्यकता भी नही है। लेकिन चन्द कवि ने अपने ग्रन्थ मे जो दस प्रकार का वर्णन उसमे सत्य है, परन्तु उस सत्य को इतिहास का रूप नही दिया गया। एक इतिहासकार को बात का अनुसधान करना ही पडेगा कि क्षत्रिय राजाओ के अभाव मे बढती हुई अरा नष्ट करने के लिए और अत्याचारियो को निर्मूल करने के लिये जो चार शूरवीर क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न किये गये, वे कौन थे। उस समय का इतिहास यह था कि अच्छे शासको रूप से अभाव था और उस अभाव मे शासन का नियंत्रण नही रहा था। इसीलिये सभी प्र अशान्ति और अव्यवस्था पैदा हो गयी थी। उस समय विश्वामित्र को चिन्तित होकर उस अनुष्ठान करना पडा। उस समय जो लोग पैदा हुये और समाज के अधिकारियो के द्वारा हुये, वे या तो यहाँ के आदिम निवासी रहे होंगे अथवा वे कोई विदेशी थे। उनकी शक्ति समझकर ब्राह्मणो ने उनको शासन के अधिकारियो के रूप मे स्वीकार किया। इन दो के किसी तीसरे की कल्पना नही की जा सकती। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि वे कौन थे ? निर्णय आसानी के साथ किया जा सकता है। यहाँ के आदिम निवासियो की शारीरिक और बनावट के साथ यदि विदेशियो की तुलना की जाय तो समझ मे आ सकता है कि वे

अरसठवाँ परिच्छेद

बूँदी राजधानी की प्रतिष्ठा—मीना लोगो की स्वतन्त्र भावनाये—मीना लोगो की पराजय—राजपूतो की एक पुरानी प्रथा—बूँदी के सिंहासन पर नापाजी—मीनो की पराजय—कोटा के नाम की उत्पत्ति—ससुर और दामाद मे असन्तोष—ससुर के अपराध का बदला पत्नी से—अपमानित पत्नी की पिता से शिकायत—उसका परिणाम—सामन्त की राजभक्ति—अलाउद्दीन के आक्रमण के कारण चित्तौर की निर्बल शक्तियाँ—चित्तौर राज्य के अवसरवादी सामन्त हामा जी और चित्तौर के राणा में सघर्ष—बूँदी राज्य को अधीनता मे लाने की चेष्टा—बूँदी-राज्य पर आक्रमण—राणा की पराजय—राणा की प्रतिज्ञा—उसके मन्त्रियो की चिन्ता—हाड़ा राजपूत मे जातीय स्वाभिमान—चित्तौर पर पठानो का आक्रमण।

सन् १३४२ ईसवी में रावदेवा ने बूँदी राजधानी की प्रतिष्ठा की। उसके बाद उसका राज्य हाड़ौती के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहाँ पर राव देवा के हाडा वश के जो लोग रहते थे, उनकी अपेक्षा मीना लागो की सख्या बहुत अधिक थी। उन लोगो ने रावदेवा की अधीनता स्वीकार कर लिया था, लेकिन उनकी स्वतन्त्र भावनाये बराबर काम करती रहती थी। इस बात को रावदेवा समझता था। उन्ही दिनो मे मीना जाति के एक सरदार ने रावदेवा की लडकी के साथ विवाह करने का इरादा किया और उसने इस विवाह का प्रस्ताव भी रावदेवा के पास भेजा। असभ्य मीना जाति के सरदार के इस प्रस्ताव को सुन कर रावदेवा ने अपना अपमान अनुभव किया। विवाह के इस प्रस्ताव को लेकर मीना लोगो के साथ रावदेवा का एक विवाद उत्पन्न हुआ।

रावदेवा इस बात को समझता था कि मीना लोगो के अहकार का कारण यह है कि उनकी सख्या राज्य मे अधिक है। इसलिए उसने समझ-बूझ कर बबावदा से हाड़ा जाति के और टोडा से सोलकी वश के बहुत से लोगो को बुलाया। उनके आ जाने के बाद मीना और ओसारा लोगो पर एक साथ आक्रमण किया और भयानक रूप से उनका विनाश किया। इस आक्रमण मे दोनो जातियो के लोग अधिक सख्या मे मारे गये।

रावदेवा ने अपना पहला राज्य बडे लडके हरराज को सौप दिया था और उसके बाद वह दिल्ली चला गया। इसके बाद लौटकर अपने उस राज्य मे नही गया। इन दिनो मे उसने अपना बूँदी का राज्य छोटे लडके समरसी को सौप दिया। दूसरी बार उसने राजा का अधिकार छोटे लडके को क्यो दे दिया, इसको समझने के लिये कोई भी सामग्री हमको नही मिली। लेकिन अनुमान से मालूम होता है कि मीना और ओसारा जाति के लोगो के दमन करने के बाद उसने अपने बुढापे की अवस्था का अनुभव किया। इसलिए उसने शासन करने की अपनी अभिलाषा को परित्याग करके बूँदी राज्य का अधिकार छोटे लडके को दे दिया। इसके बाद वह बूँदी छोडकर वहाँ से पाँच कोस की दूरी पर अमरथून नामक एक स्थान पर चला गया और वही पर जाकर वह रहने लगा। इसके बाद वह लौटकर फिर कभी न तो बबावदा गया और न बूँदी राज्य ही गया। राजपूतो की यह प्रथा बहुत पुरानी है कि जब राजा बृद्ध हो जाता है तो वह राज्य का भार उत्तराधिकारी पुत्र को सौप कर राजधानी से चला जाता है। मृत्यु के बाद जिस प्रकार बारह दिन अपवित्रता के मनाये जाते है, राजा के राजधानी से चले जाने के बाद उसी प्रकार बारह दिन

बूँदी का इतिहास

मैहकावती के एक राज वशज ने—जिसका नाम अजयपाल था—अजमेर राज्य की की थी और वहाँ पर उसने तारागढ नाम का एक बहुत मजबूत दुर्ग बनवाया। प्राचीन मे अजयपाल का नाम भारतवर्ष मे आज तक प्रसिद्ध है। प्राचीन ग्रन्थो से साफ प्रकट हो वह एक चक्रवर्ती राजा था। लेकिन उसके शासन के समय का ग्रन्थो मे कोई उल्लेख नही पाली भाषा में लिखे हुये जो शिला लेख हमको मिले है, उनका हम कोई लाभ नही उठा सके सिह मैहकावती से अजमेर आया था। उसके आने का कोई स्पष्ट उल्लेख नही मिलता। परन्त आने का कारण यह मालूम होता है कि राजा के पुत्रहीन होने की अवस्था मे वह अजमेर मे था। उसकी स्त्री से चौबीस लडके उत्पन्न हुए। उन दिनो मे वहाँ पर बहु विवाह की प्रथा न थी। माणिकराय उसके चौबीस पुत्रो मे से एक का वशज था और वह सन् ६८५ अजमेर एवम् साँभर का अधिकारी हुआ। कहा जाता है कि माणिकराय के समय से चौ इतिहास को अन्धकार से मुक्ति मिली।

सन् ६८५ ईसवी के दिनो मे से पहले पहल मुसलमानो ने राजपूताने मे प्रवेश किया समय दुर्लभ अथवा दूलेराय अजमेर के सिहासन पर था। मुसलमानो के साथ युद्ध में व गया। उसका इकलौता सात वर्ष का वेटा दुर्ग के ऊपर खेल रहा था। शत्रुता के द्वारा उस मृत्यु हुई। दुर्लभराय ने रोशन अली नाम के एक इस्लाम धर्म प्रचारक के साथ अन्याय उसने अली का अँगूठा कटवा लिया था। इसके बाद वह मक्का चला गया और वहाँ प मूर्ति पूजक राजपूतो के विरुद्ध उसने बहुत-सी बाते कही। उनसे उत्तेजित होकर मुसलमानो ने के रास्ते से अजमेर में पहुँचकर आक्रमण किया और दुर्लभराय तथा उसके लड़के को मुसलमानो ने गढ बीटली पर अधिकार कर लिया। इस युद्ध का वर्णन कहाँ तक सही है, कहा जा सकता। उसके सम्बन्ध मे एक दूसरी घटना भी पढने को मिलती है। उससे यह होता है कि उन्ही दिनो मे खलीफा उमर ने मुसलमानो की एक फौज सिन्ध मे भेजी थी। अ उस सेना का अधिकारी था। आलोर पर अधिकार करने के समय अबुलयास मारा गया। होता है कि उसके बाद मुसलमानो की उत्तेजित फौज ने मरुभूमि मे जाकर राजपूतो पर किया।

किसी भी परिस्थिति मे अजमेर का अधिकारी दुर्लभराय मारा गया और अजमेर पर का अधिकार हो गया। इस घटना को चौहान कभी भूल न सके और उसके स्मारक के रूप मे अब तक दुर्लभ राय के स्वर्गीय पुत्र लौठ की पूजा करते है। चन्द कवि के अनुसार, दुर्लभरा उत्तराधिकारी वेटा लौठदेव जेठ महीने के बारहवी तिथि सोमवार के दिन मरा था।

मुसलमानो के आक्रमण करने और दुर्लभराय के मारे जाने पर माणिकराय बडे सं पड गया। अपने प्राणो की रक्षा करने के लिए वह अपने नगर से भाग गया। उस समय शाक देवी के उसको दर्शन हुए। देवी ने माणिकराय से कहा—"तुम इस स्थान पर अपना राज्य करो और अपने घोडे पर बैठकर तुम जितनी दूर जा सकोगे, उतनी दूर तक तुम्हारे र सीमा का विस्तार होगा। लेकिन इस बात का स्मरण रखना कि जब तक तुम लौटकर इस पर न आ जाओ, घोडे पर चढकर जाने के समय तुम किसी समय अपने पीछे की तरफ न देखन

देवी के आशीर्वाद को सुनकर माणिकराय उस स्थान से अपने घोडे पर बैठ कर र हुआ। कुछ दूर निकल जाने के बाद वह देवी की आज्ञा को भूल गया। उसने अपने पीछे की

रानी ने बडी सावधानी के साथ तीन सौ अत्यन्त सुन्दर हाडा जाति के युवकों को स्त्रियों के वेष में सजाकर तैयार कर लिया । होली खेलने का समय पहले से ही निर्धारित हो गया था । समय आते ही युवतियो का वेष धारण किये हुये तीन सौ युवक अपने हाथो मे अबीर लेकर धात्री के साथ रानी के महल से बाहर निकले और कोटा मे जाकर पठानो पर अबीर फेकने लगे, धात्री के साथ रानी के वेष धारण किये हुए भोनङ्गसी भी था । उसने पठानो के सरदार केसरखाँ के पास आते ही—जैसा पहले से निश्चित था अपने हाथ का अबीर-पात्र उसके मुख पर जोर से साथ पटका । उसी समय हाडावश के तीन सौ युवको ने युवतियो का वेष फेककर बडी तेजी के साथ कमर मे छिपी तलवारे निकालकर पठानो का सहार करने लगे । उस आक्रमण में केसरखाँ अपने बहुत-से शूरवीर पठानो के साथ मारा गया और उसके बाद भोनङ्गसी ने कोटा पर अधिकार कर लिया ।

समरसी के मृत्यु के बाद नापा जी बूंदी के सिंहासन पर बैठा, टोडा के सोलङ्की राजा की लडकी के साथ उसका विवाह हुआ था । वह सोलङ्की राजा अनहिलवाडा के प्राचीन नरेशो का वशज था ! टोडा की राजधानी मे सगमरमर का एक बहुमूल्य पत्थर था, नापाजी को वह बहुत पसन्द आया । इसलिए उसने अपनी स्त्री से कहा कि वह अपने पिता से उस पत्थर को माँग ले । उसके कहने के अनुसार उसकी स्त्री ने अपने पिता से उस पत्थर को माँगा । सोलङ्की राजा ने उसे देने से इनकार किया और उत्तर देते हुए उसने कहा—"इस प्रकार नापाजी की माँग एक दिन हमारी स्त्री के लिये भी हो सकती है ।" इस तरह उत्तर देने के बाद उसने चाहा कि नापाजी टोडा राज्य मे चला जावे ।

नापाजी को इस प्रकार की बातो से अपना अपमान मालूम हुआ । लेकिन उसने उसे उस समय जाहिर नही किया । वह टोडा छोडकर अपनी राजधानी चला आया और इस घटना के परिणाम स्वरूप वह अपनी रानी से घृणा करने लगा । उसने उसके साथ सभी प्रकार के व्यवहारो का अन्त कर दिया । नापाजी के इस व्यवहार को देखकर उसकी रानी को बहुत दुख हुआ । उसने इस प्रकार की सभी बाते अपने पिता के पास कहला भेजी ।

सावन महीने का तीसरा दिन राजस्थान मे कजली तीज के नाम से प्रसिद्ध है । इस दिन वहाँ के सभी राजपूत अपनी स्त्रियो से भेट करने जाते हैं । इसलिए नापाजी ने अपने सभी सरदारो और सामन्तो को अपने-अपने नगरो में जाने की आज्ञा दी । ऐसी दशा मे बूंदी राजधानी सरदारो और सामन्तो से खाली हो गयी । यह अवसर पाकर सोलङ्की रानी का भाई टोडा का राजकुमार छिपे-तौर पर बूंदी राजधानी मे रात के समय आया और महल मे जाकर नापाजी को मार डाला । इसके बाद वह तुरन्त अपने आदमियो के साथ बूंदी राजधानी से चला गया ।

कजली तीज का त्योहार मनाने के लिये जितने भी सामन्त अपने परिवारो के साथ बूंदी से बिदा हुए थे, उनमे एक सामन्त की स्त्री बीमार थी । इसलिये वह सामन्त अपने नगर नही पहुँचा और बूंदी के बाहर एक रास्ते मे बैठकर वह अफीम का सेवन कर रहा था । इसी समय टोडा का राजकुमार नापाजी को मारकर अपने सैनिको के साथ उस मार्ग से बाते करता हुआ जा रहा था । उस सामन्त ने उसकी बातो को सुना । वह तुरन्त उत्तेजित हो उठा और अपनी तलवार लेकर नापाजी का सहार करने वाले टोडा राजकुमार पर उसने आक्रमण किया । सामन्त की तलवार से राजकुमार का एक हाथ कटकर नीचे गिर गया । टोडा के सैनिको ने राजकुमार को लेकर वहाँ से भागने की कोशिश की । राजकुमार के कटे हुए हाथ को अपने दुपट्टे मे बाँधकर सामन्त उसी समय बूंदी राजधानी आया ।

राजधानी मे पहुँचकर सामन्त को मालूम हुआ कि नापाजी के मारे जाने से राजमहल में

बूँदी का इतिहास

जागा नामक ग्रन्थ मे माणिकराय से लेकर वीसलदेव तक ग्यारह राजाओ के उल्लेख मिलता है। उसमे हर्षराज के बल-पौरुष की प्रशंसा जागा तथा हमीर रासा ना विशेष रूप से की गयी है। हर्षराज का प्रताप अर्बली के शिखर से लेकर आबू के शिखर पूर्व मे चम्बल नदी तक फैला हुआ था। उसने सम्वत् ८१२ से ८२७ तक शासन किय उसने आश्चर्य जनक पराक्रम का प्रदर्शन करके अन्त मे अपने प्राणो की आहुति दी फरिश्ता में लिखा है कि एक सौ तैंतालीस हिजरी मे मुसलमानो की संख्या बहुत बढ गयी बडी सख्या मे उन्होने पर्वत से आकर किरमान, पेशावर और दूसरे अनेक प्रसिद्ध अधिकार कर लिया। अजमेर के राजा का वशीय लाहौर मे शासन करता था। उसने इ के विरुद्ध युद्ध करने के लिए अपने भाई को भेजा। उसके साथ काबुल के खिलजी और के लोगो ने मिलकर अफगानो के साथ युद्ध किया। लेकिन अन्त में उनको इस्लाम धर्म लेना पडा। पाँच महीने के समय में राजपूत घबराकर और परास्त होकर भाग शीतकाल के दिन व्यतीत हो जाने पर राजपूतो ने नयी सेना के साथ फिर से युद्ध की और राजपूतो की सेना पेशावर के मध्यवर्ती स्थानो मे पहुँच गयी। दोनो तरफ से फि संग्राम आरम्भ हुआ। उस युद्ध मे कभी राजपूत विजयी होकर अफगान सेना को पर कोहिस्तान तक अधिकार कर लेते और कभी अफगानी फौज राजपूतो को पराजित हटा देती।

अजमेर का राजा इन युद्धो में कभी शामिल हुआ था अथवा नही, इसका कोई उ पूतो के ऐतिहासिक ग्रन्थो मे नही मिलता। हमीर रासा मे लिखा है कि हर्षराजा के बाद अथवा दुर्जदेव सिहासन पर बैठा था। दुजगनदेव ने नासिरुद्दीन नामक मुस्लिम सेनापति पराजित करके उसके बारह सौ घोडे अपने अधिकार में कर लिए थे। महमूद के पिता सु दूसरा नाम नासिरुद्दीन था। अलप्तगीन के पन्द्रह वर्षों के शासन मे सुबुक्तगीन अनेक बार पर आक्रमण करने के लिए आया था।

इसके बाद बीसलदेव के समय तक की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना नही ि बीसलदेव के पिता का नाम, हाडा जाति की वंशावली के अनुसार, धर्मगज था। परन्तु वंशावली मे बेलनदेव नाम लिखा गया है। अनुसधान करने से पता चलता है कि उसका नाम बेलदेव था। वह धार्मिक मनुष्य था, इसीलिए उसको धर्मराज की उपाधि मिली थी। विजय स्तम्भ मे एक प्रस्तर पर लिखा हुआ जो कुछ पढने को मिला है. उससे भी इ समर्थन होता है। सुलतान महमूद ने अन्तिम बार जब भारत पर आक्रमण किया था, वेलनदेव सिंहासन पर था। उसने युद्ध करके सुलतान महमूद को पराजित किया था और से भगा दिया था। परन्तु वह भी उस युद्ध मे मारा गया।

गोगा चौहान नामक एक लडका बच्चा राजा का था। उसने बहुत गौरव और सतलज से हरियाना तक समस्त विस्तृत जाँगल भूमि को उसने अपने अधिकार मे था। सतलज नदी के किनारे महलावा 'गोगा की भैडी' नामक उसकी राजधानी थी महमूद के आक्रमण से अपनी राजधानी को सुरक्षित रखने के लिए गोगा चौहान ने भ किया था और अन्त में अपने पैंतालीस लडको और साठ भतीजो के साथ वह यु गया। राजस्थान के छत्तीस वंशी राजपूत उसकी मृत्यु के दिन उसकी समाधि-मन्दिर

हामा जी के साथ राणा का पत्र-व्यवहार चलता रहा। हामा जी को उत्तर देते हुए राणा ने लिखा : "कुछ दिनो के बाद हमारा राज्य निर्बल हो गया था। लेकिन कोई भी हमारे राज्य के नगरो और ग्रामो पर बल पूर्वक अधिकार नही कर सका। इसलिये बूंदी राज्य को चित्तौर की अधीनता स्वीकार करनी पडेगी।"

हाडा राजा हामा जी ने सभी प्रकार राणा की अन्तिम बातो पर विचार और परामर्श किया और अन्त मे उसने स्वीकार किया कि दशहरा और होली के अवसर पर सेना के साथ बूंदी का राजा चित्तौर मे उपस्थित हुआ करेगा। अभिषेक के समय राणा को बूंदी मे राजतिलक करने का अधिकार होगा। परन्तु दूसरे सामन्तो की तरह बूंदी का राजा चित्तौर की अधीनता के नियमो का पालन नही कर सकता।

हामा जी के इस उत्तर से राणा को सन्तोष नही मिला इसलिये उसने हामा जी को अधीन बनाने और रावदेवा के वश को पठार-राज्य से अलग करने का निर्णय किया। बूंदी के राजा हामा जी ने राणा के इस निर्णय को जाना। वह जरा भी भयभीत नही हुआ और साहस पूर्वक सभी परिस्थितियो मे उसने अपनी स्वाधीनता की रक्षा करने का निश्चय किया।

चित्तौर का राणा अपने सामन्तो की सेनाओ के साथ अपनी सेना लेकर बूंदी पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। बूंदी के निकट पहुँच कर निमोरिया नामक स्थान पर उसने मुकाम किया। चित्तौर की सेना के आने का समाचार पाकर हामा जी ने तुरन्त युद्ध की तैयारी की। उसने अपने वश के पांच सौ शक्तिशाली वीरो की सेना को तैयार किया और वे सभी लाल रङ्ग के वस्त्र पहनकर राजधानी से युद्ध के लिये रवाना हुए। भयानक रात का समय था, बिना किसी प्रकार की सूचना दिये हुए पाँच सौ शूरवीर हाडा लोगो ने एकाएक चित्तौर की सेना पर आक्रमण किया। उस समय के भयानक संहार को देखकर राणा घबरा उठा और वह अपनी रक्षा के लिये चित्तौर भाग गया। हाडा राजपूतो के द्वारा बहुत-से सीसोदिया सैनिक और चित्तौर के सामन्त मारे गये। बचे हुये राणा के सैनिक युद्ध से भाग गये। विजयी हामाजी बूंदी राजधानी लौट गया।

हाडा वश के थोडे से राजपूतो से पराजित होकर चित्तौर पहुँच जाने के बाद राणा ने अपना अपमान अनुभव किया और बूंदी के राजा से इस अपमान का बदला लेने के लिये उसने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं बूंदी पर अपना अधिकार न कर लूंगा, अन्न-जल ग्रहण न करूंगा। राणा की इस प्रतिज्ञा को सुनकर उसके मन्त्री और सामन्त घबरा उठे। बूंदी राजधानी चित्तौर से साठ मील की दूरी पर थी और शूरवीर हाडा राजा उसकी रक्षा के लिये तैयार था। इस दशा मे चित्तौर के मन्त्रियो और सामन्तो ने सोचा कि इतनी जल्दी बूंदी को पराजित करना किसी प्रकार सम्भव नही है। इसलिये राणा ने जो प्रतिज्ञा की है वह किसी प्रकार सङ्गत नही मालूम होती।

राणा की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध मे चित्तौर के मन्त्रियो और सामन्तो ने बडी गम्भीरता के साथ परामर्श किया। उनकी समझ मे राणा की यह प्रतिज्ञा अत्यन्त भयानक मालूम हुई, इसलिये कि बिना अन्न-जल ग्रहण किये मनुष्य कितनी देर तक जीवित रह सकता है, इतने थोडे समय मे चित्तौर से बूंदी का साठ मील लम्बा रास्ता पार करना भी सम्भव नही मालूम होता। इसलिए उन लोगो ने आपस मे यह निर्णय किया कि राणा की इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये कोई उपाय निकालना चाहिए। इस आधार पर उन सभी लोगो ने मिलकर एक निर्णय किया और राणा से प्रार्थना की कि हम लोग चित्तौर मे एक कृत्रिम बूंदी का निर्माण करते हैं। आप अपनी सेना लेकर उसके दुर्ग पर अधिकार करके अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कीजिये।

मुकाम किया और अपने अधिकारी सामन्त राजाओ को सेना के लिए सदेश भेजा। मन्दोर सिह परिहार ने सेना के साथ वहाँ आकर वीसलदेव की बन्दना की। × उसके बाद ग… के साथ पाबासर और मेवात के राजा मेव के साथ गौड जाति के राम और दूसरे द्रोणपुर के मोयल राजा ने कर भेजकर अपने न आ सकने के लिए क्षमा प्रार्थना की। जोडे हुए वालोज राजा आया। वासूनी के राजा ने सिन्ध मे तैयारी की और वहाँ पर आ भटनेर से नजर आयी। ठट्ठा और मुलतान से नालबली आकर उपस्थित हुए। देराबर और भट्टी लोग वहाँ आकर एकत्रित हुये। मालन-वाम के यादव भी वहाँ पर आए। मौ और अन्तर्वेद के कछवाहा लोग भी वहाँ पर पहुँच गये। मीरा लोगो ने आकर वीसलदेव की बन्दना की। तख्तपुर की सेना वहाँ पर आकर उपस्थित हुई। निर्माण, और दाहिमा के राजाओ के साथ उदय, प्रमार आदि राजा लोग अपने घोडो पर बैठक पहुँच गये।

चन्द कवि ने आने वाले राजाओ मे चित्तौर के गहिलोत राजा का भी उल्लेख चित्तौर का राजा अजमेर के राजा के साथ मैत्री का सम्बन्ध रखता था। उस समय चित्त सन पर तेजसिह था। बारहवी शताब्दी मे वीसलदेव के वशज दिल्ली के राजा पृथ्वीर तेजसिह के पौत्र समरसिह की मित्रता थी और तेजसिह ने जिस प्रकार वीसलदेव का था, समरसिह ने भी पृथ्वीराज का साथ देकर अनहिलवाडा के राजा के विरुद्ध युद्ध किया सिह सवत् ११२० सन् १०६४ ईसवी मे चित्तौर के सिंहासन पर बैठा और वह वीसलदेव मुसलमानो के साथ युद्ध करने के लिये गया।

राजा वीसलदेव का संदेश पाकर तोवर राजा भी गया था। इससे जाहिर होत भी उसकी अधीनता मे था। मेवात की मेव जाति ने बाद मे इस्लाम धर्म स्वीकार कर गौड़ जाति ने उन दिनो मे विशेष प्रसिद्धि पायी थी और चौहानो के सामन्त राजाओ विशेष स्थान था। बालोच वश के लोगो ने भी उस युद्ध के बाद इस्लाम धर्म स्वीका था। वासुनी वश का उल्लेख दूसरे स्थानो पर मनवासा के नाम से किया गया है। इ नाम देवल था। उससे कुछ दूरी पर ठट्ठा नगर बसा हुआ है। मुलतान और नालबनी चौहानो का उस समय शासन था। मीर लोग अर्वली पर्वत के शिखर पर रहा करते थे का आधुनिक नाम टोडा है। यह टोक के समीप बसा हुआ है। डोड और चन्देल वश ने उन दिनो मे बहुत प्रसिद्ध पायी थी। चन्देलो ने किसी समय पृथ्वीराज के साथ और पृथ्वीराज ने चन्देलो से महोबा, कालिन्जर एवम् सम्पूर्ण बुन्देल खण्ड लेकर अपना अ लिया था। दाहिमा बियाना के राजा का नाम है। वह धरणीधर के नाम से भी प्रसिद्ध का अभिप्राय उदयादित्य से है। उसने इस देश मे बहुत गौरव प्राप्त किया था।

माणिकराय से लेकर चौहान सम्राट पृथ्वीराज तक जितने प्रमुख राजाओ के नामो मिलता है, उनमे वीर वीसलदेव का नाम अधिक प्रसिद्ध है। इसलिये उसके समय का यहाँ पर आवश्यक मालूम होता है। उस समय का कोई भी उल्लेख करने के पहले चौ वशावली नीचे दी जाती है :

× इससे प्रकट है कि परिहार लोग अजमेर के चौहानो की अधीनता मे थे।

उपकार, शौर्य और चातुर्य के लिये राजस्थान मे राव भांडा का नाम अब तक प्रसिद्ध है। लोगो का कहना है कि उसमे परोपकार की भावना इतनी अधिक थी, जितनी दूसरो मे बहुत कम देखने को मिलेगी। सन् १४८६ ईसवी मे एक भयानक दुर्भिक्ष राजस्थान मे पड़ा था। राव भांडा ने अकाल के उन दिनो मे अन्न और धन से लोगो की सहायता करके अमर कीर्ति पायी थी। वहाँ के एक ग्रन्थ मे पढने को मिलता है कि सन् १४८६ से एक वर्ष पहले बूँदी के राजा राव भांडा ने एक स्वप्न देखा था। उसमे उसने देखा कि एक भयानक अकाल पड़ा हुआ है और एक काले भैंसे पर बैठा हुआ अकाल उसके सामने आकर उपस्थित हुआ। राव भांडा ने उसे देखकर अपनी ढाल और तलवार उठायी और उस अकाल पर आक्रमण किया। यह देख कर अकाल ने कहा—"मैं दुर्भिक्ष हूँ। मेरे ऊपर तुम्हारी तलवार का कोई प्रभाव न पड़ेगा। तुमको छोड़कर और किसी ने आज तक मुझ पर कभी आक्रमण नही किया। इसलिये मैं तुमसे जो कुछ कहना चाहता हूँ उसे ध्यान पूर्वक सुनो—मैं आगामी वर्ष सन् १४८६ में आऊँगा। उस वर्ष सम्पूर्ण भारत में अकाल पड़ेगा। तुम अभी से धन और अनाज एकत्रित करने की कोशिश करना और दुर्भिक्ष पड़ने पर तुम सबकी सहायता करना।"

यह कहकर अकाल अन्तर्ध्यान हो गया। उसके बाद राव भांडा का स्वप्न भङ्ग हुआ। वह बड़ी देर तक अपने स्वप्न पर विचार करता रहा। अकाल के उपदेश के अनुसार उसने अन्न और धन एकत्रित करने का कार्य आरम्भ किया और उस वर्ष के अन्त तक वह बराबर अनाज संग्रह करता रहा। दूसरे वर्ष में बरसात न हुई। उसके कारण सम्पूर्ण देश मे अकाल पड़ गया।

राव भांडा ने पहले से ही सभी प्रकार का अनाज एकत्रित किया था। उसने अकाल के दिनो में अनाज देकर लोगो की सहायता की। दुर्भिक्ष से पीड़ित दूसरे राज्यो के नरेशो ने उससे अनाज की सहायता माँगी। राव भांडा ने उनको भी अनाज की सहायता की। उस दुर्भिक्ष में अकाल के कारण बहुत से आदमियो की मृत्यु हुई। परन्तु बूंदी राज्य मे किसी को खाने-पीने का अधिक कष्ट नहीं मिला। राव भांडा के इस प्रकार के स्मारक मे बूँदी राज्य मे अब तक लङ्गर का गूगरी नाम से दीनो और दरिद्रो को अनाज बाटा जाता है।

राव भांडा यद्यपि परम दयालु और परोपकारी था परन्तु जीवन की कठिनाइयो से उसे भी छुटकारा न मिला। समरसिंह और अमरसिंह नाम के दो भाई उससे छोटे थे। इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने के कारण वे दिल्ली के बादशाह को प्रिय हो गये थे। उन दोनो भाइयो ने बादशाह की सेना लेकर बूँदी राज्य पर आक्रमण किया। राव भांडा ने शक्ति-भर उस सेना के साथ युद्ध किया। लेकिन बादशाह की फौज बहुत कम होने के कारण राव भांडा की पराजय हुई। वह अपने राज्य से भागकर मातोदा नामक स्थान पर चला गया और वहाँ के पर्वत शिखर से गिरकर उसने प्राण दे दिये। राव भांडा ने इक्कीस वर्ष तक शासन किया। समरसिंह और अमरसिंह ने इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद अपने नाम बदल दिये थे और समरकन्दी तथा अमरकन्दी के नामो से उन दोनो ने ग्यारह वर्ष तक बूँदी-राज्य मे शासन किया।

राव भांडा के दो लड़के थे। एक का नाम था नारायणदास और दूसरे का नाम नरबद था। नरबद मातोदा ग्राम का अधिकारी हुआ। वयस्क होने पर नारायणदास के मनोभावो मे पिता के राज्य का उद्धार करने की भावना उत्पन्न हुई। उसने पठार के समस्त हाडा लोगो को एकत्रित करके कहा: "हमलोग या तो बूँदी राज्य पर अधिकार करेंगे अथवा युद्ध-भूमि मे अपने प्राण त्याग देंगे।"

जयपाल
हर्षपाल
अजयदेव
अथवा
आनन्ददेव
विजयदेव
उदयदेव
सोमेश्वर
कान्हराय
जेतगोयलवाल
ईश्वरीदास
पृथ्वीराज
चाहडदेव
रैनसी
विजयदेयराज
लखनसी
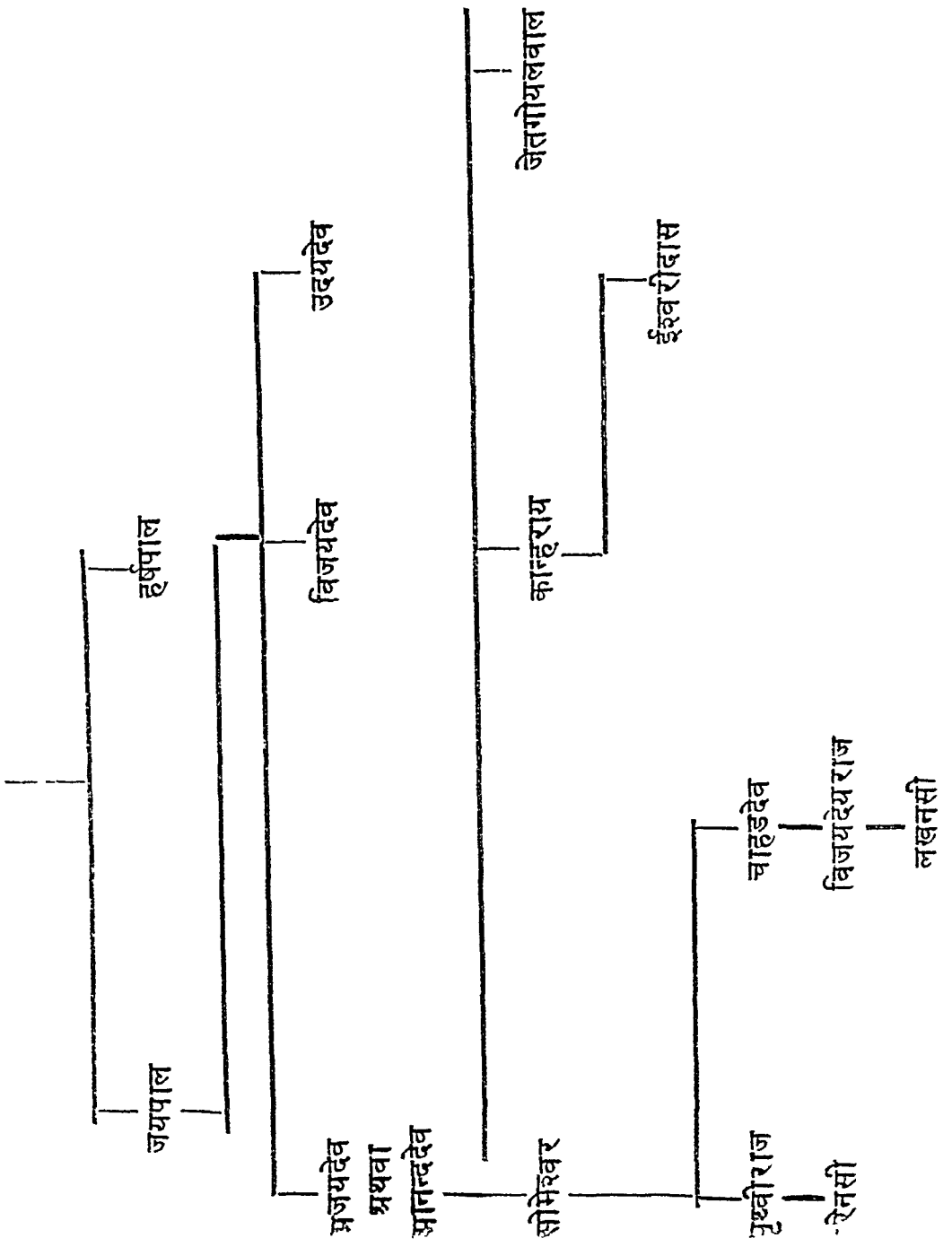
राणा ने नारायणदास को सेना के साथ सहायता के लिये बुलाया। नारायणदास ने चुने हुये पाँच सौ शूरवीरो को अपने साथ लिया और वह चित्तौर की ओर रवाना हुआ।

बूँदी से चलकर पहले दिन उसने मार्ग मे एक स्थान पर विश्राम किया और एक वृक्ष के नीचे अफीम का सेवन करके वह लेट रहा। उसका मुख खुला हुआ था और नेत्र बन्द थे। मक्खियाँ उसके मुख और होठो पर एकत्रित हो रही थी। उसी समय उस रास्ते मे एक तेली की स्त्री कुएँ का जल लाने के लिये होकर निकली और नारायणदास को इस दशा मे लेटे हुये देखकर उसने पास के किसी आदमी से पूछा "यह कौन है ?"

उस आदमी ने उत्तर दिया : "आप बूँदी के राव साहब हैं। चित्तौर के राणा ने अपनी सहायता के लिये राव साहब को बुलाया है।"

उस स्त्री ने ध्यान पूर्वक नारायणदास की तरफ देखा और कहा : "हे भगवान, अपनी सहायता के लिये राणा को और कोई आदमी न मिला।"

कहा जाता है कि अफीम सेवन करने वाले की आँखे बन्द रहती हैं। लेकिन उसको उस समय कानो से अधिक सुनाई देता है। उस स्त्री ने जो कुछ कहा, नारायणदास ने उसे भली प्रकार सुना। उसने अपनी आँखे खोल दी और उठकर उसने उस स्त्री से पूछा "तुम क्या कह रही हो ?"

नारायणदास की इस बात को सुनकर उस स्त्री ने उसकी ओर देखा और उसकी विराट मूर्ति को देखकर वह भयभीत हो उठी। क्षमा माँगने के लिये उसने कुछ कहना चाहा, उसी समय नारायणदास ने कहा : "डरो नही, तुम जो कह रही थी उसे फिर कहो।"

भयभीत हो जाने के कारण वह स्त्री कुछ कह न सकी। उसके हाथ मे मजबूत लोहे की एक मोटी छड थी। नारायणदास ने उसके हाथ से उस छड को ले लिया और उसे पकड़कर इस प्रकार झुकाया कि वह गले मे पहनने की एक हँसली बन गयी। नारायणदास ने उस हँसली को गले में पहनाकर उसके दोनो किनारे एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिला किये कि जिससे वह सिर से उतर न सकती थी। नारायणदास ने उसके गले मे उस हँसली को पहनाकर कहा : "क्या तुम्हें कोई दूसरा आदमी ऐसा न मिलेगा जो तुम्हारे गले से इसको निकाल सके ? यदि मिल सके तो इसे निकलवा लेना, अन्यथा मेरे चित्तौर से लौटने के समय तक तुम इसे पहने रहना।"

पठानो की सेना ने चित्तौर को इस प्रकार घेर लिया था कि उसका कोई भी मनुष्य बाहर आ-जा नही सकता था। पठानो के इस घेरे से राणा के सामने बड़ा सङ्कट पैदा हो गया था। पठार के गूढ मार्ग से होकर अपने पाँच सौ शूरवीरो के साथ रात्रि के समय नारायणदास ने अकस्मात् पठानो के शिविर मे प्रवेश किया और भीषण आक्रमण के साथ पठानो का संहार करना आरम्भ कर दिया। इसी समय आक्रमणकारी पठानो के सेनापति के सामने पहुँच गये। हाडा राजपूतो के संहार से भयभीत होकर पठान लोग शिविर से बाहर की तरफ भागने लगे। इस भगदड मे पठानो का भयानक रूप से संहार हुआ। बहुत-से लोग मारे गये और जो शेष बचे, वे सबके सब शिविर से भाग गये।

चित्तौर के राणा ने प्रात काल होते ही सुना कि बूँदी से राव नारायणदास ने अपनी सेना के साथ आकर रात मे पठानो का संहार किया है और बचे हुए पठान अपने प्राण लेकर भाग गये हैं। यह जानकर राणा रायमल्ल चित्तौर से बाहर निकला और बड़े सम्मान के साथ नारायणदास से मिलकर उसने अपनी प्रसन्नता प्रकट की। इसी समय नारायणदास को लिये हुए रायमल्ल चित्तौर में पहुँचा। जय जयकार के साथ चित्तौर की राजधानी मे नगाड़े बजाये गये। यह बात किसी से

उल्लेखो का यहाँ पर वर्णन करके हम अनावश्यक एक भ्रम नही पैदा करना चाहते। ग्रन्थो, शिला लेखो और दूसरे ऐतिहासिक आधारो को समझकर जो हमने बहुत सही स का हमने ऊपर उल्लेख किया है। शेष सब छोड दिया है।

ऐतिहासिक ग्रन्थो के आधार पर ही यह स्वीकार करना पडता है कि र दिल्ली के तोवर राजा जयपाल सिंह, गुजरात के राजा दुर्लभ और भीम, धार के राज उदयादित्य एवम् मेवाड के राणा पद्मसिंह और तेजसिंह का समकालीन था। वीस मुस्लिम बादशाह के साथ युद्ध की यह तैयारी की थी, वह निश्चित रूप से महमूद रहा किसी विवाद के इसे माना जायगा। वीसलदेव ने उस महमूद को परास्त करके उत्तरी भगा दिया था। राजा बैरान देव और अजमेर के राजा को सेनाओ से हार कर भार बार महमूद सिन्ध की तरफ भागा था। यह युद्ध हिजरी ४१७, सन् १०२६ में हुआ थ को चन्द कवि ने सम्बत् १०८६ लिखा है। लेकिन इन दोनो उल्लेखो मे समय का कोई नही है।

वीसलदेव ने गुजरात के राजा के साथ युद्ध करके विजय प्राप्त की थी और व अपने नाम पर वीसल नगर बसाया था। उसका वर्णन विस्तार के साथ आगामी पृथ्वीराज के शासन के साथ किया गया है। कालिक जुहनेर मे वीसल देव का धोध न जो स्थान था, वह अब तक मौजूद है और वीमल का धोध कहलाता है।

हाडा वश के राजा कवि गोविन्द राम के राज ग्रन्थ मे लिखा है कि वीस अनुराज से हाडा वंश की उत्पत्ति हुई है लेकिन खीची वशो का कवि लिखता है कि अ राय का लडका था और वह खीची वश का आदि पुरुष था। हमने यहाँ पर हाडा कवि किया है।

गोविन्दराम ने लिखा है कि अनुराज को सीमा पर स्थित आसिका—जिसे साँसी भी कहा जाता है—अधिकार प्राप्त हुआ था। अनुराज के लडके अस्थिपाल और के खीचीपुर पाटन के आदि पुरुष अजयराज के लडके अनुगराज ने अपने सौभाग्य लिए गोलकुण्डा के चौहान राजा रणधीर की अधीनता मे जाकर रहने का विचार लेकिन उन्ही दिनो मे कजलीबन के बर्बरो ने एक साथ असि और गोलकुण्डा पर आ चौहान राजा रणधीर ने उनका सामना किया और युद्ध करते हुए वह अपने ल मारा गया। राजा रणधीर के वश मे सुराबाई नाम की उसकी लडकी बच गयी। वह की रक्षा के लिए गोलकुण्डा छोडकर असि की तरफ रवाना हुई। मारे जाने के बाद र के नाम की शाका चली। उन्ही दिनो मे आक्रमणकारियो ने असि पर भी आक्रमण उनके भय से असि का राजा अनुराज भाग गया। लेकिन उसके लडको ने युद्ध और अपने नगर के बाहर जाकर उन्होने आक्रमणकारियो का सामना किया। दोनो नक युद्ध आरम्भ हुआ। उस युद्ध मे अस्थिपाल पूरी तरह से घायल हुआ। परन्तु उसी मणकारी सेना युद्ध-क्षेत्र से भागने लगी। जख्मी अस्थिपाल ने शत्रु सेना का पीछा वह अधिक दूर तक न जा सका और अचेत होकर गिर पडा। इसी समय सुराबा के लिये गोलकुण्डा से आ रही थी। वह भूख, प्यास और पैदल चलने के कारण वृक्ष के नीचे बैठ गई। वह वृक्ष पीपल का था। उसके नीचे सुराबाई मृतप्राय हो इस अवस्था मे चौहानो की कुल देवी आशापूर्णा ने आकर उसको दर्शन दिये। देवी सुराबाई ने उससे अपनी विपद का वर्णन किया और उसने उसको बताया कि वह किस

सामन्त के सिर को काटकर जमीन पर गिरा दिया। उस सामन्त का लडका भी वहाँ पर उपस्थित था। अपने पिता का बदला लेने के लिये वह उत्तेजित हो उठा। परन्तु सूर्यमल्ल को पराक्रमी और भीमकाय देखकर एवम् राणा का निकटवर्ती आत्मीय समझकर उसने अपना क्रोध शान्त किया।

सूजाबाई ने अपने पति और भ्राता को भोजन कराने के लिये अनेक प्रकार की सामग्री बनवाई और तैयार हो जाने पर दोनो को भोजन करने के लिये बुलाया। भोजन करने के लिये रत्नसिंह और सूर्यमल्ल—दोनो महल मे गये। भोजन परोसकर आ जाने के बाद दोनो ने खाना आरम्भ किया। देख-भाल के लिये सूजाबाई स्वय वहाँ पर उपस्थित रही। हिन्दुओ में पति वश की अपेक्षा बन्धु वश की प्रशसा करना लडकियाँ अपना कर्त्तव्य समझती हैं। पिता के वश की यदि कोई निन्दा करता है तो वे किसी प्रकार सहन नही कर सकती। राणा और राव—दोनो के भोजन कर चुकने पर सूजाबाई ने अपने भाई के गौरव को बढाने के लिये कहा : 'मेरे भाई ने सिंह के समान भोजन किया है। लेकिन स्वामी ने भोजन करने के समय एक बालक की तरह प्रदर्शन किया है।"

सूजाबाई के मुख से इस प्रकार की बात को सुनकर राणा ने अपना अपमान समझा और क्रोध मे आकर इसका बदला लेने के लिये वह उत्तेजित हो उठा। परन्तु यह सोचकर कि अतिथि के साथ किसी प्रकार का अशिष्ट व्यवहार करना राजपूत का कर्त्तव्य नही है, वह शान्त हो गया। वह बात ज्यो की त्यो रह गयी।

राव सूर्यमल्ल चित्तौर से बूँदी जाने के लिये तैयार हुआ। उस समय राणा रत्नसिंह ने उससे कहा : "आगामी वसन्त ऋतु मे फाल्गुन के उत्सव के समय हम बूँदी के जङ्गल मे शिकार खेलने के लिये आवेगे।"

राव सूर्यमल्ल ने राणा की इस बात को सुनकर प्रसन्नता प्रकट की।

कुछ दिनो के बाद वसन्त ऋतु मे फाल्गुन का उत्सव समीप आने पर राव सूर्यमल्ल ने राणा के पास आने के लिये निमन्त्रण भेजा। उस निमन्त्रण को पाकर सेना और सामन्तो के साथ राणा रत्नसिंह पठार के रास्ते से बूँदी की तरफ रवाना हुआ। चम्बल नदी के पश्चिमी किनारे नान्दाता नामक स्थान के विस्तृत वन मे शिकार खेला जायगा, यह पहले से ही निश्चय था। उस वन में सिंह से लेकर सभी प्रकार के जङ्गली जानवर थे। राणा के वहाँ पहुँचने पर बूँदी का राजा राव सूर्यमल्ल भी सेना के साथ वहाँ पर आ गया। राव और राणा—दोनो ही शिकार खेलने के लिये चले। दोनो ओर के सैनिको ने शोर-गुल करते हुये जङ्गल मे प्रवेश किया। उनकी आवाजो को सुनकर जङ्गल के सभी जानवर उत्तेजित हो उठे। छोटे-छोटे जङ्गली पशु डर कर जङ्गल मे इधर-उधर भागने लगे।

उस घने वन मे राणा रत्नसिंह ने अपने अपमान का बदला लेने की कोशिश की। राणा और राव जङ्गल मे जहाँ घूम रहे थे, उनकी सेनाओ के सैनिक वहाँ से जङ्गल मे दूर पहुँच गये थे। कान मे सीक डाल देने के कारण बूँदी के राव ने मेवाड के एक पूरविया सामन्त को मार डाला था और उस सामन्त के लडके ने अपने पिता का बदला लेने की प्रतिज्ञा की थी। इस समय जङ्गल मे राणा रत्नसिंह के साथ उस सामन्त का लडका भी था। राणा रत्नसिंह ने सामन्त के लडके को सकेत से बुलाकर कहा : इस अवसर पर क्या बाराह का शिकार करोगे ?"

सामन्त के पुत्र के साथ यहाँ आने के पहले ही बाते हो चुकी थी। सामन्त के लडके ने अपना धनुष लेकर राय सूर्यमल्ल पर एक बाण मारा। राव सूर्यमल्ल ने अपना बाण छोड़कर उसको अस-

बूँदी का इतिहास

"जंगलेश, हम जयचन्द की सेना के साथ युद्ध करेगे, आप अपने लिये आवश्य वनाइये ।"*

राजा जयचन्द ने अपनी लडकी सयोगिता का स्वयंवर किया था । उसमे सम्राट सयोगिता का अपहरण किया । इसके फल स्वरूप जयचन्द और पृथ्वीराज से भीषण युद्ध चन्द के अधीन सभी राजा अपनी सेनाओ के साथ जयचन्द की सहायता में युद्ध करने के उनमे काशी का राजा भी था । युद्ध मे हमीर और गम्भीर ने काशी के राजा पर आ और हमीर ने उस समय इतना भयानक युद्ध किया कि उससे एक बार जयचन्द के प विचलित हो उठी । लेकिन उसके बाद दोनो भाई युद्ध मे मारे गये ।

हमीर के कालकर्ण नाम का एक लडका था । कालकर्ण के लडके का नाम म उससे रावबाचा नामक लड़का पैदा हुआ और रावबाचा के लडके का नाम रामचन्द था

अलाउद्दीन ने जिन राज्यो का विनाश किया था, उनमे रामचन्द का भी एक असीर गढ नामक दुर्ग उसका बहुत मजबूत और सुरक्षित समझा जाता था । लेकिन उस दुर्ग को जीतकर रामचन्द को उसके पूरे परिवार के साथ सर्वनाश किया था । रैनसी नाम का ढाई वर्ष का एक रामचन्द का बालक किसी प्रकार बच गया था । वह ब के राणा का भान्जा था, इसलिए वह राणा के पास, रामचन्द के मारे जाने पर भेज वहाँ रहकर रैनसी बडा हुआ और युद्ध की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उसने अपनी सेना ले पर आक्रमण किया और वहाँ के सरदार डूँगा को भगा दिया ।

भैसरोड पहले मेवाड के राज्य मे शामिल था । अलाउद्दीन के चित्तौर पर आक्रम उसको विध्वस करने के बाद राणा की शक्तियाँ निर्बल पड़ गयी थी । उस समय अवसर भैसरोड पर अधिकार कर लिया था ।

रैनसी× के कोलन और रनफर नामक दो लडके थे । बडा लड़का कोलन रोग से के कारण केदार नाथ की यात्रा करने के लिये चला गया । यह लम्बी यात्रा उसने बिना के पूरा की और छै महीने तक लगातार चलकर वह बूँदी के पास पहुँचा । वहाँ पर इ हुई बाण गगा नामक नदी मे उसने स्नान किया । स्नान करके के बाद उसे अनुभव हुआ आरोग्य हो गया हूँ । उसके बाद वह पठार का राजा हुआ । :-.

यह पठार पहले मेवाड़ के राज्य का एक भाग था । अलाउद्दीन ने चित्तौर करके बहुत से गहिलोतो को मार डाला था । उस सर्वनाश से राणा बहुत निर्बल इस दशा मे वहाँ के प्राचीन निवासी मार लोगो ने मौका पाकर इस पठार पर लिया था ।

किसी समय प्राचीन काल मे प्रमार वश का राजा हूण इस पठार का शासक था मे उसकी राजधानी थी । उस राजधानी मे हूण राजा के समय की बहुत-सी चीजे

* जगलेश, सम्राट पृथ्वीराज की एक उपाधि थी ।

× रैनसी का नाम वश भास्कर मे रतनसिंह लिखा है । इसे कही-कही पर रै गया है ।

:-: पठार मध्य भारत का नाम था । कोलन ने अपने राज्य का दसवाँ भाग को दे दिया था ।

उतार दिया। चम्बल नदी के किनारे एक साधारण ग्राम उसको रहने के लिये दे दिया गया। सुरतान ने उस ग्राम का नाम सुरतानपुर रखा। उसके कोई लड़का न था इसलिये बूँदी के सामन्तो ने आपस मे परामर्श करके बूँदी-राज्य के भूतपूर्व राजा राव भांडा के दूसरे लडके नरबुध के पुत्र अर्जुन को मातोदा से लाकर बूँदी के सिंहासन पर बिठाया।

अर्जुन ने सिंहासन पर बैठकर शासन का कार्य आरम्भ किया। वह साहसी, समझदार, योग्य और युद्ध-कौशल था। राजपूतो मे एक यह आदत पायी जाती है कि उनकी जब किसी के साथ शत्रुता हो जाती है तो वह शत्रुता उनके वशजो तक चली जाती है और वे एक दूसरे को क्षति पहुँचाने मे कुछ उठा नही रखते। चित्तौर के राणा रत्नसिंह और बूँदी के राव सूर्यमल्ल—दोनो आपसी सङ्घर्ष के कारण मरे थे। परन्तु राव अर्जुनसिंह और रत्नसिंह का लडका—जो उसके समय मेवाड़ के सिंहासन पर था—आपस की शत्रुता को भुलाकर प्रेम और सद्भाव के साथ दोनो रहने लगे थे। गुजरात के बहादुरशाह ने जिस समय चित्तौर को घेर लिया था, उस समय जो हाड़ा राजा अपनी सेना लेकर चित्तौर की सहायता के लिये गया था और शत्रु सेना के साथ जिसने युद्ध किया था, वह राव अर्जुन ही था। जिस समय अर्जुन अपने साहस और पराक्रम के साथ चित्तौर के एक बुर्ज की रक्षा मे युद्ध कर रहा था, उस समय बादुरशाह ने उस बुर्ज के नीचे सुरङ्ग तैयार करवाई थी और उस सुरङ्ग मे बारूद भरकर उसने आग लगवा दी थी। अर्जुन के प्राण उस समय भयानक सङ्कट मे पड़ गये थे। लेकिन वह जरा भी विचलित नही हुआ था और अपने हाथ मे तलवार लेकर शत्रुओ का सहार करते हुए उसने वही पर एक सच्चे राजपूत की तरह अपने प्राण दे दिये। हाडा कवि ने अपने ग्रन्थ मे अर्जुन की वीरता का वर्णन करते हुये बहुत अधिक प्रशसा की है।

अर्जुन के चार लडके पैदा हुये थे। उनमे सबसे बडे लडके का नाम सुरजन था और वह सन् १५३३ ईसवी मे अपने पिता के सिंहासन पर बैठा। दूसरे लडके का नाम था रामसिंह। उसके वशज राम हाड़ा नाम से प्रसिद्ध हुये। तीसरे लडके का नाम था अखैराज, उसके वशज अखैराजपोता के नाम से पुकारे गये। सबसे छोटे लडके का नाम था कांदिला। उसके वशज जेसाहाडा नाम से विख्यात हुये।

उनहत्तरवाँ परिच्छेद

बूँदी राज्य मे परिवर्तन—वैदला के चौहान सामन्त के साथ सामन्तसिंह का मेल—बादशाह अकबर के द्वारा रण-थम्भोर के दुर्ग का घेरा—मानसिंह की राजनीति—बादशाह के प्रलोभन—दोनो पक्षो मे सन्धि—दिल्ली की राजधानी आगरा मे—अकबर की लोकप्रिय राजनीति—राजपूत राजाओ की अधीनता—बादशाह की सेना के साथ चन्दा बेगम का युद्ध—बूँदी का राव राजा भोज और बादशाह अकबर—राजा मानसिंह—विष से बादशाह अकबर की मृत्यु खुर्रम और परवेज मे विद्रोह—जहांगीर का सङ्कट—राव रतनसिंह की सहायता—शाहजहां के लडको मे विद्रोह—औरङ्गजेब और छत्रसाल—दिल्ली मे आपसी सङ्घर्ष।

राव सुरजनसिंह के सिंहासन पर बैठने के बाद बूँदी-राज्य मे अनेक प्रकार के राजनीतिक परिवर्तन हुये। वहां के राजाओ ने तब तक स्वतन्त्र शासन किया था और आवश्यकता पड़ने पर

और उसारा जाति के लोग राजा जेता की अधीनता मे रहते थे। उन दिनों वहाँ पर कोई
था। केवल पत्थरो पर चलने के लिए पहाडी घाटियाँ थी। वहाँ के मध्यवर्ती स्थान मे
ने अपने रहने के लिए कुटियाँ बनायी थी। यहाँ के लोग चित्तौर के विध्वस के पहले रा
नता मे रहा करते थे। परन्तु इन दिनो मे राणा की शक्तियाँ निर्बल पड़ गयी थी। इसी
के खीची राजा रावगांगा ने यहाँ पर आकर अधिकार कर लिया था। रावगांगा के
बचने के लिए मीना और उसारा लोगो ने उसको कर देना आरम्भ कर दिया था और
तक वे कर देते रहे। राव देवा ने वहाँ पहुँच कर मीना और उसारा लोगो की इस पर्
समझा। उसने उन दोनो जातियो की सहायता करने का बचन दिया और उसने इस बात
की कि भविष्य मे अब कभी उनको रावगागा से डरने की आवश्यकता न होगी। राव
प्रतिज्ञा को सुनकर उसारा और मीना लोगो ने उसका विश्वास किया और राव-रावगां
पाने के लिए वे लोग प्रतीक्षा करने लगे।

इसके कुछ दिनो के बाद रावगांगा अपनी सेना के साथ कर वसूल करने के लिए
की सीमा पर आया। यही पर मीना और उसारा जाति के लोग आकर उसको कर दिय
उनके न आने पर रावगागा को आश्चर्य हुआ। उन्ही दिनो मे उसने रावदेवा को घोडे
सेना के साथ आते हुये देखा। उसने तुरन्त पूछा · "कौन आ रहा है ?"

प्रश्न के बाद उमे उत्तर मिला · "पठार का राजा आ रहा है।"

राव गागा की सवारी का घोडा भी राव देवा के घोडे से किसी प्रकार कम न था
का जन्म भी उसी प्रकार हुआ था, जिस प्रकार राव देवा के घोडे का। राव गागा अ
चढकर तेजी के साथ पठार नरेश राव देवा की तरफ रवाना हुआ।

कुछ ही समय के बाद दोनो में युद्ध आरम्भ हो गया। उस युद्ध मे पठार के रा
की विजय हुई और राव गांगा युद्ध-क्षेत्र से भाग गया। राव देवा ने रावगांगा के घोडे
करने का विचार किया। वह अपने घोडे पर बैठा हुआ राव गांगा के पीछे रवाना हुआ।
ने घाटी को छोड कर चम्बल नदी मे प्रवेश किया। राव देवा आश्चर्य के साथ उसकी तर
रहा था। उसके देखते-देखते राव गागा चम्बल नदी की दूसरी तरफ निकल गया। यह
देवा ने प्रसन्न होकर उसने पूछा : "राजपूत, मैं आपकी प्रशसा करता हूँ। आपका नाम

अपने प्रश्न मे उत्तर मे राव देवा को सुनायी पडा · "गांगार खीची।'

उसी समय राव देवा ने अपना नाम बतलाते हुए उससे कहा : "हमारा नाम
हम दोनो ही एक ही जाति के है और हम दोनो भाई-भाई है। इसलिए हम दोनो मे
की शत्रुता न होनी चाहिये। यह चम्बल नदी हम दोनो के राज्यो की सीमा है।'

सन् १३४२ ईसवी मे मीना और उसारा लोगो के राजा जैत ने राव देवा को
जूमन्र किया। राव देवा ने बुन्दानाल के मध्यवर्ती स्थान मे बूँदी नामक एक नगर मे
और वह नगर बाद मे हाडा जाति की राजधानी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी समय
बूँदी की सीमा निश्चित हुई थी। परन्तु थोडे ही दिनो के बाद हाडा वश के लोगो ने च+
दूसरी तरफ जाकर बहुत दूर तक अपने राज्य का विस्तार किया और दिल्ली के बादशाह
के साथ मेल करके बूँदी-राज्य की सीमा का विस्तार मालवा तक पहुँचा दिया। उसके
विस्तृत राज्य हाडवती अथवा हाडती के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

———

बादशाह की अधीनता स्वीकार करने के बाद आपको वह सम्मान प्राप्त होगा, जिसकी आप कभी कल्पना नही कर सकते। आपके शासन की मियाद बढ़ेगी और एक विशाल-राज्य की आमदनी के आप स्वतन्त्र अधिकारी होगे। बादशाह का उसमे कोई अधिकार न होगा। लेकिन आप अपनी सेना के साथ बादशाह के आदेशो का पालन करेगे। आप अपनी आवश्यकताओ के सम्बन्ध में जो कुछ प्रार्थना करेगे, बादशाह सम्मान पूर्वक उसे पूरा करेगा। मैं इस प्रकार की बातें आपकी मान-मर्यादा को बढाने के लिये कह रहा हूँ।"

बातचीत मे मानसिंह ने बादशाह की तरफ से अनेक प्रकार के प्रलोभन राव सुरजन के सामने रखे। वह मानसिंह को सजातीय समझता था इसलिये वह मानसिंह की बातो से प्रभावित हुआ और उसने कुछ शर्तों के साथ मानसिंह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। उसी समय दोनो पक्षो के बीच एक सन्धि का होना निश्चय हुआ और राव सुरजन ने बादशाह अकबर के साथ उस समय जो सन्धि की, वह इस प्रकार थी :

(१) बूँदी के राजवश की कोई लड़की किसी भी समय दिल्ली के बादशाह को नही दी जायगी।

(२) बूँदी राज्य की तरफ से बादशाह को कभी जजिया कर नही दिया जायगा।

(३) बूँदी के राजा को अटक के बाहर युद्ध करने के लिये न जाने का पूर्णरूप से अधिकार होगा और इस अधिकार के विरुद्ध बादशाह की तरफ से उसे कोई आदेश कभी न दिया जायगा।

(४) नौरोजा के उत्साह मे बादशाह की तरफ से जो मीना बाजार लगता है और जिसमे राजपूत राजाओ और सामन्तो की स्त्रियाँ शामिल की जाती हैं, उस मीना बाजार मे बूँदी के राजा और उसके सामन्तो की स्त्रियाँ कभी बुलायी न जायँगी।

(५) बादशाह के दरबार मे बूँदी के राजा को सशस्त्र जाने का अधिकार होगा।

(६) बूँदी राज्य के देवास्थानो पर किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार न किया जायगा।

(७) बूँदी के राजा और उसके सामन्तो को किसी हिन्दू नरेश की अधीनता मे रहने के लिये बाध्य नही किया जायगा।

(८) बादशाह और उसके अधीन राजाओ की अश्वारोही सेना के घोड़ो पर बादशाह का जो चिह्न रहता है, बूँदी की अश्वारोही सेना को घोडो पर उस प्रकार का चिह्न रखने के लिये विवश नही किया जायगा।

(९) दिल्ली जाने के समय, दिल्ली के मार्ग मे और दिल्ली राजधानी के लाल दरवाजे तक बूँदी के राजा की नक्कारो के बाजो के साथ जाने का अधिकार होगा।

(१०) बूँदी के राजा को अपनी राजधानी मे वे सभी अधिकार होगे, जो अधिकार दिल्ली राजधानी मे बादशाह को है। दोनो ही अपनी राजधानियो मे आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने के अधिकारी होगे।

ऊपर लिखी हुई शर्तों के साथ राव सुरजन और बादशाह अकबर मे सन्धि हो गयी। इसके पश्चात् बादशाह ने राव सुरजन को तीर्थ स्थान काशी मे महल बनवाने का अधिकार दिया। राव सुरजन के पहले उसके पूर्वज मेवाड के राणा की अधीनता मे थे। राव सुरजन ने राणा की उस अधीनता को तोडकर दिल्ली के बादशाह की अधीनता स्वीकार की। इन्ही दिनो मेवाड के राणा प्रताप ने दिल्ली के बादशाह के साथ विद्रोह करके अपना राज्य छोड दिया था और वह अपने परिवार और साथ के लोगो को लेकर पर्वत के ऊपर कठोर जङ्गल मे जाकर रहने लगा था। जिन दिनो

अपवित्र समझे जाते है। इसके बाद तेरहवे दिन राजधानी छोडकर जाने वाले वृद्ध राज
प्रतिमा बनायी जाती है और पुरानी प्रणाली के अनुसार उसकी दाह क्रिया को जाती है।

समरसी के तीन लडके पैदा हुए। बडे लडके का नाम था नापाजी, वह बूँदी के ि
बैठा। दूसरे लड़के का नाम हरपाल था, उसको जजावर नामक ग्राम का अधिकार मिला
स्थान पर जाकर रहने लगा। उससे बहुत से वशजो की वृद्धि हुई और वे हरपाल पोता
प्रसिद्ध हुए। तीसरे लडके का नाम था जैतसी। उसने सबसे पहले चम्बल नदी की दूसरी
राज्य का विस्तार किया। किसी समय वह कैतून के तोवर राजा से मिलने के लिये गया
से लौटने के समय वह भीलो के एक नगर से होकर गुजरा। वह नगर नदी के किनारे पर
था। उसने भीलो के उस नगर पर आक्रमण किया और उनको उसने परास्त किया। उ
मे बहुत-से भील जान से मारे गये। उस नगर से बाहर भीलो का एक दुर्ग था और उसमें
सरदार रहता था। जैतसी ने दुर्ग के उस भील को मरवा डाला और फिर युद्ध देवता भैरो
में पत्थर को एक हाथी की मूर्ति बनवाकर उसने वहाँ पर स्थापित की। जिस स्थान पर य
हुई, वह कोटा राजधानी के दुर्ग के चार झोपड़ा नामक स्थान के पास है। कोटिया नामक
की जाति से इस कोटा नाम की उत्पत्ति हुई है।

जैतसी और उनके वंशजो ने उस दुर्ग एवम् उसके आस-पास के नगरो तथा ग्रा
पीढियो तक अपना अधिकार रखा। उसका पाँचवाँ राजा भोनङ्गसी, बूंदी के राव सूरजम
अधिकारो से वञ्चित किया गया। जैतसी के सुरजन नाम का एक लड़का था। उसने
स्थान का नाम कोटा रखा और उसके चारो तरफ उसने दीवार बनवा दी। सुरजन के ल
देव ने बारह विशाल सरोवर खुदवाये और नगर के पूर्व की ओर एक विस्तृत झील तैयार
जो उसके नाम पर किशोर सागर के नाम से अब तक प्रसिद्ध है। उसके लड़के का नाम
और कन्दल के लड़के का नाय भोनङ्गसी था। उसने कोटा को एक बार खोकर फिर से
अधिकार प्राप्त कर लिया। वह घटना इस प्रकार है—धाकर और केसरखाँ नामक पठानो
पर आक्रमण किया। अफीम और मदिरा का अधिक सेवन करने के कारण भोनङ्गसी
रहा करता था। इसलिये वह बूँदी से निकाल दिया गया। उसकी स्त्री अपने परिवार और
के साथ केतून नगर चली गयी। उसके आस-पास तीन सौ साठ ग्राम हाड़ा लोगो के थे।
होने के बाद कुछ दिनो मे भोनङ्गसी की आदतो में सुधार हुआ। उसने मादक पदार्थों के
आदतो को बहुत कम कर दिया और अपनी स्त्री तथा परिवार के लोगो से मिलने की कोि
उसकी स्त्री उसके इस सुधार पर बहुत प्रसन्न हुई और कोटा पर अधिकार प्राप्त करने के ि
अपने पति को तैयार कर लिया। वह इस बात को समझती थी कि बलपूर्वक कोटा पर
करने से रक्तपात होगा और उसकी सफलता पर आसानी से विश्वास नही किया जा सकता
पठानो की शक्तियाँ उसकी अपेक्षा प्रबल थी। इसलिये उसने बडी बुद्धिमानी से काम लिया।
के महीने मे पठानो के साथ उसने केतून की बहुत-सी युवती लडकियो को होली खेलने के लि
न्त्रित किया और उनके साथ उसने निश्चय कर लिया कि हम सब लोग कोटा के पठानो
होली खेलेगी। इसके लिये उसने कोटा के पठानो के पास भी सन्देश भेजा, जिसे सुनकर पठा
प्रसन्न हुए। दोनो तरफ होली खेलने की तैयारियाँ होने लगी। जिस समय कोटा के पठान
भूतपूर्व रानी और केतून की युवतियो के साथ होली खेलने के लिये हर्ष पूर्वक तैयारी कर

ने मिलकर वहाँ पर भीषण युद्ध किया। उस युद्ध मे राव भोज के द्वारा शत्रु सेना के अनेक शूरवीर मारे गये और अन्त मे बादशाह अकबर की विजय हुई।

सूरत का इस लडाई मे विजयी होने के बाद बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने राव भोज से पूछा "इस विजय के पुरस्कार मे आप क्या चाहते हैं ?" बादशाह के प्रश्न को सुनकर राव भोज ने कहा : "प्रतिवर्ष बरसात के दिनो मे मैं अपनी राजधानी बूँदी मे जाकर रहना चाहता हूँ ऐसी मेरी अभिलाषा है। उसके लिये सुविधा की आप से माँग करता हूँ।"

बादशाह अकबर ने राव भोज की इस माँग को बडी प्रसन्नता के साथ स्वीकार कर लिया।

बादशाह अकबर ने दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के बाद लगातार उन्नति की। अपनी राजनीति के द्वारा उसने राजपूत राजाओ को अपनी अधीनता की जञ्जीर मे बाँधा और लगातार अपने राज्य की वृद्धि की। अपने राज्य के विस्तार के लिये उसने अधीन राजपूत राजाओ मे बडी बुद्धिमानी के साथ काम लिया और सभी युद्धो मे उसने विजय प्राप्त की। बूँदी के राव भोज ने बादशाह की तरफ से कई एक युद्ध किये थे और उनमे विजय पाने के कारण उसने सम्राट के यहाँ सम्मानपूर्ण पद प्राप्त किया था।

अहमदनगर के प्रसिद्ध युद्ध मे सात सौ सैनिक स्त्रियो को लेकर चन्दा बेगम ने बादशाह की विशाल सेना के साथ युद्ध करके अपने प्राण की आहुति दी थी। उस अहमदनगर को विजय करने के लिये बादशाह अकबर ने राव भोज को प्रधान सेनापति बनाकर और शक्तिशाली सेना देकर भेजा। भोज ने वहाँ पहुँचकर अहमदनगर के दुर्ग की दीवार को लाँघ कर उसके भीतर प्रवेश किया और उस दुर्ग पर अधिकार कर लिया। राव भोज की इस सफलता पर अकबर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने भोज को कई एक नगर पुरस्कार मे देकर सेना मे ऊँचा पद दिया। राव भोज ने अहमदनगर के दुर्ग के बुर्ज पर बडी बुद्धिमानी के साथ अधिकार किया था, इसलिये बादशाह ने प्रसन्न होकर उसके सम्मान मे उस दुर्ग के भीतर एक नया बुर्ज बनवाया और उसका नाम भोज बुर्ज रखा।

बूँदी के राव राजा भोज ने बादशाह अकबर के साथ बहुत-से उपकार किये थे और अपने शौर्य से उसने मुगल साम्राज्य की सीमा का विस्तार किया था। इतना सब होने पर भी वह एक समय बादशाह के क्रोध का शिकार बना। अकबर की रानी जोधाबाई की जब मृत्यु हो गयी तो बादशाह अकबर ने अपने यहाँ सबको रानी के मृत-संस्कार मे शामिल होने के लिये आदेश दिया। उसका यह आदेश मुसलमानो और अमीरो के लिये भी था और उनको भी मृत रानी के अन्तिम-संस्कार मे दाढी मुडवा कर बाल बनवाने होगे। बादशाह की इस आज्ञा को पूरा करने के लिये नाई ने बाल बनाने का काम आरम्भ किया और इसके लिये वह दिल्ली राजधानी मे बूँदी के राजा के पास पहुँचा। राजा के सिपाहियो ने उस नाई को मार कर वहाँ से भगा दिया।

कुछ लोगो ने इस घटना का जिक्र बादशाह से किया और उन कहने वालो ने अपनी बात को बढाकर यहाँ तक कहा कि राव भोज ने न केवल नाई को मारा है, बल्कि उसने मृत रानी को भी अनेक प्रकार के अनुचित वाक्य कहे हैं। इसको सुनकर बादशाह अकबर क्रोध से उत्तेजित हो उठा और उसने आज्ञा दी कि राव भोज को बाँध कर जबरदस्ती उसकी दाढी और मूँछो को बनवा दो।

बादशाह का यह आदेश राव भोज को भी सुनने को मिला। उसने उसी समय अपने साथ के हाडा राजपूतो से बादशाह के आदेश का जिक्र किया। उसको सुनते ही समस्त राजपूत एक

से उतार दिया गया होता। इतना सब होने पर भी और राव रतन सिंह की सहायता का महत्व जानते हुए भी बादशाह जहाँगीर के मन में राव रतन सिंह के विरुद्ध शंका पैदा हुई। उसने आसानी के साथ इस बात को सोच डाला की राव रतन शूरवीर राजपूत है और उसके दोनों लड़के उसी की तरह पराक्रमी है। यदि इन तीनो मे स्नेह बना रहा तो वे किसी भी समय अपनी शक्तियो का सगठन करके एक भयानक विपद पैदा कर सकते है इसलिए पिता और पुत्रो मे मतभेद पैदा करा देना बहुत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से बादशाह ने राव रतन को केवल बुरहानपुर के शासन का अधिकार दिया और उसके लडके को कोटा का स्वतन्त्र शासक बना दिया। बादशाह जहाँगीर ने माधव सिंह को कोटा का शासन देकर जिस प्रकार सनद दी थी, उसका वर्णन कोटा के इतिहास मे किया गया है।

राव रतन ने बुरहानपुर का शासन आरम्भ करने के बाद वहाँ एक नगर की प्रतिष्ठा की और उसने उसका नाम रतनपुर रखा। उसने उन दिनो मे एक ऐसा कार्य किया कि जिससे दिल्ली का बादशाह और मेवाड का राणा दोनो प्रसन्न हुए। वह घटना इस प्रकार है :

दरियाखा नामक एक मुसलमान अमीर ने बादशाह की आज्ञा के विरुद्ध मेवाड-राज्य पर आक्रमण किया और उसकी सेना ने मेवाड राज्य के नगरो मे भयानक अत्याचार किये। राव रतन ने अपनी सेना के साथ वहाँ पहुँच कर दरियाखाँ पर आक्रमण किया और युद्ध मे उसको कैद करके रतन सिंह बादशाह के पास ले आया। दरियाखाँ अपनी बहादुरी के लिए बहुत प्रसिद्ध था। इसलिए उसको कैद करके राव रतन ने अपने शौर्य के सम्बन्ध मे बडी ख्याति प्राप्त की। बादशाह स्वय राव रतन से बहुत प्रसन्न हुआ उसने पुरस्कार मे राव रतन को एक दल नौबत के बाजे का दिया। साथ ही उसके स्थान पर लाल पताका फहराने का आदेश दिया। बादशाह ने इस बात की भी आज्ञा दी कि राव रतन अपनी सेना के साथ जिस समय बाहर हो उस समय पीले रग का झण्डा उसकी सेना मे फहराया जाय। राव रतन के उत्तराधिकारी अब तक उस सम्मान सूचक झण्डे का प्रयोग करते है।

राव रतन को इस प्रकार का सम्मान न केवल दिल्ली के बादशाह से मिला था बल्कि समस्त हिन्दू जाति उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट करती थी। बादशाह के यहाँ सम्मान और सामर्थ्य पाकर राव रतन ने अनेक ऐसे कार्य किये, जिनसे कितने अत्याचारो मे हिन्दुओ को छुटकारा मिल सका। उसने गो-हत्या रोकने के सम्बन्ध मे बहुत बडी सफलता पायी थी। बादशाह के यहाँ रहकर वह हिन्दुओ के हितो का सदा ख्याल रखता था। वह युद्ध मे एक महान शूरवीर समझा जाता था। अत मे बुरहानपुर के एक भीषण युद्ध मे वह मारा गया।

रावरतन के चार लडके थे। गोपी नाथ, माधव सिंह, हरिजी और जगन्नाथ। माधव सिंह को कोटा का स्वतन्त्र शासन मिला था और तीसरे लडके हरिजी को गूगेर का अधिकार प्राप्त हुआ था। मेरे समय मे हरिजी के वशजो के पचास आदमियो का परिवार नीमोदा नामक स्थान मे रहता था। चौथे लडके जगन्नाथ की मृत्यु हो गयी। उसके कोई सन्तान न थी। सबसे बडा लडका और राज्य का उत्तराधिकारी गोपी नाथ पिता की मृत्यु के पहले ही मारा गया था। उसकी मृत्यु के सम्बन्ध मे निम्नलिखित घटना पढने को मिलती है

राजकुमार गोपी नाथ बूँदी राज्य के बलदिया वश के एक ब्राह्मण की सुन्दरी स्त्री से प्रेम करता था। गोपीनाथ रोजाना रात के समय उस ब्राह्मण के घर पर जाया करता था। उसकी इस हालत मे कुछ दिन व्यतीत हो गये। एक दिन रात को जब गोपीनाथ उस ब्राह्मण के घर मौजूद था, तो उस ब्राह्मण को मालूम हो गया। उस ब्राह्मण ने गोपीनाथ को पकड़ कर

सामन्तों की इस प्रार्थना को सुनकर राणा ने उसको स्वीकार कर लिया। चित्तौ
कृत्रिम बूंदी का निर्माण किया गया और उसमे बूंदी की सभी बातों की रचना की गयी।
का जो भाग जिस नाम से सम्बोधन किया जाता था, इस कृत्रिम बूंदी मे स्थान बनाये
उसका दुर्ग भी तैयार कर दिया गया। चित्तौर मे पठार के हाड़ा लोगो की एक छोटी-सी
जो राणा के यहाँ काम करती थी। कुम्भावैरसी उस सेना का सेनापति था। कुम्भावैरस
खेलकर लौट रहा था। उसने मार्ग मे एक कृत्रिम दुर्ग को बनते हुए देखा, वह उसके प
उसके पूछने पर लोगो ने बताया कि इस कृत्रिम बूंदी की विजय करके राणा अपनी प्रतिज्ञा
करेगा : कुम्भावैरसी के हृदय में उसी समय जातीय गौरव की भावना उदय हुई। उसने
कहा : "बूंदी और उसके दुर्ग के कृत्रिम होने पर भी हम उसकी रक्षा करेगे। यहाँ प
जातीय मर्यादा का प्रश्न है।"

दुर्ग के निर्माण का कार्य समाप्त होने पर राणा के पास सूचना भेजी गयी। रा
सेना लेकर उस कृत्रिम दुर्ग पर अधिकार करने के लिये रवाना हुआ। पहले से यह योज
गयी थी कि दुर्ग मे सीसोदिया सेना रखकर राणा के आक्रमण के समय खाली बन्दूके
जायँ और दिखावटी दुर्ग के रक्षा की जावे। यह योजना पहले से निश्चित थी। परन्तु सेन
दुर्ग की तरफ राणा के बढते ही बन्दूको से निकल-निकल कर गोलियाँ राणा के सैनिको
करने लगी। यह देखकर राणा को बहुत आश्चर्य मालूम हुआ। उसने रहस्य का पता लगा
अपना एक दूत भेजा। उस दूत के वहाँ पहुँचने पर कुम्भावैरसी ने कहा : तुम राणा से
कि बूंदी के कृत्रिम दुर्ग को जीतकर हाडा वंश को अपमानित करना आसान नही है।"

इसके बाद उस कृत्रिम दुर्ग के बाहर युद्ध आरम्भ हुआ। जाति के सम्मान की र
के लिये कुम्भावैरसी और उसके सैनिको ने राणा की सेना के साथ शक्ति भर युद्ध करके अ
को उत्सर्ग किया। उस युद्ध से बचकर और भागकर एक भी हाडा सैनिक ने अपने प्राणो
नही की।

राणा ने इस प्रकार कृत्रिम बूंदी और उसके दुर्ग पर विजय प्राप्त की। परन्तु
उसने बूंदी राज्य पर अधिकार करने का इरादा छोड दिया। उसकी समझ मे आ गया
वश के लोग इतने शूरवीर और साहसी है कि वे युद्ध होने पर अपने प्राणों को बलिदा
इसलिये उनके साथ युद्ध न करना ही अच्छा है। इस दशा में हाड़ा राजा हामा जी ने अ
नाम पर जितना स्वीकार कर लिया था, राणा ने उसी पर सन्तोष कर लिया।

बूंदी के सिंहासन पर सोलह वर्ष तक बैठकर हामा जी ने स्वर्ग की यात्रा की।
लडके थे, वीरसिंह और लाला। लाला को खुटन्ड नाम का राज्य मिला। नव वर्मा और
के उसके दो लडके थे। उन दोनो के वशधर नववर्मा पोता और जैतावत के नाम से प्रसिद्ध

हामा के बड़े लडके वीरसिह ने बूंदी के सिहासन पर बैठकर पन्द्रह वर्ष तक राज्य
उसके तीन लडके पैदा हुये। पहले का नाम था वीरू, दूसरे का जबदू और तीसरे लड़के का
नीमा। जबदू से तीन साखाओ की उत्पत्ति हुई और नीमा के वशज नीमावत नाम से प्रसि
पचास वर्ष तक शासन करने के बाद सन् १४७० मे वीरू की मृत्यु हुई। उसके सात ल
(१) रावभांडा (२) राव सांडा (३) अखैराज (४) राव ऊधव (५) रावचूडा (६) स
और (७) अमरसिह। आरम्भ मे पाँच लडको से पाँच वशो की उत्पत्ति हुई। समरसिह औ
सिह ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

का संहार किया। सन् १६५३ ईसवी मे कलवर्गा का युद्ध हुआ। उस संग्राम मे भी राव छत्रसाल को विजय प्राप्त हुई है। धामूली के दुर्ग को जीतने के बाद दक्षिण मे फिर कोई संघर्ष नही हुआ।

दक्षिण की इन घटनाओ के समय एकाएक सुनने को मिला कि बादशाह शाहजहाँ की मृत्यु हो गयी है। उन दिनो मे बादशाह लगातार बीस दिनो तक दरबार मे नही आया। इससे लोगो को विश्वास हो गया कि सचमुच बादशाह की मृत्यु हो गयी है। बादशाह के लड़को मे केवल दारा शिकोह दिल्ली राजधानी मे रहता था। उसके शेष तीनो भाई राज्य के अलग-अलग भागो मे उस समय दूर थे। बादशाह की मृत्यु का समाचार सुनकर शेष तीनो भाई अपने-अपने स्थानो से दिल्ली की तरफ रवाना हुये। वे सभी राजसिंहासन का अधिकार प्राप्त करना चाहते थे। इसीलिये वे दिल्ली शीघ्र पहुँचना चाहते थे।

शुजा बगाल मे था। वहाँ से रवाना होने से पहले उसने अपने मन मे अनेक प्रकार की कल्पनाये की। औरङ्गजेब ने दक्षिण से चलने के साथ-साथ मुराद के पास सदेश भेजा कि मैं शासन के कार्यो से उदासीन हो चुका हूँ। मेरे हृदय मे सिंहासन पर बैठने की जरा भी अभिलाषा नही है। मैं जङ्गल के जन हीन स्थानो पर रहकर मोहम्मद पैगम्बर की नसीहतो के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ। दारा नास्तिक है और मैने राज्य का प्रलोभन त्याग दिया है। इस दशा मे सिंहासन पर बैठने के केवल आप ही अधिकारी है और मै आपको ही मुगल सिंहासन पर बिठाना चाहता हूँ।

मुराद के पास औरङ्गजेब का भेजा हुआ यह सन्देश बादशाह शाहजहाँ को मालूम हुआ उसने गुप्त रूप से सदेश भेजकर हाडा राजा छत्रसाल को सेना के साथ दिल्ली राजधानी मे बुलाया छत्रसाल को बादशाह का जब सदेश मिला तो उसने निश्चय किया कि किसी भी अवस्था मे बादशाह की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है। इस प्रकार निर्णय करके छत्रसाल दक्षिण से रवाना होने की तैयारी करने लगा।

औरगजेब अभी तक दक्षिण मे मौजूद था। उसे जब मालूम हुआ कि छत्रसाल एकाएक दक्षिण से दिल्ली जाने की तैयारी मे है तो वह सोचने लगा कि उसके अकस्मात दक्षिण से दिल्ली जाने का कारण क्या हुआ और वह कारण मुझे क्यो नही जाहिर हुआ। अनेक प्रकार के सदेह कर के औरजेब ने छत्रशाल से पूछा कि आपके एकाएक यहाँ से दिल्ली जाने का कारण क्या है? अभी आप यहाँ से रवाना न हो और मेरे साथ ही आप दिल्ली चले।

औरगजेब की इस बात को सुनकर छत्रसाल ने गम्भीर होकर कहा "बादशाह की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है।"

यह कहकर छत्रसाल ने औरजेब के हाथ मे वह पत्र दिया, जो उसे बादशाह शाहजहाँ की तरफ से मिला था। उस पत्र को पढकर औरगजेब ने छत्रसाल से कहा . "आप किसी भी अवस्था मे यहाँ से राजधानी नही जा सकते।"

इस प्रकार का आदेश देकर औरगजेब ने अपने आदमियो से कहा · जैसे भी हो सके राव छत्रसाल को यहाँ से जाने न दो।"

औरगजेब का यह आदेश छत्रसाल से छिपा न रहा। उसने बुद्धिमानी से काम लिया और अपने शिविर का सभी आवश्यक सामान अपनी एक सेना के साथ वहाँ से रवाना कर दिया। उसने अपने साथ मुगल सेना के उन्ही सैनिको को अपने साथ रखा जो बादशाह शाहजहाँ के सभी प्रकार पक्षपाती थे। अपने इस सैनिक दल को लेकर राव छत्रसाल दक्षिण से रवाना हुआ और

नारायणदास के मुख से इस प्रकार की बात को सुनकर सभी एकत्रित हाडा लो
के साथ उसका समर्थन किया। इसके पश्चात् कुछ दिन बीत गये। नारायणदास अपनी
को पूरी करने के लिये तरह-तरह के उपाय सोचता रहा। एक दिन उसने अपने दोनो मुि
के पास सन्देश भेजा : कि "मैं अपना सम्मान प्रकट करने के लिये आपके पास आना चा

अयोग्य और असमर्थ होने के कारण नारायणदास पर उसके किसी चाचा को
न हुआ और उन दोनों ने नारायणदास को बूँदी के महल मे आने के लिये आदेश दे दि
नारायणदास को बडी प्रसन्नता हुई। उसने अपने साथ चलने के लिये कुछ ऐसे लोगो
किया, जो पूर्ण रूप से विश्वासी, पराक्रमी और शूरवीर सैनिक थे। उनको लेकर नारा
राजधानी मे पहुँच गया और महल से कुछ दूरी पर अपने साथ के लोगो को छिपाकर व
तरफ रवाना हुआ। नारायणदास के दोनो चाचा बिना किसी आशङ्का के महल के भीत
मे बैठे थे और दोनो आपस मे बाते कर रहे थे। उनके पास किसी प्रकार का कोई
नारायणदास ने महल के भीतर प्रवेश किया। उसके मुख-मण्डल पर हिंसा की रेखाये
रही थी। उन दोनो को देखकर नारायणदास ने तेजी के साथ आक्रमण किया। उन दो
यणदास का यह दृश्य देखकर सुरङ्ग के रास्ते से भाग जाने की चेष्टा की। इसी समय न
ने अपनी तलवार से समरसिंह को आघात पहुँचाकर गिरा दिया और अपने तेज भाले का
अमरसिंह पर किया। चोट खाकर दोनो जमीन पर गिर गये। उसी समय नारायणदा
तवलार से दोनो के सिर काट लिये और वह कटे हुए दोनो सिर लेकर महल के बाहर दे
मे पहुँचा और देवी के सामने रखकर अपनी पूर्व योजना के अनुसार उसने ऊँचे स्वर
किया। उसे सुनते ही उसके साथ के सैनिको ने उस स्थान मे प्रवेश किया। जहाँ पर
मौजूद था। यह सब इतनी तेजी और तत्परता के साथ हुआ कि उनके विरुद्ध बूँदो मे क
हो सका। नारायणदास और उसके साथी सैनिको ने वहाँ के मुसलमानो पर भयानक
किया। यह देखकर राजधानी के प्रत्येक हाड़ा राजपूत ने नारायणदास का साथ दिया।
भीषण रूप से राजधानी मे मुसलमान मारे गये। राव नारायणदास ने साहस के साथ
का सहार करके अपने पिता की राजधानी बूंदी पर अधिकार कर लिया। महल के भीतर
पर नारायणदास के दोनो चाचा मारे गये थे, दशहरा के त्यौहार मे उस स्थान के पत्थ
बूँदी के राजपूतो मे अब तक की जाती है।

नारायणदास विशाल काय और अत्यन्त वीर पुरुष था। वह कभी भी भयभी
जानता था। लेकिन अधिक अफीम सेवन करने की उसको आदत थी और इस अफीम के
उसके जीवन मे अवाच्छनीय घटनाये घटी थी। राजपूतो मे आमतौर पर अफीम का सेवन
लेकिन इन दिनो मे इसका प्रचार अधिक बढ़ गया। अफीम सस्ती मिलती थी। उन दिन
रण अफीम का सेवन करने वाला अपने लिये एक पैसे की अफीम प्रतिदिन के लिये का
था और जो आदमी इसका सेवन नही करता था, उसके लिये एक पैसे का अफीम भी
हो जाती थी। परन्तु नारायणदास एक बार मे सात पैसे की अफीम खाता था। उसकी
धीरे-धीरे बहुत बढ गयी थी।

नारायणदास के समय राणा रायमल्ल चित्तौर के सिंहासन पर था। उन्ही दिनो
पठानो ने चित्तौर पर आक्रमण करके वहाँ के दुर्ग को घेर लिया था। सन्धि के अनुसार

युद्ध आरम्भ किया। छत्रसाल के भाई मोहन सिह अपने दोनो लड़को और उग्र सिह नामक भतीजे के साथ शत्रु-सेना पर भीषण मार कर रहा था। उस समय दोनो ओर से युद्ध की गति भयानक हो उठी थी। शत्रुओ का सहार करते हुये भारत सिह मारा गया। उज्जैनी और धौलपुर के सग्रामो मे राजवश के बारह शूरवीरो और हाड़ा वंश के प्रत्येक सामन्त ने युद्ध करते हुये अपने प्राण दे दिये। लेकिन उनमे से एक भी युद्ध से भागा नही। राजपूतो की तरह की यह बहादुरी ससार मे अन्यत्र देखने को न मिलेगी।

राव छत्र साल ने अपने जीवन मे बावन युद्ध किये थे और प्रत्येक युद्ध मे उसने अपनी अद्भुत वीरता का परिचय दिया था। उसने बूँदी के राजमहल मे कुछ भाग निर्माण कराया था और उसका नाम उसने छत्र महल रखा था। पाटन नामक स्थान मे केशवराय भगवान के नाम का उसने एक रमणीक मन्दिर बनवाया था। सन् १६५६ मे युद्ध करते वह मारा गया, जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है।

राव छत्रसाल के चार लड़के थे—राव भावसिह, भीम सिह, भगवन्त सिह और भारत सिह। भीमसिह को गूगोर का अधिकार मिला। भगवन्त सिह मऊ नामक स्थान का अधिकारी बनाया गया। भारत सिह धौलपुर युद्ध मे मारा गया था, जिसका वर्णन ऊपर हो चुका है। राव छत्रसाल के बाद भावसिह के बूँदी सिहासन पर बैठा।

दिल्ली के सिहासन पर बैठाकर औरङ्गजेब ने राव छत्रसाल का बदला उसके लड़के राव भावसिह से लेने की कोशिश की। शिवपुर के राजा आत्माराम को बुलाकर उसने बूँदी राज्य पर आक्रमण करने और उसको रणथम्भोर की अधीनता मे लाने का आदेश दिया। राजा आत्माराम ने बादशाह के आदेश पाकर अपने साथ बारह हजार सैनिको की एक सेना तैयार की और हाड़ौती राज्य मे जाकर उसने चारो तरफ विध्वश और विनाश आरम्भ कर दिया। इन्द्रगढ बूँदी के प्रधान सामन्त के अधिकार मे था। उस जागीर के खातोली नगर के राजा ने आत्माराम की सेना का सामना किया। दोनो तरफ से गोठडा नामक स्थान पर युद्ध आरम्भ हुआ। उस युद्ध मे आत्माराम की पराजय हुई। वह युद्ध क्षेत्र से भाग गया। हाड़ा राजपूतो ने उसकी सेना का पीछा किया और उसके साथ ही सम्पूर्ण युद्ध सामग्री उन्होने अपने अधिकार मे कर ली। राजपूतो ने भागी हुई सेना का का पीछा करके शत्रु-सेना का झण्डा छीन लिया और फिर उसके बाद हाड़ा राजपूतो की सेना ने राजा आत्माराम की राजधानी शिवपुरी को जाकर घेर लिया। पराजित आत्माराम औरंगजेब के पास पहुँचा और उसने जब हाडा राजपूतो के मुकाबले मे अपनी पराजय की बात उससे कही तो बादशाह औरङ्गजेब ने अनेक प्रकार के अपशब्द कहकर उसका तिरस्कार किया।

बादशाह औरंगजेब ने कई अवसरो पर राजपूतो की बहादुरी देखी थी। इस लिये वह हाडा राजपूतो से मेल करने के तरीके सोचने लगा। जाहिरे तौर पर उसने इस बात को मान लिया कि इन राजपूतो से मेल रखने मे ही अपनी भलाई है। उसने राव भाव सिह को दिल्ली राजधानी मे आने के लिए सन्देश भेजा। लेकिन भावसिह किसी प्रकार दिल्ली जाने के लिए तैयार न हुआ। वह अनेक प्रकार के सदेह करने लगा।। लेकिन औरगजेब ने कई बार उसको पत्र लिखे और इस बात का विश्वास दिलाया कि मुझसे आप का कोई अनिष्ट न होगा। इसके बाद राव भावसिह अपनी सेना के साथ दिल्ली गया। बादशाह औरगजेब ने उसके साथ दिल्ली मे अत्यन्त सम्मानपूर्ण व्यवहार किया और शाहजादा मुअज्जम की अधीनता मे उसको औरगाबाद का शासक बना दिया।

छिपी न रही कि बूँदी के राजा नारायणदास के केवल पाँच सौ हाडा राजपूतो ने पठा
को पराजित किया। सम्पूर्ण चित्तौर मे नारायणदास की प्रशसा होने लगी। राणा
नारायणदास को सम्मान देने के लिये एक बडी सभा की गयी। उस सभा मे मेवाड के स
ने आकर बूँदी के नारायणदास के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया। राणा के महल से
दास को देखने के लिये परदे मे स्त्रियाँ आयी और सभी ने उसकी विराट मूर्ति को देख
प्रसन्नता प्रकट की।

अफीम का सेवन करने की आदत यद्यपि नारायणदास की बहुत बढ गयी थी
उसके भीमकाय शरीर को देखकर सभी लोग दङ्ग रह जाते थे। राणा के भाई की लड
यणदास को देखा। सभा मे उसकी जो प्रशंसा की गयी उसको उसने सुना। वह अत
हुई और उसके साथ अपना विवाह करने के लिये उसने अपनी सखियो से कहा। दूसरे
अपनी भतीजी के इस निर्णय को सुना। उसने प्रसन्नता के साथ भतीजी के निर्णय
किया। राणा ने इस विवाह के सम्बन्ध मे नारायणदास से बातचीत की। विवाह मे स
की लडकी का पाना हाडा राजपूतो के लिये बडे सम्मान की बात थी। इसलिये राव ना
राणा के उस प्रस्ताव को हर्ष-पूर्वक स्वीकार किया।

इन्ही दिनो मे नारायणदास के साथ चित्तौर में बडी धूम-धाम से राणा की
विवाह हुआ। नव विवाहिता पत्नी को लेकर नारायणदास बूँदी गया। और दोनो
का सुख भोग करने लगे। इन दिनो मे नारायणदास का अफीम का सेवन पहले की
बढ गया और एक दिन नशे के उन्माद मे उसने रात के समय मेवाड की राजकुमारी
आघात पहुँचाकर उसके अपूर्व सौन्दर्य को नष्ट कर दिया। सीसोदिया राजकुमारी ने उ
बुरा न माना। दूसरे दिन जब नारायणदास ने अपनी रानी की उस दशा को देखा
लज्जित हुआ। जिस पात्र मे वह अफीम रखता था, उसे अपनी रानी के हाथ मे देकर
की कि आज से मैं इस प्रकार अधिक अफीम का सेवन कभी न करूँगा।

राव नारायणदास ने बत्तीस वर्ष शासन करके बूँदी के राज्य का विस्तार किय
मे बूँदी राज्य का गौरव राजस्थान मे बहुत बढा था। इसके बाद उसकी मृत्यु हो गयी

नारायणदास के बाद उसका इकलौता लड़का सूर्यमल सन् १५३४ ईसवी मे बूँ
सन पर बैठा। वह अपने पिता की तरह बलिष्ठ साहसी और पराक्रमी था। रामचन्द्र
राज की तरह उसकी दोनो भुजाये रानो तक लम्बी थी।

बूँदी के राजसिंहासन पर सूर्यमल्ल के बैठने के बाद मेवाड के राणा वश के सा
वैवाहिक सम्बन्ध वहाँ कायम हुआ। राव सूर्यमल्ल ने सूजाबाई नामक अपनी बहन का वि
के राणा रत्नसिंह के साथ कर दिया और राणा रत्नसिंह ने भी अपनी बहन का विवा
मल्ल के साथ किया। इन दोनो वैवाहिक सम्बन्धो के कारण दोनो राज्यो मे आत्मीयता
हो गयी। परन्तु वह अधिक दिनो तक चल न सकी और कुछ दिनो के बाद शत्रुता में

सूर्यमल्ल भी अपने पिता नारायणदास की तरह अधिक अफीमची था। किसी
राव सूर्यमल्ल चित्तौर गया था और एक दिन अधिक अफीम सेवन करके वह राज-दर
मूँदे बैठा हुआ था। इसी समय मेवाड़ राज्य का एक पुरबिया सामन्त वहाँ पर आया।
मल्ल को आँखे बन्द किये हुये देखकर हँसी करने के अभिप्राय से एक सीक का टुकड़ा उ
डाल दिया। सूर्यमल्ल ने अपने नेत्र खोल दिये और क्रोध मे आकर अपनी तलवार लेकर

सिहासन से उतार दिया। इसके बाद अनिरुद्ध सिंह ने सिंहासन पर बैठकर बू दी राज्य की व्यवस्था की। इन्ही दिनो मे बादशाह का लडका शाह आलम उत्तरी भारत का शासक होकर लाहौर गया। राव अनिरुद्ध सिंह भी उसके साथ था। आमेर का राजा विष्णु सिंह भी बादशाह की तरफ से वहाँ भेजा गया। कुछ दिनो के बाद राव अनिरुद्ध सिंह की वहा पर मृत्यु हो गयी।

राव अनिरुद्ध सिह के बुधसिंह और जोधसिंह नामक दो लडके थे। उन दोनो मे बुधसिंह बडा था। इसीलिए वह पिता के सिहासन पर बैठा। बुधसिंह के अभिषेक के बाद थोडे ही दिनो मे बादशाह औरगजेब औरगाबाद मे बीमार पडा। उसकी बीमारी धीरे-धीरे बढती गयी और जब उसके बचने की कोई आशा न रह गयी तो उसके सामन्तो और अमीर उमराओ ने उससे पूछा "आपका उत्तराधिकारी कौन है और अपने बाद मुगल सिंहासन पर बैठने के लिए किसके पक्ष मे आप निर्णय देते है ?"

इस प्रकार के प्रश्न को सुनकर मरणासन्न बादशाह औरंगजेब ने कहा . मेरे बाद मुगल सिंहासन पर कौन बैठेगा, यह मै ईश्वर पर छोड देता हूँ। यो तो मैं चाहता हूँ कि मेरा लडका बादुरशाह आलम मेरे बाद सिंहासन पर बैठे। परन्तु मेरा ख्याल है कि शाहजादा आलम अपने लिए कोशिश करेगा।"

औरङ्गजेब ने जो कुछ कहा था, अन्त मे वही हुआ। आजमशाह ने अपने बडे भाई का विरोध किया और वह स्यय मुगल सिंहासन पर बैठने के लिए कोशिश करने लगा। उस विरोध मे दोनो भाइयो के बीच भयानक सघर्ष हुई। दोनो तरफ से युद्ध की तैयारियाँ होने लगी। जो हिन्दू राजा बहादुरशाह के पक्ष मे थे, उनको प्रोत्साहित किया गया। उन राजाओ मे बू दी का राव बुधसिह भी था। उसकी आयु उस समय बहुत थोडी थी और वह अपने छोटे भाई जोधसिंह की मृत्यु से बहुत दुखी था। बहादुरशाह आलम ने जब जोधसिंह की मृत्यु का समाचार सुना तो उसने बू दी-राजधानी मे जाकर उसका श्राद्ध कर्म करने के लिए बुधसिंह को आदेश दिया। राव बुधसिह ने इसका उत्तर देते हुए बहादुरशाह से कहा "आपकी वर्तमान परिस्थिति मे मेरा बू दी जाना किसी भी दशा मे मुनासिब नही है। धौलपुर के जिस युद्ध-क्षेत्र मे मेरे वश के अनेक शूरवीर ने युद्ध करके अपने प्राणो की आहुतियाँ दी थी और जिस युद्ध भूमि मे मेरे पूर्वज छत्रसाल ने अपने प्राणो की बलि दी थी, उसी युद्ध-भूमि मे जाकर बादशाह की विजय के लिए मै युद्ध करूँगा। इस समय सबसे पहला मेरा कर्त्तव्य यही है।"

शाहआलम अपनी सेना के साथ लाहौर से और अपने लडके बेदार बख्त के साथ सेना लिए हुए आजम दक्षिण से रवाना हुआ। धौलपुर के निकट जाजो नामक स्थान पर दोनो सेनाओ की भेट हुई और युद्ध आरम्भ हो गया। थोडे ही समय के बाद उस युद्ध ने भयानक रूप धारण किया। मुगल-सिहासन पर बैठने का अधिकार प्राप्त करने के लिए शाह आलम और आजम मे यह युद्ध हुआ लेकिन राजस्थान के सभी राजपूत नरेश अपनी-अपनी सेनाये लेकर इस युद्ध मे आये और उसमे से कुछ लोगो ने शाह आलम का और शेष लोगो ने आजम का साथ दिया। इस प्रकार राजस्थान के सभी राजपूत राजा इस युद्ध मे एक, दूसरे का सर्वनाश करने के लिए तैयार हो गये और शाह आलम तथा आजम की सहायता करने के स्थान पर राजपूत राजा इस युद्ध मे लडकर स्वय अपना ही विनाश करने लगे।

दतिया और कोटा राज्य के दोनो नरेश बहुत दिनो तक शाहजादा आजम के अधीन दक्षिण के युद्ध मे रह चुके थे। आजम उन दोनो का बहुत विश्वास भी करता था। इसलिए उन

फल कर दिया। लेकिन उस सामन्त के पुत्र ने सूर्यमल्ल पर अपने दूसरे वाण का वार देखकर सूर्यमल्ल को उस पर सन्देह हुआ और उसने समझ लिया कि यह तो मेरे प्रा मण हो रहा है, इसी समय राणा रत्नसिंह ने अपने घोडे को वढाकर तेजी के सा तलवार का प्रहार किया और उसे पृथ्वी पर गिरा दिया। राव सूर्यमल्ल ने सम्हलक पर पट्टी बाँधी। उसके गिर जाने पर राणा ने उस स्थान से हट जाने की कोशिश की सूर्यमल्ल ने जोर के साथ ललकार कर कहा : "अब भाग क्यो रहे हो ? मेवाड का नही है।"

राणा ने सूर्यमल्ल की इस बात की कुछ परवा न की। वह अपने घोडे को साथ आगे वढ़ा। सूर्यमल्ल अपने जख्मो पर पट्टी बाँधकर तेजी के साथ राणा की तरफ समय सामन्त के लडके ने राणा के पास जाकर कहा : "अभी कार्य पूरा नही हुआ, जीवित है।"

सामन्त के पुत्र से इस बात को सुनते ही राणा रत्नसिंह ने अपने घोडे को मो वह सूर्यमल्ल की तरफ रवाना हुआ। रास्ते मे दोनो की भेट हो गयी। सूर्यमल्ल को दे ने अपनी तलवार का वार करने की चेष्टा की। उसी समय सूर्यमल्ल ने राणा को प नीचे गिरा दिया। बहुत समय तक दोनो मे कुश्ती होती रही। उसके बाद राणा को मल्ल उसकी छाती पर चढ़कर बैठ गया और उसने एक हाथ से राणा का गला पक हाथ में अपनी तलवार लेकर उसने कहा : "देखो किस प्रकार बदला लिया।"

इतना कहने के साथ ही सूर्यमल्ल ने राणा रत्नसिंह की छाती पर अपनी तल आघात किया। राणा की उसी समय मृत्यु हो गयी। सूर्यमल्ल ने राणा को मारकर ले लिया परन्तु उसी समय राणा के मृतक शरीर पर गिरकर उसने अपनी भी हत्या

इसके बाद यह समाचार बूँदी के राजमहल मे पहुँचा। सूर्यमल्ल की माता ने को सुनकर उत्तेजित स्वर मे कहा : "क्या मेरा पुत्र अकेला ही उस जङ्गल मे मरा ? साथ शत्रु को ससार से विदा करके नही ले गया ?"

सूर्यमल्ल की माता ने जिस समय वह बात अपने महल मे कही, उसी समय एक आदमी ने उससे कहा : "राव सूर्यमल्ल ने अपने शत्रु राणा रत्नसिंह को मारकर को उत्सर्ग किया है।" उस आदमी के मुख से इस बात को सुनकर वृद्धा रानी को सन्

राव सूर्यमल्ल ने राणा रत्नसिंह की बहन के साथ विवाह किया था और राणा विवाह सूर्यमल्ल की बहन के साथ हुआ था। राव और राणा के मृत शरीरो को लेकर प्रज्वलित चिता पर बैठी और सबके देखते-देखते सती हो गयी। राव और राणा—दो पर मारे गये थे, वहाँ पर दोनो के समाधि मन्दिर बनवाये गये। सूजाबाई का समाधि के ऊपर बना। इन समाधि मन्दिरो को देखकर उस समय की अवाछनीय घटना का स

सूर्यमल्ल के पश्चात् उसका लड़का सुरतान सन् १५३५ ईसवी मे बूँदी के सिंहा मेवाड के शक्तावत वंश के आदि पुरुष शक्तसिंह की लडकी के साथ सुरतान का विवाह उ दिनो मे तान्त्रिक शैवियो का बूँदी राज्य मे प्रभाव बढ रहा था। अत्यधिक राजपूत उन शामिल होकर महाकाल भैरव की पूजा किया करते थे। राव सुरतान ने भी उस दल होकर काल भैरव के मन्दिर मे जाना आरम्भ कर दिया था। इसलिये राज्य के मा सभी लोग उससे बहुत अप्रसन्न हो गये। उन लोगों ने आपस में परामर्श करके उसे

सम्मान पूर्वक उन्होने मेवाड के राणा की सहायता की थी। लेकिन राव सुरजनसिंह राज्य की इन बातो मे परिवर्तन हुये। उसे दिल्ली के बादशाह के प्रति अपनी स्वतन्त्र करना पड़ा। यद्यपि ऐसा करके उसने अपने राज्य की शक्तियो को मजबूत बना लिया

बूँदी राजवश की एक शाखा मे सामन्तसिंह नाम का एक व्यक्ति हुआ। वह एक सामन्त था और अपने बल पौरुष से उसने गौरव प्राप्त किया। शेरशाह का शा जाने पर सामन्तसिंह के बैदला के चौहान सामन्त के साथ मेल पैदा किया और रणथ प्रसिद्ध दुर्ग छोड़ देने के लिये उसने अफगान शासक को पत्र लिखा। अफगान बादशा प्रकार के पत्र को पाकर चिन्ता मे पड गया। बहुत सोच समझकर उसने उस दुर्ग सामन्तसिंह को दे दिया और सामन्तसिंह ने वह दुर्ग सुरजनसिंह को दे दिया। बूँदी के प्रकार सुदृढ और सुरक्षित दुर्ग दूसरा था। इसलिये उस दुर्ग का अधिकार पाकर सामन्तसिंह का बहुत सम्मान किया और अपने राज्य के एक प्रसिद्ध इलाके का अधि दिया। इस प्रकार सामन्तसिंह की ख्याति बूँदी-राज्य मे आरम्भ हुई। उसके वशज स नाम से विख्यात हुये।

बैदला के जिस चौहान सामन्त ने रणथम्भोर के दुर्ग को लेने मे सामन्तसिंह की थी, उसने राव सुरजनसिंह से प्रस्ताव किया कि उस दुर्ग पर अधिकार उसे मेवाड की हैसियत से रखना होगा। राव सुरजन ने इसको स्वीकार कर लिया।

दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर बादशाह अकबर ने रणथम्भोर के इस दुर्ग को किया और उसने अपनी सेना लेकर उस दुर्ग को जाकर घेर लिया। राव सुरजन लेकर बादशाह की विशाल सेना का मुकाबिला किया और उसने किसी प्रकार दुर्ग अधिकार में जाने न दिया। बादशाह की फौज दुर्ग की दीवारो को विध्वंस करने की करती रही। लेकिन उसे सफलता न मिली।

आमेर के राजा भगवानदास ने बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार क उसका लडका मानसिंह बादशाह की सेना मे सेनापति हो गया था। इन्ही दिनो मे रा ने बादशाह अकबर के साथ अपनी बहन का विवाह कर दिया था।

रणथम्भोर के दुर्ग पर बादशाह अकबर को सफलता न मिलने पर मानसिंह नीति से काम लिया। उसने राव सुरजन को किसी प्रकार बादशाह की अधीनता मे ल किया। उसने अनेक प्रकार की योजनाये बनाकर राव सुरजन से भेट करने के लिये भेजा। बूँदी का राजा राव सुरजन उसे सजातीय समझता था। इसलिये उस पर उसने उसको रणथम्भोर के दुर्ग मे बुला लिया। मानसिंह के साथ बादशाह अकबर को छिपाकर उस दुर्ग मे गया। दोनो ने वहाँ पहुँचकर राव सुरजन से भेट की औ साथ उसकी बातचीत आरम्भ हुई। वहाँ पर राव सुरजन का चाचा भी मौजूद थ बदले हुये अकबर को पहचान लिया। उसने तुरन्त अकबर को सम्मान पूर्वक एक ऊ बिठावा। अकबर ने बडे शिष्टाचार के साथ राव सुरजन से कहा राव साहब क्या

इसी समय मानसिंह ने राव सुरजन की तरफ देखा और अपनी आत्मीयता हुये उसने उससे कहा : "आप चित्तौर के राणा की अधीनता को तोडकर रणथम्भोर शाह को दे दीजिये।"

इस युद्ध मे राव बुधसिंह की विजय हुई। लेकिन उसके साथ के बहुत-से हाडा राजपूत मारे गये इसलिए अब उसके साथ जो सैनिक बाकी रह गये थे, उनकी संख्या बहुत कम थी। राव बुधसिंह को मालूम हो गया कि उसके विरुद्ध इसी प्रकार का षड्यन्त्र बूंदी मे भी पैदा कर दिया गया है। इसलिए वह अपने साथ के थोडे से सैनिको को लेकर बूंदी न जा सका और वह उस स्थान से पहाडी रास्तो की तरफ चला गया। जयसिंह ने राव बुधसिंह को भगाकर करवर के सामन्त दलेलसिंह के साथ अपनी लडकी का विवाह किया और उसको बूंदी के सिंहासन पर बिठाया।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि कोटा और बूंदी मे शत्रुता पैदा हो गयी थी। यद्यपि उन दोनो राजवंशो का मूल आधार एक ही था और बूंदी के राजवंश से निकल कर उसी वंश के लोगो ने कोटा के राजवंश की प्रतिष्ठा की थी। इस प्रकार दोनो राजवंशो के पूर्वज एक ही थे। फिर भी उन दोनो मे जो शत्रुता पैदा हुई, उसके कारण वे दोनो एक दूसरे का विनाश करने मे लगे थे। राव बुधसिंह को जयसिंह के द्वारा पराजित देखकर कोटा के राजा भीमसिंह को बडी प्रसन्नता हुई। उसने मारवाड के राजा अजितसिंह और दिल्ली के दोनो सैयद बन्धुओ के साथ मित्रता कायम की। एवम् उनकी सहायता से उसने भरवार और हाडौती आदि नगरो मे अपने आधिपत्य का विस्तार आरम्भ किया।

राव बुधसिंह के सामने इन दिनो मे भयानक संकट थे। उसने कई बार साहस करके अपने पूर्वजो की राजधानी पर अधिकार करने की चेष्टा की और उसके फलस्वरूप कई बार युद्ध हुए। उनमे बहुत से हाडा राजपूत मारे गये परन्तु बुधसिंह को सफलता न मिली। अन्त मे निराश होकर वह अपनी ससुराल मे जाकर रहने लगा। वही पर उसकी मृत्यु हो गयी। राव बुधसिंह के दो लडके थ। बडे लडके का नाम था उम्मेदसिंह और छोटे का नाम था दीपसिंह।

राव बुधसिंह के मर जाने के बाद भी उसकी विपदाएँ कम न हुई। राजा जयसिंह के प्रोत्साहित करने पर मेवाड के राणा ने बेगू का इलाका अपने अधिकार मे कर लिया और बुधसिंह के दोनो लडको को उनके मामा के यहाँ से निकाल दिया। दोनो हताश लडके अपने कुछ विश्वासी आदमियो के साथ पुचैल नामक एक जङ्गल मे चले गये और वहाँ पर अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

इन्ही दिनो मे कोटा के राजा भीमसिंह की मृत्यु हो गयी और उसके स्थान पर दुर्जनशाल कोटा के सिंहासन पर बैठा। बुधसिंह के लडके उम्मेद सिंह और दीपसिंह के जीवन मे चारो ओर अन्धकार था। कही से किसी प्रकार आशा न होने पर उन दोनो ने राजा दुर्जनशाल को अपनी दुरवस्था लिखी और उससे सहायता की प्रार्थना की। दुर्जनशाल उदार और दयालु हृदय था। उसने जातीय शत्रुता के भावो को भूलकर उम्मेद सिंह दीपसिंह की न केवल सहायता की, बल्कि उनके पक्ष का यहाँ तक समर्थन किया कि जिससे दोनो भाई फिर से अपने पूर्वजो के राज्य का अधिकार प्राप्त कर सके।

में राणा प्रताप अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित बनाने के लिये जीवन का कठोर तप कर र
सुरजन मुगल बादशाह की अधीनता मे रहकर अपने गौरव को बढाने मे लगा हुआ था
राजा पहले राव की उपाधि रखते थे। किन्तु इन दोनो मे बादशाह अकबर ने सुरजन को
की पदवी देकर सम्मानित किया।

बादशाह अकबर ने राव राजा सुरजन को अपनी सेना मे सेनापति का पद देकर
राज्य पर आक्रमण करने के लिये भेजा। सुरजन ने अपनी सेना लेकर गोडवाना पर हमला
गोडो की राजधानी वाडी पर अधिकार कर लिया। उस राजधानी मे उसने अपने नाम पर
नाम का एक विशाल दरवाजा बनवाया। वह आज तक वहाँ पर इसी नाम से प्रसिद्ध है

गोडवाना-राज्य को जीतकर राव राजा सुरजन ने गोडो के प्रधान सरदारों क
लिया और उनको सम्राट अकबर के पास ले आया। वहाँ लाकर दयालु हृदय सुरजन ने
देने और राज्य के कुछ ग्रामो तथा नगरो पर उनको अधिकारी बना देने के लिये अकबर
किया। बादशाह अकबर ने उसके अनुरोध को स्वीकार कर लिया। राव राजा सुरजन क
उपलक्ष मे बादशाह अकबर ने प्रसन्न होकर वाराणसी और चुनार के साथ-साथ पाँच अन
अधिकार भी उसको दे दिया। सन् १५७६ ईसवी मे जब मेवाड का राणा प्रताप बादशा
हल्दी घाटी का युद्ध लडा था, उसी वर्ष राव राजा सुरजन को बादशाह की तरफ से ये नग

वाराणसी मे रहकर राव राजा सुरजन ने शासन करते हुये ऐसे बहुत-से कार्य f
उसकी उदारता चारो तरफ लोगो मे फैल गयी। बादशाह की सेना मे सेनापति होकर उ
के साथ अनेक उपकार किये। पहले चोरो और डाकुओ का भय बहुत अधिक लोगो मे
था और प्रत्येक समय लोगो की शान्ति और सम्पत्ति अरक्षित रहती थी लेकिन राव राजा
शासनकाल मे चोरो और लुटेरो का भय एक साथ दूर हो गया और लोग शान्तिपूर्ण जी
करने लगे। इन्ही दिनो मे राव राजा सुरजन ने वाराणसी नगर मे एक अत्यन्त रमणीक
वाया और सर्वसाधारण के उपयोग के लिये चौरासी स्थान बनवाये। गङ्गा के किनारे स्ना
लिये उसने बीस सुदृढ घाटो का निर्माण करवाया। अपने इन कार्यों से वह सर्वसाधारण
बन गया।

कुछ दिनो के बाद वाराणसी मे सुरजन की मृत्यु हो गयी। उसके तीन लडके
रावभोज, दूसरा दूदा। अकबर इसको लकडखाँ नाम से सम्बोधन करता था और तीसरा
रायमल को पलायता नामक नगर और उसके ग्राम मिले, जो अब कोटा की जागीरो मे

इन्ही दिनो मे बादशाह अकबर ने दिल्ली से उठाकर अपनी राजधानी आगरा मे
और वहाँ पर अनेक प्रकार के निर्माण करके उसने उसका नाम अकबराबाद रखा। इस
के पश्चात् बादशाह अकबर ने गुजरात पर अधिकार करने का निश्चय किया। अपने इ
पूर्ति के लिये वहाँ पर उसने अपनी एक विशाल सेना भेजी और उसके बाद वह स्वयं
दूसरी सेना के साथ वहाँ पर पहुँच गया। अकबर की ये दोनो सेनाये ऊँटो पर बैठकर
गुजरात को पराजित करने के लिये बादशाह ने पाँच सौ शूरवीर राजपूतो को भी ऊँटो
भेजा था और उनका नेतृत्व राव भोज और दूदा को सौंपा था।

बादशाह की जो सेना पहले गुजरात की तरफ रवाना हुई थी, उसने सूरत को
लिया। उसके बाद अपनी सेना लिये हुये अकबर भी वहाँ पहुँच गया। बादशाह की दो

शुरू कर दिया। उस समय शत्रु-सेना के बहुत-से लोग मारे गये। हाडा राजपूतो ने शत्रुओ के झण्डे को छीनकर अपने अधिकार मे कर लिया। उस युद्ध मे हाडा राजपूतो की विजय हुई और शत्रुओ की सेना पराजित होकर युद्ध क्षेत्र से भाग गयी।

जयपुर के राजा ने अपनी इस पराजय का समाचार सुना। उसने उम्मेद सिंह को परास्त करने का निश्चय किया और नारायण दास के नेतृत्व मे उसने अठारह हजार सैनिको की एक सेना रवाना की। यह समाचार हाडा लोगो मे सर्वत्र फैल गया कि बालक उम्मेद सिंह से युद्ध करने के लिए जयपुर से एक बडी सेना आ रही है। यह जान कर हाडा वश के जो सामन्त अभी तक उम्मेद सिंह की सहायता मे नही आये थे, वे भी अपनी सेनाओ के साथ रवाना हुए। उम्मेद सिंह ने अपने पिता के राज्य को प्राप्त करने के लिए एकत्रित हाडा राजपूतो के सामने प्रतिज्ञा करते हुए कहा, अपने वश की मर्यादा को सुरक्षित रखने के लिए मैं युद्ध मे अपने प्राणो की बलि दूगा।

जयपुर राज्य के अठारह हजार सैनिको की सेना दबलाना नामक स्थान पर आकर रुकी। युद्ध आरम्भ करने के पहले उम्मेद सिंह अपने वश की देवी आशापूर्णा के मन्दिर मे गया और वहाँ से लौटकर उसने अपनी सेना के सामने प्रतिज्ञा की—या तो बूँदी-राज्य पर अधिकार करूगा अथवा युद्ध-भूमि मे बलिदान हो जाऊगा।

बालक उम्मेद सिंह के साहस और शौर्य को देखकर एकत्रित हाडा राजपूतो ने उसकी प्रतिज्ञा का समर्थन करते हुए कहा—"हम लोग या तो विजयी होंगे अथवा युद्ध-क्षेत्र मे अपने प्राणो को उत्सर्ग करेगे।"

दिल्ली के बादशाह जहाँगीर ने बूँदी के राजा राव रतन को राज पताका दी थी, उम्मेद सिंह इस युद्ध मे उसे अपने साथ लाया था। समस्त हाडा राजपूत बूँदी के उस झण्डे के नीचे एकत्रित हुए। उसी समय समाचार मिला कि शत्रुओ की सेना आक्रमण करने के लिए आ रही है। यह जान कर समस्त हाडा राजपूत एक हाथ उत्तेजित हो उठे। उनकी अपेक्षा जयपुर की आने वाली सेना अधिक थी परन्तु उम्मेद सिंह उस विशाल सेना से किञ्चित भयभीत न हुआ। उसने अपनी सेना को चक्राकार सजाकर और अपने साथ मे भाला लेकर युद्ध की गर्जना की। हाडा राजपूत आगे बढे। दोनो सेनाओ का मुकाबिला हुआ। हाडा राजपूतो ने शत्रुओ की सेना पर इतने जोर का आक्रमण किया कि वह एक बार तितर-बितर होती हुई दिखायी पडी। परन्तु शत्रु-सेना ने अपने आपको सम्भाल कर हाडा राजपूतो पर भयंकर गोलियो की वर्षा की। उम्मेद सिंह के सैनिको ने उन गोलियो के सामने अपने प्राणो की परवा न की और अपने हाथो मे तलवारें लिए हुए शत्रुओ की ओर आगे बढे और अपनी तलवारो से उन्होने जयपुर राज्य के सैनिको का सहार किया। जिसमे वे प्रत्येक बार अधिक सख्या मे मारे गये। सबके पहले उम्मेद सिंह का मामा पृथ्वी सिंह घायल होकर गिरा, उसके बाद मोटरा का राजा मरजाद सिंह मारा गया। सारन के सामन्त प्राग सिंह के साथ-साथ दूसरे बहुत-से शूरवीरो ने अपने प्राणो को उत्सर्ग किया। इस प्रकार प्रधान रण कुशल सैनिको के मारे जाने पर भी बालक उम्मेद सिंह हताश न हुआ और शत्रुओ का सहार करने के लिये साहस पूर्वक अपनी सेना के साथ वह आगे बढा।

कुछ समय के भीषण युद्ध के बाद शत्रु की गोली से उम्मेद सिंह का घोडा घायल हुआ। उसके शरीर से रुधिर की धारा बहने लगी। शत्रुओ की सख्या अधिक होने के कारण और शत्रु पक्ष की तरफ से गोलियो की मार होने से उम्मेद की सेना लगातार निर्बल होती गयी और अन्त मे उसकी पराजय के लक्षण दिखायी देने लगे। इस समय युद्ध की दशा भयानक थी। शत्रु

साथ उत्तेजित हो उठे और अपनी तलवारे निकाल कर वे भीषण युद्ध के लिए तैयार
समाचार बादशाह अकबर ने सुना। उसकी समझ मे आ गया कि मैंने जो आदेश
सम्बन्ध मे दिया था, वह किसी प्रकार न्यायपूर्ण नही कहा जा सकता। इस प्र
को सोच समझ कर अकबर अपने हाथी पर सवार हुआ और वह राव भोज के य
बादशाह हाथी से उतर कर राव भोज के यशस्वी कार्यो की प्रशंसा करता हुआ
बादशाह को देखते ही राव भोज अकबर की तरफ आगे बढा और अत्यन्त शिष्टाचार
कहा: 'मैं अपने पिता की भाँति सुअर का माँस खाने वाला हूँ। इसलिए मैं स्वर्गीय रा
संस्कार मे शामिल होने के लिए अधिकारी नही हूँ।''

बादशाह को यह सुनकर बहुत सतोष मिला और राव भोज को साथ मे लेकर
स्थान को लौट गया।

बूँदी के संस्मरणो मे जोधाबाई की मृत्यु के बाद बादशाह अकबर की मृत्यु
किया गया है। यह घटना उस समय की है, जब मानसिह से अप्रसन्न होकर अकबर ने
मारने की चेष्टा की थी। लेकिन भूल से मानसिह को विष खिलाने के बजाय धोखे
विष खा गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। अकबर की मृत्यु के बाद कुछ दिनो मे रा
राजधानी बूँदी मे उसकी इह लोक-लीला का अन्त हो गया। उसके तीन लड़के थे,
हिरदेव नारायण और केशवदास। हिरदेव नारायण को बादशाह से कोटा राज्य के
सनद मिली थी। उसने पन्द्रह वर्ष तक वहाँ पर शासन को किया। केशवदास को चम
किनारे ढीपरी नगर और उसके सताईस ग्रामो का अधिकार मिला था।

बादशाह की मृत्यु के बाद जहाँगीर मुगल-सिहासन पर बैठा। उसने अपने लड़के
दक्षिण का शासक नियुक्त किया और बुरहानपुर मे शासन की सनद देकर वह उत्तर की
गया। जहाँगीर के दूसरे लडके शाहजादा खुर्रम ने अपने भाई परवेज के विरुद्ध एक
और उसने परवेज को ससार से विदा कर देने चेष्टा की। शाहजादा खुर्रम अपने
कर बादशाह जहाँगीर को सिहासन से उतार देना चाहता था इसलिए वह तैयारी क
शाहजादा खुर्रम राजपूत स्त्री से पैदा हुआ था। इसलिए उसकी सहायता मे बाईस रा
तैयार हुए और वे जहाँगीर को सिहासन से उतारने के लिए अपनी सेनाओ के साथ
इस कठिन अवसर पर बूँदी के राजा राव रतन ने बादशाह जहाँगीर का साथ दिया।

शाहजादा खुर्रम ने भाई और पिता के विरुद्ध भयानक रूप से विद्रोह किया था
करने के लिए उसने पूरी तैयारी कर ली थी। बादशाह जहाँगीर इस समय बडे संकट मे
सहायता के लिए बूँदी का राजा रतन सिह अपने दोनो लडको—माधव सिह और ह
साथ लेकर सेना के साथ रवाना हुआ। सन् १५७६ ईसवी मे कार्तिक शुक्लपक्ष मगलव
यह भयानक संग्राम हुआ। उस युद्ध मे राव रतन के दोनो लडके भयकर रूप से घायल
बुरहानपुर के उस युद्ध मे राव रतन-सिह की विजय हुई। इसलिए बादशाह जहाँगीर ने
राव रतन को बुरहान पुर के शासन का अधिकार दे दिया और उसने माधव
नगर एवम् उसके सभी नगरो और ग्रामो का स्वामी बनाया। इसी समय से हाड़ौती
दो भागो मे विभाजित हो गया।

बूँदी के राव रतन सिह ने यदि बादशाह जहाँगीर की सहायता न की होत
विरोधी शाहजादा खुर्रम को निश्चित रूप से सफलता मिलती और बादशाह जहाँगीर

सीधिया को परास्त करके कोटा राज्य की रक्षा की थी। उसके हृदय मे उदारता थी और विपद मे पढे हुए किसी शूरवीर की सहायता करना वह जानता था। उन दिनो मे उसने सबसे अधिक उम्मेद सिह की सहायता की।

इन्ही दिनो मे हाडौती के एक श्रेष्ठ कवि के साथ बालक उम्मेद सिह की भेट हुई। वह कवि उम्मेद सिंह का साहस और पुरुषार्थ देखकर बहुत प्रभावित हुआ। वह लगातार उस बात को सोचने लगा कि जैसे भी हो सके, बालक उम्मेद सिह को उसके पिता के राज्य का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। राजपूत के हाथ मे केवल उसकी लेखनी का ही महत्व नही होता, बल्कि वह अपनी कलम के समान तलवार का चलाना भी जानता है। उम्मेद सिह को उसकी चेष्टाओ मे सफल बनाना चाहता था। वह बालक उम्मेद सिह के साहस, स्वाभिमान और शौर्य से बहुत प्रभावित हो चुका था। वह जानता था कि जीवन की विपदाये और भयानक कठोरताये स्वाभिमानी तथा वीर आत्माओ के लिए होती है। जो मनुष्य स्वाभिमान खो देता है अथवा जिसमे स्वाभिमान नही होता, उसे कभी भी जीवन की कठिनाइयो का सामना नही करना पडता। उम्मेद सिह से सभी प्रकार खुश होने के कारण उस कवि ने उसकी सहायता करने का निश्चय कर लिया। वह अपनी ओजस्वी कविताओ के द्वारा हाडा राजपूतो को प्रोत्साहित करने लगा और उम्मेद सिह की सहायता मे तलवार लेकर वह स्वय युद्ध-क्षेत्र मे जाने के लिए तैयार हुआ। शत्रु की सेना उम्मेद सिह को मिटाने मे लगी थी। इसलिए हाडा राजपूत सगठित होकर और कोटा की सेना की सहायता पाकर फिर युद्ध के लिए तैयार हुए और रणभूमि मे जाकर उन लोगो ने बडे साहस के साथ शत्रु सेना-का सामना किया।

जयपुर के राजा जयसिह ने दलेल सिह को बूदी के सिहासन पर बिठाया था। यह युद्ध दलेल सिंह और उम्मेद सिह के बीच आरम्भ हुआ। उसमे दलेल सिह की पराजय हुई। उम्मेद सिह ने बूदी नगर पर अधिकार कर लिया। दलेल सिह भागकर बूदी के प्रसिद्ध दुर्ग तारागढ मे चला गया। उम्मेद सिंह ने अपनी सेना लेकर उस दुर्ग को जाकर घेर लिया और उसने उस दुर्ग पर अधिकार करने की कोशिश की। दलेल सिह अपनी सेना के साथ दुर्ग के भीतर मौजूद था और बाहर उम्मेद सिह के सैनिक थे। उनके आगे बढते ही दोनो ओर से मार काट आरम्भ हुई। उस समय वह कवि युद्ध करते हुए मारा गया, जो उम्मेद सिह की तरफ से युद्ध करने के लिए आया था और उसको मारने वाला उसी के वश का एक विश्वासघाती सैनिक था। उसके मृत्यु शरीर पर एक कपडा डाल दिया गया, जिससे उसके मारे जाने का समाचार जल्दी प्रकट न हो सके। उस दुर्ग पर आक्रमण करने से जो युद्ध हुआ, उसमे भी उम्मेद सिह की विजय हुई। इसके बाद वह बूदी के सिहासन पर बैठा।

दलेल सिह उस दुर्ग से भागकर जयपुर राज्य मे पहुँचा और ईश्वरी सिह को उसने अपनी पराजय का सब हाल बताया। जयपुर का राजा उसे सुनकर अत्यधिक क्रोधित हुआ और उसने केशवदास खत्री के नेतृत्व मे एक सेना बूदी पर अधिकार करने के लिए भेजी।

बूदी के सिहासन पर बैठने के बाद उम्मेद सिह को इतना भी अवसर न मिला कि वह अपनी निर्बल शक्तियो को एक बार सगठित कर लेता। सिहासन पर बैठते ही जयपुर की सेना उस पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुई। उम्मेद सिह को इस बात का ख्याल न था कि जयपुर की सेना इतनी जल्दी आकर आक्रमण करेगी। जिस समय वह युद्ध के लिए तैयार न था और अपने राज्य तथा राजधानी की नष्ट-भ्रष्ट अवस्था पर विचार कर रहा था, एकाएक जयपुर

उसके हाथ-पैर बाँध दिये और अपने मकान मे उसको छोडकर वह राजमहल मे गया
से उसने कहा—"एक दुराचारी ने रात मे मेरे घर आकर मेरी स्त्री के सतीत्व को
कोशिश की थी। मैंने उसे पकड लिया है। उसको क्या दण्ड दिया जाय ?"

उस ब्राह्मण की इस बात को सुनकर बूंदी के राजा रतन सिंह ने कहा—
मृत्यु है।"

ब्राह्मण वहाँ से लौटकर अपने मकान पर आया और तलवार लेकर उसने र
नाथ को जान से मार डाला। उसके बाद ब्राह्मण ने राजकुमार के मृत शरीर को म
फेक दिया। यह समाचार राव रतन सिह को मिला। उसने सुना कि राजकुमार
डाला गया है। यह सुनने के बाद उसने क्रोध मे आकर आदेश दिया कि हत्याकारी
उसको मृत्यु की सजा दी जाय। इसके बाद उसे मालूम हुआ कि राजकुमार गोपीनाथ
ने अपने मकान पर पकडा था और उसके आकर पूछने पर मैंने ही उसको मार डा
दिया था। इस रहस्य को जान लेने के बाद राव रतन चुप हो गया और उसके पञ्च
विरुद्ध कुछ नही किया गया।

गोपीनाथ के बारह लडके थे। राव रतन ने उन सब को अपने राज्य
जागीरे दी और वे बूंदी-राज्य के प्रधान सामन्तो मे माने गये। गोपीनाथ के स
छत्रसाल को बूंदी-राज्य का अधिकार मिला। उस समय उसने नीचे लिखे हुए स्था
आरम्भ किया :

१—इन्द्रसिह ने इन्द्रगढ की प्रतिष्ठा की थी।

२—बैरीशाल ने बलवन और फिलोदी नाम के दो नगर बसाये थे। करबर
नाम के दो नगरो पर अधिकार कर लिया था।

३—मोखिमसिंह को आँतरदा नामक ग्राम मिला था। बाद मे इन्द्रगढ बलवन
पर कोटा के जालिमसिह ने षडयन्त्र के द्वारा अधिकार कर लिया था।

४—महासिंह को थाना नामक ग्राम प्राप्त हुआ था। दूसरे ग्रन्थो मे इस
थावना लिखा गया है।

गोपीनाथ के शेष पुत्रो के सम्बन्ध मे कोई उल्लेखनीय बात पढने को नही मिल

राव रतन के मर जाने के बाद गोपीनाथ का बडा लडका छत्रसाल पितृ्स
पर बैठा। उसके अभिषेक के समय बादशाह शाहजहाँ बूंदी राजधानी मे गया था औ
उसको तिलक किया था। राव रतन बादशाह शाहजहाँ की तरफ से न केवल अपने पै
अधिकारी माना गया था, बल्कि वह बादशाह की राजधानी का गवर्नर भी घोषि
उसका यह अधिकार उसके जीवन भर कायम रहा। बादशाह शाहजहाँ ने जब अपने
को राज्य के अलग अलग हिस्से देकर शासन करने का भार सौंपा था, उस समय
सेना मे राव छत्रसाल को सेनापति का पद मिला था और इस अधिकार के साथ वह
दिया गया था। बादशाह ने अपने चारो लडको—दारा, औरङ्गजेब, शूजा और मु
मे अलग-अलग अधिकारी बना दिया था। दक्षिण राज्य का अधिकार प्राप्त करके
वहाँ पर युद्ध आरम्भ किया और कई दुर्गों पर उसने अधिकार कर लिया। दौलताबा
नामक दुर्गो पर युद्ध के समय हाडा राजा छत्रसाल ने अपने असीम साहस और शौर्य
दिया। उसने बीदर के दुर्ग पर आक्रमण करके विजय प्राप्त की और भयानक रूप

रानी का विश्वास था कि मराठा सेनापति के चलने पर आमेर का राजा ईश्वरी सिंह युद्ध मे परास्त होगा और वह सन्धि करने की चेष्टा करेगा। मल्हार राव होलकर अपनी सेना के साथ दक्षिण से रवाना होने के लिये तैयार हुआ और वह जयपुर के लिए रवाना हो गया। राजा ईश्वरी सिंह को मालूम हुआ कि मल्हार राव होलकर की सेना जयपुर पर आक्रमण करने के लिये आ रही है तो वह अपनी सेना के साथ अपनी राजधानी से निकला और मराठा सेना के साथ युद्ध करने के लिये आगे बढा।

राजा ईश्वरी सिंह ने कुछ दिन पहले अपने मन्त्री केशवदास को मरवा डाला था। इसलिये केशवदास के दोनो लडके हरसहाय और गुरु सहाय ईश्वरी सिंह से ईर्षा करते थे और किसी प्रकार ऐसे षडयन्त्र की खोज मे थे, जिससे वे राजा ईश्वरी सिंह से अपने पिता का बदला ले सकें। आक्रमण के लिये मराठो की सेना आने पर वे दोनो भाई बहुत प्रसन्न हुये। लेकिन जाहिरा तौर पर उन्होने राजा ईश्वरी सिंह के साथ अपनी पूरी सहानुभूति प्रकट की और उससे कहा "आयी हुई मराठा सेना इतनी थोडी है कि आप उसे सहज ही पराजित कर लेंगे।'

मराठो की आयी हुई सेना प्रबल और विशाल थी। लेकिन मन्त्री केशवदास के लडको ने राजा ईश्वरीसिह को बिलकुल धोखे मे रखा। ईश्वरीसिह अपनी सेना लेकर राज्य के बगरू नामक स्थान पर पहुँचकर उसने समझा कि मराठा सेना का अनुमान लगाने मे हमने पूर्ण रूप से भूल की है। मराठा सेना इतनी बडी है कि उसको परास्त करना पूर्ण रूप से असम्भव है। इस प्रकार सोच-विचार कर राजा ईश्वरीसिह बगरू के सामन्त के दुर्ग मे चला गया। यह जानकर मराठा सेना उस दुर्ग की तरफ रवाना हुई और वहाँ पहुँचकर उसने उस दुर्ग को घेर लिया।

ईश्वरीसिह दस दिनो तक उस दुर्ग मे बना रहा। उसको युद्ध के लक्षण अच्छे नही मालूम हुये। इसलिये मराठा सेनापति के साथ उसने सन्धि करने का निश्चय किया। सन्धि के प्रस्ताव पर मल्हार राव होलकर ने ईश्वरीसिह से कहा : "भविष्य मे ईश्वरीसिह और उसके उत्तराधिकारियो का कोई भी अधिकार बूंदी-राज्य पर न रहेगा, बूंदी का राज्य उम्मेदसिह को दे दिया जायगा और जयपुर का वर्तमान राजा इस बात को स्वीकार करेगा कि बूंदी के राज्य का अधिकारी उम्मेदसिह है।"

सन्धि के सम्बन्ध मे ऊपर लिखी हुई बातें सेनापति होलकर ने राजा ईश्वरी सिंह के सामने रखी। उनको स्वीकार करने के सिवा ईश्वरीसिह के सामने कोई दूसरा रास्ता न था। इसलिये उसने स्वीकार करने पर यह सन्धि हो गयी और उसके सम्बन्ध मे जो दस्तावेज लिखा गया, उस पर दोनो पक्ष के अधिकारियो के हस्ताक्षर हो गये। होलकर की इस सेना के साथ जयपुर पर आक्रमण करने के लिये कोटा और हाडा राजपूतो की सेनाये भी आयी थी। सन्धि हो जाने के बाद होलकर सबके साथ जयपुर से बूंदी आ गया। उसके साथ उम्मेदसिह भी था।

बूंदी के राज सिहासन पर जो अब तक बैठा हुआ था, वह सिहासन छोडकर भाग गया। बूंदी राजधानी मे बडी धूमधाम के साथ उम्मेदसिह का अभिषेक-समारोह मनाया गया और उसके बाद वह अपने राज्य के सिहासन पर बैठा। इन्ही दिनो मे उसने सुना कि आमेर के राजा ईश्वरी सिह ने विष खाकर आत्म-हत्या कर ली है।

चौदह वर्षों तक लगातार बे-घर बार होकर उम्मेदसिह ने अपने जीवन के दिन व्यतीत किये थे। इसके बाद सन् १७१६ ईसवी मे वह बूंदी के सिहासन पर बैठा। उसने मल्हार राव होलकर की सहायता के बदले मे चम्बल नदी के किनारे पाटन का सम्पूर्ण इलाका और उसके समस्त ग्राम दे

वह नर्वदा की ओर चला। औरङ्गजेब की सेना ने उसका पीछा किया। परन्तु आक्रमण करने का उसने साहस न किया। वरसात के कारण नर्वदा नदी उफनाती हो रही थी। राव छत्रसाल ने नदी के किनारे पहुँच कर सोली राजाओ की सहायता किया। औरङ्गजेब की सेना अब भी उसका पीछा करती हुई आ रही थी। राव राज्य बूँदी नगर मे पहुँच गया और कई दिनो तक वहाँ पर विश्राम करके अपने राज्य की। इसके वाद वह सेना लेकर दिल्ली तरफ चला।

पिता का द्रोही औरङ्गजेब षडयन्त्रो का जाल विछाता हुआ फतेहावाद मे पहुँ राजा जसवन्त सिंह के साथ उसने युद्ध किया और अपने षडयन्त्रो के द्वारा विजय प्राप युद्ध मे औरङ्गजेब के विरुद्ध छत्रसाल नही गया। उसका कारण यद्यपि कोई स्पष्ट गया लेकिन मालूम होता है कि बादशाह अकबर के साथ उसके पूर्वजो ने जो सधि की एक शर्त यह भी थी कि बूदी का कोई राजा किसी हिन्दू नरेश के नेतृत्व मे लिये नही जायगा। छत्रशाल के उस युद्ध मे न जाने का यही एक कारण जाहिर हो बूँदी का राज वंशज कोटा का राजा अपने चार भाइयो के साथ सेना लेकर बादशाह फतेहा बाद के उस युद्ध मे गया था। उस सग्राम मे उसके चारो भाई युद्ध क मारे गये।

औरङ्गजेब किसी प्रकार मुगल सिंहासन पर वैठना चाहता था। इसलिए उ भाई और सिंहासन के उत्तराधिकारी दारा के साथ धौलपुर मे फिर युद्ध किया। इस का राजा राव छत्रसाल भी गया था और वहाँ जाने के पहले उसने इस बात की प्रति मे या तो मै विजय प्राप्त करूंगा, अन्यथा प्राण देकर स्वर्ग लोक की यात्रा करूँगा।

राव छत्रसाल अपनी इस प्रतिज्ञा के साथ वादशाह की तरफ से युद्ध के लिए था और दारा की सेना मे सबसे आगे रहकर उसने औरंगजेब के साथ धौलपुर का किया। दारा स्वयं एक हाथी पर वैठकर युद्ध करने के लिए गया था। लेकिन युद्ध के वाद कुछ समय मे दारा युद्ध-भूमि से निकालकर भागा, उसके हटते ही बादशाह क युद्ध-क्षेत्र से भागने लगी। राव छत्रसाल को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। परन्तु मे कुछ अन्तर न पड़ा। उसने अपने सामन्तो और सैनिको से स्वाभिमान शब्दो मे क कोई भी सैनिक युद्ध से भाग नही सकता। जो राजपूत डरकर युद्ध से भागता है, नरक जाता है। मैं वादशाह की तरफ से युद्ध करने के लिए आया हूँ। मैने यह प्रि युद्ध मे या तो मैं बिजय प्राप्त करूँगा, अन्यथा प्राण दे दूंगा।"

इस प्रकार कहकर राव छत्रसाल ने अपनी सेना को युद्ध के लिए उत्तेजित अपने हाथी को वढकर उसने भयानक रूप से शत्रुओ का सहार आरम्भ किया। इ के वाद आग का एक गोला उसके हाथी पर आकर गिरा। उससे जलकर छत्रसाल से भागा। यह देखकर छत्रसाल अपने भागते हुये हाथी की पीठ से कूद कर न और एक घोडे पर चढकर वह फिर शत्रुओ की ओर आगे वढा। उसके राजपूत सेना ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर भीषण सग्राम उपस्थित किया। दोनो ओ एक दूसरे के बहुत निकट पहुँच गयी। इसी समय मुराद और छत्रसाल का सामना हु ने अपने दाहिने हाथ मे भाला लेकर मुराद पर आक्रमण किया। इसी समय शत्रु की छत्रसाल के मस्तक मे लगी। वह गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी। उसका भारत सिह उस युद्ध मे मौजूद था। पिता के गिरते ही वह आगे वढा और मुराद के

प्रकट•की। उस समय देवसिह ने माधवसिह को उत्तर देते हुये कहा . उस लड़की का जन्म बुधसिंह से नही हुआ है।"

इन्द्रगढ के जिस देवसिंह ने, बूंदी राज्य का सामन्त होकर भी भयानक विपदाओं के समय उम्मेदसिंह के साथ अपनी जागीर मे अत्यन्त असम्मानपूर्ण व्यवहार किया था, उसी देवसिंह ने उम्मेद सिंह की बहन के विवाह के सम्बन्ध मे इस प्रकार कलङ्कपूर्ण बात कहने मे जरा भी संकोच न किया। राजा माधवसिंह ने देवसिंह की बात पर विश्वास किया और उम्मेदसिंह के भेजे हुये नारियल को मन्जूर कर चुकने के बाद भी उम्मेदसिंह के पास वापस भेज दिया। राजपूताने मे राजपूतो की प्रथा के अनुसार वहाँ के एक राजा का इससे अधिक अपमान और किसी प्रकार नही हो सकता जितना कि उसकी लडकी अथवा बहन के विवाह का नारियल स्वीकार करने के बाद भी वापस करने से हो सकता है? लेकिन मारवाड के राजा विजयसिंह ने उसके बाद उम्मेद सिंह की बहन के साथ विवाह करके देवसिंह की कही हुई बात को मिथ्या प्रमाणित कर दिया।

इन्द्रगढ के राणा देवसिंह के इस प्रकार के व्यवहारो के कारण जो उसने उम्मेदसिंह के साथ किये—कोई न था, सिवा इसके कि वह स्वभाव से ही दुष्टात्मा था। बिना किसी कारण के उसने राजा माधवसिंह को भडका देने मे पूरी सफलता प्राप्त की थी। लेकिन उन्ही दिनो मे उस लड़की का विवाह मारवाड के राजा के साथ हो जाने से उम्मेदसिंह और उसकी बहन का मुख उज्ज्वल हो गया।

सन् १७५७ ईसवी मे उम्मेदसिंह करवर के पास विजय सेनी देवी के मन्दिर मे पूजा करने के लिये गया। यह स्थान इन्द्रगढ के पास मे था। उम्मेदसिंह ने इन्द्रगढ के राजा देवसिंह को परिवार के साथ वहाँ आकर एकत्रित सामन्तो से मिलने के लिये सन्देश भेजा। उस सन्देश के अनुसार देवसिंह अपने परिवार के सभी लोगो को लेकर वहाँ पर आ गया। उसके साथ उसके पुत्र और पौत्र सभी थे। उम्मेद सिंह ने देवसिंह और उसके परिवार के लोगों पर आक्रमण करके सबको एक तरफ से काट-काट कर फेंक दिया। उम्मेदसिंह के ऐसा करने से देवसिंह का वंश नष्ट हो गया। इसके बाद उम्मेद सिंह ने इन्द्रसिंह के भाई को दे दिया।

उम्मेदसिंह ने दुष्टात्मा देवसिंह का उसके पुत्र-पौत्रो के साथ संहार तो किया, लेकिन इससे उसके हृदय मे एक भीषण आघात पहुँचा। वह बहुत दिनो तक इस बात को सोचता रहा कि मैंने यह कार्य अच्छा नही किया। उसकी यह भावना धीरे-धीरे बढती गयी और उसने पिता के पाये हुये राज्य को छोडकर तीर्थ यात्रा और धार्मिक आचार-व्यवहार के द्वारा प्रायश्चित्त करने का निर्णय किया।

सन् १७७१ ईसवी मे उम्मेदसिंह ने राज्य के अधिकारो से अपने सम्बन्ध को विच्छेद कर लिया। शासन से उसका सम्बन्ध टूट जाने के बाद राजपूतो मे प्रचलित प्रथा के अनुसार अनुष्ठान किये गये। उम्मेदसिंह के लडके अजितसिंह ने अपने पिता की एक मूर्ति बनवाई और उसको अग्नि पर रखकर अन्तिम संस्कार के रूप मे उसने अपने पिता का दाह संस्कार किया और बारह दिनो का मातम मनाया। राज्य मे अन्तःपुर से लेकर बाहर तक शोक प्रकट किया गया। इस प्रकार श्राद्ध हो जाने के बाद अजितसिंह का राज्यभिषेक हुआ और फिर वह बूंदी के सिंहासन पर बैठा।

अजितसिंह के अभिषेक के पहले उम्मेदसिंह शासन के सम्बन्ध-विच्छेद करके राज्य से चला गया। जीवन के इस परिवर्तन के साथ उसने अपना नाम बदल कर श्री रखा और उस समय के बाद वह श्री जी के नाम से विख्यात हुआ। उम्मेदसिंह बूंदी राजधानी से केदारनाथ तीर्थ स्थान मे जाकर रहने लगा। उसका विश्वास था कि सांसारिक जीवन के साथ सम्बन्ध तोड देने और भग-

राव भावसिह ने औरगाबाद के शासन का अधिकार पाकर ओडछा और
लोगो के साथ होने वाले युद्धो मे अपनी वीरता का परिचय दिया था। बीकानेर के रा
सर्वनाश करने के लिए जो षडयन्त्र रचा गया था, राव भावसिह ने उस षडयन्त्र को नष्ट
नेर के राजा की रक्षा की। राव भावसिह ने औरंगाबाद मे कई इमारत ब
इतिहास से जाहिर होता है कि उसने अपने साहस शौर्य और उदार व्यवहार के द्वारा
के लोगो मे लोक प्रियता पायी थी। सन् १६=२ ईसवी मे राव भावसिह की औरंगा
हो गयी।

राव भावसिह के कोई लडका नही था। इसलिये उसके भाई भीमसिह के ल.
अनिरुद्ध बूदी के सिहासन पर बिठाया गया और भीमसिह को गूगोर का अधिकारी
भीमसिह के लडके किशन सिंह को औरंगजेब ने छल से मरवा डाला था। अपने उस
छिपाने के लिए उसने अनिरुद्ध सिंह के अभिषेक के समय मूल्यवान उपहारो के साथ एक
कर भेजा था। राव अनिरुद्ध सिंह ने बूंदी के सिंहासन पर बैठने के बाद दिल्ली मे
सम्मान का परिचय दिया।

इसके कुछ दिनो के बाद बादशाह औरगजेब जब अपनी सेना को लेकर दक्षिण
के लिए गया तो राव अनिरुद्ध सिंह भी अपनी सेना के साथ वहाँ गया। दक्षिण में मु
भयानक युद्ध करना पडा और उन्ही दिनो मे शत्रुओ की एक सेना ने बादशाह औरं
शिविर मे आक्रमण किया जिसमे उसकी बेगमे थी। उस समय बादशाह की बेगमों के
सकट उत्पन्न हो गया। इस भीषण समय मे राव अनिरुद्ध सिंह ने अपने राजपूतो के
पर आक्रमण किया और उसे परास्त करके उसने बेगमो की रक्षा की। बादशाह और
सिंह के इस साहसपूर्ण कार्य से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उससे पूछा : "इसके बदले
पुरस्कार चाहते है ?"

बादशाह के इस प्रश्न को सुनकर अनिरुद्ध सिंह ने कहा : "मैं कोई पुरस्कार
मै इस समय आपके पीछे चलने वाली सेना का अधिकारी बनाया गया हूँ। मै
सम्पूर्ण सेना के आगे चलने का अधिकार दिया जाय।"

बादशाह औरङ्गजेब ने राव अनिरुद्ध सिंह की इस माँग को स्वीकार कर लिया

बादशाह औरङ्गजेब जब बीजापुर का युद्ध लड रहा था। राव अनिरुद्ध सिह
भी अपने आश्चर्य जनक रण कौशल का परिचय दिया था और बादशाह उससे भी
हुआ था।

बूदी-राज्य के प्रधान सामन्त दुर्जन सिह के साथ राव अनिरुद्ध सिह
पैदा हुआ। उसके कारण दुर्जन सिंह दक्षिण से चला आया और अपनी जागीर मे
अनिरुद्ध सिह के विरुद्ध युद्ध की तैयारी की। अपने वश के लोगो की एक सेना तै
बूदी राजधानी मे पहूँच गया और बलवन्त सिह का अभिषेक करके उसने उसको बू
शासक घोषित किया।

यह ससाचार बादशाह औरङ्गजेब को मिला। उसने अनिरुद्ध सिह के
सेना भेजकर दुर्जन सिंह को भगाने और बूंदी-राज्य पर अधिकार करने का आदेश द
सिह उस सेना के साथ बूदी मे पहुँचा और दुर्जन सिंह को परास्त करके उसने व

इतिहास मे पढने को मिलती है । उसमें बताया गया है कि बहुत दिन पहले बम्बावदा की रानी ने चिता मे बैठकर सती होने के समय कहा था "अगर राव और राणा कभी बसन्ती उत्सव में एक साथ सामिल होंगे तो भयानक अनिष्ट होगा ।"

उस सती के कहने के अनुसार बहुत दिनो के बाद जो घटना हुई, वह इस प्रकार है :

बीलहठा नामक एक ग्राम मे बहुत से मीना लोग रहते थे । उस ग्राम का एक बाग बहुत प्रसिद्ध था । उसमे उत्तम श्रेणी के आमो के वृक्ष थे । बूँदी के राजा अजितसिंह ने उस बाग के आस-पास एक दुर्ग बनवा दिया । मेवाड के सामन्तो ने इसके विरुद्ध होकर लुटेरो के एक दल को भडकाया और वह दल बीलहठा ग्राम पर आक्रमण करने के लिये तैयार हुआ । यह समाचार अजितसिंह को मिला । उसने ग्राम की रक्षा के लिये अपनी एक सेना वहाँ के दुर्ग मे रख दी । यह सुनकर राणा बहुत क्रोधित हुआ और वह एक सेना लेकर उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ पर यह दुर्ग था । इसके बाद राणा ने अजितसिंह को शिविर मे बुलाया । अजितसिंह वहाँ पहुँचा । उसके सद्व्यवहार को देखकर राणा सङ्घर्ष को भूल गया । अजितसिंह ने बसन्तो उत्सव के समय राणा को आमन्त्रित करने का निश्चय किया । फाल्गुन के महीने मे राजपूतो का बसन्ती उत्सव बहुत प्रसिद्ध है । उस उत्सव मे राजपूत बाराह का शिकार करते थे । हाडा राजा अजितसिंह ने आमन्त्रित करते हुए राणा से कहा कि बसन्ती-उत्सव के अवसर पर बूँदी के राज भवन मे आवे । राणा ने इस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया । सीसोदिया राजपूतो मे उस निमन्त्रण के अनुसार जाने की तैयारियाँ होने लगी और निश्चित दिन मे राणा अपने सामन्तो के साथ हरे रङ्ग की पगडियो मे बूँदी के नन्दता नामक पहाड़ी स्थान पर पहुँच गया । इन्ही दिनो मे उम्मेदसिंह बद्रीनाथ से लौटकर आया । उसने सुना कि राणा के साथ पुत्र अजितसिंह बाराह का शिकार करने के लिये जाने की तैयारी कर रहा है । उसी समय उम्मेदसिंह ने अजितसिंह को रोकने के लिये एक आदमी भेजा और उस सती स्त्री के वाक्यो का स्मरण दिलाकर राणा के साथ न जाने के लिये कहा । अजितसिंह ने अपने पिता उम्मेदसिंह के सन्देश को सुना । उसने उत्तर मे कहला भेजा "मैंने ही राणा को आमन्त्रित किया है । इसलिये मेरा न जाना किसी प्रकार अच्छा साबित नही हो सकता । सती के कहने के अनुसार अनिष्ट होने मे डर जाना एक राजपूत की लज्जापूर्ण कायरता है । इसलिये मेरा जाना प्रत्येक अवस्था मे जरूरी है ।"

राणा अजितसिंह पहले दिन दोपहर के बाद शिकार खेलने के लिये निकला । वहाँ पहुँचने पर मेवाड के मन्त्री ने अजितसिंह के पास पहुँचकर अभिमान के साथ कहा : "बीलहठा राणा का है । वहाँ से आप अपना अधिकार हटा लेंगे । यदि ऐसा आपने न किया तो एक सिन्धी सेना भेजकर आपको कैद करा लिया जायगा ।" मन्त्री ने अजितसिंह से यह भी कहा कि राणा के आदेश के अनुसार मैंने आपसे ऐसा कहा है । अजितसिंह ने उस समय मन्त्री को कुछ उत्तर न दिया । वह रात भर संशय मे पडा रहा । दूसरे दिन बाराह के शिकार का उत्सव हो जाने पर राणा ने अजितसिंह को बिदा किया । वहाँ से कुछ दूर चले जाने के बाद अजित को मन्त्री की बात का स्मरण हुआ । इसलिये वह लौटकर फिर राणा के पास आ गया । राणा अभी तक किसी निर्णय मे न था । उसने बिना कुछ कहे हुये अजित को फिर से बिदा किया ।

अजित सिंह राणा से बिदा होकर अपनी राजधानी की तरफ चला । परन्तु उस समय मेवाड के मन्त्री की कही हुई बाते उसको बार-बार याद आने लगी । उसने समझ लिया कि मेरे विरुद्ध राणा ने इस प्रकार का निर्णय जरूर किया है और मन्त्री ने इस बात को स्पष्ट भी कर दिया था,

दोनो राजाओ ने बादशाह औरङ्गजेब के निर्णय की परवा न करके छोटे शाहजादे को पर बिठाने के लिए पूरी कोशिश की । बूंदी और दतिया के राजाओ की आपस मे मि दोनो ने दक्षिण के युद्ध मे कीर्ति प्राप्त की थी परन्तु इस समय दतिया का राजा अनिरुद्ध सिंह के लड़के बुधसिह के विरुद्ध युद्ध कर रहा था और कोटा का राजा रामि का पक्ष लेकर शाहआलम के विरुद्ध युद्ध कर रहा था । बूंदी के राजा को बादशाह सदा सम्मान पूर्ण स्थान मिला था और इसीलिए उसके साथ कोटा का राजा ईर्षा वह चाहता था कि हाडा राजा को मुगल दरबार मे जो सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त हु मुझे मिले । इसी लिए उसने इस युद्ध मे आजम का साथ दिया था । राव बुधसिंह शा पक्ष मे था । सही बात यह है कि धौलपुर के इस युद्ध मे जो राजा और नरेश दोनो प यता मे युद्ध कर रहे थे, उन सबके सामने एक न एक स्वार्थ था । प्रत्येक पक्ष अपने सम्मान को बढ़ाने का विश्वास दे रहा था । युद्ध आरम्भ होने के पहले कोटा के राजा बुधसिह के पास एक पत्र भेजा था और उसके द्वारा उसने बुधसिह को शाहआलम के प की ओर लाने की चेष्टा की थी । उस पत्र को पाकर राव बुधसिह ने क्रोध मे आकर देते हुए लिखा : "मेरे पूर्वजो ने बादशाह का समर्थन करके जिस युद्ध-क्षेत्र मे अपने अन्त किया था, उस युद्ध-क्षेत्र मे बादशाह के विरुद्ध युद्ध करके मैं अपने वश को क कर सकता ।"

युद्ध आरम्भ होने पर राव बुधसिह ने बादशाह आलम के द्वारा प्रधान सेन प्राप्त किया और युद्ध मे उसने अपने असीम साहस और शौर्य का आश्चर्यजनक प उसके परिणाम स्वरूप बहादुरशाह आलम की युद्ध मे विजय हुई और वह शत्रु-प करके मुगल सिंहासन पर बैठा । कोटा का हाडा राजा रामसिंह और दतिया का दलीप दोनो ही आजम की तरफ से लडते हुए युद्ध मे मारे गये । उस युद्ध मे आजम वख्त का भी अन्त हो गया ।

जाजो के युद्ध मे बुधसिह का शौर्य देखकर बादशाह बहादुरशाह आलम ने उस की उपाधि दी और उसके साथ मैत्री कायम की । यह मित्रता बादशाह के जीवन के अ रही । बादशाह की मृत्यु के बाद मुगल सिंहासन पर बैठने का अधिकार प्राप्त करने के सघर्ष पैदा हुआ । उस सघर्ष मे औरङ्गजेब के सभी पौत्र मारे गये । इसके बाद फरुख सिंहासन पर बैठा और इसने भयानक अत्याचार करके मुगल साम्राज्य को सभी प्र किया । इसके बाद फरुखसियर के दोनो भाइयो ने उसके साथ सघर्ष पैदा किया और डालने के लिए वे चेष्टा करने लगे । इन दिनो मे बूंदी के राजा ने फरुखसियर का दिल्ली राजधानी मे भीषण युद्ध आरम्भ हुआ । उस युद्ध मे बुधसिह का चाचा बूंदी के सामन्तो के साथ मारा गया ।

जाजो के युद्ध मे कोटा और बूंदी के राजाओ मे शत्रुता पैदा हुई । कोटा का सिंह युद्ध मे मारा गया था । इसलिए उसका लडका भीमसिंह अपने पिता का बदला अनेक प्रकार के उपाय सोचने लगा । फरुखसियर के दोनो भाइयो ने उसके साथ और उस युद्ध मे बूंदी के राजा ने फरुखसियर की तरफ से युद्ध किया था । इस राजा से बदला लेने के लिए भीमसिंह फरुखसियर के दोनो भाइयो से मिल गया था बुधसिह एक दिन जिस समय दिल्ली राजधानी के बाहर अपने घोडो को युद्ध की शिक्ष कोटा का राजा भी भीमसिंह अपने कुछ सैनिको के साथ वहाँ पहुँचा और उसने बु

और बहुत दिनो तक वह तीर्थों में घूमता रहा । अब वृद्धावस्था मे पहुँच गया था । इसलिये उसने शान्तिपूर्वक केदारनाथ मे रहना आरम्भ किया ।

उम्मेद सिंह के बाद उनका बालक विशन सिंह बूंदी के सिंहासन पर बैठा । उस समय वह बहुत छोटा था । कुछ दिनो के बाद वह सयाना हुआ । लेकिन उसे अब भी शासन सम्बन्धी कुछ अनुभव न थे । इसलिये उसकी अनभिज्ञता का लाभ उठाकर राज्य के सामन्त और अधिकारी विशन सिंह को ऐसी बातें समझाने लगे जिनमे उनके स्वार्थों का सम्बन्ध था । उन लोगों ने उम्मेद सिंह के विरुद्ध भी बहुत सी बाते विशन सिंह से कहीं और उम्मेद सिंह के प्रति उसमे विश्वास पैदा करने की चेष्टा की । विशन सिंह अभी तक एक नवयुवक था । उसने राज्य के अधिकारियों पर विश्वास किया और उम्मेद सिंह से घृणा करने लगा ।

सामन्तो और अधिकारियो के कहने से विशन सिंह ने एक सन्देश भेजकर उम्मेद सिंह से कहा : "आप बूंदी का राज्य छोडकर वाराणसी मे जाकर रहिये । उम्मेद सिंह बिना किसी विरोध के वाराणसी जाने के लिये तैयार हो गया । यह बात राजस्थान के दूसरे राजपूतों और राजाओं को मालूम हुई तो उन्होंने बहुत खेद प्रकट किया । इसलिये कि वे सभी उम्मेद सिंह के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे । विशन सिंह के इस सन्देश को जानकर दूसरे राज्यों के राजा और सामन्त उम्मेद सिंह को अपनी राजधानियो में ले जाने के लिये आग्रह करने लगे । आमेर के राजा प्रताप सिंह ने भी उम्मेद सिंह से आमेर की राजधानी मे जाकर रहने के लिये प्रार्थना की उम्मेद सिंह ने प्रताप सिंह की बात को स्वीकार कर लिया और वह बूंदी राज्य को छोड़ कर आमेर चला गया ।

प्रताप सिंह ने उम्मेद सिंह को आमेर में रखकर सभी प्रकार उसकी सेवाएँ की और एक दिन उसने अपना भक्तिभाव प्रकट करते हुये उम्मेद सिंह से कहा " यदि आपके हृदय मे अपने राज्य के प्रति कुछ भी लालसा हो तो आप मुझे आज्ञा दीजिये । मैं जयपुर की सेना लेकर बूंदी और कोटा को परास्त करूंगा और दोनो राज्यो का अधिकार आपको सौप दूंगा ।"

प्रताप सिंह की इन बातो को सुनकर श्री जी ने गम्भीर होकर किन्तु प्रसन्नता के साथ कहा "ये दोनो राज्य तो मेरे ही हैं । एक मे मेरा पौत्र और दूसरे मे मेरा भतीजा राज्य करता है ।' यह कहकर श्री जी ने मुस्कराहट के साथ प्रताप सिंह को तरफ देखा । उस अवसर पर वहाँ और भी कुछ लोग बैठे थे । उन सभी लोगो ने जी श्री की बात को सुना और प्रसन्न होकर श्री जी को धन्यवाद दिया ।

उम्मेद सिंह ने आमेर-राज्य मे जाने के बाद कोटा के मन्त्री जालिम सिंह से विशन सिंह के सन्देश का जिक्र किया । जालिम सिंह बूंदी गया और उसने विशन सिंह के साथ बाते की । उस समय उसकी समझ मे आया कि स्वार्थी सामन्तो के भडकाने से मैंने इस प्रकार अज्ञानता से भरा हुआ सन्देश अपने पितामह के पास भेजा था । यह सोचकर, कि मैंने एक कलङ्कपूर्ण कार्य किया है, वह लज्जित हुआ और उसने जालिम सिंह से कहा कि मैं अपने अपराध क्षमा की माँगने के लिये अपने पितामह साधु के दर्शन करना चाहता हूँ । विशन सिंह की बात को सुन कर जालिम सिंह ने वृद्ध श्री जी को आमेर से बुलाने के लिये लाल जी नाम के एक पण्डित को भेजा ।

उम्मेदसिंह के अन्तःकरण मे अब भी अपने पौत्र के प्रति स्नेह का भाव था । लालजी पंडित के साथ वह आमेर से बूंदी आ गया । अपराधी विशनसिंह ने श्री जी के पास जाकर उनके चरणो को स्पर्श किया । उस समय वहाँ पर बैठे हुये लोगो के नेत्रो मे आंसू आ गये । विशनसिंह को अपनी छाती मे लगाकर वृद्ध उम्मेदसिंह ने अपने नेत्रो से आंसू बहाये और फिर उसने अपनी तलवार उसके

शाह की शक्तियाँ लगातार क्षीण हो रही थी। जयसिंह ने इस अवसर पर सभी प्रका
उठाने की कोशिश की। बादशाह फरुखसियर के मारे जाने के बाद जयसिंह अपने
आया और उसने अपने राज्य की सीमा को लगातार बढ़ाने की चेष्टा की। जो नगर
उसके राज्य की सीमा के निकट थे उन पर उसने अधिकार करने का निश्चय किया।
मे मुगल-साम्राज्य के अनेक सामन्तो की सेनाये उसके अधिकार मे थी। जयसिंह ने
उठाना चाहा।

आमेर राज्य मे लालसोढ के पचयाना चौहान और गोरा तथा नीमराणा
ही ऐसे सामन्त थे, जो जयपुर के राजा को न तो कर देते थे और न विधान के अनुसा
स्वीकार करते थे। वे केवल आवश्यकता पडने पर अपनी सेनाएँ लेकर आमेर की
आते थे और जयपुर के राजा की सहायता मे युद्ध करते थे। शेखावाटी के सामन्त
स्वीकार नही करते थे और राजौर के बडगूजर एवम् बियाना के जादव आदि अनेक
रूप से स्वतन्त्र शासन करते थे परन्तु इधर कुछ दिनो से उन्होने आमेर-राज्य की अधी
कर ली थी और वे जयपुर के राजा का आदेश पालन करने के लिए तैयार रहा
सामन्तो की भाँति बूंदी के राव बुधसिंह को अपनी अधीनता मे लाकर और बूंदी के
किसी को अपनी इच्छानुसार बिठाकर राजा जयसिंह अपनी अभिलाषा को पूरा
तत्पर हुआ।

राजा जयसिंह के इस षडयन्त्र की कोई जानकारी बुधसिंह को न थी। वह
आमेर की राजधानी मे मौजूद था, जयसिंह ने उससे कहा: "अगर आप कुछ दिनो
राजधानी मे रह सके तो मैं आपको सैनिको और सेवको के खर्च मे पाँच सौ रुपये
हिसाब से दूँगा।"

बुधसिंह का चाचा जगतसिंह सैयद बन्धुओ की सेना के साथ युद्ध करते हुए म
और उस युद्ध मे जिसने अपने प्राण देकर बुधसिंह की रक्षा की थी, उसका एक भाई
के साथ आमेर राजधानी मे इस समय मौजूद था। राजा जयसिंह ने आमेर-राजधानी
लिए बुधसिंह ने जो प्रस्ताव किया था, उसमे उसका षडयन्त्र क्या था, यह उससे छि
उसने गुप्त रूप से एक पत्र बूंदी भेजा और उसमे उसने लिखा कि बेगूवाली रानी को
पुत्रो के साथ तुरन्त बूंदी से अपने पिता के यहाँ चला जाना चाहिए।

इसके बाद जगतसिंह के भाई ने आमेर राजधानी से बाहर राव बुधसिंह से
चीत की और उसने बुधसिंह को बताया कि राजा जयसिंह ने आमेर राजधानी मे र
जो प्रस्ताव किया है, उसमे एक भयानक षडयन्त्र है और उस षडयन्त्र के द्वारा आप
किसी न किसी तरह निश्चित है। इस प्रकार विश्वासघात की बात को सुनकर वह अ
हाडा राजपूतो के साथ जयपुर छोडकर रवाना हुआ। वह बूंदी की तरफ जा रहा
पजोला नामक स्थान पर पहुँचते ही राजा जयसिंह की आज्ञानुसार जयपुर के पाँच प्र
ने सेनाओ के साथ उस पर आक्रमण किया। वह अपने तीन सौ राजपूतो के साथ घेर
राव बुधसिंह ने बिना किसी घबराहट के आक्रमणकारियो के साथ युद्ध करना आरम्भ
युद्ध मे जयपुर राज्य के ईशरदा, मेवाड और भावर आदि के पाँच सामन्तो के सा
सरदार मारे गये। उस स्थान पर उन सामन्तों के जो स्मारक बने वे अब तक वर्त
युद्ध मे बुधसिंह के चाचा का वह भाई भी मारा गया, जिसने पहले से ही जयसिंह के
समझकर राव बुधसिंह को सचेत किया था।

था, वह किसी प्रकार उसके लिये काफी न थी। क्योंकि अधिक मालगुजारी उस राज्य की मराठा लोग वसूल करते थे।

सन् १८०४ ईसवी में हमारी सहायता करने के कारण मराठो ने बूंदी-राज्य पर आक्रमण किया था। उस समय हम बूंदी की कुछ भी सहायता न कर सके। इस कारण बूंदी के राजा को भीषण कठिनाइयो का सामना करना पड़ा था। सन् १८१७ ईसवी के संघर्ष में बूंदी का राजा अपने सामन्तो और उनकी सेनाओ को साथ लेकर बराबर हमारे साथ रहा। इसलिये जब हमने उस युद्ध मे विजय प्राप्त की तो हम राव राजा विशन सिंह को भूले नही। मराठा सेनापति होलकर ने बूंदी राज्य के जिस हिस्से पर अपना अधिकार कर रखा था और जिसे अधिकार मे अर्द्धशताब्दी बीत चुकी थी, होलकर को पराजित करके उन समस्त नगरो तथा ग्रामो का अधिकार हमने बूंदी के राजा को दे दिया था। इसके सिवा सीन्धिया ने बूंदी-राज्य के जिन नगरो और ग्रामो पर अधिकार कर लिया था, हमने मध्यस्थ होकर उन सभी को बूंदी के अधिकार मे फिर मिला दिया था। हमारे इन कार्यों के लिये बूंदी के राजा विशनसिंह ने कृतज्ञता प्रकट की थी। उसने उस समय कहा था : "मैं उन आदमियो मे से नही हूँ, जो एक बार प्रतिज्ञा करके उसके विरुद्ध आचरण करते हैं। मेरे इस मस्तक पर आपका अधिकार है। जब कभी भी आपको इसकी आवश्यकता पड़े।" बूंदी के राजा के ये वाक्य अर्थहीन न थे। उसने अपने प्राणो की बलि देकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया होता और उस वंश के प्रत्येक हाडा ने उसका अनुसरण किया होता जिसने उसका नमक खाया था, अगर उसकी परीक्षा ली गयी होती।

इन्ही दिनो मे कोटा और बूंदी-राज्यो के बीच एक ऐसी घटना हुई, जिससे बूंदी के राजा विशनसिंह के हृदय मे चोट पहुँची। कोटा के मन्त्री जालिमसिंह ने अङ्गरेजो की खुशामद करके बूंदी-राज्य से इन्द्रगढ, बलवान आनरदा और खातोली आदि स्थानो को अपने राज्य में मिला लेने की कोशिश की। उसने इन दिनो मे अपने हस्ताक्षर से पहले लिखना आरम्भ किया—अङ्गरेज सरकार का गुलाम।

मन्त्री जालिम सिंह की इस कोशिश से बूंदी के राजा विशनसिंह को बहुत अफ़सोस हुआ। अङ्गरेज-सरकार ने बूंदी के उन स्थानो को कोटा-राज्य मे मिला देने के लिये जो व्यवस्था की, उससे पीड़ित होकर विशनसिंह ने इतना ही कहा : "अङ्गरेजी सरकार ने जालिम सिंह के पक्ष मे इस प्रकार की व्यवस्था देकर मुझे एक पङ्खहीन पक्षी बना दिया है, वास्तव मे अङ्गरेजी सरकार की यह व्यवस्था मुनासिब नही थी। राजनीतिक ईमानदारी के नाम पर इस व्यवस्था मे परिवर्तन करना ही अच्छा था।

अङ्गरेज-सरकार और राजा बूंदी के बीच सन्धि करने का निर्णय हुआ। उस सन्धि को तैयार करने के बाद मैंने प्रसन्नता अनुभव की और मेरे द्वारा जो सन्धि लिखी गयी, वह सन् १८१८ ईसवी के फरवरी महीने मे दोनो पक्षो की तरफ से मन्जूर हो गयी।

बूंदी के राजा का जो सद्व्यवहार अङ्गरेजो के साथ आरम्भ हुआ था, उसके कारण मैं बूंदी राज्य का कल्याण चाहता था। राजा विशनसिंह ने विश्वासपूर्वक मेरी सभी बातो को स्वीकार किया और मुझे खुशी है कि मैं जैसा चाहता था, बूंदी राज्य वैसा कर सका। इससे बूंदी का राजा शान्तिपूर्वक उन्नति की ओर बढा और बिना किसी दूसरे राज्य को आघात पहुँचाये, स्वतन्त्रतापूर्वक चार वर्ष तक उसने शासन किया। इसके बाद वह एक ऐसे रोग से पीड़ित हुआ कि वह फिर उससे सेहत

सत्तरवाँ परिच्छेद

जयपुर के राजा जयसिह की मृत्यु—राजा बुधसिह का लडका उम्मेद सिंह—पर राजा ईश्वरी सिंह का आक्रमण—उम्मेद सिंह का सकट— जयपुर की सेना पर ह की विजय—युद्ध की फिर तैयारी—उम्मेद सिंह की प्रतिज्ञा—उसकी सेना की परा का परामर्श— युद्ध के वाद उम्मेद सिह के जीवन की घटनाये—दुर्दिन और दु के एक श्रेष्ठ कवि के साथ उम्मेद सिह की भेट - कवि की सहायता—बूँदी के सिंह सिह के विरुद्ध जयपुर की सेना—उम्मेद सिह और उसकी सौतेली माता—मराठा सेना की सहायता—जयपुर मे होलकर का आक्रमण—होलकर की सहायता से उम्मेद सिंहासन पर—इन्द्रगढ के सामन्त तेज सिह का सर्वनाश ।

सन् १७४४ ईसवी मे जयपुर के राजा जयसिह की मृत्यु हो गयी । उस समय की अवस्था केवल तेरह वर्ष की थी । जयसिह की मृत्यु का समाचार पाकर उम्मेद के थोडे से सैनिकों को लेकर तैयारी की और पाटन तथा गेनोली पर आक्रमण अधिकार कर लिया । उसकी इस विजय का समाचार हाड़ौती-राज्य मे फैल गया सुना कि बूंदी के स्वर्गीय राजा बुधसिह के लडके उम्मेद सिंह ने अपने पिता के राज्य करने के लिए निश्चय किया है । इस समाचार से उस राज्य के सभी लोगो को वडी और हाडा वंश के राजपूतो के दल चारो ओर से आवर उम्मेद सिंह के झण्डे के नीचे लगे । यह समाचार कोटा के राजा दुर्जनशाल के पास पहुँचा । वह वहुत प्रसन्न हुआ सिंह की सहायता के लिए उसने अपने राज्य से एक सेना भेजी ।

जयसिह की मृत्यु के वाद ईश्वरी सिंह वहाँ के सिंहासन पर वैठा । उसने कोटा के राजा दुर्जनशाल ने उम्मेद सिंह की युद्ध मे सहायता करने का निश्चय किया है कोटा राज्य पर आक्रमण किया । इस आक्रमण के सम्वन्ध मे अधिक विवरण कोटा के लिखा गया है ।

आक्रमण के वाद कोटा मे जो युद्ध हुआ, उनमे ईश्वरी सिंह को भागना पडा उसने उम्मेद सिंह पर आक्रमण करने के लिए एक सेना भेजी । लोहारी नामक स जाति के लोग रहा करते थे । हाडा राजा ने किसी समय उनकी स्वाधीनता नष्ट की भी मीना लोगो ने हाडा राजा के साथ कई अवसरो पर उपकार किये थे और कई लोगो ने उसका साथ दिया था । मीना लोग अपने वश की इन वातो को भूले न थे । उम्मेद सिह के शौर्य और साहस को देखकर मीना लोग वहुत प्रसन्न हुए और वे धनुप उम्मेद सिह की सहायता करने के लिए पाँच हजार की सख्या मे तैयार हो गये । यह उम्मेद सिह को वहुत संतोप मिला । उसने मीना लोगो की सहायता से विचोरी नाम शत्रुओं के साथ युद्ध आरम्भ किया । मीना लोगो ने शत्रु के शिविर मे जाकर लूट-मा की और उम्मेद सिंह ने हाडा राजपूतो की सेना को लेकर जयपुर की सेना का स

कोटा-राज्य का इतिहास

इकहत्तरवाँ परिच्छेद

कोटा और बूँदी के हाडा राजवंश—कोटा का शासक माधवसिंह—कोटा-राज्य का विस्तार—कोटिया भील का शासन—माधवसिंह के पहले कोटा के प्राचीन मकान—कोटा की उन्नति—वहाँ के राजसिंहासन पर राजा मुकुन्दसिंह—बादशाह औरङ्गजेब के बाद दिल्ली मे फिर आपसी विद्रोह—बादशाह के यहाँ भीमसिंह को मनसबदार का पद—भीलों का राजा चक्रसेन—भीमसिंह के मरने के बाद कोटा-राज्य—कुलीचखां पर राजा गजसिंह का आक्रमण—मित्रता और कर्त्तव्य परायणता का अन्तर—कुलीचखां के साथ युद्ध—युद्ध मे कुलीचखां की विजय—कोटा राजवंश के इष्टदेव की मूर्ति—बूँदी के राजा बुधसिंह के साथ कोटा के राजा रामसिंह का युद्ध—पहरेदार की कर्त्तव्य परायणता—अपराधी पहरेदार को पुरस्कार—सिंहासन के लिये भाइयों मे युद्ध ।

कोटा और बूँदी, दोनो राजवंशो का मूल एक ही है । दोनो ही हाडा वंशी राजपूत हैं । बूँदी के एक राजवंशज से ही कोटा-राज्य का इतिहास आरम्भ हुआ है । बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में बूँदी के राव राजा रतनसिंह के दूसरे लडके माधवसिंह ने मुगल साम्राज्य का पक्ष लेकर बुरहानपुर के युद्ध मे अपनी अद्भुत वीरता का परिचय दिया था और उस युद्ध मे विजय प्राप्त की थी । इसलिये बादशाह शाहजहाँ ने प्रसन्न होकर कोटा का इलाका और उसके अन्तर्गत सभी ग्राम और नगर उसको दे दिये थे । उस समय से माधवसिंह अपने पिता के बूँदी-राज्य को छोड़कर स्वतन्त्र पूर्वक कोटा-राज्य का शासन करने लगा था । उस समय से बूँदी और कोटा दो अलग-अलग राज्य हो गये ।

माधवसिंह का जन्म सन् १५६५ ईसवी मे हुआ था । चौदह वर्ष की अवस्था मे उसने बुरहानपुर का युद्ध लडा था । उसके फलस्वरूप कोटा के तीन सौ साठ नगरो और ग्रामो पर उसे अधिकार मिला था । इसके पहले कोटा एक जागीर थी और वह बूँदी राज्य के एक प्रधान सामन्त के अधिकार मे थी । उसमे दो लाख रुपये प्रजा से कर के रूप मे वसूल होते थे । साहस और वीरता के कारण माधवसिंह को बादशाह से राजा की उपाधि मिली थी ।

इस कोटा मे पहले कोटिया भील का शासन था और उसमे भील लोग रहा करते थे । वे लोग वहाँ के प्राचीन निवासी थे । उन लोगो के साथ खाने और पीने मे राजपूत लोग कोई परहेज नही करते थे । राजपूतो के अधिकार करने के पहले कोटा मे केवल झोपडियाँ थी और वहाँ का भील राजा कोटे से पाँच कोस दूर दक्षिण की तरफ इकलेगढ नामक प्राचीन दुर्ग मे रहा करता था । दिल्ली के बादशाह से कोटा के सनद पाने पर माधवसिंह ने उसकी सीमा मे वृद्धि की । उन दिनो मे कोटा के दक्षिण मे गागरौन और घाटौली का प्रान्त था । खीची लोग वहाँ के अधिकारी थे । पूर्व मे मङ्गरोल और नाहरगढ था, जिनमे पहले गौर राजपूतो का अधिकार था और उनके बाद राठौरो का अधिकार हो गया । वहाँ के राजपूतो ने अपने राज्य की रक्षा करने के लिये धर्म का परिवर्तन कर लिया

सेना बराबर आगे बढ रही थी और उम्मेद सिह के सामने सकट का समय आने मे अधि
थी। यह देख कर उसके सामन्तो ने समझाते हुए उससे कहा . "अगर आप जीवित रहेगे
समय पर बू दी पर अधिकार हो सकता है। लेकिन अगर आप इस युद्ध मे मारे गये तो
समस्त आशाये समाप्त हो जायगी। इसलिए आप युद्ध को बन्द कर दे।"

उम्मेद सिह ने अपने सामन्तो की इस बात को सुना। उसकी कुछ भी समझ मे अ
इसलिए अपने अन्तर.।र मे एक वेदना को रख कर बाकी बची हुई सेना के साथ युद्ध
हटकर उम्मेद सिह सवाली नाम की घाटी की तरफ चला आया। वहाँ से इन्द्रगढ अ
न था। इसलिए उम्मेद सिह अपने जख्मी घोडे को विश्राम देने के लिए उससे उत
उसके उतरने के कुछ देर बाद उसका घोडा गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी। यह
उम्मेद सिह का हृदय विव्हल हो उठा। वह घोडे के सिरहाने बैठकर रोने लगा। उस
नाम हुज्जा था। वह घोडा ईराक देश का था। दिल्ली के बादशाह ने उम्मेद सिंह के
बुधसिंह को वह घोडा उपहार मे दिया था और बुधसिह ने उस पर बैठकर अनेक
विजय प्राप्त की थी। उम्मेद सिंह ने जब बू दी के राज-सिहासन पर बैठने का अधि
किया तो उसने सबसे पहले इस घोडे की एक प्रस्तर मूर्ति बनवा कर बूंदी राजधानी की
स्थापित की।*

घोडे के मर जाने के बाद बहुत दुखी होकर उम्मीद सिंह इन्द्रगढ गया इस इन
राजा बू दी राज्य का प्रधान सामन्त था उसने राजभक्ति को ठुकराकर और अवसरवादी ब
के राजा की अधीनता स्वीकार की थी। इस बात को समझते हुए भी उम्मेद सिंह उसके
इन्द्रगढ के राजा ने उम्मेद सिंह के मागने पर एक घोडा नही दिया और उम्मेद सिंह को इ
चले जाने के लिए उसने साफ-साफ कहा।

इन्द्रगढ के राजा से उम्मेद सिंह ने इस प्रकार की आशा न थी। वह उसके इस दु
से अत्यन्त दुखी और क्रोधित होकर उसने इन्द्रगड मे पानी तक नही पिया और वहाँ से वह
की तरफ चला। वहाँ का राजा इन्दगढ के राजा की तरह अवसरवादी और विश्वासघातक
उम्मेद सिंह के आने का समाचार पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और अपने स्थान से च
उम्मेद सिंह के पास जाकर मिला इसके बाद वह उसे अपने यहाँ लिवा गया। उसने उम्मेद
एक घोडा देखकर आवश्यकता के समय सभी प्रकार की सहायता करने का वादा किया।

उम्मेद सिंह इस बात को समझता था कि जयपुर की सेना के साथ इस समय यु
असम्भव है। इसलिए उम्मेद सिंह ने अपने साथ के हाडा राजपूतो को विदा कर दिया औ
इस समय आप लोग अपने-अपने स्थान को जावे फिर कभी अवसर मिलने पर आप
सहायता से बू दी-राज्य को प्राप्त करने की कोशिश करूगा।"

इस प्रकार कहकर और साथ के लोगो को विदा करके उम्मेद सिह चम्बल नदी के
रामपुरा नामक स्थान के एक प्राचीन और टूटे-फूटे महल मे जाकर रहने लगा।

तेजस्वी उम्मेद सिह को दुर्भाग्य के इन दिनो मे अधिक दिनो तक नही रहना पडा
के राजा दुर्जनशाल ने आमेर के राजा ईश्वरी सिंह और उसके सहायक मराठा सेनापति

---

* मैने हुज्जा घोडे की प्रस्तर मूर्ति को देखकर आदर पूर्वक उसको नमस्ते किया था
मैं हाडा लोगो के बीच मे रहता तो प्रत्येक सैनिक उत्सव के समय राजपूतो की तरह उस
गले मे माला पहनाता।

पति का पद दिया। सन् १६७० ईसवी तक जगतसिंह दक्षिण में युद्ध करता रहा। उसी वर्ष उसकी मृत्यु हो गयी। उसके कोई लड़का न था। इसलिये माधवसिंह के चौथे लड़के कनीराम के पुत्र प्रेम सिंह को कोटा के शासन का अधिकार प्राप्त किया।

प्रेमसिंह मे शासन की योग्यता न थी। इसलिये आरम्भ मे ही प्रजा उससे असन्तुष्ट रहने लगी। इस असन्तोष के परिणाम स्वरूप वह सिंहासन से उतारा गया और उसके पिता के नगर कोइला मे वह भेज दिया गया। उसके वंशज अब तक वहाँ रहते हैं। माधवसिंह का पाँचवा लड़का किशोरसिंह को जो युद्ध मे घायल होने के बाद किसी प्रकार बच गया था, राज्य के सामन्तों ने कोटा के सिंहासन पर बिठाया। औरङ्गजेब के मुगल-सिंहासन पर बैठने के बाद राजा किशोरसिंह ने अपनी सेना लेकर और औरङ्गजेब के साथ जाकर दक्षिण मे मराठों के साथ युद्ध किया था। सन् १६८६ ईसवी मे अरकाट गढ के दुर्ग पर युद्ध करते हुये वह मारा गया। किशोरसिंह के साहस और शौर्य मे किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। उसके शरीर मे पचास जख्मों के निशान उसके जीवन के अन्त तक रहे। उसके तीन लड़के थे। विशनसिंह, रामसिंह और हरनाथसिंह।

राजपूत की प्रथा के अनुसार बड़े लड़के विशनसिंह को कोटा के सिंहासन पर बैठना चाहिए था। लेकिन किशोरसिंह के दक्षिण मे जाने के समय उसने अपने पिता की आज्ञा का उलङ्घन किया, इसलिये उसने क्रुद्ध और असन्तुष्ट होकर विशनसिंह को उत्तराधिकार से वञ्चित करके आणता नामक स्थान उसे दे दिया। विशनसिंह से पृथ्वीसिंह नामक बालक का जन्म हुआ। वह बाद मे आणता की जागीर का सामन्त बनाया गया। उसके लड़के का नाम था अजीत। अजीतसिंह के तीन लड़के पैदा हुये, छत्रसाल, गुमानसिंह और राजसिंह।

किशोरसिंह के दूसरे लड़के रामसिंह ने अपने पिता की आज्ञानुसार दक्षिण में जाकर मराठों के साथ युद्ध किया था और उन युद्धों मे उसने अपने पिता की प्रशंसा पायी थी। इसलिये पिता किशोरसिंह के मर जाने पर उसे राज्य के सिंहासन का अधिकार प्राप्त हुआ।

बादशाह औरङ्गजेब के मर जाने पर मुगल सिंहासन के लिये दिल्ली मे फिर सङ्घर्ष पैदा हुआ। रामसिंह ने शाहजादा आजम के पक्ष का समर्थन किया और वह उसके बड़े भाई मुअज्जम के विरुद्ध दक्षिण मे युद्ध करने के लिए गया। सन् १७०८ मे जाजो के युद्ध मे वह मारा गया। उस युद्ध मे बूँदी के राजा ने शाहजादा मुअज्जम का पक्ष लेकर युद्ध किया था।

रामसिंह के बाद भीमसिंह कोटा का राजा हुआ। उसके शासनकाल मे कोटा राज्य ने धन सम्मान और सामर्थ्य मे इतनी उन्नति की, जिससे वह भारतवर्ष के प्रथम श्रेणी के राज्यों मे माना गया। इसके पहले कोटा का राज्य तीसरी श्रेणी के राज्यों मे माना जाता था। बादशाह बहादुरशाह के मरने पर फर्रुखसियर मुगल सिंहासन पर बैठा। उस समय दोनों सैयद बन्धुओं ने मुगल-राज्य का शासन किया। कोटा के राजा भीमसिंह ने सैयद बन्धुओं के पक्ष मे होकर अपने राज्य की उन्नति की।

राजा माधवसिंह के समय से कोटा के राजा, बादशाह के यहाँ दो हजार सेना पर मनसबदार होते चले आ रहे थे। लेकिन दोनों बन्धुओं ने भीमसिंह पर प्रसन्न होकर उसके राज्य की गणना प्रथम श्रेणी के राज्यों मे की और वहाँ के राजा को पाँच हजार सेना पर मनसबदार का पद दिया। बूँदी के इतिहास मे लिखा जा चुका है कि कोटा के राजा भीमसिंह ने किस प्रकार बूँदी के राजा बुधसिंह को मार डालने की कोशिश की थी। भीमसिंह ने इसके सम्बन्ध मे सैयद बन्धुओं और आमेर के राजा जयसिंह से सहायता ली थी। इसका वर्णन बूँदी के इतिहास मे किया जा चुका है।

की सेना ने आकर आक्रमण किया। उसमे उम्मेद सिंह को पराजित हो जाना पड़ा और बूँदी के ऊपर जयपुर का झण्डा फिर से फहराने लगा। बूँदी पर अधिकार कर लेने के बाद सिंहासन पर दलेल सिंह को फिर से बिठाने के लिये कोशिश की गई। परन्तु उसने इन दिया। इसलिए कि एक बार उस सिंहासन पर बैठकर उसने जिस लोक-निंदा को सुना था बार वह अपने जीवन मे फिर इस प्रकार का अवसर नही आने देना चाहता था।

बूंदी का अधिकार निकल जाने के बाद उम्मेदसिंह की अवस्था फिर उसी प्रकार स बन गयी, जैसी कि पहले थी। अब फिर उसके सामने अन्धकार था और कही भी उसे प्रकाश न देता था। अपनी इस दुरवस्था मे उसने बहुत-कुछ सोच डाला और अपने पूर्वजो के र अधिकार प्राप्त करने के लिए उसने मारवाड और मेवाड के राजाओ से सहायता माँगी। प भी उसकी सहायता के लिये तैयार न हुआ। इससे और भी उम्मेदसिंह के सामने निराशा पै परन्तु वह हताश होना नही जानता था। उसके भाग्य मे जिसने इस प्रकार की कठोर विप की थी, उसी ने उसके अन्तर मे अटूट साहस और स्वाभिमान उत्पन्न किया था।

स्वाभिमानी बालक उम्मेद सिंह ने फिर से अपनी टूटी-फूटी शक्तियो को एकत्रित कि उसके द्वारा वह तरह-तरह के आघात शत्रु को पहुँचाने का उपाय सोचने लगा। अपने रवाना होकर वह उस ग्राम मे पहुँच गया, जिसका विनोदिया नाम था। इसी ग्राम मे राजा की वह बहन इन दिनो मे रहा करती थी जो उम्मेद सिंह की सौतेली माँ थी और जिस व्यवहारो के कारण न केवल बूदी-राज्य तहस-नहस हुआ था, बल्कि उसकी ससुराल का परिवार और उसके पति राव बुधसिंह का समस्त वंश नष्ट होने की परिस्थिति में पहुँच वह अब वैधव्य अवस्था मे इसी विनोदिया नामक ग्राम मे रहा करती थी और समझती थी ही अपने स्वामी के वैभव और प्रताप को नष्ट करके सौतेले लडको का सर्वनाश किया है। न तो बूंदी मे अपना अधिकार रख सकी थी और न जयपुर-राज्य मे ही उसने अपने लिए को रखा था। इसलिये इस ग्राम मे रहकर वह अपने वैधव्य जीवन के दिन किसी प्रकार काट र

उम्मेद सिंह ने अपनी सौतेली माता के पास पहुँचकर उसके चरणो का स्पर्श किया सिंह को देखकर रानी के अन्तःकरण मे एक साथ पीड़ा की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। बाल सिंह की दुरवस्था को देखकर वह बहुत दुखी हुई। बार-बार वह सोचने लगी कि मेरी गल कारण ही बूंदी के राजवंश का सर्वनाश हुआ है। वह सोचने लगी, ऐसे अवसर पर यदि प्रकार इस बालक की सहायता कर सकू तो मेरा वह परम कर्त्तव्य होगा।

रानी उम्मेद सिंह को अपने पास बिठाकर उसके साथ बडी देर तक बाते करती रही निश्चय किया कि अपने इस अवसर पर हमको मराठो से सहायता के लिये प्रार्थना करनी दोनो मे इस बात का निश्चय हो गया और रानी उम्मेद सिंह को अपने साथ लेकर द मराठा सेनापति मल्हार राव होलकर के पास गयी और उससे मिल कर उसने बालक स की दुरवस्था का सम्पूर्ण वृत्तान्त उसके सामने रखा। उसने सेनापति होलकर से कहा : "इ में आपकी सहायता माँगने के लिये मैं आपको अपना भाई समझकर आई हूँ।"

मल्हार राव होलकर ने एक साधारण वंश मे जन्म लिया था। परन्तु वह श्रेष्ठ अच्छे गुणो को समझता था। उसने सहानुभूति के साथ रानी की बातो को सुना और उसने पर सहायता करने के लिये रानी को बचन दिया।

लोग उसको आसानी से पा नही सकते थे और अपने इस स्थान से आक्रमणकारियो पर छिपकर गोलियो की वर्षा की जा सकती थी। यही समझकर निजामुलमुल्क ने उस पहाडी के तङ्ग रास्ते में अपनी फौज का मुकाम किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल भीमसिंह ने अपनी सेना को तैयार किया। आमेर के जयसिंह की सेना भी वहाँ पर उसके साथ थी। भीमसिंह ने अफीम का सेवन करने के बाद निजामुलमुल्क पर आक्रमण करने की तैयारी की। युद्ध के लिये सुसज्जित होकर उसने अपने हाथ मे भाला लिया और अपनी तथा आमेर की सेना को मिलाकर वह रवाना हुआ। राजपूत सेना के आगे बढते ही निजाम ने अपनी तोपो मे— जो कुछ दूरी पर ऐसे छिपाकर लगायी गयी थी, जो कही से जाहिर न होती थी— आग लगा दी। तुरन्त गोलो की ऐसी वृष्टि हुई कि उसके द्वारा हाथियो पर बैठे हुये राजा भीमसिंह और राजा गजसिंह—दोनो ही मारे गये। उनके मारे जाते ही राजपूत सेना इधर-उधर भागने लगी। इस प्रकार कुलीच खाँ ने विजय पायी और फिर वह दक्षिण की तरफ रवाना हुआ। हैदराबाद पहुँचकर उसने स्वतन्त्रता पूर्वक शासन आरम्भ किया। हैदराबाद का राज्य अब तक उसके वशजो मे चला आता है।

इस समय का उल्लेख करते हुये प्राचीन ग्रन्थो मे हाडा वश की दो विपदाओ का वर्णन किया गया है। एक तो राजा भीमसि ह का मारा जाना और दूसरा कोटा राजवंश के इष्टदेव बृजनाथ की मूर्ति का खो जाना। राजपूत राजा युद्ध मे अपने इष्टदेव की मूर्ति ले जाते हैं और युद्ध के समय अपने इष्टदेव का नाम लेकर राजपूत लोग विजय की आवाज लगाते हैं।

कोटा-राजवश के इष्टदेव की मूर्ति छोटी-सी सोने की बनी हुई थी। उस वश के लोगो ने उस मूर्ति को साथ मे लेकर कितने युद्धो मे विजय प्राप्त की थी। इन दिनो मे वह मूर्ति कहाँ खो गई, इसका कुछ पता न चला। कहा जाता है कि बहुत खोजने के बाद कोटा के राजपूतो को उसी तरह की एक दूसरी मूर्ति मिली। उसको पाकर कोटा राजधानी मे समारोह के साथ एक उत्सव मनाया गया।

पन्द्रह वर्ष तक राज्य करने के बाद १७२० ईसवी मे—जैसा कि ऊपर लिखा गया है—भीमसिंह युद्ध मे मारा गया था। उसने अपने शासनकाल मे कोटा-राज्य की उन्नति करके अपनी योग्यता, वीरता और राजनीति का परिचय दिया।

कोटा और बूंदी के राजवशो का मूल एक ही था। बूंदी के राजा बुधसिंह के साथ कोटा के राजा रामसि ह का युद्ध धौलपुर मे हुआ। दोनो ही हाडावशी राजपूत थे। फिर भी दोनो ओर की सेनाओ ने एक दूसरे का सर्वनाश किया। इस युद्ध के परिणाम-स्वरूप बूंदी के राजवश को भयानक कठिनाइयो का सामना करना पडा। राजा भीमसि ह बूंदी पर आक्रमण करके वहाँ का नगाडा और भण्डा आदि अपने कोटा राज्य मे ले आया। बादशाह जहाँगीर ने बूंदी के राजा रतनसिंह को जो पीले रङ्ग की राज पताका दी थी, उसे भी भीमसि ह ने बू दी से लाकर अपने यहाँ रखा। इन सभी चीजो को फिर से प्राप्त करने के लिये बूंदी के राजा ने अनेक बार कोशिशे की, परन्तु उसको सफलता न मिली इसके लिये कोटा के पहरेदारो और दूसरे राज्य के अधिकारियो को प्रलोभन देकर उन चीजो को प्राप्त करने की चेष्टा की गयी। परन्तु कोई परिणाम न निकला। बल्कि बूंदी वालो की ये कोशिशे कोटा मे जाहिर हो गयी। इसलिये वहाँ पर अधिक सावधानी से काम लिया जाने लगा और यहाँ तक किया गया कि कोटा राजधानी का नगर द्वार सन्ध्या होने के बाद बहुत जल्दी बन्द हो जाता और फिर वह किसी प्रकार न खुल पाता। इसके सम्बन्ध मे लिखा गया है कि, अगर कोटा का राजा स्वयम् सायङ्काल के बाद बाहर से आकर उस नगर-द्वार को खुलवाना चाहे

दिये। साथ ही उनकी लिखा-पढी भी कर दी। *

राव बुधसिह के बाद लगातार चौदह वर्षों मे बूंदी का राज्य नष्ट हुआ था औ धानी अनेक प्रकार से श्रीहीन हो गयी थी। दलेलसिंह ने केवल राजमहल और तारा सुरक्षित रखने की चेष्टा की थी। बूंदी के सिहासन पर बैठकर उम्मेदसिंह ने राज्य की दशा को सुधारने की कोशिश की। उसने वे सभी कार्य आरम्भ किये, जिनके द्वारा प्रजा हो सकता था।

उम्मेदसिह ने मराठो की सहायता से अपने पूर्वजो के राज्य पर अधिकार प्राप्त उसने सेनापति होलकर को अपना मामा बनाया। इस सम्बन्ध के साथ होलकर ने उम्मेद सहायता की थी, उसके मूल्य मे उम्मेदसिह को बूंदी राज्य का जो हिस्सा देना पडा था, उ किया जा चुका है। उस समय के राजपूत जाति के इतिहास लेखको का कहना है कि दक्षि ने इस प्रकार के अवसरो पर राजपूतो के आपसी विरोधो का लाभ उठाया था और अप को मजबूत बना लिया था। उनका यह भी कहना है कि समय-समय पर मराठो की श से राजस्थान के अन्याय राज्यो की अपेक्षा बूंदी-राज्य को अधिक क्षति उठानी पडी।

उम्मेदसिंह स्वभाव से ही नेक, उदार और धार्मिक था। उसने जीवन के सङ्कट और अच्छे व्यवहारो की शिक्षा पायी थी। उसके जीवन मे यदि प्रतिहिंसा की भावना से पैदा होती, जिसका उल्लेख नीचे की पक्तियो मे किया गया है तो उम्मेदसिंह का चरित्र अत माना जाता। यद्यपि उस घटना के आधार मे दो प्रमुख कारण है। अपनी भीषण कि समय उम्मेदसिंह इन्द्रगढ के राजा देवसिह के पास गया था। देवसिंह उसके पिता राव एक आज्ञाकारी सामन्त था। इस विपद के समय उम्मेदसिंह की सहायता करना उसका ए कर्त्तव्य था। परन्तु उसने कुछ भी ख्याल नही किया। उम्मेदसिंह का घोडा मर गया था। मे उसके एक घोडा माँगने पर देवसिह ने निष्ठुरता के साथ इन्कार कर दिया था। इतना बल्कि उसने अपनी जागीर से चले जाने के लिये भी उम्मेदसिह से कहा था। देवसिह का हार उम्मेदसिह के प्रति कितना अपराधपूर्ण था और उम्मेदसिंह पर इस व्यवहार से क्या था, इसका अनुमान एक सहृदय व्यक्ति आसानी से कर सकता है। परन्तु उम्मेदसिंह ने व्यवहार को अधिक महत्व न देकर उसे भुला देने की कोशिश की थी। इसके बाद भी अपने दुर्भाग्य के दिन किसी प्रकार व्यतीत करता रहा।

समय और परिस्थितियो के बदलने पर उम्मेदसिह एक दिन बूंदी के सिंहासन पर आठ वर्ष तक अपने राज्य मे उसने बुद्धिमानी के साथ शासन किया। इन्ही दिनो मे उसने राजा माधवसिंह के साथ अपनी बहन का विवाह करना निश्चय किया और राजपूतो की प्रथा के अनुसार उसने माधवसिंह के पास नारियल भेजा। राजा माधवसिह ने अपने राज सभी मन्त्रियो और सामन्तो की उपस्थिति मे उस नारियल को स्वीकार किया। इसका अर्थ कि राजा माधवसिह ने उम्मेदसिह की बहन के साथ विवाह करना मन्जूर कर लिया। यह राजाओ महाराजाओ को मालूम हो गयी। इन्द्रगढ का राजा देवसिंह इन्ही दिनो मे आमे राजा माधवसिह ने उससे राव बुधसिह की लडकी के सम्बन्ध मे पूछा और कुछ जानने क

---

* सन् १८१७ ईसवी मे अङ्गरेज सरकार ने यह इलाका मराठो से लेकर बूंदी उम्मेदसि ह के पौत्र को दे दिया था।

श्याम सिह के युद्ध मे मारे जाने पर उसने बहुत रज किया और अश्रुपात के साथ उसने बार-बार इस बात को स्वीकार किया कि राज्य के प्रलोभन मे मैने अपने सगे भाई का सर्वनाश किया है। इस प्रकार दुर्जनशाल ने अपने सगे भाई श्याम सिह के लिए अनेक बार विलाप किया।

इन्ही दिनो मे कोटा-राज्य की एक बडी क्षति हुई। मुगल बादशाह ने राजा भीम सिंह पर प्रसन्न होकर पुरस्कार मे रायपुरा, भानपुरा और कालापीत नाम के तीन वैभव-शाली नगर वहाँ के मूल अधिकारियो से लेकर दिये थे, उस पर कोटा राज्य का अधिकार अपनी सघर्ष पैदा होने के पहले तक बना रहा। लेकिन जब श्याम सिह और दुर्जनशाल मे सघर्ष पैदा हुआ और वे दोनो एक दूसरे का सर्वनाश करने की कोशिश मे रहने लगे, उन दिनो वे तीनो सम्पत्तिशाली नगर कोटा राज्य के अधिकार से निकल गए और उन दिनो मे अवसर पाकर उनके पूर्व अधिकारियो ने उन पर अधिकार कर लिया।

सन् १७२४ ईसवी मे दुर्जनसाल कोटा के सिंहासन पर बैठा उन दिनों मे तैमूर वंश का अन्तिम सम्राट मोहम्मदशाह दिल्ली के सिंहासन पर था। दुर्जनसाल को उसने अपने यहाँ बुलाया और खिलत दी। दुर्जनशाल ने बादशाह से प्रार्थना की कि जमना नदी के किनारे जिन स्थानो पर हाडा वंश के राजपूत रहा करते है, वहाँ पर गोहत्या न की जाय।

दुर्जनशाल के शासन के समय बाजीराव ने मराठा सेना लेकर उत्तरी भारत पर आक्रमण किया और हाडौती-राज्य से पूर्वी सीमा पर तारजपास नामक पहाडी रास्ते को पार करते हुए नाहर गढ के दुर्ग को अपने अधिकार मे कर लिया और उसने वह दुर्ग दुर्जनशाल को दे दिया। वह दुर्ग और नगर एक मुसलमान के अधिकार मे था। सन् १७८० ईसवी मे मराठो के साथ हाडा राजपूतो का यह पहला सम्पर्क हुआ। राजा दुर्जनशाल ने उस दुर्ग के बदले बाजीराव पेशवा की सहायता सहायता मे बहुत सी आवश्यक युद्ध-सामग्री दी। मराठा बाजीराव के साथ दुर्जनशाल की यह मित्रता जो कायम हुई, वह बहुत थोडे दिनो के बाद समाप्त हो गयी। अधिक दिनो तक दोनो का यह सम्बन्ध चल न सका।

बूदी-राज्य के इतिहास मे लिखा जा चुका है कि आमेर के राजा जयसिह ने दिल्ली के बादशाह के दरबार मे रहकर अपने राज्य की शक्ति को उन्नत बना लिया था और राज्य की सीमा मे बहुत वृद्धि कर ली थी। इस प्रकार अपनी बढी हुई शक्तियो के द्वारा बूदी के राजा को सिंहासन से उतार कर उसको सामन्त का पद देने का निर्णय किया था और उसके उत्तराधिकारी ने उसका समर्थन करके बूदी के राजा बुध सिंह को सिंहासन से उतार दिया। राजा बुध सिंह ने वृद्धावस्था मे इस मानसिक पीडा के कारण परलोक की यात्रा की। अत मे अजमेर के राजा ने मराठो से परास्त होकर आत्म-हत्या कर ली। आमेर के राजा ने राजा बुद्ध सिंह को सिंहासन से उतार कर एक सामन्त को वहाँ के सिंहासन पर बिठाया और उससे कर लेने का निश्चय किया।

बूदी-राज्य मे इस प्रकार सफलता पाकर आमेर के राजा ने कोटा-राज्य पर अधिकार करने का इरादा किया। दुर्जनशाल उस समय कोटा के सिंहासन पर था। सम्वत् १८०० मे आमेर के राजा ईश्वरी सिंह ने कोटा पर आक्रमण करने के लिए तीन मराठा सेनापतियो और जाटो के सेनापति सूर्यमल्ल को सेनाओ के साथ बुलाया और उन सबको लेकर ईश्वरी सिंह ने कोटा-राज्य पर आक्रमण किया। कोठडी नामक स्थान पर दोनो ओर से युद्ध हुआ। उसके बाद जयपुर के राजा ने अपनी विशाल सेना लेकर कोटा की राजधानी को घेर लिया। आक्रमणकारी तीन महीने तक उस

वान की अराधना करने से जीवन को शान्ति मिलेगी । साथ ही मैंने जो अपने जीवन मे अन्याय किया है, उस अपराध से मुक्ति प्राप्त होगी । इसलिये उसने एक तीर्थ-यात्री का किया । उम्मेदसिंह ने अपने और दूसरे राज्यो के ऐतिहासिक ग्रन्थो को पढकर इस बात प किया था कि राज्य, ऐश्वर्य और आडम्बर पूर्ण सम्मान से आत्मा का विनाश होता है । अपने जीवन मे इस प्रकार के आडम्बरो को छोडकर ईश्वर की भक्ति मे लवलीन हो जाते वही मनुष्य अपने आपको सुखी बना पाते हैं ।

उम्मेदसिंह के हृदय मे अपने देश के सभी तीर्थ-स्थानो की यात्रा करने का विचार मजबूत होता गया । परन्तु राजपूत जाति मे जन्म लेने के कारण उसके कुछ संस्कार अ ही बने हुये थे । वह तीर्थ-यात्रा करने के लिये निकला लेकिन उसने दूसरे सन्यासियो की त वेश नही बनाया । तीर्थ-यात्री बनकर भी उसने अपने अस्त्रशस्त्रो का मोह नही छोडा । उ तीर्थ-यात्रा करते हुये लोगो को अनेक प्रकार के संकटो का सामना करना पडता था । म और लुटेरे मिलते थे, जो तीर्थ-यात्रियो को लूट लेते थे । उनका सामना करने के लिये उम अपने सभी अस्त्र-शस्त्र साथ में रखे । एक शूरवीर राजपूत के लिये जितने भी हथियार आ हैं, उन सबको उम्मेदसिंह ने अपने साथ मे रखा । वह तीर्थ-यात्रा करने के लिये भी एक तरह रवाना हुआ । किसी आक्रमणकारी के अस्त्रो के आघात को रोकने के लिये उसने रखा पहना और अपनी ढाल-तलवार के साथ उसने एक बन्दूक और भाला अपने साथ उसने और भी कुछ अस्त्रो को अपने साथ लेकर तीर्थ-यात्रा आरम्भ की ।

अपनी राजधानी से निकलने के समय उम्मेदसिंह ने कुछ विश्वासी सेवको को लिया और कई वर्ष तक वह भारत के उत्तर मे गङ्गोतरी, दक्षिण मे सेतुबन्ध रामेश्वर औ में गरम सीता कुण्ड एवम् द्वारका आदि मे घूमता रहा । इन दिनो में उसने देश के न नगरो और स्थानो का पर्यटन किया । साधु सन्तो और प्रसिद्ध सन्यासियो से उसने भेट प्रकार यात्रा करते हुये वह जब कभी अपने राज्य की सीमा पर आया तो उसके वश साथ-साथ दूसरे राज्यो के राजपूतो ने उसके पास आकर अपना सम्मान प्रकट किया । हुये उम्मेद सिंह जिस राजा के राज्य मे पहुँचता, वहाँ के देवताओ का-सा सम्मान अ राज्य वश के लोग उसे महलो मे ले जाकर अनेक प्रकार से उसका आदर-सम्मान करते । मे उम्मेद सिंह सर्वत्र देवता के समान श्रद्धेय समझा जा रहा था और उसकी बातो को बडे ध्यान से सुनते थे । बूंदी-राज्य मे शासन करते हुये उसे जितना मान मिलता, इन दि सैकड़ो गुना अधिक चारो ओर उसे सम्मान मिल रहा था ।

उम्मेदसिंह अन्त मे भारतीय सीमा के बाहर मकरान से निकलकर हिंगलाज न मे गया और फिर वह द्वारिका मे पहुँचा । वहाँ से लौटने के समय मार्ग मे कावा नाम एक दल ने उस पर आक्रमण किया । परन्तु उम्मेदसिंह ने लुटेरो के उस दल को परा उनके सरदार को कैद कर लिया । उस सरदार ने बाद मे कई बार शपथ खायी कि आज तीर्थ यात्रियो पर आकमण नही करूंगा । इसके बाद उस सरदार को उम्मेदसिंह ने छोड

उम्मेदसिंह बहुत दिनो तक तीर्थों और प्रसिद्ध नगरो मे घूमता रहा । उसने अप सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था और इस बात का निश्चय कर लिया था कि अब हम कभी शासन से सम्बन्ध न रखेंगे । परन्तु एक घटना ऐसी घटी, जिसके कारण इस निर्णय पहुँचा और उसे अपने निश्चय मे कुछ परिवर्तन करना पड़ा । वह घटना मेवाड़ और हाड़

की और दाहिने हाथ से तलवार मार कर उसने बाघ के सिर को काट कर जमीन पर गिरा दिया। यह देखकर राजा दुर्जनशाल और उसके साथ के सामन्तों ने हिम्मत सिंह की बहुत प्रशंसा की।"

राजा दुर्जनशाल का विवाह मेवाड़ के राणा की एक लड़की के साथ हुआ था। दुर्जनशाल के कोई सन्तान पैदा न हुई थी। इसलिए मरने के तीन वर्ष पहले उसने अपनी रानी से कहा था: "यदि मैं पुत्रहीन अवस्था में मरूं तो उस समय किसी लड़के को गोद ले लेना होगा।"

पहले यह लिखा जा चुका है कि राजा रामसिंह का बड़ा लड़का विशन सिंह अपने पिता के कहने पर भी दक्षिण की लड़ाई में नहीं गया था। इसलिए उसके पिता ने सिंहासन के अधिकार से वंचित करके उसे चम्बल नदी के किनारे आणता नामक स्थान पर रहने के लिए भेज दिया था। दुर्जनशाल की मृत्यु के समय आणता में विशन सिंह का पौत्र अजीत सिंह मौजूद था। अजीत सिंह के तीन लड़के थे। उनमें सबसे बड़ा छत्रसाल था। मरने के समय दुर्जनशाल ने छत्रसाल को गोद लेने की सलाह दी थी और उस समय मन्त्रियों और सामन्तों ने उस पर अपनी सम्मतियाँ दे दी थीं। लेकिन गोद लेने का समय उपस्थित होने पर सेनापति हिम्मत सिंह झाला ने छत्रसाल का विरोध करते हुए कहा "यह मैं जानता हूँ कि मरने के पहले हमारे राजा ने छत्रसाल को गोद लेने के लिए अपनी सलाह दी थी और हम सभी ने उसे स्वीकार किया था। लेकिन इस समय हम सब के सामने गोद लेने का प्रश्न है। इसलिए हम सब को इस विषय में सोच समझ कर काम करना चाहिए। मैं छत्रसाल को गोद लिए जाने के पक्ष में नहीं हूँ। छत्रसाल का पिता वृद्ध अजीत सिंह अभी तक मौजूद है। लड़के को सिंहासन पर बिठा कर पिता को अधीन बना कर प्रजा के समान रखना किसी प्रकार न्यायपूर्ण नहीं है। इसलिए अजीत सिंह को ही सिंहासन पर बैठने का अधिकार मिलना चाहिए।"

किसी ने हिम्मत सिंह झाला की बात का विरोध न किया। इसलिए सेनापति के प्रस्ताव के अनुसार अजीत सिंह कोटा के राज सिंहासन पर बिठाया गया। ढाई वर्ष के बाद अजीत सिंह की मृत्यु हो गयी। उसके तीन लड़के थे—छत्रसाल, गुमान सिंह और राज सिंह।

अजीत सिंह की मृत्यु हो जाने के पश्चात् उसका बड़ा लड़का छत्रसाल सिंहासन पर बैठा। प्रसिद्ध हिम्मत सिंह झाला की भी मृत्यु हो चुकी थी। इसलिए उनके स्थान पर उसका भतीजा जालिम सिंह सेनापति बनाया गया।

इन्हीं दिनों में आमेर का राजा ईश्वरी सिंह आत्म-हत्या करके मर गया था। उसके स्थान पर माधव सिंह सिंहासन पर बैठा। उसने बूंदी और कोटा-राज्य पर आक्रमण करने की तैयारी की। इन दिनों में अब्दाली के आक्रमण से मराठों की शक्तियाँ कमजोर पड़ गयी थीं। इसलिए कछवाहा वंश के राजपूत मराठों से निर्भय हो गये थे। सन् १७६१ ईसवी में माधव सिंह आमेर की एक विशाल सेना लेकर हाड़ौती-राज्य की तरफ रवाना हुआ और उनियारा पर आक्रमण करके उसने उस पर अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने लाखरी में जाकर मराठों को पराजित किया और उन पर भी उसने अधिकार कर लिया। इसके बाद वह पालीघाट पर पहुँचा। सुलतान पुर का हाडावंशी सामन्त वहाँ का अधिकारी था। माधव सिंह ने आक्रमण करके उसे पराजित किया और पालीघाट पर भी उसने अधिकार कर लिया। सुलतान पुर का सामन्त अपने परिवार के साथ उस युद्ध में मारा गया।

विजयी माधव सिंह इसके बाद आगे बढ़ा। भटवाड़ा नामक स्थान पर हाडा वंश के पाँच हजार राजपूत उसके साथ युद्ध करने के लिए तैयार थे। आमेर की सेना ने उन हाडा राजपूतों पर

वह क्रोध में आकर उत्तेजित हो उठा। अपने हाथ में भाला लेकर वह फिर लौटा और र
जाकर उसने आक्रमण किया। अजित के भाले से राणा भयानक रूप से घायल हो गया
मुख से उस समय इतना ही निकला—"ओह हाडा, तुमने यह क्या किया।"

कुछ ही देर में राणा की मृत्यु हो गयी। मेवाड़ के राणा को मार कर अजित सि
क्रोध मे शान्ति अनुभव की, जो मन्त्री के कहने से उसके हृदय मे पैदा हुआ था। वह अपनी
मे आ गया। राणा के मारे जाने का समाचार साधु उम्मेद सिंह ने सुना। वह बहुत दुख
उसने क्षण भर मे सोच डाला कि इस राज्य मे अब फिर पाप की वृद्धि हो रही है। उ
समय निश्चय किया कि अब मैं कभी अपने लडके का मुख नही देखूंगा।

कृष्णगढ के राजा के दो लडकियाँ थी। एक राणा को व्याही गई थी और दूसर
सिंह को। दोनो इस सम्बन्ध मे बँधे हुये थे। कदाचित इसी सम्बन्ध के कारण राणा को
था कि अजित सिंह के द्वारा मेरा कोई अनिष्ट न होगा। यद्यपि राणा की स्त्री ने उससे इस
कहा था कि तुम कभी अजित सिंह का विश्वास न करना। कई पीढी पहले मेवाड़ औ
राजाओ ने एक दूसरे पर आक्रमण करके अपने प्राणो को उत्सर्ग किया था। वह घटना
चुकी है। लेकिन दोनो राजवंशो ने उस शत्रुता को भुला दिया था।

इस दुर्घटना के एक दिन पहले मेवाड के राणा और अजित सिंह ने एक साथ बैठ क
किया था। उसके बाद ही वह अवांछनीय घटना घटी। प्राचीन ग्रन्थो के उल्लेखो से जाहिर
कि मेवाड के सामन्त अपने इस राणा से प्रसन्न न थे और इसीलिये राणा के मारे जाने पर
शान्त रहे। अजित सिंह के आक्रमण करने पर मेवाड के सामन्तो ने राणा की रक्षा करने
नही किया और न उन्होने अजित सिंह के साथ उस समय युद्ध किया। यद्यपि राणा के अने
वहाँ पर मौजूद थे। राणा के घायल होकर गिरते ही मेवाड के उपस्थित सामन्त अपने-अप
मे चले गये। इसका अर्थ स्पष्ट यह है कि राणा से उसके सामन्त प्रसन्न न थे।

राणा जहाँ पर मारा गया था, वहाँ पर उसकी एक मात्र उपपत्नी मौजूद थी। उ
तैयार करवा कर सती होने के लिये निश्चय किया और जिस समय चिता में अग्नि लग
जलने के पहले शाप देते हुये उसने कहा —"जिस अजित सिंह ने राणा का संहार किया
दो महीने के भीतर ही इसका फल मिलेगा।" बूंदी के एक ग्रन्थ मे लिखा गया है कि जहाँ प
के मृत शरीर के साथ सती होने के लिये चिता बनायी गयी थी, उस स्थान के एक वृक्ष
टूट कर पृथ्वी पर गिरी। उससे चिता की भूमि बिलकुल सफेद हो गयी।

इस घटना का उल्लेख करते हुये हाडा कवि ने लिखा है कि सती होने वाली राणा
पत्नी के शाप के अनुसार दो महीने मे ही अजित सिंह का अनिष्ट आरम्भ हुआ। उसके
माँस अपने आप गल-गल कर गिरने लगा और उसके कारण अजित सिंह की मृत्यु हो गयी

अजित सिंह के विशन सिंह नाम का एक लड़का था। अजित सिंह के मर जाने
वह सिंहासन पर बिठाया गया। लेकिन उसकी अवस्था बहुत छोटी थी और वह किसी प्रका
करने के योग्य न था। उम्मेद सिंह ने अपने राज्य से पहले ही सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था
इस अवसर पर बूंदी-राज्य के सम्बन्ध मे उसे विचार करना पड़ा। उम्मेद सिंह किसी प्रका
हाथो में शासन का प्रबन्ध नही लेना चाहता था। इसलिये उसने बालक विशन सिंह की
शासन की देख-रेख करने के लिये वे अपने विश्वासी धात्री-पुत्र को नियुक्त किया और उसे
सम्बन्ध मे बहुत-सी बाते समझा-बुझा कर उम्मेद सिंह फिर तीर्थ यात्रा करने के लिये

बहत्तरवाँ परिच्छेद

राजस्थान मे मराठो के आक्रमण---कोटा-राज्य के साथ जालिम सिह का सम्बन्ध---जालिम सिह के एक ही नेत्र था—उसके पूर्वज साधारण सामन्त थे —दिल्ली मे आपसी विद्रोह का भयानक दृश्य कोटा मे भावसिह का लडका माधव सिह—अर्जुन सिह के साथ माधव सिह की बहन का विवाह—माधव-सिह को कोटा के एक दुर्ग का अधिकार---कोटा-राज्य का सेनापति हिम्मत सिह—उसका साहस और शौर्य---मेवाड-राज्य मे जालिम सिह---उदयपुर मे मराठो का आक्रमण---कोटा-राज्य मे फिर जालिम सिह का आगमन—कोटा पर होलकर का आक्रमण -- जालिम सिह के द्वारा संधि—कोटा के सिहासन पर बालक उम्मेद सिह—उसके संरक्षण का प्रश्न—कोटा-राज्य के शासन का भार जालिम सिह पर ।

सन् १७६६ ईसवी मे गुमान सिह कोटा के सिहासन पर बैठा । उन दिनो मे वह साहसी और बुद्धिमान मालूम होता था । उन्ही दिनो म मराठा दल ने राजस्थान मे आक्रमण किया और उसने राजपूतो का सर्वनाश करने की चेष्टा की । गुमान सिह मे उनसे अपने राज्य की रक्षा करने की शक्ति थी । लेकिन कुछ ही दिनो के बाद उसे शासन का भार एक बालक को सौप देना पडा । कुछ बीच की परिस्थितियो पर प्रकाश डालने के बाद उस घटना का हमने उल्लेख किया है ।

कोटा-राज्य के साथ जालिम सिह का घनिष्ट सम्बन्ध था और इस राज्य के इतिहास के साथ उसके कार्यो का ऐसा मिश्रण है, जिससे उसके नाम के प्रति किसी प्रकार की उपेक्षा अथवा अवहेलना नही की जा सकती । वास्तव मे जालिम सिह इतनी अच्छी राजनीति जानता था कि वह कही पर भी रहकर अपनी मर्यादा कायम कर सकता था ।

जालिम सिह झालावशी राजपूत था । सन् १७४० ईसवी मे उसका जन्म हुआ था । उसी वर्ष एक शक्तिशाली सेना लेकर भारतवर्ष पर नादिरशाह ने आक्रमण किया था । मोहम्मदशाह उन दिनो मे दिल्ली के मुगल सिहासन पर था और दुर्जनसाल कोटा का राजा था । मोहम्मदशाह ने नादिरशाह के साथ युद्ध किया था । जालिम सिह के एक ही नेत्र था । उसने भटवाड के युद्ध मे अपनी अद्भूत राजनीति और वीरता का परिचय देकर राजस्थान मे प्रसिद्धि पायी थी ।

जालिम सिह के पूर्वज सौराष्ट्र के झाला वे अन्तर्गत हलवद के साधारण सामन्त थे । उस वश के भावसिह नामक एक नवयुवक ने अपने पिता का स्थान छोडकर किसी दूसरे राज्य मे जाने के लिए यात्रा की थी उन दिनो मे औरङ्गजेब के वशजो मे दिल्ली का सिहासन प्राप्त करने के लिए सघर्ष चल रहा था । भावसिह ने वहाँ जाकर एक पक्ष का आश्रय लिया । उन दिनो मे राजा भीमसिह दिल्ली के सैयद बधुओ से मिलकर अपनी शक्ति को मजबूत बना रहा था, उन्ही दिनो मे भावसिह का लडका माधव सिह कोटा मे आया । उसके साथ पच्चीस सवार सैनिक थे । राजा भीमसिह ने उसके झाला वश का परिचय पाकर सम्मानपूर्वक उसको अपने वहाँ स्थान दिया और उसे अत्यन्त होनहार समझकर न केवल उसके साथ स्नेह पैदा किया, बल्कि माधवसिह की बहन का विवाह अपने लडके अर्जुन सिह के साथ कर दिया और माधव सिह के रहने के लिए आणता नामक नगर दे

हाथ में देकर कहा : "यह तलवार तुम्हारे हाथ में है, यदि तुम मुझे अपना अनिष्टकर समझ उसकी सजा तुम मुझे दो और इस तलवार से तुम मेरे टुकडे-टुकडे कर डालो। लेकिन विश्वा तुम मेरे प्यारे बच्चे हो, मैं तुम्हारा कभी अनिष्ट नही सोच सकता।" श्री जी की इन बातो कर विशनसिंह फूट-फूटकर रोने लगा और उसने श्री जी के चरणो को पकडकर अपने अप क्षमा मांगी। श्री जी ने उसे क्षमा करके फिर एक बार अपनी छाती से लगा लिया।

कुछ देर में विशनसिंह ने अपने आँसुओ को पोछा और श्री जी से महल मे चलने उसने प्रार्थना की। लेकिन इसके लिये वह तैयार न हुये। लेकिन दोनो ने इस समय जो स्ने श्रद्धा भाव पैदा हुआ, उसमे फिर कभी कमी न आयी। यह सब देखकर मध्यस्थ जालिमसिह प्रसन्नता हुई।

इसके बाद आठ वर्ष तक उम्मेदसिह अपने जीवन के दिन व्यतीत किये। अब वह हो गया था। उसकी इस दशा में विशनसिंह ने उसके पास जाकर प्रार्थना की : "आप राजमहल मे चलिए। वही पर आपके पूर्वजो ने अपने जीवन का अन्तिम समय व्यतीत किया

विशनसिंह की इस प्रार्थना को श्री जी ने स्वीकार कर लिया और बूँदी के राज चला गया। जिस दिन वह बूँदी पहुँचा था। उसी रात मे उसकी मृत्यु हो गयी। सन् १८० मे उम्मेदसिंह ने संसार छोडकर स्वर्ग की यात्रा की। उम्मेदसिंह ने तेरह वर्ष की अवस्था के कठोर संघर्ष में प्रवेश किया था। उसके बाद उसने अपनी अवस्था के साठ वर्ष पूरे किये। अपने पूर्वजों का राज्य प्राप्त करने के लिये न जाने कितनी बार मृत्यु का सामना किया और उसने राज्य छोडकर जीवन के अन्तिम समय तक तपश्चर्या की। उसने सम्पूर्ण जीवन में क का सामना करके राजपूत राजाओं के लिये एक आदर्श उपस्थित किया।

हाडा वंश के इतिहास में उम्मेदसिंह की मृत्यु का वर्ष बहुत महत्वपूर्ण समझा जा इन्ही दिनो में एक अङ्गरेजी सेना मॉनसन के नेतृत्व में यहाँ पर आयी थी और उसने राजपूतो विशेष रूप से बूँदी के प्रमुख शत्रु होलकर को परास्त करने के लिये युद्ध किया था। उस स उम्मेदसिंह जीवित था या नही, अथवा उसके परामर्श से यह युद्ध हुआ था अथवा नही, यह नही मालूम। उस समय बूँदी के राजा ने होलकर के साथ युद्ध करने मे बड़ी सहायता की। समय अङ्गरेजी सेना ने होलकर को पराजित करने के उद्देश्य से यात्रा की थी, उस समय भी युद्ध से अङ्गरेजी सेना के भागने पर बूँदी के राजा ने बडे साहस के साथ सभी प्रकार उसक यता की थी। उसने अङ्गरेजी सेना को अपने राज्य से होकर जाने की आज्ञा दी और आव नुसार सभी प्रकार की दूसरी सहायताये करके बूँदी के राजा ने आने वाले सङ्कटो को अ किया। इसमे कोई सन्देह नही कि अङ्गरेजी सेना की सहायता करने के कारण ही मराठा होलकर ने बूंदी राज्य का सर्वनाश करने की चेष्टा की थी। उन दिनो मे संकीर्ण राज कारण हम उसको कुछ समझ न सके थे और यह बात भी सही है कि उस तरफ बहुत क दिया गया था।

सन् १८१७ ईसवी में जब हमने आक्रमणकारियो का मुकाबिला करने के लिये राज राजाओ को आमन्त्रित करके क्रान्फेरेन्स करने और सम्मिलित शक्तियो के द्वारा शत्रुओं को करने का प्रयत्न किया तो जो राजा आकर उस कान्फेरेन्स में सम्मिलित हुये, उनमे बूंदी सबसे प्रथम था। इसका एक कारण यह भी था कि राजस्थान मे मराठो का सबसे अधिक बूंदी राज्य पर था और उन दिनो मे बूंदी का राजा अपने राज्य मे जितनी मालगुजारी वसूल

राजा गुमान सिंह ने सेनापति का पद और आणता का नगर जालिम सिंह के मामा भूपति सिंह को दे दिया।*

राजा गुमान सिंह का व्यवहार देखकर जालिम सिंह को अपना अपमान मालूम हुआ। इसलिए वह कोटा-राज्य छोडकर किसी दूसरे राज्य मे चले जाने की बात सोचने लगा। आमेर-राज्य के कछवाहो से लडकर भटवाडा की लडाई मे उसने कोटा राज्य की रक्षा की थी। इसलिए वह जयपुर राज्य जा नही सकता था। मारवाड राज्य जाना उसने अपने लिए अच्छा नही समझा। इस दशा मे जालिम सिंह मेवाड-राज्य के सम्बन्ध मे बार-बार विचार करने लगा। वहाँ पर उसके वश का एक राजपूत राणा के दरबार मे था और मेवाड-राज्य मे उसने एक प्रधान सामन्त का पद पाया था और झाला सामन्त के नाम से प्रसिद्ध था। वह सामन्त जालिम सिंह के वश का था। उसने मेवाड के सघर्ष मे अरिसी का पक्ष लेकर उसको मेवाड के सिंहासन पर बिठाया था। इसलिए राणा अरिसी झाला सामन्त से बहुत दबा हुआ था और राणा को विवश बनाकर उस झाला सामन्त ने शासन मे बहुत से अधिकार अपने हाथ मे कर लिये थे।

जालिम सिंह ने सोच-समझकर कोटा-राज्य छोड दिया और वह मेवाड मे चला आया। उसकी योग्यता की प्रशसा पहले ही राणा अरिसी सुन चुका था। इसलिए राणा ने जालिम सिंह को अपने यहाँ सम्मान के साथ लिया। वह साहसी, नीतिकुशल और शूरवीर था। इसलिए थोडे ही दिनो मे जालिम सिंह राणा का विश्वासपात्र बन गया। राणा की दशा उन दिनो मे बहुत शोचनीय थी। जिस झाला सामन्त की सहायता से वह सिंहासन पर बैठा था, वह सामन्त मेवाड-राज्य मे मनमानी कर रहा था। उसने विरोधी सामन्तो की जागीरो को राज्य मे मिला लिया था और राज्य के जिन लोगो ने विद्रोह किया, उसके साथ उसने भयानक अत्याचार आरम्भ कर दिये थे। राणा अरिसी इन सब बातो को अच्छा नही समझता था। परन्तु उस झाला सामन्त के विरुद्ध वह कुछ कर नही सकता था और उसकी दुर्बलता मे झाला सामन्त राज्य मे, जो चाहता था, करता था।

राणा अरिसी ने जालिम सिंह की प्रशसा पहले से ही सुनी थी। उसको वह साहसी और नीतिकुशल समझता था। इसलिए राणा ने उससे सभी प्रकार की आशाये की। जालिम सिंह ने राणा की परिस्थितियो का अध्ययन किया। इसके बाद उसने एक योजना तैयार की, जिसमे देलवाडा का वह झाला सामन्त जान से मारा गया। उसके मरते ही राणा की सम्पूर्ण विवशता का अन्त हो गया। इसके लिए राणा ने जालिम सिंह को राजराणा की उपाधि दी और मेवाड की दक्षिणी सीमा पर चित्रखाडिया नामक स्थान उसको पुरस्कार मे दिया। उस समय से जालिमसिंह मेवाड के दूसरी श्रेणी के सामन्त मे माना गया।

यद्यपि झाला सामन्त के मारे जाने से राणा की बहुत-सी कठिनाइयो का अन्त हो गया था, परन्तु मेवाड के सिंहासन के लिए जो सघर्ष पहले चल रहा था और उसका जो वशज सिंहासन पर बैठना चाहता था, वह राज्य के अनेक सामन्तो से मिलकर अब भी राणा के विरुद्ध षडयत्र कर रहा था। वह अभी तक शान्त न था और मेवाड के सिंहासन से राणा अरिसी को हटा कर स्वय बैठने की चेष्टा कर रहा था। उसने इन दिनो मे फिर से विद्रोह किया और अपनी सहायता मे मराठो को लाकर उसने राणा को सिंहासन से उतार देने का प्रयत्न किया। जालिम

* इस आणता नगर का नाम कई स्थलो पर और दूसरे ग्रन्थो मे नान्दता लिखा गया है।—अनु०

न हो सका और सब मिलाकर सत्रह वर्ष तक राज्य करके सन् १८२१ ईसवी की १४ जुलाई उसकी मृत्यु हो गयी।

विशनसिह के चरित्र के सम्बन्ध मे यहाँ पर संक्षेप मे कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है। ईमानदार था और पूर्ण रूप से वह राजपूत था। उसका हृदय कपटहीन था, उसमे कोई बनावट थी, उसका अन्तरतर उज्वल और आत्मा महान् थी। वह समझदार था और दूरदर्शिता से लेता था। जिन दिनो मे मराठो ने उसके राज्य का अधिकांश कर वसूल करके उसे दीन-दुर्बल दिया था, उन दिनो मे भी उसने अपने जीवन को एक नयी दिशा मे मोडकर सन्तोष के दिन f थे। वह शिकार खेलने का पहले से ही शौकीन था। इन दिनो मे उसने अपने जीवन का एक प्र कार्य शिकार खेलना ही मान लिया था। वह रोजाना शिकार के लिये जाया करता था और चीतो तथा बाघो के अतिरिक्त एक सौ से अधिक केवल शेर मारे थे। अपनी इस शिकार प्रियत कारण ही उसका एक पैर टूट गया था, जिससे वह लँगड़ा हो गया था। फिर भी उसके इस प्र के जीवन मे अन्तर न पड़ा था। उसे देखकर सहज ही इस बात का अनुमान होता था कि वह शूरवीर राजपूत है। वह अपने पूर्वजो की तरह स्वाभिमानी था और जिस किसी का साथ दे लिये वह एक बार निश्चय कर लेता था, प्रत्येक कठिनाइयो का सामना करके उसका वह साथ था। शक्तिशाली मराठो के द्वारा आने वाली विपदाओ की अपेक्षा उसने अङ्गरेजो का साथ दिया

राजा विशनसिह ने अपने यहाँ एक सुरक्षित कोष खोला था और उसमे प्रतिदिन ए रुपये डालने के लिये उसने अपने मन्त्री को आदेश दे रखा था। मन्त्री को किसी भी अवस्था मे ये रुपये उस कोष मे डालने पडते थे। इसके अभाव में राजा मन्त्री को किसी प्रकार क्षमा नही सकता था।

दूसरे राज्यो की तरह, बूँदी राज्य मे भी राज्य का प्रबन्ध नीचे लिखे हुये चार अधिका के हाथो मे रहता है—(१) दीवान अथवा मुसाहिब (२) फौजदार अथवा किलेदार (३) बख्शी (४) रिसाला अथवा पारिवारिक हिसाब रखने वाला। प्रधान मन्त्री दीवान अथवा मुसाहिब के से सम्बोधित होता था। राज्य का सम्पूर्ण शासन उसी के अधिकार मे रहता था। फौजदार अ किलेदार, राज्य के दुर्गों का सरक्षक था। वश के राजपूतो को छोड़कर इस पद पर दूसरा नियुक्त नही किया जाता। बख्शी राज्य का सम्पूर्ण हिसाब-किताब रखता था और रिसाला राज का हिसाब रखता था।

राजा विशनसिह के दो लड़के थे। बडे लडके का नाम रामसिह था। ग्यारह वर्ष की अव मे वह सन् १८२१ ईसवी के अगस्त महीने मे पिता के सिंहासन पर बैठा। दूसरा लडका गोपाल अपने बडे भाई से कुछ महीने छोटा था। रामसिह अपने पिता की तरह शिकार खेलने का शौकीन था। इन दोनो लडको की माता कृष्णगढ की राजकुमारी थी। वह अत्यन्त समझदार हम हाड़ा वश के कल्याण की सदा कामना करते है।

बहुत समय के बाद युद्ध की परिस्थिति बदलने लगी। शत्रुओं की अपेक्षा संख्या मे कम होने के कारण बहुत-से हाडा राजपूत मारे गये और अंत मे मराठों की जीत हुई। राजपूत को पराजित करके मराठो ने कोटा-राज्य के अनेक स्थानो पर भयानक अत्याचार किये और लूटमार करने के बाद उन्होने मुकेत नामक दुर्ग को घेर लिया। यह समाचार राजा गुमान सिंह को मिला। उसने उस दुर्ग-रक्षक के पास अपना संदेश भेजा कि जैसे भी हो सके शत्रु से दुर्ग की रक्षा होना चाहिये। बुकायनी के युद्ध मे राजपूतो ने मराठो का भयानक रूप से संहार किया था।

राजा का इस प्रकार का आदेश पाकर कोटा राजधानी मे जाने के लिये अपनी सेना के साथ आधी रात को निकलकर दुर्ग का रक्षक रवाना हुआ। रात के अन्धकार मे जिस मार्ग से वह जा रहा था, उसकी सूखी घास मे एक साथ आग जल उठी। उसी समय मराठा सेना जाते हुये राजपूतो पर एकाएक आक्रमण किया। उससे कोटा के बहुत से सैनिक मारे गये।

सेनापति मल्हार होलकर ने बुकायनी के युद्ध मे भयानक क्षति उठायी थी। लेकिन इस बीच मे उसने अपनी शक्तियों को फिर से मजबूत बना लिया था। कोटा का राजा गुमान सिंह इस समय बडे संकटो मे था। उसको अपनी रक्षा के लिए कोई उपाय न मिल रहा था। इसलिये उसने बहुत-कुछ सोचकर इस बात का निर्णय किया कि भटवाडा के युद्ध मे जालिम सिंह के द्वारा हाडा राजपूतो ने सफलता पायी थी और इस समय भी जालिम सिंह के द्वारा ही कोटा-राज्य की रक्षा का कोई उपाय निकल सकता है। इस प्रकार सोच-समझकर उसने जालिम सिंह को बुलाया और होलकर के साथ संधि करने का उत्तरदायित्व उसने उसको सौंपा।

जालिम सिंह संधि का प्रस्ताव लेकर होलकर के पास गया। दोनो पक्ष की बातचीत समाप्त होने के बाद होलकर ने संधि करना स्वीकार कर लिया। उस संधि मे निश्चय हुआ कि कोटा के राजा गुमान सिंह से छै लाख रुपये लेकर मल्हारराव होलकर अपनी सेना के साथ कोटा राज्य से वापस चला जायगा।

जालिम सिंह के निर्णय के अनुसार होलकर के साथ संधि हो गयी। वह छै लाख रुपये लेकर कोटा-से चला गया। जालिम सिंह की सफलता पर गुमान सिंह बहुत प्रसन्न हुआ। उसके अधिकार के जो नगर और ग्राम उससे उसने ले लिए थे, उनको फिर से दे दिये और कोटा-राज्य का फिर उसको सेनापति बना दिया।

इसके कुछ दिनो के बाद गुमान सिंह बीमार पडा। उसका रोग सेहत न हो सका। मरणासन्न अवस्था मे पहुँच कर वह इस बात के लिये चिन्तित हुआ कि अपने छोटे बालक के संरक्षण का भार किसको सौंपा जाय। अन्त मे गुमान सिंह ने अपने सब सामन्तो की मौजूदगी मे दस वर्ष से बालक उम्मेद सिंह के संरक्षण का भार जालिम सिंह को सौंपा। उसके बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

राजा गुमान सिंह के मर जाने के बाद सन् १७७१ ईसवी मे बालक उम्मेद सिंह कोटा के सिंहासन पर बैठा। पुरानी प्रथा के अनुसार अभिषेक के दिनो मे वह कैलवाडा के राजा के साथ युद्ध करने गया। उस युद्ध मे विजयी होकर उसने कैलवाडा अपने राज्य मे मिला लिया। राज सिंहासन पर उम्मेद सिंह के बैठने के पश्चात् जालिम सिंह ने शासन का उत्तरदायित्व अपने हाथो मे लिया। वह दूरदर्शी और राजनीतिज्ञ था। उसने कोटा राज्य मे अपना आधिपत्य इस प्रकार आरम्भ किया कि जीवन के अंतिम समय तक उसकी शक्तियाँ राज्य मे कायम रहे।

राजा गुमान सिंह ने मरने के समय जालिम सिंह को राज्य की रक्षा का भार सौंपा था। उस समय राज्य के सभी सामन्त उपस्थित थे। लेकिन वे सभी जालिम सिंह से प्रसन्न न थे।

और बाद में वे नवाब की उपाधि से प्रसिद्ध हुये थे। उत्तर में कोटा की सीमा चम्बल नदी के कि
सुलतानपुर तक थी। चम्बल नदी के दूसरी तरफ नाशता नाम का एक स्वतन्त्र छोटा-सा राज्य
उनमें सब मिलाकर तीन सौ साठ नगर और ग्राम थे। अनेक नदियो का पानी मिलने के कारण
की भूमि बहुत उपजाऊ थी।

राजा माधवसिंह ने कोटा का अधिकार प्राप्त करके उसकी सीमा मे उन्नति की और स.
पूर्वक उसने राज्य का विस्तार किया। माधवसिंह के मरने के पहले इस राज्य का विस्तार म
और हाडौती की सीमा तक हो गया था। सन् १६३१ ईसवी मे माधवसिंह की मृत्यु हो गयी।
पाँच लड़के थे। उनमे चार को कोटा राज्य मे प्रधान सामन्तो का पद प्राप्त हुआ। माधवसि
वंशज माधानी नाम से प्रसिद्ध हुये। उसके पाँच लडको के नाम इस प्रकार हैं :

१—मुकुन्दसिंह, कोटा का राजा हुआ।

२—मोहनसिंह, इसको पलायता का अधिकार मिला।

३—जुझारसिंह को कोटरा और उसके बाद रामगढ़ रेलावन का अधिकार मिला।

४—कनीराम को कोइला का अधिकार मिला। इसके सिवा दिल्ली के बादशाह से
देह और जोरा का अधिकार मिल गया।

५—किशोरसिंह को सांगौद का अधिकार प्राप्त हुआ।

माधवसिंह की मृत्यु के बाद उसका बडा बेटा मुकुन्दसिंह कोटा के सिंहासन पर बैठा।
अपनी सीमा पर हडौती और मालवा के बीच एक रास्ते का निर्माण कराया और उसका नाम,
नाम के आधार पर मुकुन्ददर्रा अथवा मुकुन्द द्वार रखा। इसी रास्ते से सन् १८०४ ईसवी मे
रेज सेनापति मानसन की सेना युद्ध मे पराजित होकर भागी थी। कोटा के इतिहास मे मुकुन्द
की प्रशंसा की गयी है। उसने अपने राज्य मे कई एक मजबूत दुर्ग और तालाब बनवाये थे। आ
नामक स्थान की सुदृढ दीवारे उसी की बनवाई हुई हैं।

राजा मुकुन्दसिंह अपने पूर्वजो की तरह साहसी और शूरवीर था। जिन दिनो मे बाद
औरङ्गजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर लिया था और मुगल सिंहासन पर बैठने के
उसने युद्ध आरम्भ किया था, उस समय प्राय: सभी राजपूत राजाओ ने उसका विरोध करके
शाह की तरफ से युद्ध किया था। जिन राजाओ ने शाहजहाँ का साथ दिया था, उनमे राठौर
वंश के राजा प्रमुख थे। कोटा के राजा माधवसिंह के लडको ने निर्भीकता के साथ बादशाह
जहाँ के पक्ष का समर्थन किया और उज्जैनी के निकट होने वाले युद्ध मे औरङ्गजेब के साथ युद्ध कि
उस युद्ध मे औरङ्गजेब की विजय हुई। उसने उस स्थान का नाम जहाँ पर युद्ध हुआ था—फतेह
रखा। औरङ्गजेब की प्रबल सेना के साथ युद्ध करके माधवसिंह के पाँचो लडको ने अपनी वीरत
परिचय दिया। यद्यपि वे राजनीति कुशल औरङ्गजेब की चालो के कारण विजयी नही हो
परन्तु वे युद्ध से भागे नही और वही पर अपने प्राणो की बलि देकर चार लडको ने अपने वश
मस्तक ऊँचा किया। उस युद्ध मे सबसे छोटा लडका किशोरसिंह भयानक रूप मे घायल हु
लेकिन वह किसी प्रकार उन घावो को सेहत करके युद्ध के बाद जीवित बच सका और फिर
दक्षिण के युद्ध मे बीजापुर का युद्ध करते हुये उसने अपने रण-कौशल का परिचय दिया था, ले
मुगल बादशाह के यहाँ उसके इन बलिदानो का सम्मान न मिला।

राजा मुकुन्दसिंह युद्ध मे मारा गया गया। इसलिये उसका लडका जगतसिंह कोटा के सि
सन पर बैठा। दिल्ली के बादशाह ने उसको अपने यहाँ दो हजार सेना पर मनसबदार अर्थात्

जसकर्ण ने जालिम सिंह की इन बातो का विश्वास कर लिया। उसने किसी प्रकार खोज न की। वह उम्मेद सिंह के किसी शत्रु को जीवित नही देखना चाहता था। इसलिए उसने स्वरूप सिह को मार डाला। जालिम सिह को अपनी राजनीति मे पूरी सफलता मिली। कोटा के जो सामन्त और धनिक लोग उसके विरोधी थे, वे सब एक, दूसरे से मिले और उन्होंने इस प्रकार के अन्याय को देखकर कोटा से चले जाने का निर्णय किया। अपने निश्चय के अनुसार वे सभी लोग अपने-अपने नगरो और स्थानो से निकल गये और दूसरे राज्य मे जाकर रहने लगे। राज्य से निकले हुए लोगो ने जाने के समय कहा कि हम लोग राज्य को छोड़कर जाते है। लेकिन जालिम सिह के अन्याय और अत्याचारो का हम लोग जरूर बदला लेगे।

कोटा के भागे हुए सामन्त जयपुर और जोधपुर-राज्य मे जाकर रहने लगे और वहां के राजाओ से मिल कर जालिम सिह के विरुद्ध प्रचार करने लगे। उन दिनो मे मराठा लोगो के अत्याचार राजस्थान के राज्यो मे लगातार बढ़ रहे थे। इसलिए जयपुर और जोधपुर मे जालिम सिह के विरुद्ध कोई तैयारी न हो सकती। कोटा मे जालिम सिंह को भागे हुए सामन्तो के षड्यन्त्रो का पता चल गया। इसलिए उसने जयपुर और जोधपुर के राजाओ के पास संदेश भेजा कि कोटा-राज्य के विद्रोही सामन्तो को उनको अपने यहाँ आश्रय नही देना चाहिए। इसका परिणाम यह निकला कि उन भागे हुये सामन्तो को जो आश्रय मिला था, उसमे बाधा पैदा हो गयी। मराठो के अत्याचारो के दिनो मे कोई भी राजपूत राजा शासन मे शत्रुता पैदा करना उचित नही समझता था।

इन परिस्थितियो मे जो सामन्त कोटा-राज्य छोड़कर चले गये थे, उनको कोटा मे आने के लिए फिर से विवश होना पडा और उन्होने जालिम सिह के पास संदेश भेजकर प्रार्थना की कि हम लोगो को अपनी जन्म भूमि मे लौट कर आने के लिए फिर से अधिकार दिया जाय। जालिम सिह ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया, जिससे वे लोग फिर कोटा-राज्य मे आ गये। लेकिन उनके चले जाने के वाद उनकी जो जागीरे राज्य मे मिला ली गयी थी, वे उनको नही दी गयी। केवल जीवन-निर्वाह के लिए उन लोगो को थोडी-थोडी भूमि दे दी गयी और वे जालिम सिह की चालो से भयभीत होकर कोटा-राज्य मे रहने लगे।

इतना सब होने पर भी कोटा मे जालिम सिह के विरुद्ध एक छिपा हुआ विद्रोह चल रहा था और कुछ दिनो के वाद जालिम सिह के विरुद्ध जो विद्रोह पैदा हुआ, वह पहले की अपेक्षा अधिक भयानक था। कोटा मे जालिम सिह के विरुद्ध जो सामन्त थे, आथून जागीर का सामन्त देवसिह उन सबका प्रधान था। उसके जागीर की आर्थिक आमदनी साठ हजार रुपये थी। देवसिंह ने जालिम सिह के विरुद्ध एक नया विद्रोह पैदा किया। उसके अधिकार मे एक मजवूत दुर्ग था, जिसको उसने स्वय वनवाया था। उस दूर्ग मे जालिम सिह के विरोधी सामन्त आकर एकत्रित हुए और जालिम सिह के विरुद्ध तैयारी करने लगे।

जालिम सिह वडी सावधानी के साथ कोटा मे शासन कर रहा था। वह अत्यन्त दूरदर्शी था और उसके गुप्तचर चारो तरफ फैले हुए थे। जालिम सिह को मालूम हो गया कि आथून के दुर्ग मे विरोधी सामन्त एकत्रित होकर मेरे विरुद्ध तैयारी कर रहे है। इसलिए सचेत होकर उसने सोच डाला कि राज्य की सेना के द्वरा इन सगठित सामन्तो को परजित करना कठिन है। इस लिए किसी दूसरे उपाय का आश्रय लेना चाहिए।

इन दिनो मे दिल्ली के बादशाह का प्रभाव करीव-करीव वहुत कुछ क्षीण हो गया था। इसीलिए चारो तरफ अशान्ति और अराजकता वढ़ रही थी। मराठो का दल चारो तरफ लूटमार कर

दोनों सैयद बन्धुओ ने भीमसिंह को पश्चिम मे कोटा से पूर्व में अहीरबाडे से पठार की सम्पू का अधिकार दे दिया था। वह विस्तृत भूमि खीची लोगो और बूंदी के राज्य की था। उस प्रकार गांगरोन का प्रसिद्ध दुर्ग प्राप्त किया था और अलाउद्दीन के आक्रमण के समय बडे स साथ उस दुर्ग की रक्षा की थी। उसने मऊ, मैदाना, शेरगढ, बारां मङ्गरोल और बड़ोदा चम्बल नदी के पूर्वी दुर्गों पर अधिकार कर लिया था। जिनके द्वारा राज्य की पश्चिमी सी गयी थी।

इसके बाद भीलो ने अपने पूर्वजों के नगरो और ग्रामों पर अधिकार कर लिया। उन में मनोहर थाना एक स्थान था जो अब भी दक्षिण तरफ कोटा की सीमा पर है। वहां पर अपनी राजधानी कायम की और उनका राजा चक्रसेन वहां पर रहने लगा। उस राजा के अ में पांच सौ सवार सैनिक और आठ सौ धनुषधारी थे। मेवाड से लेकर सभी स्थानो के भील को अपना राजा मानते थे। ये भील लोग धार के राजा भीमसिंह के समय तक अपनी स्वतन्त्र रक्षा करते आये थे। परन्तु कोटा के राजा भीमसिंह ने भीलों के नगरों और ग्रामो पर अ करके और भीलो के वंश को विध्वंस करके अपने राज्य मे मिला लिया। इन्ही दिनो में उस सिंहगढ और पाटन पर भी अधिकार कर लिया। राजा भीमसिंह यदि और कुछ दिनो तक रहता तो कोटा राज्य की सीमा को वह पहाड के बाहर तक बढा लेता। उसमें अनारसी, पडावा और चन्दावतो के नगरो को भी अपने राज्य मे मिला लिया था, लेकिन भीमसिंह के बाद ये सभी नगर और ग्राम कोटा राज्य से निकल गये।

प्रसिद्ध कुलीच खां ने, जिसने इतिहास में निजामुलमुल्क के नाम से प्रसिद्ध पायी है, द स्वतन्त्र रूप से हैदराबाद राज्य की प्रतिष्ठा की थी। उसने दिल्ली के बादशाह के साथ विद्रोह मुगल साम्राज्य के नगरों और ग्रामो को लूटना आरम्भ किया। बादशाह ने जब यह सुना त आमेर के राजा जयसिंह कोटा के राजा भीमसिंह और नरवर के राजा गजसिंह को कुलीच आक्रमण करने और उसे कैद करके लाने का आदेश दिया।

भीमसिंह ने निजामुलमुल्क के पास जाकर और उसके साथ पगड़ी बदल कर बन्ध सम्बन्ध कायम किया। इसके बाद कुलीच खां ने जयसिंह को आक्रमण के लिये आता हुआ भीमसिंह के नाम मित्र भाव से एक पत्र लिखकर भेजा। उसमे उसने लिखा कि मैंने दिल्ली के शाह का कोई नुकसान नही किया और न उसके किसी ग्राम तथा नगर को लूटा है। इसलि सम्बन्ध मे बादशाह से जो कुछ भी कहा गया है, वह सब असत्य है। जयसिंह एक षड़यन्त्र और वह मेरे विनाश के लिये हमेशा चेष्टा करता रहता है। इसलिये आपसे मेरा अनुरोध आप उसकी बात का कभी विश्वास न करे और मेरी दक्षिण यात्रा मे कोई रुकावट न डाले।

निजामुलमुल्क का यह पत्र पाकर हाड़ा राजा भीमसिंह ने उत्तर मे लिखकर भेजा : और कर्त्तव्य परायणता मे अन्तर होता है। ये दोनो चीजें एक नही हैं और न वे एक सा सकती हैं। मुझे बादशाह की तरफ से जो आदेश मिला है, उसका पालन मुझे करना चाहिये इसीलिये मैं इतनी दूर से सेना लेकर आया हूं। बादशाह की आज्ञानुसार मैं कल प्रातःकाल ऊपर आक्रमण करूंगा।"

भीमसिंह ने अपना पत्र निजामुलमुल्क के पास भेज दिया। उसने उसको सावधान कर कुलीच खां ने अपनी रक्षा करने के लिये राजनीति के सभी दांव-पेच सोच डाले। उसने सिन्धु वाई और भौंरसा नगरो के निकटवाले पहाड़ी मार्ग पर मुकाम किया। यह स्थान ऐसा था, ज

उसे मार डाला जाय। षडयन्त्रकारियो की यह योजना जालिम सिह को प्रकट हो गयी। उसने पहरेदारो के स्थान पर राज्य की शक्तिशाली सुरक्षित सेना को नियुक्त कर दी। षड्यन्त्रकारियो के दरबार मे आने पर उस सुरक्षित सेना के सवार सैनिको ने एक साथ उन पर आक्रमण किया। उस आक्रमण मे बहुत से विरोधी लोग मारे गये और एक अच्छी संख्या मे लोग कैद कर लिये गये। षडयन्त्र का नेता बहादुर सिंह भागकर नर्मदा नदी के किनारे पाटन नामक स्थान पर चला गया और हाडा वश के कुल देवता केशव राय के मन्दिर मे पहुँच कर उसने आश्रय लिया। उसका विश्वास था कि बूँदी राज्य के उस मन्दिर मे आकर कोई मुझ पर आक्रमण नही करेगा। परन्तु जालिम सिह के सैनिको ने उस मन्दिर को घेर लिया और उसको कैद करके मार डाला।

राजस्थान के प्राचीन ग्रथो से यह भी मालूम होता है कि उम्मेद सिह के हितो की रक्षा करने के लिए बहादुर सिंह मारा गया था क्योकि उसके षडयंत्र की योजना का उद्देश्य यह था कि उम्मेद सिह को सिहासन से उतारकर उसके छोटे भाई को उस पर बिठाया जाय। यह बात कहाँ तक सही है, इसको निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता है कि षडयन्त्रकारियो ने सोचा हो कि जालिम सिह ने उम्मेद सिह को अपने हाथ की कठपुतली बना रखा है। इसलिए उसको सिहासन से उतार दिया जाय। इस प्रकार का अनुमान किया जा सकता है। उन दिनो मे कोटा राजवश का राजसिंह जो उम्मेद सिह का चाचा था अपने दोनो भाइयो गोवर्द्धन सिह और गोपाल सिह के साथ जीवित था। आश्रून मे सामन्त के विद्रोह के दिनो मे गोवर्द्धन सिह और गोपाल सिह दोनो विद्रोहियो की सहायता कर रहे थे। इसलिए जालिम सिह ने उन दोनो भाइयो को कैद करवा लिया। दस वर्ष तक कारागार मे रह कर गोवर्द्धन की मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका छोटा भाई गोपाल सिह भी बहुत दिनो तक कैदी की दशा मे रहने के बाद मर गया। उम्मेद सिह का चाचा राजसिह वृद्ध हो गया था। वह बहुत दिनो तक जीवित रहा। लेकिन किसी षडयन्त्र मे वह शामिल न होकर एक मन्दिर मे बना रहता था।

सब मिला कर अठारह बार जालिम सिह के विरुद्ध षडयन्त्र किये गये। परन्तु विरोधियो को एक बार भी सफलता न मिली। अन्त मे राजमहल की स्त्रियो ने जालिम सिह को मार डालने की एक योजना बनायी उसमे वह भयानक रूप से फँस गया था। यदि राज महल की एक स्त्री साहस करके उसको बचाने की चेष्टा न करती तो जालिम सिह के सामने किस प्रकार का संकट उपस्थित होता, यह नही कहा जा सकता। राजमहल की स्त्रियो ने उसको कैद करने अथवा मार डालने का प्रयत्न किया। वह राज महल मे बुलाया गया। उसके महल मे पहुचते ही बहुत-सी राजपूत स्त्रियो ने अपने हाथो मे तलवारे लेकर उस पर आक्रमण किया। जालिम सिह महल के भीतर यह दृश्य देखकर घबरा उठा। उसको उस प्रकार के सकट की कोई आशका न थी आक्रमणकारी महिलाओ ने उसको कैद कर लिया। इस समय अपनी मुक्ति के सम्बन्ध मे कोई उपाय उसकी समझ मे न आया।

जालिम सिह को कैद करके राजपूत स्त्रियो ने उससे प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। जालिम सिह ने कोटा राज्य मे सेनापति का पद पाकर और बालक उम्मेद सिह का सरक्षक बनाने के बाद उसने जो कुछ भी किया था, उन स्त्रियो ने एक-एक घटना पर अलग-अलग प्रश्न करना आरम्भ कर दिया। उन स्त्रियो ने इन्ही प्रश्नो के बीच उसे मार डालने के लिए पूरी तौर पर इरादा कर लिया था। लेकिन इसी अवसर पर राजमहल की एक राजपूत स्त्री ने बडी बुद्धिमानी के साथ जालिम सिह का पक्ष लिया। हाडा वश के इतिहास मे लिखा हुआ उल्लेख इस बात को स्पष्ट रूप

तो भी वह नही खुल सकता। इसके सम्बन्ध मे एक घटना का उल्लेख किया गया है, ज
प्रकार है :

"कोटा का राजा दुर्जनशाल किसी युद्ध मे पराजित होकर अपने थोड़े-से सैनिकों के
आधी रात के समय राजधानी मे आया और पहरेदार से उसने फाटक खोलने के लिए कहा।
पहरेदार ने रात के समय फाटक खोलने से साफ-साफ इनकार किया। इसलिये कि उसको
मिल चुकी थी कि रात को किसी प्रकार फाटक न खोला जाय। यह देखकर राजा दुर्जनशाल
फाटक पर आया और अपना परिचय देकर पहरेदार से फाटक खोलने के लिए कहा। पहरेदा
इस पर भी फाटक नही खोला और उसने फाटक के भीतरी हिस्से से जवाब देते हुए कहा, '
रात मे किसी प्रकार नही खुल सकता। यदि आप इसके बाद फिर कहेगे तो मै बन्दूक की गोल
आपको मार दूगा। अगर आप हमारे राजा है तो भी बाहर ही रहकर कही पर रात बि
पडेगी।' राजा दुर्जनशाल ने निराश होकर रात का शेष भाग बाहर किसी स्थान पर व्यतीत ि
दूसरे दिन सबेरे फाटक खोला गया और पहरेदार जिस समय रात की इस घटना की बात
साथ के किसी सैनिक से कह रहा था, सामने से राजा दुर्जनशाल ने फाटक मे प्रवेश किया।
राजा को देखकर पहरेदार भयभीत हो उठा। उसने आगे बढकर अपने हाथ की बन्दूक राज
चरणो पर रख दी और हाथ जोड़कर वह खडा हो गया। राजा दुर्जनशाल ने मुस्कराते हुए
तरफ देखा और उसकी कर्त्तव्य परायणता से प्रसन्न होकर उसको पुरस्कार देने का आदेश दिया

राजा भीम सिंह के शरीर मे इतने अधिक जख्म आये थे कि उससे उनके शरीर की सु
नष्ट हो गयी थी। इसलिए वह अपने शरीर के सूखे हुए जख्मो को छिपाने के लिए हमेशा
पहने रहता था। कुरबाई युद्ध मे कुलीचखाँ के गोले से घायल होने के बाद उसके जख्मो को देख
जब एक राज्य अधिकारी ने उससे पूछा तो भीमसिंह ने उसको जवाब देते हुए कहा : "जो शा
करने के लिए पैदा हुआ है और अपने पूर्वजो के राज्य की रक्षा करना चाहता है, उसको तो
प्रकार की चोटो का सामना करना ही पडेगा।"

कोटा के राजाओ मे भीमसिंह पहला राजा था, जिसने मुगल बादशाह के यहाँ पञ्चह
मनसबदार अर्थात् पाँच हजार सेना पर सेनापति का पद प्राप्त किया था और महाराव की उ
पायी थी। यह उपाधि मेवाड के राणा से उसे मिली थी और मुगल बादशाह ने उसकी इस उ
को स्वीकार किया था।

बूँदी के गोपीनाथ के वशज हाडौती के प्रधान सामन्त थे और उनके सम्मान मे आप
शब्द का प्रयोग होता था किन्तु इन्द्रशाल उदयपुर जाने पर राणा की तरफ से उसको महार
की पदवी मिली। राजा भीमसिह के तीन लडके थे – अर्जुन सिंह, श्याम सिंह और दुर्जनसा
महाराजा अर्जुन सिंह का विवाह झाला के जालिम सिंह पूर्वज माधव सिंह की बहन के साथ हु
था। चार वर्ष तक राज्य करने के बाद अर्जुन सिंह की मृत्यु हो गई। उसके कोई सतान न थ
इसलिए उसके मर जाने के बाद कोटा के राजसिंहासन का अधिकार प्राप्त करने के लिए श्य
और दुर्जनशाल मे सघर्ष पैदा हुआ। वह सघर्ष लगातार बढा और राज्य की सम्पूर्ण शक्तियाँ
भागो मे विभाजित हो गयी। उदयपुर के युद्ध-क्षेत्र मे दोनो भाइयो ने अपनी-अपनी सेनाये ले
सग्राम किया और आपस मे ही लडकर और एक दूसरे का सर्वनाथ करके रक्त की नदियाँ बहा
उस युद्ध मे श्याम सिंह मारा गया उसके बाद युद्ध बन्द हो गया।

युद्ध के शान्त हो जाने के बाद दुर्जनशाल को—मारे जाने वाले श्याम सिंह के वियोग
दुख हुआ। इसके पहले राज्याधिकार के लिए उन्मत्त होकर वह अपनी बुद्धि को खो बैठा था।

अत्याचार पूर्ण साबित हो चुका था। उसने प्रजा पर कर का इतना भारी बोझ लाद रखा था कि उसने राज्य की शाँति सकट मे पड गयी। किसानो मे भूमि का कर अदा करने के लिए अपने आपको वे लोग बहुत असमर्थ समझते थे।

शासन की अयोग्यता और कठोरता के दिनो मे राजकर्मचारी प्रजा के लिए राक्षस बन जाते है। जालिम सिह के शासन काल मे कोटा राज्य की भी यही अवस्था हो गयी थी। जालिम सिह का शासन जितना अधिक कठोर था, राजकर्मचारियो का व्यवहार उतना ही अधिक भयानक था। किसानो के साथ उनके व्यवहार अमानुषिक हो गये थे। इस प्रकार के अत्याचार के दिनो मे कोटा राज्य के किसान भयानक दुर्दशा का जीवन बिताने लगे थे। उनमे से बहुत से अपनी जन्म-भूमि को छोडकर भाग गये। न जाने कितने भाग जाने के लिए रोजाना सोचा करते थे। जालिम सिह के राज कर्मचारी सहज ही किसानो के बैलो और पशुओ को छीनकर ले जाते थे। इस दशा मे बहुत बडी सख्या मे किसान खेती न कर पाते थे। और वे अपने पूर्वजो के कार्य को छोडकर नौकरी करने के लिए विवश हो जाते थे। बहुत से किसानो ने दूसरो के यहाँ नौकर होकर खेती का काम करना आरम्भ कर दिया था। राज्य की इस दुरवस्था मे बहुत सी भूमि बिना खेती किये ही पडी रह जाती थी। उस पर जालिम सिह राज्य की तरफ से खेती कराने का प्रयत्न करता था। जहाँ उसने एक तरफ राजकर्मचारियो को अनेक प्रकार के सुभीते देकर सतुष्ट कर रखा था, वहाँ उसने राज्य के दीनो दरिद्रो, किसानो और व्यवसायियो को गरीबी की भीषण परिस्थितियो मे पहुँचा दिया था।

जालिम सिह ने मेवाड राज्य मे भी अपना आधिपत्य कायम करने के लिये बडी चेष्टाये की। परन्तु एक घटना के कारण उसकी योजना को गम्भीर आघात पहुँचा। मराठा सेनापति इङ्गले के परिवार के साथ जालिम सिह ने अपनी घनिष्ट मित्रता पैदा कर ली थी। उसी इङ्गले वश का वालाराव मेवाड के द्वारा कैद करके उदयपुर के कारागार मे रखा गया था। जालिम सिह वालाराव को कैद से छुडाने के लिए उदयपुर गया। उसके फलस्वरूप जालिम सिह के प्रति राणा के व्यवहारो मे बहुत अन्तर पड गया और जालिम सिह ने मेवाड राज्य के सम्बन्ध मे जो कुछ सोच रखा था, उसकी सफलता मे भयानक आघात पहुँचा। जालिम सिह ऐसे अवसरो पर बड़ी राजनीति से काम लेता था। उसने मेवाड-राज्य मे अपनी असफलता को देखकर एक दूसरी योजना को जन्म दिया।

सन् १८०० तक जालिम सिह कोटा के दुर्ग के महल मे रहा। परन्तु सन् १८०३—४ ईसवी मे वालाराव को कैद से छुडाने के बाद जब वह मेवाड से लौटकर आया तो कोटा के दुर्ग के महल को छोडकर अन्यत्र अपने रहने का इरादा किया। उन दिनो मे अँगरेजी सेना ने राजपूतो के साथ सगठित होकर मराठो से युद्ध करना आरम्भ कर दिया था और उनके अधिकार से बहुत-से नगरो तथा ग्रामो को अग्रेजी सेना ने छीन लिया था। इसके फलस्वरूप मराठो की सेना कई टुकडो मे बँट गयी थी और उसने राजस्थान के अरक्षित स्थानो पर लूट मार करके भयानक अत्याचार किए थे।

जालिम सिह ने ऐसे अवसर पर बुद्धिमानी से काम लिया और उसने राजधानी के महल मे रहना छोडकर उस स्थान पर रहने का निर्णय किया, जहाँ पर मराठे आक्रमण करके लूट-मार कर सकते थे। ऐसा करने मे उसके दो उद्देश्य थे। पहला उद्देश्य यह था कि वह किसानो को माल गुजारी के नियमो मे सुधार और परिवर्तन करना चाहता था, दूसरा उद्देश्य यह था कि वह ऐसे स्थान पर रहना चाहता था, जहाँ से किसी बाहरी आक्रमण को रोक सकने मे वह समर्थ हो सके।

राजधानी को घेरे हुए पडे रहे। लेकिन उसको सफलता न मिली। अन्त मे निराश होकर अ
राजा ईश्वरी सिंह सब के साथ लौटकर चला गया। इन्ही दिनो मे मराठा सेनापति ज
सींधिया का एक हाथ गोली से उड गया।

शत्रुओ के आक्रमण के दिनो मे झाला राजपूत हिम्मत सिह कोटा राज्य मे प्रधान
था। उसने उस अवसर पर वडे साहस से काम लिया था और प्राणो की परवा न करके उसने
राजभक्ति का परिचय दिया था। उसी के परामर्श और मध्यस्थ होने से बाजीराव ने दुर्जनश
नाहरगढ का दुर्ग दे दिया था। सन् १७२६ और १७३४ के बीच को घटनाओ के समय जा
का जन्म हुआ और उसने अपने जीवन काल मे बहुत अधिक कीर्ति प्राप्त की।

बूंदी और कोटा राज्यो मे शत्रुता हो चुकी थी। लेकिन दुर्जनशाल ने उसको भुलाक
के राजा बुधसिंह के लडके उम्मेद सिंह की सहायता की और उसको अपने पूर्वजो के राज्य का
कार मिल जाए, इसके लिए उसने चेष्टा की। सबसे पहले होलकर से सहायता मॉगने के लिए
परामर्श दिया इसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। मराठा सेनापति होलकर से सहायता
यह परिणाम हुआ कि होलकर ने दुर्जनशाल से भी कर लेना आरम्भ कर दिया और दुर्जनशा
इसके लिए विवश होना पडा।

दुर्जनशाल ने कई एक नगरो को जीतकर और खीची वश का फूलवरोद नामक इलाका
अपने राज्य मे मिला लिया था। गूगोर नामक दुर्ग के सम्बन्ध मे हाडा लोगो के साथ खीची
का युद्ध हुआ। गूगोर के अधिकारी बलभद्र ने बडी वीरता के साथ अपने दुर्ग की रक्षा की। उ
मे बलभद्रपुरा, रामपुरा और शिवपुर आदि के सामन्त सगठित होकर हाडा लोगो के सा
थे। सम्वत् १८१० मे हाडा और खीची लोगो का युद्ध हुआ। बूदी के राजा उम्मेद सिह
युद्ध मे राजा दुर्गशाल की सहायता की और उसकी वीरता से कोटा के राजा को उस
सफलता मिली।

इसके तीन वर्ष बाद दुर्जनशाल की मृत्यु हो गयी। वह एक साहसी राजा था और रा
के सभी गुण उसमे मौजूद थे। साहस और वीरता के साथ-साथ उसमे उदारता थी। वह f
खेलने का बहुत शौकीन था। वह प्राय शेर और बाघ का शिकार किया करता था। दुर्जनशा
साथ शिकार खेलने के समय उसकी रानियाँ भी जाती थी। उन रानियो ने बन्दूक चलाने की
पायी थी। जगल मे जाकर एक बने हुए मञ्च पर अपने हाथो मे बन्दूके लेकर वे बैठती थी
आवश्यकता पडने पर वे सिह एवम् बाघ पर अपनी गोलियाँ चलाती थी।

शिकार खेलने के सम्बन्ध मे एक घटना का उल्लेख इस प्रकार पढने को मिलता है: '
दिन दुर्जनशाल अपने सेनापति हिम्मत सिंह झाला को लेकार शिकार खेलने के लिए गया।
साथ के सैनिको ने एक बाघ को उत्तेजित किया। उस समय वह शिकारी लोगो पर आक्र
करने के लिए दौडा। दुर्जनशाल ने यह नियम बना रखा था कि जब कोई शेर अ
बाग जङ्गल से निकल कर हम लोगो पर आक्रमण करे तो उस समय मञ्च पर बैठी हुई रा
अपनी गोलियो से उसको मारने की कोशिश करे। लेकिन आज ऐसा नही हुआ। जिस
वह बाघ क्रोध से उत्तेजित होकर दौडा उस समय हिम्मत सिंह झाला मञ्च के नीचे जङ्गली
पर खडा था। ऐसे अवसर पर राजा दुर्जनशाल की आज्ञा पाने पर रानियाँ गोलियाँ चल
थी। आज दुर्जनशाल ने गोली चलाने के लिए रानियो को आदेश नही दिया। इसी
मञ्च पर बैठी हुई किसी रानी ने गोली मारने का साहस नही किया। तड़पते हुए बाघ ने आ
हिम्मत सिंह पर आक्रमण किया। हिम्मत सिंह ने बडी तेजी के साथ ढाल से अपनी र

कोई उपाय बाकी नही रखा था। उसने इस बात का पूरा पूरा प्रबन्ध कर लिया था कि राज्य मे कोई बाहरी शक्ति सफलता न प्राप्त कर सके। इस प्रकार का प्रबन्ध वह राजधानी के महल मे रहकर नही कर सकता था। इसीलिये उसने राजधानी के बाहर अपने रहने के लिए स्थान चुना था।

जालिम सिंह को अभी तक अपने राज्य की भीतरी परिस्थितियों को समझने का अवसर नही मिला था। कोटा राज्य मे अब तक प्राचीन काल के बने हुये नियमों का पालन होता था। लेकिन इन दिनो मे उसने भली प्रकार समझ लिया कि प्राचीन काल के नियमो मे अब काम न चलेगा। क्योकि वे नियम राज्य की व्यवस्था करने मे बहुत अन्याय करते थे। वे किसानो से नियम के विरुद्ध इतना अधिक कर वसूल कर लेते थे, जो किसी प्रकार न्यायपूर्ण नही था। उसके परिणाम स्वरूप किसानो की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी। इस प्रकार का अन्याय राज्य मे उन पटेलो के द्वारा होता था, जिनको राज्य की भूमि का प्रबन्ध करने के लिये पूर्ण रूप से अधिकारी बना दिया गया था। उन पटेलो ने राज्य के कृषको के साथ बेईमानी करके अपने आप को सम्पत्तिशाली बनाने का काम किया था।

अपने नवीन स्थान मे रहकर जालिम सिंह ने कृषको की दशा को समझने का कार्य आरम्भ किया। उसने गुप्त रूप से सम्पूर्ण राज्य मे इस बात का पता लगाया कि पटेलो ने किस प्रकार किसानो के साथ बेईमानी करके अत्याचार किया है। इसके सम्बन्ध मे उसने बडी कठोरता के साथ खोज की और जब उसके अनुसंधान का कार्य समाप्त हो गया तो उसने राज्य के समस्त पटेलो को अपने यहाँ बुलाया। उन लोगो के आने पर जालिम सिंह ने अपने ईमानदार कर्मचारियो के द्वारा एक चिट्ठा तैयार करवाया, जिसमे इस बात के विवरण लिखे गये कि किस पटेल के अधिकार मे कितनी भूमि है और वह कितने किसानो से कर वसूल करता है। साथ ही इस बात का भी उसमे उल्लेख किया गया कि इन पटेलो मे आर्थिक अवस्था किसकी कैसी है और प्रत्येक पटेल की वार्षिक आमदनी क्या है।

इस प्रकार अनुसन्धान का कार्य करके और राज्य का एक विस्तृत लेखा तैयार करके जालिम सिंह खेतो और कृषको की अवस्था को देखने और समझने के लिये अपना निवास स्थान छोडकर बाहर निकला। उस भ्रमण मे उसने इस बात का भी एक लेखा तैयार करवाया कि राज्य मे कहाँ और कितनी भूमि वर्षा पर निर्भर है और कितनी भूमि को नदियो का पानी मिलता है। इस लेखे मे सभी प्रकार की भूमि को समझने की कोशिश की गयी और ईमानदारी के साथ इस बात का हिसाब तैयार किया गया कि राज्य की कितनी भूमि उपजाऊ, कम उपजाऊ और अनुपजाऊ है। जालिम सिंह ने इस बात का भी एक हिसाब तैयार करवाया कि पिछले कुछ वर्षों से किसानो से वसूल होने वाली मालगुजारी प्रति वर्ष किस प्रकार रही है। किस किसान से कितना कर लिया जाना चाहिये था और कितना लिया गया है। इस प्रकार अनुसंधान का कार्य समाप्त करके जालिम सिंह ने आदेश दिया कि अब किसानो से पैदा होने वाला अनाज न लेकर नकद रुपये लिए जायेंगे।

जालिम सिंह ने इस प्रकार भूमि का कर निश्चित करके कर वसूल करने वाले पटेलो के परिश्रम का निर्णय किया और आदेश दे दिया दिया कि प्रत्येक पटेल को अपने अधिकार की भूमि पर डेढ आना प्रति बीघा के हिसाब से कर देना होगा। पटेलो से वसूल होने वाला यह कर किसानो के कर की अपेक्षा बहुत कम रखा गया। इसके साथ ही उसने इस बात का भी आदेश दिया कि निर्धारित कर की अपेक्षा यदि कोई पटेल किसी किसान से अधिक कर वसूल करेगा तो उसके अधिकार की समस्त भूमि उससे छीनकर राज्य मे मिला ली जायगी। इस व्यवस्था के अनुसार

आक्रमण किया । आमेर की सेना के मुकाविले मे हाडा राजपूतों की संख्या बहुत थोडी थ
भी उन लोगो ने वडी वीरता के साथ युद्ध किया । इसी अवसर पर कोटा-राज्य के सेनापति
सिह ने राजनीति से काम लिया । उसकी अवस्था इक्कीस वर्ष की थी । उसने अपनी से
उस युद्ध मे प्रवेश किया और उसने आमेर की सेना के साथ बड़े साहस से यु
आरम्भ किया ।

मराठा सेनापति मल्हारराव होलकर इस युद्ध को कुछ दूरी पर रह कर देख
पानीपत के युद्ध के वाद वह निर्वल पड गया था । इसीलिए वह युद्ध मे किसी तरह
नही हुआ था । जालिम सिह ने जव माधव सिह को विजयी होता हुआ देखा तो वह अपने
तेजी के साथ होलकर के पास गया और उससे उसने कहा : "यदि आप इस युद्ध मे कि
का साथ नही देना चाहते,तो अपनी सेना लेकर माधव सिह के शिविर को लूट कर लाभ उ
है । यह एक अवसर आपके सामने है ।"

मल्हार राव होलकर ने जालिम सिह की इस बात को स्वीकार कर लिया । शि
होलकर की सेना के लूट करते ही युद्ध मे आमेर की सेना घवरा उठी और वह भयभीत
युद्ध छोड कर भागी । उस भगदड मे आमेर राज्य की पचरंगी पताका कोटा की सेना
कार मे आ गयी ।

भटवाडा के इस युद्ध मे जयपुर राज्य की शक्ति निर्वल पड गयी । इसके वाद वहाँ
ने हाडा लोगो पर आक्रमण करने का साहस नही किया ।

हाडा वंश के कवि ने इस युद्ध को देख कर प्रशसा करते हुए हाडा राजपूतो की वी
ओजस्वी शब्दो मे उल्लेख किया है । हाडा राजपूत उन कविताओ को अब तक स्वाभिमान
गाया करते है ।

अपनी स्वाधीनता और मर्यादा की रक्षा करने के लिए भटवाडा के युद्ध मे हाडा र
ने जिस प्रकार युद्ध करके अपने प्राणो को उत्सर्ग किया था, उसके स्मारक मे उस वंश
प्रति वर्ष एक उत्सव मानाया करते है । उस उत्सव मे आमेर का एक दुर्ग वनाया जाता
उत्सव के दिन उस दुर्ग का विध्वस किया जाता है ।

भटवाडा के युद्ध के वाद थोडे ही दिनो मे छत्रासाल की मृत्यु हो गयी । उसके कोई
न था । इसलिए उसका छोटा भाई कोटा के सिहासन पर बैठा ।

———

राज्य के किसान आवश्यकता पड़ने पर बोहरा लोगो से ऋण मे रुपये लेते थे और खेतो को बोने के समय अनाज भी लिया करते थे। खेतो का अनाज तैयार होने के पहले बोहरा लोग किसानो से किसी प्रकार का तकाजा नही करते थे। लेकिन अनाज तैयार होने पर सूद मिलाकर कुल रुपये किसान लोग अपने महाजन को अदा कर देते थे। इस प्रकार किसानो और बोहरा महाजनो के बीच एक ऐसा व्यवहार प्राचीन काल से चला आ रहा था कि उसमे उनके बीच मे किसी प्रकार की कटुता न थी। महाजन किसानो पर, ऋण देने के बाद भी किसी प्रकार का अत्याचार इसलिए नही करते थे कि फिर उनसे किसान लोग ऋण मे रुपये न लेंगे और उनके ऐसा करने से उन महाजनो का व्यवसाय मारा जायगा। कोई किसान अपने महाजन के साथ ऋण की अदायगी मे किसी प्रकार की बेईमानी इसलिये न करता था कि उससे फिर कोई महाजन उसको ऋण मे रुपये न देगा। इसलिये उन महाजनो और किसानो के बीच बहुत प्राचीन काल से सन्तोषजनक व्यवहार चला आ रहा था।

जालिम सिंह ने किसानो से निर्धारित कर के अतिरिक्त अधिक वसूल न करने के लिए पटेलो को सभी प्रकार विवश कर दिया। इस दशा मे उन पटेलो ने किसानो को लूटने के लिए एक नया रास्ता निकाला और उन्होंने बोहरा लोगो के व्यवसाय को नष्ट करके स्वय महाजनो का कार्य आरम किया। उन्होंने यह भी सोच डाला कि जालिम सिंह को हम लोगो पर अप्रसन्न होने का अवसर न मिले, इसलिये उन्होने एक बीच के मार्ग का आश्रय लिया। किसान लोग अपने खेतो का अनाज तैयार हो जाने पर राज्य-कर की अदायगी किया करते थे। लेकिन अब पटेलो ने एक नया नियम यह बना दिया कि खेतो का अनाज तैयार होने के पहले ही किसानो को राजा की मालगुजारी अदा कर देना चाहिये।

पटेलो का यह नियम किसानो के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ। इसलिए कि खेतो के अनाज को छोडकर राज्य-कर अदा करने के लिये उनके पास दूसरा कोई साधन न था। इसलिये उनके सामने भयानक सकट पैदा हो गया। अपनी इस विपद के समय ऋण मे रुपये लाने के लिये किसान लोग बोहरा महाजनो के पास दौडने लगे। पटेलो ने महाजनो से कह दिया कि जब तक किसान लोग मालगुजारी का रुपया अदा न कर दे, वे लोग किसानो को ऋण मे रुपये न दे। पटेलो के ऐसा कह देने के बाद उन महाजनो ने किसानो को रुपये देने से इनकार कर दिया। इस दशा मे राज्य के किसान पटेलो की शरण मे आने के लिए विवश हो गये। अब उनको राज्य मे कोई दूसरा स्थान दिखायी न पडा, जहाँ से वे रुपये लाकर राजा की मालगुजारी मे पटेलो को देते। वे लोग न तो अपने खेतो का उत्पन्न अनाज किसी को बेच सकते थे और न कही से ऋण मे रुपये ला सकते थे। इस भयङ्कर परिस्थिति मे किसानो ने अपने खेतो का अनाज पटेलो के यहाँ लाकर रखना आरम्भ किया। क्योकि राज्य मे मालगुजारी के रुपयो मे अनाज का लेना बन्द हो गया था और वे उनको रुपये देते थे। उस एकत्रित अनाज का भाव पटेलो पर निर्भर था, इसलिये कि दूसरा कोई अपने भाव मे उस अनाज को खरीद नही सकता था। इसलिये मनमानी भाव लगा कर अनाज के रुपये का हिसाब करके पटेलो ने किसानो को रसीद दी और उनसे लिखा लिया कि राज्य-कर देने के लिये हमारे पास रुपये न थे और हमारे इस अनाज को कोई दूसरा लेने वाला न था, इसलिये अपनी इच्छा से हमने अपना अनाज अपने भाव से पटेल को दिया है और उससे रुपये लेकर मैंने राज्य-कर अदा किया है।

पटेलो के किसानो से इस प्रकार लिखा लेने का अभिप्राय यह था कि जिससे जालिम सिंह को यह न मालूम हो कि पटेलो ने किसानो पर किसी प्रकार का अत्याचार किया है। इस प्रकार

दिया। माधवसिंह समझदार साहसी और नीतिज्ञ था। इसलिए राजा भीमसिंह ने सेनापति का पद दिया और जिस दुर्ग के महल मे वह स्वयं रहता था, उस दुर्ग का उसने अधिकारी बना दिया। बसके बाद कोटा राज्य मे माधवसिंह का सम्मान लगातार बढ़ा ख्याति प्राप्त की। उसके मरने के बाद उसके लडके मदनसिंह को सेनापति के स्थान पर रखा उसके दो लडके हुए—हिम्मत सिंह और पृथ्वीसिंह।
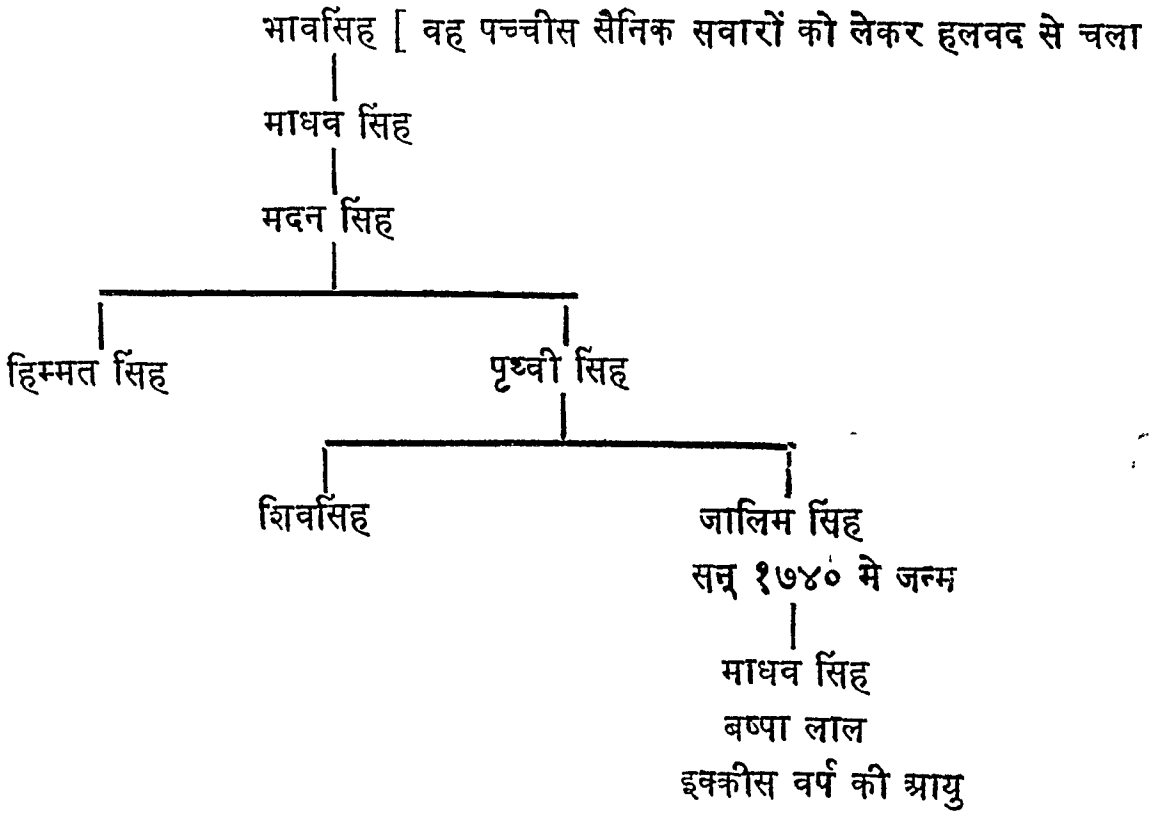
राजस्थान के राज्यो मे मन्त्री, दीवान, सेनापति आदि जब कोई पदाधिकारी मर है तो राज्य मे उसका स्थान उसके लडके को मिलता है। इस नियम के अनुसार मदन सिंह जाने पर हिम्मत सिंह झाला कोटा-राज्य का सेनापति बनाया गया। वह जिस प्रकार नीति साहसी और शूरवीर था उसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। जयपुर के राजा ने मराठो के लेकर जब कोटा-राज्य पर आक्रमण किया था तो हिम्मत सिंह झाला ने साहस पूर्वक कोटा रक्षा की थी। परन्तु उस समय कोटा-राज्य चारो ओर से घिरा हुआ था। इसलिए हिम्म के परामर्श से कोटा के राजा ने मराठो से सन्धि करके उनको कर देना मंजूर कर लिया था।

राजा दुर्जनशाल के मरने के वाद हिम्मत सिह ने अजीत सिंह को कोटा के सिंहास बिठाया था। हिम्मत सिह के कोई लडका न था। इसलिए उसने अपने भतीजे जालिम f गोद ले लिया था। हिम्मत सिंह की मृत्यु के वाद जालिम सिह कोटा राज्य का सेनापति गया। जालिम सिह ने भटवाडा के युद्ध मे आमेर राज्य की सेना के साथ भीषण युद्ध f और कोटा राज्य की रक्षा की थी। परन्तु इसके बाद कोटा राज्य की राजनीति मे परिवर्तन और उस परिवर्तन मे जालिम सिंह का सौभाग्य निर्वल होता हुआ दिखायी पडने लगा।

कोटा के सिंहासन पर जब गुमान सिंह बैठा तो राज्य मे जालिम सिंह का हुआ प्रभुत्व उसे अच्छा न मालूम हुआ। इसलिए राजा भीमसिह ने जो आणता नगर मा के रहने के लिए दे दिया था और जहाँ पर अब भी झाला वंश का एक परिवार र

व्यवस्था मे सफलता न मिली और उसे अपनी कायम की हुई व्यवस्था को तोडकर राज्य के नये नियमो का फिर से उसको आश्रय लेना पडा । यह सब पिछले परिच्छेद मे लिखा जा चुका है ।

कोटा-राज्य मे नयी व्यवस्था चालू होने पर वहाँ के किसानो को इस बात का विश्वास हो गया था कि हम लोगो के साथ पटेलो के अन्याय न होगे और हमारे जीवन की अधोगति शीघ्र ही दूर हो जायगी । वहाँ के किसानो का उस समय ऐसा सोचना स्वाभाविक ही था । क्योकि उनको इस बात का ज्ञान न था कि पटेल लोग अपनी कूटनीति से इस नयी व्यवस्था को पहले से भी भयानक कर देगे । इसलिये उन्होने पुराने नियमो के हटने पर अच्छे दिनो का सपना देखा था ।

पटेलो को नियन्त्रण मे लाकर जालिम सिंह ने जब नयी व्यवस्था चालू की तो कुछ दिनो तक खेती की दशा अच्छी रही और सम्पूर्ण राज्य मे लहराती हुई खेती को देखकर कोई भी बाहर का मनुष्य कोटा राज्य के किसानो की अच्छी दशा का अनुमान लगा सकता था । लेकिन एक बाहरी आदमी को इस बात का कैसे ज्ञान होता कि इन लहराते हुये हरे-भरे खेतो की समस्त पैदावार, भूमि का प्रबन्ध करने वाले पटेलो के घरो मे चली जायगी और उसका कुछ भाग रुपयो के रूप मे राज्य के खजाने मे जमा हो जायगा ।

अपनी व्यवस्था मे असफल होने के बाद जालिम सिंह ने राज्य के पुराने नियमो का फिर से आश्रय लिया था । वह पटेलो को नियन्त्रण मे न रख सका था । किसी औषधि के काम न करने पर जालिम सिंह को शान्त हो जाना पडा । राज्य के पटेल फिर से अनियन्त्रित होकर भूमि का प्रबन्ध करने लगे । इसका परिणाम यह निकला कि राज्य के किसानो की दशा लगातार बिगडती गयी । वे इस योग्य न रह गये कि वे खेती करके राज्य का कर अदा कर सकते और अपने परिवार को जीवित भी रख सकते । इस दशा मे निरुपाय होकर किसानो ने खेती का काम छोडना आरम्भ किया और वे वेतन लेकर किसी प्रकार अपना काम चलाने की कोशिश करने लगे । पटेलो ने ऐसे किसानो की भूमि को लेकर जालिमसिंह के अधिकार मे दे दिया और जालिमसिंह उन सभी खेतो मे स्वय खेती कराने लगा ।

सन् १७८४ ईसवी मे जालिमसिंह के उसकी निजी भूमि पर लगभग तीन सौ हल चलते थे परन्तु इसके कुछ ही वर्षों के बाद उसके हलो की सख्या आठ सौ तक पहुँच गयी । जालिमसिंह ने पुराने नियमो को तोडकर और नयी व्यवस्था चालू करके किसानो से राज्य-कर मे अनाज के स्थान पर रुपये लेना आरम्भ किया, उस समय उसके हलो की सख्या पहले से दूनी होकर एक हजार छै सौ तक पहुँच गयी थी । सन् १८२१ ईसवी मे जालिमसिंह की अपनी भूमि पर चार हजार हल चलते थे और उनमे सोलह हजार बैल काम करते थे । जालिमसिंह के वश के लोगो के अधिकार मे कितनी भूमि थी और उसमे कितने हल चलते थे, उनकी सख्या जालिमसिंह के हलो की सख्या से बिलकुल अलग थी ।

जालिमसिंह ने कोटा राज्य मे खेती के द्वारा अपरिमित सम्पत्ति पैदा की थी । वह अपनी इस सम्पत्ति के द्वारा राजस्थान के राजाओ मे सबसे अधिक सम्पत्तिशाली समझा जाता था । लेकिन उसकी इस उन्नति ने कोटा राज्य के किसानो और दूसरे लोगो को न केवल निर्धन, बल्कि भिखारी बना दिया । अपनी भीषण दरिद्रता के कारण राज्य के अगणित कृषको ने खेती का काम बन्द करके नौकरियो का आश्रय लिया था । इस प्रकार जो भूमि किसानो से छूटती जाती थी, उस पर जालिम सिंह का अधिकार होता जाता था ।

सिंह के साथ परामर्श करके राणा अरिसी ने एक सेना तैयार की और उसने मराठो के आरम्भ कर दिया। इस युद्ध मे राणा के विरोधी और मराठो की विजय हुई। जालिम होकर शत्रुओ के द्वारा कैद हो गया।

इस युद्ध मे पराजय होने के कारण और उसके मेवाड-राज्य का भाग विजेता की निर्भर हुआ। मराठा सेना ने उदयपुर को जाकर घेर लिया। मेवाड के राजपूतो ने बडे साथ मराठो के साथ युद्ध किया। परन्तु शत्रु-सेना के सामने उनकी संख्या बहुत कम होने उनकी एक न चली। अत मे राणा को मराठा सेनापति के साथ सधि कर लेनी पडी। अम्बाजी इङ्गले के पिता त्र्यम्बकराव ने जालिम सिंह को छोड दिया।

अपने जख्मो को सेहत करने के बाद जालिम सिह ने अपने भविष्य पर फिर एक ब किया। मेवाड मे कुछ दिन रहकर उसने भली प्रकार इस बात को समझ लिया कि यहाँ शक्तियाँ बहुत दीन-दुर्बल हो चुकी है। इसलिये उसके हाथ रहकर मै अपने भाग्य का कि कर सकता। इसलिये उदयपुर छोडकर पण्डित लालजी बेलाल के साथ वह कोटा च बुकायनी के युद्ध मे बहुत-से सैनिको के मारे जाने से मराठा सेनापति मल्हार राव हो निर्बल हो गया था, फिर भी वह अपनी सेना लेकर कोटा-राज्य पर आक्रमण करने रवाना हुआ।

कोटा के राजा गुमान सिंह को समाचार मिला कि मल्हरराव होलकर अपनी से आक्रमण करने के लिये आ रहा है। वह घबरा उठा और उसने इस बात का निश्चय कि जैसे भी हो सके, होलकर के साथ संधि कर लेना आवश्यक है। इस प्रकार निर्णय गुमान सिंह ने सधि करने के लिये अपने सेनापति को होलकर के पास भेजा। परन्तु उ को सफलता न मिली और वह निरश होकर लौट आया!

इन दिनो मे जालिम सिह उदयपुर से कोटा आ गया था। उसने मल्हरराव कारण कोटा राज्य पर आयी हुई विपद को सुना और उसने राजा गुमान सिंह से इरादा किया। राजा गुमान सिह स्वय इस समय सकट मे था। इसलिये उसने जा को अपने राज्य मे फिर से स्थान दिया। मराठो ने किले को घेर कर उस पर अ की चेष्टा की। परन्तु उन्हे सफलता न मिली। बस दशा मे मराठो ने अपने एक हाथी की दीवार को तोडने की कोशिश की। उस समय हाडा सेनापति माधव सिह को मालू यदि दुर्ग की दीवार टूट गयी तो दुर्ग पर शत्रु का अधिकार हो जायगा। यह सोचकर भी तरह दुर्ग की रक्षा करने के उपाय सोचने लगा।

इसी समय माधव सिंह ने देखा कि शत्रु का हाथी अपने मस्तक की टक्कर फाटक तोडने की कोशिश कर रहा है। उसी समय माधव सिह अपने हाथ मे तलवार के ऊपर के टक्कर मारने वाले हाथी की पीठ पर कूद पडा और उसने पीलवान को गिरा दिया। इसके बाद उसने हाथी की गर्दन पर अपनी तलवार के हाथ मारे भयानक रूप से घायल हुआ। दुर्ग से कूदने के बाद माधव सिह ने अपने प्राणो की अ दी थी। दुर्ग की रक्षा करने के लिये उसका यह अ तिम प्रयास था। माधव सिंह का शत्रु के हाथी पर कूदने और उसको मार करते हुये देखने के बाद हाडा राजपूत दुर्ग क खोलकर एक साथ निकल पड़े और अपनी तलवारो से उन्होने शत्रु-सेना का स आरम्भ किया।

इस हिसाब से साफ प्रकट होता है कि जालिम सिंह को खेती से जितनी आमदनी होती थी, खर्च उसका लगभग एक तिहाई होता था।

कोटा-राज्य मे अनाज रखने के लिये बहुत अच्छी व्यवस्था है। उसके लिये ऊँची जमीन पर खत्ती बनाई जाती है और उन खत्तियो मे नीचे घास और भूसा रखा जाता है और उसके ऊपर बहुत मोटी मिट्टी की तह लगाकर इस प्रकार मजबूत कर दिया जाता है कि अधिक से अधिक वर्षा के होने पर भी खत्तियो के अनाज को किसी प्रकार हानि न पहुँच सके। इस तरह वहाँ की खत्तियो मे जो अनाज रखा जाता है, वह कई-कई वर्षों के बाद भी खराब नही होता। जालिमसिंह अपने अधिकार मे बहुत-सा अनाज सुरक्षित रखता है और अकाल के पड़ने अथवा किसी प्रकार अनाज महँगा होने पर उसका वह सुरक्षित अनाज बाहर निकाला जाता है और समय के अनुसार काफी महँगा बेचा जाता है। अकाल अथवा किसी दूसरे कारण से फसल के खराब होने पर जालिम सिंह एक-एक वर्ष में साठ-साठ लाख मन तक अनाज बेचा करता है और उन दिनो में उसकी ये सुरक्षित खत्तियाँ सोने की खानो के रूप में हो जाती हैं।

सन् १८०४ ईसवी मे मराठा सेनापति होलकर ने भरतपुर राज्य और राजस्थान के दूसरे हिस्सो मे भयानक रूप से लूट की थी। उसके आक्रमण मे चारो तरफ की खेती बहुत-कुछ नष्ट हो गयी थी और एक अकाल-सा पड़ा था। उस समय कोटा-राज्य के अनाज से वहाँ के पीड़ित राज्यो को बड़ी सहायता मिली थी और जालिमसिंह ने अपना सुरक्षित अनाज बेचकर एक करोड़ रुपये वसूल किये थे।

कोटा-राज्य के हिसाब के कागजो को देखकर मालूम हुआ कि यहाँ के राजा को प्रजा से कर मे जो रुपये वार्षिक मिलते हैं, उनकी संख्या पच्चीस लाख रुपये तक है। जालिमसिंह ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि मेरी यह आमदनी उस भूमि से प्रति वर्ष होती है, जिसे मैंने अपनी समझकर किसानो को दे रखी है।

सन् १८०६ ईसवी में जालिम सिंह ने अपने राज्य मे उस अनाज पर एक कर लगाया था, जो राज्य से बाहर जाता था। उस कर के कारण राज्य मे बहुत अन्याय होने लगे थे। पहले यह कर बेचने वालो पर लगा था। लेकिन बाद मे राज्य के कुछ लोगो के परामर्श से वह कर खरीदने वालो पर भी लागू कर दिया गया। केवल इस कर से वर्ष मे जालिम सिंह को दस लाख रुपये की आमदनी होने लगी। यह कर एक ही अनाज के ऊपर चार-चार पाँच-पाँच बार तक वसूल होता था। इसके कारण प्रजा की कठिनाइयाँ अधिक बढ़ गयी और लोगो को गरीबी बढने लगी। साधारण आदमियो से लेकर सामन्तो तक—यह कर सभी को देना पड़ता था। इस कर के वसूल करने मे राज्य के कर्मचारियो ने भयानक अत्याचार किये। उस कर के वसूल करने का कोई नियम न था। वसूल करने वाले अपनी इच्छा से उसे कम और अधिक कर देते थे और इसके विरुद्ध राज्य मे कोई सुनवायी न थी। अङ्गरेजो के साथ कोटा-राज्य की सन्धि होने के दिनो मे इसके अत्याचार बहुत बढे हुये थे। कर वसूल करने वालो ने जालिम सिह की आज्ञा के विरुद्ध लोगो के साथ इतना अधिक अत्याचार किया था कि वे जब चाहते थे, राज्य मे इस कर को वसूल कर लेते थे। यह भी होता था कि जालिम सिंह के आदेश देने पर कर वसूल करने की कर्मचारी एक सूची तैयार कर लेते थे और उसके अनुसार गरीब और अमीर सभी से वह कर वसूल कर लिया जाता था। उस सूची के बनाने में किसी नियम का प्रयोग नही होता था। राज कर्मचारी जिस पर जितना चाहते थे, कर लगा देते थे और बड़ी कठोरता के साथ वह कर वसूल कर लिया जाता था। उस कर से कोई भी आदमी

इसलिए विरोधी सामन्तों को राजा गुमान सिंह का यह निर्णय अच्छा न मालूम हुआ। समय उन लोगों ने किसी प्रकार का विरोध न किया। कोटा-राज्य मे जालिम सिंह बढता हुआ देखकर विरोधी सामन्त चिन्तित होकर उसके साथ ईर्षा करने लगे और आ लोगो ने जालिम सिंह के प्रभाव को निर्बल करने का निर्णय किया। जालिम सिंह को सेनापति था। लेकिन उसका सम्बन्ध युद्धो के साथ था। राज्य के शासन-विभाग के कोई सम्बन्ध न था। शासन-विभाग मे राय अखैराम सबसे बडा अधिकारी था। शास को वह भली प्रकार जानता था। जालिमसिंह के सेनापति होने के दिनो मे अखैराम कोटा मन्त्री था। उसके शासन काल मे कोटा-राज्य ने सभी प्रकार की उन्नति की थी।

आरम्भ मे जालिम सिंह के विरोधियो की सख्या कम थी। लेकिन उसने र ७ अधिकार और आधिपत्य जितना ही बढाया, उसके विरोधियो की सख्या कोटा राज्य बढती गयी। जालिम सिंह राज्य का सेनापति था। परन्तु वह शासन मे भी अपना लगा। राज्य के मन्त्रियो और सामन्तो को यह किसी प्रकार सहन न हुआ। उन विरोध करके इस बात को साफ-साफ कहना आरम्भ किया कि राजा गुमान सिह ने को शासन मे कोई अधिकार नही दिया था। जो सामन्त जालिम सिंह के विरोधी थे, गुमान सिंह का भतीजा स्वरूप सिह और बॉकडोत का सामन्त भी था। इस सामन्त करके जालिम सिंह को सेनापति का पद दिया गया था। बालक उम्मेद सिह का धाभाई जालिम सिंह का विरोधी था। वह बुद्धिमान और दूरदर्शी था। इसलिए वह बालक उम पास हमेशा रहा करता था।

जो सामन्त जालिम सिंह के विरोधी थे, उनको जसकर्ण से बडी सहायता मिल सिह के विरुद्ध विरोधी सामन्तो ने कई बार षडयन्त्र रचे। परन्तु राजनीतिज्ञ जालिम विरोधियो को किसी प्रकार सफल नही होने दिया। जालिम सिंह की कूटनीति इस पूरी तौर पर चल रही थी। स्वरूप सिह उसका भीषण रूप से विरोधी हो रहा था जालिम सिंह ने उसको बदला देने का निश्चय किया। स्वरूप सिंह धाभाई जसकर्ण औ का सामन्त जालिम सिंह के प्रधान शत्रुओ मे थे। इसलिए जालिम सिह ने धाभाई को मिला लिया और उसके द्वारा जालिम सिंह ने स्वरूप सिह को मरवा डाला।

स्वरूप सिंह के साथ धाभाई का कोई विरोध न था। लेकिन जालिम सिंह धाभाई पर काम कर गयी। जालिम सिंह ने ही धाभाई को उकसाया, जिससे उसने पर आक्रमण करके उसको मार डाला। धाभाई जसकर्ण के इस अपराध की सभी और जिस जालिम सिंह ने उसको उकसाया था, वह भी उसके विरुद्ध हो गया। इ निन्दा से अपमानित होकर जसकर्ण कोटा-राज्य से चला गया और जयपुर मे उस हो गयी।

ऊपर यह लिखा जा चुका है कि राज्य के जो सामन्त जालिम सिंह के विरोधी सिह और जसकर्ण उनमे प्रधान थे। इसलिए जालिम सिंह ने अपनी राजनीतिक चा जसकर्ण को भडका कर स्वरूप सिंह को मरवा डाला। उसने जसकर्ण से कहा था कि कोटा के राज। सिहासन का अधिकार प्राप्त करना चाहता है : इसीलिए वह मेरा शत्रु व वह किसी षडयन्त्र के द्वारा उम्मेद सिंह को मार कर सिंहासन पर बैठना चाहता है। कोई उपाय न किया गया तो उम्मेद सिंह का भविष्य निश्चित रूप से अधकार मे है।

जालिमसिंह ने कोटा के शासन मे कुछ इस प्रकार की व्यवस्था की थी, जो न्यायपूर्ण होने पर भी लोगो को आश्चर्य जनक मालूम हो सकती है। भिक्षा माँगने वाले भिखारियो, साधुओ और सन्यासियो पर उसने कर लगाया था। जो विधवा स्त्री अपना दूसरा विवाह करना चाहती थी, उसको राज्य-कर मे बहुत सा धन देना पड़ता था। इस प्रकार जो उसने नये कर लगाये थे, उनमे कुछ का विरोध होने से उसने उनको वापस ले लिया था।

राजस्थान के प्रत्येक राज्य मे प्राचीन काल से भाटो और कवियो का आदर होता आया है। विवाह जैसे कार्यों के अवसरो पर राज्य की तरफ मे उनको बहुत सा धन दिया जाता है। इस प्रकार के धन को पाकर भाट और कवि लोग अपनी कविताओ के द्वारा दान देने वाले के यश का गान करते हैं। इस प्रकार का प्रचार सम्पूर्ण राजस्थान मे अब तक पाया जाता है। लेकिन जालिम सिंह इन भाटो और कवियो की कविताओ मे प्रशसा को सुनकर प्रसन्न नही होता था। उसका कहना था कि इन कवियो की कविताओ में एक भी सत्य नही होता वे झूठी प्रशंसा के गीत गाया करते हैं। उसकी इस बात का उत्तर देते हुये एक कवि ने कहा सत्य का आदर बहुत कम होता है। कोई सत्य बात सुनना नही चाहता। यदि आप पसन्द करते हैं तो मैं आपको सुनाता हूँ।"

कवि ने यह कह कर जालिम सिंह से अपराध के लिये क्षमा की प्रार्थना की और उसने जालिम सिंह के चरित्र के सम्बन्ध मे सत्य घटनाओ को लेकर कविता का सुनना आरम्भ किया। उसे सुनकर जालिमसिंह अत्यधिक क्रोधित हुआ और उसने कवि के अधिकार की समस्त पैतृक भूमि जब्त कर ली और उसके बाद उसने किसी भी कवि को अपने यहाँ आने से मना कर दिया।

राजस्थान के राजा हिन्दू धर्म के अनुसार ब्राह्मणो का अधिक सम्मान करते हैं और उनके अपराध करने पर भी उनको दण्ड देने का साहस नही करते। परन्तु जालिमसिंह के मनोभाव हिन्दू धर्म का समर्थन करने पर भी इससे भिन्न है। उसने अपराध करने पर ब्राह्मणो के साथ कभी दया नही की। उसके राज्य मे जब कोई ब्राह्मण राजनीतिक अपराध करता है, तो जालिम सिंह दूसरे लोगो की तरह उसको भी दण्ड देता है।

जालिम सिंह कोटा का राजा नही था। लेकिन राजा गुमान सिंह के मरने पर और उसके बालक उम्मेदसिंह के सिंहासन का अधिकारी होने पर जालिमसिंह—जो पहले उस राज्य का सेनापति था—बालक उम्मेदसिंह का सरक्षक बना दिया गया था। इस प्रकार वह राजा का एक प्रतिनिधि था। राजा गुमानसिंह के अन्तिम दिनो मे कोटा-राज्य की सीमा बहुत सीमित थी लेकिन जालिम सिंह ने कितने ही नगरो और ग्रामो को मिलाकर उस राज्य की सीमा का विस्तार कर लिया था। एक प्रतिनिधि की हैसियत से जब उसने कोटा का शासन पाया, उस समय राज्य का खजाना सम्पत्ति से बिलकुल खाली था और राज्य पर बाईस लाख रुपये का ऋण था। उन दिनो मे राज्य के दुर्ग टूटे-फूटे थे और राज्य की सेना बहुत निर्बल थी। जालिम सिंह ने बहुत-सा धन खर्च करके बहुत-से टूटे-फूटे दुर्गों की मरम्मत करायी और उनमे आवश्यकता के अनुसार युद्ध के अस्त्र-शस्त्र एकत्रित किये राज्य की चार हजार अश्वारोही सेना के स्थान पर उसने बीस हजार सैनिको की सेना कर दी और अपनी इस विशाल सेना को युद्ध की अच्छी शिक्षा दी। उसने अपने अधिकार मे एक सौ तोते रखी। राज्य के सामन्तो की अधीनता मे जो सेनाये थी वे उसकी सेना के अतिरिक्त थी।

इतना सब होने पर भी कोटा-राज्य का शासन क्या प्रशसनीय कहा जा सकता है? राजा गुमान सिंह ने क्या यही करने के लिये जालिम सिंह को उम्मेद सिंह का संरक्षक और प्रतिनिधि बनाया था? बीस हजार सैनिको की शक्तिशाली सेना रखकर क्या जालिम सिंह कोटा-राज्य के

रहा था और उसने अनेक प्रकार के अत्याचार करके कितने ही राज्यो को बरबाद कर
जालिम सिह ने मोसेज नामक एक सेनापति को बुलाया और उसको आथून के दुर्ग पर
करने एवम् विद्रोही सामन्तो को दमन करने का आदेश दिया। मोसेज अपनी सेना लेक
हुआ और आथून के दुर्ग को जाकर उ ाने घेर लिया। उस दुर्ग मे एकत्रित सामन्त तैय
बाहर निकले और उन्होने शत्रु पर आक्रमण किया। यह युद्ध कई महीने तक चलता र
पक्ष की विजय न हुई।

आथून के दुर्ग मे जो सामन्त एकत्रित थे, वे बडे साहस के साथ युद्ध करके शत्रु
रक्षा करते रहे। लेकिन कई महीनो के बाद उस दुर्ग मे उनके खाने-पीने की जो सामग्री
खत्म हो गयी। इसलिए दुर्ग के सामन्तो के सामने भयानक संकटपूर्ण परिस्थिति पैदा हुई
मे उन सामन्तो ने सेनापति मोसेज से कुछ प्रार्थना की। उसने उस प्रार्थना को स्वी
सामन्तो को सकुशल दुर्ग के बाहर चले जाने का अवसर दिया।

दुर्ग से निकलकर सामन्त कोटा-राज्य छोडकर चले गये और उन्होने दूसरे राज्य
आश्रय लिया। जालिम सिह ने इस समय जिस बुद्धिमानी से काम लिया था, उसमे उसक
से सफलता मिली और सामन्तो ने उसके विरुद्ध जो तैयारी की थी वह नष्ट हो गयी।
के चले जाने पर, जो भूमि उनको दी गयी थी, वह फिर से राज्य मे मिला ली गयं
दल के प्रधान देव सिह ने भी दूसरे राज्य मे जाकर आश्रय लिया था। वहाँ पर उसकी
गयी। इसके कई वर्षों के बाद देवसिह का लडका कोटा मे जालिम सिह के पास
उसने अपने आपको निरपराधी प्रमाणित करके आश्रय पाने की प्रार्थना की। जालिम सि
प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और पन्द्रन्ह हजार रुपये की वार्षिक आमदनी की जागीर
उसे दे दी। कोटा-राज्य मे कुछ और सामन्त थे जो निम्न श्रेणी के थे और छिपे तौर
सिह के विरुद्ध विद्रोह मे शामिल थे, जालिम सिह ने उनको क्षमा कर दिया और उन्हे रा
की आज्ञा दे दी। परन्तु उनको इतना निर्बल बना कर रखा कि जिससे वे फिर कभी f
का साहस न कर सके।

शत्रुओ के द्वारा जितने भी विद्रोही पैदा किये गये, जालिम सिह ने अपनी रा
द्वारा उन सब को नष्ट कर दिया और कोटा-राज्य के शासन को अपने अधिकार मे र
मेवाड के राज्य वश की एक लडकी के साथ विवाह किया था। उस लडकी के माध्य f
जालिम सिह के एक लडका पेदा हुआ। जालिम सिह अनेक विपदाओ ने रहने पर भी
कठिनाइयो का ध्यान रखता रहा। उसने सन् १७६१ ईसवी मे मेवाड की जो सहायत
उसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

जालिम सिह के विरोधी जो सामन्त कोटा राज्य से चले गये थे, वे फिर ज
के विरुद्ध तैयारी करने लगे। उन लोगो ने अब तक जितनी चेष्टाये की थी, वे सब
थी। सम्बत् १८३३ मे आथून के सामन्त के नेतृत्व मे जालिम सिह के विरुद्ध जो
गयी थी, उसमे असफलता मिलने के बाद बीस वर्ष तक जालिम सिह के विरुद्ध कोई f
किया गया। इसके बाद सन् १८०० मे दस हजार रुपये वार्षिक की आमदनी वाले
सामन्त बहादुर सिह ने जालिम सिह के विरुद्ध एक षडयंत्र रचा। परन्तु जालिम सिह
सूचना मिल गयी। षडयंत्र के अनुसार सपरिवार जालिमसिह को उसके मित्रो और सला
लाल जी को मार डालने के लिए एक योजना तैयार की गयी थी। उसमे निश्चित किया
कि जिस समय जालिम सिह राज-दरबार मे बैठा हो एकाएक उस पर आक्रमण किया

कोटा-राज्य भारतवर्ष के मध्य मे बसा हुआ है । बहुत दिनो तक कोटा-राज्य के आस-पास के राज्यो मे अनेक प्रकार के अत्याचार और विनाश होते रहे । आक्रमणकारियो ने उन राज्यो मे जाकर सभी प्रकार के अन्याय किये, उनको लूटा और विध्वंश किया । कोटा राज्य की सम्पत्ति ने भी उन आक्रमणकारियो को अपनी ओर आकर्षित किया और उन लुटेरो ने इस राज्य पर भी आक्रमण करने की तैयारियाँ की । परन्तु जालिम सिंह ने कोटा राज्य मे इस प्रकार का शासन आरम्भ किया कि आधी शताब्दी तक लुटेरे मराठो को उसके राज्य की तरफ आगे बढ़ने का साहस न हुआ । यद्यपि इस दीर्घकाल मे राजस्थान के लगभग सभी राज्य लूटे गये, उनका विनाश हुआ और अनेक प्रकार की विपदाओ का उनको सामना करना पड़ा । परन्तु कोटा का राज्य उस प्रकार के विनाश से बचा रहा । इसका कारण जालिम सिंह का शासन था, जिसको उसने अपनी पच्चीस वर्ष की अवस्था मे आरम्भ किया था और बयासी वर्ष की आयु तक सफलता पूर्वक चलाया ।

राजस्थान के सभी राजाओ के साथ जालिम सिंह के सम्बन्ध थे । उसने बड़ी बुद्धिमानी के साथ सबसे अपने सम्बन्ध जोड रखे थे । प्रत्येक राजा के दरबार मे उसका एक प्रतिनिधि रहता था । अपने प्रतिनिधियो का चुनाव वह बड़ी बुद्धिमानी के साथ करता था । उसका जो प्रतिनिधि जिस राज्य मे रहता था, वहाँ की परिस्थितियो से वह जालिम सिंह को सदा परिचित कराता रहता था । यह कई बार लिखा गया है कि जालिम सिंह दूरदर्शी और राजनीति कुशल था । आवश्यकता पड़ने पर वह सभी प्रकार का व्यवहार कर लेता था और विरोधियो को भी एक बार अपना मित्र बना लेना वह खूब जानता था । उसने लुटेरे मराठो और पिण्डारी लोगो के सेनापतियो के साथ भी चाचा और भतीजे के सम्बन्ध बना रखे थे । किसी भी अवस्था मे जालिम सिंह अपने उद्देश्य को सफल बनाने के लिये सभी प्रकार के दांव पेच जानता था था । उसकी सफलता का बहुत कुछ यही कारण था ।

जालिम सिंह स्वभाव का कठोर और क्रोधी था । परन्तु समय और आवश्यकता के अनुसार वह अपने आपको सहज ही बदल देता था । बहुत स्वाभिमानी होने पर भी वह जरूरत के अनुसार विनम्र बन जाता था । वह प्रभावशाली पत्र लिखना और बातचीत करना भली-भाँति जानता था । उसमे यह गुण था कि बहुत विनम्र होने पर भी वह स्वाभिमान से काम लेता था और स्वाभिमानी होने पर भी विनम्र हो जाना खूब जानता था । वह पूर्ण रूप से निर्भीक था । जो कुछ निर्णय करता था, निडर होकर उसके अनुसार काम करता था । सन् १८०६ और १८०७ ईसवी मे तीन राजाओ मे सङ्घर्ष पैदा हुआ । तीनो की तरफ से युद्ध की तैयारियाँ होने लगी और उन तीनो ने जालिम सिंह से युद्ध के लिए सहायता माँगी । बुद्धिमान जालिम सिंह ने उन तीन मे से एक की भी सहायता न और तीनो को उसने अपनी तरफ से सन्तुष्ट रखा । उस अवसर पर उसकी यह सफलता उसके श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ होने का स्पष्ट प्रमाण देता है ।

मराठा सेनापति होलकर पर आक्रमण करने के लिये जिस समय अङ्गरेजी सेना को लेकर जनरल मानसन मध्य भारत की ओर रवाना हुआ, उस समय जालिम सिंह ने बडी दूरदर्शिता से काम लिया । वह अङ्गरेजो की शक्ति पर विश्वास करता था । इसलिये अङ्गरेजी सेना के कोटा-राज्य मे आते ही उसने सभी प्रकार उसका स्वागत किया । परन्तु होलकर के साथ युद्ध करते हुये सेनापति मानसन के भागने पर जालिम सिंह ने परिस्थिति के अनुसार अपने आपको बदल दिया । उस समय जब सेनापति मानसन ने कोटा-राज्य से होकर निकल जाने के लिये उससे प्रार्थना की तो जालिम सिंह ने उसकी माँग को अस्वीकार करते हुये उत्तर दिया : "इस राज्य मे आप की सेना

से प्रकट करता है कि जालिम सिह एक सुन्दर राजपूत था और जिस स्त्री ने उसका पक्ष
बहुत दिनो से उसके साथ प्रेम करती थी। उस स्त्री के बिगडने और उसके पक्ष मे सहा
के कारण जालिम सिह किसी प्रकार महल से निकलकर अपने प्राणो की रक्षा कर सका।

इस प्रकार जालिम सिह के विरुद्ध जितने भी षडयन्त्र शुरू किये गये, उसमे एक
हुआ। जालिम सिह मे अनेक ऐसे गुण थे, जिनके कारण अपने विरोधियो के बीच मे
वह सुरक्षित बना रहा। उसका एक गुण प्रधान यह था कि वह अपने विरोधियो से ब
बात अधिक नही सोचता था और प्रार्थना करने पर वह विद्रोहियो को भी क्षमा कर
वह रात मे एक लोहे के मजबूत कटहरा मे सोया करता था और प्रायः निर्भीक रहता
ही वह इतनी सावधानी से काम लेता था जिससे कोई विद्रोही उसके जीवन को क्षति
सके। उसने अपने अधिकार मे जितने भी लोगो को रखा था उन सभी कर्मचारियो क
रण पहरेदारो से लेकर सेना के सैनिको और अधिकारियो तक सभी को—समय पर वेत
और उनकी कर्त्तव्य परायणता के लिए प्राय उनको पुरस्कार देकर सम्मानित किया
इसलिए राजकर्मचारी उसके साथ सहानुभूति रखते थे। इस सब गुणो के साथ-साथ ज
प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी था। इसीलिए इस प्रकार के विरोधी, उपद्रवो और
होने पर भी उसने कोटा-राज्य मे बराबर शासन किया। उसके विरोधी कभी कुछ उस
न सके।

तिहत्तरवाँ परिच्छेद

कोटा-राज्य मे जालिम सिह का प्रभुत्व—जालिमसिह की राजनीतिक कुशलता और
उसके शासन मे किसानो की हानि—प्रजा पर कर के बोझ—जालिम सिह के शासन मे
चारियो के अत्याचार—किसानो मे जन्म भूमि के छोड देने का इरादा—शासन के
कठोरता—प्रजा की बढती हुई गरीबी—मेवाड मे जालिम सिह की चेष्टा—मराठा सेन
के साथ उसकी मित्रता—जालिम सिह का राजधानी से हटकर रहने का विचार—उसका
किसानो की दशा मे सुधार करने की योजना—राजधानी से बाहर उसकी छावनी—पुर
मे परिवर्तन।

कोटा राज्य मे दूसरी बार सेनापति होने के बाद किस प्रकार शासन मे अपना
कायम करके जालिम सिह ने अपना प्रभुत्व बढाया और राज्य के कितने ही सामन्तो
होने तथा उनके अनेक बार षडयंत्र करने पर भी किन उपायो से उसने अपने प्रभाव
सुरक्षित रखा, इसका विस्तार के साथ वर्णन पिछले परिच्छेद मे किया जा चुका है।
नही कि जालिम सिह राजनीति मे कुशल शासन मे निपुण और मौके का लाभ उठाने
था। सम्वत् १८८७ मे उसने मेवाड के राणा के साथ कुछ दिन रहकर अपनी योग्यता
दिया था और फिर वहाँ से आकर कोटा मे दूसरी बार सेनापति होकर अपने प्रताप
किया। उसकी राज्य मे जितनी ही शक्तियाँ बडी थी, राज्य के किसानो और व्यव
उतनी ही क्षति पहुँची थी। सम्बत् १८४० मे उसका शासन किसानो और व्यवसायि

बिलकुल इन्कार कर दिया। इस दशा मे दोनो ओर से युद्ध का होना अनिवार्य हो गया। लेकिन होलकर की तरफ से उसकी सेना का एक अधिकारी इसके बाद भी युद्ध न होने की चेष्टा करता रहा। उसने जालिम सिंह के पास कहला भेजा कि जालिम सिंह और होलकर की भेंट से होने वाला सङ्घर्ष मिट सकता है। जालिमसिंह होलकर का विश्वास नही करता था। इसलिये उसने उत्तर में कहला भेजा कि होलकर के साथ मेरी कोई बातचीत चम्बल नदी के जल मे नौका पर बैठ कर हो सकती है। होलकर ने उसके इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। दोनो तरफ से बातचीत की तैयारियाँ होने लगी।

जालिम सिह ने दो नावे तैयार करायी और प्रत्येक मे उसने बीस सशस्त्र सैनिको को बिठा कर एक तीसरी नाव में स्वय बैठा और उसकी वे तीनो नावे चम्बल नदी के अगाध जल मे तैरती हुई रवाना हुई। होलकर भी अपने शरीर रक्षको के साथ नावो पर चल कर चम्बल नदी के जल के उस स्थान पर आकर पहुँच गया, जो दोनो तरफ से निश्चित किया गया था। नदी जल में एक नाव के ऊपर कालीन बिछाया गया। उस कालीन पर जालिम सिह और होलकर—दोनो बैठे। बातचीत आरम्भ हो गयी। उस समय होलकर ने जालिम सिंह को काका कह कर और जालिम सिह ने होलकर को भतीजा कह कर बातचीत की। यद्यपि वह बातचीत शान्तिपूर्वक हो रही थी, परन्तु दोनो ओर के आये हुये रक्षक सैनिक अपनी नावो पर बैठे हुये बडी सावधानी के साथ दोनों को देख रहे थे और जरा भी दोनो के बीच असन्तोष देखकर आक्रमण करने के लिए तैयार थे। लेकिन इस प्रकार का अवसर नही आया और जालिम सिंह ने होलकर को तीन लाख रुपये देकर होने वाले युद्ध को रोक दिया। वे रुपये लेकर होलकर अपनी सेना के साथ चला गया।

कोटा राज्य के शासन का भार अपने अधिकार मे लेकर जालिम सिह ने बडी बुद्धिमानी और सावधानी के साथ राज्य की परिस्थितियो पर ध्यान दिया। उसने पडोसी राज्यो की तरफ कभी आँख उठा कर देखा भी नही था। कोटा राज्य के दक्षिण तरफ होलकर और सीधिया के अधिकार मे कुछ नगर और ग्राम थे। वहाँ पर भी खेती होती थी। लेकिन जालिम सिंह ने अपने राज्य की खेती मे अधिक उन्नति की थी। अङ्गरेजी सेना ने होलकर और सीन्धिया के साथ युद्ध करके दोनो को पराजित किया और अङ्गरेज सेनापति ने सीन्धिया के अधिकार का पाँच महल नाम का इलाका और होलकर के अधिकार का डिग पिडावा आदि चार जिले लेकर जालिम सिह को दे दिये। इन दिनो मे जालिम सिंह ने दोनो मराठा सेनापतियो से बहुत सावधान रहने की चेष्टा की। उसने होलकर और सीन्धिया के साथ अपने प्रतिनिधि रखे थे। जो बुद्धिमानी के साथ मराठो की नीति का अध्ययन करते रहते थे और जो कुछ समझते थे, उसकी सूचना गुप्त रूप से जालिम सिह को देते थे। जालिम सिंह के दरबार मे भी कई एक राजनीति कुशल मराठा ब्राह्मण थे, जालिम सिह अपने कुशल व्यवहारो से उनको अपने अनुकूल बना लिया था। जालिम सिंह मे एक अद्भुत क्षमता इस बात की थी कि वह जिसको जैसा समझता था, उसके साथ वह वैसा व्यवहार करता था। अपनी इस नीति के अनुसार उसने प्रसिद्ध अमीर खाँ के साथ मित्रता कायम कर ली थी और वे दोनो एक दूसरे के सहायक बन गये थे। आवश्यकता के अनुसार जालिम सिह अमीर खाँ को युद्ध के अस्त्र-शस्त्र और उसको बहुत सी सामग्री दिया करता था। उसने अमीर खाँ के रहने के लिये अपना शेरगढ नामक दुर्ग दे दिया था। इन सब बातो से कृतज्ञ होकर अमीर खाँ जालिम सिंह का शुभ चिन्तम बन गया था।

पिण्डारी लोगो का दल उन दिनो मे लूटमार के लिये प्रसिद्ध हो रहा था। लेकिन जालिम

राजधानी के महल का रहना छोडने मे जालिम सिंह के जो उद्देश्य ऊपर लिखे गये हैं, अधिक विश्वास करता हूँ। लेकिन हाडावंश के प्राचीन ग्रन्थो मे कुछ दूसरी ही बात का उ० गया है। उसमे बताया गया है कि एक दिन रात मे महल के ऊपर बैठकर एक उल्लू कुछ बोलता रहा। जालिम सिह ने रात मे उसकी बोली को सुना और सबेरा होने पर उसने उ को बुलाकर पूछा। जालिम सिह की बात को सुनकर उन लोगो ने उत्तर दिया : "इस म० आप का रहना किसी प्रकार उचित नही है क्योकि इस महल मे रहने से आप के अनिष्ट की बना है।"

जालिम सिह ने ज्योतिषियो के मुख से इस प्रकार का उत्तर सुन कर राजधानी के रहना छोड दिया। हाडा वश के प्राचीन ग्रन्थो मे जालिम सिह के महल छोडने के सम्बन्ध प्रकार उल्लेख किया गया है। परन्तु मैं इस प्रकार की बातो पर विश्वास नही करता।

जो कुछ भी हो, जालिम सिंह ने राजधानी के महल का रहना छोडकर जब अपने विभिन्न नगरो और स्थानो का भ्रमण किया तो उस राज्य को दुरवस्था का बहुत कुछ उस हुआ। राज्य की इस अधोगति से वह पहले परिचित न था। राज कर्मचारियो और अधिका उसको कभी इ प्रकार की बाते बतायी न थी, जिनसे वह किसानो और दूसरे लोगो की और दरिद्रता को समझ सकता। उसने इस अवसर पर किसानो की अवस्था को अपनी देखा। उसने इस बात को अनुभव किया कि शासन अयोग्यता और कठोरता के कारण रा यह अवस्था हुई है। उसने भली प्रकार इस बात को समझ लिया कि राज्य के किसान अधिक मे जीवन की भयानक विपदाओ का भोग कर रहे हैं। इसी के कारण किसानो से वसूल होने मालगुजारी बहुत कम हो गयी है।

जालिम सिह ने राजधानी छोडने और राज्य के छोटे-बडे सभी स्थानो को देखने के ब समझा कि राज्य के व्यवसायियो की दशा भी अच्छी नही है। उसने अभी तक प्रजा की पीड़ा सुनने के लिये अपने कानो को बन्द कर रखा था, लेकिन अब उसे मालूम हो गया कि अगर रा इस दुरवस्था मे शीघ्र सुधार न हुआ तो भविष्य मे किसी भी समय राज्य को सकट पूर्ण परि का सामना करना पडेगा। राज्य की अवस्था को सुधारने के लिये सबसे पहले कृषको की द सुधारने की आवश्यकता है। इस प्रकार का निर्णय करके जालिम सिंह ने गागरोल के दुर्ग के अपने रहने का निश्चय किया। राज्य के श्रेष्ठ पुरुषो और सामन्तो ने भी उसका अनुकरण और उन्होने भी अपने नगरो को छोडकर जालिम सिंह के साथ रहना आरम्भ किया। उस पर एक शामियाना लगाया गया। जालिम सिंह ने उसी मे स्थायी रूप से रहना आरम्भ किया उसी स्थान से राज्य का समस्त कार्य आरम्भ हुआ। राज्य मे वह स्थान छावनी के नाम से जाता था।

दक्षिण की तरफ से कोटा-राज्य मे जाने के लिये जो रास्ते थे, यह मार्ग उनके बीच मे दूसरी तरफ कोटा की अधीनता मे भील जाति के लोग रहा करते थे। इस स्थान पर जालिमसिंह एक सुभीता यह भी था कि वहाँ से शेरगढ और गागरोन के सुदृढ दुर्ग बहुत दूर न थे। जालिम ने युद्ध के हथियारो और उनकी सभी सामग्री को उन दुर्गो मे रखकर सुरक्षित बना दिया था। साथ-साथ उसने इस बात की पूरी चेष्टा की थी कि बाहरी कोई शक्ति आकर उन दुर्गो के प्रवेश न कर सके। उसने अपनी समस्त सेना को अङ्गरेजी शिक्षा दी थी और इन दिनो मे लड़ाई के बहुत-से अस्त्र-शस्त्र विदेशो से मंगवा लिए थे। उसने अपनी सेना को शक्तिशाली बना

छियत्तरवाँ परिच्छेद

अगरेजी सरकार और कोटा-राज्य—पिण्डारी लोगो के विरुद्ध युद्ध की घोषणा—राजस्थान के साथ अगरेजी सरकार का सहयोग—मित्रता के लिए आमन्त्रण—सहयोग की शर्तों की घोषणा—कोटा राज्य के साथ अगरेजो की मैत्री—हाडौती राज्य पर लुटेरो के आक्रमण की सम्भवना—कोटा मे युद्ध की तैयारी—राजस्थान मे अगरेजो की नीति—विरोधियो की पराजय—राजस्थान के राजाग्रो की परिस्थितियाँ—लुटेरो के लगातार अत्याचार और उनकी लूट—एक केन्द्रीय शक्ति की स्थापना—जालिम सिंह की राजनीतिक सूझ—उसने लुटेरो और आक्रमणकारियो के विरुद्ध आवाज उठायी—अगरेजी सरकार के साथ कोटा की सधि—उम्मेद सिंह की मृत्यु—सधि का विरोध—कोटा मे विद्रोह—उसका परिणाम।

अब हम कोटा राज्य के उस इतिहास मे प्रवेश करते है, जब अगरेज सरकार और वहाँ के राजा मे सधि हुई थी। सन् १८१७ ईसवी मे मारक्विस ऑफ हेस्टिग्स ने पिण्डारी लोगो के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की थी और राजस्थान के राजाओ को सहयोग देने के लिए आमंत्रित किया था। उस समय यह भी जाहिर कर दिया था कि जो राजा तटस्थ रहेंगे और उन लुटेरो तथा सर्वनाश करने वालो को परास्त करने मे हमारा साथ नही देंगे, जिनसे वे स्वय पीडित है तो वे हमारे विरोधी समझे जायेंगे। जो राजपूत राजा एक ऐसी शक्ति की प्रतिष्ठा करना चाहते है, जो लुटेरो के अत्याचारो को वन्द कर सकें और जिससे सभी को आवश्यकता पडने पर सहायता मिल सके, उनको राजस्थान के इस महान सघर्ष कार्य मे सहयोग देने के लिए सम्मान पूर्वक आमन्त्रित किया जाता है। हमारी सहायता और रक्षा के मूल्य मे उनको अपने राज्य की आमदनी का एक भाग देना पड़ेगा।

हेस्टिग्स की इस प्रकार घोषणा होने पर दूरदर्शी जालिम सिंह ने समझ लिया कि अगरेज सरकार के साथ सहयोग करना आवश्यक है। इसलिए उसके प्रतिनिधि ने उसके साथ परामर्श करके अगरेज सरकार के साथ सहयोग स्थापित किया और सब से पहले उसने हमारे साथ मित्रता करना स्वीकार किया। इस सहयोग और मित्रता का सूत्रपात कोटा राज्य मे हुआ और उसके बाद राजस्थान के सभी राजाओ ने उसे स्वीकार करके लुटेरो को सदा के लिए नष्ट कर देने का निश्चय किया। इसके सम्बन्ध मे हाडौती की राज्य सीमा पर सबसे पहले सघर्ष होने की सम्भावना हुई। इसलिए जालिम सिंह के पास अँगरेज सरकार के प्रतिनिधि का पहुँच जाना उस समय अनिवार्य हो गया। उस समय सींधिया के दरबार मे असिस्टेण्ट रेजीडेण्ट था। लार्ड हेस्टिग्स ने मुझे राज राणा जालिम सिंह के पास भेजा। सन् १८१७ ईसवी के बारह नवम्बर को मैं ग्वालियर से रवाना हुआ और कोटा से पच्चीस मील दूर जालिम सिंह की छावनी रेवता मे २३ नवम्बर को पहुँच कर मैने युद्ध के लिए सभी प्रकार की तैयारी करवा दी, जिससे शत्रु के आक्रमण करने पर परास्त करके उसे भगाया जा सके।

मेरे कोटा पहुँचने पर पांच दिनो के भीतर युद्ध की सभी तैयारियाँ इतनी तेजी के साथ हुई कि शत्रु के द्वारा आक्रमण हो सकने के प्रयत्न मार्ग पर सैनिक रोक लगा दी गयी। इसके बाद

किसानो से पटेलो को कर वसूल करने का भार जो दिया गया, वह पाँच हजार से पन्द्रह ह तक वार्षिक था। इसे नयी व्यवस्था से राज्य के पटेल बहुत असन्तुष्ट हुये और उन्होने राज्य व्यवस्था को लाने के लिए न केवल कोशिशे की, बल्कि दस हजार बीस हजार पचास-पच रुपये तक रिश्वत मे दिये। इससे राज्य को काफी रुपये की आमदनी हुई और एक-एक बा दस लाख रुपये राज्य के खजाने में रखे गये।

कोटा राज्य की भूमि पर नयी व्यवस्था लागू हो जाने के बाद किसानो को व मिला। उन्होने विश्वास कर लिया कि हम लोगो पर अब तक पटेलो के जो अत्याचार ह अब न हो सकेंगे। लेकिन इस प्रकार की व्यवस्था के बाद पटेलो ने जो लम्बी रिश्वते द निष्फल नही गयी। जालिम सिंह ने अपनी नयी व्यवस्था चालू करने के बाद इस बात दिया कि वर्षा न होने के कारण अथवा और किसी सबब से यदि राज्य मे अकाल पड पहले की तरह फसल न होने पर भी किसानो को निर्धारित कर देने मे कोई सुभीता न दिय और उन्हे सम्पूर्ण राज्य कर अदा करना पडेगा। यदि कोई किसान उसकी अदायगी न उसकी भूमि लेकर पटेल किसी दूसरे को दे देने का पूरा अधिकारी होगा। अगर उस प्र भूमि का कोई लेने वाला न होगा तो उसे राज्य की भूमि मे मिला लिया जायगा।

इस प्रकार जालिम सिंह ने कोटा-रज्य की भूमि का नया प्रबन्ध किया। लेकिन प्रबन्ध अब भी पटेलो के हाथ मे ही रखा गया और यह निश्चय किया गया कि जो पटेल कि साथ ईमानदारी का व्यवहार करेंगे, राज्य की तरफ से उसको सम्मान दिया जायगा। इस के अनुसार, पटेल ग्रामो के प्रतिनिधि और राज्य के कर्मचारी माने गये और उनको सम्मान की तरफ से सोने के कंकड़ और पगड़ियाँ दी गयी।

जालिमसिंह ने राज्य के ग्रामो की परिस्थितियो मे सुधार करने के लिये अपने समिति कायम की और उस समिति मे ग्रामो के चुने हुये पटेलो को भी रखा। उस समिति क की व्यवस्था में अनेक प्रकार के अधिकार दिये गये और उनके द्वारा देहाती क्षेत्रो मे शान्ति करने की व्यवस्था की गई। उस समिति को यह भी अधिकार दिया गया कि राज्य की व्यवस्था मे कोई भी त्रुटि होने पर उसका विचार और निर्णय वह समिति कर सकती है। निर्णय राजा के निकट फिर से विचारणीय होगा।

जालिम सिंह ने अपने राज्य मे इस प्रकार की नयी व्यवस्था कायम करके न केवल लोक प्रियता का परिचय दिया, बल्कि उसने राष्ट्रीय पञ्चायत कायम करके राज्य की व्यवस्था को जो अधिकार दिये, वे प्रत्येक अवस्था मे प्रशसनीय थे। उसकी इस व्यवस्था पर मैं बिना सकोच के कहने के लिये तैयार हूँ कि राज्य की इतनी सुन्दर व्यवस्था कोटा मे पहले कभ रही।

अपनी नयी व्यवस्था के अनुसार जालिम सिंह ने इस बात की पूरी कोशिश की कि पटे किसानो पर किसी प्रकार अत्याचार न कर सके। इसमे कुछ दिनो तक उसे सफलता मी लेकिन पटेलो को अधिक समय तक उसके द्वारा नियन्त्रण मे नही रखा जा सका। जो व्यवस्था के बन्धन मे आ गये थे, उन्होने ऐसे उपायो की खोज की, जिससे वे वर्तमान व्यवस्था मनमानी कर सके। अन्त मे उन्होने अपने लिए एक रास्ता निकाल ही लिया। राजस्थान मे नामक वैश्यो की एक जाति रहा करती है, वे लोग किसानो को कर्ज मे रुपये देते हैं और उनने वसूल करते हैं। राज्य के पटेलो ने उन वोहरा लोगो को अपने अधिकार मे कर लिया।

सकती है । जालिम सिंह ने इस प्रकार के अनेक तर्क सामने रख कर अपने उन मराठा अधिकारियो और मित्रो को समझाया कि हमारे राजपूत राजाओ ने मित्रता को स्वीकार करने के साथ उन जिलो का अधिकार दे देना मन्जूर कर लिया है जिन पर बहुत दिनो से होल्कर का अधिकार चला रहा था हमारे साथ अंगरेजो ने जो उदारता का व्यवहार किया , उसे हम को न भूल जाना चाहिये ।

जालिम सिंह का व्यवहार और सद्भाव ऊँचा था । हमने उस पर कभी सन्देह नही किया । उसमे उदारता की भावना बहुत श्रेष्ठ है । उसके लिये न जाने कितने प्रमाण उसके जीवन मे पाये जाते है । जिस समय उसको कोटा राज्य के शासन की सनद दी गयी, तो उसने सम्मान पूर्वक उसको स्वीकार करने से इन्कार किया और कहा कि इस सनद का अधिकारी महाराव है, मै नही हूँ । मैंने जालिम सिंह के जीवन मे एक-दो नही, बहुत सी ऐसी बाते देखी है, जो प्रत्येक अवस्था मे प्रशसनीय है और मुझे उनकी प्रशसा करना चाहिये । सन् १८१८ ईसवी के नवम्बर महीने मे उम्मेद सिंह की मृत्यु हो गयी । उस समय कोटा के सिंहासन पर बैठने का प्रश्न पैदा हुआ । उस अवसर पर जालिम सिंह ने जो कुछ किया, उसमे अगरेज सरकार का कोई परामर्श न था । सन् १८१७ के २६ दिसम्बर को दिल्ली मे सन्धि हुई थी और उस सन्धि मे कोटा राज्य का प्रतिनिधि अधिकारी की हैसियत से उपस्थित था । महाराव उम्मेद सिंह ने उस सन्धि को स्वीकार किया था । दस्तावेज के कागज जनवरी के पहले दोनो पक्षो के अधिकारियो को दे दिये गए थे । इस सधि पर दोनो पक्षो की तरफ से मोहरे लगा दी गयी थी । लेकिन उस सन्धि मे जालिम सिंह के अधिकार का कोई निर्णय नही हुआ था । इसलिये उस विषय मे कोई उल्लेख सधि की शर्तो मे नहीं किया गया था और जहाँ पर जालिम सिंह का नाम आया था, वहाँ पर उसके नाम के साथ मन्त्री शब्द का प्रयोग किया गया था । अगरेज प्रतिनिधियो को उस सन्धि मे एक त्रुटि मालूम हुई । इस भूल का कारण किसी प्रकार की असावधानी नही थी । बल्कि उसका कारण जालिम सिंह स्वय था और वह सधि मे अपने लिये इस प्रकार की कोई शर्त आवश्यक नही समझता था ।

बालक उम्मेद सिंह के सिंहासन पर बैठने के बाद से अब तक उसने कोटा राज्य मे पचास वर्ष शासन किया था और इस दीर्घ काल मे उसकी सफलता और प्रभुता ने उसको कोटा के शासक के रूप मे प्रसिद्ध कर दिया । अगर उसने सन्धि के समय अपने लिये इस प्रकार शर्त की अभिलाषा की होती तो उसके स्वाभिमान को आघात पहुँचा होता और अपनी श्रेष्ठ मर्यादा को खोकर विदेशी प्रभुत्व मे उसने मन्त्री के पद का अधिकार प्राप्त किया होता । उस समय इसका कोई भी कारण हो, लेकिन दोनो पक्ष के अधिकारियो ने जालिम सिंह के सम्बन्ध की शर्त को सन्धि मे उतना ही आवश्यक और महत्वपूर्ण समझा होता, जितना कि उसकी दूसरी शर्त को और उसके द्वारा महाराव उम्मेद सिंह की मृत्यु के बाद जालिम सिंह के अधिकारो को भविष्य मे विरोधियो के निकट सुरक्षित रखा गया होता ।

यह लिखा जा चुका है कि सधि दिल्ली मे सन् १८१७ ईसवी के दिसम्बर महीने मे हो चुकी थी और सन् १८१८ के जनवरी महीने मे उसकी तहरीरो को दोनो पक्षो के अधिकारियो ने पा लिया था । उसी वर्ष के मार्च मे सधि की दो नयी शर्ते दोनो पक्षो के प्रतिनिधियो ने दिल्ली मे मन्जूर की, जिसमे इस बात को स्वीकार कर लिया गया कि शासन का भार सदा के लिए जालिम सिंह के लडको और उसके उत्तराधिकारियो के अधिकार मे रहेगा । इन स्वीकृत शर्तों को जालिम सिंह के पास भेज दिया गया था ।

की नीति का आश्रय लेकर पटेल लोग किसानों से प्रति वर्ष बहुत-सा धन वसूल करके भरने लगे। अपने इस उपाय का अवलम्बन करके कोटा के पटेल राजस्थान मे अधिक सम समझे जाने लगे।

पटेलो के इस व्यवहार के कारण राज्य के किसानों की अवस्था फिर शोचनीय पटेलो के इस अत्याचार का समाचार जालिम सिह के कानो में पहुँचा। इसी बीच मे राज्य के खजाने को रुपयो से भर दिया और बहुत-से किसानो की भूमि लेकर जालिम सिह कार मे दे दी थी। इसलिये कुछ दिनो तक जालिम सिह ने पटेलो के अत्याचारो पर बहुत सुनी-अनसुनी की। राज्य की यह अवस्था सन् १८११ ईसवी तक चलती रही। इसके बाद जालिम सिह ने राज्य के समस्त पटेलो को कैद करने का आदेश दिया। उनके कैद हो जाने ने अन्याय करके जो बहुत-सा धन एकत्रित किया था, उनकी समस्त सम्पत्ति लेकर जालि राज्य के खजाने मे शामिल कर दी। उसके बाद उनके अपराधो का निर्णय करके उन प लम्बे जुर्माने किये गये। उन पटेलो मे केवल एक ने अपने पैदा किये हुये धन से सात ला किसी दूसरे राज्य मे भेज दिये। केवल इसी एक उदाहरण से अनुमान किया जा सकता है के पटेलो ने किसानो पर अन्याय करके कितना अधिक धन एकत्रित किया था और उनके से वहाँ के किसानो का किस प्रकार सर्वनाश हुआ था।

जालिम सिह ने जब देखा कि वर्तमान नयी व्यवस्था के कारण किसानो की अवस्था अधिक शोचनीय हो गयी है, तो उसने अपने राज्य मे फिर से प्राचीन व्यवस्था को लागू f नयी कायम की हुई व्यवस्था को उसने हमेशा के लिये खतम कर दिया।

चौहत्तरहवाँ परिच्छेद

जालिम सिह के द्वारा प्रचलित नयी व्यवस्था पर किसानो का संतोष—पटेलो की का दुष्परिणाम—जालिम सिह की चेष्टा—पटेलों का लगातार विश्वासघात—राज्य के f हीन पटेल—किसानो की बढ़ी हुई गरीबी—प्रजा के भयानक कष्ट—जालिम सिह के अ विस्तृत भूमि—राज्य की अच्छी भूमि जालिम सिह के अधिकार मे—कोटा-राज्य की भूमि—हलो और बैलो का प्रबन्ध—खेती की पैदावार—अनाज रखने की व्यवस्था—अ कर—जालिम सिह की वार्षिक आमदनी।

जालिम सिह के शासन काल मे कोटा राज्य के किसानो की जो शोचनीय अवस्था थी, उसका वर्णन पिछले परिच्छेद मे किया जा चुका है। उसमे लिखा जा चुका है कि खेती वस्था को जानने और समझने के बाद जालिम सिह ने राज्य के पुराने नियमो को हटाकर व्यवस्था कायम की थी और उसके द्वारा राज्य के पटेलो को नियन्त्रण मे लाकर उसने किस सुभीता देने की चेष्टा की थी। परन्तु पटेलो की कूटनीति के कारण जालिम सिह को अपन

योग्य था उसका जीवन अपने भाई माधव सिंह के बिलकुल विपरीत था। कोटा के राजवंश के साथ माधव सिंह की जितनी ही उपेक्षा थी, गोवर्धन दास उनके प्रति उतना ही अपना सद्भाव प्रकट करता था। यही कारण था कि जालिम सिंह आरम्भ से ही उस पर अधिक स्नेह रखता था और उसने उनको प्रधान के पद पर नियुक्त करके राज्य मे कृषि-विभाग का अधिकारी बना दिया इससे गोवर्धन दास से अधिकार मे राज्य की अपरिमित सम्पत्ति रहने लगी। माधव सिंह और गोवर्धन दास मे पहले से ही स्नेह था। उन दिनो मे माधव सिंह उससे ईर्षा करने लगा और उसके बाद परिणाम स्वरूप दोनो भाइयो मे झगडे पैदा होने लगे। उसमे बहुत कुछ कमजोरी जालिम सिंह की थी। इसलिए कि उसने अच्छी शिक्षा देकर माधव सिंह के आचरण को अच्छा नही बनाया था। इसके लिए जालिम सिंह को स्वय दुखी होना पडा।

सन् १८१६ ईसवी के नवम्बर मे कोटा राज्य की राजनीतिक और पारिवारिक यह परिस्थिति थी, जब कि महाराव उम्मेद सिंह की मृत्यु हो गयी थी और उस दुखमय समाचार को छिपाकर रखा गया था जिसके परिणाम-स्वरूप राज्य मे भयानक परिस्थिति पैदा हुई। जालिम सिंह छावनी मे था और वह छावनी गागरोन मे थी, उन्ही दिनो मे उम्मेद सिंह की मृत्यु हुई थी। उस समाचार को पाकर महाराव का अन्तिम संस्कार करने और उत्तराधिकारी किशोर सिंह को सिंहासन पर बिठाने के लिए जालिम सिंह राजधानी के लिए रवाना हुआ।

मारवाड से मेवाड जाते हुए पोलिटिकल एजेण्ट की हैसियत से मैंने उम्मेदसिंह की मृत्यु का समाचार पाया।* मैंने उसी समय अपनी सरकार को लिखकर पूछा कि इस अवसर पर क्या होना चाहिए। मै कुछ दिनो तक उस समय उदयपुर मे बना रहा और फिर उसके बाद मै कोटा गया यह जानने के लिए कि महाराव की मृत्यु के बाद वहाँ के राज सिंहासन पर बैठने के लिए क्या होता है। कोटा मे पहुँचकर मैंने वृद्ध जालिम सिंह को राजधानी से एक मील बाहर छावनी मे पाया। उसका उत्तराधिकारी लडका राजधानी के महल मे रहता था। राज्य का उत्तराधिकारी राजकुमार किशोर सिंह दुर्ग के महल मे रहकर अपने भाइयो के साथ उन दिनो मे क्या सोच रहा था, यह नही कहा जा सकता। कोटा पहुँचने के बाद मुझे मालूम हुआ कि पृथ्वीसिंह और गोवर्धन दास ने मिल कर नवीन महाराव को अपने अनुकूल बनाने की पूरी कोशिश की है और उन दोनो ने विशन सिंह को अपने इस प्रयास मे शामिल नही किया। इस प्रकार की जो योजना चल रही थी, उसकी जानकारी जालिम सिंह को कुछ नही थी।

---

* २१ नवम्बर सन् १८१६ ईसवी को जालिम सिंह ने महाराव उम्मेद सिंह की मृत्यु का समाचार देते हुए जो मुझे लिखा था, वह इस प्रकार था . "रविवार के दिन दोपहर के बाद तक महाराव उम्मेद सिंह की हालत बिलकुल ठीक रही। सूर्यास्त के एक घन्टा बाद श्री ब्रिजनाथ के मन्दिर मे जाकर महाराव ने दर्शन किये छै बार प्रणाम करने के बाद सातवी बार मे वह मूर्छित हो गये। अचेत अवस्था मे महाराव उम्मेद सिंह को किसी प्रकार महल मे लाकर लिटाया गया। उस समय जितनी भी अच्छी चिकित्सा हो सकती थी, की गयी और कोई उपाय बाकी न रखा गया। लेकिन किसी से कुछ लाभ न हुआ और रात के दो बजे महाराव उम्मेद सिंह ने स्वर्ग की यात्रा की।"

"भगवान न करे, किसी शत्रु को भी इस प्रकार का दुख हो। लेकिन इसमे किसी का वस नही है। आप हमारे भाई है जिन राजकुमारो को छोडकर महाराव ने स्वर्ग की यात्रा की है, उनका कल्याण आपके हाथो मे है। स्वर्गीय महाराव का बडा लडका किशोर सिंह राज सिंहासन पर बैठ गया। मित्रता के नाते मै यह समाचार आपको भेज रहा हूँ।"

जालिम सिंह ने राज्य की लगभग सम्पूर्ण अच्छी भूमि पर अधिकार कर लिया उसमे उसकी खेती होने लगी थी। उसकी इस नीति से कोटा का राज्य पक्ष जितना ही सम सम्पतिशाली बन गया था, दूसरे पक्ष में सभी प्रकार की प्रजा से लेकर किसानो तक—स भयानक दरिद्र हो गये। इसके फलस्वरूप राज्य की प्रजा भीषण कठिनाइयो का सामना कर

कोटा के किसानो को अपनी जन्मभूमि से प्रेम था। इसीलिये गरीबी और कठिनाई भी उन्होने अपने राज्य को नही छोडा। यह बात जरूर है कि जालिमसिह के कठोर शासन प्रजा के बहुत-से लोग राज्य छोडकर चले गये थे। परन्तु राजस्थान के अनेक राज्यो मे लूट-मार उन दिनो मे हो रही थी। इस लये जो लोग कोटा-राज्य से भागकर गये थे, वे ल आश्रय न पा सके और उन्हे फिर अपने राज्य मे लौटकर आ जाना पडा। ❀

कोटा-राज्य के भूमि की मिट्टी उपजाऊ और बहुत कडी है। वह आसानी से टूटती इसलिये जालिम सिह ने कोकण राज्य की तरह अपने यहाँ भी दो हलो को एक साथ प्र के लिये प्रबन्ध कर दिया था और उन हलो मे जो बैल जोते जाते थे, वे उत्तम श्रेणी के थे। सिह ने अपनी खेती के लिये अच्छे बैलो के रखने का प्रबन्ध किया था और वे बैल झालरा मेले मे खरीदे गये थे। मारवाड और मरुभूमि के दूसरे स्थानो मे जो बैल शक्तिशाली समझे जालिम सिंह ने वहाँ से भी बैल खरीदकर मँगवाये थे। परन्तु कोटा की भूमि में वे उपयोगी नही हुये, इसलिये वे बेच दिये गये।

कोटा-राज्य की भूमि मे एक वर्ष मे दो बार खेती होती है और एक हल पर सौ बी को खेती की जा सकती है। इस प्रकार हजार हलो से लेकर एक बार में चार लाख बीघा की जा सकती है और दोनो फसलो मे आठ लाख बीघा की खेती हो जाती है, जो अङ्गरेजी तीन लाख एकड भूमि की होती है। जिस भूमि मे एक बीघे में सात मन से कम गेहूँ और पैदा होता है तो उस मिट्टी को अच्छा नही समझा जाता। इस हिसाब से प्रति बीघे चार पैदावार मान ली जाय तो आठ लाख बीघो मे बत्तीस लाख मन गेहूँ और बाजरा पैदा हो स जालिम सिंह को केवल खेती की पैदावार से बत्तीस लाख रुपये से कम की आमदनी नही इस खेती के कार्य मे जालिम सिंह का जो खर्च पड़ता है, वह इस प्रकार है:

पशुओ के आहार और किसानो के वेतन आदि में		...	चार लाख
बीज के खरीदने मे	...	...	छै लाख
पशुओ के खरीदने मे	..	...	अस्सी हजार
फुटकर खर्च	..	...	बीस हजार
			सब ग्यारह ला

❀ बूँदी राज्य मे किसानो का अपनी भूमि पर पैतृक अधिकार था। वहाँ पर कि इस अधिकार को नष्ट नही किया जा सकता था। अपने इस अधिकार के कारण वहाँ के अपनी भूमि को बेच सकते थे और रेहन कर सकते थे। बूँदी राज्य मे राज्य कर न वसूल की दशा मे भी किसानो की भूमि राजा ले नही सकता था और न उनको पैतृक अधिकारो प्रकार वञ्चित किया जा सकता था। किसान अपनी भूमि को अपनी इच्छानुसार किसी दूसरे को दे देने का स्वयं अधिकारी था। किसी अपराध करने पर यदि बूँदी राज्य का कोई किसा से निकाल दिया जाता था तो भी उसकी भूमि पर उसका अधिकार कायम रहता था।

पर थी, दूरदर्शी जालिय सिंह ने उसको अनुभव किया और उस विनाशकारी विपद के विरुद्ध जब अँगरेज अधिकारी ने घोषणा की, उस समय जालिम सिंह ने राजस्थान मे सबसे पहले सहयोग किया। उस सहयोग मे जालिम सिंह का जो कुछ भी अभिप्राय रहा हो, लेकिन उसके उस वीरोचित कार्य से राजस्थान की सार्वजनिक हितो की रक्षा हुई और उसी से प्रभावित होकर अँगरेज प्रतिनिधियो ने सधि की शर्तों मे उसके भविष्य का निर्णय करना अपना एक महान कर्तव्य समझा। जिस युद्ध की घोषणा की गयी थी, वह समाप्त होने पर भी। जिस कोटा के साथ हमने सधि की थी, उसके विनाश के सभी कारण सदा के लिए नष्ट हो गये थे। ऐसी हालत मे जिसके द्वारा कोटा के फिर अच्छे दिन देखने का अवसर मिला उसको सेवाओ का पुरस्कार देना हम सबके लिए अनिवार्य हो गया। किसी भी अवस्था मे जिसके द्वारा राजस्थान मे और विशेषकर कोटा राज्य मे इतना बडा कार्य हुआ था, उसके प्रति अवहेलना करना किसी प्रकार उचित न था। सन् १८१७ ईसवी की सधि मे जालिम सिंह के भविष्य का जो निर्णय किया गया वह प्रत्येक अवस्था मे आवश्यक था। बालक उम्मेद सिंह के सिंहासन पर बैठने के समय से लेकर अब तक उसने कोटा-राज्य के गौरव को जिस प्रकार बढाया था, उसका बहुत बडा मूल्य था। इसलिए उसके भविष्य का निर्णय करने के लिए कोटा की सधि मे जो शर्तें जोडी गयी, उनको दोनो पक्षो के प्रतिनिधियो ने बिना किसी विरोध के स्वीकार किया था।

जालिम सिंह ने स्वर्गीय महाराव के साथ आरम्भ से लेकर अन्त तक जो सद्भाव रखा था, नवीन महाराव ने उसे अस्त्र बनाकर जालिम सिंह के साथ प्रयोग मे लाने का निर्णय किया। उत्तराधिकारी किशोर सिंह के प्रति जालिम सिंह के कितने अच्छे भाव थे और महाराव उम्मेद सिंह की मृत्यु के बाद उसने जिस राजभक्ति के साथ उसे राज सिंहासन पर बिठाया था उसका भली प्रकार ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। हमारा यह भी विश्वास है कि पृथ्वी सिंह और गोवर्धन दास ने यदि षडयन्त्र की रचना करके जालिम सिंह के विरुद्ध उकसाया न होता तो महाराव किशोर सिंह ने उसके प्रति विद्रोहात्मक निश्चय कभी न किया होता। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि पृथ्वी सिंह और गोवर्धन दास ने जालिम सिंह के विरुद्ध षडयंत्र की रचना की और विरोध मे महाराव किशोर सिंह को लाकर सामने खडा कर दिया।

गोवर्धन दास जालिम सिंह का छोटा लडका था। लेकिन वह उसकी विवाहिता स्त्री से पैदा नही हुआ था। इस पर भी उसके अच्छे स्वभाव को देखकर जालिम सिंह उससे बहुत प्रेम करता था। लेकिन पृथ्वी सिंह ने—जो पहले से ही जालिम सिंह का विरोधी था—माधव सिंह और गोवर्धनदास मे विद्रोह पैदा कराने मे सफलता प्राप्त की। उसने गोवर्धनदास को समझा दिया कि जो सधि पहले स्वीकृत हुई थी, वह सही थी। लेकिन माधव सिंह और उसके उत्तराधिकारियो को इस राज्य मे सत्ता बनाये रखने के लिए अँगरेज प्रतिनिधियो ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है। यद्यपि २६ दिसम्बर को स्वीकृत होने वाली सधि मे इस प्रकार का कोई जिक्र नही था। लेकिन पोलिटिकल एजेन्ट के पक्षपात करने से माधव सिंह को यह महानता दी गयी है। पृथ्वी सिंह के इन तर्कों ने गोवर्धनदास को माधव सिंह और पोलिटिकल एजेन्ट के प्रति विद्रोही बनाने का काम किया।

इसी प्रकार महाराव किशोर सिंह को भी समझा कर विद्रोही बनाया गया। उसको भली प्रकार इस बात का विश्वास कराया गया कि २ दिसम्बर को जो सधि मजूर हुई थी, उसके अनुसार राज राणा जालिम सिंह और उसके अधिकारियो को शासन का अधिकार नही दिया गया था। इसलिए स्वर्गीय महाराव के बाद राजा राणा का अधिकार समाप्त हो गया था। इस दशा मे

राज कर्मचारियो की इच्छा के बिना बच नही सकता था। उससे शत्रु और मित्र का कोई
रहता था। जिस पर जो कर लगा दिया जाता था, उसको उतना देना पडता था। इ
जालिम सिह के एक पुराने मित्र पण्डित बेलाल को एक बार मे पच्चीस लाख रुपये, एक
अधीनता मे रहने वाले किसी एक आदमी को पाँच हजार रुपये और किसी मन्त्री को भी प
रुपये देने पडे थे। राज्य के महाजनो मे बहुतो को चार-चार और पाँच-पाँच हजार रुपये
बार मे देने पड़े थे। इस कर के वसूल करने में राज कर्मचारियो के द्वारा बहुत अत्याचा
और राज्य में भयानक अशान्ति पैदा हो गयी। प्रजा के असन्तोष पूर्ण चीत्कार करने
राजा को बहुत दुखी होना पड़ा और उसने जालिमसिह के विरुद्ध बहुत-सी बाते सोच डाली

कोटा राज्य के साथ सन्धि करने के बाद अङ्गरेजी सरकार ने राज्य के सभी लो
एक सा व्यवहार करना आरम्भ किया। अङ्गरेजो के इस व्यवहार का प्रभाव जालिमसि
पड़ा। उसके द्वारा जो अत्याचार राज्य में बढ रहे थे, वे लगातार इसीलिये कम होने लगे
सिंह को अङ्गरेजी सरकार को अप्रसन्न होने का भय मालूम हुआ। इस दशा में जो कर
बिक्री पर लगाया गया था, वह बेचने वाले किसानो और खरीदने वालो पर ही एक निर्धा
के साथ वसूल होने लगा और बाकी लोगो को उससे मुक्ति मिल गयी। इस दशा मे भी
राज्य को पाँच लाख रुपये वार्षिक वसूल होने लगे थे।

राज्य की समस्त भूमि से जालिमसिंह को वार्षिक पचास लाख रुपये की आमदनी
इसके अतिरिक्त जो भूमि उसके परिवार के लोगो के अधिकार मे थी, उससे पाँच लाख
आमदनी अलग से होती थी, जो उन्ही लोगो के खर्च के काम में आती थी।

जालिम सिंह ने विविध साधनों से चालीस वर्ष के शासन मे जिस प्रकार कोटा
आधिपत्य कायम किया था, उसको देखकर दूसरे देशो के लोग न जाने क्या अनुमान कर
एक नेत्र से हीन होकर अस्सी वर्ष की आयु मे उसने शासन मे जो सफलता प्राप्त की, उस
कोई भी सहज ही उसकी प्रशंसा कर सकता है। उसने दूसरो के देखने मे कृषि के व्यवसा
भुत सफलता पायी, व्यवसाय के क्षेत्र मे उसने अत्यधिक सम्पत्ति एकत्रित की और प्रजा के
लगाकर उसने अपरिमित सम्पत्ति एकत्रित करने मे अपनी बुद्धिमता का परिचय दिया।
बातो मे कोई भी उसकी दूरदर्शिता की सराहना कर सकता है। परन्तु अपने इन गुणो मे
तक प्रशसा का अधिकारी था, यह एक प्रश्न अलग से उसके सम्बन्ध मे पैदा होता है। जो
णीय है।

इसमे सन्देह नही कि जालिम सिंह ने कृषि के कार्य मे, व्यावसायिक नीति मे औ
के एकत्रित करने मे अपनी अद्भुत प्रतिमा का प्रदर्शन किया। उसने इतना ही नही कि
उसने कोटा राज्य मे अपने शासन को सुदृढ बनाया। राज्य की रक्षा करने के लिये अपने
मे उसने बीस हजार सैनिको की सेना रखी थी। उस सेना को उसने युद्ध की अच्छी शिक्षा
राज्य के दुर्गों मे ऐसी व्यवस्था कर दी थी, जिससे वे पहले की अपेक्षा बहुत काम के बन
दुर्गों मे सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्रो के साथ बहुत-सी युद्ध सामग्री एकत्रित की थी। राज्य मे
कोई विरोधी कार्य न हो सके, इसके लिये उसने गुप्तचरो का अच्छा प्रबन्ध किया। राज्य मे
भावो पर वह नियन्त्रण रखता था और दूसरे राज्य के भावो को देखकर वह अपने यहाँ के
तुरन्त परिवर्तन कर देता था। जालिम सिंह ने राज्य के अनेक स्थानो पर बहुत से बाग
थे। उन बागो के फल राज्य के विभिन्न बाजारो में बिकने के लिये जाते थे।

के रूप मे मुझे धन्यवाद देकर पच्चीस सोने की मोहरे भेट मे दी। इसके पश्चात् कोटा के सेनापति की हैसियत से महाराव के मस्तक पर माधव सिंह ने तिलक किया और उसकी कमर मे तलवार बाँधकर बहुमूल्य वस्तुएँ भेट मे दी। महाराव ने प्रचलितप्रणाली के अनुसार उन भेंटो को लौटा कर माधव सिंह को खिलत दी और कोटा के सेनापति की उसे सनद दी।

इस अभिषेक के उत्सव के बाद मै एक महीने तक कोटा मे रहा। उन दिनो मे मैने महाराव और राज राणा के बीच सद्भाव बढाने का प्रयत्न किया। मुझे उसमे उस समय पूरी तौर पर सफलता मिली। इस अवसर पर दोनो ने विश्वास पूर्वक रहने, राज्य का शासन करने और हाडा राजवश की मर्यादा की वृद्धि करने की जो प्रतिज्ञाएँ की, उनसे मुझे अपार संतोष और सुख मिला। कोटा से विदा होने के चार दिन पहले मैने सभी सामन्तो, प्रमुख अधिकारियो और राज्य के श्रेष्ठ पुरुषो को एकत्रित किया। उस समय सभी लोगो ने एक, दूसरे के प्रति पूर्ण रूप से स्नेह, चेष्टा-भाव और सम्मान प्रकट किया। सबसे बडी बात यह हुई कि उपस्थित लोगो ने राजराणा जालिम सिंह के प्रति अपना श्रद्धा-भाव प्रकट किया और कहा : "हम लोग वयोवृद्ध राजराणा के प्रति कभी श्रद्धा मे कमी न करेगे।"

स्वर्गीय महाराव की मृत्यु के बाद कोटा मे जो आपसी संघर्ष पैदा हुआ था, वह अत्यन्त घातक था। उस संघर्ष मे इस राज्य का भयानक विनाश हो सकता था। लेकिन अन्त मे सभी बाते सद्भाव के साथ सुलझ गयी और राज्य की व्यवस्था संतोष और सौभाग्य के साथ आरम्भ हुई।

कोटा राज्य मे जालिम सिंह ने दण्ड नामक एक कर जारी किया था। उसको उसने सदा के लिए उठा दिया, जिससे उसको अपने जीवन के अंतिम दिनो मे बडी ख्याति मिली।

सतत्तरवाँ परिच्छेद

कोटा-राज्य के षडयन्त्रो का मूल कारण—हाडौती-राज्य से निर्वासित गोवर्धनदास—दिल्ली मे रह कर गोवर्धन दास का षडयन्त्र—विवाह के बहाने मालवा जाने की स्वीकृति—कोटा राज्य मे फिर से अशान्ति के बादल—कोटा और बूँदी के राज्यो मे विद्रोहात्मक उत्तेजना—सेनापति सैफअली के द्वारा महाराव का समर्थन—जालिम सिंह की सूझ—राजधानी मे युद्ध की तैयारी—आासी विद्रोह का परिणाम—महाराव की असफलता—सन्धि के अनुसार राज्य मे कार्य—गोवर्धन दास को कैद करने के लिए अँगरेजी सेना को आदेश—महाराव के पास सामन्तो के पत्र—तीर्थ-यात्रा मे महाराव का अनुभव—युद्ध की फिर से तैयारी—सन्धि के लिये महाराव का पत्र—युद्ध के बाद राज सिंहासन पर महाराव।

इन दिनो मे कोटा-राज्य के षडयन्त्रो का मूल कारण जालिम सिंह की अविवाहिता स्त्री से पैदा हुआ गोबर्धनदास था। जालिम सिंह प्यार मे उसको गोवर्धन जी कहा करता था। पिछले परिच्छेद मे लिखा जा चुका है कि गोवर्धनदास राजनीतिक अपराधी के रूप हाडौती राज्य से निकाल

हाड़ा राजपूतो की मर्यादा को बढाया ? क्या इसी को शासन कहते हैं ? क्या इसी प्रकार राज्य की प्रजा मे सुख और सन्तोष उत्पन्न करता है ? ससार के उन्नत देश क्या इसी की महानता कहेगे ? जालिम सिंह ने राज्य मे टैक्सो की भरमार करके क्या राज्य क कल्याण किया था ? खेती के सम्बन्ध मे उसकी नीति से किसानो की कैसी अधोगति हो हम इस बात को मानते हैं कि कुछ समय के लिये जालिम सिंह की नीति और व्यवस्था ५ ये लिये आवश्यक कही जा सकती है। न केवल उसके मिले हुये अधिकारो की रक्षा कर बल्कि आक्रमणकारियो के लूटमार से राज्य की प्रजा को सुरक्षित रखने के लिये। किसी इस बात को मानने के लिये भी तैयार हैं कि जालिम सिंह ने कोटा राज्य के हाड़ा राजपूतो की रक्षा की थी। लेकिन जहाँ पर राज्य का प्रजा के सुख-सन्तोष का प्रश्न पैदा होता सिंह के शासन की किसी प्रकार प्रशंसा नही की जा सकती। उसने विभिन्न साधनो से सम्पत्ति जितनी ही अधिक पैदा की थी, राज्य की प्रजा का जीवन उतना ही सङ्कटम था। वह राज्य के कर्मचारियो पर नियन्त्रण रखने मे पूरी तौर पर असफल हुआ था, प्रकार अच्छे शासन का प्रमाण नही देता। उसने सम्पत्ति से राज्य का खजाना भरा थ सुदृढ बनाया था। परन्तु उसकी इस व्यवस्था का राज्य की प्रजा पर क्या प्रभाव पड़ा था विचारणीय नही है ? अच्छा वेतन पाने वाली शिक्षित और शक्तिशाली सेना राज्य की रक्ष आवश्यक थी, परन्तु दीन और दरिद्र प्रजा के असन्तुष्ट होने के कारण वह सेना आवश्य पर राज्य की रक्षा करने में कहाँ तक सफल हो सकती थी, इस पर कुछ नही कहा जा स
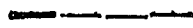
पचहत्तरवाँ परिच्छेद

जालिम सिंह की शासन-नीति—लुटेरे मराठो से बहुत दिनो तक सुरक्षित कोट राज्य मे जालिम सिंह का शासन-प्रबन्ध—अन्य राजाओ के साथ जालिम सिंह का व्यवहा व्यावहारिक कुशलता—जालिम सिंह का स्वभाव—वह सब को प्रसन्न रखना जानता था सेनापति के साथ जालिम सिंह का व्यवहार—अङ्गरेज सेनापति का असंतोष—अङ्गरेज सहायता मे जालिम सिंह—होल्कर की कैद मे सेनापति बख्शी—कोटा मे होलकर का अ कोटा की उन्नति—उम्मेद सिंह के साथ जालिम सिंह का व्यवहार।

जालिम सिंह के शासन काल का जो वर्णन किया है, उसको दो भागो मे विभा जा सकता है—राज्य का बाहरी विभाग और भीतरी विभाग। अपने सुभीते के लिये शासन के दो विभाग किये हैं।

का निश्चय किया । बूंदी मे रहकर महाराव ने किसी प्रकार की सहायता नही प्राप्त की । कोटा से बूंदी का फासिला बहुत न था । इसलिए जब तक वह बूंदी मे रहा, कोटा मे उसके समर्थक अनुकूल वातावरण का अनुमान लगाते रहे । लेकिन जब वह बूंदी से उत्तर की तरफ चला गया तो लोगो ने विश्वास किया कि महाराव ने किसी आशा से उस तरफ की यात्रा की है, उसे निश्चित रूप से वहाँ से सहायता मिलेगी । इन दिनो मे कोटा के सामन्त महाराव के पास सहानुभूति के पत्र भेजते रहे । महाराव बूंदी से चलकर जिस राज्य मे पहुँचा, वहाँ के राजा ने उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया । भरतपुर का राज्य कोटा के समीप था । वहाँ के राजा ने जब महाराव के आने का समाचार सुना तो वह स्वय उसके पास नही गया और अपने प्रतिनिधियो को भेजकर अपने न पहुच सकने की विवशता प्रकट की । उन प्रतिनिधियो ने महाराव के पास जाकर अपने राजा की तरफ से बाते की और भरतपुर के राजा ने जो मूल्यवान उपहार भेजे थे, उनको उन्होने महाराव के सामने उपस्थित किया । भरतपुर के राजा के न आने पर महाराव ने उसकी अवहेलना समझी और उसके भेजे हुए उपहारो को उसने वापस कर दिया । भरतपुर के राजा ने जब सुना कि महाराव ने हमारे भेजे हुए उपहारो को वापस कर दिया है तो उसने अपना अपमान समझ कर भरतपुर राज्य से चले जाने के लिए सदेश भेज दिया ।

महाराव वहाँ से वृन्दावन चला गया और कुछ दिनो तक वह ब्रज कुञ्ज मे बना रहा । इन दिनो वह शासन से प्रलोभनो को भूल गया और भक्ति-भावना मे लिप्त होकर वह अपना समय काटने लगा । इन दिनो मे उसने अनुभव किया कि जो लोग वहाँ पर उसको बराबर घेरे रहते हैं वे उससे धन पाने की आशा रखते है । इसका प्रभाव महाराव पर अच्छा नही पडा । उसने समझ लिया कि यहाँ पर रहकर मेरा जो सम्मान होता है, वह मेरा व्यक्तिगत सम्मान नही है, बल्कि कोटा का राजा समझ कर लोग मेरा सम्मान करते है और मुझसे भूमि और धन पाने की आशा करते है । वह वृन्दावन से चल कर आधे अप्रेल तक मथुरा पहुँच गया । वह कोटा लौटकर आ जाने का विचार कर चुका था लेकिन गोवर्धनदास ने उसके पास सदेश भेजकर उसके कोटा आने का विरोध किया और कहला भेजा कि महाराव को वहाँ नही जाना चाहिये ।

गोवर्धन दास षडयन्त्रकारी था । वह दिल्ली मे रहकर भी महाराव के पक्ष मे एक न एक योजना का निर्माण करता रहता था । इसलिए धीरे धीरे विद्रोह की जो आग सुलग रही थी, वह भयानक होने लगी । हाडा वश के जो लोग पक्ष मे थे, उनको गोवर्धन दास बराबर उकसाता रहता था और कितने ही लोगो के विद्रोह सदेश महाराव के पास पहुँचते रहते थे । महाराव ने अपने साथ एक ऐसी सेना का सङ्गठन किया और वह उस सेना को लेकर हाडोती राज्य की तरफ रवाना हुआ । रास्ते मे जो राज्य मिले, उनके राजाओ से महाराव ने कहा कि अपने राज्य का सिंहासन प्राप्त करने के लिए जा रहा हूँ । उसकी इस यात्रा को देखकर और उसकी बातो का सुनकर लोगो का अनुमान हुआ कि महाराव किशोर सिंह का अपने राज्य जाना अब आवश्यक हो गया है । इस प्रकार का अनुमान लगाकर सभी लोगो ने प्रसन्नता प्रकट की और महाराव के साथ चलने वालो की सख्या लगातार बढने लगी । सन् १८२२ ईसवी की बरसात के अन्तिम दिनो मे लगभग तीन हजार सेना साथ मे लेकर महाराव चम्बल नदी के किनारे पहुँच गया । नदी को पार करके महाराव ने राजस्थानी बोली मे एक ऐसी घोषणा का प्रचार किया, जिसे वहाँ के लोग भली-भाँति समझ सके और कोई भी महाराव के आह्वान करने पर इनकार न कर सके । उस घोषणा मे कहा

के प्रवेश करने से अराजकता पैदा हो जाने की पूरी सम्भावना है। इसलिये आप अपन
लेकर कोटा-राज्य की सीमा से निकल जावे। मैं उस समय सभी प्रकार आपकी सेवा और
करूँगा और मेरे ऐसा करने पर यदि आप का शत्रु इस राज्य पर आक्रमण करेगा तो मै
युद्ध करूंगा।'

सेनापति मानसन जालिम सिंह के इस उत्तर को पाकर कोटा-राज्य मे नही गया।
और जयपुर-राज्य मे से होकर निकला और सेनापति लेक के पास पहुँच कर होलकर के
वाली पराजय उसने उसको बतायी। होलकर के साथ होने वाले युद्ध मे राजस्थान के जिन
ने उसकी जैसी सहायता की थी, उसमे उसने अनेक परिवर्तन किये और अपनी मर्यादा
रखने के लिए उसने बहुत सी बाते घटा-बढा कर कही। सेनापति मानसन ने जालिम सि
अपराध लगाया और सेनापति लेक को समझाते हुये उसने कहा कि होलकर के साथ होने
मे जालिम सिंह ने खुलकर हमारी सहायता नही की। जनरल मानसन ने सेनापति लेक
सिंह के सम्बन्ध मे यह बात बिलकुल निराधार कही। वास्तव मे जालिम सिंह ने जनरल
प्राणो की रक्षा करने के लिए पूरी शक्ति लगाकर सहायता की थी। जालिम सिंह के आदे
सार ही कोइला के सामन्त लखन ने उस समय मराठो के साथ युद्ध किया था और अ
सहायता करते हुये वह युद्ध मे मारा गया।

अङ्गरेजी सेनापति मानसन की तरफ से कोइला के सामन्त ने मराठा होलकर के
युद्ध किया था, उसमे अपनी सेना के बहुत-से आदमियो के साथ वह सामन्त मारा गया औ
सिंह का सेनापति बख्शी कैद कर लिया गया। होलकर ने बख्शी से दस लाख रुपये का ए
लिखा लिया और यह कहकर उसे जालिम सिंह के पास भेजा कि अगर वह दस लाख रु
सिंह से लाकर हमे दे देगा तो हम उसको छोड देगे। लेकिन अगर ये रुपये जालिम सिंह
तो मैं कोटा-राज्य पर आक्रमण करूंगा और सभी प्रकार राज्य का विनाश करूंगा।

सेनापति बख्शी ने जालिम सिंह के पास जाकर दस लाख रुपये देने की बात कही।
सुनकर जालिमसिंह ने बख्शी को होलकर के पास भेज दिया और दस लाख रुपये से साफ
कार करके उसने कहला भेजा कि होलकर को जो कुछ करना हो करे। ❀

जालिम सिंह का उत्तर पाकर सेनापति होलकर अपने शिविर से रवाना हुआ
राज्य के पास जाकर आक्रमण करने के लिये मुकाम किया।

होलकर की सेना के आ जाने का समाचार जालिम सिंह ने सुना। उसने राजधानी
ओर की दीवारो पर अपनी तोपे लगा देने को तुरन्त आदेश दिया। इसके बाद उसने युद्ध
आरम्भ कर दी। कोटा राज्य के आस-पास पहाड़ी जातियों के जो लोग रहते थे, जालि
आज्ञानुसार उन लोगो ने सगठित होकर होलकर की सेना पर आक्रमण करने और उसके
लूटमार करने की तैयारी की।

कोटा-राज्य के समीप पहुँच कर और मुकाम कर सेनापति होलकर ने बख्शी का ि
दस लाख रुपये का कागज जालिम सिंह के पास भेजा। जालिम सिंह ने उस रुपये की अ

❀ जहाँ तक मुझे मालूम है, होलकर के द्वारा गिरफ्तार होने के बाद बख्शी ने
अनुभव करके विष खा लिया और अपनी आत्म-हत्या कर ली।

७—राज्य में जो आमदनी वसूल की जायगी, वह राज्य के खजाने मे रखी जायगी और उसके वाद उसमे से खर्च किया जायगा ।

८—दुर्गों पर किलेदारो को मैं नियुक्त करूँगा और राज्य की सम्पूर्ण सेना मेरे अधिकार मे रहेगी । कर्मचारियो और अधिकारियो को आदेश देने का अधिकार राजराणा को होगा लेकिन उनके लिये पहले मुझ से पूछ लेना पडेगा ।

ऊपर लिखी हुई मेरी माँगे है, जो राज्य के नियमो के अनुसार है । आसोज पञ्चमी सम्वत् १ ७८ सन् १८२२ ईसवी ।

सन्धि का प्रस्ताव करते हुये महाराव किशोर सिंह ने यह पत्र मेरे पास भेजा और अपनी लिखी हुई शर्तों पर उसने हमको वाँधने की कोशिश की । इस पत्र मे उस सन्धि का भी नाम आया जो अगरेज सरकार के साथ कोटा के राजा ने की थी । लेकिन आदि से लेकर अन्त तक सभी शर्तें राजराणा जालिम सिंह पर लागू करने के लिये लिखी गयी थीं । राज्य के नाम मात्र के राजा महाराव ने सन्धि का उल्लेख करके तानाजनी के साथ मुझे लिखा कि जो शर्त मैंने अपने पत्र मे लिखी है, वे मन्जूर की जायगी या नही । व्यवहार की इस अशिष्टता को भी सहन कर लिया जाता यदि महाराव ने अपने पत्र मे सन्धि की उन शर्तों को भी शामिल किया होता जो बाद मे दोनो पक्षो की स्वीकृति से सन्धि मे शामिल की गयी थी । पत्र मे न्याय की माँग की गयी अपने समस्त अधिकारो को सुरक्षित बनाकर । पत्र मे यह भी लिखा गया कि राजराणा को शासन भार देने मे हमे कोई आपत्ति नही है, मैं उस पर पूरा विश्वास करता हूँ । लेकिन लिखी गयी है इन शर्तों के वाद राज्य मे राणा का कोई अधिकार बाकी नही रह जाता । स्वर्गीय महाराव के समय क्या राजराणा ने इसी प्रकार राज्य का शासन-भार अपने हाथों मे रखा था ? महाराव किशोर सिंह के नेत्रो मे दोनो पक्षो के पतिनिधियो की स्वीकृत दो शर्तों का कोई मूल्य नही है । यह वात उस पत्र मे साफ साफ जाहिर है । यदि इन दो शर्तों को अलग कर दिया जाता है तो सन्धि का कोई मूल्य नही रह जाता । इस दशा मे आपसी समझौते का प्रश्न ही खत्म हो जाता है । राजराणा जालिम सिंह के उत्तराधिकारियो के अधिकारो का निर्णय करने के लिए जो दो शर्त बाद मे स्वीकृत होकर सन्धि मे जोडी गयी, यदि वे न रखी गयी होतीं तो राज्य मे राजराणा का अधिकार था ही और उसके उत्तराधिकारियो को प्राचीन प्रणाली के अनुसार, अनधिकारी बना देना सहज न था । शासन प्रबन्ध मे लेकर स्वर्गीय महाराव और उनके वंश के साथ जालिम सिंह का जो व्यवहार आरम्भ से लेकर अब तक चला था, उसी ने उसके अधिकारो को अटूट बना दिया था और स्वर्गीय महाराव को कभी विरोधी गन्ध न मालूम हुई थी । सिंहासन पर बैठने के पहले ही किशोर सिंह को जालिम सिंह से विद्रोहात्मक भय मालूम हुआ । इसका का अभिप्राय हो सकता है ? सिंहासन पर बैठने के बाद दस-पाँच वर्षो का अनुभव किसी हद तक उसकी सहायता कर सकता था, लेकिन उसको नवीन महाराव ने पास ही तक नही आने दिया । क्या इसका स्पष्ट अर्थ यह नही है कि जालिम सिंह के विरोधियो ने महाराव किशोर सिंह के मस्तिष्क को पहले से ही खराब कर दिया था ? इस दशा मे मेरा क्या कर्त्तव्य हो सकता है इसे मैं समझता हूँ । अगरेज सरकार और कोटा के राजा के बीच के व्यवहारो मे मेरा वही स्थान है जो एक मध्यस्थ का हो सकता है और मैं ईमानदारी के साथ जालिम सिंह को कोटा का शासक की हैसियत मे जानता हूँ । सच बात यह है कि अगर किशोर सिंह का मस्तिष्क खराब न किया गया होता तो जो अशान्ति पैदा हुई, उसकी किसी प्रकार सम्भावना न थी ।

महाराव किशोर सिंह ने अपने पत्र मे सन्धि का प्रस्ताव भी किया है, मुझसे न्याय की माँग

सिंह ने अपनी दूरदर्शिता के द्वारा उस दल के सरदारों को अपने अनुकूल बना लिया था। भाव को प्राप्त करने के लिए जालिम सिंह ने अपने राज्य में बहुत-सी भूमि पिण्डारी सर रखी थी। जालिम सिंह ने पिण्डारी सरदारों के साथ इतना ही नहीं किया था बल्कि १८ मे पिण्डारियो के सरदार करीम खाँ को जब सीन्धिया ने कैद करके ग्वालियर के दुर्ग दिया था, उस समय जालिम सिंह ने करीम खाँ को कैद से छुडाने के लिये बहुत-सा ध और इस बात की जिम्मेदारी ली थी कि भविष्य में करीम खाँ कभी उसके विरुद्ध को करेगा।

इस प्रकार जालिम सिंह ने दूसरे राज्यो के साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करके प्राप्त की थी। मारवाड और मेवाड के कितने सामन्तो ने कोटा-राज्य मे आकर आश्रय की कोशिश की थी। जालिम सिंह ने उन सामन्तो के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार कि अपने राज्य मे रखकर उनको उसने ग्राम और नगर दिये थे। दूसरे राज्यो मे जब कभी क सङ्घर्ष पैदा होता था तो जालिम सिंह मध्यस्थ बनकर उस सङ्घर्ष को मिटाने की पूरी चे था। अपने इन नेक कामो के द्वारा जालिम सिंह ने राजस्थान के राज्यो मे बडी ख्याति उसके इस प्रकार के व्यवहारो को देखकर दूसरे राज्यो के लोग विपद के समय कोटा आश्रय पाने की पूरी आशा करते थे और ऐसे लोगो के आने पर जालिम सिंह उनकी सहा करता था।

दूसरे राज्यो के प्रति जालिम सिंह के शासन की जो नीति थी, उसका बहुत-कु चुका है। अब उसकी उस नीति पर यहाँ कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है, जिसका प्र अपने राज्य के भीतरी मामलो मे कर रखा था। राजा गुमान सिंह ने अपनी मृत्यु के सम सिंह को अपने बालक उम्मेद सिंह का संरक्षण बना दिया था। पिता के मरने के बाद बा सिंह कोटा के सिंहासन पर बैठा। वह नाम के लिए अपने राज्य का शासक था, लेकिन जालिम सिंह के अधिकार में था। परन्तु जालिम सिंह ने कोटा का शासन करते हुये उ की कभी अवहेलना नहीं की। वह प्रत्येक अवसर पर उम्मेद सिंह के पास बैठकर परा करता था। यद्यपि जालिम सिंह अपनी इच्छानुसार सब कुछ करता था, परन्तु आरम्भ अन्त तक उम्मेदसिंह यही समझता रहा कि जालिम सिंह का प्रत्येक कार्य मेरा आदेश होता है।

उम्मेद सिंह बुद्धिमान और दूरदर्शी था। वह शिकार खेलने का बहुत शौकीन था सवारी करना खूब जानता था और प्रायः शिकार खेलने के लिए जाया करता था। जा अपने अच्छे व्यवहारो के द्वारा उम्मेद सिंह के साथ सदा इस प्रकार की राजभक्ति का प्रद जिससे उसके विरुद्ध उम्मेद सिंह को कभी एक क्षण के लिये भी सोचने का अवसर न मि सिंह दस वर्ष की आयु मे राजसिंहासन पर बैठा था। उसी समय से जालिम सिंह ने अपनी श्रद्धा और भक्ति प्रकट करना आरम्भ किया था। उम्मेद सिंह की अवस्था जितनी गयी, उसके प्रति जालिम सिंह की श्रद्धा उतनी ही अधिक होती गयी। धर्म के प्रति उम्मे विश्वास इधर बहुत दिनो से अधिक हो गया था। इसलिये सांसारिक जीवन मे उसकी हो गयी थी। इस दशा में भी जालिम सिंह उसका परामर्श लेकर राज्य का शासन करता

महाराव किशोर सिंह ने मेरे पास पत्र भेजकर हाँ अथवा नहीं की प्रतीक्षा की थी और विरोधी अवस्था को समझने के पहले ही वह युद्ध के लिए बिल्कुल तैयार था। इसलिए उसके साथ मुकाबिला करने के लिए जालिम सिंह से परामर्श हुआ और एक सम्मिलित सेना तैयार की गयी। उस सेना के अधिकारियों के सम्बन्ध में भी हमारे साथ उसने बातचीत की। उसके प्रार्थना करने पर एक अँगरेज सेनापति ने उसको अपनी सेना की सहायता दी।*

पहली अक्टूबर को प्रातःकाल होते ही सेनायें आक्रमण करने के लिये आगे बढ़ीं। जालिम सिंह की सेना में आठ दल पैदल सैनिकों के थे, बत्तीस तोपें थीं और चौदह दल अश्वारोही सैनिकों के थे। प्रत्येक दल में दो सौ सैनिकों की संख्या था। इनमें से पाँच पल्टनें अर्थात् पाँच दल पैदल और दस दल अश्वारोही अपने साथ चौदह तोपें लेकर आगे बढ़े। शेष सेना पाँच सौ गज की दूरी पर जालिम सिंह के साथ आवश्यकता के लिए सुरक्षित रखी गयी। अँगरेजी सेना में दो दल पैदल और छै दल अश्वारोही सैनिकों के थे। उसमें एक दल गोलन्दाजों का था। यह सेना राव राणा जालिम सिंह की दाहिनी तरफ होकर चली। दोनों सेनायें आगे जाकर नदी से कुछ दूरी पर एक ऊँचे मैदान में खड़ी हो गयीं। महाराव किशोर सिंह की सेना नदी की दूसरी तरफ पर थी। उसने अपने शिविर को छोड़ कर सैयद अली सेनापति की सेना को बाईं तरफ लगाया और स्वयं अपने पाँच सौ हाडा राजपूतों को लेकर दाहिनी ओर खड़ा हुआ। दोनों ओर की सेनायें एक दूसरे पर आक्रमण करने के लिए बिल्कुल तैयार थीं। उस समय मैंने एक बार अँगरेज सेनापति की ओर देखा और फिर क्षण भर में मैंने सोच डाला कि मुझे एक बार इस समय महाराव किशोर सिंह को समझाने का काम कर लेना चाहिये। कदाचित् इस समय मुझे सफलता मिल जाय और उसकी समझ में आ जाने से होने वाला विध्वंश और विनाश बच जाय।

यह सोचकर मैंने अपने सेनापति को आक्रमण करने से रोका। इसके बाद दोनों ओर की सेनाओं के बीच में जाकर मैंने युद्ध रोकने का प्रस्ताव किया और कहा "हमारे और आपके लिए यह जरूरी है कि युद्ध रोका जाय। महाराव किशोर सिंह को सम्मान पूर्वक कोटा के राज सिंहासन पर बिठाया जायगा और सभी के अब तक के अपराधों को क्षमा किया जायगा। इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए इस समय केवल पन्द्रह मिनट का समय है। उसके बाद युद्ध अनिवार्य हो जायगा।'

इस प्रस्ताव को सुन कर महाराव ने जो उत्तर दिया, उससे साफ जाहिर हो गया कि उसने अपने पत्र में लिखकर जो शर्तें भेजी हैं, उसमें से वह एक भी शर्त छोड़ने के लिए तैयार नहीं है और अपने साथ तीन हजार सैनिकों को लेकर ही वह कोटा में प्रवेश करना चाहता है।

पन्द्रह मिनट का समय बीत गया। उस प्रस्ताव के निष्फल होते ही सेनायें आगे बढ़ीं। महाराव की जो सेना दाहिने ओर लगी हुई थी, उसने जालिम सिंह की सेना को रोकने के लिए आगे कदम बढ़ाये। प्रस्ताव में दिया गया समय बीत चुका था। इसलिए युद्ध का आदेश मिलते ही जालिम सिंह की तरफ से गोलों की वर्षा आरम्भ हो गयी और उसके बाद उसकी अश्वारोही सेना आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ी। हाडा राजपूतों ने सदा की भाँति इस अवसर पर भी अपनी वीरता का प्रदर्शन किया और उन्होंने फतेहाबाद तथा धौलपुर के युद्ध में भयानक रूप से आक्रमण

---

* पाँच नम्बर रेजीमेण्ट देशी पैदल सेना के सेनापति लेफ्टिनेन्ट मिल ने अपनी तरफ से युद्ध में जालिम सिंह की सहायता करना स्वीकार किया और वह युद्ध में गया। एक सेनापति से इससे अधिक और क्या आशा की जा सकती है।

चार तोपों के साथ पन्द्रह सौ सैनिकों का एक दल सेनापित सर जान मालकम के पास
लिए रवाना हुआ। उसने इस छोटी-सी सेना के साथ नर्वदा नदी को पार किया औ
की तरफ आगे बढा।

इन दिनों मे भारतवर्ष का प्रत्येक प्रान्त और जिला संघर्षमय हो रहा था
किनारे से लेकर समुद्र तक युद्ध की एक भयानक आँधी दिखाई देती थी। राजपूत र
अंगरेजो मे इस सहयोग और संगठन ने मराठो, पठानो और पिराडारी लोगो मे एक
कर दी थी। उन लोगो ने हमारे इस संगठन को तोड देने के लिये सबसे पहले हाडौ
आस-पास आक्रमण करने की तैयारियाँ की थी। लेकिन उनको असफल बनाने के लिए
के अनुसार जालिम सिंह ने भी अपने यहाँ पूरा प्रबन्ध किया। वह अगरेजो पर पूरा f
था और अ गरेज अधिकारी भी उस सहयोग मे जालिम सिंह को सबसे आगे समझते थे
हमारे सहयोग की योजना पर सदेह करके विवाद करते थे, उनको उत्तर देते हुये मै क
"महाराज जो कुछ आप कहते हैं, मै उस पर सदेह नही करता। वह दिन दूर नही,
भारतवर्ष मे एक ही राज्यनीतिक शक्ति काम करेगी।"

सन् १८१७—१८ की यह बात है, इन्ही बर्षों मे ही इस भविष्यवाणी की
प्रमाण मिल गया। उस समय हमने यद्यपि समस्त भारतवर्ष को जीतकर अथवा सहयोग
अपने अधिकार मे नही कर लिया गया लेकिन इतना जरूर हुआ कि उस समय जो क
वह बहुत अशो मे सही निकला। प्लासी के युद्ध मे विजयी होकर अगरेजो ने इस देश मे
प्राप्त किया। अगरेजो ने अपनी उस सफलता के लिए राजपूत राजाओ की नीति
दराड और भेद को अपनाया। इस प्रकार देश के बिरोधी शक्तियो को नष्ट कर दिया गय

घोषणा के बाद सब से पहले कोटा के जालिम सिंह ने अगरेजो के साथ मित्रता
और उसके फलस्वरूप कोटा-राज्य मे आक्रमणकारी शत्रुओ के अत्याचारो का नाश हो ग
हमारी नीति और घोषणा पर विश्वास किया, इसलिए हमने उसकी भीतरी और
कठिनाइयो मे खुलकर उसका साथ दिया। राजस्थान मे ऐसा कोई राजा न था जो आ
लुटेरो के अत्याचारो से अनेक बार पीडित न हो चुका हो। इसलिए राजपूतो का सर्व
वाले अत्याचारी लुटेरो के विरुद्ध युद्ध करने के लिए अंगरेजो ने प्रतिज्ञा कर ली थी। उ
राजाओ का साथ देना अनिवार्य रूप से आवश्यक था। उन्होने वैसा किया भी। उनमे
राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी जालिम सिह था। सबसे पहले उसने उन शत्रुओ
आवाज उठायी, जिन्होने समस्त राजस्थान का अनेक बार सर्वनाश किया था। इस बात
किया जा चुका है कि जालिम सिंह के यहाँ कुछ मराठे ऊँचे पदो पर काम करते थे
सिंह उन पर बहुत विश्वास करता था। वे मराठे इस बात को नही चाहते थे कि अगरे
जालिम सिंह की मित्रता हो। उन मराठो ने अनेक प्रकार के तर्कों के साथ इस मि
विरोध किया। लेकिन उनके तर्कों का जालिम सिंह पर कोई प्रभाव न पडा। उन
पूर्वक पचास वर्ष तक कोटा राज्य मे शासन किया था। वह राजनीति को समझता
बात को वह खूब चाहता था कि राज्य के हितो की रक्षा के लिए अंगरेजो की मित्र
श्यक है। वह समझाया कि इस मैत्री के साथ जो अधीनता स्वीकार करना पड रही
महत्व है। इसके अभाव मे लुटेरो के द्वारा राज्य का जो विध्वस और विनाश होता आ र
अधिक घातक है। लगातार झगड़ो और उपद्रवो की अपेक्षा इस अधीनता मे अधिक उन्न

गया था। जालिम सिंह की सेना उस सकीर्ण स्थान से होकर जब जा रही थी, एकाएक नदी की दूसरी तरफ की एक ऊँची भूमि से गोलियाँ आकर उस पर पडी लेकिन अपनी ओर की सेना को गोलियाँ चलाने का आदेश नही दिया गया था। इसलिये वह सेना रुक कर उस तरफ देखने लगी जिधर से गोलियाँ आ रही थी। मालूम हुआ कि नदी के पार की एक ऊँची भूमि पर खडे हुए दो आदमी गोली चला रहे है। सेना चुपचाप खडी रही और उसके बाद उसको आगे बढने की आज्ञा दी गयी। उसी समय सेना के आगे के कई एक सैनिक गोलियो से घायल हो गये। उन दोनो आदमियों की तरफ से लगातार गोलियाँ आ रही थी। परन्तु हमारी तरफ से एक भी गोली नही मारी गयी इसलिये अपनी सेना को आदेश दिया और उन दोनो पर गोले मारे गये लेकिन एक भी गोला उनके नही लगा। वे दोनो अब भी बडी निर्भीकता के साथ गोलियाँ चला रहे थे और उनकी गोलियो से जालिम सिह के सैनिक घायल हो रहे थे। फिर भी उन दोनो के साहस को देखकर उनके प्राणो की रक्षा करना आवश्यक मालूम हुआ। इसलिये जालिम सिह की सेना को आदेश दिया गया कि इस सेना के जो लोग आगे बढकर उन दोनों पर आक्रमण करने का साहस करे, उन्हे आगे बढना चाहिये। यह सुनते ही दो रुहेले सैनिक अपने हाथो मे तलवारे लेकर आगे बढे और आक्रमण करके उन्होंने उन दोनो को मार डाला। आश्चर्य की बात यह है कि उन दो आदमियो ने जालिम सिंह के दस दल सैनिको और बीस तोपो का सामना किया और लगातार गोलियाँ चलाई। वे दोनो हाडा राजपूत थे, जिनको जालिम सिंह ने उनके अधिकारो से वंचित किया था। इसीलिये इस अवसर पर आकर उन्होंने अपना बदला लिया और अन्त मे वे मारे गये।

हाडौती राज्य के जिन लोगो ने महाराव के साथ इस समय अपनी राजभक्ति का परिचय दिया, उससे मालूम होता है कि राजपूतो मे ऐसे कठोर अवसरो पर भी अपना धर्म-पालन करने का कितना भाव रहता है। साथ ही यह भी प्रकट होता है कि जालिम सिंह का शासन कितना कठोर था। यहाँ तक कि जो एक सामन्त उस सन्धि मे प्रतिनिधि के रूप मे रहा था, उसने भी महाराव का साथ दिया और उसका एक लडका इस युद्ध मे बुरी तरह से घायल हुआ। यद्यपि वह सामन्त जालिमसिह के साथ वैवाहिक सम्बन्ध रखता था और उसने राज राणा के द्वारा कोटा-राज्य मे जागीर पायी थी।

महाराव किशोर सिंह ने अपनी बची हुई सेना के साथ युद्ध से निकलकर एक पहाडी नदी को पार किया। वहाँ पर पहुँचने पर उसका घोडा गिर गया क्योंकि उसके शरीर मे गोली का एक घाव था।

इसके बाद महाराव किशोर सिह अपने तीन सौ अश्वारोही सेना के साथ बडौदा चला गया जिन लोगो ने अपनी राजभक्ति का परिचय देकर महाराव का साथ दिया था उसको हमने अपना शत्रु नही समझा और इसलिये मराठो की तरह उनका पीछा करके हमने उनको नष्ट करने की चेष्टा नही की। वे हमारे विरुद्ध युद्ध मे लडे थे। लेकिन आत्म-रक्षा के लिये उनको ऐसा करना पडा था।

सन्धि के द्वारा कोटा-राज्य के भविष्य को जिस प्रकार घरेलू और बाहरी विपदाओ तथा संघर्षों से अलग रखने की कोशिश की गयी थी इन दिनो मे आपसी विद्रोह ने उसको नष्ट कर दिया। इस विद्रोह के दो कारण थे। एक पृथ्वीसिंह था, जो युद्ध मे मारा गया था। इस युद्ध में कोटा के बहुत-से सामन्तो ने जालिम सिंह का पक्ष छोडकर महाराव का साथ दिया था। लेकिन पहले उनको इस बात का विश्वास न था कि युद्ध का यह परिणाम होगा। यदि हम चाहते तो

इसके बाद हमे कोटा-राज्य के उन लोगो का उल्लेख करना है । जिनका भाग्य के भविष्य से सम्बन्ध रखता था । महाराव उम्मेद सिंह के तीन लडके थे । किशोर सिंह और पृथ्वीसिंह । उत्तराधिकारी राजकुमार किशोरसिंह की अवस्था उस समय चाल थी । वह स्वभाव का विनम्र और शीलवान था । धार्मिक बातो से उसकी अधिक रु राज्य के मामलो से वह बहुत कम सम्बन्ध रखता था । उसके मनोभावो मे जातीय गौर वंश की मर्यादा को वह सदा उन्नत रखने का विचार रखता था । उसके जीवन मे पिता सहन का पूरा प्रभाव पडा था । उसको जो शिक्षा मिली थी, उसने उसे धार्मिक, शिष्ट बना दिया था । वह अपने पिता का अनुयायी था, वह जालिम सिंह को नाना साहब थ था । अब वह सब-कुछ समझता था । लेकिन पिता की तरह राज्य के शासन का भार न के अधिकार मे रहने मे वह सतोष अनुभव करता था । विशन सिंह अपने बडे भाई किशो तीन वर्ष छोटा था । आरम्भ से वह जालिम सिंह के सम्पर्क मे रहा था और जालिम उसको बहुत प्यार करता था । किशोर सिंह की तरह वह भी विनम्र, सुशील और अच का था ।

राजकुमार पृथ्वी सिंह की अवस्था तीस वर्ष से कम थी, जीवन के आरम्भ से राजपूतोचित गुण थे और अस्त्र-शस्त्र चलाने का वह शौकीन था । वयस्क होने पर वह सिंह के साथ ईर्षा करने लगा । उसके पिता ने जालिम सिंह पर जो शासन का कुल भार था, उसे उसने पसन्द नही किया और इस प्रकार की बातो के प्रति उसका असन्तोष बढ़ा आरम्भ से तीनो भाई एक साथ प्रेमपूर्वक रहा करते थे । लेकिन जालिम सिंह के उत्त लडके के साथ विशन सिंह के अत्यधिक स्नेह और धैर्य को देख कर कुछ लोग सन्देह पैदा क थे । प्रत्येक राजकुमार को पच्चीस हजार वार्षिक आमदनी की भूमि का अधिकार मिला

जालिम सिंह के दो लडके थे । बडे लडके का नाम माधव सिंह था, वह जालिम विवाहिता स्त्री से पैदा हुआ था और छोटे लडके का नाम गोवर्धसदास था, वह जालिम अविवाहिता स्त्री से पैदा हुआ था जालिम सिंह छोटे लड़के का अधिक प्यार करता था कु को वह अपना उत्तराधिकारी मान रखा था । उस समय माधव सिंह की अवस्था छियाली थी । वह देखने से ही आलसी और निकम्मा मालूम होता था । उसका व्यवहार अहकार हुआ था । महाराव उम्मेद सिह उसका बहुत आदर करता था और झगडो के समय अपने की अपेक्षा उसका अधिक पक्षपात करता था । यही कारण था कि जालिम सिंह ने जब र छोड कर छावनी मे रहना आरम्भ किया था तो उस समय माधव सिंह को उसके पैतृक पर सेनापति का पद दिया गया । इसके बाद सेना का वेतन देना और इस प्रकार के दू का करना उसी के अधिकार मे आ गया । इसलिए उसने इस अवसर का लाभ उठाकर अ धन संग्रह करना आरम्भ कर दिया । वह जालिम सिंह का उत्तराधिकारी महाराव उम्मेद सम्मानित और राज्य का सेनापति था, इसलिए उसके विरुद्ध किसी ने कुछ कहने का स किया । उसने अनियंत्रित होकर बहुत-सा धन एकत्रित किया और उस धन से उसने एक बाग लगवाया । श्रेष्ठ घोडे खरीदे और जल-विहार करने के लिए उत्तम नावे बनवाई । उ कामो को सुनकर और जानकर जालिम सिंह ने उसको समझाने की कोशिश की । लेकिन व पिता की परवाह नही करता था ।

गोवर्धनदास की अवस्था इन दिनो मे सत्ताईस वर्ष की थी । वह बुद्धिमान, साहसी

साथ उस पत्र का उत्तर देते हुए सामन्त की माता को लिखा कि पत्र लाने वाले आदमी के लौट कर आपके पहुँचने के पहले ही आपका लडका सुरक्षित आप के पास पहुँच जायगा। वमोलिया का सामन्त आथून के उस सामन्त का वशज था, जो किसी समय जालिम सिंह का महा शत्रु था।

महराव किशोर सिंह ने मेवाड के नाथद्वारा मे जाकर धार्मिक जीवन आरम्भ कर दिया। उस समय उस की भावनाओ को देखकर और सुनकर मालूम हुआ कि उसने राजनीतिक अशान्ति से अपने आपको अब बिलकुल अलग कर लिया है। उसके नेत्रों का भ्रमात्मक आवरण अब हट गया था और उसकी समझ मे आ गया था कि लोगो ने मुझे जिस मार्ग पर ले जाने की कोशिश की थी, वह मार्ग सही नही था। मैने आँखे मूँद कर उनका विश्वास किया था। अब उसकी समझकर मे आ गया कि जो सन्धि हुई थी, वह सही थी और उसमे जो दो शर्तें बाद मे शामिल की गयी थी, वे सही थी। महाराव के सामने अब कोई उलझन न रह गयी थी, अपने जीवन के इस परिवर्तन के साथ वह मेवाड के नाथद्वारा मे पहुँच गया था और धार्मिक जीवन बिताना आरम्भ कर दिया था। उसके जीवन के परिवर्तन के बाद उसके पास उन बातो का उल्लेख करते हुए एक पत्र भेजा गया, जिसके आधार पर वह सम्मान पूर्वक कोटा मे आकर राज सिंहासन पर बैठ सकता था। यह पत्र उसके पास भेज दिया गया और उसकी स्वीकृति मिलने पर तुरन्त एक इकरारनामा लिखा गया और उसमे उन सभी बातो का निर्णय किया, गया, जिनको लेकर राणा जालिम सिंह और उसके बीच कभी कोई संघर्ष पैदा हो सकता था। उस इकरारनामा मे महाराव के पद की मर्यादा सम्पूर्ण और सुरक्षित रखी गयी और पूरी शक्ति लगाकर उसमे इस बात का निर्णय किया कि जिससे भविष्य मे कभी भी विरोध और विद्रोह की सम्भावना न रह गयी थी। महाराव के पूर्वजो मे कभी किसी राजा को राज्य का कोई हिस्सा नही दिया गया था। परन्तु इस इकरारनामे के अनुसार महाराव किशोर सिंह को कोटा-राज्य की आमदनी का बीसवां भाग देने का निर्णय किया गया। उदयपुर के राणा के पारिवारिक व्यय के लिये उसके राज्य से जितना मिलता है, महाराव किशोर सिंह को मिलने वाली यह आमदनी उसके बराबर होगी।

यह इकरारनामा लिखकर तैयार कर लिया गया और उसमे दोनो के पक्षो के सम्मान और अधिकारो का पूर्णरूप से ध्यान रखा गया। साथ ही इस बात की चेष्टा की गयी कि एक बार दोनो पक्षो मे सद्भाव कायम हो जाने के बाद जो फिर से विरोध की आग प्रज्वलित हुई थी, इसलिए दूसरी बार फिर वैसा न होना चाहिए। इस प्रकार की सभी बातो को सोच-समझ कर इकरारनामा मे उनका उल्लेख करके जब सन्तोषजनक व्यवस्था कर ली गयी तो उसके बाद महाराव किशोर सिंह नाथद्वारा से चलकर कोटा मे आया और बडे समारोह के साथ जिस दिन महाराव को राजसिंहासन पर बिठाना था, उसी दिन एक भीषण षडयन्त्र का जन्म हुआ। एक आदमी लँगडी दशा मे वहाँ पर आया और उसने अपना नाम विशन सिंह बताकर जाहिर किया कि जालिम सिंह के लड़के माधव सिंह की आज्ञा से मुझे लँगडा कर दिया गया है।

इस आदमी की आकृति और महाराव के भाई विशन सिंह की आकृति एक थी। दोनो की शारीरिक बातो मे इतनी अधिक समता थी कि सहज ही राज्य के किसी आदमी को उस पर इस तरह क सदेह नही हो सकता था कि वह विशन सिंह नही है। उस आदमी के इस प्रकार प्रचार करने से पहले तो कोटा के लोगो की हवा बिगडी। कुछ उत्तेजना बढती हुई मालूम हुई। लेकिन उसके बाद बहुत जल्दी यह मालूम हो गया कि जो आदमी विशन सिंह के नाम से कोटा मे आया है, वह महाराव किशोर सिंह का भाई नही है। साथ ही यह भी मालूम हुआ कि

महाराव उम्मेद सिंह की मृत्यु के बाद जालिम सिंह को भयानक रोग हो गया। रोग को देखकर जो लोग जालिम सिंह के विरोधी थे और राज्य मे उसके अधिकार को देना चाहते थे, वे बहुत प्रसन्न हुए। लेकिन कुछ दिनो के बाद जालिम सिंह को उस रो मिल गयी तो जो लोग उसकी बीमारी के दिनो मे प्रसन्न हो रहे थे, उनकी प्रसन्नता खत्म जालिम सिंह की बीमारी के दिनो मे विरोधियो ने अपनी जिस योजना का कार्य आरम्भ वह अप्रकट न रह सकी। लेकिन बृद्ध जालिम सिंह को उस समय भी उसकी जानकारी हुई

संधि हो जाने के बाद जो दो शर्ते दोनो पक्षो के प्रतिनिधियो की मजूरी से सधि मे की गयी थी और जिनके अनुसार जालिम सिह के उत्तराधिकारियो को सदा के लिए अधि दिया गया था, छिपे तौर पर इसका विरोध हुआ और महाराव के दरबार मे षड़यन्त्र च जालिम सिंह के दोनो लडको के बीच सघर्ष पैदा कराने की पूरी कोशिश की गयी। अनुसार माधव सिह अपने पिता का उत्तराधिकारी था। इसका निर्णय सधि की अन्ति शर्तों के द्वारा हो चुका था और मै उसका मध्यस्थ था। राज्य में जालिम सिंह के विरुद्ध जो रचा गया, उसका साफ-साफ अभिप्राय यह था कि सधि के द्वारा नवीन महाराव किशोर माधव सिह के हाथ की कठपुतली उसी प्रकार बनाने की चेष्टा की गयी है, जिस सिंह के समय स्वर्गीय महाराव की हालत थी। इसलिए इसका विरोध होना चाहिए। लोग जालिम सिंह और उसके उत्तराधिकारियो के इस अधिकार को सदा के लिए नष्ट चाहते थे। उसके षडयन्त्र का यही एक अभिप्राय था।

सन् १८१७ ईसवी के सङ्गठन का आन्दोलन न केवल राजनीतिक था बल्कि वह पू नैतिक था। उसके पहले की अवस्था सम्पूर्ण राजस्थान मे बड़ी भयानक थी। लुटेरो के द्वा ओर आक्रमण, विध्वश और विनाश हो रहे थे। बिना संगठित शक्तियो के उनको रो सम्भव नही था। भारत मे आये हुए अङ्गरेजो ने राजस्थान की इस दुरवस्था का अनुभ और राजस्थान के समस्त राजाओ को एक सूत्र मे बाँधकर आक्रमणकारियो के विरुद्ध युद्ध किया। इसका परिणाम यह निकला कि न केवल राजस्थान मे बल्कि सम्पूर्ण भारतवर्ष कायम हो गयी। इस सगठन और सहयोग मे कोटा-राज्य के साथ हमारा सम्पर्क हुआ। इ मे कोटा राज्य की तरफ से हमने भीतर और बाहर जालिम सिंह को ही पाया। इसीि संधि हुई तो जालिम सिंह के भविष्य का निर्णय उसके द्वारा होना नैतिक दृष्टि से भी था। इसीलिए बाद मे—जैसा कि पहले लिखा जा चुका है दो शर्ते दोनो पक्षो की मजूरी सधि मे जोडी गयी। इन दोनो शर्तो का महत्व उनके परिणाम को देखकर नही बल्कि हमारा कर्त्तव्य क्या था, इसे सामने रख कर हमे करना चाहिए।

सधि के दोनो पक्षो के प्रतिनिधियो की उपस्थिति मे जो शर्ते तय हुई थी, उनका नि पक्षो की उपयोगिता और आवश्यकता को सामने रखकर किया था और इसीलिए की सधि मे दो नयी शर्ते शामिल की गयी थी। उनकी आवश्यकता और महत्ता से किस इनकार नही किया जा सकता। न केवल इसलिए कि जालिम सिंह ने अपनी बुद्धिमत्ता अ दर्शिता से स्वर्गीय महाराव के सिंहासन पर बैठने के बाद से लेकर उस समय तक कोटा-र मर्यादा को कायम किया था, बल्कि जिस समय समस्त राजस्थान के आकाश पर आक्रमण के कारण विपद के बादल मँडरा रहे थे और उस विपद की सम्भावना सबसे पहले

और दुख मे, कठिनाइयो और विपदाओ मे एवम् सहयोग और विद्रोह मे एक-सा रहता था। उसकी सब से बडी विशेषता यह थी। उसमें आत्म सयम था और आत्म बल था। जिसमे आत्म-बल होता है, वह भयानक कठिनाइयो मे भी प्रसन्न रहता है। जालिम सिंह मे इस गुण का अभाव न था।

जालिम सिंह के बहुत निकट रहकर जिसने उसको समझा है वह जानता है कि वह आशा-वादी था। अपने किसी भी कार्य मे वह कभी असफलता का स्वप्न नही देखता था। वह कहा करता था कि एक शक्तिशाली पुरुष को सदा सफलता मिलती है। असफलता मनुष्य की निर्बलता होती है। वह जल्दी किसी पर सदेह नही करता था। उसका विश्वास था कि मनुष्य को अपनी निर्बलता मे बहुत जल्दी दूसरो पर अविश्वास पैदा होता है। उसका यह भी विश्वास था कि जो दूसरों पर विश्वास करता है उसको कभी क्षति नही उठानी पड़ती। सचमुच विश्वास करना मनुष्य का एक अच्छा गुण है।

जालिम सिंह अपने कर्मचारियो से काम लेना जानता था और अपने अच्छे व्यवहारो से वह उनके हृदयों पर अपना अधिकार पैदा कर लेता था। शासक का यह एक बहुत ऊँचा गुण होता है। पिछले पृष्ठो मे यह लिखा गया है कि राज्य के कितने ही कर्मचारियो और अधिकारियो के साथ वह मित्रता का व्यवहार करता था। राज्य के कार्य मे उसकी सफलता का यह एक बहुत बड़ा कारण था। उसकी बुद्धिमानी की सब से बडी खूबी यह थी कि वह जिन कर्मचारियो और अधिकारियो पर विश्वास करता था और उनको अपना मित्र समझता था, उनके द्वारा वह कभी नियन्त्रित नही होता था, बल्कि उनको वह स्वय अपने नियन्त्रण मे रखता था। कर्मचारियो और अधिकारियो को सतुष्ट रखने के लिए वह हर समय वेतन देता था और उनके अच्छे कामो के लिए पुरस्कार देकर उनके उत्साह को बढाता था।

जालिम सिंह मे बातचीत करने का एक अच्छा गुण था। अपने तर्क और सद्भाव के द्वारा वह लोगो को प्रभावित करना जानता था। उसकी बातचीत को सुनकर प्रजा प्रसन्न होती थी और उसको धन्यवाद देती थी। अपराध करने वालो के साथ भी वह सतोष जनक बाते करता था।

जालिम सिंह ने कोटा-राज्य मे खेती के कार्य मे बडी उन्नति की थी। वह कृषि-व्यवसाय को भली प्रकार समझता था और अनाज की पैदावार को बढाना जानता था। यही कारण था कि उसके पहले राज्य मे खेती के द्वारा जो अनाज पैदा हुआ करता था उसमे उसके समय बहुत वृद्धि हो गयी थी। जालिम सिंह अनाज की पैदावार का महत्व समझता था और इसलिए वह राज्य की खेती के प्रति अधिक ध्यान देता था। उसके समय मे कोटा-राज्यमे अनाज की पैदावार इतनी अधिक होती थी कि राज्य के लोग कभी अनाज का अभाव नही करते थे। इतना ही नही बल्कि आव-श्यकता पडने पर राजस्थान के दूसरे भागो और भारतवर्ष के अधिकांश नगरो मे कोटा का अनाज जाया करता था।

जालिमसिंह मे अनेक गुण आश्चर्य जनक थे। अपराधियो के साथ वह कठोर अत्याचार करता था और जिन लोगो को वह समझता था, उनकी वह पूर्ण रूप से सहायता करता था। अपने इन गुणो के अनुसार वह साधु और सन्यासियो की भिक्षा का दसवाँ भाग ले लेता था और जहाँ आवश्यकता समझता था लोगो को सोने के आभूषण दान मे देता था। उसने अपने राज्य के सामन्तो को निकाल कर उनकी भूमि पर अधिकार कर लिया था और दूसरे राज्यो के सामन्तो को अपने यहाँ आश्रय देकर उनकी सभी प्रकार सहायता किया करता था।

आप अगरेजी राज्य से इस बात की प्रार्थना कीजिए की पूर्व स्वीकृत संधि के अनुसार
जाय। क्योकि मूल सन्धि की दसवी शर्त मे लिखा है "कोटा-राज्य के पूर्ण शासन क
महाराव उम्मेद सिह और उसके उत्तराधिकारियो को होगा। पूर्व के स्वीकृत संधि मे मह
सिह और अगरेजी सरकार की तरफ से हस्ताक्षर हुये है और दोनो की मोहरे लगी हुई
बाद की दो शर्ते जो शामिल की गयी है, उनने न तो स्वर्गीय महाराव के हस्ताक्षर है
शर्तों की महाराव को जानकारी ही थी।"

कोटा-राज्य मे आरम्भ से ही कुछ लोग—जिनमे सामन्त भी शामिल थे और f
पहले किये जा चुके है—विरोधी थे। उन्होने इस प्रकार के षडयन्त्रो की रचना करके
प्रचार करके गोवर्धददास को उसके पिता का विरोधी बना दिया था। साथ ही महा
सिह ने जालिम सिह के विपरीत काम करने के लिए तैयार कर दिया था। राज्य की इ
का भली प्रकार अध्ययन करके मैने दूरदर्शिता मे काम लिया और विरोधी षडयन्त्र
ध्यान न देकर मैने नवीन महाराव किशोर सिह को विश्वास दिलाने की पूरी चेष्टा
आपकी मर्यादा को सुरक्षित रखने के लिए पूरा प्रयत्न करूँगा, लेकिन राज राणा जा
अधिकारो के प्रति अवहेलना करने की मैं कोई प्रतिज्ञा नही करता। मेरी बात
होकर किशोर सिह ने कहा: मै आँख मूँद कर आपकी मित्रता पर विश्वास करता हूँ।"
ने भी इसी प्रकार का कुछ भाव प्रकट किया। लेकिन वहाँ पर जो सामन्त उपस्थित
शान्त बैठे रहे। किसी ने उस समय कुछ नही कहा।

विरोधी परिस्थितियो को शात देखकर मैने किशोर सिह और जालिम सिह
सद्भाव पैदा करने की कोशिश की। कोटा के दुर्ग मे राज्य के श्रेष्ठ व्यक्तियो को आम
एक बैठक की गई और किशोर सिह को राज सिहासन पर बिठाने का निश्चय किया
समय पोंलिटिकल एजेन्ट की हैसियत से मैंने अपने भावो को प्रकट करते हुये कहा
राज्य का शुभचिंतक हूँ और महाराव किशोर सिह का सभी प्रकार कल्याण चाहता हूँ।
करता हूँ कि वर्तमान सकटपूर्ण परिस्थितियो मे महाराव किशोर सिह के द्वारा ऐसा क
होगा, जिससे इस राज्य को और हाडा राजवश के सम्मान को किसी प्रकार की
सके। महाराव को सोच समझकर प्रत्येक कार्य करना चाहिये और अपने घनिष्ट
गोवर्धन दास से पृथक रहना चाहिये। गोवर्धनदास को हाडौती राज्य से बिलकुल
की जरूरत है।"

मई महीने के मध्य मे इस प्रकार की बाते हुई और जून मे गोवर्धनदास क
विद्रोहात्मक अपराध मे कोटा राज्य से दिल्ली भेज दिया गया। इसके बाद महाराव f
और राज राणा जालिम सिह मे सद्भाव पैदा कराने के उद्देश्य से एक सार्वजनिक सभा
उस सभा मे दोनो का फिर से स्नेह और सद्भाव देखकर उपस्थित लोगो ने बडी प्र
की। इस प्रकार सभा अपने उद्देश्य मे सफल हुई।

सन् १८२० ईसवी के अगस्त के महीने की १७ तारीख को एक बडे समारोह
सिहासन पर किशोर सिह को विठाया गया। अंगरेजी सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत
पहले मैंने किशोर सिह के मस्तक पर राज तिलक किया और हीरा-जवाहिरात के आ
के गले मे पहनाकर उसकी कमर मे मैने तलवार बाँधी। महाराव ने इसके बदले उपहार
सौ सोने की मोहरे दी। इसके बाद अंगरेज गवर्नर-जनरल की तरफ से मैने महाराव
खिलत दी। इसके लिए राज राणा जालिम सिह ने अंगरेजी सरकार और उसके

उलझनो और आपसी विरोधी तथा विद्रोहो के समय भी जालिम सिंह का शासन कभी शिथिल नहीं पडा था । प्रत्येक परिस्थिति मे वह शासन के प्रबन्ध को कभी कमजोर नही होने देता था यही कारण था कि कोटा-राज्य मे अपराधी लोग बहुत डरा करते थे ।

अच्छे और बुरे आदमियो के पहचानने की जालिम सिंह मे अद्‌भुत क्षमता थी । वह राज्य के कर्मचारियो मे कभी खराब आदमियो को नही रखता था । सिफारिशो पर वह विश्वास नही करता था । उसका विश्वास था कि राज्य का अच्छा शासन अच्छे आदमियो पर निर्भर होता है ।

अपने इन सब गुणो के साथ जालिम सिंह अच्छा सैनिक और सेनापति था अनेक अवसरो पर उसने कोटा-राज्य की रक्षा की और उसके गौरव को उसने बढाया । उन अवसरो पर यदि जालिम सिंह न होता तो कोटा-राज्य को किस प्रकार के दिन देखने पडते, यह नही कहा जा सकता ।

दिया गया था और उसके कहने के अनुसार दिल्ली और इलाहाबाद उसको रहने के लिए गया था। इसलिए वह अपने परिवार के साथ दिल्ली मे रहने लगा था। वहाँ के स्थानी अधिकारियो ने उसकी देखभाल रखने के लिए सावधान कर दिया गया था।

दिल्ली मे रहकर गोवर्धनदास ने सन् १८२१ ईसवी के अंतिम दिनो मे झबुआ लडकी से विवाह करने लिए—जो वहाँ के सामन्त की अविवाहिता स्त्री से पैदा हुई थी जाने की आज्ञा ले ली थी। उसके उस नगर मे पहुँचते ही कोटा-राज्य मे अशान्ति के बाद पड़ने लगे और उसके बाद ही कोटा से लेकर बूँदी तक विद्रोहात्मक उत्तेजना फैलने ल अली राज पलटन नामक राणा की विशेष सेना का सेनापति था और अपनी तीस वर्ष वह विश्वास और वीरता के लिए प्रसिद्ध हुआ था। उसने किशोर सिंह के पक्ष का सम इस प्रकार विद्रोही समाचारो के मिलने पर आरम्भ मे जालिम सिंह ने विश्वास न किय बुद्धिमानी के साथ उसने सैफअली की सेना के साथ राज्य की दूसरी सेना भी रख द विद्रोही सेना नियत्रण मे रह सके। इन्ही दिनो मे महाराव किशोर सिंह ने सैफअली के की सेना को अपने महल मे बुलवाया और वह जल के रास्ते से होकर महाराव की महल मे आ गयी। यह समाचार जालिम सिंह को मिला। उसने अपनी सेना लेकर सै सेना पर आक्रमण किया और दो ऊँचे स्थानो पर तोपो को लगवा दिया जिनसे रा लेकर चम्बल नदी के दोनो किनारो पर बसे हुए नगरो तथा ग्रामो पर गोली की वर्षा ह यह देखकर महाराव किशोर सिंह अपने भाई पृथ्वी सिंह और कुछ सैनिको को साथ बूँदी-राज्य चला गया। उसके जाते ही जो सेना महल मे आयी थी, उसने आत्म-स दिया। इसलिए महाराव किशोर सिंह ने जो प्रयत्न किया था, वह व्यर्थ हो गया। इ विशन सिंह ने अपने दोनो भाइयो को छोड दिया और उसने जालिम सिंह के साथ अप स्थापित किया।

इस समय कोटा-राजधानी मे अशान्ति पैदा हुई, उसको दूर करने और विद्रोही उ मिटाने का केवल यही एक उपाय था कि सधि के अनुसार काम किया जाय। इसलिए बूँदी के राजा के पास एक पत्र भेजा गया। उसमे लिखा गया। कोटा के महाराव किश अतिथि के रूप मे रखने और उसका सम्मान करने मे कोई हानि नही है। लेकिन अगर f ने बूँदी मे पहुँचकर जालिम सिंह के विरुद्ध सैनिक तैयारी की तो उसका उत्तरदायित्व हो गया।

गन दिनो मे नीमच नामक स्थान पर जो अगरेजी सेना रहती थी, उसके सेनाप आदेश भेजा गया कि झबुआ बूदी राज्य के मध्यवर्ती रास्ते पर एक सेना लगा दी जाय गोवर्धनदास महाराव किशोर सिंह से मिलने के लिए बुंदी की तरफ आवे तो उसे किसी कैद कर लिया जाय। यह समाचार गोवर्धनदास को मालूम हो गया। इसलिए वह पहाडी से होकर निकल गया और अगरेजी सेना उसे कैद न कर सकी। लेकिन बूदी के राजा क जो पत्र भेजा गया था, उसके कारण वह गोवर्धनदास को अपने यहाँ किसी प्रकार रखने के न था। इसलिए वह बूंदी से छिपे तौर पर भागकर मारवाड चला गया। लेकिन वहाँ उसको अपने यहाँ आश्रय न दिया। उस दशा मे विवश होकर वह दिल्ली मे आ ग वह अधिक सावधानी के साथ रखा गया।

महाराव किशोर सिंह ने भी बूदी राज्य छोड दिया और वह वृन्दावन की यात्रा करने के लिए चला गया। उसने ब्रजनाथ जी के मन्दिर मे रह कर धार्मिक जीव

पडी है, बहुत आसानी के साथ वहां के लोगो के द्वारा उनकी पूर्ति है। मैंने कही कही पर भी किसी प्रकार की असुविधा को अनुभव नही किया।

राजस्थान मे उदयपुर का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उसकी सभी बातो को जानने के लिए मेरे साथ का प्रत्येक आदमी पहले से ही बहुत उत्सुक था और मै स्वय भारतवर्ष के उस प्रसिद्ध नगर को सभी प्रकार जानना और समझना चाहता था, जो उदयपुर के नाम से विख्यात था।

किसी प्रकार यह दिन मेरे सामने आया। मैंने प्रसन्न होकर अपने सहयोगियो के साथ मेवाड से मारवाड की तरफ जाने की तैयारी की। मेवाड और मारवाड मे बहुत अन्तर है। इस अन्तर को यहाँ पर स्पष्ट कर देना जरूरी मालूम होता है। मेवाड जितना ही सुख और सुविधाओ से परिपूर्ण है, मारवाड की मरुभूमि उतनी ही कष्टो और कठिनाइयो से भरी हुई है। इतना सब होने पर भी पर्यटन और अनुसधान सम्बन्धी उत्सुकता के कारण वहाँ की कष्टपूर्ण और कठोर यात्रा हम लोगो को किसी प्रकार अप्रसन्न न कर सकी।

हमारे साथ कप्तान वाग, लेफ्टिनेएट केरी, डाक्टर डकन, पहरेदारो का एक दल और पैदल तथा सवारो की दो पल्टने थी। उदयपुर की घाटी छोडने के लिए हमारे साथ के सभी लोग उत्सुक थे। इसका एक कारण यह भी था कि बरसात के कारण यह घाटी स्वास्थ्य के लिए भयानक हो जाती है। उन दिनो मे झरनो और नदियो का जल उफन-उफन कर कुओ मे भर जाता है और अनेक प्रकार की गन्दगी पैदा हो जाने के कारण उन कुओ के जल मे काले रग का तेल-सा तैरने लगता है। इसका फल यह होता है कि उन कुओ का जल न केवल पीने मे बदजायका हो जाता है, बल्कि वह अनेक प्रकार से दूषित, अरुचिकर, अप्रिय और स्वास्थ्य को नष्ट करने वाला हो जाता है। उसके पीने वालो को उन दिनो मे बडा कष्ट रहा करता है।

वहाँ पर इन्ही कुओ का जल पीने के काम मे आता है। इन कुओ के जल को दूषित और अरुचिकर समझने के बाद भी उनको शुद्ध और विकार हीन बनाने का कोई उपाय मैं वहाँ के लोगो को बता नही सका। वहाँ के लोग इन कुओ के जल को क्षार और आमला के द्वारा शुद्ध कर लेने की कोशिश किया करते है। उन कुओ का जल जब क्षार के द्वारा शुद्ध किया जाता है तो वह जल किसी प्रकार भोजन बनाने और पीने के लिए बहुत कुछ काम का बन जाता। आमला का प्रयोग करने से जल का दूषित अश और विकार जल के नीचे बैठ जाते है। राजपूत लोग अपने मैले कपडो को धोने के समय साबुन का भी प्रयोग करते है।

१२ अक्टूबर—प्रात काल पाँच बजे बिगुल बजा। तैयार होने लिए यह एक आदेश था। उस बिगुल के बजते ही सभी लोग तैयार होने लगे और मैं भी अपनी तैयारी मे लग गया। उस समय मैने देखा कि पीले वस्त्र पहने हुए सैनिक वृद्ध सेनापति के सामने खडे है और अश्वारोही सैनिक लाल पगडी बाँधकर बडी तेजी के साथ पीले अँगरखे बाँधने पहनने और पेटियाँ बाँधने मे लगे है।

महल का नगाडा भी बज चुका था। वह जाहिर करता था कि सूर्यवशी राजा जग गये है। हम लोग तैयार होने के बाद अपने स्थानो से चलकर सूर्य द्वार पर पहुँच गये। वहाँ पर देखा कि मिएडीर, दैलवारा, अमाइत और ब शी के चार सामन्त अपनी सेनाओ के साथ तैयार खडे है और राजा का आदेश पाकर हम लोगो को वहाँ की सीमा तक पहुँचाने के लिए तैयार हे। राजा का यह एक अच्छा व्यवहार हम लोगो के साथ था। कुछ कठिनाइयो और आशकाओ के कारण भी राज्य

गया कि महाराव ने सन्धि के अनुसार न्याय की माँग की है। इसलिए प्रत्येक हाडा र
महाराव की सहायता के लिये आना चाहिये।

महाराव किशोर सिंह की इस घोषणा को सुनकर हाडा राजपूत आकर एकत्रित
उस समय घोषणा को सुनकर वे लोग भी महाराव के पास पहुँचे जो जालिम सिंह
और जिन्होने समय-समय पर जालिम सिंह के द्वारा बहुत लाभ उठाये थे। ऐसे लोगो ने
सिंह के पक्ष मे समर्थन किया और उसकी सहायता के लिए वे रवाना हुये। इनमे से अ
ऐसे थे, जिन्होने किशोर सिह को कभी देखा भी न था और न उसके सम्बन्ध मे कु
थे। उस समय ऐसा मालूम होता था कि राज्य मे प्रजा से लेकर कर्मचारियो अ
रियो तक—सभी लोग महाराव किशोर सिंह से पक्ष मे है। राज्य की इस परिस्थति
सिंह भी स्वीकार करता था। सन् १८२२ ईसवी की १६ सितम्बर को अगरेज सरकार
कल एजेण्ट की हैसियत से मेरे पास एक पत्र भेजकर महाराव किशोर सिंह ने सधि के
की। उस पत्र मे लिखा था :

मै क्या चाहता हूँ यह जानने के लिए चाँद खाँ ने कई बार इच्छा प्रकट की थ
मिर्जा मोहम्मद अली बेग और लाला सालिग राम अपने दोनो वकीलो के द्वारा अपनी
के पास भेज रहा हूँ। मैं फिर आपके पास पूर्व निश्चित सन्धि की शर्तो को भेज र
को उन्ही के अनुसार कार्य करना चाहिये। अगरेज सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत से
साथ न्याय करना चाहिये। मालिक को मालिक की तरह और नौकर को नौकर की
चाहिये। ससार में सर्वत्र यही होता है। आपसे छिपा नही है।

१—महाराव उम्मेद सिंह के समय दिल्ली मे जो सन्धि हुई थी, मै उ
करूँगा।

२—मै नाना जालिम सिह पर सभी प्रकार का विश्वास रखता हूँ। जिस प्रका
ने महाराव उम्मेद सिंह के समय इस राज्य मै काम किया है, उसी प्रकार मेरे साथ भी
चाहिए। मैं नाना जी के प्रबन्ध-शासन को स्वीकार करता हूँ। परन्तु मेरे और माधव ि
सन्देह और अविश्वास है। हम दोनो एक दूसरे पर विश्वास नही कर सकते और
हो सकते है। इसलिए मै उसको एक जागीर दूँगा उसको वहाँ रहने दिया जाय। उसका
लाल मेरे साथ रहेगा और जिस प्रकार दूसरे मन्त्री अपने राजा के समीप रहकर राज
करते है, वह भी उसी प्रकार मेरे साथ रहकर करेगा। मै मालिक होकर रहूँगा और
होकर रहेगा। यदि वह ऐसा करता है तो यह क्रम बराबर चलता रहेगा।

३—अगरेजी सरकार और दूसरे राजाओ के जो पत्र भेजे जायँगे वे मेरे परामर्श
लिखे जायँगे।

३—मेरी और राजराणा के जीवन की रक्षा का उत्तरादायित्व अगरेजी-सरकार

५—अपने भाई पृथ्वी सिह को मै एक जागीर दूंगा, वही पर वह रहा करे
पास जो नौकर अथवा दूसरे आदमी रखे जायेगे, उनको मै नियुक्त करूँगा। मेरे वश
आवश्यकतानुसार जागीरे दी जायगी और वे जागीरे उनकी मर्यादा के अनुसार होगी
प्रणाली के अनुसार राज दरबार मे रहा करेगे।

६—मेरे शरीर रक्षक सैनिक तीन हजार की संख्या मे मेरे पास रहेगे और उनमे
का पौत्र बप्पा लाल भी रहेगा।

स्वतन्त्र रूप से इधर-उधर दौडते हुए कभी हम लोगो के पास आ जाते थे और कभी दूर भाग जाते थे। ऐसा मालूम होता था, मानो वे आपस मे खेल रहे है। उनको देखकर हम लोग बहुत खुश हो रहे थे। उस समय उन हाथियो के बच्चो को देखकर और उनके चलने तथा दौडने से प्रसन्न होकर हम सभी लोग जोर से एक साथ हँस पडे।

इन हाथियो के बीच मे एक बच्चा आठ वर्ष का मालूम हुआ। वह अधिक ऊँचा नही है। लेकिन चञ्चल और शैतान बहुत मालूम होता है। जो लोग हम लोगो का खाना बना रहे थे, वह आठ साल का बच्चा उनके पास बार-बार जाता और उसके बाद लौटकर तेजी के साथ भागता। उसको देखकर साफ जाहिर होता है कि वह भोजन बनाने वालो के साथ शैतानी कर रहा है। उसकी इन हरकतो को देखकर मुझे आदमी के बच्चो की आदतो का स्मरण होने लगा। मैं सोचने लगा कि हम लोगो के बच्चो मे भी बहुत कुछ इसी प्रकार की आदते पायी जाती है।

हमको मालूम हुआ कि जिस रास्ते से हम लोगो को जाना है वह रास्ता जलमय है। मारवाडी पशुओ को उस रास्ते पर चलना मुश्किल दिखाई देने लगा। जिस स्थान से हम लोग चल रहे थे, वहाँ पर विभिन्न प्रकार के बहुत से वृक्ष थे और रास्ता जल से भरा हुआ था। उस रास्ते से हम लोगो को चलना पडा। मार्ग मे बहुत से ग्राम दिखायी पडे। ऐसा मालूम हुआ कि उनके रहने वालो का मार पीट कर लूट लेना, झगडा करना और लडाई लडना ही रोजगार है। इस प्रकार की बाते उन गाँवो के सम्बन्ध मे जानकर हमने न जाने क्या-क्या सोच डाला।

कुछ भी हो, जिस स्थान से हम लोग चल रहे थे, उसमे प्रकृति का सौन्दर्य खूब दिखायी देता था। बहुत तरह के वृक्ष आँखो के सामने आ रहे थे और उनसे हम लोगो ने एक प्रकार के सुख और संतोष का अनुभव किया। इस प्रकार के रमणीक स्थान राजस्थान मे ही देखने को मिलते हैं। यह बात बार-बार मेरे मन मे गुजरने लगी।

जिस रास्ते से हम लोग चल रहे थे, हमारी बायी तरफ पहाडो का एक ऊँचा सिलसिला था। उसे देखकर ऐसा मालूम होता था, मानो उन पहाडो के द्वारा उदयपुर की रक्षा के लिये एक ऊँची और अटूट दीवार बनी हुई है। उस शिखर के ऊपर राताकोट का टूटा और गिरा हुआ भाग अब तक उसके प्राचीन गौरव का परिचय देता है। उसके ऊपर से चारो तरफ के दृश्य दिखायी देते हैं। हमारे पूर्व की तरफ इतना विस्तृत क्षेत्र दिखायी दे रहा है, जिसकी कही पर सीमा नजर मे नही आती।

हम लोग देवपुर होकर आगे बढे। यह एक ग्राम था और सभी प्रकार सम्पन्न था। मारवाड का उत्तराधिकारी भानैज × जालिम सिंह उस देवपुर का अधिकारी है। हमारे पूज्यगुरु :- ने

×टाड साहब का लिखा हुआ यहाँ पर भानैज शब्द कुछ समझ मे नही आता। इस शब्द से कुछ भ्रम पैदा होता है। इस विषय के दूसरे विद्वानो का इस प्रकार कहना है। भानैज और भागनेय दो शब्द ऐसे है जो एक दूसरे का भ्रम उत्पन्न करते है। वास्तव मे भानैज भाञ्जे को कहा जाता है। टॉड साहब का अभिप्राय क्या है, यह स्पष्ट रूप से समझ मे नही आता। इस शब्द पर कुछ लोगो का मतभेद होने के कारण यहाँ पर इतना लिखकर स्पष्टीकरण किया गया है। जिससे पाठक कुछ सही अन्दाज लगा सके।

:-: टॉड साहब ने अपने गुरु ज्ञान चन्द के सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा है और इस बात को स्वीकार किया है कि यती ज्ञान चन्द जैनमत का मानने वाला था। वह इस वर्ष तक मेरे साथ रहा और उसने सभी प्रकार मेरी सहायता की। मैं न केवल उसकी सहायता से सन्तुष्ट रहा, बल्कि उसकी योग्यता और व्यवहारिकता से मुझे बहुत सन्तोष मिला।

भी की हैं और नाना जी पर पूर्ण रूप से विश्वास भी प्रकट किया है । लेकिन उसकी उसके अस्तित्व को कहाँ ले जाकर पटकेगी, इसे उसने समझने की कोशिश नही की । की मांग करने का अर्थ यह है कि उसको मुझ पर सन्देह है । संधि का प्रस्ताव करने यह है कि वह पूर्व स्वीकृत सधि को स्वीकार नही करना चाहता । क्योकि उस सधि को छोड देने का अर्थ है, सधि के अस्तित्व को ही नष्ट कर देना । जालिम सिह स्वीकार करने के बाद भी अपनी शर्तों के द्वारा उसे प्रत्येक अधिकार से वंचित कर रखता है, इसे वही समझ सकता है । वास्तव मे महाराव किशोर सिह ने जो कुछ अपराधी वे है, जिन्होने उसके भोलेपन का लाभ उठाया और उसे जालिम सिह के वि खडा कर दिया ।

महाराव किशोर सिह ने अपनी मांगे लिखकर भेजी है । वे मैत्री के आधार पर किसी सधि का समर्थन नही करती । यदि उनको मान भी लिया जाय तो उसी सम सिह और उसके उत्तराधिकारियो के अधिकारो का अन्त हो जाता है । उसके बाद उन का प्रश्न किशोर सिह की दया पर निर्भर हो जाता है । जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन की रक्षा करने और उसकी मर्यादा को कायम रखने मे व्यतीत किया, उसके साथ ऐसा जा सकता और यदि कोई करता है तो वह न्यायपूर्ण नही है ।

अपनी मांगो को लिखकर भेज देने के पहले ही महाराव किशोर सिंह ने को युद्ध के लिये एकत्रित किया था । इसलिये पूर्व स्वीकृत सधि को कायम रखने के सेना को आदेश दिया गया और वह सेना कालीसिन्धु नामक स्थान पर पहुँच गयी । एक तरफ महाराव की सेना थी और दूसरी तरफ जालिम सिंह की । दोनो ओर की पहुँचने के बाद पानी का बरसना आरम्भ हुआ और कई दिनो तक लगातार भयानक बरसता रहा । उस वृष्टि से नदी मे बाढ आ गयी और एक ऐसी भयानक परिस्थिति पै जिससे महाराव का सम्पूर्ण विश्वास और भरोसा नष्ट हो गया । उसने फिर से मेल क प्रकट किया और अँगरेज प्रतिनिधि पर अपना विश्वास स्वीकार किया । लेकिन उस कहता रहा । सम्मान खोकर जिन्दा रहने से क्या लाभ और अधिकारो के बिना रा फायदा पूर्वजो के राज्य को खोकर जीवित रहने से मर जाना अधिक अच्छा है !

महाराव किशोर सिह की अपेक्षा जालिम सिह का व्यवहार इन दिनो मे कुछ से भरा हुआ न था । वह बार-बार अपनी राजभक्ति का परिचय देता था और अपने मे किसी को कालिमा लगाने का मौका नही देना चाहता था । अपनी रक्षा के लिए ढाल बना लिया था । यद्यपि वह भविष्य मे अपने अधिकारो की सुरक्षा चाहता था । ले लिए वह स्वय कुछ करना नही चाहता था । उसको भय था कि मैने जीवन-भर रक्षा है । इस समय अपने पक्ष का समर्थन करने से मै बदनाम हो जाऊँगा । यद्यपि मे यह बात कही गयी कि अगर आप भविष्य मे अपने उत्तराधिकारियों के लिए अधिकारो चाहते है तो आपको खुलकर अपने पक्ष का समर्थन करना चाहिये । राजभक्ति का प्रदर्श काम न चलेगा । लेकिन जालिम सिह के मन के भाव डावांडोल हो रहे थे । मैने अनेक दुविधा की बाते उनसे सुना और उसे सचेत करते हुये मैने कहा कि अब भी अवसर है अन्तिम समय की दुविधा प्रतिकूल परिणाम का परिचय देती है । यद्यपि दोनो तरफ की उस समय अत्यन्त कठोर हो रही थी, इसलिए शांतिपूर्ण उपायो का अवलम्बन गया था ।

जैन धर्म अपना लिया था। उस समय से ये लोग ओसवालो के नाम से प्रसिद्ध है। लोगो का कहना है कि अग्नि वश के प्रमार और सोलकी राजपूतो ने सबसे पहले जैन धर्म को स्वीकार किया था। और उस समय से वे लोग इसी जैन धर्म मे चले आते है।

मानिक चन्द भी जैन धर्मावलम्बी था। लेकिन वह युद्ध प्रिय था। उसका स्वभाव रामसिह से बिलकुल भिन्न था। उसका शरीर लम्बा लेकिन अत्यन्त दुबला-पतला और उसका रग काला था। मस्तक के साथ-साथ उसकी जबान बराबर हिला करती थी। पच्चीस वर्ष तक वह अनेक प्रकार के षडयन्त्रो मे रहा। कोटा मे जालिम सिह के अतिरिक्त षडयन्त्रो मे दूसरा कोई उसका सामना नही कर सका। वह शक्तावत लोगो का एक प्रधान व्यक्ति था और उस सम्प्रदाय के राजपूतो के सरदार निन्दी पति का मन्त्री था। यही कारण था कि वह चन्दावत लोगो का परम शत्रु था।

माणिक चन्द ने चन्दावत लोगो को नष्ट करने के लिए सभी प्रकार के षडयन्त्र किये थे। और अपने उपायो मे उसने कुछ शेष नही रखा था। अपने शत्रुओ के सर्वनाश के लिये उसने पठानो और मराठो के साथ मेल कर लिया था और अपने षडयन्त्रो के कारण वह एक बार कैद कर लिया गया था और उस समय जुर्माने मे रुपये न दे सकने के कारण उसको भयानक कष्टो और अपमानो का सामना करना पडा था। इसमे सन्देह नही कि वह एक दूरदर्शी और बुद्धिमान पुरुष था। यही कारण था कि वह व श के लोगो मे प्रधान माना जाता था।

इस समय माणिक चन्द की अवस्था पचास वर्ष की थी। वह सदा प्रसन्न रहता था, रहस्य पूर्ण बाते करता था और अपने इन्ही गुणो के कारण वह एक बार राणा का भी प्रिय बन गया था। इसके फलस्वरूप राणा ने उसके लडके को अपने उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त कर दिया था। उस लडके के सम्बन्ध मे लोगो का कहना है कि वह यदि जीवित रहता तो निश्चित रूप से वह बडी ख्याति पाता। उसके सम्बन्ध मे इस प्रकार की धारणा का कारण यह था कि वह अपने पिता के समान बुद्धिमान और दूरदर्शी एवम् रामसिह की तरह रुपवान था। लेकिन अपने स्वाभिमान के कारण उसने आत्महत्या कर ली थी। लोगो का कहना है कि माणिक चन्द ने किसी समय बिना किसी सबब के उसका अपमान किया था और उस अपमान को न सहन कर उसने आत्महत्या कर ली थी।

यहाँ पर माणिक चन्द के सम्बन्ध मे कुछ प्रकाश डालना बहुत आवश्यक मालूम होता है। उसने मेवाड-राज्य से दो लाख पचास हजार रुपये वार्षिक वसूल करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया था। इस कार्य के लिए उसने जो आदमी नियुक्त किये थे, उनके अकर्मण्य तथा अविश्वासी होने के कारण उसको इस कार्य मे सफलता न मिली और जितने रुपये शुल्क मे उसे वसूल करके देने थे उनका छठा भाग भी वह राज्य को न दे सका, उसकी बुद्धिमत्ता को देखकर यह अनुमान किया गया था कि वह इस कार्य को सरलता पूर्वक कर सकेगा, और दूसरो की अपेक्षा वह अच्छा साबित होगा। माणिक चन्द ने मेरे कैम्प के पास अपना मुकाम निश्चित करके मुझसे मुलाकात के लिए प्रार्थना की। भेट के समय मैंने देखा कि वह बहुत अस्त व्यस्त अवस्था मे है। उस समय उसने प्रकट किया कि मैंने कई बार आपसे मुलाकात करने की चेष्टा की। लेकिन समय को अनुकूल न देखकर मैं चुप हो जाता रहा।

माणिक चन्द की इन बातो को मैने ध्यान से सुना, उसके प्रति राणा का जो अविश्वास पैदा हो गया था, उसके सम्बन्ध मे बाते करते हुए, उसने कहा· "जिन कर्मचारियो को रख कर मैंने शुल्क वसूल करने का कार्य आरम्भ किया था, वे कर्मचारी विश्वासी न थे, इसलिए उत्तर-

किया, जिससे जालिम सिंह की तरफ के बहुत-से सैनिक गोलियों की वर्षा में मारे
राजपूत भीषड रूप से मार करते हुए उस स्थान पर पहुँच गये जहाँ पर जालिम
था। लेकिन वहाँ पर उनकी शक्तियाँ निर्बल पड गयी और वे भागने के लिए कोई
नदी को पार कर दूसरी तरफ निकल गये। महाराव को जालिमसिंह की तरफ से चार
सैनिको ने घेर लिया। उसके साथ के हाडा राजपूत उसे छोड़कर और नदी के पार जा
आध मील की दूरी पर चले गये थे। इस समय जालिम सिह की सहायक सेना ने
महाराव की सेना को तितर-बितर कर दिया। अँगरेजी सेना ने तेजी के साथ नदी को पार
जैसे ही उसने हाड़ा राजपूतो पर आक्रमण करके खतम कर देने की, कोशिश की. वेसे ह
की तरफ से भाग गये। इसी समय दो दल सैनिको के महाराव पर आक्रमण करने के
बढे। उस समय मालूम हुआ कि जो लोग महाराव की तरफ से युद्ध क्षेत्र छोड़ कर
पिण्डारी लोग थे, राजपूत नही थे। राजपूत अब भी युद्ध मे दीवार बनकर खड़े
साथ युद्ध करते हुए हमारी सेना पीछे हट गयी, उसी समय हमारे दो शूरवीर युवक
उनमे एक क्लर्क और दूसरा रीड था। दोनो चौथी रेजीमेण्ट मे लेफ्टीनेण्ट थे।
कमाण्डर किसी प्रकार बच सका। इसके कुछ ही देर बाद एक दूसरी अगरेजी सेना युद्ध
आगे बढी, उस समय महाराव की सेना पीछे हट कर एक विशाल बाजरे के खेत मे
अंगरेजी सेना ने उसका पीछा किया और उसने बाजरा के खेत मे पहुँचने पर पृ
घायल पडा हुआ देखा। उसी समय उसे उठाकर अगरेज सेना ने अपने सैनिकों के
मे भेज दिया। अंगरेजी शिविर मे पहुँच जाने पर उसकी बड़ी सावधानी के साथ सु
चिकित्सा की गयी। परन्तु वह बच न सका और दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गयी। उस
साथ कुछ चीजे पायी गयी। उनमे से एक अगरेज सैनिक ने उसकी तलवार और अंगूठी
मोतियो की माला, कटार एवम् अन्य मूल्यवान आभूषण उसने मुझे दे दिये। मैंने वे
सिह के लडके को सम्हाल कर रखने के लिये दे दी जो कोटा से सूने सिंहासन का पू
उत्तराधिकारी था।

अङ्गरेजी सेना के किसी सैनिक ने आक्रमण करके पृथ्वी सिंह को नही मारा
भालों की मार के समय वह अनायास ही घायल हो गया था। अंगरेजी सेना ने महाराव
के साथ युद्ध किया था, लेकिन उनके एक भी सैनिक ने उसके पास पहुँचने की चेष्टा नही
इसलिये मालूम होता है कि महाराव के किसी शत्रु ने विश्वासघात करके पृथ्वी सिंह
किया था। क्योकि पृथ्वी सिंह के शरीर पर सामने कोई भी चोट न थी। उसकी पीठ पर
लगी हुई चोटे इस बात का स्पष्ट प्रमाण देती थी कि उस पर उसी के पक्ष के किसी
आक्रमण था और उसने किसी दूरवर्ती अपने स्वार्थो की भावना से प्रेरित होकर इ
विश्वासघात किया था।

महाराव की सेना बाजरा के विशाल खेत मे जाकर इधर-उधर हो गयी और
रक्षा की। उस खेत के आगे इतना घना जगल था कि वहाँ पहुँच जाने पर उस सेना के
भी दिखायी न पडे। इस युद्ध मे हाडा राजपूत ने अपनी असीम वीरता का प्रदर्शन दिया
दो शूरवीरो ने उस समय अपनी जिस राजभक्ति का परिचय दिया उसका यहाँ पर उल्ले
आवश्यक मालूम होता है। वह राजभक्ति ग्रीस और रोम के प्राचीन वीरो की वीरता
प्रकार कम नही मानी जा सकती। पहले यह युद्ध एक ऊँचे मैदान मे आरम्भ हुआ था
अन्त मे युद्ध करती हुई सेनाये एक स्थान पर पहुँच गयी, जो संकीर्ण था और क्रमशः

से हमारे वे आदमी जो बोझा लिए हुए चल रहे थे, हमसे छूठ गये थे। इसीलिये जहाँ पर हम लोग पहुँचे थे, वहाँ ठहरकर हम लोग उन छूटे हुए आदमियो का इन्तजार करने लगे।

इसी समय वहा श्रीमन्दिर के प्रधान पुरोहित ने सुराट के निवासी एक सम्पत्तिशाली मनुष्य के साथ आकर हमसे भेट की और उसने सम्मान मे एक सुनहला अंगरखा एवम् एक सोने से मढा हुआ नीले रंग का दुपट्टा मुझे दिया। इसके साथ-साथ अपने देश के बहुत से स्वादिष्ट फल भी उसने मेरे सामने रखे। उस पुरोहित की तरफ से दोपहर मे भोग का दूध और बहुत से मिष्ठान पदार्थ भी आए थे।

यहाँ पर लौदी नामक एक प्रसिद्ध स्थान है। वहाँ के मन्दिर की अधीनता मे चालीस हजार दूध देने वाली गाये है। कहा जाता है कि इन गायो के समान दूध देने वाली गाये भारतवर्ष मे अन्यत्र कही नही है। इनमे चार हजार गायो के दूध से खीर रवडी मक्खन इत्यादि बनाकर देवता का भोग लगने के बाद सर्वसाधारण मे बाँट दिया जाता है।

सुराट के उस सम्पत्तिशाली वैश्य ने जो एक मूर्ति मेरे सामने पेश की, उसकी दैविक शक्ति के सम्बन्ध मे उसने बहुत-सी बाते मुझसे कही और उस मूर्ति की उसने बहुत बडी प्रशसा की। उसने कहा कि जमुना तट से जिस रथ पर श्री कृष्ण को नाथद्वारा लाया गया था, मैं उस रथ पर बैठे हुए श्री कृष्ण की पूजा करता हूँ। भगवान के भक्तो को छोडकर किसी दूसरे को यह मूर्ति पूजा के लिये नही दी जाती।

भगवान ने कृष्ण का अवतार लेकर जब जिस अवस्था मे जैसा श्रृङ्गार किया था, इस मूर्ति को उसी के अनुसार समय समय पर शृंगार से सजाया जाता है। कंस को वध करने के समय धनुष बाण के साथ इस मूर्ति को दिखाया जाता है और दूसरे अवसरो पर मूर्ति का दूसरा ही रूप प्रकट किया जाता है। उस वंश के मुख से मूर्ति के सम्बन्ध मे जितनी बाते निकली, मैं ध्यानपूर्वक उसको सुनाता रहा और उनके उत्तर मे मैंने कोई भी बात आलोचनात्मक नही कही।

मन्दिर के प्रधान पुजारी के सम्मान के बदले मे मैंने एक पत्र लिखकर उसको इस आशय को दिया कि भविष्य मे अगरेजी सरकार के किसी कर्मचारी को यहाँ के मोरो को मारने और पीपल के वृक्षो को काटने का अधिकार न होगा। साथ ही इस पवित्र स्थान मे किसी प्रकार की कोई जीव हत्या न कर सकेगा। यह सब लिखकर मैंने उस पुजारी को दे दिया और उसके दिल मे असंतोष का कोई भाव पैदा न हो, इसलिये मैंने मन्दिर के आस-पास की भूमि को छोडकर और नदी के पार दूर जाकर भोजन के लिये मुर्गो का बध किया। यद्यपि वह स्थान मन्दिर से दूर था, फिर भी मुर्गों के पखो को मिट्टी खोदकर उसके भीतर भली प्रकार छिपा दिया।

१२ अक्टूबर—अभी तक अपने छूटे हुए आदमियो से हम लोगो की मुलाकात नही हुई थी इसीलिये हम लोगो के दिलो मे उनके सम्बन्ध मे चिन्ता हो रही थी। किसी भी दशा मे उन छूटे हुए आदमियो का पता लगाना जरूरी था। इसलिये असुरवास नामक स्थान की तरफ हम लोगो ने यात्रा की। वह कोट यहाँ से आठ मील की दूरी पर था और हम लोग दोपहर के समय वहाँ पहुँचने के लिये रवाना हुए थे। लेकिन रास्ते मे ही शाम हो गयी। मार्ग मे फतह नामक हमारा एक हाथी पानी मे गिर गया। महावत की गलती से हाथी पानी मे गिरा था। हाथी इतना बुद्धिमान होता है कि चलते हुए वह अपने पैर से मार्ग बढने वाला पैर किसी सकट की सूचना करता है तो हाथी अपने शेष तीन पैरो से अपने आपको सम्हाल लेता है। फतह ने भी ऐसा ही किया था। परन्तु महावत ने उसके सकेत पर ध्यान नही दिया।

उस फतेह नामक हाथी को पन्द्रह सेर आटे की रोटियाँ रोजाना शाम को दी जाती थी।

उनको राजस्थान के किसी राज्य में आश्रय नहीं मिल सकता था। लेकिन ऐसा
कर्त्तव्य नहीं था। महाराव के शिविर मे इन सामन्तो के बहुत से कागज-पत्र हमे मि
मालूम हुआ कि राज्य के सामन्तो और हाडा राजपूतो को अपने पक्ष मे करने के लिये
किस प्रकार षडयन्त्र किये गये थे। उसका परिणाम यह हुआ कि महारव का साथ दे
को भयानक क्षति उठानी पडी। लेकिन उस युद्ध के बाद सबको क्षमा कर देने की घोषणा
और जालिम सिह के द्वारा यह भी घोषणा हुई कि जो सामन्त राज्य को छोडकर चले
लौट कर अपने स्थानों मे आ सकते हैं। किसी प्रकार अपराधी न समझे जायँगे। इस,
बाद कुछ सप्ताहों मे सभी सामन्त और सरदार अपने अपने नगरो मे आ गये और राज्य
रूप से शान्ति कायम हो गयी।

राजनीतिक कार्यो मे प्रवेश करने के पहले सन् १८०७ इसवी मे मैने कोटा-राज्य
स्थानो मे घूम कर वहाँ की ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करने का काम किया था। राह
सीधियाँ के दरबार को छोडकर अपने कुछ आदमियो के साथ चन्देरी के घने जगलो मे भै
हुआ पश्चिम की तरफ आगे बढा और वेतवा तथा चम्बल नदी के मध्यवर्ती स्थानो मे
रहा। इसके बाद बारा नामक स्थान पर पहुँचकर मैंने मुकाम किया। उसके पश्चात् ह
सत्रह मील की दूरी पर काली सिंध नामक नदी के किनारे मैं पहुँच गया और अपने
से वही पर आने के लिए मैंने कह दिया था। बमौलिया नामक नगर के पास से
समय मुझे कुछ आदमी मिले। उन्होने मुझे घेर कर कहा कि आपको हमारे राजा
चलना पडेगा। उस समय मै बहुत थका हुआ था। लेकिन उन आदमियो की बात
लेना मेरे लिए आवश्यक था। इसलिए मैं उनके साथ चल पड़ा। एक बगीचे के भीतर
वृक्षों के बीच मे मैंने एक ऊँचा चबूतरा देखा। इस चबूतरे पर बमौलिया का सामन्त एक
पर बैठा हुआ था। उसके पास कुछ और भी लोग बैठे हुये थे। उन लोगो ने मेरे साथ बहुत
प्रकट किया। चबूतरे के पास पहुँच कर मैने अपने बूट खोलने की कोशिश की लेकिन कुछ
और फिर जल्दी के कारण मै अपने बूट खोल नही सका। मेरे पहुँचने के बाद तुरन्त
की सामग्री मँगाई गयी और एक ब्राह्मण हाथ मुँह धोने के लिये पानी ले आया। मै उस
राजपूतो के आचार व्यवहार से परिचित न था। इसलिए मेरी समझ मे जो कुछ आया, वै
किया, कुछ देर तक मैने वहाँ विश्राम किया। वहाँ पर बैठे हुये सामन्त और उनके साथ
मियों से मेरी बराबर बातें होती रही। यद्यपि मै इतना थका हुआ था कि चुपचाप लेटे रह
देर तक केवल विश्राम करना चाहता था परन्तु मेरे वहाँ पहुँचने के बाद कुछ ही देर मे
एक भीड़ लग गयी और वहाँ पर मेरे आने का समाचार पाकर आदमियो के साथ बहुत-सी
और जवान लडकियाँ मुझे देखने के लिए आयी। इस प्रकार आनेवालो की वहाँ पर एक अच्छ
लग गयी। वे सभी मेरी ओर देख रहे थे। मेरी घोडी लँगड़ी हो गयी थी। इसलिये बम
सामन्त ने मेरे लिए एक अच्छा घोडा कसवा कर तैयार करवा दिया। मेरे चलने के समय ज
घोडे के लिए मुझसे कहा गया तो मैने बडे सम्मान के साथ सामन्त के घोडे को लेने मे
किया। अपने डेरे पर लौटकर जाने के बाद मैने कई एक छोटी-छोटी चीजे उपहार स्वरूप
के पास भेजी। इसके चौदह वर्ष बाद माँगरोल मे महाराव के साथ युद्ध आरम्भ होने से दू
बमौलिया के सामन्त की माता का भेजा हुआ मुझे एक पत्र मिला। सामन्त की माता
आशीर्वाद देते हुये पत्र मे लिखा था कि मेरे लडके ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए
महाराव किशोर सिह का साथ दिया है। इसलिए मेरे लड़के की आप रक्षा करेंगे। मैंने बड़े

मार्ग हो सकता है। वह विशाल स्थल दूर तक इस प्रकार फैला हुआ था, जो एक-सा नही था और उसका प्रत्येक स्थान एक मील से कम नही था। पहाडो के नीचे से यह जमीन दूर तक फैली हुई थी। पहाडो के ऊपर आमो के वृक्ष थे। शिखर के ऊपर के स्थान देखने मे अत्यन्त मनोहर मालूम हो रहे थे।

पहाडो के इन स्थानो को प्राकृति ने सभी प्रकार प्रिय और आकर्षक बना दिया था। वहाँ पर जो वृक्ष थे, उनमे गूलर, सीताफल और बादाम के वृक्ष अधिक मालूम हो रहे थे। नदी के किनारे की भूमि मे बहुत तरह के वृक्ष दिखाई दे रहे थे। उसमे आम, तेन्दू पीपल और बरगद इत्यादि के बडे-बडे वृक्ष दूर तक फैले हुए थे। यहाँ के रमणीक दृश्य देखकर हम लोग प्रसन्न होते रहे। वहाँ के निवासियो ने नदी के जल को पर्वत के ऊपर पहुँचाने की चेष्टा की थी और उसमे उनको सफलता भी मिली है।

नदी का जल जो पर्वत पर पहुँचाया जाता है, उससे वहाँ की मिट्टी वाली भूमि मे ईख, रुई और दूसरे अनाजो की खेती की जाती है। लोगो का कहना है कि वहाँ पर जो ईख पैदा होती है, वह दूसरे स्थानो की ईख से उत्तम होती है। ईख की खेती से वहाँ के लोगो की अच्छी आमदनी हो जाती है। परन्तु तीन वर्षों से ईख की खेती मे एक कीडा लग जाने से उसको बहुत हानि पहुँचती है और जो आमदनी उसमे हुआ करती थी, उसको बहुत क्षति पहुँची है।

सुमैचा ग्राम तीन भागो मे विभाजित है और उसके प्रत्येक भाग मे लगभग एक सौ परिवार रहा करते है, यह ग्राम राणाराज नामक पर्वत के नीचे की भूमि पर बसा हुआ है। मुगलो से पराजित होने पर राणा वहाँ के पहाडी रास्ते से भागकर घने जगलो मे चला गया था। उस समय से यह पर्वत राणा राज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस सुमैचा ग्राम मे प्रसिद्ध राणा कुम्भ के वसज कुम्भावत लोग रहा करते है। हम लोगो के पहुँचने पर कुम्भावत सरदार अपने साथ बहुत से लोगो को लेकर मुझसे मिलने आया। उसने अपने यहाँ की बनी हुई प्रसिद्ध कुकडी मुझे भेट मे दी। कुकडी यहाँ का एक पहाडी शस्त्र है, जो तीन फुट लम्बा होता है। घी के साथ उसने बकरी के बच्चे भी मुझे भेट मे दिये। मैंने उन राजपूतो और भूमिया लोगो से सम्मान के साथ भेट की और उनसे मिलने की खुशी जाहिर की। उन लोगो के स्वास्थ्य शरीर और उनकी आकृतिक देखकर हम सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए।

मेरे साथ जितने भी लोग थे, सभी ने उन राजपूतो को देखा और उनके स्वस्थ्य शरीर देखकर वे आपस मे उनकी प्रशसा करने लगे। वास्तव मे उनके शरीरो को देखकर उनकी वीरता का सहज ही अनुमान होता था। उनकी मूछे लम्बी थी। उनके सरदार के सिर पर पगडी उनके मस्तक की शोभा बढा रही थी। सरदार के साथ बाकी जो लोग आये थे, वे सभी साधारण श्रेणी के लोग थे। वे कुरता और पाजामा पहने थे और उनके सिर पर साधारण पगडियाँ थी।

पहले कलममीर के दुर्ग की रक्षा करने के लिए ये लोग नियुक्त किये जाते थे। परन्तु मराठो ने इनकी शक्तियो को इधर बहुत दिन पहले से नष्ट कर दिया है। अब ये लोग राणा की प्रजा मे गिने जाते है। ये लोग राज्य के सभी कार्यों मे काम आते है और वर्ष मे निश्चित कर भी राणा को अदा करते है। इन लोगो के पूर्वजो ने जो बहादुरी के काम किये थे। मैंने उनकी प्रशंसा उन लोगो के सामने की। उस प्रशंसा को सुनकर वे लोग बहुत प्रसन्न हुए। इस

महाराव किशोर सिंह को बुलाकर राज सिंहसन पर बिठाने की चेष्टा की जा उसको नष्ट करने के लिए इस प्रक र का यह एक षडयन्त्र रचा गया है। उदयपुर का विवाह महाराव किशोर सिंह की बहन के साथ हुआ था। इसलिए वहाँ की बहुत बडी अभिलाषा यह थी कि महाराव किशोर सिंह को कोटा के सिंहासन जाय।

राणा ने जब उस षडयन्त्र का समाचार सुना और यह भी सुना कि उसका प्र किशोर सिंह के सिहासन पर बैठने पर पड रहा है तो राणा ने बडी सावधानी और साथ उस षडयन्त्रकारी को पकडवाकर उदयपुर राजधानी मे बुलवा लिया। उसके षडयत्र बाद मे भी कुछ प्रकट न हुआ। लेकिन यह मालूम हो गया कि विशन सिह के नाम से आया था, वह जयपुर-राज्य का रहने वाला था और किसी अपराध के कारण उसको लँगडा कर दिया गया था। उसके सम्बन्ध मे इस प्रकार का रहस्य जाहिर होने पर उस दण्ड दिया गया।

जो षडयन्त्र रचा गया था, उसका अन्त हो गया। बडे सम्मान और समारोह के राव किशोर सिह का आगमन कोटा मे हुआ। राज्य की सम्पूर्ण प्रजा ने उस समय खुशि महाराव किशोर सिह ने इस बार सिंहासन पर बैठकर उन सभी बातो को अपने हृदय दिया, जिनके कारण उसने एक बार सिंहासन छोड दिया था और राज्य मे भयानक विद्रो गया था।

महाराव का भाई विशन सिह राजधानी छोडकर कोटा से बीस मील की दूरी प नामक स्थान मे रहता था। सिहासन पर बैठने के बाद महाराव ने कुछ ग्राम और नगर दे सिह की जागीर बढ़ा दी।

इसके पहले एक बार और महाराव किशोर सिह और जालिम सिंह मे सद्भाव था। उस समय मैं एक महीने तक कोटा राजधानी मे इस अभिप्राय से रहा था कि दोनों के बीच का सद्भाव मजबूत हो जाय और फिर किसी प्रकार की उसमे कोई बा इस बार भी मैंने यही किया और कोटा मे इसलिए कुछ दिनों तक बना रहा कि सम्बन्ध सदा के लिए स्नेहपूर्ण बन जाँय। महाराव के सिंहासन पर बैठ जाने के बाद अ पूर्ण रूप से शान्ति कायम हो जाने के पश्चात् जालिमसिंह राजधानी से बाहर छावनी मे लगा। इसके बाद जालिम सिंह पाँच वर्ष तक और जीवित रहा।

कोटा के राज-सिहासन पर जितने भी राजा वैठे थे, उनमे जालिम सिंह राजा लेकिन उसने एक राजा की हैसियत से वहाँ का शासन किया था। उसके जीवन मे अनेक f थी। इसलिए कोटा राज्य के इतिहास का अन्त करते हुए जालिमसिंह के अन्तिम जीवन कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालना जरूरी है।

जालिम सिंह के सम्पूर्ण जीवन अध्ययन करने ये बाद हम यह कहने का साहस वह एक असाधारण पुरुष था। यही कारण था कि उसने कोटा-राज्य मे अपना प्रभुत्व का था। वह प्रायः कहा करता था कि अपने मन के भावो को मैं ही जानता हूँ। यह बात स एक साधारण पुरुष न था और इसलिए उसको समझ सकना साधारण काम न था। कोटा बडा अधिकार प्राप्त करने के बाद भी उसने सुख और विलासिता का जीवन कभी नही वह स्वाभाविक रूप से गम्भीर था। अपने प्रभुत्व के दिनो मे वह कभी वहुत प्रसन्न नही भयानक से भयानक कठिनाइयो के समय भी उसको किसी ने कभी घवराते नही देखा।

इसलिए उसके इस सौन्दर्य को महत्व देना भी आवश्यक है। उसकी इस सुन्दरता से मैं प्रसन्न हुआ।

इस स्थान की और भी कुछ ऐसी वाते है, जो अपनी तरफ मुझे आकर्षित कर रही हैं। यह विस्तृत मैदान जयपुर की भूमि से एक हजार फुट और समुद्र की सतह से तीन हजार फुट ऊँचा है। इस ऊँचे मैदान के ऊपर वहुत-सी शिखर पक्तियाँ दिखायी देती है। उन शिखरो मे वहुत से झरने है और उन झरनो से लगातार पानी गिरता रहता है। झरनो के जल से पश्चिमी मारवाड की भूमि को उपजाऊ वनाने मे वहाँ के किसानो को वडी सहायता मिलती है। इन झरनो का जल जो पूर्व की तरफ जाता है, वह मेवाड के विशाल तालावो को भरा करता है।

पहले इस झरनो के जल की व्यवस्था कुछ और थी। कङ्करोली नामक सरोवर का निर्माण ऐसा किया गया था, जिससे इन सभी झरनो का जल मेवाड की तरफ वहा करता था और मरु-भूमि की तरफ वहुत कम पानी जाता था। लेकिन इन दिनो की हालत कुछ दूसरी है। पश्चिम की तरफ अगर इन झरनो का जल न जाता तो मारवाड की वहुत-सी भूमि उपजाऊ न वन सकती थी।

इन दिनो मे दौलत सिंह कलममीर का शासक है। हम लोगो के आने का समाचार पाकर उसने अपनी वडी-वडी तैयारियो के साथ मुलाकात करने का निश्चित किया और अपने वहुत से आदमियो को लेकर हम लोगो से मुलाकात करने के लिए रवाना हुआ। उसके साथ उसकी लाल पताका थी। राजा दौलत सिंह घोडे पर सवार था। करीव आने पर वह घोडे से उतर पडा। मैं भी अपने घोडे से उतर कर जमीन पर आ गया। दोनो आगे वढे और वडे स्नेह के साथ हम दोनो ने एक दूसरे का आलिंगन किया।

दौलत सिंह से भेट करके मै अपने घोडे पर वैठा और उसी समय वह भी अपने घोडे पर सवार हुआ। साथ-साथ चलते हुए हम दोनो वर्तमान परिस्थितियो की वाते करने लगे। दौलत सिंह राणा भीमसिंह का एक निकटवर्ती सम्वन्धी है। महाराज की उसकी उपाधि है और राणा के दरवार मे उसे अच्छा सम्मान प्राप्त है। राणा का अत्यन्त निकटर्वी सम्वन्धी होने के कारण वह शिवधन सिंह का उत्तराधिकारी माना गया।

महाराज दौलत सिंह मे अनेक प्रकार के गुण थे। उसका स्वभाव सरल और सव को प्रसन्न करने वाला था। वह चरित्रवान था और सभी लोग उसे ईमानदार समझते थे। वह वहुत कम वाते करता था। उसके स्वभाव मे जरा भी अहँकार न था। अपने इन गुणो के कारण उसने कमलमीर का शासन प्राप्त किया था।

सन् १८१८ ईसवी के फरवरी महीने मे मैंने कमलमीर के दुर्ग मे रहने वाली सेना का वकाया वेतन अदा करके उस दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। उस सेना के सैनिको की भावना को देखकर मैंने कितनी ही वाते उस समय सोच डाली। अगर उन दिनो मे उस सेना के सैनिको का वेतन वाकी न होता और मैने उनका वकाया वेतन अदा न कर दिया होता तो कमलमीर के दुर्ग पर हम लोगो के अधिकार करने का कोई मौका ही न पैदा होता। उन सैनिको की इस दशा को देखकर मुझे अफसोस हुआ और उसके साथ आश्चर्य भी। एक सैनिक का उद्देश्य रुपये तक ही सीमित नही होता। किसी भी देश मे उसके सैनिको का महत्व इसलिए सवसे अधिक होता है कि वे लोग अपने देश की आजादी की रक्षा के लिए वलिदान होने के लिए हमेशा तैयार होते है। वेतन लेकर देश

जालिम सिह कवियों और जादूगरो पर विश्वास नही करता था। झूठी प्रशंसा पर वह जला करता था। इस प्रकार की अपनी प्रशंसा सुनकर वह कभी प्रसन्न नही ह कवियो की झूठी प्रशंसाओं से उसे एक प्रकार की चिढ थी। उसका कहना था कि इन अपनी इन आदतो के द्वारा न जाने कितने राजवशो का क्षय किया है। अपनी इन आदत वह कोटा से लेकर बाहर तक प्रसिद्ध था और इसीलिए भाट और कवि उसके पास कभी किसी अनजान के आ जाने पर उसको निराश होकर लौटना पड़ता था।

जालिम सिह बहुत अधिक परिश्रमी था। पच्चीस वर्ष मे उसके परिश्रम को देख आश्चर्य करते थे। वह आलसी न था और जो आलस करते थे, उनसे वह अप्रसन्न क वह कहा करता था कि शासक को विलासी और आलसी न होना चाहिए। उनका विश्वा अनाज की घुन की तरह विलासिता मनुष्य का क्षय करती है इसीलिए वह स्वय विला विरोधी था और दूसरो को विलासिता मे नही देखना चाहता था। प्रत्येक समय वह किया करता था और दूसरो को भी ऐसा करने के लिए वह सदा शिक्षा देता था। वह था कि एक आलसी और विलासी राजपूत अपने कर्त्तव्य और धर्म से गिर जाता है। लोगो को शिक्षा देते हुए कहा करता था कि राज सिहासन पर बैठकर नही बल्कि कर राज्य की रक्षा करता है।

जालिम सिह घोड़े पर बैठकर शिकार खेलने के लिए जाया करता था। जब उ विलकुल निर्बल हो गयी थी और अपनी एक आँख को वह पहले ही खो चुका था, उस पालकी पर बैठकर शिकार खेलने के लिए जाता था और उसके पीछे उस समय चलते थे। शिकार पर जाने के समय अपने सामन्तो के साथ वह संकोच छोड़कर बाते f था। कर्मचारियो के भीतरी भावो को जानने के लिए मौका मिल जाने पर वह छिप बाते सुना करता था। ऐसे अवसरो पर उनकी कमजोरियो को जानकर वह उनको अच सिखाने का काम करता था।

जङ्गल मे शिकार खेलने के बाद वह सब के साथ घने पेड़ो के नीचे बैठता था सकोच के सैनिको तथा कर्मचारियो के साथ शिकार खेलते तथा उस समय की घट विवाद करने मे वह एक अपूर्व सुख अनुभव करता था। जालिम सिह ऐसे अवसरो की बा सब को बाते करने का मौका देता था। उन अवसरो पर कभी-कभी हँसी मजाक की बात थी, उस समय वह भी खूब हँसता था। उसके इन व्यवहारो से सैनिक और कर्मचारी व होते थे। वह जब शिकार खेलने के लिए जाता था, तो ऊँटो पर आटा, घी, शक्कर, और खाने पीने की बहुत-सी चीजे साथ जाया करती थी। वह सब के साथ जङ्गल पहुँच शिकार खेलने चला जाता था उस समय आयी हुई सामग्री से भोजन बनाने का कार्य अ जाता था, और शिकार खेलकर लौटने के बाद सभी लोग बैठकर भोजन करते थे। इ जालिम सिह जगल मे बैठकर बाते करता जो उस समय राज्य के अनेक कार्यो के वह लोगो के विचारो को जानने की कोशिश करता। उस समय खेती और दूसरे ० सम्बन्ध में उपस्थित लोगो के साथ बाते किया करता था।

जालिम सिह शासन करने मे बहुत कठोर था और अपराधियो को वह कभी करता था। उसका विश्वास था कि बिना कठोर व्यवहारो के शासन की व्यवस्था कभी रह सकती। इसलिए वह इस विषय मे कभी शिथिलता से काम नही लेता था। राज्य

जो विभिन्नता है, उसी का अनुकरण करके इन दोनो प्रकार के मन्दिरो के निर्माण मे भिन्नता रखी गयी ।

यह जैन मन्दिर अपने पुरानेपन के साथ सादगी मे भी एक विशेषता रहता है । उसकी पुरानी इमारत को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह मन्दिर ईसा से दो सौ वर्ष पहले बना होगा । हिन्दुओ के जितने भी मन्दिर देखने मे आते है, इस मन्दिर की सभी बाते उनसे भिन्न मिलती है । हिन्दू मन्दिरो के स्तम्भ मोटे होते है । उनके प्रतिकूल इस मन्दिर के स्तम्भ पतले है और इनकी बनावट मे भी बडी भिन्नता है, इसी प्रकार के अन्तर अन्य बातो मे भी पाये जाते है । बहुत सम्भव है कि यह मन्दिर चन्द्रगुप्त के वशज राजा सम्प्रीति के समय मे बनवाया गया हो ।

राजा सम्प्रीति चन्द्रगुप्त के वशज मे उससे चार पीढियो के बाद पैदा हुआ था । वह जैन धर्मावलम्बी था । राजा सम्प्रीति और यूनानी सिल्यूकस मे मित्रता थी । सिल्यूकस बैकट्रिया का शासक था । मेगास्थनीज के लेखो से भी पता चलता है कि इन दोनो मे गहरी मित्रता थी । उन्ही लेखो से यह भी जाहिर होता है कि जैन धर्मावलम्बी राजा की एक लडकी का विवाह सिल्यूकस के साथ हुआ था । उस विवाह मे बहुत-से हाथी और कीमती पदार्थ सिल्यूकस को दिये गये थे । और सिल्यूकस ने अपनी सेना का एक दल चन्द्रगुप्त के पास उसकी अधीनता मे रहने और काम करने के लिए भेजा था ।*

ऊपर जिस जैन मन्दिर का उल्लेख किया गया है, उसको देखकर मालूम होता है कि यूनान के कारीगरो ने उस मन्दिर को बनाया है । यह बात सही नही हो सकती तो यह निश्चित है कि जिन भारतीय कारीगरो ने उस मन्दिर का निर्माण किया था, वे यूनान की कारीगरी से प्रभावित थे और उन्होने उसी के आधार पर इस मन्दिर का निर्माण किया था ।

जैनियो का यह मन्दिर पर्वत के ऊपर बना हुआ है । कदाचित् इस पर्वत की मजबूती ने बहुत समय तक इस मन्दिर को मजबूत रखने का काम किया है । अगर ऐसा न होता तो यह मन्दिर न जाने कब गिरकर मिट गया होता । लेकिन ऐसा नही है । पुराना और जर्जरित होने के बाद भी जैनियो का यह मन्दिर, मन्दिर के रूप मे अब तक बना हुआ है ।

इस मन्दिर के पास जैनियो का एक दूसरा मन्दिर भी है । वह दूसरी तरह से बना हुआ है । यह दूसरा मन्दिर तीन खण्ड का है और उसके प्रत्येक खण्ड मे बहुत-से स्तम्भ बने हुए है । वे स्तम्भ देखने मे अब भी बहुत सुन्दर मालूम होते है । तीन खण्ड के होने पर भी यह दूसरा मन्दिर इस प्रकार बना हुआ है उसके प्रत्येक खण्ड मे सूर्य का प्रकाश पूरी तौर पर पहुँचता है जिससे

---

*टॉड साहब ने राजा सम्प्रीति और सिल्यूकस के सम्बन्ध मे जो कुछ लिखा है वह सही नही जान पडता । दूसरे इतिहासकारो के अनुसार चन्द्रगुप्त ने अपनी लडकी का विवाह सिल्यूकस के साथ कर दिया था । टॉड साहब ने लिखा है कि राजा सम्प्रीति चन्द्रगुप्त के वश मे उसकी चौथी पीढी मे उत्पन्न हुआ था । यह समय और भी अधिक आश्चर्य मे डालता है । राजा सम्प्रीति और चन्द्रगुप्त का एक समय नही हो सकता । फिर टॉड साहब के लिखने मे इस प्रकार की भूल कैसे हुई यह नही कहा जा सकता । भारतवर्ष के दूसरे इतिहासकारो और टॉड साहब मे यहाँ पर अन्तर है । अन्य इतिहासकारो ने अपने ग्रन्थो मे इस बात को स्पष्ट लिखा है कि सिल्यूकस के साथ मैत्री हो जाने पर चन्द्रगुप्त ने अपनी लडकी का विवाह उसके साथ कर दिया था । इस स्थल पर दूसरे इतिहासकार सही जान पडते है । —अनुवादक

ऐतिहासिक यात्रा
अठत्तरवाँ परिच्छेद

मारवाड़ की तरफ

रोमान्चकारी उदयपुर राज्य—ऐतिहासिक खोज का कार्य—सामन्तो के साथ भेंट—परामर्श—सामन्तों के द्वारा सम्मान और सुविधायें—मेवाड से मारवाड जाने की तैयारी राज्य का बरसाती जीवन—जल का कष्ट—कुओ के जल का सुधार – प्रातःकाल महल मे वाले नगाडे का अभिप्राय—राजा की ओर से मार्ग मे सहायक सेना—तेरह मील के बाद मु बीराश नदी का दृश्य—राणा की परिस्थितियाँ और उसका अनुरोध—मारवाड के सैकडों ऊँटो का एक साथ बोलना—आठ वर्ष के हाथी का एक बच्चा—वृक्षो और जल से भ रास्ता—कठिनाइयों के साथ प्रकृति का सौन्दर्य—देवपुर ग्राम—राणा का भानैज जालिम ि जालिम सिंह और यती ज्ञान चन्द—पुलानो का दृश्य—राजस्थान मे ओसी जाति के लोग—चन्द और रामसिंह—माणिकचन्द के षडयन्त्र—नाथद्वारा का शिखर—चलने के मार्ग मे दलदल—मन्दिर के अधिकारी मे चालीस हजार दूध देने वाली गाये –सुराट का वैश्य —का प्रधान पुजारी—फतेहचन्द नामक हाथी की नाराजगी—बूनाश नदी की देवी —सन्यासी अँगरेजों की प्रशंसा—पहाडी स्थानो से प्रकृति की शोभा—पहाडो के ऊपर खेती--- राणा वंशज—सती मन्दिर—राजा दौलत सिंह से भेंट—कमलमीर के दुर्ग के सैनिकों का वेतन---की संकीर्ण मनोवृत्ति—जैन मन्दिर की विशेषता—स्वाभिमानिनी ताराबाई—विदनोर का उद्ध पृथ्वीराज की बहन—संकटपूर्ण रास्ता—स्मारको के दर्शन।

११ अक्टूबर सन् १८१६ ईसवी—भारतवर्ष के अत्यन्त रोमाञ्चकारी उदयपुर-राज्य क में जब मैंने पदार्पण किया था, उस समय से लगभग दो वर्ष अब तक बीत चुके है। हम लो कोई भी आदमी अब तक इसकी छै मील की सीमा के बाहर नही जा सका था। इस राज्य के स्थान, मार्ग, पर्वत, शिखर, दुर्ग, देवालय, धर्मशाला, मीनार और उसके वृक्षो के साथ परि गया है। मैंने उन सबको सम्मान के साथ देखा है और राज्य के प्रत्येक मन्दिर, शिवाला और शाला को देखने मे मैंने एक अद्भुत सुख को अनुभव किया है। यहाँ के समस्त टूटे-फूटे स्थान मुकामो का मैंने अपने नेत्रो से भली-भाँति अवलोकन किया है। ऐसा करने मे मुझे अत्यधि मिला है।

इन सभी स्थानो को देख-देखकर उसकी ऐतिहासिक खोज की है। राज्य के भेट की है और उनके विषयो पर मैंने उनसे बाते की है। यही नहीं; सामन्तो के क और उनके मन्त्रियो से भी मैंने भेट करके उनसे भली प्रकार बाते की है। मैंने उनके सब और व्यवहारो को समझने की कोशिश की है। राज्य के प्रत्येक स्थान पर सम्मान के सुविधाये प्राप्त हुई हैं। मुझको किसी समय अभावो का अनुभव नही हुआ। जहाँ जैसी

करके सुरतान को वहाँ से निकाल दिया था । इसलिये राव सुरतान मेवाड की सीमा पर आरावली पर्वत के नीचे बसे हुये बिदनौर मे आकर रहने लगा था ।

राव सुरतान की लडकी ताराबाई बहुत समझदार थी । अपने पिता के भाग्य के इस पतन पर बहुत दुखी रहने लगी । उसने घोडे पर चढने और बाण चलाने का अभ्यास आरम्भ कर दिया । अफगानी सेना का मुकाबला करने के लिये जब सुरतान की सेना युद्ध के क्षेत्र मे आगे बढी, ताराबाई अपने घोडे पर बैठी हुई और अपने हाथो मे धनुः-बाण लिये वह सेना के साथ-साथ चल रही थी । लेकिन उस युद्ध मे सुरतान की पराजय हुई ।

इससे कुछ दिनो के बाद राणा रायमल के लडके जयमल ने ताराबाई की बहुत प्रशसा सुना । उसने ताराबाई के साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया । उस प्रस्ताव को सुनकर ताराबाई ने गम्भीरता के साथ उत्तर दिया जो बिदनौर का उद्धार करेगा मैं केवल उसके साथ विवाह करूँगी ।

जयमल ने तारा की इस प्रतिज्ञा को सुना । उसने बिदनौर का उद्धार करना और अफगानियो को वहाँ से निकाल देना स्वीकार कर लिया । लेकिन बिदनौर से अफगानियो को निकालने के पहले ही जयमल ने ताराबाई के साथ अपना व्यवहार आरम्भ कर दिया । उसने निर्लज्जता पूर्वक ऐसे व्यवहार आरम्भ किये जो ताराबाई को और उसके पिता राव सुरतान को किसी प्रकार पसन्द नही आये । इसके फलस्वरूप जयमल राव सुरतान के हाथो से मारा गया ।

जयमल का भाई पृथ्वीराज निर्वासित अवस्था मे उन दिनो मारवाड मे था और उसने गोदवारा का उद्धार करके अपने शौर्य का परिचय दिया था । इसलिये उसका पिता अब फिर उसके साथ स्नेह करने लगा था । पृथ्वीराज ने राव सुरतान के द्वारा जयमल के मारे जाने का समाचार सुना । उसने भाई जयमल की प्रतिज्ञा को पूरा करने का निश्चय किया ।

भाटो और दूसरे कवियो के द्वारा पृथ्वीराज की वीरता की ख्याति इन दिनो मे दूर तक फैली हुई थी । राव सुरतान की लडकी ताराबाई ने भी उसकी वीरता की प्रशसा सुनी थी उसने अनेक कवियो के द्वारा जाना था कि पृथ्वीराज युद्ध करने मे अत्यन्त कुशल और शूरवीर है । उसने यह भी सुना था कि पृथ्वीराज घोडे का एक अच्छा सवार है और एक अच्छे शूरवीर क्षत्रिय के गुण उसमे पाये जाते है ।

ताराबाई ने इस प्रकार पृथ्वीराज की प्रशसा सुन कर अपने पिता से बातचीत की और उसने उससे कहा । अगर पृथ्वीराज अफगानियो को भगा कर बिदनौर का उद्धार कर सकता है तो मैं उसके साथ विवाह कर सकती हूँ ।

जयमल अपनी बात को पूरा नही कर सका, इस बात को समझ कर पृथ्वीराज ने अफगानो से बिदनोर के उद्धार की प्रतिज्ञा की थी । इस कार्य के लिए उसने पाँच सौ अच्छे सैनिक सवारो का चुनाव किया और अफगान के विरुद्ध बिदनोर पर आक्रमण करने के लिए उसने तैयारी कर ली । ऐसे अवसर पर तारा बाई ने साथ चलने और युद्ध मे शामिल होने के लिए अनुरोध किया । पृथ्वीराज ने उसके इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया ।

सुन्दर दृश्य दिखायी देते है । यहाँ पर किसी समय बूनाश नदी के समीप राजकमल और कुछ दूसरे प्रासाद बने हुये थे । उनके टूटे हुये अंशो को देखकर उनकी रमणीकता का अनुभव होता है ।

—अनुवादक

की सेना के साथ सीमा तक पहुँचना हम लोगो के लिए जरूरी था। इसलिए राज्य
साथ हम लोग वहाँ से रवाना हुये और पहाडी रास्ते को हम लोगो ने धीरे-धीरे पार कि
तक पहुँचाकर राज्य की सेना वापस जाने को थी। इसलिये हमने राणा और सामन्तो
देकर उसको वहाँ से वापस किया।

आठ बजने से पहले हम लोग तेरह मील का रास्ता चलकर उस स्थान पर
जहाँ पर रुकने और विश्राम करने के लिये हम लोगो ने पहले से ही निश्चित क
लिया था। इसलिए वहाँ पहुँचकर हम लोगो ने मुकाम किया। वह स्थान मैडता और
बीच का था। उसके रास्ते मे दोनो तरफ बहुत अच्छे वृक्ष लगे हुये हैं। उनको देखकर
की रमणीकता का सहज ही अनुमान होता है। यहाँ से छित्तौर की तरफ जाती
दिखायी देती है, वह उस स्थान की सतह से नीची है। स्थान के तीन मील उत्तर की
स्थान है जहाँ पर राणा और उसके सामन्त लोग शिकार खेलने के लिये जाया करते है।
में बहुत हिरण और बाघ पाये जाते है।

उस स्थान के दक्षिण मे और एक मील उत्तर की तरफ बारीश नदी बहती है
मे बहुत सी मछलियाँ तैरती हुई दिखाई देती हैं। उनके कारण नदी का जल देखने मे
मालूम होता है। वहाँ से पश्चिम की तरफ तीन मील की दूरी पर विशाल उदय साग
कारणो से राजधानी से बाहर राणा ने यह स्थान तैयार करवाया है। यह बात जरूर
स्थान स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी मालूम होता है। लेकिन उसके तैयार कराने मे
ही कारण नही है। राज महल से इतनी दूरी पर इस स्थान के निर्माण का कुछ विशेष
है। इस स्थान को देखकर मेरे मन मे अनेक प्रकार की भावनाये पैदा हुयी। मुझे यह
हुआ कि राजधानी से इतनी दूरी पर इस स्थान को तैयार करा के राणा ने कम्पनी के
को ठहरने के लिये व्यवस्था की है। उसकी इस व्यवस्था मे एक राजनीतिक दूरदर्शि
सन्देह नही।

पहले पहल जब मैंने राणा से मुलाकात की तो मैने उसको बहुत परेशान हालत
उसको देखकर और उसकी परिस्थितियों को अनुभव करके मैने उसके साथ अपनी हमदर्दी
उनसे उसको बहुत शान्ति मिली। उसने सहायता करने के लिए मुझसे अनुरोध किया।
रोध को सुनकर मैंने सोचा कि यह भी अच्छा रहेगा और सहायता करने के नाम पर
से दखल देने का मुझे अधिकार रहेगा। सबसे बडी बात यह होगी कि ऐसा करने से राज
व्यक्ति को सन्देह करने का मौका न मिलेगा।

यही हुआ भी। इस दूरवर्ती स्थान पर हम लोगो को मुकाम मिलने के कारण
भी अनेक प्रकार की सुविधाये मिली और उसके शासन को परिस्थितियो से हम लोगो
दूर रहा। इस स्वास्थ्य पूर्ण स्थान पर रहकर हम लोगो ने सुख का अनुभव किया। क
कारण यह स्थान रमणीक मालूम हो रहा था। यहाँ का जलवायु बहुत अच्छा था। ऊँटे
लाद कर हमारा सामान यहाँ पर पहुँचाया गया और हम लोगो ने वहाँ की सभी चीजो
अनुकूल बनाया।

१३ अक्टूबर—उस स्थान को छोडकर जब हम लोग रवाना हुए, उस समय सवेरा
प्रात:काल मे मारवाड के सैकडो जंगली ऊँटो के चिल्लाने की आवाज सुनायी दे रही थी।
कोई दूसरी आवाज हम लोगो के कानो मे नही आती थी। लेकिन बाद मे हाथियो
आवाजे भी सुनाई पडने लगी। उन हाथियो मे उनके बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे थे

रहा करता था। वहनोई के यहाँ से लौटकर और कमलमीर के पास पहुँचने पर पृथ्वीराज ने पानी पीने के समय वहनोई के दिये हुए दो लड्डू खाये। उसके बाद आगे चलते ही उसकी हालत खराव होने लगी। वहाँ से पृथ्वीराज ने कमलमीर मे सन्देश भेजकर अतिम भेट के लिए तारावाई को बुलाया। लेकिन लड्डुओ मे मिला हुआ विष इतना तेज था कि तारावाई के आने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी। तारावाई ने आकर चिता वनवाई और पति के मृत शरीर को लेकर वह चिता मे जल कर राख हो गयी।

२० अक्टूबर—आज प्रातःकाल हम लोग यात्रा नही कर सके। आज हमे मारवाड की तरफ यात्रा करनी थी। जिस घाटी से होकर हमे जाना था लोगो का कहना था कि वह घाटी वडी भयानक है। लेकिन उसके साथ ही लोगो ने यह भी वताया था कि हाथी और घोडे अकुश और चावुक के भय से चले जाते है। इसलिए हम लोगो ने उसी घाटी के रास्ते से जाना निश्चय कर लिया।

दोपहर तक खाना-पीना खतम करके हम लोगो ने अपनी यात्रा शुरु कर दी। रवाना होने के पहले जव हम लोगो का सामान वाँधा जा रहा था, सभी लोगो मे आगे के रास्ते के सम्वन्ध मे ही वाते होती रही। जव हम लोग रवाना हुए, उस समय दोपहर के तीन वज चुके थे। सव से पहले हमारे साथ के वे लोग रवाना हुए, जो मार्ग के देखने-समझने का काम करते थे।

हम सव लोगो ने पहले से ही यह निश्चय कर लिया था कि रात हम लोग वहाँ पर व्यतीत करेगे, जहाँ पर मेवाड और मारवाड की सीमा मिलती है। उस स्थान के सम्वन्ध मे हम पहले से मालूम कर चुके थे कि वह विस्तृत और अधिक चोडा है। रास्ता वहुत सकटपूर्ण होने पर भी हम लोग अपने निश्चय के अनुसार अभीष्ट स्थान पर समय पर पहुँच जाते, लेकिन रास्ते की खरावी के कारण वीच मे ही हम लोगो को वहुत समय लग गया।

यात्रा आरम्भ करने के वाद एक मील तक हमे इतना भी चौडा रास्ता न मिल सका, जिससे सामान से लदा हुआ हाथी आसानी से जा सकता। उस मार्ग के दोनो तरफ ऊँची-नीची भूमि थी और स्थान-स्थान पर जल के सोते वह रहे थे। वूदी के राजा ने हमको चैतन्यमणि नामक एक घोडा दिया था। यात्रा के पहले ही मील मे हमे मालूम हुआ कि पैर फिसल जाने के कारण चैतन्यमणि घोडा लुढक कर नीचे गिर गया है। उसकी पीठ पर कसी हुई जीन तग टूट गया था। उससे आगे कुछ फासिले पर रसोइया दिखायी पडा। वह अपनी परेशानी की हालत मे गिरी हुई चीजो को एकत्रित करने मे लगा हुआ था और उसका ऊँट अपनी पीठ पर सामान लादने नही देता था।

यात्रा का अव हम एक मील किसी प्रकार पार कर सके और धीरे-धीरे चलकर दूसरे मील मे हम लोग कमलमीर के दुर्ग के नीचे पहुँच गये। यहाँ पर रास्ता वहुत सीधा हो गया था। यहाँ की चट्टान पर जो वुर्ज वना था, वह जमीन की सतह से पाँच सौ फुट ऊँचा था। इस स्थान का दृश्य अत्यन्त रमणीक था। उसके चारो तरफ ऊँचे नीचे शिखर दिखाई देते थे। पश्चिम की तरफ जाकर अस्त होने वाली सूर्य की किरणे हमारे मार्ग मे पडकर थोडा वहुत उजाला पैदा कर देती थी। मार्ग मे वृक्षो पर उन किरणो का जो प्रकाश पड रहा था, वह वडा सुहावना मालूम होता था। उस मार्ग मे अनेक प्रकार के सकटो का सामना करना पड रहा था। लेकिन उसकी वहुत-सी वाते मेरे अतर मे एक प्रकार का अनोखा उत्साह पैदा कर रही थी। हम लोग जव यात्रा कर रहे थे। उस समय शीतल वायु वडी तेजी के साथ चल रही थी।

शस्त्र विद्या के समान शास्त्रों के अध्ययन में भी जो योग्यता प्राप्त की थी, उसका श्रेय को ही था। जालिम सिंह ने मेवाड की राजकुमारी से जन्म लिया था और वह रा विजय सिंह को व्याही गयी थी। दुर्भाग्य से राजा विजय सिंह के परिवार मे एक भया पैदा हो गया था और उससे असतुष्ट होकर जालिम सिंह अपने मामा के यहाँ लगा था।

राणा ने जालिम सिंह को वडे सम्मान के साथ अपने यहाँ रखा और उसके गुज सम्पत्ति तथा जागीर दी गयी थी। हमारे गुरु यती ज्ञान चन्द्र ने न्याय शास्त्र, विज्ञान, ज अपने देश के इतिहास का अच्छा अध्ययन किया था, उसे दूसरे कवियो की वहुत-सी तायें जवानी याद थी और वह स्वय कवि था। जयदेव की वहुत-सी कवितायें, उस रखी थी। उनको वह प्राय. सुनाया करता था : उसकी इस योग्यता और काव्य-प्रियत वहुत-से कवि प्राय उसके पास आया करते थे और कई-कई दिनो तक वहाँ ठहरा क

शिक्षा और अध्ययन के सम्बन्ध मे जालिम सिंह और यती ज्ञानचन्द का एक घ रहा। उस विषय मे बातचीत करते हुए ज्ञानचन्द ने कभी अपनी प्रशसा नही की। व आपको एक साधारण स्थान देता रहः। उसका यह तरीका उसके विशाल आत्मा का है। गुरु ज्ञान चन्द मे इस प्रकार के अनेक गुण थे, जिनसे वह सभी प्रकार की प्रशसा था। उसने मेरे इस इतिहास के निर्माण कार्य मे जिस लगन के साथ सहायता की थी, नहीं सकता।

हम लोग जिस रास्ते से चल रहे थे, वह कीचड से भरा हुआ था और च प्रकार के कष्ट पैदा करता था। उस मार्ग मे लगातार चार घन्टे तक चलकर हम लो अगले शिखर पर पहुँचे। देवपुर की तरह पुलानो का भी विध्वस हो चुका था। उस नष्ट हो जाने के कारण उसके निवासी उस नगर के उस भाग मे रहते है, जो किसी प्र योग्य है और उसके रहने वालो ने अपने स्थानो को रहने के योग्य वना लिया था।

पुलानो पहले एक सम्पन्न और समृद्ध नगर था, इसका सहज ही अनुमान स्थानो और मकानो के खण्डहरो को देखकर किया जा सकता। देवपुर बुलाना—दोन राणा के अधिकार मे थे, जालिम सिंह की मृत्यु के वाद राणा ने इन दोनो स्थानो कृष्ण के मन्दिर मे लगा दिये थे, राजमन्त्री के दाहिने हाथ रामसिह मेहता निन्दी के देव चन्द और नरसिहगढ के पदच्युत राजा को यहाँ पर मैंने देखा। वह अब उदयपुर मे रह रामसिह वैश्य जाति का एक आदर्श पुरुष है। यह वात जरूर है कि उसने मेवाड वाहर कभी जाने का अवसर नही पाया, फिर भी उसके साथ वाते करके यह स्वीकार कि उसकी तरह का अच्छा आदमी जल्दी कही मिलेगा नही, वह देखने मे सुन्दर है, उ लम्वा है और शरीर के सभी अग सुगठित तथा सुव्यवस्थित है। उसका रग गोरा है। घुँघराले है, उसके मुख पर गलमुच्छे वडी अच्छी मालूम होती है। वह देखने मे सुन्द मालूम होता है अपने अच्छे व्यवहारो के कारण उसने सभी के हृदयो पर अधिकार क रामसिह सदा साफ सुथरे और अच्छे वस्त्र पहनता है। उसने ओसी जाति मे जन्म ि जैनमत का मानने वाला है।

राजस्थान मे ओसी जाति के लोग लगभग एक लाख की संख्या मे रहते है। राजपूतो मे अग्नि वंश मे मानी जाती है। इस जाति के लोगो ने वहुत पहले हिन्दू

दिखायी पडा। हम लोग जहाँ पर पहुँचे थे, वहाँ पर ठहर गये और अनेक साथ के आदमियो से परामर्श करने लगे। जो सकट हम लोगो को दिखायी पडा, उसका सही अनुमान हम लोगो को न हो सका। इस दशा मे हम लोगो ने समझा कि उस वरगद के नीचे लुटेरो का एक दल है, जो अपने घोडो पर है। अगर उस लुटुरे दल ने आक्रमण किया तो हम लोगो को उमका मुकाविला करना होगा। इसके लिए हम लोग तुरन्त सतर्क और सावधान हो गये।

हम सव लोग अपने स्थान पर खडे थे। अन्धकार के कारण मीलो की दूरी पर मार्ग सकट पूर्ण दिखायी दे रहा था। रास्ते को छोडकर हम लोग दाहिने और बाये भी नही जा सकते थे। क्योकि जगल के हिंसक पशुओ का भय था। साथ ही यह भी भय था लुटेरो का कोई दूसरा दल कही हम लोगो पर एकाएक हमला न कर दे। इस प्रकार के असमजस मे हम लोग अपने स्थान पर खडे थे और इस बात का निर्णय न कर सके कि इस भयानक समय मे हम लोगो को क्या करना चाहिए।

इसी समय घोडो के उन सवारो के दल की तरफ हमने फिर एक बार देखा। जहाँ पर वह दल मौजूद था, एक अलाव जल रहा था और अलाव की आग को घेरे हुये उस दल के साथ लोग दिखायी दे रहे थे। वे सव सशस्त्र सैनिक और घोडो के सवार थे और उनकी सख्या लगभग तीस के मालूम हो रही थी। दूर से हम लोगो को यह भी अनुमान हुआ कि वे लो। आपस मे वाते कर रहे है। लेकिन उनकी वातचीत इतनी धीरे हो रही थी कि सुनी नही जा सकती थी। लगातार उनकी तरफ देखने से यह भी मालूम हुआ कि वे लोग हुक्का पी रहे हैं और जव एक आदमी हुक्का पी लेता है तो वह हुक्के की नली को दूसरे आदमी की तरफ कर देता है।

उन शस्त्रधारी आदमियो को देखकर अनुमान होता था कि वे सव मरुभूमि के रहने वाले हैं। क्योकि उनके सिर पर पच रगी पगडी थी और उनके सिर के वाल घुँघराले थे। अलाव की जलती हुई आग मे यह सब दिखाई दे रहा था। उन लोगो के पास एक छोटा-सा चवूतरा भी दिखायी दे रहा था। शायद किसी अच्छे आदमी के स्मारक स्वरूप यह चवूतरा वनवाया गया है, ऐसा मालूम होता है। जो कुछ हो यह तो मालूम हो गया है कि वह चवूतरा वैठने के काम मे आ सकता है।

मैंने लगातार शस्त्रधारी उस दल की तरफ देखा। उस दल के लोगो का एक सरदार भी उनके साथ था। उसके सिर की पगडी उसके सरदार होने की दूर से परिचय दे रही थी। क्योकि दूसरो की पगडी से उसके पगडी कुछ विशेषता रखती थी और ऐसा मालूम होता था कि उसकी पगडी मे सोने की एक जजीर लटक रही है। वह सरदार हिरन के चमडे की वडी पहने दिखायी दे रहा था।

उस दल की इन सभी वातो को देखने,समझने और अनुमान लगाने के वाद मैं आगे की तरफ वढा और कुछ निकट जाकर मैंने उस सरदार को राम-राम किया। इसके साथ ही मैंने गनोहा सरदार का कुशल समाचार उससे पूछा। मैं इस वात को जानता था कि गनोहा का सरदार उन लोगो में वहुत प्रसिद्ध है और सभी लोग उसका सम्मान करते हे।

मेरे मुख से राम-राम सुनकर और मेरी वातो से मेरी ओर आकर्षित होकर उन लोगो ने मेरी ओर देखा। पचास वर्ष पहले गोदवारा मेवाड-राज्य मे शामिल था। लेकिन उसके वाद वह उस राज्य मे नही रहा। वह मेवाड और मारवाड राज्यो का सीमा समझा जाता था। और वहाँ पर प्राय. भयानक दुर्घटनाये हुआ करती थी। उन लोगो के पास पहुँचने पर मुझे अनेक वाते मालूम

दायित्व के रुपये न तो मैं वसूल कर सका और न मैं राज्य को दे सका। मेरे ऊपर र रुपये बाकी है, मैं उनको अदा करूँगा।"

माणिक चन्द अपने षडयन्त्रो के कारण बदनाम हो चुका था। इसलिये उसकी विश्वास नही हो सका। वह अपने वादे को पूरा कर भी न सका और इस अवस्था मे य मे जाकर रहने लगा। वहाँ पर भी उसे शान्ति न मिली। इसलिये अपमानित अवस्था कर उसने आत्महत्या कर ली।

नरसिंह गढ का राजा निर्वासित अवस्था मे यहाँ पर रहा करता है। प्रमार उच्च वश मे वह पैदा हुआ है। मध्य भारत मे रहते हुए उसके वशवालो की पन्द्रह प चुकी है। उसके राज्य का नाम उमत वाडा और राजधानी का नाम नरसिंह गढ है। लु रियो और मराठा लोगो ने उसके राज्य के प्रत्येक ग्राम मे अधिकार कर लिया था और स्वरूप उसकी राजधानी नरसिंह गढ मे जब होलकर का झण्डा फहराने लगा तो उसका कर की अधीनता मे रहने के लिये मजबूर हुआ। इसके सिवा उस समय कोई दूस न था।

उन दिनो मे होलकर और सीधियाँ की चारो तरफ विजय हो रही थी और जिन आक्रमण होते थे, उनको अधीनता स्वीकार करके कर देना मन्जूर करना पडता था। राजा ने आरम्भ मे अस्सी हजार रुपये वार्षिक कर मे देना स्वीकार किया था। इतना करने के बाद भी होलकर की सेना के अत्याचार उनके राज्य मे बरावर होते रहे और उसकी प्रजा का विनाश बन्द न हुआ।

अनेक वर्षों के बाद सन् १८२१ ईसवी मे जब उस राज्य मे शान्ति कायम समय का राजा लगातार अफीम सेवन करने के कारण निर्वल और असमर्थ हो गया था वह अपने राज्य की दशा सुधारने मे समर्थ न हो सका। उसका लडका चैनीसिंह अपने तरह बुरी आदतो का शिकार नहीं हुआ था। इसलिए अँगरेजी सरकार की व्यवस्था चैनीसिंह ने शासन करना आरम्भ कर दिया।

१४ अक्टूबर—प्रात.काल होते ही हम लोगो की यात्रा आरम्भ हुई और कुछ ही जाने पर मालूम हुआ कि आगे का रास्ता बहुत खराब और दलदलमय है। उस रास्ते लदे हुए ऊँटो के ले जाने मे बडी मुश्किल पैदा हो गयी। यहाँ की चारो तरफ की भू नीची और पथरीली है। बडी कठिनाई के साथ लगभग चार सौ फुट ऊँचे नाथद्वारा के पार किया। इसके चारो तरफ लाल पत्थरो का शिखर मालूम होता है। नाथद्वारा से की दूरी पर पूर्व की तरफ बराबर की भूमि से यह बना हुआ है। इस स्थान के दोनो छोटे-छोटे तालाब है और उनसे दो नहरे निकलकर नगर की ओर बहती है। नहरो के द वृक्षो की पक्तियाँ है। इन वृक्षो के कारण उस रास्ते मे चलने वालो को बहुत आराम मिल

हम लोगो का मुकाम नाथद्वारा से नीचे बहने वाली बुनाग नदी की दूसरी तर और वहाँ से जब हम लोग नगर की तरफ चले तो नगर के रहने वालो ने मार्ग के द खडे होकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। अगरेजी सरकार की सहायता से उन लोगो ने अत्याचारियो से छुटकारा पाया था और उनके कन्हैया जी के मन्दिर की रक्षा हुई थी। वे सब अगरेजों की प्रशंसा करने लगे।

१५ अक्टूबर—अब जो मार्ग आगे आ रहा था, वह पहले से भी कठिन दलदल हुआ और बहुत से स्थलो पर जलमय था। कुछ इसी प्रकार के रास्ते के कारण मैडता न

उन्नासीवां परिच्छेद

माहीर जाति के लोग—हिन्दू से मुसलमान होने वाला दाऊद खाँ—चौहान के साथ प्रमार राजपूतो का युद्ध—लडाकू मीना लोग—राजपूतो की बरबादी का मुख्य कारण—मेवाड के ब्राह्मणो मे विधवा विवाह का प्रचार—मीना लोगो का सामाजिक जीवन—देवगढ का सामन्त—गोदवारा के रास्ते मे गानोरा का सामन्त--गोदवार सामन्त का निमत्रण—रूपनगर के सामन्त का पद—राणा रायमल के लडको की आपसी फूट—चौहान राजा पण्ड—गोदवारा प्रदेश का अधिकार—सीसोदिया और चौहान राजपूतो के स्वास्थ्य की तुलना—लगातार यात्रा और उसकी कठिनाइयाँ—राणा के दूत कृष्णदास के साथ मुलाकात—दूत के साथ बातचीत—मेवाड और मारवार राज्यो की सीमा—राणा के दूत की निर्भीक बातचीत—मारवाड राज्य की विस्तृत रेतीली भूमि—मेवाड-राज्य की भूमि की पहचान—मारवाड की भूमि मे वृक्षो का अभाव—मन्दोर का प्रदेश—मन्दोर के सम्बन्ध मे राणा की नीति—मन्दोर पर जोधा का आक्रमण—मन्दोर पर जोधा का अधिकार—मन्दोर और मेवाड की सीमा का निर्णय—अरावली से निकलने वाली छोटी-छोटी नदियाँ—मेवाड और मारवाड की प्रजा का अन्तर—सोनीगुरा वश के राजपूतो का साहस—चौहानो की वीरता के प्रमाण—गोगा चौहान की कीर्ति—महावीर का प्रसिद्ध मदिर—मान राजा का होम—नदोल की यात्रा—पाली का प्रसिद्ध नगर—शिवा जी और पाली के ब्राह्मण—चारण और भाट लोगो का भय—भाटो की आत्म हत्या का भय—पीकर्ण का सामन्त—सामन्त सुरतार सिंह पर आक्रमण ।

माहीर जाति को लोग मीरा जाति भी कहते है । इस जाति के लोग पहाडो पर रहा करते है और पर्वत के जिस भाग मे रहते है वह माहीर वाडा कहलाता है । माहीर लोगो की उत्पत्ति मीना अथवा माहीर जाति से मानी जाती है । वे लोग माहीरोत अथवा माहीरावत के नाम से प्राचीन काल मे पुकारे जाते थे । कमलमीर से लेकर आजमीर तक का जो सम्पूर्ण स्थान अरावली पर्वत पर है, वह माहीरवाडा कहलाता है । वह स्थाने लम्बाई मे नव्वे मील और चौडाई मे छै सौ वीस मील तक पाया जाता है । चौडाई का भाग कही पर कम ओर कही पर अधिक है । समुद्र को सतह से तीन हजार से लेकर चार हजार फुट तक वह स्थान ऊँचा है औरउसके ऊपर विभिन्न प्रकार के छोटे-बडे वृक्ष पाये जाते है । उस भूमि पर प्रकृति का जो सौन्दर्य देखने को मिलता है, वह कदाचित् कही अन्यत्र न मिलेगा ।

यो तो माहीर जाति का वर्णन बहुत विस्तार मे है । लेकिन यहाँ पर उसको अधिक विस्तार मे लिखने की जरूरत नही है । इस दशा मे उस जाति की प्रमुख और महत्वपूर्ण जो बाते जानने के योग्य है, उन्ही को यहाँ लिखने की कोशिश करेगे ।

मीना जाति कई भागो मे विभाजित है। उसके चिता नामक विभाग से माहीर लोगो की उत्पत्ति मानी जाती है। मीना लोगो मे जेता नामक एक शाखा है। राजपूतो की तरह उस जाति मे भी बहुत-सी शाखाये पायी जाती है । उन शाखाओ के लोग बडे स्वाभिमान के साथ अपने पूर्वजो का वर्णन करते है। मीना जाति के चिता वश के लोग दिल्ली के अन्तिम चौहान-सम्राट के पौत्र को अपना आदि पुरुष मानते है । चौहान राजा के

पिछली शाम को ये रोटियाँ उस हाथी को नही दी गयी थी । इसलिए हाथी अपने
नाराज था । उसकी यही अप्रसन्नता उसके पानी मे गिरने की कारण हो गयी । उसको
लिए जो उपाय सम्भव हो सकते थे, सब किये गये । कुछ देर मे हाथी उठकर खडा
वह शाम से ही नाराज तो था ही । खडे होते ही उसने पीठ हिलाई, जिससे उसकी पीठ
चीजे पानी मे गिर गयी ।

हम लोग बूनाश नदी को पार करके आगे की तरफ चले । नदी का जल गहरा
के समान साफ दिखाई देता है । उसके किनारे की ऊँची भूमि पर बहुत-सी घास दिख
है । नदी के किनारे के हरी-हरी घास से लदे हुए ये कगार देखने मे बड़े मनोहर मालूम ह

इस नदी के सम्बन्ध मे एक जनश्रुति बहुत प्रसिद्ध है । लोग कहा करते है कि
आने के पहले बूनाश नदी की देवी जल के भीतर से अपने हाथ बाहर निकाला करती
समय यहाँ के रहने वाले उसके हाथो मे नारियल दे देते थे । मुसलमानों के आने के
सदा की भाँति अपने हाथो को निकाला । उस समय एक यवन ने उसके हाथो मे नारि
बदले मिट्टी का एक ढेला दे दिया । उस समय से देवी अपना हाथ नही निकालती ।

हम सब लोग लगभग आधी रात के समय अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँच गये ।

छूटे हुए आदमी अभी तक हमारे पास नही पहुँचे थे । इसलिए १७ अक्टूबर को उ
पर रुककर हमे उनका रास्ता देखना पडा । असुरवास एक सम्पन्न और समृद्धशाली ग्राम है
वहाँ के निवासियो की सख्या अब पहले की अपेक्षा बहुत कम हो गयी है । चरण
सगीत से प्रसन्न होकर राणा भीम ने यह ग्राम उसको दे दिया था । जिस स्थान पर ह
किया था, उसके पास ही एक संन्यासी का आश्रम है । वह संन्यासी मुझसे मिलने के लिए
आया और उसके बाद मै भी उसके पास गया ।

संन्यासी लोग आमतौर पर भ्रमण किया करते है । मेरे पड़ोस का संन्यासी भी
होने के कारण समझदार और व्यवहार कुशल हो गया था । अन्यान्य संन्यासियो की
सन्यासी भी गेरुए रंग के वस्त्र पहनता था उसकी पगडी के ऊपर कमलगट्टे की बनी हुई
हुई थी । उसी तरह की एक दूसरी माला उसके हाथ मे थी, जिससे वह अपने इष्टदेव
कर रहा था ।

उस संन्यासी ने बातें करते हुए अंगरेजी शासन की मुझसे प्रशंसा की और कहा कि
की शक्ति दूसरे सभी आदमियो की अपेक्षा प्रबल होती है । उसकी इन बातो को
गम्भीरता के साथ उसकी तरफ देखता रहा । मैने उसकी बातो को सुनकर कुछ कहा नही
वह मुझसे कुछ सुनना भी नही चाहता था । उससे बाते करने के बाद मै अपने स्थान
आया ।

१८ अक्टूबर—प्रातःकाल होते ही हम लोगो ने यात्रा शुरू कर दी । वहाँ से मुझे
स्थान बारह मील की दूरी पर था । जिस रास्ते से हम लोग चल रहे थे, वह घने वृक्षो
सकीर्ण हो रहा था । स्थान-स्थान पर वह कही टेढा, कही ऊँचा और कही बहुत
रास्ते के दोनो तरफ खैर, कीकड और बबूल के वृक्ष थे । इन्ही वृक्षो के बीच मे गये हुए
चल रहे थे । गङ्गगुडा नामक ग्राम से होकर हम लोग शिरनाला नामक ग्राम मे पहुँ
विशाल काय शिखर की जड से जो नदी बह रही थी, गोडा ग्राम वही पर बसा हुआ था ।
आकार-प्रकार टेढा देखकर हम लोगो ने अनुमान लगाया कि इस विस्तृत उपत्यका का

दी। यह देख कर मीना जाति के सरदार ने युद्ध मे धनुष-बाण छोडकर अपनी तलवार का प्रयोग किया और उसकी मार से काना एक बार विचलित हो उठा।

इस समय दोनो तरफ से भीषण मार-काट हो रही थी। मीना सरदार के आक्रमण को देख कर साहसी काना आगे बढा और मीना सरदार को मार कर उसने जमीन पर गिरा दिया। उसके गिरते ही एक मीना शूरवीर आगे बढा और अपने सरदार का बदला लेने के लिए उसने काना पर जोर का आक्रमण किया। मीना सरदार के मारे जाने पर राजपूतो का उत्साह बढ गया था। उस समय वे लोग अपनी भयानक शक्तियो का प्रदर्शन करते हुये आगे बढे। उस समय राजपूतो मे उत्साह की वृद्धि हो रही थी। हाथियो के चिग्धाडने और घोडो के हिनहिनाने की आवाजो से युद्ध का वह सम्पूर्ण स्थल गूंज उठा। उस समय राजपूतो के सामने मीना लोगो का ठहरना कठिन मालूम हो रहा था। इसी समय गिरनार और दूसरी सेना ने आगे बढ कर भीषण युद्ध आरम्भ किया। इसी समय मीना सरदार की तरफ से नाहर नाम के एक योद्धा राजपूतो से युद्ध कर रहा था। प्रत्येक शूरवीर अपने हाथो मे तलवारे लिए हुए और अपने वश के देवता की जय-जयकार करते हुये युद्ध मे आगे बढ रहे थे।

चौहान नरेश पृथ्वीराज इस समय युद्ध मे मौजूद था। उसने नाहर का सामना किया। प्रमार वश के राजपूत अपने हाथो मे तलवारें लिए हुये काले बादलो की तरह आगे बढ रहे थे। मन्दोर के राजा का भाई भी इस समय युद्ध कर रहा था। इसी समय प्रमार राजपूतो के राजा के सिर पर रखा हुआ शिरस्त्राण तलवार की चोट खाकर दो टुकडे हो गया और नीचे गिर गया। इसी समय परिहार राजपूत जख्मी होकर पृथ्वी पर गिरा।

माहीर लोग सदा से अत्याचारी रहे हे। वे आजकल जिस प्रकार उपद्रवी देखे जाते है, बारहवी शताब्दी मे भी वे वैसे ही थे। कई मौको पर उनका दमन किया गया था। लेकिन अवसर पाने पर वे फिर विद्रोह कर कर देते रहे है।

राजपूत राजाओ के द्वारा कई बार इन मीना लोगो का दमन हो चुका था। लेकिन मराठो के आने पर इन लोगो ने फिर से आत्याचार और उपद्रव करना आरम्भ कर दिया। सन् १८२१ ईसवी मे दूसरे अत्याचारियो का दमन करने के साथ-साथ इन लोगो का भी दमन किया गया और उसमे बहुत बडी सफलता भी मिली। लेकिन कुछ कारणो मे वह सफलता स्थायी रूप मे न रह सकी।

माहीर, मराठा, पिण्डारी और पठान लोगो का अत्याचार राजपूतो पर बहुत दिनो तक होते रहे। आपसी फूट, विरोध, द्वेष और विद्रोह के कारण राजपूत लोग उनको परास्त करने मे असमर्थ रहे। राजपूतो के आपसी विरोध ने उनको इस योग्य नही रखा कि वे शत्रुओ को पराजित कर सकते। सदा हालत यही रही कि जब राजपूत राजा आक्रमणकारी शत्रु के साथ युद्ध करने के लिए जाता तो दूसरा राजपूत राजा आक्रमणकारी को आश्रय देकर उसकी सहायता करता। इसका अभिप्राय यह था कि आपस मे फैली हुयी फूट के कारण राजस्थान के सभी राजा छोटे और बडे एक दूसरे के विध्वश और विनाश मे लगे हुए थे। उनके सर्वनाश का यही एक प्रधान कारण हुआ।

राजपूतो के आपसी वैमनस्य के कारण माहीर लोगो की शक्तियाँ प्रबल हो गयी थी। लेकिन जब अगरेज सरकार ने राजपूत राजाओ का सगठन करके इन लोगो का दमन किया, उस समय आक्रमणकारियो को राजस्थान मे कही पर भी आश्रय नही मिला और न उनको किसी से किसी

सुमेचा ग्राम मे हमारे छूटे हुए आदमी आकर हमसे मिले। उन सबको देखकर हमे
मिली।

१६ अक्टूबर—चित्तौर—बूनाश नदी के प्रवेश को छोड देने के बाद पहाडी स्थ
के लिए राणा को विवश होना पडा था और उस दशा मे उसकी बहुत-सी प्रजा
की भूमि मे आकर रहने लगी थी। हम लोगो ने कैलवाडा नगर की ओर यात्रा की।
उस समय की बहुत-सी ऐतिहासिक बातो का परिचय देता है। वहाँ पर जितने भी
नदियाँ है, उन सबके साथ उस समय की ऐतिहासिक घटनाओ का सम्बन्ध है। हमने
उपत्यका के प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रशसा की है, यह स्थान भी बहुत-कुछ उसी प्रकार क
है। यहाँ के पर्वत मे होकर जो मार्ग जाता है, उसके बाई तरफ 'करी सरोवर'
नदी प्रवाहित होती है। पैदल चलने वाले लोग यहाँ से एक सीधे रास्ते मे चलकर कैल
पहुँच जाते है। परन्तु वह मार्ग अत्यन्त घने जगलो के बीच से गुजरता है। इ
सर्वथा सकटपूर्ण है, जिसके कारण कोई भी सहसा मनुष्य उस रास्ते से जाने का
करता।

इस नदी का नाम 'करी सरोवर' क्यो पडा, इसको जानने के लिए मैने क
परन्तु उसका कुछ रहस्य मालूम नही हुआ। मैने जितने भी लोगो से पूछा, कोई
नही सका।

हम लोग मूर्च नामक ग्राम से होकर अपने मार्ग में आगे बढे। इस ग्राम मे
सामन्त का अधिकार है। उस ग्राम के बिल्कुल पास एक छोटा-सा सरोवर और उस
समीप एक अत्यन्त रमणीक मदिर बना हुआ है। उसको देखकर मैंने एक मनुष्य से
कौन-सा मदिर है?

मेरे प्रश्न को सुनकर उस आदमी ने जवाब दिया: इसका नाम सती मदिर है।

उस आदमी के इस उत्तर को सुनकर मुझे सतोष नही मिला। मैं उस मदिर के
कुछ अधिक जानना चाहता था। इसलिए मैने उस आदमी को अपने पास बुलाया और
मदिर के सम्बन्ध मे अधिक जानने की कोशिश की। उस आदमी के द्वारा मालूम हुआ कि
के अधिकारी के पूर्वजो ने बनवाया था। बादशाह औरङ्गजेब की सेना के आक्रमण करने
ग्राम के अधिकारी ने लडकर अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया और उसकी स्त्री अपने
शरीर को लेकर चिता मे भस्मीभूत हुई थी।

उस मदिर मे एक वीर पुरुष की अश्वारोही प्रतिमा स्थापित है। यह वह वीर पुरु
उस ग्राम का अधिकारी था और जिसने बादशाह की सेना के साथ युद्ध करके अपने प्राणो
दी थी। उसके मरने पर उसकी स्त्री चिता मे बैठकर सती हुई थी। उसी के नाम से जो
स्थान पर बनवाया गया, उसका नाम सती मदिर रखा गया।

इस गाँव के पास से दो रास्ते दो तरफ को गये है। एक रास्ता वीर गुला
होकर जाता है। उससे नाथद्वारा तक आसानी के साथ जाया जा सकता है। दूसरा र त
और प्रसिद्ध चतुर्भुज देव के पवित्र स्थान की तरफ गया है। पर्वत श्रेणी के द्वारा दावा उर
से हम लोगो ने ओलद्वारा होकर कैलवाडा की तरफ चलना आरम्भ किया और कैलवा
से तीन मील उत्तर की तरफ मैदान मे पहुँचकर हम लोगो ने मुकाम किया। उस मैदान
के बहुत-से वृक्ष है। यह स्थान आगे चलकर विस्तृत हो गया है। इस स्थान के जगली होने
बात बाकी नही है। लेकिन प्रकृति ने उनको अपने हिसाब से सभी प्रकार सुन्दर बना र

विवाह विच्छेद का यह नियम मीना लोगो के साथ-साथ जाट, गूजरो, मालियो और बहुत सी दूसरी जातियो मे भी प्रचलित है। माहीर वाडा के रहने वाली सभी जातियो मे विवाह विच्छेद की प्रथा आमतौर से पायी जाती है।

इन लोगो मे ईश्वर की पूजा और शपथ लेने की प्रथाये कुछ विचित्र सी पायी जाती है। मुसलमान लोग अल्लाह की कशम खाते है और हिन्दू ईश्वर की सौगन्ध लिया करते हैं। उसी प्रकार माहीर लोग शपथ लेने के समय सूर्य की सौगन्ध करते है। उनमे से कुछ लोग इस प्रकार शपथ लेने के समय नाध की आन कहते है। शपथ ग्रहण करने का उनका यह एक तरीका है, जो सधारण रूप मे पाया जाता है।

जो माहीर लोग मुसलमान हो गये है, वे शूकर का माँस नही खाते। परन्तु दक्षिणी प्रान्त के रहने वाले माहीर लोग बिना किसी विचार के सभी प्रकार का माँस खाते हैं। परन्तु गो का माँस नही खाते। तीतर और माल्ली नाम के दो पक्षियो का बोलना उन लोगो मे शकुन समझा जाता है। माहीर लोग सब लूट-मार करने के लिए अपने घरो से बाहर निकलते है, उस समय अगर तीतर की आवाज उनको सुनायी पडे तो वे लोग शकुन समझते है और अपनी सफलता पर पूर्ण विश्वास करते है।

माहीर जाति के लोग सोराष्ट्र से लेकर उत्तर की तरफ चम्बल नदी तक फैले हुये हैं। माहीर वाद आजकल मेवाड के राणा के अधिकार मे है। जहाँ के माहीर लोग राणा का शासन नही स्वीकार करते, उनको दमन करने के लिए राणा ने बडी सख्ती से काम लिया है। सभी स्थानो के माहीर लोगो से कर लिया जाता है। जो लोग राणा को कर नही देते, उनके सरदारो को राणा के सामने लाकर पेश किया जाता है और जब वे शपथ पूर्वक राणा की अधीनता को स्वीकार कर लेते है तो राणा की तरफ से उनके पद के अनुसार पारितोषित दिये जाते हैं। माहीर लोगो को अपनी अधीनता मे लाने के लिये राणा की तरफ से जो प्रयत्न किये गये है, उनमे पूरी सफलता मिली है। लेकिन कमलमीर मे हमारे आने के पहले की ये सब घटनाये है।

२१ अक्टूबर—रात बीत जाने के बाद सवेरे का प्रकाश देखकर हम सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए। कप्तान वाघ और डाक्टर टडन ने जो हाथी की भूल शीत मे बचने के सिए अपने शरीरो पर लपेट रखी थी, उसको उन लोगो ने अलग किया और मैं भी पालकी के भीतर मे निकल कर बाहर आया। रात मे पड़ने वाली ओस से बचने मे पालकी ने हमारी बडी सहायता की। हम सभी लोग भूखे थे। इसलिए प्रकृति के रमणीक दृश्य देखने मे तबियत न लगती थी। फिर भी मैं तो यही चाहता था कि दक्षिण के भयानक पहाडी रास्ते से चल कर वहाँ के लुटेरो की खोज की जाय।

यह छोटा सरदार बड़बटिया नाम से सभी लोगो मे प्रसिद्ध है। वह चौहानो की दूसरी शाखा मे पैदा हुआ है। उसका वश सोनीगुर कहलाता है। उसके वश के लोगो ने कई शताब्दी तक झालोर मे राज्य किया है। यह सामन्त पहले मारवाड की अधीनता मे था। किन्तु अनेक खराबियो के कारण मारवाड के राजा ने उसको अपने यहाँ से निकाल दिया था। उस दशा मे वह गोकुलगढ के दुर्ग मे आश्रय लेने के लिये चला गया। गोकुलगढ का दुर्ग अरावली पर्वत के ऊपर बना हुआ है।

उस दुर्ग मे पहुँच जाने के बाद वह सामन्त वहाँ के आस-पास के निवासियो को अनेक प्रकार से भयभीत करने लगा। वहाँ के लोग लूटमार किया करते थे। इसलिये देवगढ का सामन्त उनकी लूट मे हिस्सा लिया करता था। इसका एक कारण यह भी था कि वे लुटेरे उन्ही स्थानो मे लूटमार किया करते थे, जो देवगढ़ के अन्तर्गत थे और इस दशा मे उन लुटेरो को किसी दूसरे सामन्त

की रक्षा करने का कार्य वहुत अधिक महत्व नही रखता । अगर उनके जीवन का उद्देश्य ही सीमित रहता है तो उन सैनिको मे और देश के बाकी लोगो मे अन्तर ही क्या रह यह वात साधारण नही है ।

कमलमीर के दुर्ग के सैनिको को देखकर मुझे कम आश्चर्य नही हुआ । उन ल के रुपयो को अधिक महत्व दिया और उनके दुर्ग की स्वतन्त्रता का कोई महत्व उन रहा । उनको जो वेतन दे, वही उनका स्वामी है और उनके वेतन के रुपये जो अदा कमलमीर का राजा अथवा अधिकारी है । यह मनोवृत्त सैनिको की वहुत सकीर्ण है और देश के लिए इस प्रकार की मनोवृत्ति वाछनीय नही हो सकती ।

दूसरे दिन प्रात काल हम सब लोग वहाँ के टूटे-फूटे और पुराने मन्दिरो मे बैठे हु कर रहे थे, मैने देखा कि उस दुर्ग की सेना पश्चिमी पहाडी रास्ते से निकलकर जा रही है सेना की तरफ कुछ देर तक बराबर देखता रहा । हमारे साथ की सेना ने उस दुर्ग पर तक अधिकार रखा । उसके वाद राणा की सेना वहाँ पर आयी । उसके आने पर उ अधिकार राणा की उस सेना को सौप दिया गया ।

वहाँ पर आठ दिनो तक लगातार रहकर मै अपना काम करता रहा । वहाँ पर से ऐसे स्तम्भ मिले, जिनमे खुदे हुए प्राचीन काल के विवरण मेरे वडे काम के थे । मै उ सकलन आठ दिनो तक बरावर करता रहा और उस कार्य मे इतने दिन कैसे वीत गये, विलकुल न जान पडा ।

कमलमीर और उसका दुर्ग अनेक प्रकार की विशेषता रखता है । उसके सम्वन्ध मे कुछ लिखना आवश्यक जान पडता है । दुर्ग के आस-पास लोहे की तरह एक ऐसी मजबू है, जो काफी ऊँची है और जिसका तोड सकना आसान नही है । दुर्ग के भीतर से वाणो करने के लिये उस दीवार मे बहुत-से ऐसे सूराख है, जिनका फायदा आक्रमणकारी उठा सकता । वह दीवार अत्यन्त मजवूत पत्थरो से वनी हुई है । गोलो की वर्षा लिये भी दीवार मे कई प्रकार के सुभीते है, जिनका लाभ पूरे तौर पर दुर्ग की सकता है ।

उस दुर्ग की सबसे ऊँची चोटी पर अत्यन्त रमणीक वादल महल वना हुआ और उसका परिवार वर्षा के दिनो मे उसमे आकर रहा करता है । इस वादल महल से का वालुकायम विस्तृत प्रान्त देखने मे अत्यन्त सुन्दर मालूम होता है । कमलमीर के इस चढते ही सबसे पहले एक सकीर्ण मार्ग मिलता है, उस मार्ग से कैलवाड़ा से लगभग एक दूरी पर अराइनपोल नामक फाटक दिखायी भी देता है । उस विशाल फाटक के आगे द और है, जिनका नाम हुल्लापोल और हनुमान पोल है । वे फाटक जितने सुन्दर और दश उतने ही वे सुदृढ और मजवूत भी है । भीतर की तरफ जो फाटक वना हुआ है, चौगाना पोल है ।

कमलमीर का सवसे ऊँचा शिखर समुद्र की सतह से ६३५३ फुट ऊँचा है । इस ऊँच से मैंने मरुभूमि के अत्यन्त दूरवर्ती दृश्य देखे है । वहाँ से मैंने एक पुराना जैन मन्दिर भी उस मन्दिर की वनावट बहुत प्राचीन काल की है । उस मन्दिर के मध्य भाग मे एक विशाल है, उसमे वहुत-से स्तम्भ है और उसके आगे का वरामदा वडा अच्छा वना हुआ है । इस की वनावट मे न केवल प्राचीनता है, वल्कि हिन्दू मन्दिरो मे जो निर्माण कला देखने है, इसकी निर्माण कला उससे भिन्न है । ऐसा मालूम होता है कि हिन्दू धर्म और जैन

जाता है। मेवाड के राज्य मे जब कोई उत्सव अथवा खुशी का अवसर मनाया जाता है तो राणा की तरफ से गानोरा के सामन्त को उपहार भेजा जाता है। लोग इस बात को जानते है कि राणा के वंश के साथ वहाँ के सामन्त का गम्भीर सम्बन्ध है और वह सम्बन्ध जातीय रक्त का परिचय देता है। इसीलिए मेवाड के राणा के प्रति उसका अधिक आकर्षण है और उसको भी राणा की तरफ से सम्बन्ध मिलता है। जन-साधारण मे उस सामन्त को लोग मेवाड का भतीजा कहते हैं।

गानोरा के सामन्त ने मुझसे मिलकर अपना बहुत सम्मान मेरे प्रति प्रकट किया। इसके साथ ही गानोरा चलने के लिए मुझे उसने बडी अभिलाषा के साथ आमन्त्रित किया। मैं समझता था कि उसके प्रति उसके राजा के भाव अच्छे नही हैं। इसलिए उसका निमन्त्रण स्वीकार करने मे मैं बडे असमंजस मे पड गया। मै सामन्त का आदर-भाव देखकर उसके निमन्त्रण को स्वीकार करना चाहता था और मैं यह भी नही चाहता था कि उस सामन्त के यहाँ जाने के कारण उसका स्वामी मारवाड का राजा असगत धारणा पैदा करे। बिना किसी कारण के मैं इस प्रकार की परिस्थिति पैदा करूँ, यह मेरी बुद्धिमानी नही होगी, इसलिए बहुत कुछ सोच-समझकर मैंने अपने अन्त करण मे इस सामन्त के यहाँ न जाना ही निश्चित किया। लेकिन सीधे शब्दो मे ऐसा कहा नही जा सकता था। यह एक स्पष्ट अशिष्टता होगी। इसलिए उससे बाते करते हुए और उसके प्रति अपना पूरा सम्मान प्रकट करते हुए मैंने उसके निमन्त्रण को अस्वीकार किया। लेकिन उसके अन्तरात्मा को किसी प्रकार भी वेदना न पहुँचे, इसलिए मैंने मार्ग की थकावट और प्रात.-काल की खानगी का जिक्र करते हुए अत्यन्त शिष्टाचार के साथ मैंने उसका निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया।

इस मौके पर मैंने बडी नम्रता और शिष्टता से काम लिया। अपनी बडी मजबूरी को दिखाकर मैंने सामन्त का निमन्त्रण अस्वीकार किया था। लेकिन मेरा असली भाव उस सामन्त से छिपा न रह सका। मेरा ऐसा ख्याल है कि वह इस बात को ताड गया कि उसके इतने आग्रह करने पर भी मैंने उसके निमन्त्रण को किस लिए नामंजूर कर दिया है।

अपने निर्णय के अनुसार प्रात.काल मैंने अपनी यात्रा आरम्भ की। साथ के सभी लोग प्रसन्नतापूर्वक आगे की तरफ रवाना हुए। आज की यात्रा लम्बी नही थी और अन्त मे दो मील मारवाड के मैदान थे। हम लोगो ने तेजी के साथ चलकर उस मार्ग को पार करने की कोशिश की। सरदी अधिक थी और जब जिस मार्ग मे हम लोग चल रहे थे, वहाँ का वातावरण बदल गया था। जिसके कारण रास्ते मे चलते हुए हम लोगो को बडी तकलीफो का सामना करना पड रहा था। उन कठिनाइयो के समय हम लोगो के मुख से इतना ही निकलता था : आखिरकार ये मारवाड के मैदान है।

२७ अक्टूबर—मारवाड के मैदानो मे और रेगिस्तानी भूमि पर चलने के कारण साथ के सभी आदमी रुककर विश्राम करना चाहते थे। इसलिए एक स्थान पर पहुँचकर हम लोगो ने मुकाम किया। साथ के जो आदमी पीछे रह गये थे, वे इस स्थान पर आकर मिल गये। वे सभी रास्ते की मुसीबतो का एक, दूसरे से वर्णन कर रहे थे। परन्तु किसी के मुख पर किसी प्रकार की निराशा न थी।

यहाँ पर रूपनगर का सामन्त मुझसे मिलने आया। इसके जीवन की परिस्थितियाँ भी बहुत कुछ गानोरा के सामन्त की तरह थी : उसका प्रदेश मारवाड और मेवाड के बीच मे ऐसा पडता था कि जिसमे उसको दोनो राज्यो को खुश रखना बहुत जरूरी था। इसलिए वह मेवाड के राणा और मारवाड़ के राजा—दोनो की आज्ञा पालन करता था।

मन्दिर के किसी भी खण्ड मे अन्धकार नही रहता । मन्दिर के निर्माण में यह खूबी है, जिसकी बहुत बडी प्रशंसा की जा सकती है ।

दुर्ग के ऊपर और भी कितने मन्दिर बने हुये है । उन सबके विवरण बहुत से मिलते-जुलते है । इसलिये उनके सम्बन्ध मे अलग-अलग यहाँ पर लिखने की जरूरत होती । लेकिन वहाँ पर दो मन्दिर ऐसे है, जिनके सम्बन्ध मे कुछ प्रकाश डालना जरूरी मन्दिर वहा के मन्दिरो मे प्रमुख माने जाते है ।

इन दोनो मन्दिरो मे एक माता देवी का मन्दिर कहलाता है । यह मन्दिर ८ माता का बनवाया हुआ है । पहाडी रास्ते की तरफ ऊँचे शिखर की चोटी पर यह हुआ है । इस मन्दिर मे छोटी और बडी देवताओ की बहुत-सी मूर्तियाँ है और उन राजमाता की प्रतिमा है । ये सभी प्रतिमाये श्वेत संगमरमर पर बनी हुई है और ७ की ऊँचाई करीब-करीब तीन फुट के है । ये सभी मूर्तियाँ इतनी खूबसूरत के साथ कि उनको देखकर मनुष्य अवाक रह जाता है । मन्दिर की रचना प्रणाली बहुत साधारण होने पर भी उनमे अनोखा चमत्कार देखने को मिलता है । मन्दिर के कमरा है । उसमे इन सब मूर्तियो थे दर्शन होते है ।

इन मन्दिरो के सामने एक मजबूत दीवार बनी हुई है । उसमे नीचे से ऊ पत्थर बना हुआ है । इस दीवार के बनाने मे जो काले पत्थर लगाये गये है । उनमे प्रत्ये अलग-अलग देवताओ के विवरण खोदे गये है । इन पत्थरों मे बहुत से राजा लोगो के पाये जाते है । अफसोस यह है कि दीवार मे लगे हुये पत्थरो मे कोई एक भी समूचा है । प्रत्येक कई-कई टुकडो मे टूट कर नीचे गिर गया है और उनके इस प्रकार कारण उन पत्थरो का कोई लाभ नही उठाया जा सकता ।

माता देवी के मन्दिर की तरह वहाँ पर एक दूसरा मन्दिर भी है और वह भी रूप मे बनवाया गया है । यह मन्दिर जिस स्थान पर बना हुआ है अनेक बातो के कार अत्यन्त प्रिय मालूम होता है । उस स्थान से मारवाड़ जाने के लिये एक मार्ग दिखायी मन्दिर मे चारो ओर स्तम्भ बने हुये है और उन स्तम्भो से मन्दिर के भीतर के सभी दृश्य आसानी से देखने मे आते हैं । टिभोली मे मन्दिर की तरह इनका निर्माण शिखर के ऊपर जाकर इस मन्दिर के टूटे-फूटे भागो को देखा । मेवाड़ के प्रसिद्ध पृ उसकी पत्नी ताराबाई की भस्म का ढेर भी मैंने अवलोकन किया । उस ढेर को देख क जीवन की बहुत-सी बाते आँखो के सामने घूमने लगी ।

ताराबाई विदनेर के राव सुरतान की लड़की थी । राव सुरतान सोलकी बलहर राजवंश मे पैदा हुआ था । सुरतान के पूर्वज तेरहवी शताब्दी मे अनहिलवाड़ा भारत मे चले आये थे और वहाँ पहुँचकर टकथोड़ा एव बूनाश नदी के समीपवर्ती सम्पू अधिकार कर लिया था । बहुत पहले प्राचीन काल मे तक्षक जाति के लोगो ने इस थोडा कायम किया था और उस जाति के नाम पर इसका नाम तक्षशील अथवा तक्षपुर बहुत रहा और इसके बाद टक थोड़ा के नाम से प्रसिद्ध हुआ । *अफगानी लिल्ला ने उस

---

*यहाँ के खण्डहरो मे ऐसी बहुत सी चीजे पायी जाती है । जिनसे इस बात चलता है कि यहाँ पर तक्षक जाति के लोग रहा करते थे । इस स्थान के चारो तरफ

साथ परामर्श किया और अपने लड़के के साथ अपनी स्त्री को हँसुरी मे रहने के लिए भेज दिया।

सामन्त का लड़का अपनी माता के साथ वहाँ जाकर रहने लगा। धीरे-धीरे कुछ दिन बीत गये। वहाँ पर उसको कोई मौका नहीं मिला। इन्ही दिनो मे एक और बाधा पैदा हुई। चौहान राजा प्रचण्ड के एक लड़के के साथ बालेचा के सामन्त सागर की एक लड़की का विवाह होना निश्चित हुआ। जब यह समाचार गुड़गढ़ के सोलंकी सामन्त के लड़के को मालूम हुआ तो उसने अपने पिता को छिपे तौर पर लिख दिया कि प्रचण्ड के लड़के का विवाह बालेचा सामन्त की लड़की के साथ होने जा रहा है। विवाह के इस मौके पर राजा प्रचण्ड अपने लड़के के साथ बालेचा जायगा। उस मौके पर हँसुरी पर अधिकार कर लेना बड़ी आसानी से सम्भव हो सकता है। राजा प्रचण्ड के लड़के की बारात जाने पर मैं हँसुरी के दुर्ग के ऊँचे शिखर पर आग प्रज्वलित करूँगा। उस अवसर पर आप अपनी सेना के साथ यहाँ आकर अधिकार न कर ले।

इस प्रकार लड़के का पत्र पाकर सोलंकी सामन्त बहुत प्रसन्न हुआ और वह सन्तोष पूर्वक अपने लड़के के बताये हुये संकेत की प्रतीक्षा करने लगा। इन दिनो मे उसने इस बात की पूरी तौर पर तैयारी कर ली कि अवसर आने पर वह किस प्रकार अपनी सेना को लेकर रवाना होगा और हँसुरी मे पहुँचकर किस तरीके से वह उस पर अधिकार करेगा।

अपनी तैयारी के साथ वह सामन्त जिस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, उसके लिए उसको बहुत दिनो तक रुकना नहीं पड़ा। एक दिन एकाएक उसने हँसुरी के दुर्ग के ऊपर धुआँ उठता हुआ देखा। वह तुरन्त अपनी सेना को लेकर और अरावली पर्वत से उतर कर आगे की तरफ बढ़ा। हँसुरी मे दुर्ग के ऊपर जब चौहान राजा की स्त्री ने धुआँ उठते हुए देखा तो उसने अपना आदमी भेज कर जानाता से पूछा : शिखर पर यह किस प्रकार का धुआँ हो रहा है? मेरे लड़के के विवाह के लिए यहाँ से बारात गयी है और वह विवाह के बाद बहू को अपने साथ लेकर यहाँ आवेगा। इसलिए दुर्ग के ऊपर जो आग जलाई गयी है वह किसी का दाह-संस्कार सा मालूम होता है। यह लक्षण किसी प्रकार शुभ नहीं है।

रानी ने जानाता से बाते करने के लिए अपना एक विश्वासी नौकर भेज दिया था। उसके बाद एकाएक उसको अपनी राजधानी मे बड़ा गड़बड़ सुनायी पड़ा। उसे मालूम हुआ कि उसके नगर में सोलंकी सेना ने प्रवेश किया है और उसके सैनिक नगर के चारो तरफ आग लगा रहे हैं। इन बातों को सुनकर रानी बहुत घबड़ा उठी और वह इस बात की चिंता करने लगी कि इस संकट के समय क्या करना चाहिये। इसके कुछ समय बाद चौहान राजा प्रचण्ड अपनी पुत्र वधू को लेकर अपने लड़के के साथ वापस आ गया।

राजा प्रचण्ड ने नगर की जब यह अवस्था देखी और उसे मालूम हुआ कि मेरे बालेचा चले जाने पर सोलंकी सामन्त की सेना ने यहाँ पर आक्रमण किया है तो वह बड़ी तेजी के साथ युद्ध के लिए तैयार हो गया और सोलंकी सामन्त के सामने पहुँचकर उसने ललकारते हुये कहा : बालेचा से लौटकर मैं आ गया हूँ। अब मैं देखूँगा कि यहाँ पर आक्रमण करने के लिए किसने साहस किया है।

यह सुनते ही सोलंकी सामन्त आगे बढ़ा और उसने अभिमान के साथ चिल्लाकर कहा : प्रचण्ड कहाँ है? मेरा नाम सिंह है। मैं आज प्रचण्ड को खाकर अपनी भूख मिटाऊँगा।

इस प्रकार कहकर सोलंकी सामन्त अपने हाथ की तलवार को चमकाता हुआ वहाँ पर घूमने लगा। चौहान राजा की सेना युद्ध के लिए तैयार हो चुकी थी और दोनो तरफ से भयानक मारकाट

अपने पाँच सौ सैनिक सवारो के साथ पृथ्वीराज थोडा मे उस दिन पहुँचा ज
उठाने की विदनौर मे तैयारी हो रही थी और राजमहल के आँगन मे हसन, हुसेन दोनो
जनाजा रखा था। अफगान सरदार महल मे कपडे पहन कर नीचे आने की तैयारी मे
के बाहर ताजिया के साथ जाने के लिए बहुत से आदमियो की भीड थी।

पृथ्वीराज ने अपने साथ के सैनिको को बाहर छोड दिया और ताराबाई तथा
मित्र सेगर सरदार के साथ उस एकत्रित भीड मे जाकर शामिल हो गया। अफगान
से नीचे आकर उस भीड की तरफ देखा और उसने आदमियो से पूछा कि इस
तीन नये घोडे के सवार दिखायी देते है, वे कौन है?

अफगान के सरदार के मुख से यह प्रश्न निकला ही था कि एकाएक पृथ्वीराज के
ताराबाई के तीर से अफगान सरदार जख्मी होकर जमीन पर गिर गया। इसके साथ
भीड से निकल कर नगर के फाटक पर पहुँच गये। वहाँ पर एक हाथी के द्वारा पृथ
साथी मारा गया। यह देखकर ताराबाई ने अपनी तलवार से उस हाथी की सूँड को
हाथी वहाँ से तेजी के साथ भागा और इस मौके पर वे तीनो अपनी सेना मे जाकर
नगर के बाहर कुछ दूरी पर खडी थी।

पृथ्वीराज ने अपने सवारो की सेना को लेकर अफगानो पर आक्रमण कर दिया
इस युद्ध के लिए अफगान सेना तैयार न थी। इसलिए अफगान सेना के सैनिक आक्र
सके। वे सब के सब इधर-उधर भागने लगे। उस भगदड मे बहुत से अफगान सैनिक
अफगान सरदार के एक भाई को पृथ्वीराज के सैनिको ने इसी मौके पर मार डाला।

अजमेर के नवाब मूलूखाँ ने अपनी फौज लेकर राजपूतो से युद्ध करने का २
उसकी इस खबर को पाकर पृथ्वीराज ने अपनी सेना के साथ अजमेर की यात्रा की औ
होते ही पृथ्वीराज ने वहाँ पहुँच कर अजमेर मे भयानक मारकाट आरम्भ कर दी और
पर उसने बितलीगढ को पराजित किया। राजपूतो की इस मारकाट से विदनोर से ले
तक हाहाकार मच गया।

पृथ्वीराज ने अफगानो से विदनोर का उद्धार किया और वहाँ का शासन राव
सौप दिया। इसके बाद ताराबाई का विवाह पृथ्वीराज के साथ हो गया। इसके कुछ
बाद पृथ्वीराज को उसकी बहन का पत्र मिला। उसकी बहन अपनी ससुराल मे थी।
विपद मे फँसी हुई थी। उसका पति अफीम का सेवन करता था और उसको रोज
अपमानित किया करता था।

बहन का पत्र पाकर पृथ्वीराज तुरन्त रवाना हुआ और सिरोही मे बहन के यहाँ
को पहुँचा। वह सीधा महल मे चला गया। उसका बहनोई सो रहा था। पृथ्वीराज ने
की नली बहनोई कि गले पर रखी। उसी समय उसकी नीद खुल गयी। यह दृश्य देखकर
की बहन घबरा उठी। उसने अपने भाई से क्षमा माँगी। पृथ्वीराज ने कहा कि यदि वह
से हाथ जोड़कर क्षमा माँगे और भविष्य मे किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार न करने
तो मै उसे क्षमा करूँगा। उसके बहनोई ने पृथ्वीराज की इस बात को स्वीकार कर
उसने वैसा ही किया, जैसा कि पृथ्वीराज ने कहा। इसके बाद पृथ्वीराज ने उसे छाती
उसका सम्मान किया।

पृथ्वीराज पाँच दिन तक अपनी बहन के पास बना रहा। वहाँ से लौटने
बहनोई ने अपने बनाये हुये लड्डू रास्ते मे खाने के लिये उसको दिये। पृथ्वीराज १

जानते है और दूसरो का सम्मान करने मे वे अपने जिन गुणो का प्रदर्शन करते हैं उनकी प्रत्येक अवस्था मे प्रशसा की जानी चाहिए। इसमे जरा भी अतिशयोक्ति नही है।

२८ अक्टूबर—आज बहुत सवेरे हम लोगो ने अपनी यात्रा आरम्भ कर दी। रवाना होने के समय ठाकुर ने अपने एक विश्वासी अनुचर को हम लोगो के साथ रवाना किया। हम लोग अरावली की शिखर माला को पार कर रहे थे। लेकिन उसके ऊँचे से ऊँचे पहाडो से हमारी दृष्टि को कोई बाधा नही पहुँचती थी और अपने रास्ते मे चलते हुए हम लोग गोदवारा की उपजाऊ भूमि को दूर तक देख रहे थे। इस समय हम लोग चलते हुए गानोरा के बहुत पास पहुँच गये थे। वहाँ के दुर्ग और उसके महल बहुत अच्छी तरह से हमको दिखायी पड रहे थे। अपने रास्ते से उसकी आबादी की बहुत-सी बातो को हमने देखा और समझा। उसके निवासी अधिकाँश बहुत साधारण अवस्था मे हमको दिखायी दे रहे थे। उन्हे हमने ध्यान पूर्वक देखा।

गानोरा के राजपूतो ने मेवाड के राणा की अधीनता स्वीकार करके अपने प्रदेश को मेवाड राज्य में मिला दिया था। उससे अप्रसन्न होकर मारवाड के राजा भीमसिह ने गानोरा नगर को अनेक प्रकार से क्षति पहुचाई थी। आज से बीस वर्ष पहले की यह बात है। राजस्थान मे गानोरा एक ऐसा स्थान है, जिस पर अधिकार करने के लिए मेवाड का राणा और मारवाड का राजा—दोनों ही आतुर रहा करते है।

हम सब लोग जिस समय इस प्रदेश के नदी-नालो, जलाशयो और अनेक प्रकार के सुन्दर वृक्षो से भरे हुये स्थानो को पार कर रहे थे, राणा का दूत हमारे पास आया और हम लोगो से बातचीत करने लगा। उसका नाम कृष्णदास है। वह बातचीत मे होशियार और बहुत समझदार है। उसकी वृद्धावस्था मे चरित्र की जो सुन्दरता और योग्यता होना चाहिए वह हमे पूर्णरूप से मिलती है। मैं उसकी योग्यता का बहुत आदर करता हूँ और वह भी इस बात को समझता है कि मेरे हृदय मे उसके लिये बहुत ऊँचा स्थान है। मैं उससे पहले से ही परिचित हूँ और उसकी योग्यता तथा प्रतिभा को मानता हूँ।

इस मार्ग में आकर उसने मुझसे भेट की। प्रणाम करने के बाद उसने कुछ देर बाद तक मुझसे बाते की और फिर गम्भीर होकर उसने मेरी तरफ देखकर कहा : गोदवारा प्रदेश हमको आप लौटा दीजिये।

मैने उसकी बात को सावधानी के साथ सुना और उसकी तरफ देखा। अपनी बात सुनाकर वह गम्भीर हो रहा था। मैने उसको उत्तर देते हुये कहा आप लोगो ने उस पर दूसरो को क्यो अधिकार करने दिया था ?

इस प्रकार कहकर मैने उसकी तरफ एक बार देखा और उसको उत्तर देने का अवसर न देकर मैने फिर कहा आधी शताब्दी तक सीसोदिया राजपूत क्यो सोते रहे और उन दिनो मे उनकी तलवार कहाँ चली गयी थी। भगवान का यह नियम नही है कि पहाडो का यह निकटवर्ती प्रदेश मेवाड मे ही मिला रहे।

कृष्णदास गम्भीरता पूर्वक मेरी बातो को सुन रहा था। उसको समझाते हुए और उसकी बात का उत्तर देते हुये मैंने फिर कहना आरम्भ किया। प्रकृति ने मेवाड और मारवाड की सीमा को अलग-अलग करने के लिये गोदवारा की प्रतिष्ठा की है। यहाँ से दोनो राज्यो की सीमा की जानकारी होती है। कदाचित् यह न्याय और निर्णय प्रकृति की ओर से हुआ है।

मार्ग के भयानक संकटो को पार करते हुये मैने एक सप्ताह ॰
था। के कठिनाइयाँ एक-सी नही थी। कही पर रास्ता अत्यधिक ऊँचा
अधिक नीचा था। कही पर बहुत तग और इतना तंग कि साथ के हाथी का निकल
हो जाता और कही पर इतना ऊबड-खाबड कि आगे बढना कठिन मालूम होता
अनेक तरह की कठिनाइयो और सकटो का सामना करते हुये हम लोग अपनी
रहे थे।

अपने मार्ग पर चलते हुये हम लोग अब एक ऐसे स्थान पर पहुँच गये, जहाँ
जल रुककर एक सरोवर के रूप मे बन गया था। साथ के एक सैनिक को यह विश्वास
इस जल को पार कर ले जायगा। इसी आशा पर जल के भीतर उसने अपने घोडे को
जैसे ही वह बाये हाथ की तरफ मुडा उसका घोडा अपने सवार के साथ जल मे डूब ग
भयानक रूप से सामने उपस्थित हुआ। लेकिन बहुत थोडी देर तक यह दृश्य भयान
और कुछ ही देर मे वह घोडा जल के बाहर निकल आया।

इस स्थान का नाम हाथी दुर्रा है। मैने सोचा मि इसी स्थान पर रहकर रात
लेकिन वह स्थान इस योग्य न था कि हम लोग वहाँ पर मुकाम कर सकते। स्थान
सीमित था। रात का समय था और अधकार बढता जा रहा था। उस भीषण अध
आगे बढने की हिम्मत पडती थी, क्योकि रास्ता अत्यन्त अरक्षित था और न वह स
था कि मुकाम किया जा सके। मजबूरी अवस्था मे हम लोग नदी के किनारे का
धीरे-धीरे आगे की तरफ चल रहे थे। अधकार इतना अधिक था कि कुछ दिखाई
नदी के जल बहने से जो आवाज हो रही थी, वही हमारा उस समय सहारा था औ
लोगो को पथ प्रदर्शन मिल रहा था।

किसी प्रकार हम लोग आगे की तरफ बढते रहे। नदी के जल की आवाज से
को सहारा मिल रहा था, उसमे भी गडबडी पडने लगी। बाहर का जल जो नद
था, उसकी आवाज अधिक तेज हो जाती थी और उसके कारण हम लोगो के सा
असमजस पैदा हो जाता था। लेकिन परिस्थितियाँ सदा एक-सी नही चलती। उस स
ढालू स्थान पर चल रहे थे। कुछ आगे जाने के बाद आगे का रास्ता चौडा मिला
स्थान पाने के कारण नदी का जो जल गहराई मे बह रहा था, वह फैल गया था
चौडाई अधिक हो गयी थी।

अपने मार्ग मे चलते हुए हमने आकाश की तरफ देखा, बादलो के बिना आस
पडा। आकाश मे तारे चमक रहे थे। हम लोग अपने रास्ते पर चलते जा रहे
लोग चिताओ से खाली न थे। रास्ता भयानक जगली था और एकाएक भयानक ज
का हम लोगो पर आक्रमण हो सकता था। हमे यह पहले से ही मालूम था कि
जानवरो का भय रहेगा। चीतो और बाघो के कारण रास्ता सुरक्षित नही है। यह
को मालूम थी। हम लोगो की चिंता इतनी ही न थी। पहाडो पर रहने वाले
भी हम लोगो को था। जगल मे हिसक पशुओ से भी अधिक भय उन लुटेर
अचानक रात के अधकार मे आक्रमण कर सकते थे। फिर भी हम लोग अपने मार्ग
रहे थे।

कुछ आगे बढने के बाद एकाएक हम लोगो को एक झाडी मे प्रकाश दिखा
झाडी के पास बरगद का एक पेड़ भी था और उस पेड के नीचे घोडो के सवारो

सम्पूर्ण प्रदेश पर अधिकार कर लिया था। वहाँ पर कई वर्ष तक उसका अधिकार रहा। मन्दोर के राजा के परिवार के लोग अरावली पर्वत की गुफाओ मे जाकर रहने लगे थे। मन्दोर के राजा का उत्तराधिकारी जो उस समय पहाडी गुफाअ' मे चला गया था। कभी इस वात का अनुमान नही लगाया था कि उसका नाम एक वश के आदि पुरुषो मे माना जायगा और उसको वहुत सम्मान मिलेगा एव मन्दोर जोधपुर मे मिला लिया जायगा।

मन्दोर प्रदेश जव वहुत दिनो तक मेवाड-राज्य मे शामिल रहा तो दोनो पक्षो ने उसके विवाद को भुला दिया था। मन्दोर राज्य का उत्तराधिकारी जोधा की भेट एक कवि के साथ हुई। उस कवि ने एक भविष्य वक्ता की हैसियत से कहा चित्तौर की राजमाता के अनुरोध से राणा ने तुमको मन्दोर वापस देने का निर्णय किया है।

जोधा को मन्दोर का अधिकार मिलने के सम्बन्ध मे दो प्रकार के कथानक पाये जाते है। मेवाड के इतिहास मे लिखा है कि राणा से यालू होकर जोधा को मन्दोर राज्य वापस दे दिया। परन्तु मारवाड के इतिहास मे लिखा है कि जोधा ने युद्ध करके अपने पैतृक राज्य का उद्धार किया। इस प्रकार के दो विरोधी उल्लेख पाये जाते है। इन दोनो मे सही क्या है, यह नही कहा जा सकता।

राणा ने मन्दोर के शासक चण्ड को वहा से चले आने के लिए आदेश भेजा था। चण्ड ने राणा का आदेश पाकर अपने वडे लडके के साथ मन्दोर से प्रस्थान किया। जव वह चार मील की दूरी पर निकल गया तो उसको अचानक मन्दोर के ऊपर उजाला दिखायी पडा। लेकिन चण्ड चित्तौर की तरफ आगे वढा। उसके वडे लडके का नाम मच था। उसने अपने पिता का साथ छोड दिया और मन्दोर की तरफ वापस लौटा।

रास्ते मे उसने सुना कि उसके दोनो भाई मन्दोर क रक्षा करते हुए जोधा के हाथ से मारे गये है और विजयी जोधा ने मन्दोर के दुर्ग पर अपनी विजय का झण्डा गाड दिया है। अपने दोनो भाइयो के मारे जाने अ र अपनी सेना के पराजित होने का समाचार पाकर मञ्च रास्ते से ही लौट पडा। मन्दोर की सीमा पर जोधा के सैनिको ने मञ्च को कैद कर लिया और उसे जान से मार डाला।

चण्ड जिस समय अरावली पहाड के रास्ते से होकर गुजर रहा था, उसने मन्दोर का समाचार सुना। वह तुरन्त मन्दोर के लिए लौट पडा। उसके वहाँ पहुँचने पर जोधा ने उससे भेट की और उसने राणा का वापस दिया हुआ मन्दोर चण्ड को वताया और उसके सामने जोधा ने राणा का लिखा हुआ कागज दिखाया। इसके वाद जोधा ने चण्ड से कहा कि आप मन्दोर क सीमा का निर्णय कीजिए।

जोधा की वात को सुनकर चण्ड सोचने लगा कि प्रकृति ने मन्दोर और मेवाड की सीमा का निर्णय स्वय कर दिया है। उसके सिवा और दूसरा कोई निर्णय नही हो सकता। चण्ड ने प्रकृति के उस निर्णय के अनुसार कहा जहाँ तक पीले फूल वाले आँवले दिखायी देते है, वहाँ तक मेवाड की सीमा है।

चण्ड के इस निर्णय को सुनकर कवि ने उसको अपनी कविता मे कहा आँवला आँवला मेवाड, बबूल बबूल मारवाड।

चण्ड को जव मालूम हुआ कि राणा ने मन्दोर का इलाका जोधा को दे दिया है, तो वह शात हो गया। उसका लडका मञ्च आँवलो से परिपूर्ण सीमा पर मारा गया था। लेकिन वह स्थल

हुईं, यह भी मालूम हुआ कि उस स्थान पर कितने ही मृत पुरुषो के स्मारक और प्रत्येक स्मारक पर घोडे पर चढे हुए और हाथ मे भाला लिए हुए एक मूर्ति है।

उन स्मारक को मै ध्यानपूर्वक देखता रहा। प्रत्येक स्मारक की मूर्ति इस बा देती है कि उस वीर पुरुष का इस घाटी की रक्षा करते हुए बलिदान हुआ है। प्रत्ये मिती और सम्वत् खुदा हुआ है। उसको पढकर मालूम होता है कि उस वीर पुरुष दान हुआ था इन स्मारको से मै बहुत प्रभाविक हुआ और बडी देर तक उनको देखने मेरे मनोभावो मे अनेक प्रकार की बाते पैदा होती रही।

आधी रात से अधिक समय हो चुका था। हम सभी भूखे थे। लेकिन किसी प्र भोजन इस समय मिलने की आशा नही थी। डाक्टर डकन और कैप्टेन बौने ने हाथ भूल उतार ली और उसको बिछाकर उस दल के सरदार के पास वे दोनो बैठ गये। मै गया और उस दल के लोग जो आपस मे बाते कर रहे थे उनको सुनने लगा। कदा इस प्रकार की बात करके वे लोग रात का समय काट रहे थे। वे आग के सहारे बैठे थे

उन लोगो मे जो बाते होती रही, वे दिलचस्प थी और सुनने मे बडी प्रिय मा उनकी बाते मुझे बहुत दिनो तक याद रहेगी। लेकिन उनका कम और तरीका सकेगा। मै जानता हूँ कि इस स्थान पर हम लोगो के आदमियो ने अनेक मौको पर डियो से युद्ध किया था और उनमे से बहुतो को यहाँ पर मार डाला था। वे घट हो चुकी है। पहले का समय भी अब नही रह गया। इन पहाडियो के रहने वाले भ पहले की तरह लुटेरे नही रह गये। अब उनमे कुछ अच्छी आदते आ गयी है।

———

दूसरे अलाउद्दीन ने जब यहाँ पर आक्रमण किया था तो सोनीगुरु वश के राजपूतों ने साहम पूर्वक उसका मुकाबिला किया था। परन्तु समझ मे नही आता कि स्वतन्त्र राज्यो के नामो के साथ उस वश का नाम कही पढने को क्यो नही मिलता। नादोल मे छोटे-वडे सब मिलकर तीन सौ साठ नगर और ग्राम है, जो जोधपुर राज्य मे माने जाते है।

सम्पूर्ण राजस्थान मे ऐसा कोई स्थान नही है, जहां पर चौहानो की वीरता के प्रमाण न पाये जाते हो। यह बात सही है कि वहादुरी मे भी राजपूतो को महानता दी जाती है। लेकिन युद्ध के कौशल और शौर्य मे चौहानो का स्थान अधिक श्रेष्ठ समझा जाता है, इतिहास के विद्वान इस बात को स्वीकार करते है।

राजपूतो मे जिस वश के माथ मुझे अधिक समय तक रहने का मौका मिला है, उसके इतिहास को और उसके वहादुरी के कार्यों को मैं भली प्रकार समझ सका हूँ। इस विषय मे जहाँ तक मुझको जानकारी है, मैं कह सकता हूँ कि भारतवर्ष के समस्त राजपूतो मे चौहानो का स्थान ऊँचा है। यही कारण है कि राजपूतो मे चौहानो की प्रशसा कवियो ने अधिक लिखी है। इससे इनकार नही किया जा सकता।

चौहानो की श्रेष्ठता को स्वीकार करने के वाद भी यह तो कहना ही पडेगा कि सम्राट पृथ्वीराज के वाद चौहानो की परिस्थितियो मे वहुत परिवर्तन हो गया है और यह वात सही है कि जो वीरता और वहादुरी पृथ्वीराज के समय चौहानो मे पायी जाती थी, उसका एक वडा भाग चौहानो मे नष्ट हो गया है। ऐसा होना स्वाभाविक होता है। यह अवस्था केवल चौहानो की ही नही हुई, वल्कि ससार की अन्य जातियो मे भी यही वात देखी जाती है। किसी समाज अथवा जाति की श्रेष्ठता उसके किसी एक व्यक्ति तक ही प्राय सीमित रहती है और उसके वाद वह धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। इस प्रकार की परिस्थितियाँ किसी एक स्थान मे नही, वल्कि ससार मे सर्वत्र देखी जाती है।

राजस्थान मे जितने श्रेष्ठ पुरुप चौहानो मे कवियो के द्वारा माने गये हैं, उनमे भटिण्डा का गोगा नामक चौहान भी वहुत प्रसिद्ध है। जिन दिनो मे गजनी का वादशाह महमूद अपनी वडी सेना लेकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के किये आया था, उस समय शूरवीर और स्वभिमानी गोगा अपने चवालीस लडको को साथ लेकर उसके साथ युद्ध करने लगा था। शत्रु के साथ उसने विकट सग्राम किया था और अपने समस्त पुत्रो के साथ वह उस युद्ध मे मारा गया था। विजयी महमूद उसके वाद मरुभूमि मे होकर अपनी सेना लिए हुये अजमेर मे पहुँचा और वहाँ पर उसने भयानक आक्रमण किया। अजमेर के चौहान राजपूतो ने गजनी की सेना के साथ भयानक युद्ध किया और महमूद को घायल करके पराजित किया। अभिमानी महमूद को वहाँ से भागना पडा।

इसके वाद वादशाह महमूद नादोल होकर नाहरवाला और सोमनाथ की तरफ गया। जिस समय वह अपनी विराट सेना के साथ नादोर पहुँचा, उस समय वहाँ के राजा ने आक्रमणकारी सेना के साथ युद्ध किया। नादोल मे उसके प्रसिद्ध राजा लाक्षा के समय की खुदी हुई मुझे एक शिला लेख मिली। उसमे लिखा हुआ है कि लाक्षा अजमेर के चौहानो की उस शाला का आदि पुरुष है, जो अजमेर से यहाँ आयी थी।

सन् ६८३ ईसवी मे नादोल अजमेर को कर देता था, और वह उसकी अधीनता मे था। लाक्षा ने वहाँ पर जो दुर्ग वनवाया है, वह पश्चिमी शिखर के ऊपर वना हुआ है। यह दुर्ग अत्यन्त सुदृढ और प्राचीन काल की तरह के शिल्प के साथ वनवाया गया है। उसमे पर्वत के वहुत ही मजबूत पत्थर लगे हुये है। वहाँ पर मुझे एक दूसरा शिला लेख मिला है। उसमे

भतीजे लाक्षा के अनल और अनुप नामक दो लड़के पैदा हुए थे। उनके साथ विवाह
जैशलमीर के राजा ने नारियल भेजा था। उसके बाद मालूम हुआ कि उस वंश की
वैश्या के गर्भ से हुई है। इस दशा मे वे लोग अजमेर से निकाल दिये गये थे। उस
अपने मामा के यहाँ जाकर रहने लगे।

अनल का विवाह मीना सामन्त की लडकी के साथ हुआ था और उससे चि
हुआ। चित्ता के वश के लोग सदा से महीरवाडा का शासन करते आये थे। आमेर के
चित्ता के जो उत्तराधिकारी रहते थे, उनकी सख्या पन्द्रह थी। उनके बाद उनका सो
अजमेर के मुसलमानो के द्वारा मुसलमान बनाया गया और उसका नाम दाऊद खा रख
समय से लोग मुसलमानो मे माने गये।

दाऊद खॉ आथुन नामक गाँव मे रहता था। उस गाव के सम्बन्ध के कारण
सरदार आथुन खाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। चाङ्ग, झक और राजसी नगर उसके अधि
थे। अनूप का विवाह भी एक मीना कुमारी के साथ हुआ उसके बुडा नामक एक
हुआ। बुडा के वश वाले अपने पूर्वजो की रीति नीति पर बराबर चलते रहे। बुडार,
और मन्दिला इत्यादि नगरो मे वे लोग रहा करते थे!

इन मीना लोगो के वश का सम्बन्ध राजपूतो के साथ था लेकिन चरित्र मे
ऊचे गुण नही थे। वे लोग चरित्रहीनता और लूटमारी के लिए बहुत पहले से प्र
कवि ने अपने ग्रथ मे लिखा है कि अजमेर के राजा विशाल देव ने इन मीना जाति
भयानक रूप से दमन किया था। उस दमन के परिणाम स्वरूप उन लोगो को अजमेर
पर पानी छिडकने का काम करना पडा। इन घटनाओ से मालूम होता है कि इस
बहुत पहले से अत्याचारी और लूटेरे थे।

मीना जाति के राजा की शक्तियाँ जब निर्बल हो गयी थी और उसका डर
को न रहा तो उसके बाद मीना जाति के लोग मनमानी अत्याचार करने लगे। अजमे
के साथ जब मन्दोर के परिहारो का युद्ध हुआ था, उस समय मन्दोर राजा की तरफ से
माहीर लोग धनुष-बाण लेकर युद्ध मे गये थे। इसका वर्णन चन्द कवि ने अपने ग्रन
है। उसने लिखा है कि मन्दोर के राजा ने उन माहीर लोगो को पहाडी रास्ते की रक्षा
युद्ध के समय नियुक्त किया था। मन्दोर का राजा माहीर अथवा मीना लोगो को
भली प्रकार जानता था। उसे इस बात का विश्वास था कि ये लोग अपनी भयानक
प्रमाण देगे।

चौहानो को समाचार मिला कि मन्दोर के राजा की तरफ से पहाडी
लिए मीना लोग नियुक्त किये गये है। उनको पराजित करना आसान नही है। चौह
सुन कर बडा क्रोध मालूम आ और मीना लोगो को पराजित करने के लिए शूरवीर
गया। साहसी काना अपनी सेना के साथ पहाड की उस दिशा की तरफ रवाना हुआ,
चार हजार मीना लोग युद्ध के लिये तैयार खडे थे।

दोनो तरफ से युद्ध आरम्भ हुआ और बहादुर मीनो के बाणो से राजपूत
जख्मी होकर गिरने लगे। यह दशा कुछ देर तक बराबर चलती रही। मीना लोग
मार करने मे जिस प्रकार प्रसिद्ध थे, वह किसी से छिपा न था। मीना लोगों की मा
शूरवीर काना अपने घोड़े से उतर पड़ा और उसने शत्रुओ के साथ तलवार की मार

के लडका पैदा हुआ। वह महान पराक्रमी और बुद्धिमान था। उसके कोई पुत्र न होने के कारण उसका छोटा भाई जाल को अधिकार मिला। उसके बाद मानराजा अधिकारी बना। अनलदेव उसका पुत्र था।*

मानराजा कुछ दिनो तक चौहानो का प्रधान रहा और वह अपने वश पर शासन करता रहा। इसके बाद उसमे ससार के प्रति विराग की भावना उत्पन्न हुई। संसार का जीवन उसको व्यर्थ मालूम होने लगा। उसको विश्वास हो गया कि जीवन मे दुख भोगने के सिवा और कुछ नही है, यह ससार कष्टमय है। वह धार्मिक ग्रथो का अध्ययन किया करता था और इस बात को सोचा करता था कि यह ससार नाशवान है। इसकी कोई बात स्थायी नही है। जीवन मे जो कुछ दिखायी देता है, वह किसी भी क्षण नष्ट हो सकता है। माया और मोह के सिवा इसमे और कुछ नही है। इस प्रकार के विचारो से प्रभावित होकर उसने एक बार अपने अधीन सामन्तो के पास आदेश भेजा कि आप लोग धार्मिक जीवन व्यतीत करते हुए दूसरो को सदा सहायता पहुँचाने की चेष्टा करो।

मानराजा ने एक होम का श्रीगणेश कराया और उस होम का कार्य सम्वत् १२१८ श्रावण मास शुक्ल पक्ष चतुर्दशी को समाप्त हुआ। उस समय शिव की मूर्ति को पञ्चामृत से स्नान कराया और अपने गुरु तथा ब्राह्मणो को उनकी अभिलाषा के अनुसार सोना, चाँदी अन्न और वस्त्र दान मे दिये। उँगलियो मे कुश की अँगूठियाँ पहनकर तिल, चावल और जल लेकर वह महावीर के मन्दिर मे गया और अपने इष्ट देवता के माथे पर चन्दन लगाकर जल देने के बाद उसकी आराधना की और उसने सुन्दर गाँछा † वश के लोगो के लिए भेट का सकेत करते हुए पाँच मुद्रा मासिक वृत्ति निर्धारित कर दी। उसने कहा:

'मैं अपने निर्णय के अनुसार इस बात की घोषणा करता हूँ कि इस वश का जो कोई अधिकारी होगा। वह इस वृत्ति को बराबर प्रचलित रखेगा। जो इस वृत्ति का दान करेगा, वह साठ हजार वर्ष तक वैकुण्ठ मे रहेगा और जो इस वृत्ति को पूरा न करेगा, वह साठ हजार वर्ष तक नरक मे रहेगा।

प्रायवशीय, जैन धर्मावलम्वी ओसवाल लोगो की एक शाखा है, धरणीधर के लडके करमचद मेरे मत्री और शास्त्री मनोरथराम, इसके विशाल और श्रीधर नामक दो लडको ने शिला-लेख पर लिखकर मेरा नाम अमर कर दिया है।" श्री अनल ने अपने हाथ से यह पत्र लिखकर प्रदान किया। सम्वत् १२१८

वहाँ पर मैंने कई एक ग्रथ ऐसे प्राप्त किये, जो मेरे इस कार्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इन ग्रथो मे एक ग्रन्थ राजस्थान के ३६ राजवशो का विवरण देता है। एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसमे भारतवर्ष के प्राचीन भूगोल का वर्णन है। इस तरह यहाँ जो कई एक ग्रन्थ मिले है, उनसे मुझे अपने इतिहास की बहुत अच्छी सामग्री प्राप्त होती है। एक ग्रन्थ ऐसा भी मिला है, जिसमे विक्रम तथा महावीर के जन्म का वर्णन है और जैन धर्मावलम्वी नरेशो मे सब से प्रसिद्ध श्रीनीक और अम्प्रोति के वशजो का इतिहास है। महमूद बुलवन, अल्ला पुकारने का नाम खूनी और भारत विजयी नादिरशाह के नामो के सिक्के मुझे इस स्थान मे मिले है।

---

* मानराजा जो जाल के बाद प्रधान बनाया गया था, उसका लडका अनलदेव देव लक्षम मे बारह पीढी पहले सन् ८६८ ईसवी मे पैदा हुआ था।

† सुन्दर गाँछा जैनियो की चौरासी शाखाओ मे एक शाखा है।

प्रकार की सहायता प्राप्त हो सकी। इसलिए आक्रमणकारियों का साहस सदा के
गया। उनके अत्याचार वहीं से खत्म हो गये।

मीना लोगों के सम्बन्ध मे अधिक हम आगे लिखने की कोशिश करेगें। यहाँ
कुछ नीचे प्रकाश डालकर हम समाप्त कर देगे। माहीर लोग अपने पूर्वजों के नि
आज तक पालन करते है। उनमे नया कोई परिवर्तन देखने मे नही आता। उन लोगों
के साथ विवाह किये जाते है। विधवाओ के साथ होने वाले विवाह को उनमे 'नाथ
जाता है। राजपूत लोग विवाह के समय कागली नामक एक दण्ड उनसे लिया करते
उन लोगो को रुपये देने पडते है। इस प्रकार के विवाह के समय वर के सिर पर मौरके
की टहनी बाँध देते है। विवाह मे सात बार घूमने की उनमे भी प्रथा है। अर्थात्
सात कलशे नीचे-ऊपर रखकर वे फेरे डाले जाते है। वर और कन्या के वस्त्रों मे
विवाह करने की प्रणाली माहीर लोगो मे अब तक प्रचलित है और सभी लोग उसके
पालन करते है।

इस प्रकार की प्रथाओ मे एक विलेष बात यह है कि जो माहीर लोग मुसल
है, वे भी विवाह के समय इसी प्रकार के नियमो का पालन करते है और उनके
पुरोहितो के द्वारा सम्पन्न होते है। उनके सामाजिक सस्कारो मे मुसलमान होने के बाद
नही आया। माहीर लोगो की यह एक विशेषता है।

इस प्रकार की बातो की खोज के समय मुझे मालूम हुआ है कि विधवा स्त्रियो के f
माहीर लोगो मे ही नही होते थे, बल्कि अत्यन्त प्राचीन काल मे ब्राह्मण और राजपूत
स्त्रियो के साथ विवाह किया करते थे। उनके विवाहों मे उस समय किसी प्रकार की
लेकिन आजकल ब्राह्मणो और राजपूतो मे विधवा विवाह का प्रचार नही है। ऐसा
कि विधवाओ के विवाह की रुकावट प्राचीन काल मे न थी बल्कि वह बीच मे f
पैदा की गयी है।

गहलोत राजपूतो के मेवाड़ मे राज्य का विस्तार करने के पहले वहाँ पर जो
थे, उनमे विधवा विवाह की प्रथा प्रचचित थी। इसके बहुत-से प्रमाण पाये जाते है।
पूतो मे विधवा विवाह की प्रथा पायी जाती थी, वे इस स्थान के रहने वाले प्राचीन
वशज थे और इन दिनो मे उनको राजस्थान मे भूमिया कहा जाता है। पुराने
चिनानी, खारवार, उत्तायन और दया इत्यादि नामक जातियो के जो उल्लेख पाये जाते
का सम्बन्ध उन्ही लोगो के साथ था। अरावली पर्वत के बहुत से स्थानो मे उन
अब भी पाये जाते है। परन्तु उनकी सख्या बहुत कम है।

माहीर लोगो मे विवाह का कार्य बहुत आसानी के साथ होता है और उसमे f
की कोई कठिनाई पैदा नही होती। उन लोगो मे विवाह-विच्छेद का संचलन भी है।
पुरुष मे कुछ विगाड पैदा हो जाय और ऐसे कारण पैदा हो गये हो, जिनसे वे एक, दू
रहना न चाहे तो उनको विवाह-विच्छेद करने का सामाजिक अधिकार है। इसके लिए
दुपट्टे का कुछ भाग फाडकर स्त्री के हाथ मे दे देता है। उसके बाद उसका सम्बन्ध
विच्छेद हो जाता है। जिस स्त्री का इस प्रकार परित्याग होता है, वह स्त्री उस दुपट्टे
हाथ मे लेकर और अपने सिर पर जल से भरे हुये दो कलशे नीचे-ऊपर रखकर किसी मार्ग
पूर्वक निकलती है। उस समय जो पुरुष उस स्त्री के सिर से जल के भरे हुये कलशो को उ
है, उस पुरुष के साथ उस स्त्री का विवाह हो जाता है। उसमे यह एक साधारण नियम है

से एक दुर्ग-सा मालूम होता है। ऐसे कुछ मौके आते है, जब किसानो को अपने पशुओ के खिलाने की कोई चीज नही मिलती तो वे इसी भूसे को अपने पशुओ के खाने के काम मे लाते हैं। इस प्रकार के अवसर या तो वर्षा के दिनो मे आते है अथवा उन दिनो मे, जब उनके खेतो मे फसल खडी होती है।

यहाँ के किसान अपने इस भूसे को सुरक्षित रखने के लिए एक खास तरीका प्रयोग मे लाते है। भूसे की ऊँचाई तेरह हाथ पन्द्रह हाथ अथवा बीस हाथ बनाकर मिट्टी और गोबर से लेस देते है और उसकी रक्षा के लिए काँटे लगा देते है। मिट्टी और गोबर लगाने से वह भूसा दस वर्ष तक खराब नही होता और वह पशुओ के खाने के योग्य बना रहता है। कभी दुष्काल के पडने पर जब उनके खेतो मे कोई पैदावार नही होता तो किसानो के पशु उसी भूसे को खाकर जिन्दा रहते है।

मरुभूमि मे एक ही प्रकार का दृश्य देखने को मिलता है और सम्पूर्ण मरुस्थली प्रकृति की शोभा से वचित रहती है। परन्तु लूनी नदी को पार करने के बाद यह दृश्य बदल जाता है और फिर तरह-तरह के पेड-पोधे दिखायी देने लगते है।

३० अक्टूबर—इक्कीस मील का मार्ग चलने के बाद हम लोग राजस्थान के प्रसिद्ध व्यावसायिक नगर पाली मे पहुँच गये। उस नगर के जो दृश्य आँखो के सामने से गुजरे, उनमे वे दृश्य सामने आये, जो उस नगर मे होने वाले अत्याचारो की याद दिला रहे थे।

किसी समय राजपूतो के दो पक्षो मे भयकर युद्ध इस राज्य मे हुआ था, उस समय दोनो पक्ष के लोग पाली नगर पर अधिकार करना चाहते थे। उस नगर के निवासी उस युद्ध से भयभीत हो गये थे और उन लोगो ने अपने नगर की रक्षा के लिए एक मजबूत और ऊँची दीवार अपने नगर के आस-पास खडी कर ली थी। कुछ इसी प्रकार का इरादा प्रसिद्ध व्यवसायी नगर भीलवाडा की सुरक्षा के लिए भी किया गया और जब उसकी रक्षा के लिए दीवार का घेरा डालना निश्चय किया गया तो आपत्ति पैदा की गयी। पाली मे जो दीवार खडी की गयी थी उसका कुछ हिस्सा अब तक मौजूद है और उसको देखकर इस बात का स्मरण होता है कि यह दीवार पाली मे किस भयकर समय मे खडी की गयी थी।

पाली नगर मे दस हजार की सख्या मे मनुष्य बसते हैं। बहुत प्राचीन काल से यह नगर वाणिज्य के लिए प्रसिद्ध रहा है और इस राज्य की प्रतिष्ठा के साथ इस नगर का राजनीतिक सम्बन्ध कायम हुआ।

प्राचीन काल मे मन्दोर के राजा ने ब्राह्मणो की एक शाखा को दान के रूप मे पाली नगर दिया था। उस समय से यह नगर उन ब्राह्मणो के अधिकार मे रहा। सन् ११५६ ईसवी मे मरुभूमि के राठोर वश का आदि पुरुष शियाजी जब द्वारिका से गगा तक यात्रा करके लोटा था तो वह इस पाली नगर मे विश्राम करने के लिए ठहरा था।

पाली के रहने वाले ब्राह्मणो ने उस समय शिया जी के आने का लाभ उठाना चाहा और इसलिए उन्होने अपने प्रतिनिधियो को शियाजी के पास भेजकर प्रार्थना की कि हम लोगो को पहाडी मीना लोगो से बहुत बडा कष्ट मिल रहा है। वे लोग हमेशा इस नगर मे आकर लूट-मार किया करते है।

शिया जी ने उन ब्राह्मणो के प्रतिनिधियो की बाते सुनी और उसने पाली के ब्राह्मणो की सहायता करने का बचन दिया। उसने पहाडी मीना मोना लोगो पर आक्रमण करके उनको नष्ट-भ्रष्ट किया

के द्वारा कैद होने का डर नही था। सोनीगर वंश के लोग भी इसी प्रकार का काम
उनके अत्याचार अत्यन्त भयानक थे।

एक समय की घटना है। कोई मनुष्य विवाह करके अपनी नव विवाहिता स्त्री
गोदवारा के रास्ते से जा रहा था। कुछ लुटेरों ने उन दोनों को पकडा और उन्हे ग
आये। जो मनुष्य विवाह करके जा रहा था, उससे दण्ड मे एक लम्बी रकम मॉगी गई
दण्ड को अदा न कर सका। इसलिए उसको बहुत दिनों तक कैद मे रहना पडा। उ
दोनो को छोड दिया गया।

इस प्रकार लोगो को पकडने के लिए लुटेरो का एक दल छिपे तौर पर इधर
करता था। इस प्रकार की चोरी और लूटमारी यहॉ पर बहुत दिनो से होती चली

मारवाडी मित्रो के साथ इस प्रकार बाते करते हुए हम लोग अपने रास्ते पर
और संकटपूर्ण मार्ग से पॉच मील आगे निकल गये थे। इसके बाद गानोरा का सामन्त
से आदमियो के साथ मेरे पास आया और सम्मानपूर्वक उसने मुझसे भेट की। इस सा
चीत के सिलसिले मे अपनी विपदाओ की एक कहानी मुझसे कही। उसकी बातो को
उसके साथ अपनी सहानुभूति जाहिर की।

हम लोग घोडो पर बैठे हुए उस स्थान की तरफ चलने लगे, जहॉ पर हम लोगो
होने वाला था। रास्ते मे उस सामन्त के साथ राणा और मारवाड के राजा के सम्बन्
होती रही। उसने राणा के सम्बन्ध मे अनेक बाते मुझसे पूछी। सामन्त अजित सिंह
आदमी है। उसकी अवस्था तीस वर्ष, लबा शरीर और देखने मे साहसी मालूम होता है
गोदवारा मे एक प्रसिद्ध नगर है। वहॉ से राणा को पहले चार हजार राठौर सेना
प्राप्त होती थी। उस सेना के वेतन के स्थान पर भूमि दी जाती थी। उस भूमि से
सैनिक अपना निर्वाह करते थे।

गानोरा का सामन्त मेवाड के सोलह प्रधान सामन्तो मे एक था। समय की गति
प्रदेश मारवाड मे मिला लिया गया है। और अब उसका राजा मारवाड का शासक है इ
मे भी गानोरा के सामन्त की राजभक्ति मेवाड के राणा के प्रति इतनी अधिक है कि
समारोह मे मारवाड के राजा के बदले वह अपने प्राचीन स्वामी राणा को ही आमन्त्रित
और राणा के द्वारा असिबन्धन का सस्कार पूरा होता है।

राणा के प्रति उसकी जो यह राजभक्ति थी। वह मारवाड के राजा से छिपी न
और उस सामन्त से इसका बदला लेने के लिए गानोरा का दुर्ग गिरवा दिया। परन्तु उ
पर इसका कोई प्रभाव न पडा। आज भी उस सामन्त की यह हालत है कि राणा का
जब उसे कोई सन्देह राणा का देता है तो वह सामन्त बडे सामन्त के साथ राणा की
पालन करता है।

गानोरा के राजपूत स्वाभिमानी है और किसी प्रकार की विपद आने पर वे अपनी
की रक्षा करना जानते है, उनके पूर्वजो ने भी अनेक अवसरो पर अपनी बहादुरी का परि
था। उनका प्रभाव उनकी सन्तान पर भी पडा है। कहा जाता है कि उन राजपूतो के
मुगल सेना के आक्रमण करने पर सग्राम किया था और उस युद्ध मे उन लोगो ने अपनी व
अच्छा प्रमाण दिया था।

यह बात सही है कि आजकल गानोरा का प्रदेश मेवाड राज्य ने अलग है।
कभी उसका सामन्त राणा के दरबार मे आता है तो उसका उचित और आवश्यक सम

पाली नगर में जो चीजें तैयार होती हैं और दूसरे नगरों तथा देशों के साथ जिनका व्यापार होता है उनमें नमक प्रधानता रखता है। यहाँ का बना हुआ नमक बहुत अधिक दूसरे स्थानों को जाता है और उसके द्वारा इस नगर को आमदनी भी अच्छी होती है। पता लगाने के बाद मुझे मालूम हुआ है कि इस नमक से होने वाली आमदनी राज्य की आमदनी की आधी से कम नहीं होती। यहाँ पर नमक की खानों में पञ्चभद्रा, फलोदी और डीडवाना प्रमुख हैं। इन झीलों में बहुत अधिक नमक तैयार होता है। पञ्चभद्रा झील का विस्तार कई सौ मीलों तक है। पाली नगर में जो नमक तैयार होता है उससे वर्ष में पचहत्तर हजार रुपये की आमदनी होती है। मारवाड़ जैसे गरीब राज्य के लिये यह आमदनी एक बड़ी आमदनी है।

इस प्रदेश में वाणिज्य की जो चीजें आती हैं, उनकी रक्षा का कार्य चारण और भाट लोगों को करना पड़ता है। ये लोग आमतौर पर कवि होते हैं और अपनी कविताओं के द्वारा राजवंश की प्रशंसा का गाना गाया करते हैं। केवल इसीलिये राज्यों में इन कवियों को प्रधानता दी जाती है और वे पूज्य माने जाते हैं। कोई भी इनको नाराज नहीं करना चाहता। क्योंकि अप्रसन्न होने पर कविता करने का व्यवसाय रखने वाले चारण और भाट शाप देने की धमकी दिया करते हैं और उनके शाप से सभी लोग बहुत भयभीत रहते हैं।

इन चारण और भाट लोगों का डर अधिक लोगों को रहता है कि प्रत्येक अवस्था में लोग उनको खुश करने की कोशिश करते हैं। यहाँ तक कि लुटेरे लोग, जंगली कोल भील और मरुभूमि के भयानक सराई लोग भी उनके शाप से बहुत डरते हैं।

राज्य की तरफ से व्यावसायिक आने जाने वाले माल की रक्षा का कार्य इन लोगों को इसलिये दिया जाता है कि उनके भय से कोई बदमाश और लुटेरा गिरोह माल पर हमला नहीं कर सकता। इस कार्य को राज्य में इतनी सफलता के साथ दूसरा कोई नहीं कर सकता, जितनी सफलता के साथ ये चारण और भाट लोग कर सकते हैं। इसीलिये राज्य की तरफ से इस कार्य का भार इन्हीं लोगों को हमेशा दिया जाता है।

इन चारणों और भाटों की इस शक्ति को सभी लोग जानते हैं और सब का यह विश्वास रहता है कि इनमें किसी के साथ रहने से डर नहीं रहता। इसलिये जिन लोगों को कहीं जाना होता है तो वे अपनी और अपने माल की रक्षा के लिये राज्य के इन संरक्षकों को साथ लेकर चलते हैं। इनकी सहायता से व्यापारी लोग झालर नाचौर और राधनापुर होकर सुराट एवम् मस्कत द्वीपों में सुरक्षित पहुँच जाते हैं।

पाली नगर से दस मील पूर्व की तरफ पुरान गिरी नामक एक पहाड़ है। उसके शिखर के ऊपर एक मन्दिर बना हुआ है। कहा जाता है कि सौराष्ट्र के पालिताना के एक बौद्ध ने इस मंदिर को बनवाया था। वह बौद्ध इन्द्रजाल जानता था। लेकिन उसकी इस जानकारी को वही बौद्ध लोग मानते थे जो उस प्रदेश में अधिक संख्या में रहा करते थे।

यहाँ पर एक पुराने मित्र के साथ मेरी भेंट हुई। वह मित्र गफ के नाम से प्रसिद्ध था। वह यहाँ के दक्षिणी-पश्चिमी प्रदेश में रहने वाले सराई कोशा इत्यादि जंगली और पहाड़ी असभ्य लोगों में घोड़े प्राप्त करने के लिये घूम रहा था।

३० अक्टूबर खरेरा

३१ अक्टूबर रोहित

१ नवम्बर—लूनी के उत्तरी किनारे पर सङ्खली नामक एक स्थान है। वह स्थान पाली से दूर हमारी यात्रा के मार्ग में है। पाली से लेकर लूनी नदी तक तीन मील की दूरी में जो ग्राम बसे

रूपनगर का सामन्त राणा के दूसरी श्रेणी के सामन्तो मे पहले माना जात
पर हमसे वह सामन्त मिलने आया था, वहाँ से उसका महल और दुर्ग दिखायी देता
दुर्ग पहाड के पश्चिम की तरफ है। उस दुर्ग के सामने एक मार्ग है, जो अनेक कठि
हुआ है। किसी भूमि के पीछे उसके स्वामी के साथ रूपनगर के सामन्त का कुछ दिन
चल रहा है। रूपनगर का सामन्त उस भूमि पर अधिकार करना चाहता है। इसि
बार युद्ध करना पडा है।

रूपनगर का सामन्त सोलकी राजपूत है और वह नाहरवाला के वश मे
प्रसिद्ध राजा सदराज के युद्ध का शख इस समय उसके पास है।* अपने समय मे
पराक्रमी और शूरवीर राजा था। उसने अपने राज्य की सीमा का बहुत विस्तार कर
सन् १०९४ ईसवी से लेकर लगभग आधी शताब्दी तक उसने अनहलवाडा को अपने
रखा था। वह शिक्षा और शिल्प का बहुत समर्थक था। उसने अपने शासन काल मे
मे बडी उन्नति की थी।

रूपनगर के वर्तमान सामन्त के पूर्वज बिदनौर की प्रसिद्ध तारावाई के चाचा थे।
स्वभाव से जिस प्रकार वीरागना थी, उसके अनुसार उसने एक शूरवीर के साथ विवाह
प्रतिज्ञा की थी और अपने निश्चय के अनुसार उसने वीरात्मा पृथ्वीराज के साथ अ
किया था। पृथ्वीराज ने ताराबाई की वेदना को दूर करने के लिए विवाह से पहले ही
की जन्म भूमि और उसके पिता के राज्य बिदनौर का उद्धार उसके शत्रुओ से किया था।
रूपनगर के सामन्त के जीवन की एक घटना का वर्णन करना जरूरी मालूम होता है।

राणा रायमल के लडको मे आपस की कलह बडे भयानक रूप मे चल रही थी
तथा मालवा के बादशाह राणा रायमल की इन भीतरी कमजोरियो का लाभ उठाना
इसलिये:उन दिनो मे मेवाड का भाग्य बडे सकट मे चल रहा था। उन दोनो बादशाहो
रायमल को गोदवारा प्रान्त का खतरा था। मीना और माहीर लोग मेवाड के मैदान
करते थे और नादोल के स्वाधीन चौहान राजा षण्ड के द्वारा उनको सभी प्रकार क
मिलती थी। नादोल की चौहान सेना ने द्वेसुरी पर अधिकार कर लिया था। पृथ्वीराज
चौहानो का अधिकार खतम करना चाहता था। इसके लिए उसने शुद्धगढ के सोलकी
सहायता माँगी।

सोलकी लामन्त के लडके के साथ राजा षण्ड की एक लडकी ब्याही थी। इ
राजा ने जो कुछ सोचा था, उसमे एक बडी बाधा दिखाई पडने लगी। पृथ्वीराज किस
द्वेसुरी से चौहानो का अधिकार हटाना चाहता था। उसने राजनीतिक दूरदेशी से काम ि
उसने सोलकी सामन्त के साथ परामर्श करके यह निश्चय किया कि द्वेसुरी से चौहानो का
हटा कर उसका अधिकार सोलकी सामन्त को दे दिया जायगा। उस सामन्त के साथ पृथ्व
यह निर्णय हो गया।

सोलकी सामन्त भी ऐसे अवसर पर सोच-समझकर काम करना चाहता था। इ
द्वेसुरी पर जिस चौहान राजा के साथ उसको यह युद्ध आरम्भ करना था, उसकी लडकी
उसका लडका विवाहित था। लेकिन दूसरी तरफ उसने पृथ्वीराज के साथ जो निश्चय ि
उसमे उसको द्वेसुरी के अधिकार का प्रलोभन था। इस अवस्था मे उसने एकान्त मे अपने

---

* राजा सदराज ने १०९४ ईसवी से लेकर ११४४ ईसवी तक राज्य किया था।

अपराध राणा को लगे, इस अपराध के कारण राणा जाति से च्युत किया जाय और मरने पर उसको नरक का भोग करना पडे इसलिये भाटी ने अपनी हत्यायें की।

इस बात को सभी जानते थे कि भाट के हत्या के अपराध मे मनुष्य को लोक और परलोक दोनो मे नरक भोगना पडता है। लेकिन राणा अमर सिंह पर इसका कोई प्रभाव न पडा। क्योकि वह जानता था कि एक बार ऐसा करने से ये लोग रोजाना इस प्रकार की प्रार्थनायें किया करेगे और किसी प्रार्थना के पूरा न होने पर ये लोग अपने इसी अस्त्र का प्रयोग करेगे। यह समझ कर राणा अमर सिंह ने उनकी आत्महत्याओ की कुछ परवा न की और जो भाट बाकी रह गये थे उनको राज्य से निकाल कर उनके भूमानिया इलाके पर अधिकार कर लिया और इस बात का आदेश कर दिया कि आज के बाद एक भी भूमानिया भाट नही आ सकता।

राणा अमर सिह के उस आदेश का पालन अब तक मेवाड राज्य मे होता था। लेकिन जिस समय राणा भीम सिह ने घोषणा की कि मेवाड राज्य की भागी और निकाली हुई प्रजा फिर इस राज्य मे रह सकती है, उस घोषणा को सुनकर भूमानियाँ भाट फिर मेवाड मे आकर रहने लगे।

पाइमा के पूर्वज जिस कारण से मेवाड राज्य से निकाले गये थे, वह सब को मालूम है और पाइमा को भली प्रकार जानता है। लेकिन अपना मतलब निकालने के लिए वह उस पुरानी घटना को भुलाये रहता है। अगर उसकी प्रार्थना कोई स्वीकार न करे तो वह उसके बदले आत्म-हत्या के लिए धमकी देता रहता है और इसके लिए वह अपनी कमर मे सदा तलवार बाँधे रहता है। भाटो के शाप का जिस प्रकार प्रचार है, उसको जानते हुये भला कौन आदमी उनकी हत्या का कारण बनेगा।

श्यामा के मुकदमे मे उसकी विजय अधिक कर देने के कारण हुई थी। वह उस मुकदमे मे विजयी तो हो गया। लेकिन उसे अधिक कर देना पडे इसके लिए उसने राणा भीम से प्रार्थना की और जब राणा ने उसकी प्रार्थना को मन्जूर न किया तो वह अपने हाथ मे कटार लेकर राजा के सामने आत्म-हत्या करने के लिए तैयार हो गया। राणा भीम सिंह अमर सिंह की तरह साहसी और निर्भीक न था। पाइमा की होने वाली आतमा हत्या को सुनकर घबरा उठा और उस मामले मे उसने मुझको मध्यस्थ बनाया।

राणा का एक दूत इस समाचार को लेकर मेरे पास आया और उससे पूरी घटना बताकर मुझसे कहा कि इसका निर्णय करने के लिए राणा ने आपको मध्यस्थ नियुक्त किया है। इस समाचार को सुनकर राणा के दूत के साथ मैने अपना एक नोकर भेजा और उसके द्वारा मैने पाइमा को बुलवाया।

पाइमा के आने पर उसका मोटा ताजा शरीर मैने देखा। वह देखने मे सुन्दर और साहसी मालूम होता था। उसके आने पर मैंने उससे बाते करना आरम्भ किया और उसके मुख से पूरी घटना को सुनकर मैने उससे कहा जो कोई व्यवसाय का माल लेकर मेवाड के राज्य के भीतर से निकलेगा, उनको राज्य के निर्धारित कर देना पडेगा। इसके लिए अगर आप लोग आत्म हत्या का भय दिखाने के लिए तैयार होगे तो उसका कोई नतीजा न निकलेगा। राज्य की तरफ से कर वसूल करने की जो व्यवस्था की गयी है और जिस पर जो कर लगाया गया है, उसके अनुसार उसको कर देना पडेगा। अगर आप इस नियम के अनुसार कर देने के लिए तैयार होंगे और इस बात को लिखकर स्वीकार करेगे तो बोझा उठाने वाले आपको चालीस हजार मे पाँच सौ बैलो का

होने लगी, उस मारकाट मे राजा षण्ड का और सौलंकी सामन्त का सामना हुआ।
दूसरे पर आक्रमण किया। इसके कुछ समय बाद राजा षण्ड मारा गया।

चौहान नरेश के मारे जाने पर उसकी सेना निर्बल पड़ गयी। उस दिन
अशान्ति रही। लेकिन दूसरे दिन की परिस्थितियाँ बदल गयी। पृथ्वीराज ने द्वेसु
अपनी विजय का झण्डा फहराया। इसके बाद कई दिनो मे वहाँ पर शांति कायम हुई।
अपने निश्चय के अनुसार द्वेसुरी का अधिकार सोलकी सामन्त को दे दिया और इ
अपने हस्ताक्षरो से एक पत्र लिखकर दिया। उसमे उसने लिखा :

द्वेसुरी के विजय के बाद गोदावारा प्रदेश का अधिकार शुद्धगढ के सोलंकी
गया। अब इस पर सीसोदिया वश का कोई भी व्यक्ति अधिकार नही कर सकता।
इसको मैने दान मे देकर यह पत्र लिखा है।

इस घटना को बीते हुये वहुत दिन हो चुके है। लेकिन उस समय शुद्धगढ के
वालो के साथ चौहान राजा षण्ड के वश वालो की जो शत्रुता पैदा हुई थी, वह
प्रकार चली जा रही है। इस शत्रुता मे सत्रह पीढियाँ बीत चुकी है। लेकिन उसमे कोई
आया। ससार मे ऐसा अन्यत्र शायद ही कही दिखायी पड़े।

उदयपुर की पहाड़ी भूमि और उसकी दक्षिणी सीमा की तरफ के प्रदेश का जल
कर नही है। इसलिये सीसोदिया वश के जो लोग वहाँ पर रहा करते है, उनके स्वास्थ्य
मे चौहान राजपूतो की शारीरिक अवस्थाये बहुत अच्छी है। वहाँ के राजपूतो के शारीरि
ही वहाँ के दूषित जलवायु ने खराब नही किया, बल्कि उनको निर्बल भी बना दिया है
शरीर के गोरे रग को भी नष्ट कर दिया है।

वहाँ के सीसोदिया राजपूतो की संतानो पर इसका बहुत दूषित प्रभाव
था लेकिन उससे सुरक्षित रखने के लिए जो कारण हो गया है, वह केवल
उनके वैवाहिक सम्बन्ध राजस्थान के दूसरे स्थानो और राज्यों में होते रहते
सबन्धो के कारण उनकी संतानो पर वह दूषित प्रभाव नही वड़ता, जिसका प्रभा
स्वाभाविक था।

अगर उन लोगो के वैवाहिक सम्बन्ध पहाड़ों पर रहने वाले चंदावतों और गोगु
लोगो मे ही होते तो उनकी सतान उस अवनति से कभी बच न सकती। लेकिन वैवाहि
ने उन खराबियो से उनकी सतान की बडी रक्षा की है। हमें मालूम हुआ है उन सीस
के वैवाहिक सम्बन्ध गोदवारा के राठौरो, हाड़ौती के चौहानो और दूसरे स्थानों के
साथ होते रहते है। इसलिए वहाँ के जलवायु के दूषित प्रभाव से उनकी संतान बहुत कु
रहती है।

गानोरा का सामन्त मुझसे फिर मिलने के लिए आया था। इस बार भी वह उ
के साथ मुझसे मिला, जिस प्रकार पहले मिल चुका था। उसने इस बार की भेंट मे
बहुत-सी वाते की और फिर चला गया। गनोरा के इस सामन्त मे भी मुझे उसी
नम्रता, शिष्टता और व्यवहार कुशलता मिली, जिस प्रकार मनुष्य के इन गुणो को रा
दूसरे सामन्तो मे मैने पाया था। जिन लोगो को इन सामन्तो के साथ वातचीत और व्यव
का मौका मिला है, वे निश्चय ही उनकी प्रशसा करेगे। मैने केवल गानोरा के सामन्त
वल्कि राजस्थान के समस्त सामन्तो की प्रशसा करता हूँ। यह वात सही है कि वे सब
तौर पर स्वाभिमानी है और अपने प्राची। गौरव पर गर्व करते है। लेकिन वे व्यवहार

राज्यो की परिस्थितियाँ आज पहले की सी नही रह गयी । सीधिया और होलकर के लगातार आक्रमणो के कारण इन राज्यो की पद-मर्यादा को बडा आघात पहुँचा है । फिर भी कम्पनी के प्रति यहाँ के लोगो की व्यावसायिक धारणा हमको अपनी परिस्थितियो को सावधानी के साथ सोचने और समझने के लिए बाध्य करती है । हमारा शासन चाहे जितने विस्तार मे पैदा हुआ हो और हमने यहाँ के राजाओ के प्रति कितना ही उपकार क्यो न किया हो लेकिन राजाओं की समानता करने वाले हमारे पद का निर्माण नही होता । इस दशा मे कम्पनी के प्रतिनिधि का स्वागत किस रूप मे होता है यह समझने की जरूरत है । राजपूत राजाओ की आज जो भीतरी दुरवस्थाये हैं, उन्होने उन राजाओ को अपनी श्रेष्ठता भुला देने के लिए मजबूर कर दिया है । उनकी बढती हुई दूरवस्थाओ का ही परिणाम है कि अमीर खाँ और बापू सीधिया जैसे व्यक्ति राजपूत राजाओ के समान सम्मान पाने के लिए दावा करने लगे है । राजा ने स्वय अपने प्रतिनिधि को भेजकर अमीर खाँ का स्वागत-सत्कार किया था । जो सामन्त उसके स्वागत के लिए भेजा गया था, वह कौन था सदा और कितनी ऊँची उसकी श्रेष्ठता थी इसका ख्याल नही किया गया । यह ससार है और यहाँ पर से यह होता चला आया है ।

किसी भी दशा मे जो सम्मान इन राजाओ से मराठा सेनापति को मिला है, उससे कम किसी प्रकार सतोषजनक नही हो सकता । बहुत समय से जो वकील मेरे साथ रहा है, मैंने उससे अनेक प्रकार के प्रश्न किये और इस जटिल समस्या को समझने तथा सुलझाने के लिए उसको राज-दरबार मे भेजा और राजधानी से पाँच मील के पहले ही इस स्थान पर मुकाम करके मे उसका रास्ता देखता रहा । मैं स्वय इस प्रकार के सम्मान को अधिक महत्व नही देता । लेकिन यह सम्मान मेरा व्यक्तिगत सम्मान नही है । ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधि के पद पर होने के कारण मैं वही सम्मान चाहता हूँ, जो कम्पनी के लिए योग्य और मुनासिब हो सकता है ।

मैं यह समझता हूँ कि आज का व्यवहार भविष्य मे दोनो के सम्मान पूर्ण अस्तित्वो की रचना करेगा । यही सोच-समझकर मैंने वकील को राजा के दरबार मे भेजा है । मेरी समझ मे दोनो के सम्मान की रक्षा होना चाहिए । राजा के दरबार के भेजे गये वकील * के द्वारा जब स्वागत के सम्बन्ध मे बातचीत हो गयी और मालूम हो गया कि राजा पालकी मे बैठकर कम्पनी के प्रतिनिधि के स्वागत के लिए आवेगा तो हम लोगो ने झालामद से प्रस्थान किया और दोपहर के समय हम सब के साथ जोधपुर राजधानी के तरफ रवाना हुए । राजा के भेजे हुए पोकर्ण और निमाज के दो सामन्त हमारे स्वागत के लिए राजधानी से चलकर कुछ दूर आगे आये और उन दोनो सामन्तो ने मुझसे भेट की । मैं घोडे से उतर पडा और दोनो सामन्तो से बडे प्रेम के साथ मिला । कुशल समाचार पूछने के बाद मैं फिर घोडे पर सवार हुआ और दोनो सामन्तो के साथ राजधानी की तरफ चलने लगा ।

पोकर्ण के सामन्त का नाम सालिम सिह है । वह मारवाड के सामन्तो मे सब से अधिक धनी है । इसकी जागीर का इलाका और दुर्ग मरुभूमि के बीच मे है । उसका इलाका जैसलमेर के राज्य से अलग कर दिया गया है । उसका दुर्ग बहुत मजबूत है । पोकर्ण के सामन्त के द्वारा

---

*सन् १८१८ ईसवी के दिसम्बर महीने मे अजमेर का सुपरिन्टेन्डेन्ट विल्डर जोधपुर के वकील की हैसियत से भेजा गया था, उस समय राजा ने बडे सम्मान के साथ उससे भेट की थी और स्वागत के सम्बन्ध मे निर्णय किया था ।

दूत कृष्णदास मेरी बात को सुनकर उत्तेजित हो उठा और उसने मेरी
देखकर स्वाभिमान के साथ कहा इस प्रकार दोनो राज्यो के बीच की सीमा का पृ
पर गोदवारा हम लोगो का है और वह सदा हम लोगो का होकर रहा है। प्रकृति
द्वारा मेवाड की सीमा को निर्धारित नही किया, बल्कि खाने और पीने के जितने भ
होते है, प्रकृति ने मेवाड को देखकर उसकी सीमा अलग कर दी है। इस स्थान से
बढ़ेंगे तो मेवाड की भूमि मे वे सभी फल आपको मिलेगे, जिनको देखकर और पा
होंगे, लेकिन मेवाड की सीमा को पार कर जब आप मारवाड की तरफ जायेगे तो
आपको यह कुछ नही मिलेगा।

यह कहकर राजा का दूत कृष्णदास मेरी तरफ देखने लगा और
एक गहरी साँस लेकर और मेरी तरफ देखकर कहा · आँवला आँवला मेवाड,
मारवाड।

कृष्णदाम ने कुछ ठहर कर, कर फिर कहा : आँवले का फूला हुआ पीला
दिखायी देता है, वहाँ तक मेवाड की भूमि है, मेवाड की सीमा को प्रकृति
अलग कर दिया है। उसकी सीमा का निरूपण गोदवारा के द्वारा होने
नहीं है।

कृष्णदास की इन बातो को मै चुपचाप सुन रहा था। मेरे कुछ न कहने
मारवाड के लोग अपने बबूलो का सुख भोगे, हमको उनसे कोई मतलब नही है, मै त
आँवलो के लिए कहता हूँ, हमारे आँवले हमको मिलने चाहिए।

कृष्णदास की बातो को बडी देर तक मै सुनता रहा। अपनी बात समाप्त
हो गया। मैंने गम्भीर होकर उसकी ओर देखा। मै सोचने लगा कि उसने सत्य
मेवाड और मारवाड—दोनो राज्यो की सीमा पर छोटी-सी नदी है। उसको पार
ही प्रकृति का सम्पूर्ण सौन्दर्य धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है और बबूलो के पेड त
दूर तक फैली हुई दिखायी देने लगती है।

वहाँ के सभी वृक्ष देखने मे सुन्दर नही मालूम होते। लेकिन उनके द्वारा उप
है। ऊँटो के दल के दल उन वृक्षो की पत्तियो को खाकर अपनी भूख मिटाते है। वृद्ध
ने मेरी बातो के उत्तर मे जो कुछ कहा, उनमे न्याय तो नही है, लेकिन उसमे बात
सूरती जरूर है। कृष्णदास को मै पहले से जानता हूँ कि वह बातचीत करने मे प्र
उसने दोनो राज्यो की सीमा का निर्णय करने के लिए पहाड को महत्व न देकर वृ
दिया, इसका कारण क्या है, इस पर यहाँ कुछ प्रकाश डालना जरूरी है।

कृष्णदास ने मेवाड और मारवाड की सीमा का निर्णय करते हुए जिस क
किया है, वह आज की नही बल्कि एक पुरानी कविता है। यह कविता कब कही
मौके पर कही गयी थी और उसका उद्देश्य क्या था, केवल इतनी ही बात को हम य
चाहते है। पहले कभी एक घटना घटी थी और उसी घटना के सम्बन्ध मे यह क
थी। यद्यपि वह घटना कई ग्रन्थो मे लिखी हुई मिलती है।

वह कविता पुरानी है और वहुत दिनो से जनश्रुति के रूप मे वह राजपूता
रही है। जिस घटना का हम उल्लेख करना चाहते है। वह संक्षेप मे इस प्रकार
शताब्दी के अन्तिम दिनो मे चदावत शाखा के आदि पुरुप चण्ड ने मन्दोर के
विश्वासघातकता के दण्ड मे उसको मार डाला था और उसकी राजधानी तथा

था, उनमे एक सामन्त सुरतान सिंह भी था । सन् १८०६ ईसवी मे जब यह शक्तिशाली सेना मारवाड का विध्वस और विनाश करके उसकी अपरिमित सम्पत्ति लूटकर ले गयी, उस समय जिन चार सामन्तो ने आक्रमणकारी सेना पर हमला करके उसकी लूटी हुई सम्पत्ति को छीन लिया था उनमे एक सामन्त सुरतान सिंह भी था । उस समय उन चारो सामन्तो ने भयानक युद्ध करके और अपने प्राणो का भय छोडकर भीषण रूप मे शत्रुओ का सहार किया था । - सुरतानसिंह के जीवन की अच्छाइयाँ अनेक थी । इसीलिए उसकी मृत्यु पर समस्त राजस्थान मे शोक मनाया गया ।

सुरतान सिंह चरित्रवान और एक वीर पुरुष था । उसके जीवन के गुणो की प्रशसा उसके विरोधी भी करते है । सच बात यह है कि जिसके विरोधी प्रशसा करे, वही मनुष्य वास्तव मे प्रशसा के योग्य है । सुरतान सिंह इसी प्रकार के आदमियो मे था । मैने जब जोधपुर की यात्रा की थी उसके आठ महीने के बाद उसकी मृत्यु का समाचार मुझे मिला था । जिस पत्र मे लिख कर उसके मरने का समाचार आया था, उसे नीचे दिया जाता है

जोधपुर २ आषाढ
२८ जून सन् १८२०

जेठ महीने के अन्तिम दिन, २६ जून को सूर्य निकलने के कुछ पहले आलीगोल और समस्त सामन्तो की सेना अर्थात् अस्सी हजार सेना को सुरतान सिंह के ऊपर आक्रमण करने की आज्ञा दी गयी । × उस सेना ने सुरतान सिंह के निवास स्थान को घेर कर तीन घटी तक बन्दूको से गोलियाँ चलाती रही । उसके पीछे सुरतान सिंह अपने भाई सूरसिंह और परिवार तथा वश के सभी लोगो को लेकर हाथो मे तलवारे लिए हुए निकला और उसने आक्रमण करके शत्रुओ से भयानक युद्ध किया । लेकिन उसके ऊपर यह आक्रमण उसके राजा की तरफ से हुआ था और राजा के पक्ष मे बहुत सी सेना थी । इसलिए दोनो भाई बडी देर तक युद्ध करने के बाद मारे गये । उन दोनो भाइयो के साथ नागो जी और साथ के चालीस शरमाओ का भी अन्त हुआ । उनके सिवा सुरतान सिंह के चालीस वशज युद्ध करते हुए घायल हुए । केवल अस्सी राजपूत जो सुरतान सिंह की तरफ से युद्ध करने आये थे—बाकी—बचे । वे निमाज के सामने से युद्ध छोडकर भाग गये । राजा की सेना मे चालीस सैनिक जान से मारे गये और एक सौ सैनिक युद्ध करते हुए घायल हुए । इस लडाई मे नगर के बीस (.) आदमी भी मारे गये ।

युद्ध का यह समाचार जब पोकर्ण के सामन्त को मिला तो वह उसमे शामिल होने के लिए तैयार हुआ । परन्तु कुचामन के शिवनाथ सिंह ने आश्वासन दिया और अपने नगर मे ही रहने के लिए उसने सदेश भेजा । फिर भी वह युद्ध-स्थल पर पहुँचने के लिए बार-बार चेष्टा करता रहा । वह सोचता रहा कि अपने पच्चीस सैनिको के साथ मेरा भतीजा इस युद्ध मे मारा गया है ।

-: पिछले पृष्ठ मे यह लिखा जा चुका है कि राणा भीमसिंह की लडकी के साथ विवाह करने के लिए ही यह सग्राम हुआ था और युद्ध मे अनेक प्रकार की राजनीतिक चालो से काम लिया गया था । उसका वर्णन पहले किया जा चुका है । यहाँ पर उसको सक्षेप मे लिखा गया है ।

× अलीगोल का अभिप्राय है, रुहेला सेनाये । स्वतन्त्र रुहेला सैनिक का सगठन योरप की फौजो की तरह होता है । रुहेला लोग अत्यन्त स्वार्थी होते है ।

(:) उन राजपूतो ने निमाज नगर की रक्षा बडी बहादुरी के साथ कई मास तक की थी । लेकिन् अन्त मे उनको युद्ध क्षेत्र से भाग जाना पड़ा ।

राणा के अधिकार मे आ जाने का दुख भूल गया। मेवाड-राज्य के दूसरे राजपूतो की प्रसन्नता हुई कि सीमा पर आँवलो का प्रदेश मेवाड-राज्य मे शामिल किया ग जितने भी पत्थर खुदे मिलते है, उन सभी मे कवि की वह जनुश्रुति पायी जाती है

खेतो मे इस समय जो फसल तैयार हुई थी, वह अमीर खॉ की सेना के नष्ट की गयी थी। इन बर्बादियो को वहाँ के रहने वालो के मुख से मैने सुना अफसोस हुआ। यह बात सही है कि इन सभी स्थानो की फसले लुटेरो और अन्य नष्ट की गयी थी फिर भी मेवाड-राज्य की फसलो की अपेक्षा इन स्थानो की फ थी। लोगो से बाते करने के बाद इस फसलो के सम्बन्ध मे मैने साफ-साफ समझने क्योकि इन राज्यो की आमदनी का सबसे बडा साधन खेती की फसले ही है।

अरावली पहाड से निकलकर जो छोटी-छोटी नदियाँ लूनी नदी के खारी है, अपनी यात्रा करते हुये उनमे से अनेक नदियो को हम लोगो ने पार किया। बडे ग्राम हमको मिले, वे सभी प्रजा से भरे हुये थे। यहाँ के किसानो को देख किसानो की परिस्थितियो का स्मरण हो आया। इस प्रदेश के किसान मेवाड के कि अपनी फसलो मे अधिक अनाज पैदा करते है। परन्तु ये लोग मेवाड के किसानो हालतो मे नही दिखाई देते। इस प्रदेश मे किसानो को देखकर ऐसा मालूम हो जीवन का बहुत बडा अभाव है और उनके प्राण सूख कर निर्बल पड गये है। परिस्थिति को मैने भली प्रकार समझा।

मेवाड और मारवाड की प्रजा मे इस समय जो एक बड़ा अन्तर मुझे दिखा उपेक्षा करना किसी पकार अच्छा नही मालूम हो सकता। जिस प्रदेश के किसान करते हो और अनाज की पैदावार मे जो अच्छे रहते हो उनकी परिस्थितियाँ ना क्यो दिखायी देती है, उसका स्पष्ट कारण यहाँ का शासन है।

मारवाड के राजा को उसके प्रधान मन्त्री ने शासन सम्बन्धी कार्यो मे f बना रखा है। यहाँ के राजा अपने प्रधान मन्त्री से अधिक प्रवाहित है, और इस हुआ कि प्रधान मन्त्री के द्वारा राज्य मे एक अव्यवस्था चल रही है। उसके कार सुखी और सन्तुष्ट नही है। मेरी समझ मे इस प्रदेश की प्रजा के लिये राज्य प्रत्येक भाँति कष्टमय है। यही कारण है कि वहाँ के किसान अच्छी पैदावार क नही दिखायी देते।

हरी-हरी घासो से भरे हुये शीतल स्थानो पर मुकाम करने से हम लोगो मालूम होता है। नादोल मे मुकाम करके हमको इस प्रकार की सुख अधिक मिल देख कर और उसकी प्राचीन तथा नवीन परिस्थितियो का अध्ययन कर मैने य कि मुझे जिस तरह की सामग्री की जरूरत पडेगी यहाँ पर काफी मिलेगी। इस को अधिक प्रधानता दी जाती है; लेकिन उसके राजधानी होने का कोई प्रमाण नही मिलता।

इस प्रदेश के पश्चिमी भाग मे नादोल बसा हुआ है। प्राचीन काल मे की एक शाखा यहाँ पर रहती थी। इस नादोल के राजपूतो के वश से ही सिरो झालोर के सनीगुरा लोगो की उत्पत्ति हुई। उन लोगो पर राठौर राजपूतो के हुए है और उनके अत्याचारो को उन लोगो ने सहन कर भी अपनी रक्षा की विशेषता है।

अस्सीवाँ परिच्छेद

लूनी नदी के पार वालू के विस्तृत मैदान—राजा जोधा का वसाया हुआ जोधपुर—जोधपुर का दुर्ग—राजधानी मे जाने के मार्ग—जोधपुर के राजा का स्वागत वैभव—मारवाड के राजा का महल—राज दरबार का दृश्य—स्वाभिमानी राजा मानसिंह—मानसिंह के मनोभावो मे परिवर्तन—राजा के द्वारा उपहार—राजा अजित सिंह—औरङ्गजेब के साथ अजित सिंह का संघर्ष—भीमसिंह और राजा मानसिंह—राठोर राजपूतो के गुरुदेव के कार्य—गुरुदेव के द्वारा भीमसिंह को विष दिया गया—राजा मानसिंह और गुरुदेव—राज्य मे गुरुदेव के आधिपत्य—गुरुदेव के शिष्यो की सेना—गुरुदेव और राज्य के निवासी—राज्य सामन्तो की चिन्तनाये—अमीरखाँ के सिपाहियो के द्वारा गुरुदेव की हत्या—मारवाड राज्य का उत्तराधिकारी बालक धौकलसिंह—मारवाड राज्य मे परिवर्तन—राजनीतिक सत्ता की निर्बलता—विरोधी लोगो को राजा मानसिंह के द्वारा दण्ड—राजा मानसिंह का उन्माद—राजसिंहासन पर छत्रसिंह—छत्रसिंह की मृत्यु—मानसिंह और राज्यके सामन्त—मानसिंह की राजनीति —मन्त्री अक्षयचन्द की सहायता और उसका परिणाम—प्राचीन राजधानी मन्दोर—मारवाड राज्य के वीरो के स्मारक - अभयसिंह और भक्तसिंह—राजा अजितसिंह और राजा बुधसिंह की रानिया—परिहार राजपूतो का इतिहास राजा नाहरराव—नाहरराव के स्मारक की देखभाल कार्य—मारवाड के वीरो की प्रतिमाये—तैंतीस कोटि देवताओ का स्थान—राजा अजितसिंह का वाग—वाग मे विभिन्न प्रकार के फल-फूल वाले वृक्ष—वाग की रमणीकता—मान सिंह के महल मे भोजन—राजा के साथ भेट—मारवाड से विदा का दिन का।

लूनी नदी को पार करने के वाद हम लोग वालू के मैदानो मे पहुँच गये और वहाँ से जहाँ तक नजर जाती, वालू के मैदान दिखायी देते। हम लोग जितना ही मरुभूमि की राजधानी के करीब पहुँचते गये, वालू के मैदानो का कष्ट उतना ही हम लोगो के लिये भयानक होता गया। यहाँ पर मैंने एक वात और अनुभव की। हमारे साथ के लोग गङ्गा के निकटवर्ती अच्छे भाग मे जितनी तेजी के साथ चलते रहे है उतनी ही तेजी के साथ मारवाड के लोग इन वालू के मैदानो मे चलते हुये दिखायी देते है। इसका अर्थ यह है कि यहाँ के लोग इन वालुकामय मार्गो मे चलने के अभ्यासी है। इसलिये हम लोगो की तरह इन लोगो के इन रेतीले मैदानो मे चलने मे कष्ट नही होता।

राजा जोधा का वसाया हुआ, जोधपुर नगर कैसा है, इसको देखने और जानने के लिये मेरे मन मे उत्सुकता वढ रही थी और उसके कारण रेतीले मैदानो मे चलने का कष्ट कुछ भूल भी जाता था। वहाँ का दुर्ग चारो ओर से घिरे हुए पहाडी शिखरो के वीच मे वना हुआ है और जिस स्थान पर वह दुर्ग वना है, वहाँ की भूमि बहुत कुछ एक-सी और वरावर है। वह दुर्ग अपने आस-पास के सभी स्थानो से ऊँचा और बहुत मजबूत है। दूर से देखने मे वह वडा अच्छा मालूम होता है।

दुर्ग का स्थान तीन सौ फुट से अधिक ऊँचा नही है। इसलिए इस दुर्ग की गणना उन दुर्गों मे नही की जा सकती, जो पहाडो के ऊपर बने होते है। परन्तु इस दुर्ग की इतनी ऊँचाई मे भी

सन् ६६८ खुदा हुआ है उसमे लिखा है कि लाक्षा मेवाड के राजा आइतपुर के शक्तिकुमार का समकालीन है। वह नगर भी सम्भवत बादशाह म नष्ट किया गया था।

चौहान कवि ने राव लाक्षा की बहादुरी की प्रशसा करते हुए लिखा है। से लाक्षा को कर मिला करता था और यही अवस्था चित्तौर के राजा की भी थी। देता था।

यहाँ पर महलो, मन्दिरो और दुर्ग आदि के जितने गिरे और टूटे हुए अश उन सब के सम्बन्ध मे वर्णन करना असम्भव मालूम होता है। यहाँ की बहुत-सी यह जाहिर होता है कि यहाँ पर किसी समय जैन धर्म का प्रभाव था। यहाँ पर देवता महावीर का मन्दिर बना हुआ है। वह देखने मे बहुत रमणीक मालूम हो के गुम्बज की बनावट बहुत प्राचीन काल से बिल्कुल मिलती-जुलती है। उसके रोम के मन्दिरो के निर्माण की कला का सहज ही स्मरण होता।

महावीर के मन्दिर की अनेक बाते प्रशसा के योग्य है। उसकी शिल्पकारी साथ-साथ इतनी मजबूती के साथ उसके निर्माण के समय हुई थी, जो देखने मे खूबसूरत मालूम होती है। उस मन्दिर मे जो प्रतिमाये है, कहा जाता है कि वे वर्ष पहले नदी से निकाल कर इस मन्दिर मे स्थापित की गयी थी। यहाँ के भी कहना है कि बादशाह महमूद के आक्रमण के दिनो मे वे सब प्रतिमाये उसके फेक दी गयी थी।

नादोल की बहुत-सी बाते प्रशसा के योग्य है। वहाँ पर एक जलाशय है। व चने की बावली उसका नाम है। लोगो का कहना है कि एक मुट्ठी चने के दानो क यह जलाशय बनवाया गया था। विशाल होने के साथ साथ यह बावली बहुत गह तल मे पहुचने के लिए मजबूत लाल पत्थरो की सीढियाँ बनी हुई है। उस बावली इमारत मे भी लाल पत्थर लगे हुए है।

यहाँ पर मुझको इतिहास की कुछ प्राचीन बाते मालूम हुई। सस्कृत मे लिखे यहाँ मिले, मेरे नियुक्त किये हुए सस्कृत जानने वाले कर्मचारियो ने उन पत्रो की पर लिखे हुए दो पत्र भी मुझे मिले। उनमे एक अनलदेव के सम्बन्ध मे सम्वत् ? गया था। उसमे जो लिखा था, उसका अनुवाद इस प्रकार है विषय-वासना से अहकार से पूरे ज्ञान के भण्डार सर्वशक्तिमान महावीर आपको प्रसन्न रखे। *

बहुत प्राचीन काल मे चौहान वश के लोग समुद्र के निकटवर्ती स्थानो मे और नादोलवालो का उन पर शासन था। उन लोगो मे लोहिया नाम का ए उसके लडके का नाम बलराज था और बलराज के लडके का नाम विग्रहपाल विग्रहपाल के लडके का नाम महेन्द्रपाल और महेन्द्रपाल के लडके का नाम अ उन दिनो मे ऊपर लिखे हुए चौहानो के प्रधानो का प्रधान था। उसका प्रभाव हुआ था।

बाला प्रसाद नामक अनल का लडका हुआ। लेकिन बाला प्रसाद के कोई के कारण उसके छोटे भाई जेत्र राज को वहाँ की प्रधानता का पद मिला। पृथ्व

---

* जैनियो के चौबीस धर्म के प्रचारक माने गये है। उनमे महावीर का ना समझते है।

रास्ते मे हम लोग चल रहे थे, उसमे दोनो तरफ पंक्ति बाँधकर लोग खडे हुये थे। उनमे राजवंश के बहुत-से लोगो के बीच से होकर मै सबके साथ आगे बढा। मेरे स्वागत मे जो तैयारी की गई थी और बाहर से लेकर महल के भीतर तक जिस प्रकार समस्त स्थान और मार्ग सजाये गये थे उनकी मुझे पहले से आशा नही थी।

मेवाड के राणा के यहाँ भी मेरा स्वागत हुआ था। परन्तु उस स्वागत मे इस प्रकार के वैभव का प्रदर्शन नही किया था। राणा के उस स्वागत मे जो मुझे सरलता और स्वाभाविकता देखने को मिली थी यहाँ का स्वागत उससे बिल्कुल भिन्न था। राठौर वंश के राजाओ ने दिल्ली के बादशाह के दाहिने हाथ बनकर बहुत दिनो तक शासन किया था। इसलिये वहाँ के प्रत्येक स्वागत के अनुष्ठान मे दिल्ली के बादशाह का तर्ज अमल दिखाई देता था। हम लोगो को देखते ही सोने और चाँदी के पदक पहने हुये बहुत-से लोगो ने एक साथ 'राजराजेश्वर' कहकर जो जोरो के साथ आवाज की, उससे मेरे कानो के परदे फटने लगे। हम लोग धीरे-धीरे आगे की तरफ बढ रहे थे और महल के अनेक कमरो को—जिनमे बहुत से आदमी दोनो तरफ खडे हुये हम लोगो का स्वागत कर रहे थे—पार करके हम लोग राज-दरबार मे पहुँचे।

हम लोगो को देखते ही मारवाड का राजा सिंहासन से उठकर खडा हुआ और कई पग आगे बढकर उसने सम्मानपूर्वक मुझे ग्रहण किया, जिस स्थान पर हम लोग पहुँचे थे वह स्वागत समारोह के लिये विशेष रूप से सजाया गया था। वहाँ पर एक हजार स्तम्भ थे जो बडी खूबसूरती के साथ सजाये गये थे। इस स्तम्भो के कारण राजमहल का वह स्थान सहस्त्र स्तम्भ कक्ष कहलाता है। यहाँ पर बने हुये स्तम्भ सुन्दरता और नवीनता की अपेक्षा मजबूत अधिक है। प्रत्येक दो स्तम्भो के बीच का फासिला बारह फुट है और प्रत्येक स्तम्भ इसी दूरी पर खडा हुआ है। वे सभी श्रेणियो मे बनाये गये है। इसीलिये उनका क्रम देखने मे बहुत प्रिय मालूम होता है।

राज दरबार की छत अधिक ऊँची नही है। इस स्थान के मध्य भाग मे एक वेदी के ऊपर राजसिंहासन बना हुआ है और उस सिंहासन के ऊपर जो चन्दोवा लगा है, उसके नीचे चाँदी के स्तम्भ लगे है। राणा के दाहिनी ओर पोकरण और निमाज के दोनो सामन्त बैठते है। इन दोनो सामन्तो ने राजदरबार मे ऊँचा पद प्राप्त किया था। दूसरे सामन्त लोग और ऊँची श्रेणी के पदाधिकारी राजसिंहासन के चारो तरफ बैठते है। उनके नाम यहाँ पर लिखने की आवश्यकता नही मालूम होती।

विष्णुराम वकील राजा के सामने और मेरे पास बैठा था। कुछ देर तक साधारण बाते होती रही। उसके बाद अनेक दूसरे विषयो पर राजा के साथ मेरी बाते हुई। वह बातचीत अनियमित और क्रमहीन थी। प्रशसात्मक होने के साथ साथ वे बाते किसी समस्या के लेकर न थी। राजा ने जो कुछ भी कहा मैंने उसको ध्यान पूर्वक सुना। वह हिन्दुस्तानी भाषा मे बोल रहा था। उसके बोलने की भाषा मे बहुत अच्छा प्रवाह था। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि दिल्ली के बादशाह के दरबार मे जितने भी राजा एकत्रित हुआ करते थे, उन सब मे जोधपुर के राजा की बातचीत का ढग बहुत अच्छा रहा होगा। वह मेरे साथ बडी देर तक बाते करता रहा।

राजा का शरीर न बहुत लम्बा था और न अधिक छोटा वह मुझे अधिक गम्भीर मालूम हुआ। आरम्भ से लेकर अन्त तक मुझे अनुभव हुआ कि उसके मनोभावो मे किसी प्रकार की प्रसन्नता नही है। उसका शरीर वीरोचित था। उसकी बहुत देर की बातो के बाद भी मैंने उसमे उस प्रताप को अनुभव न किया जिसकी सहज ही अनुभूति मुझे उदयपुर के राणा की बातचीत से हुई थी। इस बात को बार-बार सोच रहा था।

मेरे कर्मचारी नादोल से चौहानो की मुद्रा लाये है और उन्होने वह मुद्रा मुझे
आकार प्रकार छोटा है। देखने मे वह वहुत साधारण सी जान पडती है। एक सिक
एक घोडे के सवार की मूर्ति है। दूसरे कई सिक्को मे बैलो की मूर्तियाँ बनी है।

इन नादोल की जो यात्रा करता है, उनको परिश्रम के पुरस्कार में निश्चय
मिलती है। यहाँ पर प्राचीन काल की ऐतिहासिक सामग्री १ई प्रकार की पायी जात
उस प्रकार की सामग्री यहाँ पर प्राप्त की है। जैनियो की प्राचीन निवास-भूमि
और सादरी मे पुराने सिक्के, हाथ की लिखी हुई पुरानी पुस्तके और कुछ इसी प्र
सामग्री प्राप्त की जा सकती है। वहाँ के टूटे-फूटे महलो और मन्दिरो मे भी प्रचीन
खोजने से मिलते है। जो लोग इस प्रकार की खोज का काम करना चाहते है, उनक
लेकर मन्दोर तक यात्रा करने की जरूरत है। इस सम्पूर्ण प्रदेश मे जैन धर्मावलम्
रहा करते थे।

इन स्थानो की यात्रा करके बिना किसी अधिक परिश्रम के मैने अपने
प्राप्त कर ली है। इस सामग्री के संकलन मे मुझे अपने कर्मचारियो से वडी सहा
इस कार्य के लिये जिन पण्डितो को मैने नियुक्ति किया है, वे रोजाना शाम को
सामग्री मुझे देते है। जहाँ कही मै जरूरत समझता हूँ, इस सामग्री की खोज मे
हूँ। किसी कारणवश जहाँ मैं नही पहुँच सकता, वहाँ पर मै अपने योग्य औ
आदमियो को भेजता हूँ, यहाँ पर इन बातो को लिखने का मेरा उद्देश्य यह है कि
लोग यहाँ पर अनुसंधान का कार्य करेगे, उनको मेरे इस वर्णन से कदाचित्
मिलेगी।

२६ अक्टूबर—ग्यारह मील का रास्ता पार करके इन्दुरा नामक स्थान
मुकाम किया। वहाँ पर लूनी नदी प्रवाहित होती है। इसका जल नमकीन होने वे
नाम लूनी नदी पडा है। यह स्थान उस नदी के किनारे पर बसा हुआ है और गो
वह सीमा है। वहाँ से मेवाड एक तरफ और मारवाड दूसरी तरफ पडता है। इस
हुआ पीले आंवले का वृक्ष दोनो राज्यो की सीमा का परिचय देता है। मारवाड की
वहुत दूर तक केवल वालू के मैदान दिखायी देते हैं। मेवाड की दशा दूसरी ही
से विभिन्न प्रकार के वृक्षो का दृश्य और प्रकृति का सौन्दर्य वहुत दूरी तक दिखायी
दृश्य को देखकर मुझे एक कवि की कविता याद आ गयी। वह कविता मैने राणा के
को कई वार सुनायी थी उसे सुनकर कृष्णदास ने कहा था : प्रकृति ने स्वय इन
सीमा का निरूपण कर दिया है।

जो कविता मुझे याद आयी, वह इस प्रकार है :

"आखाँरा झोपडा,
फोगांरी वाड
वाजरारी रोटी,
मोठारी दाल,
देखिये हो राजा तेरी मारवाड।"

गाँव का निर्माण एक विशेषता के साथ हमने यहाँ देखा। प्रत्येक गाँव के
का एक घेरा वना हुआ है और उस घेरे के ऊपर तक भूसे के साथ इस प्रकार ढका

अनेक घटनाये रहस्यपूर्ण बन गयी है । उन घटनाओ को राजा के सिवा दूसरा कोई नही जानता । उसने अपने जिस उद्देश्य के लिये सामन्त मुरतान को मरवा डाला था, उसके सम्बन्ध मे यहाँ पर कुछ प्रकाश डालना आवश्यक मालूम होता है ।

अभय सिंह ने अपने पिता राजा अजीत सिंह की हत्या की थी । उसके बाद मारवाड-राज्य के दुर्दिनो का आगमन हुआ और तीन-चार पीढ़ियो के पश्चात् उस राज्य का सर्वनाश करने वाली परिस्थितियाँ अपने आप पैदा हो गयी । अपराधो का बदला प्रकृति स्वय मनुष्य को देती है ।

पराक्रमी राजा अजीत सिंह ने बादशाह औरङ्गजेब के आधिपत्य से अपने पैतृक राज्य का उद्धार किया था और बादशाह औरङ्गजेब, उसका कुछ न बिगाड सका था । उसी औरगजेब ने राजा अजीतसिंह से बदला लेने के लिये एक षडयत्र रचा । उसने अजीतसिंह के बडे लडके को अपने षडयत्र के द्वारा तैयार किया और पापात्मा अभयसिंह ने बादशाह के द्वारा मिलने वाले प्रलोभनो मे आकर अपने पिता अजीतसिंह को जान से मार डाला ।

बादशाह ने अभय सिंह को गुजरात का शासक मुकर्रर किया था और अभयसिंह के छोटे भाई भक्तसिंह ने नागर प्रदेश का अधिकार प्राप्त किया था । यह अधिकार अभय सिंह ने स्वय अपने छोटे भाई को सौंपा था । इसके बाद समय मे परिवर्तन हुआ और उस परिवर्तन के अनुसार वहाँ की राजनीतिक परिस्थितियाँ बदली । जो अपने थे, शत्रु मालूम होने लगे । ईर्षा की आग के कारण जिन्दगी का बडा-से-बडा अपराध कर्त्तव्य और एक आवश्यक कार्य के रूप मे दिखायी देने लगा ।

मन की दूषित भावनाओ मे क्रान्तिकारी विचारो ने अधिकार जमाया । राजा मानसिंह इन दिनो मे वहाँ के सिंहासन पर था । उसके सामने कठिनाइयो और विपदाओ की वृद्धि हुई । झालामन्द मे जिस समय वह अपने भाई के आक्रमण से अपनी रक्षा करने मे लगा हुआ था, अवसर पाकर भीमसिंह राज सिंहासन पर बैठ गया और उसने मारवाड के राजवश का सर्वनाश करने के साथ-साथ राजा मानसिंह को ससार मे विदा करने के लिये सोच डाला । भीमसिंह के इन भावो और कार्यो के कारण मारवाड मे विनाशकारी आग की भीषणता आरम्भ हुई और उसके कारण राज्य का जितना विनाश हो सकता था, सब एक साथ पैदा हो गया । इस विनाश से बचने के लिये जब राजा मानसिंह को कोई सुरक्षित मार्ग दिखायी न पडा तो उसने झालोर का सम्पूर्ण प्रदेश देकर अपने प्राणो की रक्षा की । मानसिंह ने मुझसे कहकर स्वय इस बात को मन्जूर किया था 'राठौर राजपूतो के गुरुदेव के द्वारा मेरे प्राणो की रक्षा हुई है । अन्यथा मेरे बचने की कोई आशा न थी ।"

वह गुरुदेव सभी लोगो मे देवनाथ के नाम से प्रसिद्ध था । उसे लोग साधारण तौर पर नाथ जी कहा करते थे । उसी के द्वारा मानसिंह के जीवन की रक्षा हुई, इस बात को मानसिंह ने स्वीकार किया लेकिन यह बात कहाँ तक सही थी और गुरुदेव नाथ जी के द्वारा मानसिंह के प्राणो के बचने मे क्या रहस्य था, इसके सम्बन्ध मे मानसिंह स्वय कुछ नही जानता था और वह अपनी रक्षा मे उस गुरुदेव की मेहरबानी को ही मानता था । इसके सम्बन्ध मे मैने समझने की कोशिश की । लेकिन लोगो के द्वारा किसी एक बात का समर्थन नही हुआ । जितने लोगो से मेरी बाते हुई, उतनी ही बाते मुझे मालूम हुई । फिर भी यह तो सभी स्वीकार करते है कि अगर देवनाथ ने न कोशिश की होती अथवा वह न चाहता तो भीमसिंह के जाल से मानसिंह मारा जाता और वह किसी प्रकार ससार मे जीवित न रह सकता ।

और पाली नगर मे उनके द्वारा होने वाले अत्याचारो को सदा के लिये खत्म कर ि
के द्वारा वहाँ के ब्राह्मणो का वह कष्ट तो दूर हो गया, परन्तु उनका भविष्य
अन्धकारमय हो गया ।

शिया जी ने न केवल पहाडी मीना लोगो को पराजित किया वल्कि उनको ि
के वाद उसने पाली नगर के सभी प्रधान ब्राह्मणो को मार डाला और पाली नग
कर लिया । शिया जी ने अपने राज्य विस्तार की अभिलाषा से प्रेरित होकर ऐसा कि

किसी भी नगर अथवा प्रदेश की स्वतन्त्रता उसके वाणिज्य-व्यवसाय पर नि
व्यवसाय से राजनीति को वल मिलता है और उसकी स्वाधीनता पर सहज ही शक्ति
का साहस नही करती । भीलवाडा, झालरापाटन और दूसरे प्रसिद्ध व्यावसायिक
पाली के निवासी भी अपने नगर की व्यवस्था करने का अधिकार रखते है और भील
पाली नगर भी राज्य की तरफ से कई वातो मे स्वतन्त्रता का अधिकारी है ।

प्राचीन काल से पाली नगर उत्तरी भारत का सम्बन्ध समुन्द्री किनारे से
वहुत प्रसिद्ध रहा है । मस्कट मालद्वीप, सुराट और नाऊनगर आदि व्यावसायिक न
अरव, अफ्रिका और योरप का वना हुआ माल यहाँ पर भेजा जाता है और इस
भारतवर्ष तथा तिब्वत का वना हुआ माल ऊपर लिखे हुये स्थानो को भेजा जाता है
पर बसे हुये देशो से हाथी दाँत, गैंडे का चमडा, ताँबा टीन, जस्ता, सूखा खजूर औ
अरब का गोद, सुहागा, नारियल, बनात और रेशमी कपड़े, अनेक प्रकार के र
औषधियाँ, गन्धक, पारा, मसाले, चन्दन की लकडी, कपूर चाय, हरे रंग
औषधियाँ वनाने के लिये मोम आता है । × वहाँ से आने वाला पिण्ड खजूर इ
खपता है और जो वहाँ से विभिन्न प्रकार के रग आते है, उनकी भी यहाँ पर वडी ख

भावलपुर से सज्जी मिट्टी, आल, मजीठ, नमक, रङ्ग, वन्दूके, पक्के फल, ह
छीट और सन्दूक तथा पलगो के लिए लकड़ी आती है । कोटा और मालवा से अफ
आती है । भोज से तलवार और घोडे भेजे जाते है ।

पालीनगर से नमक और १शम भेजा जाता है । इस नगर मे एक प्रकार का
सूती मोटा कपडा वहुत मशहूर है । व्यापारी लोग इन दोनो चीजो को वडी संख्या
और देशो को ले जाते है । पाली की वनी हुई लोई बहुत प्रसिद्ध है । भारतवर्ष के स
उस लोई की विक्री होती है और वे लोइयाँ चार रुपये से लेकर साठ रुपये तक जोडा
विकती है । ओढने और पगडी भी नगर की वनी हुई वहुत अच्छी समझी जाती
लिए उनकी खपत भी इस देश मे अधिक होती है । परन्तु ये दोनो चीजे दूसरे
भेजी जाती ।

× जव मै सीधिया के दरवार मे गया था तो वहाँ के सभी लोगो ने यह व
थी कि मै सभी प्रकार के रोगो का इलाज करना जानता हूँ और उसके सम्बन्ध ि
मेरे पास रहती है । एक सामन्त की स्त्री को मोम की आवश्यकता थी । उसने मेरे
एक नौकर भेजा । उस सामन्त के यहाँ वह नौकर खवरदार कहलाता था । उसने
मोम माँगा । मेरे पास मोम न था । इसलिए मोम देने से मुझे इन्कार करना पडा ।
नौकर को मेरी वात का विश्वास न हुआ । उसने समझा कि मेरे पास मोम है । लेकिन
चाहता । उसकी इस हालत को समझ कर मैंने उसे हिन्दुस्तानी खड का एक टुकडा
वह उसको मोम समझ कर ले गया ।

यह हालत उन मन्दिरो और धर्मशालाओ की बहुत दिनो तक चलती रही। कोई उसमे दखल नही दे सकता था।

किसी भी दशा मे अन्याय होकर रहता है। गुरुदेव देवनाथ के शिष्यो का प्रभाव राज्य के लोगो से नष्ट होने लगा और सभी लोग इन सब बातो का कारण देवनाथ को समझने लगे। धीरे धीरे राज्य के निवासियो मे असतोष बढा और वे छिपे तौर पर गुरुदेव से असतुष्ट हो गये। इस असन्तोष मे गुरुदेव के प्रति लोगो मे शत्रुता का भाव पैदा हुआ। इसके साथ-साथ लोगो मे इस बात का विश्वास भी बढने लगा कि राजा ने इस गुरुदेव की सहायता से राजसिंहासन प्राप्त किया है इसलिये राजा गुरुदेव की अधीनता मे चल रहा है। वह राज्य मे होने वाले इस प्रकार के अन्यायो मे कभी भी सुधार करने का साहस नही कर सकता।

इस प्रकार की भावनाये राज्य के न केवल निवासियो मे पैदा हुई बल्कि राज्य के सामन्त लोग भी चिन्तित और पीडित रहने लगे। गुरुदेवके आधिपत्य के दिनो मे सामन्तो के अधिकार धीरे धीरे नष्ट होने लगे। राजा मानसिंह के ऊपर सामन्तो का प्रभाव छिन्न भिन्न हो गया। राज्य की इस परिस्थिति को सामन्तो ने अपनी दुरवस्था समझी और उसे बदलने के लिये वे सभी प्रकार के कार्य करने की तैयारी करने लगे। वे समझते थे कि इन दिनो मे जो कुछ राज्य मे रहा है, वह अन्याय और अपराध है। इसे बदलने के लिये अगर जल्दी कोशिश नही की जाती तो उसका परिणाम भयानक है।

गुरुदेव को राज्य की इस बिगडती हुई परिस्थिति का कुछ पता न था। उसको कोई परवा भी न थी। राजा मानसिंह पूरे तौर पर उसके अधिकार मे था। राज्य की सम्पत्ति और आमदनी का प्रयोग वह बहुत मनमानी तरीके से करता था। राज्य के व्यापारियो और सम्पत्तिवानो का विश्वास गुरुदेव और उसके शिष्यो पर था। वे लोग इन धर्माचारियो के विरुद्ध सोचने का कभी साहस न कर सकते थे। इसका फल यह हुआ कि राज्य के खजाने के सिवा धनिको के पास जो सम्पत्ति थी वह गुरुदेव के पास धीरे धीरे पहुँच रही थी और देवनाथ के नेत्रो मे उस सम्पत्ति का महत्व कुएँ और तालाबो के जल से अधिक न था।

मारवाड राज्य के सामन्तो का अधिकार नष्ट हो गया था। इसलिये वे लोग गुरुदेव और उसके शिष्यो के कार्यो को पूरे तौर पर अनाचार समझ रहे थे। परन्तु राजा मानसिंह के विरोधी होने के कारण वे लोग कुछ करने का साहस न करते थे वे समझते थे कि गुरुदेव का विरोध करना राजा मानसिंह का विरोध है। इसलिए कि उसके दिल और दिमाग पर देवनाथ पूरा अधिकार कर रखा है। इसलिये चिन्तित होने पर भी राज्य के सामन्त चुप थे।

देवनाथ का पूरा आधिपत्य राज्य पर चल रहा था। उसके अधिकार मे नौकरो की सख्या इतनी अधिक थी, जितनी बडी सख्या सब सामन्तो के नौकरो की मिलाने पर भी नही होती थी। मारवाड का राजा मानसिंह जिस ध्वजा और झण्डे के साथ निकला करता था, ठीक उसी प्रकार का वैभव गुरुदेव के साथ चलता था। वह राज्य के सामन्तो को अपनी अधीनता मे समझता था और सामन्त लोग भी उसी प्रकार उसको हाथ जोडकर प्रमाण करते थे जिस प्रकार वे सब विनम्र-भाव से अपने राजा का अभिवादन करते हुए अपनी अधीनता का प्रदर्शन किया करते थे। गुरुदेव के द्वारा सामन्तो के अधिकारो और सम्मान का जिस प्रकार विनाश हुआ था, उसे सामन्त लोग भली प्रकार समझते थे।

इस प्रकार की दुरवस्था राज्य की बहुत दिनो तक चली और उसके मिटाने का साधन भी उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ। गुरुदेव और उसके शिष्यो के अनाचारो के विरुद्ध राज्य के सामन्त पूर्ण

हुए है वे बहुत टूटी-फूटी दशा मे है और उनमे कोई भी ऐसी बात नही है जो भ्रम
को अपनी ओर आकर्षित करती हो। इस दशा मे खरैरा नामक स्थान मे हम
किया।

खरैरा मे नमक बनाने के दो जलाशय है। उनमे बहुत सा नमक तैयार ह
खारी होता है और वहाँ पर बहुत-सा तैयार किया जाता है। मालूम होता है इ
का नाम खरैरा पडा है। यहाँ पर खरैरा और रोहित नाम से दो इलाके है और वे दो
अलग अलग सामन्तो की अधीनता मे है। इधर कुछ दिनो से उन दोनो सामन्तो मे आ
आग जल रही है। जिसके कारण वे दोनो एक दूसरे को मिटाने मे लगे हुये है अ
स्थितियो के कारण उनमे जो लडाइयाँ चल रही है उनके फलस्वरूप रोहित के सा
बहुत खराब हो गयी है। यहाँ पर एक घटना का उल्लेख जरूरी मालूम होता है।

पाइमा नामक एक व्यापारी रोहित के इलाके मे नमक का व्यवसाय करता
द्वारा बहुत-सा नमक आता है। एक-दूसरे व्यापारी के साथ उसका झगडा ह
झगडे मे उसके सिर मे चोट आयी। जखमी दशा मे वह परिवार के लोगो के पास ग
करने वाले दोनो व्यापारी भाट जाति के है और पाइमा भूमानिया भाटो का प्रधान *
ढोने के लिए पाइमा के पास चार हजार पशु है। व्यापार न होने के दिनो मे वह अप
लेकर दूसरे स्थानो मे चला जाता है।

पाइमा का जिस व्यापारी के साथ झगडा हुआ था उसका नाम श्यामा था
मौका पाकर पाइमा के बहुत से छकडो पर अधिकार कर लिया और पाइमा के
पहुँचा कर उसको जख्मी कर दिया था। इस प्रकार के किसी भी झगडे का फैसला
जब वह मुकदमा पेश किया तो उसी पक्ष की विजय हुई और श्यामा के
लिए गये।

ऊपर यह लिखा जा चुका है कि राजस्थान मे चारण और भाट लोग ही व्यापा
सरक्षक बनाये जाते है। लेकिन अगर वे अत्याचार और अन्याय करते है तो वे सरक्षक के
दिये जाते है। उपरोक्त पाइमा के पूर्वजो के साथ राणा अमर सिह का एक झगडा हुआ
घटना इस प्रकार है कि पाइमा के पूर्वज भाट लोगो ने अपने शुल्क को कम करने के
अमर सिह से प्रार्थना की। लेकिन राणा ने उस प्रार्थना को मन्जूर नही किया।

इस दशा मे प्रार्थी भाट लोग बहुत अप्रसन्न हुए और वे लोग अपनी आत्म हत
राणा को ब्रह्महत्या का भय दिखाने लगे। इन भाटो का यह पुराना तरीका था और इ
भय दिखाकर वे राज्य से उचित और अनुचित हमेशा लाभ उठाया करते थे। इस अव
उन्होने वैसा ही किया और राणा अमर सिंह से साफ-साफ कहा कि अगर आप हमारी
मन्जूर नही करेगे तो हम लोग, आत्महत्या कर लेगे और आप ब्रह्महत्या के पापी होगे ले
सिंह ने उसकी इन बातो पर ध्यान नही दिया।

राणा के द्वारा प्रार्थना स्वीकार न होने पर भाट लोग बहुत क्रोधित हुये और उन्ह
मे परामर्श करके अपने पुराने अस्त्र का प्रयोग किया। भाँट वश के अस्सी स्त्री पुरुषो ने
महल के सामने पहुँचकर कटारो से अपनी आत्म हत्याये की। इसलिए कि इन ब्रह्मह

---

* भूमानिया नामक स्थान मे रहने के कारण उन लोगो का नाम भूमा
पडा है।

नही करती है तो चुप हो जाने के सिवा वे लोग कर ही क्या सकते थे । जिन सामन्तो ने राजा मानसि ह से धौकल सि ह की बात कही थी, उनको खामोश हो जाना पडा । रानी के इनकार करने पर मानसि ह को बडी प्रसन्नता हुई ।

मारवाड राज्य मे कई तरह से परिस्थितियाँ बदली । राजनीतिक सत्ता कमजोर पडने लगी । राज्य मे लूट मार अधिक बढ गयी । बाहर से आकर लुटेरो ने राज्य का लूटना आरम्भ किया और राजा मानसि ह को सिंहासन से उतार दिया । लेकिन पोकर्ण के सामन्त सवाई सिह को मारवाड़ के राज्य-सिहासन पर धौकल सिह को बिठाने मे सफलता न मिली । उसने धौकल सिह को जयपुर राज्य के खेतडी नामक प्रदेश के स्वतन्त्र सामन्त के पास इसलिये भेज दिया कि वहाँ पर वह बालक सुरक्षित रह सकेगा ।

इसके कुछ दिनो के बाद मेवाड के राणा की राजकुमारी कृष्णा के विवाह के सम्बन्ध मे मारवाड और जयपुर मे भीषण युद्ध हुआ । सामन्त सवाई सिह ने उस अवसर का लाभ उठाने की कोशिश की । कृष्णा कुमारी के साथ विवाह करने के लिये मानसिंह और जयपुर के राजा का जो युद्ध हुआ था, उसको पहले लिखा जा चुका है । उस युद्ध मे उत्तरी भारत के लगभग सभी राजा लोग जो शामिल हुये थे, उसका कारण सवाई सिह का षडयन्त्र था ।

राजा मानसिह ने सुन्दरी कृष्णाकुमारी के साथ किसी भी दशा मे विवाह करने की प्रतिज्ञा की थी, इसलिये मारवाड की प्रजा असतुष्ट हो गयी थी । बडी बुद्धिमानी के साथ इस अवसर का लाभ सवाई सिह ने उठाया और उसने जब समझा कि मारवाड की प्रजा राजा मानसिह के विरुद्ध है तो उसने बालक धौकल सिह के सम्बन्ध मे घोषणा की और इस बात को जाहिर किया कि धौकल सिंह, भीमसिह का बालक है और इसीलिये वह मारवाड़-राज्य का उत्तराधिकारी है ।

सवाई सिह की इस घोषणा को सुनकर समस्त राजा लोग धौकल सिह के पक्ष मे हो गये । और उसका क्या परिणाम हुआ, इसे विस्तार पूर्वक लिखा जा चुका है । उन्ही दिनो में सवाई सिह मारा गया था और गुरुदेव देवनाथ का सर्वनाश अमीर खाँ के सिपाहियो के द्वारा हुआ ।

प्रारम्भिक दिनो मे राजा मानसिंह को मारवाड़-राज्य के प्रमुख व्यक्तियो, राजवन्श के लोगो और सामन्तो से जो विपदाये मिली थी, मानसिंह ने उन सब का पूरा-पूरा बदला लिया । उसका सबसे बडा शत्रु भीमसिह विष के द्वारा मारा गया था । इसके बाद उसने बडी बुद्धिमानी के साथ सामन्तो का सर्वनाश किया । आरम्भ मे सब से साथ मिलकर और अपना विश्वास कायम करके उसने एक एक सामन्त को छिन्न-भिन्न किया और अपने शत्रुओ से बदला लेने मे उसने भयानक विश्वासघातो और अत्याचारो से काम लिया ।

मनुष्य उत्पात, अपराध और अत्याचार करते करते अपने मनुष्यत्व को खो देता है । राजा मानसिह का इतना ही पतन नही हुआ, बल्कि उन पापो और अपराधो के फलस्वरूप उसका मन और मस्तिष्क विक्षिप्त हो गया । उसने राज्य के अधिकांश लोगो को अपना शत्रु समझ लिया था, अब शत्रुओ के न रहने पर भी उसको प्रत्येक स्त्री-पुरुष पर सन्देह रहने लगा । प्रत्येक व्यक्ति से उसको आशका मालूम होती और किसी के द्वारा भी वह अपने सर्वनाश का अनुमान करने लगता । मन के इन विकृत भावो से उसने केवल अपनी स्त्री के हाथ का बना हुआ भोजन करना आरम्भ किया और दूसरे का बनाया एवम् तैयार किया हुआ भोजन करना बन्द कर दिया ।

राजा मानसिह की विक्षिप्त अवस्था धीरे-धीरे और भी बढी । अब उसका मन राज्य के कार्य मे न लगता । जीवन का प्रत्येक कार्य उसे अप्रिय और सङ्कटपूर्ण मालूम होने लगा । इसलिये

कर माफ कर दिया जायगा और भूमिया मे रहने के लिए आपको आज्ञा मिल जायगी
आप दूसरी कोई आशा न रखे ।

यह कहकर मैंने पाइमा की तरफ देखा और उससे फिर कहा : अगर आपको
मजूर है तो लिखकर दीजिए और अगर मजूर नही है तो मेज पर यह कटार रखा हु
शौक से आत्म-हत्या कर सकते है ।

पाइमा मेरी इन बातो को चुपचाप सुनता रहा । क्षण-भर उसके कुछ न बो
फिर कहा राणा अमर सिंह ने भाटो के आत्म-हत्या करने पर उस वश के बाकी भा
से निकल जाने का दण्ड दिया था । राणा अमर सिह का वह आदेश आज भी राज्य
उसके साथ-साथ मैं इतना और इस अपराध मे दण्ड की मात्रा बढा दूगा कि यदि अ
निर्णय को न माना तो व्यवसायिक माल को ले जाने के लिए जितने छकडे आपके पा
छीन लिये जाय और आपको देश से निकाल दिया जाय । ऐसा करने के लिए मै राणा
अनुरोध करूगा ।

मेरे इस निर्णय को सुनकर पाइमा कॉप उठा । उसने बुद्धिमानी से काम लिया
किसी प्रकार की रुकावट के उसने मेरे निर्णय को मजूर कर लिया । इसके बाद रा
भूमानिया मे रहने की आज्ञा दे दी और उसके पाँच सौ बैलो का कर माफ कर दिया ।

राणा भीमसिह ने इसके बाद पाइमा को उसके भूमानिया प्रदेश का प्रधान f
और उसको बहुमूल्य वस्त्रो के साथ सोने के बाजूबन्द उपहार मे दिये ।

२ नवम्बर—दस मील का मार्ग पार करके हम सब लोग झालामद नामक
पहुँचे । जोधपुर वहाँ से बहुत थोडे फासिले पर है । इसलिये यहाँ पर रुक जाने का
विशेष अभिप्राय है । उसके सम्बन्ध मे हमे कुछ निर्णय कर लेना था । इसीलिए इ
हमको रुकना पडा । पश्चिमी देशो मे किसी राज्य की ओर से आने वाले प्रतिनिधि
व्यवहार किया जाता है, वह उन देशो तक ही कदाचित् सीमित हो सकता है । मरुभूि
दरबार मे अगरेज प्रतिनिधि के साथ किस प्रकार आदर सम्मान होगा और किस प्र
चाहिए, इसको समझ बूझकर हमे आगे कदम बढाना चाहिये, राजा का भेजा हुआ
निधि हमारे पास आवेगा, उसका किस प्रकार हमे स्वागत करना चाहिये, यह भी हमे
की जरूरत है ।

ऐसे अवसरो पर राज-दरबारो मे प्राचीन काल की निर्धारित प्रथाओ का ही प
है । शायद जोधपुर से भी वैसा ही किया जाय । अथवा किसी दूसरे प्रकार का स्वागत ह
नहीं कहा जा सकता । किसी भी दशा मे हमे कुछ निर्णय कर लेने की आवश्यकता है ।
कि अंगरेजी शासन की परिस्थिति बिलकुल भिन्न है । ईस्ट इण्डिया कम्पनी का गवर्नर
सायिक सस्था के अनुचर के रूप मे माना जाता है । इसलिये उसके एक प्रतिनिधि के सा
एक राजा का व्यवहार किस प्रकार होगा, इसका अनुमान नही किया जा सकता । इ
तक इसका निर्णय न हो अथवा वह स्वागत हमारे सामने न आवे, उस समय
इस बात को नही समझ सकते कि हमे भी किस प्रकार राजा के प्रतिनिधि का स्वाग
होगा ।

सिन्धु नदी से लेकर समुद्र तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन है । लेकिन
एक शासक के रूप मे नही, बल्कि एक व्यावसायिक संस्था के रूप मे प्रसिद्ध है । रा

मारवाड राज्य मे किसी योग्य शासक के न होने के कारण उसकी यह दुरवस्था हो रही थी। इसके सिवा और कोई बात न थी।

राजा मानसिह की दशा भी अभी तक अच्छी न थी। मानसिह के उन्माद का रोग अभी तक कुछ कम न हुआ था। सिर और दाढी के बाल भी उसने बहुत दिनो से नही बनवाये थे। इसलिये उसकी आकृत पागलो की सी हो गयी थी। परन्तु उन्माद के इन दिनो मे राजा मानसिह को अपने जीवन की रक्षा का बहुत ध्यान था। राजा छत्रसिह के समय जो लोग राज्य के ऊँचे पदो पर थे। उनके सेवक मानसिह के पास जाकर उसकी सेवा करते थे। कहा जाता है कि उन सेवको ने राजा मानसिह को विष देने के लिये कई बार कोशिश की थी। लेकिन उसमे उन लोगो को सफलता नही मिली। यह जानकर बहुत से लोग इस बात का विश्वास करने लगे थे कि राजा मानसिह की जिन्दगी के दिन अभी बाकी हैं। इसीलिये कोई उसे अभी तक विष नही दे सका।

उन्माद के दिनो मे भी उसके जीवित रहने का कारण यह था कि वह स्वय अपने सम्बन्ध मे बहुत सचेत रहता था और किसी के हाथ का कोई भी भोजन वह न करता था। इसमे सबसे बडा सहारा यह था कि राजा मानसिह का एक बहुत विश्वासी नौकर था, वह मानसिह का इतना अधिक विश्वासी और भक्त था कि उसने अब तक राजा का साथ नही छोडा था और वह अपना लाया हुआ भोजन ही राजा को खाने देता था।

छत्रसिह के मरने के बाद राजा मानसिह मे बहुत परिवर्तन हुआ। उसका उन्माद जाता रहा। उसकी समझ मे आ गया कि राज्य के हित के लिए उसकी तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है। अङ्गरेजी सरकार ने राजा मानसिह की सहायता की और उसके शत्रुओ का पूर्णरूप से दमन हुआ।

शासन की बागडोर अपने हाथ मे लेने के बाद राजा मानसिह ने समझा कि नियन्त्रणहीन राज्य सामन्त राज्य की अराजकता के कारण है। इसलिये उसने बडी राजनीति से काम लिया। उसने राज्य के सामन्तो के साथ बडी सहानुभूति प्रकट की। उसके व्यवहारो को देखकर सभी सामन्त उसका विश्वास करने लगे। दोनो तरफ से बढते हुये विश्वासो के कारण यह मालूम होने लगा कि सामन्तो के साथ राजा मानसिह का जो व्यवहार चल रहा है उससे बहुत थोडे दिनो मे राज्य की उन्नति हो गयी। अपने राजा के प्रति वहाँ के सामन्तो का इसी प्रकार का विश्वास पैदा हो गया। राजा मानसिह के सामन्तो की स्वतन्त्रता पर कभी कोई आलोचना न की। इस तरह की बातो को देखकर मालूम होने लगा कि राजा मानसिह ने अपने राज्य को सभी प्रकार के अधिकार दे रखे है।

जब अच्छे दिन आते हैं तो परिस्थितियाँ अपने आप अनुकूल होने लगती है और अच्छा अवसर बिना किसी चेष्टा के सामने आ जाता है। पोकर्ण का सामन्त सालिम सिह और प्रधान मन्त्री अक्षयचन्द को नष्ट करने के लिये योधराज ने अपनी शक्तियो को तैयार किया। इस सङ्घर्ष को बढते हुये देखकर मानसिह बहुत प्रसन्न हुआ। वह समझता था कि इस झगडे का लाभ अपने लिये सभी प्रकार अच्छा होगा। लेकिन उसका जो भीतरी उद्देश्य था, सालिमसिह उसे समझ न सका। वह मानसिह पर विश्वास करता रहा।

छत्रसिह के शासनकाल मे अक्षय चन्द मन्त्री था। उन दिनो मे मारवाड राज्य का शासन उसी के हाथ मे था। छत्रसिह कभी योग्य न था और उसकी अयोग्यता के कारण ही अक्षय चन्द ने सभी प्रकार के अधिकार अपने हाथो मे कर रखे थे। राजा मानसिह इस बात को समझता था कि राज्य की सारी परिस्थितियो की जानकारी सबसे अधिक अक्षय चन्द को है, इसलिये उसने अक्षय चन्द की इस जानकारी का लाभ उठाने के लिये चेष्टा की। परन्तु उसके उन्माद के दिनो मे

मारवाड का राजसिहासन कई बार संकटो मे पड चुका है। उसके वंश के चार व्यक्ति
के अत्यन्त साहसी राजाओ को भी भयभीत कर दिया था।

सामन्त सालिम सिह का परदादा देवीसिह कुम्पावत वंश का प्रधान था और
शूरवीर राजपूतो के साथ प्रत्येक समय रहा करता था। वह अभिमान पूर्वक अपने
करता था : मारवाड का राज सिहासन मेरी तलवार मे है।

देवीसिह के लडके सुनेल सिह ने अपने पिता का अनुकरण किया और मार
विजय सिह को सिहासन से उतार दिया। सबल सिह के लडके और उत्तराधिकारी
राजा भीमसिह के साथ व्यवहार करने मे अपने पिता का अनुसरण किया और स
आरम्भ मे धौकल सिह को मारवाड के सिहासन पर बिठाने की कोशिश की।

नागौर नामक स्थान पर अमीर खॉ ने कुम्पावत वंश के राजपूतो के प्रधा
के साथ विश्वासघात किया था और उसने उसके समस्त अनुचरो के साथ साथ उसक
मार डाला था। राजा मानसिह ने उस दुराचारी से अपने वश की रक्षा की और
लडके को अपने राज्य के कर्मचारियो मे प्रधान का पद देकर उसको सम्मान किया।
व्यवहारो से उसको प्रसन्न करके उसको सभी प्रकार अपने अनुकूल बना लिया। सा
बुद्धिमानी थी। अगर वह ऐसा न करता तो उसके सर्वनाश के साथ-साथ उसकी जा
का भी विनाश हो जाता।

पोकर्ण के सामन्त सालिमसिह का संक्षेप मे इतना ही जीवन चरित्र है, जिस
उल्लेख करना जरूरी था। इस समय उसकी अवस्था करीब पेंतीस वर्ष की है। वह दे
नही है। लेकिन साहसी, शूर और स्वभाव का गम्भीर है। उसका शरीर कद मे
शक्तिशाली है, उसके शरीर की बनावट सुदृढ़ होने के साथ-साथ अच्छी है। लेकिन
अन्य सामन्तो की तरह उसके शरीर का रग गोरा नही है।

निमाज का सामन्त सुरतान सिह पोकर्ण के सामन्त सालिम सिह का मित्र है।
शरीर की बनावट आकृत और दूसरी चीजे सालिम सिह से भिन्न पड़ती है। सुरतान
शाखा के राजपूतो का प्रधान है और अरावली पहाड के समीपवर्ती स्थानो मे रह
हजार शूरवीर उसके अधिकार मे है। उसकी जागीर मे निमाज, रायपुर और चन्दावत
है। सुरतान सिह के जीवन की अनेक बाते बहुत अच्छी है। उसके शरीर का कद
उसकी बनावट सुगठित है, रग गोरा है। देखने मे वह वीरोचित और विनम्र मालूम
उसकी बुद्धिमत्ता और सभ्यता मे किसी को सन्देह नही हो सकता।

सुरतान सिह सालिम सिह का मित्र था और इस मित्रता के कारण ही सुरता
अनेक प्रकार की विपदाये आयी थी। उन विपदाओ का यहाँ पर उल्लेख न तो सम्भव है
बहुत आवश्यक मालूम होता है। यहाँ पर केवल इतना ही समझ लेने की आवश्यकता
अपने मित्रो का सहयोगी होने के कारण जीवन के भयानक सकटो मे डाला गया था
वह इस योग्य न था। उसने अपने जीवन मे अनेक ऐसे कार्य किये थे, जिनके लिए व
प्रशसा का अधिकारी था। पुरवत्सर के युद्ध मे परिचित होने के कारण जब मारवाड
अपनी तलवार से आत्म हत्या करने की कोशिश की थी, उस समय इसी सामन्त सुर
उसके प्राणो की रक्षा की थी। और जिस समय कई राज्यो की विशाल सेना ने आक्रम
लिए मारवाड को घेर लिया था, उस समय जिन चार सामन्तो ने मारवाड के राजा का

इस प्रकार विनाश और सहार करने के बाद भी राजा मानसिंह शान्त नही हुआ। राज्य में अन्याय करने वालो मे उसने किसी के साथ रियायत नही की और बडी निर्दयता के साथ उसने उन सबका विनाश और सहार किया, जिन्होंने उसके उन्माद के दिनो मे सम्पत्ति को लूट करके अत्याचार किये थे। उसने उनको कैद करके कारागार मे बन्द किया, उनके अधिकार की सारी सम्पत्ति उसने छीन ली और उसके बाद भी उसने उनको जिन्दा नही रखा। कहा जाता है कि राजा मानसिंह ने ऐसा करके एक करोड रुपये अपने खजाने मे एकत्रित किये।

मारवाड-राज्य मे मेरे जाने के छै महीने के बाद और अङ्गरेजी सरकार के साथ मित्रता कायम होने के अठारह महीने पश्चात् राजा मानसिंह ने अपने राज्य मे विनाश और सहार के ये काम किये थे। मानसिंह के इन सब कार्यों का मैं समर्थन नही करता। लेकिन उसके इन कार्यों मे मैं दखल नही दे सका, उसका कारण यह है कि राजा मानसिंह के साथ मेरा पहले ही इस बात का निर्णय हो चुका था कि शासन की भीतरी बातो मे अङ्गरेज सरकार की तरफ से किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही किया जायगा। इन परिस्थितियो मे मुझे चुपचाप रहना पडा और मानसिंह ने जिसके सम्बन्ध मे जैसा मुनासिब समझा, वैसा किया। यह बात जरूर है कि मारवाड के इतिहास मे कभी किसी राजा ने अपने शासन काल मे इस प्रकार के कार्य कभी नहीं किये थे।

यहां पर मैं राजा मार्नासह की आलोचना करना अपना कर्त्तव्य नही समझता। मैं समझता हूँ कि मानसिंह ने जो कुछ भी किया समझ-बूझकर किया। मनुष्य जीवन की परिस्थितियां उसकी सब कुछ करने के लिये बाधा करती हैं। राजा मानसिंह के शासन काल मे मारवाड़ राज्य की परिस्थितियां क्या थी और वहां के पदाधिकारियो व सामन्तो ने कब क्या किया था, इन सब बातो को हमारी और दूसरो की अपेक्षा राजा मानसिंह अधिक समझता था। इसलिये उन घटनाओ के सम्बन्ध मे यह कहना ही मुनासिब मालूम होता है कि मानसिंह ने जो अच्छा समझा था किया था।

मैं यह भली प्रकार जानता हूँ कि राजा मानसिंह पढा-लिखा आदमी था। हिन्दुस्तानी भाषा के साथ-साथ वह फारसी भाषा जानता था और इन दोनो भाषाओ मे वह बाते करता था। मानसिंह कवि भी था और उसने कविता मे लिखा हुआ अपने वश का इतिहास मुझे दिया था, जिसके कुछ भाग का मैंने अङ्गरेजी मे अनुवाद भी किया और उसके उस उपहार के बदले मे मैंने उसको फरिश्ता का लिखा हुआ 'भारत मे मुस्लिम शासन का इतिहास' भेट मे दिया था। बातचीत के सिलसिले मे वह मुझे हमेशा बुद्धिमान मालूम हुआ। राजा मानसिंह बाते करते हुये शासन प्रणाली के सम्बन्ध मे बहुत-सी अपने अनुभव की बाते कहा करता था। उनको सुनकर मैं बहुत प्रसन्न होता था।

मानसिंह मुझे अपने साथ लेकर अपने महल के कई एक हिस्सो मे घूमा था। उस समय हम दोनो के साथ उसका एक नौकर था। महल मे घूमते हुये मानसिंह ने बहुत देर तक मुझसे बाते की थी। उसने मरुभूमि के विस्तृत मैदानो की ओर सकेत करके देखने के लिए मुझसे कहा था। मैंने उस समय मारवाड के दूरवर्ती रेतीले मैंदानो को देखने की चेष्टा की थी। उन लम्बे मैदानो मे बहुत दूर तक केवल रेतीली भूमि दिखायी देती थी। कही-कही पर एक आध वृक्ष भी नजर आते थे। राजा मानसिंह से बडी देर तक उसके महल मे बाते करने के बाद मैं लौटकर अपने मुकाम पर चला आया। वहाँ आने पर मैंने देखा कि मेरे दोनो मित्र कैप्टेन वाघ और मेजर गफ रोहिल्ले कुत्तो की सहायता से एक मृग का शिकार करके लाये हैं।

८ नवम्बर—मारवाड की पचरङ्गी राज पताका मुस्लिम शासको के सामने झुकने से पहले यहाँ की राजधानी मन्दोर थी। वहाँ का इतिहास जानने के लिए मैंने सबेरा होते ही अपनी यात्रा

खुदाई का काम बडी सफाई के साथ किया गया है। यशवन्त सिंह का स्मारक सब से अधिक मजबूत मालूम होता है। उसकी कई एक बाते अजित सिह के स्मारक मे मिलती हैं।

इस स्थान के स्मारको के बीच मे अत्यन्त रमणीक स्तम्भ बने हुये हैं। उनके द्वारा यह स्थान अत्यन्त सुहावना और आकर्षक हो गया है। इन स्मारको मे कुछ की बनावट मिश्र देश की शिल्प कला का स्मरण दिलाती है। यहाँ के दृश्य को देखते हुये मैं मारवाड के बीते हुये इतिहास के सम्बन्ध में बहुत-सी बाते सोचता रहा। इन स्मारको को देखकर सहज ही कोई भी विद्वान इस बात का अनुमान लगा सकता है कि मारवाड राज्य मे किस प्रकार के वीरो ने जन्म लिया था। सही बात यह है कि ससार के उस समय का—जब कि राजस्थान मे और विशेष कर मेवाड तथा मारवाड में इस प्रकार के वीर उत्पन्न हुये थे—इतिहास देखा जाय तो कही पर किसी भी देश मे इस प्रकार के शूरवीरो के इतिहास पढने को न मिलेंगे, जैसे कि यहाँ के वीरो का इतिहास पढने को मिलता है।

यहाँ पर हम मेवाड, मारवाड और तैमूर वश के कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक वीरात्माओ के नाम नीचे दे रहे हैं, उनके मुकाबिले मे शूरवीर राजनीतिज्ञ और रण कुशल कब किस देश में उत्पन्न हुए, क्या कोई बता सकता है ? यहाँ पर जो नाम हम देना चाहते हैं, वे इस प्रकार हैं।

मेवाड	मारवाड	दिल्ली
राणा साँगा	राव मालदेव	बाबर और शेरशाह
००	राव सूरसिंह	हुमायूँ
राणा प्रताप सिंह	राजा उदय सिंह	अकबर
राणा अमर सिंह	राजा गजसिह	जहाँगीर
(प्रथम)		शाहजहाँ
राणा करण सिंह		
राणा राजसिंह	राजा यशवन्त सिंह	औरङ्गजेब
राणा जयसिंह	राजा अजित सिंह	फर्रुखसियर के बाद
राणा अमर सिंह		दिल्ली के सिंहासन के लिये
(द्वितीय)		समस्त प्रतिद्वन्दी

पहले मारवाड के राजाओ की उपाधि राव थी। उदय सिंह से लेकर यशवन्त सिंह और अजित सिंह आदि राजा बडे शूरवीर थे।

पथ प्रदर्शन के लिये मेरे साथ राजा का एक समझदार अनुचर आया था। मैंने उससे पूछा : अजित सिह की तरह उसके शूरवीर लड़को के स्मारक कहाँ हैं ?

उसने मेरे प्रश्न को सुनकर दो स्मारको की तरह सकेत किया। मैंने उन दोनो स्मारको की तरफ देखा। मुझे उन दोनो मे और अन्य स्मारको में बडा अन्तर दिखायी पडा। मैं सोचने लगा, इस अन्तर का कारण क्या है ?

राजा के अनुचर के साथ मैं उस स्थान पर बाते करता रहा। अभय सिंह ने अपने पिता की हत्या की थी। इसलिये वह अपराधी था। परन्तु उसका शासन अच्छा गुजरा था और उसने बड़ी योग्यता के साथ अपने राज्य का विस्तार किया था। उसके भाई भक्तसिंह को उसके कारण अपने अधिकारो से वचित होना पडा था। इन स्मारको मे पिता की हत्या करने वाले अभय सिंह और उसके भाई भक्तसिंह—दोनो के स्मारक हैं। उन दोनो भाइयो के स्मारको की पंक्ति मे विजय सिंह का भी स्मारक है। मैंने आश्चर्य चकित होकर इस बात को देखा और बड़ी गम्भीरता के साथ उस

विशेषता है। इसलिये कि यह दुर्ग मरुभूमि की रेतीली भूमि मे बना हुआ है। दुर्ग के उसके सबसे ऊँचे स्थान पर राजधानी है और उत्तर की तरफ जो सबसे ऊँचा स्थान राजमहल बना हुआ है। उसकी ऊँचाई तीन सौ फुट है। राजधानी का स्थान चारो तर हुआ है। कहा जाता है कि सन् १७०६ ईसवी मे जब कई एक सेनाओ ने आक्रमण कि उस शत्रुओ के द्वारा जहाँ पर गोले बरसाये थे, वह स्थान नष्ट होकर टेढा हो गया है ऊँचाई लगभग एक सौ फुट ऊँची रह गयी।

राजधानी मे राजमहल बहुत मजबूत और देखने मे सुन्दर बना हुआ है। वहाँ श्रेणियाँ दूर तक चली गयी है और वे बुर्ज गोल और चौकोने बने हुये है। राजधा लगभग आध मील लम्बा है। दुर्ग मे ऊपर जो रास्ता जाता है, उसमे बहुत सी दरवाजे है। पत्थर से बने हुये प्रत्येक परकोटे पर अलग अलग सैनिको का पहरा रह ऊपर दो जलाशय बने हुये है। पूर्व की तरफ जो जलाशय है उसका नाम रानी सरोवर जलाशय का नाम गुलाब सागर है। गुलाब सागर दक्षिण की तरफ है। दुर्ग मे जो सैं वे अपनी आवश्यकता के लिये इसी गुलाब सागर से पानी लाते है। वहाँ जो पर उनके बीच मे एक कुण्ड भी है। वह कुण्ड पहाड को खोद कर बनवाया गया फुट गहरा है। इस कुण्ड मे जो पानी है वह रानी सरोवर और गुलाब सा गया है।

वहाँ पर बहुत-से कुएँ भी है। लेकिन उनका जल अच्छा नही है। वहाँ पर बहु और महल बनवाये गये है और उन सबको मिलाकर वहाँ के महलो की सख्या कई ए दुर्ग के पश्चिमी भाग की तरफ राजधानी छै मील तक मजबूत दीवारो से घिरी हुई है ऊपर ऊँचे-ऊँचे बुर्ज बने है। वहाँ पर पाइकला नाम की तोपे रखी हुई है।

राजधानी मे जाने के लिए सात मार्ग है और वे सिंहद्वार के नाम से प्रसिद्ध जिस तरफ बना हुआ है उस स्थान के नाम से पुकारा जाता है। राजधानी मे बहुत मजबूत और साफ सुथरे है और प्रत्येक मार्ग के दोनो तरफ मजबूत पत्थर लग लोगो का कहना है कि आज से कुछ वर्ष पहले इस नगर मे बीस हजार परिवारो लिये स्थान था। इसका अर्थ यह है कि उस समय जोधपुर मे अस्सी हजार मनुष् थी, इस समय वह सख्या, बहुत अधिक जान पडती है। सम्भव है, पहले यहाँ पर रहते हो।

यहाँ के रहने वालो के लिये गुलाब सागर विशेष रूप से विश्राम का स्थान लोग वहाँ पर वायु सेवन किया करते है। वहाँ पर एक बाग है उसमे एक प्रसिद्ध फ है और वह फल कुछ बातो मे काबुल के अनार से भी अच्छा होता है। इस बाग वाले उस फल मे दाने बहुत कम और अत्यन्त छोटे होते है। वह बाग कागली का ब है। उसे दाडिम का बाग समझना चाहिये। इस बाग के अनार बहुत स्वादिष्ट ह भारतवर्ष के बहुत-से प्रसिद्ध स्थानो मे भेजे जाते है।

चौथी तारीख को जोधपुर के राजा के मन्त्री एवम् राजपरिवार के अ दूसरे सिंहद्वार तक आकर और प्रचलित नियमो के अनुसार नमस्कार होने के समाचार के प्रश्न हुए। इसके बाद हम सबको लेकर राजमहल की ओर ले जाया मे मेरे स्वागत की तैयारी हो रही थी। महल की तरफ आगे बढ़ने पर मैंने

कि मेरी कोई स्त्री पतिभक्ति और सतीत्व का परिचय देने के लिये चिता पर न बैठे। मैं राजा विष्णु सिंह के उस आदेश का स्मरण करता हूँ और अजित सिंह तथा बुधसिंह की मृत्यु के बाद उनके शव को लेकर जलने वाली उनकी रानियो की सख्या पर विचार करता हूँ। जिस प्रकार के सुधार बडी-बड़ी कोशिशो के बाद भी नही होते, वे समय आने पर अपने आप हो जाते हैं।

राजा विष्णु सिंह ने अपने पुत्र की देख रेख और रक्षा का भार मरने के पहले मुझे सौंपा था। उसके मर जाने के बाद मैं बूँदी चला गया और जो भार मुझे विष्णु ने सौपा था, शक्ति भर मैंने उसका पालन करने की कोशिश की।

दुर्ग के नीचे भी कुछ स्मारक बने हुये हैं। राव रणमल्ल, राव गङ्गा और चन्द का स्मारक वहाँ पर देखने को मिला। इन लोगो ने परिहारो के अधिकार से मन्दोर छीन लिया था। इन तीनों राजाओ के स्मारको से लगभग दो सौ हाथ की दूरी पर कुछ खाली स्थान पड़ा हुआ है। यह स्थान उन रानियो के लिये रखा गया है, जो किसी रोग से पीडित होकर मरेगी। अब परिहार राजपूतो की राजधानी का हम कुछ वर्णन करेगे।

जिसने प्राचीन टस्कन के कर्टोना और वलटेरा जैसे नगरो को देखा है, वह मन्दोर की रक्षा के लिये उसके आस-पास बनी हुई मजबूत और ऊँची दीवार की उपयोगिता को आसानी के साथ समझ सकेगे। मन्दोर की यह विशाल और विराट दीवार ठीक उसी प्रकार की बनी है, जिस प्रकार प्राचीनकाल मे उन नगरो की दीवारे थी। अग्नि से उत्पन्न होने वाले चार राजपूत वंशो मे परिहारो का भी एक वंश माना जाता है। उनके इतिहास के अनुसार उनके राज्य का विस्तार भारतवर्ष मे सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओ के राज्य विस्तार से पहले हुआ था। ❀

परिहार राजपूतो का यह भी कहना है कि हम लोग काश्मीर से भारतवर्ष मे आये थे। जिन दिनो मे बौद्धो के साथ शैव लोगो का धार्मिक युद्ध चल रहा था, उन्ही दिनो मे ये लोग भारतवर्ष में आये थे और बौद्ध लोगो से उनको प्रोत्साहन मिला था। परिहारो की इस बातो का समर्थन उनके इतिहास के द्वारा होता है।

मन्दोर राजधानी की तरफ चलने के लिये पत्थरो की सीढियाँ पार करनी पडती है। वहाँ पर नागदा नाम की एक छोटी-सी नदी बहती है और मार्ग मे एक विशाल बावडी बनी हुई है। इस बावडी को बनाने के लिये भयानक परिश्रम करना पडा है। लोगो का कहना है कि पहाड के पत्थरो को काटकर यह जलाशय बनाया गया है। इस बावडी के भीतर जाने के लिये गोलाकार मे चक्करदार सीढी बनी हुई है। यह बावडी बहुत पुरानी है और उसकी दीवारो मे गूलर जैसे दो वृक्ष पैदा हो गये हैं। उनकी जडे पृथ्वी मे दूर तक फैली हुई हैं। परन्तु उनके द्वारा इन वृक्षो की कोई बडी मजबूती नही है। इस तरह की कितनी ही बातो ने उस प्राचीन बावडी को अयोग्य बना दिया है। अब उसकी कोई मरम्मत भी नही है।

❀ इस बात का समर्थन सभी इतिहासकारो के द्वारा नही होता। कुछ विद्वानो का कहना है कि परिहार राजपूतो के राजविस्तार के पहले और लगभग सैकडो वर्ष पहले भारतवर्ष मे सूर्य और चन्द्रवंशी राजा राज्य करते थे। परिहार राजपूतो के राज्य विस्तार का यह वर्णन टॉड साहब ने उन्ही के अनुसार किया है। —अनुवादक

राजा मानसिह के सभी अंग सुदृढ और सुन्दर है । उसके दोनों नेत्रो से उसकी
परिचय मिलता है । इतना सब होने पर भी उसके मन के भाव उसके सन्तोष का
करते । इसका कारण यह है कि राज्य से निर्वासित होकर उसे बहुत दिनो तक कैदी क
रहना पडा था और उन दिनो मे उसके मस्तिष्क मे विकार उत्पन्न हो गये थे । ऐसा मा
कि उस समय से उसकी मानसिक दशा मे सुधार नही हुआ ।

राजा मानसिह ने सदा अपने मान की रक्षा की थी । वह स्वाभिमानी था ।
जीवन की विपदाओ ने उसे कठोर और अनुदार बना दिया था । मनुष्य को विपदाओ
मिलती है, वह दूसरो से मिलने वाली शिक्षा से बिलकुल भिन्न होती है । कठिनाइयो
मनुष्य कुछ न कुछ हो जाता है । अपने जीवन की दुरवस्थाओ मे राजा मानसिह की द
कुछ इसी प्रकार की हो गयी है ।

कैदी जीवन से छुटकारा पाने के बाद भी राजा मानसिह के विचारो मे परिवर्त
बन्दी जीवन मे जिन बातो का, सुविधाओ का और सौभाग्यपूर्ण अवस्थाओ का उसके ि
रहा था, उन सबके प्रति आज उसने अपनी तरफ से तिरस्कार-सा कर रखा है ।
अधीनता मे काम करते है और राज्य के ऊँचे पदो पर नियुक्त है, उन सबका विनाश क
वह चुपके चुपके एक षडयन्त्र की रचना किया करता है । उसने अब तक कितने ही लो
नाश किया है और जिन लोगो का विनाश हुआ है, उनमे से एक सामन्त सुरतान सिह
ऊपर वर्णन किया जा चुका है ।

राठौर राजपूतो की श्रेष्ठता को समझने के लिये हमे भाटो और कवियो क
जरूरत नही है । इसलिये कि उनके शौर्य, विक्रम और प्रताप से इतिहास के न जाने
भरे हुए है । उनकी यह श्रेष्ठता ऐतिहासिक ग्रन्थो से कभी नष्ट नही हो सकती । चौ
की भी यही अवस्था है । राजपूतो मे राठौरो और चौहानो का स्थान ऊँचा है । राठौर
जी के वश मे उत्पन्न होने वाले चड और योधा तथा उसके उत्तराधिकारी राजा मानि
मर्यादा पृथ्वी पर चिरकाल तक कायम रहेगी ।

राजा के हाथो से इत्र और पान लेकर मैने सम्मानपूर्वक उसको नमस्कार किया
के राज दरबारो मे सिर पर पगडी बाँधे हुये और नगे पैर बैठने की प्रथा है । साधा
बैठने के लिये सफेद चद्दर के ऊपर एक विशाल कालीन बिछा हुआ था । मैने देखा कि
जूता पहन कर नही बैठते । उसके बाहर लोग जूता उतार देते है और मोजा पहने
हुए बिछौने पर आकर लोग बैठते है । ऐसे ही यहाँ का नियम है ।

राजा मानसिह ने मुझको सजा हुआ हाथी, घोडा, सोने और चाँदी के काम
अनेक बहुमूल्य पदार्थ उपहार मे दिये । इसके साथ ही जितने भी लोग मेरे साथ थे, रा
उनकी मर्यादा के अनुसार भेटे दी ।

छठी तारीख को मैने दूसरी बार राजा से मुलाकात की । बहुत देर तक हम द
होती रही । उस समय राजा के एक विश्वासी अनुचर के सिवा वहाँ पर कोई न था ।
सिलसिले मे मुझे मालूम हुआ कि राजा समझदार और योग्य व्यक्ति है और उसे
इतिहास का अच्छा ज्ञान है । उसने अपने वश की एक ऐतिहासिक पुस्तक मुझे दी थी
मैने रायल एशियाटिक सोसायटी की लाइब्रेरी मे दी है ।

राजा अच्छा पढा-लिखा आदमी है । उसने अनेक विपयो की जानकारी मु
मेरे साथ उसने व्यक्तिगत बाते बडी देर तक की । उसका गुरु, उसका मत्री और

मन्दोर की उत्तर तरफ राठौर राजाओ और उनकी रानियों के स्मारक बने हुये हैं। परिहार राजपूत राजाओ के शव कहाँ पर जलाये जाते थे और कहाँ पर उनके स्मारक बनाये गये थे, इसको मैं जान नही सका। इसके सम्बन्ध मे न तो इतिहास से कुछ पता चलता है और न कुछ जन-श्रुत के द्वारा ही मालूम होता है। राजधानी के पूर्व और उत्तर-पूर्व की तरफ प्रकृति ने एक ऐसा घेरा बना दिया है, जो राजधानी के लिये किसी सुदृढ दुर्ग से कम संरक्षक नही है। वहाँ पर नगर के बहुत से लोग घूमने, विश्राम करने और प्राकृतिक शोभा का दर्शन करने के लिए प्राय. जाया करते हैं।

हम लोग जिस रास्ते से होकर ऊपर चढकर गये थे, उसी रास्ते से होकर हम लोग पुसकुंड की तरफ आगे बढे। रास्ते मे अनेक प्रकार के मनोहर दृश्य देखने को मिले। उनमे प्राचीन काल के बने हुये पुराने महलो के भी कुछ स्थान थे। उस मार्ग के नीचे के भाग मे दो सिंहद्वार हैं। वहाँ अच्छे जल का एक जलाशय भी हैं। उन सिंहद्वारो मे एक से होकर आगे चलने पर विस्तृत जङ्गल दिखायी देता है और वहाँ के लम्बे चौडे मैदान मे अनेक महल देखने को मिलते हैं। दूसरे सिंहद्वार से होकर चलने पर वह स्थान मिलता है, जहाँ पर मारवाड राज्य के शूरवीर राठोरो की प्रस्तर प्रतिमाये स्थापित हैं।

वहाँ के इन सभी रमणीक दृश्यो को देखकर मन मे अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं। मैं वहाँ पर कुछ देर के लिये रुक कर कितनी ही बातो को सोचने लगा। मैंने वहाँ पर एक गुफा के भीतर मन्दोर के प्रसिद्ध राजा नाहरराव के स्मारक मे एक बनी हुई वेदी को देखा। नाहरराव अरा-वली पर्वत के भयानक स्थान पर चौहानो के साथ युद्ध करते हुये मारा गया था। चन्द कवि ने नाहरराव की श्रेष्ठता और वीरता पर बहुत-सी कवितायें लिखी हैं और उन कविताओ मे कवि ने उसकी बडी प्रशंसा की है।

नाहरराव के स्मारक की देखभाल और उसके दूसरे कार्यो के लिये एक नाई रखा गया है। जो निरन्तर वहाँ पर रहकर अपना कार्य करता है। उस स्मारक का कोई भी कार्य नाई को क्यो सौंपा गया इसको मैं समझ नही सका। मैं इस प्रश्न को बडी देर तक सुलझाता रहा। इसके सबन्ध मे जो उलझन मनोभावो मे थी, उसको सुलझाने के लिये मुझे कोई साधन नही मिला। इसलिये मुझे यह समझकर सन्तोष कर लेना पडा कि नाई लोग राजपूतो के यहाँ घरो का सभी कार्य करते हैं। कदाचित् इसी लिये इस स्मारक के कामो को रोकने के लिये नाई नियुक्त किया गया है। यह तो मेरे मस्तिष्क की उपज है। परन्तु इसका और कारण क्या है, इसको न कोई जानता है और न मुझे कोई बताने वाला मिल सका।

यहाँ पर एक मन्दिर बना हुआ है, इस मन्दिर मे नौ मूर्तियाँ हैं। यहाँ के लोगो का कहना है कि लङ्का से आकर रावण ने मन्दोर के राजा की लडकी के साथ विवाह किया था। उन्ही दिनो मे यह मन्दिर बना था और ये मूर्तियाँ इस मन्दिर मे स्थापित की गयी थीं। नागदा नाम की जो यहाँ पर एक छोटी सी नदी बहती है, उसके सम्बन्ध मे भी यहाँ पर एक जनश्रुति है। लेकिन यहाँ के लोग उस श्रुति को बडे विस्तार मे कहते हैं इसीलिए वह लिखी नही जा सकती। यहाँ पर एक झरना है, उसके पास ही पृथ्वीराज और उसकी स्त्री ताराबाई का स्मारक बना हुआ है।

उस मार्ग से कुछ दूरी पर चलने से एक विस्तृत मैदान मिलता है। उस मैदान को चारो ओर से घेरे हुये एक मजबूत दीवार बनी हुई हैं। हम लोग जब उस विस्तृत मैदान मे पहुँचे तो पहाड़ के ऊपर एक विशाल कमरा दिखाई पडा। जैनियो के मन्दिर की तरह उस कमरे मे बहुत-से स्तम्भ

ऐतिहासिक यात्रा

भीमसिंह के सामने आत्म-समर्पण करने के बाद मानसिंह ने अपनी जिन्दगी
दिनो का अनुमान लगाया था। लेकिन उसका यह अनुमान और विश्वास सही सा
उसके सामने भयानक विपदाये दिखायी देने लगी। उस दशा मे उसने आत्म हत्या क
सोच डाली। लेकिन उस समय राठौर राजपूतो के गुरुदेव देवनाथ ने उसको रोका और
न करने के लिए उसने उसको बहुत-सी बाते समझाई। उसने उसको समझाया कि तुम्ह
मे तुम्हारी आत्म-हत्या का कोई योग नही है और कुण्डली से इस बात का पूरा
है कि थोडे ही दिनो मे तुम्हारी विपदाओ का अन्त हो जायगा और बाद मे तुम्हार
होगी।

मानसिंह को गुरुदेव की इन बातो पर विश्वास हो गया। उसने आत्म हत्या
छोड दिया। वह गुरुदेव किसी प्रकार मानसिंह को सुरक्षित रखना चाहता था और
उसके पास जितने उपाय थे, सभी को वह काम मे लाना चाहता था। मानसिंह
उसका क्या उद्देश्य था, इसका स्पष्टीकरण इसके बाद आने वाली घटना
होता है।

इस विषय में यह भी मालूम हुआ कि गुरुदेव नाथ जी ने भीमसिंह को मार ड
मारण मन्त्र का जाप आरम्भ कर दिया था और अपने इस जाप को सफलता के ि
प्रयोग करके भीमसिंह को मार डालने और मानसिंह को उसके षडयन्त्रो से उसने ब
गुरुदेव के इस कार्य को मानसिंह ने उसकी कृपा के रूप मे स्वीकार किया। उसको
विश्वास हो गया कि गुरुदेव मे बहुत बडी शक्ति है। इसलिए यह सभी प्रकार उसके ि
हीत हुआ।

गुरुदेव ने अपने षडयन्त्र से भीमसिंह को विष दिलाकर सफलता प्राप्त की थी।
मानसिंह उस गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर सिंहासन पर बैठा। देवनाथ ने स्वय उस
मानसिंह के गले मे जयमाल पहनाई। उसके बाद इसका श्रेय मानसिंह ने गुरुदेव को
उसने सिंहासन पर बैठने के बाद और गुरुदेव के द्वारा जयमाल पहनने के समय हाथ ज
उपकार को स्वीकार किया।

सिंहासन पर बैठने के बाद राजा मानसिंह ने अपने राज्य की इतनी अधिक
नाम पर कर दी, जितनी भूमि मारवाड के किसी प्रधान सामन्त के अधिकार मे भी
भूमि से गुरुदेव देवनाथ को जितना कर वसूल होने लगा, उससे बहुत कम राज्य के
रह गया। मिले हुए राज्य के इलाको से देवनाथ को जो आमदनी होने लगी उसका
राज्य की आमदनी का रह गया। इससे इस बात का अन्दाज लगाया जा सकता है कि
के अधिकार मे राज्य की कितनी बडी आमदनी राजा मानसिंह के सिंहासन पर बैठने
गयी थी।

राजा मानसिंह राज्य के सिंहासन पर था लेकिन उसके हृदय और मस्तिष्क
का अधिकार था। देवनाथ जो कुछ चाहता था, राज्य मे वही होता था, मानसिंह
के बिना राज्य मे कुछ कर न सकता था। इस प्रकार उस गुरुदेव ने राजा मानसिंह
तक अपने अधिकार मे रखा और राज्य की आमदनी का अधिकाँश भाग उसने मन्दि
स्थानो के बनवाने मे खर्च किया। उसने एक-एक करके लगातार चौरासी मन्दिर व
धर्मशालाओ का निर्माण करवाया। उन सभी धर्मशालाओ मे, जो राज्य की सम्पत्ति
गुरुदेव के बहुत-से शिष्य लोग रहा करते थे, और राज्य का सुख भोगते हुये मनमानी

आगे बढने पर मैंने प्रसिद्ध गोगा चौहानो की प्रतिमा देखी। सुलतान महमूद के भारतवर्ष में आक्रमण करने पर स्वाभिमानी और शूरवीर गोगा चौहान ने उसकी विशाल सेना के साथ युद्ध किया था और उस युद्ध मे अपने सैंतालिस पुत्रो के साथ स्वाधीनता की रक्षा करते हुये गोगा चौहान मारा गया था। यह युद्ध शतद्र नदी के निकट हुआ था। मैंने गोगा की प्रतिमा को सम्मान पूर्वक कुछ देर तक देखा। सब के अन्त में गहिलोत राजपूत मधुमङ्गल नामक प्रसिद्ध शूरमा की प्रतिमा को मैंने देखा।

इन समस्त शूरवीरो की प्रतिमाओ को देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। वहाँ की प्रत्येक प्रतिमा का दर्शन मानो मेरे शरीर मे शक्ति की बिजली दौडा रही थी। बडी गम्भीरता के साथ मैं इन प्रतिमाओ को देखता रहा। प्रत्येक मूर्ति के साथ उनके जीवन का जो इतिहास है, वह मेरी आँखो के सामने घूम रहा था। इन शूरवीरो की मूर्तियो की स्थापना करके इस देश में शक्ति और शौर्य कायम रखने की चेष्टा की गयी है।

ऊपर जिस कमरे का वर्णन किया गया है, उसके पास ही एक दूसरा कमरा है। दोनो की बनावट एक है। पहले कमरे की अपेक्षा दूसरा कमरा बडा है। "तैंतीस कोटि देवताओ का स्थान" के नाम से दूसरा कमरा प्रसिद्ध है। इस दूसरे कमरे मे जो देवताओ की मूर्तियाँ हैं, वे सभी पत्थर की बनी हुई हैं और उनके आकार कई प्रकार के हैं। छोटी और बडी आकार में सभी प्रकार की मूर्तियाँ वहाँ पर देखने को मिलती हैं। वहाँ की कुछ मूर्तियो का यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है। इसीलिये उनके सम्बन्ध मे नीचे लिखा जाता है।

इस कमरे मे सब से पहले ब्रह्मा की मूर्ति है। भारतवर्ष के लोग ब्रह्मा को सृष्टि कर्त्ता मानते हैं। दूसरी मूर्ति सात घोडो की एक सवारी पर है। वह सूर्य की मूर्ति है। उसके पास रामचन्द्र और सीता की प्रतिमा देखने को मिलती है। उसके पश्चात् गोपियो से घिरे हुये कृष्ण की मूर्ति है। इन सब के बाद महादेव की प्रतिमा है वह विशाल आकार प्रकार मे है। उसके पास ही महादेव की सवारी मे आने वाले साँड की प्रतिमा है। इन सब के साथ-साथ इस कमरे मे लक्ष्मी और सरस्वती की मूर्ति हैं।

इस बडे कमरे मे जितनी भी प्रतिमाये है, बहुत अच्छे पत्थरो से बनी हुई है और हिन्दुओ के ग्रन्थो मे उनके जिस प्रकार वर्णन किए गए हैं, उसी रूप मे शिल्पियो ने उनको तैयार किया है। सभी मूर्तियाँ देखने मे प्रिय मालूम होती हैं।

इस बडे कमरे और उसकी मूर्तियो को देखने के बाद मैं राजा अजित सिंह के बाग और महल को देखने गया। वह महल अत्यन्त सुन्दर और अनेक प्रकार की सुविधाओ के साथ बना हुआ है। उसकी बहुत-सी बाते अत्यन्त प्रशसा के योग्य हैं। महल के भीतर छोटे और बडे बहुत कमरे हैं। वे कमरे विभिन्न प्रकार से बने हुये हैं। सभी कमरो मे स्तम्भ हैं और प्रत्येक स्तम्भ निर्माण मे शिल्पियो ने अपनी अद्भुत योग्यता का परिचय दिया है। वे सभी स्तम्भ सुन्दरता के साथ-साथ दृढता भी रखते हैं। महल मे जितनी भी दीवारे हैं, उनमे बहुत श्रेष्ठ शिल्पकारी देखने को मिलती है। महल की ये सभी बाते अत्यन्त आकर्षक और प्रशसनीय हैं।

महल के अन्त:पुर मे जहाँ स्त्रियाँ रहती हैं, उन स्थानो मे अत्यन्त बारीक बुनावट के कपडे के बने हुये परदे पडे हुये हैं। इन परदो का कदाचित उद्देश्य यह है कि महल मे आने वाला कोई बाहरी व्यक्ति उन स्त्रियो को देख न सके। इसके साथ ही महल के अन्त:पुर का भाग अत्यन्त

रूप से थे। परन्तु राजा मानसिंह के कारण वे सोच-विचार में पडे थे। आखिरकार एक उपस्थित हुआ, जिसके कारण मारवाड राज्य की परिस्थितियाँ बदली। अभिमानी गुरुदेव की सेना के सैनिको के द्वारा मारा गया। कुछ लोगो का विश्वास है कि राजा मानसिंह के अत्याचारो से ऊबा हुआ था। लेकिन वह उससे बहुत दबा हुआ था, इसीलिये उसके करने का साहस न कर सकता था।

गुरुदेव देवनाथ अमीर खाँ के सिपाहियो के द्वारा मारा गया। लोगो की धारणा मानसिंह ने उसको बचाने के लिए कुछ भी चेष्टा न की। इसी आधार पर लोगो का विश देवनाथ के मारे जाने मे मानसिंह का भी कुछ हाथ था। यह बात कहाँ तक सही है, उस में कोई सही बात नही कही जा सकती। इसके रहस्य को सही तौर पर अमीर खाँ और सिंह के सिवा तीसरा कोई नही जानता था।

गुरुदेव के मारे जाने के बाद आश्चर्य रूप मे मारवाड़ की परिस्थितियो मे प‍ि‍वर्त हुआ। उस परिवर्तन मे निमाज का सामन्त और उसके बंश के लोग भयानक रूप से और उन्ही दिनो मे सुरतान पर आक्रमण किया गया था। उ‍ आक्रमण में न केवल वह था, बल्कि मारवाड़ के राजा मानसिंह ने राज्य के प्रधान सामन्तो को छिन्न-भिन्न करके नक परिस्थिति पैदा कर दी थी, उसका पहले से कभी किसी को अनुमान न था। इन दु सम्बन्ध मे यहाँ पर कुछ प्रकाश डालना जरूरी मालूम होता है।

सन् १८०४ ईसवी मे जालोर से जोधपुर आने पर मानसिंह का राज्याभिषेक मानसिंह से पहले राजा भीमसिंह सिंहासन पर बैठा था। राजा भीमसिंह जब म उसकी रानी गर्भवती थी। विधवा हो जाने के बाद अपने गर्भवती होने का जिक्र उस नही किया और उसने पूर्ण रूप से उसे छिपाकर रखा। समय आने पर उससे जो बालक उसे पोकरण के सामन्त सवाई सिंह के पास भेज दिया गगा। दो वर्ष तक बालक के किसी को कुछ न मालूम हुआ। उसके बाद राज्य के सामन्तो को मालूम हुआ कि भी रानी से जो बालक पैदा हुआ है, वह दो वर्ष का हो चुका है। इसलिए उन लोगो ने प्र और राजा मानसिंह के पास जाकर, उस बालक धौकल सिंह का परिचय देते हुये कहा।

मारवाड़ का उत्तराधिकारी बालक धौकल सिंह है। इसलिये नगर का राज्य प्रदेश को आप उसे दे दीजिए।

राजा मानसिंह को सामन्तो की यह बात अच्छा न लगी परन्तु उसने अपने मन के छिपाकर कहा : अगर बालक धौकल सिंह भीमसिंह से पैदा हुआ है और बालक की म को स्वीकार करती हैं तो मैं आप लोगो के इस अनुरोध को जरूर मन्जूर करूँगा।

राजा मानसिंह की इस बात को सुनकर यह जरूरी हो गया कि धौकल सिंह की बात को स्वीकार करे कि उससे उत्पन्न होने वाला बालक राजा भीमसिंह से पैदा हुआ है। को स्पष्टीकरण करने के लिये जब रानी के पास समाचार पहुँचा तो उसने बडी दूरदर्शित लिया और अपने बालक के प्राणों की रक्षा के लिये उसको स्पष्ट न करना ही आवश्यक बल्कि उसने इस बात को स्वीकार नही किया कि उससे कोई बालक पैदा हुआ।

रानी के इस निर्णय मे पोकर्ण के सामन्त का षडयन्त्र था। जब राज्य के सामन्त का उत्तर सुना तो उनको उसका विश्वास नही हुआ। लेकिन जब रानी स्वय इस बात

अत्यन्त सङ्कीर्ण और इतने छोटे स्थानो मे बनी हुई है कि उनमे किसी प्रकार वायु नही पहुँच सकती। मुझे इन बातो को सुनकर बहुत आश्चर्य मालूम हुआ कि उनमे रहने वाले तपस्वी और सन्यासी लोग बिना वायु के किस प्रकार जीवित रहते है। सायङ्काल हो जाने के कारण अपने मुकाम पर लौट आने का समय हो चुका था। इसलिये वहाँ से लौटने के पहले मैं उस स्थान पर फिर गया, जहाँ पर मारवाड के शूरवीरो की प्रतिमाये है। उन सबके सामने खडे होकर मैंने श्रद्धापूर्वक उन प्रतिमाओ के दर्शन किये और फिर उनको प्रणाम करके मैं अपने मुकाम पर लौट आया।

१३ नवम्बर—राजा मानसिह ने अपने महल मे आज भोजन करने के लिये मुझे आमन्त्रित किया था। इसलिये अपनी नई पोशाक मे मै राजपूत राजा का आतिथ्य प्राप्त करने के लिये गया। राजा ने मुझसे एक अनुरोध किया था, वह अनुरोध कुछ अजीब-सा था। राजा ने अपने महल मे भोजन तैयार करने के लिये मेरे खानसामा को इसलिये बुलाया था कि मुझे देशी भोजन पसन्द नही आयेगा और उससे मेरा न तो पेट भरेगा और मै न सन्तुष्ट हो सकूँगा। सीन्धिया ने कैम्प मे यह जरूर कहा था कि महाराष्ट्रीय भोजन के साथ-साथ मैं अपने देश का भोजन किया करता था। लेकिन राजा मानसिह के यहाँ मुझे अपने देश के भोजन की जरूरत नही थी। इसलिये राजा मान-सिह के पास मैंने कहला भेजा कि आपके महल मे मैं केवल जोधपुर का ही भोजन करूँगा और उससे मै पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो सकूंगा।

इसके साथ ही मैंने यह जरूर किया कि अपने यहाँ की टेबुल कुर्सी और अपने पीने की शराब मैंने राजा मानसिह के महल मे भेज दी। मेरे महल मे पहुँचने पर राजा ने बडे सम्मान के साथ मुझे ग्रहण किया और भोजन करने के लिये वह मुझे लेकर महल के भीतर की तरफ चला। भोजन-घर मे पहुँचकर मैंने देखा कि पुलाव, मास और मिष्ठान्न बनी हुई खाने की बहुत-सी चीजें तैयार करायी गयी है। मेरे पहुँचने पर भोजन की वे सभी चीजे चाँदी के पात्रो मे परोसी गयी। उन चीजो को देखकर यह आभास होता था कि वे सभी स्वादिष्ट और खाने मे बहुत अच्छी होगी। शिखर के उत्तरी भाग मे भोजन-घर बना हुआ था और उसका नाम मान महल रखा गया है। राज दरबार की तरह इस मान महल मे भी बहुत से स्तम्भ बने हुये है। मुझे मालूम हुआ कि शीतकाल के आने पर वहाँ से अस्सी मील दूर कमलमोर के दुर्ग का ऊपरी भाग दिखायी देता है।

१६ नवम्बर—आज का दिन राजा मानसिह से भेंट करने के लिए पहले से ही निश्चित हो चुका था। राजा मानसिह ने मेरे कैम्प के पास ही अपना कैम्प भी लगाया था। उसका खेमा बहुत लम्बा चौडा और लाल रङ्ग का था। वह देखने मे एक महल की तरह विशाल और बडा था। उसके चारो तरफ कपडे की एक दीवार सी बनी हुई थी और उसके बीचो बीच राज-सिहासन रखा था। उस राज-सिहासन के ऊपर छत्र लगाया गया। दोपहर के बाद लगभग तीसरे पहर महल और दुर्ग मे एक साथ जोर का कोलाहल मचा। नगाडा के बजने की जोरदार आवाजे कानो मे आने लगी। राज्य की तरफ से मुनादी की गयी थी कि आज महाराज फिरङ्गी वकील से मुलाकात करने जायंगे।"

जब मुझे मालूम हुआ कि मुलाकात करने के लिये राजा अपने पूरे वैभव के साथ आ रहा है तो मै भी अपने आदमियो के साथ राजा से भेंट करने के लिये तैयार हुआ और अपने घोडे पर चढ-कर मैं आगे की तरफ बढा। कुछ दूर मार्ग मे जाकर मैंने राजा मानसिह से मुलाकात की और कुशल समाचार उससे पूछकर मैं अपने मुकाम पर लौट आया।

सार्वजनिक स्थानो को छोडकर वह एकान्त मे रहने लगा । उसके मन के इन ८
करने के लिये जो उपाय सम्भव हो सकते थे, सब किये गये । लेकिन किसी से कुछ ला
वह स्वर्गीय गुरुदेव देवनाथ की मृत्यु पर विलाप किया करता और अपने इष्ट देवता क
किया करता । उसके मन की इस दुरवस्था ने राज्य का बहुत पतन हुआ । यह देखकर
के प्रमुख व्यक्तियो ने परिस्थितियो पर विचार करके यह निर्णय किया कि राज्य के शा
उसके लडके को सौप दिया जाय । इस प्रकार का निर्णय करके उन लोगो ने मानसि
की । इसको राजा मानसिंह ने मन्जूर कर लिया और उसने अपने हाथ मे अभिषेक के स
मस्तक पर राजतिलक किया । उसके बाद उसका लडका छत्रसिंह सिहासन पर बैठ क
शासन करने लगा ।

छत्रसिह इस समय राज्यसिहासन पर था । लेकिन अभी तक उसको शासन स
का ज्ञान न था । ससार के व्यवहारो को समझने का उसे कोई अवसर न मिला था ।
बाद वह राजा बन गया था । लेकिन राज्य कैसे किया जाता है, इस बात को वह समझ
उसमे इतना ही अभाव न था, बल्कि वह अयोग्य और नासमझ भी था । उसके आचर
थे । बुद्धिहीन होने के कारण उसमे दूरदेशी न थी । अपनी इसी अयोग्यता के कारण उ
से ही ऐसा काम आरम्भ किया, जो राज्य के लिये अच्छा न था । सिहासन पर बैठने के
अक्षयचन्द नामक एक वैश्य को अपना मन्त्री नियुक्त किया ।

सन् १८३६ से १८०७ ईसवी तक मारवाड़ राज्य की दशा सभी प्रकार खराब
शासन के अभाव मे लगातार विनाशकारी दुर्घटनाओ की वृद्धि हुई इनके फलस्वरूप मारवा
बहुत निर्बल पड़ गया । इन दिनो मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सत्ता भारतवर्ष मे बढ रही
प्रभाव मे राजस्थान के अनेक राज्य आ चुके थे । यह देखकर राजा छत्रसिह ने अङ्गरेजी
पास सन्धि करने के उद्देश्य से अपना एक दूत भेजा । उस सन्धि का अवसर आने के पहले
सिह की मृत्यु हो गयी ।

राजा छत्रसिह की इस आकस्मिक मृत्यु का क्या कारण हुआ, निश्चित रूप से नही
सकता । दूसरे लोगो के मत भी इस विषय मे भिन्न-भिन्न ह । कुछ लोगो का कहना है कि
की खराबी ने उसका शरीर बहुत निर्बल पड़ गया था । इसीलिये असमय उसकी मृत्यु हु
लोगो का कहना है कि आचरण दुर्बलता मे उसने एक राजपूत लडकी का सतीत्व नष्ट क
था । उसके इस अपराध के कारण उस लडकी के पिता ने अपनी तलवार से उसको मा
सही बात क्या है, इसको प्रामाणिक तौर पर कहने के लिये कुछ साधन नही हैं । जो कुछ
छत्रसिह की मृत्यु हो गयी । उसके मरने के बाद मारवाड राज्य का पतन भयानक रूप से
हुआ और राज्य मे चारो तरफ अन्याय होने लगे ।

इक्यासीवाँ परिच्छेद

नन्दोला का रास्ता—शेखावाटी तालाब—नन्दोला ग्राम और उसके स्मारक—इन्दुग ग्राम का कोट—पाँच कुल्ला नामक स्थान—पठानो के आक्रमण—पीपल नगर—जैनियो की आबादी—व्यवसायी ओसवाल और महेश्वरी वैश्य—पीपल नगर के छीट के कपडे—पीपल नगर में निमाज के सामन्त का अधिकार—पीपल नगर का प्रसिद्ध स्मारक—मराठो का आक्रमण—प्रमार वंशी गन्धर्व सेन—लक्ष्मी देवी का मन्दिर—शिला लेख मे ऐतिहासिक विवरण—सारू सरोवर और उसके सम्बन्ध की जनश्रुति—साँप का धन—लक्षफुनानी का कुण्ड—भुरुण्ड ग्राम—कुचामन का सामन्त गुमान सिह—स्वतन्त्रता की रक्षा मे बदन सिह का वलिदान—राजा विजय सिह और बदन सिह—राजा विजय सिह की सहायता—मराठो का आक्रमण—बदन सिह का स्मारक—मैडता के दृश्य—खुशामद का परिणाम—मैडता का प्रतिष्ठाता—जयमल का अपराध—मैडता के स्मारक - सैयद-बन्धुओ का अजित सिह के प्रति षडयन्त्र—अजित सिह की हत्या—हत्याकारी वख्त सिह - अभय सिह और बख्त सिह—रामसिंह का अभिषेक—रामसिह की अशिष्ठता—सामन्तो के साथ विरोध और उसका परिणाम—रामसिंह और बख्त सिह का युद्ध—मराठो की सहायता—साला और बहनोई—ईश्वरी सिह का षडयन्त्र—विजय सिह और ईश्वरी सिह—सेनापति सीधिया की मृत्यु—हत्याकारी राजपूत और अफगानी सैनिक को पकडने के लिये मराठा सैनिको की दौड—राजपूत सैनिक की बुद्धि-मानी—अफगानी सैनिक मारा गया—माधव जी सीधिया मराठा सेना का सेनापति—अनाश्रित राम सिंह—उसके जीवन के अन्तिम दिन ।

१६ नवम्बर—यहाँ से छै मील की दूरी पर बसे हुये नन्दोला नामक स्थान के लिए हम लोग रवाना हुये । राजधानी छोडते ही हमको दो मील का रास्ता भयानक बालू के भरा हुआ मिला । इस रास्ते मे चलने वालो को जो असुविधा और कठिनाई मालूम होती है, उसे भली प्रकार हम लोगो ने अनुभव की । राजधानी से दो मील तक निकल आने के बाद का रास्ता बदल गया । उसमे लाल रङ्ग के पत्थर इस प्रकार उभरे हुये थे कि चलने मे यात्रियो को बालुकामय भूमि की अपेक्षा बहुत कुछ आराम मिलता था ।

लगभग आधा रास्ता हमने पानी और कीचड से भरा हुआ पार किया । यह पानी उस जलाशय से आता था, जिसको मारवाड के राजसिहासन के अभिलाषी धौकल सिह की माता शिखा-वती ने बनवाया था । यह एक छोटा सा सरोवर था । रानी शिखावती के नाम से उसका नाम शेखावती तालाब रखा गया था । रानी शिखावती ने शेखावती तालाब के पास एक धर्मशाला बन-वाया था और उसमे उसने हनुमान की मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई थी । वहाँ पर रानी के नाम का एक पत्थर लगा हुआ है ।

झालामन्द से जोधपुर राजधानी जाते समय हमने जोगिनी नाम की नदी को पार किया था । वह नदी मन्दोर के करीब नागदा नदी के साथ मिल कर लूनी नदी मे गिरती है । हम जहाँ

राज्य के जिन पदाधिकारियो ने अधिक अन्याय किया था और अनैतिक रूप से राज्य
अपने अधिकारो मे कर ली थी, राजा मानसिंह ने उन सबकी सम्पत्तियो को लेकर अपने
करना आरम्भ कर दिया ।

राजा मानसिंह ने इन दिनो में अपनी एक अनोखी राजनीति से काम लिया । उ
किया कि मेरे उन्माद के दिनो मे जिन्होने अपने स्वार्थों के लिए राज्य और प्रजा का स
है, उनकी हत्या करने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा होगा कि उनकी उन सम्पूर्ण सम्प
लिया जाय, जो उन्होने अपने अन्यायपूर्ण कार्यो से अपने अधिकार मे कर ली है । अक्षय
नीतिज्ञ और दूरदर्शी था । वह राजा मानसिंह की इस पालिसी को समझ रहा था । अङ्गरे
राजा मानसिंह की मित्रता हो जाने के कारण वह बहुत भयभीत होने लगा था । उसने
तरफ से राजा मानसिंह को बहुत भडकाने की कोशिश की । राजा मानसिंह भी दिखावे मे
की हां मे हां मिलाता रहा । इसका फल यह हुआ कि अक्षयचन्द और उसके आदमी राज
के चगुल मे आ गये । मानसिंह ने बडी बुद्धिमानी के साथ यह सब किया ।

इन दिनो मे मारवाड़ राज्य की अवस्था बडी भयानक हो रही थी । किसी पर
विश्वास न था । सम्पूर्ण राज्य मे राजनीतिक षडयन्त्र फैले हुये थे । राजा मानसिंह अपने
राज्य के आदमियो को फँसाने मे बडी सावधानी से काम ले रहा था और अक्षयचन्द
लोग राजा मानसिंह को अपने जाल मे फँसाने की कोशिश मे थे ।

षडयन्त्र के इन दिनो मे मैं मारवाड राज्य मे पहुँचा था । वहाँ जाकर मैंने राजा
बहुत चिन्तित और परेशान देखा । अक्षयचन्द और उसके पक्षपातियो ने एक भीषण षड़यन्त्र
फँसा रखा था । जो लोग राजा के शुभचिन्तक थे, अक्षयचन्द ने उनसे राजा को अलग कर
चेष्टा की थी । जो लोग अक्षयचन्द के विरोधी थे, वह उनको कैद नही कर सकता था,
विरुद्ध उसने राजा मानसिंह को भड़काने उकसाने का काम किया । वह इस प्रकार के क
होशियार था । उसकी सहायता से मानसिंह ने उन सभी लोगो से अपना बदला लिया,
दण्ड देना चाहता था । जब राजा मानसिंह अपने विरोधियो से बदला ले चुका और ले चु
चन्द की सहायता से, तब उसने मन्त्री अक्षयचन्द और उसके पक्षपातियो पर शासन
आरम्भ की । राजा मानसिंह ने सब से पहले अक्षयचन्द और उसके समर्थक राज के पदा
को उनके पदो से अलग किया और उसके बाद उसने उन सबको कैद करके कारागार मे
दिया ।

मन्त्री अक्षयचन्द को जब मालूम हुआ कि अब मेरे बचने की कोई उम्मीद नही
राजा मानसिंह से प्रार्थना की और अपनी मुक्ति के बदले उसने अपने पास की सम्पूर्ण सम्प
का वादा किया । राजा मानसिंह ने उनकी इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया ।

अक्षयचन्द ने अपने अधिकार की समस्त सम्पत्ति चालीस लाख रुपये की राजा म
दे दी । उस सम्पत्ति को लेकर मानसिंह ने अपने अधिकार मे किया और मन्त्री अक्षयचन्द
डाला । इसके बाद राजा मानसिंह ने अपने राज्य मे मुनादी की, कि जो आदमी राज्य
निकाले गये हैं, उनके अपराधो को क्षमा कर दिया जायगा । इस पर दुर्ग के अधिकारी नाग
मल्ल जी घोघल नामक दो आदमी—जो मारवाड-राज्य से भाग गये थे, लौटकर राज्य
आ गये और रहने लगे । छत्रसिंह के शासन काल मे उन दोनो ने अपने पास बहुत सम्प
कर ली थी । उन दोनो के राज्य मे लौट आने पर राजा मानसिंह ने उनके पास की सम
छीन ली और उन दोनो को विष देकर मार डाला ।

इस इलाके मे प्रमुख रूप से ओसवाल जाति के लोग व्यवसाय करते हैं। यहाँ पर दो सौ महेश्वरी वैश्य भी रहते है और वे शैव धर्मावलम्बी हैं।

यहाँ का व्यवसाय बहुत अच्छा है। छीट के कपडे पीपल नगर के बने हुये बहुत पसन्द किये जाते हैं और वह बहुत काफी तैयार भी होता है। इसका अनुमान केवल इसी बात पर किया जा सकता है कि तीन सौ से अधिक व्यवसायी केवल यहाँ की छीट का ही व्यवसाय करते हैं। पीपल नगर का व्यवसाय छीट के कपडे तक ही सीमित नही है। यहाँ पर और भी कई चीजो का व्यवसाय होता है।

निमाज के सामन्त की मृत्यु का वर्णन पहले किया जा चुका है। यह पीपल नगर उसी के इलाके का एक हिस्सा है। निमाज के सामन्त के एक प्रतिष्ठित पूर्वज का एक स्मारक यहाँ बना हुआ था। आक्रमणकारी मराठो ने उसका एक बडा हिस्सा नष्ट कर दिया है। मारवाड के इतिहास को पढ़ने से मालूम होता है कि ईसा मसीह के बहुत पहले प्रमार वश के राजा गन्धर्व सेन ने पीपल नगर को बसाया था। यहाँ पर लक्ष्मी देवी का एक मन्दिर है। उसमे मुझे एक शिला लेख मिला। उसमे गहिलोत वश के रावल विजय सिंह और दैलछी राजपूत के नाम खुदे हुये हैं। यह शिला लेख मेवाड के इतिहास की कुछ बातो का समर्थन करता है। गहिलोत वशी राजपूत चौबीस भागो मे विभाजित है उस विभाजन के अनुसार उनकी चौबीस शाखाये मानी जाती हैं और उनमे पिपलिया नाम की एक शाखा है। पिपलिया लोगो के अधिकार करने के बाद इस स्थान का नाम पीपल नगर पडा है। इस शिला लेख से भी इस बात का समर्थन होता है।

पीपल नगर मे बहुत से कुएँ हैं और उसकी गहराई साठ फुट से लेकर अस्सी फुट तक है। यहाँ पर एक बडा तालाब है और उसका नाम है साँपू सरोवर। इस सरोवर का पानी बहुत साफ है। इस सरोवर के सम्बन्ध मे एक जनश्रुति मुझे सुनने को मिली है। कहा जाता है कि पाली वश का पीपा नामक एक ब्राह्मण था। वह इस सरोवर के पास रहने वाले एक सर्प को रोजाना दूध पिलाया करता था। वह सर्प तक्षक जातीय था। वह साँप उस ब्राह्मण के दूध को पीकर रोजाना सोने के दो टुकडे उसको दिया करता था।

पानीवाल ब्राह्मण इससे बहुत खुश रहा करता था। कुछ दिनो के बाद अपने नगर से बाहर जाने के लिये उसे विवश होना पडा। उस दशा मे उस ब्राह्मण ने अपने लडके को सब बाते समझाई और अपने स्थान पर उस साँप को दूध पिलाने का कार्य सौप कर वह ब्राह्मण अपने नगर से बाहर चला गया। जाने के पहले ब्राह्मण ने दूध पिलाने के सम्बन्ध मे सभी बाते भली प्रकार समझाई थी। लेकिन उसके चले जाने पर उसका लडका सोचने लगा कि अगर मैं इस साँप को मार डालूँ तो इसके पास जितना सोना है, सब का सब मुझे एक साथ मिल जायगा।

ब्राह्मण के लडके ने बहुत कुछ सोच-समझ कर उस साँप के पास का सम्पूर्ण सोना एक साथ लेने की कोशिश की। अपने पिता के बताने के अनुसार वह दूध लेकर साँप को पिलाने गया और वह साँप जैसे ही पास आकर दूध पीने लगा, ब्राह्मण के लडके ने बडी तेजी के साथ उस के सिर पर एक लाठी मारी। उस साँप के चोट तो लगी, लेकिन वह मरा नही। साँप तेजी के साथ भाग कर अपने बिल मे घुस गया। यह देख कर ब्राह्मण का लडका चिन्तित हुआ और वहाँ से लौट कर, घर आने पर उसने अपनी माता से वह घटना बतायी। उसे सुन कर उसकी माता भी चिन्तित हो उठी।

ब्राह्मणी यह सोच कर घबराने लगी कि हमारे लडके से चोट खाने के बाद भी वह साँप मरा नही है। इस लिये वह साँप बदला लेगा और इससे मेरे लड़के के लिये एक खतरा पैदा हो

आरम्भ की। मेरे साथ राजा के भेजे हुये नौकर थे। वे भी मेरे साथ-साथ चल रहे निश्चित स्थान पर पहुँचने में एक घण्टे से कुछ अधिक समय लगा। वह स्थान जहाँ पर था, पाँच मील से अधिक दूरी पर न था परन्तु बहुत धीरे-धीरे चलने के कारण हम पहुँचने मे इतना समय गया।

राजमहल से प्राचीन राजधानी की तरफ जो रास्ता जाता है, उस मार्ग से जाने राजमहल से रवाना हुआ। उसके कुछ दूर आगे जाने पर मैंने मन्दिर देखा। राजा जालोर से मुक्ति पाने के बाद इस विशाल मन्दिर को बनवाया था। वह रास्ता तीन मी की तरफ ढालू होता गया था। मैं उस रास्ते से चलकर पश्चिम की तरफ जाने वाले म और उस स्थान पर पहुँच गया। जो मारवाड़ राज्य के प्राचीन राजाओ के स्मारको था। यह मार्ग बहुत छोटा है और पहाडी शिखर बहुत ऊँचे-ऊँचे हैं। पर्वत के ऊपर बनी हुई है, उनमे तपस्वी और सन्यासी लोग रहा करते हैं।

इस प्राचीन राजधानी मे शत्रुओ का आक्रमण न हो सके, इसके लिये परिहार चारो तरफ दुर्ग की दीवार बनायी थी। उसके बिगडे हुये टूटे-फूटे भाग अब भी वहाँ मिलते हैं। वहाँ पर एक नदी बहती है। उसका जल बहुत साफ है। कुछ दूर आगे जाने मार्ग धीरे-धीरे चौड़ा होता जाता है। वहाँ पर एक गाँव को हमने पार किया। उस गाँव दो सौ घर बने हुये है। उसके आगे बढने पर हमे एक ऊँचा स्थान दिखाई पड़ा। वहाँ प राठौर राजाओ के स्मारक बने हुये हैं। हम लोग उस स्थान पर पहुँच गये।

वह स्थान अपने आस-पास की जमीन से ऊँचा है। वही पर मारवाड़ के राजा उनकी रानियो के साथ जले थे और जहाँ पर चिता लगी थी, वहाँ उनके स्मारक बनव उस भूमि से थोड़े फासिले पर एक छोटी सी नदी बहती है। उन स्मारको मे एक प्रसिद्ध देव का है। जिस बादशाह शेरशाह ने मुगलो पर आक्रमण किया था। उसके साथ यु लिये मालदेव ने तैयारी की थी और युद्ध करके उसने अपनी बहादुरी का प्रदर्शन किया पर राजा अजितसिह, सूरतसिह, उदयसिह, गजसिह और यशवन्तसिंह इत्यादि राजाओ के रक बने हुये है। मैंने उन स्मारको को ध्यान से देखा।

इस स्थान पर बने हुये सभी स्मारक पक्तियो मे दिखायी देते हैं। मालदेव का स्म साधारण रूप मे बनवाया गया है। उसके पास ही चण्ड और योधा के स्मारक भी बने हु स्मारको के बनाने का तरीका अलग-अलग है। जो स्मारक जिस समय बना है, वह उस शिल्प कला का परिचय देता है। मालदेव के स्मारक को देखकर उसके उस समय की याद जब वह अफगान बादशाह के विरुद्ध युद्ध करने के लिये गया था। इसके साथ ही अफगान की वह बात भी याद आती है, जो उसने इस देश के सम्बन्ध मे कही थी : "मैंने एक लिये भारतवर्ष का राज सिहासन खोया था।" उस अफगान बादशाह की यह बात आज हो गयी है। वह कभी भी मिटाई नही जा सकती।

इस स्थान के सभी स्मारक लाल रङ्ग के छोटे-छोटे पत्थरो से बने हुये है और पर विभिन्न प्रकार की शिल्प कला देखने को मिलती है। इसके बनाने के ढङ्ग को देखकर बुद्ध मन्दिर की याद आती है। कुछ स्मारको के निर्माण मे जैनियो के मन्दिरो का अनुकर होता है। राजा यशवन्त सिह और अजित सिह के स्मारक एक विशेष प्रकार के बने हुये स्मारको का नकशा तैयार करवाकर मैं उसे अपने साथ योरप ले गया हूँ। स्मारको के

कारण जन साधारण मे गासुरियापाल के नाम से प्रसिद्ध है और यहाँ पर एकाएक किसी शत्रु के आक्रमण का मुकाबिला करने एवम् वाणिज्य कर वसूल करने के लिये राजा की एक सेना रहा करती है।

मेडता वश का शक्तिशाली कुचामन का सामन्त गोपाल सिंह भुरण्डा नामक स्थान का अधिकारी है। इस गाँव मे डेढ सौ घरो की आबादी है। अन्यान्य गाँव की तरह यहाँ के कृषक भी जाट वश के लोग है। वहाँ पर बने हुये स्मारकों को मैंने देखा। उन स्मारकों में एक पर बदन सिंह का नाम खुदा हुआ है। वह कुचामन के शासक का सरदार था। मेडता के युद्ध मे फ्रान्सीसी सेनापति डी बाइन के साथ लडता हुआ वह मारा गया था। स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए जिस प्रकार बदन सिंह ने अपने प्राणो का उत्सर्ग किया था, उसकी स्मृति को कायम रखने के लिये यह स्मारक बनवाया गया है, जिसे देखते ही उसके जीवन का वीरोचित बलिदान मेरे नेत्रों के सामने एकाएक चित्र बनकर दिखायी देने लगा।

मारवाड के राजा विजय सिंह ने बदन सिंह से भुरण्डा का इलाका छीन लिया था। किसलिये छीन लिया था, इसका कारण नही मालूम हो सका। उस दशा मे बदन सिंह जयपुर राज्य मे चला गया और वहाँ पहुँच कर उसने वहाँ के राजा की शरण ली। जयपुर के राजा ने उसको अपने यहाँ आश्रय दिया और राजपूत राजाओ मे प्रचलित प्रथा के अनुसार उसने बदन सिंह को सम्मान पूर्ण स्थान देकर नियुक्त किया। जयपुर में बदन सिंह को कुछ नयापन नही मालूम हुआ। वह सम्मान पूर्वक अपने जीवन के दिन व्यतीत करने लगा।

बदन सिंह स्वाभिमानी राजपूत था। उसने जयपुर राज्य मे रहकर थोड़े दिनो मे अपनी शक्तियाँ सम्पन्न बना ली। इन्ही दिनो मे उसकी जन्मभूमि पर मराठो का आक्रमण हुआ। बदन सिंह को उसका समाचार मिला। मराठो के इस आक्रमण को सुनकर वह चिन्तित और पीडित हो उठा। राजा विजयसिंह ने बदन सिंह को उसके अधिकार से वञ्चित किया था और वह अपनी असहाय अवस्था मे जयपुर राज्य में आया था। इसलिये राजा विजयसिंह के प्रति उसकी भावनाये अच्छी न थी। लेकिन जब उसने सुना कि मराठो ने एक विशाल सेना लेकर राजा विजयसिंह के विरुद्ध आक्रमण किया है तो वह विजयसिंह की शत्रुता का भाव भूल गया। उसके मन मे अपने पूर्वजो की मर्यादा का भाव उत्पन्न हुआ। किसी भी दशा मे इस विपद के समय उसने राजा विजय सिंह की सहायता करने का निश्चय किया।

बदन सिंह ने अपने साथ चलने के लिए एक सौ पचास सैनिक सवारो को तैयार किया और उनको लेकर वह अपनी जन्मभूमि एवम् राजा विजयसिंह की स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिये जयपुर से रवाना हुआ। संयोगवश वह अपने पूर्वजो के प्रदेश मे पहुँच न सका और मार्ग मे ही मराठा सेना के साथ उसको उसका मुकाबिला हो गया। मराठो की विशाल सेना के सामने बदनसिंह के डेढ सौ सवार सैनिकों की कितनी हस्ती थी। परन्तु स्वाभिमानी बदन सिंह ने इसकी कुछ भी परवा न की और उसने साहसपूर्वक मराठो के साथ मार्ग मे ही बिना किसी तैयारी के युद्ध आरम्भ कर दिया।

राजपूत सैनिको की बहुत थोडी सख्या थी। फिर भी वे सबके सब अपने हाथो में नङ्गी तलवारे लिये हुये शत्रु-सेना मे घुसे और कुछ समय तक उन्होने भयानक मारकाट की। लेकिन मराठा सेना के द्वारा उनका सहार हुआ। बदन सिंह के शरीर मे कितने ही घाव हो गये थे। लेकिन वह किसी प्रकार अपनी जन्मभूमि मे पहुँच गया। राजा विजय सिंह को इस प्रकार बदन सिंह का वहाँ पहुँचना और शत्रुओ के साथ उसका युद्ध करना मालूम हुआ तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने भुरण्डा फिर से

पर विचार करता रहा। अभयसिंह ने अपने पिता अजितसिंह की हत्या की थी और अपनी योग्यता एवम् शक्ति का परिचय नही दे सका। परन्तु विजयसिंह ने अपने जीव समय तक जिस वीरता और कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया, उसकी प्रशंसा नही की लेकिन आश्चर्य यह है कि इन तीनो के स्मारको के बनवाने मे किसी प्रकार का अन्त गया। यह बात मेरी समझ मे नही आयी। एक पतित और श्रेष्ठ मे अगर कोई रखना नही जानती तो उस जाति को धिक्कार है! इससे अधिक उसको और क्या क है। ऐसे देश मे जो श्रेष्ठ और पतित का अन्तर रखना नही जानता और जिसकी नजरो एक मूल्य है, उस देश मे, भविष्य मे विजयसिह की तरह के शूरवीर पुरुष पैदा नही हो

विजयसिंह के तीन लडके थे। बडे लडके जालिमसिह का वर्णन इस इतिहास मे जा चुका। इन तीनो लडको के स्मारक उनके पिता विजयसिंह के स्मारक के पास बने कुछ फासिले पर राजा भीमसिह और उसके भाई एवम् मारवाड के वर्तमान राजा के का स्मारक है। गुमान की मृत्यु छोटी अवस्था मे ही हो गयी थी। वह भीमसिंह का बड़ इस श्रेणी के बिलकुल आखीर मे छत्रसिह का स्मारक बना हुआ है। उसके स्मारक को अच्छा नही मालूम हुआ। अपने साथ के पथ-प्रदर्शक की तरफ देखकर मैंने पूछा : यहाँ के उन राजाओ के स्मारक नही बनवाये गये, जो छत्रसिंह के मुकाबिले मे बहुत श्रेष्ठ थे स्मारक यहाँ पर बनने चाहिए थे। लेकिन उनके स्मारको को न बनवाकर किसी ने स्मारक बनवाया है, क्या आप बता सकते है?

राज्य के अनुचर ने मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा : माता के प्रेम के कारण का यह स्मारक बनवाया गया है।

उस स्थान पर मुझे यह भी मालूम हुआ कि प्रत्येक महीने की अमावस्या का दि मे पवित्र माना जाता है। उस दिन राजा यहाँ पर आकर इन स्मारको को अपनी श्र है। मैंने इस प्रकार की और भी कुछ बाते सुनी। परन्तु यहाँ आकर मैं जो बाते जा था, और जिनकी मैं खोज मे था, उनको मैं जान न सका। इसका बहुत कुछ कारण रा हुआ अनुचर है, जो मार्ग मे मेरा पथ-प्रदर्शन कर रहा है। यह इतना योग्य नही है f आवश्यकता के अनुसार सहायता कर सके और मेरे उन प्रश्नो का जवाब दे सके, जो मेरे और जिनका सम्बन्ध यहाँ के प्राचीन इतिहास के साथ है। अगर मैंने मारवाड का प्रा पहले से पढा न होता तो यहाँ आकर मैं जो जान सका हूँ, उसको भी मैं समझ न सकता यहाँ आना किसी काम का साबित न होता।

बडी सावधानी के साथ मैं अपने पथ-प्रदर्शक से काम ले रहा था। उसके द्वारा बहुत अच्छी बात समझने को मिली। राजा अजितसिंह के मरने पर उसके मृत शरी उसकी चौसठ रानियाँ चिता मे बैठकर जली थी और बूँदी के राजा बुधसिंह के मरने प शरीर के साथ चिता मे बैठकर चौरासी रानियाँ भस्मीभूत हुई थी। इन दोनो बातो को कुछ गम्भीर हो उठा और उस अनुचर की तरफ देखकर मैं सोचता रहा। बुधसिंह अ समकालीन और बादशाह औरङ्गजेब का सेनापति था। उसके बाद से करीब एक सौ वी चुके हैं। इस लम्बे समय मे बड़ा परिवर्तन हो गया है। बुधसिंह का वंशज राणा विष्णु घनिष्ठ मित्र था। सन् १८२१ ईसवी मे उसकी मृत्यु हुई थी। मरने के पहले उसने आदे

मन्दोर के राव दूधा ने मेडता को बसाया था और उसके लड़के मालदेव ने मालकोट नाम का दुर्ग बनवाया था। ❀ मेडता प्रदेश मे तीन सौ साठ ग्राम शामिल थे। उन सबको मिला कर सम्पूर्ण मेडता प्रदेश मालदेव से उसके लडके जयमल को मिला था। राठोर राजपूतों की एक प्रसिद्ध शाखा मेडता प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध हुई और उस शाखा के राजपूत मेडतिया राठोरो के नाम से विख्यात हुये।

बादशाह शेरशाह के आक्रमण करने पर जयमल ने उसके साथ युद्ध नही किया। उसके इस अपराध पर उसके पिता मालदेव ने उसको मन्दिर से निकाल दिया था। उस दशा में जयमल ने मेवाड के राणा के यहाँ जाकर शरण ली। राणा ने उसको बडे सम्मान के साथ अपने यहाँ आश्रय दिया और अपने राज्य का एक प्रदेश बिदनोर उसके जीवन निर्वाह के लिये दे दिया। जयमल मन्दोर से निकाला गया था। लेकिन राणा से उसको बिदनोर का प्रदेश मिला, वह मन्दोर की अपेक्षा अधिक उपजाऊ और अनेक बातो मे अच्छा था। राणा के इस उपकार का बदला जिस प्रकार जयमल ने दिया, उसका वर्णन पहले किया जा चुका है, वह घटना सक्षेप में इस प्रकार है :

बादशाह अकबर ने अपनी शक्तिशाली और विशाल सेना लेकर चित्तौर पर आक्रमण किया था। उस समय जयमल ने उसके साथ भयानक युद्ध किया था। उस युद्ध मे जयमल मारा गया था। लेकिन उसका शौर्य देखकर शत्रु ने आश्चर्य किया था और बादशाह की तरफ से शूरवीर जयमल का स्मारक बनवाया था। इतिहासकार अबुलफजल, हर्बर्ट और बर्नियर आदि विद्वान यात्रियो ने अपने ग्रन्थो में जयमल की बहुत प्रशसा लिखी है।

लार्ड हेस्टिंग्स उसका बडा प्रशसक था। उसने जयमल की वीरता की बहुत सराहना की थी और जयमल के वशज, बिदनोर के वर्तमान सामन्त से जयमल की बहादुरी के सम्बन्ध मे बहुत कुछ कहा था। सचमुच जयमल इसी योग्य था। मेवाड के राणा ने उसको अपने यहाँ आश्रय देते हुये जो उसके साथ उपकार किया था, उसका बदला देते हुये जयमल राणा से उद्धार हुआ। लेकिन जिस चित्तौर के लिये युद्ध करते हुये जयमल बलिदान हुआ था, चित्तौर उससे कभी भी उऋण न हो सकेगा।

मेडता नगर मे बहुत से सुदृढ बुर्ज बने हुये हैं और सम्पूर्ण नगर मजबूत पत्थरो के कोट से घिरा हुआ है। उसका पश्चिमी भाग मिट्टी से और पूर्व की तरफ का सम्पूर्ण हिस्सा मजबूत पत्थरो से बनाया गया है। इस नगर के अधिकांश भीतरी हिस्से टूटे-फूटे हैं। इस नगर मे बीस हजार मनुष्यो के रहने के लिए घर हैं। यहाँ पर धनिको के पक्के और मजबूत मकानो और महलो के साथ साथ गरीबो के कच्चे मकान और दरिद्रो की झोपडियाँ भी हैं। नगर के दक्षिणी पश्चिमी भाग में दुर्ग बना हुआ है। उसकी लम्बाई दो मील से अधिक है। दुर्ग के पूर्व और पश्चिम तरफ छोटे-छोटे तालाब हैं। नगर के भीतर बहुत से कुएँ है। लेकिन जल किसी का अच्छा नही है। मैडता के

❀ मालदेव के सिवा राव दूधा के तीन लड़के और थे। पहले लडके का नाम रायमल और दूसरे का नाम वीरसिह था जिसने मालवा मे अजमेरा नामक राज्य कायम किया था। वह राज्य अब तक उसके वशजो के अधिकार मे है। राव दूधा के तीसरे लडके का नाम रत्नसिह था। मीराबाई का पिता था और मीराबाई मेवाड राज्य के प्रसिद्ध राणा कुम्भा को ब्याही थी। इस प्रकार राव दूधा के मालदेव को मिला कर चार लड़के थे।

परिहार राजपूतों के अन्तिम राजा नाहरराव ने इस बावड़ी को बनवाया था
मन्दोर की ऊँची और मजबूत दीवार की ओर आकर्षित हुआ। उसको बने हुये कई
बीतेंगे। यह ऊँची दीवार दुर्ग की तरह मन्दोर को घेरे हुये जिस प्रकार आज खड़ी है,
खड़ी रहेगी। केवल इतने से ही इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि यहाँ क
कितनी मजबूत है।

यह दीवार शिखर की तरफ चली गयी है। उन दिनो मे लडाई की तोपो का
हुआ था। इसलिये यहाँ के परिहार राजाओ ने दुर्ग के ऊपर बीचो बीच अपना महल
उस महल के सभी बुर्ज बहुत मजबूत बने हुये हैं और वे चौकोर हैं। उनको देखकर प्रा
अनेक बातो का अनुमान किया जा सकता है। मैंने इस बात को भली भाँति समझा।

मैं जब मन्दोर मे पहुँचा तो बहुत थक गया था और थकावट के कारण हो मु
गया था। इसलिये उस दीवार के सम्गन्ध मे मुझे ओर जो कुछ जानना चाहिये था, नह
वहाँ पर परिहार राजाओ का जो महल बना हुआ है। उसके ऊपर चढकर मैं पहुँचा
भागो को देखा। वह महल अब केवल एक पुराने खण्डहर के रूप मे रह गया है। फि
देखकर उसकी पहले की उनेक बातो का अनुमान लगाया जा सकता है। जिस प्रकार
से वह महल बनाया गया था, उन्ही उपकरणो से जोधपुर राजधानी का निर्माण हुआ है

यहाँ के राजमहल के बहुत करीब अनेक देवताओ के मन्दिर अपनी गिरी हुई द
देते हैं। मैंने राजमहल को बाहर से लेकर भीतर तक देखने और समझने की कोशिश
वह बिलकुल गिर चुका है, परन्तु उसके कितने ही कमरो का आकार-प्रकार अब
मिलता है, उन कमरो के बाहरी हिस्सो मे जो शिल्प कला देखने को मिलती है, उससे
है कि महल का निर्माण तक्षक अथवा बौद्ध शिल्पियो के द्वारा हुआ था।

राजमहल की दीवारो पर जो धार्मिक चित्र अङ्कित किये गये थे, वे यद्यपि बहु
गये हैं। फिर भी बौद्ध और जैन धर्मों के साथ उनके सम्पर्क स्पष्ट रूप मे जाहिर होते हैं
स्थानों मे शैव लोगो का धार्मिक त्रिकोण चित्र भी दैखने को मिलता है।

दुर्ग के दक्षिण-पूर्व मे बना हुआ सिहद्वार और जयतोरण अपनो सुन्दरता औ
का किसी प्रकार आज भी परिचय देता है। इस सिंहद्वार को देखकर परिहार राजपूतो
का अनुमान लगाया जा सकता है। यह सिंहद्वार किसी समय अत्यन्त सुदृढ और सुन्दर
देखकर यह बात आज भी जाहिर होती है। मन्दोर के प्राचीन राजाओ मे से किसी
अपनी विजय के स्मारक मे जयतोरण बनवाया था और उसी के आधार पर इसका य
था, यह बात भी जाहिर होती है। समय की कमी के कारण मैं इस जयतोरण का न
सका इसका मुझे बार-बार ख्याल होता है।

उत्तर की तरफ मन्दोर से कुछ दूरी पर थनापीर का थान है। थान शब्द का
होता है। अजमेर मे ख्वाजा कुतुब की एक प्रसिद्ध मसजिद है। थानापीर उसी कुतुब
था। राजस्थान में बहुत दिनो से सिंधी और अफगानी लोग लूट मार करते हुये चले आ
सभी लोग इसी पीर की मसजिद मे एकत्रित होते थे और राजस्थान के राज्यो मे आ
का कार्यक्रम तैयार करते थे।

राजकुमार अभयसिंह सैयद बन्धुओं के प्रभाव में आ गया। उसके मनोभावों में मारवाड़ के राजसिंहासन का प्रलोभन पैदा हुआ। सैयद बन्धुओं के द्वारा कही गयी बात उसके दिल मे धीरे-धीरे घर करने लगी। मैं राजपूतों का प्रशसक हूँ। अनेक स्थानों पर मैंने राजपूतों के चरित्र की महानता को स्वीकार किया है। यहाँ पर किसी राजपूत के पतन को स्वीकार करते हुये मेरे हृदय को एक आघात पहुँच रहा है। परन्तु जिन राजपूतों के चरित्र को मैं प्यार करता हूँ, उनके चरित्र से भी प्रिय और अधिक प्रिय सत्य हैं, मैं किसी भी दशा मे सत्य को छिपाना नही चाहता। मैंने ऐसा कभी नही किया और भविष्य मे भी कभी ऐसा न करूंगा।

राजा अजितसिंह के बारह लडके थे। उनमे अभयसिंह और बख्तसिंह—दोनों भाई बड़े थे। दोनो भाई एक ही माता बूँदी की राजकुमारी से उत्पन्न हुये थे। बख्तसिंह राज्य मे अपने पिता के पास था बडे भाई अभयसिंह ने एक पत्र लिखकर उसके पास भेजा। उसमें उसने लिखा : अगर तुम पिता को जान से मार डालो तो मैं तुमको नागोर का सम्पूर्ण प्रदेश—जिसमे पाँच सौ पचपन नगर और गाँव हैं—दे दूंगा और तुम उस प्रदेश मे राजा की उपाधि लेकर स्वतन्त्र रूप से शासन कर सकोगे।

बडे भाई अभयसिंह का यह पत्र बख्तसिंह को मिला। उसको पढने के बाद उसके दिल में किस प्रकार के विचार उत्पन्न हुये। यह बताया नही जा सकता। लेकिन वह अपने बड़े भाई के लिखने के अनुसार काम करने के लिये तैयार हो गया। नागोर प्रदेश के शासन के अधिकार ने उसके हृदय में एक बार भी पिता की हत्या करने से विचलित नही किया। वह अजितसिंह की हत्या करने के लिये तैयार हो गया। किसी प्रकार बख्तसिंह की माता को उसका भाव जाहिर हो गया। उसने अपने पति से कहा : मैं बख्तसिंह का विश्वास नही करती। तुम उससे सावधान रहना और किसी भी समय एकान्त मे तुम उससे न मिलना।

राजा अजितसिंह ने रानी के मुख से इन शब्दों को सुना। वह साहसी और शक्तिशाली था। उसे विश्वास नही हुआ कि मेरा लडका मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर सकता है। बख्तसिंह अपने बड़े भाई के पत्र को पाने के बाद समय और सयोग की ताक मे रहने लगा। महल के जिस कमरे मे अजितसिंह सोया करता था, उससे मिले हुये कमरे मे बख्तसिंह सोया करता था। वह जिस अवसर की प्रतीक्षा मे था, उसके लिये उसे अधिक दिन व्यतीत नही करने पडे। एक दिन रात को जब राजा अजितसिंह सो गया था, रात अधिक जाने के कारण महल मे सन्नाटा हो गया था। सभी लोग अपने अपने स्थानों पर सो रहे थे। रात का भीषण अन्धकार चारो तरफ फैला हुआ था। अजितसिंह के साथ उसकी रानी सो रही थी। उस अन्धकार मे बख्तसिंह अपने कमरे से निकला और दबे पैरों वह अजितसिंह के कमरे मे पहुँच गया। बिस्तर के नीचे अजितसिंह की रखी हुई तलवार को उसने बडी सावधानी के साथ निकाल लिया और उस तलवार से उसने पिता की हत्या कर डाली। एकाएक बख्तसिंह की माँ की नींद टूट गयी। उसे अपने लडके से जिस बात का आशङ्का थी, वह इस समय चरितार्थ हो गयी। उसने देखा कि बख्तसिंह ने अपने पिता को जान से मार डाला। वह जोर के साथ चीत्कार करती हुई रो उठी। रानी के रोने को सुनते ही महल के सब लोग जाग पडे। सभी लोग दौडकर वहाँ पर आये। बख्तसिंह ने पिता के कमरे को बडी मजबूती के साथ बन्द कर दिया था। वह दरवाजा किसी प्रकार खोला गया। सभी ने भीतर जाकर देखा। अजितसिंह की मृत्यु हो चुकी थी और उसके शरीर के निकले हुये रक्त से सभी कपडे डूबे हुये थे। रक्त चारपाई से निकलकर कमरे मे एकत्रित हो रहा था। बख्तसिंह की माँ एक तरफ बैठी रो रही थी।

बने हुये हैं और उन स्तम्भो के ऊपर कमरे की मजबूत छत बनी हुई है। उस कमरे में
वाड़-शूरवीर राजाओ की प्रतिमाये लगी हुई हैं। प्रत्येक मूर्ति अपने अस्त्र शस्त्र से सुस
वे मूर्तियाँ घोडे पर चढी हुई बनवाई गयी है। इन मूर्तियो की सबसे बडो विशेषता
पत्थरों को काटकर बनवायी गयी हैं। उनकी ऊंचाई एक मनुष्य की ऊँचाई से कुछ अधि

इन मूर्तियो के बनाने मे यद्यपि किसी प्रकार की कारीगरी से काम नही लिया
उनमे वीरता का भाव है। उनको देखने से साहस, तेज और शौर्य का सहज ही आभा
इन वीरों के मूर्तियों के साथ एक बात और है। उन राजाओ के जो प्रिय और विश्वास
उनकी मूर्तियाँ भी उनके साथ ही रखी है। प्रत्येक सामन्त के हाथ मे तलवार और ढाल
पीठ पर धनुष-बाण और कटार लटक रही है। ये सभी मूर्तियाँ देखने मे सुन्दर मालू
जिन शूरवीरो की ये प्रतिमाये हैं, उनकी शरीर की गठन कैसी थी, इस बात को मैं न
सम्भव है, वे राजा और सामन्त इसी प्रकार सुगठित शरीर के रहे हो अथवा मूर्ति-
अपनी इच्छा से इन मूर्तियो को यथाशक्ति सुन्दर और आकर्षक बनाया हो। इसमे सह
नहीं जानता।

उस कमरे मे प्रवेश करते ही सबसे पहले गणेश जी की मूर्ति दिखायी देती है।
पास रणदेव के दो पुत्रो की मूर्तियाँ हैं और वे गणेश जी को मूर्ति के दोनो तरफ स्था
दोनो मूर्तियो मे प्रत्येक का नाम भीरू है। गणेश जी की मूर्ति के आगे चण्डमण्ड और
की मूर्तियाँ है। काली देवी की मूर्ति भी वहाँ पर स्थापित है। वह मूर्ति भयङ्कर कालो
एक पैर महिषासुर की छाती पर और दूसरा पैर सिह की पीठ पर है। काली देवी क
दोनो हाथो मे अस्त्र शस्त्र लिये हैं। वहाँ पर कुछ और भी मूर्तियाँ है और उनमे एक मूर्
गुरुदेव नाथ जी की है। नाथ जी के एक हाथ मे माला और दूसरे हाथ मे धर्मदण्ड है।

घोडे पर चढे हुये मल्लीनाथ की मूर्ति भी वहाँ पर दिखायी देती है। उसके एक
है और तरकस घोडे के पीछे लटक रहा है। उसकी स्त्री पद्मावती भोजन से भरे हुये पा
लेकर मल्लीनाथ के युद्ध क्षेत्र से लौटने की प्रतीक्षा कर रही है। मल्लीनाथ जब युद्ध मे
है तो उसकी पत्नी पद्मावती अपने पति के शव के साथ चिता मे बैठकर जल जाती है।

ऊपर जिन मूर्तियो का उल्लेख किया गया है, उनके सिवा कृष्ण कालो को प्रति
घोडे पर सवार है। इस प्रतिमा को यहाँ के लोग प्रभु जो की प्रतिमा कहते है। मारवा
कवियो ने प्रभु जी की प्रशसा मे कवितायें लिखी हैं और वे समय समय पर अपने प्रभु
ताओ को गा-गा कर सुनाया करते हैं। इससे उन कवियो को बडी प्रशसा मिलती है।
कार प्रभु जी का चित्र बनाकर मारवाड के देहातो मे रहने वाले लोगो को दिखाते हैं
लोग भक्ति भावना से प्रेरित होकर चित्र दिखाने वालो को दान मे धन देते हैं।

प्रभु जी मूर्ति के पीछे प्रसिद्ध वीर रामदेव की प्रतिमा है। रामदेव के सम्मान
के प्रत्येक ग्राम मे पूजा करने की वेदी का निर्माण किया गया है। सम्पूर्ण राजस्थान मे र
को बड़ी ख्याति मिली थी और आज तक राजस्थानी लोग उस पर अपनी आस्था रखते

इसके पश्चात् मैंने हर्ब साकला की मूर्ति देखी। वह अत्यन्त स्वाभिमानी था औ
में जोधा अपने राज्य से निर्वासित होकर दिन व्यतीत कर रहा था। हर्ब साकाल ने
उनकी बडी सहायता की थी। चित्तौर के राणा का मन्दोर पर अधिकार हो जाने पर
के लिए बडा प्रयत्न किया था। इसकी प्रतिमा भी मैंने यहाँ पर देखी।

छोटे भाई बख्तसिंह से वादा किया था, उसने उसको नागौर प्रदेश का अधिकार दे दिया। बहुत दिनो से मुगल साम्राज्य डावा-डोल हो रहा था। आपसी मतभेदो और विरोधो के कारण दिन पर दिन मुगलो की शक्तियाँ क्षीण होती जा रही थी। अभयसिंह नीति कुशल, अवसरवादी और दूरदर्शी था। उसने बीरा महल सांचार और इस प्रकार कितने ही सम्पन्न नगरो को—जो गुजरात मे शामिल थे—मारवाड राज्य मे मिला लिया और छोटे भाई बख्तसिंह को झालोर प्रदेश का अधिकार भी दे दिया।

अभयसिंह ने मारवाड राज्य मे शान्ति रखने की चेष्टा की और वहाँ की प्रजा भी राजभक्ति के कारण सिर न उठा सकी। परन्तु अपराध तो अपराध होता है। किसी के कुछ विरोध न करने पर भी अपराध फलता फूलता है और प्रकृति के नियमो के अनुसार अपराधी को दण्ड मिलता है। पिता की हत्या के अपराध मे अभयसिंह को मारवाड मे दण्ड देने वाला कोई न था परन्तु वह सुरक्षित न रह सका। मारवाड मे असन्तोष, द्वेष और फूट की आग भीतर ही भीतर सुलगने लगी।

राजा अजितसिंह के कई लडके थे। संक्षेप मे उनके सम्बन्ध मे यहाँ कुछ लिखना जरूरी है। अजितसिंह के लडको मे एक लडके का नाम देवीसिंह था। वह चम्पावत वश के प्रधान महासिंह के द्वारा गोद लिया गया था। इसलिये कि महासिंह के कोई लडका न था। देवीसिंह उन दिनो मे बीरा महल का अधिकारी था। वहाँ के लोगो की रक्षा कोलियो के अत्याचारो से जब वह न कर सका तो देवीसिंह ने पोकर्ण का प्रदेश लेकर उसके बदले मे बीरामहल दे दिया। सबलसिंह सवाई सिंह और नीमाज का सामन्त सालिमसिंह देवीसिंह के वशज थे।

अजितसिंह के एक लडके का नाम आनन्दसिंह था। वह स्वतन्त्र ईदर के महाराज के द्वारा गोद लिया गया था। मारवाड के राजा के पुत्र न होने की अवस्था मे आनन्द सिंह का उत्तराधिकारी मारवाड राज्य का अधिकारी होना चाहिए, परन्तु राठौर राज्य मे एक दूसरी ही प्रथा पायी जाती है। छोटा भाई अगर किसी दूसरे स्वतन्त्र राज्य मे गोद लिया जाता तो मारवाड़ के राजसिंहासन पर उसके वशजो का अधिकार रहता है। लेकिन अगर वह अपने राज्य के किसी सामन्त के द्वारा गोद लिया जाय तो मारवाड के राजसिंहासन पर उसका और उसके वशजो का कोई अधिकार नही रहता। राज्य के किसी सामन्त के द्वारा गोद लिये जाने पर उसका पैतृक अधिकार नष्ट हो जाता है और वह केवल उसी सामन्त के प्रदेश का अधिकारी रह जाता है, जिसने उसको गोद लिया है। इस प्रकार महासिंह के द्वारा गोद लिये जाने के कारण मारवाड के सिंहासन पर देवीसिंह का कुछ भी अधिकार न रहा।

जिन दिनो मे अभयसिंह मारवाड राज्य का अधिकारी हुआ और वह उसके राजसिंहासन पर बैठा, ठीक उन्ही दिनो मे मुगल शासन की सत्ता बडी तेजी के साथ नष्ट हुई। इस अवसर का लाभ उठाकर अभयसिंह ने मुगल साम्राज्य के अनेक प्रदेशो को अधिकार मे लेकर मारवाड राज्य मे मिला लिया। इसके बाद उसकी मृत्यु हो गयी और उसके मरने पर उसका लडका रामसिंह मारवाड के सिंहासन पर बैठा।

बख्तसिंह उन दिनो मे नागौर का शासक था और रामसिंह के अभिषेक समारोह का यहाँ पर उल्लेख करना जरूरी है, उससे राजपूतो की मनोवृत्ति का पता चलता है। रामसिंह बख्तसिंह का भतीजा था। इसलिये उसके अभिषेक के समय उसका आना आवश्यक था और इसलिये भी आवश्यक था कि नागौर मारवाड-राज्य का एक प्रदेश था और मारवाड के राजा की तरफ से बख्तसिंह को वहाँ के शासन का अधिकार मिला था। लेकिन रामसिंह के अभिषेक के समय बख्तसिंह स्वयं नही आया और उपहार की सभी चीजे उसने बूढी धाय के द्वारा भेज दी।

रमणीक बना हुआ है। उस सम्बन्ध मे आकर यह कहा जाय कि सम्पूर्ण महल मे अन्त
सबसे अधिक अच्छा है तो अतिशयोक्ति न होगी।

राजा अजितसिह का बाग अधिक बडा नही है। लेकिन वह जिस दीवार से घि
वह दीवार बहुत मजबूत बनी हुई है। बाग गरमी के दिनो मे भी बहुत शीतल रहता है
अनेक प्रकार के जलाशय है और कृतिम झरनो से बराबर पानी निकला करता है। इस
शयो और झरनो के कारण वह बाग गर्मियो मे भी शीतल और विश्राम के लिये बहुत
है। राजा अजितसिह का यह बाग अपनी बहुत-सी अच्छाइयो के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ
कुछ बातो का जिक्र करना आवश्यक जान पडता है।

इस बाग में अनेक प्रकार के वृक्ष हैं और वे सभी फल देने वाले हैं। कुछ ऐसे वृ
देखने में बहुत बडे हैं। परन्तु उनके फलो की कोई विशेष उपयोगिता नही हैं। छोटे वृ
चम्पक नाम के कुछ पेड है, जिसकी सुगन्धि बहुत तीव्र और असह्य होती है। यदि उस
लेटने के पलङ्ग पर रखकर सोया जाय तो उसकी तेज सुगन्ध से मस्तक मे पीडा होने ल

इस बाग मे अनार के बहुत से वृक्ष है। उनके साथ-साथ सीताफल के भी अने
पर पाये जाते है। यहाँ पर बहुत से वृक्ष केला के हैं। इन पेडो के बडे-बडे पत्तो के हिल
वायु मिलती है। मोगरा, चमेली और फूलरानी के फूलो की सुगन्धि से बाग सदा सुहावन
है। फूल वाले वृक्षो मे बारह मासा नाम के कुछ पेड यहाँ पाये जाते है। यह वृक्ष ब
महीनो मे बराबर खिला करता है। इसीलिये इस वृक्ष को बारह मासा का पेड कहा जा
पेडो से जो फूल खिलते हैं, उनसे बाग हमेशा शोभायमान रहता है। यह बाग मुझे बहुत
हुआ और उसमे कुछ देर तक विश्राम करने से मुझे बडा सुख मिला।

इस बाग की अनेक चीजे सुन्दर, आकर्षक, शोभायमान और उपयोगी हैं। मन्दो
धानी मे खोज और अनुसन्धान के लिये आया हुआ एक अङ्गरेज अपनी थकावट के समय
पहुँच कर किस प्रकार शान्ति और सुख का अनुभव करता हे, समझदार पाठक इसका अ
सकेंगे। वह अपने अनुसन्धान के कार्य मे लगा हुआ है। उसके नेत्रो के सामने आम के
खड़े हैं। पास ही तिन्दू का एक विशाल वृक्ष है। कहा जाता है कि परिहार राजपूतो के
नाहरराव के सामने अपने इन्द्रजाल का प्रदर्शन करते हुये किसी एक ऐन्द्रजालिक ने
अस्तित्व को कायम किया था। यह भी कहा जाता है कि इस वृक्ष की शाखा से गिर
उस ऐन्द्रजालिम की मृत्यु हो गयी थी। ❀ इस वृक्ष की लम्बी डालियो पर बन्दर निर्भीक
चढते और उन पर कूदते एवम् विहार करते है। उस वृक्ष के पास जाकर मैंने देखा कि
दो राटोर राजपूत सोये हुये हैं और पास ही, उनके दोनो घोडे बंधे हैं।

मन्दोर के पास जो पर्वत है, उसमे बहुत सी गुफाये हैं। उन गुफाओ मे त
सन्यासी लोग रहा करते हैं। उनके सम्बन्ध मे मैंने लोगो से अनेक प्रकार की बाते सुनी

❀ बादशाह जहाँगीर ने अपनी आत्म कथा लिखी थी। उस पुस्तक मे जहाँगीर
थी। उसका अनुवाद विद्वान मेजर प्राइस साहब ने किया है। जिन लोगो ने उस ग्रन्थ क
वे जानते होंगे कि ऐन्द्रजालिक लोग अपने इन्द्रजाल से बड़े-बडे अद्भुत कार्य करके दिखला
बात की बात मे किसी पेड मे फल पैदा करके लोगो को आश्चर्य चकित कर देते हैं।

जिसने बिना किसी कारण के और सैयद बन्धुओ के कहने से अपने जीवन का इतना बड़ा अपराध कर सकता था। उस बीती हुई घटना के सम्बन्ध में यहाँ पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। अभिषेक में वख्तसिंह के न जाने और धाय के द्वारा उपहार भेजने एवम् इसके बदले में रामसिंह के उस सन्देश के भेजने के परिणाम स्वरूप क्या हुआ, उसका वर्णन नीचे किया जाता है।

रामसिंह मारवाड के राजसिंहासन पर बैठ चुका था। उसके व्यवहारो मे शिष्टाचार का अभाव था। वह इस बात को भी न जानता था कि अपने अधीन सामन्तों के साथ मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिए। मारवाड़ राज्य मे जितने भी सामन्त थे, उनमे अहवा का सामन्त कुशलसिंह सबसे योग्य और प्रधान माना जाता था। वह चम्पावत वश का था। उसका शरीर कद मे छोटा लेकिन शक्तिशाली था। रामसिंह और उसके बीच साधारण बातो के सिलसिले मे एक मन मुटाव पैदा हो गया। रामसिंह में दूसरो का उपहास करने की आदत थी। लेकिन उपहास करना उसे आता न था। इसलिये उसकी बातचीत सहज ही अप्रिय हो जाती थी।

अपने इस स्वभाव के कारण राम सिंह ने एक बार कुशल सिंह को गुर्जी कह कर सम्बोधन किया। गुरजी राजस्थानी भाषा मे कुत्ते को कहा जाता है। रामसिंह ने कुशलसिंह के लिये इस प्रकार शब्द का प्रयोग केवल अपनी आदतो के कारण किया। उसको सुनकर सामन्त कुशलसिंह ने तेजी के साथ उत्तर दिया यह गुरजी आक्रमण करके सिंह के टुकडे-टुकडे कर सकता है।

सामन्त का यह उत्तर रामसिंह को अच्छा न मालूम हुआ। लेकिन उस समय वह कुछ न बोला। परन्तु यहीं से दोनो के दिलो मे अन्तर पड गया। इसके बाद उन दोनो के बीच एक घटना और घटी। दोनो एक दिन मन्दोर के जङ्गल मे घूम रहे थे। वहाँ पर तरह तरह के वृक्षो को देखते-देखते रामसिंह ने एक वृक्ष की तरफ सकेत करके कुशलसिंह से प्रश्न किया: इस पेड का नाम क्या है ?

जब मनोभावो मे किसी प्रकार का द्वेष होता है तो एक साधारण बात भी कडवी बनकर मनुष्य के मुख से निकलती है। सामन्त कुशलसिंह ने राजा रामसिंह के प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा: राजपूत जाति से जिस प्रकार मैं श्रेष्ठ हूँ, यह वृक्ष भी यहाँ के अन्य वृक्षो मे श्रेष्ठ माना जाता है। यह वृक्ष चम्पा है। चम्पा का वृक्ष उत्तम होता है।

सामन्त कुशलसिंह के इस प्रकार उत्तर देने का यहाँ पर कोई तुक न था। लेकिन रामसिंह के प्रति उसकी भावनाये दूषित थी। इसलिये वह उसको सम्हाल कर कोई अच्छा उत्तर न दे सका और उसने जो कुछ कहा, उसे सुनकर रामसिंह क्रोधित हो उठा। उसने कहा: अभी मैं इस श्रेष्ठ वृक्ष को उखाडकर फेंके देता हूँ। मारवाड राज्य मे चम्पा नाम का कोई वृक्ष नहीं रह सकता।

कुशलसिंह ने रामसिंह के इस जवाब को सुना। उसने कुछ उत्तर न दिया। लेकिन भीतर ही भीतर क्रोध से वह तमतमा उठा। उस दिन की बात यहीं से समाप्त हो गयी और मन्दोर के जङ्गल से दोनो कुशलपूर्वक वापस चले गये।

मारवाड के सामन्तो मे कुशलसिंह की तरह कुन्नीराम भी एक प्रधान सामन्त था। वह आसोप प्रदेश का सामन्त था और उसने राजपूतो की कम्पावत शाखा मे जन्म लिया था। कुन्नीराम साहसी और युद्ध कुशल था। परन्तु उसकी मुखावृत्ति अच्छी न थी। एक दिन राजा रामसिंह ने बातचीत करते हुये कुन्नीराम को बूढा बन्दर कह दिया। यह सुनकर कुन्नीराम ने अपना अपमान

इसके बाद अपने मुकाम पर राजा के आने पर मैंने अत्यन्त सम्मान के साथ उस
की । राजा के आने पर मेरे साथ के सैनिको ने अपने हथियारो को नीचा करके उसके
प्रकट किया । यह देखकर राजा को बडी प्रसन्नता हुई । राजा मानसिंह ने एक घण्टे त
बैठकर बाते की । इसके बाद जब वह लौटकर जाने के लिये तैयार हुआ तो मैंने हीरे
आभूषण सुनहले काम के वस्त्र, बहुमूल्य शाल और कितनी ही कीमती चीजे एवम् उन्नीस
को भेट मे दी । इनके साथ-साथ इङ्गलैंड के बने हुये कुछ हथियार, एक दुरबीन और
चीजें भी मैंने उसको उपहार मे दी । भेट की इन चीजों के साथ-साथ मैंने एक सजा हुआ
एक घोडा भी राजा को दिया । अपने यहाँ से विदा करते समय मैंने बड़े सम्मान के
सलाम किया और उसने मुझसे हाथ मिलाया ।

१७ नवम्बर—मारवाड से आज मेरे विदा होने का दिन था । इसलिये मैं रा
के पास गया । इस अन्तिम मुलाकात मे राजा के साथ बहुत देर तक मेरी बाते होती रही
करते हुये मैंने राजा को विश्वास दिलाया कि आप अपने पुरुषार्थ, विक्रम और चरित्र
समस्त कठिनाइयो पर विजय प्राप्त करेगे । राजा मानसिह ने अपनी जिन परिस्थितियो
से किया, उनका उत्तर देते हुये मैंने कहा कि जिन लोगो ने आपके और आपके राज्य के
सघात किया है और आपके उन्माद के दिनों मे अनैतिक लाभ उठाया है, उनको दण्ड
आपके जीवन का यह एक सङ्घर्ष है । उसके लिये सदा आपको तैयार रहना चाहिये ।
कर्त्तव्य है, जिसकी उपेक्षा नही की जा सकती । आपने यही किया भी है और आवश्यकत
सार भविष्य मे भी आपको यही करना पडेगा । शासक में यह सभी गुण होने की जरूरत
साधु और महात्मा नही होता । सफल शासक के लिये इस प्रकार के उन सभी गुणो
होती है, जो उसके शासन को कायम रख सके । आप मे इस प्रकार की योग्यता और प्रति
बात को मैं भली प्रकार जानता हूँ ।

मारवाड़ की अतीत और वर्तमान परिस्थितियो के सम्बन्ध मे मैंने राजा मानसि
प्रकार की बाते की और अपनी उन बातो मे मैंने उससे कहा : जिसका हृदय निर्बल
शासन नही कर सकता और ऐसे व्यक्ति के शासन मे अनधिकारी, अयोग्य तथा गैर-जिम्मे
नाजायज लाभ उठाते है । आपके शासन काल मे ऐसा समय बीत चुका है और उस
लोगो ने ऐसा ही किया है । आपने अपनी इन परिस्थितियो को पूर्ण रूप से समझा है और
घातियो, अत्याचारियो और विरोधियो को उचित दण्ड दिया है । आपके लिये ऐसा कर
था । मेरा विश्वास है कि वह समय अब आ गया है, जब आप मारवाड राज्य मे सफ
शासन करेगे और आपके शासन मे अङ्गरेजी सरकार आपकी सहायता करेगी ।

विदा होने के समय राजा मानसिह ने अपने पूर्वजो की एक तलवार, एक कटार
ढाल मुझे दी । वह तलवार अगणित शत्रुओ का अब तक सहार कर चुकी थी और भवि
वह ऐसा ही करती रहेगी ।

बहुत देर तक बाते करने के बाद और राजा के दिये हुये उपहार को स्वीकार कर
मैंने राजा मानसिह और मारवाड की राजधानी जोधपुर को सम्मान पूर्वक नमस्कार किय
बाद राजा की तरफ देखता हुआ मैं उनसे विदा हुआ । रवाना होने के पहले पत्र व्यवहार
लिये मैंने राजा से अनुरोध किया था । वह आरम्भ हुआ । लेकिन थोड़े समय के बाद बन्द

———

लिये रवाना हुये। जोधपुर के राजभक्त सामन्त अपनी-अपनी सेनाओ के साथ युद्ध क्षेत्र मे दिखाई देने लगे। लाडनू और निम्बी इत्यादि कुछ प्रदेशो के सामन्त विरोधी पक्ष मे जाकर मिल गये। लेकिन खैरोवा, गोविन्द गढ और भद्रार्जुन जैसे प्रदेशो के प्रसिद्ध सामन्त राजा के प्रति अपने कर्त्तव्य को न भूले। उन्होंने राज्य का नमक खाया था। इसलिये उससे उद्धार होने के लिये उन सामन्तो ने निश्चय किया। कुछ सामन्तो ने आपसी युद्ध मे शामिल होना उचित न समझ कर तटस्थ रहने का निर्णय किया।

रामसिंह अपने साथ पाँच हजार शूरवीर राजपूतो को लेकर युद्ध मे पहुँचा था। उसका विवाह राजा भोज की राज कुमारी के साथ हुआ था। इसलिये राजा भोज की तरफ से पाँच हजार सैनिको को एक सेना युद्ध मे रामसिंह की सहायता के लिये आयी थी। उस सेना ने राजधानी के बाहर मुकाम किया। वहाँ पर भोजपुरी राजपूतो के जो खेमे लगे थे और जिसमे रामसिंह की रानी स्वयं मोजूद थी, उसके ऊपर एक कौवा आकर बोलने लगा। उसका बोलना रानी के विश्वास के अनुसार अपशकुन सूचक था। इस प्रकार के अपशकुन की शान्ति का उपाय भी वह जानती थी। रानी ने हाथ मे बन्दूक लेकर उस कौवे को मार कर गिरा दिया।

रामसिंह अपने दूरवर्ती खेमे मे बैठा हुआ था। वह स्वभावतः क्रोधी था। उसने अचानक बन्दूक की आवाज सुनी। उसे क्रोध आ गया और बन्दूक की उस फायरिङ्ग को उसने अपना अपमान समझा। इसलिये उसने आवेश के साथ आदेश किया कि जिसने बन्दूक की यह आवाज की है, उसे पकड कर मेरे सामने ले आओ। उसके आदेश को सुनकर उसके नौकर चौक उठे और उन लोगो ने बडी नम्रता के साथ उससे कहा : महाराज बन्दूक की फायरिङ्ग करने वाला और कोई नही है। स्वयं रानी साहबा ने अपनी बन्दूक से एक फायरिङ्ग की है।

रामसिंह को रानी का नाम सुनकर भी सन्तोष न मिला। अपने बढते हुये क्रोध मे उसने आदेश दिया : रानी से जाकर कहो कि वह हमारे राज्य से फौरन निकल जाय और वह जहाँ से आयी है, वहीं चली जाय।

पति के इस आदेश को सुनकर रानी बहुत दुखी हुई। लेकिन वह अपने स्वामी के कल्याण के लिये भगवान से प्रार्थना करने लगी। अपने पति से भी उसने क्षमा प्रार्थना की। लेकिन रामसिंह ने उसे स्वीकार नही किया। जब किसी प्रकार पति का क्रोध शान्त नही हुआ तो उसने दुखी होकर कहा : बिना किसी अपराध के आप मुझे इस प्रकार का दण्ड दे रहे हैं, इसका परिणाम अच्छा नही होगा और आपके मस्तक से मारवाड का राज मुकुट उतार दिया जायगा।

यह कहकर रानी अपने पिता के राज्य से आये हुये पाँच हजार सैनिको की सेना को लेकर और युद्ध क्षेत्र को छोड अपने पिता के राज्य को चली गयी। इस युद्ध के लिये जो सेनाये रामसिंह के पक्ष मे युद्ध करने के लिये आयी थी, उनमे से भोजपुरी सेना के चले जाने से रामसिंह की सैनिक शक्ति कमजोर पड गयी। नीमाज, रायपुर और राऊस की सेनाये किउसिर के ठाकुर की अधीनता मे बख्तसिंह के झण्डे के नीचे पहुँच गयी और समस्त चम्पावत और कम्पावत राजपूतो के साथ मिल गयी। रामसिंह के पक्ष मे एकत्रित सेनाये सब मिलाकर भी बख्तसिंह के पक्ष की सेनाओ से कम थी। लेकिन रामसिंह के मारवाड के राजा होने के कारण उनका साहस विरोधी सेनाओ की अपेक्षा प्रबल था। मैडता के इस मैदान मे रामसिंह ने अपनी सेना का मुकाम किया था और उसने तीन मील के फासिले पर मुकाम करके बख्तसिंह का रास्ता देख रहा था। उसकी सेना ने जहाँ पर मुकाम किया था, वह मुकाम माता जी का स्थान कहलाता है। वहाँ पर आद्याशक्ति का एक मन्दिर है। कहा जाता है कि यह मन्दिर और उसके पास का जलाशय पाण्डवो का बनवाया हुआ है।

पर पहुँचे थे, वहाँ पर हमने फिर नदी को पार किया। नदी के किनारे के कुछ दूरी बने हुये हैं। उन्ही कुओं का पानी उस ग्राम के रहने वाले अपने व्यवहार में लाते हैं। दो कुएँ देखने को मिले। उनमे काफी जल है। लेकिन साफ नही है। उन कुओ की गहर सतह से लगभग चार फुट है। नन्दोला ग्राम मे एक सौ पच्चीस घरो की आबादी है अ आहोर के सामन्त का अधिकार है। यहाँ पर एक सूखा तालाब भी है। उसमे जल बिल उसके करीब कुछ स्मारक बने हुये है। मैंने उन स्मारको के पास जाकर देखा। जिसका था, उस पर उसका नाम लिखा हुआ है। उन नामो से जाहिर होता है कि ये स्मारक प्रा के नही है। फिर भी मैं उन स्मारको को बड़ी देर तक देखता रहा।

नन्दोला से लगभग बारह मील की दूरी पर बीसलपुर नामक ग्राम है। यह रास बालू से भरा हुआ है। एक ऊँची भूमि के ऊपर बीसलपुर ग्राम की बस्ती है। उस ग्रा भी घर हैं, करीब-करीब एक से बने हुये हैं। घरो की दीवारो पर भूसी से मिली हुई मि से लगी हुई है, जो देखने मे बड़ी अच्छी मालूम होती है।

इन्दुरा ग्राम की तरह बीसलपुर भी मजबूत और काँटेदार कोट से घिरा हुआ है बहुत-सी बातो को देखने से मालूम होता है कि यह ग्राम पहले कभी एक अच्छा नगर जाता है कि भूकम्प के आने से यह ग्राम बिलकुल नष्ट हो गया था। उसके बाद यहाँ की नही सकी। इसीलिये वह आज एक साधारण ग्राम के रूप मे दिखायी देती है। इस ग्राम भी गिरी हुई दशा में जो फाटक देखने को मिलता है, उससे भी जाहिर होता है कि यह किसी समय एक कस्बा अथवा नगर की मर्यादा मे था। इसके समर्थन मे और भी अनेक पर देखने को मिलते हैं। इस ग्राम का कोट यद्यपि इन दिनो मे बहुत कुछ नष्ट हो गया फिर भी वह इस ग्राम की प्राचीन विशालता का प्रमाण देता है। यहाँ पर खुदा हुआ हमको नही मिला। इस ग्राम के निवासी अपने काम के लिये निकटवर्ती एक तालाब से पान

२१ नवम्बर—बीसलपुर से दस मील की दूरी पर पाँचकुल्वा अथवा बिचकुल्ला नाम है। वहाँ पहुँच कर घुरी नामक नदी की दूसरी तरफ हम लोगो ने मुकाम किया। यहाँ की बडी अच्छी मालूम हुई। वह बालू की तरह लाल रङ्ग की है। नदी के किनारे के खेतो मे पैदा होता है, उसमे गेहूँ और जो की पैदावार अच्छी होती है। यहाँ की जमीन मे बबूल के एक-दो वृक्ष भी दिखायी पडे।

इस ग्राम मे आजकल सौ घरो से अधिक की बस्ती नही है। लेकिन पहले यह सम्पन्न अवस्था मे था। यहाँ के पुराने आदमी इस ग्राम की समृद्धि अवस्था की तारीफ बहुत-सी बातो का वर्णन करते हैं। मैंने उनको ध्यानपूर्वक सुना। यहाँ पर मुझे शिला-लेख टुकडा मिला। उसमे सिर्फ 'सोनङ्ग का लडका १२२४ सम्वत्' लिखा है। लुटेरे पठानो ने करके इस ग्राम को सभी प्रकार बरबाद कर दिया है। भट्टी सामन्त की जीविका के रूप में राज्य की तरफ से दिया गया है। नदी के किनारे से कुछ फासिले पर जो कुएँ बने हुये है के लिये इस ग्राम के रहने वाले उन्ही से जल लाते हैं।

२२ नवम्बर—यहाँ से आठ मील की दूरी पर पीपल नगर बसा हुआ है। बालू से वहाँ की जमीन कालो है। वहाँ के लोग उसे धामुनी कहते है। पीपल नगर के लगभग डेढ़ स की आबादी है। यहाँ पर जो लोग रहते हैं, उनके एक तिहाई लोग जैन सम्प्रदाय के मानने

शत्रुओ का भीषण सहार किया। बख्तसिह के साथी चम्पावत लोगो ने मैडता के राजपूतो के साथ कठिन युद्ध किया और एक बार उन्होंने अपनी भयानक तलवारो के बल से मैडतीय राजपूतो को युद्ध क्षेत्र मे भयभीत कर दिया।

इस समय युद्ध-क्षेत्र मे चारो तरफ से भयानक मार हो रही थी। तोपो की भयानक आवाज के साथ-साथ तलवारो की झनकार से कानो के परदे फट रहे थे। युद्ध के क्षेत्र मे सैनिको के कटे हुए शरीर बडी सख्या मे दिखायी देने लगे। इस भयानक सग्राम मे कोई भी पक्ष पीछे हटने की स्थिति मे न था। दोनो पक्ष के लोग अपने-अपने शत्रुओ के सहार का निश्चय करके आगे बढ रहे थे। अभी तक युद्ध के परिणाम का अनुमान लगा सकना किसी के लिए सम्भव नही मालूम होता था।

युद्ध की इस परिस्थिति मे मैडतीय राजपूतो का सरदार शेरसिह मारा गया। उसके गिरते ही उसका भाई अपनी सेना के साथ आगे बढा और उसने शत्रुओ के साथ भीषण युद्ध आरम्भ किया। इसी समय अहवा का शूरवीर सामन्त मारा गया। यह देखकर दोनो पक्ष की ओर से युद्ध ने भयंकर रूप धारण किया। बहुत से सैनिक जान से मारे गये और बडी सख्या मे पक्षो के लोग घायल होकर गिर गये। परन्तु किसी पक्ष की सेना ने पीछे हटने का इरादा नही किया।

बख्तसिह की सेना बडी थी। इसलिए वह शत्रुओ मे जिस तरफ रामसिह को देखता, उसी तरफ आगे बढकर वह उस पर आक्रमण करने की कोशिश करता। इस युद्ध मे मैडतीय सैनिको ने अपनी बडी बहादुरी का परिचय दिया और जब तक वे सब के सब मारे नही गये, बख्तसिह को उन्होने आगे नही बढने दिया। रामसिह के पक्ष मे सैनिको की सख्या कम थी। मैडतीय वीरो के मारे जाने पर रामसिह का पक्ष निर्बल हो गया। इस दशा मे बख्तसिह की सेनाये आगे बढी। रामसिह की सेनाये अपनी बढती हुई निर्बलता मे पीछे की तरफ हटने लगी। मिथरी के सामन्त का अधिकारी युद्ध करते हुये मारा गया। वहाँ का सामन्त युद्ध करते हुये अपने लडके के साथ बलिदान हुआ।

मिथरी के सामन्त के पुत्र की घटना अत्यन्त रोमाञ्चकारी है। इसीलिए यहाँ पर सक्षेप मे उसको हम लिखने का प्रयास करते है। मैडता के मैदानो मे होने वाले इस युद्ध मे बहुत पहले मिथरी के सामन्त के इसी लडके के साथ जयपुर-राज्य के निरूमा के सामन्त की लडकी के साथ विवाह निश्चय हुआ था। इस युद्ध के दिनो मे मिथरी-सामन्त का लडका अपना विवाह करने के लिए निरूमा गया था, जिस समय उसका विवाह-संस्कार हो गया था, उसने सुना कि शत्रुओ की सेनये युद्ध मे बढ रही है, इसी समय हाथ मे बधे हुये ककण को खोलकर वह बाहर निकला और घोडे पर बैठकर वह युद्ध के लिए मैडता की तरफ हुआ।

उस समय मे रामसिह का पक्ष निर्बल पड रहा था। मिथरी के सामन्त का लडका वहाँ पहुँच गया और उसने शत्रुओ के साथ युद्ध आरम्भ कर दिया। उस दिन युद्ध मे उसने अपने असीम पौरुष का परिचय दिया। परन्तु दूसरे दिन युद्ध करते हुये वह मारा गया। मारवाड के कवियो ने मिथरी के उत्तराधिकारी की वीरता का वर्णन अपनी बहुत-सी कविताओ मे किया है। विवाह-मण्डप के नीचे से मिथरी के सामन्त कुमार के चले आने पर निरूमा के सामन्त की नव-विवाहिता कुमारी भी अपने नगर से रवाना हुई। लेकिन युद्ध स्थल पर पहुँचते ही उसे मालूम हुआ कि उसका पति मारा गया तो उसी समय उसने चित्ता बनावाई और अपने पति के शव को लेकर वह भस्म हो गयी।

गया। उसने बहुत पहले न जाने कितने लोगो से सुन रखा था कि साँप अगर चोट खाक
तो वह बदला लेता है। इस विश्वास के अनुसार उसने सोच-समझ कर यह निश्चय कि
सवेरा होते ही अपने लड़के को उसके पिता के पास भेज दूँगी। इसके लिये उसने एक बैल
में जाने वाले एक आदमी का प्रबन्ध कर लिया। चिन्ता और भय के मारे ब्राह्मणी को र
नही आयी। प्रातःकाल होते ही वह अपने लडके को जगाने के लिये उस स्थान पर गय
उसका लडका रात को सोया था।

ब्राह्मणी के मनोभावो मे भय और चिन्ता तो थी ही। उसने वहाँ पहुँचते ही देख
पर उसका लडका नही है और उसके स्थान पर साँप सो रहा है। यह देखते ही उसकी घ
ठिकाना न रहा। उसी समय नागोर गया हुआ उसका पति लौट कर आ गया। उसने अ
पूरी घटना सुनी। उसने बुद्धिमानी से काम लिया और साँप को मारने के बजाय पह
उसने दूध पिलाना आरम्भ किया। ब्राह्मण की इस भक्ति से प्रसन्न होकर साँप अपने अ
समस्त सोना निकाल कर ब्राह्मण के पास लाया और उसे दिखाकर साँप ने कहा. यह स
आज मैं तुमको सौपता हूँ। तुम आज से इसके मालिक हो। लेकिन इसे पाकर तुम कोई
करना, जिससे मेरा कोई स्मारक बन सके।

साँप के दिये हुये समस्त सोने को लेकर पीपा ब्राह्मण ने अपने अधिकार मे किया
सम्पत्ति से साँप के स्मारक मे उसने 'साँपू सरोवर' नामक एक बडा तालाब बनवाया। इ
के सम्बन्ध मे पीपल नगर के लोग इस प्रकार की कथा कहा करते है। उन्ही के द्वारा
फैली हुई जनश्रुति को सुना।

पीपल नगर में एक कुण्ड है। लक्षफुलानी उस कुण्ड का नाम है। अत्यन्त प्राची
मारवाड राज्य के अन्तर्गत फुलैरा नामक एक स्थान था और उसमे लक्षफुलानी का अधि
लोगो का कहना है कि बहुत पहले लक्षफुलानी को बडी ख्याति मिली थी और समुद्र के
उसने अपने राज्य का विस्तार किया था। लूनी नदी से सिन्धु तक यात्रा करने के दिनो मे
से स्थानो पर लक्षफुलानी का नाम सुना है। ❀

२३ नवम्बर—पीपल नगर से माद्रीय नामक स्थान दस मील की दूरी पर है। व
लिये जो रास्ता है, वह सभी प्रकार अच्छा है। लेकिन सम्पूर्ण रास्ता सुनसान रहता है।
औसत दर्जे का है। न तो वह बहुत अच्छा है और न बहुत खराब है। इस ग्राम मे एक त
उसका जल अच्छा है। वहाँ के निवासी उस तालाब के जल को व्यवहार मे लाते है।

२४ नवम्बर— आठ मील के फासिले पर भुरुण्डा नामक गाँव बसा हुआ था हमारे
सम्पूर्ण रास्ता धीरे-धीरे बदलता जा रहा था। इसके पहले बालू के जिस मार्ग मे हमे
था, वह अब बिलकुल बदल गया था। आगे का मार्ग लगातार रेतीला और पथरीला हमे
है। मार्ग मे हमे वे सभी वृक्ष मिलते रहे, जो यहाँ पर पाये जाते हैं। यह मार्ग ऊँचाई प

❀ लक्षफुलानी के सम्बन्ध मे एक जनश्रुति बहुत पहले से चली आ रही है उस ज
लोग कविता मे कहा करते हैं जो इस प्रकार है :

कुशपगढ सुरजपुरा, बासुकगढ़ और तक्ष।
अन्धानिगढ जगरपुरा, जो फुलगढई लक्ष।

इस कविता से जाहिर है कि तक्षक वंशीय लक्ष के अधिकार मे कविता मे
नगर थे।

उन दिनो मे ईश्वरी सिह जयपुर का राजा था। वह वख्तसिह की वीरता से भली भाँति परिचित था। इसलिए जब वख्तसिह ने उससे मुलाकात की और सारी बाते उसने उसके सामने रखी तो ईश्वरीसिह के सामने एक विषम परिस्थिति पैदा हो गयी। ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिये, वह इस बात का निर्णय न कर सका। उसके सामने एक भयानक समस्या थी। वडे असमजस मे पडकर उसने एक रास्ता निकाला और वख्तसिह की समस्या को सुलझाने के लिये उसने निश्चय कर लिया। स्वर्गीय अजित सिह का एक लडका ईडर मे शासक था। उसकी एक लडकी ईश्वरी सिह को व्याही थी। ईश्वरी सिह अपनी उस रानी के पास गया और महल मे बैठकर उसने परामर्श किया।

ईश्वरी सिह स्वर्गीय अजित सिह की हत्या का बदला लेना चाहता था और अपने दामाद रामसिह के अधिकारो की रक्षा भी करना चाहता। उसने रानी से बाते करते हुए कहा: मेरे सामने एक विकट समस्या है। इस समय रामसिह और वख्तसिह के बीच मे भयानक सघर्ष है। मैं जिसका समर्थन करूँगा, उसी के पक्ष मे मुझे युद्ध करना पडेगा। इसलिये कि युद्ध के द्वारा ही, इन दोनो के सघर्ष का निर्णय हो सकता है। अगर मैं वख्तसिह का विरोध करता हूँ तो मैं सफलता की आशा नही करता और अगर मैं रामसिह का समर्थन करता हूँ तो समाज मुझे क्या कहेगा। इसलिये कि पिता की हत्या कराने के बाद अभयसिह मारवाड़ के सिंहासन पर बैठा था और उसके बाद उस राजसिंहासन का अधिकार रामसिह को प्राप्त हुआ। इस दशा मे म इन दोनो मे से किसी के पक्ष का समर्थन नही करना चाहता। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिये। जिससे मुझे किसी प्रकार का आघात न पहुँचे। इस सकट से मुक्ति पाने के लिये एक मात्र तुम्ही मेरी सहायक हो सकती हो।

वडी देर तक परामर्श करने के बाद निश्चय हुआ कि विष को विष के द्वारा नाश किया जाता है। अपराधी के साथ अपराध करना किसी प्रकार अधर्म नही है। इस निर्णय मे एक सकेत था। उसको समझ कर ईश्वरी सिह ने उसको स्वीकार कर लिया। इसके बाद उसको कुछ शान्ति मिली।

ईश्वरी सिह की यह रानी ईदर की राजकुमारी थी और वह वख्तसिह की भतीजी थी। अपने पति के जीवन मे पैदा हुए सकट को दूर करने के लिये उसने जो निर्णय किया था, उसके लिये उसने तैयारी की और उसके बाद भेट करने के लिए उसने अपने चाचा वख्तसिह के पास सन्देश भेजा। वख्तसिह इस समय जिस स्थान पर मौजूद था, वह स्थान मेवाड, मारवाड और अम्बेर—तीनो राज्यो की सीमा के बीच मे पडता था। वख्तसिह ने अपने पास भतीजी को आने और भेंट करने के लिये उसे इजाजत दे दी। ईश्वरी सिह की रानी अपने साथ बहुमूल्य कुछ वस्त्रो को लेकर और उनको उपहार मे देने के लिये चाचा से भेट करने के लिये रवाना हुई।

वख्तसिह से भेट करके उसकी भतीजी के जाते ही उसको भयानक रूप से ज्वर आ गया और शक्तिशाली वख्तसिह को उसने क्षण भर मे विह्वल कर दिया। वख्तसिह की इस दसा को देखकर तुरन्त वैद्य बुलाया गया। उसने आकर वख्तसिह को देखा और उसने कहा, आपको सेहत करने के लिये किसी भी ओषधि मे शक्ति नही है।

राठौर राजा वख्तसिह ने वैद्य के मुख से इस बात को सुनकर कहा: क्या तुम मुझको सेहत नही कर सकते? अगर मेरे रोग को दूर करने की शक्ति तुममे नही है तो फिर तुम

इलाका बदन सिंह के वंशवालो को दे दिया । उसने इस बात का भी आदेश कर दिया कता पड़ने पर इस प्रदेश की रक्षा बदन सिंह के वंश के लोग ही करेगे । भुरुण्डा की वा सात हजार रुपये है ।

बदन सिंह के स्मारक के पास मैंने एक दूसरा स्मारक देखा । उसमें प्रताप का हुआ था । प्रताप एक अच्छा शूरमा राजपूत था और अपने प्रदेश की स्वाधीनता के लिये बादशाह औरङ्गजेब की सेना के साथ युद्ध किया था । मुगलो की सेना बहुत बड़ी थी । इ मुकाबिले मे राजपूतो की पराजय हुई और युद्ध करता हुआ प्रताप मारा गया ।

२५ नवम्बर—यहाँ से दस मील दूरी पर इन्दुवर नामक एक ग्राम है । वहाँ पर की आबादी है । उस गाँव के सभी कृषक जाट वश के हैं । मैंने अभी तक इन जाटों बहुत कम लिखा है । जाट लोग स्वाभाविक रूप से परिश्रमी होते हैं । उनको स्वतन्त्र उनके शरीर मजबूत और बलवान होते हैं । जाट लोग कृषि कार्य को अधिक महत्व देते शरीर के रङ्ग प्रायः काले होते है ।

मारवाड के राजा ने सिन्ध के भूतपूर्व अधिकारी को उसकी जीविका के लिये ग्राम दिया था । सिन्ध का वह अधिकारी कालोरा जाति का है और वह अपने को पार है । बलोचिस्तान के नमूरी लोगो के साथ मिल जाने से उसके वंशवालो की संख्या अधि है । नमूरी लोग अपने आपको अफगानी कहते हैं । लेकिन वे लोग मध्य एशिया के रहने लोगो मे से है ।

२६ नवम्बर—यहाँ से आठ मील की दूरी पर मैड़ता नामक एक स्थान है । एक पार करके हम लोग मैड़ता मे पहुँचे । वहाँ से दक्षिण की तरफ लगभग पच्चीस मील अरावली पर्वत के शिखर दिखायी पडते हैं । पश्चिम की तरफ बहुत ऊँची-नीची भूमि दू गयी है । यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है । लेकिन जल गहराई मे होने के कारण उससे को कोई फायदा नही पहुँचता । जो खेत बस्ती के पास हैं, उनमें ज्वार, मक्का और तिल होता है ।

मैडता एक ऊँची भूमि पर बसा हुआ है । इसलिये देखने मे वह रमणीम औरङ्गजेब बादशाह ने यहाँ के एक विशाल हिन्दू मन्दिर को नष्ट करके उस पर मस थी । वह मसजिद यहाँ के अन्य सभी हिन्दू मन्दिरा से ऊँची है । बादशाह औरङ्गजेब ने य मसजिद बनवाई है, उसमे फारसी और हिन्दुस्तानी मे लिखवा कर पत्थर लगवाये गये हैं द्वारा इस बात की हिदायत दी गई है कि कोई भी इस मसजिद मे किसी प्रकार का करे । लेकिन इस प्रकार के पत्थर किसी हिन्दू मन्दिर मे लगे हुये हमे देखने को नही मिले

यहाँ के रहने वालो का कहना है कि मारवाड राज्य के लोभी धौकल सिंह ने पठानो की सहायता की थी और अमीर खाँ को प्रसन्न करने के लिए ही उसने इस प्रका उस मसजिद मे लगवाये थे ? धौकल सिंह को अपनी इस खुशामद का कोई फल न मिला । उसकी कमजोरी को समझता था । समय आने पर उसने धौकल सिंह को बरवाद किया नक रूप से उसकी सेना का उसने संहार किया । एक मतलबी और सिद्धान्तहीन मनु प्रकार सर्वनाश होता है, ठीक उसी तौर पर धौकल सिंह का विनाश हुआ । इस प्रकार पहले वर्णन की जा चुकी है ।

भाग ५

का अधिकार राज्य के सामन्त को था। इस राज्य के सामन्तो को सदा से इस प्रकार का अधिकार रहा है।

वख्त सिंह के मर जाने के बाद राज्य के सामन्तो ने उसकी अभिलाषा को सफल बनाने की कोशिश की। सभी सामन्तो ने वख्त सिंह के उसके लडके विजय सिंह के अधिकारो की रक्षा करने का वादा किया था। उस प्रतिज्ञा के अनुसार सामन्तो ने मायोरात नामक स्थान पर विजय सिंह का अभिषेक किया।

रामसिंह ने मराठा सेनापति जयअप्पा सीधिया से मिल कर कोटा राज्य पर आक्रमण किया और मेवाड का विनाश करके वह मराठा सेना मे साथ अजमेर मे पहुँच गया। वहाँ पर सेनापति सीधिया के साथ रामसिंह का कुछ मतभेद हो गया था। लेकिन उसके बाद वह दूर हो गया। इसके बाद रामसिंह को लेकर मराठा सेनापति ने अपनी विशाल सेना के साथ मारवाड राज्य मे प्रवेश किया। मराठो के इस आक्रमण को रोकने के लिए विजयसिंह ने बडी तेजी के साथ तैयारी की और अपने साथ दो लाख सैनिक की एक शक्तिशाली सेना को लेकर वह रवाना हुआ। अत्याचारी और लुटेरे मराठो की सेना को लेकर रामसिंह ने मारवाड राज्य पर आक्रमण किया है, यह सुनकर और जानकर मारवाड के प्रत्येक राजपूत का खून खौल उठा था।

मैडता से कुछ दूरवर्ती मैदानो मे दोनो तरफ की सेनाओ का सामना हुआ। उसी समय दोनो तरफ से गोलो की वर्षा आरम्भ हुई। तोपो के धुएँ से वह मैदान दूर तक अन्धकारमय हो उठा। उस दिन दोनो तरफ से वरावर गोले वरसते रहे। मैडता के रहने वालों ने इस युद्ध मे मारवाड सेना के भोजन की व्यवस्था की थी। इस कार्य मे मैडता के बहुत से आदमी मारे गये। वहाँ पर दादू पथी जो एक सन्यासी रहा करता था, उसके अनेक शिष्य खाने की सामग्री एकत्रित करते हुए मराठा सैनिको के द्वारा मारे गये।

दूसरे दिन भी भयानक रूप से युद्ध आरम्भ हुआ। उसमे वहुत से मराठा सैनिक मारे गये लेकिन विजय सिंह की सेना की अपेक्षा मराठो की सेना वहुत वडी थी। इसलिए राजपूत सेना कुछ पहले से ही चिन्तित और भयभीत हो रही थी। दूसरे दिन के युद्ध मे दोनो तरफ के सैनिक मारे गये और किसी पक्ष ने युद्ध से हटाने का विचार नही किया। तीसरे दिन विजय सिंह की सेना के साथ वाले पशुओ की एक दुर्घटना हो गयी। जिस समय विजयसिंह के आदमी अपनी सेना के पशुओ को मैडता के बाहर एक छोटी-सी नदी मे पानी पिलाने के लिए गये तो उस समय रास्ते मे विजय सिंह के अश्वारोही सैनिको की एक सेना मिल गयी। वह सेना मराठो की एक सेना का सर्वनाश करके लौटी हुई आ रही थी। उसके अश्वारोही सैनिको ने विजय सिंह की सेना के पशुओ को रामसिंह के पशु समझ कर आक्रमण किया और अपनी गोलियो से उन्होने उन पशुओ को मार डाला। उन पशुओ के साथ विजय सिंह के जो नौकर थे, वे भी मारे गये।

इन पशुओ के मारे जाने से विजय सिंह की सेना की वडी हानि हुई। उन्ही पशुओ के द्वारा सेनाओ का सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर लद कर जाता था। उनका सहार अपने ही सैनिको के द्वारा हुआ। शत्रु के पशु और उसके रक्षक समझकर उन सैनिको ने उनका सहार किया था। उनके मारे जाने से बोझा ढोने वाले पशुओ और उसके रक्षको का ही नुकसान नही हुआ, एक और भी अनिष्ट हुआ। वह अनिष्ट ही सवसे अधिक भयानक सावित हुआ। दकियानूसी विचारो पर विश्वास करने के कारण विजय सिंह के पक्ष मे जितने भी राजपूत युद्ध के लिए आये थे, सवका विश्वास हो गया कि अपने ही सैनिको के द्वारा अपने पशुओ और उनके रक्षको का

विजय सिंह अपने कुछ साथियों के साथ नागौर की तरफ जा रहा था। रात का समय था और भयानक अंधकार था। उस अंधकार में मार्ग का पहचानना अपरिचित लोगों के लिए कठिन हो रहा था। जो लोग उसके साथ थे, उनमें राहिन का सामन्त भी था। वह विजय सिंह के साथ चल रहा था। परन्तु किसी भी दशा में वह अपने आपको सुरक्षित रखना चाहता था। मार्ग में चलते हुए विजय सिंह ने राहिन के सामन्त से कहा कि नागौर पहुँचकर राजपूतों को एकत्रित करेंगे और एक नयी सेना को लेकर मराठों से मारवाड की स्वाधीनता की रक्षा करेंगे। विजय सिंह का यह परामर्श राहिन के सामन्त को पसन्द नहीं आया। वह अब मराठों के साथ युद्ध करने के लिए तैयार न था। लेकिन विजय सिंह से वह कुछ कह न सका।

राहिन का सामन्त विजय सिंह को बिना कुछ बताये हुए अपने नगर की तरफ ले जा रहा था और विजय सिंह का निश्चय नागौर पहुँचने का था। इसके सम्बन्ध में उसने साथ के सामन्त से बातें कर ली थीं। इसलिए वह समझता था कि सामन्त नागौर की तरफ चल रहा है। लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि जिस रास्ते पर हम लोग चल रहे हैं, वह रास्ता नागौर की तरफ नहीं जाता। यह देखकर राहिन के सामन्त लालसिंह को सम्बोधित करते हुए उसने कहा ' ठहरिये, हम लोग रास्ता भूल गये। इसलिए यहाँ से नागौर की तरफ मुड जाइए।

लालसिंह ने रास्ते चलते हुए कोई भूल नहीं की थी। वह नागौर नहीं जाना चाहता था। इसलिए जान बूझकर वह अपने नगर की तरफ बढ रहा था। इस समय विजय सिंह ने जो कुछ कहा उसका कोई प्रभाव सामन्त लालसिंह पर न पडा। यह सब समय की बात होती है। अभी कुछ घण्टे पहले जिस विजय सिंह के आदेश पर दो लाख राजपूत युद्ध के लिए आये थे और मारवाड राज्य के समस्त सामन्त विजय सिंह के लिए मरने मारने को तैयार थे, उसी विजय सिंह का एक सामन्त आज उसकी बात को सुनने के लिए तैयार नहीं है। यह सब समय की बात होती है।

सामन्त लालसिंह ने जब देखा कि विजय सिंह किसी भी दशा में नागौर जाना चाहता है तो अपने मन के भावों को बदल कर उसने प्रार्थना की : यहाँ से मेरा नगर बहुत करीब है। अगर आप इजाजत दें तो मैं अपने परिवार के सब लोगों को जाकर देख आऊँ और उसके बाद लौट आऊँ।

विजय सिंह समझदार था। सामन्त लालसिंह के मन का भाव उससे छिपा न रहा। सामन्त के उत्तर में उसने कुछ कहा नहीं और अपने घोड़े को घुमाकर वह नागौर की तरफ चलने लगा। उसके साथ के केवल पाँच शिलापोस उसके पीछे पीछे चलने लगे। शरीर रक्षक को मारवाडी भाषा में शिलापोस कहा जाता है। विजय सिंह रात के अन्धकार में चलता हुआ कुजवाना नामक स्थान पर पहुँच गया। लेकिन वहाँ पर रुकना किसी प्रकार उसके लिए सुरक्षित न था। इसलिए विजय सिंह उस स्थान को छोड कर आगे की तरफ बढा।

कुछ दूर निकल जाने के बाद कुजवाना स्थान की सीमा पर उसके घोडे की हालत बिगडी। वह इतना थक गया था कि चलने के लिए उसमें शक्ति न रह गयी थी। उसकी इस दशा को देखकर विजय सिंह उसकी पीठ से उतर पडा। घोडा उसी समय गिर गया विजय सिंह के देखते-देखते उस घोडे की मृत्यु हो गयी। उसके मर जाने से विजय सिंह के हृदय को बडा आघात पहुँचा। युद्ध में राजपूतों की सफलता का बहुत बड़ा कारण उनका घोडा होता है। विजय सिंह इस समय बहुत हताश हुआ। उसे भय था कि शत्रु पीछा करते हुये कहीं आ न रहे हों। ऐसे समय पर घोड़े का मर जाना उसे बहुत खला।

हत्याकारी बख्तसिंह अजितसिंह को मारकर महल की सबसे ऊँची छत पर च
ऊपर जाने के पहले उसने सभी दरवाजो को बन्द कर दिया था । ये दरवाजे इस प्र
गये थे कि उनको तोड़ने और खोलने मे रात का बाकी सम्पूर्ण भाग समाप्त हो गया । स
बख्तसिह ने महल की छत से सब के देखते-देखते बडे भाई अभयसिह के भेजे हुये पत्र
कहा : मैंने अपने मन से कुछ नही किया । पिता को जान से मार डालने के लिये भा
का यह पत्र मुझे मिला था । बख्तसिह का फेका हुआ पत्र पढ़ा गया और सभी लोगो
को पढ़ा जो अभयसिंह के द्वारा पिता को मार डालने के लिए बख्तसिह को मिला था ।
थे । स्त्री-पुरुषो के नेत्रो से आँसू निकल-निकल कर गिर रहे थे ।

अजितसिंह के मारे जाने पर उत्तराधिकारी अभय सिह सिंहासन पर बैठेगा
यहाँ का राजा है, यह सोचकर राज्य के समस्त कर्मचारी और पदाधिकारी शान्त हो ग
में राजभक्ति सदा से रही है । उसी भावना के कारण अजित सिह को हत्या को वह
भूलकर अभयसिह के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करना मुनासिब समझा । राजा
चौरासी रानियाँ थी । वे सभी अजित सिंह के शव के साथ चिता पर बैठी और सती

अजितसिह स्वाभिमानी और प्रभावशाली शासक था, राज्य की प्रजा पर उसक
कार था और समस्त प्रजा उसके प्रति अपनी राजभक्ति प्रकट करती थी । अजितसिह
मृत्यु से मारवाड़ के समस्त स्त्री पुरुषो और बच्चो को वेदना पहुँची थी, राज्यो के स
सामन्तो ने अपने राजा अजितसिह के लिये बहुत अधिक विलाप किया था । लोगो का
राज्य की सम्पूर्ण प्रजा अजितसिह पर स्नेह रखती थो । राजभक्ति के कारण मारवा
अभयसिह के अपराधो को भुला दिया । लेकिन मारवाड़ का इतिहास अभय सिह के इस
क्षमा न कर सकेगा । संसार जब तक मारवाड राज्य का इतिहास पढेगा, अभयसिंह
समझेगा और पिता के हत्याकारी के रूप मे उससे घृणा करेगा । इसको कोई रोक नही

अभयसिंह ने सैयद बन्धुओ के जाल मे फंसकर बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया अ
हत्या का अपराधी उसने अपने छोटे भाई बख्तसिंह को बनाया । परन्तु इस हत्या से ब
के बाद भी लोगो के नेत्रो मे वही हत्याकारी साबित हुआ । कवियो ने अजितसिह की
जो कवितायें लिखी, उनमे उन्होंने अभयसिंह को ही अपराधी माना । इस विषय मे
लिखी हुई कविता की चार पक्तियाँ नीचे दी जाती है :

बख्त, बख्त बाइरा,
क्यो मारा अजमाल । ❀
हिन्दुयानी को सेवरा;
तुर्कानी का साल ।

कविता की इन पक्तियो का अर्थ है : अरे बख्त तूने असमय अजमल की हत्या क
हिन्दुओ का सरक्षक और मुसलमानो के लिये शाल की तरह था ।

अजितसिंह के वाद अभयसिंह मारवाड़ के सिंहासन पर बैठा और सैयद बन्धु
से वह गुजरात का शासक बनाया गया । राजसिंहासन पर बैठने के बाद जैसा उसने ि

❀ अजित का अर्थ अजेय मानकर कवि ने यहाँ अजमल शब्द का प्रयोग किया

जाट गाड़ी लेकर चलता हुआ। नागौर में पहुँचकर विजय सिंह ने जाट को पाँच रुपये दिये और उससे कहा : "अवसर आने पर तुमको इनाम दिया जायगा।" यह सुनकर और प्रसन्न होकर जाट अपने गाँव लौट गया।

नागौर पहुँचकर विजय सिंह ने हररोला सामन्त को उनकी सेना के साथ जोधपुर की रक्षा के लिए भेजा और मारवाड़ के सब सामन्तों को बुलाने के लिए उसने संदेश भेजे। इसी मौके पर विजयी रामसिंह ने मराठा सेना को लेकर नागौर की राजधानी घेर ली उस राजधानी को घेरे हुए मराठा सेना ने पूरे छै महीने बिता दिये लेकिन साहसी विजय सिंह ने मराठों की राजधानी के भीतर प्रवेश नहीं करने दिया।

मराठा सेना ने राजधानी में प्रवेश करने के लिए अनेक बार चेष्टा की लेकिन उसको सफलता नहीं मिली। उसको अपने इस प्रयास में भयानक क्षति उठानी पड़ी। विजय सिंह अत्यन्त साहसी और रणकुशल था। उसने सोचा कि इस प्रकार काम न चलेगा और नागौर की छोटी-सी सेना के बल पर मराठों की इस विशाल सेना को पराजित करना सम्भव नहीं है। मराठों को परास्त करने के लिए कोई दूसरी योजना काम में लाना चाहिए। ऐसे अवसर पर मारवाड़ राज्य से किसी प्रकार की सहायता के मिलने की आशा नहीं है। इस प्रकार सोच-विचार कर विजयसिंह ने राजस्थान के अन्य राजाओं से सहायता लेने का निश्चय किया। उसको विश्वास था कि ऐसे अवसर पर मराठों के विरुद्ध लड़ने के लिए पड़ोसी राज्य मेरी सहायता करेंगे।

अपने इस विश्वास के अनुसार विजय सिंह ने नागौर से बाहर जाने की कोशिश की। उसके अधिकार में इस समय पाँच सौ ऊँटों के सवार सैनिक थे। उनको और एक हजार शूरवीर राजपूत सैनिकों को अपने साथ लेकर विजयसिंह आधी रात के समय नागौर की राजधानी से निकल कर रवाना हुआ। चौबीस घन्टे तक बराबर चलने के बाद वह बीकानेर राज्य में पहुँचा। विजय सिंह ने वहाँ के राजा से सहायता करने के लिए कहा। बीकानेर के राजा ने बड़े सम्मान के साथ उसका आतिथ्य सत्कार किया। लेकिन मराठों के साथ युद्ध करने में सहायता करने से उसने बिल-कुल इन्कार कर दिया।

विजय सिंह को बीकानेर के राजा से ऐसी आशा न थी। वह बीकानेर की राजधानी से निकल कर बाहर हुआ और जयपुर राज्य की तरफ रवाना हुआ। वह जानता था कि जयपुर का राजा ईश्वरी सिंह रामसिंह की सहायता कर रहा है। फिर भी उसने ईश्वरी सिंह से सहायता के लिए कहने का निश्चय किया। जयपुर राज्य में पहुँचकर उसने एक स्थान पर मुकाम किया और अपने राजदूत को भेजकर राजा ईश्वरी सिंह से कहा कि मैं अपनी इस विपद काल में आपसे सहा-यता लेने के लिए आया हूँ और आशा करता हूँ कि आप मेरी सहायता करेंगे।

जयपुर की राजधानी अम्बेर के राजदरबार में विजय सिंह का भेजा हुआ राजदूत पहुँचा और उसने यथोचित अभिवादन करने के बाद राजा ईश्वरी सिंह से विजय सिंह का सन्देश कहा। ईश्वरी सिंह अपने पिता राजा सवाई जयसिंह की तरह साहसी और बुद्धिमान न था। वह प्रत्येक अवस्था में अवसरवादी था। उसी ने अपने षडयन्त्र से विषैले वस्त्र पहना कर बख्त सिंह के प्राणों का नाश किया था। राजपूत के द्वारा विजय सिंह का सन्देश सुनकर वह असमंजस में पड़ गया। राजस्थान में आतिथ्य सत्कार की प्रथा बहुत प्राचीनकाल से चली आयी है। राजा ईश्वरी सिंह ने विजय सिंह के आतिथ्य सम्मान का भी प्रबन्ध न किया और उसने सोच डाला कि ऐसे मौके पर विजय सिंह को कैद करवा लेना चाहिए। इसके लिए उसने पूरी शक्ति लगाकर कोशिश की। उसका परिणाम जो कुछ हुआ, उसे संक्षेप में नीचे लिखा गया है।

उस अभिषेक में बख्तसिह के न आने का क्या कारण था, इसका कही पर स्प
हुआ। अभिषेक समारोह के समय जब नागौर की धाय उपहार लेकर उपस्थित हुई
हृदय को बहुत आघात पहुँचा। उसने नागौर से उपहार लाने वाली धाय से कहा :
उपहार पहुँचाने के लिये चाचा साहब को क्या कोई दूसरा आदमी नही मिला था।

धाय से रामसिह के भाव छिपे नही रहे। अपनी बात कहकर भी रामसिह
उसने जरा भी शिष्टाचार का व्यवहार नही किया। अपने यहाँ से उसने उस धाय
दिया और बख्तसिह के भेजे हुये उपहारो को भी उसने उसी के साथ लौटा दिया।
तक नही किया, उसने धाय के द्वारा बख्त सिह के पास सन्देश भेजा। उस सन्देश मे
"चाचा साहब जालौर का प्रदेश तुरन्त वापस कर दे मेरा यह आदेश है।"

धाय लौटकर अपने साथ उपहार लिये हुये नागौर पहुँची और उसने बख्तसिं
कही। धाय का रामसिंह ने अपमान किया था। इसलिये उसने रामसिह के विरुद्ध क
उठा न रखा और रामसिंह ने जालौर लौटाने के लिये जो सन्देश भेजा था, उसने उ
से कहा। बख्तसिंह का सन्देह सुनकर अच्छा नही मालूम हुआ। परन्तु उसने बुद्धि
लिया और रामसिह के सन्देश के उत्तर मे उसने कहला भेजा : "जालौर और नागौर
आपके आदेश पर निर्भर है।" संक्षेप मे बख्तसिह ने इतना ही उत्तर भेजा।

बख्तसिह को रामसिंह के अभिषेक मे आना चाहिए था। उसके प्रदेश मार
अन्तर्गत थे और सम्बन्ध मे वह रामसिह का चाचा भी था। फिर वह क्यो नही गया,
जा सकता और न मारवाड़ के इतिहास से यह बात कही साफ होती है। परन्तु राम
सिह का न आना किसी प्रकार बरदाश्त नही हुआ इसलिये उसने जो कुछ किया और
पास जो सन्देश भेजा, वह ऊपर लिखा जा चुका है। अगर बख्तसिंह ने अपनी धाय
न भेजा होता और स्वय उपस्थित न होने पर किसी सुयोग्य प्रतिनिधि को उसने भेजा
उसने अपनी अनुपस्थिति का कारण रामसिंह को जाहिर किया होता वो बहुत सम्भव
सिंह को इस प्रकार का व्यवहार न करना पड़ता जैसा कि उसने किया।

प्रत्येक अवस्था मे दोनो राजपूत थे और एक राजपूत इस प्रकार के अवसर प
सकता है, बख्तसिंह और रामसिंह ने वही किया। यही बख्तसिंह है, जिसने अपने
आदेश पर अपने पिता को धोखे से, रात को सोते हुये जान से मार डाला था। नाग
शासन अधिकार दे देने के लिये उसे बडे भाई अभयसिंह ने लिखा था। लेकिन नागौर
मन ही बख्तसिह के मनोभाव मे न था। वह राजा अजितसिह का एक प्यारा लडका
बख्तसिंह की माँ ने उससे सावधान रहने के लिये अजित सिंह को सचेत किया था, उ
को जरा भी विश्वास न हुआ था कि जो लडका मुझसे पैदा हुआ है, वह विश्वासघात
डालेगा। उसने सहज स्वभाव से अपनी रानी को उत्तर देते हुये कहा था : क्या व
नही है ?

को देखकर जवान सिंह ने निर्भीक होकर उससे कहा : महाराज, सावधान, अगर आपने कुछ भी मेरे स्वामी का अनिष्ट किया तो अपनी इस तलवार से मैं आपकी गरदन को काट कर फेक दूंगा।

इस समय सामन्त जवान सिह के दाहिने हाथ मे नंगी तलवार थी। इस समय उसने विजय सिह की तरफ देखकर कहा महाराज आप अपने खेमे मे पहुँच जाने के बाद मुझे समाचार दे।

धर्मशाला से निकल कर विजय सिंह अपने घोडे पर बैठा और जब वह अपने खेमो मे पहुँच गया तो उसने सामन्त जवान सिंह के पास समाचार भेजा : मैं आप का रास्ता देख रहा हूँ।

सामन्त जवान सिंह ने राजा विजय सिंह के प्राणो की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी। उसने अपने प्राणो को सकट मे डालकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया और उसके द्वारा विजय सिंह सुरक्षित अपने खेमो मे आ गया। उसका समाचार पा जाने के बाद जवान सिंह ने अपनी तलवार म्यान मे रखी और फिर वह राजा ईश्वरी सिंह के पास गया और नम्रतापूर्वक उसने उसको प्रणाम किया। जवान सिंह को देखकर ईश्वरी सिंह ने अपने सामन्तो को सम्बोधन करते हुये कहा : आप के सामने एक सामन्त की राजभक्ति का आदर्श है। जिस राजा के सामन्त मे इस प्रकार की राजभक्ति होती है, उस राजा का कभी कोई अनिष्ट नही कर सकता।

मराठो को पराजित करने के लिए विजय सिंह नागौर की राजधानी से निकला था। परन्तु उसको सफलता न मिली। इसलिए निराश होकर वह नागौर की राजधानी से फिर लौट आया और छै महीने उसने फिर व्यतीत किये। इतने दिनो तक नागौर की राजधानी को घेरे रहने के बाद भी मराठा सेना नागौर मे विजय न प्राप्त कर सकी।

इन दिनो मे मराठो ने मारवाड राज्य के कई एक प्रसिद्ध स्थानो पर अधिकार कर लिया था, मारोत पर्वतसर, पाली और सोजत आदि नगरो के निवासियो ने रामसिंह की अधीनता मन्जूर कर ली थी। परन्तु जोधपुर की राजधानी, नागौर झालौर, सिवनोह और फलोदी इत्यादि नगर अब भी विजय सिह के शासन मे थे। नागौर मे रह कर इतने दिनो तक मराठा सेना का सामना करके उसको परास्त करने के लिये विजय सिंह ने एक नयी योजना तैयार की।

विजय सिंह की सेना मे काम करने वाले एक राजपूत और एक अफगानी सैनिक ने आपस मे कुछ परामर्श करके दोनो विजय सिंह के पास आये और अपनी राजभक्ति का प्रदर्शन करते हुए दोनो ने प्रार्थना की : अगर महाराज हम दोनो के परिवारो के पालन करने का उत्तरदायित्व स्वीकार करे तो मारवाड़ पर आयी हुई विपदा के मूल अपराधी मराठा सेनापति को हम दोनो जवान मार डालेगे।

उन दोनो सैनिको की इस बात को सुनकर विजय सिंह ने उनकी तरफ देखा और उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। इसके बाद एक दिन राजपूत और अफगानी सैनिक रास्ते मे झगडा करते हुए मराठा नेता के शिविर के समीप पहुँच गये। सेनापति सीधिया अपने शिविर के बाहर हाथ मुँह धो रहा था। उसको देखकर वे दोनो सैनिक एक, दूसरे को अश्लील बाते कहकर आपस मे लडने लगे और लड़ते हुये वे सेनापति सीधिया के पास पहुँच गये। उसमे से एक सैनिक ने सीधिया की तरफ देखकर कहा : "आप से हमारी प्रार्थना है कि मध्यस्थ बनकर हम दोनो का झगड़ा तय कर दीजिये।

अनुभव किया और उसने राजा रामसिंह को उत्तर देते हुये कहा : जिस समय यह
आपको बडा आनन्द मालूम होगा।

सामन्त कुन्नीराम ने इस प्रकार रामसिह को उत्तर दिया। परन्तु स्वाभिमान
बार में बैठा न रह सका। उसने आहवा के सामन्त कुशलसिह की तरफ देखा। दो
साथ अपने स्थानो से उठे और दरबार से निकलकर चले गये। वे दोनो सामन्त नागौर
अनेक प्रकार के परामर्श करके युद्ध की तैयारी करने लगे।

उस समय नागौर मे बख्तसिह नही था। लेकिन कुछ ही समय मे वह अपनी
आ गया। उसने दोनो सामन्तो से रामसिह की बाते सुनी। उसने सोचा कि इन बातो
जो होने जा रहा है, वह मारवाड-राज्य के भविष्य के लिये अच्छा नही है। यह स
बख्तसिह ने दोनो सामन्तो को समझाने की चेष्टा की और कहा कि मैं आप लोगो का म
इस झगडे को तय करने के लिये तैयार हूँ। मेरा विश्वास है कि यह विवाद जो पैदा
शान्त हो जायगा। परन्तु अपमानित सामन्तो ने बख्तसिह की बात को स्वीकार नही ि
समय दोनो सामन्तों ने आवेश के साथ बख्तसिह से कहा : हम लोग रामसिह को अपन
कर कभी उसके दर्शन नही करेगे, आपकी बातो को सुनकर हम दोनो इतना ही क
आप मारवाड के सिहासन पर बैठने के लिये तैयार हो। हम लोग सभी प्रकार से आ
करेंगे। लेकिन अगर आपने हमारी बात न मानी तो हम लोग सदा के लिये मारवा
देगे।

बख्तसिह किसी प्रकार मारवाड़ मे इस प्रकार का उत्पात नही चाहता था।
सामन्तो को बार-बार समझाने की चेष्टा की। वह समझता था कि जो विवाद राजा
में पैदा हुआ है, वह किसी प्रकार अच्छा नही साबित होता। जिन दिनो मे बख्त सिह
शान्त करने की कोशिश मे लगा था रामसिंह ने अपनी अयोग्यता का एक और नया प
उसने सुना था कि सामन्त कुशल सिंह और कुन्नीराम—दोनो सामन्त राज दरबार
गये हैं और वे हमारे विरुद्ध नागौर मे तैयारी कर रहे है। उसे विश्वास हो गया कि इ
शासक बख्तसिंह का षड़यन्त्र है। इसलिये उसने अपने चाचा बख्त सिंह को एक पत्र
कि आप फौरन जालौर का प्रदेश वापस कर दे।

रामसिंह का यह पत्र बख्तसिंह को मिला। उसे उसने पढा परन्तु उसे किसी प्र
नही आया और उस पत्र का उत्तर देते हुये उसने रामसिह को लिखकर भेजा : मैं ि
स्थिति मे अपने राजा के साथ विवाद बढाने का साहस नही रखता। अगर आप यहाँ
जल के भरा हुआ घडा लेकर आप मे भेंट करूँगा। ❀

बख्तसिह के टेढे वाक्यो और पत्रो मे भी रामसिंह का क्रोध शान्त नही हुअ
जो नही चाहता था वह परिस्थिति उसके सामने आकर खडी हो गयी। दोनो ओर से
बजे और तेजी के साथ लड़ाई की तैयारी हुई। मैड़ता के विस्तृत मैदान मे दोनो अपनी-
लेकर पहुँच गये। मारवाड के लोगो मे मेडती राजपूत अधिक साहसी और शूरवीर सम
वे सभी रामसिंह की सेना मे जाकर एकत्रित हुये। रिया, बुदसु, मिथरी, खोलर,
निवा, कुसुरी, बामरी, मुरुडा, दुरह, और चन्दारुण के सामन्त अपनी अपनी सेनाये

❀ सीथियन लोगो मे राज्याभिषेक के समय जल से भरे हुये कलश को लेकर ज
है। बख्तसिंह के उत्तर मे उसी प्रथा की समानता जाहिर होती है।

साथ होने वाले युद्धो को देखकर उसने भलीभाँति इस बात को समझ लिया था कि मराठा अश्वारोही सैनिक राजपूतो अश्वारोही सैनिको का मुकाबला नही कर सकते। इसलिये उसने अपनी सवार सेना को युद्ध की शिक्षा देना आरम्भ किया।

माधव जी सीधिया से राजस्थान के राजपूतो की परिस्थितियाँ छिपी न थी। वह जानता था कि राजपूत राजाओ मे आपसी फूट का विष फैला हुआ है। वे एक दूसरे के शुभचिंतक नही हैं और मौका पाने पर प्रत्येक राजपूत राजा अपने ही वंश के दूसरे राजा का सर्वनाश करने के लिए सदा तैयार रहता है। इन परिस्थितियो मे राजपूतो को पराजित करना कुछ भी मुश्किल नही है। माधव जी सीधिया इन बातो को खूब जानता था।

राजपूतो के सम्बन्ध मे माधव जी सीधिया का ख्याल असत्य नही था। राजस्थान का जब कोई राजा आपस मे लडकर पराजित होता था तो वह अपने विरोधी राजा को परास्त करने के लिए मराठा सेना की शरण मे जाता था और अपनी सहायता मे इनको लाकर वह अपने वंश और राज्य का विध्वस और विनाश करता था। उदयपुर के राणा ने अपने भान्जे मधुसिह को जयपुर के राजसिंहासन पर बिठाने के लिए मराठो की सहायता ली थी और सहायता के बदले मराठो की माँग के अनुसार कर देना मजूर किया था। इस प्रकार की घटनाओ के वर्णन पहले किये जा चुके है। राणा के सिवा राजस्थान थे दूसरे राजाओ ने भी आवश्यकता पडने पर मराठो की सहायता ली थी।

राजपूतो की ये परिस्थितियाँ साफ जाहिर करती है कि उनमे बुरी तरह फूट का विष फैला हुआ है। यह बात सही है कि जिन राजपूत राजाओ ने अपनी दूरवस्थाओ मे मराठो की सहायता ली थी, उनमे कोई भी अच्छी हालत मे नही रह सका। मराठो ने सहायता करने के नाम पर भयानक लूट की थी और उनके द्वारा मिलने वाली सहायता किसी भी राजा के लिये पराजित अवस्था से भी अधिक भयानक हो जाती थी। इसको समझते और जानते हुए भी राजपूत नरेश मराठो की सहायता लेने के लिये दौडा करते है। इन बातो से मराठा सेनापति माधव जी सीधिया भली प्रकार परिचित था।

मधुसिह अपने मामा उदयपुर के राजा मराठो की सहायता से अम्बेर के सिंहासन पर बैठा था। परन्तु उस सौभाग्य का सुख वह अधिक दिनो तक न उठा सका। उसकी मृत्यु हो जाने के बाद जयपुर के राजसिंहासन पर प्रतापसिह बैठा। जयपुर राज्य के निवासी मराठो से बहुत चिढे हुए थे। इसलिये उन्होने इस बात की आशा की कि प्रताप सिंह के शासन काल मे राज्य से मराठो का आधिपत्य मिटा दिया जायगा।

प्रताप सिंह ने यही किया भी। उसने राजसिंहासन पर बैठने के बाद मराठो की अधीनता मजूर करने से इनकार कर दिया। यह देखकर माधव जी सीधिया अपनी विशाल सेना लेकर जयपुर मे आक्रमण करने के लिये अम्बेर राजधानी की तरफ रवाना हुआ। पहले यह लिखा जा चुका है कि विपदाओ मे पड जाने के कारण ही मारवाड के राजा विजयसिह ने माधव जी सीधिया के साथ सधि की थी और सीधिया के माँग के अनुसार अजमेर राज्य एवम् त्रैवार्षिक कर देना उसे मंजूर करना पडा था।

प्रताप सिंह ने सिंहासन पर बैठने के बाद राजस्थान की राजनीतिक परिस्थितियो का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया। उसने भलीभाँति इस बात को समझा कि मराठे लोग जयपुर राज्य के जितने शत्रु है, वे उतने ही शत्रु मारवाड राज्य के भी है। इसलिये मराठो को परास्त करने के लिये राजा प्रताप सिंह ने मारवाड़ राज्य से सहायता माँगी।

विजय सिंह ने जो सधि की थी और उसके अनुसार वह जो प्रति तीसरे वर्ष निश्चित कर मे बहुत-सा धन दिया करता था, वह सधि टूट गयी और विजय सिंह ने उस कर का देना बन्द कर दिया। इस युद्ध का एक परिणाम और हुआ इसके पहले जयपुर के साथ, मारवाड और मेवाड की जो फूट चल रही थी, वह खत्म हो गयी और वे तीनो राज्य फिर एक होकर चलने लगे।

तका के युद्ध क्षेत्र मे माधव जी सीधिया की जो पराजय हुई, उससे वह बहुत लज्जित हुआ और राजपूतो से बदला लेने के लिये उसने अपनी तैयारियाँ आरम्भ कर दी। फ्रांसीसी सेनापति डी बाइन के साथ उसने परामर्श किया और अपनी सेना को पहले से अधिक शक्तिशाली बनाने की चेष्टा की। फ्रांसीसी सेनापति ने बडे परिश्रम के साथ मराठा सेना को युद्ध की शिक्षा देने का कार्य आरम्भ किया। किसी प्रकार माधव जी सींधिया राजपूतो से अपना बदला लेना चाहता था। इसलिये युद्ध की तैयारी मे उसने कुछ बाकी न रखा। उसने अपनी सेना मे अच्छे से अच्छे सैनिको की भरती की और उनको युद्ध की शिक्षा दिलायी। पराजित सेनापति सीधिया ने अपने अधिकार मे इतनी अधिक सेना का सगठन किया, जितना बडा सगठन कदाचित मराठा सेना मे कभी न हुआ था, इस प्रकार अपनी सुरक्षित, युद्ध कुशल और विशाल सेना को लेकर वह राजस्थान की तरफ रवाना हुआ।

राठौर राजा विजयसिह को समाचार मिला कि मराठा सेनापति अपनी नवीन और विशाल सेना को लेकर युद्ध करने के लिये आ रहा है। बिना किसी चिंता और भय के उसने अपने राज्य मे युद्ध की तैयारियाँ की। शूरवीर राठौर राजपूत फिर मराठो के साथ युद्ध करने के लिये उत्तेजित हो उठे। विजय सिंह राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी था। उसने निश्चय किया कि राज्य मे आने के पहले ही मराठो का मुकाबिला करना चाहिये। इसलिये उसने जयपुर के राजा के पास सदेश भेजा और दोनो राज्यो की सेनाये युद्ध के लिये तैयार हो गयी।

मारवाड से राठौर सेना और जयपुर से अम्बेर की सेना युद्ध के लिये रवाना हुई। जयपुर राज्य की उत्तरी सीमा पर पातन नामक नगर मे दोनो ओर की सेनाये मिल गयी और मराठा सेना के साथ युद्ध करने के लिये दोनो सेनाये आगे बढी। दोनो ओर की सेनाओं मे शत्रुओं के साथ युद्ध की उत्तेजना थी। और राजपूती स्वाभिमान के साथ वे सेनाये आगे की ओर बढ रही थी। लेकिन युद्ध स्थल पर पहुँचते ही एक ऐसी घटना घटी जिससे उनके मनोभावो मे एक दूसरे के प्रति ईर्षा पैदा हो गयी। मारवाड के एक कवि की एक कविता से दोनो राज्यो की एकता की जन्जीर टूट गयी। उस कवि ने राठौर सेना की प्रशसा मे कविता की जो पक्ति कही थी, वह निम्न लिखित है :

उदत ताइन अम्बेरराठौरण

कविता की इस पक्ति का अर्थ यह है कि राठोर वीरो ने ही युद्ध स्थल मे स्त्री स्वरूप अम्बेर की सेना की रक्षा की थी। कविता की इस पक्ति को गाते हुये कवि ने राठौर सेना की प्रशसा की, उस प्रशसा को अम्बेर राज्य की सेना से सुना। उससे उसने अपना अपमान अनुभव किया। अम्बेर के सैनिको ने समझा कि मराठा सेना को पिछले युद्ध मे पराजित करने का श्रेय राठौर राजपूत केवल अपने आप को देते है और उनका एक कवि जयपुर की सेना को स्त्रियों मे सुमार करता है।

राठौरो की भावना अम्बेर की सेना को असह्य हो उठी। उसने निश्चय किया कि अगर राठौरो की सेना ही मराठो को पराजित कर सकती है तो इस युद्ध मे उनकी बहादुरी देख लेना

जिस स्थान पर यह युद्ध हुआ था वहाँ जाकर मैंने उस सामन्त के लड़के का
परन्तु वहाँ पर मुझे उसका कोई स्मारक देखने को नही मिला ।

मैडता के इस युद्ध मे रामसिह के पक्ष की सेनाओं ने बहुत समय तक युद्ध
बहादुरी का परिचय दिया था । लेकिन अंत मे उनकी पराजय हुई और उसके प
मंजूर किया कि शत्रुओ के गोलो की वर्षा से हमारी हार हुई है । राजभक्त सामन्त शे
साले अहवा के सामन्त को बहुत समझाया था कि तुम रामसिह के विरुद्ध युद्ध मे न
उसकी बात को अहवा के सामन्त ने किसी प्रकार नही माना । इस दशा मे शेरसिह
साथ अपने साले से कहा था अच्छी बात है । बख्तसिह का पक्ष लेकर रामसिह को
मे तुम अपनी शक्ति को उठा न रखना ।

अहवा के सामन्त को उसकी यह बात अच्छी न लगी । इसलिये उसका उ
उसने निर्भीकता के साथ कहा था अपने पक्ष के लिये कोई भी अपनी शक्ति
रखता ।

साले और बहनोई मे इस प्रकार की बातचीत मैडता के इस युद्ध के पहले हुई
वाद युद्ध की तैयारी हुई और उस सग्राम मे दोनो ने अलग-अलग पक्षो का समर्थन कि
दूसरे के विरुद्ध इस प्रकार वे लडे कि फिर वे एक दूसरे को देख न सके । इस युद्ध क
विशेषता यह थी कि इसमे लडने वाले दोनो पक्षो के लोग एक दूसरे के सगे थे ।

यह युद्ध मैडता से कुछ दूरी पर जिस विस्तृत मैदान मे हुआ था, उसके
छोटा या वडा ग्राम नही है । उस विस्तृत भूमि पर जहाँ पर यह युद्ध हुआ था, युद्ध
वाले बीरो के अब केवल स्मारक देखने को मिलते है । जो राजपूत जिस श्रेणी का
स्मारक उसी श्रेणी का बनवाया गया है । लेकिन स्मारक, एक स्मारक होता है, च
हो, अथवा वडा । मैंने वहाँ पर बने हुए स्मारको को देखा और बीस स्मारको के
की मैंने नकल ले ली । उन पत्थरो पर जो कुछ लिखा है, उनसे राजपूतो की वीरता
मिलता है ।

इस युद्ध मे पराजित होने के वाद रामसिह ने मैडता नगर मे जाकर आ
निश्चय किया । परन्तु शत्रु की विशाल सेना से मैरता में सुरक्षित रहने और वच सक
विश्वास न हुआ । इसलिये अब उसके सामने प्रश्न यह था कि वख्तसिह की शक्तिश
अपनी रक्षा कैसे की जाय । उसके सामने अपने सम्मान और प्राणो का भय था ।
सभी प्रकार की वाते सोच डाली ।

उन दिनो में मराठो की शक्तियाँ प्रवल हो रही थी । रामसिह ने उनकी
अपने चाचा वख्तसिह को परास्त करने का निश्चय किया और अपनी वची हुई सेना क
दक्षिण चला गया । उज्जैन नगर मे पहुँचकर उसने मराठा सेनापति जयअप्पा सीधिया
की और वख्तसिह को पराजित करने के लिये वह सेनापति सीधिया से परामर्श करने

युद्ध से रामसिह के भाग जाने के वाद वख्तसिह अपनी सेना को लेकर जोधपु
और मारवाड़ के सिहासन पर बैठकर उसने अपने राजा होने की घोषणा की । इ
मालूम हुआ कि रामसिह सहायता के लिये मराठो के पास गया है । इसलिये उसने वडी
काम लिया और वह जयपुर राज्य की तरफ इस इरादे से रवाना हुआ कि वहाँ से
ससुर जयपुर के राजा मराठो के आने पर किसी प्रकार की सहायता न दे सके ।

नही है । लेकिन अपने ही आदमियो के साथ विश्वासघात करना एक ऐसा कलक है, जिससे इस प्रकार का अपराध करने वाली जाति और उसके वशज के भविष्य मे कभी भी अलग नही हो सकते ।

पातन के युद्ध मे राठौरो की पराजय और जयपुर की सेना के विश्वासघात का समाचार जोधपुर राजधानी मे विजय सिंह ने सुना । उस समय उसके हृदय मे कितना भयानक आघात पहुँचा होगा, इसका सहज ही अनुमान समझदार पाठक कर सकते हैं ।

विजय सिंह ने अपने समस्त सामन्तो को अपने राज दरबार मे बुलाया और सब के साथ बैठकर उसने परामर्श किया । बीकानेर और रूपनगर के दोनो स्वतन्त्र नरेश भी इस परामर्श मे शामिल थे । राठौर की स्वतन्त्रता अब फिर नष्ट हो रही है, राठौर राजपूतो के सामने यह एक समस्या पैदा हुई । बडी देर तक परामर्श करने के बाद स्वाभिमानी राजा विजय सिंह ने कहा ।

इसमे सदेह नही कि आज राठौर के सामने फिर एक भीषण विपद पैदा हो गयी है । अम्बेर की सेना के विश्वासघात से न केलल राठौरो की पराजय हुई है, बल्कि पातन के इस युद्ध से मराठा सेना का उत्साह बढ गया है । ऐसी दशा मे मैं यह मुनासिब समझता हूँ कि माधव जी सिंधिया के साथ सधि करके हम लोगो ने जो उसकी शर्तों को मन्जूर किया था और उन शर्तों के अनुसार अजमेर का राज्य देकर हम लोग जो कर मराठा सेनापति को देते थे, उसे हमे फिर स्वीकार कर लेना चाहिए ।

राजा विजय सिह के मुख से इस प्रकार की बातो को सुनकर मारवाड के समस्त सामन्तो ने उत्तेजित होकर एक साथ कहा नही, ऐसा कभी नही हो सकता । बिना युद्ध किये आत्मसमर्पण करने को अपेक्षा शत्रु के साथ अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए युद्ध करना राजपूतो का कर्त्तव्य है ।

सामन्तो के इस उत्तेजनापूर्ण निर्णय को सुनकर विजय सिंह प्रसन्न हो उठा और हर्ष पूर्वक उसने सामन्तो के प्रस्ताव को स्वीकार किया । उसके बाद मारवाड के राठौर राजपूतो मे मराठो के साथ युद्ध करने के लिए घोषणा की गयी और इस बात का आदेश किया गया कि इस युद्ध मे शामिल होने के लिए मैडता की भूमि मे राठौर वश के शूरवीर योधा एकत्रित हो ।

राजा विजय सिंह के इस आदेश और उसकी घोषणा को सुनकर सम्पूर्ण राठौर मे मराठो के विरुद्ध उत्तेजना पैदा हुई । जितने भी लोग युद्ध करने का हौसला रखते थे, वे सभी जातीय मर्यादा की रक्षा करने के लिए अपने-अपने घरो से युद्ध के लिए सुसज्जित होकर रवाना हुए और सन् १७६० ईसवी के सितम्बर महीने की १० तारीख को विजय सिंह की घोषणा पर मराठों से युद्ध करने के लिए तीस हजार शूरवीर राठौर पातन के युद्ध का बदला लेने के लिए मैडता के मैदानो मे पहुँच गये ।

उन दिनो मे बहादुर सिंह कृष्णगढ का राजा था और उसके अधिकार मे दो सौ नगरो और ग्रामो का प्रदेश कृष्णगढ था । यह विशाल प्रदेश मारवाड के राजा की तरफ से बहादुरसिह को मिला था । इस विशाल प्रदेश मे बहादुर सिंह के साथ रूपनगर का राजा भी शामिल था । कृष्णगढ और रूपनगर के दोनो राजाओ मे बन्धुत्व का सम्बन्ध था । वे दोनो राजा स्वतन्त्र रूप से अपने इलाको मे शासन करते थे । परन्तु आवश्यकता पडने पर वे जोधपुर के राजा के यहाँ आकर एकत्रित होते थे और राठौरो की स्वाधीनताओ की रक्षा के लिये सभी प्रकार योग देते थे ।

कुछ कारणो से उन दोनो राजाओ मे फूट पैदा हो गयी । उसके कारण बहादुर सिंह ने रूप नगर के राजा के प्रदेश पर आक्रमण किया और उसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति लूट ली । उस आपसी

मेरी दी वृत्ति का उपयोग क्यो करते हो ? तुम्हारी चिकित्सा का फिर कौन-
सकता है ?

बख्तसिंह के मुख से इस आलोचना को सुनकर वैद्य ने राजा के खेमे के पास
गढा खोदा और उसमे जल भर दिया । इसके बाद उसमे उसने अपनी एक औषधि
के पडते ही उस गढे का जल बर्फ के समान शीतल हो गया । इसके बाद उसने बख
महाराज जिस रोग से आप पीडित है । उसकी यह अन्तिम चिकित्सा है । परन्तु
सेहत करने के लिए इसमे भी शक्ति नही है ।

अपनी बात को समाप्त करके चिकित्सक ने राजा बख्तसिंह की तरफ देखा अ
अब विलम्ब करने का समय नही है । आपको जो कुछ करना हो, कर लीजिए ।

चिकित्साक इस बात को जानता था कि विषाक्त पोषाक पहनने के कारण र
यह दशा हो गयी है और उसके सम्पूर्ण शरीर मे जो विप फैल गया है, उसको श
कर उसे सेहत करने का अब कोई उपाय नही हो सकता । इस रहस्य को समभ
उसने किसी मे उस ो जाहिर नही किया । चिकित्साक की अन्तिम बात को सुन
अपने सब सामन्तो को पास बुलाया । क्योकि जब वह अपनी सेना को लेकर जयपुर
था तो उसके राज्य के सभी सामन्त उस सेना मे मौजूद थे । सामन्तो के आने
अपने लडके की रक्षा का भार उन सामन्तो को सौपा और उन सामन्तो ने उसे स
इसके पश्चात ब्राह्मणो को बुलाकर दान-पुण्य के अनेक कार्य किये गये । इस
एक अभिशाप की याद आयी । उसने जिस समय अपने पिता की हत्या की थी औ
सिंह की समस्त रानियाँ चिता मे बैठकर भस्मीभूत हुई थी । जलने के पहले उनमे
कहा था जिसने हमारे पति की हत्या की है, उसके साथ कोई एक स्त्री ही विश
और उसके द्वारा प्राणान्त होने पर उसका शव राज्य से बाहर ही कही जलाया

अपने जीवन के अंतिम क्षणो मे उस रानी के वाक्यो की उसे याद आयी
मेरे साथ किसी ने विश्वासघात किया है । इसी समय उसकी मृत्यु हो गयी । जहाँ
उसका शव जलाया गया वही पर बख्तसिंह का एक स्मारक बना हुआ है । उस स
के लोग बुरोदेवल कहा करते है । बुरोदेवल का मतलब होता है, पिशाच मन्दिर ।

बख्तसिंह ने अपने बडे भाई का कहना मानकर अगर अपने पिता की हत्या
वह मारवाड़ के राजाओ मे सबसे श्रेष्ठ राजा होता । इस बात मे किसी को मतभेद
कि वह बहुत साहसी था और साहस तथा पराक्रम मे उनमे कोई राज्ज उनकी
माना जा सकता, जो अब तक मारवाड के राजाओ मे हुए है । वह जितना ही बुद्धिमा
ही वह वीर भी था । पिता की हत्या करने के पहले वह सभी राजपूतो का प्यारा अ
और मारवाड का प्रत्येक व्यक्ति उसको स्नेहपूर्ण नेत्रो से देखता था । अभय सिंह
सिंहासन पर बैठने के बाद जो सफलता प्राप्त की थी उसका श्रेय अभय सिंह को नही
सिंह को था । उसी के बल और प्रताप पर अभय सिंह गुजरात राज्य के आधे भाग
कर लिया था । वास्तव मे अभय सिंह की सफलता का मुख्य कारण और आधार ब
इसमे किसी को संदेह नही हो सकता ।

मारवाड़ के राजसिंहासन पर बैठने के बाद रामसिंह ने लगातार अपनी
अशिष्टता का परिचय दिया तो उसे सिंहासन से उतार कर बख्त सिंह को राज्य...

मंत्री भीमराज ने सामन्तो के इस प्रस्ताव को स्वीकार नही किया और उसने सामन्तो को समझाते हुए प्रधानमंत्री खूब चद का भेजा हुआ एक पत्र दिखाया। उसमे लिखा था, 'शत्रुओ पर उस समय तक कोई आक्रमण न करना, जब तक इस्माइलबेग पहुंच न जाय।'

इस्माइलबेग उस समय नागोर मे था। प्रधानमंत्री के लिखने के अनुसार जोधपुर के सामन्त मराठो पर आक्रमण न कर सके और जो एक अवसर उनके सामने था व्यर्थ हो गया। युद्ध मे आक्रमण करने का एक अवसर होता है और उसका लाभ आक्रमणकारी को होता है। मेडता के मैदानो मे एकत्रित राठोरो की सेना मराठो पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करना चाहती थी। लेकिन राजधानी मे बैठा हुआ प्रधानमंत्री आक्रमण करने के लिये आदेश नही दे रहा था। इस प्रकार की परिस्थितियाँ 'राठौरो के विरुद्ध थी। एक प्रबल शत्रु की शक्तिशाली सेना का मुकाबिला था। आपस मे फैली हुई फूट राजपूतो की शक्तियो को निर्बल बना रही थी और बहादुर सिंह जैसे सामन्त नियंत्रण हीन होने के कारण शत्रुओ के साथ जाकर मिल गये थे। इस प्रकार की अनेक परिस्थितियाँ राठौर राजपूतो के विरुद्ध थी।

सेनापति डी बाइन कीचड मे फंसी हुई तोपो को किसी प्रकार निकालकर और तेजी के साथ चलकर मराठा सेना मे जाकर मिल गया। बीकानेर का राजा राठौर सेना की परिस्थितियो का अध्ययन करके कह उठा हम लोगो की सेना की समस्या बडी टेढी मालूम होती है। जो राठौर सेना युद्ध करने और अपने प्राणो को उत्सर्ग करने के लिये यहां पर आयी है, उसका सेनापति नही है। प्रधानमंत्री सुरक्षित महल मे बैठा हुआ आदेश देता है और राठौर सेना अधीर होकर रह जाती है। इन परिस्थितियो का लाभ निश्चित रूप से शत्रु के पक्ष को मिलेगा। इस भयानक समय मे हम लोगो को अपने-अपने प्रदेशो की रक्षा का उपाय सोचना चाहिये।

इस प्रकार सोच-समझ कर बीकानेर का राजा अपनी सेना के साथ अपनी राजधानी की तरफ रवाना हुआ। उसके जाने के बाद मैडता के मैदानो मे पडी हुई राठौर सेना शिथिल और किंकर्त्तव्यविमूढ हो रही थी ऐसे समय पर क्या करना चाहिये। राठौर सेना इसके सम्बन्ध मे कुछ निर्णय नही कर सकती थी। इस अवस्था मे सवेरा होने से कुछ पहले सेनापति डी बाइन ने अपने गोलदाजो के साथ तोपे लेकर राठोर सेना पर भयानक आक्रमण किया। राठौर सेना उस समय बेखबर पडी हुई सो रही थी।

शत्रु की ओर से गोलो की मार होते ही बहुत-से राठौर जख्मी हो गये। जो बचे, वे सब अपने-अपने प्राण लेकर भागे। गगाराम बन्दारी और भीमराज सिंगई—दोनो मंत्री भीषण विपद मे फँस गये। इसलिए अपने प्राणो की रक्षा लिये वे दोनो भी उस स्थान से चले गये।

अहवा और आसोप के सामन्तो ने एक दूरवर्ती स्थान पर अपने खेमे लगाये थे। उन्होने मराठो के आक्रमण और राठौरो के भागने का समाचार एकाएक सुना। आसोप का सामन्त आसीम खाने का आदी था। इसलिये जब यह समाचार उसके कैम्प मे पहुँचा तो वह अफीम के नशे मे पडा हुआ सो रहा था। अहवा के सामन्त ने बडी मुश्किल से उसको जगा पाया और जब उसने आँखे खोली तो अहवा के सामन्त ने कहा भाई तुम तो पडे सो रहे हो। मराठो का आक्रमण हो गया है और राठौर सेना युद्ध क्षेत्र से भाग गयी है। अब केवल हम और तुम यहाँ पर बाकी रह गये है।

आसोप के सामन्त ने आँखे मलते हुए इन बातो को सुना इसके बाद उसने उत्तेजित होकर कहा क्या परवाह है, चलो घोडे पर सवार हो, देखे शत्रु किस तरफ है।

मारा जाना एक ऐसा अपशकुन हुआ है, जिससे युद्ध का भविष्य अपने अनुकूल नही
अपशकुन की आशंका का भय विजय सिंह के पक्ष के समस्त राजपूतो मे फैल
परिणाम स्वरूप उनके साहस निर्बल पड़ गये और वे सब के सब सोचने लगे कि यह
पडे तो अच्छा है। इसलिए कि व्यर्थ प्राण देने से क्या लाभ है।

विजय सिंह की अवस्था बीस वर्ष से अधिक न थी। वह साहसी था और
युद्ध से डरता न था। लेकिन उसके पक्ष के लोगो मे ऐसा प्रभावशाली कोई न
था; जो लोगो के फैले हुए भय को दूर कर सकता। विजय सिंह ने कोशिश की।
युवक होने के कारण राजपूतो पर उसका प्रभाव न पडा। ऐसे संकट के समय विजय
पिता बख्त सिंह की बार-बार याद आयी। लेकिन उससे क्या लाभ हो सकता था।

"भगवान हमारे विरुद्ध है, नही तो क्या अपने ही सैनिको के द्वारा हमारा
यह विश्वास विजय सिंह के पक्ष के राजपूतो मे खूब फैला और उस विश्वास ने दो
राजपूतों को कायर बना दिया। राजपूतो मे फैले हुए इस विश्वास का समाचार
पहुँचा। जयअप्पा की सेना पहले से ही प्रबल और शक्तिशाली थी। शत्रु-पक्ष की
को मालूम करके वे लोग और भी अधिक प्रोत्साहित हो उठे।

मनुष्य का पहला बल उसका साहस और विश्वास होता है। जिस साहस
ने विजय सिंह के राजपूतो को इस अवसर पर निर्बल बनाया वही साहस और
की विजय का कारण बन गया। विजय सिंह के प्राणो मे स्वाभिमान था। उसक
उत्तेजना उसे युद्ध करने के लिए विवश कर रही थी लेकिन उसके राजपूतो मे फैले हु
के कारण उसका कुछ बस न चलता था। युद्ध करने के लिए उससे अपनी सेनाओ से
परामर्श किया, वह सब-का-सब बेकार हो गया।

इस अवसर की बिगडी हुई परिस्थिति से जिस समय विजय सिंह बहुत चिन्ति
था, ठीक उसी समय अपने पक्ष के राजपूतो के भावो को समझ कर बीकानेर के राजा
करने के लिए विजय सिंह को सलाह दी और उसने साफ-साफ कहा कि ऐसे समय
से हट जाना ही अपने हक मे अच्छा होगा। युद्ध के लिए आये हुए सभी सामन्त
भाग जाने के ही पक्ष मे थे। उस समय विजय सिंह की तरफ निश्चय हुआ कि
क्षेत्र छोड कर एक ही तरफ—मैडता की ओर चले।

इस प्रकार का निर्णय हो जाने के बाद भी जब विजय सिंह के सामन्त
लगे तो वे एक साथ और एक दिशा की ओर नही चले। बल्कि प्रत्येक सामन्त अपनी
को लेकर अपनी राजधानी की ओर रवाना हुआ। इसी समय रामसिंह ने मराठा से
आगे बढ कर विजय सिंह की सेनाओ का पीछा किया। शत्रु भाग जाने के कारण तोपो
के सिवा जितनी भी युद्ध की सामग्री वहाँ पर विजय सिंह की सेनाओ की थी, मराठा
पर अधिकार कर लिया।

मारवाड के सभी सामन्तो के साथ बीकानेर और कृष्ण गढ के राठौर रा
अपनी सेनाओ के साथ अपने राज्यो को चले गये। उस समय विजय सिंह अकेला हो
क्षेत्र से भागने के समय उन राजपूतो ने यह भी जानने की कोशिश नही की कि वि
है। अपनी इस दुरवस्था मे विजय सिंह ने कुछ सैनिको को लेकर नागौर की तरफ रव
कुछ इने-गिने सैनिको को छोड कर अब उसके साथ कोई सेना न थी। मराठो के सा
के लिए उसके पक्ष मे जो दो लाख राजपूत आये थे, उनका अब पता न था।

का सामन्त भी था। उस अनुचर ने अपने स्वामी सामन्त के पास जाकर कुछ बातें की और उसको खाने के लिये अफीम दी। अफीम सेवन करने के बाद सामन्त के शरीर में कुछ स्फूर्ति पैदा हुई। इस मौके पर राज्य के और भी कई एक अनुचर वहाँ पहुँच गये थे। वे सब मिलकर अहवा के सामन्त को अपने साथ लेकर चले। सामन्त के शरीर में बहुत-से गहरे घाव थे फिर भी वह किसी प्रकार मैडता के शिविर में पहुँच गया।

उस शिविर में अहवा के सामन्त की चिकित्सा का प्रबन्ध हुआ। उस समय सामन्त ने चिकित्सक से बातें करते हुये कहा युद्ध में हमारे बहुत से साथी सामन्त, सरदार और सैनिक मारे गये हैं। उनमें बहुत से अभी वहाँ पर घायल दशा में हैं। इसलिये जब तक उन सब की चिकित्सा का प्रबन्ध न होगा मैं अपनी चिकित्सा नही करना चाहता।

मैडता के शिविर के लोगो ने अहवा के सामन्त के मुख से इस प्रकार की बातें सुनी। अपने साथियो के प्रति सामन्त में सहानुभूति और उदारता के इन भावो को देखकर सब के दिल पसीज उठे। उन लोगो ने सामन्त के प्रति अपना बहुत बड़ा सम्मान प्रकट किया और उसकी चिकित्सा करने में उन लोगो ने किसी प्रकार की त्रुटि नहीं की। अहवा के सामन्त के गहरे घाव थोडे ही दिनो में बहुत कुछ सेहत हो गये। उसकी इस दशा को देखकर शिविर के संरक्षक ने उस सामन्त से कहा आप बाल बनवा कर स्नान कर डालिये।

संरक्षक की इस बात को सुनकर सामन्त ने कहा : मैं अपने स्वामी मारवाड के राजा के जब तक दर्शन नही कर लेता, उस समय तक इस दशा में रहूँगा। कई दिन बाद राजा विजय सिंह उस शिविर में आया। उसने दूसरे के साथ-साथ अहवा के सामन्त से भेंट की। विजय सिंह ने सामन्त के साहस, शौर्य और स्वाधीनता के प्रति उसके अनुराग की बहुत प्रशंसा की। राजा विजय सिंह से मिलने के बाद अहवा के सामन्त को बहुत बड़ी शान्ति मालूम हुई। इसके बाद वह स्नान करके अच्छे कपडे पहनने लगा। लेकिन उसके शरीर के कुछ घाव पूरे तौर पर अच्छे नही हुये थे, इसलिये उनसे फिर से रक्त जारी हो गया और उनके सेहत न हो सकने के कारण उस सामन्त की मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु से सम्पूर्ण मारवाड में शोक मनाया गया और राजा विजय सिंह को भी बहुत दुख पहुँचा।

मैडता के इस युद्ध में मन्त्री भीमराज की मूर्खता के कारण राठोर राजपूतो को इस प्रकार के दृश्य देखने पडे। राजा विजय सिंह ने जब भीमराज की अदूरदर्शिता को सुना तो वहुत क्रोधित हुआ। मन्त्री भीमराज इस समय नागोर में था। राजा विजय सिंह ने उसकी मूर्खता के लिये अत्यन्त कठोर और अपमान-जनक पत्र लिखकर उसके पास नागोर भेजा। उस पत्र को पढकर भीमराज बहुत लज्जित हुआ। वह अब राजा विजय सिंह को अपना मुख नही दिखाना चाहता था। इसलिये उसने विष खाकर अपनी हत्या कर ली।

मैडता के मैदान में एकत्रित तीस हजार राजपूतो ने अपने सामन्तो के निर्णय के अनुसार अगर मराठों पर आक्रमण कर दिया होता तो निश्चित रूप से उनकी विजय होती और मराठा सेनापति पराजित होकर वहाँ से भाग गया होता। लेकिन मन्त्री भीमराज की अदूरदर्शिता से राठौर राजपूत शत्रु पर आक्रमण न कर सके। इस भयंकर भूल का अपराधी जितना मन्त्री भीमराज था, उससे अधिक अपराधी प्रधान मन्त्री खूबचन्द था। उसके पत्र के कारण ही भीमराज ने सामन्तो को आक्रमण करने का आदेश नही दिया था। उसके फल स्वरूप राठौरो का सर्वनाश हुआ।

ऐतिहासिक यात्रा

विजय सिंह के एक शरीर रक्षक ने उसको अपना घोडा दे दिया । उस कर बिजय सिंह फिर रवाना हुआ और तीन मील का रास्ता पार करके वह स्थान पर पहुँच गया । वह अब जिस घोडे पर बैठ कर चल रहा था, उसकी भी दशा थी, थकावट के मारे उसके पैर आगे की तरफ बढ़ते न थे और उसके साथ न दे सकने विजय सिंह को हो रहा था । यहाँ से नागौर सोलह मील की दूरी पर था । इसलिए उस कि यहाँ पर घोडे का कोई प्रबन्ध हो जाना जरूरी है ।

विजय सिंह के साथ जो शरीर रक्षक चल रहे थे, उनके घोडे भी बहुत थके हुये कौन घोडा किस समय काम न दे सकेगा उसका कोई अंदाज न था । ऐसी दशा मे कि का प्रबन्ध हो जाना बहुत जरूरी मालूम हुआ । जिस स्थान पर विजय सिंह पहुंचा लोगो से बातचीत करने पर मालूम हुआ कि यहाँ पर घोडो का मिलना सम्भव नही है कोशिश करने पर वहाँ के एक जाट किसान ने कहा · मै सवेरा होते-होते नागौर पहुँचा दूँ अपनी बैलगाडी का किराया मैं पॉच रुपये से कम न लूँगा ।

विजय सिह ने उस जाट की इस मॉग को मंजूर कर लिया । विजय सिह ने वहाँ को अपना परिचय जाहिर नही होने दिया । जाट ने अपनी बैलगाडी तैयार की और कर विजय सिंह नागौर की तरफ रवाना हुआ । जाट अपने बैलो को तेजी के साथ चलाने क मे था लेकिन युद्ध के घोडे पर बैठने वाले विजय सिंह के बैलो की तेज रफ्तार भी धी होती थी । इसलिए उसने कई बार कहा : और हाँके चलो ।

बिजय सिंह के अनेक बार ऐसा कहने पर जाट अप्रसन्न हो उठा । उसने क्रो विजय सिंह से कहा : मै अपनी गाडी को तेजी के साथ चलाने की कोशिश करता हूँ । f बार-बार कहते हो हॉक-हॉक । तुम कौन हो ? इतनी तेजी के साथ भागने का तुम्हारा प्राय है ? तुम्हारे जैसे एक शक्तिशाली जवान को विजय सिंह की सेना मे रहकर अच्छा मालूम होता । तुम्हारी बातो को सुनकर और तुम्हारे व्यवहार को देखकर मालूम मानों मराठा लोग तुम्हारे पीछे आ रहे है । अब बार-बार हॉक-हाँक न कहना । मै इ तेजी मे अपनी गाडी को नही चला सकता ।

विजय सिह ने क्रोध भरी जाट की बातो को सुना । उसने कुछ जवाब नही f किसी भी दशा मे जाट को अपना परिचय नही देना चाहता था । जाट अपनी गाड सम्भव तेज चलाने की कोशिश मे था । जब नागौर दो मील के फासिले पर रह गया, सवेरा हो गया । रात का अधकार दूर हो गया था और प्रात·काल का प्रकाश चारो गया था । उस प्रकाश मे जाट ने विजय सिंह की तरफ देखा । उसकी पोशाक को दे कांप उठा । वह तेजी के साथ अपनी गाडी से नीचे उतरकर और अपने दोनो हाथो क विजय सिह के सामने खडा हुआ । उसकी दशा को देखकर विजय सिंह ने मुस्कुराते हु ड़रो मत ।

जाट की घबराहट मे कोई कमी न हुई । उसने गिड़गिड़ाते हुए काहा : मुझसे बडी गलती हुई । मैने आपको पहचाना नही था । मैं आपसे अपनी भूलो चाहता हूँ ।

विजय सिंह ने उसकी तरफ देखकर मुस्कुराते हुये कहा : मैंने तुमको क्षमा किय गाड़ी हाँको ।

विश्वास प्राप्त किया जा सकता है और किसी भी शत्रु को—चाहे वह विदेशी हो अथवा देशी—यहाँ के शक्तिशाली राजपूतो की सहायता से पराजित किया जा सकता है।

कलकत्ता से लेकर राजपूताना तक बडी तेजी के साथ हमारा विस्तार हुआ है। अब हमको अपने राज्य का विस्तार अधिक करने की जरूरत नही है। इस विषय मे अनेक बार मैंने कोटा के वृद्ध जालिम सिंह से बाते की है। मैंने उससे भी अपनी इसी भावना को प्रकट किया है। लेकिन उसने हमारी इन बातो पर विश्वास नही किया और जो बाते मैंने उससे कही, उनको सुनकर उसने जवाब देते हुए मुझसे कहा आप जो कुछ कहते है, मैं इस बात को विश्वास करता हूँ। लेकिन मेरा तो यकीन है कि वह समय आ रहा है और अब दूर नही है, जब इस पूरे हिन्दुस्तान मे एक ही सिक्का होगा। आप हमारी बात पर विश्वास करे। मैं समझ बूझकर यह बात कह रहा हूँ। महाराज, आप बडे शुभ अवसर पर इस देश मे आये है। जो फूट पैदा हुई है, वह पक चुकी है और उसके खाने का समय है। आपको उसके सभी टुकडो को खा जाना है। आप अपनी शक्तियो के द्वारा ऐसा नही करेगे। बल्कि हमारी असगठित अवस्था—ईर्षा और फूट स्वय इस देश के शासन की बागडोर आपके हाथो मे देने का काम करेगी।

जालिम सिंह की ये बाते महत्वपूर्ण तर्क से भरी हुई है। फिर भी मैं विश्वास करता हूँ कि उसकी यह भविष्यवाणी कभी पूरी न होगी।

जालिम सिंह बातचीत करने मे बहुत होशियार है। मेरी उन बातो को सुनकर उसने जो कुछ कहा था, उसके द्वारा उसकी बातचीत की योग्यता का परिचय मिलता है। फूट एक फल है जो इस देश मे मक्का के साथ खेतो मे पैदा होती है। यह फूट जब पकती है तो वह बहुत-से टुकडो मे हो जाती है। उसका अर्थ असगठित अवस्था भी है। जालिम सिंह हमेशा उपमा और दृष्टान्तो के साथ अपनी बातें किया करता है। उसने यहाँ पर हिन्दुस्तान के राज्यो की उपमा फूट के साथ दी है।

२८ नवम्बर—आज दस मील का रास्ता पार करके झारी नामक स्थान पर हम लोगो ने मुकाम किया। मैडता के युद्ध मे जिन चार हजार राठौर राजपूतो ने अपनी स्वाधीनता के लिए मृत्यु का सामना किया था और अपने प्राणो को उत्सर्ग किया था, उनके स्थानो को देखते हुए हम लोग झारी की तरफ चले थे। जिस मार्ग से हम लोग रवाना हुए थे, वह दिल्ली को गया था। इसलिए उस मार्ग को छोडकर हम लोगो ने फिर अरावली पर्वत को पार किया और अजमेर पहुँचने के लिए जो सही रास्ता है था, उस पर हम लोग चलने लगे। यह मार्ग अच्छा है और उसकी मिट्टी किसी प्रकार असुविधाजनक न थी। रास्ते के दाहिने और बाये तरफ किसानो के खेत दूर तक दिखायी पडते थे। जो गाँव रास्ते मे नजदीक अथवा दूर मिलते थे, उनमे अधिकाश गिरे हुए दिखाई पडते थे।

उस दिन प्रात काल हमे प्रकृति के सुन्दर दृश्य देखने को मिले। उस समय सरदी बहुत जोर की पड रही थी और उत्तर पूर्व की तरफ से ठण्डी वायु आ रही थी। जमीन के अनेक भागो मे जमी हुई बर्फ दिखायी पडती थी। वहाँ पर अनेक प्रकार के वृक्ष देखने को हमे मिले थे। लोगो से मालूम हुआ कि जाडे के दिनो मे यहाँ के प्राकृतिक दृश्य अधिक रमणीक हो जाते है। मारवाड के निवासी इसको 'शीतकोट' कहा करते है। मरुभूमि के किसान इस दृश्य को 'चित्राम' और जमुना तथा चम्बल नदी के निकटवर्ती स्थानो मे रहने वाले लोग इसे 'देशासुर' कहा करते हैं।

मैडतीय राजपूतो का सरदार शेरसिह अपने राज्य के प्रति कर्त्तव्यो का पालन करते मे बलिदान हुआ था, इसका ऊपर वर्णन हो चुका है। शेरसिह जिसका पक्ष लेकर लडा था पराजय हुई थी। इसलिए बख्त सिंह ने उसके अधिकार के प्रदेश पर कब्जा करके उसके दूसरे लोगो को उस प्रदेश का अधिकार दे दिया था। इस प्रकार रिया प्रदेश का अधिकार सामन्त को मिला, उसका नाम जबान सिंह है।

जिस समय विजय सिंह सहायता माँगने के लिए जयपुर गया था, जवान सिह समय उसके साथ था। जयपुर राज्य मे अटचोल नामक एक स्थान है। वहाँ के शक्तिशाली की लड़की का विवाह जवान सिंह के साथ हुआ था। वह सामन्त योग्य और शक्तिशाली कारण जयपुर राज्य का विश्वास पात्र था। ईश्वरी सिंह ने बिजय सिंह को कैद करने के षडयन्त्र रचा और उस षडयन्त्र के द्वारा विजय सिह को कैद करने के लिए सामन्त जबान ससुर को आदेश दिया।

अटचोल का सामन्त इस बात को जानता था कि मेरा दामाद जवान सिह विजय राजभक्त है और विजय सिंह ने उदारता पूर्वक रिया का प्रदेश जवान सिंह को दे दिया दशा मे उसने ईश्वरी सिंह का सम्पूर्ण षड़यन्त्र अपने दामाद से जाहिर कर दिया। उसको जवान सिंह ने प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक अवस्था मे मै विजय सिंह को रक्षा करूँगा।

जयपुर के राजा ईश्वरी सिंह ने जब अपने षडयन्त्र का पूरा प्रबन्ध कर लिया तो भे के लिए राज्य की एक धर्मशाला मे उसने विजय सिंह को बुलवाया। उसके आने के ईश्वरीसिह धर्मशाला मे आ गया था। विजयसिह को ईश्वरीसिह के षडयन्त्र की कुछ खबर अपने खेमो मे चलकर विजय सिंह धर्मशाला में पहुँचा और अत्यन्त सम्मान के साथ वह सिह से मिला। दोनो ही एक आसन पर बैठे और दोनों ने एक दूसरे से कुशल समाचा विजय सिंह जहाँ पर बैठा था, सामन्त जवान सिंह चुपके से जाकर उसके पीछे बैठ गया। व ईश्वरी सिह के षडयन्त्र को सुन चुका था इसलिये अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार वह बहु और सावधान था। मारवाड राज्य के प्रचलित नियमो के अनुसार मैडता का सामन्त के दक्षिण तरफ स्थान पाने का अधिकारी है। लेकिन जवान सिह अपने उचित स्थान पर न अपने राजा के पीछे बैठा था। यह देखकर राजा ईश्वरी सिह ने उससे कहा : ठाकुर आ राजा के पीछे क्यो बैठे है।

सामन्त जवान सिह ने राजा ईश्वरी सिंह के इन प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा . म आज इसी स्थान पर बैठने की आवश्यकता है।

ईश्वरी सिह चुप हो रहा। सामन्त जवान के अभिप्राय को वह समझ न सका। सिंह अपने स्थान पर बैठा हुआ राजा ईश्वरी सिह के षडयन्त्र को बडी सावधानी के साथ दे था। कुछ देर के बाद उसने विजय सिंह की तरफ देखा और कहा · महाराज आप शीघ्र उठकर चल दीजिये अन्यथा भयानक विपद मे होगे।

जवानसिह की बात को सुनकर विजयसिह सचेत हुआ, उसने किसी प्रकार की ि करके जवान सिह की तरफ देखा और उठ कर तेजी के साथ चलता हुआ। विजय सि सामन्त जवान सिंह के संकेत का अर्थ समझ गया था। उसे इस बात का आभास हो गया विरुद्ध राजा ईश्वरी सिंह का कोई षडयन्त्र चल रहा है। अपने स्थान से विजय सिंह के उ और तेजी के साथ बाहर जाते ही ईश्वरी सिंह ने उसके पीछे दौडने की कोशिश की। सामन्त जवान सिंह ने उसकी चेष्टा को बेकार कर दिया। ईश्वरी सिंह के स्पष्ट

तब्दीली हो गयी है। उनका दमन करके उनके अस्त्र शस्त्र छीन लिये गये हैं और उनके छीने हुये अस्त्रों को उदयपुर के राणा के पास भेज दिया गया है। जो माहीर लोग आक्रमण करके भयानक अत्याचार करते थे, वे लोग अजमेर के राज मार्गों पर जल छिड़कने के लिये विवश किये गये हैं।

इरिया ओर अलनिवास के बीच मे लूनी नदी वहती है। इसी नदी के कीचड़ मे सेनापति डी वाइन की तोपे फँस गयी थी। अलनिवास मे एक मैंडतीय सामन्त का अधिकार है। यह ग्राम बहुत बडा है और अधिक सख्या मे लोग उनमे रहते हैं। यहाँ पर एक स्मारक मुझे देखने को मिला। चम्पावत राजपूतों के साथ मैंडतीय लोगो ने मैडता के मैदानो मे युद्ध किया था। उस आपसी युद्ध मे सोनमल्ल नामक एक मैडतीय राजपूत मारा गया था। उसी का यह स्मारक था।

३० नवम्बर—अलनिवास से चलकर छै मील की दूरी पर हम लोग गोविन्दगढ पहुँचे। रास्ता अच्छा था। कही पर कोई विशेप कष्ट नही हुआ। नगर और उसका दुर्ग जोधा सम्प्रदाय के अधिकार मे है गोविन्द ने इस नगर को बसाया था। वह महाराज उदय का पोता था। गोविन्द स्थूल काय था। इसलिये बादशाह अकबर उसको मोटा राजा कहकर पुकारता था। खैरवार का सामन्त उसके सम्प्रदाय का प्रधान है और वह सोलह ग्रामो का अधिकारी है। बुनाई और मासूद के दोनो सामन्त भी इस सम्प्रदाय के श्रेष्ठ पुरुषो मे है और उन दोनो के अधिकार मे पचास ग्राम हैं।

वे दोनो सामन्त आजकल अजमेर मे रहते हैं और वे दोनो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन मे हैं। गोविन्दगढ शिखर के बाहर वसा हुआ है। पूपा नगर और उसके निकटवर्ती बारह गाँव अजमेर राज्य मे माने जाते है।

गोविन्दगढ से कुछ दूरी पर पश्चिम की तरफ शुभ्रमती नाम की नदी बहती है। कुछ लोग उसको लूनी नदी भी कहते हैं। यह नदी और दूसरी सरस्वती नामक नदी पुष्कर सरोवर से निकलकर और आगे जाकर एक दूसरे से मिल जाती हैं।

१ दिसम्बर—गोविन्दगढ से आठ मील चलकर हम लोग पुष्कर सरोवर पर पहुँचे। यह हिन्दुओ का तीर्थ स्थान है। इसके रास्ते मे सम्पूर्ण भूमि रेत से भरी हुई है। पुष्कर सरोवर से चार मीलकी दूरी पर पुष्कर नामक स्थान वसा हुआ है। मन्दोर के परिहार राजपूतो के अंतिम राजा ने पुष्कर सरोवर को बनवाया था। उस सरोवर से निकली हुई सरस्वती नदी को घाटी के करीब बहते हुये हमने देखा। पर्वत पर नन्द नामक चोटी बहुत ऊँची है।

भारतवर्ष मे पुष्कर का नाम बहुत प्रसिद्ध है। लोग उसकी समानता तिब्बत के मान सरोवर के साथ करते है। पुष्कर सरोवर घाटी के मध्य मे बना हुआ है। वहाँ की घाटी मे बहुत-से घर बने हुये है। वहाँ पर धार्मिक राजाओ और सम्पत्तिशालियो ने बहुत से मन्दिर बनवाये है। पूर्व की तरफ छोडकर सरोवर के शेष तीनो तरफ रेतीले' शिखर दिखायी देते है। वहाँ पर बने हुये मन्दिर मे राजा मानसिंह, महाराज होलकर, रानी अहिल्याबाई, भरतपुर के जौहरी मल और मारवाड के राजा विजयसिंह के बनवाये हुये मन्दिर अधिक प्रसिद्ध है। यहाँ पर बहुत-से स्मारक भी है। जयअप्पा सीधिया, जो नागौर मे मारा गया था और उसका भाई, जो नागोर को घेरे जाने के समय मारा था—दोनो के स्मारक वहाँ पर मुझे देखने को मिले।

यहाँ पर बने हुये मन्दिरो मे ब्रह्मा का मन्दिर अधिक आकर्षक है। चार वर्ष पहले सीधिया के मन्त्री गोकुल पाल ने इस मन्दिर को बनवाया था। उस मदिर के बनाने मे सभी चीजे वही के लोगो से मिली थी और मजदूरो तथा शिल्पकारो को वेतन मे बहुत कम दिया गया था। फिर भी

सेनापति सीधिया उन दोनो की बाते सुनने लगा। इसी समय अवसर पाकर सैनिक ने यह तो नागौर कहकर सेनापित सीधिया पर अपनी तलवार का आक्रमण किया समय राजपूत सैनिक ने 'यह लो जोधपुर' कह कर अपनी तलवार सेनापति सीधिया की छ मारी। वे दोनो सैनिक इसके वाद वहाँ से भागे, अफगानी मराठो के द्वारा पकड लिया ग वह जान से मार डाला गया। लेकिन राजपूत सैनिक मराठा सैनिको के साथ 'पकडो पक कर दौडने लगा और फिर उनके वीच से निकल कर वह नागौर पहुँच गया।

जयअप्पा सीधिया की मृत्यु हो गयी। उसके मरने पर माधव जी सीधिया उसकी सेनापति बनाया गया। मराठा सेना इसके बाद भी कुछ दिनो तक नागौर को घेरे रही उसे सफलता न मिली। इस दशा मे माधव जी सीधिया ने विजय सिंह के साथ सधि उस संधि मे निश्चय हुआ कि मराठा सेना रामसिंह का पक्ष छोडकर मारवाड से चली जाय इस संधि के द्वारा विजय सिंह ने माधव जी सीधिया को एक निश्चित कर देना स्वीकार इसके बाद माधव जी सीधिया वहाँ से अजमेर की तरफ चला गया।

अब रामसिंह का कोई सहायक न रह गया था। ईश्वरी सिंह की भी मृत्यु हो ग इसलिये उसको अब विजय सिंह का ही सहारा था। रामसिंह की इस अवस्था को देखक सिंह ने उसको मारवाड राज्य के हिस्से की साँभर झील का अधिकार दे दिया। उस झील हिस्सा जयपुर राज्य का था। इसलिए रामसिंह ने उसका स्वत्व भी प्राप्त कर लिया। उ वह जीवन के अंतिम दिनो तक वही पर बना रहा।

बयासीवाँ परिच्छेद

जयअप्पा सीधिया के स्थान पर माधव जी सीधिया—माधव जी सीधिया को रा परिस्थितियो का ज्ञान—राजपूतो का जातीय द्रोह—जयपुर का राजा प्रताप सिंह— मराठो युद्ध—मराठो का दूसरा आक्रमण—कविता का भयानक परिणाम— जयपुर सेना का विश —मराठो की विजय—मारवाड पर मराठो का आक्रमण—दूरदर्शी विजय सिंह—आपसी कारण शत्रु की सहायता - मेडता के मैदानो मे मराठो के साथ युद्ध जोधपुर राजधानी मे की फूट का परिणाम—सामन्त महीदास की प्रतिज्ञा—राठौर सेना की पराजय का क फ्रासीसी सेनापति डी वाइन—बिना युद्ध के मराठो की विजय—आसोप का अफीमची सा युद्ध की फिर से तैयारी—जवान सिंह की उत्तेजनापूर्ण बाते—मराठो की तोपो के गोलो राजपूतो के बलिदान—युद्ध क्षेत्र मे घायलो की दशा—शिविर मे अहवा के सामन्त की चि अहवा के सामन्त की मृत्यु — विष खाकर मन्त्री भीमराज की आत्महत्या—मैडता के युद्ध का सर्वनाश---बहादुर राजपूतो की दुरवस्था का कारण—राजपूतो के साथ सच्ची सहानु परिणाम— कोटा के जालिम सिंह की स्पष्ट बातचीत अङ्गरेजो की सफलता का कारण की आपसी फूट—झारो का सम्पन्न ग्राम और उसका स्मारक—माहीर लोगो के आक्रमण सम्बन्ध मे प्रचलित जनश्रुतियाँ -- अजमेर की यात्रा।

जयअप्पा सीधिया के मर जाने के बाद उसका वंशज माधव जी सीधिया मरे का सेनापति चुना गया। माधव जी दूरदशी और राजनीति कुशल था। रा

अजपाल अपने यहाँ से बकरी का दूध रोजाना भेजा करता था। सन्यासी ने प्रसन्न होकर अजपाल को बरदान दिया था, जिससे वह राजा हो गया था।

अजमेर के संस्थापक अजपाल से लेकर विशालदेव तक जितने भी राजा हुए हैं, उनमे मणिकराय का नाम बहुत प्रसिद्ध है। हिजरी की प्रथम शताब्दी मे वलीद एक सेना लेकर आक्रमण करने के लिए आया था। उस समय मणिकराय ने उसके साथ युद्ध किया था और उस युद्ध मे वह मारा गया। महमूद के उत्तराधिकारी ने भारतवर्ष मे आकर जब आक्रमण किया था तो चौहान राजा विशालदेव अन्य राजाओ और उनकी सेनाओ के साथ उससे युद्ध करने गया था और उसे पराजित करके भगा दिया था।

विशालदेव की इस कीर्ति के स्मारक मे लोहे का एक स्तम्भ दिल्ली मे गाडा गया था। वहाँ पर वह लौह स्तम्भ आज तक देखने को मिलता है। शिला लेखो के द्वारा मालूम होता है कि विशालदेव चित्तौर के रावल तेजसिंह का समकालीन था। यह तेजसिंह शूरवीर समर सिंह का परदादा था और समर सिंह सम्राट पृथ्वीराज का बहनोई था। उसने विशाल मुस्लिम सेना के साथ पृथ्वीराज के पक्ष मे युद्ध करते हुए इस देश की स्वाधीनता की रक्षा मे अपना सर्वस्व अर्पण किया था। परन्तु अत मे अपने तेरह हजार राजपूतो के साथ कग्गर के युद्ध-क्षेत्र मे युद्ध करते हुए वह मारा गया था। विशालदेव के समय को निश्चित रूप से कुछ नही लिखा जा सकता। लेकिन इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि प्रमार वंश के राजा उदयादित्य की सन् १०९६ ईसवी मे मृत्यु हुई थी। मरने के पहले उदयादित्य ने विशालदेव साथ मुसलमानो के विरुद्ध युद्ध किया था। इस आधार पर जाहिर होता है कि विशालदेव ग्यारहवी शताब्दी मे अजमेर मे शासन करता था।

२ दिसम्बर—पुष्कर से अजमेर छै मील की दूरी पर है। वहाँ पहुँचने के लिए हम लोग पुष्कर के आगे घाटी की तरफ चले। पर्वत पर चढते हुए हमने देखा कि पहाड के ऊपर आँवले के पेड खडे है। उन पेडो को देखकर जाहिर होता है कि वह शिखर अरावली पर्वत का एक हिस्सा है। मार्ग मे अनेक प्रकार के प्राकृतिक दृश्यो को देखते हुए हम लोग अजमेर नगर मे पहुँच गये। इस नगर की हमने बहुत बडी प्रशसा सुन रखी थी। लेकिन यहाँ आने पर यह नगर हमको उस प्रकार देखने को नही मिला। भारतवर्ष के दूसरे नगरो की तरह अजमेर मे भी हमको दीनता, निर्बलता और अशान्ति के दृश्य देखने को मिले। इन दिनो मे अगरेज सरकार की तरफ से विल्डर साहब यहाँ पर रहता था। उसने अजमेर के कुछ भागो को अच्छा बनाने की कोशिश की थी। इन दिनो मे अजमेर के व्यापारियो के लिये कई सुविधाजनक कार्य किये गये है। मैने उनको देखा।

राजस्थान के बहुत-से व्यवसायी अजमेर मे रहा करते है। वे सब मुझसे मिलने के लिये आये और उन सबने ब्रिटिश सरकार के द्वारा मिली हुई शान्ति और सुरक्षा के लिये बार-बार धन्यवाद दिया। उनको देखने से मुझे मालूम हुआ कि वे हृदय से अँगरेजो के शासन मे शान्ति और सरक्षण को अनुभव करते है।

ऐतिहासिक यात्रा

जयपुर राज्य पर मराठों के होने वाले आक्रमण के समय जयपुर के वर्तमान राज सिंह का मारवाड से सहायता माँगना किसी प्रकार अनुचित न था। लेकिन मारवाड के पर इन दिनो जो विजय सिह था, उसने इन्ही मराठो को परास्त करने के लिए जयपुर ईश्वरी सिंह से सहायता के लिये प्रार्थना की थी। उस समय ईश्वरी सिह ने सहायता देने अपने षडयंत्र द्वारा विजय सिंह को कैद कर लेने की एक मजबूत योजना बनायी थी। मे वह सफल न हो सका था। वजय सिंह को अपने जीवन की यह घटना भूली न थी। के योग्य वह घटना थी भी नही।

विजय सिह के हृदय मे जयपुर राज्य की तरफ से होने वाली इतनी ही चोट न थ पिता बख्तसिंह के प्राणो का नाश करने के लिए राजा ईश्वरी सिंह ने जो षडयत्र रचा जिसके फलस्वरूप बख्तसिंह की मृत्यु हुई थी, उस दुर्घटना को भी विजय सिंह जानता जयपुर राज्य की तरफ से इस प्रकार के आघात विजय सिंह और उसके पूर्वजो को पहुँचे जयपुर राज्य के राजा प्रताप सिंह ने अपनी विपदाओ को सामने रखकर मराठो को परास्त लिए विजय सिंह से सहायता माँगी।

जयपुर के राजा ईश्वरी सिंह के षडयत्रो को विजय सिह भूला न था। इन्ही दिनो सिंह ने उससे सहायता के लिए प्रार्थना की। ऐसे अवसर पर विजय सिंह को क्या करना च समस्या उसके सामने एक साथ पैदा हो गयी। विजय सिह राजा ईश्वरी सिंह की तरह स अवसरवादी न था। वह स्वाभिमानी राजपूत था। राजनीति कुशल और दूरदर्शी था आसानी के साथ अपनी इस समस्या को हल करते हुए निर्णय किया : आज का यह अवस फूट का बदला लेने के लिए नही है। बल्कि यह अवसर उस शत्रु को परास्त करने के लिए समय-समय पर हम सभी का विनाश किया है ! इसलिए आपस की फूट को भुलाकर एक ऐसे मौके पर साथ देना बुद्धिमानी की बात है।

इस प्रकार निर्णय करके विजय सिंह ने राजा प्रतापसिंह की सहायता मे मराठो के करने के लिये अपनी एक सेना देकर सामन्त जवान सिंह को रवाना किया। मराठो के करने के लिये तङ्गा नामक स्थान पर मोर्चा वन्दी हो रही थी। उस स्थान पर जो युद्ध हु 'लाल सन्त का समर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। युद्ध क्षेत्र मे राठौर सेना के पहुँचने पर वेग और हमदानी नामक दो मुगल सेनापति वहाँ पर आकर उनसे मिल गये।

दोनो तरफ की सेनाएँ सग्राम भूमि मे पहुँच चुकी थी। युद्ध आरम्भ हो गया। मा राठौर सेना आरम्भ से ही अपने बल विजय का परिचय देने लगी और उसने शत्रुओ का रूप से सहार किया। रिया के सामन्त जवान सिह ने अपने सैनिको को आगे बढाया और साहस को उसने पस्त कर दिया। सीधिया के सैनिक ने फ्रांसीसी सेनापति डी वाइन से शिक्षा पायी थी। लेकिन राठौर अश्वारोही सेना के सामने वे ठहर न सके और वे बुरी तरह गये। यह देखकर मराठा सेना पीछे की तरफ हटने लगी और कुछ समय के बाद मराठो को राठौर सेना ने विजय प्राप्त की।

सेनापति माधवजी सीधिया अपनी पराजित सेना को लेकर युद्ध स्थल से भागा और मे पहुँच कर उसने मुकाम किया। इस युद्ध मे मीधिया की सेना को जो क्षति पहुँची थी, वह वहुत दिनो तक पूर्ति नही कर सका। मराठो को पराजित करने के वाद सामन्त ने अजमेर पर अधिकार करने के लिए अपनी एक सेना भेजी। उसने वहाँ पर पहुँच कर कर लिया और अजमेर के राज्य को मारवाड़ मे शामिल कर लिया। माधव जी सीधिया

मेवाड के राणा से मिलने के लिए जब मैं वहाँ गया तो वहाँ के राज दरबार मे पहुँच कर मैंने देखा कि मेवाड के सरदार और सामन्त मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे है। मेरे वहाँ पर पहुँचते ही सभी ने खडे होकर अपना सम्मान प्रकट किया और इनके बाद वे मुझे राणा के पास ले गये। राणा ने अपने बगल मे एक ओर मुझे स्थान दिया और मेरे बैठने के बाद राणा भीम ने कुशल समाचार के पश्चात् बहुत-सी बाते मुझे सुनायी। राणा बात बात मे भाई कह कर मुझसे बाते करता था। बिदनोर के सामन्त का राणा के साथ एक वैवाहिक झगडा चल रहा था। मैंने उसको सुना और उसको तय करवा दिया। राणा भीम के साथ भूमि सम्बन्धी कुछ सरदारो का भी झगडा था। यह झगडा बहुत दिनो से चला आ रहा था। उनके लिए भी दोनो पक्षो की तरफ से मैं मध्यस्थ बनाया गया। इसका कारण यह नही था कि मैं अङ्गरेज सरकार का एक प्रतिनिधि था। बल्कि मेरे मध्यस्थ बनाये जाने का एक मात्र कारण यह था कि राणा भीम मुझे अपना मित्र समझता था। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मेरे थोडे से प्रयास के द्वारा वह झगडा भी सुलझ गया। मेरे वहाँ विदा होने के समय राणा भीम ने बहुत-से बहुमूल्य पदार्थ मुझे उपहार मे दिये, मैंने उनको स्वीकार कर लिया। लेकिन उसके बाद धन्यवाद पूर्वक और सम्मान के साथ उन पदार्थो को मैंने लौटा दिया। राणा भीम ने विशप हर्बर को भी इसी प्रकार अपने उपहार से उसकी यात्रा के समय सम्मानित किया था। इसे जानकर मुझे प्रसन्नता हुई।

जब मैं वहाँ से विदा हुआ तो राणा भीम मेरे उस मुकाम तक, जहाँ पर मैं ठहरा हुआ था, मुझे भेजने के लिए आया। उस समय मैंने राणा को कीमती पिस्तौल और दूरबीन यन्त्र उपहार मे दिया। मेरे मुकाम से लौटने के समय राणा ने मुझसे मिलकर जिस प्रकार का भाव प्रकट किया, उसको देखकर सहज ही इस बात का अनुमान होता था, मानो दो घनिष्ट मित्र एक दूसरे से बिदा हो रहे है।

कितने ही प्रसिद्ध स्थानो की यात्रा करता हुआ मैं ६ दिसम्बर को भीलवाडा मे पहुँचा और इस प्रसिद्ध स्थान के लगभग दो मील की दूरी पर मैंने सब के साथ मुकाम किया। वही पर मैंने सुना कि यहाँ के राजपूतो मे आपसी झगडा चल रहा है। मैने उस झगडे के सम्बन्ध मे सभी कुछ जानने की चेष्टा की और जब उस नगर के दोनो पक्षो के प्रमुख व्यक्ति मेरे पास आये और अपने यहाँ मुझे ले जाने के लिए उन लोगो ने मुझसे अनुरोध किया। उस समय मैने दोनो पक्षो के प्रतिनिधियो से बाते करते हुये उनके आपसी झगडे पर बहुत अफसोस जाहिर किया और उनसे यह भी कह दिया कि आप लोगो के इस झगडे को सुनकर मैं आपके यहाँ नही जाना चाहता।

मेरी इस बात को सुनकर आये हुये प्रतिनिधि बडे सकोच मे पड गये। उनके उस भाव को अनुभव करके मैंने नम्रता किन्तु कठोरता के साथ उनसे कहा 'यदि आप लोग मुझे अपने यहाँ ले जाना चाहते है तो मेरे पास बैठकर अपने आपसी झगडे को तय कर लीजिये और मिल कर एक हो जाइये। मै आप लोगो को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मै इस देश के राजपूतो से बहुत प्रेम करता हू। मैं उनको आपस मे लडते हुये नही देखना चाहता।"

मेरी बातो से वे बहुत प्रभावित हुये। कुछ देर की बातो के बाद उनका आपसी झगडा तय हो गया और उनमे मित्रता पैदा हो गयी। इसे देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। उसके बाद मैं उनके साथ उस नगर मे गया। वहाँ पर मेरे साथ बहुत सम्मान प्रकट किया गया और वहाँ के लोगो ने मुझसे प्रभावित होकर भीलवाड़ा का नाम बदल कर टॉडगञ्ज रखने का निश्चय किया।

है। इस प्रकार राठौर के साथ अम्बेर की सेना का ईर्षा-भाव पैदा हो गया। अम्बैर के इतना ही नही किया बल्कि वे चुपके-चुपके मराठो के साथ अपनी सन्धि की बातचीत भ और मराठो के साथ उन्होने निश्चय किया कि युद्ध आरम्भ होने पर अम्बेर की सेना होकर केवल युद्ध का दृश्य देखेगी और वह मराठो पर किसी प्रकार का आक्रमण न करे बदले मे मराठा सेना जयपुर राज्य को किसी प्रकार की क्षति न पहुँचावेगी। मराठो की सेनाओ मे जबानी इस प्रकार की एक सधि हो गयी।

राठौर सेना को इस रहस्य का कुछ पता न था। पिछले युद्ध मे राठौर ने अ सेनाओ के साथ मिलकर मराठो को पराजित किया था। इस युद्ध मे भी वे उसी का रहे थे। इसके बाद युद्ध आरम्भ हुआ। मराठो ओर राठौरो ने एक दूसरे पर गी आरम्भ की। इसके बाद युद्ध भयानक होता गया। अम्बेर की सेना ने युद्ध मे भाग नही वह एक तरफ अलग खड़ी रही। मराठो की विशाल सेना ने यह देखकर और मौका सेना को घेर लिया। राठौर की अपेक्षा मराठा सैनिको की संख्या बहुत अधिक थी। भीषण रूप से राठौरो का संहार हुआ। राठौर राजपूत मराठो के मुकाबिले मे ठ उन्होने युद्ध-क्षेत्र छोड दिया। मराठो की इस प्रकार विजय हुई। इस युद्ध मे राठौर सेन तरह सहार हुआ। अगर अम्बेर की सेना ने विश्वासघात न किया होता तो राठौर से प्रकार सर्वनाश न हुआ होता।

राठौर कवि ने अपनी कविता के द्वारा अम्बेर की सेना का जो अपमान किया बदला लेने के लिए अम्बेर के एक कवि ने राठौर की इस पराजय पर एक कविता प्रकार है .

घोडा, जोडा, पागडी,
सुटचा, खड्गमारवाड़,
पाँच रकमे मेल लिदा,
पातन मे राठौर।

कविता की इन पंक्तियो का अर्थ यह है कि पातन के युद्ध मे राठौर सैनिको को पगडी, गोप और तलवार—सब कुछ शत्रुओ को सौप देना पडा था।

पातन के युद्ध मे राठौर कवि की कविता से ईर्षालु, होकर अम्बेर की सेना ने साथ जो विश्वासघात किया, उसका दुष्परिणाम राठौर के साथ-साथ अम्बेर राज्य को भ पडा। इसमे सदेह नही कि राठौर कवि ने अपनी कविता के द्वारा एक भयानक मूर्खता क दिया था। परन्तु अम्बेर की सेना ने भी उससे कम मूर्खता नही की। राठौर कवि की व और कल्पना व्यक्तिगत थी। उसमे सम्पूर्ण राठौर सेना का अपराध न था। यद्यपि उ कर्त्तव्य था कि उस कविता को सुनकर उसने राठौर कवि का विरोध किया होता। लेि ऐसा नही किया। उसके बदले मे अम्बेर वालो को इस प्रकार का विश्वासघात नही करन था। इसलिए कि मराठो के साथ युद्ध करने के लिए जयपुर के राजा प्रताप सिंह ने ज सिंह से सहायता माँगी थी, उस समय भी इन दोनो राज्यो मे ईर्षा और कटुता कम न थी वर्णन ऊपर किया जा चुका है। लेकिन बुद्धिमान विजय सिंह ने उन षडयन्त्रो पर धूल डाल पिछले दिनो की शत्रुता को भुलाकर विजय सिंह ने प्रताप सिंह की सहायता करना और म परास्त करना ही अपना कर्त्तव्य समझा था। अम्बेर के राजपूतो ने ऐसा नही कि कलक जयपुर के मस्तक से कभी मिटाया नही जा सकता। युद्ध मे पराजित होना कलंक

रे पास भेजा। उस संदेश से मैं इस बात को अच्छी तरह समझ सका कि राणा मुझसे बहुतअधिक प्रेम करता है।

राणा की राजधानी के अनेक दृश्य मुझे अत्यन्त प्रिय और रमणीक मालूम होते हैं। राणा और उसके उत्तराधिकारी का महल राजधानी के ऊँचे मन्दिर और सामन्तो के रमणीक तथा विशाल भवन सदा मुझे अपनी ओर आकर्षित करते रहे है। राजधानी के और भी अनेक दृश्य ऐसे है जो मुझे प्राय. अपनी याद दिलाते है। राजधानी के आस-पास का कोट यद्यपि बहुत ऊँचा नही है, परन्तु वह बहुत मजबूत है और बडी दूर तक चला गया है। उसके किनारे-किनारे बने हुए बहुत से दुर्ग एक पंक्ति मे देखने से बडे सुन्दर मालूम होते है। राजधानी मे जाने के लिये बहुत से मार्ग है और उन बने हुये दुर्गों से राजधानी के सभी मार्ग सुरक्षित हैं। उन दुर्गों को इस प्रकार बनवाया गया है कि वे किसी शत्रु के आक्रमण करने पर राजधानी की रक्षा कर सके।

गरमी के दिनो मे इन दुर्गों पर सामन्त लोग आकर रहा करते है। अर अथवा आहर नामक जिस स्थान पर हमने मुकाम किया था, वह राणा का एक प्रिय स्थान है। जब से मेवाड राज्य की राजधानी उदयपुर मे कायम हुई है, उन्ही दिनो से इस आहर नामक स्थान को अनेक प्रकार की विशेषता मिली है। यही पर मेवाड के बहुत से शूरवीरो के स्मारक बने हुये है। उन स्मारको मे कुछ राणा वंश के स्मारक भी हैं। वे आकार प्रकार मे दूसरो की अपेक्षा बड़े और आकर्षक है।

आहर नामम स्थान पर जितने भी स्मारक बने है उनमे अमर सिंह का स्मारक सबसे श्रेष्ठ है। राणा भीमसिंह के पिता के समय तक जो लोग मेवाड के राजसिंहासन पर बैठे थे उनके स्मारक भी वहाँ पर देखने के योग्य है। इन स्मारको मे कीमती संगमरमर लगा हुआ है। इनमे अनेक स्मारक बहुत पहले के बने हुए है। यहाँ के स्मारको को देखने से पता चलता है कि अर अथवा आहर नामक स्थान बहुत पुराना है।

इस स्थान के सम्बन्ध मे लोगो का कहना है कि राणा के पूर्वज किसी समय यही पर रहा करते थे। लोगो का यह भी कहना है कि आशादित्य ने इस नगर को बसाया था। उसके बहुत पहले वहाँ पर विक्रमादित्य के पूर्वज उज्जैनी प्राप्त करने से पहले रहा करते थे। उन दिनो मे इस स्थान का नाम तन्वनगरी था। उसके बहुत दिनो के बाद यह नाम बदलकर आनन्दपुर रखा गया और उसके बाद आनन्दपुर आहर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आहर मे ही रहने के कारण गहिलोत वश के लोग आहारिया नाम से प्रसिद्ध हुए।

प्राचीन काल मे आहर एक बडा नगर था। इस बात को सभी लोग मन्जूर करते है। इस नगर के आस पास जो प्राचीन काल का बना हुआ है, वह अब बहुत कुछ नष्ट हो गया है। परन्तु अपनी प्राचीनता का वह स्पष्ट प्रमाण देता है। वहाँ पर कितने ही मन्दिर बने हुये है। उनमे जैन मन्दिर को प्रधानता दी जाती है। इन मन्दिरो को देखने से वहाँ की बहुत सी प्राचीन बातो का अनुमान होता है। इन मन्दिरो मे जितनी भी मूर्तियाँ पत्थरो पर बनी हुई है, वे सभी उल्टी है। उनके सिर नीचे की तरफ और पैर ऊपर की तरफ है। महावीर और महादेव—दोनो की मूर्तियाँ एक ही स्थान पर रखी हुई है और दोनो सफेद पत्थर पर खोदकर बनायी गयी है। यहाँ पर मुझे दो शिलालेख भी मिले। उनमे एक जैन भाषा मे लिखा हुआ है और दूसरा किसी दूसरी भाषा मे। उस भाषा का नाम नही जान सका।

मेडता मे आने के बाद उदयपुर के राजा के राणा का मुझे पत्र मिला था। उसका उल्लेख मै ऊपर कर चुका हूँ। सकुशल अपनी यात्रा से लौट आने पर राणा ने उस पत्र के द्वारा मुझे बधाई दी थी।

झगडे का फैसला करने के लिए अपनी सेना के साथ राजा विजय सिंह को जाना पडा और
बहादुर सिंह से छीनी और लूटी हुई समस्त सम्पत्ति रूप-नगर के राजा को दिलवा दी।

बहादुर सिंह ने उस समय विजय सिंह से कुछ न कहा। लेकिन उसके हृदय मे
एक आग सुलगती रही। जब उसने सुना कि पातन के युद्ध मे मराठो से विजय सिंह की
जित हुई है और मराठो का सीधा आक्रमण अब विजय सिंह के विरुद्ध होने वाला है तो
सिंह अपने मन मे बहुत प्रसन्न हुआ। विजय सिंह से बदला लेने के लिए बहादुर सिंह सेना
वाइन से जाकर मिल गया और मराठा सेना को लेकर उसने सबसे पहले रुप नगर पर
किया। उसने चौबीस घन्टे मे रूप-नगर पर अधिकार कर लिया।

रूपनगर से रवाना होकर मराठा सेना अजमेर पहुँची और उस पर अधिकार क
पति डी बाइन ने वही पर मुकाम किया। इसके बाद मराठो के सेनापति सीधिया ने
जावदादा, सदाशिवभाऊ आदि कई एक अश्वारोही नेताओ और अरसी तोपो के गोलदाजो
एक प्रबल मराठा सेना राठौरो के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भेजी। यह सेना डी वाइन के
कार मे रवाना हुई और वह एक दिभ का मार्ग पार करके नेत्रीया नामक स्थान पर पहुँच
पर उसने मुकाम किया।

मराठा सेना के आने की खबर सुनकर मैडता नगर के बाहर एक मैदान
के लिए राठौर लोग तैयार होने लगे। मराठा सेना से पाँच मील पीछे लूनी नदी के ए
कीचड को पार करते हुए माधव जी सीधिया की भेजी हुई तोपें फस गयी थी। इसलिये वे
के साथ आकर मुकाम पर न पहुँच सकी। राठौर सेना मैडता मे मराठो के आने का रास्त
रही। अगर उसने आगे बढकर उस समय मराठो पर आक्रमण किया होता तो निश्चित
विजय होती।

राजस्थान मे एक प्रथा है कि जब राजा अपनी सेना के साथ युद्ध मे नही जाता तो
कोई एक मंत्री सेना के साथ जाता है और सम्पूर्ण सेना के लोग उसकी आज्ञा का पालन
इस युद्ध में मराठो से लडने के लिए जो राठौर सेना मैडता मे पहुँची थी, उसके साथ
विजय सिंह नही गया था और उसका प्रधान मंत्री खूबचन्द्र भी राजधानी मे ही बना रहा
लिए सेना के साथ मंगाराम बन्दारी और भीमराज सिंगुई नामक दो मन्त्री सेना के साथ
गये थे। भीमराज से प्रधान मंत्री खूबचद ईर्षा रखता था और वह किसी भी अवस्था मे
का पतन चाहता था। मन्त्रियो की इस आपसी फूट का प्रभाव भी सेना मे काम कर रहा था

अहवा के सामन्त माहीदास ने जब सुना कि सीधिया की तोपें पीछे लूनी नदी के
मे फँस गयी है और सीधिया की मराठा सेना नेत्रीय नामक स्थान पर पडी हुई है तो उसने
की, 'या तो मैं अपने राज्य की स्वाधीनता के लिए शत्रुओ को परास्त करूँगा अन्यथा युद्ध
बलिदान हो जाऊँगा।' अपनी इस प्रतिज्ञा के साथ उसने मंत्री भीमराज से सेना को आगे
के लिए कहा। मारवाड के उपस्थित सभी ने माहीदास का समर्थन किया और वे म
सेना पर आक्रमण करने के लिए बिल्कुल तैयार थे। माहीनदास के साथ-साथ सभी सामन्तो न
मंत्री भीमराज से कहा "पातन के युद्ध मे फ्राँसीसी सेनापति डी वाइन के गोलन्दाजो के गोल
मार से राठौर सेना पराजित हुई थी। इस समय सीधिया की वे तोपे और उनके गोलन्दाज म
सेना के साथ नही है। इसलिए ऐसे मौके पर हम लोगो को तुरत मराठा सेना पर आक्रमण
देना चाहिए। इस समय निश्चित रूप से हमारी विजय होगी और मराठा सेना के एक-एक
को हम लोग काटकर फेंक देंगे।"

छोड कर दक्षिण के द्वार से निकले और अ निवास-स्थान रामप्यारी के बाग मे हम सब लोग सतोष के साथ चले गये ।

चौरासीवाँ परिच्छेद

उदयपुर की वापसी—सूरजपुरा की सराय के आगे का एक प्रसिद्ध दलदल—नगर के चारो ओर की विस्तृत भूमि मे जल—एक साधारण नगर मे सात सौ पचास जैनियो के मन्दिर—उनकी बिगडी हुई अवस्था—खैरोदा का प्रसिद्ध स्थान और दुर्ग— उसकी उपयोगिता और विशेषता—अमर पुरा नामक स्थान पर हम लोगो का मुकाम—ब्राह्मणो को दान मे मिला हुआ नगर—अनधिकारी और अकर्मण्य ब्राह्मण—राजा पर ब्राह्मणो का नियन्त्रण—राजा को ब्रह्म-हत्या का भय—राणा के सामने मेरा प्रस्ताव—राणा के दरबार मे ब्राह्मण ज्योतिषी के द्वारा ब्राह्मणो के सामने मेरा प्रस्ताव—राणा के दरबार मे ब्राह्मण ज्योतिषी के द्वारा ब्राह्मणो के अधिकारो का समर्थन— मेवाड राज्य मे मराठो और पठानो के अधिकार—वर्त्तमान राजपूतो की निर्बलता—मेवाड के बच्चे-बच्चे के साथ मेरा स्नेह—राज स्थान के साथ मेरा सम्बन्ध—राजपूतो की बुराइयो को दूर करने की चेष्टा ।

मारवाड-राज्य के प्रसिद्ध स्थानो की यात्रा समाप्त करने के बाद मे उदयपुर लौटा और इस राजधानी को कुछ दिनो के लिए मुकाम बनाकर २६ जनवरी १८२० ईसवी तक वहाँ रहा। ३० जनवरी को खैरोदा नामक स्थान पर पहुँचकर मैंने मुकाम किया। यहाँ पर आने का मार्ग जलमय था। उसके बाद दुवा नामक स्थान से चलकर लगभग दो मील की दूरी पर हम लोगो ने बैरस नदी को पार किया। उस नदी के तट पर मानदेश्वर नामक महादेव का एक बहुत प्राचीन मन्दिर था। उसे मैने देखा।

वहाँ से हम लोग फिर रवाना हुए। सूरजपुरा की सराय के आगे बढते ही हम लोगो को दल-दल मे फँस जाना पडा। इस नगर के चारो तरफ की भूमि जल से भरी हुई थी। मेवाड के सोलह सामन्तो मे कनोरा के प्रधान सामन्त के अधिकार मे यह स्थान है और अपनी प्राचीनता के लिए बहुत प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इस नगर मे किसी समय सात सौ पचास केवल जैनियो के मन्दिर थे और उन समस्त मन्दिरो मे एक साथ घन्टा बजता था। इन मन्दिरो मे अब समूचा एक भी नही है। उनके टूटे फूटे भाग देखने को मिलता है और उनको देखकर उनकी प्राचीनता का सहज ही अनुमान होता है। खैरोदा से एक मील की दूरी पर खैरोदा एक ग्राम है। हम लोग उसमे गये। वह ग्राम ब्राह्मणो के अधिकार मे है। इसीलिए वह ब्रह्मोत्तर कहलाता है।

खैरोदा एक प्रसिद्ध स्थान है उसके चारो तरफ किला है। चित्तौर और उदयपुर के बीच खैरोदा बसा हुआ है और वही पर उसका किला है। मेवाड के आपसी विद्रोह के दिनो मे यही पर एकत्रित होकर लोग विवाद किया करते थे। इस स्थान को अनेक बातो मे उपयोगी समझकर राणा ने अपने अधिकार मे रखा है।

सन् १७४८ ईसवी मे मेवाड राज्य मे आपसी विद्रोह की आग सुलग उठी थी। शक्तावत सग्राम सिंह का गोद लिया हुआ उत्तराधिकारी लावा का रावत जयसिह उस विद्रोह का प्रधान नेता था। खैरोदा उसी के अधिकार मे था। इसके द्वारा आमदनी अच्छी होती थी और वह एक

दोनों सामन्त अपने-अपने घोडो पर सवार हुये । इसके पहले दोनो ने अपनी-अ
को युद्ध के लिए आदेश दिया, और फिर अफीम का घुला हुआ पानी पीकर वे घ
उन दोनो के रवाना होने के पहले बाईस सामन्त उस स्थान पर आकर पहुँच गये
घुली हुई अफीम का जल पिया और रवाना होने के पहले उन लोगो मे वाते हुई ।
गया कि मराठो ने सोते हुये राजपूतों पर आक्रमण किया है । उनके गोलो की मार ह
पूतो मे जो कमजोर और कायर थे, केवल वही लोग मैदानो से भाग गये है । बाकी
अभी मौजूद हैं ।

अहवा और आसोप के सामन्तो की सेनाओ के साथ अन्य सामन्तो की सेनाये
लिये तैयार हो गयी । मैडतीय राजपूतो का प्रधान लिया का सामन्त जवान सिह अप
साथ तैयार था । अलनिवास डरोया, चानोद और गोविन्दगढ के सामन्त लोग भी अप
के साथ वहाँ पर आ गये । इस प्रकार उस स्थान पर एकत्रित राठौर राजपूतो की
हजार हो गयी । इसी समय सामन्त जवान सिह ने सब को सम्बोधन करते हुये कहा ·

भाइयों हम लोग मराठो के साथ युद्ध करने के लिये तैयार है । स्वतन्त्रत
राजपूतों को कोई चीज प्रिय नही हो सकती । अपनी इसी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये ह
मराठों के साथ युद्ध करेंगे । मुझे विश्वास नही है कि हमारे साथ का कोई भाई युद्ध
होगा । फिर भी, अगर कोई हम लोगो के बीच मे ऐसा हो तो उसको निकलकर अपने
मे चला जाना चाहिये ।

जवान सिह की उत्तेजनापूर्ण वातो को सुनकर किसी ने कुछ न कहा । इसके
के सामन्त ने कहा : अब युद्ध क्षेत्र की तरफ चलो ।

इसके बाद चार हजार राजपूत अपने घोडो पर बैठे हुये तेजी के साथ
उनके दिलो मे उत्साह था । शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिये उनके साथ का प्रत्ये
उतावला हो रहा था । तेजी के साथ चलकर वे सब के सब युद्ध क्षेत्र मे पहुँच गये । से
वाइन अपने अधिकार की अस्सी तोपो को ठीक तौर पर लगाकर युद्ध की प्रतीक्षा मे
एकाएक चार हजार राठौर अश्वारोहियो को हाथो मे नंगी तलवारे लिये आते देखा ।
उसने अपने गोलंदाजो को आदेश दिया और उसकी अस्सी तोपे एक साथ राजपूतो पर
साने लगी ।

राठौर शूरवीरो ने उन लोगो की परवाह न की और 'पातन की याद करो' ...
हजार राजपूत सवार एक साथ मराठा सैनिको पर टूट पडे । उन्होने गोलो का सामना
तोपो की पंक्ति तोड दी और गोलदाजो पर आक्रमण किया । गोलदाज प्राण बचा
भागे । लेकिन डी वाइन ने उनको फिर से सम्हाला और उन तोपो ने फिर से गो
आरम्भ किये ।

गोलो की मार से बहुत से राजपूत मारे गये और जो बाकी बचे, उनको मर
ने आकर चारो तरफ से घेर लिया । राठौर सवारो ने उस समय मराठा सेना के सा
मार आरम्भ की । लेकिन मराठो की सेना बहुत बडी थी इसलिये बहुत से राजपूत मारे
लोग जख्मी होकर गिरे, वे सब वही पर पड़े रहे । चौबीस घन्टे का समय बीत गया ।
को बडे जोर का पानी बरसा । उस पानी के कारण वहाँ पडे हुये घायलो को बहुत क
पडा । दूसरे दिन उन राज्य का एक अनुचर वहाँ पर पहुँचा । बडी देर तक खोजने के बा
कुछ जख्मी आदमी ऐसे दिखायी पड़े, जो वहाँ से लाये जा सकते थे । ऐसे जख्मी लोगो

कोटा राज्य के जालिम सिंह ने भीदर के इस युद्ध की आग भडकायी थी और शक्तावतों के साथ चन्द्रावत लोगो को लडाकर उसने भीदर के दुर्ग को अपने अधिकार मे लेने का इरादा किया था। इसलिए उस लडाई मे जब शक्तावत लोगो की हार हो गई तो जालिम सिंह ने अपनी अरब सेना का एक दल उनकी सहायता के लिए भेजा। कोटा के जालिम सिंह की इस सहायता को पाकर शक्तावत लोगो ने फिर चन्द्रावतो पर आक्रमण किया। दोनो ओर से फिर से युद्ध आरम्भ हुआ। उसमे चन्द्रावत लोग पराजित हो गये। सीधिया सेना का सरदार कुन्नी खा उस लडाई मे मारा गया। सग्राम सिंह के शरीर मे युद्ध करते हुए कई एक घाव हो गये थे। परन्तु उनको इन घावो की कुछ परवाह न थी और वह अपने शत्रु चन्द्रावतो को पराजित करके प्रसन्न हो रहा था।

चन्द्रावत सरदार सिंह के विद्रोहियो मे मिल जाने के कारण राणा के साथ उसकी शत्रुता पैदा हो गई थी। इसलिए जब शक्तावतो के साथ चन्द्रावतो की पराजय हुई और सग्राम सिंह ने चन्द्रावतो के विरुद्ध विजय प्राप्त की तो उसने राणा से अपनी विजय के लिये सम्मान पाया। इस प्रकार उस युद्ध के पश्चात् खैरोदा का दुर्ग सन् १८०२ ईसवी तक राणा के अधिकार मे रहा। उसके कुछ दिनो के बाद सग्राम सिंह ने दस हजार रुपये उपहार मे देकर वहाँ के दुर्ग को अपने अधिकार मे कर लिया।

राजा का स्वभाव सरल और सहज था। इसका अनुचित लाभ मेवाड के सामन्त उठाया करते थे। राणा के साथ अनेक बार सामन्तो का मतभेद मेरे सामने उपस्थित हुआ और मैंने मध्यस्थ बनकर उनके बीच मे उपस्थित होकर वैमनस्य दूर करने की कोशिश की। मेवाड राज्य की समस्त खालसा भूमि का खैरोदा एक विभाग है। छोटे-छोटे गाँवो को छोडकर इस प्रदेश मे चौदह बडे-बडे कस्बे है। इस प्रदेश से वार्षिक चौदह हजार पाँच सौ रुपये की आमदनी होती है। केवल खैरोदा नगर से होने वाली आमदनी पैंतीस सौ रुपये वार्षिक है।

३० जनवरी को हम लोग हिन्ता नामक स्थान पर पहुँचे। उन दिनो यहाँ के खेत अनाजो से भरे हुये चारो तरफ लहरा रहे थे और उस फसल की खेती अच्छी होने के कारण वहाँ के निवासी बहुत प्रसन्न हो रहे थे। उन खेतो मे जो गेहूँ, जौ और चना खडा हुआ था, उसको देखकर फसल के बहुत अच्छा होने की आशा की जाती थी। हम लोगो के आगमन का समाचार सुनकर वहाँ के बहुत-से लोग एकत्रित हो गये थे। उनमे स्त्रियाँ और बच्चे भी थे। हम सब लोगो के आने पर वे लोग बहुत प्रसन्न हो रहे थे।

खैरोदा के अन्तर्गत अमरपुरा नामक एक ग्राम था। वहाँ पर हम लोग पहुँचे। हमारे बायी तरफ मनियास नामक एक नगर था। उस नगर पर ब्राह्मणो ने अधिकार पाया था। मेवाड के राणा ने प्राचीन काल मे यह नगर ब्राह्मणो को दे दिया था। इस नगर मे पचास हजार बीघा भूमि अधिक उपजाऊ होने के कारण बहुत प्रसिद्ध थी, जिसे किसी समय मेवाड के किसी राजा ने अकर्मण्य ब्राह्मणो को दे दी थी। पता लगाने से मालूम होता है कि त्रेता युग मे राजा मान्धाता के द्वारा यह नगर और इसकी भूमि ब्राह्मणो ने पायी थी। उन ब्राह्मणो के अब मुश्किल से पच्चीस परिवार उस स्थान पर पाये जाते है। इन ब्राह्मणो ने इतनी बडी भूमि का अधिकार प्राप्त करने के बाद उसके जोतने-बोने का काम कभी नही किया और न वह विस्तृत भूमि दूसरो को कभी जोतने-बोने के लिये दी गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि वह विस्तृत उपजाऊ भूमि बञ्जर हो गयी। वे ब्राह्मण इतने अकर्मण्य थे कि वे उस भूमि को न तो स्वय जोत-बो सके और न इसके लिए वे किसी को दे सके। जो भूमि सैकडो वर्षो से जोती-बोई न गयी हो, बञ्जर होकर उसका बेकार हो जाना स्वाभाविक है। आश्चर्य यह है कि मेवाड का राजा उस भूमि को—जिसमे लाखो

राजपूतों के इस विनाश का मूल कारण उनमे फैली हुई ईर्षा और फूट थी।
और फूट राजपूतो मे घरो से लेकर महलो तक फैली हुई थी। मैडता के इस युद्ध में
जो सर्वनाश हुआ, उसका मूल कारण भीमराज के प्रति प्रधान मन्त्री खूबचन्द का ईर्षा
व्यक्तिगत फूट और वैमनस्य के कारण सम्पूर्ण समाज और देश का सर्वनाश करते हुए इ
को छोडकर संसार मे अन्यत्र कही पर कोई न मिलेगा। राजपूतो के लिए यह कोई
नही है। उनका सम्पूर्ण इतिहास प्राचीनकाल से लेकर अब तक इसी प्रकार के कलंको से
है और उनके पतन का मुख्य कारण भी उनका यही कलंक हुआ है। इससे कोई इ
कर सकता।

तीन वर्ष पहले मै इन राठौर राजपूतो को पराजित करने वाले फ्रॉसीसी सेनाप
की जन्मभूमि कैम्बेरी के घाटी मे गया था और दो दिनो तक मै उसके साथ वहाँ
वाइन के दीर्घ जीवन के लिए यद्यपि मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, परन्तु इस बात क
अफसोस है कि मारवाड के चार हजार शूरवीर राठोरो को पराजित करने और उन
अत करने के लिए ही वह जिन्दा था। मैंने डी वाइन से मैडता के युद्ध के सम्बन्ध मे
उसको उस युद्ध के सभी दृश्यो का स्मरण हो आया। उसने मैडता के युद्ध की बातें मु
कहा कि 'वे सब बाते अब मुझे स्वप्न के समान मालूम होती है।' सेनापति डी वाइन व
मुझसे राठौरो की वीरता का वर्णन करता रहा। जहाँ पर रहता था, वह सडक
और उसका मकान अनेक प्रकार की सजावट से देखने मे आकर्षक मालूम हो रहा था।
मे मैं इस इतिहास को लिख रहा था, संयोग से सेनापति डी वाइन का जीवन चरि
गया। मैने बडी उत्सुकता के साथ उसके जीवन चरित्र को पढा। उससे मुझे मालूम था
डी वाइन ने अन्त तक इस बात को नही समझा था कि मैडता के युद्ध मे राठौरो पर उ
का कारण राजपूतो मे फैला हुआ उनका आपसी विषैला ईर्षा भाव था। अगर उनमे
और अपने साधारण झगडो के कारण राजपूत लोग एक, दूसरे को मिटाने के लिए
रहते तो उन राजपूतो को पराजित करना बहुत मुश्किल था। लेकिन सेनापति डी व
को जानता न था और राठौरो को पराजित करने का श्रेय वह केवल अपने आपको देत
बात मुझको उसके जीवन चरित्र से मालूम हुई।

राजपूतो के बहादुर होने मे किसी प्रकार का सन्देह नही किया जा सकता और
कोई सन्देह नही कर सकता कि ये लोग आपसी फूट, ईर्षा और विरोध के कारण आज
मे है। इसलिए एक ऐसी महान शक्ति की जरूरत है, जो इनकी राजनीतिक परिस्थिति
जानकारी प्राप्त करने के लिए सहानुभूति के साथ इनका अध्ययन और अनुसन्धान
पश्चात वही इस बात का निर्णय करे कि इस देश के महान शक्तिशाली राजपूतो
अपना मित्र बनाना चाहिए अथवा शत्रु। इस देश मे आकर मैंने सबसे अधिक अनुभव
का किया है और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अगर कोई बडी शक्ति इनको अपना
तो ये राजपूत उसके लिए अस्त्र के समान बड़े सहायक हो सकते हैं। लेकिन ऐसा क
केवल बातो से काम नही चल सकता। बल्कि उस शक्ति का जो इन लोगो के साथ स
करे—अपनी सहानुभूति का प्रमाण सार्थक बनाकर देना पड़ेगा। मेरा तो विश्वास है f
राजपूतो के प्रति सच्चा सम्मान प्रकट किया जा सके, जैसी कि अंगरेज सरकार
और इसकी अपनी सहायता से निश्छल तथा निस्वार्थ भाव से मध्यस्थता करके उन
पारस्परिक ईर्षा और फूट निर्मूल की जा सके तो बिना किसी सन्देह के इन बहादुर

यज्ञ के कार्य के वाद जब वे दोनो ऋषि विदा होकर जाने लगे तो राजा ने मीनार प्रदेश का अधिकार पत्र लिखकर उनके हाथ मे दे दिया। उस अधिकार पत्र को लेने के वाद उन दोनो ऋषियो की अब तक की की हुई तपस्या नष्ट हो गयी और अपने तप से जो उनमे अलौकिक प्रताप पैदा हुआ था, वह सब लोप हो गया। उन ऋषियो के सम्बन्ध मे इस प्रकार की जनश्रुति पायी जाती है।

आज प्रात काल यात्रा करके हम लोग वामोनिया नामक ग्राम मे पहुँचे। वहाँ पर एक वडा सुन्दर तालाव है। उस तालाव के चारो तरफ पत्थर की दीवार का घेरा है। उस ग्राम मे चार हजार बीघा भूमि है। वह भूमि पहले राणा के अधिकार मे थी। लेकिन मराठो के आक्रमण होने के वाद उस ग्राम का अधिकार अब राणा के हाथ मे नही रहा।

यह ग्राम पहले किसी समय वडा रमणीक और सम्पन्न अवस्था मे था। लेकिन आक्रमण कारियो के अत्याचारो के कारण वह धीरे-धीरे विलकुल नष्ट हो गया है और वहाँ की आवादी भी वहुत कम हो गयी है। इन दिनो की उसकी दशा को देखकर कोई उसके प्राचीन वैभव का अनुमान नही लगा सकता। उसकी यह दुरवस्था उस समय आरम्भ हुई थी, जब राणा की शक्तियो का क्षीण होना आरम्भ हुआ था, उन्ही दिनो मे इस स्थान का अधिकार राणा के हाथ से निकल कर दूसरो के हाथो मे चला गया था।

मेवाड के आपसी विद्रोह के दिनो मे हिन्ता एक प्रसिद्ध स्थान था और मेवाड राज्य की तरफ से शक्तावत सामन्त उसका अधिकारी था। सम्वत् १८१२ मे दस हजार मराठा सेना के मेवाड पर आक्रमण करने पर रार्जसिह ने वडी वीरता के साथ युद्ध किया था। वह रार्जसिह हिन्ता का ही रहने वाला था। रार्जसिह झाला वशी राजपूत था और वह सान्द्री का सामन्त था। राणा प्रताप के साथ जिन राजपूतो ने मुगलो के साथ युद्ध किया था और राजपूती स्वाभिमान की रक्षा करते हुये जो लोग वलिदान हुये थे, यह रार्जसिह उन्ही का वशज था।

रार्जसिह साद्री जाने के लिये राजधानी से रवाना होकर जब हिन्ता मे पहुँचा तो उसने आने पर सुना कि मराठो की सेना आक्रमण करने के लिए आ रही है और यहाँ से तीन मील की दूरी पर सनाई नामक स्थान तक आ गयी है। उसी समय किसी आदमी ने उससे कहा कि साद्री जाते हुये मराठा सेना रास्ते मे पडेगी। इस लिए जो रास्ता वहाँ के लिए गया है, उसे छोडकर जाना चाहिये। परन्तु रार्जसिह ने इसकी कुछ भी परवा न की और वह साद्री पहुँचने के लिये हिन्ता से सीधे रास्ते पर रवाना हुआ।

रार्जसिह के साथ कुछ थोडे से अश्वारोही सैनिक थे। रार्जसिह उन्ही के साथ अपने रास्ते पर चला जा रहा था। कुछ देर के वाद उस रास्ते पर मराठा सेना के साथ भेंट हो गयी। मराठो की विशाल सेना के सामने थोडे से अश्वारोही सैनिक क्या कर सकते थे। मराठो ने उन सव को कैद कर लिया और घोडो से उतरने की उनको आज्ञा दी। रार्जसिह ने सोचा कि अपना कुछ देकर आत्म समर्पण करने की अपेक्षा मृत्यु का सामना करना श्रेष्ठ है। इस प्रकार अपने मन मे निर्णय करके रार्जसिह मराठो के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। उसके साथ तीन सौ अश्वारोही सैनिक थे। उन सब ने एक साथ अपने हाथो मे तलवारे लेकर मराठो की सेना पर आक्रमण किया। मराठा सेना को उन थोडे सैनिको से इस प्रकार का भय न था। लगातार कुछ समय तक दोनो तरफ से मारकाट होती रही। उसी मौके पर रार्जसिह अपने साथ के वचे हुये अश्वारोहियो को साथ लेकर हिन्ता के दुर्ग मे पहुँच गया।

प्रकृति के इस दृश्य को देखते ही हमारा ध्यान एक दूसरी दिशा की ओर आक उधर हमको धुएँ का एक महल सा दिखायी पडा । हम लोग जितना ही आगे बढ़ते गये धु महल का दृश्य उतना ही बदलता गया । सूर्य की किरणों ने उस धुएँ को—जो असल था—कुछ देर के बाद नष्ट कर दिया । हमारे साथ एक राजस्थानी पथ प्रदर्शक चल रहा रास्ते के सभी दृश्यो की जानकारी हमे कराता जाता था ।

भारी एक सम्पन्न ग्राम है । इरिया के मैडतीय सामन्त का अधीन एक सरदार का प्रधान है । इस स्थान के बायी तरफ एक छोटा-सा तालाव है । उसके किनारे नीम से वृक्ष है और उनके बीच मे एक स्मारक बना हुआ है । उस स्मारक की मूर्ति घोडे प उसके हाथों में अस्त्र है । उसके पास ही उसकी स्त्री की मूर्ति भी बनी हुई है । स्त्री हाथ खडी हैं । उसकी यह स्त्री अपने पति के शव को लेकर चिता मे बैठी थी । उस स्मारक हुआ है—सन् १६३३ ईसवी के माघ महीने की द्वितीया को महाराज जसवन् मुगल बादशाह औरङ्गजेव की सेना पर आक्रमण किया था । उस युद्ध मे मैडती वंश हरकर्णदास मारा गया था । उसी की स्मृति मे सम्वत् १६५७ के माघ महीने मे य बनवाया गया ।

२६ नवम्बर—यहाँ से दस लील चलकर हम लोग अलनिवास मे पहुचे और वह लोगो ने मुकाम किया । लगभग आधे रास्ते के बाद हमको इरिया नगर मिला था । जि सामन्त का हमने ऊपर कई स्थानो पर उल्लेख किया है, यह इरिया नगर उसका है । यह नगर लम्बा-चौडा है और अधिक संख्या मे लोग इस नगर मे रहा करते हैं । नग पास मजबूत पत्थरो का कोट बना हुआ है ।

इरिया के वर्तमान सामन्त का नाम बदन सिंह है । वह मारवाड के आठ श्रेष्ठ से एक है । यह नगर एक ऊँची जमीन पर बसा हुआ है । इस नगर के सामने के रमणीक दृश्य दिखायी देते है । नगर के शुरू से लेकर उसकी सीमा तक बहुत से हुए है ।

यहाँ पर एक स्मारक बना हुआ है । मैंने उसको देखा । उसमे लिखी हुई पंक्तियो के बाद मालूम होता है कि अरावली पर्वत पर रहने वाले माहीर लोग किस प्रकार के होते है । स्मारक मे लिखी हुई पंक्तियाँ इस प्रकार है : सन् १५७६ ईसवी के माघ मह पक्ष की तृतीया सोमवार के दिन माहीर लोगो के आक्रमण को रोकने के लिये भूपाल किया था । युद्ध मे जाने के पहले उसने अपने हाथ से अपनी स्त्री का सिर काट डाला बाद वह युद्ध मे गया था और उसमे वह मारा गया था ।

पचास वर्ष पहले माहीर जाति के लोग किस प्रकार अत्याचार करते थे, इसका उदाहरण है । उन लोगो के अत्याचार उसके बाद लगातार बढते रहे । उनके अपन बहुत से लोग पहाडों पर एक साथ रहा करते थे । उनमे एकता थी और सब मिलकर के आक्रमण किया करते थे । पर्वत शिखर के दोनो तरफ राठौर सामन्तो के ग्राम है । उन सभी घरो से कितने ही लोग इन माहीर लोगो के द्वारा मारे गये थे । इस प्रकार जो रा जाता था, उसका स्मारक बनवाया जाता था । इस प्रकार से बहुत से स्मारकों को मै राजपूतो मे स्मारक बनाने की प्रथा बहुत पहले से चली आ रही है । चौहान राजा का स्मारक आज तक दिल्ली मे फिरोज के महल मे मौजूद है । माहीर लोगो के अत्या रोकने के लिये राजस्थान मे कई बार प्रयत्न किये गये है और उन्ही के फलस्वरूप उनमे

कर सकता था, उनके वशजो की यह दशा कि आज उनकी भूमि पर दूसरो का अधिकार है। इसमे सदेह नही कि आज ये राजपूत बहुत अयोग्य दिखाई देते है। परन्तु इनकी सामर्थ्य का अभी लोप नही हुआ। वर्तमान परिस्थितियो मे उनकी शक्तियाँ क्षीण पड गयी है, परन्तु वे नष्ट नही हुई। मै देखता हूँ कि आज राणा दरबार मे जो सामन्त है, वे अपने पूर्वजो की तरह योग्य, साहसी और शूरवीर नही है। उनमे कोई आलसी है, कोई विलासी है, कोई अकर्मण्य हैं और कोई षडयत्रकारी है। किसी भी दशा मे मेवाड के साथ मेरा वही सम्बन्ध है, जो सम्बन्ध गोद लिये जाने के बाद भूमि पर किसी का हो जाता है। मेवाड के साथ मेरा गम्भीर सम्बन्ध है। यहाँ के प्रत्येक मनुष्य को, प्रत्येक बच्चे को और यहां की मिट्टी को मै स्नेह के साथ देखता हूँ। मेवाड के साथ मेरे जीवन का यह अटूट सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध के कारण मेरे मुख से निकलता है : 'मेवाड' सभी प्रकार की कमजोरियो के होने पर भी मै तुझसे प्रेम करता हूँ।

"mewar with all the faults, I love thee still'

मेवाड से नही, मैं सम्पूर्ण राजस्थान के साथ प्रेम करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि राजपूतो की कमजोरियाँ दूर हो जाय। अफीम और मदिरा के सेवन ने इन राजपूतो को अयोग्य और अकर्मण्य बना दिया है। मैं आशा करता हूँ इन राजपूतो के वशज अपने पूर्वजो के अवगुणो को अपने जीवन मे स्थान न देगे। अफीम और मादक पदार्थो का सेवन करके राजपूतो ने स्वय अपना सर्वनाश किया है। आपसी फूट और कलह उनकी इन्ही आदतो का दुष्परिणाम है। राजपूत के वशज अपने जीवन के इन दुर्गुणो को दूर करने की प्रतिज्ञा करेगे, इस बात की मैं आशा करता हूँ। तबला और सारगी की आवाजो मे उनके जीवन का बहुत सा समय बीत जाता है। अब वे इनसे घृणा करेगे और श्रेष्ठ गुणो को अपने जीवन मे स्थान देगे। मैं इस बात की इन राजपूतो से आशा करता हूँ। इस प्रकार के अवगुणो राजपूतो के जीवन से निकालने की मैंने कोशिश की है। जो रापूत आज राजसिहासन पर है और जो भविष्य मे उसका उत्तराधिकारी है, उनसे मैने इन अवगुणो को दूर करने के लिये प्रतिज्ञाये करवा ली है। ऐसा मैंने बहुत से अवगुणो को दूर करने के लिये शिक्षा दी है और उन राजपूतो ने भी विनाशकारी अफीम का सेवन न करने के लिये मुझे विश्वास दिलाया है। यह बात जरूर है कि जिन लोगो ने इस प्रकार की प्रतिज्ञाये की थी, उनमे से कुछ लोगो ने अपनी प्रातिज्ञाये भग कर दी है और वे मेरे सिखाने के विरुद्ध आचरण करने लगे है। लेकिन बहुत-से राजपूत अब तक अपनी प्रतिज्ञाओ का पालन कर रहे है। जो लोग अपने वचनो पर दृढ है, उनकी हालतो मे बहुत सुधार हुआ है और उनकी आर्थिक परिस्थितिया भी बदल गयी है। बुसाई लोगो के सामन्त अर्जुन सिंह और चन्द्रावत शाखा के सेवागत वश के सामन्त ने भी मेरी बातो को सुनकर अपनी खराब आदतो को छोड देने का निश्चय किया था, वे दोनो दृढता-पूर्वक अपनी प्रतिज्ञा पर चल रहे है।

अर्जुन सिंह के पिता की मृत्यु हो गयी थी। उसके बाबा बख्त सिह ने मराठो के कई बार आक्रमण करने पर भी अपने महत्व और दुर्ग की रक्षा की थी। लेकिन उसी के वश के प्रधान सालुम्ब्रा के सामन्त भीमसिह ने किसी कारण अप्रसन्न होकर उसके अधिकार का क्षेत्र छीन लिया था और सम्वत् १८४६ मे बुसाइयो की शाखा के एक आदमी को उसका अधिकार दे दिया था। लेकिन बख्त सिह ने अपने उस क्षेत्र पर—जो छीना जा चुका था—अधिकार कर लिया था और

इस मन्दिर के बनवाने में एक लाख तीस हजार रुपये खर्च हुए थे। उस मन्दिर की
इसी से अनुमान किया जा सकता है।

पुष्कर तीर्थ के सम्बन्ध मे जो जनश्रुति सुनने को मिलती है, उसका यहाँ प
कुछ उल्लेख करना आवश्यक जान पड़ता है। उस जनश्रुति में कहा जाता है कि सृ
करने वाले ब्रह्मा ने देवताओ के आग्रह करने पर यज्ञ किया था। उन दिनो मे असु
देवताओ को अनेक प्रकार के कष्ट दिये थे। इसलिए उन असुरो को रोकने के लि' चारो
बनाकर रक्षक नियुक्त किये गये थे। उस कोट का प्रमाण देने के लिए यहाँ लोग सरो
पास बने हुए पर्वत का जिक्र करते हैं। सरोवर के दक्षिण ओर के पर्वत का नाम र
उसकी चोटी पर सावित्री देवी का मन्दिर बना हुआ है। उत्तर दिशा की तरफ के पर्व
नीलगिरि है। पश्चिम की तरफ सोना चूडा नामक पर्वत है। यज्ञ स्थल पर असुरो का प्र
के लिए महादेव के बाहन नन्दी को प्यारी के मार्ग पर रखा गया था। वहाँ पर उसकी
है। उत्तरी भाग मे असुरो को रोकने के लिए कृष्ण को रखा गया था।

यज्ञ का अध्यक्ष पद ब्रह्मा ने ग्रहण किया था, उसकी आहुति के समय ब्रह्मा की
यहाँ पर न थी। स्त्री के विना यज्ञ के कार्य का सम्पादन नही हो सकता था। इसलिए
के स्थान पर एक गूजरी को ब्रह्मा ने बिठाकर यज्ञ का कार्य आरम्भ किया। उसके व
स्त्री सावित्री वहाँ पर आ गयी। उसने अपने स्थान पर दूसरी स्त्री को बैठे देखा, इ
अप्रसन्न होकर चली गई और रत्नगिरि के जिस स्थान पर सावित्री अदृश्य हुई थी, ठीक
पर एक झरना पैदा हो गया। वह झरना 'सावित्री' झरना के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उ
पास सावित्री देवी का मन्दिर बना हुआ है।

इस प्रकार की अनेक जनश्रुतियाँ पुष्कर के सम्बन्ध मे यहाँ पर सुनी जाती है
का यहाँ पर उल्लेख करने की आवश्यकता नही है। केवल एक जनश्रुति को यहाँ पर
लिखा है। वह इस प्रकार है, कलियुग मे मन्दोर का राजा शिकार खेलते हुए यहाँ प
था। वह एक असाध्य रोग मे पीडित था। यहाँ पर आकर उसने सावित्री झरने के ज
किया। उससे उसका वह रोग अच्छा हो गया। जब वह राजा लौटकर वहाँ से ज
पहचान के लिए उसने अपने सिर की पगडी एक वृक्ष की शाखा मे बाँध दी।

इसके कुछ दिनो के वाद अपने राज्य के बहुत से आदमियो के साथ वह यहाँ पर
और उसने एक सरोवर बनवाया। वही सरोवर पुष्कर सरोवर के नाम से आज तक
यहाँ के ब्राह्मणो ने मुझसे कहा कि "हमारे पूर्वजो ने परिहार राजा से अपने निर्वाह के
सी भूमि पायी थी और राजा ने उनको भूमि देकर दानपत्र लिखे थे।" मुझे वहाँ पर
लिखा हुआ फारसी भाषा मे एक ही आदेश पत्र मिला। वह ताँवे पर लिखा हुआ था
अवसरो पर कितने ही राजाओ ने मन्दिरो के खर्च के लिए भूमि पर देकर जो आदेश पत्र
उनमे से कुछ आदेश पत्रो को मैने यहाँ पर प्राप्त किया।

चौहान वंश के प्रसिद्ध राजा विशाल देव का नाम इस तीर्थ स्थान मे आज तक
के साथ लिया जाता है। विशाल देव ने जिस शाखा मे जन्म लिया था, उसका आदि पु
पाल इस सरोवर के दक्षिण तरफ नाग पहाड नामक स्थान पर रहा करता था। यहाँ
आने वाले यात्रियो को ले जाकर इन स्थानो के दर्शन कराते है। वहाँ पर अजपाल का
दुर्ग अब भी देखने को मिलता है। इस तीर्थ स्थान मे एक संन्यासी रहा करता था

अर्जुनसिंह के अफीम सेवन न करने की बात को उसके मुख से सुनकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। मैंने उसकी प्रशसा करते हुए कहा मैं आपसे इसी बात की आशा रखता था। मुझे खुशी हुई है यह जानकर कि आप अपनी प्रतिज्ञा पर कायम हैं।

एक वरगद के वृक्ष के नीचे ग्राम के कुछ लोग बैठे हुए पञ्चायत कर रहे थे। उस पञ्चायत मे उन लोगो ने आधे घन्टे तक मेरा इन्तजार किया। मेरे पहुँचने पर और मेरे पूछने पर वहाँ पर एकत्रित पचो ने कहा ''खुश हैं कम्पनी साहब के प्रताप से। यह कहकर उन लोगो ने हजार वर्ष तक जिन्दा रहने के लिये मुझे दुआये दी। मैं वडी रात तक धैर्यपूर्वक उस पञ्चायत मे बैठा रहा और पहाडी भीलो के द्वारा होने वाले अत्याचारो और लूट की बातो को उन लोगो के मुख से सुनता रहा।

पचासीवाँ परिच्छेद

हिन्ता के सामन्त की स्वागत की व्यवस्था—मेवाड राज्य का आपसी विद्रोह—हिन्ता का उससे छीन लेने का प्रस्ताव—मानसिंह की नियुक्ति—हिन्ता का विवाद—राणा के साथ नाथद्वारा के सामन्त का असतोष—लावा के दुर्ग पर शक्तावत सग्राम सिंह का अधिकार—दूरिया सग्रामसिंह—दूरिया राजपूतो का परिचय—चन्द्रभानु किसान और राणा जगतसिंह—चन्द्रभानु को आरिओ के शासन की सनद—मेवाड के राजसिंहासन पर राजसिंह राणा राजसिंह और सामन्त सरदार सिंह—सरदारसिंह पर राजसिंह का क्रोध—मन्दिर के देवता की मध्यस्थता—मेवाड राज्य पर सामन्त का तीन दिन का शासन—राज्य के खजाने पर सामन्त का आधिपत्य—लावा मे शानदार महल—राजधानी के खजाने से नौ लाख रुपये—अपने प्रदेश मे सामन्त का वैभव—तेजस्वी नाहर सिंह—जयसिंह और मानसिंह की प्रार्थनाये—अपने अधिकार की माँग—मानसिंह को आश्वासन—मानसिंह की सफलता के लिए नेक सलाह।

पिछले परिच्छेद के अत मे मैंने जिस पचायत का उल्लेख किया है, उस पर कुछ प्रकाश डालना यहाँ पर आवश्यक मालूम होता है। हिन्ता का सामन्त छप्पन नामक एक शिखर के ऊपर कून नामक स्थान मे रहा करता है। उसी स्थान पर उसके बाप-दादे भी रहते थे। मेरे सम्मान मे हिन्ता का सामन्त नही आ सका था। इसलिये अपनी अनुपस्थिति मे कुछ अनुचारो के साथ उसने अपने भाई को मेरे पास भेजा और अपने न आ सकने के कारण उसने क्षमा की प्रार्थना की। उसने यह भी कहला भेजा कि हिन्ता मेरा इलाका है और वहाँ पर आकर मुझे जरूर आपके दर्शन करने चाहिये था। लेकिन कुछ कारणो से मजबूर होकर मैं हाजिर नही हो सका। इसके लिये मुझे अफसोस है।

हिन्ता के सामन्त का इस प्रकार सदेश पाकर मैने उन लोगो मे प्रचलित एक शिष्टाचार को अनुभव किया। उसका भेजा हुआ भाई मुझसे मिला और मेरे प्रति उसने अपना सम्मान और विश्वास प्रकट किया।

सम्वत् १८२४ मे मेवाड राज्य मे आपसी विद्रोह चल रहा था। उन्ही दिनो मे शक्तावतो ने हिन्ता पर अधिकार कर लिया था। सन् १८१८ ईसवी के मई महीने की चार तारीख को

तिरासीवाँ परिच्छेद

अजमेर की ऐतिहासिक विशेषता—मुस्लिम शासको के अत्याचार—जैनियो
मन्दिर – फैली हुई जनश्रुति—अजमेर का विस्तृत तालाब—उस तालाब का निर्माता—
अन्नासागर उस सागर की विशेषता पठानो के द्वारा महल का विनाश—पराक्रमी
ख्याति—तीन सौ साठ ग्रामो का प्रदेश विदनौर—राणा भीम के साथ मुलाकात—
सामन्त के साथ राणा का विवाद – -राणा भीम के साथ मेरी मित्रता का सम्बन्ध—साम
राणा के झगडे का निर्णय—राणा के बहुमूल्य उपहार –भीलवाडा को जाने मे मेरी अ
राजपूतो के साथ मेरा स्नेह—राजपूतो के झगडे का निर्णय—भीलवाडा के राजपूतो का
टाडगंज नाम रखने का प्रस्ताव—मेरी नामजूरी भीलवाडा के साथ मेरा स्नेहभा
किसानो के द्वारा स्वागत—मेवाड राज्य मे स्वागत की प्रणाली—मरुभूमि की यात्रा से
थकावट—यात्रा से लौटने पर राणा का पत्र—देवारी नामक स्थान पर मुकाम—राणा
सन्देश—मेवाड की राजधानी की रमणीकता—राजधानी के दुर्ग—आहर नामक स्थान
के निर्माण मे संगमरमर पत्थर के प्रयोग—आहर नामक स्थान के पुराने नाम– साथ मे
की सहायता—ज्योतिषी की परामर्श—मेवाड के नागरिको का प्रेम ।

भारतवर्ष में अजमेर एक बहुत प्राचीन नगर है और वह अनेक बातो मे
षता रखता है । यहाँ पर मुसलमानों का शासन बहुत दिनो तक रहा और पठानों तथा
वहाँ पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये । उन विदेशियो के अतिरिक्त बहुत पहले से
के अनुसधान करने वालो का ध्यान अनेक अवसरो पर इसकी ओर गया है । इसका का
ही बातो मे अजमेर की विशेषता है । यहाँ के दुर्ग के पश्चिम तरफ जैनियो का एक पु
है । यह मन्दिर आक्रमणकारियो के द्वारा नष्ट होने से बच गया था । इस मन्दिर के स
बाते कही जाती है, उनमे इतना सत्य जरूर है कि यह मन्दिर बहुत थोडे दिनो के भी
तैयार हो गया थ , जिसके लिये लोग कहा करते है कि यह मन्दिर ढाई दिनो मे बना

अजमेर मे विशाल तालाब नाम का एक लम्बा-चौडा सरोवर है । उसका घेरा
का है । प्रसिद्ध विशालदेव ने इस सरोवर को बनवाया था उसके एक मील पूर्व की
सागर एक दूसरा सरोवर है । लोगो का कहना है कि इस सरोवर को विशालदेव के
वाया था । इसकी विशेषता यह है कि इस विस्तृत सरोवर के बीच मे एक विशाल प्र
हुआ है, जो पठानो के समय मे नष्ट कर दिया गया था और आक्रमणकारी लोग उस
मूल्यावान चीजे यहाँ से उठा ले गये ।

राजस्थान के इतिहास मे शूरवीर राठौर जयमल का नाम बहुत प्रसिद्ध है । व
छोडकर मेवाड चला गया था । उसके वशज विदनौर मे अब भी शासन करते है । य
तीन सौ साठ ग्रामो और नगरो का एक प्रसिद्ध और विस्तृत इलाका है ।

मानसिंह शक्तावत लावा के सामन्त के वंश की छोटी शाखा मे पैदा हुआ था। कोरावर के सामन्त ने शिवगढ के दुर्ग मे जाकर जब लालजी के विरुद्ध आक्रमण किया था, उसमे लालजी का सम्पूर्ण परिवार मारा गया था। उस हत्याकाण्ड मे जो कई एक बालक बच गये थे। मानसिंह उनमे से एक है। मानसिंह के अधिकारो का निर्णय करने के लिये हमे और भी उसके पूर्वजो की तरफ जाने की जरूरत है। लालजी रावत किसी समय नथारा प्रदेश का सामन्त था। किसी कारण से राणा ने लालजी से उसके नथारा के प्रदेश को लेकर उसके विरोधी चन्द्रावत शाखा के प्रधान को दे दिया था। लालजी ने भीदर के सामन्त वंश मे जन्म लिया और अपने परिवार का पालन करने के लिए उसने भूमि पायी थी।

जब लालजी के अधिकार से नथारा प्रदेश निकल गया तो वह डूगरपुर के सामन्त के पास गया। वहाँ के सामन्त रावल ने लालजी को शिवगढ का प्रदेश दे दिया। इस प्रकार वह शिवगढ मे जाकर रहने लगा। राणा ने उसके अधिकार से नथारा प्रदेश छीन लिया था। इसलिए लालजी राणा से बहुत असन्तुष्ट था और राणा से उसका बदला लेने के लिये उसने मेवाड-राज्य मे अत्याचार करना आरम्भ किया। भीदर के सामन्त को उसने अपना अधिकारी समझ लिया और उसके साथ मिलकर उसने उन प्रदेशो मे अत्याचार करके लूट-मार शुरु की, जो ग्राम और नगर भीदर के सामन्त के विरोधियो के अधिकार मैं थे। लेकिम कुछ दिनो के बाद परिस्थितियो के बदलने पर वह राणा के पक्ष मे फिर हो गया। अन्त मे कोरावर के सामन्त ने शिवगढ के दुर्ग मे आक्रमण करके उसे मार डाला।

शिवगढ के उस हत्याकाण्ड मे लालजी के बडे लडके सग्राम सिंह और उसके भतीजे जयसिह और नाहर सिंह के प्राण किसी प्रकार बच गये थे और लालजी के मारे जाने के बाद सग्राम सिंह शिवगढ के दुर्ग का मालिक हुआ। वह अपने पिता की मृत्यु को भूला न था। शिवगढ मे जिस प्रकार उसका सम्पूर्ण परिवार मारा गया था, उसकी आग उसके अन्तरतर मे बराबर सुलग रही थी।

सग्राम सिंह जब खैरोदा की रक्षा करने के लिये गया था तो उसके साथ उसका भतीजा नाहर सिह भी उसके साथ था। सगाम सिंह ने लावा के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। उस समय राणा ने उसको क्षमा ही नही किया बल्कि उसको अपने दरबार मे सम्मानपूर्ण स्थान दिया।

लावा के दुर्ग पर दूँदिया सग्राम सिह ने उस दुर्ग पर आक्रमण किया और उसको पराजित करके अपने अधिकार मे कर लिया।* दूँदिया लोग भी राजपूत होते है। परन्तु उनके इस वश के नाम से सभी लोघ परिचित नही हे। इसलिए यहाँ पर नीचे एक घटना का उल्लेख किया गया है। उससे दूँदिया राजपूतो का परिचय मिलता है—

मेवाड राज्य के पर्वत की एक घाटी मे खेती करने योग्य जो जमीन थी, उसमे कुछ भूमि का मालिक चन्द्रभान नामक एक आदमी था। वह उस जमीन मे अपने बैलो से खेती किया करता था। उसके पास खेती के लिए दो बैल थे। उस भूमि के सिवा चन्द्रभानु के पास

---

* यहाँ पर सग्राम सिह दो है। लालजी के बडे लडके का नाम सगामसिंह था। और वह शक्तावत वशी था। लावा दुर्ग का अधिकारी भी सग्राम सिंह था। वह दूँदिया राजपूत था।

उनके इस निर्णय को सुनकर मैंने उनको धन्यवाद दिया और उसके साथ ही प्रार्थना की मै इस बात को पसन्द न करूँगा। मैंने उनसे स्पष्ट कहा कि मैं जितना आप स्नेह करता हूँ, उतना ही इस नगर के नाम भीलवाडा से मैं प्रेम करता हूँ मै कभी नगर का नाम बदला जाना स्वीकार न करूँगा। मेरी इस प्रार्थना को वहाँ के स्वीकार कर लिया और उसके बाद मैं सम्मानपूर्वक वहाँ के लोगो से विदा होकर अपने ९ आ गया।

१२ दिसम्बर को आस-पास के स्थानो मे घूमते हुए मैं मेवाड की उस भूमि पर राणा के अधिकार मे थी और बहुत उपजाऊ थी। मार्ग में जहाँ से हम लोग निकलते थे लोग स्त्री-बच्चों के साथ एकत्रित होकर हम लोगो को देखते थे और अपनी प्रसन्नता को प्र के लिए राजस्थानी गाना गाते थे। जब हम लोग किसी नगर अथवा ग्रामो मे प्रवेश क वहाँ के निवासी जय-जयकार करते थे। बहुत-के स्थानो मे जल भरे हुए कलसो को अपने रखे हुये स्त्रियो ने हम लोगो का स्वागत किया। मार्ग के दोनो ओर जिस प्रकार लोग पं कर खडे होते और हम लोगो को देखकर मुस्कराते उनका यह दृश्य मुझे बहुत प्रिय मालू इस प्रकार का स्वागत मेवाढ के सभी स्थानो मे किया गया। जो स्त्रियाँ सिर पर कलस ले होती थी, उनमे बहुत सी युवती लडकियाँ और स्त्रियाँ भी थी। उनके इस स्वागत और देखकर मैं बहुत प्रसन्न होता और इस देश के लोगो की मै मन ही मन प्रशसा करता।

१६ दिसम्बर—हमने अपनी यात्रा का श्रीगणेश मैडता नामक स्थान से किया थ महीने तक मेवाड और मारवाड के राज्यो मे घूमने के बाद हम लोग फिर मैडता मे आकर हुये। यहाँ पर बारीय और बुनाश नदियो के चार स्थानो पर विश्राम करने के बाद हम बढे। जिस प्रदेश मे हम लोग आकर पहुँचे थे, वहाँ की भूमि साधारण रूप से अधिक इस प्रदेश मे पहले कई एक सम्पन्न नगर थे। उन नगरो के अनेक प्राचीन स्थान टूटी-फू देखने को मिलते है। यहाँ की पैदावार का हाल सुनकर ऐसा मालूम होता हे कि इतनी भूमि शायद इस देश मे कही नही है।

मरुभूमि मे बहुत दिनो तक चलने के कारण हमारे साथ ऊँटो को बहुत कष्ट था। हमारे साथ का सम्पूर्ण बोझा उन्ही ऊंटो पर चलता था। इसलिए जितने भी ऊँट ह थे, उनमे से लगभग आधे ऊँट बेकार हो गये थे। हम लोगो के यहाँ पर लौट आने के बाद हमारे पास अपना एक पत्र भेजा। उसका वह पत्र सम्मान से भरा हुआ है और पढने से मा है कि वह मुझे देखने के लिए बहुत अधीर हो रहा है। परन्तु कुछ कारण वश मैं राणा धानी मे उसका पत्र पाने के बाद तुरन्त नही जा सका और कुछ समय के लिए मुझे उसकी घाटी मे रह जाना पढा।*

१६ दिसम्बर—दो दिनो तक अपनी थकावट को दूर करने के बाद हम लोग देवा अर नामक स्थान की तरफ चले। वहाँ पर जाने का कारण था। राणा ने सदेश भेजा थ पर आकर मैं स्वय आपसे मिलूँगा और अपनी राजधानी मे आपको ले जाऊँगा।

राणा का यह सदेश पाकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई थी। यद्यपि मुझे लिवा जा राणा का मेरे पास आना कुछ आवश्यकता नही रखता था। फिर भी उसने इस प्रकार

---

* यहाँ पर पाठको को यह जान लेने की आवश्यकता है कि मैडता नामक ग्राम मारवाड दोनों राज्यो मे है। इसलिए कोई भ्रम न पैदा होना चाहिए।

परन्तु उनके स्वभाव से स्वाभिमान कभी जा नही सकता । × राणा जगत सिह दूँदिया चन्द्रभानु से बहुत प्रसन्न हुआ । उसने एक घोडा लाने के लिए उससे कहा । जब घोडा आ गया तो राणा ने चन्द्रभानु से कहा . यहाँ से दस मील तक राजधानी मे तुमको चलना होगा ।

राणा की बात को सुनकर चन्द्रभानु चलने के लिए तैयार हो गया । वह घोडे पर बैठकर राणा के साथ चला । चन्द्रभानु घोडे का कितना अच्छा सवार था, यह बात उस समय राणा से छिपी न रही । चन्द्रभानु राणा की राजधानी मे पहुँच गया था, और दूसरे दिन उसने दरबार मे जाकर राणा को सम्मान पूर्वक अभिवादन किया । राणा ने आदरपूर्वक उसे ग्रहण किया और अपनी एक मूल्यवान पोशाक उसको दी । उस पोशाक को पाकर चन्द्रभानु बहुत प्रसन्न हुआ । वह जानता था कि राणा की व्यवहार की हुई पोशाक का मिलना बडे सौभाग्य की बात है । इसीलिए उसे राणा के सम्मान के रूप मे स्वीकार किया जाता है । उस पोशाक के साथ-साथ राणा ने कोआरियो नामक प्रदेश और उसकी समस्त भूमि चन्द्रभानु को भोग करने के लिए दे दी । साथ ही एक सनद लिखकर उसे दे दी जिसके अनुसार वह और उसके उत्तराधिकारी सदा उसके स्वामी बने रहेगे ।

संयोग की बात है कि दूँदिया चन्द्रभानु और उसके राजा राणा जगतसिह की एक साथ मृत्यु हुई । जगतसिह की मृत्यु के बाद राजसिह मेवाड के सिहासन पर बैठा और चन्द्रभानु का लडका सरदार सिह कोआरियो का सामन्त हुआ । राजसिह और सरदार सिह—दोनो की अवस्था लगभग एक सी थी । इसीलिए दोनो मे बडा स्नेह हो गया था । दोनो साथ-साथ खेला करते थे और इच्छानुसार घूमने के लिए जाया करते थे । बालक राणा राजसिह प्राय सरदार सिह को अपने साथ लेकर राजधानी से दो मील की दूरी पर 'सुहेलिया की बाडी' नामक एक बगीचे मे जाया करता था और उस बाग के जलाशय मे दोनो स्नान किया करते थे ।

राणा राजसिह और सामन्त सरदार सिह मे उस समय किसी प्रकार का भेदभाव न था । दोनो स्वतन्त्रतापूर्वक एक, दूसरे के साथ व्यवहार करते थे । एक दिन राणा राजसिह ने जलाशय मे स्नान करते समय देखा कि स्नान करते हुए भी सरदार सिह ने अपने सिर की पगडी को नही खोला । यह देखकर राणा को सामन्त पर कुछ सन्देह होने लगा । उसने समझा कि सरदार सिह के सिर से पगडी न उतरने का कोई रहस्य है । उसने यह भी सोच डाला कि सरदार सिह अपने सिर की किसी खराबी को छिपाने के लिए ही पकडी को सिर से नही उतारता ।

राणा राजसिह बालोचित स्वभाव के कारण सरदार सिह के पगडी न उतारने के रहस्य को जानने की कोशिश करने लगा । वह सीधे-सीधे उससे कुछ पूछना नही चाहता था । उसको

× जिस समय मैंने राजस्थान की यात्रा आरम्भ की थी, उस समय मैं यहाँ के लोगो से बिलकुल अपरिचित और अनजान था । किसी स्थान पर जब मैं अकेला-पहुँचता और उस समय मैं किसी किसान से रास्ता पूँछता तो मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुये वह किसान इतना जरूर कहता—'मैं राजपूत हूँ ।' राजस्थान के किसानो के मुख से स्वाभिमान पूर्वक यह सुनकर मैं 'राजपूत हूँ', मैं बहुत प्रसन्न होता और मै उसके प्रति अपना सद्भाव तथा सम्मान प्रकट करता । मेरे इस व्यवहार से वे किसान बहुत प्रसन्न होते । मैने इन राजपूतो मे सबसे बडी बात यह देखी कि वे किसी अपरिचित के प्रति सहानुभूति प्रकट करना खूब जानते हैं । राजपूतो के इस गुण ने मुझे अपनी ओर बहुत आकर्षित किया है ।

उस समय मुझे राणा की राजधानी मे जाना चाहिए था ।।लेकिन मुझे कुछ समय के
मे रुक जाना पडा था । राजस्थान का एक आदमी प्रथ-प्रदर्शक की हैसियत से मेरे साथ '
ज्योतिष का भी ज्ञान रखता था । मैडता से राणा की राजधानी जाने के लिए बातचीत
साथ के उस ज्योतिषी ने मुझे कुछ समय के लिए मैडता मे ही रुकने के लिए कहा था ।
भी था कि उस तरफ जाने के लिए नक्षत्र आपके विरुद्ध पडता है । इसलिए जब तक व
जाय, आपको राणा की राजधानी की दिशा मे नही जाना चाहिये ।

मैने उस ज्योतिषी की बात को सुनकर कुछ समय वहाँ रहने के लिये मजूर क
यद्यपि नक्षत्र के विरोध का मेरे ऊपर कोई प्रभाव न था । लेकिन मै बहुत थका हुआ था
नक्षत्र के बहाने वहाँ पर रहकर विश्राम कर लेना मैने मुनासिब समझा । मेरे ऐसा क
पथ-प्रदर्शक को बहुत संतोष मिला । नक्षत्रो की चालो पर विश्वास न करते हुए भी मै अ
के ज्योतिषी को अप्रसन्न नही करना चाहता था । रुककर विश्राम करने की मेरी स्वयं
इस ढगा मे उसको सतोष देने मे मेरा क्या बिगडता था ।

शहर से विदा होने के समय भी मेरे सामने उसी नक्षत्र का प्रश्न पैदा हुआ ।
भी मुझसे एक दिन और ठहरने के लिए कहा गया । उसके उत्तर मे अब तो मुझे
कि अगर विरोध नक्षत्र का प्रभाव मेरे ही ऊपर पडता हो तो मैं उसका फल भोगने
तैयार हूँ ।

मेरी इस बात को सुनकर बेचारा ज्योतिषी कुछ संकोच मे पड गया । वह
करने के लिए साहस न कर सका । इसलिए उसने मुझसे जो कहा था, उसमे उसने संशोध
और फिर उसने कहा : नक्षत्र के प्रकोप से बचने के लिये मुझको पूर्व की तरफ के दरवाजे
दक्षिण के फाटक के रास्ते से राजधानी में प्रवेश करना चाहिए ।

मैने उसकी इस बात को मान लिया । इसलिए कि ऐसा करने से मेरा कुछ नही
था और दूसरी बात यह भी थी कि इन राज्यो के जो लोग इस प्रकार की बातो पर
करते है, उनको भी मेरे साथ चलना था । इसलिये पथ-प्रदर्शक के इस संशोधन को मैंने
कर लिया ।

हम सब लोग राणा की राजधानी मे पहुँचे । राणा भीमसिह अपने लडके त
सामन्तो और मत्रियो को लेकर राजधानी के बाहर आकर मुझसे मिला । उसके साथ
मे रहने वालो की बहुत बडी सख्या थी । उन सभी लोगो ने एक साथ जोर से कहा
साहब राम राम ।

मैने हँसते हुए बडी प्रसन्नता के साथ उन सब को राम-राम कहा । जो लोग राणा
मुझसे मिलने आये थे, बहुत प्रसन्न थे और मालूम होता था कि वे लोग बहुत दिनो के
अपने किसी निकटवर्ती सम्बन्धी अथवा प्रेमी से आज मिल रहे है । उन सबको देखकर और
प्रसन्नता को अनुभव करके मुझे भी इसी प्रकार का सुख मिल रहा था, जिस प्रकार
उसके साथी लोग उस समय अनुभव कर रहे थे ।

मै राणा के साथ-साथ उसके लडके, सामन्तो और मत्रियो से खूब मिला और
मैंने उनके और उनके परिवार से कुशल समाचार पूछे । राणा ने दूसरे दिन अपने राज
आने के लिये मुझे आमन्त्रित किया । उस निमन्त्रण की स्वीकृति मुझसे पाने के बाद वह सब
उस स्थान से लौटकर चला गया और हम लोग भी ग्रह के कोप को बचाते हुए पूर्व के

अधिकार में थी। उसकी वह भूमि खास भूमि होने के कारण किसी दूसरे को नही दी जा सकती थी। राजसिंह के मुख से उन बातो को सुनकर रानी ने सरदारसिंह के शिष्य होने और राजसिंह के पूर्व जन्म मे योगी होने पर विश्वास कर लिया। लेकिन उसने अपने लड़के राजसिंह को समझाते हुए कहा . दूँदिया सरदारसिंह हमारी खास भूमि को न लेकर वह दूसरी कोई भी भूमि ले सकता है। अगर वह चाहे तो उसे मेवाड राज्य दिया जा सकता है।

माता के मुख से इस प्रकार की वात को सुनकर राणा के मन मे असतोप का भाव पैदा हुआ। उसने आवेश मे आकर कहा अच्छा, मैंने उसको मेवाड राज्य दिया।

सामन्त सरदारसिंह बुलाया गया। उसके आने पर राजसिंह ने उससे कहा . मैंने तीन दिनो के लिए सम्पूर्ण मेवाड का राज्य आपको दे दिया। उन तीन दिनो मे आप मेवाड राज्य मे जो चाहे, कर सकते है, मेरा सिलहखाना, शास्त्रागार, खजाना, राज्य की सेना और मेरा सिंहासन तथा मन्त्री और सामन्त—सबका सब तीन दिनो के लिये आपके अधिकार मे होगा।

सामन्त सरदार सिंह ने राणा राजसिंह के इस निर्णय को स्वीकार कर लिया और वह तीन दिनो के लिए मेवाड राज्य का शासक बन गया। उसने राजधानी की कीमती चीजो, राजमहल के वैभव वाले पदार्थो और खजाने के रुपयो को अपने प्रदेश कोआरिओ भेजना शुरू कर दिया। राज सिंहासन पर बैठकर सामन्त ने अपने प्रदेश के ऐश्वर्य को बढाने वाले सभी कार्य किये। कोई उसके कार्यो और व्यवहारो मे हस्तक्षेप नही कर सकता था। राणा राजसिंह वचनबद्ध था। इसलिये उसने अपने नेत्रो को बन्दकर लिया था, जिससे उसे कुछ दिखायी न दे, तीन दिनो तक मेवाड के सिंहासन पर बैठकर सामन्त सरदारसिंह ने राज्य का खजाना खाली कर दिया और जितना भी उससे हो सका, उसने कोआरिओ को भेज दिया। इसके बाद चौथे दिन उसने राणा को उसके राज्याधिकार सौंप दिये।

कोआरिओ के सामन्त सरदार सिंह ने मेवाड राज्य के रुपयो से अपने प्रदेश मे अनेक प्रकार के कार्य आरम्भ किये। नौ लाख रुपया से उसने अपने अधिकार के प्रसिद्ध स्थान लावा मे एक मजबूत दुर्ग बनवाया और वही पर उसने एक महल तथा विशाल तालाब भी तैयार कराया। सरदार सिंह ने लावा मे जो एक बाग बनवाया, उसमे उसके एक लाख रुपये खर्च हुए। लावा मे सरदार सिंह के बनवाये हुए महल की आज तक प्रशसा की जाती है। लेकिन एक दिन अचानक बारूद के गोदाम मे आग लग गयी। उससे उसके किले का आधा हिस्सा बुरी तरह से नष्ट हो गया। सरदार सिंह ने बहुत सा धन खर्च करके उस किले की मरम्मत करायी और मेवाड की राजधानी से लायी हुई सम्पत्ति को उसने पानी की तरह बहाया, उससे लावा का वह किला फिर ज्यो का त्यो हो गया। लेकिन मराठा होलकर की सेना के आक्रमण करने पर लावा का सर्वनाश हुआ और होलकर की तोपो से उसका किला बरबाद हो गया। सरदार सिंह ने लावा मे जो महल बनवाया था, वह मेवाड के समस्त महलो मे श्रेष्ठ समझा जाता था और आजकल लोग उसकी प्रशसा करते है।

उदयपुर की राजधानी मे जो महल सरोवर के समीप बने हुए है, उनमे एक मे रहने के लिये राणा की तरफ से सरदार सिंह को मिला था। लेकिन उन दिनो मे उस महल मे जिसमे रहने के लिये सरदार सिंह को अधिकार कर दिया गया था, आमावत का सामन्त रहता रहा। फिर भी वह महल अब तक दूँदिया का महल कहलाता है। मैने उस महल को देखा है, उसमे अब चिमगादडो और उल्लू पक्षियो का स्थायी निवास हो गया है। उस महल के एक कमरे को तोड कर बरगद का वृक्ष ऊपर निकल गया है।

सुरक्षित स्थान पर बसा हुआ था। इसीलिये इस नगर को किसी सामन्त के अधिकार
राणा ने अपने ही अधिकर मे उसको रखा था। लावा से सामन्त के साथ ४ मई को
संधि हुई थी ओर उसी संधि के अनुसार यह नगर और उसका किला राणा को मिला।

मेवाड मे जो आपसी विद्रोह पैदा हुआ था, उसका वर्णन खैरोदा के इतिहास मे
मे लिखा गया है। उस विद्रोह मे शक्तावत सग्राम सिंह और चन्द्रावत भैरोसिंह की तर
से राजपूत मारे गये थे। सन् १७३३ ईसवी मे सग्राम सिंह की अवस्था छोटी थी। ७
शिवगढ का रावत लाल उस समय जीवित था। उसने अपने राजा रणा के अधिकार
को छीन लिया था और छै वर्ष तक लगातार उसने उसको अपने अधिकार मे रखा।
ईसवी मे देवगढ, आमोत ओर कोरावर इत्यादि के सामन्त ने सालुम्ब्रा के नेतृत्व मे
और वहाँ से शक्तावत लोगो को भगा देने के लिये वे एकत्रित हुये। शक्तावत सरदार ने च
तक उन आक्रमणकारियो से खैरोदा के दुर्ग की रक्षा की। उसके बाद वह दुर्ग का अधिक
के लिये तैयार हो गया और इसके लिये उसने संधि की सूचना देने वाले सफेद झण्डे को
इसके उपरान्त वह अपने परिवार के लोगो को लेकर शक्तावतो की राजधानी भीदर ना
को चला गया। इस प्रकार उसने आक्रमणकारियो से अपनी रक्षा की। परन्तु २
उत्तराधिकारी सग्राम सिंह भीदर मे पहुँच गया। वहाँ जाकर उसने अपने शत्रुओ पर
किया।

सग्रामसिंह ने भीदर मे जो अत्याचार किये, उनके सम्बन्ध मे मेवाड के लोग अब
सी बाते कहा करते है। किसी समय उसने गुरली नामक स्थान पर पहुँचकर वहाँ के पशुअ
और पुरुषो को कैद कर लिया था। कोरावर के सामन्त का लडका जालिमसिंह वहाँ के निव
सहायता के लिये गया। संग्रामसिंह ने जालिमसिंह पर आक्रमण किया और उसने उसको
मार डाला। समाचार को सुनकर कोरावर प्रदेश के राजपूत बहुत बिगडे और संग्रामसिंह
सिंह की मृत्यु का बदला लेने के लिए वे लोग चन्द्रावत सालूम्ब्रा के सामन्त के ७
एकत्रित हुये।

महाराणा को स्वयं जालिमसिंह की मृत्यु के समाचार से बड़ा आघात पहुँचा।
उसने चन्द्रावतो का पक्ष लेकर अपने अधिकार की वेतन भोगी सैन्धवीसेना लडने के लिए भे
उस सेना ने भीदर पहुँचकर उसको घेर लिया। जिस समय राणा की भेजी हुई इस सेना
पर आक्रमण किया था, उसी समय कोरावर के सामन्त अर्जुनसिंह ने अपने लडके जालि
मृत्यु का बदला लेने के लिए तैयारी की और शिवगढ पहुँचकर वहाँ के दुर्ग पर अ
उसने वहाँ के स्त्री-पुरुषो को मार डाला। खैरोदा कई वर्ष तक राणा के अधिकार मे रहा।
मे राणा ने वहाँ का किला भदेसर के चन्द्रावत सामन्त सरदारसिंह को दे दिया।

सम्वत् १५४६ मे चन्द्रावत सामन्त ने महाराणा के विरुद्ध विद्रोहियो का साथ दि
इस लिए राणा की तरफ से उनको बहुत अपमानित होना पडा। उसके बाद शक्तावत ल
दिनो मे भीदर के सामन्त के नेतृत्व मे वहाँ के दुर्ग मे सैन्धवी सेना को निकालने के लिए तैया
कोरावर का सामन्त अर्जुनसिंह दुर्ग की सहायता करने के लिए गया। कुली खाँ सैन्धवी
प्रधान था। दुर्ग के करीब के मैदान मे युद्ध आरम्भ हुआ। उस लडाई मे कोरावर प्रदे
सरदार [illegible] जोरावर और [illegible] भीम भी मारे गये। लेकिन अन्त मे चन्द्रावत लोगो
विजय हुई और शक्तावत पराजित होकर वहाँ से चले गये।

सपूत हो अथवा कपूत, प्रत्येक अवस्था मे वे इसके अधिकारी रहेगे। मेरे इस कार्य में चतुर्भुज देवी साक्षी है। मानसिंह मेरा भाई है। इसलिये आवश्यकता पडने पर जब मैं उसको आदेश दूंगा तो उसको उस आदेश का पालन करना पडेगा। अगर किसी समय उसने ऐसा न किया तो अपने इस अपराध का वही उत्तरदायी होगा।"

मानसिंह ने अपने कर्त्तव्य का पालन नही किया। इसलिये अथवा और कोई कारण हुआ हो, जयसिंह ने जैतपुरा का अधिकार मानसिंह से ले लिया। मानसिंह ने जैतपुरा पर अपना अधिकार कायम रखने के लिये बडी चेष्टा की, परन्तु उसको सफलता न मिली। उस दशा मे मानसिंह मेरे पास आया और उसने अपना मामला मेरे सामने पेश किया। लावा के सामन्त से खेरोदा का प्रदेश लेकर राणा ने अधिकार मे कर लिया था। इसलिये जयसिंह की आमदनी घटकर आधी रह गयी थी। कुछ इसी प्रकार के कारणो से जयसिंह ने जैतपुरा को मानसिंह से लेकर अपने अधिकार में कर लिया था।

सन् १८२८ ईसवी मे जब मैं मारवाड गया था, उस समय एक पत्र भेजकर मानसिंह ने मुझे साबित किया था कि जयसिंह ने जैतपुर का अधिकार छोड देने के लिये मुझे धमकी दी है। मैंने उसको उत्तर मे लिख दिया कि इसका निर्णय केवल राणा के अधिकार मे है।

इसके बाद मानसिंह राणा के पास गया। वहाँ उसने अपना मामला पेश किया और सभी प्रकार उसने राणा से प्रार्थना की। परन्तु मानसिंह को राणा के यहाँ सफलता न मिली। इस दशा मे वह फिर मेरे पीछे पडा। मैंने किसी प्रकार उसको सादड़ी की सीमा पर एक दल का अधिकारी बना दिया। लेकिन वहाँ पर भी उसका कार्य सन्तोष जनक नही रहा। यह सब मुझे जानने को मिला। मानसिंह अपनी अकर्मण्यता के कारण लगातार अपने अधिकारो से वञ्चित हो रहा था। उसको बार-बार प्रार्थना को सुनकर मैंने जो उसकी सहायता की थी, उसकी भी वह रक्षा न कर सका। उसकी इन परिस्थितियो मे अब उसका कोई सहायक न रह गया था।

मानसिंह ने अपनी अनाश्रित अवस्था मे मेरे पास आकर जैतपुरा के लिये मिली हुई सनद को मुझे देकर कहा: मैं लावा के प्रदेश का अधिकारी हूँ। उन अधिकारो से मुझे कोई रोक नही सकता। लेकिन मैं कुछ नैतिक बन्धनो मे बंधा हूँ। अगर मैं इन बन्धनो को तोड डालूँ तो मैं फिर जैतपुरा पर अधिकार कर सकता हूँ। मेरे साथ जो षडयन्त्र किये जा रहे है, उनको मैं समझता हूँ। मुझे कमजोर बनाने के लिये ही मेरे सैनिको की सख्या कम की गयी है। अगर मुझे नैतिक बन्धनो का ख्याल न हो तो मैं नही समझता कि जैतपुरा का अधिकार मुझसे कौन छीन सकता है। जिस समय संग्रामसिंह की मृत्यु हुई थी, उस समय लावा मेरे अधिकार मे था। उस समय अगर मैं चाहता तो इस लावा का कोई दूसरा अधिकारी नही हो सकता था। किसी मे सामर्थ न थी कि वह मुझसे लावा छीन सकता। लावा प्रदेश में जो सामन्त थे, वे मेरे कोई विरोधी न थे। मेरे संकेत पर वे लोग मेरे पक्ष का समर्थन करते। मैं इस बात को समझता हूँ। लेकिन उस समय मैंने इस प्रकार का विचार तक नही किया। उस समय बलपूर्वक मेरे अधिकारो को कोई नष्ट नही कर सकता था। लेकिन मैंने जयसिंह को ही प्रधानता दी और उसको लावा का सामन्त मैंने माना। उसका यह परिणाम मेरे सामने आया।

मानसिंह इस प्रकार की बाते बडी देर तक मुझसे करता रहा। मेरे कुछ न बोलने पर उसने कहा: जब आमाइत के ठाकुर ने राजधानी पर आक्रमण करने के लिये लावा की सीमा पर डङ्का बजाया था उस समय क्या मैं अपने अधिकारो के लिये कुछ कर नही सकता था। अगर लावा के सामन्त पर राणा पर और आपके ऊपर मेरा विश्वास न होता तो मैंने अपनी शक्ति के बल पर जैत-

मन अनाज पैदा हो सकता था—उन ब्राह्मणो से अब वापस भी नही ले सकता था। भूमि को वापस लेने से राणा को साठ हजार वर्ष नरक मे रहना पडता। ब्राह्मणो के इस स्वयं राणा और दूसरे सभी लोग विश्वास करते थे। जिनका इस पर विश्वास था, उन से इस विश्वास का दूर कर सकना बहुत कठिन मालूम होता था। इस दशा मे मेवाड-राज विस्तृत भूमि के उद्धार का प्रश्न बहुत कठिन जान पडता था।

यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि शक्तावत वंश के कुछ राजपूत परिवारो वश की वृद्धि के कारण, भूमि के अभाव मे ब्राह्मणो की उस भूमि पर अधिकार कर ि साठ हजार वर्ष तक नरक मे रहने का भय छोडकर उन परिवारो मे हिन्ता और दूँि ग्रामो को बसाया।

इस विषय मे सार्वजनिक हितो को सामने रखकर मैंने राणा से प्रस्ताव किया राणा आवश्यकता के अनुसार ब्राह्मणो को भूमि देकर बाकी समस्त भूमि पर अधिकार क उसे अपने राज्य मे मिला ले तो ऐसा करने से जो पाप होगा अथवा मरने के बाद जो दर उसका भोग करने के लिए मै तैयार हूँ। अगर ब्राह्मण मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार करे खेती करने के लिए एक हजार बीघा भूमि उसमे से दे दी जायगी और खेती करने के ल मजबूर होना पडेगा। ऐसा करने के लिए उनके सामने जो असुविधाये होगी, उनको दू लिए सहायता दी जायगी। उस भूमि मे खेती करने के लिए जो कुएं थे, वे काम मे न के कारण बेकार हो गये है, उनकी मरम्मत करा दी जायगी। नये कुएं भी खुदवाये जा यह विस्तृत उपजाऊ भूमि फिर पहले के समान काम की और उपजाऊ बन सके, इसके की तरफ से सब कुछ किया जायगा।

राणा से जब मैंने यह प्रस्ताव किया, उस समय राणा के दरबार मे एक ब्राह्मण भी बैठा था। वह वैद्य भी था। ब्राह्मण होने के कारण उसने मनियास के उन ब्राह्मण लिया, जिनके अधिकार मे मेवाड की यह विस्तृत भूमि थी और अत्यन्त उपजाऊ होने पर ब्राह्मणो के अधिकार मे होने के कारण वज्जर होकर बेकार हो गयी थी। उस ज्योतिष इस प्रस्ताव का विरोध किया और कहा कि उस पचास हजार बीघा भूमि का एक ब्राह्मणो से वापस नही लिया जा सकता। इसलिए कि उन्होने उस ग्राम को और उसकी को ताम्र पत्र मे लिखकर यहाँ के राणा से पायी थी। उस ज्योतिषी से जब उस ताम्र प के लिये कहा गया तो वह उस ताम्र पत्र को राणा के सामने उपस्थित नही कर सका।

राजा मान्धाता, जिसने मनियास के ब्राह्मणो को वह विस्तृत भूमि दे दी थी, प्र था और वह मध्य भारत का राजा था। धार और उज्जैनी उसकी राजधानियाँ थी। उस विक्रमादित्य से पहले का माना जाता है। विक्रमादित्य का सम्वत् सम्पूर्ण भारतवर्ष मे है। प्राचीनकाल मे चित्तौर और उसके समस्त प्रदेश धार राज्य मे शामिल थे। उन स मे प्रमार राजा का राज्य शामिल था, इसके बहुत से प्रमाण पाये जाते है।

हिन्ता और दूदा नामक स्थानो के साथ राजा मान्धाता के शासन का सम्बन्ध है। राजा मान्धाता ने दूँदिया नामक स्थान पर अश्वमेघ यज्ञ किया था। उस स्थान पर वह यज्ञ कुण्ड देखने को मिलता है। उस यज्ञ के कार्य मे हिन्ता के दो ऋषि शामिल हुए कार्य के बदले मे राजा मान्धता ने उनको बहुत-सा धन दिया। लेकिन उन दोनो ऋषियो धन को लेने से इनकार कर दिया।

मैंने इस बात को कभी नही पसन्द किया कि एक अयोग्य और अकर्मण्य आदमी को प्रोत्साहन दिया जाय। इसलिये मैं ध्यान पूर्वक मानसिंह की बातो को अन्त तक सुनता रहा। अपनी बातो को समाप्त करके ठाकुर मानसिंह ने न्याय का भार मेरे ऊपर छोड दिया। मैं जो सही समझूँ, करूँ। इसके लिये ठाकुर मानसिंह ने पूर्ण रूप से मुझे अधिकारी बना दिया।

मानसिंह ने जितनी भी बाते मुझसे कही, वे किसी को भी प्रभावित करने के लिये दलीलो से भरी हुई थी। मैं इस बात को मानता हूँ कि हो सकता है, मानसिंह ने बुद्धिमानी के साथ अपनी बातो को इस प्रकार मुझसे कहा हो। लेकिन अपने जीवन की जो घटनाये उसने बयान की, वे रोमाञ्चकारी हैं। इसमे किसी प्रकार का सन्देह नही किया जा सकता।

अब प्रश्न यह है कि मुझे मानसिंह से क्या कहना चाहिये और उसके मामले मे सही न्याय क्या हो सकता है। मैंने इस पर गम्भीरता के साथ विचार किया। साधारण तरीके से मानसिंह के इस मामले मे न तो लावा के जयसिंह से किसी प्रकार की आशा की जा सकती है और न राणा को ही आसानी से मानसिंह के पक्ष मे किया जा सकता है। इस परिस्थिति मे क्या होना चाहिये, यह मुझे एक गम्भीर समस्या मालूम हुई।

मैंने सोच विचार कर मानसिंह से कहा : आपके मामले मे मैं आपको अपराधी और उत्तर-दायी नही कहना चाहता। इसके साथ ही आपकी सहायता करने के लिये भी मैं आपको कोई वचन नही देता। लेकिन मैं आपके मामले मे राणा से कहूँगा। इसके लिये मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ और राणा से निराश होने का मैं कोई कारण नही समझता।

यह कहकर मैं क्षण-भर के लिये चुप हुआ। मेरी इन बातो को सुनकर मानसिंह का कुछ राहत-सी मिली। उसने मेरी तरफ देखा और उसको देखकर मैं उसके सम्बन्ध मे इस प्रकार का अनुमान लगा सका। इसी समय मैंने फिर उससे कहा : किसी काम के बिगड जाने पर एक बुद्धिमान मनुष्य बडी तरकीबो से काम लेता है और सफलता प्राप्त करता है। मैं चाहता हूँ कि अपनी सफलता के लिये आप भी बुद्धिमानी से काम ले।

इतना कह कर मैं फिर चुप हुआ। वह मेरी तरफ देख रहा था और ऐसा मालूम हो रहा था, मानो वह मुझसे कुछ आगे सुनने के लिये तैयार है। उसी समय मैंने फिर कहा : मैं आपको एक सलाह देता हूं। आप उसके अनुसार काम कीजिये। मैं उम्मीद करता हूँ कि आपको सफलता मिलेगी। आप इसी समय उस सीमा पर चले जाइये। जिसकी रक्षा का भार आपको दिया गया था। वहाँ पर एक ऐसा हत्या-काण्ड हो गया है, जिसका अफसोस राणा से लेकर सभी को है। वहाँ पहुँचकर आप उस हत्या-काण्ड के अपराधी को दण्ड दे अथवा उसे कैद करके राणा के सामने पेश करे। अगर इतना आप कर सके तो आपका सम्मान राणा के नेत्रो मे बढ जायगा और उस दशा मे आपकी सभी प्रार्थनाये आसानी से मन्जूर हो सकेगी।

यह कहकर मैने मानसिंह को एक अच्छी सी पिस्तौल दी और उसे मैंने सीमा पर जाने के लिये रवाना कर दिया।

छोटी सादडी की सीमा पर सेना के एक दल के साथ मानसिंह को पहले भेजा गया था और वहाँ की रक्षा का भार उसको सौंपा गया था। उस सीमा पर एक बहुत लम्बा चौडा और भयानक जङ्गल है। उससे मिला हुआ जो एक इलाका है, वह एक तरह के लुटेरो और अत्याचारियो के रहने का प्रदेश है। उस जङ्गली इलाके मे लुटेरे मीना और भील लोग रहा करते हैं। उनसे सीमा पर बसे हुये गाँव की रक्षा करने के लिये मेवाड़-राज्य की तरफ से कितने ही सामन्त नियुक्त हैं और इस

भीदर के सामन्त खुशियाल सिंह के साथ राजसिंह का वैवाहिक सम्बन्ध था। जब
सिंह ने राजसिंह पर मराठो के आक्रमण का सामाचार सुना तो खुशियाल सिंह अपने
वीरों की सेना को लेकर तुरन्त रवाना हुआ। उसके साथ केवल पाँच सौ राजपूत सैं
वे सभी शक्तावत वंशी थे। उनमे तीन चौथाई पैदल थे और एक चौथाई
सैनिक थे।

खुशियाल सिंह अपनी इस छोटी सी सेना को लेकर रात के समय रवाना हुआ।
मे मशाले लिये हुए लोग चल रहे थे, उनके जो लोग अपने हाथो मे प्रकाश लिए मशा
उनके दाहिने ओर बाये तरफ पैदल और सवार सैनिक चल रहे थे। खुशियाल सिह स
था। अपनी सेना को आदेश देते हुये खुशियाल सिंह ने कहा, जो सैनिक अपने पंक्ति क
चलेगा, उसको बन्दूक से मार दिया जायगा।

खुशियाल सिंह की यह छोटी-सी सेना हजारो मराठा सेना पर आक्रमण कर
बडे साहस के साथ चली जा रही थी। दूर आगे जाने पर मराठा सेना मिल गय
चारो ओर से खुशियाल सिंह की सेना को घेर लिया। परन्तु खुशियाल सिंह की
दस हजार मराठो की सेना के द्वारा घेरे जाने पर कुछ भी भयभीत नही हुई और
मराठो के घेरे मे आ जाने के बाद भी भीदर और हिन्ता के बीच के विस्तृत मैदान
हिन्ता के सामने पहुँच गयी। उस समय मराठो ने यह देखकर कि राजपूतों की यह छोट
हमारे हाथ से निकली जा रही है तो उन लोगों ने सक्तावत लोगो पर भालो की झा
कर दी।

यह देखकर खुशियाल सिंह अपने पैदल और सवार सैनिको को युद्ध के लिये
किया। उसी समय उनके समस्त सैनिक एक साथ मराठो पर टूटे पड़े और उन्होंने शत्रु
भयंकर युद्ध आरम्भ कर किया। इससे मराठो की विशाल सेना पीछे की तरफ हट गयी।
सिंह ने अपने सैनिको को अपनी भाषा मे आदेश दिया, जिससे वे तेजी के साथ हिन्ता
फाटक पर पहुँच गये। साद्री का सामन्त राजसिंह पहले से ही अपने अश्वारोही सैनिको के
पर मौजूद था। वह खुशियाल सिंह से वही प्रसन्नता के साथ मिला।

खुशियाल सिंह ने कुछ समय तक राजसिंह के साथ कुछ परामर्श किया। उनको
था कि मराठा सेना अभी यहाँ आकर हम लोगो पर आक्रमण करेगी, उस समय हम
इस दुर्ग मे आश्रय लेना पडेगा और अधिक दिनो तक हम दुर्ग मे लोगो के खाने
व्यवस्था न हो सकेगी इसलिए मजबूर होकर हमे आत्म समर्पण करना पड़ेगा। इस
सम्बन्ध मे परामर्श होने के बाद राजपूत सैनिक वहाँ से रवाना हुये और मराठो के द्वारा
क्षति की परवाह न करके वे लोग भीदर मे पहुँच गये।

खुशियाल सिंह ने जिस साहस और बहादुरी के साथ दस हजार मराठो के मु
सफलता प्राप्त की और वहाँ से चलकर वह अपने सैनिको के साथ भीदर मे आ गया, उ
शक्तावत लोगो मे बहुत दिनो तक होती रही। उस वश के लोगो मे अपने पूर्वजो की इ
की कथाये अब तक कही जाती है और उनको सुनकर लोगो मे प्रोत्साहन पैदा होता है।

३१ जनवरी को हम सब लोग मेवाड-राज्य की सीमा पर पहुँच गये। यहाँ की
बहुत उपजाऊ थी। मैने वहाँ पहुँच कर जब सुना कि राजपूतो की इस भूमि पर
मराठो और पठानो का अधिकार है तो मुझे बहुत दुख हुआ। मै उसी समय सोचने
जिनके पूर्वज इतने साहसी और शूरवीर थे कि उनके सामने युद्ध मे आने के लिये कोई

—उस राठौर राजपूत को कालाकोट के सामन्त की बातो से सन्तोष नही मिला। वह अपने लड़के की मृत्यु का बदला लेना चाहता था। यह घटना उस सीमा पर घट चुकी थी। ऐसे मौके पर मैंने मानसिंह को वहाँ रवाना किया था। हमे उम्मीद थी कि मानसिंह को वहाँ पर हत्याकारी को पकड़ने अथवा उसको दण्ड देने मे सफलता मिलेगी।

जिस समय मुझसे विदा होकर मानसिंह रवाना हुआ, ठीक उसी समय समाचार मिला कि छोटी साद्री की सीमा पर जो हत्या-काण्ड हुआ था और जिसने वह काण्ड किया था, उसको सजा मिल गयी। समाचार से मालूम हुआ कि राठौर राजपूत के विलाप को सुनकर कालाकोट का सामन्त बहुत दुखी हुआ और उसने अपने अनुचर को बुलाकर उसको दण्ड देने के लिये कहा। उसके अनुचर ने भयभीत होकर उत्तर दिया। मैं इसका अपराधी नही हूँ। इसके लिये मैं मन्दिर के सामने जाकर शपथ पूर्वक कह सकता हूँ।

सामन्त ने उसकी बात को मान लिया। वह मन्दिर के सामने शपथ लेने के लिये भेजा गया। मन्दिर के सामने पहुँचते ही उसकी मृत्यु हो गयी। यह देखकर सभी ने कहा कि उसके पापो का बदला भगवान ने उसको दिया। उस समाचार मे यह भी सुनने को मिला कि उस हत्या काण्ड मे जो लोग शामिल थे, राठौर राजपूत के सन्तोष के लिये और इसलिये कि जिससे भविष्य मे इस प्रकार के काण्ड न हो, कालाकोट के सामन्त ने सबको जान से मरवा डाला।

१ फरवरी—आज शनिवार को हम लोग मोरवन अथवा मरवन नामक स्थान पर पहुँच गये। लावा के सामन्त के साथ ठाकुर मानसिंह का जो विवाद चल रहा था, उसके लिये कल शुक्रवार का दिन मुझे पूरा खर्च करना पड़ा। कुछ और स्थान भी राणा के खास अधिकार से निकल गये थे। इसलिये उनके सम्बन्ध मे भी मुझे बहुत-सी बातो का पता लगाना था। इसलिये मुझे इस स्थान पर आकर रुकना पड़ा।

मोरवन को लोग मरवन भी कहते हैं। पहले यह नगर सभी प्रकार सम्मानजनक था और आस-पास के प्रदेशो मे इसकी बडी ख्याति मिली थी। इसकी वार्षिक आमदनी सात हजार रुपये थी। यह नगर बहुत सुन्दर और रमणीक है। यहाँ के ऊँचे शिखर पर वह बसा हुआ है। इसके पश्चिम तरफ एक बहुत बडा सरोवर है। वह देखने मे बहुत अच्छा मालूम होता है। उसके किनारो पर इमली के बहुत पुराने पेड खडे हैं। यहाँ की जमीन बहुत उपजाऊ है। इस जमीन पर जो खेती होती है, उनको इसी सरोवर के जल से सीचा जाता है। इस प्रकार के सुभीते होने पर भी यहाँ आदमियो की बहुत कमी हो गयी है। विध्वस होने के बाद इस नगर के आदमी अपने घरो को छोडकर इधर-उधर भाग गये हैं और उनके चले जाने से यह नगर उजाड हो रहा है।

इस मोरवन नगर पर आक्रमण करके पठानो ने जिस प्रकार नष्ट किया है, उसको मैंने अपने नेत्रो से देखा और आक्रमण से होने वाली बरबादी की बातो को सुनकर मुझे बहुत अफसोस हुआ। युद्ध के दण्ड मे जो प्रदेश राणा को देने पडे थे और शत्रुओ ने जिस नगरो पर अधिकार कर लिया है, उनमे मोरवन भी एक है। दूसरे नगरो और ग्रामो के साथ-साथ यह नगर भी मराठो के अधिकार मे चला गया था। धन के लोभी मराठो ने इस नगर पर भयानक अत्याचार किये थे और इसके निवासियो का सर्वस्व छीनकर क्रूर हृदय मराठो ने अपने धन की प्यास बुझाई थी।

मोरवन ठहरकर और उनकी इन बातो को सुनकर मैं एक प्रकार की पीड़ा का अनुभव करता रहा। जिसने इन नगरो मे होने वाले मराठो के अत्याचारो को न देखा है और न सुना है, वे इस

वह मेवाड के विद्रोह के बाद 'सन्' १८१८ ईसवी तक अपने अधिकारियो की रक्षा कर
इसी वर्ष अंगरेजी सरकार के साथ मेवाड राज्य की संधि हुई थी।

अंगरेजो के साथ मेवाड की इस संधि हो जाने के बाद जब उस राज्य मे सामन्त
प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए गये थे, उनमे बख्त सिह भी था। बूढे बख्त सिह
पोते अर्जुन सिंह को जिस प्रकार मेरे पास भेजने की व्यवस्था की थी, ठीक उसी तरह
सामन्त ने हमारे पास बरोत सिह को भेजना आरम्भ कर दिया था। उन दिनों में अर्जुन
बरोत दोनो की अवस्थाये लगभग बराबर थी। लेकिन बरोत सिंह के शरीर को देखकर
बड़ा मालूम होता था। अर्जुन सिंह का शरीर दुबला-पतला था और उसका रंग सावला
वह बुद्धिमान था

बरोत सिंह शारीरिक शक्ति मे अर्जुन सिंह से जितना ही अच्छा था, अर्जुन
और बुद्धिमत्ता में बरोत सिह से उतना ही अच्छा समझा जाता था,। बख्त सिह का पोत
आना एक उद्देश्य लेकर आता था। उस सम्बन्ध मे बख्तसिह ने मुझसे एक बार अपन
पर हाथ रखकर कहा था. राजपूत लोग अपने धर्म और अपनी तलवार को कभी नही भू
इन्ही दोनों ने अब तक मेरे अधिकारो की रक्षा की है। अपने जीवन मे जहाँ तक हो स
अपने कर्त्तव्यो का पालन किया है। मेरे सामने अब यह बालक अर्जुन सिह है। उसको
और राणा की सुपुर्दगी मे छोडता हूँ। आप दोनो जैसा चाहे करे। इस मौके पर
सम्बन्ध मे एक बात कहना चाहता हूँ। राणा का न्याय धन के द्वारा खरीदा जाता है।
किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता पर पद और सम्मान नही मिलता।

बूढे बख्तसिह की प्रार्थना को सुना। बख्तसिह और बरोतसिह के अधिकारो
था और राणा ने सालुम्ब्रा के सामन्त बरोतसिह के पक्ष का समर्थन किया था। लेकिन
दोनो का निर्णय राणा ने मेरे ऊपर छोड दिया। मैने दोनो को अपने पास बुलाया औ
पूछ-पूछकर मैने उनकी वशावलिया तैयार की। उन दोनो वशावलियो को मैने राणा
रखा। राणा ने तीन वर्ष पहले शासन की सनद अर्जुन सिंह को दी थी। इस
उसने उसी का समर्थन किया और उसे अधिकारी बनाकर उसकी कमर मे तलवार बांध
मस्तक पर तिलक लगा दिया।

अर्जुन का बाबा बख्तसिह जिहाजपुर के दुर्ग की रक्षा के लिये अधिकारी बन
गया था। वह दुर्ग राज्य की सीमा पर है। बख्तसिह ने वहाँ पर बुद्धिमानी और
साथ अपने कर्त्तव्यो का पालन किया। उस दुर्ग पर अर्जुन सिह भी मौजूद था और बा
के वहाँ से चले आने पर अर्जुन सिंह उसके स्थान पर अधिकारी बनकर दुर्ग की
करता था।

अर्जुन की योग्यता को मै समझता था। जिस प्रकार मैने बहुत से दूसरे रा
अफीम का सेवन करने से रोका था, उसी प्रकार मैंने अर्जुन सिह को भी समझाने की क
थी कि अफीम के सेवन से शरीर और बुद्धि को किस प्रकार नुकसान पहुँचता है। मेरी
प्रभावित होकर अर्जुन सिंह ने भविष्य मे अफीम का सेवन न करने की प्रतिज्ञा की थी।
के बाद अर्जुनसिह जब मुझे मिला तो मैने पूछा, क्या आप अफीम का सेवन करते है ?

मेरे प्रश्न को सुनकर अर्जुन सिंह ने मेरी तरफ देखा और उसने उत्तर देते हु
आपने जिस बात का निषेध किया था और आपकी बातो को मानकर मैने जो प्रतिज्ञा
उसको मै कैसे भूल सकता था ?

था। मोरवन में अब भी तीन मन्दिर मौजूद हैं। उनमे एक मन्दिर मे शेषनाग की मूर्ति है। लोगो की धारणा है कि उस शेषनाग के एक हजार सिर है और उसी के उन सिरो पर पृथ्वी रुकी हुई है। पहले शेषनाग पर लोग कुम्कुम चढाया करते थे। लेकिन अब कुम्कुम के स्थान पर मूर्ति पर चन्दन घिसकर लगाया जाता है।

मोरवन के दक्षिण-पश्चिम तरफ पांच मील की दूरी पर उनेर नामक एक ग्राम है। उस ग्राम मे एक शिला लेख है। जब मैंने यह सुना तो मैंने अपने यती गुरू को वहाँ भेजा और उस शिलालेख की नकल मंगायी। उस शिलालेख की नकल आने पर मालूम हुआ कि कालीन और उनेर नामक ग्राम ब्राह्मणो को दे दिये गये थे। राणा सग्रामसिंह ने सन् १५१४ ईसवी मे उस ग्राम मे जो मन्दिर बनवाया था, उसका नाम चतुर्भुज देवी का मन्दिर रखा गया था। उसी मन्दिर मे वह शिलालेख रखा हुआ है, उस शिलालेख पर राणा जगतसिंह ने इतना और लिखवा दिया था कि इन ब्रह्मोत्तर ग्रामो के साथ कभी कोई हस्तक्षेप न करे। इसके साथ राणा जगतसिंह का नाम भी उसमे खोदकर लिखा गया। सम्वत् १४६१ मे राणा जगतसिंह की तरफ से उस पर यह लिखा गया था। उस मन्दिर मे पत्थर का एक स्तम्भ लगा हुआ है। उस स्तम्भ पर ग्राम की पञ्चायत की तरह से लिखकर यह आदेश दिया गया है कि वर्ष की प्रत्येक फसल के कटने पर और अनाज के तैयार होने पर हर एक किसान को अपने प्रत्येक खेत से ढाई सेर अनाज इस मन्दिर के देवता के नाम देना चाहिए। ये पंक्तियाँ उस स्तम्भ मे खोद गयी हैं।

सन् १७२९ ईसवी मे मेवाड के युद्ध के दिनो मे ग्राम पञ्चायत की तरफ से उस स्तम्भ पर ये पंक्तियाँ खोदी गयी थी ऐसा मालूम होता है। सम्वत् १५७४ ईसवी मे उस ग्राम मे एक जैन मन्दिर बना था, जो चतुर्भुज देवी के मन्दिर के ठीक सामने है। जिस स्थान पर वह मन्दिर बना है, वहाँ की जमीन खोदने से समय पारसनाथ की एक मूर्ति निकली थी, ऐसा कहा जाता है और उस मन्दिर मे उसी मूर्ति की स्थापना हुई। इस ग्राम के बहुत से स्थानो मे प्राचीन काल के सस्मरण पाये जाते हैं।

२ फरवरी—आज की एक घटना हमे बडी मनोरञ्जक मालूम हुई। भोजन करने के बाद विलायती मदिरा पीने के हम अभ्यासी है। जिस समय आज हम भोजन करने बैठे। उस समय हमे कुछ दूरी पर जोर से चिल्लाने की आवाज सुनायी पडी। उसको सुनकर हम चौंक पडे और खडे होकर हम सोचने लगे कि यह कौन चिल्ला रहा है। मैं उस चिल्लाने वाले के सम्बन्ध मे जानना चाहता था। उसी समय दो आदमी और एक बालक सिर पर दूध के घडे लिये हुये मेरे सामने आये और उन्होने मेरा संशय दूर किया। वे लोग रोजाना दूध एकत्रित करने के लिये दूर-दूर के ग्रामो मे जाया करते थे। उस दिन बालक के साथ के आदमी आगे निकल गये और वह बालक पीछे रह गया, वह बालक एक साथ चिल्ला उठा : "मामा, मुझे छोड दो। मैं तुम्हारा भाञ्जा हूँ। मामा, मामा, मुझे छोड दो।'

इस प्रकार कहकर वह बालक चिल्ला रहा था। उस बालक के साथ के आदमी कुछ दूर आगे निकल गये थे। मालूम नही कि उन लोगो ने उस बालक का चिल्लाना सुना अथवा नही। इसके बाद साथ के आदमी पीछे की तरफ लौटे और आगे जाकर उन्होने देखा कि जङ्गल का एक बाघ उस बालक के अङ्गरखे को पकडकर खीच रहा है। यह देखकर उन दोनो आदमियो ने लोहे से मढी हुई एक लकड़ी से उस बाघ को मारना आरम्भ किया। बालक के चिल्लाने की आवाज उस ग्राम के रहने वालों तक पहुँच गयी थी। इसलिये वे सबके सब अपने हाथो मे अस्त्र-शस्त्र लिये हुये वहाँ पर आ गये।

शक्तावतो से हिन्ता छीन लेने का निर्णय राणा के वहाँ किया गया। इस पर हिन्ता के विरोध किया और उसने अपने अधिकार का समर्थन करते हुए कहा: हिन्ता पर विगत आ से हमारा अधिकार चला रहा है।

इस परिस्थिति मे हिन्ता के छीन लेने का प्रस्ताव साधारण न था। इसलिए उ मे सभी प्रकार की बाते बडी उत्तेजना के साथ होती रही। उस अवसर को तमाम बात के बाद साफ-साफ यह जाहिर हो रहा था कि शक्तावत शाखा के प्रधान भीदर के सामन्त सिंह को अपनी अच्छी आमदनी के दस नगरो को छोड देने के बाद भी उतना अफसो जितना कि वह हिन्ता के सम्बन्ध मे अनुभव कर रहा था। उसके सगे भाई फतेहसिंह ने के बहुत-वीरो के बलिदानो के बाद जिन उपजाऊ गाँवो पर अधिकार प्राप्त किया है; सामन्त छोडने के लिए तैयार हो सकता है। परन्तु हिन्ता का अधिकार छोडने के लिए प्रकार तैयार नही है। ऐसा जाहिर हुआ।

हिन्ता के सम्बन्ध मे राणा के यहाँ जो प्रस्ताव किया गया था, उसको जब उसके सामने रखा गया तो शक्तावत शाखा के प्रधान विरोध करते हुए कहा : हिन्ता भीद का प्रवेश द्वार है। उसके भाई फतेहसिंह ने कहा : बहुत दिनो से हिन्ता पर शक्तावतो चला आ रहा। इसके बाद सामन्त के एक अन्य मनुष्य ने कहा हिन्ता पर राणा कार न्याय के बल पर नही हो सकता। इसके बाद शक्तावत वंश के अनेक लोगो ने कारो का समर्थन करते हुए · हिन्ता हमारा प्रपोता है। उसकी भूमि हमारे भूमि है।

हिन्ता का सामन्त वहाँ की सात हजार रूपये की आमदनी से चौदह अश्वारोही पैदल सैनिक रख सकता है और आवश्कता पडने पर वह अपने इन सैनिको को ले कर यहाँ उपस्थित होता है। इधर कुछ दिन से हिन्ता की आमदनी पहले से कम हो रही थी अब उस सामान्त को पाँच अश्वरोही और आठ पैदल सैनिक रखने का अधिकार है।

हिन्ता का वर्तमान सामन्त कून के सामान्त का लडका है। इसके पहले हिन्ता का था, उसने इसको गोद लिया था। राजस्थान के नियमो के अनुसार गोद लिया जाने वा अपने पिता की सम्पत्ति और रियासत का अधिकारी नही होता है परन्तु हिन्ता का वर्तमा दोनो प्रदेशो पर अधिकार रखता है। हिन्ता का सामन्त होने के कारण वह कून का ती का सामान्त माना जाता था। और तीसरी श्रेणी के सामान्त को राणा के यहाँ रोजाना प्रणाली है। देश मे अथवा बाहर कही भी आवश्यकता पढने पर हिन्ता के सामान्त सैनिको के साथ जाकर राणा के आदेश का पालन करना पडता है।

हिन्ता के सामन्त के यहाँ जो सैनिक इस समय है, मानसिंह सामन्त उसका प्रधान भीलो से मालवा की सीमा पर कोई अत्याचार न हो सके इसकी रक्षा के लिए मानसिंह की गयी थी। परन्तु मानसिंह ने उसके सम्बन्ध मे अपने कर्त्तव्यो का पालन नही किया। मे राणा ने उसको सदेश भेजा कि अगर तुमने भविष्य मे भी ऐसा ही किया, तो हिन्ता कर राणा अपने अधिकार मे कर लेगा।

राणा और उसके सामन्तो मे किसी प्रकार का विवाद पैदा होने पर दोनो पक्षो के सुनने का प्राय: मुझे मौका मिलता है। मानसिंह ने कर्त्तव्यो का पालन क्यो न उसका भी कारण है। उसे सक्षेप मे नीचे लिखा गया है :

पालोद के मन्दिर मे पूजा करने के लिये आया।" लेकिन जो लिपि चित्तौर में मेरे पास आयी, उसमें लिखा है : सदराज के निकाल देने पर कुमार पाल ने चित्तौर में आकर आश्रय लिया। उस समय चौहान पृथ्वीराज का बहनोई राणा समरसिंह चित्तौर का राजा था। उसके यहाँ कुमार पाल मन्त्री के पद पर नियुक्त होकर रहने लगा।

७ फरवरी को निकुम्भा नामक स्थान से रवाना होकर हम लोग ८ फरवरी को मुरला नामक स्थान पर पहुँच गये। मुरला एक प्रसिद्ध ग्राम है। यहाँ पर कूचौलिया जाति के कारण लोग भाट वंशी हैं। परन्तु अब वे लोग व्यावसायिक कार्य करने लगे हैं। राजस्थान मे ये लोग पूज्यनीय माने जाते है और इसीलिये यहाँ के रहने वाले सभी लोग उनके प्रति सदा अपनी भक्ति प्रकट करते हैं। इन लोगो के अन्याय और अत्याचार करने पर भी उनके विरुद्ध कोई हस्तक्षेप नही कर सकता। इन चारण लोगो के साथ यहाँ के सभी दूसरे लोगो का यह व्यवहार बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है। हिन्दुओ के पुराने ग्रन्थो मे लिखा हुआ है कि चारण लोगो को अप्रसन्न करने से मनुष्य को सैकड़ो हजारो वर्ष तक नरक मे रहकर भयानक कष्टो का भोग करना पड़ता है। इस डर से कोई कभी इनको अप्रसन्न करने का साहस नही कर सकता।

चोर, लुटेरे और बदमाश लोग भी नरक के भय से इन चारण लोगो के विरुद्ध कोई कार्य और व्यवहार नही करते। चारण लोग आम तौर से व्यवसायियो के माल की रक्षा करने का काम करते हैं और उसके बदले वे लोग व्यवसायी लोगो से मनमानी रकम लेते हैं। वे लोग समझते हैं कि हम लोगो के सिवा व्यवसायियो के माल की रक्षा का कार्य दूसरा कोई नही कर सकता। उन चारण लोगो मे आपसी सङ्गठन और मेल भी रहता हैं। जिस माल के साथ चारण लोग रक्षक बन जाते हैं, वह माल मार्ग मे कही लूटा नही जाता। इसलिये समस्त राजस्थान में व्यवसाय का माल चारण लोगो के सरक्षण मे चलता है। इस जाति के बहुत से लोग स्वयं व्यवसाय करते हैं। क्योंकि उनके द्वारा जो व्यवसाय होता है, उस पर राज्य की तरफ से कोई कर नही वसूल किया जाता।

मुरला के रहने वाले पुरुषो और वहाँ की स्त्रियो का एक दल हम लोगो का स्वागत-सत्कार के लिये आया। उस दल के आगे बाजा बजाने वाले पुरुष चल रहे थे। उनके पीछे नृत्य करती हुई स्त्रियो की एक अच्छी सख्या थी। उन स्त्रियो ने घेर कर मुझे एक कैदी बना लिया। उस समय उनका दृश्य बहुत मनोहर मालूम हो रहा था। उस दल मे जो लोग आये थे, वे अपने सिर पर पगड़ी बाँधे थे और उनकी उन पगडियो पर फूलो की मालाये थी। स्त्रियाँ कुरता और घांघरा पहने थी। उनके शरीर मे बहुत से आभूषण थे, उन स्त्रियो ने जिस प्रकार मुझे बन्दी बनाया था, उसे देखकर मालूम होता था कि वे मुझसे कुछ पुरस्कार चाहती है।

बहुत पहले कभी मेवाड का कोई राणा इस मुरला मे आया था। उस समय भी यहाँ की स्त्रियो ने इस प्रकार अपने राणा को घेर कर बन्दी किया था। उस समय राणा ने इन स्त्रियो को भोजन देकर छुटकारा पाया था। मेरे सम्बन्ध मे उन स्त्रियो को कुछ अनुभव न था। मेरे अप्रसन्न होने के भय से उन्होने मुझे अधिक समय तक कैदी बनाकर नही रखा और कुछ सोच-समझ कर उन्होने मुझे छोड दिया। इसके बाद मैंने उनको पुरस्कार मे कुछ रुपये दिये।

राणा हमीर के शासन काल मे गुजरात के चारण वंश के लोग राणा के साथ वहाँ आये थे। उसके बाद लगभग पांच सौ वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन इन चारण लोगो के आचार-व्यवहार और पहनावे मे किसी प्रकार का अन्तर नही पडा। इनकी ये सभी बाते भारत के अन्य लोगो से प्रतिकूल

और कोई रियासत न थी। चन्द्रभानु के उन खेतो के पास राणा का एक जङ्गल था। उ
मे मेवाड़ का राणा शिकार करने के लिये जाया करता था।

सरदी के दिनो मे सायकाल चन्द्रभानु अपने खेतो से बैलो को लेकर घर की
रहा था। उसी समय उसे मालूम हुआ कि पीछे की तरफ जगल से किसी आदमी के
आवाज आ रही है दूँदिया चन्द्रभानु अपने स्थान पर रुक गया। उसने पीछे की तरफ
देखा और जिधर से आवाज आ रही थी, उसी तरफ वह चलता हुआ। राणा को
पहुँच कर उसने देखा कि वहाँ पर एक अपरिचित आदमी ने दूँदिया चन्द्रभानु से पूछा :
लोग हो ?

अपरिचित आदमी के मुख से इस प्रश्न को सुनकर चन्द्रभानु ने स्वाभिमान के
दिया : हम राजपूत हैं।

उसके इस उत्तर को सुनकर अपरिचित आदमी ने नम्रतापूर्वक कहा : मैं बहुत
तुम किसी प्रकार थोडा-सा जल लाकर मुझे पिलाओ।

चन्द्रभानु ने उस अपरिचित आदमी की तरफ देखा और एक प्यासे मनुष्य
पिलाने के लिए वह तुरन्त तैयार हो गया। चन्द्रभानु ने सम्पूर्ण दिन अपने खेतो पर
था, वह बहुत थका हुआ था। लेकिन ऐसी दशा मे भी किसी भूखे और प्यासे को देख
सहायता करना वह अपना कर्त्तव्य समझता था। चन्द्रभानु ने अपने दोनो बैलो को
डाली मे बाँध दिया और एक लोटा शीतल जल लाकर उसने उस अपरिचित आदमी के
दिया। उसी समय उसने अपने मैले वस्त्रो मे से मक्का और चने की बनी हुई दो रोटिय
उन पर उसने थोडा सा घी रखा और सहज स्वभाव से उसने उस प्यासे आदमी
दे दिया।

अपरिचित व्यक्ति थका होने के साथ-साथ भूखा और प्यासा भी था। उसने उ
को खाकर ठडा पानी पिया। जब वह आदमी रोटियाँ खाकर पानी पी चुका तो चन
बैलो को लेकर और उसको नमस्ते करके अपने घर की तरफ चला। उसी समय उसे
को लेकर और उसको नमस्ते करके अपने घर की तरफ चला। उसी समय
सामने अश्वारोही सैनिको का एक दल दिखायी पडा। वे लोग चन्द्रभानु की
रहे थे।

उन अश्वारोहियो को देखकर चन्द्रभानु अपने स्थान पर खडा हो गया। अश
अपरिचित आदमी के सामने जाकर खडे हो गये और उन लोगो ने उस आदमी के प्रति
सम्मान प्रकट किया, उसको देखकर चन्द्रभानु को मालूम हुआ कि जिसको मैने अपनी रो
कर ठडा पानी पिलाया है, वह कोई साधारण आदमी नही है।

चन्द्रभानु ने जिसको रोटी खिलाकर ठडा जल पिलाया था, वह मेवाड का राजा
था। राणा शिकार पर पहुँचा था, उस समय अधिक प्यास के कारण वह बडे सकट मे
था। उसी अवसर पर दूँदिया चद्रभानु ने जिस प्रकार ठडा जल राणा को पीने के लि
उसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। राणा के पूछने पर दूँदिया चन्द्राभानु ने अपना
हुये बडे स्वाभिमान के साथ कहा था, हम राजपूत हैं।

उस समय चन्द्रभानु के मनोभावो मे राजपूत होने का जो स्वाभिमान था उसे व
था। राजपूतो मे यह गुण स्वाभाविक रूप के देखा जाता है। वे कितने ही गरीब क

उनके जीवन में किसी प्रकार का अभाव नही मालूम होता। वे अच्छे वस्त्र पहनते हैं और स्त्री-पुरुष सभी आभूषणों का प्रयोग करते हैं। मेवाड-राज्य मे आने के बाद उन लोगो के वंश की वृद्धि हुई। इसलिये जो भूमि उसको दी गयी थी, उसका लगातार विभाजन हुआ। इस विभाजन के कारण उन लोगो मे आपसी झगडा पैदा हुआ। उस विद्रोह मे उन्होने स्वय एक दूसरे का नाश किया। जो चारण मारे गये उनकी स्त्रियाँ चिता मे बैठकर अपने-अपने पतियो के साथ सती हुई। सती होने के समय उन स्त्रियो ने कहा था कि इस जाति मे अब कोई खेती न करे, नही तो उसका नाश हो जायगा। उस समय से चारण लोगो ने खेती करना बन्द कर दिया।

वहाँ से चलकर हम लोग रानीखेडा मे पहुँचे। यह नगर बहुत बडा है और यहाँ की रानी द्वारा यह नगर बसाया गया था। उसी ने बहुत-से मन्दिर और कुएं बनवाये थे। लोगो के कहने से मालूम हुआ कि वहाँ के किसी मेहतर ने एक सुअर मार कर उस कुएँ मे डाल दिया था, जिसका जल लोग प्रयोग मे लाते थे। उस मेहतर ने अपने महाजन को परेशान करने के लिये ऐसा किया था। उस मेहतर को उसके इस अपराध का दण्ड दिया गया। उसका मुँह काला करके, उसके गले मे जूतियो का हार पहनाकर और गधे पर बिठाकर वहाँ से उसको निकाल दिया गया। इसके बाद उस कुएँ का जल सब निकाल डाला गया और उसकी सफाई करने के बाद उसमे गङ्गा जल छोड़ा गया और फिर एक भोज का आयोजन करके उसका जल शुद्ध किया गया।

हमने रानीखेडा को जाकर देखा। वहाँ के लोगो ने बहुत-सी चीजे मुझे दी। इसके बाद वहाँ के एक रईस खान से मेरी भेट हुई। वह मुझको अपने स्थान पर ले गया और मेरे साथ उसने अपना बहुत सम्मान प्रकट किया।

१३ फरवरी को मेवाड की पूर्वी सीमा के पठार नामक स्थान पर मैं पहुँचा। इस स्थान की ऊँचाई अरावली पहाड को अपेक्षा लगातार कम होती गई है। पठार के ऊपरी भाग पर खडे होने से बहुत दूर तक प्रकृति के रमणीक दृश्य दिखायी देते थे। वे दृश्य मुझे बहुत प्रिय मालूम हुये। उनको देखकर मेवाड राज्य की बहुत-सी ऐतिहासिक बातो को मैं सोचने लगा। जहाँ पर हम लोग खडे थे, उसके दक्षिण तरफ चित्तौर है। पश्चिम की तरफ मेवाड की नवीन राजधानी उदयपुर का मनोहर दृश्य दिखायी दे रहा था। उस ऊँचे स्थान के नीचे जावदा, जोरण, नीमच, निम्बेडा, खेरो रतनगढ इत्यादि दिखाई दे रहे थे। ये सभी स्थान अब मराठो के अधिकार मे हैं। पहाडो के ऊपर से कई एक नदियाँ निकलकर विभिन्न दिशाओं की ओर प्रवाहित हो रही थी। उनके किनारे के दृश्य देखने मे बडे मनोहर मालूम होते थे।

जिस ऊँचे स्थान पर मैं खडा था, वहाँ पर मैं सहसा सोचने लगा, मेवाड की राजधानी उदयपुर तक एक विशाल नहर तैयार करवाने से खेतो मे पैदा होने वाले अनाज की अधिक वृद्धि की जा सकती है। यदि ऐसा किया जा सके तो अकाल के दिनो मे इस राज्य के निवासियो को कभी भी अधिक कष्ट नही हो सकता।

इस विषय मे बडी देर तक सोचता रहा। लेकिन ऐसा करने के लिये मेरे अधिकार मे साधन ही क्या था ? इस विशाल नहर को तैयार करने के लिये धन की आवश्यकता है। वह धन कहाँ से आवेगा ? यदि राणा इस कार्य को अपने हाथ मे ले तो उस नहर के द्वारा उसका और उनकी प्रजा का बहुत उपकार हो सकता है। मेरी समझ मे नही आता कि मेवाड के राणा का ध्यान इन सब बातो की तरफ क्यो नही जाता।

पठार की समस्त भूमि बहुत उपजाऊ है। यहाँ की मिट्टी खेतो के लिये अधिक उपयोगी है।

उसके अप्रसन्न हो जाने का अन्देशा था। इसलिए वह सोचने लगा कि सरदार सिंह के इस
कैसे जाना जाय। बहुत कुछ सोचकर राजसिह ने सरदार सिह से कहा : आओ आज
जलाशय मे स्नान करने के समय जल क्रीणा करे।

सरदारसिह ने राजसिह के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। दोनो जलाश
और पानी मे खेलते हुए स्थान करने लगे। इसी मौके पर सरदारसिंह के सिर की पगड
जल मे गिर गयी। उस समय राजसिह ने सरदारसिह के सिर को देखा। उसकी चाँद
थे। इन बालो के न होने से मनुष्य गजा कहलाता है। इसी को छिपाने के लिए सरदार
के सामने अपनी पगडी खोलता नही था। बिना बालो के उसके सिर को देखकर राजसि
आ गयी और बिना किसी ख्याल के उसके मुख से निकल गया · आपके सिर के बाल क्या

राजसिह के इस प्रश्न को सुनकर सरदारसिह कुछ लज्जित हुआ। परन्तु उसने
के भावो को छिपाकर राजसिह को उत्तर दिया : पूर्व जन्म मे मैं आपका शिष्य था और
थे। बद्रीनाथ के ऊँचे शिखर पर जब आप तपस्या करते थे, उस समय आपके यज्ञ कुण
मै अपने सिर पर लकडी रखकर लाया करता था। लकडियाँ सिर पर बहुत दिनो त
लाने के कारण मेरे सिर के समस्त बाल नष्ट हो गये है।

सरदार सिह के इस उत्तर को सुनकर राणा को क्रोध आ गया। उसने सोचा
सिह आखिरकार हमारा सामन्त है। उसको ऐसी कोई बात कहने का अधिकार नही
हमारा अपमान होता हो। उसने सरदार सिह को उत्तर देते हुए कहा · सरदार तुमने
कहा है, उसका तुमको प्रमाण देना होगा। प्रमाण दे सकने पर तुमको दूसरा पुरस्का
और प्रमाण न दे सकने पर इसका दंड मिलेगा।

युवक सामन्त सरदार सिंह ने राजसिह की बात को स्वीकार कर लिया और उ
देते हुए उसने कहा · कोआरियो के मन्दिर का देवता इसका प्रमाण दे सकता है।

राजसिह ने भी इस बात को मजूर कर लिया और उस मदिर के देवता से प्रमा
लिए उसने सरदारसिंह को रवाना कर दिया। कोआरियो प्रदेश मे गोपालपुर नाम का
है, उस गाँव मे बागरावत नामक एक शाखा के लोग रहा करते है उन्ही लोगो का
एक मन्दिर है, सरदारसिह राजसिह के पास से रवाना होकर उस गाँव मे पहुँचा और उ
के देवता की उसने आराधना आरम्भ की।

उस मन्दिर का देवता जब प्रसन्न हुआ तो एकाएक सरदार के हाथ मे एक फूल
और उसी समय देववाणी हुई, उसमे सरदारसिंह को सुनायी पडा · तुम इस फूल को
और उसे राणा को दे दो। यह फूल ही तुम्हारी बात का प्रमाण है।

सामन्त सरदारसिह उस फूल को लेकर मन्दिर से चला गया और उसने राणा
उस फूल को देकर उसने देववाणी के द्वारा सुनी हुई बात को राणा से कहा। राणा ने
की बात पर विश्वास कर लिया और उसे यकीन हो गया कि पूर्व जन्म मे मैं योगी
सरदारसिह मेरा शिष्य था। उसने सरदारसिंह से पूछा : आप क्या पुरस्कार चाहते हैं ?

सामन्त ने उस पुरस्कार मे कोआरिओ से मिला हुआ लावा और उसकी सम्पूर्ण
माँग की। राणा उस समय बालक था। उसकी माता राज्य मे उसके नाम से शासन कर
उसने सरदारसिह का पुरस्कार देने की बात पहले ही स्वीकार कर ली थी। इसलिए वह
मे अपनी माता के पास गया और उसने उससे सब बाते कही। लावा और उसकी भूमि

लावा में किला और महल बनवाने के बाद सरदारसिंह बीस वर्ष तक जीवित रहा
१८३८ सन् १७८२ ईसवी में उसकी मृत्यु हो गयी। मरने के समय उसके एक लडका था
सिंह ने अपनी जिन्दगी में बहुत सम्मान प्राप्त किया था। लेकिन उसके मरने के बाद उस
को नष्ट होने मे देर न लगी। जो ख्याति उसने प्राप्त की थी, मरने के बाद वह उसे अपने
गया। सरदारसिह के सम्बन्ध मे लोगो की ऐसी धारणा है। शक्तावत संग्रामसिंह ने सामन्त
सिंह के लडके संग्रामसिंह को पराजित करके लावा पर अधिकार कर लिया था। इसका ऊ
किया जा चुका है। सरदारसिंह के मरने पर उसका लडका संग्रामसिंह अपने पिता के प्रदेश
कारी हुआ था। लेकिन अयोग्य और निर्बल होने के कारण जब वह संग्रामसिंह के द्वारा
निकाला गया, उस समय उसकी दशा एक अनाश्रित की सी थी। उसी दशा में उसकी
उसके एक लडका था, वह चन्द्रगुप्त का प्रपौत्र, सरदारसिंह का पौत्र और संग्रामसिंह का ल
उससे पूर्वजो की कोई सम्पत्ति उसके अधिकार मे न रह गयी थी। इसलिये वह मेवाड़ के
जवानसिंह के पास चला गया और उसकी सहायता मे रह कर वह अपनी जिन्दगी के दि
करने लगा।

शक्तावत सरदार सिंह को राणा से लावा के शासन की सनद मिली थी। उसक
आय तेईस हजार रुपये थी। उसकी सनद देकर राणा ने कोंआरिआ का अधिकार उससे
था। लावा का प्रदेश बहुत विस्तृत है। उसके विशाल तालाब से वहाँ की कई हजार एकड़
सीचने के लिये पानी मिलता है। मेवाड राज्य मे जितने भी प्रदेश हैं, लावा उनमें दूसरी
माना जाता है।

संग्रामसिंह का परिवार शिवगढ के दुर्ग मे मारा गया था। उसमे उसके लड़को क
गया था। इसलिये उसके मरने के बाद उसके भाई शिवसिंह का लड़का जयसिंह को लावा
का अधिकार दिया गया। संग्रामसिंह की जिन्दगी मे उसकी सम्पत्ति का कोई दूसरा अधि
हो सका था। नाहरसिह, संग्रामसिंह के छोटे भाई सुरतानसिंह का लडका था और मा
वह पिता था। नाहरसिंह के कई युद्धो मे संग्रामसिंह को साथ लेकर युद्ध किया था।
अपने अधिकारो के लिये सदा वञ्चित रहा था।

नाहरसिंह तेजस्वी और शूरवीर था। उसने बनबल नामक स्थान पर अधिकार
था। बनबल पहले राणा के खास अधिकारो मे था। सन् १८१८ ईसवी मे वह खालसा
था। नाहरसिंह के लडके मानसिंह ने जयसिंह से इस बात की प्रार्थना की थी कि लावा
मुझे भी अधिकार मिलना चाहिये। इसलिये कि मैं संग्राम के छोटे भाई का लड़का हूँ। इ
अपने इस अधिकार से किसी भी अवस्था मे वञ्चित नही होना चाहिये।

जयसिंह ने मानसिंह की इस प्रार्थना को सुना। लेकिन कुछ दिनो तक उसने उस
न दिया। जयसिंह इस बात को समझता था कि मानसिंह की माँग सामाजिक नियमो
उचित और नैतिक है। इसलिये पन्द्रह सौ रुपये वार्षिक आय के जैतपुरा का अधिकार उ
सिंह के लडके मानसिंह को दे दिया। उसके साथ उसने जो उसकी सनद दी, उसमे उसने
कि मानसिंह को दी गई यह सनद उसी समय तक सुरक्षित रहेगी, जब तक मानसिंह लावा
के प्रति अपने कर्त्तव्यो के पालन मे किसी प्रकार की त्रुटि न करेगा। उस सनद मे जयसिंह

"भाई मानसिंह को मैंने दान मे अपनी इच्छा से जैतपुरा नामक ग्राम और उस
भूमि दी। इसका अधिकार मानसिंह को और उसके वंशजो को बराबर रहेगा। मानसि

पुरा पर अधिकार कर लिया होता। लेकिन मैंने ऐसा नही किया। मैं आपका बहुत करता हूँ। इसीलिये जैतपुरा के छीने जाने के समय भी मैं खामोश बना रहा। अगर पर अधिकार करने के लिये आज्ञा दे दे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मै उस कर लूंगा और अगर मैं उस पर अधिकार न कर सकूं तो मै नाहर सिंह का लड़का नही पुरा का अधिकार पाने के बाद मैंने वहां पर एक छोटा-सा किला बनाया था। उस परिवार रहता था। लावा के सामन्त जयसिंह ने जैतपुरा पर अधिकार करके मेरे वहां के किले से निकाल दिया है और मेरे परिवार के लोग अन्यत्र आश्रय लेने के लिये गये हैं। इसकी जो पीढ़ा मेरे हृदय मे है, उसे मैं भूल नही सकता।

मैं अब भी मा सिंह की इन बातो को सुन रहा था। वह मुझे प्रभावित करने के कहने लगा : जैतपुरा से मेरे अधिकारो को छीनकर जो भूमि मुझे दी गयी है, वह नही है। उस जङ्गली भूमि को काम के योग्य बनाने के लिये मुझे पहले बहुत रुपये खर्च क इस भूमि को लेने के लिये मैने पहले से ही कोशिश कर ली थी और दो हजार पांच सौ मैंने इस भूमि का पट्टा लिखा लिया था। मैं समझता था कि इस भूमि से आमदनी हो तक मैं अपने परिवार का पालन जैतपुरा की आमदनी से करूंगा। पट्टा लिखाने के रुपये दिये थे, वे मेरे पास न थे। इसलिये महाजन से मैने वे रुपये सूद पर कर्ज लिये थे। मेरे अधिकार से निकल जाने के बाद कर्ज देने वाले महाजन ने अपने रुपये मुझसे वसूल कोशिश की और मेरे न दे सकने पर उसने मेरे समस्त मूल्यवान पदार्थों को लेकर जब उस उसके रुपये की आमदनी पूरी नही हो जाती तो उसने मेरी स्त्री के समस्त आभूषणों को मेरे घोड़े पर अधिकार कर लिया। मै जिस घोड़े पर बैठकर गङ्गापुर में आपके दर्शन करने उस घोडे को मुझे बेच डालना पड़ा और वे रुपये भी महाजन के कर्ज में चले गये। मैंने रोमाञ्चकारी अवस्था का वर्णन पृथ्वीनाथ से किया था। उसने उसे सुनकर मेरे साथ प्रकट की। मैं राणा के भाई जवानसिंह को लेकर पृथ्वीनाथ से मिला था। मुझसे पांच मांगे गये और मैंने उन रुपयो को देना मन्जूर कर लिया। इस शर्त पर कि मुझे उसमें मिल जाय।

मानसिंह अपनी बातों को बराबर मुझसे कहता रहा। मैं ध्यान से उसकी बातें सुन उसने आगे कहा : यह घटना उस समय की है, जब आपकी सहायता से मुझे सीमा की रक्षा दिया गया था। मैंने पांच सौ रुपये देने मन्जूर किये थे। लेकिन मेरे पास उतने रुपये न थे अधिक लावा के सामन्त के पास थे। इसलिये लावा के सामन्त ने एक हजार रुपये देकर अधिकार कर लिया। उस समय मैं बहुत दुखी हुआ और अपनी इस मानसिक वेदना के मैं उस सीमा पर अपने कर्त्तव्य का पालन नही कर सका। इस दशा मे पठानों ने स्थान के खेतो मे हमारा जो अनाज तैयार हुआ था, उसको लेकर ... ग्राम पर कर लिया। अब आप मेरी परिस्थितियों पर विचार कीजिये। अगर आप समझें कि मैंने किया है अथवा मेरी मांग मुनासिब नही है तो आपको अधिकार है, आप जो मुनासिब समझें दण्ड दे।

बहुत देर तक अपनी बाते सुनाने के बाद ठाकुर मानसिंह चुप हुआ। उसकी बातों देर तक मैंने सुना था और जब मैं सुन रहा था, उस समय भी मैं मौन रहा था कि मुझे, को क्या जवाब देना चाहिये। मैं चाहता था कि अनुचित व्यवहार किसी के साथ न किया

कार्य के लिये उन सामन्तों को राणा की तरफ से विस्तृत भूमि दी गयी है। उन सामन्त
यह है कि वे अत्याचारी मीना लोगो और भीलो से वहाँ के ग्रामो की रक्षा कर सके।

उन दिनों में सीमावर्ती स्थानो पर मीना लोगो और भीलो के द्वारा हमेशा अ
रहते थे और वे बडी तादाद में आकर राणा के वहाँ पर बसे हुये गांवो को लूटकर ले
लूट के समय वे लोग उन गांवो के आदमियो पर आक्रमण करके जान से मार डालते थे
चारो को रोकने के लिये राणा की तरफ से जो वहाँ पर सामन्त नियुक्त थे, वे उन अत
दमन न कर सके। उन सामन्तो ने इतना ही अपराध नही किया बल्कि उन लुटेरो क
देते थे और उन लोगो के द्वारा जो सम्पत्ति लूटी जाती थी, उसमे वे भी हिस्सा लेते थे।

जो सामन्त अपने कर्त्तव्यो के विरुद्ध इस प्रकार का अपराध करते थे, उनमे
सामन्त का विरुद्ध हाथ था। चम्पान नाम के जङ्गल की तरफ पहाडी स्थान के ऊपर बी
राठौर राजपूत रहा करता था। उसने वहाँ की भूमि को लेकर खेत की व्यवस्था की थी
पर कई एक कुएँ खुदवाये थे। वह राजपूत बडा परिश्रमी था और अपने परिश्रम से ही
मे अनाज पैदा करके अपने परिवार का पालन पोषण करता था।

एक दिन की बात है। अपने खेतो पर दिन-भर काम करने के बाद वह राजपू
जा रहा था। नजदीक पहुँचने पर उसने अपनी स्त्री के रोने की आवाज सुनी। वह तेजी
पहुँचा। उसको देखकर उसकी स्त्री रो उठी और आँसू पोछते हुये उसने कहा: जङ्गल
भीलो ने आकर हमारी कुटी को लूट लिया है। हमारे सब पशुओ को लेकर और हमारे
को एवम् उसके सरक्षक एक युवक योगी को बाँधकर वे लोग अपने साथ ले गये है।

अपनी स्त्री के मुख से इस बात को सुनते ही राठौर राजपूत के शरीर में मा
गयी। क्रोध मे आकर उसने अपनी बन्दूक मे गोली भरी और उसे लेकर वह कालाको
रवाना हुआ। वह जिस मार्ग से होकर जा रहा था, उसी में उसको अपने लड़के का क
मिला और उसके पास ही युवक योगी भी मरा हुआ था। पता लगाने के बाद उसे मा
कालाकोट के सामन्त के साथी भीलो ने ही यह हत्या काण्ड किया है। राजपूत को यह
मिला कि जिस समय भील लोग उसके लड़के को पकडकर वहाँ पर ले गये, उसी सम
कालाकोट के सामन्त के अनुचर को देखकर कहा। 'चाचा' इन भीलो से मेरी रक्षा कर
मे तुम जितने रुपये माँगोगे, हमारे पिता तुम्हें उतने रुपये देगे। लेकिन बालक के प्रा
कौन करता। जिस राक्षक को वह बालक चाचा कहकर अपनी रक्षा के लिये प्रार्थना क
उसी के द्वारा यह काण्ड हुआ था और रुपये के लिये ही उस लडके को वे लोग पकड़कर

इन बातो को सुनने के बाद राठौर राजपूत कालाकोट पहुँचा। जिसने यह हत्या
वाया था, कालाकोट के सामन्त का वह अनुचर वहाँ पर पहुँचते ही मिला। उसने राठौ
देखकर कहा: मैं इस काण्ड के सम्बन्ध मे कुछ नही जानता। लेकिन तुम्हारे जितने प
गये हैं, उनकी चौगुनी कीमत और जो तुम्हारा माल असबाब चला गया है, उसकी दो
मैं तुमको देने के लिये तैयार हूँ।

दुखी राठौर राजपूत ने उसको जवाब देते हुये कहा: मै अपना लड़का चाहता हूँ
की जरूरत नही है। इस रुपये को लेकर मैं जिन्दा रहना नही चाहता। जिसने मेरे लड़
का है, उसको मारकर मैं बदला लूँगा।

बात का अनुमान नही लगा सकते कि आक्रमणकारी इन मराठों के दिल कितने कठोर थे
हैं। यहाँ के राजपूतो की आपसी कमजोरो का लाभ इन मराठो ने खूब उठाया, लेकिन
दुरवस्थाओ को भोगकर भी यहाँ के राजपूत न तो अपनी कमजोरियो को दूर कर सके अ
वे अपना सङ्गठन कर सके। अगर एक बार भी ये राजपूत अपनी फूट को दूर करके
सकते तो इन मराठो की यह हस्ती न थी कि वे युद्ध में इन राजपूतो का सामना कर सकते
यह उनके सौभाग्य की बात है कि ये राजपूत लोग आज तक सङ्गठित नही हो सके।

आक्रमणकारियो ने केवल इस सम्पन्न नगर को लूटा ही नही है, बल्कि अपने अत
उसको इतना नष्ट कर दिया है कि अब यह नगर बिलकुल वीरान दिखाई देता है। f
किसानो के द्वारा बेशुमार अनाज पैदा होता था और जहाँ की खेती अपार सम्पत्ति उत्पन्न
वहाँ के खेत चारो तरफ बन्जर दिखाई देते हैं। उनको कोई अब जोतने और बोने वाला
रह गया। इसलिये जिन खेतो मे हजारो मन अनाज पैदा होता था, उनमे अब बहुत बड़ी-
दिखायी दती है और ढाक के पेड़ो का एक लम्बा-चौड़ा जङ्गल बन गया है।

कुछ भी हो, मोरबन इस राज्य का एक ऐतिहासिक स्थान है। मोरी जाति से
मोरबन हुआ है। चित्तौर को पराजित करने के पहले मोरी जाति इस स्थान पर रहा कर
पर एक टूटा-फूटा प्राचीन किला अब भी मौजूद है। चित्रांग प्रासाद इस किले का नाम
नगर की जब स्थापना नही थी, उन दिनो मे मोरी जाति के बहुत से लोग इसी किले मे
थे। इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण पाये जाते है।

चित्राग नाम का एक आदमी यहाँ के इस किले का स्वामी था और वह मोरी
था। उसका एक किसान जब अपना खेत जोत रहा था तो उसके हल के फल का स्पर्श कि
चीज के साथ हुआ। उस किसान ने अपने हल को रोक कर और उसके फल को मिट्
निकाल कर देखा। उसके हल का सम्पूर्ण फल जो लोहे का था, उस कठोर चीज को स्पर्श
सोने का हो गया था। जिस चीज को स्पर्श करके हल का फल सोना हो गया था,
किसान अपने स्वामी चित्रांग के पास गया और पत्थर की तरह उस कठोर चीज को
स्वामी के हाथ मे दे दिया।

चित्राग ने उसको हाथ मे लेकर देखा। वह पारस पत्थर था। चित्रांग ने उसकी
न जाने कितने लोहे को सोना बना डाला और उस सोने की अपार सम्पति को अपने अ
करके उसने मोरबन नगर मे बड़े-बड़े महल बनवाये और उस नगर को बडी उन्नति पर पहुँ
उसके बाद उसने चित्तौर की प्रतिष्ठा की। मोरबन के पश्चिम तरफ कालाकोट नामक
दिनो मे राजधानी थी। उसके ध्वसावशेष अब तक वहाँ पर देखे जाते हैं। कहा जाता
राजधानी का बहुत सा हिस्सा वही के किसी रहने वाले की भूल से आग लग जाने कारण
से जल गया था।

कालाकोट के सम्बन्ध मे एक जनश्रुति यह भी है कि वहाँ के वन मे एक ऋषि
रहा था। कुछ लोग उसको पकड़ कर और उसके सिर पर सूखी लकड़ियो का बोझ रखक
पूर्वक बाजार ले आये। उस ऋषि के क्रोध से उस बाजार मे आग लग गयी और उस
साथ कालाकोट भी जल गया।

इस प्रकार की जनश्रुतियो का कुछ आधार जरूर होना चाहिये, अनुमान से जाहि
कि उस स्थान पर भू गर्भ से कभी-कभी आग निकला करती थी। उसी की आग मे वह स

उस बालक के मामा का परिचय देने के लिये यहाँ पर नीचे की पंक्तियों का लिख है। बिना उनको पढे हुये यह नही मालूम हो सकता कि वह मामा कौन था, मोरबन के व वार नामक एक स्थान है। इन दोनो स्थानो के बीच मे काला पहाड नामक एक पहाडी उस शिखर पर एक बाघ रहता था। वह बाघ किसानो के पशुओ को खाकर अपनी भू करता था। लेकिन उसको कोई मार नही सका था। आज से दो दिन पहले उस बाघ के बैल को खा डाला था। इस प्रकार के नुकसान होने पर भी किसी ने उसको अभी तक था। जाहिरा तौर पर इसका कोई कारण समझ मे नही आता। लेकिन वहाँ के आदि विश्वास पैदा करा दिया गया था कि वह बाघ कभी किसी आदमी पर, आक्रमण नही कर करे भी तो अगर उस बाघ को मामा कहकर छोड़ने के लिये कहा जाय तो बाघ तुरन्त कर चला जायगा।

लोगो के इस विश्वास को मजबूत करने के लिये लोगो ने उदाहरण दिये थे कि अ के एक आदमी को इस बाघ ने पकड लिया था, लेकिन उस आदमी के, 'मामा मुझे छोड़ ही उसने छोड दिया। इस प्रकार के कितने ही उदाहरण सुनकर लोगों को विश्वास हो ग हमे इस बाघ से आदमियों को कोई खतरा नही है। कदाचित इसी विश्वास के कारण अ बाघ को किसी ने मारने की चेष्टा नही की थी। लेकिन जब उस बाघ ने उस बालक को और उसके "मामा मुझे छोड दो मैं तुम्हारा भाञ्जा हूँ।" कहने पर भी उसको न छोड़ा, ग्राम के निवासी दौड़े और उसे मार कर उस बालक की उन्होने रक्षा की।

४ फरवरी—अपने साथियो को देव मन्दिर से एक शिलालेख की नकल लाने पालोद भेजा था। उनके लौटने पर जो कुछ मालूम हुआ, वह इस प्रकार है : पालोद का एक सम्पत्तिशाली जैन का बनाया हुआ है। उस मन्दिर मे जैनी लोग अपने देवता की मू करना चाहते थे, जो कि स्वाभाविक है। लेकिन जब मन्दिर बन कर तैयार हो गया तो है कि जिस धनिक जैनी ने मन्दिर बनवाया था, उससे एक देवी ने कहा कि इस मन्दिर स्थापना करो। उस जैनी मे इतना साहस न था कि वह एक देवी का विरोध करके अप मन्दिर में स्थापना कर सके। लेकिन उसने हिम्मत करके उस देवी से कहा कि तुम्हारी के बाद मै इस मन्दिर के सामने किसी पशु का बलिदान नही होने दूंगा। इस पर देव समझाकर कहा कि इस विषय मे तुम चित्तौर से सोनगढ के पास जाओ। इसका निर्णय जायगा।

वह जैनी देवी के कहने के अनुसार वहाँ गया और फिर वहाँ से लौट कर उसने के पास पार्श्वनाथ का एक मदिर अलग से बनवाया। मैंने अपने जिस मित्र को उस मंदि लेख की नकल लाने के लिये भेजा था, उसने लौट कर इन बातो को मुझे बताया। वह लेख की नकल लाया था, उसको उसने पढकर मुझे सुनाया। उससे सोलङ्की राजवंश का चय मिलता है। इसके बाद चित्तौर से मुझे एक लिपि मिली उसका और पालोद के म हुई नकल मे लिखे हुये समय का दोनो का एक ही समय मालूम हुआ।

इन मिली हुई दोनो लिपियो से जाहिर हुआ कि सोलङ्की राजा ने किसी समय राजधानी को लेकर अपने अधिकार मे कर लिया था। पालोद के मन्दिर से शिलालेख मेरे पास आयी, उसमे केवल इतना ही लिखा है : "कुमार पाल सम्वत् १२०७ के पू

मालूम होती हैं। वे लोग किस प्रकार मेवाड में आये और उनके आने का कारण क्या था यहाँ पर संक्षेप में लिखना आवश्यक जान पडता है।

मेवाड़ के प्रसिद्ध राणा हमीर के एक हाथ पर कुछ थोडा सा कुष्ट रोग था, उस करने के लिये राणा हमीर हिंगलाज तीर्थ गया था। कच्छभुज की सीमा मे पहुँचकर चार के निवास स्थान के पास टाडा मे वह गया। राणा के घोडे से उतरते ही एक चारणी युव रसोई से निकलकर उसके पास आयी। उसको देखने पर राणा ने कहा : "हमारे साथ के समय भूखे हैं। आपने जो रसोई तैयार की है, उसके द्वारा हमारे साथ के लोगो को तृप्ति मि है।"

राणा की इस बात को सुनकर उस युवती ने उत्तर दिया : "मेरी रसोई मे जो भो है, उसे मैं देने के लिये तैयार हूँ।"

यह सुनकर राणा ने फिर कहा : "लेकिन आपकी रसोई के तैयार थोडे से भोजन इतने लोगो की भूख कैसे मिटेगी ?"

युवती ने उत्तर दिया : "हिंगलाज तीर्थ के प्रताप से मेरी रसोई का भोजन आप काफी है।"

इसके बाद अपने आदमियो के साथ बैठकर राणा ने उस युवती की रसोई का भोज सभी के पेट भर भोजन कर चुकने के बाद भी उसकी रसोई की कोई सामग्री कम नही मा राणा ने युवती के एक कुएँ का जल पिया, उससे उसको बहुत शान्ति मिली। इससे राणा के तीर्थ पर और भी अधिक विश्वास पैदा हुआ। उससे वहाँ के जल मे स्नान करने से का कुष्ट रोग जाता रहा। राणा हमीर जब वहाँ से लौटा तो अपने साथ वह उस चारण और उसके परिवार के लोगो को अपने साथ मेवाड ले आया और उन लोगो को रहने के मुरला नामक ग्राम दे दिया। राणा हमीर ने उस समय यह भी एक आदेश दिया कि इन लोगो से राज्य का कोई कर कभी वसूल न किया जायगा। इस प्रकार मेवाड मे चारण आना हुआ।

यह मुरला अब एक बहुत बडा ग्राम हो गया है और उसमे कई हजार की सख्या मे जाति के स्त्री पुरुष रहा करते है। ऊपर लिखा गया है कि सर्व साधारण मे चारण लोगो सम्मान था और उनके साथ चोर और लुटेरे भी किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार न क इसलिये सम्पूर्ण राजस्थान मे चारण लोग स्वतन्त्रता के साथ व्यवसाय करते हुये पाये जिन मार्गों मे चोरो और डाकुओ का भय रहता है, वहाँ पर भी ये लोग निर्भीकता के साथ हैं। उनके साथ चोर और डाकू भी किसी प्रकार का अन्याय नही करते, इसका कारण क्या हम नही जान सके। अनुमान से मालूम होता है कि मेवाड के राणा की कृपा प्राप्त हाने जब उस राज्य मे उनके साथ राजा से लेकर प्रजा तक की सहानुभूति पैदा हुई तो उस बाकी राजस्थान पर भी पडा। यद्यपि ये लोग इस देश के मूल निवासी नही है और भारतव लिये एक विदेश है। उनके जीवन की समस्त बाते पारन वालो के साथ मिलती-जुलती है व्यवहार वर्त्ताव, वस्त्रो का तरीका और सामाजिक जीवन देखकर गुबरेस के मन्दिर के पुजा स्मरण हो आता है।

चारण लोग मेवाड़-राज्य मे जहाँ पर रहते हैं, वहाँ पर और उसके आस-पास उन खेती का काम नही होता। इससे जाहिर होता है कि वे लोग व्यवसाय से अपना काम च